MAHESHWARI

1944 G. K. U.

1106675

110665

एक प्रति का ।=)

[अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र]

Reg. No. B 4144

110665

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

— प्रवर्तक —
स्व० भागीरथदासजी भूतड़ा

कार्यालय
अली चेम्बर्स, डीन लेन,
फोर्ट, बम्बई

वर्ष ३५, संख्या १६]

बम्बई ता० २१ दिसम्बर १९४४

[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

शशि ! हँसते हो क्यों मुझे देख ?

⁂ श्री लेखराजजी शर्मा 'लेख' अजमेरी ⁂

पश्चिम वालों की सी उज्वल,
चंचल अँखियां चमकाते हो।
क्यों बुझे हुए इन नयनों को
दर्पण की चौंध दिखाते हो ॥
मैं तौ पीड़ित बंदी हूं एक,
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ? ॥ १ ॥

मैं कागज-पत्र बटोर रहा,
तुम चाँदी ले जा रहे चले।
अवनि-तलपर किसके लिये,
हो दुग्ध-फैन फैलाय रहे ?
किस अर्थ सजाई शुभ्र सेज ?
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ? ॥ २ ॥

इस मेरी अवनि को किसके,
अवलोकन-हेत सजाते हो ?
ओ ! अमी-चन्द्र अमृत की,
किसके लिये झड़ी लगाते हो ?
है लोह-पात्र में कनक मेख,
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ? ॥ ३ ॥

रवि, से तेजवान भी एक दिन,
इन अँखियन में तिरते थे।
और इस ललाट की चकाचौंधसे
तुम भी छिपते फिरते थे ॥
वह थे अतीत के सुखद 'लेख'
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ? ॥ ४ ॥

मेरी ज्योतिस्ना कहां गई ?
सब जग में मैंने हेरी है।
पर आज वेदना, करुणा, पीड़ा,
तीन प्रेयसी मेरी है ॥
मैं खोज रहा हूं कर्म रेख।
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ? ॥ ५ ॥

ये है दीपक से जली देह,
पर जले, जला सब अंग दिया।
फिर अंगारों की शैय्या पर,
रखकर, जलने को विवश किया ॥
आ ! हिम से मेरा हृदय सेक।
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ? ॥ ६ ॥

तुम प्राची-पति से बिम्बपाय,
गौरांग बने इठलाते हो।
मेरे रवि से ले ज्योति अरे !
मुझपर शासन जतलाते हो ॥
छल-बल छांड़ो कुछ बनो नेक,
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ? ॥ ७ ॥

रवि द्वारा चुम्बित आनन पर,
छाजन के काले दाग़ पड़े,
दम्पतियों के प्रिय प्रणय देख,
ठंडी आहें भर रहे खड़े ॥
यहि कारण राहु गहे केश,
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ? ॥ ८ ॥

गजसम देही थी, थकी आज,
बल शार्दूल सम नहीं रहा।
और लड़ते लड़ते लोहे से,
सब भुज-बल थाका रहा सहा ॥
पर अब भी मुझ में प्राण शेष,
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ॥ ९ ॥

मेरे व्रत की है वर्ष गांठ,
मेरे प्रणका पुनीत दिन है।
इस कर में कच्चा तार नहीं,
यह तो रण का रण कंकण है ॥
यह है सैनिक का वीर वेष,
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ? ॥ १० ॥

हरित वसन और हिम क्रीट,
गंगा यमुना पयोद जिसके।
अंचल पर रजत जलद गोटा,
सागर धो रहा चरण जिसके ॥
भारत जननी पितु हिन्द देश,
शशि हंसते हो क्यों मुझे देख ॥ ११ ॥

बंकिम पूजन का थाल सजा,
वन्दे मातरम पद गाते हैं।
और जन मन घन अधिनायककी,
'रवि' ठाकुर तान सुनाते हैं ॥
गुण गाय रहे ब्रह्मा महेश,
शशि हंसते हो क्यों मुझ देख ॥ १२ ॥

इन जलती हुई उसासोंसे,
लोहा गल कर वह जायेगा
गिरि-शिखर, भुवन, तरु, कोटिन पर,
मेरा झंडा लहरायेगा ॥
उस दिवस देखना मेरा तेज,
शशि हँसते हो क्यों मुझे देख ॥ १३ ॥

⁂

माहेश्वरी
ART CORNER

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, २१ दिसम्बर १९४४

यूनान में जनता और थैलीशाहों का संघर्ष

पिछले दिनों यूनानमें जो राजनीतिक संकट उठ खड़ा हुआ था वह अभी तक बना हुआ है। इस संकट का खड़ा कर देने की जिम्मेदारी वहाँ के थैलीशाहों और उनके सरपरस्त ब्रिटेन के पूँजीपातियों और मि. चर्चिल पर है; इस बात के बारे में दो मत नहीं हैं।

लेकिन ब्रिटेन के थैलीशाहों की समाचार समिति 'रायटर' ने दुनिया भरमें खबर फैलायी है कि यूनान में वहाँ के स्वातंत्र्य मोर्चे के देशभक्त और कम्युनिस्ट, मौजूदा सरकार का तख्ता उलटकर अपना राज कायम करना चाहते थे। मि. चर्चिलने भी हाल ही में अपने कामन्स सभा के भाषणमें भी यही बातें कहीं थीं।

वास्तविकता ठीक इसकी उल्टी है। दर असल यूनान के थैलीशाहों के गुट ने इस संकटको खड़ा किया है। वे यूनानके स्वातंत्र्य मोर्चे की बढ़ती हुई शक्ति को कुचल डालना चाहते थे। यूनान की जनता ने पिछले चार वर्षों तक देशी और विदेशी फासिस्टों के खिलाफ़ अनवरत सघर्ष करके जिस स्वतंत्रता को प्राप्त किया है, यूनान के थैलीशाह उस का अपहरण करके, उन पर अपनी तानाशाही थोप देने की कोशिश में हैं। यूनानके स्वातंत्र्य मोर्चे ने इसका प्रतिरोध किया। मि. चर्चिल और रायटर इसको " गृह–युद्ध " बताते हैं और इसको चलाने का आरोप स्वातंत्र्य मोर्चे और कम्युनिस्टोंपर लगाते हैं।

सच तो यह है कि यूनानमें गृह-युद्ध वहां के थैलीशाहोंने आरम्भ किया है। यह वहां के थैलीशाहों और जनता के बीच का संघर्ष है। इसमें मिस्टर चर्चिल और ब्रिटेनके थैलीशाह यूनान के थैलीशाहों की मदद कर रहे हैं। और दुहाई दे रहे हैं कि जो कुछ वे कर रहे हैं वह यूनाम में " वैधानिक–सरकार " की रक्षा के लिये जरूरी है।

ब्रिटिश फ़ौजें जिस " वैधानिक-सरकार " की रक्षा के लिये लड़ रही हैं उसमें वे लोग हैं जो हिटलर के आक्रमण के समय यूनान की जनता को फ़ासिस्टों की गोलियोंका शिकार होने के लिये असहाय छोड़कर भाग गये थे। अब तक वे लंदन और काहिरा के होटलों में गुलछर्रे उड़ा रहे थे; लेकिन अब जबकि यूनान के देशभक्तों ने असंख्य बलिदानों के बाद फासिस्टोंको अपने देशसे मार भगाया है, यूनानी थैलीशाहोंकी वह ठगसम्डली, फिर आ धमकी है और अपनी तानाशाही कायम करनेके लिये षड्यंत्र रच रही है।

इस संबधमें यूनान के पिछले कुछ वर्षोंका राजनीतिक इतिहास जान लेनेसे हमें वहांकी आजकी घटनाओं को भलो भांति समझने में बड़ी मदद मिलेगी।

सन् १९३५ की बात है। यूनानके फौजी अफसरों के एक गुटने एक नकली और झूठी मत-गणना करके बादशाह जार्ज का शासन यूनान वासियों के सर पर थोप दिया था। बादशाहत हासिल करनेके लिये बादशाह जार्ज ने जो–जो वादे किये थे, यूनान में पैर रखते ही वह वे सब बातें भूल गये। उन्होंने शासन की बागड़ोर एक फासिस्ट जनरल मेटाक्साजके हाथोंमें सौंप दी। उन्होंने आते ही जनता द्वारा चुनी हुई पार्लमेंट (धारा सभा) तोड़ दी और अपनी तानाशाही कायम करली। जनताके सब नागरिक अधिकार छीन लिये गये; समाचार पत्रों पर पाबंदियों लगा दी गयीं, मजदूरों और किसानोंके आंदोलनों को कुचल डाला गया। मेटाक्साज थोड़े दिनों तक ही जिया, सन् १९४० में उसकी मृत्यु हो गयी; लेकिन उसकी मौत के साथ बादशाह जार्ज की तानाशाही का अंत नहीं हुआ। जार्ज अपने फासिस्ट-परस्त फौजी अफसरोंके सहयोगसे जनताका दमन करते रहे।

सन् १९४१ में जर्मन-आक्रमण हुआ और बादशाह जार्ज की सरकारके फासिस्ट परस्त लोग हिटलरसे मिल गये। और जो शेष बचे वे बादशाह जार्ज के साथ दुम दबाकर भाग गये और लंदनके होटलोंमें जाकर पनाह ढूंढ़ी।

बादशाह जार्ज और उसकी ठगमंण्डली तो प्राण-रक्षा के लिये भाग गयी लेकिन यूनान की देशभक्त जनता ने, जो आरंभ ही से देशी फासिस्टों से संघर्ष करती आयी थी; अपने देश की स्वतंत्रता की रक्षा के लिये जर्मनों का डटकर मुकाबला किया। जर्मन आक्रमणकारी से मोर्चा लेने के लिये यूनान. के सभी फासिस्ट–विरोधी संगठनों में एकता कायम की। यूनान की कम्युनिस्ट पार्टीने अथक परिश्रम द्वारा वहाँके सभी राजनीतिक दलों और देशभक्तोंको मिलाकर एक राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चे (इ. ए. एम.) की स्थापना की। यूनान का राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चा वहाँके किसी एक दल का गुट नहीं है बल्कि सारी यूनानी जनता इस मोर्चे के साथ है। सारी दुनिया यह मानती है पर मि. चर्चिल और यूनानके थैलीशाह उसे एक लुटेरों का दल बताते हैं। मगर लंदन के टोड़ी-पत्र (प्रतिक्रियावादी पूँजीपतियों के पत्र) 'टाइम्स' तक ने कहा है कि:—

" इ. ए. एम. में यूनान की सोशालिस्ट पार्टी किसान-पार्टी, जनवादी-संघ, वामपंथी, लिबरल पार्टी, कम्युनिस्ट पार्टी आदि के अलावा अन्य सभी छोटी–मोटी पार्टियाँ और दल भी सम्मिलित हैं। "

ई. ए. एम. ने ही यूनान को फासिस्टों के चंगुलसे मुक्त किया है, इतिहास इस बात का गवाह है।

यही नहीं; ई. ए. एम. ने इस फासिस्ट विरोधी संघर्ष के दौरान में यूनान के राजनीतिक दलों में जो एकता स्थापित की है उसका सबूत यह है कि इसी ई. ए. एम. के झण्डे के नीचे यूनान के सभी मुक्त प्रान्तों में स्वतंत्रता समितियाँ कायम की गयीं जो उन प्रान्तों के शासन की देखरेख करती हैं। गत मार्च में जनवादी ढंग से चुनाव करके इन स्वतंत्रता समितियों के प्रतिनिधियों को लेकर एक राजनीतिक स्वतंत्रता समिति बनायी गयी थी; वही समिति मुक्त यूनान में अस्थायी सरकार का काम करती थी। इस समिति के अध्यक्ष एथेंस विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध प्रोफेसर स्वोलोस हैं। प्रोफेसर स्वोलोस यूनान में वैधानिक कानून के सब से बड़े पंडित माने जाते हैं।

इसी ई. ए. एम. के झण्डेके नीचे यूनानके ६५,००० देशभक्तों की फौज एलास (इ. एल. ए. एस.) का संगठन किया गया था। मिस्टर चर्चिल और रायटर समाचार समिति ने यूनानी देशभक्त छापेमारों की संगठित फौज एलासको डाकुओं और लुटेरोंकी सेना बताकर उसे बदनाम करने की कुचेष्टा की है। लेकिन ऐसा करने के लिये उनके निजी कारण हैं। एलास यूनान की जनताकी फौज है। भला चर्चिल एलासकी, जनताकी फौजकी, सहायता क्यों करने लगे। यूनान में उनके छुट भइयों यूनान के थैलीशाहोंका संगठन इडीस भी तो था। चर्चिल और ब्रिटेनके थैलीशाह जन और हथियारोंसे ईडीसकी सहायता करते रहे। लेकिन दुर्भाग्यसे ईडीसकी संख्या २००० सैनिकोंसे कभी आगे नहीं बढ़ी।

उधर यूनान के राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चे (इ. ए. एम) की शक्ति दिनों दिन बढ़ती गयी। जनता की इस बढ़ती हुई शक्ति को देखकर लंदन स्थित भगोड़ी यूनानी सरकार का दिल बैठने लगा। इसीलिये भगोड़ी यूनानी सरकारने एलास (देशभक्तों की फौज) की रत्ती भर भी मदद नहीं की। इतना ही नहीं, ई. ए. एम. द्वारा कई वार समझौते की कोशिश की जाने पर भी भगोड़ी सरकार समझौते के लिये तैयार नहीं हुई। सरकार की इस ढुलमुल नीति के खिलाफ जनता और फौज में रोष और असंतोष बढ़ता गया और अंतमें मार्च १९४४ में यूनान की समूची फौजने बलवा कर दिया। उन दिनों यूनान की सरकार लंदन से काहिरा पहुंच गयी थी। यूनानी फौज के इस विद्रोह का यह परिणाम हुआ कि काहिरा स्थित नाममात्र की सरकार को तोड़कर एक नयी सरकार बनायी गयी। इस नयी सरकार में यूनान के राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चे और कम्युनिस्ट पार्टी के प्रतिनिधियों को भी सम्मिलित किया गया।

राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चे (ई. ए. एम.) और सरकार के बीच समझौता होने में इतना अधिक समय इसलिये लगा कि ई. ए. एम. के नेताओं ने माँग की थी कि जनता का दमन करने के लिये हिटलर की कठपुतली सरकार द्वारा बनायी गयी " संरक्षक फौज " को तोड़ दिया जाय। नयी सरकार के प्रधान पापान्द्रेओं ने सब फासिस्टी फौजको तोड़ने से इनकार करते हुए कहा कि यह तो सरकारी फौज है, इसे कैसे तोड़ा जा सकता है। उल्टे उन्होंने एलास (देशभक्तों की फौज) को तोड़ने का सवाल उठाया। पापान्द्रेओं का मतलब साफ था। वे देशभक्तों के हथियार छीन कर थैलीशाहों की फौज को देना चाहते थे जिस से कि यूनान के राष्ट्रीय मोर्चे की शक्ति को कुचला जा सके।

लेकिन पापान्द्रेओं का षड्यंत्र सफल नहीं हुआ। उसे संरक्षक फौजको तोड़ना ही पड़ा। उस समय पापान्द्रेओं और राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चे के नेताओं के बीच इस बात पर भी समझौता हो गया कि यूनान के पूर्ण रूपसे स्वतंत्र हो जानेके बादमें एलास, ईडीस और अन्य सभी सशस्त्र दलोंको तोड़ दिया जायगा और तब एक नयी राष्ट्रीय सेना बनायी जायगी।

नयी सरकार बननेके बाद यूनानकी आन्तरिक अवस्था सुधरने लगी थी। यूनानी जनता अन्न-संकट और अकाल से पीड़ित थी; नयी सरकारको इन संकटोंको दूर करने में काफी सफलता मिली। लेकिन राजनीतिक समस्या हल नहीं हो पायी। पापान्द्रेओं और यूनानी थैलीशाह अपनी तानाशाही कायम करने की फिक्रमें थे और उसके लिये वे शाही पल्टनों, " पवित्र पलटन " और " पहाड़ी पलटन " को कायम रखना चाहते थे। उन्होंने राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चे के नेताओं पर दबाव डाला कि वे एलास को तोड़ दें। राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चे के नेताओं ने इन दोनों फासिस्ट पल्टनों को तोड़ने की माँग की क्योंकि उन्हें भय था कि थैलीशाहों का यह गुट, एलास के तोड़ दिये जाने पर पहाड़ी पलटन और पवित्र पल्टन के और भी राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चे की शक्ति को कुचलनेका प्रयत्न करेगा।

उनका भय सही था। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है पापान्द्रेओं और उनके आका यूनान की जनता पर पुराने खूसट थैलीशाहोंकी तानाशाही थोपन चाहते थे।

गत १ दिसम्बर को यूनान स्थित ब्रिटिश फौजोंके कमाण्डर जनरल स्कोबी ने रेडियो पर ऐलान किया:—

" यूनान के कई हिस्सोंमें आतंक फैल रहा है, कुछ लोग मौजूदा सरकार के खिलाफ षड्यंत्र रच रहे हैं। ब्रिटिश फौजें हर तरहसे मौजूदा सरकार की रक्षा करेंगी। "

फिर तो जैसे योजान के अनुसार काम होता गया। पापान्द्रेओं ने उसी दिन शामको मंत्रिमंडल की बैठक बुलायी और एक फरमान तैयार किया। याद रहे मंत्रि मंडलकी इस विशेष बैठकमें मंत्रिमंडलके राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चे

के प्रतिनिधियोंको नहीं बुलाया गया। पापान्द्रेओंने अपने फरमानमें स्वातंत्र्य मोर्चेके नेताओंको आज्ञा दी कि एलास देशभक्तोंकी फौजको फौरन तोड़ दो।

इस फ़रमान को उन्होंनें स्वातंत्र्य मोर्चे के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर स्वोलोस के मकान पर भेजते हुए उनसे कहलवाया कि इस फ़रमान पर दो घण्टे के अन्दर दस्तख़त कर दो। स्वातंत्र्य मोर्चे के चारों सदस्य उस समय प्रोफ़ेसर स्वोलोस के निवास्थान पर थे। उन्होंने पापान्द्रओं के इस तानाशाही हुकम को माननेसे इनकार करते हुए मंत्रिमण्डल से इस्तीफ़ा दे दिया। साथ ही मंत्रिमण्डल के कम्युनिस्ट सदस्यों ने भी इस्तीफ़ा दे दिया।

दूसरे दिन एथेन्स की जनता और स्वातंत्र्य मोर्चे ने पापान्द्रेओं की इस नीति के ख़िलाफ़ शान्तिपूर्ण ढंग से प्रदर्शन किया। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रदर्शन पापान्द्रेओं की आज्ञा प्राप्त करने के बाद रविवार ३ दिसम्बरको किया गया था। लेकिन पापान्द्रिओं ने जनता के उस प्रदर्शन पर गोली-चलवायी। वह पुलिस जिसने पहले मेटास्माल और बादमें हिटलर का हुकम बजाया था, वही फ़ासिस्ट पुलिस अब पापाद्रेंओंके काम आ रही है।

प्रदर्शनमें भागलेने वाले एथेन्स के बहुतसे निहत्थे स्त्री-पुरुष और मासूम बच्चोंको गोलियोंसे उड़ा दिया गया। ऊपर से देशभक्तोंके मत्थे दोष मढ़ दिया गया कि उन्होंने गृह-युद्ध छेड़ दिया है।

यहींसे यूनानके थैलीशाहों और जनताके बीच सशस्त्र संघर्ष आरंभ हुआ जो आज तक जारी है।

ऊपर हम बता चुके हैं कि यूनानी थैलीशाहों की फौजी शक्ति इतनी कमजोर है कि एलास (स्वातंत्र्य मोर्चे की फौज) एक दिनमें उनका सदाके लिये अंत कर देती। लेकिन पापान्द्रेओं और यूनानी थैलीशाहों की रक्षाके लिये ब्रिटिश फौजें आ पहुँचीं और उन्होंने पापान्द्रेओं और उसके साथियों की तानाशाही को खतम होने से बचा लिया।

लेकिन इन सब बातों के बावजूद स्वातंत्र्य मोर्चेकी आज्ञासे एथेंसकी जनता ने इतनी बड़ी हड़ताल की कि पापान्द्रेओं प्रधान पद से हटने के लिये मजबूर हो गया। पापान्द्रेओंने यूनानके एक लिबरल विचारों वाले नेता एम सोफोलोस को नया मंत्रिमंडल बनाने के लिये कहा। संभवतः इस परिवर्तन से यूनान में हालत सुधर जाती लेकिन मि. चर्चिलने फौरन एक फरमान भेजा "इस समय यूनान में कोई नया मंत्रिमंडल न बनने पाये।"

मि. चर्चिल का ख्याल था कि वह ब्रिटिश फौजों के जोर से यूनान के स्वातंत्र्य मोर्चों की शक्तिको कुचल सकेंगे और इस प्रकार यूनान में अपनी कठपुतली सरकार कायम रख सकेंगे।

लेकिन मि. चर्चिल की सब उम्मीदों पर पानी फिरता जा रहा है।

ब्रिटेन और अमरीका में चर्चिल की इस नीति के विरोध में एक तूफ़ान खड़ा हो गया है। अमरीका के सभी प्रमुख पत्रों ने मि. चर्चिल की तीव्र शब्दों में निंदा की है। अमरीका के राज मंत्री मि. स्टेटीनस तक ने ब्रिटेन की वैदेशिक नीति की आलोचना करते हुए एक वक्तव्य प्रकाशित किया है।

अमरीका के रिपब्लिकन पत्र "शिकागो सुन" ने मि. स्टेटीनस के वक्तव्य पर निम्न टिप्पणी लिखी है:—

"मि. स्टेटीनस का वक्तव्य इस बात का द्योतक है कि अमरीका की वैदेशिक नीति ने नया पल्टा खाया है। अब अमरीका योरुप के मुक्त देशों के राजनीतिक मामलोंमें ब्रिटेनको मनमानी न करने देगा। अगर ब्रिटेन योरप के किसी देश में फौजी ताकत से अपनी कठपुतली सरकार कायम करने की कोशिश करेगा तो अमरीका उसका विरोध करेगा।"

प्रसिद्ध अमरीकी टीकाकार वाल्टर लिपमान ने भी इस संबंधमें लिखा है कि:—

"ब्रिटेन यूनानमें अपनी फौजी ताकत से मनचाही कठपुतली सरकार कायम करनेमें सफल न हो सकेगा। क्योंकि वह आवश्यतानुसार यूनानमें युद्ध-सामग्री न पहुंचा सकेगा।"

ब्रिटेनमें भी मि. चर्चिल के इस रवैयेकी घोर निंदा की गयी है। खासकर मजदूर हलकों में मि. चर्चिलका जबरदस्त विरोध किया गया। हाल ही में ब्रिटेनमें लेबर पार्टीका वार्षिक अधिवेशन हुआ था। उसमें प्रस्तावों द्वारा यूनानमें जो कुछ हो रहा है उसपर अफसोस प्रकट करते हुए ब्रिटिश सरकारसे मांग की गयी कि वह यूनानमें शान्ति कायम करवाये और वहाँ के राजनीतिक दलों के बीच समझौता करानेका प्रयत्न करे। ब्रिटेन की लेबर पार्टी की कार्यकारिणी समिति ने मजदूरों को आश्वासन दिया है कि वह ब्रिटिश सरकार पर दवाव डालेगी कि उसे निम्न शर्तों पर यूनान में समझौता करानेकी कोशिश करना चाहिये:—

(१) पापान्द्रेओं को प्रधान पद से हटा दिया जाय।

(२) नयी सरकार में राष्ट्रीय स्वातंत्र्य मोर्चे के नेताओं को सम्मिलित किया जाय।

लेकिन प्रश्न यह उठता है कि जब मि. चर्चिलको उम्मीद थी कि उनकी नीति की इतनी सख्त निंदा होगी तब फिर उन्होंने ऐसी नीति क्यों अपनायी। मि. चर्चिल तो केवल यूनान की मौजूदा "वैधानिक सरकार" (!) की रक्षा करनेकी दुहाई देते हैं लेकिन ब्रिटिश पार्लमेंट के कट्टर प्रतिक्रियावादी सर स्टेनले रीड ने गत ७ दिसम्बरको बम्बई के "टाईम्स ऑफ इंडिया" को जो संदेश भेजा था उससे मि. चर्चिल के षड्यंत्र का भेद खुल जाता है। उन्होंने कहा है कि:—

"ब्रिटेनमें कई लोग सोचते हैं कि हमें यूनानके घरेलू राजनीतिक मामलोंमें नहीं पड़ना चाहिये। वे भूल जाते हैं कि हमने ही यूनान वासियोंको हथियार दिये थे। फिर यह भी याद रखना चाहिये कि यूनान भूमध्यसागर की कुंजी है। भूमध्यसागर पर अपना अधिकार कायम रखने के लिये यूनान की रक्षा करना हमारा सबसे बड़ा स्वार्थ है।"

मि. स्टेनले रीड का मतलब साफ है। वे चाहते हैं कि मध्यपूर्वमें ब्रिटिश पूंजीपतियों के हितों की रक्षा के लिये यूनान में ब्रिटेन की कठपुतली सरकार कायम रहना जरूरी है। यही कारण है कि मि. चर्चिल यूनानमें पापान्द्रेओं का शासन कायम रखनेके लिये शक्ति भर कोशिश कर रहे हैं।

लेकिन मि. चर्चिल की कोशिशें सफल नहीं हो सकेंगी। हालांकि यूनान की जनता को आज एक साथ दो-दो विरोधियों, देशी और विदेशी शत्रुओं, के ख़िलाफ़ लड़ना पड़ रहा है, लेकिन उसकी शक्ति इतनी संगठित है कि पापाद्रेंओं की फौजें तो क्या उनकी सहायक ब्रिटिश फौजें भी ई.ए.एम. और एलास को नहीं दबा सकतीं। विदेशों से आने वाली खबरोंसे हमारे इस कथन की पुष्टि हो जाती है।

यूनान की जनता इस संग्राममें अकेली नहीं है। सारी दुनिया की स्वतंत्रता-प्रेमी जनता आज यूनान की जनता के साथ है। खुद ब्रिटन में वहां का मजदूर आन्दोलन मि. चर्चिल का विरोध कर रहा है और यूनानमें समझौता और शान्ति स्थापित करने की मांग कर रहा है।

यह तै है कि अंतमें मि. चर्चिल को झुकना पड़ेगा। इसके पहले भी उन्होंने फ्रांस, इटली और यूगोस्लाविया में वहां के थैलीशाहोंकी तानाशाही क़ायम करनेमें मदद की थी। अपने एजण्टों, जीरो बदोलियो आदि लोगोंके नेतृत्वमें अपनी कठपुतली सरकार कायम करने का प्रयत्न किया था। लेकिन उन देशोंमें देशभक्तों के स्वातंत्र्य मोर्चों की ताकत इतनी जबरदस्त थी कि वहाँ मि. चर्चिल और ब्रिटिश थैलीशाहों की दाल न गल पायी। उनका यही हाल यूनानमें होगा।

ब्रिटेन के थैलीशाह "शांति और कानून" की दुहाई देकर योरुपके मुक्त देशोंमें अपने भाई-बंदों; जनताके दुश्मनों का साथ दे रहे हैं।

लेकिन हालत यह है कि ब्रिटेन के थैलीशाहों की सहायता पाकर भी यूनानकी मौजूदा सरकार अपने देशमें शांति और व्यवस्था कायम नहीं कर सकती। इसका पहला, कारण यह है कि इस सरकारमें जनताका लेशमात्र भी विश्वास नहीं है, दूसरे वह देशके उत्पादन की भी ठीक व्यवस्था नहीं कर सकती क्योंकि वह देशके उत्पादनको राष्ट्रीय सम्पत्ति बनानेके खिलाफ है। देशके उद्योग-धंधोंके मालिक उनके भाई-बन्द हैं जो उसे ऐसा कभी न करने देंगे। और अन्तमें वह जनताके लिये अन्नकी भी ठीक व्यवस्था नहीं कर सकती क्योंकि अन्नचोर उसके साथी हैं और उनके खिलाफ कार्रवाई करना उसके बूते के बाहर है।

ऐसी परिस्थिति में अब जरा भी संदेह नहीं रह जाता है कि यूनान की मौजूदा सरकार जो जनता की एक भी समस्या हल नहीं कर सकती, अधिक दिनों तक नहीं टिक सकती। उसका अन्त आ गया है और ब्रिटेन के थैलीशाह और मि. चर्चिल लाख सर मार कर भी उसकी रक्षा न कर सकेंगे।

ताजा खबरों से जान पड़ रहा है कि ब्रिटिश फौजोंको यूनानमें मन चाही सफलता नहीं मिल रही है। एलास की शक्ति को कुचलना उनके बूते के बाहर है। मि. चर्चिल की योजना छिन्न भिन्न हो गयी है। अन्तर राष्ट्रीय विरोध और यूनान के देशभक्तों के दृढ़ प्रतिरोध के आगे चर्चिलको झुकने के के लिये मजबूर होना पड़ा। उन्होंने मध्य-पूर्वी मोर्चे के कमाण्डर फ़ील्ड मार्शल अलेक्जैण्डर को एथेंस भेजा है और उनको आदेश दिया है कि वे यूनान में शान्ति स्थापित करानें और विभिन्न राजनीतिक पार्टियों में समझौता कराने की फौरन व्यवस्था करें। **—प्रह्लाद जोशी।**

हमारी स्मृतियां

स्मृति का अर्थ है विधान, कानून, नियम आदि। बिना अधिक गहरे विचार के ही कहा जा सकता है कि कानूनमें देश, काल और परिस्थितिके अनुसार परिवर्तन हुआ करता है, होना भी चाहिये क्योंकि यह ही प्रत्येक उन्नतिशील राष्ट्र, समाज और शासन का सुप्रत्यक्ष चिन्ह है, प्रमाण है। हमारे देशमें अति प्राचीन काल से ऐसा होता आया है और यह ही सब देशोंमें भी होता रहा है। हमारे आदि कानून निर्माता भगवान मनुजी महाराज कहे जाते हैं। संसार के पुस्तकालयमें मनुस्मृति, जिसका आदि नाम मानवशास्त्र या मनुसंधिता कहा जाता है, सबसे प्राचीन विधान पुस्तक है। यह आरंभ में सूत्र ग्रन्थ था पश्चात श्लोकबद्ध किया गया। ज्यों ज्यों समय बदलता गया, सभ्यता और उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता गया त्यों त्यों नई स्मृतियां और कानून बनते गये। पाराशर स्मृति, नारद स्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति आदि मुख्य स्मृतियां अधिक प्रसिद्ध हुईं। शायद सबसे अन्तिम मिताक्षरा का विधान है जिसके आधारपर ही वर्तमान "हिन्दू लॉ" ब्रटिश सरकार द्वारा निर्माण किया गया है। उपर्युक्त के सिवाय भी शायद ५० से ऊपर स्मृतियों के नाम मिलते हैं जिन्हें विभिन्न आचार्यों ने समय समय पर निर्माण किया और उनका प्रचार हुआ। किन्तु अधिक प्रसिद्ध और एक प्रकार से सब की आधारभूत ऊपर उल्लिखित स्मृतियां ही हैं।

इन सभी में बहुत से नियमों, विधानों और आदेशों में न्यूनता अधिकता, परिवर्तन तथा परिवर्धन और संशोधन हैं। यह उचित था, आवश्यक था और अनिवार्य भी था। तदनुसार ही आजकल भी कानूनों में संशोधन, परिमार्जन और परिवर्तन हुआ करता है, होना भी चाहिये। इस सर्वथा उचित और निश्चित सिद्धान्त की अवहेलना करके 'हमारी स्मृतियां वेद वाक्य हैं, उनमें कभी भी कुछ संशोधन आवश्यक नहीं है, यह धर्म्म पर आघात है।' इत्यादि की पुकार बड़ी विचित्रसी मालूम होती है। बिना किसी संतोष प्रदायक युक्ति अथवा तर्क के मात्र प्राचीनता की दुहाई देना इस शताब्दी में शोभा नहीं देता। यह बात दूसरी है कि प्रस्तावित संशोधन अपेक्षित हैं या नहीं। इस बात पर गम्भीरता के साथ विचार किया जाय, किन्तु परिवर्तन के नाम पर ही व्यर्थ का वितण्डावाद खड़ा करना सभ्य संसार के सम्मुख अपने को हास्यास्पद बनाना है। संशोधन, परिवर्धन आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य हैं और जीवन का चिन्ह हैं, जागृति का प्रमाण हैं। इसमें भयातुर होने, शंकित होने, लज्जित होने या संकोच करने की क्या बात है?

श्रुति और स्मृति को एकही सूत्र में लपेट लेना उचित नहीं है। स्मृतियें कभी भी भगवान की आज्ञा नहीं माना गई हैं। हां, उनका आधार अवश्य ही श्रुति है और सदाचार तथा लोकाचार दूसरी और तीसरी चीजें हैं। हम इन सबको एक ही में मिलाकर जबरदस्ती ही श्रद्धालु जन साधारण की मतिभ्रष्ट करते हैं और उन्हें कुमार्ग पर लेजाने के, अंधश्रद्धालु बनाने के अपराधी बनते हैं। "कल्याण" गोरखपुर या दूसरे इसी विचार के पत्रों तथा विचारक महानुभावों को इस प्रश्नपर दूरदर्शिता के साथ तथा सूक्ष्म रूप से विचार करना चाहिये। 'मजहब खतरे में है' की गुहार पर अपीलें करने का समय बहुत दूर निकल गया। आज दूसरा समय है और यदि हम इस प्रकार अपनी बुद्धि तथा विवेक पर ताला लगायेंगे तो निश्चय ही हमारा भीषणतम पतन होगा और संसार की दौड़ में हम मालूम नहीं कितने पीछे रह जायंगे।

हमारी दयनीय वर्तमान समाज-अवस्था (१)

—दो पत्र—

[हमारे देश में इन दिनों राजनीतिक आन्दोलन का जोर है। इस हवा में बहकर हम और सब बातें भूल गये हैं। राजनीतिक स्वतन्त्रता प्राप्त करके हमारी चतुर्मुखी उन्नति स्वतः हो जायगी—अधिकांश में यह धारना ठीक होते हुये भी देश की दूसरी बातों की अवहेलना करना उचित नहीं है और मुख्यतः सामाजिक बराईयों से आंखें चुराना तो महान अनर्थकारी है, क्यों कि यह अत्यन्त ही विषैला कीड़ा समाज रूपी शरीर को भीतर ही भीतर जिस गुप्त रूपसे खाकर खोखला कर रहा है वह भयंकर दुश परिणामकारी है। सामाजिक क्षेत्र में भी हमें वैसी ही बल्कि उससे भी अधिक क्रांति और बलिदान की महती आवश्यकता है जैसी कि हम राजनीतिक क्षेत्र में कर रहे हैं। यह सत्य है कि यह क्षेत्र राजनीतिक क्षेत्र से कहीं अधिक दुरूह तथा कष्टदायक है और इसमें और भी अधिक त्याग, तपस्या तथा कष्ट सहन की आवश्यकता है। आज हमारे ९९ प्रति शत ही नहीं वरन् ९९९ प्रति सहस्र गृहस्थ सुखधाम के स्थान पर नर्कधाम बन रहे हैं, वहां शान्त समीर के स्थानमें विकराल अशान्ति परिपूर्ण बवण्डर उठ रहा है जिसका परिणाम सोसायटी के समूल नाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं होगा।

आज हम नीचे दो मर्मभेदी पत्र प्रकाशित कर रहे हैं। दोनों ही की घटनायें सर्वथा सत्य हैं, उनमें लेश बराबर भी असत्य या अतिशयोक्ति नहीं है। आजकल की शिक्षा प्रणाली के भक्त और स्वातन्त्रय भावना वाले व्यक्तियोंके लिये और समस्त दूसरे मनःस्वी हृदय रखने वालोंके लिये भी यह गम्भीरताके साथ विचारनीय हैं। हम मुख्यतः अपनी शिक्षिता बहनोंको इन पत्रोंमें उठाये गये प्रश्नों और संकेत किये गये विचारों तथा भावोंके औचित्य तथा अनौचित्य पर अपने अध्ययनपूर्ण विचारोंको प्रकट करनेका निमन्त्रण देते हैं; और प्रतीक्षा करेंगे कि वह कहां तक, वास्तविकता तक, रोग की मूल तह तक, पहुंचकर क्या समुचित निदान और चिकित्सा निश्चित करती हैं, निर्धारित करती हैं। हम बुराई को शुद्ध वायुमण्डल में खोलकर रख देने के पक्षपाती हैं ताकि भीतर ही भीतर वह गंदगी उत्पन्न करके समाज रूपी शरीरको खोखला न कर दे, सड़ा न दे। दूसरों की ऐब जोईसे स्वतः की बुराईयों को लज्जा और संकोच छोड़कर पहिले देखना अधिक श्रेयस्कर है, आवश्यक है।

—**सम्पादक।**]

(एक)

प्रेम !

वर्षों बाद मैं तुम्हें पत्र द्वारा सम्बोधन कर रहा हूँ। संभवतः मेरा यह अन्तिम पत्र है। ईश्वर न करें कि मुझे कभी फिर इस बिषय में पत्र लिखने की आवश्यकता प्रतीत हो।

उस दिन सड़कपर लकड़ी की एक छोटी-सी हाथ गाड़ी में एक लूले-लंगड़े वृद्ध को बैठे और दो छोटी बच्चियों द्वारा उस गाड़ी को खिंचते देखकर मैं बड़ी देर तक खड़ा खड़ा रोता रहा था। वह छोटी लड़कियें उस अपंग पिता की पुत्रियें हैं जो अपने अशक्त पिता को दिन भर नगर की सड़कों पर घसीटे फिर कर भिक्षा मांगा करती हैं—यह जान कर तो मुझे बड़ी ही मर्म वेदना हुई थी और पुरानी दुखद स्मृतियों ने मुझे अत्यधिक विव्हल कर दिया था। तब ही मुझे यह पत्र लिखने की भी प्रेरणा हुई, अन्यथा कोई आवश्यकता नहीं थी।

ज्यों ज्यों समय गुजरता जाता है मेरे सीने के दाग, हृदय के घाव, अधिकाधिक गहरे होते जाते हैं। डाक्टरों का अनुभव है कि समय पाकर गहरे से गहरे जख्म भी सूख जाते हैं, भर जाते हैं, किन्तु यहां तो बात ही दूसरी है। भूलने के स्थान पर स्मरण नित्य हरा ही होता जाता है और घाव ताजा ही होते जाते हैं। शायद वह नासूर होगये है जो संभवतः अब कभी नहीं भरेंगे और मुझे जीवनपर्यन्त तड़पाते ही रहेंगे।

बड़े उत्साह से मैं अपनी प्यारी बेटी का वाग्दान करता हूं, शीघ्र ही विवाह का निश्चय होता है। नियत समय पर लोकाचार, मंगलकृत आरम्भ होते हैं, हल्दी चढ़ती है, तैल चढ़ाया जाता है और सब तैयारी हो चुकती हैं कि पाणिग्रहण से ठीक एक दिन ही पहले पुलिस वारण्ट आता है, मा अपनी बेटी की शनाख्त के लिये साथ आती है, मॅजिस्ट्रेट के सम्मुख इज़हार होते हैं और बेटी पिता की संरक्षिता से छीन ली जाती है। सब कुछ जहां का तहां ही रह जाता है। दूसरे नगर में जाकर-ले जाकर, उसका विवाह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ हो जाता है जिसे पिता कभीभी पसंद नहीं करता था क्योंकि वह वर पिता की इच्छा, विचार, धर्म, शिक्षा, उद्देश्य, आदर्श, संस्कृति, और ध्येय आदि आदि सभी दृष्टियों से उपयुक्त नहीं था, अत्यन्त ही विपरीत था और है।

वाग्दान से लगभग एक वर्ष पूर्व से पहिला सम्बन्ध निश्चय कर लिया गया था और खूब अच्छी तरह विचार, मनन तथा शङ्का समाधान के पश्चात पूर्ण सहमति से निश्चय किया गया था। फिर उस में परिवर्तन और इस निन्दनीय ढङ्ग से परिवर्तन कितना मर्मभेदी, अपमानजनक, दूषित, अधर्मयुक्त और घृणित है, इसका अनुभव शायद तुम्हें अभी तक भी नहीं हुआ है। मैंने उस कृत्यको देखा, सुना और समझा तथा सहा फिर भी जीवित हूं! यह शायद संसार का आठवां ही आश्चर्य है। तुम इतनी बड़ी विश्वासघातनी निकलोगी इसकी मुझे कभी कल्पना तक नहीं थी। मैं तुम्हारा सम्बन्ध, मात्र अपनी ही सम्मति से तो नहीं करने लगा था, राई राई और रत्ती रत्ती तुमसे परामर्श करके ही सब कुछ निश्चय किया गया था, फिर मेरे साथ यह विश्वासघात क्यों? हां मेरे लिये 'स्वजाति' और 'धन' यह दो चीजें कभी भी आकृषक नहीं थीं, न आज हैं और ईश्वर न करें कि जीवन पर्यन्त कभी भी हों। मैंने तुमको अपना रक्त पिला पिला कर, भूखा रह रह कर, हलाहल विष पान कराये जाने पर भी जीवित बचकर पाला था, और तुम्हारी शिक्षा और रक्षाके लिये प्राणपणसे उद्योग किया था। क्या इस दिनके लिये कि तुम मुझे अदालतमें खड़ा करो? और अपने पिता की सभी आशाओं, आकांक्षाओं पर तुषारपात कर दो, वज्राघात करो? केवल इस लिये कि तुम्हारे पास १०-२० हजार का जेवर और साड़ियां होंगी और तुम बंगले तथा कोठियों की रानी बनोगी? अपनी इन क्षुद्र वासनाओं की तृप्ति के लिये तुमने बड़ा भारी मूल्य चुकाया प्रेम! किन्तु क्या अपने परम शुभ चिन्तक पिता की सम्पूर्ण अवहेलना करके तुम सुखी जीवन यापन कर रही हो? तुम्हारा स्थान गरीबों, पीड़ितों, असहायों की झोंपड़ियां थीं, दिल्ली और शिमला की कोठी बंगले नहीं। तुम्हारे पति का नैतिक घृणित चरित्र उस देश, जाति और समुदाय तथा खान्दान के लिये कलंक है जिसमें उसका जन्म हुआ है। गवालियर की दुर्घटना, किसी ऐङ्गलो इन्डियन स्त्री के साथ सम्बन्ध और दूसरी किंवदन्तियां उनके लिये कलंक न हों जिनका जीवन आदर्श और उद्देश्य हीन है, जो मौज मजे में ही आयुका सर्वोच्च सुख समझते हैं। तुम्हारी रक्षा, शिक्षा और दीक्षा ऐसे व्यसनी के लिये नहीं की गई थी। तुम्हें प्राप्त करने के लिये विवाह से पहिले, मेरे प्रति किये गये, उसके कुकृत्य नम्बरी गुण्डों जैसे थे और कोई भी सभ्य, शिष्ट सद्गृहस्थ उन्हे सहन नही कर सकता था। पीछे मुझे यह मालूम करके आश्चर्य हुआ था कि तुम मुझे मात्र धोखे, भ्रम और विश्वास में ही रखकर अपनी मनोकामना सिद्ध करना चाहती थीं, उद्योग शील थीं। अपने छोटे भाई को भ्रमाकर-बहकाकर, अपना मार्ग प्रशस्त बना रही थीं और इन सब कार्यों में तुम्हारे सहायक कई स्त्री-पुरुष थे जिन्हें तुम्हारे भावी पतिने अपने रुपये से खरीदा हुआ था और इनमें कई प्रसिद्ध साहित्य सेवी, अखबारों के संवाद दाता, कवि और वक्ता तथा धार्मिक (!) स्वयम सेवक कोर के वालियन्टर भी थे! इस पापाचार का कितना विस्तार था उस समय!!! मुझे भली प्रकार ज्ञात हो गया है कि तुम बहकाई गई और बुरी तरह बहकाई गई और इसका परिणाम अति भीषण निकला। तुमने मेरा और अपना जीवन ही नष्ट नहीं किया वरन् अपनी मां और छोटे भाई बहनों तक का भविष्य बिगाड़ दिया और अब इस भूल का कोई भी प्रायश्चित नहीं है। सभी को बिसार कर, नाता तोड़कर तिल-आञ्जलि देकर तुमने एक व्यक्ति को प्राप्त किया। तुम्हारी दृष्टि में इस से तुम्हारा जीवन 'बन गया' और चाहे दूसरा सब कुछ 'बिगड़' गया हो। तुम्हें तो अब किसी से कोई मतलब नहीं है? और इसका सुप्रत्यक्ष उदाहरण यह है कि अपनी पूजनीया दादीजी को मरणासन्न छोड़ कर तुम शिमला शैल पर चली गईं और निधन के समाचार पाकर भी उस 'स्वर्ग सुख' से बाहर आने का तुमने अब तक भी श्रम स्वीकार नहीं किया है। मैं इन सब बातोंको अगले जन्म में भी नहीं भूल सकूंगा और शायद कोई भी सहृदय इन्हें नहीं भूल सकता है। यदि इसीका नाम जीवन का 'बनना' है तो 'बिगाड़' के अर्थ के लिये नया शब्दकोष बनाना पड़ेगा! विशेष आश्चर्य तो यह है कि तुम्हारे ज्येष्ठजी ने जो एम० ए०, एल-टी० हैं और एक प्रसिद्ध तथा बड़े हाई स्कूल के हेड मास्टर भी हैं, यह सब अनर्थ कैसे स्वीकार कर लिये? उन्होंने यह नया सम्बन्ध बनाकर मेरे पुराने और अति निकटके रिशते को समाप्त कर दिया न? इसे स्वार्थांधता के सिवाय और क्या कहेंगे? पैसा हो जाने पर मनुष्य इस प्रकार बुद्धि और विवेक को ताला लगा देता है। तुम्हारे पति के ऐडवोकेट बहनोई जैसे अधम व्यक्ति तो विरले ही संसार में मिलेंगे। इन लोगों की अपनी कन्यायें यदि ऐसा करतीं तो क्या यह लोग इसी प्रकार खुशी मनाते? अथवा इनके साथ इस प्रकार के गुण्डेपनका कुत्सित व्यवहार होता तो क्या यह इसी प्रकार चुपचाप सह लेते? इसी का नाम हैडमास्टरी और एडवोकेटी है? शतशः धिक्कार है इस स्वार्थपरता पर और हजार बार लानत है इस कमजरफीपने पर।

मैं तो कोई मनखत नहीं मान सका। मेरा तो घर सदा के लिये बरबाद होगया, सभी आकांक्षायें और अभिलाषायें तथा लालसायें जहां की तहां ही दबी रह गईं। परिणामतः तुमसे छोटी कन्याओं पर और पुत्रोंपर भी मुझे ममता और स्नेह तथा विश्वास नहीं रहा है और आज मैं उन सब से अत्याधिक शंकित तथा विरक्त रहता हूं और वह बेचारे अधमेरेसे अत्यन्त ही भयातुर तथा सहमे हुये से रहते हैं मेरे साथ। उनका विकास सर्वथा बन्द होगया है और यह है सर्व तुम्हारे दुष्कृत्य का मूल्य, महत्व और प्रभाव!!! कोई भी सोसायटी, परिवार और समाज का संगठन इस दारूण अवस्था से नष्ट भ्रष्ट हो जा सकता है और उसके सभासदों के जीवन कण्टककीर्ण बन सकते हैं।

क्या यह स्वच्छन्दता ग्राह्य है? सोसायटी को भस्मसात कर देने वाले यह कार्य उपेक्षणीय हैं क्या? अपरिपक्व विचारोंवाले, अनुभवशून्य, मात्र युवाअवस्थाओं के आकृष्णों से भ्रमाये हुये, चौंधियाये हुये नवयुवक और नवयुवति, स्वदेश, स्वधर्म और स्वसमाजको रसातल ले जाने में ही सहायक होंगे—यह सुनिश्चित और ध्रुव सत्य है।

समय मुझ मर्माहित की इस धारणाका समुचित उत्तर देगा। प्रतीक्षा करो।

मैं हूं वह—

जो कभी तुम्हारा पिता था।

(दो)

शशि !

वर्षों हो गये, तुमने अपनी बेटी को अदालत द्वारा मुझसे छीन कर स्वेच्छेनुसार ब्याह दिया है। आशा है कि तुम अपने इस 'सुकृत्य' पर पूर्ण सन्तुष्ट और प्रसन्न होओगी। किन्तु मेरे कानोंमें कुछ भनक दूसरी ही आ रही है, और इसी लिये मैं आज तुम्हें यह पत्र लिखने बैठा हूं। मुझे मालूम है कि उस समय लक्षाधीश, ग्रेज्युट भावी-दामाद की चिकनी चुपड़ी बातोंमें तुम आगई और अपनी स्त्री सुलभ अदूरदर्शितासे तुमने वह कुकर्म कर डाला जिसका कुफल तुम्हें शायद जीवन भर ही खाना पड़ेगा और अब उसका कुछ भी निराकरण संभव नहीं है। तुम्हारे सम्मुख उस समय संभवतः अपनी लाडली बेटी को सोने से पीली, मोटर में बैठी, बहुमूल्य वस्त्राभूणों से शृंगारयुक्त, मूल्यवान फरनीचर से सुसज्जित कोठी और बंगलों में रहते देखने की लालसा अधिक प्रबल थी। संभव है कुछ अपना भी स्वार्थ सोचा हो-शायद बुढ़ापे में दामाद सहायक होगा, अथवा कुछ और। किन्तु तुमने शायद एक मिनिट के लिये भी यह नहीं सोचा था कि तुम्हारे भावुक हृदय पति पर इस कार्य की क्या प्रति क्रिया होगी अथवा उस परिवार पर क्या बीतेगी जिसके साथ कि पहिले सम्बन्ध निश्चय किया जाचुका था ? तुमने अपने भुक्त भोगी पति के मुकाबले खेम राज जोशी जैसे पतित, चलते पुरजे नराधामों का अधिक विश्वास किया, उनके बहकाने में आगईं, और अन्त में तुम अपने नारीधर्म से बुरी तरह च्युत हो गईं। मैंने तुम्हारे कई अपराध और भूलें क्षमा की थीं जो मेरी व्यक्ति से सम्बन्ध रखती थीं किन्तु मैं उस चीज को तो क्षमा नहीं कर सकता था जो हमारे देश, हमारे राष्ट्र और हमारी समाज की जड़ों को खोखला करने वाली है। पैसे वाले, चरित्र हीन, उद्देश्य हीन और आदर्श रहित, धनके कीड़े यदि इस प्रकार भले घरों पर छापा मारने लगें, बेटियों और माताओं को सब्ज बाग दिखा कर उन्हें कर्तव्य भ्रष्ट करने लगें तो फिर यह सोसायटी कितने दिन जीवित रहेगी ? और तब इसकी उपयोगिता या महत्व तथा आवश्यकता क्या रह जायगी ? तुम्हारी तरह गृह देवियां अदालतों में अपने पतियों के विरुद्ध खड़ी होने लगीं तो कुल मर्यादा कैसे स्थिर रहेगी ? मैं इस बातको, तुम्हारे इस व्यवहार को, भूल नहीं सकता, प्रयत्न करने पर भी भुला नहीं सकता। तुम सुशिक्षता हो और स्वयम भरपूर कमाने की योग्यता भी रखती हो इस लिये तुम कह सकती हो कि 'मैं किसी के अधीन नहीं हूं' किन्तु यह कोई भलाई है क्या ? मैं तो इसे परले सिरे की बुराई समझता हूं। भारतीय, हिन्दू, आर्य और आदर्श संस्कृति के यह सर्वथा विपरीत है, विरुद्ध है। **'शिक्षित और कमाऊ स्त्री कभी वफादार गृहणी नहीं हो सकती है।'** धीरे धीरे बन गई हुई मेरी इस धारणा को सरलताके साथ गलत प्रमाणित नहीं किया जा सकता। इससे गार्हस्थ सौंदर्य और सुख मिट्टीमें मिल जाता है। और रह जाता है जीवन भरके लिये तड़पना, जलना और सिसकना मात्र। तुमने अपने उस पतिकी उपेक्षा की, अवज्ञा की, अपमान किया और निरादर किया जो मात्र विचारोंकी दृष्टिसे ही नहीं वरन् कार्यों की दृष्टिसे भी अत्यन्त ही उदार है। तुम्हारा अपना विवाह सम्बन्ध ही उसके मन्तव्य और कर्त्तव्य की दृढ़ता का परिणाम है। तुम्हारे इस विरुद्धा चरणका परिणाम उसके जीवन पर कैसा भयंकर हुआ है, जानती हो तुम ? उसकी आयु कमसे कम २० वर्ष कम होगई है और वह इस समय जो दारुण क्लेश सहन कर रहा है उनके देखने से नहीं मात्र सुनने से ही सदहृयों के रोमाञ्च खड़े हो जाते हैं। विश्वास है कि वह अपने उच्चादर्श और ध्येय से अन्तिम श्वांस तक भी विचलित नहीं होगा चाहे उसके सम्मुख कुछ भी प्रलोभन और यातनायें रखी जायं। यह अवश्य है कि उसका हृदय 'जीवन संगनी' के अभाव को कभी कभी बुरी तरह अनुभव करता है किन्तु वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ और सुख के निमित्त समाज और धर्म के आदर्श को कुरबान करने के लिये कभी भी तय्यार नहीं है। फटे हुये दूध, बाल पड़े हुये कांच और गुज पड़े हुये केश का पुनः असली दशा में आजाना शायद असंभव है अब। मेरी आकांक्षायें और कामनायें, लालसायें तथा इच्छायें मरी नहीं हैं क्यों कि मैं योगी नहीं, वीतराग संन्यासी महात्मा भी नहीं हूं। मैं दम्भ और मक्कारी भी करना नहीं चाहता हूं।

मेरे आदर्श की बात शायद तुम्हें स्मरण होगी। मातृ-मन्दिर की स्थापना के आरंभ में जब मैंने अपनी सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण कर के नगर भिक्षा का व्रत लिया था तो सब से पूर्व हाथ में झोली लेकर मैं तुम्हारे ही द्वार पर भिक्षा मांगने आया था। मेरी उस भावना का स्मरण करो और अपनी इस कृति तथा मनोवृति का मुकावला करो।

सुना है कि तुम्हारे पूज्य पिताजीने तुम्हें तुम्हारी भूल समझाई थी किन्तु फिर भी तुम अपनी 'नेक नियती' पर अटल हो। काश, कि तुम दूरदर्शिताके साथ मनन करतीं और समझतीं कि तुम्हारा कार्य दूसरे छोटे बचोंका भविष्य अंधकार पूर्ण बनाने वाला और तुम्हारे पति के जीवन में धुन लगा देने वाला होगा। किन्तु अब क्या 'जब चिड़ियां चुग गई खेत ?' रोओ जब तक कि अन्त न आजाय। यह मैं जानता हूं कि मेरी ओरसे और सास-श्वसूर की ओर से भी तुम्हें वह सुख नहीं मिला जिसकी तुम्हें जरूरत थी, आशा थी या जो मिलना चाहिये था ; परन्तु इसका प्रधान कारण भी तुम जानती हो। मेरी सभी शक्तियों का दूसरों के, पीड़ितों और दुखियों के कष्ट निवारण में ही सदा लगते रहना। यह ही मेरा व्यसन है, शौक है और है जीवनोद्देश्य भी। फिर भी मैंने यथा शक्य उद्योग अवश्य किया था, यदि पूर्ण उद्योग नहीं कर सका तो क्या उसका बदला यह था कि तुम मुझे अदालत में खड़ा करके अपनी बेटी को मुझ से छीन लो ? दूसरी छोटी बेटी को कठोर हिदायत दे दो कि वह मुझ से बात तक न करे, भेंट न करे। उस दिन होस्टल की सुप्रिन्टेंडेण्ट और प्रिन्सीपल के आग्रह पर भी उसका मुझ से - अपने पिता से मिलने का इनकार कर देना क्या कभी भुलाया जा सकता है ? यह ही है तुम्हारी शिक्षा और आचरण !

तुम्हारी दृष्टिमें नौकरी अधिक आवश्यक और उपयोगी है बनिस्बत पति सेवाके, उसकी सहधर्मणी बनने तथा बच्चों की शिक्षा और रक्षा के। क्यों न हो पेंशनेबिल पोस्ट जो ठहरी, बुढ़ापेमें सहायक होगी, शायद गार्हस्थ जीवन की वह सर्वोच्च सीढ़ी है तुम्हारी दृष्टिमें।

छोटे छोटे बचों को मेरे सिर डालकर तुमने बराबरी का दावा किया है शायद। बहुत ठीक, जीवित ही मुझे तुम्हें मृत समझ लेना होगा और तुम देखोगी कि म इस कर्त्तव्य को भी निभाऊंगा चाहे मुझे कितना भी कष्ट और कठिनाईयां सहना पड़ें। एक विधुर शायद इतने कष्ट नहीं सह सकता जितने कि मैं वर्षों से, तुम्हारे जीवित रहते, सह रहा हूं और इसका कारण बस इतना ही है कि लोक मुझे एक सुशिक्षिता और कमाऊ स्त्री का पति कहते हैं। तुम्हें मालूम है कि मेरा परिचय इस देश के कई सुप्रसिद्ध करोड़ पतियों से है और विश्ववन्द्य नेताओंसे भी है। साधारण परिचय ही नहीं है वरन् कई तो मुझ पर विशेष कृपा भी रखते हैं और इन्हीं सबके सहयोग तथा सहायता से मैंने अब तक लाखों रुपया विभिन्न प्रकार की जन सेवाओंमें खर्च किया है। किन्तु व्यक्तिगत रूप में आज मेरी क्या दशा है, जानती हो ? मालूम नहीं कितनी बार मैंने समुद्र में डूब जाने की बात सोची है। शायाद तुम्हें विश्वास न हो किन्तु वास्तविकता यह है कि कभी कभी हफ्तों ही नहीं वरन् महीनों मेरे पास एक पाई भी नहीं रहती है। जब कि मैं ऐसे नगर में रहता हूं जहां बात करने और चलने फिरने के भी पैसे लगते हैं। जहां बिना पैसे के शायद श्वांसलेना भी कठिन है। २, ४ दिन ही नहीं १४-१४ और २१-२१ दिन तो मालूम नहीं वर्ष में कितनी बार मुझे उपवास किये हो जाते हैं। कमसे कम वस्त्र जो संभव है, मैं काममें लाता हूं और इन सब आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये मैं इतना कम व्यय करता हूं जितने से कम कभी भी संभव नहीं है। तुम्हें यह भी मालूम है कि मुझे किसी भी प्रकार का और कोई भी व्यसन या शौक नहीं है। मैंने सहस्रों मासिक कमाये और खर्च किये हैं, अपने लिये नहीं, दूसरोंके लिये। फिर आज यह दारुण कष्ट मैं क्यों सहन कर रहा हूं और अपने शरीरको क्यों भस्मसात कर रहा हूं। इसका एक मात्र कारण है मेरा सिद्धान्त प्रेम और अपने आचार्य के निर्दिष्ट आदर्श की रक्षा। मैं इस विषयमें, किसी के साथ भी, कोई समझौता करनेके लिये, कभी भी, तय्यार नहीं हूं, तुम्हारे साथ भी नहीं, बस। मैं हूं—

—जिसकी तुम कभी अर्धांगी थीं।

रॉकट मेल !

विज्ञानका अद्भुत चमत्कार

अमरीकाके पसिद्ध वैज्ञासिक डा० एफ० के० टीशमैनकी योजनाके अनुसार राकट मेल द्वारा न्यूयॉर्कसे शिकागो तक तीन मिनटमें डाक पहुंच जाया करेगी। इन दोनों शहरोंके बीचकी दूरी ७०० मील है। राकेट इस्पात, एल्मुमीनियम और मैग्नेशियमके मिश्रणसे बनी मिश्रितधातुसे बनाया जायगा। इसका संचालन रेडियो किरण द्वारा स्वयं चालित पाइलटसे होगा। विज्ञानकी इस उन्नति के कारण डाककी गति बहुत तीव्र हो जायगी और दिल्लीसे भेजी चिठ्ठी कलकत्तेमें पांच मिनट बाद मिल जाया करेगी।

गीत

★

(श्री रमेशचन्द्र माहेश्वरी 'प्रदीप')

⁂

मर-मिट मुक्त बनें !

* * *

जलता आज जननि का मन्दिर,
-क्षार हुआ अपना भी घर-घर,
पर जो राख बची मुट्ठीभर,
मलें उसे ही अपने तन पर, रुद्र-रुप बन जाएँ !

रे, पथ की प्राचीरं फोड़ें,
रे, माता के बन्धन तोड़ें,
या फिर अपना जीवन छोड़ें
या कि करें हम, या कि मरण को अपने गले लगाएँ !

आजादी की देवी आओ,
लो शोणित से प्यास बुझाओ,
आज मरण त्योहार हमारा,
हो क्षतशीश जननि चरणों में किन्तु नहीं झुक पाए !

युवको, आज तनो !
मर-मिट मुक्त बनो !

निरुपमा

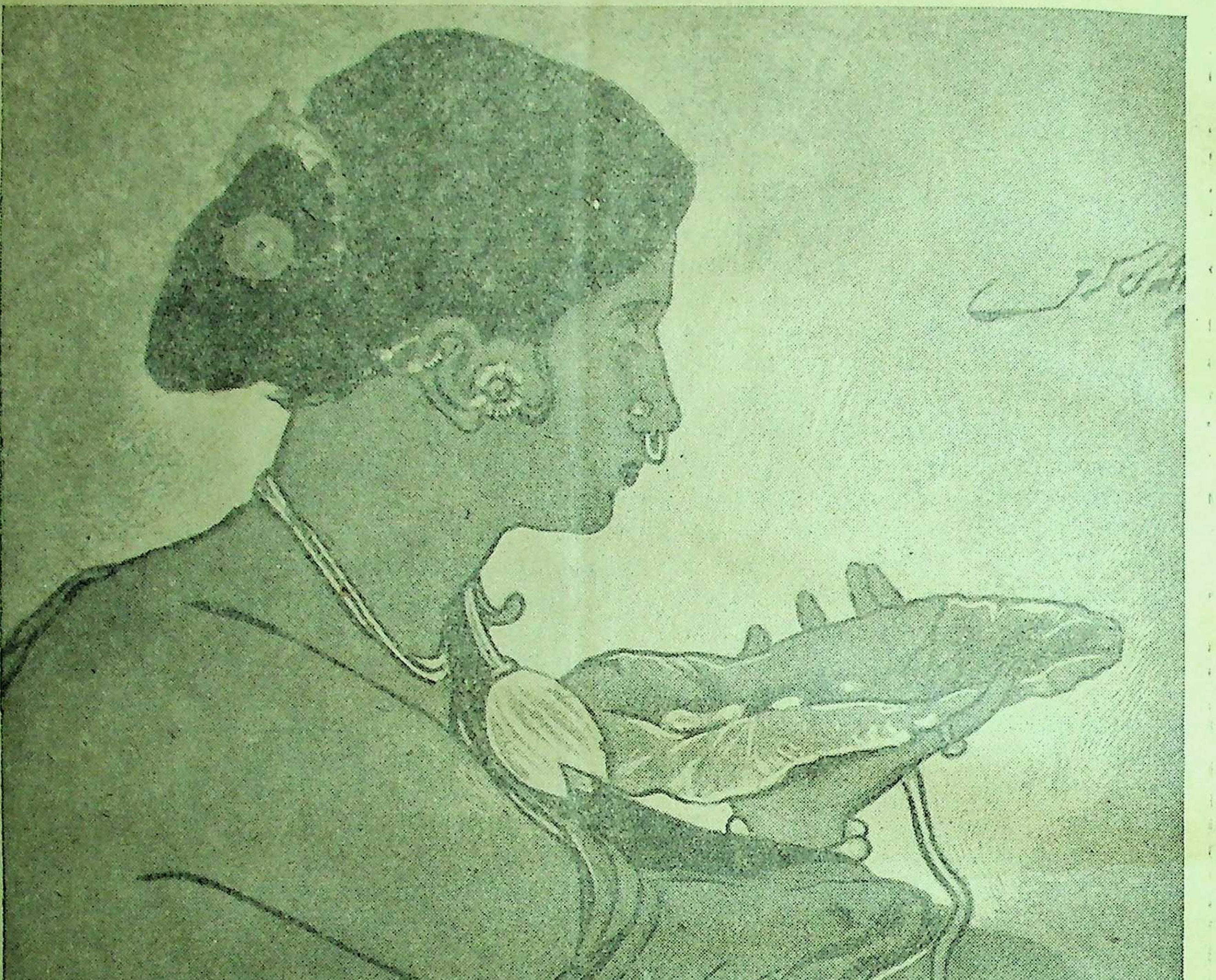

— अवनीन्द्रनाथ ठाकुर

साड़ी पहने नारी का यह निरूपण महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के भतीजे डा. अवनीन्द्रनाथ ठाकुर सी. आई. ई. ने किया है। यह प्रसिद्ध कलाकार सोसायटी आफ ओरियण्टल आर्ट्स, माडर्न स्कूल आफ इंडियन आर्ट्स के संस्थापक तथा बंगाल में कला-जागरण के नेता हैं।

श्रेष्ठ वस्त्र के लिये सूत की उत्तमता और बारीकी आवश्यक है। बारीक बुनाई और बढ़िया मज़बूत सूत के संयोग से निश्चय ही बढ़िया वस्त्र तैयार होता है।

केशोराम की साड़ियों, धोतियों और कमीज़ के कपड़ों की बुनाई बारीक और डिज़ाइन मौलिक होते हैं।

हमारी काटन मिल में तैयार हुए अनुपम वस्त्रों की लोक प्रियता प्रतिदिन बढ़ रही है।

केशोराम

श्रेष्ठ सूती वस्त्र

युवकोंसे-

लेखक-महोपदेशक श्री पं० छोटरामजी
शुक्ल, साहित्यरत्न

प्यारे युवको ! इतिहास बतलाता है कि त्रेतायुगमें सारा देश पापियोंके पापसे प्रपीड़ित हो रहा था। पृथ्वी अनाचारोंसे बार बार कम्पायमान होती थी। धर्म और अधर्ममें भारी 'टग–आफ–वार' हो रहा था। सज्जन पुरुषोंको सांस लेना तक दुश्वार था। असुर राज रावण अन्यायकी सदेह मूर्ति बनकर अपने कुकर्मों द्वारा धराधामको कम्पायमान कर रहा था। वह तपस्वियों तकसे उनका रक्त कर स्वरूप लेता था। उस समयकी देशकी दीनावस्था, धर्म तथा सदाचारका–ह्रास, जाति, समाजकी दुरावस्थाने युवक सम्राट वीर हृदय श्रीरामचन्द्रजीकी हृदयतन्त्रीके तारोंको हिला दिया था। वे क्षुब्ध हो उठे थे। देशोद्धार के कठोर व्रतकी उन्होंने प्रतिज्ञा की थी। स्वामी रामतीर्थने कहा है:—

तू ही है रहेरुवां, राम कहो राम कहो ;
प्यारो है ध्यान कहाँ, राम कहो राम कहो।
मुँहमें अगर हैगी जुबाँ, राम कहो राम कहो ;
लेके तुम तीरो कमाँ, राम कहो राम कहो॥
रामने कौम की मुहब्बतका उठाया बीड़ा ;
रामने मुल्ककी खिदमतका उठाया बीड़ा।

* * *

बस, युवक हृदय श्रीरामचन्द्रजीने आर्यजाति के संगठनका शंख फूँका। निषादराज अछूत को गले लगाया। भीलनीके जूठे बेर प्रेमसे खाये, मानव जातिके संगठनके अलावा उन्होंने वानरों, रीछों तथा राक्षसों तक को आर्य सभ्यताका पाठ पढ़ाया; उनको हृदयसे लगाया। हमारे युवकगण इस बात पर विचार करें कि वर्तमान समय कैसा है और हमारा इस समय कर्तव्य क्या है और आदर्श चरित पुरुषोत्तम रामके चरितसे हम क्या शिक्षा ले सकते हैं।

स्वनाम धन्य महायोगेश्वर वीरवर श्रीकृष्णजीने जिस प्रकार जाति, धर्म, समाज तथा देशकी रक्षा की थी, उन्होंने जिस पकार जरासंध, दुर्योधन, शिशुपाल इत्यादि देश द्रोहियोंसे लोहा लिया था, उन्होंने जिस प्रकार आर्य संस्कृतिकी रक्षा की थी, तदनुसार युवकगणोंका कर्तव्य है कि परिस्थितिसे मुकाबला करें, घबरावें नहीं। खुदाई तक का दावा करने वाला पुण्डरीक अहंकारसे उन्मत्त हो घोर अन्याय कर रहा था, तब वीर युवक श्रीकृष्णने उसका दलन कर आर्य जातिकी आन व शान रखी थी। सोलह वर्षीय वीर अभिमन्युने देशकी रक्षाके लिए द्रोण निर्मित चक्रव्यूह को भेदनकर किस प्रकार हँसते हँसते अपने प्राणों की आहुति दी थी, वह सब किसीपर विदित है। निरभिमान-निरहंकार मूर्ति बापू, विश्व मानव के लिए, उनके सुख, शांति, अमन चमन के लिए, उनको सुन्दर से सुन्दरतर और सुन्दरतर से सुन्दरतम बनाने के लिए सदैव चिन्ता व उद्योग किया करते हैं; इन बातोंपर युवकों को गंभीर विचार करना चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि हम मानसिक स्वतन्त्रता प्राप्त करें, बुद्धिसे काम लेना सीखें और अपनी संस्कृतिसे प्रेम करें।

कहते हैं कि क्रांति धर्म की विध्वंसक नहीं प्रत्युत प्रबल समर्थक है। धर्म हमें जीना और जीने देना दोनों सिखलाता है। संसार के सामने ऊँचे उठने का नाम धर्म है। धर्म कर्मवीरों की सम्पत्ति है। भारत की एक-एक विधवा आत्मत्याग की साकार मूर्ति है; परन्तु आज तो वे कराह रही हैं। उनका करुण क्रन्दन कुछ कविताओंमें तथा अखबारों के पृष्ठोंपर ही अङ्कित होकर रह जाता है। इधर युवकों का ध्यान शीघ्रातिशीघ्र जाना चाहिए।

हाँ, रंगमंचपर स्पीचें तो खूब होती हैं लेकिन परिधिके बाहर उनका कुछ मूल्य नहीं। कहने वाले बहुत, परन्तु कथन को कार्यान्वित करने वाले बहुत थोड़े हैं। कर्तव्य की भीषण तलवार की नोंकपर चलने के लिए हमारे नवयुवक भ्राताओं को अग्रगण्य होना चाहिए। उनका संकल्प यही रहे कि हम अनाथ को सनाथ करेंगे, स्वयं दुःख झेलकर भी दूसरोंको सुखी करेंगे। सुवर्ण जब अग्निमें तपाया जाता है, तभी कुन्दन कहाता है। हीरा कटकर ही अँगूठीका नगीना बनता है। महंदी का पत्ता पिसकर ही रंग लाता है। एक-एक युवक राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति है। किंतु कैसा युवक ? निर्बल, नालायक, नाकामयाब, चरित्र-बल हीन ! उफ़, ऐसा युवक देशके लिए भार है, संक्रामक रोग है। वह देशके लिए सम्पत्ति नहीं, कर्ज है ! ऐसी सम्पत्ति से तो विपत्ति ही भली। जिस युवकके पास पर्याप्त चरित्र बल है, साहस और त्यागकी भावना जाग्रत है, वही युवक राष्ट्रकी सम्पत्ति हो सकता है, और उसीसे भारत माताको गर्व है। कलह और मतभेद के कारण हम लोगोंमें अनेक सभाएँ संस्थायें खड़ी हो गई हैं। एक मत न रहनेसे हमें आत्मिक वेदना हुई। रोटीका सवाल सामने आया। भूखके कोड़े और आवश्यकताके तर्क जनताको एक दूसरे के निकट ला रहे हैं। झूठे आडम्बर अब हटने लगे हैं। शस्य श्यामल बंगाल और बिहार इन दिनों यम–सदन बन गये हैं। बुभुक्षित नर नारी कहीं कूड़के टीनसे कुत्तों, कव्वोंको भगाकर, खाद्य–कुखाद्य खाते हुए दिखाई दे रहे हैं: कहीं फुटपाथ और राहकी बीचकी नालीमें पड़े हुए वमन और मृत पशुओंका सड़ा–गला मांस उदरस्थ करते हुए नजर आ रहे हैं। भीषण क्षुधा-मृत्युका परिमाण बढ़ता नजर आ रहा है। प्रलयकारी बाढ़ से महान् क्षति पहुँच रही है। रोगोंका प्रकोप हो रहा है। महायुद्धका ५ वां वर्ष बीत रहा है। प्रकृतिका मानवतापर भयंकर कोप आँखोंके सामने है। बाढ़ पीड़ित राजपूताना, जलप्लावित काशीकी दुर्दशा अत्यंतही करुणाजनक है। दिनप्रति दिन व्याकुलता बढ़ती जा रही है। समय प्रत्येक व्यक्ति के लिए कसौटीका है। आशा है कि हमारा युवक समाज भी इस संकटग्रस्त समयमें अपनी शक्तिका पूरा परिचय देगा और अपनेको कुंदन साबित करेगा। स्वामी रामतीर्थने कहा है:—

" कुंदनके हम डले हैं;
दिल चाहे सो गला ले ! "

पूरब से उठ आई आँधी !

[श्री राजेन्द्र शर्मा]

☆

तमने घेरे तरु बहुतेरे,
जर्जर झर-झर, झर-झर गेरे,
पर कुछ झूझ रहे झंझा से खोज रहे थे अपना साथी !
पूरब से०

तृन जो अपना तन बल हारे,
अपने पर अनुशासन हारे,
पर उनमें भी कुछ ऐसे थे चिपक रहे पा अपना साथी !
पूरब से०

सरितामें उठ आई किलोलें,
(नौका जिन पर डगमग डोलें,)
गिर-गिर उछल रहा जल फिर-फिर, उसने कभी न सीमा बाँधी !
पूरब से०

जीवन क्या संघर्ष न जिसमें
आँधी-सा, मानव क्या जिसमें
नहीं सहन करने का साहस—जीवन भर जीवनमें आँधी !
पूरब से०

द्रष्टव्य–

" माहेश्वरी " के लिये आप जो कुछ भी लिखकर भेजें वह कृपा करके कागज की एक ही ओर, पर्याप्त मार्जन छोड़कर और सियाही से, सुस्पष्ट अक्षरों में ही लिखकर भेजा करें। एक से दूसरी पंक्ति में भी अन्तर होना अवश्यक है ताकि आवश्यक संशोधन किया जासके। उपर्युक्त बातोंका ध्यान न रखने से सम्पादन और कम्पोजिंग तथा संशोधन में जो असुविधायें होती हैं उन्हें लेखक और प्रेषक महाश्य नहीं समझते हैं। लेखों के प्रकाशन में विलम्ब का भी यह एक मुख्य कारण है। आशा है कि हमारे निवेदन पर ध्यान दिया जायगा।

—सम्पादक,

नई विश्व-वर्ण माला–

संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके पूर्व सिनेटर प्रज्ञाचक्षु रावर्ट ओवेनने एक सरल वर्णमाला तैयार की है जो समूचे संसारके कोई भी भाषा बोलने वाले व्यवहारमें ला सकते हैं। गान्धीजीने इस वर्णमाला को पसन्द किया है।

सिनेटर ओवेनका, जो वकील तथा विशिष्ट सार्वजनिक नेता हैं, दावा है कि इस वर्ण मालाके द्वारा समस्त संसारकी निरक्षरता मिटाई जा सकती है। इस वर्णमालाके समर्थकोंमें जार्ज बर्नार्डशा भी हैं। ओवेनने इस वर्णमालाका नाम 'ध्वनि अनुयायी स्वरांकन विश्व वर्णमाला' रखा है। इसमें ४२ अक्षर हैं तथा संयुक्ताक्षरोंकी आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक अक्षर एक उच्चरित ध्वनिका निदर्शक है। अन्वेषक का कहना है कि इस लिपिके सहारे कोई भी कवि अपनी भाषाके अलावा अन्य कोई भाषा किसी भी ऐसी पुस्तकके सहारे लिख सकता है जो सीखी जाने वाली भाषा तथा उनकी भाषामें लिखी हो।

सीलोनके भूगर्भमें–

लाखों वर्ष पुराने अवशेष

सिलोन के भूगर्भवेत्ता श्री आर० देरानियागाला, सिलोन के भूगर्भसे ऐसे स्तनधारी जीवोंके पाषाणपिंजर (हड्डियां, जो लाखों वर्ष भूगर्भमें रहनेसे पाषाणवत् हो जाती हैं) प्राप्त करनेमें सफल हुए हैं, जो आजसे २० से ३० लाख वर्ष पूर्व सिलोनमें मौजूद थे। इसी प्रकार कई पौदोंके पाषाण पंजर भी प्राप्त हुए हैं। इन सबको कोलम्बोके अजायब घरमें रखा जायगा।

कमज़ोर, और कच्चे कागज़ों के पेकिंग से होनेवाली

अपने व्यवसायकी हानिको बचाइये

हमारा मज़बूत, चीमड़ और सुन्दर

गैंडा मार्का

बैम्बू पल्प का बना हुआ क्राफ्ट पेपर

आपकी मुसीबतों को दूर कर देगा

यह उच्चकोटि का पेकिंग कागज़ है

भारतीय बाजारमें आज इसका प्रतिस्पर्धी नहीं

हमारी मिल वाटरप्रूफ कागज (Water Proof Craft Paper) तथा हरेक किस्मका बोर्ड भी तैयार करती है।

एक बार इस कागज़ और बोर्ड का व्यवहार करनेपर
आप दूसरे पेकिंग कागज़ और बोर्ड का नाम न लेंगे

ओरिएण्ट पेपर मिल्स लिमिटेड

८, रायल ऐक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता

राजस्थानी संसार

महिला मंडल, उदयपुर

दो हजार स्लाइडों के साथ मेजिक लेनटर्न

महिला मंडल की ओर से कई विषयों पर मैजिक लेनटर्न की मदद से चित्र दिखा कर भाषण दिये जाते थे। इस कार्य की उपयोगिता और महत्व को दृष्टि में रख कर दो हजार स्लाइड और मेजिक लेनटर्न लिया गया है।

रामायण, महाभारत, ध्रुव, प्रहलाद आदि धार्मिक चित्रों के साथ साथ समाज सुधार, स्वास्थ, सफाई, नशा निषेध, मनोरंजन, कृषि, प्रौढ़ शिक्षण, प्राथमिक चिकित्सा, धातृ विद्या, बाल शिक्षण ट्रेनिंग इत्यादि की तस्वीरें भी हैं, अतः राजस्थान को इस सामग्री से अधिकाधिक लाभ मिल सकेगा।

प्रचारक को सुविधानुसार जहां जहां की मांग होगी चित्र दिखाने के वास्ते भेजा जा सकेगा।

कार्यकारिणीका चुनाव, पेंतीस हज़ार का बजट

आगामी तीन वर्षके लिये नया चुनाव हो गया है और विभिन्न विभागों को सुचारु रूप से चलाने के लिये कई उपसमितियों का चुनाव कर विद्यालयों, पाठशालाओं, जागृत महिला साक्षरता आंदोलन, अध्यापिकाओं का ट्रेनिंग, श्री कस्तूर बा ट्रेनिंग विद्यालय, और क्षात्रालय, महिला क्लब, शाखायें, पुस्तकालय, वाचनालय, गश्ती पुस्तकालय, महिला उद्योगशाला इत्यादि में इस वर्ष पेंतीस हजार रुपये खर्च करने का बजट स्वीकार किया है।

महिलाओं के खेलों की व्यवस्था लेडीज प्ले सेन्टर का उद्घाटन

उस रोज महिला-मंडल का पांचवा जन्म दिन, वृक्षारोपण एवं गृह-प्रवेश का उत्सव श्रीमान् डा० मोहनसिंहजी मेहता एम. ए, एल-एल बी., पी. एच-डी., बार-एटला की अध्यक्षता में मनाया ही था कि महिला-जागृति में रुचि रखने वाले सज्जन यह संवाद हर्ष के साथ पढ़ेंगे कि मेवाड़ राज्य के शिक्षा विभाग ने लगभग दो हजार रुपये के खेल तैयार कर उपयोग करने के लिये महिला मंडल को सौंपे हैं। महिला-मंडल ने उक्त खेल और अपने महिला क्लब के १५००) रु० के सामान और रेडियो को भी सम्मिलित कर महिला क्रीडांगण (लेडीज प्ले सेन्टर) का उद्घाटन लेडी विजयराघवाचार्य द्वारा करवाया।

—दया शङ्कर श्रोत्रीय।

नरेश का कथा श्रवण

उदयपुर नरेश श्रीमान् सर भूपालसिंहजी साहब बहादुर ने प्रसिद्ध वक्ता श्री स्वामी भगीरथ रामजी महाराज से चार महीने तक समग्र वाल्मीकि रामायण की कथा प्रति दिन डेढ़ घंटे सप्रेम श्रवण की। कथा समाप्ति के दिन पूज्य श्री स्वामीजी का विशाल राजकीय लवाजमे के साथ शानददार विराट जुलूस निकाला गया। जुलूस में राजवर्गियों व नागरिकों की भारी भीड़ थी। श्रीमान् हिज हाईनेस की धार्मिक ऐतिहासिक तथा साहित्यिक कथाओं में अभिरुचि अत्यन्त प्रशंसनीय है, आप की प्राचीन मान मर्यादा व धार्मिकता अन्य नरेशों को भी अनुकरणीय है।

—पृथ्वीराज वर्म्मा।

भीलों पर अत्याचार

जिन भीलोंने यज्ञोपवीत लिये थे और शराबका बहिष्कार किया है उनमेंसे ९ भीलों को झाबुआ राज्य की पुलिसने गिरफ्तार कर लिया है। इन भीलों की गिरफ्तारी राज्यके राजनीतिक विभाग की सूचना पर की गई है। इन भीलोंने राज्य और जागीरोंके नौकरों की बेगार आदि की ज्यादतियोंके प्रति विरोध कर शिकायतें कीं और तार दिये थे।

अभी अभी पोलिटिकल ऐजेन्ट और रेजिडेन्ट इन्दौरसे झाबुआ आनेवाले थे। उनके लिए राजाने शिकार की व्यवस्था करनेके लिए जंगलके कच्चे रास्ते साफ करनेके लिए हजारों भीलोंको बेगारमें पकड़ा था। इन भीलोंके विरोध करने पर यह सारी व्यवस्था गड़बड़ीमें पड़ गई। विरोधका एक कारण यह भी है कि जिस स्थान पर शिकार की व्यवस्था की गई थी उस स्थानको भील पुरातन प्राचीन स्थान मानते हैं और उस पवित्र स्थान की वे रक्षा करना चादते हैं।

झाबुआ राज्य में अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। अभी एक १२ वर्ष की कन्याका अपहरण भी हुआ है जिसकी रिपोर्ट तक पुलिसने नहीं दर्ज की है। यहां विश्वास किया जाता है कि पुलिसका डाकुओंके साथ मेल जोल है। पोलिटकल डिपार्टमेण्ट को दिये गये तारों की भी सुनवाई नहीं होती है।

मध्यभारत के भीलों का विराट सम्मेलन

शराब और मांस छोड़ने की प्रतिज्ञा। रियासती अत्याचारों का विरोध।

मध्यभारत की रियासतों के भीलों में झाबुआ राज्य द्वारा भीलों के जनेऊ तोड़ने, बेगार लेने, स्त्रियों पर होने वाले अत्याचारों तथा सुधारवादी भीलों की गिरफतारी से रोष फैल रहा है। भीलोंने इन अत्याचारों का विरोध करने के लिए बामनिया में एक विराट भील सम्मेलन किया। मध्यभारत और राजपूताना की झाबुआ, कुशलगढ़, बांसवाडा, सैलाना, गवालियर, रतलाम आदिकी रियासतों के भीलोंने छः हजारसे अधिक की संख्या में उपस्थित होकर पंचायत सम्मेलन किया। मनोनीत सभापति उज्जैन हीरा मिल के मैनेजर श्री जॉल नहीं आसको अतएव राजस्थानी भील सेवक संघके संचालक पं.बालेश्वर दयालजी सभापति हुये।

भील सम्मेलन और पंचायत की कार्यवाही देखने के लिए रियासतों के अधिवासी ईसाई पादरी और कुछ सरकारी व्यक्ति भी उपस्थित थे।

सम्मेलन में ढाई हजार भील क्षत्रियोंने यज्ञोपवीत लिये। भीलों की पंचायत व्यवस्था चलाने के लिए सम्मेलनने एक सरपंच (प्रतिनिधि) २५ सरपंच, प्रधान मंत्री, मंत्री और खजांची को चुना। सरपंचों को सम्मेलन में पगड़ी आदि उपवस्त्र प्रदान किये गये। सम्मेलन के अन्तमें हजारों भीलों का एक जलूस राम मंदिर पर पहुंचा और वहां ध्वजारोहण किया गया, और नारियल हाथमें लेकर शराब, मुर्दा मांस, आदि कुरीतियों को छोड़ने की प्रतिज्ञा की गई। सम्मेलन में ९ महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास किये गये। इन प्रस्तावों का समर्थन तथा अनुमोदन भीलोंने ही अपनी भाषामें किया।

रियासती अत्याचारों का विरोध

रियासतों के राजा महाराजाओं से एक प्रस्ताव द्वारा भीलों ने मांग की कि वे भीलों को चोर न समझें, और सभ्यताका व्यवहार करें। दूसरे प्रस्ताव द्वारा रियासती शासकों को विश्वास दिलाया कि भील पंचायत का उद्देश्य भीलों में सामाजिक सुधार करना है। तीसरे प्रस्ताव द्वारा भील जाति से शराब और मुर्दा मांस छोड़ने का आग्रह किया गया तथा भीलोंको शराब पीने के लिए जो रियासतें मजबूर कर रही हैं उन की निन्दा की गई। पांचवें प्रस्ताव द्वारा यज्ञोपवीत की रक्षामें मार सहने वाले, जेल भोगने और जाली मुकदमों का सामना करने वाले भील क्षत्रियों की प्रशंसा करते हुए उन रिसायती शासकों और सामंतों की निंदा की गई जो भीलोंका क्षत्रिय बनना सहन नहीं कर सकते। पांचवें प्रस्ताव द्वार भीलों से प्रार्थना की गई कि वे अपने लड़कोंको ईसाई मिशनरियों के स्कूलों में पढ़ने न भेजें। छठे प्रस्ताव द्वारा भीलों को चेतावनी दी गई कि जब तक दूसरी जरायमपेशा जातियां, शराब, गौमांस और मुर्दा मांस का त्याग न करें और भीलोंके देवताओंको न मानें तब तक उनका बहिष्कार रखा जावे। सातवें प्रस्ताव द्वारा सिंध सरकार द्वारा सत्यार्थ प्रकाश पर लगाए गए प्रतिबंध की निंदा की गई। आठवें प्रस्ताव द्वारा भीलों की सहायता करने वालोंका आभार माना गया और कार्यसंचालन के लिए पंचायत का चुनाव किया गया।

सम्मेलन पूर्णतः सफल रहा। भीलोंमें अभूतपूर्व जागृति हो रही है। —संवाददाता।

ग़रीबी का पाप

अमेरिका के नगरों जैसी भव्य और शानदार सर्क्यूलर रोड इन्दौरमें तीस लाख रुपयों से अधिक धन खर्च करके बनानेकी योजना चल रही है। यह सड़क शहर के उन हिस्सों से निकाली जा रही है जिनमें सैंकड़ों वर्षों से गरीब लोग कच्चे मकानों और मामूली गलियों में आबाद हैं। इसके सैंकड़ों मकान तोड़ेजाने वाले हैं। कई तोड़ेजा चुके हैं। उन्हें चार आनेसे एक रुपये फीट तक मुआवजा दिया जा रहा है। और फिर इसी जमीन को सरकारी रेट पर, धनवानों को तीन रुपये फीटके भावसे बेचा जा रहा है। यह अत्याचार गरीबोंपर क्यों? फिर उन्हें शहर के बाहर वीरान और दूर हिस्सों में रहने को जमीन देने का वायदा किया गया है। मालूम नहीं कितने गरीबों की छातियोंपर इन धनाढ्यों के महलों का निर्माण होगा और इन्दौर शहरकी शान शौकत को चार चांद लगेंगे। यह गरीबी का पाप, महा पाप है।

—संवाददाता।

रियासती कार्यकर्ता संघ

राजपूतानामें प्रान्तीय संगठन

अलवरमें विराट समारोह

अलवरमें राजपूताना रियासती कार्यकर्ता सम्मेलन का अधिवेशन श्री जयनारायणजी व्यासके सभापतित्वमें हो गया। इसमें राजपूताना की २० रियासतोंके लगभग २०० कार्यकर्ता सम्मिलित हुए थे। मध्य भारतके राज्योंके कार्यकर्ता भी काफी संख्यामें उपस्थित थे। कुमारी मृदुला बहिन सारा भाई कस्तूर बा राष्ट्रीय स्मारक कोषके सम्बन्धमें बातचीत करने आई थीं।

सम्मेलनमें रियासती कार्यकर्ता संघका विधान स्वीकृत हुआ। संघका उद्देश्य रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापनाके सम्बन्धमें सहयोग देना और राज्यों की प्रजाकीय संस्थाओं की समान रीति नीति रखना तय किया गया। कार्यकर्ताओंके शिक्षण की व्यवस्था करनेका भी एक प्रस्ताव पास किया गया। कुमारी मृदुला बहिन ने सम्मेलनमें बताया कि राजपूतानामें स्त्रियोंकी भलाई के लिए क्या किया जाना चाहिए। व्यासजीने अपने भाषणमें उत्तरदायी शासन और नजरबन्दोंकी रिहाई आदि की मांग की।

एक प्रस्ताव में गांधी जी के संभाव्य उपवास के सम्बन्ध में चिंता प्रकट की गई और राज्यों में चोर बाजारी और रिश्वतखोरी को रोकने का निश्चय किया गया। दूसरे प्रस्तावों में कोटा में श्री अभिन्न हरि जी और गोपाललाल जी कोटिया की गिरफ्तारी की निन्दा की गई। बीकानेर के दमन की निन्दा करते हुये नागरिक अधिकारों और शासन सुधारों की मांग की गई। देशी राज्यों से सम्बन्ध रखने वाली समस्याओं के अध्ययन और प्रकाशन के लिये एक उपसमिति, मेवाड़ तथा डूंगरपूर आदि की स्थिति के सम्बध में विचार करने और कार्यवाही करने के लिए उपसमिति और संघ के लिए धन संचय के लिए एक उपसमिति का निर्माण किया गया। —संवाददाता।

सीकर में जाट छात्रावास की स्थापना

रावराजा कल्याणसिंह जी ने गत ३ दिसम्बर को एक जाट छात्रावास की आधार शिला रखी। सीकर में इसकी बहुत दिनों से आवश्यकता अनुभव की जा रही थी। छात्रावास के लिए ५ एकड भूमि और २०००० रु. प्राप्त कर लिया गया है।

—मारवाड़ी पब्लिसिटी ब्यूरो।

यह मारपीट क्यों ?

लेखक—
श्री लालकृष्णाजी भुराडिया

'तड़ातड़' की आवाजने अर्धसुप्त यात्रियों को सजग कर दिया—सभी एकदम ऐसे चौकन्ने होगये जैसे ए० आर० पी० का एलार्म हुआ हो, पर बात ऐसी नहीं थी, मामूली बात थी–मार–पीट जो हर समय हर ट्रेनमें हो उठना उतना ही मामूली है जितना किसी जमानेमें इसी रेल्वेमें जगह पाना था।

अलस्सुबह का समय था—पक्षी भाट रूपमें शायद अपने कलरवमें भगवान सूर्य देवके गुण गान कर रहे थे या अपनी अपनी प्रेमिकाओंसे हास परिहास कर रहे थे या गायनके साथ कोई खेल खेल रहे थे; राम जानें जो भी कर रहे हों, पर बड़ा भला मालूम पड़ रहा था—ट्रेन खड़ी थी और कईयों का ध्यान खिड़की के बाहर स्थित इस दृश्यकी ओर था और उन कईयोंमें एक मैं भी था। मैंने उस कलरवके लिये उपरोक्त तीनही बातें शायद तीनही सेंकडमें सोच पाई होंगी कि तड़ातड़की आवाजके साथ गाली गलोच स्पष्ट और उच्च स्वर में सुनकर उस प्राकृतिक एवं सुरम्य दृश्य से ध्यान हटाकर मुझे उधर देखना ही पड़ा–देखा दो अधेड़ व्यक्ति गाड़ी में चढ़ चुके हैं और तीसरा चढ़ रहा है और शायद दो या तीन चढ़ने की ही नियतसे बाहर खड़े हैं। दरवाज़ा खुलने की नौबत तो शायद रेल्वे टरमिनस पर ही आती हो अतः मनुष्यों को तकुआ बन्दरों की तरह उछल कूद कर ही खिड़की के रास्ते से बाहर और अन्दर जाना आना होता है।

हालांकि इस डिब्बेमें इतने आदमी नहीं थे कि दस पांच आने वालोंको जगह न मिलती, पर लोग जगह देना नहीं चाहते थे। गाड़ीमें जगह मिल भर जाने पर यात्री अपनी ही रेल समझने लगता है, दूसरेसे उसे कोई प्रयोजन नहीं रहता, तिस पर यदि दस पांच व्यक्तियोंसे वाह वा लूटनेके इच्छुक किसी रंगरूटने कहीं फ्रन्ट अपने हाथमें कर लिया तो फिर वहाँ ब्लेक मार किटिंग की जरा भी गुंजायश नहीं रहती।

इस स्टेशन तक ऐसे ही एक रंगरूट ने किसी को न चढ़ने दिया था पर यहाँ न जाने वह कैसे ढीला पड़ गया कि दो व्यक्ति घुसही पड़े और कुछ घुसने को तैयार थे। वाग युद्ध समाप्त होते ही हाथा पाई हुई और देखते देखते एक चांटा उस रंगरूट ने प्रथम नव आगन्तुक के रख ही तो दिया। सामने वाला कमजोर था बोल उठा—"बाबा मार लो एक और; इतना ही नहीं तुम यहां तक भी मार सकते हो कि मर जांऊ पर उस दशामें भी, मर चुकने पर भी, यहां न उतार देना मुझे, जिन्दा या मरी दशा में मुझे फतहपुर जाना ही है, वहां मेरी लाश ही मेरे जिन्दा होने का सबूत होगी।"

वह यह सब एक सांस में कह गया मानों उसके हृदय में पहलेसेही यह शब्द रिकार्डेड थे, जो एकदम बाहर निकल पड़े–उस बोली में वह लालित्य और मर्म भरा था कि उसके सुन्दर चेहरे से भी अधिक सुन्दर लग रही थी सुनने वालों को, पर उसे मारने और रोकने वाला शायद उसे नहीं सुन रहा था। वह किसी हठी राजा की भांति अपनी इच्छा के प्रतिकूल कोई भी कार्य जा या बेजा, नहीं होते देख सकता; वह अपनी ही बात ऊंची रखने के लिये नव आगन्तुक को बाहर निकाल देना चाहता था जब कि वैसा करने का उसे कोई अधिकार न था–"नमक का असर!"

चांटा खाकर नव आगन्तुक इतना आहत नहीं हुआ जितना वहीं करीब में बैठा हुआ एक दूसरा युवक उसकी बोली की गोली खाकर आहत हुआ। तुरन्त ही वह उठ खड़ा हुआ और बिना कुछ कहे, बिना कुछ सोचे घसीट ही तो लिया उसे पीछे और लगा दिये तड़ातड़ दो चार हाथ।

यही वह आवाज थी जिसने सभीको सजगकर दिया था–इस नये जवान की उम्र होगी कोई १५–१६ की, किन्तु वाह रे साहस! चढ़ने वाले सब अन्दर आगये, रेल आगे चल दी और मारपीट वहीं रुक गई। क्या मारखाने के लिये ही मारा था उस रंगरूट ने? वह एकाकी चुप क्यों हो गया? सब हंस पड़े, वह खिसिया गया—

वह समझगया कि वह गलतीपर था, उसके लिये जगह बहुत थी, कहीं भी बैठ जाता, और अन्दर वाले यात्री कोई उसके रिश्तेदार भी नहीं थे, फिर वह आने वालों को क्यों रोक रहा था और जिन्हें वह आराम पहुँचा रहा था वही अब उसपर हंस रहे थे। कोई भी उसका साथी न हुआ।

मैं लेटा था, उठ बैठा तथा कौतूहलवश और रार न बढ़े इस गरज से मैंने मार खाने वाले नव आगन्तुक और उस बहादुर नौजवान को अपने पास बुला लिया। वे दोनों आकर मेरे पास बैठ गये। वह नौजवावन उस अधेड़ को घूर घूर कर देख रहा था, शायद यह पहचानने की कोशिश कर रहा था। उसने 'बाबूजी' कहकर जब उस अधेड़का विशेष ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया तो मैं जान गया कि शायद वह उसे पहचान गया—

"हां भाई! मैंने तुम्हें धन्यवाद तक न दिया, तुम बड़े साहसी हो–मैं धन्यवाद देता पर जरा तबीयत शान्त होनेपर–माफ करना।" यह कहते हुए बाबूजी ने उसकी पीठ पर हाथ रख दिया।

जवान ने कहा–"बाबूजी मैंने किस लिये उसे मारकर आपको बचाया? आप कुछ और ही सोच रहे हैं, पर कारण मेरे बताने पर स्पष्ट होगा–मैं इसकी यह हरकत कल से देखता आ रहा था पर मैं किसी के लिये कुछ न बोला और शायद आप न बोलते तो आज आपके मामले में भी मैं कुछ न बोलता। मैं आपको देख न सका था, सिर्फ आपकी बोली सुन रहा था और आप कह क्या रहे थे–यह भी मैंने पूरा न सुना था–मैं बोली के आधार पर आपको पहचान रहा था।

बाबूजी 'पहचान' शब्द को सुनतेही अधिक सतर्क हो गये–कुछ सोचकर कहा–'पहचान! मैंने तो तुम्हें नहीं देखा आज के पहले कभी भी। तुम धोखा खा रहे हो–मैं आसानी से किसी को भूलता नहीं हूँ।'

जवान—"ठीक है–मैं भी कभी नहीं भूलता हूँ और कोई भी अपने मददगारको कभी कैसे भूल सकता है?

अबकी बार अपने लिये एक नया और कुछ अधिक निकट लाने वाला 'मददगार' शब्द सुनकर बाबूजी राइट से लेफ्ट होगये। मुझे भी कुछ ताज्जुब हो चला जब मैंने देखा कि जैसे जैसे बाबूजी के भाव इस बात पर दृढ़ होते जाते हैं कि मैं उसे नहीं जानता वैसेही वैसे जवान के भाव जानने के पक्ष में अधिक दृढ़ता पकड़ते जारहे थे, अजब हाल था दोनोंका, दोनों की आखें एक दूसरे में क्या देख रही थीं, वे आखें ही जानें!

बाबूजी ने मुड़ते हुए कहा–'भाई तुम्हारा नाम?' जवान नतमस्तक होगया—कहने लगा मेरे नाम, मेरे काम आदि से आप मुझे न जान सकेंगे सिर्फ मैं आपको जानता हूं, आप शायद मुझे नहीं।

बाबूजी इस अनोखी बात पर कुछ उचक पड़े, कहा–ऐं! ये कैसे हो सकता है–मैं कोई नेता नहीं, नामी वकील, बारिस्टर या नागरिक नहीं। तुम कटनी पर चढ़े, मैं रायपुर रहता हूं, तुम गल्ती कर रहे हो।

"गलती! ईश्वर कभी न कराये किसी से" युवक ने कहा—"सुनिये यदि आप उत्सुक हैं तो सुनिये, आप और मैं कौन हैं?" मैं कुछ बदल गया हूँ, आप भी बाहर से बदल गये हैं पर आपका हृदय आज भी वही है जो ५ वर्ष पहले था। मैं निरन्तर आपको अपने ध्यान में रखता रहा हूं और रखता रहूंगा। ५ वर्ष पहले, जब मैं अबोध बालक था, रायपुरमें और आपके बाजार में ही रहा करता था, एक मात्र संरक्षक मेरी माता के साथ। वह न जानें कहाँ से मेरे और अपने लिये खाना जुटा लाती थी, यह मैं जानने की कोशिश उस समय करने लगा था जब से मुझे होश हुआ, पर इतनाही जान पाया कि वह सुबह से शाम तस एक घर में जाती और वहाँ काम किया करती थी।

मैं उसकी दशाको उसी समय समझ गया था अतः कभी उसके काममें विघ्न न डालता था। उससे दूर रह कर बाजारोंमें खेला करता, मुझे खानेको दोनों समय अवश्य मिल जाता था। शामको गरम, सुबह और कभी कभी दोपहरमें ठंडा। मेरी इस स्वाभाविक सरलता को देख कर मां कभी कभी रातको सोते समय मेरा लाड़ करते करते रो दिया करती थी और कह उठती थी कि मेरा लाल कितना सीधा है, जानता है मेरी हालत, तभी तो कभी एक पैसे का सवाल नहीं करता, कभी कोई चीज नहीं मांगता।

वह कहने में तल्लीन था और हम सुनने में। हम तीनों ही नहीं, आस पास के कई दूसरे यात्री भी हमारी ओर दतचित्त हो उठे थे।

'एक दिन'–वह कहता ही गया–वह दिन रथयात्रा का दिन था, रथ निकल रहा था और साथ में निकल रहे थे अनेकों खिलौने वाले–एक खिलौना मैंने भी देखा, न जाने क्या था उसमें कि मुझे विवश कर दिया कि उसे लेकर ही रहूं। मां से पैसा मांगने की हिम्मत न हुई और फिर वह काम पर थी, और उसीसमय मैंने देखा कि आप बालकों को खिलौना दिलवा रहे हैं, मैं भी आपके पास आया–मैंने कहा—दो पैसे मुझे भी दे दो। एक साथ दो पैसे मांगने पर आपका स्वाभाविक सरल हृदय मेरी ओर झुक गया था। आप शायद यह भी जान गये थे कि मैं भी खिलौना लेना चाहता हूं, आपके साथ बच्चे थे, मैं भी बच्चा था; आपका यह सोचना ठीक ही था। पर मेरी दशा देखकर कुछ देरमें आपने कहा—'कुछ खाने को लोगे क्या?' मैंने झट से कहा था–'खानेको मैं पैसा नहीं मांगता–मैं यह खिलौना लूंगा–मैं आज तक ऐसे खिलौनोंसे नहीं खेला।'

'उस समय यदि आपके जैसा हृदयवाला वहाँ न होता तो मुझ दीन बालक को अवश्य दुत्कार देता पर आपने मेरी सचाईका आदर किया, आपने मुझे एक आना दिया'–कहते कहते जवानने प्रश्न किया—'याद आया कुछ आपको, आपके लिये बहुत छोटी बात थी पर मेरे लिये मन वांछित वरदान मिला था। बिना उत्तर पाये वह कहता ही गया—

मैंने हंसते हंसते दो पैसेका खिलौना लिया और दो पैसे लेकर आपके पास आया, आप चौंक पड़े थे जब आपने देखा कि भिखारी लड़का पैसा वापिस कर रहा था। आपने 'शाबास' कहकर वह दो पैसे मेरे पासही खड़े एक दूसरे लड़केको दे दिये थे—

तब से नित्य ही मैं आपको देखता था पर आपके सामने न आता था, शायद आप फिर पैसा न दे बैठें और घर जाकर मेरी मा मुझे कुछ कहे, उसे कुछ दुख हो और वह अपना पेट काट कर मुझे आपके पैसे वापिस दे और कहे कि जिससे लिये हैं उसे वापिस दे आ–उस दिन भी उसने यही कहा था, ऐसा ही किया था। आपके पास पैसे वापिस करने आया था न मैं? और आपने लेने से इन्कार करते हुये मुझसे मेरी कहानी सुनी थी!

बाबूजी की आखों में आंसू छलक आये, उनका हृदय पुरानी बात याद आतेही गदगद हो उठा– हृदयने अपने कोष से गरम खूनकी भेंट भेजी पर वह आंखें न देख सकीं, वैसे का वैसा न देसकीं, उन्हें पानी बना दिया, पर क्या उसका असर कुछ कम हुआ? वह जवान कहते कहते रुक गया और उसी समय

(शेष पृष्ठ १४ पर)

SHIP BRAND FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

हिन्दुस्तान, सीलोन, और विदेशमें लोकप्रिय

खाकी ड्रिल, ट्विल व पगड़ी क्लाथ

★ फास्ट ब्ल्यू ड्रिल व ग्रे ड्रिल ★

मरसीराइज्ड़ विलच्ड क्रेप
,, ,, पापलीन
,, ,, कोटिंग
,, ,, ड्रिल
,, ,,साटिनड्रिल
,, ,, लौंगक्लाथ
,, स्ट्राइप्ड शर्टिंग

केसमैण्ट क्लाथ विभिन्न पक्के रंगोंमें.सफेद व "रंगीन" दोसूती क्लाथ, नीटिंग क्लाथ, टॉवल, नैपकीन वगैरह वगैरह

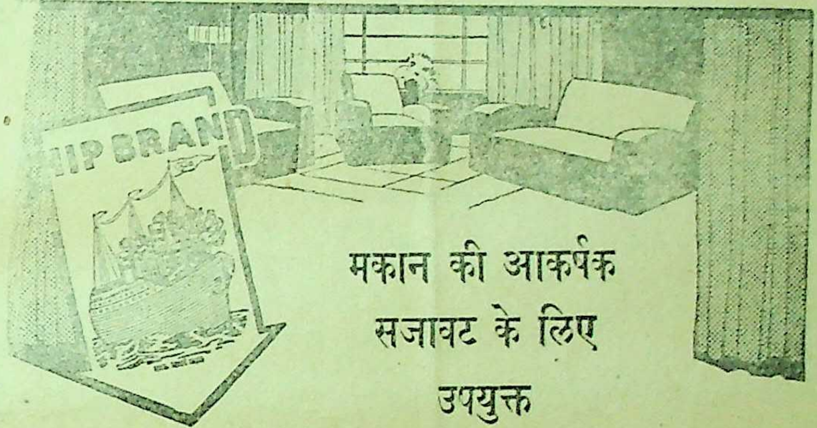

मकान की आकर्षक
सजावट के लिए
उपयुक्त

जहाज छाप

१०० फी सदी स्वदेशी, उच्च श्रेणी के, मज़बूत, पक्के रंगों के व कीमत में सस्ते।

अपने व्यक्तित्व की छाप बैठाने, मन प्रफुल्लित करने, अपने मित्रों में आदरभाव उत्पन्न कराने व अपने अधिकारियोंको सन्तुष्ट रखने के लिए 'जहाज छाप' कपड़ा बरतिए

हिन्दुस्तानके स्वदेशी उत्पादन क्षेत्र में 'जहाज छाप' कपड़े के प्रवेश होने के पश्चात् अब किसी भी स्वदेशाभिमानी व्यक्ति को विदेशी कपड़ा खरीदना नहीं चाहिए।

★ कॉटन क्रेप ★

सफेद व अन्य ३४ विभिन्न रङ्गों; आकर्षक छपाई व विभिन्न डिज़ाइन में

★ पापलीन ★

सफेद व अन्य २४ विभिन्न पक्के रङ्गों; आकर्षक छपाई व विभिन्न डिज़ाइन में

* सफेद ड्रिल *
* सफेद ट्विल *
* लौंग क्लाथ *
* साटिन ड्रिल *

★ टेबिल क्लाथ ★

सफेद ६०" व ६८" शीटींग क्लाथ सफेद '६०" व ६८"

* * *

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons

Head Office —— AMRITSAR

Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियां, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

बिक्री—विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

IMPERIAL TRADING Co.

Alli Chambers, Tamarind Lane, Fort,
Telegrams: "LOOMSPRING"

BOMBAY.
Telephone No. 27580.

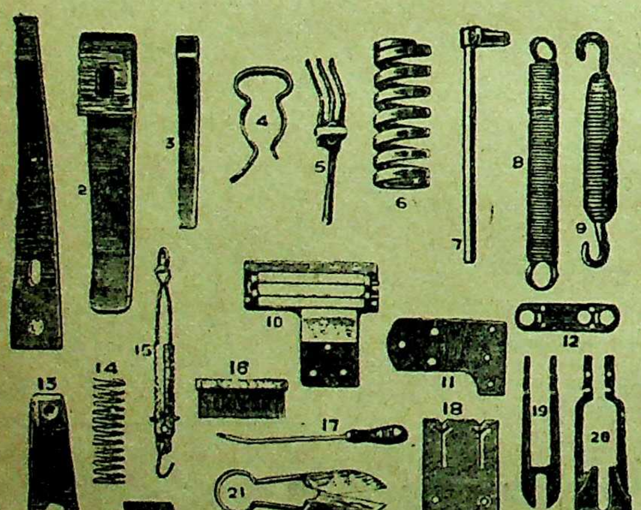

OUR SPECIALITIES

Springs, Temples and all accessories for Spinning and Weaving Machinery
BESIDES, WE HOLD AN EXTENSIVE STOCK of

Stripping Fillets
Burnishing ,,
Folding ,,
Plaiting ,,
Winding ,,
Likering ,,
Card Strippers
Walton Metallic Brush

Lickerine Wires
Lap rods & Oils cans Braime & "K"
Pot eyes for Bleaching dept.
Hydraulic Ram Rings
Jackson & Harries Fastners
Blue Glass Rods & Creel Steps

Card Chains & Link Chains
Hickory wood Picking Sticks
Dobby Lattices Comber Boards & Taper Pegs
Perth Gauge Glass & Glass Lubricators
etc. etc. etc. etc.

Enquiries Solicited

We solicit your enquiries for all articles connected with the Spinning & Weaving Industry and can quote you competitive prices. We will gladly send to you our latest price list on application.

Agents :—
RATILAL & Co., Cross Lane, Railwaypura Post, AHMEDABAD.
B. N. MODI & Co., 14/24, Civil Lane, CAWNPORE.

माहेश्वरी जगत्—

मेरा निवेदन

७ दिसम्बर ४४ के "माहेश्वरी" में अपने जाति बन्धुओं के विचार पढ़े। श्री. शिवचन्द इनानीजी ने कई उपयोगी बातें लिखते हुये अपनी राम कहानी लिखने वाले बंधुओं को धमकी देनेवाले और डरपोक बताया है।

शोक है कि समाज के सामने अपना हाल जतानेका साहस करने पर 'धमकी देने वाले' और 'डरपोक' कहे जाते हैं, और यदि कोई कुछ साहस करके करले तो उसको समाज से बाहर कर देने का डर दिखाया जाता है! दूसरी तरफ श्रीरामप्रसादजी हुरकट लिखते हैं कि 'समाज में सुशिक्षित कन्याओं की कमी नहीं है किंतु योग्य वर नहीं मिलते।' यदि वास्तव में यही बात है तो फिर समाज में इतना अंधेर क्यों? हमारे समाज के विद्वानों को चाहिये कि इस समस्या को ठीक ठीक हल करें।

मेरा अनुभव तो ऐसा है कि 'पर उपदेश कुशल बहु तेरे।' हमारे समाज के सभी लोग इस कहावत को चरितार्थ करने वाले हैं। हम बड़े बड़े विद्वानों के लेख पढ़ते हैं, अच्छे अच्छे व्याख्यान दाताओं के व्याख्यान सुनते हैं। कहने को तो सभी यही कहते हैं कि पर्दा प्रथा बुरी है—इसका नाश करो; विधवा विवाह करना जरूरी है, समाज की स्त्रियाँ सुशिक्षित होनी चाहिये, युवकों को साहसी होना चाहिये, यह होना चाहिये, वह होना चाहिये; लेकिन करते कराते कोई कुछ नहीं।

मैं अपने विषय में भी कह दूं चाहे मुझे कोई डरपोक कहे या धमकी देने वाला बताये, इस बात की मुझे कुछ भी परवाह नहीं है।

मैं एक साधारण माहेश्वरी परिवार का युवक हूं, मेरी उमर इस वक्त करीब ३१ साल के है और मैं अभीतक कुँवारा हुं, इसके दो कारण हैं। पहला कारण है मेरे पास पुष्कल रुपया न होना, दूसरा कारण है मेरी दृढ़ प्रतिज्ञा कि रुपया देकर विवाह नहीं करूंगा।

मैंने पहिले पहिल २५) रुपया माहवार पर कलकत्ते के एक माहेश्वरी फर्म में काम करना प्रारंभ किया था, अब धीरे धीरे मेरी माहवार आय कम से कम ५००) रु० है और ईश्वर कृपा से २०, २५ हजार रुपयों की निजी जायदाद भी है जो कि मैंने आपने हाथ से बनाई है। फिर भी क्या हुआ, विवाह का नाम लेने पर वही सवाल आता है कि लड़की वाले को ४, ५ हजार रुपया दीजिये और ५–७ हजार रुपयों का जेवर चाहिये।

गत वर्ष फाल्गुन महीने में माताजी के अनुरोध से छोटे भाई का विवाह करने में करीब १० हजार रुपया खर्च किया था। लेकिन अपने लिये यह अन्याय मैं सहन नहीं कर सकता।'

अब मैं माहेश्वरी समाज के कर्णधारों से कहता हूँ कि अगर कोई साहस करे तो मैं सुशिक्षित लड़की से चाहे वह बाल विधवा हो या महान गरीब हो तो भी विवाह करने को तयार हूं। यदि अपनी समाज में नहीं तो संसार में तो लड़कियों की कमी नहीं है और शिक्षित भी हैं, मैं अन्तरजातीय विवाह करना पाप नहीं समझता।

विनीत—

कन्हैयालाल भूतड़ा, कलकत्ता।

मेरी कहानी

मैं माहेश्वरी (लाहोटी) उच्च कुलका लड़का हूं। पिताजी का स्वर्गवास मेरे बालपनमें ही होगया था। समाज के मुखियों के आग्रहसे मेरी माताजीने अपना सब जेवर बेचकर मृतभोज किया था और पीछे हमारे पास एक समय भोजनतक के लिये भी कुछ शेष नहीं बचा था। अत्यन्त ही दुःखी होकर मैं काम की खोजमें घरसे निकल पड़ा और बीकानेरसे सुदूर आसाम पहुंचा। यहां मुझे ८) रु० मासिक की नौकरी मिली जो मैं प्रतिमास अपनी माताके लिये भेज दिया करता था। अब ईश्वरकी कृपासे मुझे १५०) रु. मासिक मिलते हैं। देशमें मकान भी है। अब मेरी आयु २५ वर्ष की है किन्तु मेरे पास जेवर बनवाने को पैसे नहीं हैं इस लिये मेरा विवाह स्वजाति में संभव नहीं है। कर्ज लेकर या घर बेचकर जेवर गढ़वाना और फिर विवाह करना मुझे स्वीकार नहीं है। मेरा और कोई भाई बहिन भी नहीं है जो वृद्ध माताजी की सेवा कर सके। तो क्या मुझे अन्य जातिमें विवाह करना चाहिये अथवा ईसाई मुसल्मान हो जाना चाहिये? आप जैसा परामर्श दें मैं वैसा ही करूं। इसके लिये मैं आपका जीवनभर ऋणी रहूंगा।

आपका आज्ञाकारी—

नाथमल लाहोटी,

c/o राय चुन्नीलाल बहादुर

बोनीचन्द एण्ड कम्पनी,

Doom Dooma (Assam)

"माहेश्वरी" को सहायता

श्री श्रीरामजी भांगडीया, सेलू वालोंने अपने भाई श्री बन्सी लालजी के विवाह के उपलक्षमें दस रुपये भेजने की कृपा की है। एतदर्थ धन्यवाद।

—व्यवस्थापक।

मेरा विचार

गत ७ नवम्बर ४४ के "माहेश्वरी" में जिस विचारणीय प्रश्न को प्रकाशित कर समाज का ध्यान आकर्षित किया गया है उस संबंध में भिन्न भिन्न सज्जनों की समतियां पढ़ने में आई। अच्छा होता यदि नारी समाज के जीवन की कठिनाईयों को अधिक अच्छी तरह समझ सकने वाली महिलाओं की ओर से इस पर विस्तृत रूपसे विचार प्रकट किये जाते। फिर भी मैं अपना विचार समाजके सामने उपस्थित करता हूं।

मेरी समझ से भगवान मनु की स्मृति के अनुसार इस लड़की के वर्तमान पति को चाहिये कि इसका दूसरा विवाह कर देनेका साहस दिखावे। यह समाज के सामने एक उत्कृष्ट आदर्श होगा, और हजारों मौन रहने वाली ऐसी बहिनों के लिये मार्ग प्रदर्शन का काम करेगा। साधारणतया विचार करनेसे भी यह मान लेना चाहिये कि उस लड़की का विवाह संस्कार अभी पूरा नहीं हुआ है, क्योंकि विवाह तभी पूरा समझना चाहिये जब विवाहित कन्या का अपने पतिके साथ सहगमन हो। ऐसी अवस्था न होनपर लड़की कुमारी ही है। और उसे दूसरा विवाह करने का उतनाही अधिकार है, जितना अन्य कुमारियों को। यदि लड़की या लड़की के माता पिता मुझसे पत्रव्यवहार करें तो मैं यह संबंध एक योग्य लड़के के साथ कराने में समर्थ हो सकूंगा।

भवदीय—

श्रीनिवास आगर

एम. एस–सी.

जे. सी. मिल्स लिमिटेड, गवालियर (राज्य)

शास्त्रप्रमाण लिखिये

७ दिसम्बर ४४ के "माहेश्वरी" में 'मेरा निवेदन' शान्ति माहेश्वरी के नामसे प्रकाशित हुआ है। अच्छा तो यह होता कि साथ साथ अपने सिद्धांत के पोषक मनुवाक्य प्रमाणरूपमें उद्धृत किये जाते ताकि जनताको भ्रम न होता। कृपया अबभी उन प्रमाणोंको प्रकाशित करिये।

—रामरत्न

माहेश्वरी छात्र मंड़ल, देशनोक

ता. १९–११–४४ को स्थानीय श्री करणी स्टेट मिडल स्कूल में पढ़ने वाले माहेश्वरी छात्रों में पारस्परिक प्रेम, वक्तृत्व एवं लेखन कला बढ़ाने के लिए माहेश्वरी छात्र मंडल की स्थापना की गई और निश्चय किया गया कि प्रत्येक रविवार को मंडल का अधिवेशन हुआ करे। अधिकारियों का चुनाव सर्व सम्मति से इस प्रकार हुआ—

सभापति–श्री सुन्दर लालजी राठी।
उपसभापति–श्री प्रल्हाद रायजी मूँधड़ा।
मन्त्री–श्री भंवर लाल राठी।
उपमन्त्री–श्री बजरंग लालजी शारड़ा।
सहायक मन्त्री–श्री गोवर्धन लालजी मूँधड़ा।
कोषाधिकारी–श्री गोकुल दासजी शारड़ा।
उप कोषाधिकारी–श्री किसन गोपालजी राठी।

आधिकारियोंके अलावा कार्य कारिणो के ६ सदस्य भी चुने गये।

—भंवरलाल राठी।

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मण्डल, पूना को निम्न लिखित सज्जनोंने दान दिया है जिसके लिये उनका हार्दिक धन्यवाद है—

१०१ श्री. तिलोकचंदजी केशरीचंदजी लाहोटी, जमखिंडी वालों की ओरसे, पुत्र श्री मोतीलालजी के विवाह में।
१०१ श्री. डोंगरदासजी सारडा, अमरावती निवासीकी ओरसे, अपने शुभ विवाह के अवसर पर।

—रुपचन्द काबरा

संयुक्त मंत्री.

माहेश्वरी मण्डल–काशी

हमारा समाज शिक्षा में, और उच्च शिक्षा में तो मुख्यतः बहुत ही पिछड़ा हुआ है। यहां हिन्दू विश्वविद्यालय में, जहां देशके कोने कोने के विद्यार्थी पढ़ने आते हैं, केवल २० ही माहेश्वरी विद्यार्थी हैं। कैसे संतापकी यह बात है। हम रात दिन धन कमाने और शादी ब्याह की ही धुन में लगे रहते हैं किन्तु बिना सद् शिक्षा के इन दोनों ही कामोंमें हमें समुचित सफलता नहीं मिलती। जिस देशमें २० प्रति शत भी पढ़े लिखे न हों उसकी उन्नति कैसे संभव है? आज 'विश्व शान्ति' के लिये लाखों रुपया यज्ञों (!) में फूंक दिया गया किन्तु जो शान्ति हुई वह भी सम्मुख है। इस सरल और अंध विश्वासका भी कुछ ठिकाना है और यह सब सद् शिक्षाके अभावके दुपरिणाम हैं। यज्ञों से ही विश्वमें शांति हो जाती तो कौरव पांडव महाभारतका भीषण युद्ध न करते और भगवान कृष्ण उनके सार्थी न बनते। जर्मन भीम काय तोपों और अद्भुद 'रॉकेट' के मुकाबले इन पंडिताभिमानी महापुरुषों के यह यज्ञ!!! सभ्यसंसार के सम्मुख हास्यास्पद बनने के सिवाय और क्या हैं? इतने धन से ५०० मारवाड़ी नवयुवक देश विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकते थे।

अब तो नवयुवकोंके ही हाथमें भविष्य है। इसी भावनासे हमने यहां 'माहेश्वरी मण्डल' की स्थापना की है। देशभरमें इसी प्रकार मण्डल स्थापित होने चाहिये और नवयुवक तथा नवयुवतियों को समस्त सुधार के कार्यों—तीव्र क्रांति मूलक कार्यों—का बीड़ा उठा लेना चाहिये। तब ही हमारा देश, हमारी समाज और हमारी जातिकी रक्षा हो सकेगी।

—नन्दलाल बियानी बी. एस-सी.

जोधपुर म्यूनिसिपल बोर्ड

लोकपरिषद् के उम्मीदवार सभापति चुने गये

जोधपुर म्यूनिसिपल बोर्ड के सभापति लोक परिषद के उम्मीदवार श्री. द्वारकादासजी पुरोहित चुने गये हैं। पुरोहितजी ने इस चुनाव के लिये बोर्ड के सदस्यों के प्रति कृतज्ञता प्रगट करते हुये कहा कि हमारा शहर सब से गन्दे शहरों में गिना जाता है, यह बड़े शर्म की बात है। सदस्य शहर की जनता की सेवा करके अपने कर्तव्य का पालन करें।

बोर्ड के लोक परिषद की ओर से चुने गये सदस्यों की रीति नीति पर नियंत्रण रखने के लिये परिषद ने तीन सदस्यों की एक पार्लेमेंटरी समिति का निर्माण किया है। इसमें श्री. जयनारायणजी व्यास, श्री. दशरथसिंहजी सिंघवी एडवोकेट और श्री. तुलसीदासजी राठी हैं।

श्री इंद्रनाथजी मोदी ग्राम पंचायतों और म्युनिसिपल बोर्डों के इंचार्ज बनाये गये हैं।

मालूम हुआ है कि श्री जयनारायणजी व्यास महात्मा गांधीजी से जोधपुरकी स्थिति के सम्बंध में बातें करने के लिये वर्धा जायंगे।

भारतवर्ष अखंड और अविभाज्य है

९, १० दिसम्बर ४४ को बम्बई में पाकिस्तान विरोधी सम्मेलन श्री. नरसिंह चिन्तामणि केल्कर महोदय की अध्यक्षता में हुआ। स्वागत अध्यक्ष श्री. राजा नारायणलालजी पित्तीने अपने भाषण में कहाः—

भारत को खण्डश करने और काटने-छांटने का विचार इतना प्रतिकूल और मर्मातक बेदना पहुंचाने वाला है कि महात्मा गांधीने इसे जीते जागते शरीरके अंग-प्रत्यंग काटनेके समान कहा है। यद्यपि महात्माजी यहां तक कह गये परंतु हमें इस बात का खेद है कि उन्होंने फिर भी मुस्लिम जनताके लिये आत्म निर्णय का अधिकार स्वीकार कर लिया। इसका अर्थ यही है कि उन्होंने धार्मिक दृष्टिसे अल्प संख्यक लोगों के पृथक हो जानेका अधिकार मान लिया। धर्मकी दृष्टिसे अल्प संख्यक लोगोंको अपने धार्मिक विधि विधानोंकी रक्षाके लिए तथा अपनी संस्कृति और रूढ़ियोंकी मान्यता के लिए खास खास रियायतें और अधिकार दिये जा सकते हैं परंतु वे अधिकार राजनीतिक स्वछंदता और अपनेको पृथक राष्ट्रवादी कहने के लिये नहीं दिये जा सकते।

इंगलिश सरकारने मुसल्मानों को पृथक निर्वाचनका जो अधिकार दिया था उसीके फलस्वरूप आज पाकिस्तानकी मांग हो रही है। ब्रिटिश सरकारने पृथक निर्वाचन का अधिकार इसलिये देना पसन्द किया था कि इस भेद नीतिके द्वारा वह अपना राज्य आसानीसे कर सके। परन्तु धर्मके आधारपर पृथक निर्वाचन पद्धतिका जो परिणाम हो सकता है वह पाकिस्तानके रूपमें हमारे सम्मुख उपस्थित है। इस दृष्टिसे ब्रिटिश सरकारने ही पाकिस्तानकी नींव डाली है। उस दिनसे आजतक हिन्दू जनता कांग्रेसकी नीतिके अनुसार मुसल्मानों को संतुष्ट करने के लिये समय समयपर झुकती गई परन्तु इसका फल कुछ अच्छा न हुआ। इसके बाद मि० जिन्नाकी चौदह शर्तें आई, उनमेंसे कुछेक राउण्ड टेवल कान्फरेन्समें स्वीकृत होकर भारत सरकारके द्वारा मानली गई। कांग्रेसकी नीति और कांग्रेस सरकारकी निर्बलताका ही यह परिणाम है कि मुसल्मानों की तृष्णा बढ़ती जा रही है।

हालमें गांधी-जिन्ना परामर्श के अवसर पर महात्मा गांधी भी मुसल्मानोंको स्वतंत्र शासन तथा पृथक प्रांत देने तक पहुंच गये थे परन्तु तो भी वे मुसल्मानों को पृथक जाति कहनेके लिए तैयार नहीं हुए, क्योंकि उन्हें अलग-जाति माननेसे उनकी पाकिस्तान की योजना स्वयंसिद्ध वस्तु बन जाती है। पाकिस्तान स्कीममें सबसे बड़ा दोष यह है कि जब तक सबके सब हिन्दू हिन्दुस्तानमें और सब मुसल्मान पाकिस्तानमें न चले जायं तब तक अल्पसंख्यक समस्या हल ही नहीं हो सकती और दशा वही होगी जो आज जर्मनों की है। दूसरी बात यह कि देश-रक्षा, विदेशी राज्यों से सम्बन्ध, आयात निर्यात पर टैक्स, आबकारी टैक्स और नागरिक स्वास्थ्य आदि महकमों का, जिनके लिये देश की अखण्डता होना आवश्यक है, क्या होगा? परिणाम यह होगा कि दोनों देश हिन्दुस्तान और पाकिस्तान परस्पर एक दूसरे से लड़ते झगड़ते रहेंगे और अशांति का राज्य सदाके लिए जारी रहेगा।

तमाशा तो यह है कि मि० जिन्ना ने आज तक पाकिस्तान की परिभाषा ही नहीं की इस लिए कि उन्हें आगे आगे मागें बढ़ाने की गुंजायश रहे। हां, मि० जिन्ना उन्हीं के साथ बातचीत करने को तैयार हैं जो पहले उनकी पाकिस्तान की मांग को स्वीकार कर लें अर्थात् उनकी पाकिस्तान की मांग एक निश्चित तथ्य है जिसको मान लेने पर ही अगली बातें तय हो सकती हैं। वाह! क्या अच्छी युक्ति है। इसी पाकिस्तानके सिद्धांत पर ही तो मतभेद है और आप इसी को सिद्ध वस्तु मानने चले हैं। हमें वीर सावरकर के बचनों में यही कहना चाहिये कि यदि मुसलमान इस स्वतंत्रता संग्राम में हमारे साथ हों तो ठीक, न रहें तो न सही। विरोध करें तो हमें उनकी पर्वाह नहीं, हम उनके बिना ही स्वराज्य प्राप्त करनेमें समर्थ हैं।

अन्तमें मुझे मुसलमान भाईयों से यही कहना है कि हमारी उन से कोई लड़ाई नहीं है। हम लोगोंने इसी देशमें जन्म लिया है, इसीमें पले हैं और यहीं हमको मरना होगा। केवल धार्मिक विचारोंकी भिन्नताके कारण हम एक दूसरेसे अलग नहीं हो सकते। परंतु बहुसंख्यक हिंदू जनताको आप उचित अधिकारोंसे वंचित नहीं कर सकते और इसका एकमात्र उपाय यही है कि एक आदमीके लिये एक बोट—एक मताधिकार। यही प्रजातन्त्र प्रणालीका एक सूत्र है। इस नियमका पालन करने से किसीपर अन्याय नहीं होगा। देशको खण्ड खण्ड करनेसे आपकी शिकायतें कभी दूर नहीं हो सकतीं। आज का संसार परस्पर हिल-मिलकर चलने की तरफ है—सब देश एकताके सूत्रमें बंधने की इच्छा रखते हैं परन्तु पाकिस्तान की इच्छा उल्टे रास्ते की चाल है। ऐसे विचारसे हम एक देशको अनेक देश बना डालेंगे और धार्मिक लड़ाई झगड़ों को बढ़ाकर हिन्दुस्तान और "पाकिस्तान" दोनों को कष्टके समुद्र में डुबा देंगे। मुझे आशा है कि हमारे मुसल्मान भाई ऐसा गलत रास्ता नहीं पकड़ेंगे जिसका दुष्परिणाम उनकी सन्तति को भुगतना पड़े।

"माहेश्वरी"

सम्बन्धी पत्र व्यवहार करते समय अपनी ग्राहक संख्या लिखना कभी मत भूलिये अन्यथा कार्यालय में व्यर्थ ही समय नष्ट होता है और आज्ञा पालन में विलम्ब भी होता है। और आप जो कुछ लिखें वह सुस्पष्ट अक्षरों में लिखा कीजिये।

—व्यवस्थापक।

दो विशेष आवश्यकतायें

(१) बेटी की आवश्यकता है—

एक असाधारण रूप से संतप्त, अतृप्त, पीड़ित, दग्ध हृदय और अत्यन्त ही भावुक पिता को एक प्यारी बेटी की आवश्यकता है।

बेटी कुमारी हो, विवाहित हो, या विधवा। किसी भी प्रान्त की हो और किसी भी जाति की हो। हिन्दी भाषा बोलना, लिखना, पढ़ना और समझना भली प्रकार जानती हो और पुत्रीके कर्त्तव्य पालन करने को उद्यत हो। सरला हो, मुग्धा हो और उसे भी पितृ स्नेह की आकांक्षा-आवश्यकता—हो। आज्ञाकारिणी हो। भाई-बहनों से स्नेह कर सकती हो। पिता उसे स्वेच्छानुसार गुड़िया की तरह सजा कर लाड़ लड़ा सके और देश तथा धर्म की सेवा के लिये तय्यार कर सके। सर्वथा ही निष्कपट हो। आचार, विचार में ठेठ 'भारतीय' होना अनिवार्य है। सिरके बाल खूब लम्बे हों तो अच्छा है।

यह ध्यान रहें कि 'पिता' धनाढ्य नहीं है और उसे 'माता' का स्नेह शायद नहीं प्राप्त हो सकेगा।

यह भी ठीक है कि विज्ञापन देनेसे 'बेटी' नहीं मिला करती हैं किन्तु इस जमानेमें खोजने का दूसरा साधन भी क्या है?

पहिले पत्रलिखें, फिर भेंट करें।

(२) सहचरी की आवश्यकता—

एक अत्यंत ही पीड़ित, जर्जरित, निरन्तर विश्वासघातों का शिकार और भावुक हृदय, सार्वजनिक सेवाओं में अपना सब कुछ समाप्त कर देने वाले, माध्यम स्थिति के सुशिक्षित सज्जन के तीसरे पण में अपनी सेवा, माधुर्य, निष्छलता, सारल्य, सौम्यता, सात्विकता, स्थिरता, प्रफुलता, सुचेतन्यता और स्नेह से शांति, प्रसन्नता तथा स्वास्थता प्रदान कर सकने की योग्यता रखने वाली २५ से ४० वर्षीय शिष्ठ, स्वच्छता प्रिय, पूर्ण स्वस्थ शरीर एक प्रौढ़ महिला की आवश्यकता है। कुमारी विधवा-सधवा अथवा जाति और प्रान्त विशेष का कोई प्रश्न नहीं है। हां, हिन्दी भाषा भली भांति लिख पढ़ सकती हो और स्वयम भी ऐसे साथी की आवश्यकता का अनुभव करने वाली हो। निरामिश भोजी हो, धार्मिक और राष्ट्रीय मनोवृत्ति की हो। कष्ट सहने को भी उद्यत हो। भोजन बनाने और दूसरे गृह कार्यों में कुशल तथा अनुभवी हो।

यावत जीवन, यथा संभव, प्रत्येक आवश्यक सेवा और सहायता की तथा सुविधा दी जायगी। साथ में यदि कोई छोटी सन्तान हो तो भी हानि नहीं है।

[इसका अर्थ 'विवाह सम्बन्ध' कदापि न समझा जाय।]

पहिले पत्र लिखें, पश्चात भेंट करें।

क्ष० त्र० ज्ञ०
C/o पाक्षिक "माहेश्वरी"
अली चम्बर्स, डीनलेन,
फोर्ट—**बम्बई।**

व्यायाम शिक्षक

मुख्यतः प्राचीन प्राणाली अर्थात् डण्ड, बैठक, मुगदर, कुश्ती, लाठी, लेजम, पटे, छुरी, तलवार आदि आदि कलाओं में सुनिपुण और अनुभवी राष्ट्रीय विचारों के एक ब्राह्मण सज्जन उपयुक्त व्यवस्था होनेपर, कहीं स्थिर रूपसे रह कर इस कला का प्रचार करने को उद्यत हैं। इस विषय में रूचि तथा शौक़ रखने वाले सज्जन पत्र व्यवहार करें।

व्यायाम शिक्षक
"माहेश्वरी" कार्यालय,
अली चेम्बर्स,
डीन लेन, फोर्ट, **बम्बई**

कोटा राज्य में दमन का विरोध

कोटा राज्य प्रजामंडलने अपनी बैठक में एक प्रस्ताव पास करके प्रजामंडल के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री अभिन्न हरिजी और नगर प्रजामंडल के संयोजक श्री गोपाललालजी कोटिया की गिरफतारी का तीव्र विरोध किया है और राज्य की दमन नीति की कड़ी आलोचना की है।

पिलानी छात्र संघ ने अपनी बैठक में एक प्रस्ताव पास करके अ. भा. रेडिओ की हिन्दी विरोधी नीति की निन्दा की है।

यह मार पीट क्यों?

[पृष्ट १० का शेष]

अचानक रुक जानेसे बाबूजीने अपनी स्थितको बहुत सम्भाला और फौरन ही कहा—

"बस बस आगे की बात मुझे याद है, तुम वही हो जिसे मैंने अनाथालयमें भर्ती कराया था, तुम्हारी मां सचमुच आदर्श रमणी थी—और अरे तुम तो एकदम बदल गये, क्या से क्या हो गये।"

"हां बाबूजी आपकी ही कृपा का फल है, मैंने वहां बढ़ईगीरीका काम सीखा था। दो साल से स्वतंत्र काम कर रहा हूं, फरनीचर वगैरह का काम है, एक दोस्त ने कृपा कर कुछ रुपये भी लगा दिये हैं।"

"ईमानदार ओर महनती आदमीको किसी बातकी कमी नहीं रहती।"

कहने की बात नहीं, सब समझ गये कि वह किस लिये रंगरूट से लड़ बैठा था और वह मार पीट क्यों हुई थी। सभी इस अनोखे जवानसे खुश थे, वह जवान संडास में चला गया तब उन बाबूजी ने मुझसे कहा—"मैं सुधारवादी हूँ, यह हिन्दू युवक है, अनोखा, मैंने तो आज से इसे दामाद बना लिया, अब न छोड़ूंगा इसे, यही योग्य वर है मेरी कन्या के लिये।" मैंने अपनी सहमति उन्हें देदी ओर उनके विचारों की प्रशंसा भी की—

आगे क्या हुआ पता नहीं, मैं रास्ते में ही उन दोनों को छोड़कर उतर पड़ा।

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल
इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड
संस्थापित सन् १९१९

★

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—: हमारी शाखाएं :—

अहमदाबाद (गांधी रोड)
बोटाद (काठियावाड़)
कलकत्ता (१३५, कैनिंग स्ट्रीट)
लाहौर (दी माल)
कम्पाला (युगाण्डा) (बाम्बो रोड)

★

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेण्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए :—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :- सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

श्रीमती एनोफील—जनशत्रु नं० १

मलेरिया, जो सबसे अधिक भयावह और हमारे देशका अत्यन्त साधारण रोग है, प्रतिवर्ष ३० लाखसे अधिक व्यक्तियोंके प्राणोंका गाहक बनता है। इसके लगातार आक्रमणोंसे उत्पन्न विभिन्न शिकायतोंके कारण और भी अधिक संख्यामें लोगोंको कष्ट सहना पड़ता है।

तथापि मलेरियाका कारण सिर्फ एक ही प्रकारके मच्छर—'एनोफील' और वह भी स्त्री जातिके मच्छरोंसे पैदा होता है। यह मच्छर मलेरियाग्रस्त लोगोंका खून चूसकर दूसरोंके शरीरमें रोगके कीटाणुओंका प्रवेश कराता और इस प्रकार मलेरिया फैलाता है।

इन मच्छरोंकी उत्पत्ति बंधे जलाशयोंमें होती है, अतएव उनका विनाश करनेके लिये पहला आक्रमण यहींसे शुरू होना चाहिये। इन जलाशयोंको भर दें अथवा बिल्कुल पानी निकाल फेकें या पानीमें कीटाणुनाशक औषधियां डाल दें जब भी सम्भव हो, मशहरीके नीचे सोयें और श्रीमती एनोफीलको अपनेसे दूर रखें।

यदि, इसपर भी आप मलेरियाके शिकार हो जायें तो तत्क्षण किसी अनुभवी डाक्टरकी सलाह अपनी हिफाजत और रोग विस्तार रोकनेके लिये लें।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

भारत के जनस्वास्थ्यकी हिफाजतके लिये यह चेतावनी
दी जा रही है। इस विज्ञापनके हस्ताक्षरकारियों और
जनताका स्वार्थ एक ही समान है।

न्यू एशियाटिक इन्स्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड

**जीवन, आग, जहाज, दुर्घटना, खतरा आदिके बीमेका
कारबार करती है।**

हेड आफिस—न्यू एशियाटिक बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नयी दिल्ली।

कलकत्ता आफिस—८ रॉयल एक्सचेञ्ज प्लेस। ❀ बंबई आफिस—इम्पीरियल बैंक एनेक्स बिल्डिंग फोर्ट, बंबई।

मद्रास आफिस—२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट जार्ज टाउन।

Printed and published by [illegible] Shroff, [illegible] at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India
Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

एक प्रति का ।=)

[अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र]

Reg. No. B 4144

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

— प्रवर्तक —
स्व० भागीरथदासजी भूतड़ा

कार्यालय
अली चेम्बर्स, डीन लेन,
फोर्ट, बम्बई

वर्ष ३५, संख्या १५]

बम्बई ता० ७ दिसम्बर १९४४

[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

गत एक शताब्दी के रक्तपात

गत एक सौ वर्ष में विश्व भर के विभिन्न राष्ट्रों में कब, कितने समय तक और किन किन के बीच युद्ध हुआ है, यह बात निम्नलिखित तालिका से ज्ञात होगी:—

सन् १८३०-३९—हालेण्ड के विरुद्ध बेलजियम, पोर्तुगाल-स्पेन।
१८३१-३३—रूस-पोलेण्ड ।
१८३१-६७—इटली का स्वातन्त्र्य-युद्ध।
१८४०-४१—तुर्किस्तान-मिश्र।
१८३८-४२—इंग्लैण्ड-अफगानिस्तान ।
१८४०-४२—इंग्लैण्ड-चीन ।
१८४४ —फ्रांस-मोराक्को।
१८४५-४८—ब्रिटिश-सिख ।
१८४८-४९—अस्ट्रिया-सर्डीनिया ।
१८५२ —इंग्लैण्ड-ब्रह्मदेश ।
१८५४-५६—इंग्लैड-रूस (क्रीमियन युद्ध)
१८५६-६०—इंग्लैण्ड और फ्रांस के विरुद्ध चीन ।
१८५७ —इंग्लैण्ड-भारत (स्वातन्त्र्य युद्ध)
१८६४-६६—प्रशिया-आस्ट्रिया के विरुद्ध डेनमार्क ।
१८६६ —प्रशिया-आस्ट्रिया ।
१८६७ —इंग्लैण्ड की एबीसीनिया पर चढ़ाई ।
१८७० फ्रांस-प्रशिया ।
१८७८-८०—इंग्लैण्ड-अफगानिस्तान ।
१८७९ —जुलू-युद्ध।
१८८०-१९०२—इंग्लैण्ड-अफ्रीका बोअर युद्ध।
१८८५ —सर्बिया-बलगेरिया।
१८८७-८९—इटली-एबीसीनिया ।
१८८९-९३—जर्मनी-पश्चिम अफ्रीका ।
१८९५ —फ्रांस-मेडागास्कर ।
१८९५-९७—तुर्तिस्तान-यूनान ।
१९०० —युरोपियन राष्ट्रों के विरुद्ध चीन और ब्रह्मदेश ।
१९०४ —इंग्लैंड-तिब्बत ।
१९०४ —रूस-जापान ।
१९०७ —फ्रांस-मोराक्को ।
१९०७-१४—इटली-एबीसीनिया ।
„ —इटली-तुर्किस्तान ।
„ —बाल्कन युद्ध
१९१४-१८—प्रथम महायुद्ध (ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, बलेजियम, इटली, जापान, पोर्तुगाल, यूनान, अमेरिकाके विरुद्ध जर्मनी, आस्ट्रिया-हंगरी, तुर्किस्तान, बलगेरिया)
१९२०-२१—रूस-पोलेन्ड ।
१९२२ —यूनान-तुर्किस्तान ।
„ —स्पेन-मोराक्को ।
१९२८ —इंग्लैंड-अफगानिस्तान ।
१९३५ —इटली-एबीसीनिया ।
१९३७ —स्पेन में अन्तर्विग्रह ।
१९३८ —जमनी-जेकोस्लोवाकिया ।
१९३९ —द्वितीय महायुद्ध जो आज कल चल रहा है (जर्मनी के विरुद्ध इंग्लैंड, फ्रांस, हालगड, बेलजियम, पोलैंगड, रूमानिया, यूनान, रूस आदि आदि)।
१९४० —जर्मनी और इटली के विरुद्ध रूस।
१९४१-४४—जर्मनी जापानके विरुद्ध इंग्लैंड, अमेरिका, चीन, रूस आदि २६ राष्ट्र।

परम पूज्य महामना श्री मालवीयजी महाराज

और

देशरत्न श्री बाबू राजेन्द्र प्रसादजी

युगयुग जियें

आप दोनों महानुभावों की ८४ वीं और ६० वीं जन्म तिथियों पर हम अपनी श्रद्धाञ्जलि सादर और सविनय समर्पित करतें हैं।

भारतकी देशी रियासतें

भारतमें ५८१ देशी रियासतें हैं, इनमें सिर्फ २१ ऐसी रियासतें हैं जिनमेंसे प्रत्येककी वार्षिक आमदनी ५० लाख रुपये है । सिर्फ १२ रियासतें ऐसी हैं जिनमें प्रत्येककी वार्षिक आमदनी एक करोड़ रुपये है । सबसे छोटी रियासत बिल्वारी है जिसकी जनसंख्या २७ है और वार्षिक आमदनी ८० रुपये है । कुछ रियासतें ऐसी हैं जिनमेंसे प्रत्येकका क्षेत्रफल सिर्फ ४ वर्ग मील है । ७० ऐसी रियासतें हैं जिनमेंसे प्रत्येककी वार्षिक आय १० हजार रुपयेसे कम है । सहारा (गुजरात) रियासतमें दो हिस्सेदार हैं जिनमेंसे प्रत्येकको ६३ रुपये वार्षिक आय मिलती है। ५२५ रियासतोंमें हिन्दू शासक हैं, और ५६ रियासतोंमें मुसल्मान शासक हैं । बहुत सी ऐसी भी रियासतें हैं जिनके पास पुलिस नहीं है । कितनी ही रियासतोंमें शिक्षाका प्रबन्ध नहीं है ।

हिटलर का पतन कब होगा ?

गणित एवं एतिहासिक घटनाक्रमके आधारपर एक विद्वान व्यक्तिने यह सिद्ध करनेका प्रयत्न किया है कि हिटलरका पतन सन् १९४४ में हो जायगा । युद्ध की गति विधि तेजीसे परिवर्तित होती जा रही है । ऐसी स्थितिमें यदि यह भविष्य सच भी हो जाय तो इसमें आश्चर्य की कोई बात न होगी ।

फ्रांस की राज्यक्रांति सन् १७८९
जर्मनी की राज्यक्रांति सन् १९१८
अन्तर—१२९ वर्ष

नेपोलियन सम्राट बना सन् १८०४
हिटलर चांसलर बना सन् १९३३
अन्तर—१२९ वर्ष

नेपोलियनका रूस पर आक्रमण
सन् १८१२
हिटलर का रूस पर आक्रमण
सन् १९४१
अन्तर—१२९ वर्ष

नेपोलियन का पतन सन् १८१५
हिटलरका पतन सन् १९४४
अन्तर—१२९ वर्ष

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० ७ दिसम्बर १९४४

साम्प्रदायिक समस्या

देश में भयंकर दरिद्रता और अश्रुतपूर्व संकट काल उपस्थित है। राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक सभी दृष्टियों से हमारा देश बुरी तरह कष्ट पीड़ित हो रहा है। युद्ध में प्रत्यक्ष शरीक न होते हुये भी अपने आकाओं की मरज़ी से हम युद्धारत हैं। बंगाल, बिहार, राजपूताना और दक्षिण आदि की दारुण दशा, महामारी और अन्न कष्टों से लगभग ६० लाख प्राणियों का नाश होजाना आदि सभी हमारे प्रभुओं की कृपाओं के 'सुफल' हैं। युद्धोत्तर उन्नति की सुविशाल योजनायें बन रही हैं। यह कैसी हास्यास्पद और आश्चर्यजनक अवस्था है।

सरकार तो वह ही करेगी जो उसकी इच्छ होगी और जो उसे अच्छा लगेगा, जिस से उसे लाभ होगा। किन्तु देशवासियों का भी तो कुछ कर्तव्य है। इस समय कमसे कम हम जो कर सकते हैं, यदि उतना भी कर सकें तब भी देश के संकट में शायद आधी कमी हो जाय। हम जानते हैं और हमें विश्वास है कि हमारी विदेशी सरकार हमारे प्रत्येक कार्य में मुख्य रूपसे बाधक है, वह जैसे भी बने हमें असंगठितही रखना चाहती है और दल बन्दी, फिरके बंदी, यह बंदी, वह बंदी स्थिर रखना चाहती है। नित्य नई ईजादें–विभिन्नतायें–पैदा करदेना तो उसके लिये बड़ा सरल है। शायद कुछ उर्वरा मस्तिषिक इसी आविष्कार में हर समय संलग्न रखे जाते हैं, क्यों कि इसी में उसका भला है और स्थिरता है। फिर भी क्या हम अपनी भलाई, बुराई को समझने की सामर्थ्य सर्वथा खो चुके हैं? सर्वसाधारण जनता तो भोली भाली है, कोई भी चलता पुर्जा नेता नामधारी उसे अपने पीछे लगा सकता है और लगा लेता है। कुछ राजनीतिज्ञ कहलाने वालोंने ही साम्प्रदायिक कलह को इतना उग्ररूप दिया हुआ है। उनकी दृष्टि में स्वतन्त्रता का अर्थ है अधिक से अधिक नौकरियां प्राप्त कर लेना मात्र; उन्हें भूखी, नंगी जनता के पेट और तन की चिन्ता नहीं है। वह सदा ही 'मजहब ख़तरे में है' की बांग लगाकर सर्वसाधारण को गुमराह किया करते हैं, अन्यथा पहिले क्या विभिन्न सम्प्रदायों के स्त्री-पुरुष नहीं रहा करते थे? उनमें कभी एक दूसरे के प्रति अन्याय की आशङ्का नहीं होती थी, भय नहीं लगता था, सभी के स्वार्थ समान थे। प्रश्न हो सकता है गरीबी अमीरीका, मालिक और मजदूर का, और इसमें हिंदू, मुसल्मान, अल्प संख्यक-बहुसंख्यक का विचार ही नहीं होता है। जनता को यह बातें भली प्रकार समझ लेना चाहिये और इन नेता नामधारी महापुरुषोंसे सदा ही बचा रहना चाहिये जिनकी रोटी ही साम्प्रदायिक कलह की भट्ठी में ईंधन डालते रहने से ही चलती है। हमें दुःख है कि शहरों से अब यह रोग ग्रामों में भी पहुंचने लगा है और वहां की शताब्दियों की शान्ति तथा सहानुभूति और भाई चारे को नाश करने लगा है। इस दिशा में महात्माजी के उद्योग अत्यन्त ही सुफलदायक होसकते हैं यदि कृपा कर वह अमुक को प्रसन्न करने, राजी करने या जबरदस्ती मनाने की अपनी नीति को थोड़ासा शिथिल कर दें। अकसर ऐसा देखा जाता है कि अधिक समझाने, बुझाने, आग्रह करने और खुशामदें करने या डाढ़ी को हाथ लगाने से लोगों का मिजाज आसमान पर चढ़ जाता है। अपनी रीति-नीति से सामने वाले को अनुचित महत्व देना कभी भी कल्याण प्रद् नहीं होता, इससे तो वह मद मस्त होकर विवेक और बुद्धि तक खो बैठता है और अपने सिवा उसे कोई दूसरा दीखताही नहीं है।

हमें इस साम्प्रदायिक मनोवृति का समूल नाश करना होगा और कठोरताके साथ नाश करना होगा और इसका एक ही रामबाण इलाज है

शुद्ध राष्ट्रीयता

और कुछ नहीं। इसी दृष्टि बिन्दू–केन्द्र स्थल पर सभी देश वासियों को एकत्रत होना होगा और यह तब ही संभव हो सकता है जब कि हमारे मनों में एक दूसरे के प्रति सहष्णुता पैदा हो जाय, हम दूसरोंके दर्दको अपना दर्द और दूसरों की हानिको अपनी हानि समझना सीख जांय। हजार काम छोड़कर हमें इसी मनोवृत्ति का सर्व प्रथम प्रचार करना चाहिये, तब ही कुछ आशा हो सकती है।

इस देश का कैसा दुर्भाग्य है कि कोई न कोई बखेड़ा यहां नित्य नया ही खड़ा होता रहता है। बैठे ठाले 'सत्यार्थ प्रकाश' का प्रश्न खड़ा करके हमारे इसलामी बंधुओंने जिस कलुषित मनोवृत्ति का परिचय दिया है वह बड़े ही भीषण परिणाम प्रकट करने वाला हो सकता है। सिक्खों ने भी मुसलिमलीग के साथ नाता जोड़ना चाहा है और मिस्टर आरुण्डल ईसाईयों को उकसा रहे हैं। ईश्वर न करें कल को जैनी और दूसरे मतवादी भी यह ही मांग कर बैठें क्यों कि खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। इन सबको भली प्रकार ज्ञात है कि आर्य्य समाजी इस क्षेत्र में जैसा मुकाबला करेंगे उसका उदाहरण नहीं मिलेगा। सुना है कि लाखों सत्यार्थ प्रकाश वितरणके लिये तय्यार हैं और इनकी शिरोमणि सभा व्यवस्थित प्रचण्ड आन्दोलन की तय्यारी कर रही है। प्रतिक्रिया रूप में कुरआन शरीफ के खिलाफ आन्दोलन संगठित हो रहा है। अब भी समय है कि सिन्ध सरकार अपनी भूलका सुधार करले और इस निरर्थक पाबंदी को उठा ले अन्यथा देश की अशान्ति की वह जिम्मेदार होगी।

प्रार्थना

●

हे दीनबन्धु, करुणानिधान,
जगती-तल के चिर-सत्य-प्राण,
हो रही व्याप्त है कण-कण में
तेरी ज्योतिलीला महान् ॥१॥ हे०

सर-सरिता-निर्झरिणी का जल,
बहता रहता प्रति पल अविरल,
कल-कल करता, गाता फिरता
तेरे ही यश का मधुर गान ॥२॥ हे०

ये मृदुल और मंजुल कलियाँ,
तरह-तरह की ये सुमनावलियाँ,
स्फुट करतीं, विकसित करतीं
तेरी ही सुन्दरता महान् ॥३॥ हे०

झिलमिल-झिलमिल तारे अगणित,
नीलाम्बर को करते शोभित,
यह भव्य रूप, उनका स्वरूप
तेरे प्रकाश से दीप्तिमान् ॥४॥ हे०

प्रभु! तेरा यह प्रकाश निर्मल,
जग को ज्योतित करता प्रतिपल,
मेरा हृद्-हल भी हो उज्ज्वल,
पाकर उसका नव-दिव्य दान ॥५॥ हे०

द्वारका प्रसाद माहेश्वरी एम्. ए.

सत्यार्थ प्रकाश और राष्ट्रीयता

गांधी-जिन्ना भेंट की असफलता और सत्यार्थ प्रकाशपर सिन्ध सरकार का प्रतिबन्ध कुछ लोगों के दृष्टिकोण से बिल्लीके भाग्य छींका टूटा है। गांधी-जिन्ना भेंटके पूर्व कई समाज और सोसायटियों ने जो होहल्ला मचाया था, "गांधीजी पाकिस्थान स्वीकार कर लेंगे" कह कर जो लम्बे लम्बे तार वाइसरायको दिये गये तथा विदेशियों के सम्मुख अपनी फूट का जो नग्न रूप दिखाया गया उसके द्वारा हमारी राष्ट्रीय प्रगति को कितना धक्का पहुंचा है उसका प्रत्येक विवेकशील मनुष्य अनुमान कर सकता है।

आज की परिस्थिति में राष्ट्रीय भाग्य और प्रवृत्ति में घोर संघर्ष हो रहा है। आज जहां राष्ट्रीय एक्यता की आवश्यकता है वहां प्रकृति कदम कदम पर विपरीत होती जा रही है। गांधी जिन्ना भेंट की असफलता के जख्म पर सत्यार्थ प्रकाश के प्रतिबन्ध ने नमक छिड़क दिया है। पाकिस्थान की योजना पर इस प्रतिबन्ध ने अधिक जोरदार सील लगा दी है।

हम जहां सत्यार्थ प्रकाश के प्रतिबन्धका घोर विरोध करते हैं वहीं इस बात का विरोध करनेसे भी नहीं चूकते कि इस बात को सुलझाने के बजाय ताल ठोंककर उलझाने में हमारी अधिक सफलता नहीं है।

भारतियों के धार्मिक संस्कार बहुत गहरे हैं। धर्म पर आक्रमण होते ही प्रत्येक बूढ़े और बच्चे का ख़ून खौल उठता है। ब्रिटिश साम्राज्य में भारतीय शान्ति का एक मुख्य कारण यही है कि उन्होंने आजतक भारातियों के धर्म कर्म पर कभी आक्रमण नहीं किया। आज हम अपने धर्म की दुहाई उनके द्वार पर दे रहे हैं, परन्तु क्या यह सच नहीं है कि वे पत्थर के बजाय गुड़ की ढेली से मारना अधिक पसंद करते हैं?

सत्यार्थ प्रकाश क्या किसी भी धार्मिक ग्रन्थ के विरोधियों के विरुद्ध अविवेक एवं आवेश पूर्ण आक्रमण करना बुद्धिमानी नहीं है और न यह उस धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा का द्योतक है।

सत्यार्थ प्रकाश जैसे सुन्दर प्रगतिशील ग्रन्थ पर प्रतिबंध लगाकर सिन्ध सत्ता ने जिस हास्यास्पद बुद्धिमानी और राजनीति का परिचय दिया है वह आश्चर्यजनक है। क्या कुरान में ऐसे प्रसंग नहीं हैं जिन पर भारतीय आपति कर सकें? हैं और अवश्य हैं। परन्तु मुसल्मि भाईयों का धार्मिक दायरा अत्यन्त संकुचित है जब कि हिन्दुओं के धार्मिक बंधन वास्तव में बंधन हैं ही नहीं। एक हिन्दू ३३ कोटि देवताओं की पूजा आर्चना के बाद भी ताजिये के नीचे से गुज़रने में और पीर पेगम्बरों की कबरों पर अगरबत्ती जलाने में जरा भी नहीं सकुचाता। फिर इस राष्ट्रीय राजसूयज्ञ की सफलता का घोड़ा सिन्ध सरकारने बीचही में पकड़कर जिस विकट परिस्थिति को उत्पन्न किया है उसका कुप्रभाव मिटते बहुत समय लगेगा और इस से हमारी सफलता की मंजिल बहुत कुछ आगे बढ़ गई है।

उपसंहार में हम अखिल भारतीय हिन्दु धर्म सेवा संघ के प्रधान मंत्री प. रामाशंकरजी त्रिपाठी की बात को दुहराना चाहते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश की एक पंक्ति तो क्या एक अक्षर भी नहीं निकाला जा सकता और इस शेष नाग को छेड़ कर कोई भी शान्तिपूर्वक नहीं रह सकेगा।

महात्मा गांधी की मूकताने इस प्रश्न को और भी अधिक जटिल बना दिया है। कॉंग्रेस नेताओंमें पं. नेहरु जैसे दो चार नेताओं को छोड़कर कोई भी ऐसा नहीं जो अपनी स्वतन्त्र सम्मति इस विषय पर प्रकट कर सके। नेहरु जी जेल में बंद हैं, कोई अन्य कॉंग्रेस नेता बोलता नहीं। यह साहस इनमें क्यों नहीं है?

आशा है कि वायसराय महोदय शीघ्र ही अपना गंभीर निर्णय देकर इस विरोधी और परस्पर फूट के प्रश्न का अंत कर देंगे।

—विश्वनाथ वामन काले

गुरुकुल कांगड़ी

आजकल की पत्रकार कला

आप जो सुनायेंगे हम वह ही सुनेंगे।
आप जो बतायेंगे हम वह ही जान सकेंगे–
आपकी अंजुमन की है क्या बात।
आह छिपती है, वाह छपती है ॥
—अकबर।

पत्रकार कलाका आदर्श कितना उच्च है, पत्रकारका पद कितना गौरवपूर्ण है और कितने उत्तरदायित्वका है–इन बातों को विरले ही समझते हैं। विदेशों में इस कलाकी खूब उन्नति हुई है और अपने उच्च तथा पवित्र आदर्श पर दृढ़ता के साथ अग्रसर होनेवाले प्रभावशाली पत्रों का वहां बाहुल्य है। किन्तु हमारे यहां की क्या दशा है। हमारे विरोधी हमें नकल्ची कहते हैं। उनका यह ताना सर्वथा ही झूट नहीं है। किन्तु रोना तो इस बातका है कि हम नक़ल भी अधिकतर बुरी बातोंकी ही करते हैं। अच्छी बातों की नक़ल करने तक में हमारी बुद्धि कुण्ठित हो जाती है।

हमारे यहां उच्चादर्श को निभानेवाले पत्रकारों का सर्वथा ही अभाव नहीं है किन्तु उनकी प्रचुरता भी नहीं है, और हमारे हिन्दी जगतमें तो इने गिने ही कलाकार हैं, वैसे 'यशस्वी' 'सफल' और जाने क्या क्या दूसरी उपाधि विभूषितों की तो खूब बाहुल्यता है। इस पवित्र और पुनीत कला की मिट्टी ख़ीद किसी को देखनी हो तो हमारे वर्तमान पत्र जगत का कुछ दिन गम्भीरता के साथ अध्यन करें। हमारा उद्देश्य है अपना और अपने पिठ्ठुओं का ढोल पीटना। देश को, समाज को और राष्ट्र को किस चीच की जरूरत है और हमें उसके लिये कौनसी सामग्री प्रस्तुत करनी चाहिये–इस बात की हमें उतनी चिन्ता नहीं है जितनी कि इस बात की है कि हमारा और हमारी हां में हां मिलाने वालों का विज्ञापन किस प्रकार किया जाय।

यह भयंकर रोग पहिले से ही कुछ कम नहीं था किन्तु राष्ट्रीयता की गुहार मचाने वाले इस युग में तो इसकी भयंकरता बहुत अधिक बढ़ गई है। हम 'राष्ट्रीयता' की आड़ में अपनी सभ्यता, शिष्टता, आचार, व्यवहार, धर्म, नीति, न्याय, संस्कृति और इतिहास आदि सब पर हड़ताल फेर देने को उद्यत हैं और तब हम निर्लज्जताके साथ कहते हैं कि 'यह सब स्वराज्य प्राप्तिके लिये अनिवार्य है।' मालूम नहीं वह स्वराज्य हमारे लिये कितना उपयोगी और कल्याणप्रद होगा जिसकी प्राप्तिके उद्योगमें ही हमें अपना सर्वस्व छोड़ देनेके लिये कहा जा रहा है। जब वास्तविक स्वराज्य मिल जायगा तब तो मालूम नहीं हम यहां श्वांस भी ले पायेंगे या नहीं। आज ही जब हम जरा अपनी बात कहनेके लिये मुंह खोलते हैं या लेखनी उठाते हैं कि फौरन ही गर्दनजदनी समझे जाते हैं और कुफ्र का फतवा हमारे लिये दे दिया जाता है।

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम।
वह क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता ॥

ईश्वर ही जानें यह 'राष्ट्रीयता' हमें किस रसातलको ले जायगी। वाणी और लेखनी की स्वतन्त्रताके लिये हम जमीन और आसमान एक कर रहे हैं, जेलें भरने की बहादुरी बता रहे हैं, 'सत्याग्रह' की दुहाई दे रहे हैं किन्तु वह ही अधिकार हम अपनेसे मतभेद रखने वालों को देने को तय्यार नहीं हैं। तब दूसरों को क्या अधिकार है कि वह हमारे विरुद्ध जबान खोलें, लेखनी उठायें या दृष्टि फेरें? दूसरोंको असहष्णु कहनेका हमें तो जन्मसिद्ध अधिकार है किन्तु हमारी भयंकरसे भयंकर असहष्णुता पर दूसरे उंगली तक नहीं उठा सकते हैं! हमारे कथनको, हमारी आज्ञाको, हमारे मन्तव्यको वेद वाक्य, और ईश्वरीय हुक्म की तरह सबको मानना ही चाहिये!!!

इस धांधली ने हिन्दी पत्र जगत में भी अपना प्रभुत्व जमा रक्खा है। कुछ सञ्चालक और सम्पादक गण यहां 'यशस्वी' बन बैठे हैं, घमण्ड के मारे उनके मिजाज ही नहीं मिलते हैं, वह अपने सामने किसी को कुछ समझते ही नहीं हैं। सम्पादकीय शिष्टाचार उन्हें छू तक नहीं गया है। नैतिकता और धार्मिकता का उनकी दृष्टि में कुछ भी मूल्य नहीं है। नाम हो, हम 'यशस्वी' कह लायें और पैसा मिले, चाहे जैसे भी मिले, पर मिले अवश्य। बस। ऐरे गैरे नथ्थू खैरे हमारे यार गारों का बोल बाला हो और हम 'सफल' समझे जायं यह ही है हमारी पत्रकार कला का वर्तमान आदर्श। कोई भी पैसे वाला चांदी के चंद टुकड़े फैंककर हमें खरीद सकता है और तब वह पाल्तू कुत्ते की तरह दुम हिलाते हुये हमें देखकर मन ही मन खुश हो सकता है। सिनेमा वाले तो अपने खेलों के 'पास' और विज्ञापन देकर ही अखबारों को खरीद लेते हैं और फिर अपनी सड़ी से सड़ी गन्दी, इतिहास विरुद्ध, नैतिक और धार्मिक दृष्टि से भ्रष्ट फिल्मों की भी भरपूर प्रशंसा करा सकते हैं।

संगठन बड़ी सुन्दर चीज है, किन्तु संगठन का मतलब किसी ऐसे गुट्टसे तो कदापि नहीं है जिसके विचारों से पूरे सोल्ह आना सहमति न रखनेवाले को जीने तक के अधिकारसे वञ्चित कर दिया जाय। हमारे हाथ में खुदाई फौजदारी है क्या?

यह घमण्ड, यह अनैतिकता हमें रसातल की ओर ले जायगी। देश और समाज का तो जो उद्धार होना होगा वह होगा ही किन्तु हम अपने को अवश्य ही इतिहास के पन्नों में सदाके लिये पतित लिखा लेंगे और भावी सन्तान हमारे नाम पर निरन्तर लाहोल पढ़ा करेगी–यह ध्रुव सत्य है और सुनिश्चित है। कर्त्तव्य भ्रष्ट और आदर्शच्युत प्राणियों का यह ही परिणाम हुआ करता है।

विदेशों की तरह हमारे देश में भी अब धनाढ्यों को अखबारों का मालिक बनने का चस्का लगा है। एक एक मालिकने कई कई अखबार खरीद लिये हैं और सुनना है कि एक बड़े करोड़ पति शीघ्र ही देश के विभिन्न नगरों से और कई भाषाओं में अखबार निकालने की योजना बना रहे हैं। इधर हमारी सरकार भी अपने प्रो पगण्डा के लिये कई अखबारों की सृष्टि कर रही है। इन सब प्रवृतियों का अर्थ है विचार स्वातन्त्रय का गला घोंटना और अपनी ही एक आवाज की चारों तरफ से ध्वनि प्रकट करना। यह चीज इस गुलाम देश की गुलामी और नैतिक पतन की वृद्धि में ही सहायक होगी स्वातन्त्रय विकास में कदापि नहीं।

हम 'रूटर' की निन्दा किया करते हैं। हमें शिकायत रहती है कि जिन समाचारों से भारतियें की दिल्चस्पी हो सकती है, जिनसे उनकी कुछ भलाई हो सकती है--- ऐसे समाचारों के साथ 'रूटर' न्याय नहीं करता और अधिकतर समाचार ब्रिटिश प्रचार को ध्यान में रखकर ही भेजे जाते हैं जिनसे यहां की जनता को कोई दिल्चस्पी नहीं होती, हमारा कोई लाभ या भला नहीं होता।

'रूटर' के सम्बन्ध में यह शिकायत वाजबी हो सकती है। वह हम से काफी पैसे लेकर भी हमारे हितों की अवहेलना करता है। किन्तु क्या ठीक यह ही दशा हमारी अपनी भी नहीं है? भारत में किसी एक पार्टी की मनोवृति के जितने पत्र इस समय प्रकाशित हो रहे हैं उन सभी की रीति–नीति 'रूटर' से भी गई बती है। आज तो हम यहां मात्र हिन्दी की ही विशिष्ट मनोवृति वाले पत्रों की चर्चा करने लगे हैं। इन्हे दूसरों की सहिष्णुता और सहृदयता का मज़ाक उड़ाते लज्जा नहीं आती और संकोच नहीं होता, जब कि इनमें दूसरों के मुकाबले चौथाई भी सहिष्णुता, 'शिष्टता' सहृदयता और उदारता नहीं है। जनता के लाभ के आवश्यक से आवश्यक समाचारों, लेखों, व्यक्तव्यों और विचारों को यह बड़ी ही बेदर्दीके साथ रद्दी की टोकरी में डाल देते हैं और नाक भों सिकोड़ते हैं, जब कि अपने सड़े से सड़े समाचारों को, फोर्थ क्लास व्यक्तियों की अत्यन्त ही उपेक्षणीय बातों तकको मोटे मोटे शीर्षकोंके साथ, एकही अंक में भिन्न भिन्न स्थानोंपर, सजाकर प्रकाशित करते हैं और प्रयत्न करते हैं कि हमसे तनिक सा भी मतभेद रखनेवालों के विषय में एक शब्द भी प्रकाशित न हो सके। कुछ हिन्दी के पत्रोंने तो ऐसा गुट्ट बना रखा है कि वह सारे हिन्दी पत्रकार जगत को अपना आज्ञाकारी ही बनाये रखना चाहते हैं। उनका दिमाग़ आसमान पर है, उनके घमण्ड का ठिकाना नहीं है, वह अपनी शान के मारे जमीन पर पैर ही नहीं राखते हैं। अरे भाई! माना कि आप साधन सम्पन्न हैं, बड़े बड़ों का आपको समर्थन प्राप्त है, आप 'राष्ट्रीयता' और शुभ्र वस्त्रों की आड़ में जो कुछ भी करें वह सब आज जायज और शुद्ध देशभक्ति ही समझी जाती है फिर भी दूसरों को भी तो जीने का अधिकार है, सारी खुदाई के आप अकेले ही ठेकेदार तो नहीं बन गये हैं। 'राष्ट्रीयता' की धौंस मत जमाईये, कुछ चरित्रबल और आत्मबल भी प्राप्त कीजिये। जेल चले जाना और फिर वहां से माफी मांग कर, इकरारनामा लिखकर या बीमारी के बहाने वापस आजाना ही मात्र तो देशभक्ति नहीं है। मात्र स्वतन्त्रता की पुकार ही से तो देश स्वतन्त्र नहीं हो जायगा। दूसरों को भी बोलने, लिखने और अपने विचार प्रकाशित करने की स्वतन्त्रता दीजिये और यदि शक्ति है, योग्यता है तो उन्हें समझा बुझाकर अपनी सम्मति का बनाईये। गुर्राकर, डाट बताकर, ढोल पीटकर तो लोग आपके बनने से रहे। आपके भीतर ऊंची देश भक्ति होगी क्यों कि आपके पास उसका विज्ञापन करने के लिये पर्याप्त से भी अधिक साधन हैं। किन्तु दूसरों की देश भक्ति को तुच्छ या हास्यास्पद समझने का आपको क्या हक है? यह आप की अत्यन्त ही निन्दनीय, ओछी और असहृदयतापूर्ण कलुषित मनोवृत्ति का भोंडा प्रदर्शन मात्र है और कुछ नहीं। आप 'यशस्वी सञ्चालक,' 'सफल पत्रकार' और चाहे कुछ भी होंगे, रहें; किन्तु दूसरों को भी तो जीने दें। सभी को मार कर–अपने मार्ग से हटाकर, एक आपका ही अस्तित्व के सर्वोपरि नहीं होगा।

हमारे पास पुष्ट प्रमाण हैं और अखण्डनीय प्रमाण हैं, दृढ़ कारण हैं–यह सुनिश्चित रूपसे प्रकट करने के लिये कि चांदी के या कागज के कुछ टुकड़ों के लिये आप सिनेमावालों के सामने नाक रगड़ते हैं, उनकी निकृष्ट से निकृष्ट रचनाओंकी प्रशंसा करते और परिवार सहित देखने की सिफारिश करते नहीं थकते। देशी राज्यों की थोड़ी सी महरबानी से, गेस्ट हाऊस में ठहराने, सवारी के लिये थर्डक्लास मोटर देदेने, ऐरे गैरों की चाय पार्टी में बुला लेने और बिदायगी में १०–२० नोट जेब में डाल देने मात्र से आप की राष्ट्रीयता, देश भक्ति और नैतिकता सब काफ़ूर हो जाती है। अपने निकम्मे से निकम्मे और सर्वांश में ढोंग मात्र आन्दोलनों का अंधाधुंध, अति रञ्जित और झूठा विज्ञापन करके आप दूसरों की आंखों में कब तक धूल झोंकते रहेंगे? हम इसे परले सिरे का पाप, अन्याय, अनीति और दम्भ समझते हैं और हमारा विश्वास है कि आपकी यह नीति पवित्र राष्ट्रीयता, देश भक्ति और नैतिकता को कलंकित ही करती है, लजाती है और देशको आगे बढ़ने से रोकती है। एक ओर कांग्रेसके विचारोंका ऊंची आवाजसे समर्थन करते हुये युद्ध प्रयासोंमें सहयोग न देनेका प्रचार करना और दूसरी ओर डिफेन्स सर्टीफिकेट और वार लोन्सके सरकारी बड़े बड़े विज्ञापन छापकर धन कमाना यह दुरुपी और छल भरी नीति वह ही बरत सकते हैं जो 'यशस्वी' हैं और 'सफल' कहलाते हैं। दूसरों पर आक्षेप करनेसे पूर्व हम स्वयम तनिक गर्दन झुकाकर अपनेको भी देख लिया करें तो कोई पाप तो नहीं लग जायगा। हर समय 'पर उपदेश' का पुण्य कमाते रहनेसे यदि कभी कभी थोड़ासा स्व-आत्मचिन्तन भी कर लिया करें तो शायद अधिक उपकार हो, महत् कल्याण हो।

–एक मुक्त भोगी पत्रकार।

लिख रे ! कवि आज कटारी सौं !

★

(श्री '**लेख**'—अजमेरी)

●

अबरू की चोटों से आकुल, तड़प तड़प कर आहें भरते ।
नयन-वाण सौं आहत हो हो, सदियां बीतीं जीते मरते ॥
मादकता दे त्याग अरे ! क्यों मरे विषम बीमारी सौं । लिख रे कवि ॥ १ ॥

घुंघराले गेसू, क्षीन मुंह, कमर सर्पसी बल खाती हो ।
चलें चाल मृणाल, मनों धरती पाताल धंसी जाती हो ॥
वीरसुता कविता हा ! परणी आज अनारी सौं । लिख रे कवि ॥ २ ॥

कविता को नर्तकी बना, संगीत वीर को भांड़ बनाया ।
श्रृंगार सुरा की इस भट्टी में, शुद्ध वीर-रस हाय जलाया ॥
मदमाती अंखियां तेरी झुक रहीं खुमारी सौं । लिख रे कवि ॥ ३ ॥

लोचन रूप-वारुणी पी पी, श्रोत्र संग रण सौं मुंह मोड़े ।
कर-पादप हैं थिरक थिरक, जा रहे रति के पीछे दौड़े ॥
कौन सलाह करे आकर, बुद्धि बेचारी सौं । लिख रे कवि ॥ ४ ॥

उधर देश के लाल युद्ध की दावानल में दहक रहे थे ।
तुम कवि-सम्मेलन रच रसिया ! इत बुल बुल बन चहक रहे थे ॥
सीखी समस्या-पूर्ति नहीं, 'गांधी' गिरधारी सौं । लिख रे कवि ॥ ५ ॥

वेद-शास्त्र सत-काव्य हमें, बेहोश जान कर गये किनारा ।
विद्या, सत्य कला-कौशल, धन, धर्म, अमर साहित्य, सिधारा ॥
चली जारही हमें छांड़ि वसुधा लाचारी सौं । लिख रे कवि ॥ ६ ॥

गुल-बुलबुल, गुलशन, गुललाला, छोड़ ! तोड़ दे हाला-प्याला ।
आग लगा इस मैखाने को, हटा यहां से गड़बड़ झाला ॥
एक एक घूंट पिला दे सब को, अमृत की झारी सौं । लिख रे कवि ॥ ७ ॥

फैंक लेखनी कौमल कर से, फोड़ दवात अरे पत्थर से ।
कुन्द-कली सी इन अंगुरिन को कर कराल लोहा कंकर से ॥
पाषाणों के हृदय चीर लिख, इस नख की आरी सौं । लिख रे कवि ॥ ८ ॥

राग मल्हार, भैरवी, कजरी, कौन सुनें अब टप्पा ठुमरी ।
सुना रुद्रका राग मृतुञ्जय, शिवकी बजा भयंकर खंजरी ॥
कांप उठैं दिग्गज, भू डोले, तेरी किलकारी सौं । लिख रे कवि ॥ ९ ॥

मलमल, अतलस, चिकन, गुलबदन के थानों में आग लगा दे ।
मलयगिरी, चम्पई, बसन्ती, फीरोजी रंग धोय बहा दे ॥
खादी का केसरिया-चोला, रच कपास की क्यारी सौं । लिख रे कवि ॥१०॥

चहुं-दिश हाहाकार मचै, सब चीख उठैं दैय्या मैय्यारे ।
और इन खंडित नरमुंडोंसे अब छूटें रंगके फव्वारे ॥
खेल फाग मतवारे ? अब पोड़ितकी पिचकारी सौं । लिख रे कवि ॥ ११ ॥

मौलश्री, चम्पा, गुलाब, रजनीगंधाके झाड़ जलादे ।
ऊंट-कटेरा, नागफनी, कीकर, करीलके बाग लगा दे ॥
मिस गुलाबके मधुप ! शूल खा जाना फुलवारी सौं । लिख रे कवि ॥ १२ ॥

गढ़, पैलिस, परकोट ढहादे, सम्राटों के महल गिरादे ॥
इस चमचम करते कीटको तोड़फोड़ कण कण बिखरा दे ।
नर-भक्षी इन भूपतियोंको पटक अटारी सौं । लिख रे कवि ॥ १३ ॥

नथुनोंसे तूफ़ान उठै, मुखतेज देख रवि शशि शर्मायें ।
भूषण, चन्द्र समान, तेरी वाणी से तीन लोक थर्रायें ॥
ज्वाला-मुखी फटै, तेरे नयनन की चिनगारी सौं । लिख रे कवि ॥ १४ ॥

रक्तिम ये अधर-चाप दो दो, हों रणस्थली में सजे धरे ।
और इस वाणी के तरकश में, हों पैने पैने वाण भरे ॥
मर्मस्थल कर लक्ष वेध अब हृदय सुरारी सौं । लिख रे कवि ॥ १५ ॥

कापुरुषों को पुरुष बना, दे खड़ा आज कर वीर वेष में ।
वीरों की चतुरंगी सैना, लेकर जा डट समर क्षेत्रमें ॥
शब्दवेध, शर चले तेरे गजकी अम्बारी सौं । लिख रे कवि ॥ १६ ॥

गीता, की गंगा में न्हा कर, दास-बोध पढ़ बन शिवाजी ।
देश धर्म का लेकर झंडा, प्राणों की वद पगले ! बाजी ॥
शारदूल सा उछल, निपट ले आज शिकारी सौं । लिख रे कवि ॥ १७ ॥

प्रस्तावों की झोली ले, गैरों के आगे क्यों ? रोता है ?
भीख मांगने, रिरियाने से, कहीं राज्य कोई देता है ?
भूले भारत-वासी बन सम्राट भिखारी सौं । लिख रे कवि ॥ १८ ॥

देश-द्रोही, पति सुत, पितु,-भ्रातासे तू नाता अभी तोड़ ले ।
दास, गुलाम क्षीणकायों का, जननी जनाना तुरत छोड़ दे ॥
राम, कृष्ण, अर्जुन से सुत, पुनः जन्में महतारी सौं । लिख रे कवि ॥ १९ ॥

देश-धर्म लुट गया, तेरे इन पाश्चात्य श्रृंगारों पे ।
क्यों झुलसावे देह-प्राण, इन आभूषण अंगारों से ॥
जगत शान्ति सुख लहै, बहिन ! तेरी खद्दर सारी सौं । लिख रे कवि ॥ २० ॥

संध्या का पीत वर्ण तज कर उषमा ललामसी आज सदय हो ।
ओ ! रविकुल की जननी । नितनित तेरे उर सौं भानु उदय हो ॥
कुन्ती, कौशिल्या बन मां ! कौमल सुकुमारी सौं ॥ लिख रे कवि २१ ॥

ग़ज़ल, क़सीदे, मदहसराई, छोड़ रज़मिया लिखो तराने ।
भामिन, दामिन, काम, रति, रस, रंगमयी तज छंद दिवाने ॥
लिखदे '**लेख**' अमर रासो मिट सकै न त्रपुरारी सौं ॥ लिख रे कवि॰ २२ ॥

जीवनमें सब कुछ नया नया

★

लेखक—एम्० माहेश्वरी

⁂

(१)

जीवन में सब कुछ नया नया
इसमें कुछ नहीं पुराना है
यह सृष्टि अमर नव चिर सुन्दर—
माया का खेल निराला है

(२)

संध्या होती उडुगण उड़ते
आकाश जगमगा उठता है
'बल्वों' की खिल सुन्दर लड़ियां
'पावर हाउस' बन जाता है

(३)

रात्रि के रहस्योद्घाटन
कर सका कौन है इस जग में—
कवि की भावुकता जाग पड़े
प्रेमी की प्रणय कथा इसमें

(४)

मत कहो कि यह घर मेरा है
घर तो आंसू आगार बना
चिड़ियों का रैन बसेरा है
मत कहो कि यह घर मेरा है

(५)

नव नूतन लाली लिए हुए
पूरब कब से है खड़ा हुआ
पर तुम हो जीर्ण शीर्ण मानव
प्राचीनों में तू पला हुआ

(६)

दुःख का जग में है नाम कहां
सुख सृजन भार वह लिए हुए
तू कहता जिसको है विनाश
वह खड़ा हुआ नव आश लिए

(७)

जग में अपूर्ण जो रह जाते
वे नष्ट नहीं हैं हो पाते
अध खिला फूल मरू की सरिता
स्व खुशबू-नमी छोड़ जाते

(८)

रस-पूरित मिलन विरह-हेतु
श्रृंगार बना करुणा कारण
नूतनता यदि हो जाय शान्त
भव का दुःख हो भारी दारुण

(९)

जिमि धूप-छांह दुःख-सुख स्वरूप
तिमि सुखदायक है विरह-मिलन
दोनों की सुन्दर रगड़न से—
बनता जीवन जीवन स्वरूप

(१०)

संगीत, चितेरा और कवि
भरते शुभ नूतनता भव में
वैसे ही भव का कलाकार—
दिखलाता नव माया जग में

(११)

जिसके बज रही सितार आज
कल को सम्भव हो रोना भी
इसलिए ध्यान धर प्रियतम में
तेरा तो है सब कुछ वह ही

(१२)

'एकाकी' प्रियतम से मिल ले
साथी वह बहुत दूर का है
मत हो अशान्त कर शान्त उसे
इसमें ही भला तव भव का है।

पाश्चात्य अनुकरण-मोहके त्यागकी आवश्यकता

ऐ भारत ! यही विकट भय का कारण है। पाश्चात्य जातियों की नकल करने की इच्छा हम लोगों में ऐसी प्रवल होती जाती है कि भले-बुरे का निश्चय अब विचार बुद्धि शास्त्र या हिताहित ज्ञानसे नहीं किया जाता। गोरे लोग जिस भाव और आचार की प्रशंसा करें वही अच्छा है और वे जिसकी निन्दा करें वही बुरा। अफसोस ! इससे बढ़कर मूर्खता का परिचय और क्या होगा ?

पाश्चात स्त्रियां स्वाधीन भाव से फिरती हैं इसलिये वही चाल अच्छी है; वे कपने लिये वर आप चुन लेती हैं, इसलिये यही उन्नति की सीमा है; पाश्चात्य पुरुष हम लोगों की वेष–भूषा, खान–पान को घृणा की दृष्टि से देखते हैं, इसलिये वे बहुत ही बुरे हैं; पाश्चात्य लोग मूर्तिपूजा को खराब कहते हैं, तो वह बड़ी ही खराब होगी; क्यों न हो ? पाश्चात्य लोग एक ही देवता की पूजा को कल्याणकर बताते हैं, इसलिये अपने देव-देवियों को गंगा में फेंक दो। पाश्चात्य लोग जाति भेद को घृणित समझते हैं इसलिये सब वर्णों को मिलाकर एक कर दो। पाश्चात्य लोग बाल्य विवाहको सब अनर्थों का कारण कहते हैं, इसलिये वह भी अवश्य ही बड़ा खराब होगा।

यहाँ पर हम इस बातका विचार नहीं करते कि ये प्रथाएँ चलनी चाहिये वा रुकनी चाहिये परन्तु यदि पाश्चात्य लोगों की घृणा-दृष्टि ही हमारे रीति-रिवाजों को बुरे साबित करें, तो इसका प्रतिवाद अवश्य होना चाहिये।

वर्तमान लेखक को पाश्चात्य समाज का कुछ प्रत्यक्ष ज्ञान है। इसी से उसका विश्वास है कि पाश्चात्य समाज और भारत समाज की मूल गति और उद्देश्य में इतना अन्तर है कि यहाँ जो कोई समाज पाश्चात्य का अनुकरण कर गठित होगा, वही इस देश में व्यर्थ होगा। जो लोग पाश्चात्य समाज में नहीं रहे हैं और वहाँ की स्त्रियों की पवित्रता की रक्षा के लिए, स्त्रियों और पुरुषों के आपस में मिलने के जो नियम और बाधाएँ प्रचलित हैं, उन्हें न जानकर जो अपनी स्त्रियों को पुरुषों से बिना रोक टोक के मिलने देते हैं उन लोगों से हमारी रत्ती भर भी सहानुभूति नहीं है।

पाश्चात्य देशों में भी मैंने देखा है कि दुर्बल जातियों की सन्तान जब इंगलिस्तान में जन्म लेती है तो अपने को वह स्पेनी, पोर्तुगाली, यूनानी आदि–जो वह हो–न बताकर अंगरेज ही बताती है। बलवान् की ओर सब कोई दौड़ता है। दुर्बल मात्र की यही इच्छा रहती है कि बड़े लोगों के गौरव की छटा उनके शरीर में कुछ लग जाय। भारतवासियों को जब मैं अंगरेजी वेश-भूषा में देखता हूं, तब समझता हूं कि ये लोग शायद पद-दलित, विद्याहीन, दरिद्र भारतवासियों के साथ अपनी सजातीयता स्वीकार करने में लज्जित होते हैं। चौदह सौ वर्ष तक हिन्दुओं के रक्त से पलकर भी पारसी लोग अब 'नेटिव' नहीं हैं। जाति हीन और अपने को ब्राह्मण बताने वाली जातियों के जात्यभिमान के निकट बड़े बड़े कुलीन ब्राह्मणों तक का जात्यभिमान कपूर की तरह उड़कर बिला जाता है।

फिर पाश्चात्यों ने अब हमें यह सिखलाया है कि यह जो कमर में ही कपड़ा लपेटने वाली मूर्ख जाति है वह अनार्य है ! ! इसलिये वे लोग हम लोगों के बन्धु नहीं है ! ! !

माँ मुझे मनुष्यत्व दो

ए भारत ! क्या दूसरों की ही हाँ में हाँ मिलाकर, दूसरों की ही नकल कर, दूसरों का ही मुँह ताक कर इस दासों की सी दुर्बलता, इस घृणित, जघन्य निष्ठुरतासे ही तुम बड़े बड़े अधिकार प्राप्त करोगे ? क्या इसी लज्जाकर कापुरुषता से तुम वीर भोग्या स्वाधीनता का लाभ करोगे ? ऐ भारत ! तुम मत भूलियो कि तुम्हारी स्त्रियों का आदर्श सीता, सावित्री, दमयन्ती हैं ! मत भूलियो कि तुम्हारा उपास्य सर्व त्यागी उमानाथ शंकर है ! मत भूलियो कि तुम्हारा विवाह, तुम्हारा धन और तुम्हारा जीवन इन्द्रीय सुख के लिये–अपने व्यक्तिगत सुख के लिये-नहीं है ! मत भूलियो कि तुम जन्म से ही 'माता' के लिये बलीस्वरूप रखे गये हो ! मत भूलियो कि तुम्हारा समाज उस विराट् महामाया की छाया मात्र है। तुम मत भूलियो कि नीच, मूर्ख, दरिद्र, चमार, और महतर तुम्हारा रक्त और तुम्हारे भाई हैं। ऐ वीर ! साहस अवलंबन करो। गर्व से बोलो कि मैं भारतवासी हूं, और प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है। तुम चिल्लाकर बोलो कि मूर्ख भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चाण्डाल भारतवासी सब मेरे भाई हैं ! तुम भी कमर ही में कपड़ा लपेटे गर्व से पुकार कर कहो कि प्रत्येक भारतवासी मेरा भाई है, भारतवासी मेरे प्राण हैं, भारत की देव-देवियाँ मेरे ईश्वर हैं, भारत का समाज मेरे बचपन का झूला, जवानी की फुलवारी और बुढ़ापे की काशी है। भाई, बोलो कि भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है, भारत के कल्याण में मेरा कल्याण है ! और रात––दिन बोलो कि–"हे गौरीनाथ ! हे जगदम्बे ! मुझे मनुष्यत्व दो। माँ, मेरी दुर्बलता और कापुरुषता दूर करो, मुझे मनुष्य बना लो !"

—श्री स्वामी विवेकानन्दजी के
'वर्तमान भारत' से

अवश्य ही—

"माहेश्वरी" के ७ नवम्बर के अंक में 'एक प्रश्न' पढ़कर और उस बहनकी यह दयनीय हालत जानकर हमें बहुतही दुःख हुआ, अगर ऐसी होवे तो उसे किसी सुयोग्य नवजवान के साथ दुबारा शादी करनमें कोई हर्ज नहीं। कानून अगर अटकाव करे तो उसकी 'बेकामी' साबित होनेपर कुछ भी नहीं बिगड़ सकेगा, ऐसी हमारी मान्यता है। दुनियाके अंदर सचाईके साथ कोई भी काम करना होवे तो हिम्मतसे करना चाहिये, शुरुआत में समाज अपने रिवाजके अनुसार उसका प्रतिकार करेगा, फिर भी सब अच्छाही होगा।

—मन्त्री, समाज सेवादल।

स्वाधीनता का देश अमेरिका

★

● (लेखिका–**श्रीमती पर्लबक**; अनुवादक–श्री ओम प्रकाशजी) ●

अमेरिका एक 'विचार' है। आप चाहें तो उसे एक स्वप्न' कह सकते हैं। किन्तु यह स्वप्नसे कहीं बढ़कर है क्यों कि यह कुछ ऐसे कार्यकर रहा है जिस से यह संम्भव प्रतीत होता है।

इस 'विचार' का क्या अर्थ है और अमेरिका क्या है। इसे हम सरल शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं; कि यह एक विचार है, जिससे विभिन्न जातियों के मनुष्य भूमि और आकाश के नीचे शान्ति पूर्वक रह सकते हैं। यदि वे केवल स्वतन्त्रता में विश्वास रखते हों, तो वे अवश्यही एक मिश्रित राष्ट्र बनासकते हैं। अमेरिका उन व्यक्तियों का नाम है जो संसार की भिन्न भिन्न जातियों और राष्ट्रों से आये हैं और जो एक ऐसे प्रदेश में बसना चाहते हैं जहां उन्हें स्वतन्त्रता की अनुभूति होती है। इस लिये हम कह सकते हैं कि अमेरिका मानव-जाति की स्वतंत्रता का मूर्त विचार है।

अमेरिका में आने वाले सभी व्यक्तियों को यह ज्ञान नहीं होता कि वे स्वतन्त्रता में विश्वास रखते हैं। किन्तु वस्तुतः वे विश्वास कर रहे होते हैं, भले ही उन्हें इस का अनुभव हो रहा हो या नहीं। उनमें से कुछ इसे शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकते। वे यही समझते हैं कि वे यहां एक उदात्त जीवन बिताने आये हैं। किन्तु वस्तुतः यह उनके स्वतन्त्रता के विश्वास का सूचक है। स्वतन्त्रता होना ही आत्मोन्नति है। स्वतन्त्रता को हम तब तक स्वतन्त्रता नहीं कहसकते जब तक वह मनुष्य को आत्मोन्नति की ओर नहीं ले जाती। कुछ लोग धर्म की और कुछ वाणी की स्वतन्त्रता के लिये यहां आते हैं।

इस से पूर्व कभी भी स्वतन्त्रता के उपासक बड़े और छोटे, शिक्षित और अशिक्षित, ज्ञानी और मूर्ख—एक दूसरे को न जानते हुए एक ही कल्पना से प्रेरिति हुए एकत्रित न हुए थे। जिसे हम राष्ट्र की स्थापना कह सकते हैं। क्या हम इस उपस्थित विचार को पागलपन कह सकते हैं ? भले ही मनुष्य इस के विरोध में अनेकों युक्तियां देसकते हों और इसे असम्भव कह सकते हों। भले ही यह बाधायें उग्र हो जायं और सत्य को अस्पष्ट कर दें। परन्तु स्वतन्त्रता प्राप्ति का विचार कोरी कल्पना से बढ़कर चीज है। यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्ति है, जिसे बच्चा गर्भ में ही सीख जाता है। क्योंकि जब वह गर्भ में बड़ा हो जाता है, तो उसे आत्मरक्षा के लिये बाहर निकलना जरूरी हो जाता है। इस प्रकार वह जन्म लेने का प्रयत्न करता है। युवक अपनी स्वाधीनता को जानता है। वह इसी लिये अपने परमप्रिय माता-पिता और घर को छोड़ देता है। पुरुष और स्त्रियां दोनों ही उसे नहीं चाहतीं जिस से उनकी स्वाधीनता में बाधा पड़ती हो। वे इसी लिये उस अमूल्य प्यार को भी ठुकरा देते हैं, जिस में उनकी स्वाधीनता नहीं रहती। इसी लिये शारीरिक व्याधि से ग्रस्त बूढ़े भी मरना चाहते हैं। यद्यपि उन्हें मृत्यु भयावनी लगती है। क्यों कि वे मर कर ही उस से छुटकारा पा सकते हैं।

इस लिये जब लोग अमेरिकामें आते हैं तो वे प्रकाशके देखने की तरह इस स्वाभाविक प्रवृत्तिको अपने साथ लाते हैं। जब वे प्रकाश तुल्य इस विचारको ग्रहण करते हैं तो वे इसके अंग हो जाते हैं। और जितना भी व्यय लगे वे उसे लगा कर यहां आना चाहते हैं। वे समुद्र पार कर इस नये देशमें पदार्पण करते हैं, जो इस लिये पवित्र नहीं है कि वह उनके देशसे अच्छा है। परन्तु वह इसलिये पवित्र है क्यों कि वह उनके मनोवांछित विचार की साकार प्रतिमा है। जिसमें वे अपनी उस स्वाधीनता की सहज प्रवृत्तिको अनायास ही सन्तुष्ट कर सकते हैं। क्यों कि उन्हें विश्वास है कि वे यहां अवश्य फूलें फलेंगे।

यूरोप की तरह अमेरिका में एक ही तरह के मनुष्य नहीं हैं और नहीं उनका इतिहास भारत और चीन की तरह एकसा है। परन्तु हां, उन सब में सामान्यरूपसे एक विचार अवश्य होता है वह है "अमेरिका" अर्थात् वे एक ऐसे वायुमण्डल को चाहते हैं जिसमें वे उन्मुक्तरूपसे रह सकें। इस के सिवाय उन्हें कुछ भी अभीष्ट नहीं है।

यह स्वतन्त्रता की उपासना ही उनकी शान्ति का एक मात्र कारण है। इसके अतिरिक्त उनको शान्ति की कोई आशा नहीं है और नहीं कोई कारण है, जिससे 'अमेरिका' छोटे छोटे लड़नेवाले राष्ट्रों का देश नहीं बन गया। परन्तु यह काम अनायास ही पक्षपात, द्वेष और भेदभाव से किया जा सकता है।

इस लिये उनका यह स्वतन्त्रतामें विश्वास रूपी विचार कितना अमूल्य है, और इसे कायम रखनेके लिये उन्हें कितना स्पर्धालु और उत्साही होना चाहिये।

स्वाधीनता शुद्ध हवा की तरह एक वातावरण है। और एक यही वातावरण है जिसमें मनुष्य की भावनाएँ मुरझाने लगती हैं और नष्ट हो जाती हैं। तब उसका केवल खाना पीना और संतति उत्पन्न करना मात्रही कार्य रह जाता है और वह पशुबन जाता है। जब मनुष्य की स्वतंत्रताका वायुमण्डल नष्ट हो जाता है, तो उसकी रचनात्मक कल्पना और उच्च मस्तिष्क और उसे देव बनाने वाले अविष्कार और खोज तथा कलायें भी नष्ट हो जाती हैं।

अमेरिका स्वतन्त्रता के लिये बनाया गया है अर्थात् यहां सभी व्यक्ति शांतिपूर्वक इकट्ठे रह सकें और एक दूसरेको सहयोग दे सकें। यह एक कच्चा घड़ा नहीं है। न यह कभी ऐसा था और न यह कभी ऐसा होगा। अतः अमेरिका के मनुष्यों को एक ढांचेमें ढालना निरर्थक होगा। यह नहीं हो सकता। अमेरिका एक ऐसा देश है जहां मनुष्य स्वतन्त्रता में विश्वास करते हुये, अपने प्रभेदों को कायम रखते हुए, इकट्ठे रह सकते हैं और अपनी भिन्नताओं की वृद्धि के द्वारा उनसे लाभ उठा सकते हैं। क्योंकि जहां बिना दण्डके भिन्नतायें रह सकती हैं वहीं सच्ची स्वतन्त्रता रहती है।

सुषमा

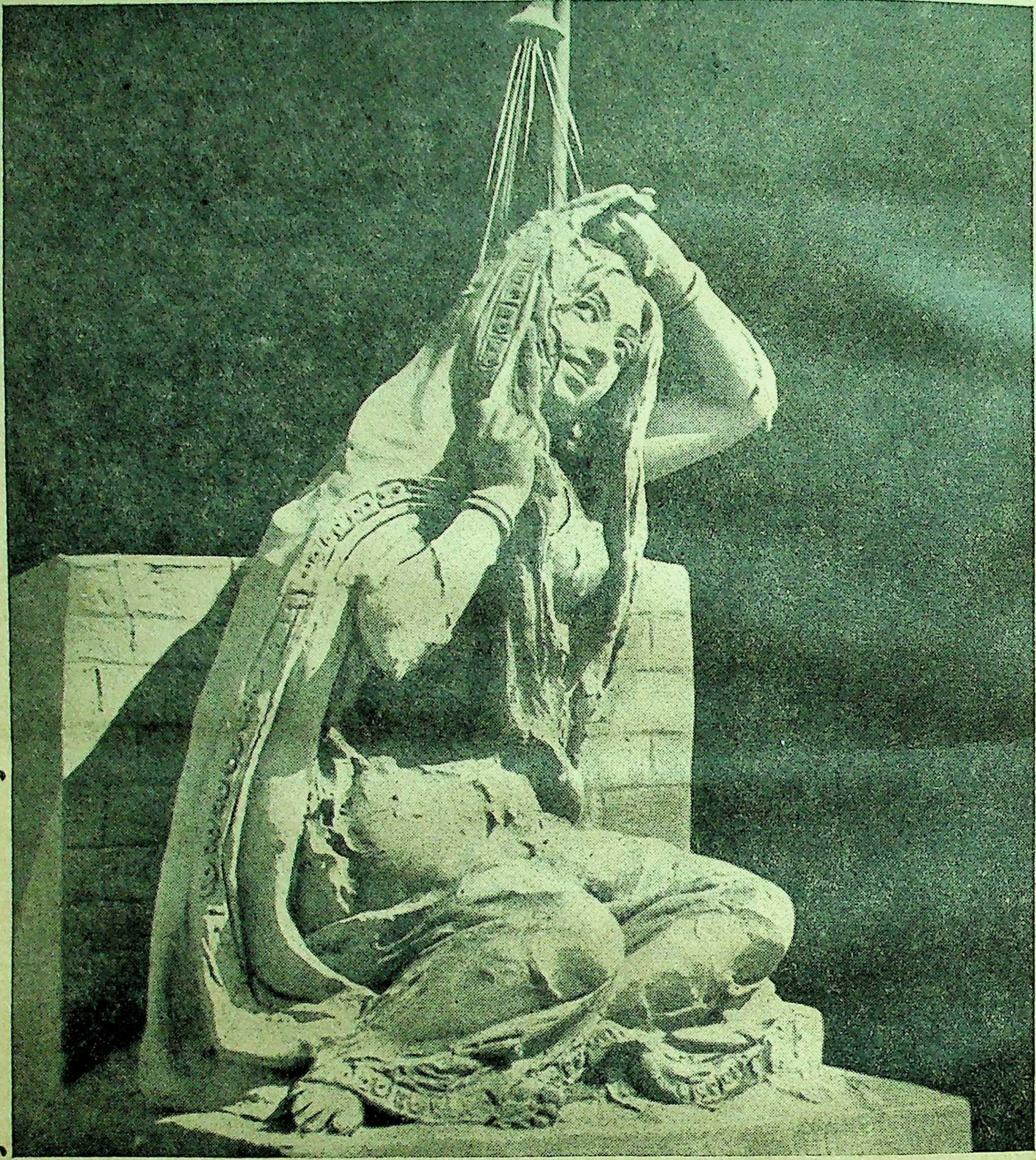

—श्री. जी. पाल द्वारा

साड़ी पहने नारी का यह निरूपण सुप्रसिद्ध कलाकार श्री. जी. पालने किया है।

लंदन में कुछ ही मिनटों के अंदर चित्रके ढांचे को मिट्टी की मूर्ति में परिवर्तित कर आपने बहुत ख्याति अर्जित की थी। वह वहां गजब के मूर्ति निर्माता के रूपमें प्रसिद्ध हो गये थे।

१९२४ में ब्रिटिश साम्राज्य प्रदर्शनी में उन्हें सम्मानका सर्टीफिकेट और पदक मिले थे।

उन्होंने जिन महान पुरुषों की ऊर्द्धकाय मूर्तियां बनायी हैं उनमें महात्मा गांधी एवं स्व. पं. मोतीलाल हरू शामिल हैं।

कपड़ों के शौकीन बहुत ही उच्च कोटि के कपड़े पसद करते हैं, जिनका उत्पादन आकर्षक डिजाइन और सुन्दर एवं बारीक बुनाई के सम्मिश्रण से ही संभव है।

हमारी सूती मिलको, जो भारत की बहुत बड़ी और आधुनिकतम मिलों में से एक है, साड़ियां, धोतियां और कमीज का कपड़ा तैयार करनेका वर्षोंका अनुभव है।

केशोराम मिल के मूल डिजाइन के उत्कृष्ट कपड़े पहननेवाले की शोभा बढ़ाते हैं।

केशोराम

श्रेष्ठ सूती वस्त्र

समाज-सुधार में बाधा

लेखकः-श्री "प्रकाश" जी

यद्यपि यह बात कई बार कही जाचुकी है कि हमारा समाज संसार तो क्या, भारतवर्ष के अन्य समाजोंसे भी पिछड़ा हुआ है, फिर भी इसकी सत्यता में कोई विशेष अंतर नहीं होने पाया है। जब हम अपने (निजाम) प्रांत के राजस्थानी समाज की ओर दृष्टिपात करते हैं तो इस कथन में और भी तथ्य पाते हैं। हर्ष का विषय है कि इधर कुछ वर्षों से समाज के धनी मानी सज्जनों का ध्यान इस ओर आकर्षित हो रहा है। इन वर्षों में नेताओं (प्रायः जिस अर्थमें इस शब्द का प्रयोग होता है) की संख्या में भी काफी वृद्धि होगई है, परन्तु इतना होते हुए भी जिस प्रगति और जिस ढंगसे उत्थान होना चाहिये वह देखनेमें नहीं आता। इसका कारण हमारे इन नेताओं के प्रयत्नोंमें त्रुटि और कार्य प्रणाली में परिवर्तन की आवश्यकता होना चाहिये, इसीको लेकर मैं यहां विचार करूंगा।

यह एक जगत् प्रसिद्ध बात है कि किसीभी समाज की प्रगति युवकों से होती है और वही समाज के आधार-स्तंभ माने जाते हैं, इस लिये हम सबसे पहले इन युवकों की परिस्थिति पर विचार करेंगे। किसी समाज, जाति या राष्ट्र की उन्नति के लिये सबसे आवश्यक वस्तु शिक्षा है और यह एक मानी हुई बात है कि बिना सुयोग्य और उच्च शिक्षण के कोई समाज, जाति या राष्ट्र उत्थान के मार्गपर नहीं जासकता। इसी सिद्धांत को ध्यानमें रखते हुए हमने भी उसी वर्तमान शिक्षण पद्धति का आश्रय लिया है, जैसा कि भारतवर्ष की अन्य जातियोंने किया है। परन्तु जब हम इसके परिणाम को नजरके सामने लाते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि हम एक वस्तुको प्राप्त अवश्य कर रहे हैं, परन्तु अपनी वस्तुका बलिदान करके, और ऐसी वस्तुका जिसकी आवश्यकता हमें किसी भी प्रकार कम नहीं है। वह वस्तु है हमारी संस्कृति और सदाचार। हममेंसे बहुतसे युवक जब शिक्षा प्राप्तकर संसार में पदार्पण करते हैं, तो उनकी यही दशा देखनेमें आती है। यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि हमारी ही संस्कृति एक पूर्ण संस्कृति है और यहां पर केवल इतना ही लिखना पर्याप्त होगा कि हम जो बिना सोचे समझे और बुद्धि पर विशेष कष्ट डाले बिना इसको ठुकराते हैं यह हमारी बड़ी भारी कर्तव्यपराङ्मुखता है। इसके सिवाय हम युवकोंमें बहुत कम ऐसे होते हैं जो दफ़तरी काम के अतिरिक्त कोई और काम करने के अभिलाषी हों। परिणाम इसका यही होता है कि बेकारी की भीषण समस्या उपस्थित हो जाती है। हमारे समाज में एक बात अवश्य विशेष रूपमें देखी जाती है और वह यह कि हमारे समाज के शिक्षित युवक इस लिये बेकारी की समस्या के शिकार नहीं होते कि वह कोई व्यवसाय अथवा कोई और सुयोग्य काम करने के अयोग्य होते हैं, वरन् इसलिये कि वह इन कामों को अपने करने के योग्य नहीं समझते और "सुयोग्य" कामों की खोजमें रहते हैं। यह बात अधिक खेद-जनक है। व्यापार हमारे समाजका एक प्रधान व्यवसाय है और इसलिये ऐसे समय में शिक्षित युवकों का यह कर्तव्य होना चाहिये कि इसमें क्रियात्मक रूपसे भाग लेकर उन त्रुटियों, बुराईयों और कठिनाईयों को दूर करें जो अशिक्षा अथवा और किसी कारण से पैदा हो गई हैं।

हमारे नेताओं ने जहां अधिक से अधिक युवकोंको सुशिक्षित बनाने का प्रयत्न किया है उसके साथ ही यह प्रबंध भी नहीं किया कि युवकों को इन बुराईयोंसे बचाया जाय। यह उनके कार्य की एक त्रुटि है और इसका परिणाम यह हो सकता है कि अन्य लोगों में भविष्यमें शिक्षा के प्रति उत्साह कम हो जाय।

इस के पश्चात् जब हम सामाजिक कुरीतियों की ओर आते हैं तो वहां भी इनको इसी प्रकार के अपराध में फंसे हुए पाते हैं। जहां पुरानी प्रथाओं और कुरीतियों को मिटाने का बिगुल बजाया जाता है उसके साथ ही साथ नई कुप्रथाओं को आपनाया जा रहा है। इन कुप्रथाओं में बहुत सी ऐसी हैं जो पश्चिम से आई हैं और बिना सोचे समझे अपना ली गई हैं। फैशन परस्ती इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है और इसकी ओर तो संकेत मात्र ही काफी है। शिक्षित युवकों के विषयमें जो बात ऊपर कही गई है वह भी इस का एक उदाहरण मानी जा सकती है। इस बात का उपदेश तो नित्य सुनने में आता है कि कोई बात बिना सोचे समझे अंधविश्वास से ग्रहण नहीं करना चाहिये परन्तु कितना दुःख होता है जब वह स्वतः अपने आपको इसी अपराध में फंसाकर सामने आते हैं। बिना किसी विशेष विचार के धर्म को 'अफीम' कहना इसी का कारण है।

इन कुरीतियों में एक प्रश्न वैवाहिक रस्मों का भी है। इस ओर नजर डालने से इस बात का पता चलता है कि पुरानी प्रथाओंको छोड़ने पर जोर तो दिया जाता है, परन्तु उन्हीं प्रथाओं का रूप बदल कर उन्हें पुनः धारण कर लिया जाता है। इससे केवल यही नहीं होता कि इन कुरीतियों को त्यागने का उद्देश्य बाकी नहीं रहता वरन् अधिक हानि की सम्भावना भी होती है। उदाहरण के लिये हम दहेज प्रथा को ही ले सकते हैं। हम आये दिन सुनते रहते हैं कि 'दहेज प्रथा बहुत बुरी है, इससे बहुतसी हानियां हैं, इसको फौरन दूर करना चाहिये।' इत्यादि। परन्तु जब हम किसी "सुधारपूर्ण" विवाहकी तफसील मालूम करने का प्रयत्न करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि हमारे इन शिक्षित युवकोंको किसी दहेज की आवश्यकता नहीं वह तो केवल अपनी पढ़ाई के पूरे खर्च का भार (पढ़ाई संपूर्ण हो जाने के बाद) अपने पितापर न डालते हुये उसका एक भाग श्वसुर से लेना चाहते हैं।

सबसे अधिक चिन्ताजनक और हानिकारक बात जो हमारे नेताओं की कार्य प्रणाली में है और जिसकी चर्चा इस लेखमें मुख्य रूपसे करना है, यह है कि हमारे नेता इस बात का उपदेश और प्रचार तो बहुतही अथक उत्साहके साथ करते हैं कि हममें जो जत्था बन्दी है, उससे समाज को बहुत हानियां पहुंच रही हैं और इसको शीघ्रातिशीघ्र मिटा देना चाहिये, परन्तु इसके साथ ही साथ जो बात हमारे देखनेमें आती है वह यह है कि इन नेताओं ने केवल अपना एक जत्थाही अलग नही बना लिया है, बल्कि इस जत्थे के भी कई भाग हैं। इन जत्थोंमेंसे वह अपने उपदेशको अन्य लोगों पर इस तरह छिड़का करते हैं कि यदि वह पुष्प भी हों तो जनताको पत्थरसे और कांटोंसे प्रतीत होते हैं। इन सुधारक नेताओंकी वही दशा है जिस का चित्रण मि. जी. के. चेस्टरटन ने आधुनिक पत्रकारों के विषयमें इन शब्दोंमें किया हैः—

"The modern journalists regard themselves as conjurers rather than priests."

यह नेता अपने आपको जनतासे ऊंचा समझते हैं और यही प्रधान कारण है उनकी असफलताका और इसी कारण जनतापर उनका प्रभाव जिस रूपमें पड़ना चाहिये, नहीं पड़ता।

उपरोक्त पंक्तियोंमें जिन विषयोंकी चर्चा की गई है उसका अर्थ यह कदापि नहीं लेना चाहिये कि हमारे समाजमें किसी सुधार की आवश्यकता ही नहीं है, या हमको इन नेताओं की आवश्यकता नहीं है, या यह कि जिस दशा में हम हैं, उसी दशामें हमें रहना चाहिये। उदाहरण के लिये शिक्षा और कुरीतियोंके विषयमें कुछ चर्चा की गई है, इसका तात्पर्य यह नहीं कि हमें यह शिक्षा प्राप्त नहीं करनी चाहिये या वैवाहिक और सामाजिक कुरीतियोंको दूर करने की आवश्यकता नही है और हमें इनको दूर करनेका प्रयत्न नहीं करना चाहिये।

इन पंक्तियोंका उद्देश्य मात्र यही है कि हमारी वर्तमान शैली, जिसपर प्रायः हम सुधार कार्य करते हैं, उससे हमें कदापि लाभ नहीं हो सकता। यदि हमें वस्तुतः समाजके प्रति प्रेम है, और हम समाज की बुराईयोंको दूर करना चाहते हैं, तो हमें उन लोगोंसे प्रेमपूर्वक मिलना होगा जिनको कि हम अपना उपदेश सुनाना चाहते हैं। यदि उनमें बुराई है तो वह घृणाके नहीं, दयाके पात्र हैं।

हमें समाज की बुराईयोंको दूर अवश्य करना है, परन्तु उसमें की अच्छाईयोंका बलिदान करके नहीं, कायम रख कर। हमें दूसरोंसे पाठ जरूर पढ़ना है, परन्तु अपनेपनको खोकर नहीं, वास्तविक रूपमें अपना कर।

जब हम ऐसा करेंगे, तभी पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

ओ श्रेष्ठ

युगयुग से तूने "यथा नाम तथा गुणा" की परिपाटी का पूर्णतः पालन किया है। भारतीय संस्कृति ने राष्ट्र निर्माताओं में तेरा नंबर तीसरा रखकर तुझमें सर्वोपरि प्रधानता लक्षित की है। ब्राह्मण ज्ञान का और क्षत्रिय शक्ति का प्रतिनिधित्व अवश्य करते हैं, पर तू ज्ञान और शक्ति का पोषक है। तेरी तुलना पेंटसे की गई है जहां से सब अंगों की परिपुष्टि होकर उन्हें आवश्यक शक्ति प्राप्त होती है। तू राष्ट्र के केन्द्रस्थान में विद्यमान है। राजनीति से, धर्म से, समाज से, व्यक्ति से, कला से, संस्कृति से, शिक्षा से, सारांश में राष्ट्र निर्माण करनेवाली सारी सामग्रियों से तेरा घनिष्ट और निकटतम सम्बन्ध है। शासक के शासन में और समाज के विकास में तू है। राष्ट्रकी रीढ़ तू है। राष्ट्रीय इमारत तेरी नींवपर ही बनी है। पर ओ श्रेष्ठ, तू आज अपने उत्तरदायित्व को भूल रहा है। स्मरण तो रख, तेरे हिलने से राष्ट्रकी इमारत ढह जायगी। सोच, खूब सोच, तू कौन है!

पेट-पूजा जो तेरी कसोटी नहीं—तेरे कर्तव्यों की इति श्री नहीं। आज तू अपना माप दंड कमाई से, जड़ सम्पत्ति की कुछ इकाइयों से क्यों लगा रहा है? क्यों आज तू ऐसा सोचने लगा है कि जो जितनी अधिक कमाई करेगा वही श्रेष्ठ, वही प्रतिष्ठावान, वही अनुभवी और वही अग्रगण्य होगा? आज इस विश्व संघर्षके समय तू स्वयं को इतना शिथिल और निस्तेज क्यों अनुभव करने लगा है। ओ धनकुबेर! क्यों आज भिक्षा पात्र लेकर "कुछ" मांगने पर उतारु हो गया है तू—शासकों से, युद्ध से और युद्धजन्य परिस्थिति से। यह भिकारी वेश तुझे शोभा नहीं देता; सोच, खूब सोच, ठंडे दिमाग से सोच। ओ सेठ, व्याकरणाचार्यों की व्युत्पत्ति दुनिया अब असत्य न मानने लगे। उस के अपभ्रंशमें दुनिया तुझ में कुछ अपभ्रंश का आरोप न करने लगे।

तुझे इस बार हमने दुर्भिक्ष, हाहाकार, चीत्कार और आहों के तांडव नृत्य के बीच दृढ़तापूर्वक खड़ा देखा। तूने ललकार कर कहा नसीबों को रस्सी खेंचने--Tug of war में, मैं विजयी होऊंगा। शासन ने तेरी पीठपर हलकी मीठी थपकी दी और किया तेरे "उज्वल भविष्य" की ओर संकेत। यहां तू भूला और यहीं तू खो गया। फिर क्या है तूने ऐसे ऐसे कार्य किये जो तेरे इतिहासमें अद्वितीय, अपूर्व और अतुलनीय होंगे। इस्फ़हानी कंपनी ने तेरा प्रतिनिधित्व कर भारत के इतिहासमें तेरा नाम अजरामर कर दिया है। इस के प्रति "जिहाद" करने के बजाय कितने स्थानों में तूने इसकी पुनरावृत्ति की। ओ पासंग देखने वाले सूक्ष्मदर्शी! क्यों आज पूरी 'तौल' भूल रहा है? तुझे बेड़ियां और हथकड़ियां पहिना, कितने स्थानों में, गली-कूचे में घुमाया गया। तेरे कितने साथी चहार दोवारीमें पड़े अपने "व्यापार" से 'लाभ' उठा रहे हैं। अपने इतने अपमानित होने पर भी अपने कार्यकलापों पर तू नाज ही किये जाता है। देख तो सही, तेरी "बनिआई" बन रही है, या बिगड़ रही है?

मेरे श्रेष्ठ, न तू देख ही रहा है और न सुन ही रहा है। अचेत अवस्था में पड़ा अपनी ही धुन में मस्त हो, अपनी ही गाये जा रहा है। सुन, कान खोल कर सुन, तुझे निद्रित अवस्था से सचेत करने के लिये अब सेवाग्राम के संत ने प्राणों की बाजी लगाई है। देख, गौर से सुन ले, बापू के दाम तुझे महंगे चुकाने पड़ेंगे।

—श्यामलाल नेमा।

कमज़ोर, और कच्चे कागज़ों के पेकिंग से होनेवाली

अपने व्यवसायकी हानिको बचाइये

हमारा मज़बूत, चीमड़ और सुन्दर

गैंडा मार्का

बैम्बू पल्प का बना हुआ क्राफ्ट पेपर

आपकी मुसीबतों को दूर कर देगा

यह उच्चकोटि का
पेकिंग कागज़
है

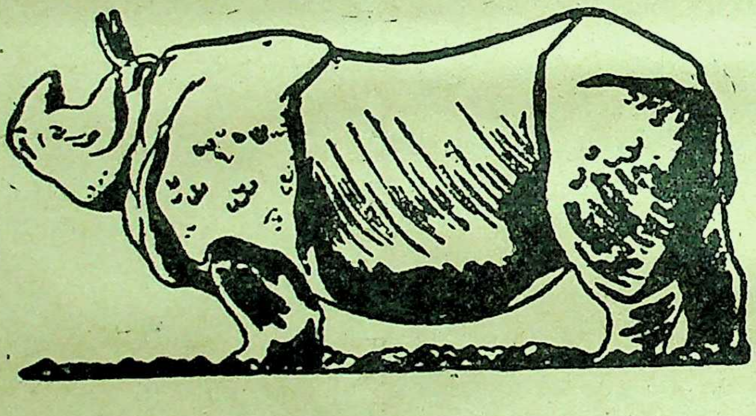

भारतीय बाजारमें
आज इसका
प्रतिस्पर्धी नहीं

हमारी मिल वाटरप्रूफ कागज (Water Proof Craft Paper)
तथा हरेक किस्मका बोर्ड भी तैयार करती है।

एक बार इस कागज़ और बोर्ड का व्यवहार करनेपर
आप दूसरे पेकिंग कागज़ और बोर्ड का नाम न लेंगे

ओरिएण्ट पेपर मिल्स लिमिटेड

८, रायल ऐक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता

पुस्तकालय 150665

विधवाओं की समस्या

ले.–श्री लूनकरनजी चंडक

विधवाओं का जीवन संसार में दुख के साथ व्यतीत होता है। जिन सौभाग्यवती स्त्रियों के पति सदाके लिये इस दुनियां से चले जाते हैं, जो स्त्रियां सदा के वास्ते स्वामी के दर्शनों से वंचित हो जाती हैं, जिनका रत्न सदा के वास्ते खो जाता है, उन्हें विधवायें कहते हैं। जो विधवा बहनें छुटपने में विधवा हो जाती हैं उन्हें यह भी मालूम नहीं रहता कि पति क्या चीज है। ये सिर्फ पति की मृत्यु से केवल यह अनुभव किया करती हैं कि उनकी कोई ऐसी वस्तु खो गई है, जिसे वह अन्य वस्तुओं की अपेक्षा प्यार करने लगी थीं। पति ही स्त्रियों का रत्न है। जितना सुख का ध्यान पति रखता है उतना उसके माता-पिता भी नहीं रखते। उसे कोई कष्ट होने से जितना दुख पति को होता है, उतना किसी दूसरे को नहीं होता। इसी कारण जो आनन्द, जो सुख उसे उनके पास बैठने, उनसे–बोलने में मिलता है, उतना किसी के पास बैठने और हंसने-बोलने से नहीं मिलता। विधवा होने पर उनके सारे भूषण उतारकर फेंक दिये जाते हैं। चूड़ियां जो सुहाग का चिन्ह थीं वह तोड़ दी जाती हैं। सिर में सुहाग की जो बिन्दू रहती है वह मिटादी जाती है। सिर्फ सफेद धोती पहनने को जीवन भर मिलती है। उनका सारा आनन्द छीन लिया जाता है।

स्त्री की प्रसन्नता और सुख का आधार केवल उसका पति है। यद्यपि पतिव्रता स्त्री का स्नेह अन्य संबंधियों से भी होता है तरन्तु उसका प्रेम पति के साथ जितना होता है उतना और किसी के साथ नहीं हो सकता। पतिव्रता स्त्री के जीवन का उद्देश्य ही क्या रहता है? पति की आज्ञा पालन और सेवा। पति को प्रसन्न देखकर खुद फूल उठना, परन्तु जब उसके मुख पर तनिक सी भी उदासीनता अथवा दुख की रेखा देखी तो मुंह पीला हो जाना, मानो हृदय पर वज्रपात हो गया। सचमुच स्त्रीका सुख अपने पति के रहते और उसके सुख पर ही निर्भर रहता है।

विधवा बहनों का दुखी जीवन बहुत कष्ट के साथ व्यतीत होता है। उसका मुख्य कारण यह है कि पहले पति की मृत्यु का दुख, वियोग की वेदना, उसपर सास तथा अन्य सम्बधियों के कटु वचन। जो सासदेवी पहले पलंग से उतरने न देती थीं, कुछ काम न लेती थीं, उसे सिरपर चढ़ाकर रखती थीं; अब वही सासदेवी उससे कठिन परिश्रम लेती हैं, कभी-कभी उनका व्यवहार रुखाई की सीमा लांघकर कटुता तक भी पहुंच जाता है। विधवाओं का अच्छे कपड़े पहनने और खुशी के कामों में शामिल होने का भी अधिकार तथा आनंद छीन लिया जाता है। अगर कहीं किसी त्यौहार पर कोई साफ कपड़ा पहन भी लिया तो सासदेवी का मुंह गुब्बारे की तरह फूल उठता है, उनका दिमाग आसमान पर चढ़ जाता है, जैसा चाहे उटपटांग कहने लगती हैं। "घरका नाश तो कर डाला, मेरा प्यारा बेटा खा गई। अब क्या आबरू पर भी पानी फेरने की जी में है? हे भगवान्, लोग देखेंगे ते क्या कहेंगे? भला विधवाओंको ऐसा सिंगार करना चाहिये? तेरे नसीबमें तो कपड़ा पहनना ओढ़ना बदा ही न था। बदा होता तो मेरा हाथी सा जवान बेटा क्यों उठ जाता। तेरे लिए तो एक सफेद धोती ही बहुत है।" जवान विधवाओं के पैरोंतले की धरती तो यों ही कांपा करती है। उसपर सासदेवी की ये बातें सुनकर हमारी विधवा बहनों का लहू पानी हो जाता है। लज्जा और दुखसे उनका बुरा हाल हो जाता है, आंखों से अश्रुधारा फूट निकलती है। मनमें नाना प्रकार के विरोधी विचार उत्पन्न होने लगते हैं। इन विधवा बहनों को उनके माता-पिता भी अनादर की दृष्टि से देखते हैं। उनको जो न कहना चाहिये वे कह उठते हैं। उनसे कोई कभी कुछ भूल हो जाती है तो पीछे पड़ जाते हैं। उनको सुहाग की चीजें छूना मना रहता है, अगर कभी भूलसे छू दिया तो फिर क्या पूछना–'अभागिन रांड, 'दुनियांमें सब मरते हैं; पर तुझे मौत नहीं आती।'' 'अपना सुहाग तो खो बैठी।'' 'जिस दिन तेरी अर्थी निकलेगी उस दिन मेरे कलेजेमें ठंडक पड़ेगी!'' 'तूं पैदा होते ही क्यों न मर गई।' 'हाय, अब मैं क्या करूं। राम करे, तेरे हाथोंमें कोढ़ टपके, कीड़े पड़ें' माताके ये शब्द सुनकर विधवा बहनों की जो हालत होती है उसे लिखनेमें लेखनी असमर्थ है। जहां देखो वहां पर ही अपमान पर अपमान! चरके पर चरका! घाव पर घाव! पहले तो पति की मृत्यु का दुख, वियोग की वेदना, उसपर सास तथा माता के असह्य वचनों से जैसा उनको दुख होता है, उसे वह ही जानती हैं।

विधवा बहनों के घरों में जब कभी विवाह वगैरह आनन्द के दिन आते हैं उस समय वे अपना दुख कुछ समय के लिये भूलने की चेष्टा करती हैं, किन्तु फौरन ही उनका सारा आनन्द क्षण मात्र में पैरों तले, वे दर्दी के साथ मसल दिया जाता है और वे अपनी हृदय ज्वाला की भट्टीमें ढकेलदी जाती हैं। कहीं स्थान नहीं, कोई सांत्वना देनेवाला नहीं। जो है वह नामक छिड़कता है। यहां तक कि माता, वह माता जिसपर प्रत्येक संतान को अटल विश्वास होता है, वह माता जिसका प्रेम संसारमें आदर्श माना जाता है–अपनी अभागिनी, दुःखिनी पुत्री का, सारा आनंद, सारा उत्साह, सारा चाव एक क्षण मात्रमें पैरों तले बड़ी बेदर्दी से रौंद डालती हैं। चारों तरफसे ठुकराये जानेपर, सबके द्वारा तिरस्कृत होनेपर आखिरमें कई हमारी बहनें गंगाजी में समा जाती हैं; कई फांसी लगाकर इस संसार से सदाके वास्ते सो जाती हैं, कई दूसरी जाति के लोगों के साथ भाग खड़ी होती हैं और कई विधवा बहनें वेश्योवृत्ति अपनाकर बाजारों में अपनी इज्जत बेचना आरंभ कर देती हैं।

हमारे समाज में लड़कियों का मूल्य ही क्या है? वे तो ऐसी वस्तु हैं, जो आसानी से दूर फेंकी जा सकती हैं। पत्नी के मरने के बाद पति आराम के साथ अपने हाथों में हल्दी लगवा सकता है! नारीका सुहाग–सिंदूर जब एक बार मिट जाता है, तो प्रायः दूसरे जन्ममें ही चढ़ता है! लड़कियां विधवा होनेके बाद 'सेकेण्ड हैण्ड' (पुरानी) हो जाती हैं और दुनिया में 'सकेण्ड हैण्ड' का मोल सदासे ही कम रहा है। 'सेकेण्ड हैण्ड' लेनेवाला व्यक्ति बाह्य रूपसे भले ही सीना तानकर चले, अन्त में उसके एक चोटही रहती है।

नारी आगसे नहीं खेल सकती। यदि खेलती है, तो बड़ी आसानी से झुलस भी जाती है। प्रकृति भी पुरुष की सहायिका है। पुरुष बड़ी आसानीसे पल्ला झाड़ कर उठ खड़ा होता है, उसक चहरे पर एक शिकन तक नहीं आती। दूसरी ओर नारी झुलसने के बाद जब चारों ओर देखती है, तो पाती है, कहीं कोई नहीं! अपने दागको वह कपड़ेसे ढंक रखना चाहती है, उसे रगड़कर कभी–कभी मिटा भी देती है किन्तु नारी, नारी है। नारीका मातृत्व इस दागको मिटाते समय चीख उठता है। दुर्बलता उसके हाथ पकड़ लेती है, और तब दुनिया व्यंग और विद्रूप कर कहती है–भई वाह! कितना अच्छा दाग है। फिर यंत्रणाकी चोटसे तिलमिला कर नारी बहुधा गंगाकी गोदमें मुंह छिपा लेती है।

इन सबका कारण है केवल हमारे समाजकी प्रचलित दोषपूर्ण विवाह–प्रथा। माता-पिता ऐसी उम्रमें ही, जब कि सन्तानका मस्तिष्क बिल्कुल अपरिपक्व रहता है, पतिपत्नी बना डालनेके लिये कटिबद्ध हो जाते हैं। किसी ज्योतिषीसे कुण्डली दिखलाई जाती है और अच्छा घराना और माता पिता का धन वैभव देखकर सम्बन्ध स्थापितकर लिया जाता है। कोई इन बातों पर ध्यान नहीं देता कि वर–वधू की आयुमें बहुत अन्तर तो नहीं है, उनके विचारों में समानता है या नहीं, दोनोंका स्वास्थ्य तो अच्छा है, उनमें कोई रोग, कुटेव या व्यसन तो नहीं है, दोनोंके शरीरका तुलनात्मक गठन उचित तो है? इन बातोंको नहीं देखकर वे सिर्फ धनको देखते हैं।

हम हिन्दू परिवारोंमें शायद ही कोई ऐसा घर होगा जहां एक न एक विधवा न हो। भला कौन ऐसा मनुष्य है, जिसका हृदय इनकी यंत्रणा देखकर द्रवीभूत न होता हो, परंतु हम लोगोंका कोई वश नहीं चलता। हम सामाजिक बंधनोंसे इतने जकड़े हुए हैं कि उन अबलाओंके आर्तनादका हम पर कुछ भी असर नहीं पड़ता। सात-सात और नौ नौ साल की अवस्थावाली बालिका, जिन्हें संसारका लेशमात्र भी ज्ञान नहीं, विधवा होकर सामाजिक दण्ड भोग रही हैं और हमारे कानों पर जूं तक नहीं रेंगती। क्या हम लोगोंको इन विषयोंपर विचार करनेकी आवश्यकता नहीं है? हम पुरुष पचास-साठ की अवस्था में भी तीसरा और चौथा विवाह कर सकते हैं। परंतु इन कन्याओं का, जिन्होंने कभी पतिका मुख भी नहीं देखा है; कुछ भी विचार नहीं करते। इसका क्या कारण है? हमने अपने को सामाजिक बंधनों में इस प्रकार जकड़ रखा है कि हम विवश हैं। जब ये नियम हमारे ही बनाये हुए हैं तो क्या हम इनको ढीला नहीं कर सकते? क्या यह उचित है कि हम पुरानी लकीर के फकीर बने अपनी दुर्दशा अपनी ही आंखों देखते रहें और कुछ प्रबंध न करें? भाइयो! हम पुरुष हैं, हमको उन्नति पथ पर अग्रसर होना चाहिये। सारा संसार इस विज्ञान के युग में आगे बढ़ रहा है, फिर हम क्यों इस तरह देश की रमणियों पर दया नहीं करते? फिर हम कैसे आशा कर सकते हैं कि दूसरे हम पर दया करेंगे? हमको चाहिये कि हम अब बन्धनों को तोड़कर अपनी दुर्दशा ग्रस्त बहिनों पर दया करें और देश को उन्नतशील बनाने में सहायक हों। भारत में करोड़ों की संख्या में विधवा स्त्रियां हैं और लाखों बाल विधवायें हैं, कम से कम इन बाल विधवाओं पर तरस खाकर यदि हम इन्हें गार्हस्थ जीवन में प्रवेश करा दें तो देश की बहुत सी संतप्त आत्माएं सुखी हो जांय और दिन-रात होने वाले बहुत से अत्याचारों का अंत हो जाय। प्रति वर्ष कितनी ही हिन्दू विधवाएं धर्म को तिलांजलि दे मुसलमान और ईसाई हो जाती हैं। कितनी ही समाज की बलि वेदी पर अत्याचारियों द्वारा बलिदान होती हैं। क्या हमारा कर्तव्य नहीं है कि इनकी रक्षा करें? यदि आप लोग इनके कष्ट निवारण को अपना कर्तव्य समझते हैं तो इनकी भर सक सहायता करो तथा एक ऐसा रास्ता निकालो जिससे इनका सांसारिक जीवन सुखमय हो जाय।

'शासन शब्द कोष' की रचना

काशी नागरी प्रचारणी सभा, टेहरी राज्य की सहायतासे श्री रामचन्द्र वर्माके सम्पादकत्व में शासन एवं अन्य क्षेत्रोंमें उपयोगमें आनेवाले पारिभाषिक शब्दोंका कोष निर्माण कर रही है। इसी प्रकार की एक योजना ग्वालियरमें श्रीमंत श्री शितोले महोदयकी ओरसे श्री हरिनिधि द्विवेदी के सम्पादकत्वमें हो रही थी। अब इस कोषका निर्माण सभा करेगी और श्री शितोले महोदयका उसमें सहयोग होगा।

---

६ भाषाओंका शब्दकोष प्रकाशित होगा

लंकाके शिक्षा-मंत्री डा० सी० डब्ल्यू० कानगरा और उनकी कार्यकारिणी ने भारतीय अधिकारियों के श्री अणे द्वारा भेजे गये प्रस्ताव का स्वागत किया जिसमें अंग्रेजी, हिन्दी, बंगाली, उर्दू, कनाडी और सिंहाली भाषाओंमें एक भारतीय-इंग्लिश शब्दकोष प्रकाशित करनेकी बात कही गई है। अंग्रेजीके प्रत्येक शब्द के लिये इस शब्दकोष में दूसरी भाषाओंके समानार्थक शब्द दिये जायंगे।

हमारी पुकार

आज जब संसार की अन्य जातियां दिनों दिन उन्नति के मार्ग पर अग्रसर हो रही हैं, तब हमारा हिन्दू-समाज पतन की गहरी खाई में पड़ा है। अगर इस बात पर हम गौर से विचार करें तो हमें मालूम होगा कि कुछ अंशों में यह दृष्टिकोण ठीक भी है। इस अवनति का कारण हमारी सामाजिक कुरीतियां हैं, जो हमें आगे बढ़ने से रोकती हैं। वर्षों की पुरानी रूढ़ियों ने हमारे कमजोर पैरों में जंजीरें डाल रक्खी हैं जिन्हें तोड़ने के लिए हमें सारी शक्ति केन्द्रित करनी होगी।

इन कुरीतियों का जहर धीरे धीरे हमारे सभ्य धनिक समाज में भी फैल रहा है। हमारे विख्यात वृद्ध धन कुबेर तक इन कुरीतियों में बुरी तरह फंस रहे हैं। कुछ ही समय हुआ। एक सुप्रसिद्ध करोड़ पति महोदय के शायद चौथे विवाह की बात सुनी गई थी, तीसरी पत्नी आपको तलाक दे चुकी है। उनकी दृष्टि में उपर्युक्त कार्य कितना ही गौरवमय क्यों न हो, पर हमें विश्वास है कि इसका असर समाज पर तो बुरा ही पड़ा है। काम-वासना की तृप्ति के लिए ही विवाह करना—भारतीय नारी का अपमान है। नारी का मूल्य क्या कुछ चाँदी के टुकड़ों से आँका जा सकता है? पैसोंके जोरसे आप स्त्री का शरीर खरीद सकते हैं परन्तु उसकी आत्मा नहीं।

उनके इस कार्यसे दूसरे पूँजीपतियोंमें भी स्पर्धा होने लगी है। अभी हाल ही में एक दूसरे विख्यात सज्जनने वृद्ध विवाह करके हमारी रही सही उन्नति की आशा पर भी पानी फेर दिया है। सुना है कि ईश्वर की कृपासे सेठजीके कई वय प्राप्त पुत्र और पुत्रियां हैं। इससे यह स्पष्ट है कि उनका यह विवाह वंशवृद्धि के लिए नहीं परन्तु अपनी काम-वासना की तृप्तिके लिए ही है। रुपयों के जोर से किसी मासूम बालिका को खरीद कर अपनी वासना शांत करना इसमें हमारे समाज ही का नहीं परन्तु मानव-धर्म का अपमान है, ह्रास है।

हमारे समाज में कितनी ही बाल-विधवाएँ आजन्म बैठी खून के आंसू रो रही हैं और ये पूंजी पति मासूम बालिकाओं को अपने विलास और आमोद का साधन बना रहे हैं। समाज के कहे जाने वाले नेता भी यह अनाचार चुपचाप सह लेते हैं। उनकी दृष्टि में स्त्री कमजोर है और पुरुष शक्तिशाली! परन्तु वे नहीं जानते कि नारी की यह दुर्बलता नहीं, उनके पापी हृदय की कमजोरी है। जब हमारे समाज की नारी पर्दे से बाहर आ इन बेड़ियों को तोड़ देगी तभी हमारा सुधार होगा।

वृद्ध-विवाह और अनमेल-विवाह का शाप भी धीरे-धीरे हमारे समाज को निगल रहा है। जिसके साथ हमें धूप और छाँह में जीवन की मंजिल तै करनी है वह साथी हमारे मनके अनुरूप ही होना चाहिए, नहीं तो सफर के बीच ही में हम थक कर बैठ जायगें। लेकिन समाज का धनिक वर्ग विवाह में सिर्फ रुपयों की ओर देखता है और लेन-देन को ही मुख्य समझता है। विवाह भी क्रय-विक्रय का साधन बन गया है। इस अनीतिके कारण ही आज समाजमें दुराचार का बाजार गर्म है। घरमें विधवा बेटी और विधवा बहूके रहते हुए भी बूढ़े धनिक मनचाही बीबी खरीदकर अपनी काम-वासना को शान्त करते हैं। इसीलिए हमारे समाजमें मध्यम-वर्गके माता-पिता जब लड़की के जन्म की खबर सुनते हैं तब उन्हें उतनी ही खुशी होती है जितनी कि मौतके आनेसे। क्या हम समाज और समाजके कर्णधारोंसे पूछ सकते हैं कि कि क्यों यह सब होने दिया जा रहा है? क्यों वे इन वृद्ध-विवाहोंके प्रति अपना विरोध नहीं प्रकट करते तथा क्यों कर इस तरह बैठे हुए हैं जैसे कुछ हुआ ही नहीं? कैसी विचित्र विडम्बना है। यदि कोई नवयुवक अपने विवाह-सम्बन्धी मामलोंमें अपनी आवाज उठाने की कोशिश करता है, तथा बूढ़े बड़ेरों की आज्ञाओं के सामने ऐसे जीवन मरण के प्रश्नों में सिर नहीं झुकाता, तब तो सारे समाज के क्रोध के मारे त्रिनेत्र खुल जाते हैं और वह पूर्ण रोष के साथ अपनी क्रोधाग्नि से उसे भस्म कर डालने कीं कोशिश करने लग जाते हैं; और यदि एक बुड्ढा अपनी ढलती उम्र में एक कुमारी से विवाह कर समाज के यौवन धन को नष्ट करने का दुःसाहस करता है, वह भी ऐसे समय में जब कि उसके बाल सफेद हो गये हैं और मुंहपर झुर्रियाँ पड़ गई हैं और जब कि वह खुद यह नहीं जानता कि किस समय यमदूत उसे लेने आजाय। एक वृद्ध-धनिक एक सुकुमार बालाको अपने से आबद्ध कर उसे वैधव्य का आमंत्रण देता है; तब समजा चुपचाप बैठे बैठे इन बुड्ढों की पैशाचिक कामनाओं का तांडव नर्तन देख सकता है और उनके हृदयों का मचलना रोकने की हिम्मत भी नहीं कर सकता। क्या हम समाज से पूंछ सकते हैं कि क्या उसका मौन उसकी सम्मति का सूचक है? क्या इसे वे व्यभिचार या अनाचार नहीं समझते? तो फिर क्यों वे अपने सनातन-धर्म की और बड़े पावन शास्त्रों की डींग मारते हैं? फिर तो वे धर्मच्युत हो रहे हैं—जिसके लिए उन्हें प्रायश्चित करना होगा।

हा! समय के साथ हम बदल नहीं सके। परिवर्तन की लहर हमारे सड़े हुए समाज की बुनियाद को न उखाड़ सकी। समाजिक शरीर से रूढ़ियां और पुराने रस्म रिवाज घुन की तरह चिपके हुए हैं और धीरे धीरे हमारे समाज का स्वस्थ खून चूस रहे हैं। अब तो सामाजिक क्रांति की चिनगारी ही हमें मुक्ति की राह दिखा सकती है।

आज हम जो कुछ लिख रहे हैं वह बरसों से हमारे हृदय के अज्ञात कोने में दबी हुई वेदना का भार है। हमें किसी से व्यक्तिगत द्वेष नहीं है। रूढ़ि-ग्रस्त समाज की कुरीतियों को दूर करना हमारा मुख्य ध्येय है। हम सब समाज की कुरीतियों के शिकार हैं। अगर नजर फैला कर देखा जाय तो हमारे चारों ओर हमें वृद्ध-विवाह, बाल-विवाह, सपत्नी-विवाह के अनेक दृष्टांत मिलेगें जिन्हे देखकर हमारे मुंह से एक आह निकल जायगी। परन्तु इन सड़ी हुई रीति रस्मों का बन्धन अब हमें असह्य हो रहा है और धीरे धीरे हम युवकों की चेतना मानों जाग रही है। एक दिन हम इन बेड़ियों से मुक्त हो जायंगें। समाज के हर एक व्यक्ति से हमारा अनुरोध है कि वह हमें इस कार्य में मदद दें। अन्त में हम ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि वह हम युवकों के हृदय में विद्रोह की एक चिनगारी रख दें कि जिससे हम समाज में क्रान्ति लाने में सफल हों।

—मारवाडी अग्रगामी दल।

हमारी अवस्था

हमारे पतन की अवस्था उससे भी कहीं ज्यादा गहरी है, जितना हम में से अधिकांश समझ रहे हैं। साधारण प्रारंभिक अधिकार भी हमें प्राप्त नहीं हैं। गुलामी की जिंदगी व्यतीत करते हुये हमारा दिल भी गुलाम होगया है। जहां हमारे हिंदुस्तान में दूध और दहीकी नदियां बहती थीं वहां पर अब लोगोंको विदेशी वनस्पति घी भी नसीब नहीं होता। जहांका कपड़ा विदेशी रमणियोंका शृंगार था, उनकी लज्जा ढांपता था, वहांके लोग अब खुद कपड़ेके लिये तरस रहे हैं। गल्ला यहांसे बाहर विदेशोंमें भेजा जाता था अब हम ही सब विदेशी गल्लेके जहाजों का इन्तजार करते रहते हैं। भूख की यंत्रणा के कारण जो कुछ अभी बंगालके छोटे छोटे गांवोंमें और कलकत्ते में हुआ है, हो रहा है, सो तो पाठक गण भूले नहीं होंगे।

हमारे देशमें गरीबी दिन व दिन बढ़ती ही चली जा रही है। अच्छे खासे शरीर वालों को भी सड़क पर भीख मांगते देखा है। अगर वह चाहते तो कहीं मजदूरी वर सकेत थे, पर उनको तो भीख मांगने की आदत पड़ चुकी है। दिन को तो भीख मांगाते हैं और रातको चोरी करते हैं।

साधु और फकीरोंमें हमारे घराने की स्त्रियों को बहुत विश्वास है। सन्तान के बारेमें तो हमारे घरकी स्त्री उन साधुओं को अपना सब कुछ लुटा देती हैं। मंदिरों में जो आजकल के महंत पुजारी करते हैं वह भी एक अनोखासी बात है। बहिनों और माताओं को घर से दोपहर में कथा सुनाने के लिये बुला लेते हैं और फिर लगते हैं अपनी सेवा कराने। यही कारण है कि जो आज हमारे समाजमें बहुत सी स्त्रियां सतीत्व से गिर गई हैं और घरों से निकल खड़ी हुई हैं, ये इन पुजारियों की और साधुओं की महरबानी है।

सामाजिक क्षेत्र में हमारी अवस्था बहुत ज्यादा गिरी हुई है। हमारे यहां जो बेजोड़ शादियां हो रही हैं उससे विधवाओं की संख्या बढ़ रही है। वह बहिनें जिन्हों ने अभी अपने पतिका मुख भी भली प्रकार नहीं देखा है, विधवा हो जाती हैं और पुनर्विवाह की हमारा समाज आज्ञा नहीं देता, तो उन्हें मजबूरन घर से निकलना पड़ता है या वेश्याका भेश धारण करना पड़ता है। जो विधवा आश्रम हिंदुस्तान में खुले हुए है उनमें चंदे और धर्म सेवा की ओट में क्या होता है वह लिखते हुये दिल कांपता है। दहेज की प्रथा भी बुरी तरह फैल रही है।

हमारी यह अवस्था हमारे ही कारण यहां तक पहुंची है। हम भावी समाज के निर्माता युवक जीते जी मूंदे हैं। हमारा हृदय मलिन है। हमको छोटेपनसे ही भोग विलासकी सांपिन डस लेती है।

हमको चाहिये कि हम नींद छोड़कर उठ खड़े हों और समाज की सेवा करें। हमें यह नहीं सोचना चाहिये कि हम शान शोकत से रहें; हमारे पास मोटर हो, अप टू डेट बी बी हो और सिगरेट के कश खींच कर अपने दोस्तों को अपनी शान दिखलावें।

हमें समाजके ठेकेदारोंसे टक्कर लेनी है, ये बेजोड़ शादियें और दहेज की प्रथा बंद करानी है। पुंजपतियोंसे यह कहना है दि खुले दिल से गरीबों की मदद करो। जिन गरीबों के खून और पसीने की कमाई से ऐश उठाते हो, उनका कुछ भला भी करो।

भाईयो! उठो, अपने गिरते समाज और देश को बचा लो। आपसके सब झगड़े बंद करके एक हो जाओ।

—लाल।

विवाह

सुनिये, स्त्री और पुरुष अपने पारस्परिक प्रेम को समाज की साक्षी द्वारा निश्चय करके अपना जोड़ा बना लेते हैं, इसी व्यवस्था का नाम विवाह है। यह अत्यन्त पवित्र तथा उपयोगी व्यवस्था है। दर्शन शास्त्र की दृष्टि से विवाह दो आत्माओंका अटल प्रेम और सहानुभूति के साथ मेल है। चाहे आप किसी भी दृष्टि कोणा से देखें, विवाह का मुख्य अङ्ग प्रेम है। विना पारस्परिक प्रेम के वह जोड़ा चिरकाल तक सुखी नहीं रह सकता। इसी लिये विवाह करने के पूर्व स्त्री-पुरुष को यह निश्चय कर लेना परमावश्यक है कि उन दोनों में अटल और गाढ़ा प्रेम है अथवा नहीं। विवाह होने के बाद यदि स्त्री-पुरुष में कलह उत्पन्न हो गया तो दोनों का जीवन दुःखपुर्ण हो जाता है।

हिन्दुस्थान में स्त्रियां अशिक्षित होने के कारण ज्ञान शून्य हैं। वे अपने आश्रयदाताओं के ऊपर ही अपने विवाह की बागड़ोर छोड़ देती हैं। जिस दिन उन को ज्ञान हो जायगा और वे आत्म स्वतन्त्र्य को प्राप्त कर लेंगी उसी दिन से हमारे गृहस्थ सुख धाम बन जायंगे।

प्रत्येक देश में बहुत से लोग यह समझते हैं कि स्त्री पुरुष की दासी है, भोग विलास की एक कठपुतली मात्र है। पुरुष की कृपा और सहायता बिना वह भटकती रहती है। भारत में तो यह अत्याचार इतना बढ़ा हुआ है कि स्त्री को पुरुष पैर की जूती समझता है—जहां एक टूटी दूसरी खरीद ली। भारत में एक ही मनुष्य कई स्त्रियाँ रख लेता है। मैं यह पूछता हूं कि वे लोग मनुष्य हैं या पशु? और देखिए कई लोग जैसे जैसे उन की स्त्रियां मरती जाती हैं वैसे वैसे ही वे चाहे कितने ही वृद्ध क्यों न हों, विवाह करते चले जाते हैं, उन्हें तनिक भी लज्जा नहीं आती है। अब आप ही सोचिए, कि ऐसे विवाहोंमें प्रेम कहां हो सकता है। यदि टेसू के पुष्प में सुगन्धि हो तो ऐसे विवाहों में भी प्रेम का होना संभव है।

—प्राणनाथ माहेश्वरी।

SHIP BRAND
FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

हिन्दुस्तान, सीलोन, और विदेशमें लोकप्रिय

सुंदर, स्वदेशी
पक्के रंगके
मज़बूत और
कीमतमें सस्ते

सफेद ड्रिल
,, ट्रविल
,, लौंग क्लाथ
साटिन ड्रिल
★
टेबल क्लाथ
सफेद ६०" व ६८"
शर्टिंग क्लाथ
सफेद ५४", ६०"
व ५८" की साईज़में
★
कैसमेंट क्लाथ
अन्य कई रंगोंमें
दोसूती क्लाथ
सफेद व रंगीन
टौवल, नैपकिन
वगैरह

जहाज छाप

जहाज छाप ब्लिच्ड क्रेप

पर्दे, खोल, स्त्री, पुरुष और बच्चोंके
कपड़ों के लिए

CURTAINS, COVERS, LADIES, GENT'S AND
CHILDREN'S WEAR
BLEACHED CREPE IS UNIQUE FOR GENTS SHIRTS

"जहाज छाप" कपड़ा बरतिये—शर्टिंगके लिए
'जहाज छाप' ब्लिच्ड क्रेप उत्तम कपड़ा है

कौटन क्रेप
सफेद व अन्य ३४ प्रकार के पक्के रंगों व अन्य कई रंगोंकी डिज़ाइन में।

पापलीन
सफेद व अन्य २४ प्रकारके पक्के रंगों, आकर्षक छपाई व अन्य रंगोंकी डिज़ाइन में।

अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डालने व मित्रों तथा सबंधियों में अपने प्रति आदर भाव उत्पन्न करानेके लिए जहाज मार्का कपड़ा बरतिये।

खाकी ड्रिल्स, ट्विल्स
मरसीराईज़ डाईड:—
ब्लिच्ड पापलीन
ब्लिच्ड क्रेप
,, कोटिंग
,, ड्रिल
,, साटिन ड्रिल
,, लौंग क्लाथ
,, स्ट्राइड शर्टिंग

जहाज छाप

'जहाज छाप' कपड़ा सुंदर, स्वदेशी और सस्ता है
चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons
Head Office——AMRITSAR
Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियां, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

बिक्री—विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

IMPERIAL TRADING Co.

Alli Chambers, Tamarind Lane, Fort,
Telegrams: "LOOMSPRING"

BOMBAY.
Telephone No. 27580.

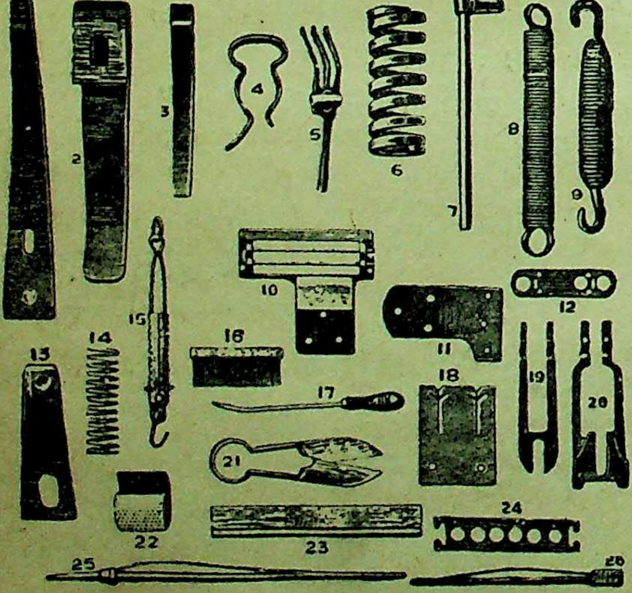

OUR SPECIALITIES

Springs, Temples and all accessories for Spinning and Weaving Machinery

BESIDES, WE HOLD AN EXTENSIVE STOCK of

Stripping Fillets
Burnishing „
Folding „
Plaiting „
Winding „
Likering „
Card Strippers
Walton Metallic Brush

Lickerine Wires
Lap rods & Oils cans Braime & "K"
Pot eyes for Bleaching dept.
Hydraulic Ram Rings
Jackson & Harries Fastners
Blue Glass Rods & Creel Steps

Card Chains & Link Chains
Hickory wood Picking Sticks
Dobby Lattices Comber Boards & Taper Pegs
Perth Gauge Glass & Glass Lubricators
etc. etc. etc. etc.

Enquiries Solicited

We solicit your enquiries for all articles connected with the Spinning & Weaving Industry and can quote you competitive prices. We will gladly send to you our latest price list on application.

Agents :—
RATILAL & Co., Cross Lane, Railwaypura Post, AHMEDABAD.
B. N. MODI & Co., 14/24, Civil Lane, CAWNPORE.

माहेश्वरी जगत–

विधवा विवाह

रह रह कर मेरे हृदय में यही विचार उठता है कि मैंने विधवा विवाह करके क्या कोई पाप किया है ? सो भी एक सजातीय के साथ, जो अपनी छोटी उम्र में ही, ईश्वरीय कोप की शिकार हुई थी। यदि मैंने कोई पाप नहीं किया तो मैं जातिसे दंडनीय क्यों हुआ ? आज लगभग छः वर्ष हो गये हैं कि म जातिसे बहिषकृत होकर जातिका मुकावला कर रहा हूं। इसका कारण क्या है। मेरी समझ में तो मेरा निर्धन होना ही इसका मूल कारण प्रतीत होता है, क्योंकि मैं देख रहा हूं कि धनवान मनुष्य अनुचित से अनुचित कार्य कर रहे हैं जिनका जाति के सरदारों को पूरा पूरा पता है। फिर भी किसी का साहस नहीं होता कि उनके विरोध में चूँ भी कर सके। इस के विपरीत एक निर्धन मनुष्य समय के साथ जाति की आवश्कता को पूरी करता है, उचित–रूपेसे कार्य करता है–जाति को उन्नति का रास्ता वतलाता ही नहीं वरन् उस पथ पर स्वयम पैर रख कर उदाहरण रूप में प्रगट होता है, तो वह इस प्रकार ठुकराया जाता है कि उसके आत्मीय व सगे सम्बन्धी भी उससे वात करना तक पाप समझते हैं। हो सकता है कि मेरा यह विचार निरर्थक हो, तब फिर ऐसा क्यों है ? क्यों बुँदेलखंड माहेश्वरी सभाने मेरे विरुद्ध प्रस्ताव पास किया और क्यों वह प्रस्ताव कार्य रूपमें परिणित किया जा रहा है ? विगत कानपुर महासभा के अवसर पर महिला परिषद् व नवयुवक मंडल ने विधवा विवाह का प्रस्ताव पास किया था और मेरा कार्य उन्हीं प्रस्तावों के आधार पर था; परन्तु मेरे इस विवाह की सूचना नवयुवयों को होते हुए भी उन्होंने आज तक मेरा कोई साथ नहीं दिया। इससे प्रतीत होता है कि जो प्रस्ताव पास किये जाते हैं वह केवल कागजों को काला करने के लिये ही किये जाते हैं। गत सूरत अधिवेशन में भी महासभा ने इस आशय का प्रताव पास किया था पर क्या सभा के किसी कार्यकर्ता को यह मालूम है, या सभा के कार्यालय में यह पता है कि कितने विधवा विवाह जाति के अन्दर हुये हैं और जाति का उन भाईयों के साथ क्या व्यवहार हो रहा है ? बुन्देलखण्ड में मैंने स्वयम ही विधवा विवाह नहीं किया वरन् अपने वाद दो भाईयों के भी सजातीय विधवा विवाह कराये हैं, और उनको अपने साथ ही जाति बहिषकृत कराया है—क्या मेरे ऊपर उनका उत्तरदायित्व नही है ? सभाके मंचों पर बड़े-बड़े लेक्चर दे देने और प्रस्ताव पास कर लेने से ही क्या कार्य पूरा हो जाता है ? क्या सभा समाप्त होने पर, अपने निवास स्थानों पर पहुंच कर, फिर किसी भी नेता या कार्यकर्ता को यह ध्यान रहता है कि उन प्रस्तावोंको कार्य रूपमें परिणित करें। केवल प्रस्ताव पास करलेना ही जाति को उन्नति के शिखर पर नहीं पहुँचा सकता वरन् उस जलती हुई आग में स्वयम कूदना या उन कूदने वालों का साथ देना परम आवश्यक है। क्या जाति के नेताओं को पता है कि कितने लाल जाति में छिपे पड़े हैं जो पैसे के अभाव से कार्य करते हुए भी जाति की कु दृष्टिका शिकार हो रहे हैं ?

बुंदेलखंड का माहेश्वरी समाज अधिकतर सम्पतिशाली है, उसे मुझ जैसों की कोई आवश्यकता नहीं, न कोई सहानुभूति ही है। जो कुछ इने गिने निर्धन भाई हैं वे भी किसी न किसी रूप में उन सम्पति शालियों के भार से दबे हुए हैं और स्वतंत्र रूप से अपनी आवाज नहीं निकाल सकते हैं। क्या मैं इस छोटे से लेख को लिख कर भारत के माहेश्वरी नेताओं को अपनी ओर आकर्षित कर सकता हूँ और आशा रख सकता हूँ कि मुझे मेरे उन दो साथी भाईयों के उत्तरदायित्व से तो कमसे कम छुड़ा दें ?

—गोपाल प्रसाद लोया, लीडर-राठ।

मेरा निवेदन

"माहेश्वरी" के विगताङ्क में जिस बहिन के विषय में प्रश्न किया गया है, उसके सम्बंध में मेरा तो यह निवेदन है कि विना किसी भी संकोचके उसका विवाह कर दिया जाय। प्राचीन स्मृतिकार भगवान मनु ने स्पष्ट आज्ञा दी है कि यदि पति अयोग्य हो तो स्त्री दूसरा विवाह कर ले। उन्होंने तो यहां तक कहा है कि पति चिर काल तक विदेश से न आये तो भी स्त्री दूसरा विवाह कर सकती है। जब वह लड़की चाहती है और उसकी आयु वैसी है, तो अपने धर्म शास्त्र की आज्ञा पालन करने में हमें भय या संकोच क्यों करना चाहिये ? लड़की के पिता को उचित है कि अपनी कन्या, अपनी जाति, अपनी समाज और अपनी भलाई की दृष्टि से भी उस का विवाह शीघ्र ही कर दें और जाति-समाज को उसे सहर्ष अपनाना-स्वीकार करना चाहिए।

—शान्ति माहेश्वरी 'शशि'

मेरी सम्मति

७ नवम्बर के "माहेश्वरी" में एक माहेश्वरी बन्धु की पुत्री के विषय में पढ़ा, अति खेद हुआ। परन्तु साथ ही इस बात को जान कर हर्ष है कि पुत्री के पिता और लड़की के विचार सामाजिक सुधार की ओर झुके हुए हैं। म भी इसी राय का हूँ कि ऐसी अवस्था में लड़की की शादी दुवारा कर देनी चाहिये। अपनी माहेश्वरी जाति में पहिले भी ऐसे विवाह हो गये हैं और प्रमाण आज भी मौजूद हैं। मेरे पास इस समय मेरे एक रिश्तेदार इस प्रकार की शादी करने के लिये तैय्यार हैं। वे अभी तक कुंवारे हैं और आयु करीब ३० वर्ष की है, उनका स्वास्थ बहुत अच्छा है और एक अच्छे खानदान में जन्मे हैं

मुझे आशा है कि भगवान ने चाहा तो मैं यह सम्बन्ध कराने में सफल हो सकूंगा।

—अमरचन्द ईनाणी

एम्. एस-सी., एल-एल. बी.

आश्चर्य और खेद

२१ नवम्बर ४४ के "माहेश्वरी" में श्रीमान् रामप्रसादजी हुरकुट जैसे प्रमुख महासभावादी के विचार पढ़कर साश्चर्य खेद हुआ। उचित होता कि आप इस कठिनाईको दूर करनेके लिये कोई उपयुक्त योजना प्रस्तुत करते। हमारे कतिपय महासभावादी बंधु महासभाके अधिवेशन की उपस्थिति काल तक ही अपनेको महासभावादी पुकारना उत्तम समझते हैं, ज्यों ही अधिवेशनसे लौटे और उन्हीं भयंकर पंचाइतिय्रोंका निज निवास स्थानमें सहवास हुआ कि मारे भयके महासभाके नियमों को स्वप्न मान लेते हैं। मुख्यतः केवल इसलिये कि जिनके साथ हमारा रात दिन काम पड़ता हैं तथा जिनके बिना हमारी बहुत हानि संभव है, उनसे सहमत होकर महासभा के नियमोंका प्रचार करना हमारे लिये एक टेढ़ी खीर हो जायगी, वे अपने विचार अपने मुखसे प्रगट करना पाप समझते हैं, झेंपे और दबे रहते हैं। इस संकीर्णता और भय को मिटाये बिना वे लोक दिन दिन अधिकाधिक जालमें फंसते हैं तथा स्वीकृत प्रस्तावों से पूर्णतया मुंह मोड़ लेते हैं। उदाहरण के लिये यह कहना अनुचित न होगा कि हमारी श्रीमती महासभा ने सूरत में, माहेश्वरी नाम से पुकारे जाने वाले सर्व फिरके या गिरोह, चाहे वे दस्से हों, जाहे बीसे सबको भविष्यमें एक ही समझनेका ढिंढोरा बजाया था। उपस्थित जात भाईयों ने भी उस प्रस्ताव को सहर्ष अपनाया था। पर क्या किसी नेता या साधारण सभासद के हृदय में इसे कार्यान्वित करने की भावना पैदा हुई ? मेरे ख्याल से किंचित भी नहीं। विवाह सम्बन्धी हमारी जो भी कठिनाई हैं वह केवल इसीलिये हैं कि हम पंचाइतिय्रों के फंदों में फंसे हैं, उन्हें खिलाये बिना हमारा सम्मान जाता रहता है, वे यदि बहिष्कृत कर देंगे तो हमारे जीवन भ्रष्ट हो जावेंगे अतः जो कुछ करना उनकी सम्मति से ही करना, यह भय उत्पन्न हो जाने से हम संकीर्णताके ही दास बने रह अपना जीवन स्वयं कष्टमय कर लेते हैं, इसका हल तो विस्तृत विचार व विशाल हृदय ही करेगा। भगवान श्रीकृष्णने सब वैश्य जाति एक, सब ब्राह्मण जाति एक, सब क्षत्रि जाति एक और सब शूद्र जाति एक ऐसी चार ही जाति गीता में कही हैं किन्तु आज उपरोक्त एक एक में अनगिनत समुदाय नजर आरहे हैं, यह क्यों हुए ? तथा किसने बनाये ? हमारे पास इसका एकही उत्तर है और वह यह कि हम लोगोंकी द्वेषाग्नि ने। सज्जनों ! थोड़े से विचार करने की बात है, यदि हम अपने दोषों को ढूण्ढ निकालें और परस्परका प्रेम, इस केवल एक ही उद्देश्य को लेकर उन्नत करलें कि वह परमात्मा जो सर्व व्यापी है, जिस की हम सब संतान हैं, जो हम सब में विराजा हुआ है, और इसकी विशालता सर्व व्यापकता का अनुकरण ही हमारे लिये मोक्ष का साधन है, और इसीमें हमारे जीवन का तत्व है; तो फिर हमारा धर्म चौके, चूल्हे, छूत, छात, कपड़े लत्तों आदि तक ही सीमि न रहे और हमारा जीवनका दायरा विस्तृत होने लग जाय। मैंने बहुधा यह अनुभव किया है कि हमारे संकीर्ण हृदयी बंधु, जिनका धर्म चौके चूल्हे में सीमित रहता है, अपने विरुद्ध किसी बंधु को कुछ करते देखते हैं तो उसे क्रोध पूर्वक यह कह देने में शर्म नहीं करते "तुम भ्रष्ट हो गये, तुम आर्य समाजी हो गये, तुम देवताओं को पत्थर बतानेवाले हो, तुम हमारे साथ मत बैठो" आदि आदि। तनिक साहस व युक्ति पूर्वक ऐसे संकीर्ण विचारके लोकों को सत्यासत्य कह दिया जाय तो दोनोंक भला हो सकता है। मनुष्य मात्र चाहे वह किस जातिका हो प्रेमके नाते उसे अपना बंधु समझें। प्रत्येक व्यक्ति परस्पर एक परमात्मा के पुत्र होने से बंधुत्व का विचार रखें और खाने पीने में धर्म की सीमा न मान अपनी इच्छानुसार स्थान पर व व्यक्ति के साथ भोजन करें तो भी हमारा दायरा उन्नत पथ की ओर जा सकता है और हम विस्तृत दायरे में सुखी जीवन विता सकते हैं। अतः हमें आजकी अपनी संकीर्णता पर दुखी होना चाहिये, और उसे निर्मूल कर देने पर कमर कसना चाहिये, अन्यथा हमारे कष्ट बढ़ेंगे, घटेंगे नहीं। यह सत्य है कि शिक्षित कन्याओं के लिये योग्य वर नहीं मिलते। इस समय कन्याओं से अधिक वर विक रहे हैं। मुझे मालूम है कि एक हमारे माहेश्वरी शिक्षित बंधू ने अपनी सगाई के लिये कन्या पक्ष से १५००० रु. दहेजमें अमेरिका में शिक्षण प्राप्त के हेतु मांगे हैं, क्या यह सब हमारे संकीर्ण विचारों का पाप नहीं है ? सज्जनो ! मूल जड़ को समझकर ही हम साहसी बनें, चोर की माताको हम मार डालें ताकि चोर पैदा ही न हो। **—शिवचंद ईनानी।**

सहमति और पते

२१ नवम्बर के "माहेश्वरी" में श्री शिवचन्द्रजी इनानी और श्री राम प्रसादजी हुरकुट के पत्र देखेन में आये–मैं उन दोनों के विचारों से सहमत हूँ निश्चय ही भिन्न जातियों में सम्बन्ध करनेके स्थान पर यदि अपनी ही जाति के दस्से माहेश्वरियों के साथ नाते जोड़े जायं तो अति उत्तम है। यदि कोई भी माहेश्वरी बन्धु अपना सम्बन्ध जोड़ने में मेरी सम्मित व सहायता का इच्छुक हो तो मैं सहर्ष उसका काम करने के लिये तयार हूँ।

राजस्थान में, जिन प्रतिष्ठित परिवारों के लड़कोंका सम्बन्ध होना बाकी है, वे निम्र प्रकार हैं, जिनको आवश्यकता हो, वे पत्रव्यवहार कर सकते हैं :—

(१) श्रीयुत रामस्वरूपजी हुरकुट, रजिस्ट्रार, जोधपुर। पुत्र, एम. ए. में पठता है, आयु २१ वर्ष।
(२) श्रीयुत रामप्रसादजी हुरकुट, सांभर। पुत्र, बी. ए. म पठता है, आयु १८ वर्ष।
(३) श्रीयुत नरसिंहदासजी चिंडक, अजमेर। दो पुत्र, १६ वर्ष और १८ वर्ष।
(४) श्रीतयु कुँवर चांदकरणजी सारड़ा, अजमेर। पुत्र १६ वर्ष।
(५) श्रीयुत चांदमलजी मिल्क पुत्र, १५ वर्ष।
(६) श्रीयुत नाथूलालजी हेड़ा वकील, पुत्र १६ वर्ष।
(७) श्रीयुत मूलचंदजी कालाणी, मिरजापुर। पुत्र, एम्. ए. २१ वर्ष।
(८) रावबहादुर हरकिसनदासजी देवकिशनजी भट्टर, कलकत्ता व बीकानेर, पुत्र १६ वर्ष।
(९) रामप्रसादजी कालानी, नीमच, पुत्र १६ वर्ष।

इन उपरोक्त नामों के अतिरिक्त मेरे पास और भी पते हैं।

कोई भी सज्जन इस विषयमें मुझ से पत्र व्यवहार कर सकते हैं। मैं हर तरह से सहयोग देने को तयार हूं–

—श्रीमल माल्द,
(भूतपूर्व कौन्सिलर, परतावगढ़ स्टेट)
छोटा रंग महल, अजमेर।

देश विदेशकी चर्चा
ART CORNER

मुनाफा खोरी का पाप

देश में बढ़ती हुई मुनाफा खोरी और भुखमरी ने पूज्य महात्माजी का हृदय विदीर्ण कर दिया है और वह अधिक से अधिक तप तथा त्याग द्वारा इनका समूल नाश करना चाहते हैं। अभी आपने ३ से ३१ दिसम्बर तक दूसरी सब गति विधियां बंद करके भावी कार्यक्रम की तय्यारीके लिये सम्पूर्ण शान्त रहने का निश्चय किया है। इस बीच में आप अखबार तक नहीं पढ़ेंगे और पूर्ण विश्राम करेंगे।

युद्ध शीघ्र समाप्त न होगा!

जर्मन युद्ध कब समाप्त होगा– निश्चिय नहीं

जपानको कब परास्त किया जायगा– यह कहना और भी कठिन है

ब्रिटिश पार्लमण्टके नव अधिवेशनमें किये गये बादशाह के भाषणपर वादविवाद करते हुए कामन्स सभामें प्रधान मंत्री चर्चिलने कहा–– "मैं हाउस तथा देशको चेतावनी देता हूं कि लोग यह न समझें कि युद्ध शीघ्र समाप्त हो जायगा। सम्भव है कि युद्ध खत्म हो जाय, लेकिन यह महसूस करके हम लोग अपने विचारों को विश्व इतिहास के उस नये रूपकी ओर आकृष्ट न करें जोकि युद्धके बाद आनेवाला है। सच बात तो यह है कि कोई नहीं जानता कि जर्मन युद्ध कब समाप्त होगा। इसके अतिरिक्त जर्मनोंकी पराजयके बाद जापानियोंको परास्त करनेमें कितना समय लगेगा, यह तो कहना और भी कठिन है। कुछ महीने पहले मैंने कहा था कि लोग ऐसी आशा न करें कि जर्मन युद्ध जनवरी या फरवरीमें समाप्त हो जायगा।

दुष्काल पर परदा

बंगालमें भीषण दुष्कालकी जांचके लिये भारत सरकारने वुडहेड जांच-समितिकी नियुक्ति की थी, लेकिन अबतक उसकी कोई रिपोर्ट तैयार नहीं हुई। बहुत कम सम्भव है कि इस रिपोर्टके तैयार होनेमें सबकी सर्वसम्मति हो। बंगालके ऐसे भीषण दुष्कालपर पर्दा डालनेके चिन्ह दृष्टिगोचर होते हैं। इसका कारण यह है कि यूरोपियनोंके हितोंकी रक्षाका ख्याल करके दुष्कालकी जांच की जायगी। यह भी समाचार मिले हैं कि साम्राज्यके हितोंकी रक्षाके लिये भारतके हितोंका हनन करनेकी ओर लोगोंकी प्रवृत्ति जान पड़ती है!

यह भी कहा जाता है कि विदेशसे अनाज आयात करनेके बारेमें इस कमीशनके सदस्योंमें भारी मतभेद है। ब्रिटनके खाद्य-विभागके स्थायी मंत्री सर हेनरी फ्रेंच यह अभिमत देते जान पड़ते हैं कि यदि सचमुच भारतको दर्भिक्षसे बचाना है तो भारतको कमसे कम पांच लाख टन अनाजकी आवश्यकता है। यूरोपियनोंका वह दल जो अपने ही स्वार्थों का हिमायती है, इस प्रस्तावका घोर विरोध करता है।

साम्प्रदायिक प्रश्न

दिल्ली के हिन्दू कालेज में भाषण देते हुए मि. अब्दुल कयूमने कहा "देशके वर्तमान राजनीतिक गतिरोध को मिटानेका एक रास्ता है और वह यह कि अल्प संख्यक सम्युदाय वालोंके सामने आत्मसमर्पण किया जाय। मैं एक भारतिय मुसलमानकी हैसियत से पाकिस्थानका विरोधी हूं, पर देशकी आजादीके लिये बहु संख्यकोंको अल्प संख्यकोंकी मांग पूरी करना चाहिये। तभी मुस्लिमलीगकी पाकिस्थान की मांग रद्द हो सकती है। मुसल्मानोंकी आर्थिक स्थिति खराब है। इस लिए ये नौकरियों तथा दूसरे क्षेत्रोंमें अपनी रक्षा चाहते हैं। हिन्दू अपनी उदारतासे यह समस्या हल कर सकते हैं, और मुसल्मानोंके विश्वास पात्र और मित्र बन सकते हैं।"

'स्वतन्त्रता का इतिहास'

नामक अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में लार्ड एक्टन लिखते हैं:— "कई जातियोंका एक ही राष्ट्रके आधीन एवं एक साथ अस्तित्व होना उसकी स्वतंत्रता तथा उसकी सुरक्षाका परीक्षण है। यह एक सभ्यताका सर्वश्रेष्ठ साधन भी है— एक ही राष्ट्रके अंतर्गत भिन्न-भिन्न जातियोंका समन्वय होना सभ्य जीवनके लिये उतनी ही आवश्यक वस्तु है जितनी समाजमें मनुष्योंके संयोग की।"

कौमी एकता

श्रीमती सरोजनी नायडूने कहा "जिस तरह सूर्यका उदय होना निश्चित है उसी तरह निकट भविष्य में हिन्दू-मुसलिम एकताका होना भी निश्चित है।"

पालिताना नरेश के उद्गार

पालिताना रिसायतके शासक ठाकुर साहबने अपनी २५ वीं वर्ष गांठके अवसर पर प्रजाके प्रति अपने हार्दिक उद्गार प्रकट करते हुये कहा— "रिसायतका हरेक मेरा प्यारा और भक्त जन यह विश्वास रखे कि मैं जाति, धर्म, बूढ़े, जवान, गरीब और धनीका ख्याल छोड़ कर बिना भय और कृपाके अपना कर्तव्य पूरा करूंगा। मैं ईश्वरसे प्रार्थना करता हूं कि वे मुझे बल दें, जिससे मैं अपने जीवन और शासनका महान उद्देश्य-प्रजाका हित और उन्नति कर सकूं।"

पहेली प्रतियोगता

पत्रोंमें प्रकाशित होनेवाली पहेलियोंके सम्बन्धमें महात्मा गांधीने एक पत्रमें लिखा है— "प्रत्येक व्यक्ति बिना परिश्रमके ही धनवान होना चाहता है। बुद्धिमान लोक लोगोंकी इस बुराईसे फायदा उठाते हैं। प्रत्येक मनुष्य जो समाजकी सेवा करना चाहता है, उसे पहेलियोंकी इस प्रतियोगताका विरोध करना चाहिये।"

झाबुबाओं में भीलों पर अत्याचार

मध्यभारत की कितनी ही रियासतों में इस समय घोर अन्न संकट फैल रहा है और

ईसाईयत के प्रचार के लिए—

ऐसी स्थिति बड़ी अनुकूल हो रही है। अन्न संकट और बेगार के रियासती जुल्मों से भीलों में ईसाई मत के प्रचार का अच्छा अवसर पादरियोंके हाथ आ गया है। आश्चर्य की बात तो यह है कि रियासती शासक और नौकर इन ईसाई पादरियोंके विरुद्ध जरा भी चूं नहीं कर सकते हैं और मध्यभारत के रेसिडेन्ट और मालवा के पोलिटिकल एजन्ट भी चुप्पी साधे रहते हैं।

जनेऊ तोड़ डाले—

अत्याचारों का अन्त यहां ही नहीं होता है। गावोंसे किसी कस्बेमें दवा या खानेपीनेकी कोई वस्तु खरीदने जो भील पहुचते हैं उनको वहांपर सिपाही जबरन बेगार में पकड़ लेते हैं। जो थोड़ा भी इनकार करता है उसे बुरी तरह पीटा जाता है और उसका जनेऊ तोड़कर फेंक दिया जाता है। जनेऊ तोड़नेका काम तो पुलिसके नौकर करते है क्यों कि राजाका भाई जोकि झाबुआ का पुलिस अधिकारी है, यह समझ नहीं सकता है कि भील भी क्षात्रिय हैं।

भील स्त्रियों की इज्जत अरक्षित—

बेगार के सिवाय भीलोंको मनमाने तरीके पर पुलिस और तहसील के सिपाही, पटवारी अफसर, डराते, धमकाते, मारते, पीटते और पैसा लेते हैं; इनकी भी अनेकों घटनाएं राजातक पहुंचाई गई थीं। यही नहीं भील स्त्रियोंको भी बेगारके नाम पर जबरन घरों से लेजाकर एक दो रात गायब रक्खा जाता है। जो घरके लोग या रिश्तेदार जांच करते हैं उनको पीटा जाता है। भीलोंने ऐसे अमानुषिक जुल्मों की सप्रमाण शिकायतें राजाको पहुंचाई हैं। किन्तु फिर भी इन गरीब भीलों के अत्याचारों की फरियाद पर कोई भी ध्यान नहीं दे रहा है। भीलों ने और उनकी ओरसे उनके कार्यकर्ताओंने ऐसी शिकायतों के अनेकों तार राजा और अन्य अधिकारियोंको दिये हैं। जांच हो तो सब शिकायतें अक्षरशः प्रमाणित की जा सकती हैं।

ऐंग्लो इण्डियन

रेवरण्ड डी० आर० बेजेलिन ने कहा था— "हम, एंग्लो-इण्डियनों को देशके अन्य लोगोंके साथ ही देशके हितचिन्तनमें संलग्न देखना चाहते हैं। अपनी जातिके बुद्धिशाली व्यक्ति और नेता बनकर वे भारतीय दृष्टिकोण से ही अपनी भावनाको निर्दिष्ट करें तथा अन्य भारतियोंके साथ ही देशके लिये अधिकसे अकिक समय दे, यही हमारी कामना है। अभी तक एंग्लो इण्डियन जिस बातको भूलते आये हैं अथवा जिसे उन्होंने सहृदयतासे नहीं किया, उसे उन्हें पूर्ण भावनासे करना चाहिये। जबतक हम इस देशके लोगों को अपने समान नहीं समझेंगे, तबतक हमें इस बातका विश्वास नहीं होगा कि हम इसी देशके हैं। संगठित होकर ही हम यह समझ सकेंगे कि हमारा सबका एक प्रश्न है, और एक कार्य क्षेत्र है। हम भारतियोंके साथ ही उठेंगे और उन्हींके साथ गिरेंगे। भारतके अनेक सम्प्रदायोंमें से हम भी एक सम्प्रदायके अंतर्गत हैं। हमें इस बातको समझना चाहिय और अपने बच्चों को बतलाना चाहिये कि उनका घर इसी देशमें है। इसी देशकी पट्टीमें वे खेले हैं, यहीं बड़े हुए हैं। उनका और कहीं भी अपना घर नहीं हो सकता। हमने भारत की भूमिमें जन्म लिया है। यहीं हमें अपना जीवनकाल व्यतीत करना हैं और यहीं हमें अपना अंत करना है, यहीं की मिट्टीमें मिल जाना है। यह कहना ईसाई मतके खिलाफ बात है कि हम भारतीय नहीं है और हममें भारतीय भावना नहीं है अथवा देशके लिये हार्दिक प्रेम नहीं है।"

"ग्लाइड रोबेट"

यह नया नाम क्या है? लेकिन इससे आपको आश्चर्य नहीं होना चाहिये। आप 'उड़न बम' और 'वी २' से परिचित हैं न? ये जर्मनीके दो नये अस्त्र हैं, जिन्होंने दुंनियामें तहलका मचा दिया है। इसी तरहका यह उसका तीसरा अस्त्र है, स्टाक हामके एक समाचारसे ज्ञात हुआ है कि जर्मनीके बड़े-बड़े वैज्ञानिक इस नये अद्भुत-शस्त्रको बनानेमें मशगूल हैं। जर्मनीके बिना आवाजके बड़े बड़े विमान कुछ ही समयमें इस शस्त्रका उपयोग करेंगे।

ऐसा मालूम होता है कि जर्मनीके पास नये और अद्भुत-शस्त्रोंको बनानेकी अमर्यादित शक्ति मौजूद है। इस नये शस्त्र और विमानोंसे एक बार फिर संसारमें आतङ्क छा जायगा।

वानर–सेना

बर्माके युद्धकी सबसे सनसनीखेज घटना यह है कि जापानी वानरोंका बहुत अधिक संख्यामें प्रयोग कर रहे हैं। मध्य-बर्मामें तो वानरोंकी सेनाको बाकायदा ट्रेनिंग देनेके लिए सैनिक स्कूल भी खुल गये हैं। सैनिक विद्यार्थियोंकी भांति बन्दर सारे काम सीखते हैं।

लोगोंको यह पता ही होगा कि जापानी शस्त्रास्त्र, पेट्रोल व तोपोंको हाथियोंपर लादकर एक स्थानसे दूसरे स्थानको ले जाते हैं। लेकिन वानर आदमियोंका पार्ट अदा करेंगे। इन्हें वृक्षोंपर चढ़ने तथा आते हुए व्यक्तिपर हथगोले फेंकनेकी शिक्षा दी जा रही है। यह विचार बिल्कुल जर्मनीके उड़न बमों जैसा है और इसका उद्देश्य अपने सैनिकोंकी रक्षा करना है।

वानरोंको खच्चरोंपर चढ़नेकी भी शिक्षा दी जा रही है जिससे ऐसा भान हो कि सैनिक घोड़ेकी पीठपर सवार हैं। वर्तमान युद्धमें वानरों की यह सेना अपने ढंगकी निराली है और यह युद्धका ८ वां आश्चर्य है।

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल

इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड

संस्थापित सन् १९१९

★

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—ः हमारी शाखाएं ः—

अहमदाबाद
(गांधी रोड)

बोटाद
(काठियावाड़)

कलकत्ता
(१३५, कैनिंग स्ट्रीट)

लाहौर
(दी माल)

कम्पाला (युगाण्डा)
(बाम्बो रोड)

★

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेण्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए :—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :– सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

श्रीमती एनोफील—जनशत्रु नं० १

मलेरिया, जो सबसे अधिक भयावह और हमारे देशका अत्यन्त साधारण रोग है, प्रतिवर्ष ३० लाखसे अधिक व्यक्तियोंके प्राणोंका गाहक बनता है। इसके लगातार आक्रमणोंसे उत्पन्न विभिन्न शिकायतोंके कारण और भी अधिक संख्यामें लोगोंको कष्ट सहना पड़ता है।

तथापि मलेरियाका कारण सिर्फ एक ही प्रकारके मच्छर—'एनोफील' और वह भी स्त्री जातिके मच्छरोंसे पैदा होता है। यह मच्छर मलेरियाग्रस्त लोगोंका खून चूसकर दूसरोंके शरीरमें रोगके कीटाणुओंका प्रवेश कराता और इस प्रकार मलेरिया फैलाता है।

इन मच्छरोंकी उत्पत्ति बंधे जलाशयोंमें होती है, अतएव उनका विनाश करनेके लिये पहला आक्रमण यहींसे शुरू होना चाहिये। इन जलाशयोंको भर दें अथवा बिल्कुल पानी निकाल फेकें या पानीमें कीटाणुनाशक औषधियां डाल दें जब भी सम्भव हो, मशहरीके नीचे सोयें और श्रीमती एनोफीलको अपनेसे दूर रखें।

यदि, इसपर भी आप मलेरियाके शिकार हो जायें तो तत्क्षण किसी अनुभवी डाक्टरकी सलाह अपनी हिफाजत और रोग विस्तार रोकनेके लिये लें।

* * *

भारत के जनस्वास्थ्यकी हिफाजतके लिये यह चेतावनी
दी जा रही है। इस विज्ञापनके हस्ताक्षरकारियों और
जनताका स्वार्थ एक ही समान है।

न्यू एशियाटिक इन्स्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड

जीवन, आग, जहाज, दुर्घटना, खतरा आदिके बीमेका
कारबार करती है।

हेड आफिस—न्यू एशियाटिक बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नयी दिल्ली।

कलकत्ता आफिस—८ रॉयल एक्सचेञ्ज प्लेस। ❀ बंबई आफिस—इम्पीरियल बैंक एनेक्स बिल्डिंग फोर्ट, बंबई।

मद्रास आफिस—२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट जार्ज टाउन।

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India
Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

गुरुकुल कांगड़ी

एक प्रति का ।=)

[अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र]

Reg. No. B 4441

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

— प्रवर्तक —
स्व० भागीरथदासजी भूतड़ा

कार्यालय
बली चेम्बर्स, क्वीन लेन,
फोर्ट, बम्बई

वर्ष ३५, संख्या १४]

बम्बई ता० २१ नवम्बर १९४४

[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

नेहरूजी संसारके महान राजनीतिज्ञ हैं

उन्हें कैदमें रखना ब्रिटिश-शासनपर कलंक है

वे भारत के प्रधान-मन्त्री बन सकते हैं

५५ वीं वर्षगांठपर लन्दन से सन्देश

" पं० जवाहरलाल नेहरूको जेलमें बन्द रखना ब्रिटिश शासनके लिये एक कलंक है । यह गलती इस समय और भी असहनीय हो जाती है, जब कि हम यह सोचते हैं कि वास्तवमें उनका व्यक्तित्व और योग्यता उन छोटे राजनीतिज्ञोंके मुकावलेमें कहीं वढ़ी-चढ़ी है—जिन्होंने कि उन्हें कारावासमें पटक रखा है ।"—ये शब्द स्वतन्त्र-मजदूर दलके मन्त्री **मि. फेनर ब्राक्वेने** लन्दनमें पं० जवाहरलाल नेहरूकी ५५ वीं वर्षगांठके उपलक्षमें की जानेवाली सभाके लिये एक सन्देश भेजते हुए कहे ।

मि. ब्राक्वे आगे कहते हैं—"मेरा यहां विचार है कि इतिहासमें जबर्दस्त परिवर्तन करनेवाली शक्ति व्यक्तिगत नेताओंकी नहीं होती, बल्कि गहरी सामाजिक शक्ति ही इतिहासोंको बदला करती है । इससे भी इंकार नहीं किया जा-सकता कि नेतृत्व आवश्यक और कभी कभी निर्णायक होता है । भारतका सौभाग्य है कि आज उसके पास संसारके दो महान नेता नेतृत्व करनेके लिये मौजूद हैं । मेरा तात्पर्य महात्मा गांधी और पं० जवाहरलाल नेहरूसे है । उनकी. वर्ष गांठपर सन्देश भेजते हुए मुझे हर्ष है ।

" नेहरूजीके मुकावलेमें मि. एमरी बौने हैं, शारीरिक ही नहीं, बल्कि मस्तिष्क और आध्यात्मसे भी । ब्रिटिश मन्त्रि मण्डलमें आज एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जो भूतकाल और वर्तमान समयके मानव-जीवनकी इतनी अधिक जानकारी रखता हो, जितनी कि जवाहरलालजी रखते हैं । उनके समान ऐसा व्यक्ति मिलना दुर्लभ है, जिसने कि रूस, ब्रिटेन, अमेरिका और जर्मनीकी सामाजिक और राजनीतिक प्रणालियोंका विस्तृत अध्ययन किया हो । उनके समान कोई भी ऐसा नहीं है, जो इतना मजवूत रचनात्मक दृष्टिकोण रखता हो, उनके समान ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है, जिसका चरित्र, साहस और दृढ़ता इतनी अदम्य हो, जो अपने सिद्धान्तोंके लिये अपने प्राणोंकी आहुति दे सके । "

" जवाहरलाल जैसे व्यक्तिपर गर्व करना भारतके लिये स्वाभाविक है । ब्रिटेनका सिर आज उन राजनीतिज्ञों के कारण शर्मसे झुका हुआ है जिन्होंने कि उन्हें कैदमें डाल रखा है । साम्राज्यवाद की लानतपर अंतिम शब्द में यह कहूंगा कि वह छोटे आदमियोंको बड़े आदमियों को कैद करनेमें मदद देता है । "

डा० हेराल्ड लास्की जो समाजवादी विचारक और अर्थ शास्त्री हैं । 'यूनाइटेड प्रेस आफ इण्डिया ' को संदेश देते हुए कहते हैं:—" आप जवाहरलाल नेहरूकी ५५ वीं वर्षगांठपर मेरी हार्दिक शुभ कामनाएं उनके पास पहुंचा दीजिये ।

" राजनीतिज्ञतामें मैं उनके समान उच्च व्यक्ति एक भी नहीं पाता और भारतमें इससे अधिक ब्रिटिश नीति का और क्या पतन हो सकता है कि जिसे आजाद भारतका प्रधान मंत्री बनाना चाहिये था, उसे आज जेलमें बन्द रखा है । "

मैं आशा करता हूं कि मैं इस विचार को शीघ्र ही पूरा हुआ देख सकूंगा ।

प्रो० एडवर्ड थाम्पसन अपने संदेश में कहते हैं:—मैं अपने प्रिय मित्र जवाहरलालके विषयमें क्या कहूं यह बड़ा कठिन है । जवाहरलाल ! सन्देश के रूपमें मैं किसीके इन शब्दोंको दोहराता हूं—

ओ प्राणी ! भयभीत मत हो ! शक्तिशाली हो ! तुझे अवश्य शांति मिलेगी ! हां, शक्तिशाली हो ! आगे बढ़ता चल, जबतक कि अन्तिम लक्ष्य तक न पहुंच जाये ! उन आखिरी दिनोंमें ही तुझे अपने सुफल मिलेंगे !

श्री. पं० जवाहरलालजी सुदीर्घजीवी हों

नेहरूजी की ५५ वीं वर्ष गांठपर हार्दिक अभिनन्दन

विश्ववंद्य महात्मा गांधीजीने कहा है—

" वहादुरी में कोई उनसे बढ़ नहीं सकता और देश प्रेम में उनके आगे कौन जासकता है ? कुछ लोग कहते हैं कि वह जल्दबाज और अधीर हैं। यह तो इस समय एक विशिष्ट गुण है। फिर जहां उनमें एक वीर योद्धा की तेज़ी और अधीरता है, वहां एक राजनीतिज्ञ का विवेक भी है। निःसन्देह वह अपनी परिस्थित से बहुत आगे की बात सोचनेवाले उग्रवादी हैं.........वह स्फटिक मणि की भांति पवित्र हैं। उनकी सत्यशीलता सन्देह के परे है। वह अहिंसक और अभिनन्दनीय योद्धा हैं। राष्ट्र उनके हाथ में सुरक्षित है। "

" He (Jwahar lal) is quite capable of mounting gallows with a smile on his lips :—

" वे (जवाहरलाल) मुस्काते हुए फांसी के तख्ते पर चढ़ जाने में पूर्ण समर्थ हैं। "

" जवाहरलाल एक नर-रत्न हैं, वे जिस देशके हैं, वह देश उन्हें पाकर खुश है। उस प्रणालीमें कोई जबरदस्त गलती है, जो एक ऐसे व्यक्तिको जेलमें कैद रखनेके सिवा बाकी किसी अच्छे काम में उनका उपयोग नहीं कर सकती ! "

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० २१ नवम्बर १९४४

अतीत की ओर–

देश और जातियों के उत्त्थान और पतन के इतिहास में भारतवर्ष देश और हिन्दू जाति का नाम बारम्बार. लिया जाता है। कारण यह है कि इस देश और इस जाति ने अपने जीवन में इतने उतार-चढ़ाव देखे हैं जितने शायद ही किसी ने देखे होंगे। अतीत में इनका उत्त्थान जैसा महान् था वैसा ही वर्तमान समय में पतन भी पराकाष्ठा पर पहुचा हुआ है। भविष्य के विषय में कुछ भी कहना दुःसाहस ही कहा जा सकता है, क्योंकि जब तक हमारा देश और हमारी जाति गुलाम हैं, दासता की कठोर शृंखला में जकड़ी हुई हैं, तब तक उत्त्थान की आशा ही बड़ी कठिन है; हां, यदि और अधिक पतन न हो तब भी गनीमत है। गिरावट के बंधनों को और भी कठोरतर से कठोरतम करने की लाख रीति-नीतियां नित्य नई ईजाद की जा रही हैं किंतु उत्त्थान के लिये कौन उद्योग करता है? किस को चिन्ता है कि हम उन्नत पथ पर अग्रसर होने की योग्यता प्राप्त कर सकें? हम स्वयम भी यदि कुछ उद्योग करते हैं तो दण्डनीय समझे जाते हैं, गर्दन ज़दनी होते हैं। हमारा जीवन और सर्वस्व आज मात्र हमारे प्रभुओं की दयापर अश्रित है, निर्भर है। किंतु क्या यह दशा संन्तोषजनक कही जासकती है? क्या इतने से हमारी भाग्य रेखायें धुंधली हो सकती हैं? कदापि नहीं। हमें अवनतिके इस गहरे गर्त में से निकलने के लिये सतत् उद्योग करना होगा। कठोर तपस्या करनी होगी और करना होगा असाधारण त्याग तथा आत्म समर्पण भी। क्या हम यह सब करने के लिये प्रस्तुत हैं? हमें क्षमा किया जाय यदि हम यह बात स्पष्ट कर दें कि हमें अभी बहुत तय्यारी करनी है, बहुत कुछ सीखना है और बहुत अधिक भूलना भी है।

संसार में प्रत्येक प्राणी अनुकरण प्रिय होता है। यह ही कारण है कि सत्य, धर्म, नीति आदि का जितना मौखिक प्रचार होता है उससे चौथाई भी व्यवहार नहीं हो रहा है। दूसरी ओर असत्य, अधर्म और अनीति आदि का मौखिक प्रचार न होते हुये भी इनका सक्रिय उपयोग—प्रयोग तथा व्यवहार ही इनके इतने सुविशाल प्रसार तथा प्रचार का कारण है। आज संसार यह सुनने के लिये बिल्कुल भी उद्यत नहीं है कि **हम क्या कहते हैं**। हां, वह हर घड़ी उत्सुकता के साथ यह देखने की खोज में ही रहता है कि **हम क्या कर रहे हैं!** हमारे विद्वत्तापूर्ण भाषण, गम्भीर योजनायें और विशाल कार्य-क्रम आदि सभी रखे रह जाते हैं–प्रभाव शून्य हो जाते हैं जब कि हमारा व्यवहारिक-क्रियात्मिक-जीवन कुछ दूसरा ही होता है। कहना कुछ, मानना कुछ और करना कुछ–यह हमारी संस्कृति के एकदम विपरीत है। हमारे यहां तो मनसा, वाचा और कर्मणा तीनों रूपों में एकता ही सबसे मुख्य और आदर्श **राज-मार्ग** है जो हमारे बन्दनीय आचार्यों ने हमारे लिये अनादि काल से निर्माण तथा निर्धारित कर रक्खा है। आज हम उस प्रशस्त मार्गको छोड़कर ज्ञात नहीं कहां कहां ठोकरें खाते फिर रहे हैं, भटक रहे हैं और अपने भविष्य को अन्धकारपूर्ण बना रहे हैं।

आगे दौड़ते हुये पीछे मुड़ मुड़कर देखना बहुत अच्छा तो नहीं है किन्तु इसमें संकोच या लज्जा की भी कोई बात नहीं है। शर्मावें तो वे जिन का अतीत अवनत हो। हमारा अतीत जैसा शानदार था उसका तो इतिहास में और संसार में जोड़ ही नहीं मिलता है। हमें तो उस पर गर्व है, अभिमान है और उचित अभिमान है। हमें अपने अतीत से जो शिक्षा, स्फूर्ति और साहस तथा बल मिलता है वह अनुपम है और हम यह बात सर्वथा निःसंकोच तथा दृढ़ता के साथ कह सकते हैं कि हमें हमारा अतीत ही पुनः उन्नति के सर्वोच्च सोपान तक पहुंचा देगा और हम पुनः पहिले ही जैसा गौरव प्राप्त कर सकेंगे यदि हम अन्तर्मुख होकर तनिक गम्भीरता के साथ विचार, मनन और कार्य करेंगे। मात्र आवश्यकता है दृढ़ संकल्प की, उच्च आदर्श की और उस तक पहुंचनेके लिये सतत उद्योग परिपूर्ण उत्साह की।

दासता की कठोरतम जञ्जीरों में जकड़ी हुई भारत माता आतुरता, आकुलता और व्यग्रता के साथे देश, जाति और धर्म की भावी सन्तान–उठते हुये नवयुवक तथा नवयुवतियों की ओर तीव्र उत्सुकता पूर्ण दृष्टि से देख रही है।

क्या हम माता की पुकार पर कान देंगे???

धर्म और राष्ट्र

धर्मांधता एक भयंकर रोग है। इस रोग का रोगी धर्म को भूल जाता है, राष्ट्र को भूल जाता है और भूल जाता है मानवता को भी। स्वार्थ, साम्प्रदायकता और अंधविश्वास ही उसकी उपासना तथा आराधना के केन्द्र बन जाते हैं। यह रोग समय पाकर अति शीघ्राही असाध्य हो जाता है और तब न केवल स्वयम रोगी के लिये ही वरन् उसकी परिचर्या–सुश्रूषा– तीमारदारी –करने वालों के लिये भी महान हानिककारक बन जाता है। आज हमारे अभागे देश में व्यक्ति विशेष ही नहीं वरन् समुदाय विशेष तक इस महामारी में बुरी तरह ग्रस्त हैं। देश रसातल को चला जाय, धर्म्म-कर्तव्य की अवहेलना हो जाय और मानवता का सर्वनाश हो जाय, उन्हे फिकर है तो एक मात्र इस बात की कि उनकी जिद-हट-कायम रहे और वह ताड़ वृक्ष की तरह ऊपर सिर उठाये खड़े दीखते रहें।

वह धर्म्म कैसा जिस में राष्ट्र का हित न हो, प्रेम न हो। हम समझते हैं कि यह प्रत्येक नागरिक का प्रथम कर्त्तव्य है। राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र भक्ति सच्चे धर्म्म का एक प्रमुख अंग है। राष्ट्र उन्नति में रोड़े अटकाना अधर्म्म है, देश द्रोह है और है भीषण पाप भी। धर्म और राष्ट्र कभी परस्पर विरोधी नहीं हैं। वह एक दूसरे पर आश्रित हैं। कतिपय 'मज़हब खतरे में है' की पुकार मचाने वालों ने इस निकृष्ट मनोवृति की वृद्धि में बड़ा सहयोग दिया है, क्यों कि उनका उल्लू इसी प्रकार सीधा होता है, जनता की उन्हे चिन्ता नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि सर्वसाधारण में, देश के प्रत्येक निवासीमें, यह भावना दृढ़ रहनी चाहिये कि उनको एक दूसरे से भयातुर होने की आवश्यकता नहीं है और उनके हित तथा आवश्यकतायें सब एक जैसी ही हैं। इसी भावनासे नेताओंको अनुकरण प्रिय जनताके सन्मुख एक ऐसा उदाहरण उपस्थित करना है कि जिसका वह अनुगमन करे। इसी रीति–नीतिसे साम्प्रदायक एक्यता संभव है और स्थिर भी रह सकती है। थोड़ीसी सहष्णुता और सहानुभूति तथा विश्वास हमें सुपथ पर चला देगा और हम अपने आदर्श तथा उद्देश्य की प्राप्तिके लिये सम्मलित रूपसे कटिबद्ध हो जायंगे। पाकिस्तानकी पुकार, देशके विभाजनके उद्योग, सत्यार्थ प्रकाश की जब्ती और 'हमारी मिनिस्टरी' के प्रयत्न राष्ट्र प्रेमके द्योतक नहीं वरन् राष्ट्र विद्रोहके सूचक हैं। यह धर्मांधता का समुज्वल प्रमाण हैं। हम जिस देशमें जन्म लेते, जीवित रहते, खाते–कमाते और मरने के पश्चात जिस पुण्य भूमि की पवित्र मिट्टी में ही विलीन हो जाते हैं–उसकी प्राचीन संस्कृति, अनुपम इतिहास, अनुकरणीय आदर्श और प्राण दायक जल–वायु तथा शस्य श्यामला वसुंधरा का ध्यान छोड़कर समय कु समय 'मजहब खतरे में है' की पुकार के साथ हजारों मील दूर सूखे, रेतीले, विदेशी टीबों, खजूर के वृक्षों और बीहड़ मैदानों के स्वप्न देखना निन्दनीय है और है सुप्रत्यक्ष गद्दारी तथा महान कृतघ्नता। गुलामों का कोई मजहब नहीं होता, यह भली प्रकार जानते हुये भी हम अपने कुकृत्यों से गुलामी की जञ्जीरों को दृढ़ से दृढ़तर और दृढ़तम करने के ही नित्य नये प्रपञ्च रचा करते हैं–यह कितने आश्चर्य और दुःख की बात है; इससे हमारी निर्बलता बढ़ती है और शत्रुके हाथ मजबूत होतें हैं, वह इससे जायज़ और नाजायज़ लाभ उठाता है। क्या इतनी सी बात भी हम नहीं समझ सकते हैं?

राष्ट्र की स्वतन्त्रता सर्वोपारि ध्येय है और इसके प्राप्त होने में कुछ भी विलम्ब न हो यदि हमारा सबका दृष्टि बिन्दू एक हो, लक्ष्य एक हो और हम एक मत होकर उसके लिये प्रण करलें। इस सर्वोच्च आदर्श-एक मात्र आदर्श, के लिये क्या हम अपनी धर्म्मांधता का त्याग नहीं कर सकते? हमारे अन्दर इतना भी नैतिक बल नहीं है और राष्ट्रीयता नहीं है? यदि इन प्रश्नों का उत्तर 'नहीं' है तो यह भी निश्चय है कि हम गुलाम रहने के ही योग्य हैं और यह गुलामी हमारे सिरपर लदी रहेगी। संसार की कोई भी शक्ति हमें इससे मुक्त नहीं कर सकती है।

महात्माजी का उपवास

गत ३, ४ सप्ताह से महात्माजी के उपवास की बड़ी चर्चा है। भिन्न भिन्न दृष्टिकोणों से इस प्रश्न पर विचार किया गया है और बड़े नेताओंने महात्माजी को उपवास न क का ही परामर्श दिया है। सुना है कि अभी कमसे कम ६ मास के लिये उपवास टल भी गया है। इस समाचार ने देश में बहुत बड़ा शोभ उत्प कर दिया है। अब महात्त्माजी ने स्वयम प्रग किया है:—

"यदि सब लोग धार्मिक रूपसे अप अपने कर्त्तव्य का पालन करें, तो मैं अनश करनेवाला कौन हूं? ईश्वर क्यों मुझे अनशनके लिये प्रेरित करेगा? किन्तु यदि लोग अब भी असहाय बनकर बैठे रहेंगे, तो अनशन रु नहीं सकता। जबतक मेरे सामने काम है अनशनकी बात नहीं सोची जा सकती। ईश्व मुझे तभी अनशनके लिये आदेश देगा, जब मेरे लिये कोई कार्य नहीं होगा और जब मैं कुछ भी नहीं कर सकूंगा। म अनशनकी आवश्यकताको महसूस रहा हूं; किन्तु ऐसी कोई चीज नहीं है, जो मुझे शीघ्र उपवासके लिये प्रेरित करे। जब मुझे ईश्वरका आदेश मिलेगा तो, मुझे कोई रोक नहीं सकता। आप ईश्वरसे प्रार्थना करें कि मुझे अनशन न करना पड़े। प्रार्थना से ही काम चल सकता है। ईश्वरके नाम पर वास्तविक कार्य करना ही प्रार्थना है। म वही प्रकट करता हूं, जो म महसूस करता हूं। एक वही ही चीज नहीं बल्कि दो या तीन ची मेरे दिमागमें चल रही हैं। मैंने उन्हीं बातों को प्रकट किया है, जिन्हों ने मुझे अधिक व्यथित कर दिया। मैं दूसरी बातों को भी, अगर होंगी, तो प्रकट करूंगा।

इन बातों से कांग्रेस से कोई सम्बन्ध नहीं है। आजकल किसी भी मूल्यपर लोग छल-कप चोर बाजार और पैसा कमाने में लीन हैं। उनकी मिथ्यावादिता का अन्त नहीं। उनके मन को कौन बदल सकता है। मैं नहीं जानता कि मेरा व्रत भी ऐसा कर सकता है। मैं केवल ई से प्रार्थना करता हूं। उसीके आदेशका पालन किया जायगा। कोई नहीं जानता है कि आज क्या होगा। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्त्तव्यका पालन करे, तो अनशनकी सम्भावना नहीं हो सकती। एक ही व्यक्ति सारी जिम्मेदारीको वहन नहीं कर सकता। किन्तु यदि बहुतसे लोग किसी कामको करें तो उसका कुछ परिणाम होगा।

बिना किसी दुःख या बेचैनीके शांतिपूर्वक अपना कर्त्तव्य पालन करें, मैं इससे अधिक और कुछ भी नहीं चाहता। ईश्वर भी इससे अधिक नहीं चाहता। मैं आरामसे हूं।"

भारत में पहिला ही १०० मञ्जिल का मकान

सुप्रसिद्ध टाटा कम्पनी की युद्धोत्तर पुनर्निर्माण योजना के अन्तर्गत बम्बई में एक आकाश छूने वाली बिल्डिंग भी बनेगी जिस में पूरी १०० मञ्जिलें (माले) होंगे। टाटा कम्पनी ने बम्बई विश्वविद्यालय और आर्मी नेवी के बीच का 'महेन्द्र मेन्शन' खरीद लिया है। युद्ध समाप्त होते ही यह इमारत गिरा दी जायगी और उसके स्थान पर नया गगन चुम्बी महल बनेगा। इस अभिनव भवन का नक़शा आदि एक प्रसिद्ध अमेरिकन इञ्जीनीयर ने तय्यार किया है।

विचार धारा

हृदय—

हृदय !

आज तू इतना दुःखी क्यों है ? रह रह कर तड़पने, ठहर ठहर कर उछलने, रुक रुक कर मचलने और घड़ी घड़ी व्याकुल होनेसे तो तेरा जीवन ही समाप्त होजायगा। जो पड़ी है वह सहनी होगी। रो रो कर सहनेसे तो अच्छा है कि हंसते हंसते सहा जाय और देखा जाय कि यह बज्राघात आखिर कहांतक–"**देखना है कितना ज़ोर बाज़ु-ए-क़ातिल में है।**'

माना, कि हर एक बात की सीमा होती है। तेरी पीड़ायें सीमा उलंघन कर चुकी हैं; फिर भी, जो बीतेगी वह सहनी तो तुझे ही पड़ेगी। कोई दूसरा तो हिस्सा- बटाने नहीं आयेगा ? सह, सह आर फिर फिर सह जब तक कि तू सह सके। जल निन्तर जल, खूब जल, धधक धधक कर जल, सुलग सुलग कर जल, जब तक कि तू राख न हो जाय–'**कब हूँ तो भनक पड़ेगी कान।**'

ठीक है, सहा नहीं जाता; कहां तक सहा जाय। छलनी हो रहा है हृदय। तिल तिल जख्मी हो रहा है तू, जख्मों में कसक असह्य है, वेदना असाधारण है और मर्मान्तक पीड़ा देने वाली है। देखने वाले तड़प उठते हैं, तो, तेरी क्या दशा होगी। तेरी श्वासों की सर्दी और गर्मी ही पास बैठनेवालों तक को रोमाञ्चित करती और झुलसाये दे रही है–फिर तेरा क्या हाल होगा, तू ही जाने। मर्मभेदी आह ! व्यथित कर देनेवाली तड़पन और डुबो देनेवाले आंसू तू ही सह सकता है। आश्चर्य है तेरे इस अदम्य साहस पर और बधाई है तेरी इस दृढ़ता पर।

किन्तु मेरे प्यारे हृदय ! ओ अबोध और निर्मल हृदय ! तू यह सब कुछ कहां तक और कब तक सहता रहेगा और कैसे सहता रहेगा ? बारम्बार की चोटों से तो कठोर पत्थर तक चूर चूर हो जाता है और कठोरतम फ़ौलाद तक नरम हो जाता है—तुझ बेचारे की तो गिनती ही क्या है। 'क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा।' एक ओर तेरी कोमलता, मृदुलता, सरलता तथा निर्बलता है और दूसरी ओर है घोर निर्दयता पूर्ण बारम्बार कठोर परिहार, बज्राघात, विश्वासघात तथा भीषण विषैली बाण वर्षा। बिना ईश्वर की विशेष अनुकम्पा के तो इन सबसे बच सकना अति कठिन ही नहीं वरन् असंभव है।

किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि स्यात प्रभू भी अब पीड़ितों पर दया नहीं करते। उनका स्वभाव भी बदल गया है और वह भी अब निष्ठुर हो गये हैं। शायद उनके कानों तक ऐसे आर्तनाद पहुंचते तक नहीं हैं। अन्यथा क्या कारण है कि जीवन का सर्वोत्तम भाग-भरी जवानी–और अपना सर्वस्व समाप्त-स्वाहा–कर देने के पश्चात भी आज तक उनके कानपर जूँ नहीं रेंगी। निष्ठुरता की, निर्दयता की और उपेक्षा की हद है और है अनीति तथा अन्याय की चरम सीमा, समुज्वल प्रमाण। भला कोई अपनों को यों बिसार दिया करता है ? दैव ! तुमसे तो ऐसी आशा नहीं थी, संभावना नहीं थी। तुम्हारे लिये तो लोक कुछ और ही कहा करते थे। मालूम नहीं तुम्हारी दयालुता और कृपालुता की हमने कितनी कहानियां सुनी हैं। सुनते सुनते कान पक गये और हम बहरे हो गये; क्या वह सब कवियों की कल्पना मात्रही थी ? आज जो कुछ हम प्रत्यक्ष आंखों से देख रहे हैं वह तो कुछ दूसरी ही बात प्रमाणित करता है। यह पक्षपात क्यों ? यह अंधेर क्यों ? क्या तुम्हारे यहां भी सिफ़ारिश, रिशवत और मित्रता का बोला बाला हो गया है ? मालूम तो कुछ ऐसा ही होता है। अच्छा नाथ ! जो तुम्हारी मरज़ी ! हम और किसके दरबारमें अपील करें ?

हृदय ! मेरे प्यारे हृदय ! !

मान जा, तुझे कैसे समझाऊं, कैसे धीरज दूं और क्या कह कर शान्त करूं ? मेरी तो बुद्धि ही भ्रष्ट हो रही है और मेरी समझमें तो यह ही नहीं आता है कि कोई जीवित प्राणी इतने कष्ट, इतनी पीड़ायें और इतनी व्यथायें कैसे सह सकता है, पर जब तुझे साक्षात देख ही रहे हैं तो विवश होकर विश्वास करना पड़ता है, झक्मार कर मानना पड़ता है कि ईश्वर ने मनुष्य में असीम शक्ति दी है। पत्थर फूट सकता है और लोहा पिघल सकता है परन्तु मनुष्य इन सब से अधिक, बहुत अधिक, सहकर भी जीवित रह सकता है। आश्चर्य ! महत् आश्चर्य !! अदृश्य ! निश्चय ही तुम्हारी लीला अपार है, अगम्य है और है अनिर्वचनीय भी। मालूम नहीं तुम क्या चाहते और क्या करते हो। किन्तु ओ निर्मोही ! कुछ तो रहम कर। देख तो सही, सुन तो सही कि लोग क्या कहते हैं:--

**'यह उनके बन्दे हैं जिनको ग़फ़ूर
उर्र रहीम कहते हैं।'**

मुझे नहीं मालूम कि मरे को मारने में कौन सी बहादुरी है। और जिसे तुम तनिक से संकेत से रौरव नर्क में डाल सकते हो, भस्मसात कर सकते हो उसे तिल तिलकर मारना कौनसी मनुष्यता है ? मालूम नहीं राक्षसी वृत्ति और क्या होती है ? दयालू, कृपालू, न्यायकारी और ऐसे ही सैंकड़ों हजारों विशेषणों से युक्त नाम रखा लेनेपर भी तुम्हें लज्जा नहीं आती ? संकोच नहीं होता ? छिः, कैसी हो तुम संकट हर्ता और मंगलकर्ता भगवान ? तारणहार तुम्हारा नाम जानें किस मूर्खने रक्खा। तारे होंगे कोई ऐरे गैरे, मुझे तारो तो जानूँ हो तारणहार और अधम उद्धारक ! नाम रखा लेनेसे क्या होता है। हमने बहुतसे लक्ष्मी चन्द्रों को दरिद्र और विद्यासागरोंको निरक्षर भट्टाचार्य तथा नयन सुखोंको निपट सूरदास देखा है। कहीं ऐसे ही तो नहीं हो '**ढपोल शंख**' ? सेवक तड़प रहा हो और मालिक को लाज न आवे–ऐसा अत्याचार संसार में तो बुरा समझा जाता है, तुम्हारे दरबार की तुम जानो दीना नाथ कहाने हार निर्दयी !

—'पीड़ित'

सत्यार्थ प्रकाश

ब्रिटिश गवर्नमेण्ट जहां कई निष्पक्ष नीतियों का गर्व के साथ उल्लेख किया करती है उन में किसी मत-सम्प्रदाय या मजहब में दखल न देना भी एक नीति है। ईसाईयों के प्रति घोर पक्षपात पूर्ण व्यवहारने इस नीति की बहुत कुछ पोल खोल भी दी है फिर भी अभी तक कहने के लिये बहुत कुछ था भी किन्तु सिन्ध प्रान्तीय गवर्नमेण्ट ने इस नीति की अवहेलना करके यह बता दिया है कि भविष्य में और क्या क्या होना भी संभव है। सत्यार्थ-प्रकाश के १४ वें समुल्लास के प्रकाशन और प्रचारपर रोक लगा देना कदापि न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता है। लगभग पौन शताब्दी पूर्व प्रकाशित ग्रन्थ पर कल के डिफेन्स आफ इन्डिया ऐक्ट के आधीन पाबन्दी लगाना न्याय और नीतिका उपहास मात्र ही कहा जायगा। आज सत्यार्थ प्रकाश है कल दूसरा ग्रन्थ हो सकता। सी. पी. की पुलिस को रामायण की कुछ चौपाईयों पर ऐतराज है और गीता भी बहुत दिनों से तीक्ष्ण दृष्टि का शिकार है। हम समझते हैं कि किसी भी धार्मिक ग्रन्थ पर, चाहे वह किसी भी सम्प्रदाय और मत विशेषसे सम्बन्धित हो, इस प्रकार की रोक लगाना सर्वथा अनुचित है और इससे शांति स्थिर नहीं रहती वरन् अशान्ति का बवण्डर उठ खड़ा होता है। इसी दृष्टिसे हम सत्यार्थ प्रकाश पर लगाई गई पाबन्दी का तीव्र विरोध करते हैं और सिंध गवर्नर तथा वायसराय महोदय से अपने विशेष अधिकारों का प्रयोग करके इस प्रतिबन्ध को शीघ्रातिशीघ्र हटा देने का अनुरोध करते हैं। हमें भय है कि यदि इस भूल का निराकरण फौरन ही न किया गया तो देश में एक प्रचण्ड आन्दोलन उठ खड़ा होगा। राष्ट्रीय उत्थान, संघर्ष और गतिअवरोध के इस नाजुक समय में इस प्रकार के अत्यन्त ही हानिकारक, वैमनस्य बढ़ाने वाले और क्षुद्र मनोवृत्तियों के प्रकाशक आन्दोलन कदापि नहीं चलने, चलाने चाहिये। यह हमारी देशभक्ति के लिये लज्जायुक्त बात है।

रेडियो की भाषा

'हिन्दुस्तानी' भाषा का मुख्य स्रष्टा सरकार का रेडियो विभाग है। इसके द्वारा जिस अप्रचलित, दुरुह और दकीक उर्दू–फारसी का प्रचार किया जाता है वह अत्यन्त ही कुतसित है। बहुत दिनों से इसके लिये आन्दोलन किया जा रहा है किन्तु सरकार के कानों पर जूँ नहीं रेंगी। अब अखिल भारतवर्षीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन ने इस दिशा में एक अत्यन्त ही प्रभावशाली पग उठाया है। सम्मेलन के जयपुर अधिवेशन में हिन्दी भाषी रेडियो वक्ता महानुभावों को इसके बहिष्कार कर देनेकी प्रेरणा की गई है और हमें यह जानकर हर्ष तथा संतोष हुआ है कि हिन्दी साहित्यके कई मान्य लेखक, वक्ता, कवि, कलाकार तथा प्रसिद्ध व्यक्तियोंने सम्मेलन की आज्ञाको मान्य करके रेडयोका बहिष्कार कर दिया है अर्थात सरकारी निमंत्रण पाकर रेडियोपर बोलना छोड़ दिया है। आशा है कि अब सरकार इस प्रश्न पर गम्भीरताके साथ विचार करेगी और हिन्दी के प्रति अपनी पक्षपातपूर्ण नीति में अवश्य ही परिवर्तन करनेके लिये विवश होगी।

मालूम हुआ है कि रेडियो विभागके सर्वाधिकारी सर सुल्तान अहमद सम्मेलन के इस प्रभावको नष्ट भ्रष्ट करने के लिये एक भाषा कमेटी बना रहे हैं जिसके ३ सदस्य सम्मेलन के होंगे और ३ अंजुमन तरक्किये उर्दूके। इसके प्रधान सर साहिब स्वयम होंगे। क्या हमारा सम्मेलन इस भुलावे में फंसेगा ?

सगोत्र विवाह

भारत की सेन्ट्रल असेम्बलीमें और इन्दौर की धारा सभामें 'सगोत्र विवाह' बिल पेश है। इनका उद्देश्य यह है कि ऐसे विवाहोंको कानून सम्मत माना जाय। इन्दौरमें श्री सरदार माधवरावजी कीबे साहिबने और केन्द्रीय सभामें श्री डा० देशमुखने इस प्रस्तावको रक्खा है। प्रस्ताव चौंका देनेवाले हैं और बड़े ही विवादास्पद हैं। हमारे यहां चिरकालसे, शायद सभ्यताके आरंभ कालसे ही, सगोत्रोंमें विवाह सम्बन्ध वर्जित हैं। स्मृतिकार और शास्त्रचार्योंने इनके लिये निषेध किया है। कई दृष्टियोंसे यह बहुत ही हानिकारक हैं। इतिहासमें कुछ उदाहरण अवश्य मिलते हैं किन्तु उनको उचित कभी नहीं माना गया है। हम इस प्रस्तावके समर्थकोंका युक्तिवाद जाननेके लिये उत्सुक हैं और इस विषयमें गम्भीर विचार प्रकट करनेके लिये हम विद्वानोंसे प्रार्थना भी करते हैं। यह पग हमें बहुत ही विचार के पश्चात उठाना चाहिये।

देशकी समस्या सुलझानेके लिये नया उद्योग

एक कमेटीका संगठन

दिल्लीमें अभी अभी निर्दल नेता सम्मेलन की एक सभा हुई थी। उसमें देश की समस्या सुलझानेके लिये एक कमेटीका संगठन करना निश्चय हुआ है जो दो मासके भीतर अपने प्रस्ताव तयार करेगी। महात्माजीने सर तेजबहादुर सप्रूको विश्वास दिलाया है कि--" मैं इस कमेटीके साथ पूर्ण सहयोग करूंगा। जहां कहीं भी आप चाहें, मुझे बुला सकते हैं; जो भी प्रश्न करना चाहें, कर सकते हैं, और जैसी भी सहायता चाहें, मुझसे ले सकते हैं।"

सर तेज ने कहा है—

"चालीस करोड़ भारतियोंमें, देशमें समझौते के लिये अगर किसी को सच्ची लगन और हार्दिक उत्कण्ठा है, तो केवल महात्मा गांधीजी ही हैं।"

युद्धोत्तर पुनर्निर्माण की १५ वर्षीय योजना

वायसराय की शासन परिषदकी पुनर्निर्माण समिति ने युद्धोत्तर पुनर्निमाणके सम्बधमें अपनी दूसरी रिपोर्टमें कहा है कि केंन्द्रीय सरकार तथा प्रान्तों और देशी राज्यों की सरकारें स्थूल रूपसे समस्त भारतके लिये एक १५ वर्षीय योजना तैयार करेंगी। कुछ विशेष विषयोंकी योजना इससे अधिक कालके लिये भी बनानी होगी। पहले पांच वर्षों की योजना विस्तृत रूपरेखा सहित तैयार की जायगी। रिपोर्टमें नीति सम्बन्धी जिन विभिन्न विषयोंपर विचार किया गया है, उनके संम्बधमें उसमें सरकारके अन्तिम निर्णय नहीं दिये गये हैं। रिपोर्ट का उद्देश्य पुनर्निर्माण सम्बन्धी अधिकारियोंका इस सम्बन्धमें पथ-प्रदर्शन करना है कि उन्हें किस रूपरेखाके अनुसार अपना कार्य करना चाहिए।

रिपोर्ट में इस वातपर जोर दिया गया है कि समस्त भारतके लिये सामूहिक रूपसे योजना बनानी चाहिए तथा देशी राज्योंको सासाजिक सुधार और आर्थिक उन्नतिके सम्बन्धमें और अधिक पग बढ़ाना चाहिए। समस्त भारतके लिये योजना बानानेसे वैधानिक प्रश्नपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है; क्योंकि भावी विधानका चाहे कुछ भी रूप क्यों न हो और उसके अन्तर्गत प्रन्तीय तथा देशी राज्योंको स्वतन्त्रता चाहे कितनी ही सीमा तक क्यों न हो, यह स्पष्ट है कि समस्त देशकी उम्नतिके लिये तैयार की गयी योजनाओंसे सारे प्रान्तों और देशी राज्योंको लाभ होगा। इसलिये रिपोर्ट भावी वैधानिक परिवर्तनोंके पूर्वाभासके आधार पर नहीं वल्कि वर्तमान विधानके आधार पर तैयार की गयी है ओर उसमें पग-पगपर इस वातके महत्वको विशेष रूपसे प्रकट किया गया है कि आर्थिक तथा सामाजिक सुधारके विभिन्न कार्यों में सामूहिक प्रयत्नों की बड़ी आवश्यकता है।

समस्त योजनाओंका अन्तिम उद्देश्य जन साधारणके रहन सहनकी कक्षाको ऊंचा करना तथा सबके लिये नौकरी की व्यवस्था करना होगा। इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये मजदूरों की उत्पादन शक्ति वढ़ाकर और साथमें कृषि, उद्योग तथा व्यापारकी उन्नति और पुनरसंगठन तथा सामाजिक सेवाओंको विस्तृत करके जन साधारण की क्रय शक्तिको वढ़ाना चाहिये।

वास्तविक उद्देश्यकी पूर्तिके लिये यह आवश्यक है कि जो सम्पति पैदा की जाय उसके उचित वितरणकी व्यवस्था भी की जाय। रिपोर्टमें जिस प्रकारकी योजना पर विचार किया गया है उसका अनिवार्य रूपसे यही परिणाम होगा, क्योंकि कम आयकी कक्षाके लोगोंके लिये विभिन्न प्रकारकी सुविधाओंकी-जैसे १४ वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा, डाक्टरी सहायता, पानी तथा विजली आदि सार्वजनिक उपयोग की अन्य वातोंका मुफ्त या कम खर्च पर प्रबन्ध, व्यवस्थाकी जायगी। फिर भी इस सम्बन्धमें अधिक निश्चित रूपसे कार्य करनेकी आवश्यकता है। मजदूरोंको उचित वेतन, सवेतन छुट्टी और इसी प्रकारकी अन्य सुविधाओं द्वारा उत्पादनमें अधिक अच्छा भाग मिलना चाहिये। इस बातका विशेष प्रयत्न करना चाहिये कि योजनाके अन्तर्गत जो सुविधाएं दी जायं वे परिगणित तथा पिछड़ी जातियोंके लिये विशेष लाभदायक रूपमें अमलमें लाई जायं जिस से कि वे अन्य नागरिकोंकें समकक्ष बन सकें।

केन्द्रीय सरकारके योजना संबंधी

तथाकथित उद्देश्य

योजना निर्माणके मुख्य उद्देश्य आपतकालीन तथा दीर्घ कालीन दोनों प्रकारके हैं। पहले प्रकारके उद्देश्य स्वभावतः दूसरे उद्देश्योंके अनुरूप होने चाहिए और इनमें निम्न सम्मिलित हैं :—

(१)—विभिन्न प्रकारकी सेनाओं से पृथक हुए सैनिकों तथा युद्ध उद्योगों और सैनिक कामोंसे पृथक हुए मजदूरों को फिरसे बसाना और नौकरीपर लगाना आदि।

(२)—सेनाओं के बचे हुए सामान साज सज्जा तथा भूमि और भवनों को व्यवस्थित रूपसे खपाना, (३)—उद्योगों को युद्धकालीन पैमाने से बदल कर शांतिकालीन स्थितिमें लाना; (४)—नियन्त्रणों को हटाना या उन्हें शांतिकाल के अनुरूप बनाना।

दीर्घकालीन योजनाओं में कुछ ऐसी हैं जिनके लिये बड़े पैमानेपर पूंजी लगाने की आवश्यकता होगी और जो सामूहिक उन्नति की दृष्टि से बड़े महत्व की हैं। वे ये हैं:—

(१)—औद्योगिक उन्नति तथा किसी हद तक कृषि उन्नति, नलदार कुओं से सिंचाई तथा ग्राम्य उद्योगों की उन्नति के आधार के रूपमें विद्युत शक्ति का विकास। (२)—जो उद्योग धन्धोंकी उन्नति, जिसमें पूंजीके रूपमें काममें आनेवाली वस्तुओं तथा अधिकांश जनताके लिये आवश्यक उपभोगकी वस्तुओंके उत्पादनपर विशेष जोर दिया जाय। तथा छोटे छोटे उद्योगों और गृह उद्योगोंकी रक्षा और उन्नति; (३)—सड़कों और यातायात संगठनों का व्यापक रूपसे, विशेष कर गांवोंमें विस्तार; (४)—कृषिसुधार और उसके साथ साथ सिंचाई, भूमिक्षय निरोधक योजनाओं तथा अव्यवहार्य भूमिको खेतीके योग्य बनानें आदि कार्यों की उन्नति।

ऊपरके कार्योंपर किये गये खर्चसे वढ़ी हुई आयके द्वारा ही अन्तमें आधुनिक ढ़ंगकी सामाजिक सेवाओंकी व्यापक रूपसे व्यवस्थाकी जा सकेगी।

कुछ मानी हुई बातोंके आधारपर भारत सरकारने अनुमान किया है कि पहले ५ वर्षोंके लिये १००० करोड़ रुपये मिल सकेंगे। कुल राशिका प्रायः अर्धा भाग केन्द्रीय सरकारके खर्चसे बची हुई रकमके रूपमें होगा जो केन्द्रीय उन्नतिकी ऐसी योजनाओंपर, जिनके लिये ऋण नहीं लिया जायगा तथा आवर्तक या अनावर्त्तक रूपसे सहायता देनेके लिये खर्च किया जा सकेगा। शेष रकमके लिये अनुमान है कि केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारें ५ वर्षमें ऋणोंके रूपमें उसे प्राप्त कर सकेंगी। १,००० करोड़ रुपयोंमें वह धनराशि सम्मिलित नहीं है, जो गैर सरकारी पूंजीके रूपमें लगानेके लिये बाजारके स्रोतोंसे प्राप्त हो सकेगी। यह सरकारी ऋण द्वारा प्राप्त की जानेवाली रकमके बराबर होगी।

यह सुझाया गया है कि योजनाओंको इस आधारपर तैयार करना चाहिये कि विद्युत विस्तार, सड़कों तथा सिंचाईके लिये आवश्यक धन ऋण द्वारा प्राप्त किया जायेगा और औद्योगिक, उन्नतिके लिये गैर सरकारी पूंजी लगेगी, सिवाय उस दशामें जबकि सरकार द्वारा इसमें भाग लेनेका विशेष रूपसे निश्चय किया गया हो।

सामाजिक सेवाओंकी पूर्ण उन्नति अन्तमें राष्ट्रीय आयकी वृद्धि पर और फलतः केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारों की आयपर निर्भर रहेगी। यदि उद्योग धन्धों और कृषिकी उन्नति तथा टैक्सों की वृद्धिमें अनुरूपता रही तो कोई कारण नहीं कि ऐसी योजनाएं जैसे कि शिक्षा की व्यापक रूपसे व्यवस्था, शिक्षा सलाहकार संघकी योजनाके अनुसार ४० वर्ष के भीतर ही पूरी न हो सके।

युद्धोत्तर पुनर्निर्माणके लिये व्यय किये जानेवाले धनका प्रभावपूर्ण रीतिसे प्रयोग करनेके लिये एक बहुत बड़े ऐसे कर्मचारी मण्डलकी आवश्यकता होगी जिसे बहुत ऊंचे दर्जेकी टेकनिकल शिक्षा दी गई हो। वस्तुतः इस तरहके कर्मचारियोंकी कमीसे प्राम्भमें बड़ी कठिनाई हो सकती है। इसलिये यथासम्भव शीघ्रताके साथ इस वातके प्रयत्न करने चाहिये कि :—

(१) वैज्ञानिकों, टेक्निकल कारीगरों, डाक्टरों शिक्षा-विशेषज्ञों तथा प्रबन्धकों आदिको भारतमें तथा विदेशोंमें भेजकर शिक्षित करनेके लिये छात्र वृत्तियों की व्यवस्था की जाय और (२) विज्ञान, इंजीनियरी, कृषि, पशु पालन, डाक्टरी तथा जंगल विद्या आदि की समस्त शाखाओं की शिक्षा देनेके लिये वर्तमान संस्थाओंमें विस्तार तथा नई संस्थाओं की स्थापना की जाय।

योजना निर्माण का यह मुख्य अंग है कि कृषि तथा उद्योगों की साथ साथ उन्नति होनी चाहिये। कृषि भारतका प्रमुख उद्यम है और रहेगा। लेकिन वर्तमान असन्तुलित व्यवस्थाओंको देशके उद्योगकी जोरदार उन्नतिके द्वारा ठीक करना होगा। सब प्रकार की औद्योगिक उन्नतिका आधार बिजली है। इसलिये सबसे पहले इसे उन्नत करना चाहिये। प्रारम्भमें उपभोग की वस्तुएं तैयार करनेवाले उद्योगोंकी अपेक्षा पूंजी के रूपमें काम आनेवाले पदार्थोंको तैयार करनेवाले उद्योगों जैसे, लोहे और इसपात की मशीनोंके औजार, इन्जीनियरिंगकी भारी मशीनों, भारी रसायन तथा खानों आदि के उद्योगों को, जो राष्ट्रके लिये आवश्यक हों, प्राथमिकता देना चाहिये। लेकिन यह आवश्यक है कि उपभोगकी वस्तुएं तैयार करनेवाले उद्योगों को भी साथ साथ उन्नत किया जाय क्योंकि पूंजी के रूपमें काम आनेवाले पदार्थों के उत्पादक उद्योगों द्वारा जन साधारणकी विभिन्न प्रकारकी वस्तुएं खरीदने की शक्ति में जो वृद्धि होगी उसके लिए उपभोगकी वस्तुओंकी आवश्यकता पड़ेगी।

ग्राम सुधार का कार्य सामूहिक रूपसे हाथ में लेना चाहिये और ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये कि जन साधारण की सामाजिक तथा भौतिक उन्नति चारों तरफ एक साथ ही प्रगति करे। इन योजनाओंमें कृषिकी सुधरी हुई प्रणालियां, पशु सुधार, संगठित हाट व्यवस्था, कर्जसे मुक्ति, भूमिक्षयकी रोक थाम, सिंचाई तथा खेतोंके योग्य भूमिको ठीक करना तथा भूमिको पट्टोपर लेनेकी व्यवस्था और उत्तराधिकार कानूनमें सुधार आदि अवश्य सम्मिलित होने चाहिये। इसके अतिरिक्त यातायात, डाक्टरी तथा स्वास्थ्य सेवा संगठन और शिक्षा की व्यवस्था में सुधारकी अत्यन्त आवश्यकता है। रिपोर्टमें कहा गया है कि गांवोंके सुधारमें सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि वहां स्वयं किसी भी प्रकारके नेतृत्व या स्वावलम्बनकी भावना नहीं होती। पंचायतों तथा सहकारी समितियोंको उन्नत करनेसे स्थितिमें बहुत कुछ सुधार हो सकता है। सेनासे पृथक हुए लोग अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे और गांव के स्कूल मास्टर, ग्रामसुधार समिति तथा ग्रामीणों का नेतृत्व करेंगे।

यह स्वीकार किया गया है कि उद्योग धन्धों, कृषि, सार्वजनिक निर्माण तथा अर्थ सम्बन्धी नीतियोंपर ही यह निर्भर होगा कि लोगोंको नौकरियां कहांतक मिल सकती हैं। सामूहिक रूपसे इन नीतियोंपर ही देशके प्राकृतिक साधनों तथा जनशक्तिका श्रेष्ठतम उपयोग निर्भर होगा। इसलिये केन्द्रीय, प्रान्तीय तथा देशी राज्योंकी सरकारोंका यह एक मुख्य कर्तव्य होगा कि वे ऐसी व्यवस्थायें करें जिनसे इस प्रकारकी नीतियोंपर क्रियात्मक रूपसे अमल हो। लेकिन इन नीतियों की सफलता बहुत अंशों में मजदूरों के स्वास्थ्य, कुशलता और संतुष्ट रहने पर निर्भर होगी। इसलिये नौकरियों में सुधार तथा सामाजिक सुरक्षा, सुख-सुविधा और स्वास्थ्य योजनाओं को विस्तृत करने के प्रयत्न किये जायंगे।

देश की आर्थिक और सामाजिक उन्नति के लिये एक अच्छे यातायात संगठन की आवश्यकता होगी। सड़कों को उन्नति का कार्य

(शेष पृष्ठ ५ पर)

गो-रक्षा—राष्ट्र-धर्म है

(ले०—श्री. सेठ चिरंजीलालजी लोयलका)

आजकल इस विश्व-व्यापी महायुद्ध के समय में गायों का एवं अन्य पशुओंका जिस प्रकार न्हास हो रहा है, उससे कौनसा हिन्दू है जो कम्पित न होगा। प्रायः देशके प्रत्येक कोनेसे इन मूक पशुओं के बधको रोकने की प्रयत्न किया जा रहा है। किन्तु इनकी मृत्यु संख्या में कमी नहीं होती है। सरकारी एवं अन्य विभागों से पता लगता है, कि सन् १९२० में केवल गायों की संख्या भारत में ४ करोड़, ५४ लाख, ९० हजार थी जो सन् १९४० में ३ करोड़, ९४ लाख के लगभग रह गई। इन बीस वर्षों में करीव २६० लाख और ९० हजार की कमी हुई। इस क्षति की ओर दृष्टि करन से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि इस देशमें जहां गायों को पूज्य मानते हैं, विशेष न्हास हुआ है। भारतमें लगभग एक हजार छोटी बड़ी गौशालायें हैं। सभी अपने अपने ढंगसे गो-रक्षा-प्रचार करती हैं जिससे बहुत कुछ लाभ हुआ है। यदि ये प्रचार न होता तो न मालूम कितना और अधिक न्हास होता। किन्तु फिर भी यह मानना पड़ता है कि उतनी सफलता नहीं मिली जितनी कि आशा थी। इसका मुख्य कारण हमारे शासक वर्ग की उदासीनता है। प्राचीनकाल में गायों की रक्षा राजाओं की ओरसे होती थी। इसका प्रमाण मुसलमानी राज्य तक में मिलता है। किन्तु आज ठीक उसके विपरीत दशा है। सरकार द्वारा जगह जगहपर, जनताके विरोध करने पर भी, नित्य नये कसाईखाने खोले जा रहे हैं। भारत में कसाई खानों के द्वारा गोवंशकी क्षति हो रही है और अन्यान्य देशों में गो-वंशकी वृद्धि हो रही है, जो नीचेके विवरण से पाठकों मालूम होगी। दक्षिण आफ्रिका में सन् १९३५ में १०५७५००० गायें थीं। सन् १९४० में १२०६०००० हो गईं। इसी प्रकार इंगलैण्ड में सन् १९३५ में ६८४९००० थीं। सन् १९४० ई० में ८८१८००० हो गईं। जर्मनी में सन् ३५ में १८९३८००० थीं और ४० में १९९०००० हो गईं। परन्तु भारतवर्षमें इन २० सालों में ४५४९०००० से घटकर ३९४००००० रह गईं। इसका फल यह हुआ कि यहां प्रति दिन प्रति भारतीय के लिये ३ छटाँक दूध का मुश्किल से औसत आता है और इंगलैण्ड में प्रति मनुष्य औसत २० छटाँक है। अमेरिका और जर्मनी में प्रति मनुष्य १०॥ छटांक है। इन अंकों से प्रकट होता है कि संसार में भारतकी अपेक्षा अन्य देशों में अधिक दूध पिया जाता है। भारतका प्रत्येक शिक्षित मनुष्य यही चाहता है कि भारत स्वतन्त्र हो, किन्तु बिना बलके स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती है। अतः मेरी राय में स्वतन्त्रता प्राप्त करने की कुञ्जी गोरक्षा ही हो सकती है। गोरक्षा बिना दूध, घृत जैसे पौष्टिक पदार्थ नहीं मिल सकते और बिना दूध, घृत के बल नहीं; बल बिना आत्म-रक्षा और देश-रक्षा नहीं हो सकती। एतदर्थ प्रत्येक भारतीय का यह प्रथम कर्तव्य है कि वह गोरक्षा करे।

हिन्दू मुस्लिम इत्तहाद और गऊ रक्षा

खाकसरों का मुसलमानों को आदेश

बम्बई के सुप्रसिद्ध और सुप्रतिष्ठित गोस्वामी श्री दीक्षितजी महाराज की सेवा में खाकसारों की प्रसिद्ध संस्था बाबुलमसावरत हिन्द-मुलतान के सादार नाजिम जनाब नूर मुहम्मद साहिब करबलाईने निम्नलिखित सरक्युलर भेजा है:-

"महात्मा गांधीने गोप-अष्टमी के दिन हिन्दू काम के नाम पैगाम देते हुये कहा है कि गऊ हत्या को रोकने के लिये मुसलमानों से लड़ना गऊ सेवक का धर्म नहीं है।

बाबुल मसावरत हिन्द-हिन्दू मुसलिम इत्तहाद (एक्य) को नजदीक तर (बहुत पास) लानेके लिये हिन्दोस्तानके पचीस लाख खाकसारों को हिदायत (आदेश) करता है कि वह तालीफ उल कुलूब (हृदय की शुद्धता) की हिक्मत (नीति) के पेश नजर (दृष्टिसे) अपनी हमसाया (पड़ोसी) बिरादर अकवाम (जाति बन्धुओं) के मजहब अहसास (धार्मिक दृष्टिकोण) की कैद्र करें और गऊकी कुरबानी को हिन्दू, मुसलिम इत्तहाद पर कुरबान कर दें। इसलामने अमन ए आलम (संसारकी शांति) के लिये बड़ीसे बड़ी कुरबानी की है और मुसलमानों की यह कुरबानी इनके लिये बहुत नतीजः खेज (फलदायक) साबित होगी।

हर खाकसारका फर्ज है कि वह अपने हल्के के मुसलिम अहबाब (बन्धुओं) को हिन्दू मुसलिम इत्तहादके इस बुनियादी नुक्ते (दृष्टिबिन्दु) पर तवज्जह (ध्यान) दिलायें और उन्हे गाय की कुरबानी को तर्क (त्याग) कर देने पर आमादः करें।

बाबुलमसावरत हिन्द—अन करीब (शीघ्र) गऊ रक्षाके उनवान (नाम) से एक रिसाला (पुस्तिका) शायः (प्रकाशित) कर रहा है जिसमें गऊ रक्षाके मुखतलिफ पहलुओं पर रोशनी डालकर साबित किया गया है कि गाय की हिफाजत और उसकी नसल की बका (स्थिति) की जिम्मेदारी हिन्दुओंके मुकाबलेमें मुसलमानोंके लिये ज्यादः मुफीद (लाभदायक) और अहम (महत्व पूर्ण) है।"

व्यथित

⁂

कुछ खोया खोया सा लगता, मन रो रो उठता बार बार।
निर्वाक् कसक कह जाती हैं—
मानों कुछ मुझ से भूल हुई,
मेरी ही मति मेरी होकर
हा! मुझ से ही प्रतिकूल हुई;
मैं जीकर भी क्या कर सकता, जब जीवन ही बन गया भार?
स्वप्नों की नगरी की रानी
खो बैठा मैं निर्धन महीप,
विस्मृति-निद्रा में रुक कर भी
बुझने से लगते प्राण-दीप;
मैं स्तब्ध शून्य में ताक रहा जैसे सीपी सम्पुट पसार।
'धू-धू' करती जल उठी चिता;
बुझ गया दीप, अध जला शलभ
अब चिरनिराश; हा पतित पुष्प!
उड़ चला मधुर जीवन-सौरभ।
कब शुष्क सुमन को खिला सका इन भ्रमरों का क्रन्दन अपार?
वह पीत वदन दिन बीत गया,
बीती भीगी भीगी रजनी,
आया अलसाया सा प्रभात
लेकर रोते शतदल, सजनी!
तम तोम मिटा, पर मिट न सका मेरा चिर सहचर अन्धकार।
नयनों का तारा टूट गया,
कब उसे प्राप्त कर सका गगन?
कब पुनः हरा या खड़ा हुआ
भूलुण्ठित तरुवर का मृततन?
क्या सदा के लिये डाल गया विधि मेरे उपवन पर तुषार?
खोजते किसी को बिखर बिखर
मेरे अन्तर के करुण गान,
होते अनन्त में वे विलीन,
देता है किस पर कौन ध्यान?
हा! निपट शून्य में टकराकर ही रह जाती मेरी पुकार।
कुछ खोया खोया सा लगता, मन रो रो उठता बार बार।

"हरि"

श्री. नाथद्वारा की गोशाला

उदयपुर के वकील मि० मुहम्मद अब्दुल सत्तारखां हकीमने निम्न वक्तव्य प्रकाशित कराया है:—

"श्रीनाथद्वारा की गोशाला की दुर्व्यवस्था के विषय में महीनों से समाचार प्रकाशित हो रहे हैं किन्तु मुझे दुःख है कि अब तक भी कुछ सुधार नहीं हुआ है। पूजनीया गोमाताके प्रति हिन्दू जाति की यह उदासीनता अत्यन्त ही खेदजनक है। यह प्रश्न मानवता का है, इस में हिन्दु-मुसलिम का भेद नहीं है। अतः मेरी नम्र प्रार्थना है कि सभी लोग इस प्रसिद्ध गोशाला की दशा सुधार कर पुण्यके भागी बनें।"

नाथद्वारा श्री वैष्णव सम्प्रदाय की एक प्रधान और प्रतिष्ठित पीठ है। सुना है कि वहां सहस्रों रुपये रोज तो श्री ठाकुरजीके भोगमें ही व्यय हो जाते हैं। वहां की ही गऊ शाला की यह दुर्दशा वैष्णवाचार्य और वैष्णव भक्तोंको स्वकर्तव्य पालनके लिये प्रेरित नहीं करती है?

हिन्दुत्व सभी धर्मों का मूल है

फांसी की सजा रद्द

मन्दिर प्रवेश घोषणा की संस्मरण-तिथि के अवसपर पर सर सी. पी. राम स्वामी अय्यार ने कहा "देशी और विदेशी महान विद्वानों को यह मान्य है कि संसार के सब धर्मों के मौलिक सिद्धान्तों का हिन्दु धर्म प्रतिनिधित्व करता है।" आपने यह भी कहा कि मन्दिर प्रवेश हमारी रियासत में सामाजिक सुधारों का चिन्ह है। अब हमने दूसरी घोषणा की है कि भविष्य में हमारे यहां किसी को फांसी की सजा नहीं दी जायगी। औंध राज्य के अतिरिक्त एशिया भर में कहीं इस प्रकार का विधान नहीं है।"

शिक्षा का महत्व

इन्दौर के टाऊन हॉल में प्रसिद्ध विद्वान श्री. आरुण्डल ने कहा—"समस्त संसार में शिक्षा आज क्रान्ति की-सी स्थिति में है और भारतको भी क्रान्तिकारी राष्ट्रोंके समान अपना उच्च स्थान ग्रहण करना चाहिये। भारतमें शिक्षा-प्रणाली कुछ बुनियादी सिद्धान्तोंपर होनी चाहिये। अब समय आ गया है कि संसार भरमें शिक्षा का वह प्रभाव होगा कि बारम्बार होने वाले युद्ध असम्भव हो जायेंगे। शिक्षा के वास्तविक गुण आठ हैं—चरित्र, बन्धुभावना, संस्कृति, देशभक्ति, सेवा-भावना, उचित आनंद, विश्राम और नेतृत्व की भावना। ये सभी सद्गुण मानवजीवनके महान गुण सत्यमें सन्निहित हैं। शिक्षा ही सत्य है और शिक्षाका प्रतिफल सत्य होना चाहिये।"

भरतपुरमें पशु रक्षा के उपाय

भरतपुर में राज्य ने ३ वर्ष से कम उम्रके गाय, बैल, बछड़े, पाड़का और ३ से १० वर्ष की दुधार भैंसों का वध बन्द कर दिया है। सोम और शुक्रको पशुवध और मांस बिक्री पर रोक लगा दी गई है।

म्हांरो मारवाड़ी देश

(लेखकः—**श्री महावीरप्रसाद साबू**, हिन्दू विश्वविद्यालय)

डाल्‌सिंह होनहार युवक था । चौधरी बोदा सिंह का एकलौता लड़का होने के साथ साथ वह गाँव का भी प्रिय पात्र था। सब उसको सम्मान की दृष्टि से देखते थे। बोदासिंह गाँव के सरपंच होने के अलावा दो गाँवों के स्वामी थे। घर में भगवान का दिया लिय। सब कुछ था। इसी कारण चौधरी ने डाल्‌सिंह को नगर में नौकरी के लिये नहीं भेजा। अब की कार्तिक में उसे इक्कीसवा लग जायगा। डाल्‌ शांत और हंसमुख था। व्यर्थ बक झक से उसे नफरत थी।

एक दिन श्यामको डाल्‌ अपने खेतमें मचान पर बैठा था। मन्द मन्द वायु जो बाजरे के सिट्टों को इधर उधर हिला रही थी, उसे भली लग रही थी। भगवान भास्कर दूर पेड़ों की ओट में छिप गये। परिन्दे दाने पानीसे निपट कर अपने घरोंको लौट रहे थे। डाल्‌ तनमय होकर छुपते हुये सूर्य की लालिमा को देखकर अपने आप बोला, चलना चाहिये, सांझ होगई। अचानक सर सर की आवाज ने उसे चौंका दिया। वह लपका हुआ गया और बोला 'कौन है ?' वह मतीरों के चोर को देख कर दंग रह गया। अरे, यह तो वही तुलसिया—चौधरी लादूसिंहकी लड़की ! तुलसिया ओढ़नी के छोर में काचरे बांधे भूमि में नेत्र गड़ाये खड़ी थी। डाल्‌ बोला 'तो तुलसिया तुंहीं हो काचरों की चोर, आखिर पकड़ी गई न' और वह ठहाका लगा कर हँस पड़ा। वह सकुचा गई थी बोली 'डाल्‌ यों ही दोचार काचरे तोड़ लिये, मन में आगई थी' डाल्‌ बोला 'तो क्या होगया, तेरे दो चार काचरे तोड़ने से खेत थोड़े ही खाली हो गया, पर तू चोरी चोरी क्यों तोड़ रही थी, पास चली आती' वह कुछ न बोली, पर मन में कहा डाल्‌ के शब्दों में कितना अपनापन और ममत्व है, और एक शिव टहल निपट गंवार। डाल्‌ फिर बोला 'खैर कांचरों के बहाने तेरी सूरत तो दिखलाई पड़ी।' अब तक अन्धकार फैल गया था। बालू के टिबड़ों को स्पर्श करती हवा ने उन्हें सिहरा दिया।

इस घटना के बाद वे एक दूसरे की ओर खिंचे चले आये। तुलसिया खेत में आती और डाल्‌ उसे भरपेट मतीरा और काचरा खिलाता। इधर उधर की बातें होतीं। परिचय से मित्रता हुई और मित्रता से वे प्रेम सूत्र में बंध गये।

तुलसिया ने अभी अपने जीवन में १४ बसन्त ही देखे थे। वह अनमनी सी रहती। एक दिन जब दुर्गी के सामने उसने डाल्‌ की अधिक बड़ाई की थी तो वह उसके द्वारा ओड़े हाथों ली गई। दुर्गी ने कहा 'देखती हूँ रानी साहब कुछ प्रेम का सा अभिनय करने लगी हैं, और डाल्‌ को नायक बनाया चाहती हैं, इस पर वह लाल हो गई थी। क्रोध से नहीं शर्म से। उस दिन वह डाल्‌ के बारे में सोचती रही।

उस दिन जब डाल्‌ जोड़ी (छोटे ताल्ब) पर बैठा था तो वह बापू के लिये पानी लेने गई थी। डाल्‌ ने उसका हाथ पकड़ कर बैठाने की कोशिश की तो वह बोली 'डाल्‌ कोई देख लेगा, हटो, मुझे जाने दो।' पर डाल्‌ न माना। उसने उसे बैठा ही लिया। पर तुलसिया चकमा देकर भाग आई थी। रातभर वह इस भूल पर पछताती रही।

अगले दिन गाँव में कुछ ओर ही वातावरण था, लोग भयभीत और गंभीर थे। नगर—राजधानी—से डोंडी पीटनेवाला सवार आया था। वह गाँवमें घूमा और उसने राजाज्ञा की घोषणा की 'युवक और प्रौढ़ फौजमें भर्ती हों, राजधानी पर शत्रु आक्रमण की आशंका है, सावधान २'। गाँव स्तब्ध हो गया। माँतायें अपने जवान बेटोंका मुखड़ा निहारने लगीं। पत्नी पतिका और प्रेमिका प्रेमीका, पर किसीने अपने जीवनाधारको देश की आजादीसे अधिक महत्व न दिया। राजस्थानी, आजादी और राष्ट्र को अपने प्राण से अधिक महत्त्व देते रहे, इसी त्याग और बल पर आज राजस्थानी संस्कृति असाधारण और वीरत्वपूर्ण कहाने का अधिकार रखती है। आजादी क लिये राजस्थान में इतनी लड़ाईयाँ लड़ी गई कि इसकी हर एक इंच भूमि 'वाटरलू का मैदान है।

गाँव में भर्ती होने लगी। पहला नाम था डाल्‌ सिंहका। चौधरी बोदासिंह ने देश के आगे एक मात्र पुत्र का कुछ मूल्य न जाना। बूढ़े ने ममता मोह छोड़कर पुत्र को युद्ध में जाने की आज्ञा दे दी। उसने मन में कहा कि अगर देश आजाद रहा तो सैंकड़ों डाल्‌ सिंह पैदा हो जायगें। धन्य है बोदासिंह के विचारों को। अनपढ़ होकर भी पढ़े लिखों से ज्यादा आजादी का महत्व समझता है।

अगले दिन यह वीर युवक राजधानी रवाना होने वाले थे। देश के आगे इन्हें धन, माया, पुत्रादि सूर्य के आगे दीपक स लगते थे। रात में डाल्‌सिंह चुपके से तुलसिया से मिलने गया। वह जोड़ी पर उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह बोली "जा रहे हो डाल्‌" "हाँ, जा तो रहा हूँ पर तेरी याद आते ही न जाने क्यों मन नहीं करता—नहीं, मैं नहीं जाउंगा" तुलसियाने गंभीरतासे कहा "डाल्‌ राष्ट्र में जब युद्ध हो रहा हो तो ऐसी वासना पूर्ण बात करना राष्ट्र के साथ गद्दारी करने के समान है। तुम वीर होकर ऐसा कह कर राष्ट्र माता का अपमान करते हो। छोड़ो इस विचार को। जाओ ईश्वर तुम्हें सकुशल आजाद राजस्थान में लौटा लावें।" इस ललना ने हृदय कड़ा कर के अपने प्रेमी को अपने व्यक्तिगत सुख पर लात मारकर युद्धके लिये और भी भड़का दिया। धन्य ऐसी नारियों को जो आजादी और राष्ट्रीयता को व्यक्तिगत—एकमात्र—सुख से अधिक समझ सकती हैं। राष्ट्र के आगे प्रेमीको तुलसिया ने तृणमात्र भी न समझा ! उसने डाल्‌ को मंगल गान करके विदा किया।

आगले दिन सैनिक वेष में युवक जा रहे थे। वे यह गीत बड़े मनन और गर्वसे उच्चारित कर रहे थे। "म्हांरो मारवाड़ी देश, म्हां प्यारो लाग जी"

युद्धमें डाल्‌सिंह असाधारण वीरता से लड़ा। उसकी वीरता से प्रसन्न होकर महाराजा ने उसे पांच गांव इनाम में दिये।

एक दिन डाल्‌ के गांववालों ने सुना कि शत्रू हार गया और युवक शीघ ही आरहे हैं। डाल्‌ की वीरता की बाबत तुलसिया ने भी सुना। युवक सैनिक एक दिन 'म्हांरो मारवाड़ी देश म्हां प्यारो लाग जी' को गाते हुये गावमें प्रवेश करने लगे।

बोदासिह पुत्र की वीरता से आति प्रसन्न हुआ। इसलिये उसने तुललियासे विवाह करने की आज्ञा डाल्‌को दे दी। उनका विवाह होगया।

खेतमें डाल्‌ और तुलसिया गारहे हैं 'म्हांरो मारवाड़ी देश, म्हां प्यारो लाग जी।'

चाहे जीत हो या हार !

✱

श्रृंखलाओं से भले ही बद्ध तन मेरा,
किन्तु ज्योतित आज है मस्तिष्क मन मेरा,
मुक्त है जब तक गिरा गाता रहूँगा गीत,
अन्त तक मेरे हृदय में मानवों से प्रीत,

गा सकूँ चाहे न जी भर, कम न विष से प्यार !
दो न हे, देवत्व या पीयूष-घट का भार !
चाहे जीत हो या हार !

सामने उस अगम गिरी पर देविका मंदिर,
मैं मनुजता का पुजारी चढ़ रहा उठ-गिर,
आशा का दीपक करों में, श्वास का संबल,
भावनाओं से भरा उर, बढ़ रहा प्रतिपल,

फिर पहुँच पाऊँ कि ठोकर मृत्यु का उपहार !
पर न कायर की तरह हो मृत्यु अगणित बार !
चाहे जीत हो या हार !

अग्निपथ यह, लौह पथ काँपे न मेरा दिल,
है न चिन्ता, पास में या दूर है मंजिल,
ज़िन्दगी के कुलक्षणों में लक्ष निज साधूँ,
स्नेह के शुचि सूत्र में संसार को बाँधू,

पा सकूँ फिर पार, डूबूँ या कि मैं मझधार !
व्यर्थ के वत्सर न हो हे अर्थ के क्षण चार !
चाहे जीत हो या हार !

रमेशचन्द्र माहेश्वरी 'प्रदीप'

इंदौरा में अनाज और मंहगा—

इंदौर राज्य ने १ नवम्बर से राज्य मे अनाज के भाव और ऊंचे कर दिए हैं ! जब कि इंदौर में अनाज पहिले ही काफी मंहगा है और जनता मंहगाई से पीड़ित है। इंदौर प्रजामंडल ने इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव पास करके राज्य की इस नीति का कड़ा विरोध किया है। यहां लगभग सभी अनाज प्रायः दूकानों से गायब रहते हैं और यदि मिलते हैं तो सड़े, घुने और अखाद्य होते हैं।

[पृष्ठ ४ का शेष]

जोर के साथ जारी रखा जायगा, जिससे कि सारे देश में एक सम्बन्ध और समान रूपसे विस्तृत सड़क संगठन स्थापित किया जा सके।

युद्धोत्तर जहाजी नीतिका उद्देश्य यह होना चाहिये कि संसार के विभिन्न भागोंमें माल पहुंचाने के व्यापार में भारत को उचित हिस्सा प्राप्त हो। इसके लिये इस प्रकार के प्रयत्न करने चाहिये कि भारतीय जहाजों को तटवर्ती व्यापार में अधिक भाग प्राप्त हो, समीप के क्षेत्रों के व्यापार में काफी हिस्सा मिले, पूर्वी व्यापार में उचित हिस्सा प्राप्त हो तथा भारत और ब्रिटेन, यूरोप, उत्तरी अमेरिका के साथ होने वाले व्यापार में भी उचित भाग मिले।

(दैनिक "विश्वामित्र")

साड़ी पहिने नारी का सौन्दर्य

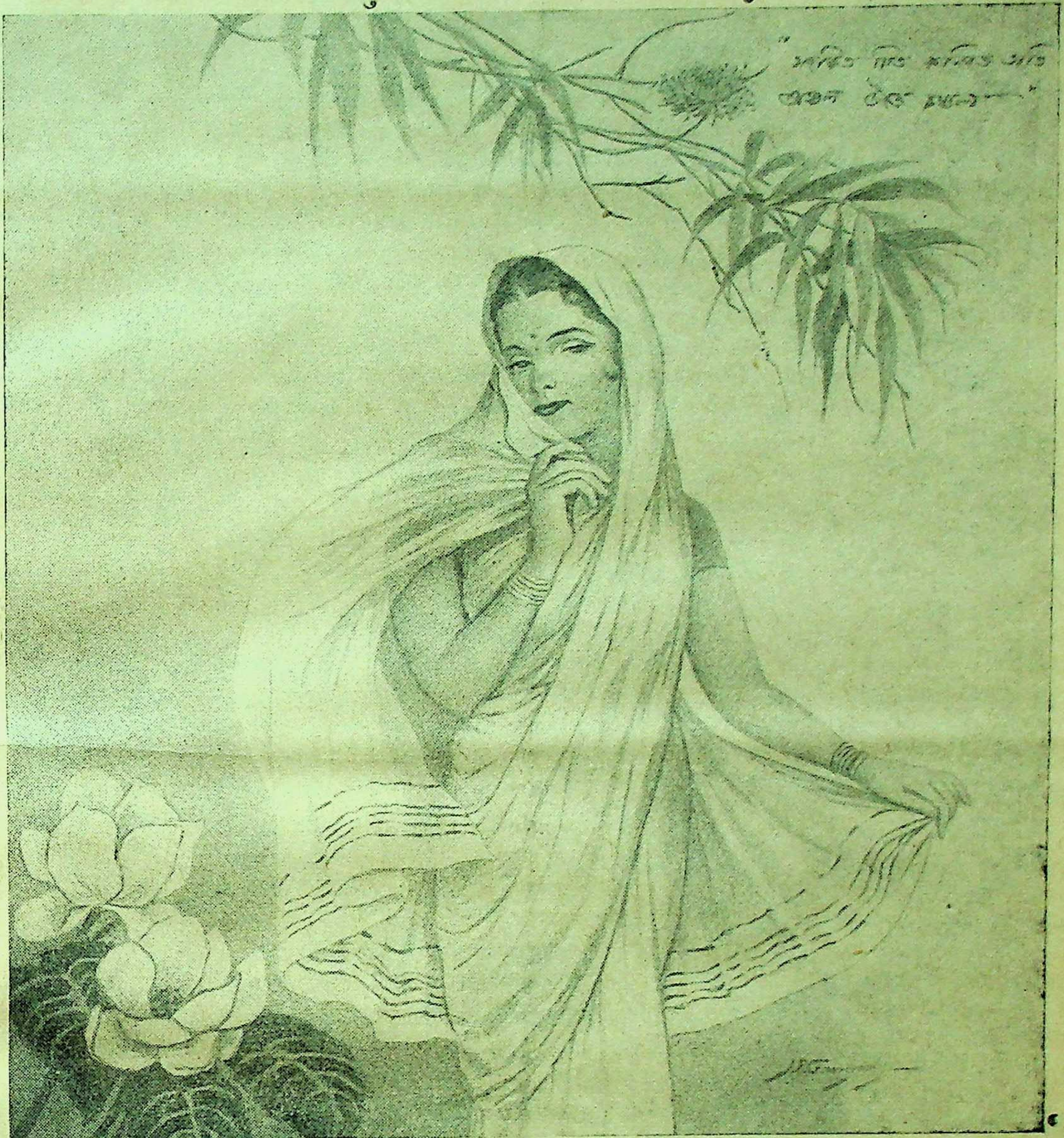

—श्री जे. पी. गांगुली।

'साड़ी पहिने नारी'का यह निरूपण सुप्रसिद्ध कलाकार श्री. जे. पी गांगुलीने किया है।

सपरिषद वायसरायने १९४१ में आपके गुणों पर मुग्ध होकर आपको सर्टीफिकेट प्रदान किया था।

आप प्रथम भारतीय हैं जिन्हें दि आर्डर आफ "कवेलियर" टू दि क्राउन आफ इटली प्राप्त हुआ है। न्यूयार्क कला प्रदर्शनी की ओरसे, जिसमें ७९ देशोंकी कलाओंका प्रदर्शन किया गया था, आपको एक पदक प्रदान किया गया था।

जो व्यक्ति पोशाक की अपनी अभिरुचिके लिए प्रसिद्ध हैं, वे सर्वदा वही कपड़ा पसंद करते हैं, जो सुन्दर जंचता है।

घटिया सूत पहली नजरमें अच्छा दीख पड़ सकता है, किन्तु केवल बढ़िया सूतसे बना हुआ वस्त्र ही चलते हुए व्यक्तिके शरीर पर शोभायमान हो सकता है।

हमारी मिलकी साड़ियां, धोतियां, और कमीजोंका कपड़ा बनाते समय विभिन्न प्रकार के सूत पर सावधानीके साथ विचार किया जाता है। केशोरामके कपड़ोंकी बुनाई बारीक और डिजाइन मौलिक होते हैं।

❀ केशोराम ❀

श्रेष्ठ सूती वस्त्र

हिन्दी भाषासे ही भारतीय संस्कृतिकी रक्षा

भारतवासी प्रेयका नहीं श्रेयका वरण करें

कुमार सम्मेलनमें पं० सोहनलालजी द्विवेदी का अभिभाषण

दिल्ली, (डाकसे) हिन्दी-कुमार साहित्य सम्मेलन के प्रथम अधिवेशन में जो दिल्लीमें गत २८ व २९ अक्तूबरको हुआ सभापति पदसे राष्ट्र कवि सोहनलालजी द्विवेदीने जो समयोचित अभिभाषण दिया, उसका सारांश नीचे दिया जा रहा है:—

आज हिमाचल अधिक उन्नत होकर हमारी ओर देख रहा है और नीलसिंधु अपनी लहरोंसे मंगल गान गा रहा है, क्योंकि भारतवर्षके कुमार प्रथमबार राष्ट्रभाषा हिन्दीके स्वर्णछत्रके नीचे एकत्रित होकर अपने संगठनमें संलग्न हैं। आज उन्हें अपने पूर्व गौरव पर गर्व हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है? उन्होंने भारत-जननीके आंगनमें जन्म ग्रहण किया है, गंगा-यमुनाने उन्हें स्नान कराया है, गींता और महाभारतने उन्हें अभ्युदय और निःश्रेयसका ज्ञान सिखाया है। इन्द्रप्रस्थमें ही उनके पूर्वजोंने राज्य किया है। व्यास, भास, कालिदास, वेद, उपनिषद उनके साहित्य ग्रंथ हैं और उनकी शिक्षाओं में वह रक्त आज भी प्रवाहित हो रहा है, जिसके बल पर उनके पूर्वजोंने जीवनके सभी क्षेत्रोंमें कीर्तिस्तंभ खड़ा कर दिया था।

यहींसे बहती हुई यमुनासे पूंछो तो वह हमें हमारा गौरवपूर्ण राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक इतिहास बता देगी।

और तो बात दूरकी है—यह तो सभी लोग जानते हैं कि जिस प्रतापी पुरुषके नामपर अपने इस महादेशका नामकरण किया गया है, वह और कोई नहीं था--आप ही लोगोंकी अवस्थाका एक कुमार भरत था, जिसके तेजस्वी शास्त्र एवं शस्त्रकलाको देखकर उसके पिता भी हतप्रभ एवं मुग्ध रह गये थे। यहीं एकलव्यने जन्म ग्रहण किया था। यहीं कचने देवयानीके प्रेमको तिरस्कृत करके अपने कर्त्तव्यका पालन किया था। यहीं अभिमन्युने चक्रव्यूहका भेदन किया था, यहीं प्रह्लादने सत्यका साक्षात्कार किया था। ये सभी दृश्य एक ही बात का संकेत करते हैं कि सचमुच ही भारतवर्ष तो कुमारोंके शौर्य-विक्रम दिखानेका क्रीडांगण है। कृष्णने अपने कौमार्य जीवनमें जितने महान् कार्य कर दिखाये, उसकी उपमा किस देशमें मिलेगी?

आज हमें प्रसन्न होना चाहिये कि हम अपने गौरवपूर्ण इतिहाससे शक्ति ग्रहण कर पुनः उन्हींके पथपर चलनेको एकत्रित हुए हैं।

आप लोगोंके सामने मैं 'कुणाल' का जीवन चरित्र रखता हूं। ढूंढ़िये कहीं ऐसा आदर्श दूसरे देशोंमें है!

किन्तु—आज हम, हम न रहे--क्यों?

इसका रहस्य राजनैतिक-दासता उतनी नहीं, जितनी कि दूसरे की भाषाकी दासता है। हिन्दी-कुमार-साहित्य-सम्मेलनमें एक ही बात कहनेके लिये अन्य अत्यन्त आवश्यक कार्यों को छोड़कर आया हूं और वह यह है—जबतक आप अपनी भाषाको अपनाये रहेंगे, आप को कोई पराधीन नहीं बनाये रख सकेगा। आईरिश नाटककार बर्नार्डशाने अभी अपने देशवासियोंसे क्या कहा है उसे आपने न सुना हो तो सुन लीजिये:—

'जबतक आयरिश अंग्रेजी भाषा, विजेता की भाषा बोलते रहेंगे, वे गुलाम बने रहेंगे। जिस दिन सभी आयरिश आयरिष भाषा का प्रयोग करने लगेंगे, उन्हें कोई गुलाम नहीं रख सकता।'

यही बात मैं आपसे कहता हूं कि जबतक आप अंग्रजी भाषा बोलते रहेंगे, तबतक आप गुलाम बने रहेंगे। जिस दिन आप सभी हिन्दी भाषाको अपना लेंगे, आपको कोई आधीन न रख सकेगा!

आपमेंसे कदाचित् बहुतोंको नहीं मालूम है कि यह गुलामी किसने फैलायी? ईस्ट इण्डिया कम्पनीके सैदागरोंने उतनी नहीं क्योंकि उन्होंने तो केवल हमारा धन अपहरण किया, बल्कि लार्ड मेकालेने जिसने कहा था, 'किसी जाति या देशके आचार विचार, चरित्र तथा संस्कृतिको नष्ट करना हो तो–उसकी भाषा बदल दो,' और ये लोग अपने षड़यन्त्रमें सफल हुए। हमने अपनी भाषा क्या खोई, अपना विचार खोया, अपना आचार खोया, हम भारतवर्षमें भी रहकर, भारतवर्षके न रहे।

अंग्रेजी पढ़कर हम अपनी संस्कृति से, रहन सहनसे घृणा करने लगे। अपने माता पिता तथा गुरुजनों को मूर्ख समझने लगे और घरमें ही अंग्रेजी बोलने लगे, पत्रव्यवहार अंग्रेजीमें करनेमें हम गौरव समझने लगे। बाह्य परिवर्तन ही हमने नहीं किया हमने अभ्यन्तर भी बदल डाला! केवल एक भूलसे—ओर वह क्या--हमने अंग्रेजीको मातृ-भाषा बनाया। हमने अपनी मातृ-भाषा छोड़ दी।

मैं आपसे पूछता हूं कि संसारमें अनेक माताएं हैं, किन्तु क्या अपनी माता के समान दूसरी माता भी हो सकती है? यदि नहीं तो, मानना होगा कि हिन्दी माता की गोदी संसार की कोई दूसरी भाषा भर ही नहीं सकती।

हमें आज उसी भूल का यह संशोधन करना है। हमें हिन्दी भाषा के माध्यम द्वारा अपने को समझना है। जिस दिन हमें आत्मबोध हो जायेगा, न हम निर्बल रहेंगे न अशक्त। फिर हमें कोई भी देश पराधीन न रख सकेगा? यह शक्ति यदि कहीं से प्राप्त होगी, तो मैं फिर आपसे कहता हूं, कि वह हिन्दी भाषा द्वारा ही प्राप्त होगी और कहीं से नहीं।

आज हमें लार्ड मैकाले की बात का मुंहतोड़ जवाब देना है कि अब हम अपनी भाषा को नहीं बदलेंगे, अपनी संस्कृति नष्ट नहीं होने देंगे।

सच तो यह है, कि साहित्य जीवनकी अभिव्यक्ति है और जबतक आप खुद अंग्रेज नहीं हों, आप अंग्रेजी साहित्यको जन्म दे ही नहीं सकते।

संसारके सभी साहित्यकारोंने अपनी भाषामें ही उच्चकोटिका साहित्य सृजन किया है। यदि आपको साहित्यकार बननेकी इच्छा है तो अपनी भाषामें अपनी बात कहिये। यह सम्मेलन यदि हिन्दी के माध्यम द्वारा आपसमें संगठन स्थापित करनेंमें सफल हो, तो मैं सबसे बड़ी सफलता मानूंगा, हमारे उत्कर्षका मूल इसीमें है, और कहीं नहीं।

आप यदि जानना चाहें कि हम क्या पढ़ें तो मैं कहूंगा पहले आप अपना साहित्य पढ़ें फिर दूसरोंका, पहले आप हिन्दी भाषा पढ़ें फिर दूसरी भाषाएं।

धन्य हैं वे माताएं–बहनें जो हिन्दी को अपने हृदयमें स्थान दिये हैं।

भारतमें जो संस्कृति शेष है मैं कहता हूं—वह इन्हीं माताओं बहनोंके कारण है, अन्यथा हमारे साहब बहादुर तो उसे कबसे बूट जूतसे ठुकरा चुके हैं।

हमें ऐसे साहित्यका ही अध्यन करना चाहिये, जिससे हमारे नैतिक चरित्र पर अच्छा प्रभाव पड़े। हमें उन उपन्यास कहानियों एवं काव्योंका बहिष्कार करना चाहिए, जिनसे हमारी दुर्लभ भावनाओं को उभार मिले।

साहित्यका जीवनमें ऊंचा स्थान है। क्यों कि किसी भी देशका उत्कर्ष उसके भौतिक वैभवसे नहीं हुआ करता, वह उसके साहित्यिक वैभव से भरा हुआ करता है।

यहांपर आजसे तीन सौ वर्ष पूर्व सम्राट अकबर ने अपना साम्राज्य स्थापित किया था, बड़े बड़े वैभव की अट्टालिकाएं खड़ी थीं। लेकिन वे आज ध्वस्त होकर गिर पड़ी हैं। उसी समय एक साहित्यकार भी जन्मा था। उसका नाम तुलसीदास था। आज अकबरका साम्राज्य कहीं नहीं है--किन्तु, तुलसीदासका साम्राज्य भारत के कोटि कोटि हृदयोंमें ही नहीं स्थापित है, बल्कि विदेशियोंके हृदयमें भी अखंडित है।

मैं जोर देकर कहना चाहता हूं कि अन्तर्राष्ट्रीय एकताके स्थापनमें कोई शक्ति काम कर सकती है, तो वह साहित्य की है, जो राजनैतिक दांव पेंचों के ऊपर, देशकालके ऊपर, उठा रहता है। अंतमें मैं आपके सामने एक छोटासा श्लोक कह कर अपना वक्तव्य समाप्त करूंगा जिसे हमें सभीको सदैव स्मरण रखना चाहिए:—

श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यमेस्ततौ
संपरीत्य विविनक्ति धीरः
श्रेयोहि धीरोहि प्रियसो वृणीते
मन्द योगक्षेमाद् वृणीते॥

इसका अर्थ है कि मन्द मनुष्य प्रेयकी ओर दौड़ता है, बुद्धिमान श्रेयकी ओर। आप लोग जीवनमें श्रेयका वरण करें यही मेरी सदिच्छा है।

भीलों पर अत्याचार

(संवाददाता द्वारा)

मध्यभारतकी रियासतों में झाबुआ राज्य पिछले ४० वर्षों में जनता और विशेषतः भील जनता पर अत्याचार करनें में ख्याति प्राप्तकर चुका है। भीलोंके अत्याचारोंके कारण झाबुआके पिछले शासक उदयसिंहजी को सन् १९३४ में सार्वभोम सत्ताने पदभ्रष्ट किया और निर्वासन की स्थितिमें पिछले वर्ष वे इन्दौर में मर गये उनकी मृत्युके दो महीने बाद सार्वभोम सत्ताने उनके भतीजे खवासाके ठाकुर दिलीपसिंह को राजा बना दिया। तब से भील प्रजा पर फिर मनमाने जुल्म होने लगे। वे जुल्म अब अपनी सीमाको पार करने जा रहे हैं।

भील जनताके जीवन और सम्पत्ति की सुरक्षा नहीं है। स्त्रियों की इज्जत भी अरक्षित हो रही है। ऐसे अत्याचारों के विषय में साफ साफ आक्षेप करते हुए अनेकों शिकायतें और तार झाबुआके नये राजाको दिये गये हैं। यही नहीं बामनिया के राजस्थानी भील सेवक संघके प्रमुख ने इन अत्याचारों को दूर करनेकी राजासे प्रार्थना की किन्तु अपने काका की भांति वर्तमान राजा भतीजे ने भी आंख कान बन्द कर भीलों पर जुल्म करने वालों को पूरी छूट दे रक्खी है। राजाका भाई पुलिसका सर्वेसर्वा बना हुआ है, उसके नेतृत्व में पुलिस के नौकर और पटवारी मनमाने जुल्म कर रहे हैं।

झाबुआ की भांति मध्यभारत के अन्य देशी राज्योंमें भी भीलों की बहुत अधिक बस्ती है। इस विस्तार में विदेशी ईसाई पादरियों ने अपना पड़ाव डाल रक्खा है और लाखों भीलों को ईसाई बना चुके हैं। इस परिस्थिति का अन्त करने के लिए भीलों का संगठन कर, इस विधर्मी आन्दोलन का अन्त कर भीलोंको अपने ही धर्म (हिन्दूधर्म) में रखकर उनके सुधारके लिए यत्न करने के लिए थोड़े महीने पूर्व क्षत्रि धर्म दीक्षा सम्मेलन बामनियामें हुआ था और भीलोंको जनेऊ दिये गये गये थे। सम्मेलनमें भीलोंको अपराधी (जरायम पेशा) जाति न गिनकर उनसे बेगार न लेने, उन्हें क्षत्रिय मानने आदिके प्रस्ताव और मांगें की गई थीं।

इस सम्मेलनके बाद भीलों पर और भी अधिक अत्याचार होने लगे हैं। और जो भील ईसाई बन चुके हैं उनपर ये अत्याचार बिलकुल नहीं हो रहे हैं। अपनेको भील कहनेवाले किसानों पर ही झाबुआ, रतलाम, करालगढ़, सैलाना, इन्दौर, जोबट, सीतामऊ, प्रतापगढ़ आदि रियासतोंमें अत्याचार हो रहा है। इन अत्याचारोंसे तंग आकर भील ईसाई बनते जा रहे हैं। एक प्रकारसे रियासतें भीलों पर जुल्म करके उन्हें ईसाई बननेको मजबूर कर रही हैं।

इन रियासतों में सब स्थानों पर भीलों के स्त्री पुरुषों और बालकों को पशुओंकी भांति खेत के कामसे छुड़ाकर जबरन बेगार में खींचकर ले जाया जाता है। बेचारे खेती भी ठीक नहीं कर सकते। फसलोंकी कुछ खराबी और रियासती अत्याचारों के कारण इस वर्ष नाज बराबर नहीं पका है और अभी से भयंकर अन्न संकट भी मध्यभारतके इस विस्तार में फैल रहा है।

कमज़ोर, और कच्चे कागज़ों के पेकिंग से होनेवाली

अपने व्यवसायकी हानिको बचाइये

हमारा मज़बूत, चीमड़ और सुन्दर

गैंडा मार्का

बैम्बू पल्प का बना हुआ क्राफ्ट पेपर

आपकी मुसीबतों को दूर कर देगा

यह उच्चकोटि का
पेकिंग कागज़
है

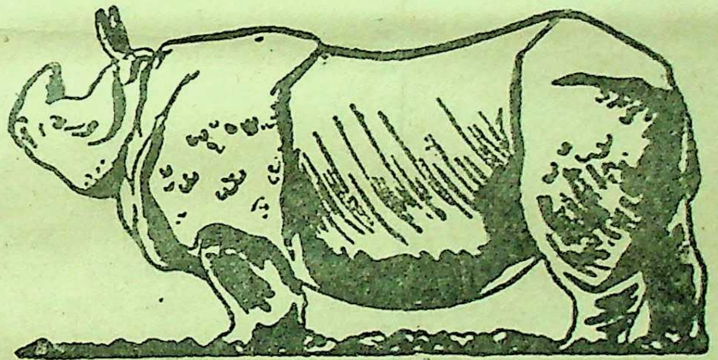

भारतीय बाजारमें
आज इसका
प्रतिस्पर्धी नहीं

हमारी मिल वाटरप्रूफ कागज (Water Proof Craft Paper) तथा हरेक किस्मका बोर्ड भी तैयार करती है ।

एक बार इस कागज़ और बोर्ड का व्यवहार करनेपर
आप दूसरे पेकिंग कागज़ और बोर्ड का नाम न लेंगे

ओरिएण्ट पेपर मिल्स लिमिटेड

८, रायल एक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता

हमारी समस्याएं और उनका हल

★

(लेखिका—**सौ० विमला सोनी**, 'कोविद')

हम लोगों में रुढ़ि से चली आरही प्राचीन प्रथाओं को श्रेय देना कुछ महत्त्व रखता है। पर कोई भी चीज प्राचीन है, इस लिए वह अच्छीही है यह धारणा गलत है। अस्पृश्यता कितनी प्राचीन है पर वह त्याज्य है। उससे हमारा पतन हो रहा है यह हम जानते हैं। इसी प्रकार परदा प्राचीन है, जब हमें यह हानि पहुंचाता है तो त्याज्य क्यों नहीं ?

परदा कोई बाहरी वस्तु नहीं है–यह आन्तरिक है। दिखावटी परदा करनेवाली कई बहनें निर्लज्य भी होती हैं। परन्तु जो बाहरी परदा नहीं करतीं पर आन्तरिक लज्जा जिसने नहीं छोड़ी वही श्रेष्ठ समझी जाती हैं।

पवित्रता बन्द घरोंमें नहीं पनपती। यदि हमने उसे परदे की चार दिवारीमें बन्द कर रखा है तो यह दावा करना भी व्यर्थ है कि हम उसका पालन कर रहे हैं।

परदे से होनेवाली हानियोंको देखिये—

(१) परदा स्त्रियों की शिक्षामें बाधा डालता है। (२) स्त्रियोंमें भीरुता बढ़ाता है। (३) स्त्रियों और पुरुषों के बीच स्वच्छ सम्बन्ध रोकता है। (४) स्त्रियोंका स्वास्थ बिगड़ता है। (५) उन्हें बाहरी दुनियासे दूर रखता है, और ऐसे वह अनुभव शून्य होती हैं।

इन सब हानियोंको देखते हुए हम समाज सेवकोंका कर्तव्य है कि ऐसी प्रथाको अपने समाजसे दूर करनेका जोरदार आन्दोलन करें। परन्तु हम उसीका अन्ध अनुकरण करते हुये चले जा रहे हैं। यदि हमें समाज–सुधार करना है तो रुढ़िका त्याग करनेमें नहीं डरना चाहिए।

परिवर्तन, ही प्रगतिका चिन्ह है जड़ता नहीं। ऐसे ही आभूषणों की भी समस्या है। हमारे समाजमें स्त्रियोंको आभूषणोंसे इस प्रकार लाद दिया जाता है कि गहना-कपड़ा पहननेके बाद उनको कोई भी काम करनेमें असुविधा होती है। पू० महात्माजीने तो इन गहनोंके विषयमें लिखा है "मैं इन्हें आभूषण नहीं दासता और गुलामी की बेड़ियें समझता हूं।" और वास्तवमें हमारे समाज का कोई कोई आभूषण तो बेड़ीसे भी बढ़कर है।

स्त्रीका सचा आभूषण है उसका चरित्र, उसकी पवित्रता। सीता और सावित्री के नाम हमारे लिये क्यों इतने पवित्र होगये हैं ? उनके आभूषणों के कारण नहीं। उनकी पवित्रता और सदगुणों के कारण ही आज हम श्रद्धा-भक्ति से उनकी याद करते हैं। क्यों न हमारी बहनें भी उनके सदगुणों का अनुकरण करें ?

इसी प्रकार बाल तथा वृद्ध विवाह को लीजिये। इसका दोष केवल हम अपने समाज कोही नहीं दे सकते। यह प्रथा सारे हिन्दू–समाज में प्रचलित है। और उसीका यह प्रतिफल है कि आज हजारों बाल-विधवाएँ आंसू बहाती नजर आती हैं। समाज क्या गतिहीन नहीं है जो इस प्रथासे विमुक्त नहीं हो सका ?

बापूजी ने तो कहा है "जो पिता अपनी छोटी लड़की का विवाह करना चाहता है या उसे बेचना चाहता है तो उस हालत में घरके सब लड़के लड़कियों को या उनमें से किसी एक को, जिसमें शक्ति हो, पिताके घर का त्याग कर देना चाहिए और उससे किसी प्रकार की सहायता नहीं लेनी चाहिए। ऐसा करने से पिता के हृदय पर कुछ असर अवश्य पड़ेगा और यदि न भी पड़ा तो वे जिन्होंने कि घर का त्याग किया है इस पाप से बचेंगे।"

अब विधवा विवाह। विधवा विवाह के नामसे तो हमारा समाज काँप सा जाता है। यह क्यों ?

बल पूर्वक पालन कराया हुआ वैधव्य पाप है, स्वेच्छासे पालित वैधव्य धर्म है, आत्मा की शुद्धि है और समाज की पवित्रता की ढाल है।

हम देखते हैं कि समाज में विधवाओं की बुरी दशा है, कुटुम्ब में उन से कितना कड़ा व्यवहार किया जाता है। यह बलात्कार स्त्रियों ही के साथ क्यों किया जाता है ? वृद्धावस्था में भी एक दुध–मुंही बालिका से जो वृद्ध की पोती क समान है विवाह करना क्षम्य क्यों ?

एक और प्रश्न हम यह भी करेंगे कि जो विधुर हैं उन्हें कुमारीका पाणिग्रहण स्वीकार करनेका क्या अधिकार हो सकता है ? वे एक वार कुमारीका का पाणिग्रहण कर चुके हैं। अब यदि दुर्भाग्य से उन्हें पुनः अपने जीवन संगनि की खोज करना पड़े तो उन्हें चाहिए कि वे विधवाओं को ही चुनें। यह प्रश्न जब समाज में हल होगा तभी विधवाओं की यह समस्या हल होसकती है।

हमें जितनी भी ये 'समस्याएं' समाज में मिलती हैं प्रायः सभी स्त्रियों से सम्बधित हैं और वे उसी प्रकार उलझी हुई हैं।

केवल पुरुषवर्ग पर अवलबित रहकर नारी का उन्नत होना कठिन है। उसे कुछ अपने आप भी करना होगा। क्या ही अच्छा हो कि हमारी बहनें साहसी हों और अपने साहस तथा बल से इन सब प्रथाओं को समाज से बाहर निकाल फेंकें। उन्हींकी उन्नति में समाज की उन्नति है। इति।

विवाह–समस्या

समाज सुधारक ही नहीं अपितु राजनैतिक कार्यकर्ताओं का भी यह कहना है कि बालक और बालिकाऐं राष्ट्र की निधि हैं। इन्हें भली प्रकार शिक्षित करना चाहिए। इन्हें अपने कर्तव्य एवं धर्म का ज्ञान हो और ये अपनी उन्नति के साथ ही साथ समाज और देश का भी सुधार कर सकें। अशिक्षित बालक बालिकाओं में ज्ञान विज्ञान का अभाव रहता है जिससे वे अपने उत्तरदायित्व को नहीं जान सकते हैं। फलतः वे देश और समाज के लिये जरा भी काम के नहीं रहते। यह निःसन्देह सत्य है। किन्तु भारतवर्ष में जहाँ जातियों एवं उपजातियों का जाल इस प्रकार गुंथा हुआ है कि उसमें फंसे हुए लोगों का निकलना दुःसाध्य है वहां इसका पूरा पड़ना अंसभव नहीं तो कठिनतर अवश्यही प्रतीत हो रहा है।

हम अपने माहेश्वरी समाज को की ले लें। बालिकाओं को शिक्षित करने तथा उनका विवाह अधिक आयुमें करने का विचार हर समझदार व्यक्ति के हृदय में उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। परन्तु सुशिक्षित एवं अधिक आयुवाली कन्याओं के विवाह की समस्या दिन पर दिन गहन होती चली जाती है। ऐसी कन्याओं के लिए योग्य वरों का मिलना दुष्प्राप्य होरहा है। गरीब कन्याओं को स्वीकार करने में वे अपनी तोहीन समझते हैं। हमारे समाज में सुशिक्षित कन्याओं के लिए सुशिक्षित वर और ऐसे सुशिक्षित वर जो महासभा की अज्ञानुसार वैवाहिक रीति रस्मों को पालन करने वाले हों, ढूंढ़ने से भी नहीं मिलते हैं। कहीं कहीं यदि शिक्षित युवक मिलते भी हैं तो उनके नखरे ही निराले हैं। मेरे देखने में तो ऐसे माता पिता आए हैं जो अब यह कहते हैं कि कन्याओं का विवाह बड़ी उमरमें नहीं करना चाहिए क्यों कि फिर वरोंका मिलना असंभव हो जाता है। उनका तो यहां तक भी कहना है कि कन्याओंको अधिक पढ़ाना एवं महासभा की आज्ञानुसार विवाह करना आजकल एक प्रकारका श्राप है जब कि ऐसी कन्याओंके लिए ऐसे वर ही नहीं मिलते।

ऐसे लोगोंका कहना सर्वथा असत्य है—यह बात नहीं। हमारे समाज में ऐसा कोई साधन ही नहीं है जिससे कन्याओं के लिए वर की तलाश सरलता की जासके। मेरे पास कितनें ही महानुभावों का लिखा हुआ आता है। मैं भी यह देख रहा हूं कि महासभावादी महानुभाव भी इस समस्याको सुलझानें में उदासीन ही हैं। हमारे समाज में इस समय सुशिक्षित गृह कार्य में निपुणा १५ से १८ वर्ष की कन्याओं की कमी नहीं है। कमी है तो इनके लिए सुयोग्य वरों की है।

इस परिस्थिति में क्या पाठकगण इस विषय पर प्रकाश डालकर अनुग्रहीत करेंगे ?

विनीत,

रामप्रसाद हुरका

हमारे पाठक—

ता. ७-११-४४ के "माहेश्वरी" पत्र में जिस कँवारे लड़के के विषय में यह लेख छपा है कि विवाह न होने पर वह धर्मांतर की तैयारी करेगा तथा विवाह उसके पिता के दोष के कारण ही नहीं हो रहा है आदि, इस विषय में मैं कुछ निवेदन रूप में अपनी सम्मति दर्शाना चाहता हूं। कृपाकर विचार करें—

१ ऐसे कँवारे युवक जो स्वावलंबी, स्वस्थ, तथा सदाचारी हैं और जो निजगुणों से विवाह योग्य समझे जाते हों उनका पूर्ण परिचय, परिस्थिति, शारीरिक व्यवस्था, शिक्षण, आयु, आय, आदि आदि का संक्षिप्त वर्णन 'माहेश्वरी' पत्र में प्रकाशित किया जाना चाहिये ताकि जिस जिस परिवार में, जहां जहां कन्याये विवाह योग्य हों और जो वर तलाशने से थ गये हों, उनकी दृष्टि में भी उपरोक्त संक्षि वर्णन आता रहे और निराशता तथा धर्मांतरत के विचार वालों को कदाचित सुगमता से कोई न कोई योग्य अवसर अपने विवाह क प्राप्त हो जाय।

२ कँवारे लड़केका विवाह कँवारी लड़कीसे ही हो, विधुर को कंवारी लड़की दी जाने की प्रथा का समूल नाश कर दिया जाय। जब तक इस प्रथा का नाश नहीं होगा बाल-विधवाओं की संख्या भी उत्तरोत्तर बढ़े ही गी। इस विषयपर भिन्न भिन्न समयमें योग्य समाज सेवियों के विचार इस पत्र में प्रगट होते रहें।

३ ऐसे युवक जो धर्मांतर के लिये साहस बता रहे हैं, मेरे खयाल से माहेश्वरी महासभा के नियमानुकूल बिछुड़े बंधुओं या दस्से कहलाये जाने वाले बंधुओं की ओर दृष्टि करनेमें कभी भी किसी प्रकार का साहस नहीं बता सके होंगे, क्योंकि जो धमकी देता है वह अवश्य डरपोक है, साहसी करके बताता है, कहके नहीं। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि यह लेख ऐसे किसी भयातुर बंधुका है जो कट्टर पंचाइतिष्ट बंधुओं के दबाव व रुआब में फंसा हुआ है, अतः उस बंधुको महासभा की शरण लेकर उसके नियमानुकूल कार्य करने में साहस बताना चाहिये; इसी एक से उसके सब कार्य सध सकेंगे, निराश होने की आवश्यकता नहीं। मुरझाये हुए पौधे को बागवान भी खेत से उखाड़ फैंकता है, अतः अपने विचारों में साहस रखना ही उसके लिये श्रेयस्कर है।

दूसरा विषय जिसमें अयोग्य लड़के के बारे में लिखा गया है तथा लड़की के लिये क्या करना चाहिये सम्मति मांगी गई है। मैं अपने विचार व अनुभव से यही उत्तम समझता हूं कि उस निरपराध लड़की को जिसे उसके पिता ने बचपन में प्रेम पूर्वक हृदय से लगाया है और जिसके दुखसे आज वह दुखी हैं, अवश्यमेव पुनःविवाह करलेने की सम्मति प्रदान की जाय जिससे उसके पिता और उसका ही भला नहीं होगा किन्तु समाज का भावी कलंक भी पूर्णतया नष्ट हो जायगा। मैं समझता हूं कि यदि प्रत्येक बन्धु बन्धुत्व के नाते परदुख को तनिक मात्र भी सहानुभौतिक दृष्टि से देखेगा तो वह अवश्य इसी निर्णयपर पहुंचेगा कि लड़की के पिता और संपूर्ण समाज का इसी में कल्याण है कि वह लड़की रक्षा रहित न छोड़ी जाय और इससे आगामी (भावी) दुखों का भी अंत हो।

आपका—

शिवचंद ईनानी, इंदौर.

बीकानेर दमन विरोधी दिवस–

राजस्थान रियासती कार्यकर्ता संघ ने २६ अक्तूबर बीकानेर दमन विरोधी दिवस मनाने के लिए नियत किया था। इस दिन राजपूताना भर के राज्यों में विरोध सभाऐं हुईं जिनमें बीकानेर के प्रजा नेताओं की नजरबन्दी की निन्दा की गई और राज्य से उनको तुरंत रिहा करने की मांग की गई।

SHIP BRAND
FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

हिन्दुस्तान, सीलोन, और विदेशमें लोकप्रिय

जहाज छाप
यानी
टिकाऊपन का
सबूत
SHIP BRAND
KHAKI
COTTON CREPE
COTTON CREPE
LONG-CLOTH
REGD. TRADE MARK

क्योंकि

१ वे स्वदेशी हैं,
२ पक्के रंगके हैं,
३ मज़बूत हैं,
४ सर्वोत्तम हैं,
५ कीमत में सस्ते हैं।

SHIP BRAND
FABRICS

कौटन क्रेप सफेद व रंगीन, खाकी ड्रिल, ट्विल व पगड़ी क्लाथ, सफेद ड्रिल, ट्विल, लौंगक्लाथ, साटिन ड्रिल, फास्ट ब्ल्यू ड्रिल, ग्रे ड्रिल, पापलीन सफेद व रंगीन, दसूती सफेद व रंगीन, कैसमेन्ट क्लाथ रंगीन, नीटींग क्लाथ, शीटींग क्लाथ, टेबल क्लाथ सफेद, मरसीराईज़ लौंगक्लाथ, क्रेप, पापलीन, टसर, शरटींग टौवल, नैपकीन वगैरह वगैरह।

'जहाज छाप' कपड़ा सुंदर, स्वदेशी और सस्ता है

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons
Head Office — AMRITSAR
Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

कहानी
ART CORNER

रोटीका टुकड़ा

लेखक
(ले० श्री **मुरलीधर मर्दा**)

(१)

मुझे नित्य नियमित रूपसे बाहर घूमने का शौक है। मैं प्रायः दूर्वाच्छादित भूमि पर घन्टों टहलता हुआ ठँडी हवा का आनन्द लेता हूँ। उस दिन मुझे घर लौटने में देर होगई, इसलिये मैं ईडन गार्डन के सामने खड़ी ट्राम पर चढ़ कर घर रवाना हुआ।

ट्राम मुसाफिरों से खचाखच भरी थी। मेरे पास एक बंगाली बाबू बैठे सिगरेट के कश पर कश खींच रहे थे और ऊपर मुँह कर सिगार का धुआँ उड़ा रहे थे। दूसरी ओर एक मोटे ताजे चौबेजी जर्दे को हथेली पर रक्खे खैनी बना रहे थे। उनके पास में बैठे एक सूट बूट धारी सज्जन उन्हें ऐसा घूर रहे थे मानों वे ऐसे असभ्यों में बैठने के आदी नहीं हैं और आज न मालूम कैसे यहाँ आफंसे। ट्राम के बीच में खड़ा एक कृष काय बच्चा उन सूट बूट धारी सज्जन के पास पड़े बिस्कुट के डिब्बे की ओर अपलक देख रहा था।

मुझे उसके दीन मलीन मुख को देख कर थोड़ी दया आई। मैंने उससे बातचीत करने के बहाने कहा, “कहो, कहाँ जा रहे हो ?”

“ढ़ाबे में जा रहा हूँ, कहीं रोटीका टुकड़ा मिल जाय।”

मैंने कहा, “खड़े क्यों हो बैठ जाओ। क्या ट्राम का टिकट नहीं है ?”

“टिकट लेनेको अगर पैसे होते तो एक रोटी ही खा लेता। बाबूजी, आठ रोज लगातर रोटी न मिलनेके कारण कल मेरा बड़ा भाई चल बसा और अगर मेरी भी यही दशा रही तो ईश्वर मुझे भी जल्दी ही अपनेमा, बाप और भाई से मिला देगा।” लड़के ने धीरे धीरे और रुकते रुकते ये बातें कहीं। दुखके मारे उसकी आँखें भर आईं और वह सिसक सिसक कर रोने लगा।

मैंने मन में सोचा कि सभ्य समाज में पला वह सूट बूट धारी जरूर कुछ बिस्कुट भूखे बच्चे को देगा, पर मेरा अनुमान गलत निकला। उसने तो डिब्बे को उठाकर जेब में ठूंस लिया, शायद उसने सोचा कि कहीं बिना पूछेही लड़का उसे न लेले। सफेद कपड़ों में फिरने वाले और सभ्यता के पुतले ये मानव नहीं पर मानव भेषधारी राक्षस हैं जिनके हृदय में गरीबों के प्रति अणु मात्रभी दया नहीं। उस भले मानुष का वह काम देख मेरे हृदय में घृणा की लहर सी दौड़ गई। इतने में ही कन्डक्टरने आवाज लगाई, ‘हावड़ा स्टेशन, हरीसन रोड’। मैं ट्राम से उतर पड़ा।

जैसे ही मोड़ पर धूमा, कानों में एक धीमीसी आवाज पड़ी, “बाबूजी, तीन दिन से पेट में अन्न का दाना भी नहीं गया। दया करके केवल एक रोटी का ही टुकड़ा देकर मेरी जान बचाइये।

इस तरह के करुणा पूर्ण शब्द आपको कलकत्ते की हर गली और हर सड़क पर सुनाई पड़ेंगे। फुट पाथ पर पड़ी भारत की पवित्र नारियां रोटी के लिये हाथ फैला कर इससे भी दीन शब्द कहती नज़र आयेंगीं। पर मैं उस वृद्ध की ओर विशेष आकर्षित हुआ। मैंने उसके मुख मण्डल पर वह तेज देखा जो कि बड़े बड़े धनवानों के मुख पर विराजता है। उसकी बोली का लहजा साफ़ बतला रहा था कि उसने कभी चांदी के दिन और सोनेकी रातें देखी हैं।

मने उससे पूछा, “तुम कौन हो और कहां के रहने वाले हो ?”

“कौन और कहां का रहनेवाला हूं इसको बतलाने से मेरी क्षुधा नहीं शान्त हो सकती। मुझे भूख बुझाने के लिये केवल एक रोटीका टुकड़ा चाहिये। विश्व से मुझे केवल एक रोटीके टुकड़ेही की याचना है।” वृद्ध ने कहा।

मैंने कहा, “तुम्हारे मुख मण्डल पर मुझे वह चमक दिखाई देती है जो केवल लक्ष्मी के लडलों के मुखपर ही नजर आती है। तुम्हारी बोली का ढंग साफ बतलाता है कि तुम सभ्य संसार में रह चुके हो।”

“वीति ताहि बिसार दे आगे की सुधिले पहले चाहे मैं नवाब रहा होऊँ, पर आज एक रोटीके टुकड़ेके लिये तरस रहा हूँ। पहले चाहे लक्षाधीश रहा होऊँ पर आज पैसे पैसेके लिये हाथ फैला रहा हूँ।” ये बातें वृद्धने आवेशमें आकर कहीं।

मैंने एक रिक्षावाले को बुलाया और उसमें बैठाकर वृद्धको घर लेगया।

(२)

भोजन करनेके बाद भी वृद्ध की तबियत नहीं सुधरी। खाट पर पड़े पड़े ही उसने अपनी कहानी शुरु की—

“ढाका का रहनेवाला मैं केशव घोष हूँ। अराकान में मेरा सूत का काम था। लाखों का लेनदेन था। कई बंगाली मेरी नाकरीकर अपना पेट पालते थे। लाखों की मेरी जायदाद थी। मैं मुक्त हस्त खर्च करता था। मेरी नजर में पैसा पैसा नहीं था। अचानक अराकान जापानी हमले का शिकार बना। हमले के साथ ही मेरा सारा व्यापार मिट्टीमें मिल गया। पर जब अराकान पर जापानी सेना आधमकी तो म पैदल ही जन्मभूमि की ओर भाग खड़ा हुआ। मेरी स्त्री ओर मेरा पुत्र रास्ते में ही मुझसे बिछुड़ गये। पासमें हजार डेढ़ हजार रुपये थे। उनमेंसे कुछ तो खर्च हो गये, कुछ एक जेब कतरे ने निकाल लिये। दुर्भाग्यने मुझे दर दर का भिखारी बना दिया। शस्य साँवली बंग भूमि जो हजारों मन धान पैदा करती थी आज उजाड़ पड़ी है। सैंकड़ों मन धान, पर प्रान्तों में भेजनेवाले बंगवासी आज धानके एक एक कणको तरस रहे हैं। एक एक मुट्ठी अन्नके लिये मातायें पुत्रों को बेच रही हैं और पति स्त्रीको। स्वर्गसे बंगालमें आज नारकीय दृश्य उपस्थित है।”

इतना कहते कहते वृद्ध बेहोश हो गया और फिर होशमें न आया। उसके प्राण पखेरु प्रयाण कर चुके थे किसी और ही दिशा में। मैं किंकर्तव्य विमूढ़ होगया। मुझे चारों ओर यही आवाज सुनाई पड़ने लगी “रोटी”, “रोटी,” बच्चे एक रीटी के टुकड़े के लिये अन्तिम श्वासें तोड़ रहे थे। अनाज के कुछ कणों के लिये मानव और कुत्तेकी लड़ाई होरही थी। माताओं के सूखे स्तनों को खींच खींच कर शिशु दूध टटोल रहे थे और मातायें हाथ फैलाकर माँग रही थीं रोटी का एक टुकड़ा।

कवि, तेरे शब्दों में सार नहीं !

✶

कवि तेरे कोमल शब्दों में आज नहीं कुछ सार।
जब कि जगत में मचा हुआ है, भीषण हाहाकार॥

आज चाहिए अग्नि, मचा दे,
जो पृथ्वी पर हलचल।
मीरु जलें, जग जाय वीरता,
हिल जायें अचलाचल॥

उर उर में उद्भ्रांन्ति क्रान्ति की हो जावे साकार।
विरलव गान सुना एक जावें जग-जीवन व्यापार॥

ऐसे गीत सुना दे कवि शिव
ताण्डव-नृत्य दिखायें।
इस नैराश्य भरे जीवन में
आशा कुसुम खिलायें॥

आज एक ही, मांग जननि के बन्धन हों सब छार।
कवि हो जो बढ़ चले साथ ले स्वतंत्रता-साकार॥

मानव मन में मानवता दें।
जीवन का वैषम्य गला दें।
जन जन में अनुरोध जगा दें।
जन-स्वातंत्र्य पुनः हो जग में॥

कवि तेरी कविता के सपने होवें तब साकार।
ओ अन्यथा इन गीतों में आज नहीं कुछ सार॥

“ निशा ”

विजयनगर जनता की विराट सभा

सरकारसे अनुरोध-

ता. ७ नवम्बर को चौक बाजार में डा. एस. के. बोस की अध्यक्षता में एक विराट सभा रात्रि के ८॥ बजे हुई जिसमें प्रथम प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से प्रार्थना की गई कि रेल्वे लाइन से पानी रुकने के कारण ही ता. ३० जनवारी को विजयनगरमें हजारों मनुष्यों व लाखों रुपयों की बरबादी हुई। अतः सरकार को जनता के हर्जाने की पूर्ती शीघ्र करनी चाहिये। दूसरे प्रस्ताव में चीफ कमिश्नर अजमेर से निवेदन कियागया कि विजयनगरके क्षतिग्रस्त मकानों को व झोंपड़ियों को सरकार से यथा शीघ्र लोन दिलवाने की, कंट्रोल की सख्तियों को दूर करने की व इस बाढ़पीड़ित हलके को इनकमटॅक्स की मांग से मुक्त रक्खे।

राजपूताना प्रान्तीय सभाके सभापति श्री कन्हैयालालजी कलंत्री बम्बईसे खास तौर पर यहां आये थे, उनका इस प्रस्ताव पर जोरदार भाषण हुआ। आपने, अपनी तरफसे उन वीरोंको, जिन्होने बाढ़के समय प्रशंसनीय सेवायें की थीं १५ मेडिल प्रदान किये और श्री कलंत्रीजीको, राजस्थानी प्रजा की सेवाओंके उपलक्षमें एक अभिनन्दन पत्र भेंट किया गया।

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल

इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड

संस्थापित सन् १९१९

★

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—: हमारी शाखाएं :—

अहमदाबाद (गांधी रोड)
बोटाद (काठियावाड़)
कलकत्ता (१३५, कैनिंग स्ट्रीट)
लाहौर (दी माल)
कम्पाला (युगाण्डा) (बाम्बो रोड)

★

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेण्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए:—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :— सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

राजस्थानी संसार

राजस्थानी संसार
ART CORNER

राज्यस्थान कार्यकर्ता संघ–

रजपूताना रियासती कार्यकर्ता संघ का प्रथम प्रातिनिधिक अधिवेशन, जो १८ नवम्बर से २० नवम्बर तक अल्वर में हो रहा था और कई राज्यों में म्यूनिसिपल चुनाव होने के कारण स्थगित कर दिया गया था, अब ३ से ५ दिसम्बर तक हो रहा है। अधिवेशन में अच्छी उपस्थित होने की आशा है। दूर दूर के राज्यों से अधिवेशन के कार्यालय में स्वीकृत पत्र प्राप्त हुए हैं और लगातार हो रहे हैं।

राजा पन्नालालजी पित्ती का हैदराबाद धारासभा से पद त्यागपत्र

हैदराबाद धारासभा के सदस्य राजा पन्नालालजी पित्ती ने अपने स्थान से त्यागपत्र दे दिया है और वह स्वीकृत भी हो गया है। इस त्यागपत्रका कारण यह बताया जाता है कि पित्तीजी धारासभामें पूंजीपातियोंके सरकारी नामजद प्रतिनिधि के बजाय व्यापारी मंडल द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि चाहते थे। श्री. पित्तीजी कई वर्षोंसे निजाम सरकार द्वारा नामजद होते आए हैं। उनके त्यागपत्रके बाद एक अन्य सेठ नामजद कर दिये गये हैं।

सम्मेलन के विशिष्ट सदस्यों से अनुरोध–

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के जिन विशिष्ट सदस्यों ने अपना शुल्क सन् १९४४ का नहीं भेजा है, उनसे निवेदन है कि वे चालू वर्ष का शुल्क यथा शीघ्र केन्द्रीय कार्यालय को मिजवाने का कष्ट करें।

अ० भा० समिति सदस्य शुल्क भी जिन सदस्यों का अब तक इस वर्ष का नहीं प्राप्त हो सका है, उनसे भी प्रार्थना है कि वे समिति के सदस्य शुल्क को ३१ दिसम्बर ४४ के पूर्व ही कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें।

बजरंगलाल लाठ, प्रधान मन्त्री।

कलकता में कामर्स कालेज–

कल्कता में मारवाड़ी बन्धुवों की एक समा सेठ आनन्दीलालजी पोदार ने निमंत्रित की थी। इसमें यह निश्चित किया गया कि २५ लाख रुपए से एक कामर्स कालेज की स्थापना की जाय जो वाणिज्य की शिक्षा देने वाली एक उच्च संस्था हो। श्री आनन्दीलाल जी पोदार के संयोजकत्व में धनसंग्रह के लिए एक समिति भी बना दी गई।

बीकानेर में जैन कालेज—

बीकानेर में एक जैन कालेज की स्थापना का निश्चय किया गया है। इसके लिए पांच लाख रुपया इकट्ठा किया जायगा। सेठ मेरुदान जी कोठारी ने कालिज के लिए अपनी ८०००० रु. की कोठीं दे दी है और सेठ पूनमचंद जी कोठारी ने २५००० रुपए देने का वचन दिया है।

उज्जैन

मध्यभारत लोक सेवक संघ नाम की अथवा इसी प्रकार की संस्था में भारत लोक सेवक समाज पूना या लोक सेवक समाज लाहोर की भांति मध्यभारत के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि व्यापक प्रगति के लिए यत्न करने वाले जन सेवकों के संगठन करने तथा प्रान्त की सार्वजनिक प्रगति के लिए एक प्रेस, लायब्रेरी, रिसर्च और पत्र की व्यवस्था के लिए एक फन्ड एकत्रित करने की योजना पर मध्यभारत के सार्वजनिक कार्यकर्ताओं ने चर्चा और विचार किया।

नागदा

नागदा में बिराला ब्रदर्स जो मिल बनाने को सस्ते दामोंपर जमीन ले रहे हैं उससे तीन गांव के किसान बर्बाद हो रहे हैं। किसान जमीन की कीमत बजार भावसे मांगते हैं। मध्यभारत देशी राज्य लोक परिषद ने इस प्रश्न पर जांच कमेटी बिठाई है। परिषद् के मंत्री श्री कन्हैयालाल वैद्य ने अभी नागदा के किसानों से और ग्वालियर जाकर बिरला मिल के मैनेजर से जानकारी ली है।

नये नोट—

भारत सरकार एक रुपये के नये नोट शीघ्रही निकालने वाली है। आकार अभी जैसा ही रहेगा। नम्बर काले के स्थान पर हरे रंग में छपेंगे। अन्तिम अंग्रेजी अक्षर A बड़ा रहेगा और उसका रंग गहरा भूरा होगा।

श्री राजेंद्र बाबू—

केन्द्रीय असेम्बली के प्रश्न उत्तरों से प्रकट होता है कि स्वास्थय अच्छा न रहने पर भी गवर्नमेण्ट का विचार श्री राजेंद्र प्रसादजी को छोड़ने का नहीं है।

निर्दल–नेता सम्मेलन—

शीघ्रही दिल्ली में डाक्टर सर सप्रूजी निर्दल नेता सम्मेलन बुला रहे हैं जिसके लिये महात्मा गांधीजीने भी आशिर्वाद दिया है। इस सम्मेलन में भारतीय गत्याविरोध को हटानेके लिये कोई विशेष सुझाव रखे जांयगे। सुना है कि लार्ड वेवेल भी इसके लिये उत्सुक हैं और सर मिरजा इस्माईल आदि भी प्रयत्नशील हैं। किन्तु मि. ऐमरी उदासीन हैं।

निराश्रितों के लिये—

बंगाल सरकार ने अपने प्रान्त के निराश्रितों की सहायता के लिये ४ कोरड़ रुपया खर्च करना निश्चिय किया है।

पत्रकार संघ

दिल्ली प्रान्तीय हिन्दी पत्रकार संघ के प्रधान पं० सत्यदेव विद्याअलंकार ने निम्न वक्तव्य प्रकाशित किया है :—

अ. भा. संपादक सम्मेलन द्वारा हिन्दुस्थान के समी पत्रकारों के लिए अधिकारपत्र तैयार करने के कदम का स्वागत करते हुए, मैं यह स्पष्ट कहना चाहता हूं कि इन सिफारिशों से देश के हिन्दी पत्रकार जगत को भारी निराशा हुई है। इस निराशा का कारण अंग्रेजी के और देशी भाषाओंके पत्रों में काम करने वाले पत्रकारों के बीच भेद भावपूर्ण व्यवहार करना ही नहीं है, बल्कि यह तथ्य भी है कि इन सिफारिशों का आधार बिल्कुल गलत जानकारी और हिन्दी के पत्रों की वर्तमान स्थिति को उसके यथार्थ रूप में न समझना है। इन सिफारिशोंसे यह आभास भी मिलता है कि विदेशी भाषा के भारतीय पत्रकारोंमें जिनका अ० भा० सम्पादक सम्मेलन पर प्रभुत्व है, अपने को दूसरों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ और उच्च समझने की भावना है। सामान्य तौर पर देशी भाषाओं के पत्रकारों को अपने दैनिक कार्य में अंग्रेजी पत्रकारों की अपेक्षा अधिक योग्यता और निपुणता से काम लेना होता है जौर अधिक श्रम करना पड़ता है। ये सिफारिशें श्रमी पत्रकारों की उन्नति को और पीछे लेजाने वाली हैं और भारतीय भाषाओं के श्रमी पत्रकारों के स्वार्थों के लिए तो विशेष रुप से बाधक हैं। अ० भा० सम्पादक सम्मेलन के प्रेसीडेन्ड श्री० ब्रेल्वी ने समय समय पर सार्वजनिक रूप से इस बारे में जो आश्वासन दिए हैं, ये उनके शब्दों और भावों के भी सर्वथा विपरीत हैं। साधिकार छुट्टी, सामयिक छुट्टी और बीमारी की छुट्टी के बारे में की गई सिफारिशें तो अत्यन्त असंतोषजनक हैं और अनेक हिन्दी पत्रों द्वारा स्वीकार किए गए स्टेन्डर्ड से भी कम हैं। इन अनुदार सिफारिशों का घोर विरोध करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं। यदि इन सिफारिशों में इन बातों को ध्यान में रखते हुए उचित सुधार नहीं किया गया तो मुझे भय है कि भारतीय भाषाओं के और अंग्रेजी के पत्रकारों के बीच में विद्यमान खाई और भी चौड़ी होगी जो कि इस देश में पत्रकार कला के लिए धातक सिद्ध हुए बिना न रहेगी।

९००० मन चावल नष्ट–

डायरेक्टर जनरल खाद्य-विभाग ने बताया है कि भारत सरकार के एजेण्टों द्वारा खरीदे गये कुछ स्टाक बरसात के कारण सड़ गये। कहा जाता है कि इससे लगभग ३० लाख रुपये की हानि हुई है। अब तक २५०० मन धान गाड़ दिया गया है और लगभग इतना ही शराब बनाने के काम में लाया गया है; क्यों कि वह अन्न खाने योग्य नहीं था। ३४००० मन के लगभग चावल भी नष्ट हो गया, इसका मूल्य ४ लाख ५० हजार रुपये के करीब था।

सर ज्वाला प्रसादजी ने यह स्वीकार किया है कि यदि राष्ट्रीय सरकार होती तो और भी उत्तम व्यवस्था होती।

३००० टन गल्ला नष्ट–

केन्द्रीय धारा सभा में एक प्रश्न के उत्तर में बताया गया है कि बंगाल में ३००० टन गल्ला नष्ट हो गया है। वहां की जलवायु ऐसी है कि जिस अवस्था में गल्ला रखा गया था, उसमें उसका सड़ना अनिवार्य था।

डालमिया हिन्दी पुरस्कार–

सेठ रामकृष्णजी डालमिया ने अपने स्व० पिता सेठ हरजीमल डालमिया की स्मृति में २६०० रु. का पुरस्कार प्रतिवर्ष साहित्य और दर्शन की मौलिक रचना पर बारी बारी से देने की घोषणा की है।

क्या सर मिर्ज़ा जयपुर से जाएंगे

भारत सरकार के राजनेतिक विभाग से मतभेद की अफवाह

सर इस्माईल के जयपुर से जाने की अफवाह गर्म है। इस सम्बन्ध में लोगों में अनेक चर्चाएं चल रही हैं। यह ज्ञात हुआ है कि सर मिर्जा की कार्य अवधि जून सन् १९४५ में समाप्त होती है। उन्हें ३ मास की छुट्टी भी लेनी है। इस प्रकार यदि उनका कार्य काल न बढ़ा तो वे सम्भवतः मार्च मास में जयपुर से चले जाएंगे।

राजधानी दिल्ली के हिन्दी तथा उर्दूके दैनिक पत्रों में इस सम्बन्ध में कई अनुमान प्रकाशित हुए हैं। उर्दू पत्रों ने सर मिर्जा के जयपुर से जाने का कारण उनका भारत सरकार के राजनेतिक विभाग से मतभेद होना बताया है। जयपुर के सरकारी मंत्री ने सर मिर्जा इस्माईल के जयपुर से जाने की अफवाह का कोई खंडन अभी तक नहीं किया है।

बीकानेर धारासभा में सुधार–

बीकानेर में जहां एक ओर प्रजा नेता राज्य के दमन चक्र के नीचे कुचले जा रहे हैं, वहां दूसरी ओर कुछ वैधानिक सुधार देकर जनता को बहलाया जा रहा है। बीकानेर की धारासभा में निर्वाचित सदस्यों की संख्या ५१ में से २५ से बढ़ा कर अब २९ कर दी जायगी और धारासभा के उपाध्यक्ष निर्वाचित सदस्योंमें से चुने जाएंगे। इसके अलावा प्रश्नों का क्षेत्र बढ़ा दिया गया है और सार्वजनिक महत्व के विषयों पर कार्य स्थगित प्रस्ताव रखे जा सकेंगे। बजट की शिक्षा, जन स्वास्थ्य तथा रचनात्मक कार्य की मदों पर कुछ शर्तों के साथ मत देने का अधिकार होगा। विभागों के खर्चों की रकमें, कुछ विषयों को छोड़ कर, धारा सभा स्वीकार या अस्वीकार कर सकेगी।

श्री. बन्सीलालजी व्यास–

भूतपूर्व मंत्री आर्यसमाज यादगीरी (दक्षिण) का देहान्त अकस्मात ता. ३–११–४४ ई. को प्रतः १० बजे सोरापुरमें हो गया। इनके निधनसे आर्य जगतकी बड़ी क्षति हुई, आपने जाति व धर्मकी जो सेवाकी है उसको हैदराबाद की आर्य जनता विशेषतः यादगीर, नारायण पेठ, सोरापुरकी जनता कदापि नहीं भूल सकती। परमात्मासे प्रार्थना है कि मृतात्माको शान्ति मिले तथा उनके परिवारको धैर्यप्रदान करें।

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियां, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

बिक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

IMPERIAL TRADING Co.

Alli Chambers, Tamarind Lane, Fort,
Telegrams: "LOOMSPRING"

BOMBAY.
Telephone No. 27580.

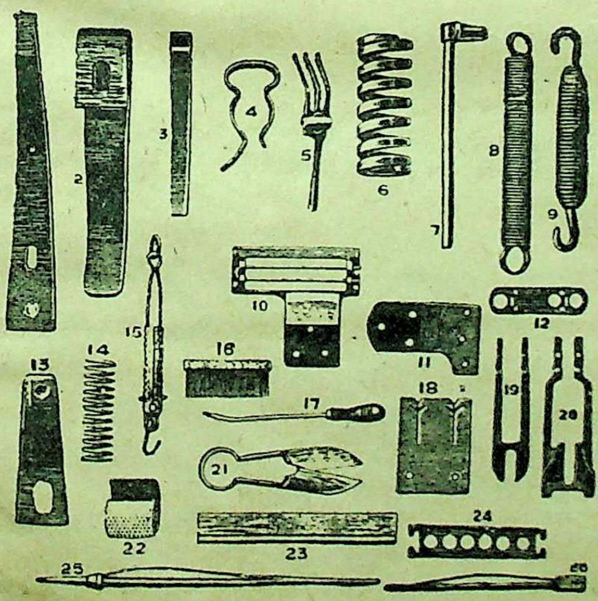

OUR SPECIALITIES

Springs, Temples and all accessories for Spinning and Weaving Machinery

BESIDES, WE HOLD AN EXTENSIVE STOCK of

Stripping Fillets
Burnishing ,,
Folding ,,
Plaiting ,,
Winding ,,
Likering ,,
Card Strippers
Walton Metallic Brush

Lickerine Wires
Lap rods & Oils cans Braime & "K"
Pot eyes for Bleaching dept.
Hydraulic Ram Rings
Jackson & Harries Fastners
Blue Glass Rods & Creel Steps

Card Chains & Link Chains
Hickory wood Picking Sticks
Dobby Lattices Comber Boards & Taper Pegs
Perth Gauge Glass & Glass Lubricators
etc. etc. etc. etc.

Enquiries Solicited

We solicit your enquiries for all articles connected with the Spinning & Weaving Industry and can quote you competitive prices. We will gladly send to you our latest price list on application.

Agents :—
RATILAL & Co., Cross Lane, Railwaypura Post, AHMEDABAD.
B. N. MODI & Co., 14/24, Civil Lane, CAWNPORE.

श्रीमती एनोफील—जनशत्रु नं० १

मलेरिया, जो सबसे अधिक भयावह और हमारे देशका अत्यन्त साधारण रोग है, प्रतिवर्ष २० लाखसे अधिक व्यक्तियोंके प्राणोंका गाहक बनता है। इसके लगातार आक्रमणोंसे उत्पन्न विभिन्न शिकायतोंके कारण और भी अधिक संख्यामें लोगोंको कष्ट सहना पड़ता है।

तथापि मलेरियाका कारण सिर्फ एक ही प्रकारके मच्छर—'एनोफील' और वह भी स्त्री जातिके मच्छरोंसे पैदा होता है। यह मच्छर मलेरियाग्रस्त लोगोंका खून चूसकर दूसरोंके शरीरमें रोगके कीटाणुओंका प्रवेश कराता और इस प्रकार मलेरिया फैलाता है।

इन मच्छरोंकी उत्पत्ति बंधे जलाशयोंमें होती है, अतएव उनका विनाश करनेके लिये पहला आक्रमण यहींसे शुरू होना चाहिये। इन जलाशयोंको भर दें अथवा बिल्कुल पानी निकाल फेकें या पानीमें कीटाणुनाशक औषधियां डाल दें जब भी सम्भव हो, मशहरीके नीचे सोयें और श्रीमती एनोफीलको अपनेसे दूर रखें।

यदि, इसपर भी आप मलेरियाके शिकार हो जायें तो तत्क्षण किसी अनुभवी डाक्टरकी सलाह अपनी हिफाजत और रोग विस्तार रोकनेके लिये लें।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

भारत के जनस्वास्थ्यकी हिफाजतके लिये यह चेतावनी
दी जा रही है। इस विज्ञापनके हस्ताक्षरकारियों और
जनताका स्वार्थ एक ही समान है।

न्यू एशियाटिक इन्स्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड

जीवन, आग, जहाज, दुर्घटना, खतरा आदिके बीमेका
कारबार करती है।

हेड आफिस—न्यू एशियाटिक बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नयी दिल्ली।

कलकत्ता आफिस—८ रॉयल एक्सचेञ्ज प्लेस। ❀ बंबई आफिस—इम्पीरियल बैंक एनेक्स बिल्डिंग फोर्ट, बंबई।

मद्रास आफिस—२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट जार्ज टाउन।

Printed and published by Vasant [illegible] B. A., B. Sc., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India
Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

एक प्रति का =)

[अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र]

Reg. No. B 4441

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

— प्रवर्तक —
स्व० भागीरथदासजी भूतड़ा

कार्यालय
अली चेम्बर्स, क्वीन लेन,
फोर्ट बम्बई

वर्ष ३५, संख्या १३]

बम्बई ता. ७ नवम्बर १९४४

[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

नागरिकता की शिक्षा

●

⁂ स्व. डा. एन. बेसेंट ⁂

आज सायंकाल के भाषण का विषय मैंने जो "नागरिक के रुपमें विद्यार्थी" रखा है, उससे आप लोगोंमें से कुछ को आश्चर्य हो सकता है। आपकी यह धारणा हो सकती है कि नागरिकता का प्रश्न पुरुषों और स्त्रियों के लिए है, न कि स्कूलों में पढ़नेवाले लड़कों लड़कियों के लिए। यह एक आम गलती है जो लोग करते हैं, क्योंकि यथार्थ में स्कूलमें लड़की या लड़का जैसा रहते हैं, बाद के जीवन में भी वे वैसे ही रहते हैं। २०-२५ या ३० वर्ष के व्यतिको अच्छा नागरिक बना सकना दुरुह है। अच्छा नागरिक तो स्कूल और कालेज में पढ़नेवाले छात्रोंको ही बनाया जा सकता है, क्योंकि शैशव और युवाकालमें चरित्र गठन होता है।

मनुष्य का चरित्र बचपन में बनता है और उसका धीरे धीरे विकास होता रहता है। बाहर की अपेक्षा अंदर से उसे अधिक जोड़ा जा सकता है। वह अपने साथ बहुसंख्यक गुण लाता है, जो कि उसके आचरण की रूपरेखा बहुलांशमें निर्द्धारित करते हैं। यदि हमारे पास कोई आदर्श हो तो हम अपने आचरण में उसके अनुरूप सुधार कर सकते हैं। स्कूली दिनों में ही वास्तविक नागरिक के निर्माण का बहुत काफी काम किया जाता है। मैंने अभी आदर्श शब्द का प्रयोग किया है। मैं आप लोगों को इस शब्दका अर्थ बताना चाहती हूं। अभिप्राय ही सर्वदा हमारे मस्तिष्क में रहता है—न कि घर में आने जानेवाले अतिथियोंकी भांति मनमें उठने और विलीन होनेवाले विचार। आदर्श निर्दिष्ट अभिप्राय का दूसरा नाम है। जो कुछ आप सर्वदा सोचते हैं, जिसके अनुरूप आप अपनेको बनाते हैं, वह आदर्श है। यह आदर्श अपने ढंगपर आपके आचरण को मोड़ता है और उसमें सुधार करता है। आपको दोषों से मुक्त करता है और सद्गुणों को सुदृढ़ बनाता है। फिर भी अतीत में गठित चरित्र की कुछ न कुछ बातें मनुष्य की जीवन संध्यातक मौजूद ही रहती हैं।

नयी पीढ़ी

जैसा कि आप जानते हैं, यह वह समय है जिसमें विश्व में बहुत बड़े परिवर्तन हो रहे हैं। ये परिवर्तन इतनी तीव्र गति से हो रहे हैं कि हमारे लिए उनके साथ चलना कठिन है। विज्ञानवेत्ता बतलाते हैं कि विश्व में इस समय नये ढंग की मानवता जन्म ले रही है। विभिन्न देशोंमें कुछ विशेष गुणों से सम्पन्न बच्चे पैदा हो रहे हैं। उनके शरीर एक जैसे हैं और मुखाकृति बिल्कुल पहचानी जा सकनेवाली है। वे चाहे जिस भाग में पैदा हों, ये बातें उनमें अवश्य मिलेंगी। यही नहीं समस्त विश्व के नवयुवकों और बड़बूढ़ों के विचारों में जमीन आसमान का अंतर है और साम्य होना असंभव है। आज के नवयुवक सामाजिक आदर्श के पीछे मर मिटनेके लिए बिलकुल तैयार दीख पड़ रहे हैं। सुधार और उत्कर्ष के आन्दोलनों में कुदने के लिए वे प्रतिक्षण तैयार रहते हैं। वे उत्साहपूर्वक उनकी चर्चा और बहस करते हैं। जहां भी जाइये नवयुवकों के अन्दर यही प्रवृत्ति दीख पड़ेगी। चाहे पूर्वके दशोंमें जाइये चाहे पश्चिमके या अन्य किसीभी देशमें—आप सर्वत्र नवयुवकोंको समाज उपयोगी आंदोलनों में रस लेते पायेंगे। वे सर्वत्र अपने बापदादों के विचारोंसे भिन्न विचार रखते दीख पड़ेंगे। उनकी महत्वाकांक्षाएं, आशाएं, आकांक्षाएं सभी भिन्न नजर आयेगी। आन्तरराष्ट्रीयता आज के नवयुवकों को बहुत अधिक आकृष्ट कर रही है। वे अनुभव करते हैं कि दूसरे देश हमारे शत्रु नहीं हैं, बल्कि एक ही परिवार के सदस्य हैं एवं एक देशको दूसरे देशके प्रति इसी दृष्टिकोण से व्यवहार करना चाहिये। वे दूसरे देशों के लोगोंको एकही परिवार के भाई समझते हैं न कि किसी जंगल के पशु। पुराने जमाने के लोगों का दृष्टिकोण इतना व्यापक और उदार नहीं है। आज के नवयुवकों का सर्वाधिक उल्लेखनीय वैशिष्ट्य यह है कि वे दूसरे देशों के साथ मित्रवत व्यवहार करना चाहते हैं। स्काउट आन्दोलन ने विश्व बंधुत्व की भावना को उत्तेजन दिया है। स्काउट का यह आदर्श ही है कि वह दूसर स्काउट का भाई एवं समस्त प्राणियों का मित्र है। यह मानव प्राणियों ही तक सीमित नहीं है; पशुओं तकके साथ स्काउट ऐसा ही व्यवहार करता है। भ्रातृत्व की परिधि में इस जगतीतल के समस्त प्राणी आते हैं।

भविष्य उज्ज्वल

सभी देशों में साधारण रूप से और भारत में विशेष रूप से नयी और पुरानी पीढ़ियों के बीच भयंकर विचार संघर्ष हो रहा है। जिसका मुख्य कारण राष्ट्र की दृष्टि का तीव्र गति से परिवर्तन और फल स्वरुप लोगों में नये आदर्शों के पैर जमना है। विश्व में उसका सारा दृष्टिकोण ही बदल रहा है। भारत अब विश्व के राष्ट्रों में घटिया स्थान ग्रहण करने का इच्छुक नहीं है बल्कि स्वाधीनतया और समानता के अपने अधिकार के लिए दावा करता है। और नवयुवकों के अन्दर तो यह भाव अत्यधिक उग्र रुपमें धारण कर चुका है। आपके स्कूल या कालेज जीवन का महत्व तो यह है कि आप लोगों को स्वाधीनता और समानता जिनके लिए दावा किया जा रहा है, शिक्षा समाप्त कर कार्य क्षेत्रमें अवतरित होने के समय उपलब्ध हो। आप लोगों को भारत के भाग्य के निर्माण में बहुत बड़ा भाग लेना है। आज जो स्कूलों में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं वे भारत के भावी राजनीतिज्ञ, जल सेनाध्यक्ष और

(शेष पृष्ठ २ पर)

श्री पंतजीके स्वास्थ्यके लिए ईश प्रार्थना

श्री सुमित्रानन्दनजी पन्त की अस्वस्थता का समाचार सुनकर हम लोगोंने दिल्ली के डाक्टर जोशी महोदय के यहां से उनका कुशल समाचार पूछा था। जो उत्तर आया है, उससे विदित हुआ कि ६ सितम्बर से पन्तजी टाइफाइड से पीड़ित हैं। वे अब भी ज्वर से मुक्त नहीं। पूरे दो महीने हो गये हैं। संभव चिकित्सा हो रही है. बहुत दुर्बल हो गये हैं। परन्तु आशा है अच्छे हो जायेंगे। स्वयं डाक्टर जोशी देख भाल करते हैं और दूसरे डाक्टर भी देखते हैं।

अपने कोमल कान्त कवि के आरोग्य के लिए हम लोग हृदय से प्रार्थना करते हैं। प्रभु हम लोगों के लिए उन्हें स्वस्थता प्रदान करें। आशा है, हिन्दी प्रेमी मात्र इस प्रार्थना में हमारा साथ देंगे।

इस सम्बन्ध में यह बड़े ही परिताप की बात है कि पन्तजी का समाचार देने में देश की न्यूज एजेंसियों ने अपने कर्त्तव्य का यथोचित पालन नहीं किया। कितनी व्यर्थ की बातें हमें अपने पत्रों में प्रतिदिन मोटे अक्षरों में देखने को मिलती हैं परन्तु हिन्दी साहित्य से सम्बन्धित इतने चिन्ताजनक समाचार की उपेक्षा एक साथ की जाती है। आशाहै, हमारे पत्रकार इस शोचनीय स्थिति से ऊपर उठने का प्रयत्न करेंगे। आज के कितने ही जनरलों और सेनापतियों का नाम जब कोई जानेगा भी नहीं, तब भी, पन्तजी ऐसे पुरुष जन जीवन को आनन्दित और प्रभावित करते रहेंगे।

मैथिली शरण गुप्त
सियाराम शरण गुप्त

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० ७ नवम्बर १९४४

फत्तेलाल ट्रस्ट

स्व. सेठ श्री फत्तेलालजी सावणासे मारवाडी समाज भलीभांति परिचित है। आजसे लगभग २५–३० वर्ष पहिले जब कि माहेश्वरी समाजमें शिक्षा एवं सार्वजनिक प्रवृत्तिका सर्वथा अभावसा था, स्व. सेठजी समाजोन्नति की विविध प्रवृत्तियोंकी प्रस्थापनामें संलग्न हुये थे। केवल तन एवं मनसे ही नहीं १९१५–१६ के उस सामाजिक–तंद्राके जमानेमें आपने अपनी संपत्तिका एक बहुत बड़ा हिस्सा समाज एवं जनसेवा के लिए दान देकर जाति के धनिकों के सामने लोकसेवा का एक महान आदर्श उपस्थित किया था।

स्व. सेठजीका यह अनुकरणीय दान 'फत्तेलाल ट्रस्ट' के नामसे प्रतिष्ठित होकर शिक्षा जलाशय, अन्नक्षेत्र, सदाव्रत आदि समाजसेवाके विविध कार्य करने में प्रवृत्त हुआ। परंतु कालगति बड़ी विचित्र है। सेठजीके देहावसान के बाद उक्त ट्रस्टके ट्रस्टियोंमें समाज एवं जनसेवा की वह भावना—जिससे प्रेरित हो स्व. श्री. फत्तेलालजी ने इतना बड़ा दान दिया था—शिथिल होने लगी और क्रमशः अकर्मण्य हो गई। उसके जीवनका (नाशिक की धर्म शाला के अलावा जिसका प्रबंध भी अत्यंत शोचनीय ही है) कोई चिन्ह शेष नहीं। श्री सेठजी द्वारा नियुक्त किये गये ट्रस्टी गण अपनी जवाबदारीको बिल्कुल ही भुला बैठे हैं। यह बड़े ही खेद की बात है।

ट्रस्टियों की इस उपेक्षाको देखकर कुछ समाजप्रेमी व्यक्तियोंने उनका ध्यान अपने कर्तव्य एवं लक्ष्य की ओर आकृष्ट किया। इसी सिलसिलेमें मध्यप्रांत एवं बरार स्थित पोकरण निवासियों का एक डेप्युटेशन श्री. मोतीलालजी केलाकी अध्यक्षतामें ता. २-७-४४ को ट्रस्टियों की सेवा में पहुंचा। जिसमें अ. भा. आयुर्वेद सम्मेलनके भू. पू. सभापति, भिषगाचार्य पं. गोवर्धनजी शर्मा छांगाणी एवं श्री. पं. रतनलालजी पुरोहित आदि ११ सज्जन थे। श्री केलाजी एवं उक्त महानुभावों ने ट्रस्टियों से प्रार्थना की कि वे सेठजी के कार्य को—स्वर्गीय आत्मा की इच्छानुसार सुचारु रुपसे चलायें। विशेषतः पोकरणमें एक हाईस्कूल खोलने—जो अनुमानतः सन् २४-२५ में एक वर्ष के लिए खुलकर ट्रस्टियों की उपेक्षा एवं अर्थाभाव के कारण बंद हो गया है—तथा खारा ग्राममें एक कुंआ खुदाने की उनकी इच्छा को शीघ्र ही मूर्त रुप दिये जानेपर तो डेपुटेशन ने बहुत जोर दिया और ट्रस्ट के उद्देश्यों में उल्लिखित सदाव्रत, अन्नक्षेत्र एवं प्याऊ आदि का सिलसिला जारी करने के बाबत भी उनसे प्रार्थना की। परंतु इन उचित सुझावों और नम्र निवेदनों के बावजूद भी ट्रस्टियों ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

अंतमें लाचार होकर डेपुटेशन ने अपने सभापति श्री. केलाजी को ट्रस्टियों की इस तंद्रा तोड़ने एवं उनका इस अकर्मण्यता में गति संचालित करने के लिए कानून आदि अन्य किसी उपाय का आश्रय लेनेका अधिकार दे दिया। श्री केलाजीने भी अन्य किसी उपायके कारगर न होने की हालतमें पोकरण के संभ्रान्त निवासियों की मंत्रणा एवं डेपुटेशन के मेम्बरों द्वारा अधिकार पानेपर–ट्रस्टके उद्देशोंकी पूर्तीके लिए इस संबंधमें डि० जज अमरावती के कोर्ट में एक इस्तगासा दायर कर दिया है। वास्तवमें अत्यंत मजबूरीकी हालतही है। साथ वह यह भी चाहता है कि ट्रस्टिगण उक्त ट्रस्ट कीं सम्पत्तिकी मौजूदा कीमत, उसका पिछले तीन वर्षोंका हिसाब आदि आर्थिक परिस्थितियोंसे उसे आगाह करे।

केस तो हाल विचाराधीन है, पर हम 'माहेश्वरी' की ओरसे ट्रस्टियोंसे एक बार और प्रार्थना करना चाहते हैं कि वे अपनी जवाबदारी को महसूस करें। कोर्टके हस्तक्षेपसे पहिले ही परिस्थिति को स्पष्ट एवं ट्रस्टके कार्यको सुचारु रुपेण संचालित करना समाज एवं ट्रस्टियों के लिए सम्मानास्पद एवं उचित होगा। हमें पूर्ण विश्वास है कि श्रीमान ट्रस्टीगण और विशेषतः श्री. गोवर्धनदासजी कावरा हमारी इस प्रार्थना के औचित्यको समझकर सारी परिस्थिति को बिगडनेसे पहिले ही बना लेंगे और स्व. आत्माके समाधान एवं ट्रस्टके सम्मान की रक्षा कर पुण्यभाजन बनेंगे।

कुंआरों की समस्या

कुआरों की समस्याओंको लेकर कई दफे समाज के सामने प्रश्न उपस्थित हुआ है। कई दफे ऐसे २ पत्र आते हैं कि समझमें नहीं आता कि उसका क्या जवाब दें। समाज को इन प्रश्नोंपर अच्छी प्रकार सोचना चाहिए। अभी २ हमारे पास दो पत्र आये हैं उनका सारांश हम यहां दे रहे हैं:—

(१) " इस समय मेरी उम्र २५ साल की है और अब तक मेरे विवाह का कोई बंदोबस्त नहीं है। मेरे पास जेवर वगैरा करानेके वास्ते रुपयोंका कोई इंतजाम नहीं है। मैं गरीब हूं। अभी सोना चांदीके दाम भी बहुत बढ़ गये हैं। रुपया कर्ज लेकर या मकान बेचकर शादी करना मैं पसंद नहीं करता। घरमें मैं और माताजी जिनकी वृद्धावस्थाके कारण नजर कमजोर होगयी है के अलावा कोई नहीं है। समाज में गरीब को कोई लड़की नहीं देता। मैं सब ओर से हार गया हूं। क्या मैं अपनी जाति को छोड़कर किसी गैर जातिमें फिर मुसलमान हो या ईसाई शादी करूं। मेरे पिता की मृत्यु मेरे बाल्यावस्था में हो गयी। समाज को आप जानते हैं। जो कुछ जेवर था वह बेचकर मोसर किया गया। पहले मैंनें ८) रुपये मासिक तनख्वाह से एक अच्छी फर्म में काम शुरु किया। आज १५०) माहवार मुझे मिलता है। आदि २।

(२) वह नवयुवक इस वक्त २५ साल का है। जाति उसकी करनाणी है। वह जब ६।७ साल की उम्र का था तभी उसके पिता की मृत्यु हो गयी थी माता साल भर बाद चल बसी। उसके एक बहन थी। जब यह युवक बच्चा था तभी उसके बहन की शादी कर दी गयी थी। इसके बापने वरसे कुछ रुपये लिये थे। वह दुखी है कि उसके पिता ने ऐसा काम किया। छोटी उम्र में माता पिता के चल बसनेपर बहादुरी से अपना जीवन कष्टोंको सहते बनाया। वह अपनी चायबागानकी दुकान से जीविका कमाता है। मासिक आमदनी १०० १५० के बीच रहती है। वह स्वस्थ, सुंदर और नवजवान है। पर उसकी शादी नहीं होती क्यों कि उसकी बहन को उसके पितानें 'बेचा' था। उसके सामने कई रास्ते खुले हैं।

(१) वह एक लड़की कुछ रुपये देकर ब्याह ले।

(२) वह कोई नीच रास्ता पकड़ले।

(३) वह समाजकी परवा न कर धर्म बदल डाले।"

दोनों पत्रों के आशय इस प्रकार है। हम नहीं समझते कि पिताने अपने जीवन में कोई गल्ती की उसका प्रायश्चित पुत्रको करना पड़े। यदि लड़का स्वस्थ, सुंदर, युवक और कमाऊं हो तो किसी को भी उससे विवाह करने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए। समाजको चाहिए कि वे ऐसे युवकोंको गल्त रास्ता अपनाने का मौका न दे। यदि जाति बनाए रखनी है तो फिर ऐसे युवकों के दिमागमें गल्त रास्ता अपनाने या धर्मांतर करनेके विचार को स्थान देने को बाध्य नहीं करना चाहिए।

समाजकी मनोवृत्तिको देखते विवाह खर्चेमें अधिक धन खर्च करना पड़ता है। यह मनोवृत्ति ठीक नहीं है। मारवाड़ी समाजमें यह एक जटिल समस्या है। समाज युवक के पास और और गुणोंके अलावा धन के विशेषता की देखभाल करते हैं। कइ युवकों में सांपत्तिक स्थिति की कमी के कारण योंही कुआरे रूपमें आजीवन तक रहना पड़ता है यह किसी भी समाजके लिए शोभनीय नहीं है। हम इन पत्र दाताओं से भी कहेंगे कि वे धर्मांतर करने की बात न सोचें। यदि वे विचार करेंगे कि जो सिर्फ विवाह के लिए ही धर्मांतर करते हैं वह अपने जीवन में सुख प्राप्त नहीं कर पाये हैं। और लोग इसको धमकी (Threat) मानें यह भी ठीक नहीं है। हम इन भाइयों से कहेंगे कि वे भी जरा समझ से काम लेंवे तो उनके लिए भी अच्छा रहेगा।

आवश्यक प्रश्न

'माहेश्वरी' कार्यालय में एक सज्जन ने पत्र भेजा है उसका आशय निम्न प्रकार है। जैसा कि उक्त सज्जन चाहते हैं और हम भी कि 'माहेश्वरी' पाठक अपनी २ राय लिख भेजें, हमारी इच्छा है कि इस बात पर गंभीरतापूर्वक चर्चा हो अतः जो विचार आवेंगे उनको 'माहेश्वरी' में संक्षिप्त में प्रकाशन दिया जावेगा। पत्रका आशय इस प्रकार है:—

'मेरी लड़की का विवाह एक माहेश्वरी से आज से सात साल पहले किया गया था किंतु लड़का बेकाम (नामर्द) निकल गया इसलिए अब मेरी लड़की करीब २॥ वर्ष से मेरे घरपर है। वह सुसराल जाना नहीं चाहती क्योंकि उसको वहां कोई किस्म का सुख आज तक मिला नहीं। आगे भी सुख मिलने की आशा नहीं है। लड़के वाले भी ले जाने के लिए राजी नहीं है। लड़की दूसरा विवाह करना चाहती है। लड़की की उम्र इस समय बीस सालकी है। अब आप उचित सलाह दीजिए। इस हालत में क्या करना मुनासिब है। समाज को चाहिए कि स्त्री समाज के साथ न्याय करना चाहिए। यदि लड़की बेकाम हो जाती है तो लड़के वाले फौरन दूसरा विवाह रचा देते हैं।'

[पृष्ठ १ का शेष]

सेनानायक हैं। उन्हीं के हाथों में कल भारत का भविष्य आनेवाला है। जब तुम्हें इतने महत्वपूर्ण कार्य करने हैं तो स्कूली जीवन से ही तुम्हें अपने अंदर नागरिकता की स्पिरिट भरना, यह समझना कि एक स्वतंत्र देशमें नागरिकका क्या अर्थ है, शुरु कर देना चाहिए।

अच्छे नागरिक

नागरिक का क्या अर्थ है? स्पष्टतया अंग्रेजी भाषा के सिटी (नगर) शब्द से यह बना है। जो व्यक्ति किसी नगर में रहने के योग्य हो, वह नागरिक है। शब्द का यही वास्तविक अर्थ है। नागरिक ग्रीक धारणा के अनुसार उसे देश को खुशहाली में सम्पन्न बनाना, उस के कानूनों में सुधार करना, शिक्षा का प्रसार करना, ये नागरिक के अपरिहार्य कर्तव्य हैं। यदि आप एक क्षण के लिए भी एथेंस के जीवन पर दृष्टिपात करेंगे तो आपको पता चलेगा कि एथेंस के प्रत्येक नागरिक से राज्य के शासन प्रबंध में भाग लेने की आशा की जाती थी। उसे किसी भी सरकारी आफिसमें बैठकर काम कर सकने योग्य क्षमता प्राप्त करनी पड़ती थी और उसे राज्य का कोई भी काम करने के लिए तैयार रहना पड़ता था। प्रत्येक व्यक्ति राज्य के लिए मरने मिटने को सहर्ष तैयार रहता था, और वह भी उसे अपना कर्तव्य समझ कर। एथेंस वालों की यह धारण थी कि जिसे नागरिक बनना हो, उसे अवश्य शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। उसे कर्तव्य परायण बनना चाहिए। और अपने उत्तरदायित्व और कर्तव्यों का पालन करनेके लिए नागरिकता के भाव एथेंस वासियों की नस नस में व्याप्त थी। वस्तुतः इसीके आधार पर लड़कों की शिक्षा होती थी। १८ वर्ष की आयु में वेष्ट (लड़के) नागरिकों के एक विराट जनसमूह के समक्ष उपस्थित किये जाते थे, जहाँ उन्हें हथियार भेंट किये जाते थे और निम्न शपथ ली जाती थी। " हम बेईमानी या कायरता के किसी कार्य द्वारा अपने इस महान नगर को बदनाम न करेंगे और न कभी केण्टमें फसे हुए अपने साथियों ही को छोडेंगे। हम अकेले या दूसरों के साथ नगर के आदर्श एवं पवित्र वस्तुओं के रक्षार्थ लडेंगे। हम नगर के कानूनों का सम्मान करेंगे और उनका पालन करेंगे। हम सर्वसाधारण में नागरिक भाव जागृत करेंगे जो कोई नगर के कानूनों का सम्मान न करेगा, उसे समझाये बुझायेंगे।"

आप में से हर एक को स्मरण रखना चाहिए कि आप नागरिक बनने के पथ में हैं। जब

(शेष पृष्ठ ६ पर)

श्री माहेश्वरी विद्यालयका रजतजयन्ती उत्सव समारोह

★ ★ ★

विद्यालयके संक्षिप्त इतिहासपर प्रकाश

स्व० रामकृष्णजी मोहता, संस्थापक

स्थानीय श्री माहेश्वरी विद्यालय अपने जीवनके २५ वर्ष समाप्त कर छब्बीसवें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस उपलक्षमें विद्यालयकी रजत-जयन्ती उत्सव बड़े समारोहके साथ मनाया जा रहा है। यह विद्यालय पिछले २५ वर्षोंसे बड़े बाजारकी जनतामें विद्या और ज्ञानका प्रचार करता आ रहा है। इसकी स्थापना और विकासका संक्षिप्त इतिहास इस प्रकार है:—

माहेश्वरी समाजके अनन्य सेवक और सुप्रसिद्ध विद्याप्रेमी स्वर्गीय सेठ रामकृष्णजी मोहताकी प्रेरणासे सन् १९१६ की ५ मईको इस विद्यालयकी स्थापना ८, पगैयापट्टीमें हुई। सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला सभापति और स्व० सेठ जीवनदासजी पुगलिया मन्त्री निर्वाचित किये गये।

संवत् १९७४ की अक्षय तृतीया को विद्यालय ८ पगैयापट्टीसे हटकर १८, हम्माम गलीमें चला आया। इस नये स्थानपर विद्यालयको लानेमें श्री सुखलालजी करनानीकी प्रमुख सहायता थी, जिन्होंने विद्यालयको अपना मकान तबतकके लिये दिया जब तक विद्यालयका निजका भवन न हो जाय।

विद्यालयके प्रथम पारितोषिक वितरणोत्सवके सभापति प्रातः स्मरणीय महामना पं. मदन मोहनजी मालवीय थे। उसके दूसरे वर्ष ही पौष कृष्ण २ सं. १९७४ ता- ३० दिसम्बर सन १६१७ की रात्रीके ७ बजे विद्यालयका द्वितीय् वार्षिकोत्सव विश्ववंद्य महात्मा गांधीके सभापतित्वमें सम्पन्न हुआ।

सन १९२१ में विद्यालय हम्माम गलीसे उठकर वर्त्तमान माहेश्वरी भवन (नं ४, शोभाराम वैसाख स्ट्रीट) में आगया। विद्यालयके लिये भवन प्राप्त करनेमें जिन जिन व्यक्तियों ने आर्थिक सहायता दी उनमें प्रमुख हैं:—

७७.०१) श्री मँगनीरामजी रामकुमार बाँगड

७७००१) श्री राजा बलदेवदासजी जुगलकिशोर बिड़ला

५१०००) श्री जगन्नाथजी मदनगोपाल मोहता,

५१०००) श्री सदासुखजी गम्भीर चंद कोठारी

२५००१) श्री हरकिशनदासजी पन्नालाल रामरतन भट्टड़

२५००१) श्री नरसिंहसहायजी मदनगोपाल मूंधड़ा

२१०००) श्री गोरधनदासजी रामगोपाल मोहता

इनके अतिरिक्त रु.३८७४१ विद्यालय कोषके भी खर्च हुए।

सन् १९१७ से विद्यालय में हाईस्कूलोंके पाठ्यक्रमके अनुसार पढ़ाई होती रही और यूनिवर्सिटीकी परीक्षामें यहांके विद्यार्थी पर्याप्त संख्यामें सम्मिलित एवं उत्तीर्ण होते रहे। आगे चलकर राष्ट्रकी पुकारके अनुसार यह विद्यालय राष्ट्रीय रूपमें परिवर्तित कर दिया गया एवं व्यापारिक विषयक शिक्षाको प्रमुख स्थान दिया गया। राष्ट्रीय विद्यालयके रूपमें यह विद्यालय सन् १९२५ तक चलता रहा।

विद्यालयकी अबतककी रूपरेखा तैयार करनेमें स्वर्गीय रामकृष्णजी मोहताका प्रमुख हाथ था। उनकी प्रेरणा आज भी इस शिक्षणशालाकी हर ईंटपर अंकित है और उनके आदर्श आज भी प्रकाशस्तम्भका कार्य कर रहे हैं। श्री मोहताजीने विद्यालयके प्रत्येक कार्यको देखने एवं अग्रसर करनेके साथ सन् १९१९ से '२१ तक एवं सन् १९२३–२८ में विद्यालयके मन्त्रित्वका एवं सन् १९२२ में सभापतित्वका भार भी सम्हाला था।

सन् १९२७ विद्यालयके इतिहासका वह वर्ष है जिसमें विद्यालयके वर्तमान रूपके निर्माणका कार्य पूर्णरूपसे प्रारम्भ हो गया। इसी वर्ष श्रीशिवकृष्णजी भट्टड़ने विद्यालयका मन्त्रित्व सम्भाला और सर्वश्री रामकृष्णजी मोहता, मोतीरतनजी भट्टड़, तथा गोकुलचन्दजी मूंदड़ा आदिके उत्साह से विद्यालयका संबंध कलकत्ता विश्व-विद्यालयसे स्थापित हो गया।

सन १९२८ में विद्यालयने पुनः विश्वविद्यालय सम्बंधित होनेके बाद पहली बार अपना प्रवेशिका (मैट्रिक) फल देखा। परीक्षामें भेजे गये सातों विद्यार्थी उत्तीर्ण हुये। विशेषता यह थी कि ६ प्रथम श्रेणी में आये थे। इस वर्ष विद्यालयकी छात्रसंख्या ४२५ रही। सन १९२९ के प्रवेशिका परीक्षामें १३ छात्र भेजे गये जिनमें से कुल १२ तथा प्रथम श्रेणी में ६ उत्तीर्ण हुए। एक को दो तथा चार को एक-एक विषयमें सम्मान भी प्राप्त हुआ। इस वर्ष की दो विभिन्न वादविवाद प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होनेवाले छात्र श्री मुन्नालालजी रांका श्री अनन्तप्रसाद भाटिया तथा श्री घेवरचन्द बोथरा को पुरस्कार प्राप्त हुए एवं दोनों प्रतियोगिताओंमें विद्यालयको प्रथमस्थान प्राप्त हुआ।

विद्यालय इस बातके लिये सचेष्ट है कि बच्चोंमें धार्मिक भावनाका संचार कर उनका नैतिक धरातल ऊपर उठाया जाय। गत कुछ विद्यार्थी गीता परीक्षा समितिकी परीक्षामें शरीक हुए और उनमेंसे बहुतों को उत्तम परीक्षाफलके लिये पुरस्कार भी प्राप्त हुए।

किशोरावस्थाको पारकर विद्यालयने जवानीके आंगनमें पांव रखा। सन् '३६ विद्यालयके जीवनका २१ वां वर्ष था। विद्यालय एक शिक्षणशाला मात्र न रहकर प्रयोगशालाका रूप धारण कर चुका था। इसकी प्रसिद्धि उत्तम भारतके सुदूर स्थानोंतक पहुच गई थी। बहुसंख्यक प्रवेशार्थियोंके रहते हुए भी ७५० से अधिक छात्रोंको विद्यालयमें प्रविष्ट न किया जा सका।

छात्रों की मानासिक तथा शारीरिक उन्नति के लिये वाद-विवाद विभाग तथा व्यायाम विभाग चल रहे थे। साथही विद्यालय के पास अपना एक पुस्तकालय था जिसमें इस समय पुस्तकों की संख्या दोहजार के करीब हो गई थी। श्री. शिवकृष्णजी भट्टड़ ने पाँचसो पुस्तकें प्रदान कर इस पुस्तकालय को समृद्ध करने में सहायता दी। इस वर्ष प्रवेशिका परीक्षामें २१ विद्यार्थी बैठे और २० उत्तीर्ण हुए जिनमें १५ प्रथम श्रेणी में थे। स. १९३२ से विद्यालय की ख्याति नगरमें फैल जाने से शहर के बाहरसे विद्यार्थी इस विद्या मंदिरकी ओर दौड़ पड़े पर स्थानाभाव के कारण अनेक विद्यार्थियोंको निराश होना पड़ा। सन १९३३ में स्थानाभाव को दूर करनेके लिये रायबहादुर बिसेसरलाल हल्वासिया ट्रस्टके ट्रस्टीयों ने २००० रुपये प्रदान किये। इसी वर्ष श्री चम्पालालजी जटियाने अपने स्वर्गीय भ्राता श्री गजानन्दजी की पुण्य स्मृतीमें विद्यालयके अन्तर्गत मेकेनिक्स की प्रारंभिक शिक्षा का प्रारंभ कराया।

सन् १९३४ आया। भीषण भूकम्प के रूपमें दैवी कोपका प्रभाव इस देशपर पड़ा। अपने देशवासियों को दुर्दशा सुनकर कोमलमति बालक पिघल गये। अपनी छोटी हस्तीके अनुरूपही उन्होंने ११००) संग्रह किये तथा अपने भाइयोंकी विपत्तीमें हाथ बँटाया। विद्यार्थियों का यह कार्य विद्यालय के लिये गर्व एवं गौरव का विषय है।

सन् १९३५ में छात्रों की संख्या ७०० के ऊपर हो गयी। प्रवेशिका परीक्षामें शरीक होनेवाले ४१ छात्रों मे से ३९ उत्तीर्ण हुए थे। इस वर्ष विद्यालयके छात्र बिहारीलाल श्रीवास्तव को छात्रवृत्ती प्राप्त हुयी। इस प्रकार विद्यालयके छात्रों ने पाँच वर्ष में दो बार छात्रवृत्ती पाकर विद्यालय को असीम गौरव प्रदान किया।

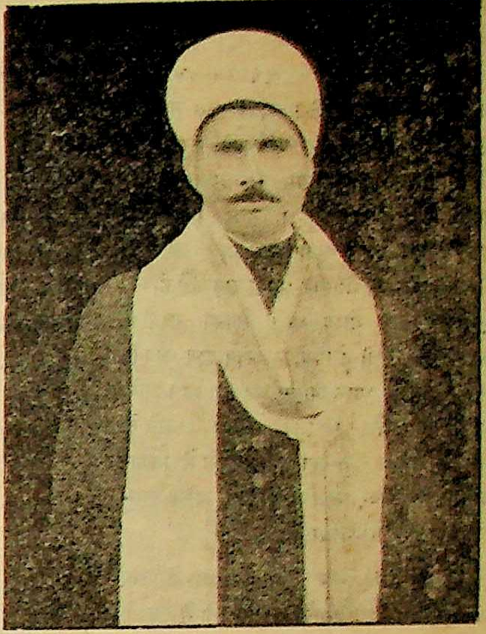

श्री. जुगलकिशोरजी बिड़ला

इसी वर्ष विद्यालय के उत्साही अध्यापक श्री परमहंसरायके उद्योगसे कामन रूम की स्थापना हुयी। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियोंको सार्वजनिक संस्थाओं के सफलता पूर्वक संचालन की व्यावहारिक शिक्षा देना था। इसके अन्तर्गत एक बॉइज पार्लमेंट भी स्थापित हुयी। कामन रूम के तत्वावधान में एक वाचनालय भी चलता था। इसी वर्ष के ललिताप्रसादजी त्रिपाठी के अध्यवसायसे विद्यालय में स्काउट असोसिशयन की भी स्थापना हुयी जिसका संबंध प्रयागस्थित सेवा समितिसे था।

सन १९३६ आया। विद्यालय के मेधावी छात्र प्रेमरतन बागड़ी को प्रवेशिका परीक्षामें छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। विद्यालय के गौरव का यह तीसरा अवसर था। कामनरूमका कार्य तूफानी वेग से चला। बच्चे इस विभागसे घुलमिल गये क्योंकि इससे उन्हें आत्मनिर्माण के विषय में सोचनेकी प्रेरणा मिलती थी।

श्री सागरमलजी नाथानी ने इसी वर्ष विद्यालयको स्काउट बैन्ड प्रदान किया। अगले वर्ष (१९३७) के दिसम्बरके अन्तिम सप्ताहमें अखिल भारतवर्षीय स्काउट मेला कलकत्तेमें हुआ। विद्यालयके लगभग ३०० बालकोंने इस मेले में भाग लिया तथा अपनी निपुणता, कार्यदक्षता और सेवा भावनामें उपस्थित करके यश ही नहीं वरन् स्काउटोंके लिये इस वर्षके सर्वोत्तम पुरस्कार के रूपमें मेला–सावल कप, मेला–डिसीप्लिन कप, एक सुवर्ण पदक, विभिन्न मुकाबलोंमें विजयके प्रमाण स्वरूप सोलह सर्टिफिकेट्स प्राप्त करनेके साथही साथ सुन्दर ढंगसे बैण्ड बजानेके उपलक्ष में अखिल भारतवर्षीय "**चैम्पियन बैन्डशिल्ड**" भी प्राप्त की।

सन् १९३८ में संचालकों ने निश्चय किया कि अधिक छात्रों को स्थान देनेका साथ संवरण कर उत्तमोत्तम शिक्षा का प्रबन्ध किया जाय। इस निश्चय के अनुसार छात्रों की संख्या ८५० रखी गयी। इन दिनों विद्यालय के साहित्य विभाग द्वारा हिन्दी साहित्य सम्मेलन की प्रथमा एवं मध्यमा परीक्षाओं के लिए विद्यालयमें केन्द्र बनानेका इन्तजाम हुआ था। कामन रूममें भी सुचारुण कार्योंके अतिरिक्त

(शेष पृष्ठ ६ पर)

श्री माहेश्वरी विद्यालय का

प्रथम दिवस की कार्यवाही

सेठ मंगतूरामजी जयपुरिया द्वारा

गत वृहस्पतिवार ता० २६-१०-४४ को स्थानीय श्री माहेश्वरी विद्यालयकी रजत-जयन्ती उत्सव के प्रथम दिन की कार्यवाही रायबहादुर सेठ मंगतूरामजी तापड़िया की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। सुबह विद्यालय-भवनमें शिव-पूजन हुआ था और छात्रोंका विराट जुलूस जो नगरकी प्रमुख सड़कोंसे होकर निकला, देखने योग्य था। सैकड़ों छात्रोंके सरपर श्वेत गांधी-टोपियोंका अपूर्व दृश्य अपनी ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट कर रहा था। आगे आगे बैड और बिगुलकी तुमुल ध्वनि से आकाश मण्डल गूंज रहा था। जुलूस में विद्यालय के अध्यापक, पदाधिकारी एवं अनेक शुभचिन्तक भी सम्मिलित थे।

दिन के ढाई बजे विद्यालय-हाल में श्री. मंगतूरामजी तापड़ियाकी अध्यक्षता में कार्यवाही शुरू हुई। सर्व प्रथम बालिकाओंद्वारा वन्देमातरम् गान होने के बाद विद्यालय के सभापति सेठ मंगतूरामजी जैपुरियाके प्रस्तावपर, मनोनीत अध्यक्षने करतल-ध्वनिके बीच आसन ग्रहण किया।

भवन ध्वजपताका से भलीभांति सजाया गया था। बहुसंख्यक शिक्षा-प्रेमी उपस्थित थे जिनमें विद्यालय के स्थायी सभापति सेठ मंगतूरामजी जयपुरिया, उनके बड़े भाई रायसाहब पूर्णमलजी जयपुरिया, सेठ ज्वालाप्रसादजी भरतिया, दीपचन्दजी पोद्दार, आनन्दीलालजी पोद्दार, बिलासरायजी केजड़ीवाल, सेठ बैजनाथजी बाजोरिया एम. एल. ए., सेठ ईश्वरीप्रसादजी गोइनका, श्री रामकुमारजी भुवालका, वसन्तलालजी मुरारका, भालचन्द्रजी शर्मा, ओंकारमल जी सराफ, सुलतीरामजी सरावगी, राधाकृष्णजी नेवटिया, काशीनाथजी गुटगुटिया, शिवकृष्णजी झंवर, वेणीशंकरजी शर्मा, दामोदरदासजी जयपुरिया, गङ्गाप्रसादजी भोतिका, वासुदेवजी थरड, कृष्णचन्द्र अग्रवाल भी दिखायी दिये।

इस शुभावसरपर देश के निम्न गणमान्य विद्या-प्रेमियों ने शुभ सन्देश भेजे। महामना मालवीयजी, श्री जाजूजी, सर पद्मपत सिंहानिया, सेठ जुगलकिशोरजी बिड़ला, घनश्यामदासजी बिड़ला, रामगोपालजी मोहता, गोस्वामी गणेशदत्तजी, सेठ मोहनलालजी जालान, मेयर आनन्दीलालजी पोद्दार, डा. श्यामाप्रसाद मुकर्जी, राय बहादुर रामदेवजी चोखांनी, श्री. मथुरादासजी मोहता, श्री. सांकृत्यायन, श्री. गोविन्दलालजी पित्ती, श्री. सुन्दरलालजी डागा, श्री. पुरुषोत्तमदासजी टंडन, श्री. वृजवल्लभदासजी मूंधड़ा, श्री. माखनलालजी चतुर्वेदी, श्री. के. एम. मुन्शी, श्री. चाँदकरणजी शारदा, श्री. भागीरथजी कानोडिया, श्री. रामगोपालजी माहेश्वरी, डॉ. हेमचन्द्रजी जोशी, श्री. रंगलालजी जाजोदिया, श्री. राधाकृष्णजी लाहोटी के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस उत्सवकी उल्लेखनीय विशेषता यह थी कि माहेश्वरी समाजके गण्यमान्य सेठ कस्तुरचन्द्रजी कोठारी कुर्सीपर बैठकर अस्वस्थताके कारण उत्सवमें पधारे थे। आपको मानपत्र प्रदान किया गया जिसमें आपके विद्यालय प्रेमकी चर्चा थी।

विद्यालयके उत्साही मन्त्री सेठ बुलाकीदास जी भट्टड़, सर्वश्री कृष्णचन्द्र कोठारी, गणेशप्रसादजी माहेश्वरी, हरिप्रसादजी माहेश्वरी, रामकृष्णजी बागड़ी और दामोदरदासजी डागाने उत्सवको सफल और आकर्षक बनानेकी पूर्ण चेष्टा की। श्री कृष्णचन्द्र कोठारी ने बड़े सुन्दर ढंग से विद्यालय इतिहास पढ़ा (जों कि इस अंक के पृष्ट ३ पर है)। इस शुभ अवसरपर सवाइका उद्योग गोष्ठी के सुप्रसिद्ध संचालक सेठ गङ्गाविष्णुजी सवाइका तथा सेठ बुलाकीदासजी भट्टड़ने विद्यालय के अध्यापकों के सम्मानार्थ एक-एक हजार रुपये प्रदान किये। आशु कवि जगमोहनलाल तथा बालकृष्णजी चतुर्वेदी ने अपने कविता पाठ से सबको प्रसन्न किया।

परम श्रद्धास्पद

श्रीमान् कस्तूरचंदजी कोठारी के

कर-कमलों में

सस्नेह समर्पित

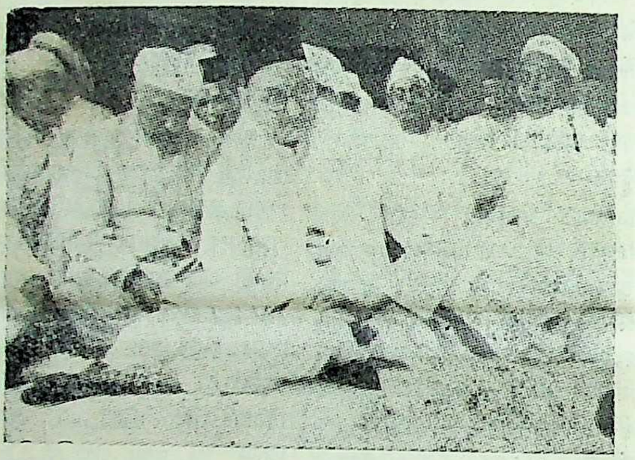

आदरणीय महानुभाव,

अमिट स्नेह और अथक परिश्रम के साथ जिसका बीजारोपण आप कुछ सज्जनों के द्वारा हुआ था, उस संस्थाका यह विशाल रूप देखकर निःसन्देह आपको हार्दिक प्रसन्नता हो रही होगी। विद्यालय के जीवन का यह दिन, आपके लिये भी आनन्द का दिन है और हमारा सौभाग्य है कि इस अस्वस्थ अवस्थामें भी आप हमारे बीच उपस्थित हो, हमें उत्साहित कर रहे हैं।

माहेश्वरी समाज ही नहीं, मारवाड़ी समाज में आपको कौन नहीं जानता? समाज की जागृति में आपका प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपसे कितना हाथ रहा है—वह यहाँ बतलाने की आवश्यकता नहीं है और न हम आज यहाँ आपकी प्रशंसा की शब्दावलि ही उपस्थित करना चाहते हैं। प्रशंसा तो उसकी की जाती है, जिसे प्रशंसा के माप-दंड से मापा जा सके। हमें तो सिर्फ एक ही बात आपसे कहनी है और वह यह कि आप विद्यालय को और हमें आशीर्वाद दें ताकि हम आपके चरण चिन्हों पर चलने का प्रयत्न कर सकें।

हम जानते हैं, विद्यालय का स्नेह आपको इस शारीरिक असमर्थता में भी यहाँ ले आया है। अतः आपको अधिक कष्ट न देकर आपके स्वास्थ्य की मंगलकामना करते हुए पुनः आपसे आशीर्वाद का आस्वान करते हैं। आशा एवं विश्वास है कि जिस प्रकार आपका पथ-प्रदर्शन आज तक हमें मिलता रहा है, उसी प्रकार भविष्य में भी मिलता रहेगा।

विनीत

माहेश्वरी भवन
कलकत्ता, २६-१०-४४

बुलाकीदास भट्टड़
मंत्री, श्री माहेश्वरी विद्यालय

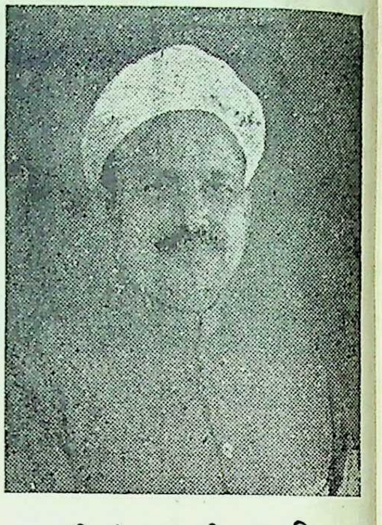

श्री. मंगतुरामजी जयपुरिया

सेठ मंगतूरामजी जयपुरियाने अपने स्वागत भाषण में कहाः—

सज्जनो,

आज हमलोग जिस महान संस्था की रजत जयन्ती मनाने को एकत्र हुए हैं उसका जन्म अक्षय तृतीया, संवत् १९७३, मई, १९१६, को बिल्कुल साधारणसी परिस्थिति में हुआ था। तब से आजतक अक्षय रूपसे हिन्दी भाषा-भाषियों की जो सेवा इस संस्था की ओरसे होती आ रही है वह किसी से छिपी नहीं है। कलकत्ते के हिन्दी भाषा-भाषियों के बाल आधुनिक शिक्षा ग्रहण कर देश और समाज के लिये विशेष रूप से उपयोगी सिद्ध हो चुके हैं। इस ओर सबसे पहले प्रसिद्ध समाज सेवी स्वर्गीय रामकृष्णजी मोहता तथा श्री जुगलकिशोर बिड़ला का ध्यान गया था। आज श्री रामकृ जी मोहता हमलोगों के बीच नहीं हैं परन्तु अपने द्वारा लगाये गए पौधे को इस विशा वृक्ष के रूप में देखकर उनकी आत्मा स्वर्गलो में अवश्य ही सन्तुष्ट हो रही होगी। इस विद्यालय की स्थापना कांजीवरम के मठाधीश श्री जगद्गुरु अनन्ताचार्यजी के कर कमलों द्वारा की गई थी और उस समय प्रधानाध्यापकका आसन हमारे सम्मानीय मित्र श्री गंगाप्रसादजी भोतिकाने सुशोभित किया था और उनकी निष्कपट सेवाओं का यह फल है कि आज हम इस संस्था की रजत-जयन्ती मनाने के लिये एकत्र हो सके हैं। विद्यालय के द्वितीय प्रधानाध्यापक श्री मूलचन्दजी अग्रवाल का नाम भी विशेष आदर के साथ लिया जायेगा। विद्यालय का प्रथम वार्षिकोत्सव महामना पण्डित मदनमोहन जी मालवीय तथा द्वितीय वार्षिकोत्सव विश्ववंद्य महात्मा गांधी द्वारा सम्पन्न हुआ। १९१ से १९२१ तक तो विद्यालय उनके विद्यार्थियों को कलकत्ता युनिवर्सिटी की परीक्षाओं के लि तैयार करता रहा, किन्तु १९२१ में असहयोग आन्दोलन के प्रभाव से अपने को यह विद्याल अलग न रख सका और इसके प्रबन्धकोंने इसे सर्व प्रथम उच्चकोटि के राष्ट्रीय विद्यालय का रूप दे डाला, तबसे १९२६ तक विद्यालय अपने परिवर्तित रूप में जनता की सेवा कर

रजत जयन्ती उत्सव

सफलतापूर्वक सम्पन्न

कालेज खोलने की घोषणा

रहा। उस समय देश के एक कोने से दूसरे कोने तक असहयोग की लहर फैली हुई थी, इसलिये इस राष्ट्रीय संस्था को सचमुच की राष्ट्रीय संस्था का रूप देना स्वाभाविक ही था। इस अवधि में विद्यार्थियों को ग्रामोद्योग की ओर विशेष रूप से आकृष्ट करने की चेष्टा की गई। और पठन पाठन के साथ ही साथ चर्खा चलाना, करघों पर कपड़ा तैयार करना और रसायन-शास्त्र का कोर्स भी सिखाया गया। उस समय तक विद्यालय माहेश्वरी भवन के वर्तमान स्थानमें चला आया था। इन ११ वर्षों में विद्यालय को स्वर्गीय रामकृष्णजी मोहता का सहयोग और नेतृत्व बराबर मिलता रहा। आपने १९१९ से १९२१ तक और १९२३ से १९२४ तक विद्यालय के मन्त्री की हैसियत से और १९२२ में सभापति की हैसियत से संस्था की सेवा की। श्री जुगलकिशोरजी बिड़ला विद्यालय के सर्व प्रथम सभापति थे। आपने १९१६, १९१७ और १९२३ में सभापतिका आसन सुशोभित किया। विद्यालय के प्रथम मंत्री श्री जीवनदासजी पुगलिया तथा उनके बाद रायबहादुर मुखलालजी करनानी, ओ० बी० ई० का नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस विद्यालय की सेवा इसके प्रारम्भिक कालमें जिन जिन सज्जनों नें सभापति, मंत्री तथा प्रधानाध्यापक की हैसियत से की है वे विशेष धन्यवाद के पात्र हैं। यह उन्हीं के साहस, लगन तथा परिश्रम का फल है कि संस्था की नींव इतनी मजबूत हो सकी है।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, १९२६ तक विद्यालय एक सोलह आने राष्ट्रीय संस्था के रूपमें समाज की सेवा करता रहा। तबतक देशके राजनैतिक वातावरण में अनेक परिवर्तन हो चुके थे इसलिये तत्कालीन प्रवन्धकों ने यह निश्चय किया कि विद्यालय को पुनः कलकत्ता विश्वविद्यालय के साथ सम्बन्धित कराया जाय तदनुसार १९२७ में माहेश्वरी विद्यालय का कलकत्ता विश्वविद्यालय के साथ पुनः सम्बन्ध स्थापित किया गया।

सज्जनों, माहेश्वरी विद्यालय ने अबतक समाज की जो कुछ सेवा की है, वह आपके सामने है, परन्तु जैसा कि अंग्रेजी में कहा गया है "You cannot have too much of a good thing." अच्छी चीज़ जितनी अधिक मात्रा में हो उतना ही अच्छा। यदि शिक्षा के मामले में भारतवर्ष की संसार के देशों के साथ तुलना की जाय तो यह पता चलेगा कि इस मामले में यह देश कितना पिछड़ा हुआ है:—

१. जापान...९९·५८ परसेण्ट, २. जर्मनी...९८ परसेण्ट, ३. संयुक्त राष्ट्र...९७ परसेण्ट, ४. कैनेडा...९५ परसेण्ट ५. इग्लैण्ड...९२ परसेण्ट ६. फ्रांस...९० परसेण्ट, ७. सोवियट रूस ८७ परसेण्ट, (१९२० में ४८ परसेण्ट था) ८. इटली...८१ परसेण्ट, ९. पोलैण्ड ७९ परसेण्ट, १० स्पेन...६८. ९ परसेण्ट, ११. टर्की...४४. ९ परसेण्ट, १२. मेक्सिको ४०. ७ परसेण्ट, १३. ब्रेजिल ... ३३ परसेण्ट, १४. मिश्र ... १४. ८ परसेण्ट, १५. भारत ... ११. १३ परसेण्ट.

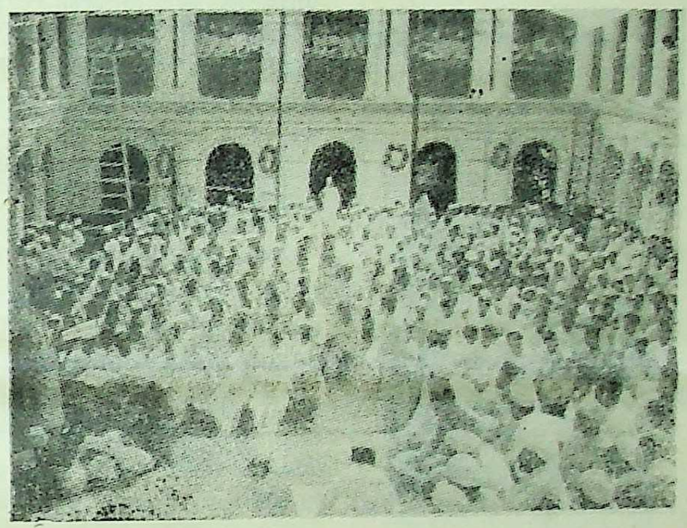

उपस्थित जनसमूह

देशका हितैषी इन आकड़ोंकी ओर लालसा भरी दृष्टिसे देखता है और उसे अपनी बेबसीपर बलात रोना आ जाता है। जो शिक्षा हमें स्कूलों और कालेजोंमें मिलती है यदि उसकी व्यावहारिक उपयोगीताकी ओरसे आंखे बंद भी कर ली जायं, तो यह शिक्षा इतनी थोड़ी मात्रामें इतने थोड़ेसे व्यक्तियोंको दी जाती है कि वह देश और समाजकी आवश्यकताओं के लिये बिल्कुल ही अपर्याप्त है। इस देश की जनसंख्या लगभग ४० करोड़ है, भारतवासियोंके पास भी मस्तिक नामक कोई पदार्थ है इसका प्रमाण हमारे वैज्ञानिक, हमारे गणितज्ञ, हमारे दार्शनिक और हमारे इण्डस्ट्रियलिस्ट भली प्रकार दे चुके हैं। यदि देशमें शिक्षा व्यापक हो तो न जाने हमारे कितने बालक अपनी प्रतिभाके प्रकाशसे संसारको चकाचौंधकर दें। अन्य देशोंमें शिक्षाकी व्यवस्था स्टेट करती है, हमारे यहां वैसी बात नहीं है। यहां शिक्षा प्रसारका भार भी समाजसेवीको ही वहन करना होता है। समाजमें समाज-सेवियोंकी कमी नहीं है, इसका ज्वलन्त प्रमाण माहेश्वरी विद्यालय है। परन्तु ऐसे अनेक विद्यालयोंको आवश्यकता है। विशेषकर कलकत्तेमें और खास तौरसे बड़ाबाजार में। क्या ही अच्छा हो यदि समाजका एक अपना डिग्री कालेज भी हो।

आगे चलकर श्री. जयपुरीयाजी ने बालकों के लिये कौनसी शिक्षाप्रणाली उपयुक्त होगी इसकी चर्चा करते हुए बतलाया कि बालकोंमें साहस, आत्माभिमान और निष्ठा उत्पन्न करनेवाली शिक्षाप्रणालियोंको हमें अपनाना चाहिये। पाश्चात्य विज्ञान से परिचित करने की महत्ता बताते हुए आपने कहा कि यह युग उद्योगधंदे का युग है और यदि बालकोंको पाश्चात्य विज्ञान से वंचित रखा गया, उन्हें पूरी तरहसे परिचित नहीं कराया गया तो उस दौड़ में वे पिछड़ जायेंगे। इस युग में प्रगतीशील शक्तिको बेंकिंग, एक्स्चेंज, इंजिनिअरींग आदि सभी का ज्ञान होना आवश्यक है।

बालकोंके शारीरिक गठन की ओर विद्यालय काफी ध्यान देता आ रहा है। इस संबंध में प्रसन्नता व्यक्त करते हुए आपने इस बात पर जोर दिया कि मारवाड़ी समाज के नवयुवकों को आधुनिक व्यायाम और खेलोंकी ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

बालकों के भोजन निद्रा एवं शारीरिक स्वच्छताकी ओर निर्दोष ध्यान देनेका आग्रह करते हुये आपने यह सुझाया कि प्रति सप्ताह अच्छे व्यक्तियों के भाषण रक्खें जायें। बालकोंको विविध कलाओंसे परिचित कराया जावे।

आपने कहा कि जिस प्रकार बम्बई के सांताक्रूज़ में स्व० सेठ आनन्दलालजी पोद्दार द्वारा स्थापित हाइस्कूल में लड़के-लड़कियों को साथ-साथ पढ़ाई होती है, उस प्रकार की व्यवस्था यहां हो तो अच्छी बात है। प्रगति के इस युगमें भी यदि हम अपने बालक-बालिकाओं को एक दूसरेसे दूर रखेंगे तो उनका दृष्टिकोण संकुचित होगा। सह शिक्षा के आलोचकोंन इससे उनकी होनेवाले दूषणों के सृजन में कल्पनासे अधिक काम दिया है।

विद्यालय का वर्तमान भवन जीर्ण हो गया है, इसका पुनर्निमाण करने की आवश्यकता है। यह नया भवन आज कल युद्धकाल में तो बनना सम्भव नहीं है, युद्ध के बाद ही बनेगा, परन्तु इसके लिये चन्दा अभी से एकत्र करना शुरू कर देना चाहिये। प्रायः १००,००० से तीन लाख की जरूरत होगी, जो समाज के उत्साही कार्यकर्त्ता आसानी से एकत्र कर सकते हैं।

यह जो नया भवन बनाया जाय—इस बात को ध्यान में रख कर बनाया जाय कि इसमें स्कूल और कालेज, दोनों की व्यवस्था हो सके। उसमें इञ्जीनियरिङ्ग—वर्कशाप और साइन्स की प्रयोगशालाका होना आवश्यक है। कामर्स, बैंकिंग इन्स्युरेन्स आदि विषय की शिक्षा की समुचित व्यवस्था भी होनी आवश्यक है। हमारे विद्यार्थियोंको व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त हो, इसके लिये यह आवश्यक है कि वे विद्यार्थी-जीवन में ही मर्केण्टाइल फर्मों, इञ्जीनियरिंग कम्पनियों एवं मिलों, प्रसिद्ध बैंकों और इन्स्योरेन्स कम्पनियों में सप्ताह के कुछ घण्टे बितायें और इस प्रकार जो कुछ वे पढ़ते हैं उसे व्यवहारमें आते देखें।

भगवानकी कृपा और अपनी जन्म सुलभ व्यापार कुशलताके कारण मारवाड़ी समाज देशके व्यापारिक और औद्योगिक क्षेत्रमें अपना निजी स्थान तैयार करनेमें सफल हुआ है। समाजके प्रमुख फर्मोंका कर्त्तव्य है कि वे विद्यालयसे निकले हुए विद्यार्थियोंको अन्य उम्मेदवारोंसे पहले मौका दें। मैं प्रान्तीयता या साम्प्रदायिकता की सलाह नहीं दे रहा हूं, पर मैं यह इसलिये कहता हूं कि मारवाड़ी पढ़े-लिखे युवक अन्य युवकोंकी अपेक्षा हमारे लिये अधिक उपयोगी सिद्ध होते हैं क्योंकि वे हमारी आवश्यकताओंको अच्छी तरह समझ सकते हैं।

इसके बाद राय बहादुर मंगतूरामजी तापड़िया का अध्यक्षीय भाषण हुआ:—

सज्जनो तथा देवियो!

श्रीमाहेश्वरी विद्यालय की रजत-जयन्ती उत्सव के सभापतित्व का गुरुतर भार दे आपने जो अनुग्रह मेरे ऊपर किया है उसके लिए मैं आपको स्नेहभरे हृदयसे धन्यवाद देता हूं।

अपने इस महानगर की जिस संस्था का रजत-जयन्त्युत्सव आप मना रहे हैं, उस पर हमारे समाज, हमारे नगर और हमारे प्रान्त को ही नहीं, वरन् समस्त देश को गर्व होना चाहिये। महाशयो! मेरे इस कथन में आपको लेशमात्र अतिशयोक्ति नहीं दिखलाई पड़ेगी, यदि आप इस संस्था के स्नातकों के उस विशाल समुदाय पर दृष्टिपात करेंगे, जो भारत के कोने कोने में छाया हुआ है। जनता-जनार्दन की सेवा का कौन क्षेत्र है, जिसके भीतर प्रवेश कर यहां के स्नातकों ने यशार्जन नहीं किया है? उद्योग और कलाकौशल का कौन सा आंगन है, जिसमें यहां के स्नातकों ने अपनी कीर्ति-कौमुदी नहीं बिखेर दी है? सज्जनो! इस विद्यालय का अतीतकाल जैसा गौरवमय रहा है, इसका वर्तमान भी उससे कम समुज्वल नहीं है। इस संस्था के विद्यार्थी जिस द्रुतगति से युग के साथ रहकर शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अग्रसर होते जा रहे हैं, उसे देख कर किसको गर्व न होगा?

विद्यालय की रिपोर्ट एवं इस संस्था के विषय में जो कुछ मैं जानता हूं उससे विदित

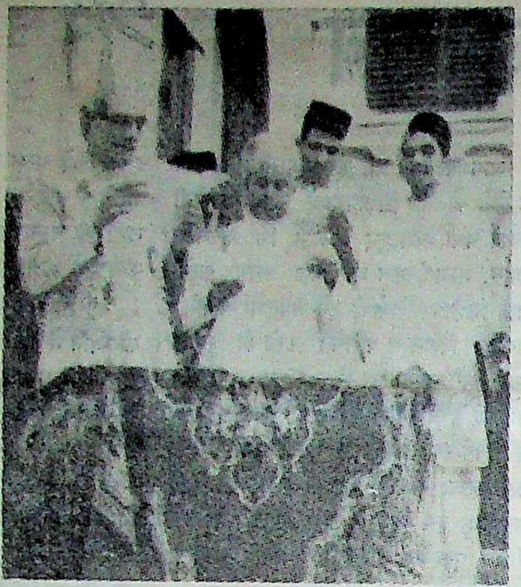

रा. ब. मंगतूरामजी तापडिया अपना भाषण पढ़ रहे हैं, पासमें श्री. बुलाकीदासजी भट्टड़ खडे हैं।

होता है कि विद्यालय की नित्य बढ़ती हुई लोकप्रियता ने देश के कोने-कोने से शिक्षार्थियों को विद्यालय की ओर आकर्षित किया है। कितने ही ज्ञान-बुभुक्षित छात्र प्रतिवर्ष आशा भरे हृदय से ज्ञान-दान की याचना करते हैं। पर अफसोस! भारी दिलके साथ उन्हें स्थानाभाव के कारण निराश कर देना पड़ता है। क्या यह शोचनीय अवस्था नहीं है? हमारे समाज में धनी एवं उत्साही दानवीर सज्जनों की कमी नहीं, अतएव वर्तमान समय में उच्चकोटि की शिक्षाके महत्वको सामने रखकर प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा ही नहीं, वरन् कर्तव्य होना चाहिए कि वे इस प्रकार की जीति जागती संस्थाओं को मुक्त-हस्त से आर्थिक सहायता प्रदान करें, ताकि उनका कार्य सुचारु रूपसे चल सके और उनके छात्र शिक्षा-मार्ग में सोत्साह आगे बढ़ते जायँ। इतना ही नहीं, मेरा तो यहां तक निवेदन है कि इस शुभ अवसर पर एक वृहत सर्वांग सुसज्जित 'कालेज' के संस्थापन का संकल्प भी किया जाय, तो बड़ी ही अच्छी बात होगी। स्कूल-शिक्षा के बाद हमारे समाज के छात्रों को कालेज-प्रवेश सम्बन्धी जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, उनसे आप पूर्णतया परिचित हैं। अतएव यह बड़ा ही उपयुक्त समय है कि आप लोग मेरे इस निवेदन पर सम्यक रूप से विचार करें और इस कालेज के प्रश्नको शीघ्र ही मूर्त्त रूप दें।

महानुभावो! हमें इस बात का कम गर्व नहीं है कि युद्ध की विभीषिका से त्रस्त होकर जिस समय नगर की अधिकांश शिक्षण-संस्थाएँ अपना दरवाज़ा बन्दकर विश्राम ले रही थीं, उस समय भी यह विद्यालय खुला रहा है। हमें स्वीकार करना ही होगा कि विद्यालय की दृढ़ता को इस प्रकार कायम रखने का श्रेय विद्यालय के शिक्षक वर्ग को है, जिसका प्रत्येक सदस्य सर्वदा अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहता आया है। हम अपने कर्तव्य के प्रति विमुख होते हुए दिखाई देंगे, यदि हम उस कर्मठ नवयुवक को स्मरण नहीं करते, जिसने अपनी निःस्वार्थ सेवा, निराली कर्तव्य-निष्ठा, तथा अटूट अध्यवसाय से विद्यालय को भीषणतम कठिनाइयों के बीच से बेदाग निकाल लिया है और वे हैं, विद्यालय के मंत्रित्व-भार को एक दशाब्द से भी अधिक समय तक योग्यता एवं कुशलता पूर्वक सँभालनेवाले श्री बुलाकीदासजी भट्टड़। यह विद्यालय का सौभाग्य है कि उसे ऐसा कर्मठ और सुयोग्य मंत्री मिला है।

विद्यालय-कमिटी के उन सभी सदस्यों को भी बधाई दिए बिना मैं नहीं रह सकता, जिन्होंने अपना अमूल्य समय विद्यालय की हित चिन्तना में लगा कर इसके मार्गको प्रशस्त किया है।

उपस्थित श्रीमन्तो! अन्त में मैं आपको एक बार फिर धन्यवाद देता हूं और इस आशा भरे हृदयसे अपना स्थान ग्रहण करता हूं कि दिन पर दिन अग्रगमन करते हुए विद्यालयका भविष्य जितना उज्वल दिखाई देता है, उससे भी उज्वलतर बनाने की आप चेष्टा करेंगे।

श्री. मूलचन्द्रजी अग्रवाल

कालेज की घोषणा

जब "विश्वामित्र" संचालक श्री मूलचन्द्रजी अग्रवाल भाषण देने खड़े हुए, तो उन्होंने इस बातपर हर्ष और सन्तोष प्रकट किया कि एक ही नामधारी सभापति दो रूप में यहां विद्यमान हैं, जो शिक्षा के महत्त्व को भली भांति समझते हैं। मारवाड़ी समाज हर साल लाखों रुपये दान में व्यय करता है और वैश्योंका यह धर्म ही है कि अर्जित धन का कुछ अंश दान में लगाये (करतल ध्वनि) आपने कहा कि आप लोग और भी जोरसे करतल ध्वनि और साधुवादके लिये तैयार हो जायें, जबकि मैं शिक्षाप्रेमी सेठ मंगतूरामजी जयपुरियासे यह भार स्वीकार करा लूं कि बड़ेबाजारमें आपको आज ही एक कालेज की घोषणा कर देनी होगी (लगातार करतल ध्वनि) उपस्थित मित्रोंके अनुरोधपर सौजन्यशील जयपुरियाजी अपने बड़े भाई राय साहब सेठ पूर्णमलजी जयपुरियाका आशीर्वाद लेते हुए उठे और आपने महान् करतल ध्वनिके बीच घोषणा की कि जयपुरिया परिवार बड़ेबाजारमें एक कालेजका भार अपने दुर्बल कन्धोंपर इसी आशा और विश्वासपर लेता है कि आप सब भाई इसे अपनी ही चीज़ समझेंगे।

अग्रवालजीनें जयपुरिया परिवारको स्मरणीय घोषणाके लिये बधाई देते हुए जनतार्दनके सहयोग और आशीर्वादका आश्वासन दिया। फिलहाल बड़े बाजारमें एक कालेजकी जो आवश्यकता अनुभव की जाती थी, उसकी पूर्तिके निश्चयपर हर्ष प्रकट किया गया तथा श्रोताओंनें वर्तमान समयमें बड़ेबाजारके क्षेत्रके लिये एक ही कालेजको काफी बताते हुए जयपुरियाजी द्वारा ही सामूहिक भार ग्रहण करनेपर सन्तोष प्रकट किया। जयपुरिया बन्धुओंको मालाएं पहनायी गयीं। श्री बालमुकुन्दजी डागाने शिक्षाके वास्तविक स्वरूपपर सारगर्भित भाषण देते हुए अविभावकों एवं विद्यालयके संचालकोंसे विशेष ध्यान देनेको कहा।

पश्चात् विद्यालय के मन्त्री श्री. बुलाकीदासजी भट्टड़ने समस्त अध्यापकोंको रजत-मुद्रायुक्त चांदीकी एक-एक तश्करी देकर पुरस्कृत किया।

अन्तमें आशुकवि पं० जगमोहननाथजीने अपने काव्य में ही उत्सवका अजीब चित्र खींच कर अपनी प्रतिभाका सुन्दर परिचय दिया और कार्यवाही सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गयी।

उत्सव-समारोहमें भाग लेनेके लिये समस्त मारवाड़ी समाजके हजारों व्यक्तियों के अलावा दूसरे समाजों के लोग भी पधारे थे और माहेश्वरी विद्यालय एवं माहेश्वरी सभा तथा रजत-जयन्ती उत्सव कमिटी के अधिकारी समागतोंका स्वागत सत्कार बड़े प्रेमपूर्वक कर रहे थे।

[पृष्ठ २ का शेष]

आप लोग लिख पढ़कर निकलेंगे तब आप भारतीय नागरिक होंगे।

अस्तु, आप लोगों की शिक्षा इसी विचार के आधारपर होनी चाहिए। नागरिक के रूप में आप सब की अपने चारों ओर के समस्त व्यक्तियों के प्रति अपने कर्तव्य अनुभव करने होंगे और अपनी योग्यता के अनुसार उनका पालन करना चाहिए।

जो अनपढ हैं, उन्हें आपको अपने शिक्षणसे लाभ पहुंचाना चाहिए। आपको अपनी हमजोली के एवं अपने से बड़े बच्चे तक की सहायता करने का प्रयास करना चाहिए। सहायता का अर्थ सिर्फ यही कि आप जो कुछ जानते हैं उससे दूसरेकोभी लाभ पहुंचाइये। गरीब लड़को के लिए जिन्हे किन्हीं कारणों से पढ़नेका ठीक से मौका नहीं मिला रात्रि पाठशालाएं खोलिए, प्रतिदिन थोडा समय उन्हें शिक्षित करने में लगाइये। सर्वोपरि एक ऐसी चीज है जो भावी जीवनमें आचरण पर बुरा प्रभाव डालती है। वह ऐसी चीज नहीं कि खुद छात्र उसपर नियंत्रण कर सके। वह यह है कि लड़का जब तक स्कूलमें रहे, तब तक उसे कभी भयभीत न किया जाय। बहुत थोड़े लोग इसका महत्व अनुभव करते हैं। नवयुवकोंके साथ कड़ा व्यवहार न किया जाना चाहिए। कठोर और क्रोधसे सने हुए शब्दोंके प्रयोग और निर्दयता से उन्हें बचाना चाहिए। छोटे बच्चेके साथ दया और भद्रतापूर्वक व्यवहार किया जाना चाहिए। आपको उसे आकृष्ट करना चाहिए न कि भगा देना चाहिए शिक्षा का यही तत्व है और इसपर पुरुष या स्त्री का आचरण निर्भर करता है। बच्चोंका जितना ही अधिक आप अध्ययन करेंगे, उनके संबंध में उतनी ही अधिक जानकारी प्राप्त करेंगे। यदि बच्चे को भयभीत करोगे तो वह कायर बन जायगा और उसको झूठ बोलने की लत जायगी। बच्चे दण्डित किये जाने के भय असत्य बोलना शुरु कर देते हैं। वे ५० प्र शत तक झूठे बोलते हैं। इस बात की सावधा रखिये कि वे झूठ न बोलें।

नागरिक वह व्यक्ति है, जो बहुजन समा का हितचिंतन करता है। वह समाज को प्र स्थान देता है और स्वयं अपने को द्वितीय। अ नागरिक की कसौटी यह है कि वह अपने को सफ व्यक्ति बनाने में ही अपनी सारी शक्ति और सम न लगाये। खेलों में आप लोगों की दिलचस होना चाहिए क्योंकि ये कर्तव्य और अ शासन का पाठ पढ़ाते हैं।*

---

*१९ सितम्बर १९२३को पचापियप्पा काले मद्रास में लेखिका द्वारा दिया गया भाषण।

[पृष्ठ ३ का शेष]

इस वर्ष बाहरके विद्वानों को आमन्त्रित क छात्रोंके सामने उनके व्याख्यान आदि कराये।

विद्यालय की प्रगति अविरत हो रही है बीचमें कुछ काल के लिये (१९४२) के श में। युद्धजन्य परिस्थिति से विद्यालय बन्द हुअ था ता. ३० नवम्बर १९४२ को विद्यालय खोल दिया गया। छात्रों की संख्या तेजी से बढ़ने लगी। विद्यालयके विभिन्न अंगोंकी प्रगति पूर्ववत शुरु हुयी।

कलकत्ता कारपोरेशनने विद्यालयको ३६ व ४० में क्रमशः ६००) तथा ७००) क सहायता दी एवं श्री ज्वालाप्रसादजी भरतिय छात्रवृत्ति प्रदान करनेके लिये १००० विद्यालयको देनेकी उदारता दिखाई। सन' ३१ से लेकर आज तक विद्यालयके मन्त्रित्व भारको जिन्होंने संभाला है, उन श्री बुलाकीदासजी भट्टड़की सेवाएं उल्लेखनीय हैं। इन बारह वर्षोंके सुदीर्घकालमें उन्होंने जिस लगन, निष्ठा और कार्यकुशलताके साथ विद्यालयके कार्यको आगे बढ़ाया है, कठिनाइयों और अड़चनोंका सामना किया है एवं भावी कार्यकर्त्ताओंके सामने एक आदर्श रखा है— निश्चय ही वह अभिनन्दनीय है। श्री भट्टड़जीके अतिरिक्त विद्यालयको समुन्नत रूप देनेमें विद्यालयके अन्य हितैषियोंने भी कम कार्य नहीं किया है। इनमें सर्वश्री रामरतनजी मोहता; लक्ष्मणदासजी बिन्नानी, गोविन्ददासजी अजमेरा, रामचन्द्रजी मिश्र, रामकुमारजी गोयनका, सुन्दरलालजी दम्मानी, गेणशप्रसादजी माहेश्वरी एवं नरसिंहदासजी चाण्डक आदिके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

विद्यालयका यह सौभाग्य है कि इसे सर्वदासे ही सुयोग्य अध्यापकों का सहयोग मिलता रहा है, जिन्होंने विद्यालयकी सर्वाङ्गीण समुन्नतिके लिये शक्तिभर अपनी सेवाएं दी हैं। इसे आज इस रूपमें लानेका सारा श्रेय इन अध्यापकवृन्दको ही है, जो विद्यार्थियोंकी उन्नतिके लिये सभी सम्भव साधनोंसे सचेष्ट हैं।

विद्यालय अपने जीवनके पच्चीस वर्ष पूरेकर चुका है। सेठ युगलकिशोरजी बिड़लाकी कर्मनिष्ठा आज भी इसका पथ प्रदर्शन कर रही है।

यह है विद्यालयका संक्षिप्त इतिहास, जो विद्यालयके संचालकों एवं कार्यकर्त्ताओंके उत्साह और विद्या प्रेमका परिचायक है। रजत-जयन्तीके इस मङ्गलमय अवसर पर हम उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं और यह कामना करते हैं कि विद्यालय उत्तरोत्तर उन्नति करता रहे।

रजत जयन्ती उत्सव

भुवालका वंधुओंद्वारा महिला कालेजकी घोषणा

स्त्री-शिक्षा के लिये बिन्नानीजीने ५१ हजार

माहेश्वरी विद्यालयमें उत्सवका द्वितीय दिवस

कलकत्ता, २७ अक्तूबर। आज शुक्रवारको सन्ध्या समय माहेश्वरी भवनमें श्री माहेश्वरी विद्यालयके रजत-जयन्ती उत्सवकी दूसरे दिनकी कार्यवाही डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जीके सभापतित्वमें आरंभ हुई। प्रथम दिवससे आज बहुत अधिक भींड़ था एवं गण्यमान्य सज्जनोंसे सभास्थल ठसाठस भरा हुआ था। प्रारम्भिक गायन एवं मंगलाचरणके उपरान्त कार्यवाही आरम्भ हुई। विद्यालय के उत्साही युवक मन्त्री श्री बुलाकीदासजी भट्टड़ने त्रैवार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनायी जिसमें विद्यालयकी बिभिन्न क्षेत्रोंमें प्रगतिका सुन्दर सिंहावलोकन था। डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जीने भाषणमें छात्र समुदायको प्राचीन भारतीय संस्कृतिका अनुकरण करनेका उपदेश दिया और वर्तमान शिक्षा पद्धतिपर अपने विचार प्रगट करते हुए बड़ेवाजारके निवासियोंसे अपने बालक एवं बालिकाओंको शिक्षित बनानेकी जोरदार अपील की। बालिकाओंकी शिक्षाकी खास तौरसे चर्चा करते हुए आपने कहा कि जहां हम एक और बड़ेवाजारमें शीघ्र ही बालकोंके निमित्त एक कालेजकी स्थापनाकी आशा करते हैं और उसके निमित्त दानकर्त्ता सुप्रसिद्ध जयपुरिया परिवारको हार्दिक बधाई देते हैं वहां मेरे हृदयमें महिलाओंकी शिक्षाके लिये एक महिला कालेज बड़ेबाजारके देखनेकी उत्कट अभिलाषा है। आपने उपस्थित शिक्षा-प्रेमी धनीमानी सज्जनोंसे इस ओर ध्यान एवं सहयोग देनेकी अपील की और आशा प्रकट की कि आज ही इस सुअवसरपर कलकत्तेके सुपरिचित भुवालका बन्धु इस दिशामें अग्रसर होकर एक महान आवश्यकताकी पूर्ति करेंगे। करतल ध्वनिके बीच मेसर्स शोभाराम केशवदेव फर्म और श्री राधेश्याम काटन मिलके उत्साही संचालक तथा सुपरिचित समाजसेवी श्री इन्द्रचन्द्रजी भुवालकाके ज्येष्ठ भ्राता श्री नागरमलजी भुवालकाने डा० मुकर्जीकी अपीलपर बड़े बाजारमें शीघ्र ही भुवालका परिवारकी ओरसे महिलाओंकी उच्च शिक्षाके निमित्त एक महिला कालेजकी स्थापना करनेकी घोषणा की। श्री बसन्तलालजी मुरारकाने भुवालका परिवारका परिचय देते हुए हार्दिक बधाई दी और जनताके पूर्ण सहयोगका आश्वासन दिया।

इस अवसरपर ही स्त्री-शिक्षा प्रचार कार्यके निमित एक दूसरी प्रशंसनीय घोषणा सेठ बालमुकुन्दजी डागानें उपस्थित सज्जनोंके सम्मुख मेसर्स मथुरादास गोवर्द्धनदास फर्मके मालिक सेठ गोवर्द्धनदासजी बिन्नानीकी ओरसे ५१ हजार एक रुपयेकी घोषणा की। उसके निमित शीघ्र ही एक बोर्ड गठित किया जायगा जो निश्चय करेगा कि स्त्रीशिक्षा प्रचार सम्बन्धी सभी सम्भव उपाय काममें लायेगा। पारितोषिक वितरणोत्सवके आज की बाद कायवाही समाप्त हुई।

तृतीय दिनका समारोह

पूर्व सूचनानुसार श्री माहेश्वरी विद्यालयका तृतीय दिनका महोत्सव बड़े समारोहके साथ नियत समयपर श्री ईश्वरीप्रसादजी गोयनकाके सभापतित्वमें प्रारम्भ हुआ। उपस्थिति आशातीत दिखाई पड़ी। आबाल, वृद्ध, बनिता, युवा, प्रौढ़ व्यक्तियोंसे विशाल भवन नीचेसे ऊपरतक ठसाठस भरा हुआ था। विशिष्ट व्यक्तियोंमें से सर्व श्री अवस्थीजी आशु कवि, मंगतूरामजी जैपुरिया, केशवदेवजी जालान मूलचद्रन्जी अग्रवाल, सीतारामजी सेकसरिया, बसन्तलालजी मुरारका, शिवकृष्णजी झंवर, गणेशदासजी मिमानी, ग्वालदासजी डागा, शिवरतनजी बिन्नानी, इन्द्रचन्द्रजी भुवालका, रामकुमारजी भुवालका आदि व्यक्ति देखे गये।

सर्वप्रथम शिवकृष्णजी झंवरने अपने ओजस्वी भाषणमें माहेश्वरी समाज द्वारा बड़ेबाजारमें एक बहुत बड़े अभावकी पूर्तिके लिए इस कार्य के प्रमुख सहायकोंको विशेष रूपसे बधाईका पात्र बतलाते हुए टेकनिकल शिक्षापर अधिक जोर दिया। शिक्षा महत्वको समझाते हुए बालकोंकी ही भांति बालिकाओंकी सुशिक्षित बनोने पर भी प्रकाश डाला। इसके बाद गोवर्धनदासजी बिन्नानीने अपना लिखित वक्तव्य पढ़ सुनाया। जिसमें आपने अपनी आई हुई समाजकी खटकनेवाली कुरीतियोंके सुधार तथा महिला समाजको विदुषी बनानेपर जोर दिया। तदुपरान्त विद्यालयके विद्यार्थियों द्वारा कलापूर्ण सितारकी सुमधुर ध्वनि सहित वाद्य प्रदर्शन हुआ। इस के बाद तुलसीरामजी सरावगीने सभा की इच्छानुसार मारवाड़ी भाषामें ही वक्तृता दी। आपने कहा कि आज हमारे समाजमें धनकी कमी नहीं है। लखपति, करोड़पति, अरबपतिही नही वर खरबोंतक रुपीया हमारे मारवाड़ी समाजके पास में है। यह भी सच है कि आजकाल सब काम रुपये के बलपर ही चलता है तथापि हमारे समाजको यह याद रखना चाहिये कि सब कुछ रुपया ही नहीं है। विद्या यदि नहीं है तो मनुष्य मनुष्य कहलाने योग्य नहीं होता। अथच हमारे समाज की विद्याकी ओर द्रुतगतिसे अग्रसर होना नितान्त आवश्यक है। महिलाओंको भी इस ओर कदम बढ़ाना चाहिये, महिलायें जबतक विदुषी नहीं होंती तबतक अर्जुन भीम शिवजी प्रतापजी जैसी सन्तानें उनसे नहीं हो सकतीं। सीतारामजी सेकसेरियाने परदा प्रथा पर बड़े मर्मस्पर्शी शब्दोंमें प्रकाश डाला। आपने बताया कि हमारे समाजमें आज भी अन्धकारमें छिपने की मनोवृत्ति बनी हुयी है। जबतक हमारे समाजकी महिलायें परदेके अन्धकारमें छिपी रहेंगी, तबतक समाज वहांका वहीं बना रहेगा। बालिकाओंको शिक्षित करना नितान्त आवश्यक हो उठा है। जिस प्रकार बालकोंको शिक्षा दी जाती है, उसी प्रकार बालिकाओंको भी शिक्षित बनाया जाय। इसके उपरान्त आशुकविकी समाजकी रूढ़ संस्कृति पर धारा प्रवाह कविता हुई। जिसपर कुछ व्यक्तियोंनें पुरस्कृत करनेका विचार किया। उन्होंने अपने ग्रामके एक सरस्वतीजीके मन्दिरके जीर्णोद्धारके हेतु कहा। इसपर माहेश्वरी विद्यालय की समिति द्वारा ५०१) प्रदान किया गया। १०१) मंगतरामजी जैपुरियाने १०१) बैजनाथजी बियानी १०१) बालकिशनजी मोहता १०१) मूलचन्दजी अग्रवाल १०१) इस्वरीप्रसादजी गोयनका १०१) गणेशप्रसादजी माहेश्वरी तथा १०१) और एक सज्जनने प्रदान किया। इसके बाद सभापति महोदय ने अस्वस्थ होनेके कारण संक्षेपमें अपने भाषणमें शिक्षापर अधिक जोर दिया। तत्पश्चात विद्यालयके बालकों द्वारा व्यायाम कलाका प्रदर्शन हुआ, इसके बाद समारोह समाप्त हुआ।

हमारा राजस्थान

बीकानेर दमन विरोधी दिवस

समस्त राज्यों के लिए २६ अक्तूबर का कार्यक्रम

सीकर जिला राजनैतिक सम्मेलन के अवसर पर रामगढ में संगठित किए गए राजस्थान कार्यकर्ता संघ ने एक प्रस्ताव में बीकानेर के शान्त एवं रचनात्मक कार्यों में संलग्न नेताओं की अनिश्चित काल के लिए की गई नजरबन्दी पर बीकानेर सरकार की निन्दा का प्रस्ताव पास किया और उनकी शिक्षा रिहाई की मांग की।

राजस्थान कार्यकर्ता संघ २६ अक्तूबर को समस्त देशी राज्यों में बीकानेर दमन विरोधी दिवस मनाया गया: उस दिन श्री रघुवरदयाल वकील तथा उनके साथियों की गैर कानूनी रूप से की गई गिरफ्तारी और नजरबन्दी का विरोध किया गया तथा उनकी रिहाई पर जोर दिया गया।

राजस्थान कार्यकर्ता सम्मेलन

अलवर में १७,१८ और १९ नवम्बर को राजस्थान कार्यकर्ता संघ का जो सम्मेलन हो रहा है उसके लिए अलवर राज्य प्रजामंडल ने १० अक्तवूर की कार्यक्रम आदि पर विचार किया। सम्मेलन में संघ का विधान और सब राज्यों के लिए समान नीति और कार्यक्रम स्वीकृत होगा।

भरतपुर धारासभा में ६ बार वाक आउट

भरतपुर राज्य की धारासभा का बजट अधिवेशन १० दिन की कार्रवाई के बाद जब समाप्त हुआ तो उसमें बडी उत्तेजना का वातावरण था। इन दिनों में सरकार ने ४ बिल शीघ्र राय देने के लिए पेश किए जिसके विरोध में प्रजापरिषद के सदस्यों ने ६ बार वाक आउट किया। कर्जा कानून बिल को पेश करने के लिए उपस्थिति पर्याप्त रखने के लिए सरकारी दल के नेता ने प्रजापरिषद दल को यह आश्वासन दिया था कि यदि बिल पढ़े जाने के के बाद प्रजापरिशद दल उसे जनमत जान ने के लिए स्थगित करने का सुझाव रखेगा तो सरकारी दल उसे स्वीकार कर लेगा, लेकिन अवसर निकल जाने पर यह आश्वासन पूरा नहीं किया गया। सरकार के इस बार के रुख से जनता की यह धारणा हो गयी है कि सरकार जनता की उचित मांग और आकांक्षाओंकी पूर्ति के लिए बढ़ना नहीं चाहती, बल्कि निर्वाचित सदस्यों के मतभेदोंसे लाभ उठाना चाहती है।

दिगम्बर जैन महासभा

अ. भा. दिगम्बर जैन महासभा का वार्षिक अधिवेशन १३ और १४ दिसम्बर को उज्जैन में होना निश्चित हो गया है। सरधना और अन्य स्थानों से प्राप्त हुए निमंत्रणों पर भी विचार किया गया लेकिन उज्जैन के पक्ष में प्रबन्धकारिणी के सदस्यों के अत्यधिक बहुमत प्राप्त होने से उज्जैन में ही अधिवेशन करने का निश्चय किया गया।

टेहरी के पुलिस अफसर विदा

श्रीदेव सुमन की जेल में हुई मृत्यु के सम्बन्ध में टेहरी के महाराजा ने जो जांच कराई थी उसके फलस्वरूप टेहरी में कई परिवर्त्तन होने की खबर है। राज्य की पुलिस के सुपरिन्टेन्डेन्ट सरदार हरदत्तसिंह अपने सामान सहित देहरादून एक वर्ष की छुट्टी गए हैं। खयाल किया जाता है कि यह छुट्टी उनकी अन्तिम विदाई है। डाक्टर, जेलर, तथा एक अन्य व्यक्ति के, जिनका श्रीदेव सुमन की मृत्यु से सम्बन्ध है, भी जल्दी ही जाने की चर्चा है। महाराजा ने दीवान के पद पर अपने मामाको नियुक्त किया। सनातन धर्म महावीरदल ऋषिकेश के ब्रम्हचारी कुंजबिहारी मिश्र ने टेहरा नरेश को श्री देवसुमन की मृत्यु की जांच के सम्बन्ध में लिखा था, किन्तु उसका कोई उत्तर नहीं मिला। पत्र की नकल उन्होंने म. गान्धी को भी भेजी थी। महात्माजी ने उनके सम्बन्ध के कागजात मंगाए हैं।

मेवाड़ में निर्वाचित असेम्बली की मांग

मेवाड़ प्रजामंडल की बैठक अभी हाल में श्री माणिकलालजी वर्मा की अध्यक्षता में हुई थी। इसमें एक प्रस्ताव पास करके राज्य से प्रार्थना की गई कि वह सन् १९४१ के प्रस्तावित असेम्बली के विधान को जनता के प्रमुख व्यक्तियों की सलाह से आवश्यक संशोधन के बाद शीघ्रातिशीघ्र कार्य में परिणत करे। साथ ही जनता की नागरिक स्वतंत्रता की घोषणा की जाय और उदयपुर तथा अन्य प्रत्येक कस्बे में निर्वाचित म्युनिसिपैलिटियां कायम की जायें।

श्री दुर्गादत्त जी कड़ियां की गिरफ्तारी और रिहाई

झुंझुनू में प्रजामंडल समिति के खजानची श्री दुर्गादत्त जी कड़ियां की गिरफ्तारी पर दिवाली के दिन हड़ताल हो गयी। बहुत दौड़ धूप करने पर वे रिहा किये गये उनकी। दवाओं की एक साझे की दूकान है जिसका सारा कामकाज उनके साझदार करते हैं। पुलिस ने उसीके सम्बन्ध में श्री कड़ियां जी को कण्ट्रोल से अधिक मूल्य लेने और रुपए के नोट पर बट्टा लेने के आरोप में गिरफ्तार किया था।

राजस्थानी संसार

सूचना

अ. भा. चरखा संघ के मंत्री श्रीमान् श्री कृष्णदासजी जाजु ने श्रीरामकिशनजी धूत को हैद्राबाद विभाग के वास्ते मध्यप्रांत महाराष्ट्र चरखा संघ का सहकारी मन्त्री नियुक्त कीया है। श्री धूतजी ने चरखा संघ के हैद्राबाद विभाग के कामकी देखभाल प्रारंभ कर दी है। चरखा संघके वास्ते एक लाख रुपीया फंड जमा करने का जो खादी प्रचार संघ ने निश्चय किया था उसमें रु. ४००००) जमा हो गये है। रियासत में इस समय लगभग एक लाख रुपीये महीने की खादी तय्यार हो रही है।

——संवाददाता

श्री मुछालजी को अभिनंदन पत्र भेट

इन्दोर के सुप्रसिद्ध व्यवसायी श्री बालकृष्णजी मुछाल मालिक फर्म सेठ लक्ष्मीचंदजी मुछाल को हिज हाइनेस होल्कर महाराज ने मशीर बहादुर की पदवी प्रदान की है। जिसके उपलक्ष में वहां के क्लॉथ मर्चेंट्स एसोसिएशन की ओर से आपको अभिनंदन पत्र भेंट किया गया।

हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी राजस्थानी सम्मेलन का अधिवेशन हो

हैद्राबाद स्टेट मारवाड़ी राजस्थानी सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन हैद्राबाद शहर में नवम्बर सन् १९३९ में तथा दूसरा अधिवेशन सन् १९४१ में औरंगाबाद में अपूर्व उत्साह व समारोह पूर्वक मनाया गया। यदि मैं यह कहूं कि आशातीत सफल हुये तो कोई अतिशयोक्ति न होगी। उनके कुछ संस्मरण अमिट हैं-विभिन्न विचारधाराओं के व्यक्तियोंने एक मंच पर संगठित होकर आपसी प्रेम, और एकता के आदर्श उपस्थित किया तथा साबित कर दिया कि मारवाड़ी समाज केवल व्यापार में ही अग्रसर नहीं, अपितु सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनैतिक प्रवृतियों में भी प्रगती पथपर है, और उसमें उग्र से उग्र नीति के अनुयायी भी हैं। सम्मेलनों के अधिवशनोंने संसारपर प्रदर्शित कर दिया कि हमारा मूल स्थान राजस्थान होनेपर भी हम जिस प्रांत में रहते हैं उसी को मातृभूमि समझते हैं और यहां की हर प्रवृत्ति में समरस होना चाहते हैं।

किंतु खेद के साथ कहना पड़ता है कि प्रथम अधिवेशन से द्वितीय अधिवेशन तक और दूसरे अधिवेशन के पश्चात अबतक सम्मेलन की ओर से कोई नाममात्र का भी काम नहीं हुआ है। सम्मेलन ने जो प्रस्ताव स्वीकृत किये हैं। उन्हें कार्यान्वित करने के लिये कार्यकारी, स्थायी या उपसमितियों की शायद एकाध ही बैठक हुई हो। म इसके लिये किसी व्यक्तिको अथवा पदाधिकारियों को दोष नहीं देता। मुमकिन है कि उत्कट इच्छा होनेपर भी परिस्थिति अनुकूल न होनेसे वे कुछ न कर सके होंगे।

अब समय आया है कि गतिरोध को तोड़ दिया जाय और ठोस कार्य की ओर अपनी सारी शक्तियां खर्च की जांय। आज हमारे, सामने कतिपय जटील समस्याएं उपस्थित हैं। बालविवाह, वृद्ध विवाह, कन्याविक्रय, ओसर मोसर, रास्ते से गीत गाना आदि पुराने प्रश्न मालूम होते हैं किंतु अभी इनका समूल नाश नहीं हुआ है। अब भी आये दिन इनके उदाहरण मिलते हैं। शिक्षा का परिणाम बढ़ रहा है लेकिन उसको अभी और गति देनेकी आवश्यकता है। मातृभाषा का प्रश्न अभी वैसा हो है। व्यापार पद्धति को नये ढांचे में ढालनेकी तथा युद्धोत्तर योजना बनाने की अत्यंत आवश्यकता है। व्यापारिक शिक्षा का कोई प्रबंध नहीं है। और सबसे भयानक व महत्वपूर्ण समस्या सरकारी प्रतिबंधनों के कारण व्यापार में रुकावटें पैदा होगयी हैं जिसके कारण बेकारी फैल रही है। याने मसला गंभीर होता जा रहा है। उसपर भी विचार करना आवश्यक है। आये दिन गुंडों के उत्पात रीयासत में बढ़ते जा रहे हैं उनपर प्रतिबंध डालने तथा प्रजा का सुरक्षा की सरकार के पास आवाज पहुंचानी है।

इसलिये मेरी समाज के प्रत्येक व्यक्ति से प्रार्थना है कि वह अधिवेशन की आवश्यकता को अनुभव कर उसकी तैयारी में प्रयत्नशील हो। आपको याद होगा कि औरंगाबाद अधिवेशन के अवसर पर लातूर निवसियों ने आगामी अधिवेशन के लिये निमंत्रण दिया था। अब लातूर में या अन्य स्थान पर जहां परिस्थिति अनुकूल हो, शीघ्र ही अधिवेशन बुलाना चाहियं। मुझे विश्वास है कि समाज उन्नतिप्रेमी तथा सम्मेलन के पदाधिकारी इस ओर ध्यान देंगे।

भवदीय—**भगवानदास झंवर**
सुल्तान बाजार, हैदराबाद (दक्षिण)

मारवाड़ी सम्मेलन, बम्बई

राजस्थान में मलेरिया संकट के निवारणार्थ विचार करने के लिए कल ता. २५–१०–४४ को मारवाड़ी सम्मेलन कार्यालय में मारवाड़ी रिलीफ कमेटी की एक बैठक श्रीयुत सेठ घनश्यामदासजी पोद्दार की अध्यक्षता में हुई, जिसमें नगर के कुछ गण्यमान व्यक्ति भी निमन्त्रित किए गये थे। उपस्थित सज्जनों में स्वनामधन्य श्रीयुत श्रीनिवासजी बगड़का, जो अभी हाल ही में कारावास से छूट कर आये हैं, का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

मलेरिया प्रकोप के विषय में समस्त राजस्थान और विशेष कर शेखावाटी से आये समाचारों पर विचार करने के बाद निश्चय हुआ कि राजस्थान के ज्वर पीड़ितों की सहायतार्थ एक कोष एकत्रित किया जाय। इस कोष में रुपया ५०००) राजपूताना बाढ़ पीड़ित सहायता कमेटी ने प्रदान किया है। मारवाड़ी रिलीफ कमेटी बम्बई ने भी ५०००) रु. जो मारवाड़ी मित्र मण्डल से बम्बई गत विस्फोट काण्ड में सहायतार्थ मिले थे और खर्च नहीं हुए थे, प्रदान किये हैं। विशेष द्रव्य संचित करने के लिए एक अपील प्रकाशित की जा रही है। सहायता कार्यके लिए मारवाड़ी रिलीफ कमेटीने निम्नलिखित योजना सर्व सम्मतिसे स्वीकृत की है—

(१) सर्व श्री सेठ घनश्यामदासजी पोद्दार सेठ भवानीदासजी बीन्नानी, श्री श्रीनिवासजी बागड़का, रामेश्वर प्रसादजी साबू तथा डॉ. झाबरमलजी मिश्र की एक अर्थसमिति (Finance Committee) बनायी जाय जो सहायता कार्य का संचालन करे।

(२) ज्वर पीड़ित स्थानों में एक वैतनिक डॉक्टर और चार कम्पाउंडर भेजे जाये।

(३) उपयुक्त स्थानों पर सहायता केंद्र तथा झुंझुनु (शेखावाटी) में मुख्य केंद्र खोलकर पीडितों की सहायता की जाय।

(४) रोगियों के उपचारके लिए दो हजार क्विनाइन (Quinine) के इन्जक्सन, एक लाख गोलियाँ, २० पौण्ड क्विनाइन और एक हजार रुपये के निम्बुओं की शीघ्र व्यवस्था की जाय।

जो सज्जन इस परोपकार क कार्य में हाथ बटाना चाहें वे मन्त्री, मारवाड़ी सम्मेलन, कालबादेवी, बंबईके पास अपनी बहु मूल्य सहायता और परामर्श भेज कर अक्षय पुण्य के भागी हों।

विनीत

मदनलाल अग्रवाल
भवानीदासजी बीन्नानी
मंत्री, मारवाड़ी सम्मेलन

राजस्थान की रक्षा कीजिये !
अपील

देवियो और सज्जनो !

गत कुछ दिनों से राजस्थान भर में भीषण मलेरिया प्रकोप के हृदयद्रावक समाचार आ रहे हैं। विशेषतया शेखावटी प्रान्त में ज्वर का इतना भयंकर प्रकोप है, और इतनी घोर जनहानि हो रही है जिसे वर्णन नहीं किया जा सकता। अकेले सीकर नगर में, जहां की जनसंख्या लगभग ३५००० है, इस समय लगभग १५००० व्यक्ति इस दैवी प्रकोप के शिकार हो चुके हैं। यह तो शेखावटी के एक मुख्य नगर की अवस्था है, जो सीकर राज्य की राजधानी होने से राज्य तथा धनी मानी नागरिकों की ओर से थोड़ी बहुत सहायता प्राप्त कर रहा है। इससे आप स्वयंकल्पना कर सकते हैं कि उन छोटे छोटे सैकड़ों गावों की क्या दशा होगी, जहाँ न वैद्य हैं, न डाक्टर और न हैं औषधियां ! कुनाइन के तो दर्शन तक दुर्लभ हैं। सर्वत्र त्राहि त्राहि मची हुई है और बेचारे ग्रामीण कीड़े मकोड़ों की भांति तड़पते हुए अगणित संख्या में प्रति दिन दम तोड़ रहे हैं।

हाल की आई हुई खबरें तो इतनी रोमाञ्चकारी है, जिन्हें पढ़कर हृदय काँप उठता है। प्रसूतिका अवस्था में महिलाएँ क्षीण हो जाने के कारण मलेरिया की शिकार हो जाती हैं, और ३-३, ४-४ दिन के तड़पते हुए नवजात शिशुओं को मरने के लिए ही छोड़कर संसार से कूच कर जाती हैं, ऐसी घटनाएँ आए दिन हो रही हैं।

देवियो और सज्जनो। जब जब किसी भीषण संकट के अवसर पर हमने आतों सहायतार्थ आप लोगों से अपील की है तब आप लोगों ने खुले हाथों धन जन वस्त्रादि सहायता देकर हमारा हाथ बंटाया है। इ भरोसे पर आज फिर हम आप लोगों से प्रार्थ करने का साहस कर रहे हैं कि इस अभूत संकट और सामूहिक सर्वनाशसे राजस्थान की रक्ष कीजिए। आज सैकड़ों मरणासन्न गरीब रा स्थानी भाई और बहनों को आशा भरी दृष्टि आप की ओर लगी हैं, उनके लिये यथाश धन प्रदान करके मरते हुओं को प्राणदा दीजिये।

सम्मेलन कार्यालय,
बम्बई, ता. २६-१०-४४

विनीत,
भवानीदास बीन्नानी
मदनलाल अग्रवाल
मंत्री मारवाड़ी सम्मेलन

इंदौर धारासभा

सुरक्षा कानून निवारक बिल स्वीकृ

इंदौर की धारासभा में इंदौर सुरक्षा कानू को रद करने के लिए एक बिल उपस्थित किय गया है। सरकारी पक्ष के विरोध करने प भी बिल प्रथम वाचन में स्वीकृत हो गया सुरक्षा कानून के अनुसार अदालतें राज्य द्वारा की गई ज्यादतियोंकी जांच की किसी भी व्यक्तिकी दर्खास्त पर विचार नहीं कर सकतीं

धारासभा में बतलाया गया कि १२ राज नैतिक कार्यकर्ता अनिश्चित अवधि के लि राज्य से निर्वासित हैं। इनमें से दो को निर्वा सित हुए १२ वर्ष से अधिक समय हो गया सन १९३९ से अब तक ९ व्यक्तियों की अखबार निकालने की दर्खास्तें अस्वीकृत की गई हैं। इनमें इंदौर राज्य कम्यूनिस्ट दल औ रियासती पत्रकार सम्मेलन के मंत्री भी सम्मिलित हैं।

शेखावटी में ज्वर का प्रकोप

मोहनपुर, जयपुर, शेखावाटी में गत कु दिनों से मलेरिया और मियादी ज्वर से लो अत्यन्त पीडित हैं। ९०० में से ६० ग्रामी रोगी पडे हैं। उनकी पकी हुई फसल के काटने के लिए आदमी नहीं हैं। सर्वोदय आश्र के श्री रतनलाल जोशी ने इन लोगों की सहायता के लिए दवा की अपील की है।

पाठशाला निर्माण के लिये सभा

ता. १८–५–४४ को श्री सनातनध सभा जावला की तरफसे पाठशाला निर्माण के लिए श्री ठाकुर साहेब जावला के सभापतित्व विराट सभा हुई जिस में सर्व प्रथम सभा पतिजी का लिखित भाषण पं. प्रहलाद त्रिपाठी ने पढ़कर सुनाया। बादमें स्वामीज श्री घनश्यामदासजी का दानविषय पर मार्मि भाषण होकर चन्दे का कार्य शुरू हुआ। स प्रथम श्रीमान ठाकुर साहब जावला ने १५०१ रु. एवं पाठशाला बनाने की जगह प्रदान कर स्वीकार किया। तत्पश्चात अन्य सेठ लोगों वित्त प्रदान किया। कुल ३५००) एकत्रित हुए

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

एक प्रति का ।=)
[अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र]
Reg. No. B 4441

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

— प्रवर्तक —
स्व० भागीरथदासजी भूतड़ा

कार्यालय
अली चेम्बर्स, डीन लेन,
फोर्ट बम्बई

वर्ष ३५, संख्या १२] बम्बई ता. २१ अक्टूबर १९४४ [वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

१५ वर्षीय योजना के लिये तैयारी

★

लेखक—श्री लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला

> श्री. बिड़लाजी ने इस लेख में १५ वर्षीय योजना की तैयारी का सुन्दर ढंग से विवेचन किया है। आपने यह दिखाया है कि इस तरह की योजना दोधारी तलवार है। निजी सरकार इसे कार्यान्वित करे तो लाभ होगा और बाहरी सरकार इसे कार्यान्वित करने के बहाने हमें काफी नुकसान भी पहुंचा सकती है। सं०

पन्द्रह वर्षीय योजना के बारे में सब भाषाओं में काफी लिखा जा चुका है। लोगोंने इसका तार तार खोलकर अच्छी तरह देख लिया है! इसलिए खास इस विषय पर कि यह योजना क्या है, लिखना बेकार होगा। लेकिन हां, हम लोगों को इस विषय पर जरूर विचार करना चाहिए कि इस योजना के किसी भी पहलू को लेकर हम लोग अग्रसर हो सकते हैं क्या?

इस योजना के बनाने वालों ने एकदम शुरू में ही हमें यह चेतावनी दी है कि यह योजना केवल ऐसी राष्ट्रीय सरकार ही कार्यान्वित कर सकती है जो पूर्ण स्वतन्त्र हो और पूरी सत्तावाली हो। आज की भारतीय सरकार केवल नाममात्र की भारतीय है, दर अस्ल यह अंग्रेजी-सरकार की नौकर है। इस तरह की योजनाको दो धारी तल्वार समझना चाहिए—निजी सरकार इसे कार्यान्वित करे तो लाभ होगा और बाहरी सरकार इसे कार्यान्वित करनेके बहाने हमें काफी नुकसान भी पहुंचा सकती है।

किसी भी योजना को सफलीभूत करने के लिए यह एकदम जरूरी है कि जिनके लिए यह योजना बनी हैं उन्हें यह बताया जाय कि योजना से उन्हें क्या लाभ होने वाला है और उन्हें योजना कार्यान्वित करने के लिए क्या करना होगा? इस लिए हरेक योजना में शिक्षा का स्थान सबसे ऊंचा रहता है।

इस योजना के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। जनता का यह समझना जरूरी है कि इस योजना के कार्यान्वित होने से उन्हें क्या क्या लाभ हो सकते हैं तथा यह भी जानना जरूरी है कि आज की भारतीय सरकार इस योजना की शरण लेकर उन्हें क्या क्या हानि पहुँचा सकती है।

आज की भारतीय सरकार की नीति बाहरी दिखाव में तो किसी भी ऐसी योजना के पक्ष में ही जान पड़ती है लेकिन हमें यह समझना जरूरी है कि उस नीति का सरकार किस तरह पालन कर रही है? सरकार की तरफ से पूरी योजना न निकल कर खास खास अलग अलग विषयों पर ही कई योजनाएं निकली हैं। उनसे विदित होता है कि सरकार सड़क बढ़ाना चाहती है; रेल ड्योढ़ी (१½) करना चाहती है। इन सब बातों में सरकार का ध्येय जान लेना चाहिए।

यदि हमारे देश में सिमेन्ट की सड़कें बनें तब तो हमारे देश की सिमेन्ट भी खप जाय एवं मजदूरों को मजदूरी भी मिल जाय, पर सरकार की नीति इस विषय में साफ नहीं मालूम पडती। सड़कों के लिए वह बाहर से तारकोल मँगवाना चाहती है। यदि ऐसा हुआ तो देश की बहुत बड़ी रकम बाहर चली जायगी। रेल बढ़ाने के बहाने से रेल के एंजिन तथा दूसरी चीजें एवं बिजली की उत्पत्ति के बहाने बड़े बड़े Turbines के orders विलायत वालों को मिल जायेंगे। इसके अलावा इस योजना की आड़ में सरकार और भी कई बातें कर सकती है। उदाहरण स्वरूप—Fertilizers बनाने के लिए Imperial Chemical के साथ समझौता हो सकता है और बड़े २ कारखानों के लिए बाहर वालों को रिआयत दे सकती है।

अतएव हमें सर्व प्रथम इस योजना की आड़ में होने वाले नुकसानों को समझ लेना चाहिए एवं द्वितीय हमें इस योजना के सम्बन्ध में क्या शिक्षा देनी चाहिए यह भी समझ लेना चाहिए।

किसी भी योजना के तीन अङ्ग रहते हैं:—

(१) शिक्षा संबंधी, (२) कच्चा माल (Raw-materials) उत्पादन सम्बन्धी (३) कच्चे माल को काम में लानेवाले कल कारखानों के सम्बन्ध में।

इस योजना में भी तीनों ही बातें हैं। तीसरी बात कल कारखानों के सम्बन्ध की तभी लागू हो सकती है जब प्रथम एवं द्वितीय दोनों बातें पूरी हो जायं। जब तक लोगों को उत्तम शिक्षा न मिलेगी तब तक पूरी मात्रा में कच्चा माल (Raw-materials) नहीं मिल सकता और जब तक कच्चा माल पूरी मात्रा में नहीं मिलता तब तक कल कारखाने सुचारु रूप से नहीं चल सकते।

शिक्षा के काम में सरकार के अलावा जनता भी अच्छा सहयोग दे रही है लेकिन वह शिक्षा जिस तरह की होनी चाहिए वैसी नहीं है। शिक्षा के सम्बन्ध में हम बिना सरकारी सहायता के भी आगे बढ़ सकते हैं। आज हमारे देश में सहस्रों क्या लाखों नवयुवक यह शिक्षा प्राप्त कर बेकार बने फिरते हैं। यदि उन्हें ठीक तरह की शिक्षा मिले और वे अपने बाप-दादों के उद्योग धन्धों को अपनायें तो उन्नति का काफी क्षेत्र पड़ा है। मसलन् धान की खेती को ही लें। भारत में बीघा पीछे ७२८ पौण्ड धान होता हैं लेकिन दूसरे मुल्को में जैसे स्याम में बीघा पीछे ५४१ पौण्ड धान एवं जापान में बीघा पीछे २२७६ पौण्ड धान होता है। इसी तरह गेहूं को लीजिये। भारत में बीघा पीछे ६३६ पौण्ड गेहूं होता है, परन्तु दूसरे मुल्कों में जैसे आस्ट्रेलिया में बीघा पीछे ७१४ पौण्ड और कनाड़ा में बीघा पीछे ९७२ पौण्ड गेहूं होता है।

हमारे यहां आज जो गन्ना होता है उससे ऊँची से ऊँची १२% चीनी निकलती है। परन्तु अभी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के डाक्टर बदामी ने ऐसा गन्ना खोज निकाला है जिससे २३% चीनी निकाली जा सके। अगर ऐसे गन्ने की खेती की जाय तो आज जितने गन्ने की जरूरत होती है उससे आधे गन्ने में एवं जितनी जमीन की जरूरत होती है उससे आधी जमीन में हमें पूरी चीनी मिल सकती है! आधी बची हुई जमीन में दूसरी चीजों की खेती की जा सकती है। इस प्रकार गन्ने की खेती करने वाले किसान की जमीन बिना किसी परिश्रम के दुगनी हो जाती है।

इसलिए आज हमारी राष्ट्रीय सरकार न होते हुए भी हम शिक्षा सम्बन्धी कार्य शुरू कर दें तो हमें इसमें सफलता भी मिल सकती है एवं आगे होने वाली किसी भी राष्ट्रीय सरकार को इस तरहकी योजना सफल बनानेके लिए नींव तैयार मिलती है।

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० २१ अक्टूबर १९४४

चीन की गुहार

अपने से अत्यधिक तगड़े शत्रु से लड़ते लड़ते चीन के सब करम हो गये। उसका अस्तित्व आज खतरे में है और वह सहायता के लिये गुहार मचा रहा है। दीर्घकाल तक वह अपने मित्रों से मिलने वाली सहायता के पर्याप्त-अपर्याप्त होने के विषय में मौन रहा—शायद यह सोचकर कि स्पष्ट बात कहने पर उसके साथी कहीं भड़क न जायं। किन्तु धैर्य की भी एक सीमा होती है, सहनशीलता का भी एक छोर होता है और मनुष्य या राष्ट्र अपनी शक्ति भर ही बलिदान कर सकता है। यदि यह कहा जाय कि बहादुर चीन इन सब की सीमाओं को पार कर गया है, तो रंचमात्र भी अतिशयोक्ति न होगी। यदि चीनियोंके अन्दर उत्कृष्ट ढङ्ग की देश-भक्ति न होती, देश रक्षा के लिये हँसते हँसते प्राण न्यौछावर करने की अमर भावना न होती और छोटे मोटे पारस्परिक मतभेदों या स्वार्थ–संघर्षों को राष्ट्र रक्षा के प्रश्न के आगे ताक पर न रख दिया जाता, तो महान चीन राष्ट्र आज दासता की शृङ्खला में कस जाता, उसकी पवित्र भूमि पर जापानी झण्डा फहराता और शोषण एवं निर्यातन की चक्की अबाध गति से चलती दीख पड़ती। चीन ने निस्संदेह कमाल कर दिखाया है और सारी दुनिया, यहां तक कि उसका शत्रु जापान भी उसकी प्रतिरोध-शक्ति देख कर आश्चर्य–चकित है। जब कि चीन ने चुपचाप अधिकतम बलिदान किया, असीम कष्ट और निर्यातन सहे, एवं आन्तरिक कलह को एक सीमा में बांध रखा, ऐसे समय में इङ्गलैण्ड से उसे एक सफेद झूठ सुनाई पड़ा। यह झूठ इस रूप में था–" अमेरिका चीन की भरपूर सहायता कर रहा है। शस्त्रास्त्र आदि बहुत काफी परिमाण में भेजे गये हैं। " वास्तविकता के इस विपर्यास ने चीन के हृदय में आग लगा दी और वह अपने मौन को भंग कर बोल ही तो उठा—' हम फौजी भारसे दबे जा रहे हैं। यदि मित्र राष्ट्र हमारी कुछ अधिक मदद करते तो शायद हमारी यह शोचनीय स्थिति न रहती और हम अब तक शत्रु को खूब छका देते। "

इसमें कोई सन्देह नहीं कि चीन अकेले लड़ते लड़ते अब ऊब गया है और सबसे अधिक शोचनीय बात तो यह है कि उसके पास शस्त्रास्त्र, गोली बारूद और वायुयानों का बहुत बड़ा अभाव है। आदमियों की कमी नहीं क्योंकि सारा राष्ट्र आक्रान्ता को मार भगानेके लिये कृतसंकल्प है। अगर पर्याप्त शस्त्रास्त्र पास होते तो हमारा ख्याल है, कमी का शत्रु देश से निकाल दिया जाता। ४५ करोड़ की जन संख्या वाला राष्ट्र एक जापान क्या १० जापान को पछाड़ सकता था, किन्तु जब लड़ने के साधनों का ही ठिकाना नहीं तो वह क्या कर सकता है। अमेरिका ने अपने युद्ध उत्पादन बोर्ड के भूतपूर्व अध्यक्ष डोनाल्ड नेलसन को मौके पर पहुंच कर सामरिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए चीन भेजा था। वह चीन सरकारके अधिकारियों से मिले, उनकी कठिनाइयों और अभाव के विषय में पूछताछ की और युद्ध के प्रत्येक पहलू का विशदरूप से अध्ययन किया। अन्त में वह इस निष्कर्ष कर पहुंच कि ' चीनी सेना के पुनर्गठन और चीनियों को रण विद्या की शिक्षा देने की आवश्यकता है। " उन्होंने चीनियों को रणविद्या की शिक्षा देने के काम पर बहुसंख्यक अमेरिकन फौजी आफिसरों को नियोजित किया। किन्तु इन हजरत ने भी मूल समस्या की ओर अपनी सरकार का ध्यान नहीं दिलाया। चीनियों को इस हरकत पर अवश्य ही क्षोभ हुआ होगा। चीनको आवश्यकता है शस्त्रास्त्र और वायुयानों की और बतायी जाती है सामरिक शिक्षा की। चीनका काम बिना सामरिक शिक्षा के चल सकता है, किन्तु शस्त्रास्त्र और वायुयान बिना हर्गिज नहीं। अपने एक साथी की आवश्यकता की इस प्रकार उपेक्षा करना मित्र राष्ट्रोंको शोभा नहीं देता। मार्शल स्टेलिन भी बहुत समय पहले ऐसी ही शिकायत करते सुने गये थे। हमें भय है, अमेरिका और ब्रिटेन ने जितनी सहायता रूस को दी, उससे भी बहुत कम चीन को देने की आवश्यकता समझी। न्यूयार्क हेरल्ड ट्रिब्यून ने अपने एक अग्रलेख में चीन की संकटापन्न स्थिति और मित्र राष्ट्रों की उपेक्षाका निम्न शब्दों में कितना सजीव चित्र खींचा है—

" एशिया में विजय प्राप्त करने के पूर्व यूरोप में विजय प्राप्त करने के बुनियादी निश्चय का आंशिक मूल्य चीन का हाल का सामरिक-संकट है, जहां चीनी सैनिक और लाखों चीनी नागरिक रक्त में बिल चुका रहे हैं। अभी ही मूल्य बहुत अधिक है और अन्त तक वह इतना अधिक हो जायगा कि उसे सुनकर मनुष्य घबडा जायगा। यदि कुछ अधिक सहायता सुदूरपूर्व को भेजी जाती तो बडा अच्छा परिणाम देखने में आता। और लुई माउण्ट बैटन दक्षिण बरमा और मलायासे जापानियों को निकाल बाहर करने के लिए अभियान आरंभ कर सकते। इसका आयोजन तो किया गया था, किन्तु वह आयोजन कभी भी कार्यान्वित नहीं किया गया। यदि ऐसा किया जाता तो जनरल स्टिलवेल को अधिक आदमी और तोपें प्राप्त हो जातीं। अमेरिका और ब्रिटेन को चीन-बर्मा-भारत मोर्चों पर अपनी सारी शक्ति लगा देनी चाहिए और इस समय जो भी सहायता संभव हो वह मार्शल चांगकाइशेक को अवश्य दी जाय! "

चीन के प्रति ब्रिटेन-अमेरिका की उदासीनता सचमुच शोचनीय है और मित्र के साथ अन्याय भी है। जब चीन उनके युद्ध में शामिल है, तो वह उनकी यथा सम्भव सभी प्रकार की सहायता पाने का अधिकारी है। मित्र राष्ट्र अपने कर्तव्य से पराङ्मुख क्यों हो रहे हैं? क्यों वे जापान द्वारा चीन के नोंचे जाने का दृश्य देख रहे हैं? इसका जवाब इधर कई वर्षों के अन्दर चीन में उत्पन्न सामाज्यवाद विरोधी प्रचण्ड भावना में निहित है। जब तक चीन अफीम के नशे में पड़ा था, सुध-बुध और राष्ट्रीय चेतना का कहीं ठिकाना न था, तब तक चीन सभी साम्राज्यवादियों की आकांक्षा-पूर्ति का सुन्दर स्थान था। मनमाने ढंग से उसका शोषण किया गया। उसके बाजारों को चीन में घुसे हुए साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने अपने यहां की वस्तुओं से पाट दिया। औद्योगिक रूप से अनुन्नत चीन असहाय था। वह श्वेतांग महाप्रभुओं के शोषण का शिकार होता रहा। लेकिन अब वह अनुन्नत से उन्नत दशा में पहुंच रहा है। उद्योगधन्धे यद्यपि अभी भी नगण्य ही हैं; किन्तु चीन में साम्राज्यवाद के विरुद्ध इतनी प्रचण्ड भावना पैदा हो गयी है कि साम्राज्यवादी राष्ट्रों को भविष्य में उसका शोषण कर सकने की आशा नहीं रही। वे जानते हैं कि चीन अब यह सब कुछ बर्दास्त नहीं कर सकता। वहां ऐसी शक्तियों का प्रादुर्भाव हो गया है जो राष्ट्रीय स्वार्थों पर प्रहार करने वालों से भिड़े बिना न रहेंगी। और इसमें कोई सन्देह नहीं कि चीन की द्वितीय क्रांति (१९२५-२७) में वहां के पूंजीपति वर्ग ने जो राष्ट्रहित विरोधी कार्य किये उनसे चीनी जनसाधारण को सीख मिली। जब उन्होंने देखा कि कम्युनिस्टों का दमन करने के लिए चांगकाई शेक जापान से फौजें मंगा रहे हैं, तो उनको दुःख और क्षोभ हुआ। धीरे धीरे साम्राज्यवाद विरोधी भावना बढ़ती गयी और आज स्थिति यह है कि १९२५-२७ के इतिहास की पुनरावृत्ति होने की कोई सम्भावना नहीं रह गयी। चीन अब इस बात के लिए भी कृत संकल्प है कि वह अपना उद्योगीकरण स्वयं करेगा। किसी तीसरी शक्ति से हर्गिज सहायता न लेगा। ऐसी हालत में वह साम्राज्यवादी राष्ट्रों के लिए आकर्षण नहीं रह गया। जब अपनी सहायता का ' पुरस्कार ' मिलने की गुंजायश नहीं दिखती, तब कोई क्यों दिलचस्पी ले? राजनीति में परोपकार के लिये कहां स्थान है? इसलिए चीन की सहायता ठीक से न करने के कारण मित्र राष्ट्रों को कोसना बेकार है। चीन जैसे महान राष्ट्र का अस्तित्व मिट नहीं सकता। जिस देश का बच्चा बच्चा तक दुश्मन से लड़ रहा हो वह अवश्य विजयी होगा चाहे समय जो लगे और देश की स्वतंत्रता की रक्षा करने का चाहे जो भी मूल्य चुकाना पड़े। लेकिन यह निश्चित है कि इस संकट कालमें चीनकी सहायता से हाथ खींचकर साम्राज्यवादी राष्ट्र जो कल तक चीन में घुसे थे और मनमाना लाभ उठा रहे थे, अपने लिए अच्छा नहीं कर रहे हैं। युद्ध समाप्त होगा, शांति, सुख समृद्धि चीनी फिर देखेंगे, किन्तु वे अमेरिका एवं ब्रिटेन की उदासीनता को हर्गिज न भूलेंगे। उनकी तरफ से उनका मन खट्टा हो जायगा, और यह तनतनी को जन्म देगा, जो किसी भी रूप में वांछनीय नहीं है। हम मित्र राष्ट्रों से पूछना चाहते हैं कि वे चीन को सिर्फ दिलासा में क्यों रख रहे हैं? या तो उसकी आवश्यकतानुसार सहायता प्रदान करें, या फिर स्पष्ट कह दें कि वे असमर्थ हैं और उनपर वह निर्भर न रहे। अनिश्चितता बहुत ही घातक होती है और फिर युद्ध में सहायता के विषय में तो यह सिर्फ बर्बादी ही ला सकती है।

जनता से बदला क्यों?

ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेसका वार्षिक अधिवेशन ब्लैकपूल में धूमधाम के साथ सम्पन्न होगया। यह पहला मौका था जब ब्रिटिश मजदूरों की इस संस्था ने भारतीय समस्याओं की ओर दृष्टि डाली। उस अधिवेशन में भारत के समस्त राजनीतिक बंदियों की रिहाई की मांग की गयी और श्रमिक समस्याओं का अध्ययन करने एवं संगठित मजदूर आन्दोलन के साथ दृढ़ संबंध स्थापित करने के लिए एक प्रतिनिधि दल भारत भेजनेका निश्चय किया गया।

निस्संदेह यह हर्ष की बात है, कि ब्रिटिश ट्रेड यूनियन कांग्रेस ने अब वर्षों की उदासीनता के बाद भारतीय समस्याओं की ओर दृष्टि डालने की आवश्यकता समझी है। ब्रिटेन की ट्रेड यूनियन कांग्रेस का नेतृत्व ऐसे प्रतिक्रियावादियों और साम्राज्यवाद के टहलुओंके हाथमें है कि उन्होंने कभी मजदूर आंदोलन को ठीक से चलने ही नहीं दिया। श्रेणी युद्ध के स्थानपर श्रेणी सहयोग और मजदूरों के स्वार्थों का बलिदान दर दर दीख पड़ता है। उपनिवेशों की चकाचौंध मजदूरों के इस तरह गुमराह होते रहने का एक जबर्दस्त कारण है। वस्तुतः उपनिवेशों की लूट और शोषण से उन्हें अधिक मजदूरी मिल जाती है एवं नागरिक स्वातंत्र्य भी प्राप्त हैं ही। ऐसी दशा में मजदूर आंदोलन का सुधारवादी स्वरूप हो ही जाता है। भारतीय समस्याओं के प्रति सहानुभूति दिखाने की इस आंदोलन को आवश्यकता ही क्या थी? किन्तु इधर हाल में ब्रिटेन की कुछ पार्टियों ने जब से भारतीय समस्याओं की जोरों से चर्चा शुरू कर दी है, ट्रेडयूनियन कांग्रेस को बाध्य होकर अपना उपेक्षापूर्ण रुख बदलना पड़ा है। भारत की स्वाधीनता के लिए ब्रिटेन के श्रमिक वर्ग में जोरों से आंदोलन करने वाली पार्टियों में इंडीपेण्डेण्ट लेबर पार्टी और फोर्थ इंटरनेशनल (ट्राट्स्कीवादी संस्था) की ब्रिटिश शाखा मुख्य है। कम्यूनिस्ट पार्टी अब सुधारवादी वाणी में बोलने लग गयी है और उससे किसी साहसपूर्ण कदम की आशा नहीं की जा सकती। अधिक साधन और शक्ति न होते हुए भी फोर्थ इंटरनेशनल की ब्रिटिश शाखा भारत के विषयमें जो कुछ कर रही है, वह श्लाघ्य है।

नेतृत्व के प्रतिक्रियावादी होनेका इससे बढ़कर और क्या प्रमाण हो सकता है कि समस्त जर्मन राष्ट्र को कुचल देने का मित्र राष्ट्रों से अनुरोध किया गया है! समस्त जर्मन राष्ट्र ने क्या कसूर किया है? संगीन के बलपर यदि जनसाधारण फौजों में भर्ती कर लिये गये, और जबर्दस्ती युद्ध प्रयास में उनका सहयोग ले लिया गया तो इसमें उनका क्या दोष? इस बात की क्यों उपेक्षा की गयी कि युद्ध छेड़ने और उससे लाभ उठाने से जनसाधारण कोसों दूर रहते हैं! हिटलरी युद्ध की बदमाशी के लिए जर्मन जनसाधारण कैसे जिम्मेदार हैं? जिस प्रकार समस्त इंग्लैण्ड युद्ध के लिए उत्तरदायी नहीं है उसी प्रकार समस्त जर्मन राष्ट्र भी नहीं।

मारवाड़ में गांधी जयंती की धूम

स्थान स्थान पर सभाएं, जुलूस और चर्खा यज्ञ

दिल्ली। समस्त मारवाड़ में गांधी जयंती उत्सव बडी घूमधाम से मनाया गया। ग्वालियर, अलवर, मेवाड, जयपुर, मारवाड, बीकानेर, इंदौर, भरतपुर और अन्य कई स्थानों से उत्सव की खबरें मिली हैं।

बिजौलिया मेवाड में सभाबन्दी के कारण सभाएं नहीं हो सकीं, किन्तु घर घर दीपमालाएं जलायी गयीं। किसान विद्यालय थडौदा में चर्खा दंगल आदि हुआ। लश्कर में सार्वजनिक सभा हुई। उज्जैन में सभा हुई और दूकानें फूलों और दीपकों से सजायी गयीं; बांसवाडा में शांत कुटी में २० सितम्बर से २ अक्तूबर तक चर्खा यज्ञ हुआ जिसमें ५० से अधिक व्यक्तियों ने सूत काता। पाली और भोपाल में सभाएं हुईं। सीतामऊ में सभा आदि का कार्यक्रम पूरा किया गया, लेकिन राष्ट्रीय झंडा अधिकारियों ने रोक दिया। अलवर और भरतपुर में सभाओ के अलावा जुलूस भी निकाले गए।

राजस्थान कार्यकर्ता संघ

रामगढ़। सीकर जिला राजनैतिक सम्मेलन के अवसर पर यहां मारवाड़ के प्रायः सभी प्रमुख कार्यकर्ता एकत्रित हुए थे। इन्होंने अपनी बैठक में यह निश्चय किया कि समस्त देशी रियासतों के कार्यकर्ताओं का एक केन्द्रीय संघ बनाया जाय जिसका नाम राजस्थान कार्यकर्ता सम्मेलन हो। इसके संयोजक श्री. देशपांडे जी चुने गए हैं। संघ की अगली बैठक नवम्बर में अलवर में होगी।

जोधपुर में सुधारों का मस्विदा तैयार

जोधपुर में भी आखिर वैधानिक सुधारों का समय आ गया दिखाई देता है। जोधपुर के प्रधान मंत्री सर डोनाल्ड फील्ड ने मंत्रिमंडल के विचार के लिए विधान कानून का एक मस्विदा पेश कर दिया है। इसके अनुसार जोधपुर में एक धारासभा कायम होगी जिसके अधिकांश सदस्य निर्वाचित होंगे। असेम्बलीको अनेक विषयों में कानून बनाने, बजट पास करने और सवाल पूछने का अधिकार होगा। मतदाताओं की योग्यता भी ऊंचा नहीं रखी गयी है। स्थानीय स्वराज्य और संयुक्त निर्वाचन प्रणाली के सम्बन्ध में भी अनेक धाराएं हैं। विधान मंत्रिमंडल की स्वीकृति के बाद जल्दी ही प्रकाशित किया जायगा।

महाराज ने राज्य के कानूनों पर निगाह रखने के लिए कानून मस्विदा कमेटी की पुनर्रचना की आज्ञा दी है।

उड़ीसा के मारवाड़ी समाज में जागृति

कटक में वैश्य विद्यालय हाईस्कूल बनाने के लिए धन संग्रह के लिए श्री रंगलालजी मोदी के सभापतित्व में एक सभा की गई। सभा में ५०००० रु० तत्काल इकट्ठा हो गया। उड़ीसा प्रान्तीय मारवाड़ी समिति ने इसके लिए एक लाख रुपया इकट्ठा करने का विचार किया है।

हमारा राजस्थान
ART CORNER

(मारवाड़ी पब्लिसिटी ब्यूरो नयी दिल्ली द्वारा)

भरतपुर में हिन्दू स्त्रियों के लिए विशेष कानून

भरतपुर की धारासभा में, जिसका अधिवेशन २ अक्तूबर से हो रहा है एक महत्वपूर्ण बिल पेश है। इसमें हिन्दू स्त्री निर्वाह अधिकार, विशेष स्थिति में पति से सम्बन्ध विच्छेद, पुनर्विवाह और अन्तर्जातीय विवाह उचित ठहराये गये है और पत्नी के रहते एक या अधिक स्त्रियों से विवाह, दहेज ठहराना आदि दंडनीय करार दिये गये है। हिन्दू स्त्री निर्वाह धनमें लड़की के माता पिता और सम्बन्धियों का दिया हुआ धन और जेवर तथा विवाह से पूर्व लड़की के माता पिता से ठहराया हुआ धन भी शामिल होगा।

ग्वालियर में पूर्ण उत्तरदायी शासन की मांग

उज्जैन में अभी हाल में हुए सार्वजनिक सभा के अधिवेशन में जो प्रस्ताव स्वीकृत हुए हैं, उनमें से एक में म. गांधी, राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस और मध्यभारत देशी राज्य लोक परिपद के नेतृत्व में विश्वास प्रकट करते हुए साम्राज्यवाद का विरोध किया गया और ग्वालियर सरकार से पूर्ण उत्तरदायी शासन की मांग की गयी। दूसरे में सभा के १०००० सदस्य बनाने और स्थान स्थान पर उसकी शाखाएं कायम करने का निश्चय किया गया। किसानों और मजदूरों के संगठनों को सहायता देनेका वचन दिया गया। एक प्रस्ताव में पूर्ण उत्तरदायी शासन में ग्वालियर के शासन की रूपरेखा, मूलभूत अधिकारों और भावी आर्थिक रचना पर प्रकाश डाला गया।

ग्वालियर में महिला जागृति

उज्जैन में ग्वालियर राष्ट्रीय महिला सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन श्रीमती सरस्वतीदेवी की अध्यक्षता में अभी सम्पन्न होगया। आरम्भ में श्रीमती रमेश्वरीदेवी विजयवर्गीय ने अपने स्वागत भाषण में महिलाओं से जागृत होने और जेवर आदि त्याग कर आदर्श नारी, आदर्श पत्नी और आदर्श माता बनने पर जोर दिया।

उन्होंने कहा कि मालव नारी जागृति में बिल्कुल पिछडा हुआ है। यहां पर्दे से स्त्रियोंके स्वास्थ्य को असीम हानि पहुंची है। उन्होंने मालवा की स्त्रियों को टर्की की पर्दा फेंक कर उठ खडी होने वाली स्त्रियों का अनुकरण करने की अपील की और ग्वालियर राज्य से शासन सुधार के मामले में जल्दी स्पष्ट घोषणा करने का अनुरोध किया।

परिषद का उद्घाटन बम्बई के मेयर श्री. नगीनदास टी. मास्टर ने किया। अगले वर्ष के लिए श्रीमती रामेश्वरी देवी प्रधान और मदनदेवी तथा ताराबेन रेना मंत्राणी चुनी गईं।

पोद्दारजी का सम्मान

नयी दिल्ली। कलकत्ते के मेयर सेठ आनन्दीलालजी पोद्दार रामगढ़ से कलकत्ता जाते हुए ५ अक्टूबर को दिल्ली पधारे। शामको ७ बजे स्थानीय मारवाड़ी औषधालय में सेठ बिहारीलाल जी तुलस्थान के सभापतित्व में सभा हुई जिसमें दिल्ली के मारवाड़ी समाज की ओर से आपको मानपत्र दिया गया। श्री नवीनजी की स्वागत कविता के बाद श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार ने आपका परिचय कराते हुए आप के मेयर चुने जाने का महत्व बताया।

पोद्दारजीने मानपत्र का उत्तर देते हुए मारवाडी समाज से केवल व्यापार व्यवसाय में की गई उन्नति से संतुष्ट न होकर सार्वजनिक कार्यों में उत्साह से भाग लेने की अपील की। आपने कहा कि समय की गति और आवश्यकता को देखते हुए अपने देश के लिए बडे से बडा त्याग करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

इंदोर प्रजामंडल कानूनी

इंदोर प्रजामंडल के सर्वाधिकारी श्री सर्वटेने एक वक्तव्य में घोषित किया है कि प्रजा मंडल को गैरकानूनी ठहराने के लिए जो आज्ञा निकाली गई थी उसे श्रीमंत महाराजा साहब ने रद्द कर दिया है। प्रजामंडल को अगस्त १९४२ में उस समय गैरकानूनी घोषित किया गया था जब उसने एक प्रस्ताव पास करके राज्य में पूर्ण उत्तरदायी शासन स्थापित करने और ब्रिटिश सार्वभौम सत्ता से सम्बन्ध विच्छेद करने की मांग की थी।

जयपुर राज्य प्रजामंडल का अधिवेशन

जयपुर राज्य प्रजामंडल का आगामी अधिवेशन दौसा में १९ और २० अप्रैल को होगा। सदस्य बनाने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर रखी गयी है। प्रजामंडल की कार्यकारिणी ने निश्चय किया है कि म्यूनिसिपल कौन्सिल में अध्यक्ष की नामजदगी के विरोध स्वरूप रिक्त हुए स्थानों के उपचुनाव में प्रजामंडल की ओरसे फिर उम्मेदवार खड़े किये जाएं और कौन्सिल में निर्वाचित अध्यक्ष की मांग फिर बलपूर्वक रखी जाय।

फ्लेरी में किसानों पर गोलियां चलाने के विरोध में भी एक प्रस्ताव स्वीकार हुआ।

वनस्थली विद्यापीठ का उत्सव

वनस्थली बालिका विद्यापीठ का वार्षिक उत्सव २२ अक्तूबर को काशी विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर सर राधाकृष्णन की अध्यक्षता में होगा। इस अवसर पर प्रदर्शनी तथा नाटक का भी आयोजन किया गया है।

रामगढ़ में समारोह

रामगढ़। सीकर जिला राजनैतिक सम्मेलन का कार्य समाप्त होने के बाद पहिली अक्तूबर को सभापति सेठ आनन्दीलाल पोद्दारके स्वागत सम्मान में कई आयोजन हुए जिनमें आपके कलकत्ता के मेयर चुने जाने पर आपको अनेक मानपत्र दिए गए। श्री नवज्योति पुस्तकालय के विशाल भवनमें एक विराट सभा का आयोजन श्री सत्यदेव विद्यालंकार के सभापतित्वमें किया गया। आपके भाषण के बाद श्री नवज्योति पुस्तकालय, प्राकृतिक चिकित्सालय, युवक मंडल, आयुर्वेद परिषद, बाल सभा, चेम्बर आफ कामर्स आदि संस्थाओं की ओर से भी पोद्दारजी को मानपत्र भेंट किये गये। पुस्तकालय का मानपत्र चांदी के सुन्दर कास्केट के दिया गया।

सन मानपत्रों का संयुक्त उत्तर देते हुए श्री पोद्दारजी ने सम्मान के लिए आभार माना। आपने १३ वर्ष पहिले की रामगढ़ की स्मृतियों की चर्चा करते हुए इन वर्षों में यहां हुए परिवर्तनों का हर्ष के साथ उल्लेख किया और रामगढ़ में बढ़ती हुई सार्वजनिक प्रवृत्तियों के लिए रामगढ के नागरिकों को बधाई दी। लेकिन नगर के सुधार और उन्नत्ति की ओर जनता का ध्यान आग्रह के साथ आकर्षित किया।

साहित्य सेवा सदन में बाहर से पधारे हुए साहित्यिकों एवं पत्रकारों के सम्मान में चाय का आयोजन किया गया। श्री सत्यदेवजी विद्यालंकार के सभापतित्वमें स्थानीय कवियों का कविता पाठ हुआ और साहित्यिक चर्चा हुई।

रामगढ़ सम्मेलन सफल

नई दिल्ली। दिल्ली से कलकत्ता बिदा होते हुए कलकत्ता के मेयर श्री आनन्दीलालजी पोतदार ने, जो कि रामगढ़ में हुए सीकर जिला राजनैतिक सम्मेलन का सभापतित्व करने के लिए कलकत्ता से पधारे थे, एक पत्र प्रतिनिधि से सम्मेलन की सफलता की चर्चा करते हुए उसकी सफलता पर अत्यंत संतोष प्रकट किया। आपने कहा कि कलकत्ता से चलते हुए मैं इतनी सफलता की कल्पना भी नहीं कर सकता था। मुझे तो ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि तीन चार दिन के लिए रामगढ़ आजादनगर ही बन गया है। महिला सम्मेलन की सफलता देखकर मुझे और भी प्रसन्नता हुई। महिला सम्मेलन में इतनी अधिक महिलाओं का इकट्ठा होना रामगढ़ के लिए कल्पना से भी बाहर की बात है। आपने आगे कहा। कि सम्मेलन के बाद मैं सीकर गया और वहां मैंने राव राजाजी और सीनियर अफसर से सम्मेलन के प्रस्तावों के सम्बन्ध में चर्चा की। मुझे यह बताते हुए हार्दिक प्रसन्नता होती है कि दोनों ने ही मेरी बातों को बहुत ध्यान और सहानुभूति के साथ सुना। जमीन के पट्टों के सम्बन्ध में उन्होंने सम्मेलन की मांग को तुरंत स्वीकार कर लिया और बताया कि सीनियर अफसर शीघ्र ही सारे इलाके का दौरा करेंगे और सब तहसीलों में जाकर पट्टे तुरंत जारी कर देंगे। मुहराने के सम्बन्ध में उन्होंने विचार कर उचित निर्णय करने का विश्वास दिलाया। अन्य समस्याओं और प्रस्तावों पर भी काफी चर्चा हुई।

राजस्थानी संसार

दे. भ. हीरालालजी कोटेचा का असामयिक स्वर्गवास

बीड़ (निजाम) बीड़ के दे. भ. हीरालालजी कोटेचा बी. ए. (उस्मानिया) का स्वर्गवास गत मास ३१ साल की आयु में टायफाइड से हुआ । स्व. हीरालालजी हैद्राबाद स्टेट कॉंग्रेस के प्रमुख नेता थे । है. स्टेट कॉंग्रेस के वैयक्तिक सत्याग्रह में पू. महात्माजी ने सात सत्याग्रहियों में आपको एक चुना था। और उस समय आप १५ मासतक रायचूर जेल्में अकेले नजरबंद थे । अगस्त आंदोलन होते ही आपको सरकारनें १२ मास तक जेल में नजरबंद रखा । बीड़ में होने वाले हैद्राबाद संस्थान महाराष्ट्र परिषद् के पंचम अधिवेशन के आप स्वागताध्यक्ष चुने गये थे। आप हैद्राबाद स्टेटके खादी ग्रामोद्योग कार्य के प्रमुख कार्यकर्ता थे ।

आप ओसवाल समाज के एक कट्टर सुधारक थे । सच्चे कोटेचा कुटुंब को राष्ट्रीय एवं सामाजिक कार्योंकी दीक्षा दिलाने वाले आपही थे । कोटेचा फिरोदीया विवाहकर अपने ओसवाल समाजके सामने एक आदर्श पेश किया । आपकी मृत्युपर पू. महात्माजी ने निम्न सात्वनपर पत्र मृतात्माकी पत्नी सदाकुंवर बाई को भेजा ।

" प्रिय भगिनी, भाई रतनलालने मुझे भा. हीरालाल के स्वर्गवास की शोकजनक खबर दी । मैं आशा करता हूं कि तुम धीरज रखोगी हीरालालजी ने तो बहुत देश सेवा की थी । बापूके आशीर्वाद "

हिंदुस्थान के तथा निजामप्रांत के नेता, कार्यकर्ता एवं संस्थाओं से दुःख प्रदर्शक १५० पत्र आये । कै. हीरालालजी के मृत्युसे दक्षिण भारत मारवाड़ी समाजने एक हीरा खो दिया ।

मारवाड़ी नवयुवक मण्डल निजामाबाद

ता. ३१९।४४ को मंडल का वार्षिक उत्सव श्रीमान साहित्यरत्न पं. विष्णु दत्तजी शर्मा 'विकल' लाहोर निवासी की अध्यक्षता में मनाया गया। प्रार्थना भजनादि के उपरान्त मंडल की एवं केन्द्रीय हिन्दी पुस्तकालय की वार्षिक रिपोर्ट सुनाई गयी ।

आगामी वर्ष के लिये नया चुनाव निम्नोक्त हुआ ।

अध्यक्ष—व्यंकटलालजी
उपाध्यक्ष—रामप्रतापजी जाजू
मंत्री—मुरलीधरजी अट्टल
उप मंत्री—मुरलीधरजी शर्मा
कोषाध्यक्ष—श्रीनिवासजी बंग
पुस्तकाध्यक्ष—मदनलालजी तोतला
निरीक्षक—वासुदेवजी शर्मा
अन्तरंग सदस्य—

१ श्री कुलालजी बुब २ वंशीलालजी लोया।

पुस्तकालय को दानी महानुभावों की औरसे दैनिक ६ साप्ताहिक ५ मासिक ६ समाचार पत्र प्राप्त हुए हैं ।

मालपाणीजी नागपुर जेलमें

विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ है कि श्री राजस्थान हितकारक मंडल के सेक्रेटरी श्री राजेन्द्र प्रसादजी मालपाणी को जो ९ अगस्त १९४२ से कृष्ण मंदिर में २६ कलम के मातहत हैं, जबलपूर सेंट्रल जेल से नागपूर सेंट्रल जेल में स्थानान्तरित किया गया है । आपके ज्येष्ठ भ्राता श्री शरतचंद्रजी मालपाणी बी. काम. भी नासिक जेल में भारतरक्षा विधान की २६ वीं धारान्तर्गत नजरबंद हैं ।

दीवाली के प्रति !

★

तू ही वता सच दीपमालिके
कैसे मंगल दीप जलायें ?
जीवन की इस मरण घड़ी में
दीपों का त्यौहार मनायें ॥

धनवानों के प्रासादों में
सुलग रही हैं फुलझड़ियां।
गरीब किसानों की कोठरियोंमें
उमग रहीं आँसूकी लड़ियां ॥

मदिर मदिर मदिरा की प्याली
उन महलों में छलक रही हैं,
जब कण्ठों में आज हमारे
मृत्यु वाणी बोल रही है ॥

तू जाग, और जा उन महलों में
दानवता को आग लगा दे,
उन राग भरे भवनों को तू
मानवता के महल बनादे ॥

बंगाली को आज पेट भर
खाना भी नहीं मिलता,
कंगाली को आज कफनका
कपड़ा भी नहीं मिलता ॥

गुलाम देश को नही सोहता
दीपों का दरबार।
मां विजये आज़ादी लादे
फिर मनायंगे यह त्यौहार ॥

जलन भरी आहों को लेकर
क्या आई हो दीपक राग सुनाने।
जब बन्दी माँ है आज बुलाती
जीवन का त्यौहार मनावें !

तु मेरी कुटिया में आना
तब दीपों से स्वागत होगा।
कुंकुम नहीं रुधिर है मेरा
इसी रुधिर से स्वागत होगा ॥

रचयिता—
स्वरूपनाथ व्यास 'दाधीच'

[श्री. व्यासजी उदयपुर के उदीयमान किशोर कवि हैं । मेरे रैल राट मेरे विराट नामक कविता पर आपको कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। आपसे साहित्यिक संसार को बड़ी आशा है । सं.]

गंग-भोज की ओट में एक बृहद् नुक्ता

मंगलवार तारीख ३ अक्टूबर को उज्जैन की माहेश्वरी जाति के एक तथा-कथित धनी व्यक्ति रामचंद्रजी तोतला का जिनका स्वर्गवास करीब दो मास पूर्व ही हुआ था, मृतक-भोज, उनके सुपुत्रों द्वारा गंग-भोज की ओट में एक विराट रूप में किया गया। स्थानीय श्री माहेश्वरी समाज ने इस बात का पता लगते ही उन्हें प्रमुख व्यक्तियों द्वारा व समाज की बैठक में बुलाकर हर तरह से इस घृणित अपव्यय को रोकने का प्रयत्न किया, पर रूढ़ि-भक्त, धन व झूठी इज्जत के गर्व में चूर सुपुत्रों ने इस नेक सलाह के ऊपर जरा भी ध्यान नहीं दिया । विवश-होकर समाज को कड़ा रुख लेना पड़ा, जिसके फल-स्वरूप बहुत से समाजों ने इस भोज में भाग नहीं लिया । ग्वालियर स्टेट में नुक्ता कानून से भी बंद है; परन्तु अभी तक उसका समुचित उपयोग नहीं हो पा रहा है। स्टेट को इस विषय में कुछ कड़ा रुख लेना अत्यन्त आवश्यक है, ताकि धन के गर्व में चूर व्यक्ति कानून का दुरुपयोग न कर सकें। समाज की ओर से कानूनी कार्यवाही भी की गई, जो अभी तक चालू है।

इस कार्य में श्री अग्रवाल नवयुवक मंडल ने भी सहयोग देकर समाज की सहायता की, इसके लिये समाज उन्हें धन्यवाद देता है।

मंत्री-**श्री माहेश्वरी समाज** उज्जैन

मारवाडी व्यायाम शालाका तृतीय वार्षिकोत्सव

वागलकोट। पूर्व निश्चयानुसार शोलापूर निवासी श्री. लक्ष्मीनारायण राठी अध्यक्षजी और उनके साथ श्रीमान शंकरलालजी सोमाणी पधारे थे । और पूना निवासी श्रीमान मुरलीधरजी लोया आपके चि. बाबू मुकुंदलालजी एवं साथ में अंबिका प्रसादजी पधारे थे । रेल्वे से उतरते हो आपको स्वयंसेवकों ने नमस्ते किया । ठीक प्रातः ९-१८ पर व्यायामशाला की इमारत का शिलारोहण कार्यक्रम श्री. मुरलीधरजी लोया के हाथों से संपन्न हुआ । बाद में शिवानंद थियेटर में मेहमानों का परिचय कराया गया । व्यायाम प्रदर्शन के उद्घाटन के लिये श्री. अध्यक्षजी से विनंती की गयी । तद्नंतर ठीक ९-४५ से १२-३० तक व्यायाम प्रदर्शन किया गया । उपस्थिति ५०० के लगभग थी । व्यायाम में ७५ विद्यार्थियों ने भाग लिया । शामको ठीक ६-३० से कार्यक्रम शुरू हुआ । सर्व प्रथम स्वागताध्यक्षजी का भाषण हुआ । ता. १८-९-४४ से ता. २३-९-४४ तक शर्यतों में विजयी विद्यार्थियो को अध्यक्ष के हाथों से पारितोषिक बांटा गया । उपस्थित पांच सात महानुभावों के भाषणों के पश्चात् अध्यक्षजी का भाषण हुआ । अपने भाषणमें आपने व्यायामशाला को आधुनिक पद्धति के व्यायामका सामान भेजने का आश्वासन दिया । बाद में लोयाजी ने व्यायामोत्तेजक उपदेशों पर भाषण दिया । अंतमें स्वागत मंत्रीजी के सारे उपस्थित सज्जनों का आभार मानने के बाद सभा विसर्जन हुई ।

नथमल राठी, स्वागत मंत्री

मौलासर में धार्मिक समारोह

अभी हाल ही में विगत आश्विन शुक्ल से प्रारम्भ होकर आश्विन शुक्ला ११ मौलासर मारवाड़ में एक अभूतपूर्व म धार्मिक समारोह सुसम्पन्न हुआ है । अष्टात्तर शत बाल्मीक रामायण का पारा तथा साथ ही श्री महाविष्णुयाग करीब विद्वान पंडितों द्वारा सम्पन्न कि गया । राजस्थान के विभिन्न नगरों के अ सुयोग्य विद्वान इस यज्ञ समारोह में भाग के लिए पधारे थे । श्री विष्णुयज्ञ के आच थे नासिक निवासी श्री सुप्रसिद्ध पं. श्रीधर शास्त्री, आप ने अभी कुछ दिन पूर्व दिल्ली ऐतिहासिक शतकुण्डी यज्ञ का प्रधान आचार्य किया था । साथ ही श्री काशी, वृन्दाव मथुरा, नासिक, जैपुर आदि स्थानों से कि ही पारंगत वेदपाठी पंडितगण पध थे । दोनों कार्यों के लिए स्थानीय श्री सत नारायण भगवान के मंदिर के सामने दो सुन्द सुसज्जित विशाल मंडप निर्माण किये गये थे

आवश्यकता है

एक १४ वर्षीय सुन्दर सुशील और शिक्षि गृह कार्य में दक्ष माहेश्वरी कन्या के लिये ए सुयोग्य माहेश्वरी वर की आवश्यकता जिसकी आयु २०-२४ वर्ष हो और कालेज का सुयोग्य छात्र हो अथवा कि अच्छे व्यवसाय में संलग्न हो। दहेज के इच्छु पत्र व्यवहार न करें ।

—**जी. आर. कोठारी**
भेलसा जी. आई. पी.

—आवश्यकता है एक २३ वर्षीय शिक्षि जैन नवयुवक के लिये एक स्वतंत्र सुसंस्कृ व शिक्षित कन्या की जो किसी भी वैश्य जा में से हो । जाति पांति का भेद भाव मानने वाले सज्जन कष्ट न उठायें।

पत्र व्यवहार का पताः—
S. R. Jain Post Box No 93.
New Dell

—एक २५ वर्ष लगभग की बाल विधव की आवश्यकता है । सोनी खांपवाले । लिखने का कष्ट न करें । पत्र व्यवहारका पता बाक्स नं. ८३ माहेश्वरी कार्यालय अलीचेम्बर्स डीन लेन फोर्ट, मुंबई.

(पृष्ठ ५ का शेष)

'इतना सहृदय पतिता का हृदय' रानी ने कहा।

'इतना गौरव मन्डित पतिता का हृदय' कुमार ने उच्छवास लिया।

'मेरे सौभाग्य का दाता, पतिता का हृदय' रेखा ने अश्रु श्रद्धाञ्जली तिलोत्तमा के चरणों पर चढ़ाते हुए कहा।

मरती हुई तिलोत्तमा ने अंतिम बार नेत्र खोल के कहा—'हाँ, बेटी ! पतिता का हृदय भी नारी का हृदय है।'

और जब राज्य वैद्य शशि शेखर ने आकर तिलोत्तमा की हृदय परीक्षा की तब पतिता का हृदय कठोर साधना कर के विश्राम ले चुका था!

प्रजा के खून की प्यास भी पतिता के शान्त हृदय के साथ शान्त हो चुकी थी।

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India
Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

गुरुकुल कांगड़ी

93-२-२88

एक प्रति का ।=)

[अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र]

Reg. No. B 4441

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

— प्रवर्तक —
स्व० भागीरथदासजी भूतड़ा

कार्यालय
अली चेम्बर्स, ग्रीन लेन,
फोर्ट बम्बई

वर्ष ३५, संख्या ११]

बम्बई ता. ७ अक्टूबर १९४४

[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

गांधीजी मानवता के प्रकाश स्तंभ

● (लेखक-**रोम्यां रोलाँ**) ●

गांधीजी केवल हिन्दुस्तान के राष्ट्रीय इतिहास के ही नायक नहीं है कि जिनकी पुण्यस्मृति कथा के रूपमें युगयुगांतर तक प्रतिष्ठित रहेगी। उन्होंने केवल क्रियात्मक जीवन का प्राण बनकर हिन्दुस्तानियों में उनकी एकता, उनकी शक्ति और उनकी स्वतंत्रता की कामनाकी गौरवपूर्ण चेतना ही नहीं भरदी बल्कि समस्त पाश्चात्य जनताके हित के लिए उसके ईसामसीहके सन्देश को पुनर्जीवन दिया, जो अबतक उपेक्षित या प्रवंचित रहा। उन्होंने अपना नाम मानवजाति के साधुसन्तमें अंकित कर दिया है, उनकी मूर्ति का उज्ज्वल आलोक भूमण्डल के कोने कोने में प्रविष्ट हो गया है।

यूरोप की दृष्टिमें उनका उदय उस समय हुआ, जब ऐसा उदाहरण लगभग एक आश्चर्य लगता था। यूरोप चार वर्षों के उस भीषण युद्ध से निकल ही पायाथा, जिसके फलस्वरूप सर्वनाश, भग्नावशेष और पारस्परिक कटुताके चिन्ह अभी विद्यमान थे और और भी अधिक नृशंस नये नये युद्धोंके बीज बो रहे थे। साथ ही साथ क्रांतियां हो रही थीं और समाजगत पारस्परिक घृणाकी शृंखला राष्ट्रों के हृदयों को नोच नोच कर खा रही थी। यूरोप एक ऐसी दुर्भर रात्रि के नीचे दबा कराह रहा था जिसके गर्भ में थी निराशा और निस्सहाय अवस्था और प्रकाश की एक भी रेखा दृष्टिगोचर नहीं हो रही थी। ऐसे मुहूर्तमें इस दुर्बल, नम्र और नन्हे से गान्धीका अवतरण हुआ जिसने सर्वांगीण हिंसा की भर्त्सना की, न्याय और प्रेम ही जिसके हथियार थे और जिसके नम्र किन्तु अविचल सौजन्य ने अपनी प्रारंभिक सफलताएं अभी प्राप्त ही की थीं। ऐसे गांधी का उद्भव पश्चिम की परम्परागत, चिर प्रतिष्ठित और सुनिर्द्धारित विचारधारा तथा राजनीति की छातीपर एक अद्भुत प्रहार के रूपमें जान पड़ा। साथ ही साथ वह आशा की किरण के रूप में भी लगा जो निराशा के अंधकार में फूट पड़ी थी। जनता को उस पर विश्वास होता ही नहीं था। और इस लिए महानतम अद्भुत शक्ति की वास्तविकता का विश्वास करने में कुछ समय लगा। मुझसे अधिक अच्छी तरह इस बातको और कौन जानता? क्योंकि मैं ही पश्चिम के उन व्यक्तियों में से था जिन्होंने पहले पहल महात्माजीके संदेशको जाना और उसे फैलाया। परन्तु ज्यों ज्यों भारत के इस आध्यात्मिक गुरु के कार्य के अस्तित्व और निरन्तर स्थिर प्रगति का विश्वास लोगोंको होता गया, त्यों त्यों पश्चिम से प्रशंसा और श्रद्धा की बाढ़ उनकी ओर आने लगी। कुछ लोगोंने जो स्वतंत्र विचारों के थे, पश्चिमी सभ्यता की अव्यवस्थित गतिसे घबरा रहे थे। क्योंकि उनकी पश्चिमी सभ्यता का आधार अब कोई नैतिक सिद्धांत नहीं रहा था और जिसकी आविष्कार और खोज संबंधी अद्भुत प्रतिभा अपनेही सर्वनाशकी दिशामें जा रही थी, यह देखा कि गांधीजी सभ्यता के पाखण्ड और अपराधी की निन्दा कर रहे है और मानवजाति की प्रकृति की ओर, सरलताकी ओर, स्वाभाविक स्वस्थ जीवनकी ओर लौट जानेका प्रचार कर रहे हैं, तो उन्होंने समझा कि वह रूसो और टालस्टाय के ही दूसरे अवतार हैं। सरकारोंने उनको उपेक्षा और तिरस्कार की निगाहोंसे देखने का ढोंग किया किन्तु सर्वसाधारण ने अनुभव किया कि गांधी उनके घनिष्ठतम मित्र और बन्धु हैं। मैंने यहां स्वीजरलैण्ड मे देखा कि उन्होंनें गांवों और पहाड़ में बसेनम किसानो में कैसे पवित्र प्रेम की प्रेरणा की है।

लेकिन यद्यपि ईसा के गिरि-प्रवचन की भांति उनके न्याय और प्रेम के सन्देश ने असंख्य लोगोंके हृदयों को स्पर्श किया है, तो भी स्वयंयुद्ध और विनाशकी ओर जाती हुई दुनियाकी गति बदलने के लिए वह जिस प्रकार नजरत के मसीह के सन्देश पर निर्भर नहीं थे ठीक उसी प्रकार इस बातपर भी निर्भर नहीं रहे। राजनीतिमें गांधीजी के अहिंसा सिद्धान्त को व्यावहारिक रूप देनेके लिए आजयूरोपमें जैसा वातावरण विद्यमान है, उससे कहीं भिन्न नैतिक वातावरण होना चाहिए। उसके लिए अपेक्षा होगी सर्वांगीण विपुल आत्मबलिदानकी। परतु आज तानाशाही राष्ट्रोंको नये तरीकोंके आगे, जिन्होंने दुंनियामें आधिपत्य जमा रखा है और जिन्हों ने लाखों मानवों के शोणित के रूपमें अपने निर्दय चिन्ह छोड़े हैं, इसमें सफलता की आशा नहीं है। जब तक जनता चिरकाल तक परीक्षाओंमें से न निकल ले, तबतक ऐसे बलिदानों की ज्योति के अपना निजी प्रभाव बढ़ाने की न तो संभावना ही है न आशा। और जनता में तबतक स्वयं को शक्तिशाली बनाने की बहादुरी नहीं आ सकती, जबतक उसका पोषण देने और उदात्तता की ओर से जाने के लिए गांधीजी जैसी किसी निष्ठा की प्राप्ति न हो। पश्चिम के अधिकांश लोगों–क्या जनता और क्या उनके नेताओंमें इस ईश्वरनिष्ठा का अभाव है, तथा नये नये पन्थ, चाहे वे राष्ट्रवादी हों, चाहे क्रांतिवादी, सब हिंसा के जन्मदाता हैं। यूरोप वासियों के लिए सबसे अधिक आवश्यक कार्य है–अपनी स्वाधीनता, स्वतंत्रता और अपने प्राणोंतक की रक्षा करना जो आज फासिस्ट और जात्याभिमानी राष्ट्रों के सर्वग्रासी साम्राज्यवाद से आतंकित है। उनके इस राजनीतिक उत्तरदायित्व को छोड़ देने का अनिवार्य परिणाम होगा—मानव की गुलामी–संभवतः युग युगान्तर तक। ऐसी परिस्थितियों में हम गांधीजी के सिद्धांत को, चाहे उसे हम कितनेही आदर और श्रद्धा की निगाह से देखें, यूरोपमें व्यवहृत किये जानेका आग्रह नहीं कर सकते।

ऐसा जान पड़ता है कि गांधीजी का सिद्धांत दुनिया में वह काम कर दिखाने के लिए आया है, जो उन महान मध्ययुगीन ईसाई संघों ने किया था, जिनमे नैतिक सभ्यता, शांति और प्रेम की भावना तथा आत्मिक धीरता और निश्चलता की पवित्रतम निधि उसी तरह सुरक्षित थी जैसे किसी उमड़ते हुए सागर में कोई टापू। कितना गौरवपूर्ण और पवित्र कार्य! गांधीजी की यह स्पिरिट उनके पूर्ववर्ती संत ब्रूनो, सन्त बर्नार्ड, संत फ्रांसिस जैसे ईसाई मठों के महान संस्थापकों की भांति संकटापन्न और परिवर्तनशील इस युग को प्रबल प्रवाह में थी, जिनमें से मानव जाति गुजर रही है। शांति-तोष, मानव–प्रेम और ऐक्य को अजर अमर रखे।

और हम बुद्धिमान, विज्ञानवेत्ता, विद्वान कलाकार, हम जो अपनी नगण्य शक्तिओंकी सीमाके अंदर अपने मन में वह मानव समाज का नगर, जिसमें 'ईश्वरीय शांति का राज है' निर्माण करने का प्रयत्न करते हैं, हम जो (गिरजे की भाषामें) 'तीसरी कोटि के' हैं और जो मानवता पर आधारित विश्वबंधुत्व को मानते हैं, अपने इस गुरु और बंधु गांधीको, रहा है, अपने प्रेम और आदर का हार्दिक अर्घ्य अर्पण करते हैं।

माहेश्वरी
ART CORNER

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ७ अक्टूबर १९४४

गांधी-जिन्ना-वार्तालाप भंग !

जिस गांधी जिन्ना वार्तालाप की ओर करोड़ों देशवासियों का ध्यान लगा हुआ था, वह अंत में असफल हो गया ।

वार्तालाप की विफलता ने उन सब लोगों की आखें खोल दीं, जो जिन्ना से यह आशा लगाये बैठे थे कि वह ब्रिटिश सरकार को परेशानी में अवश्य डालेंगे । ऐसे व्यक्ति भावुकता की लहर में बह गये थे-जिन्ना के कुछ चालाकी भरे वक्तव्यों और भाषणों ने, जिनमें उन्होंने ब्रिटिश सरकार कीं तीव्र आलोचना की थी उससे संघर्ष करने की इच्छा रखकर नहीं अपितु अधिक सुभीते प्राप्त करने क लिए, उन्हें भूलभुलैया में डाल दिया थां । वार्तालाप भंग होने पर उभय नेताओं ने अपने बीच हुआ पत्र व्यवहार प्रकाशित करा दिया जो बतलाता है कि गांधीजी और जिन्ना के दृष्टिकोण, उद्देश्य और उसकी प्राप्तिके साधनों में जमीन और आसमान का अंतर है । एक भारत को स्वतन्त्र करने के लिये छटपटा रहा है, दूसरा भारत की स्वतन्त्रता के शत्रुओं से गठबंधन किये हुए है । एक चाहता है कि भारतीय राष्ट्र स्वतन्त्र होकर अपने स्वाभाविक उत्थान की दिशा में बढ़े-दूसरे को यह मंजूर नहीं, उसे ब्रिटिश सरकार के जुए के नीचे दबे रहने में मजा आता है । वास्तव में गांधीजी चाहते थे कि पहले हिन्दू मुसल्मान मिलकर विदेशी सत्ता से पिण्ड छुड़ायें तब मुसल्मान स्वभाग्य निर्णय के अपने अधिकार का प्रयोग करें । इसके विपरीत जिन्ना मि. ब्रिटिश सरकार की छत्रछाया में ही पाकिस्तान स्थापित करना चाहते हैं और भारत की आजादी के लिए लड़ने से कतराते हैं । वार्तालाप के दर्मियान गांधीजी ने मि. जिन्ना के सामने यह शर्तें रखीं-(१) अगस्त १९४२ का प्रस्ताव हमारी आकांक्षाओं का प्रतीक हो ' (२) विदेशी सत्ता को हटाने के लिये हिन्दू-मुसल्मान एक साथ मिलकर प्रयास करें, (३) स्वाधीनता प्राप्त करने के बाद मुसल्मान हिन्दुस्थान से अलग हो सकते हैं, किन्तु इसके लिये एक सन्धि करनी होगी । इस सन्धि में दोनों के समान स्वार्थों और अल्पसंख्यकों के अधिकार सुरक्षित करने होंगे । (४) धर्म राष्ट्रीयता का आधार न होगा (५) लीग अपना पाकिस्तान प्रस्ताव रद कर दे, क्योंकि वह समस्त भारत के लिये घातक है । इसके खिलाफ जिन्ना ने ये शर्तें रखीं:—(१) पाकिस्तान प्रस्ताव स्वीकार किया जाय (२) विदेशी सत्ता की छत्रछाया में पृथकरण (३) स्वाधीनता के पहले ही पृथकरण हो जाय; मतगणना बेकार है । (४) भारत के मुस्लिम एक पृथक राष्ट्र स्वीकार किये जायें (५) अगस्त १९४२ का प्रस्ताव रद किया जाय, क्योंकि यह समस्त भारत, विशेष कर मुस्लिमों के लिये घातक है । मि० जिन्ना की तुरन्त बंटवारे की मांग पर हमें हंसी आती है । गांधीजी के पास है क्या जो बांट दें ? स्वतन्त्रता दूसरे के पास पड़ी है, उसे प्राप्त करने के लिये कंधे से कंधा भिड़ा कर लड़ने को वह तैयार नहीं—दासता को बांटने के सिवाय और क्या धरा है ? यही नहीं उन्हों ने गांधीजी को प्रतिनिधि-मूलक अधिकारी स्वीकार न करने की धृष्टता की । गांधीजी ने दोनों के बीच फैसला कराने के लिये एक बाहरी व्यक्ति या व्यक्तियों को बुलाने की इच्छा प्रकट की, किन्तु जिन्ना ने उसे अस्वीकार कर दिया । गांधीजी मुस्लिम लीग परिषद में भाषण करना चाहते थे, किन्तु यह भी जिन्ना ने अस्वीकार कर दिया ।

मि० जिन्ना ने अपने देशद्रोह का अच्छी तरह परिचय दे दिया है । इसमें अब संदेह करने की गुञ्जायश नहीं रही है कि वह भारत को स्वतंत्र नहीं देखना चाहते और इसमें बराबर रोड़े अटकाते रहेंगे । 'भारत की स्वतन्त्रता का प्रयास मुस्लिमों के लिये घातक है' उनका यह मतव्य उनके देशद्रोही नेतृत्व का परिचायक है । गांधीजी को अधिकारी व्यक्ति मानने से इन्कार करना उनकी कलुषित मनोवृत्ति प्रदर्शन करता है । जिन्ना की कौन कहे ब्रिटिश सरकार तक गांधीजी को करोड़ों भारतीयों का एकमात्र नेता समझती और स्वीकार करती है । गांधीजी ने उनकी पूर्वगढ़ी प्रायः सभी मांगें स्वीकार कर लीं किंतु उन्होंने उनमे नयी मांगें जोड़कर अपना अड़ंगा डालने वाला स्वरूप विश्व को दिखा गया । यह वार्तालाप भंग हो गया, इसका हमें विषाद नहीं । हमें जिन्ना के नेतृत्वमें धमान्धता के नारे पर एकत्र करोड़ों मुस्लिमों के भाग्य की चिन्ता है । जब जिन्ना भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष में उनको शामिल नहीं होने देते तो स्वतंत्र भारत उनके साथ निश्चय ही कठोर व्यवहार करेगा । आश्चर्य नहीं कि उनकी यहूदियों की जैसी गति हो जो जिन्ना की तरह एक राष्ट्र तो हैं किन्तु मातृभूमि का कहीं पता नहीं । और स्वतंत्र मुस्लिम राष्ट्र क्या गद्दारों और देश द्रोहियों को अपनायेंगे ? हमें तो जरा भी विश्वास नहीं है । कांग्रेस के नेताओं से भी हम दो शब्द कहना चाहते हैं । अब जिन्ना जैसी प्रतिक्रियावादी शक्तियों की उपेक्षा करना उनका नीति होना चाहिये और मुस्लिम जनता के बीच पहुंच कर जिन्ना की पोल खोलकर उन्हें भारतीय स्वाधीनता संग्राम के सैनिक बनाना चाहिए ।

प्रगतिशीलता क्या बला ?

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३२ वें अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष सेठ रामनाथजी पोदार ने अधिवेशन में जो भाषण दिया था वह अति सारगर्भित, विश्लेषणात्मक, और युक्तियों से परिपूर्ण था । आपने अपने भाषण में जयपुर इतिहास, साहित्य में जयपुर का स्थान, जयपुर के साहित्य और कला पर विशेष जोर दिया । इसके बाद पोदारजी ने हिन्दी साहित्यपर विचार व्यक्त किये । हिन्दी के भावी विकास के संबंध में आपने युद्धोत्तर योजनाओं में हिन्दी को स्थान देने का संकेत किया और कहा कि " वास्तव में हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि स्वतंत्र भारत में शीघ्रातिशीघ्र हिन्दी, राष्ट्र भाषाके साथ साथ राजभाषा भी बन जाय । आपका यह सुझाव बड़े मार्केका है । जब कि सभी क्षेत्रों में युद्धोत्तर योजनाएं बन रहीं हैं तो हमारे साहित्य क्षेत्र में कोई ठोस और व्यवहारिक योजना क्यों न बने ? इस प्रकार की योजना का उद्देश्य निस्संदेह हिन्दी को अधिक लोकप्रिय और समृद्ध बनाना होगा । अभी से इसे लोकप्रिय बनाने के उद्योग का महत्व है । यदि हिन्दी भाषा अपने लिए क्षेत्र बनाये रखेगी, तो स्वतंत्र भारत में इसे अपना उचित स्थान ग्रहण करने से कौन रोक सकेगा ? अपनी विविध विशेषताओं के कारण यह राष्ट्रभाषा के गौरवास्पद पद पर विराजेगी, इस में सन्देह करने की गुंजायश नहीं है ।

आपने हिन्दी विश्वविद्यालयकी स्थापना की आवश्यकता बतायी । हम भी इसकी आवश्यकता अनुभव करते हैं और यह चाहते हैं कि जल्दी से जल्दी इसकी स्थापना हो । जब हम हिन्दीके राष्ट्रभाषाके उच्चपदपर आसीन करनेका प्रयास कर रहे हैं तब हिन्दी भाषा की उच्चतम शिक्षाके लिए विश्वविद्यालय की नितांत आवश्यकता है । यह इतने बड़े पैमाने पर होनी चाहिए ताकि समस्त भारतकी आवश्यकता की पूर्तिकर सके । सम्प्रति हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अन्तर्गत जो हिन्दी विश्वविद्यालय चल रहा है उसका काम सिर्फ परीक्षाएं लेना ही है । हमारा सुझाव यह है कि नया विश्वविद्यालय न केवल परीक्षाएं ले बल्कि शिक्षण का कार्य भी अपने हाथ में ले । केवल तभी वह अपना नाम सार्थक करेगा एवं वांछनीय सम्मान पा सकेगा ।

पोदारजी के भाषण का वह भाग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है जिसमें आपने प्रगतिशील साहित्य पर प्रकाश डाला । आपने कहा "आज कल गद्य-पद्य साहित्यिक रचनाओं तथा कवि सम्मेलनोंमें इन प्रगतिशील साहित्यिकों की जो रचनाएं पढ़ी या सुनी जाती हैं उनमें से अधिकांशमें साहित्य के नामपर खल पूंजीपतियों की निंदा की जाती है, वर्ग भेद और श्रेणी भेद की खाइयां खूब गहरी खोदी जाती हैं और समाजमें धनिकों के विरुद्ध द्वेष का बीज बोया जाता है । आप साहित्यिक इस पर विचार करें । पूंजीवाद का विरोध करने में पूंजीपतियों के प्रति घृणा पैदा करना आवश्यक नहीं । " श्री पोदारजी ने यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न उठाया है । आज प्रगतिशील साहित्य के नामपर गाली गलौज और अश्लीलतापूर्ण साहित्य का निर्माण किया जा रहा है । हमें भय है, इस प्रकार के साहित्यिक किसी का भी हित साधन नहीं कर रहे हैं । प्रगतिशीलता कोई निर्द्धारित और अपरिवर्तनीय वस्तु नहीं है । परिवर्तन इसका धर्म है । आज जिसे प्रगतिशीलता कहा जाता है कल वही प्रतिगामिता हो सकती है । वस्तुतः समाज की अर्थनीति इसमे परिवर्तन लाती है । आजके साहित्य को प्रतिगामी कहनेंवालों का साहित्य कल खुद प्रतिगामी न समझ जायगा इसकी क्या गारंटी है ? अस्तु साहित्य-क्षेत्रमें सहिष्णुताकी नितान्त आवश्यकता है । गाली गलौज और आक्षेप से न पूंजीवाद मिट जायगा और न पूंजीपति ही घबड़ा जायंगे । मूल वस्तु पूंजीवाद है । यदि इसकी आलोचना की जाय, तो इसका कुछ अर्थ है किन्तु पूंजीपतिवर्ग मात्र को खरी खोटी सुनाना महज ओछापन है । अबतक के साहित्य-विकास में क्या पूंजीपतियों का कोई हाथ नहीं है ? उन्होंने भी इसे समृद्ध बनाने का प्रयास किया है । कमस कम इस नाते भी द्वेष और शत्रुतापूर्ण रुख न लेना चाहिए ।

और पूंजीवाद से लड़ने का साधन गाली गलौज और द्वेषपूर्ण प्रलाप ही क्यों समझ लिया गया है ? क्या साम्यवाद के अधकचरे विद्यार्थी स्टेलिनिस्टों की तरह अपने इस गलत ढर्रे के लिए मार्क्स, एंजिल्स और लेनिन की दुहाई देंगे ? जहां तक हमें पता है, मार्क्स लेनिन ने किसी भी सामाजिक व्यवस्था पर प्रहार करने में ओछेपन से काम नहीं लिया । उन्होंने किसी वर्ग विशेषको कभी भी नहीं छुआ । मार्क्सवादी शस्त्रागार में इस प्रकार के युद्ध के लिए शस्त्र हैं और इन शस्त्रों की प्रखरताको इतिहास सिद्ध भी कर चुका है । फिर गाली गलौज की जरूरत ही कहां है ? हम साहित्य के पुनीत क्षेत्र में इस प्रकार के कामों को गुंडाशाही समझते हैं और इनकी निंदा करते हैं । श्री पोदारजी ने इस महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर समस्त हिन्दी साहित्यिकों का ध्यान आकृष्ट कर बड़ा अच्छा काम किया है । इसके लिए हम उन्हें धन्यवाद देते हैं ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन

हिन्दी साहित्य को समृद्धिशाली बनाया जाय

देश के कोने कोने में हिन्दी की पताका फहरा रही है

स्वागताध्यक्ष और सभापतिजी के अभिभाषण

श्री रामनाथजी का भाषण

अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३२ वें अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष सेठ रामनाथजी पोदार ने अपने भाषणमें जयपुर इतिहास, साहित्य में जयपुर का स्थान, जयपुर के साहित्य और कला पर विशेष प्रकाश डाला। आपने जयपुर की सर्वाङ्गीण उन्नति का उल्लेख करते हुए जयपुर नरेश के प्रजा प्रेम और प्रगतिशीलता और वर्तमान प्रधान मन्त्री की बहुज्ञता, आदर्शवाद और कार्य क्षमता की प्रशंसा की और कहा कि–'सर मिर्जा इस्माइल ने यहां आते ही पिछले दो वर्षोंमें जयपुरमें अन्यान्य प्रकारकी उन्नतिकी ओर ध्यान देनेके साथ साथ कला और साहित्य की ओर भी ध्यान दिया है। सर मिर्जा इस्माइल ने हिन्दी और उर्दू के प्रश्न को भी अपने ढंगसे राष्ट्रीयताके आधार पर हल कर करने का प्रयत्न किया। हिन्दी-उर्दू दोनों को ही समान रूप से राजभाषा के रूप में व्यवहार में लाने का आदेश राज्य ने दिया है। वर्तमान राज कर्मचारियों को हिन्दी सीखने के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है तथा भविष्य में हिन्दीका अधिकसे अधिक प्रयोग हो इसकी भी चेष्टा की जा रही है। मैं जानता हूं कि यह परिस्थिति भी आप में से कितनों ही की दृष्टि में सन्तोषप्रद नहीं है। लेकिन यदि जयपुर के सभी हिन्दी भाषाभाषी नागरिक एकमात्र हिन्दी का ही उपयोग करने का निश्चय कर लें तो यहां सर्वत्र हिन्दी ही हिंदी दिखायी देने लग जायगी।

इसके बाद पोदारजीने हिन्दी साहित्य पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सर्व प्रथम राज स्थानीय भाषा की आवश्यकता बतायी। हिन्दी के भावी विकास के सम्बन्ध में आपने युद्धोत्तर योजनाओं में हिंदी को स्थान देनेका संकेत किया और कहा कि वास्तव में हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि स्वतंत्र भारत में शीघ्रातिशीघ्र हिन्दी राष्ट्रभाषा के साथ साथ राजभाषा भी बन सके। आपने हिन्दी विश्वविद्यालय की आवश्यकता भी बतायी। आपने बताया कि अंग्रेजी भाषा को इतना सरल बना दिया गया है कि केवल ८०० शब्द जानने से आदमी उसे लिख और बोल सकता है। सम्मेलनको भीं ऐसी योजना बनानी चाहिए जिससे दो चार महीनें में ही हिन्दी सीखी जा सके।

प्रगतिंशील साहित्य पर पोदारजी ने अपनों मत प्रकट करते हुए कहा–'आजकल गद्य-पद्य साहित्यिक रचनाओं तथा कवि सम्मेलनों में इन प्रगतिशील साहित्यिकों की जो रचनाएं पढ़ी या सुनी जाती हैं उनमें से अधिकांश में साहित्य के नाम पर केवल पूंजीपतियों की निन्दा की जाती है। वर्ग भेद और श्रेणी भेद की खाइयां खूब गहरी खोदी जाती हैं और समाजमें धनिकों के विरुद्ध द्वेषका बीज बोया जाता है। मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है कि आप साहित्यिक इस विषय पर विशेष विचार करें, भारत के प्रति हमारे विदेशी शासकों की चालें ही, हमारे लिये अति गम्भीर चिन्ता का कारण बनती जा रही हैं, ऐसी परिस्थिति में हमारी घरेलू समस्याएं तो न बढ़ें। ...सर्जक के अतिरिक्त ध्वंसात्मक साहित्य के लिये स्थान ही कहां है? समाज की प्रथा को बदलनेका उपाय, उस प्रथा के पक्षपातियोंके प्रति घृणा पैदा करना नहीं होना चाहिए। पूंजीवाद का विरोध करने में पूंजीपतियों के प्रति घृणा पैदा करना ही आवश्यक नहीं।' अन्य देशोंकी भांति, यहां भी जीवन–निर्माण की प्रणाली में परिवर्तन होना अनिवार्य है। परन्तु यह परिवर्तन लोगों को एक दूसरे से भिन्न करने की अपेक्षा उन्हें सम्मिलित करके ही हो, तो सबके लिये हितकर होगा।

'मैंने आपके समक्ष उक्त बातें रखी हैं। आप इन्हें एक ऐसे व्यक्ति के विचार समझने की कृपा करें, जो पूंजीपतियों को श्रेणी में भी गिना जा सकता है तथा आपके साथ बैठ कर, साहित्य की उन्नति में भी भाग लेना चाहता है।

अन्त में आपने हिन्दीके उपयोगी साहित्य की उपयोगिता बतायी और कहा कि विकेन्द्रीकरण तथा जनपदीय आन्दोलन की समस्याओं पर भी आपको विचार करना है।

सभापतिजी का भाषण

सभापति गोस्वामी गणेशदत्तजी ने अपने सारगर्भित भाषण में कहा कि—'सबसे बड़ी बात तो यह है कि हिमालय की अमल धवल चोटियों का मुकुट धारण करने वाला और गर्जन गान रत सिन्धु से पग प्रच्छालित करने वाला हमारा यह देश चिरन्तन कालसे जिस भाषामें बोलता, गाता और गरजता आया है हिन्दी उसी भाषा का परम्परागत प्रसाद है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में 'इसका एक एक शब्द हमारी सत्ता का व्यञ्जक है, हमारी संस्कृति का सम्पुट है, हमारी जन्मभूमि का स्मारक है, हमारे हृदय का प्रतिबिम्ब है, हमारी बुद्धि का वैभव है। देश की जिस प्रकृति ने हमारे हृदय में रूप-रङ्ग भरा है, उसी ने हमारी भाषा का भी रङ्ग-रूप खड़ा किया है। आचार्य कहते हैं कि इस भाषा का पहले चाहे जो नाम रहा हो आज उसका नाम हिन्दी है। इतिहास और भाषा विज्ञान के पण्डितों ने सिद्ध किया है कि हमारी भाषा का यह रूप भी आज से नहीं, मुस्लिम शासन काल के भी बहुत पहले से प्रचलित है। यदि ऐसा न होता तो मुहम्मदकासिम, मुहम्मद और खिलजीयों एवं तुगलकों ने हिंदी को अपने दफ्तरों और सिक्कों में स्थान न दिया होता, खुसरो और जायसी हिन्दी में न बोले होते; मुसल्मान मित्रों ने इस्लाम के धार्मिक भावोंकी व्यञ्जना के लिये 'इन्द्रिय' और विकार जैसे शब्दों सें काम न लिया होता।

आपने हिन्दी की सर्वव्यापकता बताते हुए कहा कि जनता के हृदय में हिन्दी का आदर स्थित ही नहीं रहा, बल्कि उत्तरोत्तर बढ़ा है। इस समय काश्मीरसे लगाकर कुमारी अन्तरीप तक और कराची से मणिपुर तक हिन्दी की पताका लहरा रही है, वायुमण्डल में हिन्दी के मीठे बोल ध्वनित हो रहे हैं। आवश्यकता इस बात की थी, कि हिन्दू–मुसल्मानों में एकता स्थापित करने वाली हिन्दी की यह शक्ति देखकर लोग नतमस्तक हो जाते; परन्तु नहीं, कुछ लोग आज भी कतरब्यौंत करने में लगे हैं। भारत सरकार ने घोषक-आल इण्डिया रेडियों द्वारा 'हिन्दुस्तानी' की आड़ में एक ऐसी भाषा ठूंसने का प्रयास किया है जो इस देश के अधिकांश निवासियों से कोई सम्बन्ध नहीं रखती! आपने बताया कि रेडियों द्वारा कैसी भाषा का प्रचार होता है। 'आदाब अर्ज करता हूं' सवेरे ही रेडियो पर सुनाई पड़ता है। रेडियो के अनर्गल प्रलाप के लिये श्री रविशंकर शुक्ल की लैंग्वेज पालिसी आफ आल इण्डिया रेडियों नामक पुस्तक पढ़ने से पूरा-पूरा परिचय मिलेगा। यही हाल डाक विभागका है। हिन्दी में लिखा हुआ पत्र का पता 'मुर्दाघर' में भेजकर मोल्वी अब्दुल हक के इस कथन पर अपनी मुहर लगायी जाती है कि हिन्दी 'मुर्दा भाषा' है! भारत सरकार के सूचना और ब्राडकास्टिंग विभाग की ओर से अंग्रेजी पात्रों को ३९१२५४ रुपये के, हिन्दी पत्रों को ५४६१० रुपये के और उर्दू पत्रों को ८२११४ रुपये के विज्ञापन में दिये जाते हैं। सैनिकों को शिक्षा देने की सरकार ने जो योजना बनाई है, उस के अनुसार राष्ट्रलिपि के नाम पर उर्दू पढ़ाई जा रही है। इसके बाद आपने पंजाब, सीमा प्रांत, सिन्ध, बम्बई और हैदराबाद के साथ साथ देशी राज्यों में हिन्दी की उपेक्षा की चर्चा की।

अन्त में आप ने हिन्दी साहित्य के प्रत्येक अङ्ग पर प्रकाश डाला और आशा प्रकट की कि हिन्दी के सेवक हिन्दी की सेवा करने में अपना तन मन धन लगायेंगे। हिन्दी हिन्दुस्तान की देव भाषा और राष्ट्र भाषा है और भविष्य में राज भाषा भी यही बनेगी। आप ने हिन्दी साहित्य-भण्डार को उत्तरोत्तर भरने के लिए सबसे अपील की।

म्हारी काश्मीर यात्रा

लेखक-देशभक्त कुंवर चांदकरणजी शारदा

अमरनाथजी को पुण्यतीर्थ कश्मीर की राजधानी श्रीनगरसूं उत्तर पूर्व दिशा में कैलाश पर्वत के नीचे कश्मीर प्रदेश की लीदर घाटी में है। अमरनाथजी की गुफा अमरावती गंगा पर है। सनातन धर्मावलम्बी ई तीरथने बहुत आदर की दृष्टि से देखे है। महादेवजी तथा पार्वतीजी का निवासस्थान गिरिराज हिमालय की गगन चुम्बी चोट्यां पर होवा के कारण ओ स्थान सदा हिमसे ढक्योड़ो रह वे है। भारतवर्षका प्रत्येक भागसूं साधु महात्मा तथा श्रद्धालु-यात्री सावण की पूनों के दिन अठे यात्रा करवा आवे है। मार्ग में शीतल झरना, बरफ को पुल, हेम से ढक्योड़ी पर्वत माला, चीड़ तथा देव दारु का ऊँचा २ वृक्ष, सुन्दर हरी २ घास का जंगल, रंग बिरंगा पुष्पां से भर्योड़ी पहाड़ियाँ तथा बरफ का टुकड़ा बहाती हुई। ठंडी २ नद्यां घणा ही मनोरंजक दृश्य उपस्थित करे है। घोड़ा टट्टू पर बैठ कर बरफ का पुल पर ग्याने भगावा से हृदय प्रफुल्लित हो जावे है। आ सुन्दर अमरनाथजी की विशाल गुफा ५० फुट लम्बी ५५ फुट चौड़ी और ४५ फुट ऊँची है और हेम का पर्वतों सूं ढक्योड़ी समुद्र तट से पन्द्रह हजार फीट की ऊँचाई पर है। ईकी ड्योढ़ी पर एक गोलाकार सुन्दर महराब बनी हुई है। ई के मांयने सैकड़ा आदमी ठहर सके है। गर्मी की ऋतु में भी गुफा के नीचे और जीमणी तथा बाई बाजू बरफ रह वे है। और दूर २ तक घासपात तथा कोई भी जीव जन्तु को चिन्ह भी दृष्टिगोचर नहीं होवे है। ई गुफा के मांयने एक बर्फीली शिला है और ई ने ही बर्फ का शिवलिंग को आकार होवाके कारण अमरनाथ महादेव कह वे है। ज्यूं २ चाँदनी रात में चन्द्र भगवान पूर्णिमा की ओर जातो जावे है त्यूं २ ई शिवलिंग को आकार भी बढ़तो जावे है। और जीं दिन पूनम की रात ने सोलह कलाँ से पूर्ण चन्द्रमाँ आनन्द से हँसे है वीं दिन ही शिवलिंग भी पूरो तैयार हो जावे है। और ज्यों २ चन्द्रमाँ की ज्योति बुद पखवाड़ा में शनैः २ कम पड़ती जावे है त्यूं २ वो शिवलिंग भी घटतो जावे है और अमावस्या के दिन तो ईको कुछ भी हिस्सो शेष न रह वे मावस पच्छै वो फेर बढ़वा लागे है। ई वास्ते ही संसार की बड़ी आश्चर्यजनक घटनावां में अमरनाथजी को "सुधा लिंग" भी विशेष स्थान राखे है। गुफा में जीमणी बाई बाजू

(शेष पृष्ठ ८ पर)

युद्धोत्तर समाज-सुधार

लेखांक २ रा

ले.–श्री **नारायणदासजी राठी** बी. कॉम.

हमारा कर्तव्य : योग्य समय

शिक्षा के महत्व को बतलाना यह इस लेख का उद्देश्य न होकर हमें अपनी विद्या-प्रसार की योजनाओंको सक्रिय रूपमें लानेके लिए क्या करना चाहिये यही प्रश्न आज हमारे सामने उपस्थित है। युद्धोत्तर दुनिया में हम जागतिक आचार-विचार व सामाजिक प्रणालियों में क्रांतिमय फरक देखेंगे। स्वार्थलोलुपता, विषमता व अराजकतासे थकी हुई मानवशक्ति, अब चिरशांति के उपायों को ढूंढनेमें अपना बल खर्च कर, युद्धोत्तर समता, साम्यता व बंधुत्व को अपनानेकी दृढ़ इच्छा प्रदर्शित कर रही है। जब कि सारी दुनियाकी शक्तियां इस प्रकार मूलभूत विशाल सिद्धान्तोंपर भविष्य की भव्य व सुन्दर मानवसृष्टि के निर्माण में मग्न हैं, क्यों न आज हमभी अपने कर्तव्यों को पहिचान कर समाज-सुधार के सक्रिय कार्यों में मग्न हों ? क्या अब भी वह समय नहीं आया जब कार्यक्रम की रूपरेखा बनाकर उसे अमल मे लाया जाय ? क्या अब भी वह समय नहीं आया जब हम अपने हक व कर्तव्योंको समझलें ? जीवनपथपर चलकर थका हुआ राहगीर, जब अपने जीवन की घटनाओं पर लक्ष्यपूर्वक सोचेगा तो उसे यही प्रतीत होगा कि उसने अपने सम्पूर्ण जीवनमें निजी हकों की मांग की है लेकिन वह अपने कर्तव्यों को बहुत ज्यादा अंशोंमें भूल गया है; अब वह समय आया है जब हमारा कर्तव्य क्षेत्र और भी बढ़ गया है। आवो, हम भी अपने उन बालक व बालिकाओं की शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध करें, जो अपनी मूक दृष्टि हमारी ओर लगाए बैठे हैं, जिनकी कम्पित आवाज हमारे कानों में गूंजरही है कि, “ क्या हमारी शिक्षा का कोई प्रबन्ध नहीं ? क्या हमारा ज्ञानदीप बुझा है ? ” “ नहीं ” समाज के कोने कोने से आज यह ‘ नहीं ’ का उत्तर सुनने में आ रहा है; हम भी यही बतला देना चाहते हैं कि हमारी युद्धोत्तर योजना शिक्षा प्रसार की ओर अपना प्रधान लक्ष्य देनेमें समर्थ है।

विद्या-प्रसार की खास आवश्यकता:–

जैसा कि अन्य समाजों में देखा जाता है, हमारा प्रधान लक्ष्य भी समाज के बालक बालिकाओं को सहज शिक्षा कैसे मिले इस की ओर केन्द्रित होना चाहिये; हमारा समाज भारत में विभिन्न प्रान्तों व देहातों में फैला हुआ है। जो सज्जन देहातों में रहते हैं वे प्रायः कृषि करते हैं। तथा शहरों में रहने वाले प्रायः व्यापार में लगे हैं। महाराष्ट्र तथा विदर्भ के नब्बे प्रतिशत देहातोंमें माहेश्वरी सज्जन अपना निवास बसा चुके हैं तथा कुछ कुछ देहातों में काफी तादाद में भी संख्या नजर आती है। हमारी विद्या-प्रसार की योजना मुख्यतः देहाती भाइयों को ज्यादा से ज्यादा कैसी उपयुक्त हो इस दृष्टि से बनायी जाय। क्योंकि शहरमें रहनेवाले बान्धवों को प्रायः हाईस्कूल तक के शिक्षण के इन्तजाम करने में ज्यादा तकलीफ नहीं उठानीं पड़ती है। क्योंकि प्रायः हरेक शहर में अब हाईस्कूल खुल गये हैं। जिनका हम फायदा आसानी से उठा सकते हैं। दूसरी बात जो कि हमें अपनी विद्या-प्रसार की योजना बनाने वक्त सोचना चाहिये वह यह है कि अपने समाजकी बालिकाओंको पढ़नेके लिये उनके माता-पिताको कैसे परावृत्त करें, क्योंकि माता-पिता अपने पुत्रको शिक्षण के लिये बाहर भेजना मंजूरभी करलेंगे लेकिन वही वर्तीव वे अपनी पुत्रीसेभी करें यह हम सोच नहीं सकते। पुत्रको पढ़ानेके लिये उन्हें प्रायः बाहरगांव भेजा जाता है । लेकिन बहुतसे पुराने विचारों के सज्जन प्रथम तो अपनी पुत्री को पढ़ाना मंजूर ही नहीं करेंगे; तथा जो लोग अपनी पुत्रीको पढ़ाना चाहते हैं, उनमेंसे मुश्किलसे १५–२० प्रतिशत ही पुत्री की शिक्षा पूरी करने में समर्थ होते होंगे. इसका कारण यही कि पुत्रीका शिक्षा के लिये बाहरगांव भेजना असम्भव है । तीसरी बात जो हमें सोचनी चाहिये वह यह है कि हमारा समाज प्रायः कृषि व व्यापार में लगा होनेसे हमारी विद्या-प्रसार की योजनामें जरूरही कोई ऐसा इन्तजाम हो जिसके द्वारा हरेक विद्यार्थी अपने घरेलू कामकाज (जैसे कृषि, व्यापार आदि) के बारेमें जरूरी ज्ञान रख सके ताकि वह शुरूसेही अपने कार्यक्षेत्र में मग्न पा सके इस बातकी अनुपस्थिति होनेसे बहुत जगह (प्रायः कृषि) देखनेमें आता है कि नई पीढ़ी, यद्यपि थोड़ा पढी लिखी भी है, अपने निजी रोजगार के बारेमें कुछ भी ज्ञान नही रखती; बल्कि जब वे अपनी हाईस्कूल शिक्षा प्राप्त कर अपने निजी धन्धेमें प्रवेश करते हैं तो उनकी परिस्थिति ठीक नये आदमी सी होती है । और इसी कारणवश मातापिता समझते हैं कि आधुनिक शिक्षा उनके कामकी चीज न होकर समय व धन का व्ययही है; अतः आगेसे अपने पुत्रोंको पढ़ाना भी बन्द कर देते हैं। चौथी बात जो हमारी विद्या-प्रसार योजना में हो वह यह कि वह समाज में एक संगठित भावना व केन्द्रित शक्ति पैदा करे जो हमारे समाज को चिर-सुधार के विशाल-भवन की ओर ले जानेमें हमे परावृत्त करे। ओर यह आवाज तभी सुसंघटित और केन्द्रित हो सकती है जब वह सुशिक्षित समाज की आवाज हो, जिसके लिए शिक्षा-प्रसार ही मुख्य साधन है। मानसिक-वृद्धि, शारीरिक स्वास्थता व आध्यात्मिक बल ये हमारी शिक्षा के मुख्य हेतु होने चाहिये।

विद्या–मन्दिर की योजना

कमसे कम हरेक प्रान्त के लिये एक विद्या-मन्दिर होना आवश्यक है। इन विद्या-मन्दिरों का कार्य समाज की बालक बालिकाओं की हाईस्कूल तक की शिक्षा का प्रबन्ध करना होगा; चूंकि हाईस्कूल तक की शिक्षा पाना यह कठिण कार्य है; जो विद्यार्थी आगे उच्च अध्ययन करना चाहेंगे वे वैसा इन्तजाम कर सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि कॉलेज खोलना यह विद्या–मन्दिरों का हेतु नहीं हो सकता। मारवाडी विद्या–मन्दिर अपना कर्तव्य क्षेत्र अपनी जरूरत के अनुसार बढ़ा ही सकेंगे। इन विद्या–मन्दिरों का मुख्य कार्य निम्नानुसार है।

(१) कम से कम हाईस्कूल तक की शिक्षा का प्रबन्ध करना।

(२) लड़कियों के लिये अलग हाईस्कूल्स खोलना।

(३) समाज के नवयुवकों का संगठन करना।

(४) युवकों की सामाजिक जागृति करना। ऊपर के लिखे उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिये मारवाड़ी विद्या-मन्दिर को निम्न संस्थाएं खोलकर चलाना होगा।

(१) रहने की व्यवस्था वाले हाईस्कूल्स (Residential High Schools) लड़के व लड़कियों के लिये अलग अलग।

(२) मारवाड़ी लाइब्रेरियां, क्लब्स आदि व

(३) प्रान्तीय नवयुवक दल जो नवयुवकों में संगठन कर सके।

रहने की व्यवस्था वाले विद्यालय (Residential High Schools) का महत्त्व यह रहेगा कि इच्छित वातावरणमें हम अपने बालक बालिकाओं को रख सकेंगे तथा उनमें एक इच्छित जागृति, प्रेमभाव, संगठन-प्रियता व पुरोगामी विचार बिना किसी रुकावट के उत्पन्न करने में समर्थ व विजयी होंगे। जैसा कि हम देख रहे हैं रहने की व्यवस्था वाली यूनिवर्सिटियां अपनी प्रगति अन्य यूनिवर्सिटियोंसे जल्दी कर सकती हैं इसके अलावा हम ऐसे विद्यालयोंद्वारा अपने नवयुवकों के शारीरिक स्वास्थ्य की ओर पूरा पूरा लक्ष्य दे सकेंगे। तीरंदाजी, घुडसवारी, तैरना, नियमित व्यायाम ऐसे अन्य उपयुक्त कार्यक्रमोंमें तथा साथही साथ बौद्धिक विषयोंमें विद्या-मन्दिर ऐसे विद्यालयों के खोलनेपर ही लक्ष्य दे सकेगा। बालिकाओं के साथ साथ वें सुयोग्य माता व चतुर पत्नी कैसे बनानी जायं इस बातकी ओर प्रधान लक्ष्य दिया जावे। ऐसे विद्यालय खोलनेसे हम कृषि व व्यापार इन विषयोंमें उचित शिक्षा देनेंमें समर्थ तो होंगे ही साथ साथ सर्व देहाती बांधवों के व बहनो की शिक्षाका इन्तजाम कर सकेंगे।

विद्यालय प्रांतकी आवश्यकतानुसार खोले जायं व ऐसी जगह खोले जायं जहाँसे हरेक बांधव उनका फायदा उठा सके। साथ साथ अपनी पूरी कोशिश के साथ मारवाडी विद्या-मन्दिर को जगह जगह वाचनालय खोलकर उन्हें उपयुक्त व आकर्षक बनाना चाहिये. व जगह जगह मारवाडी नवयुवक सम्मेलन बुलाकर संगठन की भावना निर्माण करना चाहि जो ही सिर्फ सामाजिक उत्थानोंकी नींव मा जा सकती है । इनसे मतलब यही है कि भविष्य में समाज सुधार की ओर सक्रिय का करनेवाली मारवाडी नवयुवकों की विशाल-पीढ़ी का निर्माण करना हैं, उनकी आवाज बुल करना है।

विद्या-मन्दिर की आर्थिक रूपरेखा

समाज की आर्थिक परिस्थिति अत्यंत स्वस्थ व लाभदायक होनेपरभी हमें प्रथम बहुत कु कठिनाइयों का सामना करना पडेगा यह निर्विवाद है । क्योंकि धन कमाना यह जैसी ए कला है ठीक उसी प्रकार धनको उपयुक्त कार्योंमें खर्च करना यह भी एक कला है। हमारे समाज में पैसा कमाने के साधनों की कमी नहीं है लेकिन उसे व्यय करनेकी इच्छा शक्ति कम है । चूंकि पैसा वास्तव में कोई चीज नहीं है; पैसा तो जीवन में आनन्द व सुख प्राप्त करने का एक साधन (मुख्य) मात्र ही है । यदि हम यह बात कि पैसा मनुष्य के लिये है तथा मनुष्य पैसे के लिये नहीं है, पहिले ही समझ लेते तो आज हम ज्यादा नहीं तो कम तादाद में जरूर ही कहीं कहीं ऐसे मारवाडी विद्यालय पाते । लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आज हमारे विद्या–मन्दिरों को आर्थिक स्वस्थता न मिल सकेगी। समाज के नेता, कर्णधार व धनिक वर्ग अपने मामूली श्रम से ही आज जरूरत से जादा पैसा इकट्ठा कर सकते हैं। तिस पर भी आज का वक्त ऐसा है कि मामूली आदमी भी इस महत्कार्य में कुछ न कुछ अवश्य दे सकता है।

विद्या–मन्दिर यह लोकतंत्र रजिस्टर्ड संस्था खोली जाय कि हरेक व्यक्ति उस संस्थाको यथाशक्ति मदद कर सके व संस्था को गौरव पूर्ण स्थान दे सके। चाहे धनिक हो चाहे श्रमिक हो संस्थाको उन की तरफ एक ही वृत्ति रख अपने शिक्षा–प्रसारमें ही लगना चाहिये

Lead kindly thou to light,
From ignorance to bliss;

हरेक विद्या–मन्दिर को दो लाख रुपयों की जरूरत रहेगी । जिससे वह अपना विद्यालय, छात्रगृह, वाचनालय आदि बनाकर उन्हें स्वस्थता से चला सके। प्रान्त के विस्तार से यह रकम बड़ी हो सकती है तथा उसका उस प्रान्तमें से इकट्ठा होना बड़ी बात नहीं । कार्यकर्ताओं के उस ओर प्रधान प्रयत्न ही विद्या-मन्दिरों को आर्थिक स्वस्थता दिला सकते हैं ।

कर्मण्येवधिकारस्ते

निर्विवाद वह समय आ गया है कि जब हम यह सोचने लगे हैं कि हमारे समाज का भाग्योदय समीप आ गया हैं । कल्पनाशक्तिमें निश्चय होनेके बाद आज हम सत्यसृष्टिमें पहुँच गये हैं जहाँ हमारी आशा है । चन्द रोज के शिक्षा प्रसार से ही हम देख सकेंगे कि सामाजिक अन्धेरा हटकर हम जागृति की सीढ़ियों पर आक्रमण कर रहे हैं, हमारा विजयध्वज यशोमन्दिर को सुशोभित करने चल पड़ा है । वह दृश्य स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है कि जब धनिक व श्रमिक, पूंजिपति अपने विद्या-मन्दिर से ललकारकर कहेंगे ।

“ कर्मण्येवधिकारस्ते ” शायद यह सत्य है।

राजस्थानी संसार

जातीय बंधनों की नितांत आवश्यकता

बनारस में सामूहिक विचार और वार्तालाप

बनारस (यू. पी.)

माहेश्वरी मंडल की दूसरी बैठक में 'जातीय बन्धनों की आवश्यता'पर सामूहिक विचार तथा वार्तालाप का आयोजन किया गया। लगभग आठ व्यक्तियोंने इस विषयपर अपने विचार प्रकट किये।

वार्तालाप का आरंभ श्री बाहेतीजीने किया। आपने बतायाकी राजनीतिक दर्शन के विद्वानों के अनुसार मानव जाति के विकास में एक ऐसी अवस्था भी थी जब किसी भी प्रकारकी भी समाज व्यवस्था न थी। उस अवस्थाको प्राकृतिक अवस्था कहा गया है। किन्तु बहुतसी ऐसी समस्याएं थीं जिनको व्यक्तिगत रूपमें हल करना अत्यंत कठिन था। अतएव समाजका सृजन हुआ, क्रमशः विकास हुआ। आजका सामाजिक संगठन—जातियोंकी भित्तीपर खडा हुआ समाज इतिहासके किसी अमुक युगमें लाभदायक रहा होगा किन्तु आज तो यह अत्याचारकी एक बडी चक्की बन गया है। इतिहास स्पष्ट रूपसे बताता है कि भारतीय पतनमें जातीय विभाजन का बड़ा हाथ रहा है। हर्ष के पश्चात जातीय रूढ़ियां अधिकाधिक दृढ़ होती गयीं और उसके साथही साथ जातीय पतन भी। जातियों के इस कठोर एकत्व ने बर्बर विदेशी आक्रमणकारियों से भारतीय सभ्यताकी रक्षा की किंतु इस विभाजन ने उन्हें निःशक्त बना दिया और वे आक्रमणकारियों की गुलामी के शिकार हुए! प्राचीन भारतीय इतिहास में सबसे अधिक ध्यान देने योग्य बात है—भारतीयों के सम्मिश्रण (Amallmation) की भावना! बहुतसी जातियां आयीं और सबकी सब इस भारतीय सभ्यतामें योग देकर सम्मिलित हो गयीं। द्रविड, आर्य, शक, हूण, मंगोल आदि संसारकी विभिन्न जातियां इस भारतीय महासमुद्र में छोटी छोटी नदियों की तरह आ मिलीं और उनके योगसे महान भारतीय सभ्यताका तथा उसके सुवर्ण युगका निर्माण हुआ! आगे चलकर इसी सम्मिश्रण की भावना को न अपनाकर मुसल्मानों का एक अलग समुदाय बन गया जिसका दुष्परिणाम आजकी राष्ट्रीय तथा सामाजिक तनातनी स्पष्ट बता रही है!

जीवन शास्त्रके विद्वानोंने रक्तशुद्धिके सिद्धांत को रखकर सगोत्रीय विवाहोंको हमारे यहां वर्जित किया है। जातीय सम्मिश्रणसे अधिक शक्तिशाली जातिका सृजन होता है। विवाह पर रखे हुए बंधन विज्ञान की दृष्टिसे न्यायकी दृष्टिसे तथा सब तरह अनुचित प्रमाणित होते हैं। विवाह तथा खानपानके बंधन विश्वप्रेमके विकासमें विरोधी हैं तथा उनका बहिष्कार करना आवश्यक है। आजका जातीय विभाजन अवैज्ञानिक है। वह अपनी उपयोगिताको समाप्तकर चुका है और इसके बंधन तो अत्यंत हास्यास्पद हैं ही।

इसके पश्चात श्री. हजारीलालजी माहेश्वरीनें अपना मत प्रकट करते हुए कहा कि जातीय बंधन एक जटिल समस्या बन चुकी है तथा वर्तमान स्थिति वास्तव में बडी ही असंतोषजनक है! किंतु मानव समाज किसी प्रकार के बन्धनों को न माने यह संभव नहीं। यह बात ठीक है कि प्रचलित जातीय विभाजन जिसका एकमात्र आधार जन्म है किसी भी उन्नति का साधन नहीं बन सकता, किंतु इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि मानव समाज में विभाजन होगा ही नहीं। प्रत्येक प्राणी का अपना एक व्यक्तित्व रहता है। यह प्रकृति का नियम है। उसे स्वीकार न किया जाय तो भी उसका अस्तित्व बना ही रहेगा। आज भी जिन देशों में कोई जातीय बंधन नहीं है वहां भी, राजनैतिक, शैक्षणिक औद्योगिक इत्यादि वर्ग मौजूद हैं इतनाही नहीं प्रत्येक वर्ग के अपने अपने खण्ड हैं। फिर इनमें भी और विभाजन हैं।

विचार करके हम देखें तो यह प्रतीत होगा की मानव समाज का चाहे किसी प्रकार निर्माण क्यों न हुआ हो उसका विभाजन से मुक्त होना असंभव है। अवश्य ही अपने संतोष के लिये इन जातियों के नाम बदले जा सकते हैं।

ऐतिहासिक खोजसे पता चलता है कि इन जातियों का आरम्भ अथवा इनके निर्माण का आधार गुण तथा कर्म था। जगत का यह नियम है कि सब योजनायें बदला करती हैं—बिगड़ा करती हैं!

आरम्भिक जाति निर्माणमें जीवनका दृष्टिकोण आध्यात्मिक था। स्वयं अपने पूर्व विधान (order) को देखा जाय तो प्रतीत होगा की ब्राह्मण पठन–पाठन के अतिरिक्त क्षत्रिय राजाओं को राज्य कार्य में भी पथ प्रदर्शन (Guide) करते थे। एक के बिना दूसरे का कार्य नहीं हो सकता था। उसका प्रमाण इतिहास है। जब ब्राम्हणों का पतन हुआ तभी क्षत्रियों की क्षति हुई। इसी प्रकार जहां क्षत्रिय शक्ति का अंत हुआ वहीं अन्य जातियों का भी पतन होगया!

वैवाहिक प्रश्न पर आपने कहा कि पाश्चात्य जातियों को यंत्रों से क्रीडा करते देखकर उन्हें उन्नतिशील कहना भूल है! वास्तव में वे पशुत्वको ओर जा रही हैं। उनका जीवन क्रिया देखने में प्रतीत होता है मानो वे मनुष्य ही नहीं है। उन्हें सत्य, सेवा, धर्म से कोई प्रयोजन में नही! अपने गर्वमें स्वयं नष्ट हो रहे हैं।

अपने यहां भी जहां केवल परगोत्र के विवाह संबंध की आज्ञा है वहां विजातीय संबंध का विरोध भी है। वर्ण संकरता सर्वनाश का कारण ही होती है।

सारांश यह कि जातीय बन्धनों की आवश्यकता अवश्य है और आवश्यकता इस बातकी है कि समाज का पुनर्निर्माण हो! और उसका आधार गुण और कर्म ही हो!

श्री सोनीजीने जातियोंकी उत्पत्ति का इतिहास बताते हुये कहाकि उनकी आरम्भिक व्यवस्था बडी सुन्दर थी तथापि इस समय उनकी स्थिति बडी अनुचित है। अतः उसके पुनर्निर्माण की आवश्यकता है।

श्री राठीजीने तथा श्री काबराजीने भी इस मतमें अपना सहयोग प्रकट किया और विद्यमान जातीय विभाजन में संशोधनकी आवश्यकता पर जोर डाला।

श्री वेदप्रकाश माहेश्वरीने कहाकि भारतवर्ष के उत्थानके लिये वर्तमान जातीय संकीर्णता का अन्त होना आवश्यक है। माहेश्वरी लोग माहेश्वरी से ही शादी करें यह बात किसीभी महत्व की नहीं। हिन्दूमात्र होना ऐसे संबंधो के लिये पर्याप्त है।

श्री गट्टाणीजी तथा बाबूजी नें जातीय प्रेमका प्रदर्शन करते हुयें कहा की रक्त की शुद्धि के लिये यह आवश्यक है कि सुधार के नामपर जातीय बंधनों को तोडकर समाज की स्थिति को बिगाडने वालोसें अपनी रक्षा की जाय नहीं तो हम लोंगोंका बुरी तरह पतन होगा, नैतिक धार्मिक और शारीरिक भी!

आखिर में श्री बियाणी ने कहा की इस चर्चाके पश्चात् यह प्रश्न हमारे सामने उपस्थित होते है कि क्या हम जाति बंधन और धार्मिक बंधनको बिल्कुल न मानें या जैसा कि वेदप्रकाशजीने बताया की केवल धार्मिक बंधन ही माना जाय! यह बात मान्य करली जाय कि वर्तमान जाति की नींव हमारी उन्नति में बाधक है और हमे चाहिये कि सिर्फ धार्मिक बंधनों को मानें और हमारे विवाहादि सर्व कार्य हिन्दु मात्र तक सीमित रहें जैसे कि मुसल्मानोंमें हैं इसका परिणाम यह होगा कि नैतिक बंधन बिल्कुल हट जायंगे और हम भी शादीके समयमे सिर्फ दूधकाही ख्याल करने लग जायंगे बाप एक और 'मां' दो हो तो शादियां होने लग जायंगी और जातिका मानसिक उत्थान न होते हुये अधःपतन ही होगा। निसर्गके हरएक जीव जंतु में यही देखा जाय तो सर्वप्रथम यही बात दृष्टिमें आयगी कि वह Cross-breeding सेही ज्यादा शक्तिशाली और जीवनके योग्य बनते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि हम विदेशियोंसे संबंध करनेसे ज्यादा शक्तिशाली और सुखी होंगे। जीवनपथपर कार्य सुलभरीतिसे करने के लिए समान आचार, विचार की आवश्यकता है। पंजाबके एक हिन्दू लडकेने यदि मद्रासकी एक हिंदू लडकी से शादी की तो वे कदापि सुखी नहीं होंगे क्योंकी उनके आचार और विचारों में फरक है! इस लिये हमे चाहिये की हमारे संबंध हमारे ही संस्कारोंसे बने हुये समाजसेंही रहें!

हमारी उन्नतिके लिये जातीय बंधन आवश्यक हैं। हम चाहें तो प्रचलित जातियोंके नाम बदलकर योग्य दूसरे नांव रख लें और जैसे कि श्री हजारीलालजी माहेश्वरीने बताया, जातिका पुनर्निर्माण गुण और कर्मके आधार पर ही होना चाहिये।

कम दहेजप्राप्ति से सम्बन्ध विच्छेद

अकोला के सुप्रसिद्ध सुधारक श्री. रामप्रसादजी भरतिया ने अपने पुत्र चिमनलालकी सगाई यवतमाल निवासी श्री. मूलचन्दजी बजाज की पुत्री के साथ करीब ११ महीने पहिले की थी। सम्बन्ध होने के पहिले अकोला के प्रतिष्ठित सज्जनों के साथ कन्या की देखभाल पूरी चौकसी के साथ श्री. भरतियाजी ने करायी जिनमें खासकर श्री. सूरजमलजी सिंगी, राधाकिसनजी तोष्णीवाल, हीरालालजी खंडेलवाल, बन्सीधरजी झुझनूवाल, बाबू रतीलालजी शिवजीभाई आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सलाह हुई थी। यद्यपि सम्बन्ध होते समय श्री. भरतियाजी की इच्छा बिल्कुल दहेज न लेने की दिख रही थी फिर भी कन्या पक्षवालों की ओरसे सारा लेन देन भली प्रकार से किया गया था। खूब धूमधाम के साथ तिलक की रस्म अदा हुई। परन्तु बाद में दहेज अधिक और कम की चर्चा होकर आखिर श्रीभरतियाजी ने सम्बन्ध छोड़ दिया था और अपने पुत्र का सम्बन्ध दूसरी जगह तुमसर में कर लिया। धनिक होने के नाते सम्बन्ध दूसरा तीसरा और चौथा भी हो सकता है किन्तु श्रीभरतियाजी ने यह कार्य अनुचित किया ऐसी समाज की राय बनी हुई है। विशेषता इस बात की है कि जिन प्रतिष्ठित सज्जनों ने पहिले सम्बन्ध करानेमें साथ दिया था उन्होंने ही सम्बन्ध छुड़ाने में और दूसरा सम्बन्ध कराने में भी उतना ही साथ दिया है। इनमें माहेश्वरी पंचायत और खंडेलवाल पंचायत के पंच भी शरीक हुए हैं।

राजस्थानी समाज की महासभाओं ने बिना योग्य कारण के सम्बन्ध छोड़ने की मनाई की है। सुधारकों ने दहेज लेने और देने का विरोध किया है पर जब स्वतः का घर का काम पड़ता है तब फिजूलखर्ची करते हैं, बिना कारण सम्बन्ध छोड़कर अन्याय करते हैं, अधिक दहेज लेने की इच्छा से दूसरा सम्बन्ध करते हैं और स्टेज पर से समाज को उपदेश देना भी चालू रखते हैं। इससे समाज में सुधारकों की प्रतिष्ठा कम होती जा रही है और समाज सुधार होने में बाधा उपस्थित होने लगी है।

अभी श्री. भरतियाजी के पुत्र की आयु अंदाजन १६॥ वर्ष की होते हुए भी विवाह जल्दी ही शारदा कानून तोड़कर होनेवाला है ऐसा सुना गया है। यह बात अगर सच्ची है तो इस कार्य से उन की रही सही प्रतिष्ठा भी जाती रहेगी। आशा है श्रीभरतियाजी और उनके साथी इन बातों को खुलासा करने की कृपा करेंगे।

—बन्सीधर तोष्णीवाल

अजमेर में कविसम्मेलन

गत १२ सितम्बर को रातके ८ बजे कुंवर चांदकरणजी शारदा के सभापतित्व में टाऊन हाल, अजमेर में कवि सम्मेलन हुआ। कैरावान (दिल्ली) के सम्पादक प्रो. देवदत्त एम. ए. की कविताएं बहुत पसंद की गयीं और उन्हें स्वर्णपदक दिया गया। भिखारी और गुरु गोविंदसिंह शीर्षक उनकी कविताओंने उपस्थित सज्जनोंको बहुत आकृष्ट किया।

ग्वालियर में भारत बैंक बंद

नई दिल्ली। ग्वालियर राज्य में भारत बैंक की समस्त शाखाओं को अपना कारबार बन्द करने का हुक्म देकर उन पर पुलिस का पहरा बैठा देने के विस्मयजनक समाचार मिले थे। जांच करने पर पता चला है कि ६ सितम्बर १९४४ को कामर्स मिनिस्टर सरदार के. डी. महाडिक ने यह हुक्म जारी किया है कि किसी भी बैंक की कोई भी शाखा सरकारी हुक्म के बिना खोली नहीं जा सकती। हुक्म लागू किया गया है जनवरी १९४४ से, इस लिये दो ढाई मास पहिले २३ जून १९४४ को ग्वालियर और उज्जैन में खोली गई नई शाखाएं भी बन्द कर दी गयी और उन पर पुलिस का पहारा बिठा दिया गया। इस हुक्म के जारी होनेके एक ही दिन पहिले सिपरी, भेलसा, भिन्ड और मन्दसोर मे खोली गई शाखाओं को भी इस कानून के अनुसार बन्द कर दिया गया। ६ अक्टूर तक की एक मास की अवधि सिर्फ इस लिए दी गई कि जमा रकम का भुगतान कर दिया जाय। नया कारबार करना रोक दिया गया है।

यह भी पता चला है कि बिडलाजी के युनाइटेड कमर्शियल बैंक और सेन्ट्रल बैंक को १ अक्टूबर से अपनी शाखासे खोलने की अनुमति दे दी गई है। युनाइटेड कमर्शियल बैंक की शाखा के लिए कामर्स डिपार्टमेन्ट के एक उच्च अधिकारी की बिल्डिंग लगभग ढाई लाख में खरीदने की भी चर्चा है।

मारवाड लोक परिषद

मारवाड लोक परिषद के मन्त्री श्री जयनारायणजी व्यास बंगाल का दौरा करके जयपुर वापस आ गये। बाढ़ के क्षेत्र में परिषद की ओर से सहायता कार्य जारी है।

राजपूताना मध्यभारत देशी राज्य प्रजा सम्मेलन

आगामी २९-३० अक्टूबर १९४४ को आनरेबुल राजा बहादुर गोविंदलालजी पित्ती एम्. एल. सी. (केन्द्रीय) के सभापतित्व में पुष्कर में राजपूताना मध्यभारत देशी राज्य प्रजा सम्मेलन होगा। कुंवर चांदकरणजी शारदा स्वागताध्यक्ष चुने गये हैं।

इन्दोर

गांधी भवन का शिलान्यास

गांधी-भवन का शिलान्यास ता. ६ अक्टूबर को बंबई के मेयर श्री. नगीनदास टी. मास्टर द्वारा संपन्न किया गया।

जोहरी लाल झांझरिया
मंत्री
गांधी-भवन-समिति

मदनगंज आदर्श-बालिका-विद्यालय २४ सि. १९४४ का उद्घाटनोत्सव स्थगित

कुछ अनिवार्य कारणों से उपरोक्त विद्यालय का २४ सितंबर को होनेवाला उद्घाटनोत्सव स्थगित करना पड़ा। मंत्री

आदर्श बालिका विद्यालय,
मदनगंज (किशनगढ़)

म्हारी काश्मीर यात्रा

(पृष्ठ ५ का शेष)

दीवार के साथ अमरेश्वर की प्राकृतिक बरफ पिण्डी स्थित है और साथ ही साथ गणेशजी तथा पार्वतीजी की प्रतिमाँ भी रहवै है। अभी भी कहावत प्रसिद्ध है कि सावण की पूर्णिमा (रक्षाबन्धन) के दिन ई गुफासे एक दो कबूतरां का जोड़ा निकले है। लोगां न आश्चर्य हो वै है कि राखी पूनोंके दिन ही कबूतरांका जोड़ा क्यों दिखाई देवे है जहां अधिक शीत और बर्फ के कारण प्राणीमात्र को जीबोई स्थान पर दूर्लभ है तो फेर ए कबूतर क्यांन जीवे है। दूशा दूशा प्रश्न हजारां आदम्या और वैज्ञानिकां का माथामें चकरी फेर देवे है, और कोई तो काई उत्तर देवे और कोई कोई उत्तर देवे है। स्वामी विवेकानन्द जी तथा स्वामी रामतीर्थ जी तथा योरोपियन, अमेरिकन, जापानी चीनी यात्री अठे दर्शन करके आप २ का अनुभव लिख्या है। अमरनाथ का दर्शन और अमरनाथ महात्म्य सनातन धर्मी भाई खूब सुंणे है और वो विश्वास करे है कि ई सुणावा से कैलाश शिवसागर और ब्रह्मलोक में पार कर कर अमर होजास्याँ। या शिवलोक ने अवश्य ~~प्राप्त~~ हो जास्याँ। याँ को विश्वास है कि अमरनाथ की यात्रा की महिमाँ सूणवा सूँ जन्म जन्माँन्तर का पाप दूर हो जावे है। पण पढ़्या लिख्या पण्डित विद्वान जो कर्म का सिद्धान्त माने है और जो कर्म योगी है वै इसी बातों पर विश्वास नहीं करै। श्रीनगर से अमरनाथ जावाड़ा मोटर में बैठकर मटन होता हुआ मार्तण्ड और अनंत नागका दर्शन करता हुया पहल गावँ जावै। पहल गाँव से पहलो पड़ाव चन्दन वाड़ी पर है। जो पहल गांव से आठ मील दूरो है मार्ग शेष नाग नदी के बराबर २ जावे है। चन्दनवाड़ी पर बरफ को पुल देखवा है। ऊपर बरफ है, और नीचे से नदी बहवे है। अठासूँ दूसरो पड़ाव वायुजन पर है ज्यो चन्दनवाड़ी से आठ मील दूरो है। ईण मार्ग की चढ़ाई बहुत कठिन है। मार्ग सीधो पहाड़ की चोटी पर सर्प की भाँति टेढे मेढो बल खातो हुयो जावे है। ई चढ़ाईने पिस्सू घाटी भी कहवै है। ईंको नाम पिस्सू घाटी ई वास्ते पड्यो है कि जियान जिस्सू आदमियां ने दुःख देवे है। वियान अभी यात्र्यांने पीड़ा देवे है। चढ़ाई के पश्चात चोटी पर जोंज पाल की भूमिका नामको एक सुन्दर मैदान आवे है। अठा को दृश्य बहुत ही मनोहर है। अठासे ६१७ सो गज की दूरी पर पहाड़ कीचोटी पर सुन्दर सूनासर नामकी भील है। औरई से आगे नानां प्रकार का रंग-बिरंगा फूलों से लद्योड़ा मैदान आवे है। और थोड़ीही चढाई उतराई के बाद शेष नागको स्थान आवे है और ओ स्थान अठ एक झील है। यात्री अठै स्नान पुण्य दान करे अठै न्हावा को बड़ो महात्म्य बतावै है।

—अपूर्ण

"माहेश्वरी नवयुवक मंडल"
जलेसर

प्रत्येक वर्ष के अनुसार इस वर्ष भी जन्माष्टमी के दिन स्थानीय श्री माहेश्वरी नवयुवक मण्डल का अष्टम वार्षिकोत्सव हरिकीर्तन तथा यज्ञगायन आदि के साथ सेठ रामप्रसादजी राठी के सभापतित्व में बड़े आनन्द एवं समारोह के साथ मनाया गया। समस्त माहेश्वरी भाइयों का उत्साह प्रशंसनीय है।

सभामें समाज सुधार के कितने ही विषयों पर वादविवाद हुआ और सर्व सम्मति से पास हुआ कि हांती इत्यादि बन्द किये जाय। इस विषय में केवल माहेश्वरी नवयुवक मंडल के सदस्य एवं कार्यकर्ता ही शामिल है। मृतक भोज तथा औसर उठाने के ऊपर भी पूर्ण वादविवाद हुआ किन्तु कुछ महानुभावों के कहने से कुछ समय तक सोचने एवं विचार परामर्श के लिए स्थगित किया गया।

नवीन वर्षके पदाधिकारी इस प्रकार चुने गये।

प्रधान—श्री. तोतारामजी राठी, उप प्रधान—श्री. पन्नालालजी राठी, B. A. मंत्री—श्री. भैरों प्रसादजी राठी, उप मंत्री—श्री. जयनारायणजी राठी, कोषाध्यक्ष—श्री. रामजीवनजी राठी, सहायक कोषाध्यक्षः—श्री. भीकचन्दजी राठी।

कार्य कारिणीके सदस्यः—गंगाप्रसादजी राठी, रामदयालजी राठी, बालमुकन्दजी राठी, प्रेमनारायनजी राठी, सुखदेव दासजी राठी।

सदस्य :—

१ दीपचन्द्रजी राठी २ केशव देवजी टावरी B. S. C.
३ भीकचन्दजी डागा ४ गोपी कृष्णजी राठी

भैरों प्रसाद राठी
मंत्री श्रीमाहेश्वरी नवयुवक मंडळ जलेसर

जोधपुर राज्य की बाढ़
एक बाढ़ सहायक समिति बनाई गयी

कलकत्ता, (डाक से)

मारवाड़ लोक परिषद जोधपुर के म श्री राधाकृष्ण बोहरा एम. ए. एल. एल. बी. जोधपुर राज्य की बाढ़ जन्य स्थिति के बा जी जयनारायणजी व्यास के नाम निम्न आ का तार भेजा है:—

'सभी पार्टियों की एक सम्मिलित ब सहायक समिति बनाई गई है जिसके संयोज मारवाड़ लोक परिषद के प्रेसीडेण्ट श्री म दास माथुर बी. एस. सी. एल. एल. बी. है श्री फतेहराज और चार स्वयंसेवक जो प दरा जिला का निरीक्षण करने गये थे लौ आये हैं। उस जिले में बालोतरा की नदी बाढ़ के कारण ८०० कुटुम्ब बे घरबार हो ग हैं। पचपदरा शहर तो एकदम खाली हो ग है। आसोतरा, रामसीन, पारलू, गेटीतरी बहुत ज्यादा क्षति पहुंची है। कई हताहत हु हैं। माली नुक्सान करीब २५ लाख के हु है। बुखार नेत्र रोग नेहरू आदि खूब फै रहे हैं। हम चने आदि का संग्रह कर रहे है दवा दारू भोजन सामग्री और सिरकियां भेज रहे हैं।

पचपदरा जिला के अलावा दूसरे जिलों भी अति व्रष्टि से भारी क्षति पहुंची है। वे जालोर, बाकी, बिलाडा, सोजत, पाली डेसूरी। जालोर और बाकी की रिपोर्ट ज ही आने वाली है।

विश्व संघ की ओर

लेखक
'भारतमें अंगरेजी राज्य' आदिके रचयिता
पंडित सुन्दरलाल
और
भगवानदास केला
संसार की महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार; मूल्य २॥)

देशी राज्य शासन; सजिल्द मूल्य ३॥)

भारतीयशासन	१॥)	ब्रिटिश साम्राज्यशासन	१)
मातृवन्दना	।=)	भारतीय अर्थशास्त्र	३)
नागरिक शिक्षा	॥≡)	साम्राज्य और उनका पतन	१।)
भारतीय जागृति	१।)	हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ	॥।=)
निर्वाचन-पद्धति	॥-)	पूर्वकी राष्ट्रीय जागृति	१॥)
अपराध चिकित्सा	१॥)	भारतीय सहकारिता आन्दोलन	२॥)
भारतीय राजस्व	॥।=)	कौटिल्यके आर्थिक विचार	॥।=)
अर्थशास्त्र शब्दावली	१)	भारतीय विद्यार्थी विनोद	॥=)
राजनीति शब्दावली	।॥)	नागरिक कहानियाँ	॥=)
श्रद्धांजलि	॥।=)	अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य	॥।)
विश्ववेदना	॥।=)	भव्य विभूतियाँ	॥=)

पुस्तक प्राप्तिका पता—
भगवानदास केला, भारतीय ग्रन्थमाला; दारागंज [इलाहाबाद]

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

गुरुकुल कां...

एक प्रति का ≈)

[अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र]

Reg. No. B 4441

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

— प्रवर्तक —
स्व० भागीरथदासजी भूतड़ा

कार्यालय
अली चेम्बर्स, डीन लेन,
फोर्ट बम्बई

वर्ष ३५, संख्या १०] बम्बई ता. २१ सितंबर १९४४ [वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

हमारी भावी सुरक्षा की समस्या

ले.–मि० सुमनर वेल्स

☆

संयुक्त राज्य अमेरिका के भू० पू० राष्ट्र-उप मंत्री मि० सुमनर वेल्स ने "विश्व शांति कायम रखने के लिए सामरिक मेल चुना जाय या एक विश्वपरिषद" इस विषय पर अपने सुंदर और सुलझे हुए विचार प्रकट किये हैं। लेख में आदि से अंत तक यथार्थता का बाहुल्य है। उन्होंने अमेरिका, ब्रिटेन और रूस के सामरिक मेल में भावी सुरक्षा के लिए खतरा और शीघ्र ही एक विश्व परिषद की स्थापना की नितांत आवश्यकता बतायी है। हम उन के इस लेख को न्यूयार्क टाइम्स से उद्धृत कर रहे हैं।–सं.

ज्यों ज्यों समय वीत रहा है, कुछ लोगों के मनमें यह विश्वास घर कर रहा है कि भविष्य में विश्व शांति स्थापित होने के लिए यह नितांत आवश्यक है कि संयुक्तराज्य अमेरिका, ब्रिटेन और सोवियट रूसका सामरिक मेल कायम रहे और समस्त स्वतंत्र देशोंकी ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था के आदर्श का मौखिक समर्थन के सिवाय और कुछ करने की आवश्यकता नहीं है।

इस धारणा के विस्तारमें हमारी भावी सुरक्षा के लिए जो खतरा निहित है, उसे कम आंकना श्रेयस्कर नहीं है। क्योंकि यदि संयुक्तराज्य अमेरिका के लोग आज की सारी बुराइयों की एकमात्र दवाके रूपमें चतुर्राष्ट्र सामरिक मेल पर अपना विश्वास जमा रखेंगे तो यह निश्चित है कि सुरक्षा के लिए विराट शस्त्रीकरण और इलाके बढाने के सिवाय और कोई उपाय ही नजर न आयेगा। वस्तुतः येही सब काम राष्ट्रीय नीति बन जायंगे।

इतिहास के पृष्ठों में महान् राष्ट्रों में किसी टिकाऊ सामरिक मेल का एक भी उदाहरण उपलब्ध नहीं है। अलबत्ता इस प्रकारके क्षणिक मेल के परिणाम स्वरूप साझीदारों में व्यक्तिगत प्रभाव और स्वार्थपूर्ण कामके लिए कशमकश हुई है। किन्तु गनीमत यही रही कि शक्ति संतुलन नहीं खराब हुआ। उनके द्वारा सत्ता और बल प्रयोग किये जाने से कभी भी वास्तविक विश्व शांति नही हो सकती। वास्तविक शांति तभी हो सकती है कि जब कि सभी स्वतंत्र राष्ट्र नैतिक कानून कायम रखने के लिए अपनी प्रतिनिधि संस्था से आवश्यक सत्ताका प्रयोग करने के लिए अनुरोध करें।

यदि हम अंतर्राष्ट्रीय सामरिक मेल के पथ का अवलंबन करेंगे और साम्राज्यवाद के पथपर कदम रखेंगे, तो उन बुनियादी सुधार को जिनके बिना अधिक टिकाऊ विश्व के निर्माण की कोई आशा नहीं है, सम्पन्न होने की कैसे आशा कर सकते हैं? साम्राज्यवादी प्रवृत्ति के पुनः जोर मारनेपर, क्या आश्रित लोगों को जो स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे हैं, यह (स्वतंत्रता) प्रदान की जायगी? क्या अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में पूर्ववत धांधली और प्रतिस्पर्द्धा न रहेगी? क्या इन परिस्थितियों में धर्म, भाषण और प्रेस की स्वतंत्रता स्थापित करने का विचार किया जा सकता है? हमें इस बातको भी आंख से ओझल न करना चाहिए कि जिन प्रतिक्रियावादी ताकतों ने अपने स्वार्थों के कारण इस राष्ट्र से बिल्कुल अलग रहने की नीति का अवलंबन कराया, वे सामरिक मेल की नीति का अवलंबन करने की मांग कर रहे हैं और इसमें 'यथार्थता' बतलाते हैं।

साम्राज्यवाद की ओर प्रवृत्ति

आज हमारे सार्वजनिक अभिमत के विभिन्न अंचलों में साम्राज्यवाद की ओर प्रवृत्ति दीख पड़ रही है। हमारी अपनी सरकार के उत्तरदायी आफिसर भावी सुरक्षा के लिये ब्रिटेन से वे अड्डे मांग रहे हैं, जो कि उसने हमें वर्तमान महासमर के बहुत ही अनिश्चित चरण में पट्टेपर दिये थे। हम ऐसी ही अन्य मांगों की कि, हमें स्थायी तौर पर वे अड्डे एवं अन्य सुविधाएं मिलनी चाहिए जो कि पश्चिमी गोलार्द्ध के हमारे कुछ पडोसी राष्ट्रों ने लडाई चलने तक के लिए हमें स्वेच्छा से दे रखी हैं, उपेक्षा नहीं कर सकते। और न हमें इन दावोंके महत्व को ही कम समझना चाहिए कि युद्धमें विजय होनेके बाद समस्त प्रशान्त महासागर और यहां तक कि अफ्रीका के नये अड्डे केवलअपने प्रयोग के लिये हमें अपने अधिकार में बनाये रखना होगा। इस बात का ध्यान रहे कि इनमें से अधिकतर अंचल अन्य मित्र राष्ट्रों के हैं।

दूसरे भी मांग सकते हैं

क्या ब्रिटिश राष्ट्र संघके सदस्यों का इन सब अड्डों के लिए मांग करना युक्तिसंगत नहीं है? क्या इसका कोई प्रबल कारण है कि सोवियट रूस अपनी सुरक्षाके आधारपर प्रशांत महासागर के अनेक वही अड्डे क्यों न मांगे? क्या एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था, जो समस्त राष्ट्रोंकी सुरक्षा की गारंटी कर सकेगी किसी बडे राष्ट्र की साम्राज्यवादी नीतिका प्रतिरोध नहीं करेगी और क्या सुरक्षा के नाम पर अड्डों के लिए संघर्ष होने की नौबतको नही टालेगी? कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था तबतक सफलतापूर्वक स्थापित नहीं की जा सकती, जब तक कि वह प्रारंभसेही मित्र राष्ट्रों की दृढ़ और अविरत साझेदारी पर निर्मित न हो। किन्तु ऐसी किसी विश्वसंस्था की कल्पना करना भी असंभव है, जो विश्वके प्रत्येक स्वतंत्र राष्ट्र के चाहे वह कितनाही छोटा क्यों न हो, पूर्ण प्रभुत्व और राजनीतिक निर्णयोंमें योगदान करनेके अविच्छिन्न अधिकार को यथार्थतः स्वीकार न करे। और न मेरा यही विश्वास है कि इस प्रकार की संस्था योगदान करनेवाले राष्ट्रोंद्वारा अन्तर्राष्ट्रीय आचरण के सिद्धांतों के स्वीकार किये बिना और समस्त वितण्डा का अंत करने के लिए उचित और प्रभावशाली साधन जुटाये बिना दीर्घ जीवन प्राप्त कर सकती है।

सुरक्षा का भाव कैसे पैदा हो?

जो लोग जोर देकर यह कहते हैं कि युद्ध की समाप्ति के बाद इस देश की एकमात्र व्यवहारिक आवश्यकता होगी—चतुर्राष्ट्र सामरिक मेल का एक साझीदार बनना वे कोई अस्वाभाविक रूप से यह अनुरोध नहीं करते कि हमें अन्तर्राष्ट्रीय आचरण के सिद्धान्तों को स्वीकृत कराने के लिए हाल फिलहाल प्रयास नहीं करना चाहिए। उनका सिद्धान्त यह है कि पुलिसमैन जैसा मुनासिब समझेगा कानून बना लेगा। कल की दुनिया में इस प्रकार की नीतिका केवल अर्थ होगा–अविरत विशृंखलता और पशुबल का फिर से ताण्डव।

ऐसे भी कुछ लोग हैं, जो अन्तर्राष्ट्रीय संस्था की आवश्यकता स्वीकार करते हैं, उसके प्रति अपनी अटूट भक्ति की प्रदर्शित करना चाहते हैं, किन्तु उसकी स्थापना के लिए व्यवहारिक कदम उठाये जाने के समर्थक नहीं. यही चेष्टा करते रहते हैं कि यह किसी प्रकार स्थगित हो जाय। इस प्रकार की संस्था की स्थापना की दिशामें प्राथमिक कार्य होनेमें जितनी ही देर होगी, उतना ही हमारे लिए अनिष्टकर होगा। हमारे देश एवं अन्य महान राष्ट्रों के अधिवासियोंके मस्तिष्क में यह भाव भरने की

(शेष पृष्ठ ८ के कालम ४ पर)

माहेश्वरी

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

बम्बई, २१ सितंबर १९४४

भारत की बर्बादी

जबसे भारतका क्रमबद्ध इतिहास मिलता है, इसकी स्थिति इतनी खराब कभी नहीं रही जितनी कि आज है। जिस ओर भी दृष्टि जाती है, उधर सत्यानाश ही सत्यानाश नजर आता है। हमारा वह भारत-जो कभी धन धान्य से पूर्ण था, देशमें घी दूधकी नदियां बहती थीं, इसके निवासियों के मुखमंडल से अपूर्व तेज टपकता था और ज्ञान की प्रत्येक दिशामें सारे संसार से चढ़ा बढ़ा था, आज कंगाल है, निर्दय शोषण ने उसको निष्प्राण कर दिया है, उसका सारा विकास अवरुद्ध पड़ा है और मजा यह कि वह अपनी इस स्थिति के खिलाफ चूं भी नहीं करने पाता। भारतमें बड़े बड़े लुटेरे आक्रमणकारी आये— उन्होंने दिल भरकर भारतको लूटा, इतनी सम्पदा साथ ले गये कि उससे उनके देश चमक उठे किन्तु भारत का भंडार खाली नहीं हुआ, देशवासियों की आर्थिक स्थितिपर कोई असर नहीं पड़ा। हमारे इतिहास का मुगल काल समृद्धि, कलाकौशल, व्यापार, वाणिज्य आदि की उन्नति के लिए प्रसिद्ध है। मुगल शासकों ने भारत को अपना देश माना और इसी दृष्टिकोण से उन्होंने सारे काम किये। लेकिन आज के हमारे शासक शिकारी के रूप में हैं। जब तक इंग्लैण्ड में मशीन युग नहीं आया था वहां का धनीवर्ग शांतिसे रहता था, अपने ही यहां जो मारते खाते बनता मारता खाता और ऐय्याशीकी जिंदगी बिताता था। मशीनयुगने इसे सतत विचरणशील बना दिया। इस वर्ग ने उद्योग धंधों में पैसे लगाये, बेहद उत्पादन होने लगा और अब उसे माल की निकासी की चिंता ने धर दबोचा। अब बाहर पैर पसारे बिना निस्तार न था। इसने पहले व्यापारी के रूप में भारत में प्रवेश किया और धीरे धीरे अपने तिकड़म से भारत का शासक बन गया। भारत ही से इसे सन्तोष नहीं हुआ—इसने चारों तरफ घुसने की कोशिश की और आज स्थिति यह है कि ब्रिटिश साम्राज्य में सूर्य नहीं डूबता। इस विवेचन का हेतु यह स्पष्ट करना है कि साम्राज्यवाद का अस्तित्व ही दूसरे देशों या इलाकों के निर्दय शोषण पर है। दूसरे शब्दों में उसकी सार्थकता इसी में है कि दूसरों को लूटकर खुद मालामाल बने। मानवीय भावों को पास फटकने दे तो इसे अपना रास्ता नापना पड़े। १५० वर्ष के अंदर ब्रिटिश साम्राज्यवाद ने भारत का अघाकर शोषण किया है। न केवल भारत राजनीतिक स्वाधीनता से वञ्चित है, वरन् वह हर तरह से अपङ्ग कर दिया गया है। लेकिन ब्रिटिश अधिकारी भारत में अपने शासन की प्रशंसा के पुल बांधते नहीं थकते। वे यहांतक कहने की हिमाकत करते हैं कि ब्रिटेन ने भारत में सभ्यता का प्रकाश पहुंचाया। इस सभ्यता की हकीकत भारत से छिपी नहीं है। ५०० वर्षों की सभ्यता पर इतना नाज! थोथा चना बाजे घना वाला हाल है। भारतने तुम्हारी सभ्यता को मान्यता कब दी? क्या उसकी अपनी सभ्यता ही नहीं थी? वह तो तब सभ्य था जब इंगलैण्डवासी जंगली जातियों से भी गये गुजरे थे। हां, यह कहो कि हम तुम्हारे शासक बन गये— तुम दास हो और हम शासक।'

इंग्लैण्ड में ऐसे कुछ लोग अवश्य हैं जो ब्रिटेन द्वारा भारतका शोषण किया जाना पसंद नहीं करते। वे कहते हैं कि एक देश को दूसरे देश पर प्रभुता जमा रखने का क्या अधिकार है? वे भारत की स्वाधीनता के पक्ष में यथा साधन प्रचार भी कर रहे हैं। न्याय के लिए वे जो आवाज बुलंद कर रहे हैं, उसके लिए भारत उनका आभारी है। यह भी नहीं कि इन भारत हितैषियों में सब ब्रिटिश साम्राज्य के शत्रु ही हों। साम्राज्य के प्रबल समर्थक भी यथार्थता का दुरबीन लगाकर भारत की स्थिति का अध्ययन करना चाहते हैं, तो उन्हें भारी व्यथा होती है और उनके उद्दार अधिकारियों को अखरने लगते हैं। ऐसा ही अध्ययन कंजरवेटिव एसोसियेशन के सभापति लार्ड स्ट्राथ्स्पी ने किया है और सण्डे पिक्टोरियल में एक लेख लिखकर कुछ खरी बातें ब्रिटिश अधिकारियों को सुनायी हैं। उन्होंने पूछा है— समस्त विश्वके पुनर्निर्माण के मनमोदक खाये जा रहे हैं, साम्राज्य के पुनर्निर्माण की दिशा में क्या किया जा रहा है? वह कहते हैं—**बर्बाद भारत के पुनर्निर्माण का भी कुछ ख्याल है? भारतीयों की औसत आयु सिर्फ २७ वर्ष की है और प्रति वर्ष भूख और बीमारियों से लाखों व्यक्तिकाल कवलित होते हैं। यूरोप महाद्वीप को पर्याप्त खाद्य दो किन्तु ब्रिटिश साम्राज्य को क्यों वंचित कर रहे हो। हमारे लिए यह शर्म की बात है कि हम भारतीयों और निग्रो लोगों को लिखना पढना सिखाने, स्वस्थ रहनेमात्र के लिए भोजन और निवास की व्यवस्था करने के पूर्व उन्हें बंदूक और बम बनाना सिखाते हैं। इस प्रकार के भाड़े के टट्टुओं को सैनिक शिक्षा देकर रोम साम्राज्य ने क्या लाभ उठाया? रोम साम्राज्य के पतन के पूर्व रोमनों की जैसी हालत थी वैसी ही हालत आज हमारी है। ब्रिटेन के अधिकतर लोग यह अनुभव नहीं करते।**

इसमें कोई शक नहीं कि लार्ड स्ट्राथस्पी ने भारत की स्थिति का बिल्कुल ठीक चित्र खींचा हैं। दूर बैठकर उन्होंनें जो उद्योग किया है वह सराहनीय है किन्तु यदि वह कुछ समय भारतमें बिताते—वायसराय और गवर्नरोंकी कोठियों में नही बल्कि जन साधारण से मिलते जुलते, अपने आचरण द्वारा उनका विश्वास और सम्मान प्राप्त करते और तब वास्तविक भारत को देखने का मन करते तो उनके असंतोष की सीमा न रहती। साम्राज्यवादी होतें हुए भी जब वे भूख से तड़फ तड़फ कर लोगों को अपनी आंखों से मरते देखते, अधिकारियों को अकर्मण्यता देखते और भारतीय सेना मे मनोदशा का अधःपतन देखते तो स्वयं ब्रिटेन के स्वार्थों की दृष्टि से यह स्थिति उन्हें घातक दीख पड़ती। बरमा और मलाया से सबक नहीं सीखा जाता यह और भी दुःख की बात हैं। अगर बरमा और मलाया के अधिवासी ब्रिटिश राजसे संतुष्ट होते, उनकी आशा आकांक्षा का स्वागत किया गया होता तो जापानियों को उन देशों पर अधिकार करने में लोहे के चने चबाने पड़ते। अधिकारियोंने उनको बराबर दबाकर रखा और सर न उठाने दिया। इसीका यह परिणाम था कि अपने देशको जापानियों द्वारा रौंदा जाता हुआ देखने पर भी वे तमाशबीन रहे, और कुछ अंशों में आक्रांता के साथ सहयोग किया। कांग्रेसको धन्यवाद है कि उसने भारतीयों के अंदर उत्कृष्ट ढंगकी देशभक्ति भर दी हैं और जापान और जर्मनी के सर्वसर्वावाद के खिलाफ ऐसा वातावरण पैदा कर दिया है कि भारतीय अपना खून बहाकर भी स्वदेश की रक्षा करने को प्रस्तुत हैं— निश्चय ही यूनियन जैक के नीचे नहीं बल्कि ऐसा करना अपना कर्तव्य समझकर अपने आप। लेकिन फिर भी असन्तुष्ट देश को अपनी फौजी कार्रवाइयों का अड्डा बनाना खतरे से खाली नहीं है। जितनी ही जल्दी ब्रिटिश और अमेरिकन अधिकारी इसे अनुभव करें, उनके हित के लिए उतना ही अच्छा है। अमेरिका इस वस्तुस्थिति से उकता चुका है किन्तु प्रेसीडेण्ट रूज्वेल्ट हस्तक्षेप करते नहीं दीख पड़ते। जबतक उपनिवेश गुलाम हैं दुनिया में कभी भी शांति नहीं हो सकती। अनावश्यक रक्तपात बचाने के लिए साम्राज्यवाद को ही मिटाने की नितांत आवश्यकता है। और इस काम को और कोई नहीं उपनिवेशों के अधिवासी ही करेंगे। स्ट्राथ्स्पी एक यथार्थवादी व्यक्ति हैं। वह जानते हैं कि राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत भारतीय अधिक दिनों तक चुप्प न बैठेंगे। ब्रिटिश साम्राज्य के स्वार्थ ने उनसे उक्त कडुवी बातें कहलवायी हैं। किन्तु चर्चिल-एमरी एण्ड कम्पनी उनकी चेतावनी पर ध्यान दें इसमें सन्देह है।

बापू युग युग जिवो

महात्मा गांधी की ७६ वीं वर्ष गांठ पर जो भारत ही नहीं, दूसरे देशों में भी २ अक्टूबर को मनायी जायेगी, हम उनका हार्दिक अभिनंदन करते हैं और उनके चरणों में अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित करते हैं। गांधीजी युग पुरुष हैं और उनको पाकर भारत अपनेको धन्य मानता है। आपने सोते हुए, बेसुध और कायरता से ओतप्रोत भारत को राष्ट्रीय चेतना का बिगुल बजाकर जगाया, अपने अधिकारों के लिए लडने की भावना पैदा की और उसमें साहस और वीरत्व भर दिया। भारत कभी भी आपके उपकारों से उऋण नहीं हो सकता। विदेशों में आपके ही कारण भारत की कद्र की जाने लगी है। आज दुनिया के बडे बडे मनीषी गांधीजी को इस युग का एक महापुरुष और विचक्षण राजनीतिज्ञ मानते हैं। हम गांधीजी की चिरायु के लिए प्रार्थना करते हुए एक बार फिर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

सांप को किसने दूध पिलाया ?

सम्प्रति संयुक्त राज्य अमेरिका में एक कमीशन युद्ध के लिए उत्तरदायी व्यक्तियों के नाम नोट करने में लगा है। इस प्रकार के नामों की तालिका प्रस्तुत कर क्या कार्यवाही की जायगी, यह अभी भविष्यके गर्भमें है। युद्ध की जिम्मेदारी अकेले हिटलर और उसके गुट्ट पर है ऐसा हम नहीं मानते। जिन अंग्रेजों, अमेरिकनों और फ्रेञ्चों ने शस्त्रीकरण की योजना सफल बनाने में उदारता पूर्वक हिटलर की सहायता की थी वे कुछ कम उत्तरदायी नहीं हैं। और आज जो बदला चुकाने के आयोजन बना रहे हैं, क्या वे परोक्ष रूप से हिटलर जैसी ताकतों को प्रोत्साहन देने के अभियोग से बच सकते हैं? जापान ने मंचूरिया को हडपा, इटली अबीसीनिया को खा गया और जर्मनी ने राइनलैण्ड पर कब्जा कर लिया किन्तु इन गणतांत्रिक साम्राज्यवादी देशोंके कानोंपर जूं न रेंगी। वास्तविकता तो यह है कि इन गणतांत्रिक साम्राज्यवादी देशों ने हिटलर और उसके साथियों को कम्यूनिज्म की लहर रोकने वाली दुर्दांत शक्ति समझा। उनका यह ख्याल था कि हमारे दूध से तगडा बना हुआ नाजी सर्प आगे बढकर रूस को डंसेगा और उसकी जीवन लीला समाप्त कर देगा। इस दर्मियान छोटें छोटे देश या इलाकों को भी वह डंसले तो कोई हर्ज नहीं किन्तु पांसा उल्टा बैठा और इनके ही जानके लाले पड़ गये। हिटलर को खुंख्वार बनानें की जिम्मेदारी यूरोप और अमेरिका के पूंजीपति वर्ग पर है। हिटलरी गुट्टको दण्ड देना है तो उसकी पीठ ठोंकने वालों को भी नहीं छोड़ा जा सकता। क्या ब्रिटेन अमेरिका इसके लिए तैयार हैं?

१९१८ के बाद से यूरोप

युद्धके लिए अकेले हिटलरही जिम्मेदार नहीं

गत महायुद्ध के बाद यूरोप के राष्ट्र और रूस जर्मनी के साथ एक खतरनाक चाल चल रहे थे। खासतौर पर हिटलरके हाथ में सत्ता आजाने पर।

बाल्डविन जिन दिनों इंग्लैण्ड के प्रधान मंत्री थे उन दिनोंकी ब्रिटिश सरकार ने हिटलर को कम्यूनिज्म का घोर शत्रु जानकर और यह धारणा बनाकर कि हिटलर इंग्लैड के साथ कभी युद्ध नहीं ठानेगा, हिटलर की खूब पीठ ठोंकी थी।

इस लेख में इस बात का रहस्योद्घाटन किया गया है कि वास्तव में कैसे युरोपियन मित्रराष्ट्रों ने ही हिटलर को वर्तमान युद्ध की तैयारी में मदद की थी।

—सम्पादक

सत्ता हाथ में आने के बाद से ही हर हिटलर ने युद्ध की तैयारियां जोरशोर से प्रारंभ कर दी थीं। वह सदा यही कहता रहा कि उसका इरादा किसी तरह भी शान्ति को भंग करना नहीं है, वह तमाम सन्धियों के प्रति वफादारी से पेश आयेगा। हिटलर ने लोगों पर यह प्रगट किया कि वह सर्वनाशक कम्यूनिज्म के दानव से न केवल जर्मनी की बल्कि समस्त संसार की रक्षा करने को ही भूमण्डलपर उतरा है। स्वभावतः पश्चिम के पूँजीपतियों को वह खूब पसन्द आने लगा। उन्होंने देखा कि यही एक व्यक्ति है जो मानों उन्ही की ओर से खड़ा होकर बोल्शेविज्म को खत्म कर देगा, और उनका रत्तीभर भी कभी आहित चिन्तन न करेगा और नही कर सकेगा। इसके लिये उसको खूब बढ़ावा देना चाहिये।

रूस का व्यवहार

इन्हीं दिनों रूसका वर्ताव कमाल का था। उधर जब दोनों देशों के आन्दोलनकर्ता एक दूसरे के खिलाफ कीचड़ उछालने में लगे हुए थे, दोनों सरकारें मित्रता के सम्बन्धों को बनाये हुए थीं। स्टालिनने उन्हीं दिनों रैपेल्लोकी सन्धि पर फिर से दस्तखत किये। यह सन्धि पहिले जर्मनी-रूस में सन् १९२१ में हुई थी। अब जर्मन रिपब्लिक के बजाय जर्मनी की ओर से स्टालिनके साथ हिटलर ने उसी पर फिर से हस्ताक्षर किये। जर्मनी और रूस में मिलिटरी सम्बन्धी अनेक गुप्तसंन्धियां सन् १९३४ तक चालू रहीं। बहुत लम्बे कालतक जर्मन अपनी गुप्त शस्त्रास्त्र फैक्टरियां, हवाई अड्डे और ट्रेनिंग के केन्द्र खास रूस में चलाते रहे, और इसके बदले में वे रूसको मिलिटरी की विशेष शिक्षा देते रहे।

हिटलर ने घोषणा की कि वह सब सन्धियों का पालन करेगा। उसने जोरों के साथ कहा कि आस्ट्रिया, पोलिश कोरिडर, और राईनलैण्ड में सैनिक स्थिति आदि से कुछ भी वास्ता सरोकार नहीं है। ठीक, वह निःशस्त्रीकरण सम्मेलन से उठ आया था, और उसने राष्ट्र संघ से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया था, पर इन सबका कारण हिटलर ने यही बताया था कि अन्य राष्ट्रों ने दिलो जान से शान्ति के वातावरण को उतना नहीं रखा है जितना जर्मनीने, और निःशस्त्रीकरण की आमशर्तोंका भी ठीक से पालन नहीं किया है।

अंग्रेजी-कम्पनी द्वारा जर्मनी को मदद

इसके साथ साथ ही जर्मनी में गुप्तरूपसे फिर से शस्त्रसंगठन थोड़ी बहुत मात्रा में चल रहा था, परन्तु यह सब जानते भी उस तरफ अन्य सरकारों ने ध्यान देना व्यर्थ समझा। मजे की बात तों यह है कि विकर्स-आर्म स्ट्रौंग लिमिटेड कम्पनी ने सन् १९३२ में जर्मन मिलिटरी पत्रों में अपने कारखाने की बनी नवीन बन्दूकों के भारी भारी विज्ञापन छपाये, और हिटलर की सरकारको सन् १९३३ में मिलिटरी की ट्रेनिंग के लिये हवाई जहाज भी मुहय्या किये। जब कम्पनी के एक हिस्सेदार ने इस पर आपत्ति उठायी तो चेयरमैन ने सूचित किया कि कम्पनी ने इस सब के लिये ब्रिटिश सरकार से इजाज़त ले ली थी।

सन् १९३३ में ब्रिटिश पार्लेमेण्ट में अनुदार दलवालों का जोर था, प्रधान मंत्री थे मि० बाल्डविन। इस सरकार का स्वार्थ लोहे से सम्बद्ध था। यद्यपि वर्साई की सन्धि की शर्तों के अनुसार जर्मनी को किसी भी तरह की हवाई फौज रखने की मनाही थी, परन्तु उसी सन्धि पर चिकनी चुपड़ी लगानेवाले इन्हीं लोगों ने हिटलर को भविष्य की हवाई सेनाएं तैयार करनेके लिये आवश्यक हवाई जहाज मुहय्या करने में जरा भी हिचकिचाहट अनुभव नहीं की। ब्रिटिश सरकार का तो उन दिनों बस अपने व्यापार से सरोकार था, और फिर उसे यह भी आशा थी कि नयी जर्मन हवाई फौजें पूर्व की ओर उड़कर नीच लाल फौजोंका ही सत्यानाश भविष्य में करेंगी, वे पश्चिम की ओर इंग्लैण्ड और फ्राँस के खिलाफ कभी नहीं लड़ेंगी।

पोलैण्ड के साथ पैक्ट

सन् १९३४ में हिटलर ने पोलैण्ड के साथ एक अनाक्रमण-सन्धि की। लोगों ने समझा कि हिटलर सचमुच ही विश्व में शान्ति चाहता है। पर सचाई यह थी कि हिटलर को पोलेण्ड फूटी आँख भी न भा रहा था। डैञ्जिग, और कौरिडरको खोकर जर्मनी बहुत दुखी था छाती में शूल सभा रहा था, और अन्दर-अन्दर जर्मन-पोलिशों में घृणा द्वेष उबाल खा रहे थे। पर हिटलर की गहरी चालने सबकी आँखों में धूल फोंक दी–, और लोगों को हिटलर शान्ति का दूत जँचने लगा। पैक्ट १० वर्षों के लिये था, परन्तु सारा संसार आज यह जानता है कि वह पैक्ट वास्तव में कितनें दिन जिन्दा रह सका।

झूठ

आज दिन तक अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीति में जो झूठ आमतौर पर बरते जाते रहे थे, हिटलरने उन सब को मात देदी। कूटनीतिज्ञ जानबूझकरके जैसे आँखें मूँद कर हिटलरी फन्दे मे फँसने लगे। सन्धियां करके शर्तों तथा वचनों को तोड़ने के लिये सरकार की ओर से जबर्दस्त झूठा–आन्दोलन करना केवल हिटलर की ही विशेषता कही जाये तो यह हिटलर के साथ अन्याय करना होगा। ऐसा तो साधारणतः साम्राज्यवादी कूटनीति में सर्वत्र ही किया जाता रहा है। इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है। थोड़े से उदाहरणों से ही हमारी बात की पुष्टि हो जाती हैः–इटली ने और ऑस्ट्रिया ने जर्मनी के साथ जो सँधियां वायदे किये हुए थे वे बिना किसी आधार या कारण के सन् १९१५ में तोड़ दिये। मित्रराष्ट्रों ने वर्साई की सन्धि में निःशस्त्रीकरण की जो शर्तें मानी थीं उनका खुले आम भंग कर दिया, स्टालिन ने फिन्लैण्ड, पोलैण्ड, बाल्टिक स्टेट्स, और यूगोस्लाव के साथ जो मित्रता के वायदे किये थे और उनके साथ जो आक्रमण की सन्धियां की भी वे वक्त आने पर स्वार्थवश ताक पर रख दीं। फ्राँस ने जेकोस्लोवाकिया से सम्बन्ध तोड़ लिया, सन् १९३२ में चीनपर आक्रमण होने पर राष्ट्रसंघ के समस्त सदस्योंको कॉवनेन्ट की शर्तों के अनुसार उसकी मदद को दौड़ना चाहिये था, पर किसी ने भी उसके आक्रान्त शत्रुके विरुद्ध शस्त्र न उठाये।

पोलिश कूटनीति

पोलैण्ड में मार्शल पिल्सुडस्की का शासन था। पिल्सुडस्की वहाँ के बड़े-बड़े जमींदारों और सैन्यवादियों के दल का अग्र नेता था। वह अपने विरोधियों के विरोध को जोर-जुल्म के साथ वर्षों दबाता रहा था। वह सोवियट सरकार से सदा शंकित रहता था। यद्यपि वह जर्मनी को दिल ही दिल घृणा करता था, पर जर्मनी से हमलों के खतरे को दूर करने के लिये उसने जर्मनी के साथ खुशी खुशी एक सन्धि कर ली थी।

वर्गों के स्वार्थ

हिटलर यद्यपि घोर मार्क्स विरोधी था, पर फिर भी राष्ट्र में और अन्तर्राष्ट्रीय जगत् में वर्ग युद्ध के शोषण के लिये उसमें मार्क्सवादी सहजबुद्धि भी थी। जर्मनी में अपनी शासन-सत्ता जमाने के लिये हिटलर ने मजूर श्रेणी को धनपतियों द्वारा उत्पन्न होनेवाला खतरा दिखाया और अन्तर्राष्ट्रीय जगत में उसने सोवियट राष्ट्रद्वारा उत्पन्न अंतर्राष्ट्रीय पूञ्जीवाद और साम्यवाद क्रांति के खतरे को लोगों के सामने रखा। बोल्शेविमका नाश करने वाले का चोगा पहिनकर उसने लोगों को इस दमपट्टी के झांसे में फाँस करके शस्त्रास्त्र की फैक्टरियां खड़ी कीं, और जर्मन राष्ट्र को न केवल सोवियट यूनियन के खिलाफ बल्कि तमाम साम्राज्यवादियों के भी खिलाफ जबर्दस्त जंग की तैयारिया कराई। मित्रपक्ष ने यह सब अपनी आँखों देखते भी अपने स्वार्थ वश जानबूझकर बर्दास्त किया। यह तो सब को मालूम ही हो जाना चाहिये था कि हिटलर का मुख्य उद्देश्य या ध्येय तो समस्त भूमण्डल पर अधिकार करना था। हिटलर की इस उद्देश्य की नीति उसकी मशहूर पुस्तक माईन कॅम्फ में स्पष्ट रूपसे बतायी गयी थी; परन्तु फिर भी किन्हीं राष्ट्रों ने इस सब की गम्भीरता पर उन दिनों कभी गौर नहीं किया, और इसे वे हिटलर का केवल प्रोपेगैन्डा ही समझते रहे।

श्रेणी का स्वार्थ

पूंजीपति राष्ट्रों की सरकारों के वर्गीय स्वार्थों ने उन्हें इतना अंधा कर रखा था कि वे हिटलर के उत्थान से भविष्य में आनेवाले खतरे को न देखपा रहे थे। सन् १९३५ तक भी हिटलर की जो स्थिति थी, वह ऐसी न थी कि उसकी तानाशाही का अन्त न किया जा सकता था। उन दिनों मजूर श्रेणी विरोधी दल में थी और हिटलर को जो सफलताएँ पीछे जाकर मिलीं वे तब तक न मिली थीं।

परन्तु हिटलर के पतन का अर्थ होता साम्यवादी क्रान्ति को खुला रास्ता मिल जाना। कम से कम पूञ्जीपति लोगों का सर्वत्र ऐसा ही विश्वास था। यदि पूञ्जीपतियों के उक्त विश्वास को ठीक भी मान लें तब भी यह तो निश्चित था कि फासिस्ट आतंक से उत्तेजित जनता उग्र क्रान्ति का झण्डा खड़ा कर के पूञ्जीवाद को नष्ट कर देती, अथवा पुनः स्थापित डिमौक्रैसी एक साम्यवादी तंत्र में बदल जाती कारण तब मध्यम श्रेणी के मतदाता गण निराश होकर के साम्यवादी और समाजवादी बन जाते। इन सब दृष्टियों से पश्चिमीय यूरोप के डिमौक्रैट्स की आस्था डिमौक्रैसी पर से उठ गयी थी।

खून की नदियाँ

नाजीदल में एक पक्ष ऐसा भी था जो कि साम्यवादी या बहुत कुछ पूञ्जीवाद विरोधी विचारों की उलझनमें फँसा हुआ था। इस पक्षके लोग मुख्यतः एस. ए. तूफानी-दस्ते (Storm Troopers) में से थे जो कि निम्न सामाजिक श्रेणी में से थे, इसके विपरीत एस. एस के दस्ते के आदमी मध्यम तथा उच्च श्रेणियोंमें से लिये गये थे। एस. ए. के नेताओं को साम्यवादी विचारों का मान लेना गल्ती करना

(शेष पृष्ठ ६ पर)

जिस दिन महाराज चक्रधर नर्तकी तिलोत्तमा को प्रजा की इच्छा के विरुद्ध राजमहल में रानी बनाकर ले आए, प्रजा क्षोभ से पागल हो उठी । फिर जब राज्य प्रबन्ध भी धीरे २ तिलोत्तमाके हाथों में खिसकने लगा तब प्रजा एवं राज्य के उच्च कर्मचारी गण क्रोध से दीवाने से होगये । और जब पट्ट महादेवी के सिंहासनसे पट्ट महारानी देवल देवी को उतार कर तिलोत्तमा को उनका स्थानापन्न बनाया तब तो प्रजा राज कर्मचारी सभी विद्रोही बन गये और उन विद्रोहियों का सर्दार बना कुमार करुणेन्द्र !

माता का अपमान सहना राजकुमार की शक्ति के बाहर था । उसका क्षात्र तेज चमक उठा । म्यान की तलवार बाहर निकल आई । राजा की निरंकुशताका अन्त करना करुणेन्द्र के जीवन का ध्येय बना । उसकी वीरता ने पुत्र की मर्यादा का उल्लंघन कर राजद्रोह का सेहरा बांधा । प्रजा हर्ष से नाच उठी । वे देवलदेवी को माता समझते थे । महारानी की प्रजा वत्सलता प्रसिद्ध थी । फिर राजरानी की मानरक्षा के साथ प्रजा को अपने स्वत्वोंका भी तो ख्याल था जो नई रानी तिलोत्तमा के एक इशारे पर रौंधे जा रहे थे । तिलोत्तमा नूरजहां बनने चली थी पर उसे बनना न आया । बीचही में विद्रोह का झण्डा खड़ा हो गया । तिलोत्तमा की भैया तन गयीं दांत कटकटा उठे–' महाराज ! ' उसने अपना जहर छोड़ते हुये कहा–' आप राजा नहीं । गोया एक राज्य के छोटे से कर्मचारी हैं । तब किस बूते पर मुझे बड़े २ प्रलोभन दे राजरानी बनाया था । धिक्कार है आप को जो अपने बेटे को भी वश में नहीं रख सके । इसी बूते पर राज्य शासन करते हैं आप । कुमार विद्रोहियों का सर्दार है और आप उसे तरह दे रहे हैं । वह आस्तीन का सांप आपको ही डंसने को तैयार है ।

' ठीक है ' तुम ठीक कहती हो । ' नींद में से चौंकने के समान राजा ने कहा । वह इस समय भी सुन्दरी तिलोत्तमा की रूप मदिरा पी रहे थे । " मैं उसे आज ही कैद करूंगा । '

राजा के शब्दों से तिलोत्तमा की तनी मुद्रा जरा नम्र पड़ी । और राजा तिलोत्तमा के एक ही कटाक्ष से घायल हो दीन दुनिया सब भूल गये ।

और उधर तब ही राज कुमार एक बार राजा को समझाने या चेतावनी देने राज महल की ओर चले ।

+ + +

' तो तुम मुझे उपदेश देने आये हो ? ' राजा चक्रधर ने जरा भौं विकृत कर व्यंग से कहा ।

कुमार ने कुछ न कह सर झुका लिया ।

महाराज फिर बोले—' साहस तो तुम्हारा कम नहीं है कुमार ? '

' जी । ' कुमारने नम्रता से उत्तर दिया । कुमार के संक्षिप्त उत्तर से महाराज की भौंहें तन गयीं–' तब तुम बगावत का नतीजा भी जानते हो ? '

' जी राज्य त्याग । '

' नहीं उससे भी कठोर ! '

' फाँसी । '

' पतिता का हृदय '

लेखिका
श्री. सौ. सत्यवती भैया, वर्धा

' और तुम उसके लिये तैयार हो ? '

' सहर्ष । '

' कुमार ! ' कुमार के बेफांस उत्तर से राजा का क्रोध काफूर हो गया, पितृ प्रेम उमड़ आया गला भर गया । ' तुम इतनें निष्ठुर हो कुमार ? तुम्हारी इस उद्दण्डता पर हंसूं या रोऊं ? तुम्हें फाँसी देकर मुझे स्वयं चिता पर चढ़ना पड़ेगा । तुम मुझ पर जुल्म कर रहे हो बेटा । अपनी जिद्द छोड़ दो ? '

' मैं लाचार हूँ पिताजी ! मरी मांग आपपूरी करने को तैयार नहीं । तब मैं प्रतिज्ञा बद्ध हूँ या तो उलट फेर करूँगा या जीवन की आहुति पर—पर अब आपको इतनी निरंकुशता न बरतने दूँगा । ' प्रतिज्ञा की दृढ़ आवाज में कुमार ने कहा ।

' कुमार ! ' क्रोध कम्पित स्वर से महाराज चिल्लाये ।

' भय दिखाना व्यर्थ है महाराज ! ' कुमार ने धीरता से कहा ।

चन्द्रचूड़ ! महाराज ने पुकारा । तुरन्त ही एक दण्डधर ससम्मान कक्ष में आ उपस्थित हुआ—' कुमार को गिरफ्दार करो ? '

चन्द्रचूड़ किंकर्तव्य विमूढ़ सा खड़ा रहा । दण्डधर राजकुमार को पकड़ने का साहस न कर सका ।

' आज्ञा पालन करो जल्दी । राजा ने कठोर हो आदेश दिया ।

चन्द्रचूड़ आगे बढ़ा । कुमार ने तलवार सूंतली—' यह असम्भव है । महाराज ! मैं अभी बन्दी होना नहीं चाहता । मेरा कर्तव्य बाकी पड़ा है । पीछे हटो चन्द्र चूड़ । तुम मेरे पितृव्य तुल्य हो—पर पहले कहीं तुम्हारी ही बलि न हो ? ' चन्द्रचूड़ सहम गया और एक कदम में कुमार कक्ष से बाहर निकल गये ।

+ + +

' कुमार ! '

' आज्ञा माताजी ? '

' यह मैं क्या सुन रही हूँ वत्स ? '

' क्या सुन रही हैं आप ? '

' यही कि तुमने पिता के विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खड़ा किया है ? '

' यह ठीक नहीं है माताजी ! पिताजी के विरुद्ध नहीं–उनकी निरंकुशता के विरुद्ध । '

' अर्थ एक ही है । '

' नहीं जननि आप यहीं भूलती हैं । '

' कुछ भी हो पुत्र, परन्तु यह मार्ग तुम्हारे योग्य नहीं ।

' माँ ! मुझे क्षमा करेंगीं यदि जीवन में पहली बार आपकी इस आज्ञा का उलंघन करूं ? ' कुमार ने दृढ़ता से कहा ।

' कुमार ! '

' माँ ! '

' यह मातृ हृदय है पुत्र । इसका परिणाम भयंकर होगा । '

' माँ ! डरसे घबराना कायरों का काम है कुमार करुणेन्द्रनें यह शिक्षा इन्हीं चरणों में प्राप्त की है । '

' वत्स ! ' रानी के नेत्र भर आये । जाओ ! मुझपर जो बीतेगा झेल लूंगी पर तुन्हें कर्तव्य विमुख न करूंगी । पर कुमार……

' आज्ञा मां ! '

' महाराज के जीवन की भीख दिये जाओ ।

' आप निश्चिन्त रहे उनका बाल भी बांका न होगा । पिता की रक्षा के लिये मेरा जीवन उत्सर्ग है । मुझे केवल उनका मार्ग ही बदलना है ।

उसी समय महाराज के आने का समाचार पाकर कुमार दूसरे मार्ग से पट्ट महारानी के महल से निकल गये ।

+ + +

' कुमार करुणेन्द । ' महल के बाहर जाते २ कुमार के कानो में किसीने अमृत वर्षा की । कुमार पीछे मुड़े । सामने ही विषाद की मूर्ति सी रेखा खडी थी । कुमार के हृदय में उथल-पुथल मची परन्तु जितेन्द्रिय कुमार तुरन्त ही संयत हो गये ।

' अन्दर पधारें । ' कुमार का हाथ धर रेखाने कहा–' चारों तरफ चर लगे हैं । '

कुमार मन्त्रमुग्ध से रेखा के पीछे खिचें चले गये । महल के एक भाग में रेखा का निवास भवन था । भवन बड़ा ही सुन्दर परन्तु आवश्यक सभी सामानों के साथ सादगी से सजाया हुआ था । उसी भवन के एक गुप्त कमरे में रेखा कुमार को ले गई और उचित आसन दिया । कुमार बैठा गये । रेखा खडी ही रही बोली–' मैं यह क्या सुन रही हूं कुमार ? '

' क्या सुन रही हो तुम ? ' कुमार ने लापरवाही से कहा—' तुम क्या जानना चाहती हो रेखा ? '

' सुनती हूँ तुमने विद्रोह का झंडा खड़ा किया है ? महाराज तुम्हारे खून के प्यासे हो रहे हैं ? क्या यह सब सच है ? '

' हाँ ! '

' क्यों ? '

' क्यों ? ' जरा उत्तेजित हो कुमार ने कहा—' देखती नहीं हो राजा की निरंकुशता ! बेचारे गरीब जिनकी मेहनत से राजमहल खड़े है, जिनकी कृपा से राजा रंगेरलियाँ मना रहे हैं, भूखों मरें ! कयामत की चक्की में पीस जायं । इज्जतदारों की इज्जत धूल में मिल रही है, और मूर्खों की, चाटुकारों को तिलोत्तमा के नीच कुल जात सम्बन्धियों की चट आयी है । राजा को वेश्या और शराब से छुटकारा नहीं । मेरी तपस्विनी मां के ऊपर उस नीच कुछ जा नर्तकी तिलोत्तमा का शासन । पुत्र को राज प्रबन्ध में बोलने का अधिकार नहीं ! मेरी जवानी का खून यह सब बरदाश्त करने को तैयार नहीं । मैं प्रजातंत्र वादी हूँ । मैं राज्य शासन नहीं चाहता । "

' परन्तु देव ! सत्ता राजा के हाथ में हो !

' और प्रजा मेरे हाथ में है । जहां सत्य है वहीं विजय है । रेखा चिन्ता छोड़ो । मुझे प्रसन्नता पूर्वक जाने दो । '

कुमार ने विनय के स्वर में कहा !

' मैं तुम्हें रोकती नहीं देव ! '

' तब तुम क्या चाहती हो देवी ! '

' आप जो कुछ करें, खूब सोच समझकर यही मेरी इन चरणों में प्रार्थना है कुमार ! '

' मैं खूब, अच्छी तरह सोच समझ चुका रानी ! ' कुमार ने जरा रुककर फिर कहा और तुम यह भी जानती हो रेखा एक राज कुमार होकर मैं तुम्हें पा नहीं सकता ! राज नीति मुझे राज्य के लाभार्थ एक अनजान राज कुमारी से पाणि ग्रहण करने को विवश कर सकती है । किन्तु तुम मेरी बाल सखी रेखा मेरे रोम रोम में बस रही हो । मैं तुम्हें किसी प्रकार नहीं छोड़ सकता ! तुम्हारे चरणों पर मैंने अपने को उत्सर्ग कर दिया है रेखा । '

' ऐसा कह कर मुझे अपराधिनी न बनावें कुमार । मैं सदा सर्वदा आपकी ही हूँ और रहूँगी । परमात्मा करे आपका मार्ग निष्कंटक हो । '

' और तुम यह भी जानती हो कि राजा तुम्हें मेरे पास से खींच लेने का उद्योग कर रहे हैं, और यदि मरी स्नेहमयी मां तुम्हें उठा कर हृदय से न लगा लेतीं तो न मालुम झंझावात तुम्हें कहां न उड़ा ले जाता देवी । ' रेखा कांप उठी । करुणेन्द्र ने खड़े हो, उसके कंधे पर हाथ रख कहा डरो नहीं । करुणेन्द्र इतना शक्ति हीन नहीं जो तुम्हारी रक्षा न कर सके । अब मैं चला देखना मां का भार मैं तुम्हारे ऊपर डाल रहा हूं रेखा । मेरी दुःखिनी मां को सँभालना । भाग्य ने साथ दिया तो शीघ्र मिलूंगा, बस बिदा । और रेखा के कुछ बोलने के पूर्व ही करुणेन्द्र कक्ष से अलक्ष्य हो गया ।

तब—जब राज सैनिक अपने चरों से खबर पा कुमार को घेरने रेखा के महल में आये करुणेन्द्र उनकी पकड से दूर अपने दल में था ।

(अपूर्ण)

देश विदेश की चर्चा

जर्मनीपर चढ़ाई

नारमंडी में घुसने के ठीक १४ सप्ताह बाद मित्र फौजें जर्मन सीमांत पार कर गयीं और अब खास जर्मनी के भीतर अति विकराल युद्ध हो रहा है। कई स्थानोंपर उनका अधिकार भी हो गया है। उत्तरी सागर से लेकर स्विट्जरलैंड की सीमातक ५०० मील लंबी पंक्ति पर जनरल आइसन होवर के प्रधान अधिनायकत्व में छ भारी सेनाएं पूर्वकी ओर दवाव डाल रही हैं। आजकी लड़ाई में वायुयानों का क्या महत्व है, यह बताने की आवश्यकता नहीं हैं। फ्रांसपर मित्र फौजोंके आक्रमण करनेके पहले नाजी गगन सेनाको जबर्दस्त शिकस्त दी गई थी। किंतु फिर भी यह आशा की जाती थी कि जर्मन सीमांत पर मित्र फौजों के पहुचने पर हिटलर अपनी सारी गगन सेना द्वारा मित्र फौजोंका प्रवेश और बढ़ाव रोकने की कोशिश करेगा। निस्संदेह जर्मन गगन सेना ने बहुत बड़े पैमानेपर युद्ध किया, किन्तु उसे भारी क्षति उठानी पड़ी। सिगफ्रिड लाइन के ऊपर दो दिनों के गगन युद्ध में ३५० जर्मन वायुमान विध्वस्त किये गये। जर्मनी के महत्वपूर्ण नगरों पर मित्र वायुमान धुंवाधार बमवर्षा कर रहे हैं।

आचेन और सारब्रुकेन पर मित्र सेनाके तोपखाने भयंकर गोलीवारी कर रहे हैं। सन १८०० ईसवी के बाद जर्मनी पर पहली बार इतनी जोरदार सैनिक चढाई हुई है।

१८०० ई० में फ्रांसके महाबली नेपोलियनने जर्मनीके राजा फ्रेडरिक विलियम तृतीयको पराजित किया था। उस समय फ्रांस और आस्ट्रियाके युद्धमें जर्मनी तटस्थ रहना चाहता था। लेकिन नेपोलियनने एक दिन आंसबेचके पास जर्मनीपर, बिन किसी चेतावनीके आक्रमणकर दिया था। जर्मनीके राजा फ्रेडरिकने नेपोलियनके खिलाफ युद्धका ऐलान किया और जेनाके रणक्षेत्रम नेपोलियनने फ्रेडरिकको बुरी तरह पराजित कर दिया। जर्मनीके बहुत बड़े प्रदेशपर फ्रांसने अधिकार कर लिया। गत यूरोपीय युद्धमें रूसियोंने पूर्वी-प्रशापर हमला किया मगर टेनेनबर्गके पास कैसरकी सेनाने जारकी सेनाको पछाड दिया। उसके बादसे खास जर्मनीपर कभी किसी सेनाने हमला नहीं किया। लेकिन आज पूर्वी प्रशामें रूसकी लाल सेना और पश्चिमी जर्मनीमें अमेरिकन सेना घुसगयी है। जर्मनीपर किया गया यह आक्रमण बडा तगडा और खतरनाक है। हिटलरकी सेनाओंको इस समय एक साथ ही अनेक मोर्चों पर युद्ध करना पड रहा है और हरेक मोर्चेपर जर्मन सेनाएं पराजित हो रही हैं। आज उस डंकर्कपर ब्रिटिश सेनाका कब्जा हो गया है जहांसे ३ जून १९४० को खचाखच भराहुआ अन्तिम जहाज ब्रिटेनके लिये रवाना हुआ था। ब्रिटिश सेनाका तीन चौथाई भाग ब्रिटेन वापस आगया था। लेकिन सारी सेना खाली हाथ लौटी थी। सैकड़ों टैंक, हजारों तोपें और मोटर गाडियां फ्रान्समें ही छोड देनी पडी थीं। उस समय जर्मनीके २०५ डिवीजनोंके सामने ब्रिटेन अकेला खड़ा था। यदि नाजी, ब्रिटेनकी शाही हवाई सेनाको अशक्त कर पाते तो उनकी विशाल सेनाका थोड़ासा ही भाग ब्रिटिश टापूपर उतरकर जर्मनीकी सेनाके लिये सैनिक अड्डा बना सकता था। लेकिन हिटलरने वह अवसर खो दिया और उसे उस भूलका परिणाम आज भोगना पड़ रहा है। ब्रिटेनके पास जो कुछ भी साधन थे उन्हें जुटाकर उसने अपने तट-प्रदेशोंकी रक्षाकी व्यवस्था की। जुलाईमें जर्मनोंने दक्षिणी तटके जहाजोंपर हवाई हमले शुरू कर दिये और इसके बाद ब्रिटेनकी लड़ाई प्रारम्भ हो गयी जो ३१ अक्टूबर १९४० तक बराबर चलती रही, सितम्बरके मध्यतक एंटवर्प, फुलशिंग, ओस्टेन्ड कले और बोलोनमें जर्मनोंने २५०० से भी अधिक नौकाएं जमा करली थीं। उन दिनों यह अनुमान किया जा रहा था कि ब्रिटिश टापूपर चढ़ाई करनेके इरादे से ही हिटलर इन नौकाओंको जमाकर रहा है। लेकिन उसने अवसर खो दिया। अगस्त और सितम्बरमें जर्मन बराबर यह प्रचार करते रहे कि ब्रिटनपर शीघ्र चढ़ाई की जानेवाली है। ब्रिटेनकी दृढ़ता और तत्परताको देखकर नाजी समझ गये कि वे चढ़ाई नहीं कर सकते और जब हिटलरके 'शांति-प्रस्ताव' का ब्रिटेनने ठुकरा दिया तो उसके प्रायः एक मासके भीतर ही जर्मनोंने धीरे धीरे यह कहना आरम्भ किया कि ब्रिटेनको वायुयानों और जहाजों को असीम हानि उठानी पड़ी है और अब उस पर चढ़ाई करनेकी आवश्यकता नहीं रही। ब्रिटनके दक्षिणी और पश्चिमी समुद्रतटपर महीनोंतक नाजियोंके आक्रमणकी प्रतीक्षामें यहांसे निकलनेवाले प्रत्येक जहाजको देखा गया, लेकिन जर्मनोंने अवसर हाथसे खो दिया और अन्तमें ऐसा समय आया जबकि उल्टे नाजी ही अपने ऊपर चढाइ होनेकी प्रतीक्षा करने लगे। आज खास जर्मनीपर चढाई शुरू हो गयी है और जर्मनीका अस्तित्व खतरेमें पड़ गया है।

फ्रांसमुक्त

फ्रांस प्रायः मुक्त हो गया है। अब सिर्फ थोड़ा ही प्रदेश ऐसा है, जहांपर जर्मन सेना विनाशका बाट जोहती हुई मुकाबला कर रही है। जनरल डी-गालने पेरिसमें अस्थाई फ्रेंच सरकारकी स्थापना की है। किन्तु यह बड़े दुःखकी बात है कि डी-गालको अनेक विरोधोंका सामना करना पड़ रहा है। दलबंदीने ही फ्रांसको बर्बाद किया था। वही दलबन्दी वहां फिर देखी जा रही है। फ्रांसके लिये यह बड़े दुर्भाग्यकी बात है। आशा है जनरल डी गाल फ्रांसके सभी प्रगतिशील राजनीतिक दलों और व्यक्तियोंको मिलाकर फ्रांसमें वास्तविक प्रजातन्त्रकी स्थापना करनेमें सफल होंगे। हालैण्डकी रानी और लक्सम्बर्गकी ग्रांड डचेज अपने देशको जानेकी तैयारियां कर रही हैं। पिछले चार वर्षोंके समयमें जनता और शासकोंने जर्मनोंके खिलाफ जिस आत्मविश्वासका और दृढ़ संकल्पका परिचय दिया है इसका शुभ परिणाम प्रकट होनेमें अब अधिक विलम्ब नहीं है। इन दोनों देशोंकी सरकारें बेल्जियन सरकारके समान ही स्वदेश वापस जाने की अनुमति मिलनेकी प्रतीक्षामें हैं। बेल्जियन सरकार ब्रुसेल्स पहुंच चुकी है। और वहांकी पार्लमेण्ट की बैठक भी हो रही है। ब्रिटिश वैदेशिक कार्यालयमें पेरिस-स्थित ब्रिटिश राजदूतावाससे तारोंका पहुंचना प्रारम्भ हो गया है। मि० डफ कूपर पेरिस के लिये ब्रिटिश राजदूत की हैसियतसे शीघ्रही प्रस्थान करनेवाले हैं। फ्रांस, बल्जियम, लक्सम्बर्ग और हालैंड के बाद नार्वे की मुक्तिका नम्बर आनेवाला है। नार्वे और डेनामार्क में नाजियों के विरुद्ध बगावत हो रही है। यूनानी की भी मुक्ति सन्निकट है।

इटलीका युद्ध मोर्चा—

आज, जबकि जर्मन सेनाएं पश्चिमी यूरोप, दक्षिणी फ्रांस एवं ट्रांसिल्वानियासे पीछे हट रही हैं तो इटलीके मोर्चेपर हिटलरकी गोथिक-पंक्तिमें भी दरार डाल दी गयी है। आठवीं सेनाके घोर युद्धने इटलीको यूरोपके युद्धका मुख्य मोर्चा बना दिया है। जर्मनोंने कई डिवीजन रूस तथा फ्रांससे यहां भेज दिये हैं। जर्मनोंके बहुतसे अनुभवी दस्ते तथा दृढ़ रक्षात्मक मोर्चे यहींपर हैं। फिर भी वे एड्रियाटिक तटपर अथवा पीसाके पश्चिममें मित्र प्रगतिको रोकनेमें सफल नहीं हुए। विश्वस्त सरकारी सूत्रोंसे पता चला है कि इटलीके देशभक्तोंने ब्रेनर घाटीमें रेल द्वारा होनेवाले यातायातको बिलकुल बंद कर दिया है। जर्मनी और उत्तरी इटलीका इस तरहसे सम्बन्ध-विच्छेद हो गया है। सुदूर दक्षिणमें भी इटलीके देशभक्त विध्वंस-कार्यमें संलग्न हैं। रिमनी और मिलानके बीचका राजमार्ग कई स्थानोंपर उड़ा दिया गया है। मिलान और ट्यूरिनके क्षेत्रोंमें कई महत्वपूर्ण जंकशनोंपर रेलकी पटरियां उखाड़ दी गयी हैं। उत्तरी इटलीमें जर्मनीके विरुद्ध होनेवाले विद्रोहके तीव्रतर बनानेके उद्देश्यसे देशभक्तोंके एक दलने विकेंजाके फासिस्ट नौसेनाके प्रधान कार्यालयपर रात्रिके समय एक बड़ा साहसपूर्ण हमला किया और छोटे हथियारों तथा प्रचुरमात्रामें युद्धके सामानको हस्तगत करलिया। यूरोपको नाजी प्रभावसे मुक्त करनेमें मित्रराष्ट्रोंकी आक्रमणकारी सेनाओंको देशभक्त सेनाओंसे बड़ी उल्लेखनीय सहायता मिली है। मित्रोंकी विजय में देशभक्त सेनाओंका बहुत बड़ा हाथ है!

रूसी अभियान

समस्त सुविस्तृत रूसी मोर्चेपर पुनः अभियान आरंभ कर दिया गया है। बल्गेरिया के साथ, जिसकी सरकार मित्र राष्ट्रों की पंक्तिमें आ गयी है, मित्रों की विराम संधि हो जानेसे यूनान और दक्षिणी युगोस्लावियामें जर्मन फौजोंके लिए खतरा बढ़ गया है। खबर है कि जर्मन फौजें एजियन सागर के द्वीपों से भाग रही हैं। यद्यपि इसकी अभी पुष्टि नहीं हुई है, किन्तु इसके सिवाय शत्रु के पास कोई चारा नहीं है क्योंकि भागने की उस की लाइन तेजीसे काटी जा रही है। रूसी फौजों ने जो रूमानिया में युगोस्लाविया की सीमा पर पहुंच गयी हैं, मार्शल टिटो की कुछ टुकड़ियों से सम्पर्क स्थापित कर लिया है। मार्शल टिटो की स्वेच्छावाहिनी ने जर्मनों के लिए उपयोगी समस्त रेल्वे लाइनों को काट दिया है। उत्तर में रूसी और रूमानियन फौजें मुख्य कारपेथियन सिलसिले को पार कर गयी है और ट्रान्सिल्वानिया के उस भाग में स्थित क्लुज नगर के निकट पहुंच रही हैं जो मित्र राष्ट्रों ने हंगेरी को दिया था।

पोलिश मोर्चेपर रूसियनों ने जेकोस्लोवाकिया के सीमांतपर सफलता प्राप्त की है। उन्होंने दुकला दर्रे के निकट स्थित कास्नोंपर अधिकार कर लिया है। वे जेकोस्लोवाकिया में घुस गयी हैं। वार्सा के उपनगर प्रागा पर भी अधिकार कर लिया गया है। बाद की खबर है कि रूसी फौजें वार्सा पहुंच गयी हैं।

बरमा में घमासान

अराकान में घमासान युद्ध छिड़ गया है। भारतीय फौजों ने मांगडाव-बुथिडांग रोड के कुछ मील दक्षिण मार्के के एक स्थानपर अधिकार जमा लिया है। मध्य बरमा में १४ वीं सेना की टुकड़ियां ताम् मोर्चे पर स्थित सिटविन को पार कर गयी है। जब कि उत्तर बरमा में ३६ वें ब्रिटिश सेना दल ने मिल्किना के ५० मील दक्षिण स्थित होनकिन नामक स्थान पर कब्जा कर लिया है। इससे और चिंदविन में १४ वीं के अग्रगमन से अपर चिंदविन और उत्तरी काथा अंचलों के समस्त जापानियों के लिए भारी खतरा पैदा हो गया है। टिडिम रोड पर भी मित्र फौजों को कुछ सफलता प्राप्त हुई है।

गांधी जिन्ना मुलाकात

गत ९ अगस्त से बीच में ४–५ दिन छोड़कर बराबर गांधी जिन्ना वार्तालाप हो रहा है। दोनों नेताओं की मुखमंगी से समझौता होनेके पूरे लक्षण दीख पड़ते हैं। देश के कोने कोने से मि. जिन्ना के पास तार और पत्र आ रहे हैं, जिनमें वार्तालाप की सफलताकी आन्तरिक कामना की गयी है। दोनोंही नेताओं ने पत्र प्रतिनिधियों से विशेष अनुरोध किया हैं कि वे अनुमान न लगायें और धैर्यपूर्वक परिणाम की प्रतीक्षा करें। एक दिन प्रार्थना के समय उपस्थित दर्शनार्थियोंके समक्ष भाषण देते हुये गांधीजीने कहा—मि० जिन्ना ने मुझ से कहा है कि यदि हम कुछ भी न कर पाये तो हमारा मजाक होगा और हमारी बुद्धि का दिवाला पिट जायगा। इससे करोडों भारतीयों की आशाओं पर पानी फिर जायगा और हिन्दुस्थानके हितको चोट पहुंचेगी। महात्मा गांधी ने अन्य भाषणों में सर्वसाधारण से सफलता के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने की अपील की।

युद्धके लिए अकेले हिटलरही जिम्मेदार नहीं

[पृष्ठ ३ का शेष]

होगा, असलमें वे लोग तो हिटलर की कार्यवाहियों को पूंजीपतियों का विरोधी समझते थें और वे लोग बड़े-बड़े बिजनैसमैनों और जर्नैलों को हटाकर के उनके स्थानपर खुद विराजना चाहते थे। उनका एक नामी नेता रुईम सेनाका चीफ बननेका ख्वाब देख रहा था। बड़े-बड़े उद्योगपति इन् क्रान्तिकारी सदृश तत्त्वों व विचारों का फूटी आँख भी न पसन्द करते थे, और हिटलर के साथ जर्मनी के स्टील के सबसे बड़े उद्योगपति क्रुप के एसेनस्थित घर पर हिटलर के साथ जो एक कांफ्रन्स हुई थी उसमें यह निश्चय किया गया था कि उक्त क्रान्तिकारी तत्त्वों को क्रिया में परिणत होनें से पहिले पहिले कुचल डालना चाहिए।

३० जून सन १९३४ के दिन एस. ए. के सभी नेता आश्चर्यजनक रीतिसे गिरफ्तार किये गये और गोलीसे उड़ा दिये गये। विरोध में किसीनें अंगुली भी न उठाई। इसके बाद उक्त संगठन को नये रूपसे संगठित करके विश्वस्त नेताओं की देखरेख में एस. एस. की सम्मान के साथ प्रतिष्ठा की गयी।

१९३४ के हत्याकाण्ड मे ११०० व्यक्तियों की हत्या सरकारी तौरपर स्वीकार की गयी थी। हिटलर ने इस हत्याकाण्ड को वैध करार देने के लिये एक कानून भी पास किया था और अनेक झूठी दन्तकथाएं गढ़कर लोगोंको यह बताना चाहा कि जनरल श्लैशर फ्रांस की मदद लेकर जर्मनीके तंत्रको उलट देने का षड्यंत्र कर रहा था। वास्तवमें यह सब हिटलर ने झूठी कथाएं गढ़ली थी।

हिण्डनबर्ग की मृत्यु और हिटलरी तंत्र

जिन दिनों उक्त भीषण हत्याकाण्ड हुआ वृद्ध प्रेसिडेण्ट हिण्डनबर्ग महीनों से रोगी चला आरहा था। अब वह जर्मनी की राजनीति में दखल देने लायक न रह गया था। २ अगस्त १९३४ के दिन उसका देहावसान हुआ और तभी हिटलर ने प्रेसिडेण्ट और चांसलर के दोनोंपद अपने हाथ में ले लिये। इस अवसर पर हिटलर ने दिखावे के लिये अपनी नीति के प्रश्नपर आम जनमत का भी प्रदर्शन किया; किसी को विरोध में सिर नहीं उठाने दिया गया,। विपक्ष में मत देनेवालोंको यंत्रणाओं और जेल की धमकियां दी गयीं। परिणाम यह हुआ कि हिटलर के पक्ष में ९९.५ प्रतिशत तक रायें आयीं। इसी तरह के उपाय पार्लमेण्ट (रीख) के चुनावों में बरते गये। चुनावों में केवल नाज़ी दल को ही खड़ा होने की इज़ाजत थी।

हिण्डनबर्ग की मृत्यु के बाद असली ताकत अब हिटलर के हाथ आ गयी। ऊँची श्रेणियों के जिन राष्ट्रवादियों ने हिटलरी प्रजानायकोंको नीचा दिखाना चाहा था वे या तो सरकारी ओहदों से निकाल बाहर कर दिये गये या फिर नाजी अफसरों के नीचे उन्हें मामूली पदोंपर रहकर काम करना मञ्जूर करना पड़ा, इस तरह उनका सारा प्रभाव-दबदबा नष्ट कर दिया गया। जर्मन जनरलों, अरिस्टोक्रैटो आदि ने भी बिना आह निकाले इस आस्ट्रियन कोर्पोरल (मामूली अफसर) के शासन को मान लिया। लोगोंको जो बर्बर शासन से मुक्ति की बड़ी बड़ी उम्मीदें बँधायी थी उनमें से एक भी पूरी न हुई। अब तो केवल फौजी जनरलों की बन आई थी। वे लोग हिटलर को फौजोंकी वृद्धि, व युद्धों की तयारियाँ लगाकर मदद देने लगे, और इस तरह अपने लिये बड़े बड़े ओहदे व धनमान हांसिल करने लगे।

विश्व संघ की ओर

लेखक
'भारतमें अंगरेजी राज्य' आदिके रचयिता
पंडित सुन्दरलाल
और
भगवानदास केला
संसार की महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार; मूल्य २॥)

देशी राज्य शासन; सजिल्द मूल्य ३॥)

भारतीयशासन	१॥)	ब्रिटिश साम्राज्यशासन	१)
मातृवन्दना	।=)	भारतीय अर्थशास्त्र	३)
नागरिक शिक्षा	॥≡)	साम्राज्य और उनका पतन	१।)
भारतीय जागृति	१।)	हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ	॥।=)
निर्वाचन-पद्धति	॥-)	पूर्वकी राष्ट्रीय जागृति	१॥)
अपराध चिकित्सा	१॥)	भारतीय सहकारिता आन्दोलन	२॥।)
भारतीय राजस्व	।॥=)	कौटिल्यके आर्थिक विचार	॥।=)
अर्थशास्त्र शब्दावली	१)	भारतीय विद्यार्थी विनोद	॥=)
राजनीति शब्दावली	।॥)	नागरिक कहानियाँ	॥=)
श्रद्धांजलि	॥।=)	अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य	॥।)
विश्ववेदना	॥।=)	भव्य विभूतियाँ	॥=)

पुस्तक प्राप्तिका पता—
भगवानदास केला, भारतीय ग्रन्थमाला; दारागंज [इलाहाबाद]

"हो स्वतंत्रता जन जन की"

१ भर दो देव हृदय में साहस
बाहु बाहु में बल भर दो।
बिखरे इन उलझे प्रश्नों को
महाभाग्य तुम हल कर दो।

२ सुलझा दो यह जटिल समस्या
भारत माँ के बन्धन की
क्या अधिकार नहीं मानव का
हो स्वतंत्रता जन जन की।

३ मानव, मानव का गुलाम हो
यह उसने कब से जाना।
बलधारी छीने स्वतंत्रता
यह उसने क्यों कर माना।

४ ऐसा भी क्या जीवन जिस में
अपने पर अधिकार न हो!
मानव की इस मानवता पर
मानव सा व्यवहार न हो।

५ क्या होता स्वातंत्र्य मनुज का,
जन्म सिद्ध अधिकार नहीं
क्या कर्तव्यों का मानव पर
जन्म जन्म से भार नहीं।

६ यदि है, तो फिर यह कैसा है
इन ब्रिटिश जन का शासक
एक देश सम्पूर्ण स्वर्णमय
एक देश दुख का भाजन।

७ त्राह त्राह ही हाय भूख से
सूखे टुकड़ों के लाले।
मानवता का हाथ पकड कर
यह बन्धन किसने डाले।

८ हाय न तन ढकने को जिनने
फटे चीपड़े भी पाये
उन का रक्त बहाकर किसने
वस्त्र विदेशी बनवाये।

९ कलकत्ते के फुट पाथों पर
मानवता रह रह रोती।
अरे मनुज यह नहीं पाशविक
कह कह कर धीरज खोती।

१० अरे कहो क्या मानव जीवन का
इतना ही है अधिकार
भरे पेट जूँटे टुकड़ों से
अपमानों की हो बौछार।

११ देश बहिन विधवा हो माँगें
अन्न दान अंचल पसार कर
स्वदेश जननी. जीवित रहती
इस जीवन को भार मान कर।

१२ जहाँ बनीं सबला, अबला हैं
पदाघात चोटें को सहकर
अरे मनुज यह नहीं पाशविक
रोती यह मानवता कह कर!

१३ क्या है यही मनुजता निष्ठुर
और सभ्यता इस जग की।
जहाँ नहीं जीवन, जीवन है
किन्तु गुलामी है ठग की।

—कुमारी शान्ता राठी
विशारद

जयपुर में शासनसुधार : मताधिकार समिति की रिपोर्ट

विश्वस्त सूत्र से मालूम हुआ है कि गत जनवरी में घोषित की गई शासनसुधार योजना के अनुसार जो मताधिकार समिति नियुक्त की गई थी और जिसमें प्रजामंडल वाले भी शामिल थे, उसकी रिपोर्ट प्रकाशित हो गई है यह भी पता चला है कि मुख्य मुख्य मुद्दों पर सभी सदस्य एकमत हैं। यह आशा की जाती है कि इसके अनुसार निर्वाचन क्षेत्र नियत हो जाने और मतदाताओं की सूची तैयार हो जानेपर धारा संभाओं के चुनाव इस वर्ष के अंत में होंगे।

म्यूनिसिपैलिटी के नये प्रेजीडेन्ट

जयपुर म्यूनिसिपैल्टिी से प्रायः सभी निर्वाचित सदस्यों के इस्तीफे से पैदा हुई परिस्थिति की पहिली प्रतिक्रिया यह हुई है कि चितौडा के ठाकुर देवी सिंह के स्थानपर सीकर के पुरोहित श्री स्वरूप नारायणजी बी. ए. एलएल. बी. सरकार की ओर से अध्यक्ष नामजद किये गये हैं। अब तक २३ सदस्यों ने इस्तीफे दिये थे जो कि स्वीकार कर लिये गये। नया चुनाव होने की अभी कोई घोषणा नहीं की गई है। नामजद सदस्यों में से सरकारी सदस्यों को हटाकर उनके स्थानपर गैर सरकारी सदस्य नियुक्त किये गये हैं। इन नई नियुक्तियों में श्री सूरज नारायण और श्री राधावल्लभ अग्रवाल के नाम उल्लेखनीय हैं। सरकारी नामजद श्रीमती भरतिया को भी स्त्रियों का प्रतिनिधि मान लिया गया है। इस प्रकार म्युनिसिपैलिटी में सरकारी सदस्य एक भी नहीं रहा है | २३ सदस्यों के इस्तीफे दे देने पर भी १४ सदस्य शेष रह जाते हैं जिनसे बैठक का कोरम पूरा हो जाता है। इन १४ में निर्वाचित सदस्य केवल ६ हैं।

जोधपुर में दो शोकजनक मृत्युएं

दुख है कि जोधपुर के कार्यकर्ता श्री. हरिभाई किंकर की पत्नी श्रीमती महिमादेवी का ८ सितम्बर को अपने घर पर देहावसान होगया। वे जोधपुर आन्दोलन में डेढ़ वर्ष कैद रही थीं। और मारवाड लोक परिषद की सर्वाधिकारिणी भी रही थीं।

मारवाड़ लोकपरिषद के नेता श्री. हस्तीमलजी गोलेच्छा का भी आकस्मिक देहावसान रामदेवरा के तालाब में गिरने से हो गया। उनके शव को फलौदी लाकर वहां दाह संस्कार किया गया। वे सन १९२१ में असहयोग आन्दोलन में क्षेत्र में आये और २, ३ वार अंग्रेजी जेलों में और लोक परिषद के गत आन्दोलन में जोधपुर जेल में गये।

सीकर जिला सम्मेलन

सीकर जिला सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन २९ और ३० सितम्बर को रामगढ़ में कलकत्ते के मेयर श्री आनन्दीलालजी पोद्दार के सभापतित्व में होना निश्चित हो गया है। सम्मेलन की सफलता के लिए प्रचार करते एक शिष्टमंडल कलकता की ओर दौरा करके आ गया है और दूसरा शिष्टमंडल बम्बई की ओर जा रहा है।

हमारा राजस्थान

(मारवाड़ी पब्लिसिटी ब्यूरो नयी दिल्ली द्वारा)

जोधपुर में लूनी की बाढ़ में १० गांव बह गए

भारी वर्षा के कारण मारवाड की नदियों में भी बाढ आ गई है। बालोत्तरा से जहां मारवाड लोकपरिषद की सहायक समिति कार्य कर रही है, खबर आई है कि लूनी नदी का बांध टूट जाने से शहर में पानी भर गया है। ८०० परिवार बेघरवार हो गए हैं और लगभग २० लाख रुपये की हानि हुई है। पचपदरा गांव और कई गांव पानी में डूबे हैं। जालौर से सम्बन्ध कट गया है और रेल्वे लाइन बह गई है। यहां जनता और यात्री सात दिन तक भूखे रहे।

मारवाड में ७ दिन में ३५ से ४० इंच तक पानी गिरा है। नदियों की बाढ़ का पानी पचपदरा वाली और जालौर परगनों में कोसों तक फैल गया है। पाली शहर को तालाबों के भर जाने से खतरा है। यहां १० दिन बाद सूर्य दिखाई दिया। वर्षा से १००० मकान गिर गए और ४००० मकान फट गए। पाली से २५ मील दूर तक के गांव नष्ट हो गए हैं। २० मनुष्यों की जानें गयीं। किसान विना घरवार भूखे भटक रहे हैं। जनता की लगभग दो लाख की हानि हुई है। खारडा बांध के टूट जाने से लूनी में जो बाढ़ आई है उससे १० गांव बह गए।

बनास नदी की बाढ से चौसला और उस के आसपास के गांवों को भारी हानि पहुंची है।

जयपुर में साहित्य सम्मेलन

अ. भा. हिन्दी साहित्य संम्मेलन के अधिवेशन के अवसर पर यहां एक साहित्य प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है। इसमें हिन्दी के अन्तर्गत आनेवाली बोलियों को भी पूरा स्थान प्राप्त होगा। इस सम्बन्ध की प्रदर्शनीय वस्तुएं रखी जायंगी। इसी अवसर पर अ० भा० कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया है। हिन्दी युद्ध, ग्राम, और विक्रमादित्य कविता के विषय हैं। राजस्थानी की कविताएं भी सुनाई जायंगी।

टेक्सटाइल इन्स्पेक्टर बर्खास्त

गत मास में टेक्सटाइल इन्स्पेक्टर नवल किशोर द्वारा झुंझुनू में सेठ ईश्वरदास जी की हवेली की तलाशी ली गई थी और इसी सम्बन्ध में श्री नरोत्तमलाल जोशी और सनत्कुमार शर्मा पर मुकदमे चलाए गए थे। उक्त इंस्पेक्टर अब बर्खास्त कर दिया गया है और उसको १०० रु० जुर्माने की सजा दी गई है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन जयपुर अधिवेशन

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के जयपुर अधिवेशन के अवसर पर जयपुर में जिस विशेष कवि सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है उसका सभापतित्व श्री रामकुमार वर्मा ने स्वीकार कर लिया है। श्री पुरुषोत्तमदासजी टंडन ने अधिवेशन में अवश्य आने का विचार प्रकट किया है।

इस अवसर पर राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन का विशेष अधिवेशन भी २३ और २४ सितम्बर को होगा। २२ सितम्बर को २ से ५ बजे तक राजस्थान प्राचीन और अर्वाचीन साहित्य परिषदें, राजस्थान भाषा परिषद, और संस्कृति तथा कला परिषदें होंगी।

मोतियाबिन्द का मुफ़्त इलाज

अजमेर (डाक से) गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा अजमेर मोतियाबिन्द के मरीजों का मुफ्त में इलाज रायबहादुर डाक्टर मथुरादास जी मोघावाले से ता. २५-२६ सितम्बर को दयानन्द साधुआश्रम अजमेर में करा रही है। जितने भी रोगी आवेंगे उन के दूध का कुल खर्च श्री. बा. प्यारेलालजी खत्री अजमेर, व रोगियोंके दूध के अलावा दलिया, खिचड़ी का तमाम व्यय कड़ेल के श्री. पन्नालालजी आदि देंगे। श्री. पं. भगवान स्वरूपजी न्यायभूषण मंत्री राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा कम्प बनवाने में लग गये हैं। अनुमान है कि ३०० सौ आंखों के मरीज आवेंगे।

मारवाड़ी कवि सम्मेलन

रतनगढ़ (बीकानेर) ता. ६-९-४४ को सायं ५ बजे धर्मसभा में स्थानीय मुन्सिफ श्री गोपालजी आचार्य बी. ए. एल. एल. बी. के सभापतित्व में एक कवि सम्मेलन हुआ, जिसमें सुन्दर २ कवितायें व श्री कृष्णचन्द्राचार्यजी महाराज का कविता पर ओजस्वी व सारगर्भित भाषण हुआ। सभापतिमहोदय के द्वारा ही "मारवाड़ी कविसम्मेलन" की स्थापना हुई, सम्मेलन के निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये:-

व्यवस्थापक व निरीक्षक– अद्भुत शास्त्री साहित्यभूषण सभापति–श्री इन्द्र बी. ए., उपसभापति–जी. पी. शर्मा मन्त्री–रूपचन्द्र विशारद, उपमन्त्री–जे. के. प्रभाकर [हिंदी ऑनर्स] प्रचारमन्त्री–सूर्यशङ्कर पारीक उदयप्रचारमंत्री–हीरालाल दाधीच कोषाध्यक्ष श्रीयुत कविताकान्त

कार्यकारिणी के सदस्य–श्री त्रिविक्रमशास्त्री–व्याकरणाचार्य, श्री प्रेमदासशास्त्री आयुर्वेदाचार्य श्री रघुनाथप्रसाद वकील, श्री महेशशास्त्री, श्री मोहनलाल खेमका।

स्व. युवक घनशामदासजी गिलडा

बंबई में शोक प्रकाश

बम्बई, माहेश्वरी युवक मण्डल की कार्यकारिणी ने अपनी सभा में मेसर्स राधाकिसनजी रामचन्द्र (बंबई) फर्मके एक मालिक युवक श्री घनशामदासजी गिलडा की केवल २२ वर्ष की आयुमें मूंडवा में ४। ५ दिन के बुखार के पश्चात देहावसान हो जानेपर हार्दिक खेद प्रकट किया है और दिवंगत आत्माको शान्ति और परिवार को धैर्य प्रदान करने के लिए ईश्वरसे प्रार्थना की है।

कन्हैयालाल
कल्यंत्री प्रधान

राजपूताना बाढ़ पीडित सहायक समिति

बंबई मारवाड़ी सम्मेलन के तत्वावधान में संस्थापित राजपूताना बाढ़ पीडित सहायक समिती के कार्य विवरण और हिसाब की रिपोर्ट प्रकाशित हो गयी है। इस समिति के कोष में दान देने वाले अनेक दाताओं के हमारे पास पूरे पते नहीं है। अतः उनसे प्रार्थना है कि वे उक्त रिपोर्ट, मारवाड़ी सम्मेलन कार्यालय, २ रा मजला, नरनारायण मन्दिर काल्बादेवी रोड के पते से प्राप्त करलें।

––निवेदक मन्त्री

श्रद्धेय श्री जाजूजी का वक्तव्य

वर्धा (सी. सी.)। अ. भा. चर्खा संघ के मंत्री श्री श्रीकृष्णदासजी जाजूने, निम्नलिखित आशय का वक्तव्य निकाला है:–हिन्दू तिथि के अनुसार पू. गांधीजीका जन्म दिन इस वर्ष ता. १४ सितम्बर १९४४ को पड़ता है। इस दिन हम चर्खा जयन्ती मनाते हैं। उस दिन से ता. २ अक्टूबर १९४४ तक देशभर में खादी प्रेमियों द्वारा चर्खा सप्ताह के भिन्न भिन्न कार्यक्रम चलाये जायेंगे। उनमें हमेशा की तरह सूत्रयज्ञ, अखंड चर्खा, खादी बिक्री, खादी प्रचार आदि कार्यक्रम तो रहेंगे। इन स्थूल कार्यक्रमों के साथ साथ इसकी भी आवश्यकता है कि हम खादी के सिद्धान्तों के ज्ञान का भी विशेष रूप से प्रचार करें। गरीब बेकारों के लिए सहायता के रूप में तो चर्खा है ही। वस्त्रस्वावलम्बन की तथा अहिंसात्मक समाज रचना की दृष्टि से भी उसका महत्व है। साथ ही वह अहिंसा आदि सद्गुणों का प्रतीक भी है। चर्खा प्रवृत्ति के भिन्न २ पहलुओं का जनता में प्रचार होना आवश्यक है। इस लिए खादी प्रेमियों से प्रार्थना है कि चर्खासप्ताह के कार्यक्रम सब दिनों में नियमित रूप से इस प्रकार बनाये जांय कि जिससे उक्त बौद्धिक प्रचार ठीक रीति से सध सके। सूचना है कि वे खादी की भूमिका समझानेके लिए हिन्दस्वराज्य, मंगल प्रभात, गांधी विचार दोहन, रचनात्मक कार्यक्रम आदि पुस्तकोंका भी सहारा लें।

राजस्थानी जगत

बीकानेर राज्यमें दमन

जयपुर के लोकनायक श्री हीरालाल जी शास्त्री ने एक वक्तव्य में बीकानेर राज्य के दमन की कठोर आलोचना करते हुए कहा है कि बीकानेर प्रजा परिषद के अध्यक्ष श्री रघुबरदयालजी गोयल और उनके साथ श्री गंगादास और दाऊदयालजी की नजरबन्दी के समाचार मिलने पर मैंने सही समाचार मंगवाने की व्यवस्था की थी। प्राप्त समाचारों के अनुसार महाराजानें श्री रघुबरदयालजी को बुलवा कर उनसे एक घंटे तक बातचीत की और उसी दिन उन्हें गिरफ्तार करवा के लूनकरनसर भेज दिया गया। वे वहां से पुलिस की इजाजत के बिना नहीं जा सकते, राज्य के विरुद्ध भाषण नहीं दे सकते, बीकानेर, अन्य राज्य या अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध पत्र व्यवहार नहीं कर सकते, और कोई लेख भी नही लिख सकते। उनके या उनके परिवार की कोई व्यवस्था नहीं कीं गई है। श्री गंगादासजी और दाऊदयालजी अनूपगढ, के किले में अलग अलग नजरबन्द हैं।

शास्त्रीजीने आगे कहा है कि उन्होंने जेल से रिहा होने के बाद राज्य के विरुद्ध कुछ नहीं किया। एक राजपत्र में उन पर विध्वंसात्मक कार्यों में भाग लेने का आरोप लगाया गया है। क्या राज्य उनके ऐसे कार्यों में से किसी पर भी प्रकाश डाल सकता है? यह भी कहा गया है कि वे माफी मांग कर और लिखित आश्वासन दे कर छूटे थे। क्या राज्य यह माफी और आश्वासन प्रकाशित करेगा। जहां तक मुझे मालूम हुआ है श्री रघुवर दयाल ने कस्तूरबा कोष जमा करने, सीकर सम्मेलन का सभापतित्व करने और उदयपुर में राजस्थानी कार्यकर्ता सम्मेलन में भाग लेने के अतिरिक्त कुछ नहीं किया और उनके साथियों ने तो इतना भी नहीं किया।

कस्तूरबा स्मारक कोष

कस्तूरबा स्मारक कोष की राजपूताना समिति के संयोजक श्री हीरालालजी शास्त्री ने ३ सितम्बर को एक वक्तव्य में कहा है कि प्रान्त में अब तक ६०००० रु. इकट्ठे हुए हैं, लेकिन इस प्रान्त से कम से कम दो लाख रुपए इकट्ठे होने चाहिए। उन्होंने कार्यकर्ताओं से अधिक समय देकर प्रान्त का भाग पूरा करने की अपील की है।

नवजीवन का प्रकाशन

मेवाड़ से श्री कनक मधुकर ने नवजीवन का प्रकाशन शुरू कर दिया है। यह पत्र पहिले अजमेर से निकलता था। १९४२ की नजरबन्दी के बाद श्री कनकजी का अजमेर मेरवाडा में प्रवेश बन्द कर दिया गया इससे वे नवजीवनको उदयपुर ले गए। मेवाडसे प्रकाशित होनेवाला यह पहिला राष्ट्रीय साप्ताहिक है।

चित्तौड़ की बाढ़

राजस्थान क्षत्रिय महासभा का काम

महासभा की रिलीफ कमेटी के निश्चयानुसार महासभा के सहायक मंत्री पं. सम्पत्कुमार मिश्र ने चित्तौड़ (मेवाड़) की गंभीरी तथा बेड़च नदियों से विनष्ट हुए स्थानों को देखने तथा पहले से सेवा-कार्य कर रहे मेवाड़ रिलीफ कमेटी के कार्यकर्ताओं से परामर्श करने के बाद उनकी सम्मति के अनुसार निम्नलिखित गांवों में एक सहायक दल भेजा है, जो श्रीमान कु. केसरीसिंहजी बसी के नेतृत्व में सेवा कार्य कर रहा है–बिलिया, भूतिया, सारन बड़ला, थाना, बुजरत खेडी, रूपा खेडा, दांतोल आदि। महासभा के प्रधान मंत्री कुं. देवीसिंहजी मंडवा ने जयपुर और जोधपुरके बाढ़ पीड़ितों के सहायतार्थ भी अपील प्रकाशित की है।

—मंत्री

श्री शारदाजी की अपील

जोधपुर रियासत के पाली बालोतर आदि ग्रामों में आई भीषण बाढ़ के समाचार सुनते ही राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा की ओर से श्री अशोकजीको वहांपर सहायता कार्य के लिये स्वयंसेवकोंके साथ भेज दिया गया है। देशभक्त कुंवर चांदकरणजी शारदा प्रधान, राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा अजमेर ने देशके धनीमानी मारवाड़ी व अन्य महानुभाओं से अपील की है कि गत वर्ष जिस प्रकार बाढ़पीड़ित राजस्थान भाइयों की सहायता की थी, उसी प्रकार उदार हृदयसे इस वर्ष भी अपने दुखी भाइयों की सहायता के लिये पुष्कल धनराशि प्रदान करें। चौंसला (अजमेर मेरवाडा) व जोधपुर के बाढ़ पीडित क्षेत्रोंमें बीमारी भी फैल रही है। जो दानी दवाइयां भेजना चाहें वे दवाइयां भी भेजदें। दानी अपना दान प्रधान राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा अजमेर के पते पर शीघ्र भेजें।

—सत्यदेव अशोक

१३ छात्रों को छात्रवृत्तियाँ दी गयीं

माहेश्वरी विद्याप्रचारक मंडल पूना की प्रबंध कारिणी समिति की स्थगित बैठक ता. ११।९।४४ को दोपहर में होकर निम्न लिखित छात्रों को छात्र वृत्तियाँ दी गयीं।

छात्रों का नाम	स्कूल, कॉलेज (कक्षा सहित)	छात्रवृत्ति की रकम	छात्रवृत्ति का नाम
१ श्री. लक्ष्मीनारायण झिपस्लोल बिला	चतुर्थ वर्ष, गोविंदराम से. कॉ. कॉलेज, वर्धा.	रुपये १२०	माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल की ओरसे
२ श्री. लक्ष्मीनारायण रघुनाथ लड्ढा	द्वितीय वर्ष, ,, ,,	१२०	,, ,,
३ नंदलाल गणेशलाल नागोरी	चतुर्थ वर्ष, आयुर्वेद महाविद्यालय, अहमदनगर.	२००	,, ,,
४ रामचंद्र रघुनाथ मुंदडा	Jr. B. Sc. विद्यार्थी, उस्मानिया युनिव्हरसिटी हैदराबाद.	१५०	,, ,,
५ शंकरलाल नारायणदास जाजू	प्रथम वर्ष (सायन्स) सर परशुरामभाऊ कॉलेज, पुणें.	१८०	,, ,,
६ ,, पन्नालाल केशवलाल मेहता	चतुर्थ वर्ष, R. A. पोद्दार कॉलेज ऑफ कॉमर्स, माटूंगा बंबअी १९.	१००	,, ,,
७ कु. सुमन गंगाधर मानधन्या	प्रथम वर्ष (सायन्स), रामनारायण रुइया कॉलेज, माटूंगा, बंबअी १९.	२००	स्व. सौ. जानकी देवी मर्दा एवम स्व. लक्ष्मीनारायणजी मर्दा, छात्रवृत्तिं.
८ कु. लीलावती मुंदडा	५ वीं कक्षा, छात्राओंकी पाठशाला हिंगणा (पूना).	१५०	श्री. रुपचंदजी धूत छात्रवृत्ति.
९ सौ. विद्याराठी	४ थी कक्षा, सेवासदन हायस्कूल पूना २.	१००	स्व. वा. सौ. चंपाबाई भट्टड एवम भागीरथजी छात्रवृत्ति.
१० श्री. जगन्नाथ रामकिशन लड्ढा	प्रथम वर्ष, आयुर्वेद महाविद्यालय, अहमदनगर.	१००	स्व. वा. कुंजीलालजी धूत छात्रवृत्ति.
११ ,, शिवनारायण मोतीलाल जाजू	प्रथम वर्ष, D. A. V. College, शोलापूर.	१००	श्री. रामनारायण परशराम कर्वा छात्रवृत्ति.
१२ श्री. लक्ष्मीनारायण घासीराम लड्ढा	मॅट्रिक क्लास, सुलाखे हायस्कूल, बार्शी.	१२०	श्री. मांगीलाल तोसनी, बालछात्रवृत्ति.
१३ ,, रामचंद्र श्रीकिसन सैढ	प्रथम वर्ष, बृहन्महाराष्ट्र कॉलेज ऑफ कॉमर्स.	१२०	श्री. बालमुकुंदजी लोया छात्रवृत्ति.

टीपः—१ उपरोक्त छात्रवृत्तियां दस मास के लिए दी गयी हैं।

२ इस वर्ष छात्रवृत्ति की घोषणा करने में कुछ अपरिहार्य कारणों से देर हुई सो प्रबंध कारिणी समिति को खेद है।

रूपचन्द्र काबरा
संयुक्त मंत्री

शोलापुर बाजी मार ले गया

शोलापुर १८ सितम्बर

कस्तुरबा गांधी स्मारक निधि एकत्र क का काम जोरोंसे जारी है। शोलापुर जिले कोटा ८० हजार का है। किन्तु अकेले शोला पुर शहर से ही ५७ हजार रु० इक्ट्ठे हो गये मुमकिन है दो अक्तूबर तक शोलापुर श से ७५ हजार तक इकट्ठे हो जायगे और जि से २५ हजार। इस निधि में श्री लक्ष्मीना यणजी राठी के ३१००, लूगकरणजी चांडक २०००, और श्री कालीदासभाई देसाई २०००, रु. के आंकडे उल्लेखनीय है। इस का में श्री रामकृष्णजी जाजू बडी लगन उत्साह से अहर्निश लगे हैं।

बीकानेर में प्रजानेता नजरबन्द

बीकानेर के गृहमंत्री ने प्रजापरिषद सभापति श्री रघुबरदयालजी वकील तथा अन्य कार्यकर्ता श्री. गंगादास तथा दाऊदयाल को महकमा खास में बुलाकर नजरबन्द क दिया। नजरबन्दी अनिश्चित कालके लि बताई जाती है। श्री रघुबरदयालजी लूनकर सर में रखें गए हैं।

बागलकोट मारवाड़ी व्यायामशाल

बागलकोटसे श्री. रामगोपालजी मूंधड़ा सूचि करते है कि मारवाड़ी व्यायाम शालाका तृत वार्षिकोत्सव तारीख २९।९।१९४४ को श्रीमा **लक्ष्मीनारायणजी राठी** सोलापूर निवा की अध्यक्षतामें मनाया जायगा, और उसी दि व्यायाम शालाकी नई बिल्डींग का शिलारोह श्रीमान् **मुरलीधरजी लोया** पूना निवा के कर कमलोसे होगा।

(पृष्ठ १ का शेष)

कोशिश की जायगी कि स्वतंत्र राष्ट्रों का स योग अव्यवहारिक है और सुरक्षा का एकम उपाय सामरिक मेल और साम्राज्यवाद है और यह मार्ग तृतीय महासमर की ओर जाने वाला है।

मेरे मत से राष्ट्रों की सार्वदेशिक संस् आंचलिक राष्ट्र मंडलों पर आधारित हों चाहिए--प्रत्येक मंडल अपने इलाके के रा की सुरक्षा के लिए जिम्मेदार हो किन्तु स राष्ट्र सार्वजनिक संस्था के निर्देशोंका अक्षर पालन करें। और सार्वदेशिक संस्था के पा काफी ताकत होनी चाहिए ताकि वह कि की शांति खतरे में होने पर उसका प्रयोग क सके। जिस प्रकार की संस्था की आवश्यक मैंने ऊपर बतायी है, वह मित्र राष्ट्र परिषद नाम से अभिहित है। इस प्रकार की संस् स्थापित करने की दिशा में अब तक कुछ न किये जाने से अमेरिका में बहुत असंतो व्याप्त है। बहुसंख्यक अमेरिकन यह सम हैं कि इस प्रकार की संस्था की स्थापना यु समाप्त होंने के पहले ही होनी चाहिए। लंबी चौडी बातें नहीं चाहते वे तो शीघ्र स्थाप चाहते हैं। यही संस्था हमारे भविष्य की रू रेखा प्रस्तुत करेगी और शांति की स्थापना सहायक होगी।

Printed and published by Vssant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India
Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

१२-९-१९४४

एक प्रति का ।=)

[अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र]

Reg. No. B 4441

माहेश्वरी

— प्रवर्तक —
स्व० भागीरथदासजी भूतड़ा

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

कार्यालय
अली चेम्बर्स, डीन लेन,
फोर्ट बम्बई

वर्ष ३५, संख्या ९]

बम्बई ता. ७ सितंबर १९४४

[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

हिन्दू-मुस्लिम समस्या और मुल्ककी आज़ादी

आक्सफ़ोर्ड के प्रोफ़ेसर आर० कूपलैण्ड ने तीन जिल्दों में ‘रिपोर्ट आन दी कान्स्टीट्यूशनल प्राब्लेम इन इण्डिया’ नाम से हिन्दुस्तान की इस वक्त की हालत पर एक रिपोर्ट प्रकाशित की है जो इंगलिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों जगह छपी है। यह रिपोर्ट ख़ासी विद्वत्ता से लिखी गई है। इस रिपोर्ट में और बातों के साथ साथ प्रो० कूपलैण्ड ने लिखा है कि जिस तरह सन् १६८९ ई० में इंगलिस्तान के व्हिग और टोरी दल के लोग आपस में मिल गये थे, जिस तरह सन् १७०७ में स्काटलैण्ड और इंगलैण्ड के लोगों ने आपस में मेल कर लिया था और जिस तरह सन् १७८७ में अमरीका की मुख्तालिफ़ नौ आबादियों के लोग मिलकर एक हो गये उसी तरह हिन्दू और मुसल्मानों को आपस में मिल जाना चाहिये। बदकिस्मती से विद्वान प्रोफ़ेसर ने इस बात को नहीं देखा कि इन तीनों सूरतों में वहां के लोगों को खुद आपस में समझौता करना था, कोई तीसरी पार्टी उन पर असर डालने वाली न थी। लेकिन इतिहास में शायद कोई भी ऐसी मिसाल नहीं मिल सकती जिसमें विदेशी हुकूमत के रहते हुये किसी देश के लोग आपस में मेल कर सके हों। जर्मन कौम के लोगों में मेल तब सम्भव हुआ जब नैपोलियन का तख्ता उल्टा गया। इटली के लोग उस समय ही मिलकर एक हो सके जिस समय आस्ट्रिया हार गया। फ्रान्स के लोग बड़े दिल वाले हैं। उनमें आजादी के लिये भी बड़ा जोश है। लेकिन क्या किसी को भी यह उम्मीद है कि वहां के ‘विशी’ दल के लोग और दि गाल की पार्टी के लोग उस समय तक मिलकर एक हो सकेंगे जिस समय तक कि जर्मनी का फ्रान्स पर कब्जा है।

यह समझ लेना भी जरूरी है कि इस देश में हिन्दू मुसलिम समस्या किस तरह पैदा हुई और यह समस्या है क्या? जाहिर है कि हिन्दुस्तान में यूरोपीय कौमों के आने से पहले इस तरह की कोई समस्या नहीं थी। उस समय या तो मुसल्मान राज करते थे और हिन्दू खुशी खुशी या अनमने होकर उनके मातहत रहना स्वीकार कर लेते थे और या बगावत करके उनके जुए को अपने कन्धों से उतार फेकते थे। १७ वीं सदी के आख़ीर तक पहली सूरत जारी रही। १८ वीं सदी में

● डाक्टर ताराचन्द एम. ए., डी. फिल ●

मराठे, सिख और जाट स्वाधीन होगये। जब अंग्रेज आये तो उन्होंने हिन्दुस्तानी राजाओं और बादशाहों के आपसी झगड़ों में हिस्सा लेना शुरू कर दिया। उन्होंनें मराठों को मराठों से, निज़ाम को मैसूर से और एक राजा को दूसरे राजा से लड़ाना शुरू किया। अन्त में इस आपसी फूट से फ़ायदा उठाकर अंगरेज़ों ने सारे हिन्दुस्तान पर अपनी हुकूमत कायम कर ली। कानूनी निगाह से उस वक्त मुसल्मान हिन्दुस्तान के हाकिम थे। इसलिये अंगरेज़ों को मुसल्मानों ही पर शक हुआ और अंगरेज़ी हुकूमत के दिनों में अंगरेज़ों की नीति अपने इन पराजित प्रतिस्पर्धियों को ही दबाकर रखने की थी। हण्टर ने अपनी पुस्तक ‘दि इण्डियन मुसल्मान्स’ में एक फेहरिस्त देकर यह दिखाया है कि अप्रैल सन् १८७१ में बंगाल के अन्दर अंगरेज सरकार किस को दबाना चाहती थी। जो बड़ी-बड़ी नौकरियां उस वक्त कानूनी तौरपर अंगरेजों, मुसल्मानों और हिंदुओं, तीनों को मिल सकती थीं उनमें से १३३८ यूरोपियनों को, ६८१ हिंदुओं को और ९२ मुसल्मानों को मिली हुई थीं।

सन् १८७२ से इस लहर ने पल्टा खाया। उस वक्त के भारत मंत्री लार्ड ओलिवर ने स्वीकार किया है कि अंगरेज सरकारी अफसर मुसल्मानों की ज्यादा रियायत करते हैं। बंगाल के लेफ्टेनेण्ट गवर्नर ने मुसल्मानों को हिन्दुओं के मुकाबले में अंगरेजों की ‘ज्यादा चेहती बीबी’ कहा था। पहिले चालीस वर्ष के अन्दर मुसल्मानों के साथ यह रियायत बार बार चमकती रही है। अलीगढ़ के प्रिन्सिपल आकबाल्ड के जरिये लार्ड मिन्टो ने मुसल्मानों का वह मशहूर डेपुटेशन कोशिश करके तय्यार कराया जिसकी मारफत मुसल्मानों से जुदागाना चुनाव और राजनीतिक महत्व की बिना पर उनकी तादाद से ज्यादा सीटों का वादा किया गया। इस तरह लार्ड मारले के हाथ बांध दिये गये, और हिन्दू और मुसल्मानों के दो अलग अलग कौम होने के उसूल के बीज बो दिये गये। सन् १९१६ में हिन्दू और मुसल्मानों में फिर समझौता हो गया। साइमन कमीशन की रिपोर्ट में और लार्ड इरविन के गवर्नमेण्ट आफ इंण्डिया डिसैच ने उस समझौते का सत्यानाश कर दिया। सन् १९३२ में इलाहाबाद की यूनिटी कान्फ्रेंस में फिर इस बिना पर हिन्दू और मुसल्मानों में समझौता हो गया कि केन्द्रीय असेम्बली में ३२ फी सदी सीटें मुसल्मानोंको दी जावें और सिन्ध का एक अलग प्रान्त बना दिया जावे बशर्ते कि सिन्ध अपना खर्च खुद चला सके। चन्द रोज़ के अन्दर ही गवर्नमेन्ट ने लन्दन से यह ऐलान करके कि मुसल्मानों को केन्द्रीय असेम्बली में ३३⅓ फी सदी सीटें दी जायंगी और सिन्ध को बिना किसी शर्त के अलग कर दिया जायगा, हिन्दू मुसल्मानों के उस आपसी समझौते को सुरंग लगाकर खत्म कर दिया। यह सच है कि राउण्ड टेबुल कान्फ्रेंस में कोई समझौता न हो पाया लेकिन वहां भी अंगरेज सरकार के अवार्ड ने सवाल को और ज्यादा पेचीदा कर दिया। इन सब घटनाओं के होते हुए यह कह सकना असम्भव है कि अंगरेज़ों के इरादों और उनकी नीति को अलग रखकर हिन्दू मुसलिम समस्या का आसानी से हल किया जा सकता है।

किन्तु हिन्दू मुसल्मानों में झगड़ा है क्या? दोनों के धर्म अलग अलग हैं। कुछ रस्म रिवाज भी अलग अलग हैं। लेकिन दोनों अपने अपने प्रान्त में एक ही जबान बोलते हैं, एक ही साहित्य का रस लेते हैं, दोनों के आर्थिक हित एक हैं, दोनों अशिक्षा गरीबी और बीमारी के यकसां शिकार हैं। सौ बरस से ऊपर हो गया कि दोनों को एकसी तालीम दी जारही है। दोनों एक ही कानून के मातहत हैं और दोनों पर एक ही गवर्नमेण्ट राज करती है। आज दोनों आजादी के लिये एक समान बेताब हैं।

फिर वैमनस्य का क्या कारण है जो इतना बढ़ गया है कि हिन्दू और मुसल्मान हिन्दुस्तान दो टुकड़े करने को तैयार हैं? अपने यहाँ की सामाजिक अवस्था पर हम एक नजर डालना चाहते हैं। इस मुल्क में सबसे ऊपर बैठे ये राजा महाराजा और बड़े बड़े जमींदार हैं जिन्होंने आम तौर पर देश की आजादी की कोशिश से कभी कोई वास्ता नहीं रखा। सबसे नीचे वह करोड़ों जनता है जो गरीबी और जलहालत में डूबी हुई है और जिसे प्रोफ़ेसर कूपलैण्ड के अनुसार अपनी मोटी से मोटी जिस्मानी जरूरतों को पूरा करने के बाद कभी भी इतना समय नहीं बचता कि वे देश

(शेष पृष्ठ ८ पर)

माहेश्वरी
ART CORNER

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

बम्बई, ७ सितंबर १९४४

पर्दा फाश !

अन्य सरकारी प्रतिनिधियों एवं शिष्टमंडलों की भांति प्रेसीडेण्ट रूज्वेल्ट के व्यक्तिगत प्रतिनिधि की हैसियत से मि. विलियम फिलिप्स हमारे बीच आये। गुलामी की अवस्था में भारत से जैसा संभव हो सका, उनका स्वागत किया। यह स्वाभाविक ही था कि गुलामी के जुए के नीचे तड़फता हुआ भारत एक स्वतंत्र देश—नहीं नहीं मानव समाज के उद्धार की बातें करने वाले देश के प्रतिनिधि का दिल खोल कर स्वागत करता और अपनी दीनहीन अवस्था से उसे अवगत कराता। हमारे देश के नेता उस समय स्वतन्त्रता की उमंग रखने के एकमात्र कारण से जेल के सींखचों के अंदर बन्द थे-देश मे निराशा, हताशा, असहायता और किंकर्तव्य विमूढ़ता का दौर दौरा था। ऐसे समय फिलिप्स को अपने बीच पाकर हमने बड़ा आनंद अनुभव किया। वह भारत में खूब घूमे खुली हुई आंखों के साथ। भारत को उनके प्रति आभार मानना होगा कि उन्होंने सारी परिस्थिति का ऐसा अध्ययन किया, मानो एक्सरे किया हो। कई स्थानों पर जब पत्र प्रतिनिधियों ने घेरा और यह जानना चाहा कि इस विशद अध्ययन से वह क्या फायदा उठायेंगे, तो उन्होंने कहा कि प्रेसीडेण्ट रुजवेल्ट को भारत की अवस्था से अवगत करने के लिए यह सबकर रहा हूं।

वह भारत से कुछ समय बाद चले गये और महीनों सन्नाटा रहा। भारतीय आश्चर्य करने लगे कि फिलिप्स का भारत विषयक अध्ययन कहां विलीन हो गया? क्या हम गुलाम इस काबिल भी नहीं कि वह अमेरिका में हमारी कुछ चर्चा करते? यही नहीं निराशा के घात प्रतिघात से बेमन और चिड़चिड़े भारत ने यहांतक समझना शुरू कर दिया कि फिलिप्स भी किसी कुटिल उद्देश्यसे आये रहे होंगे। लेकिन फिलिप्स और अब तक आये हुए विदेशियों में जमी आसमान का अंतर था, जिसे केवल अब भारत समझ पाया है। उन्होंने रुजवेल्ट को जो रिपोर्ट दी, वह गुप्त रखी गयी और उनकी सिफारिशों पर जरा भी अमल नहीं किया गया।

उस दिन अचानक जब अमेरिकन पत्रोंमें रूज्वेल्टके समक्ष पेश की गयी फिलिप्स की रिपोर्ट प्रकाशित हुई, तो भारतने जाना कि फिलिप्स क्या चीज हैं, और न्यायकी कितनी ऊंची लहरें उनके हृदयमें उठती हैं। अपनी रिपोर्ट में वह कहते हैं:—यह ख्याल करते हुए कि भारत जापान और बर्माके खिलाफ हमारी भावी सैनिक कार्रवाई का मुख्य अड्डा है, यह बहुत जरूरी हो जाता है कि हमारे पक्षमें विरोधी और उदासीन भारत के स्थानपर सहानुभूति दर्शक भारत रहे। यह स्पष्ट है, जापान के खिलाफ युद्ध में हमारी सर्वोपरि जवाबदारी रहेगी। बगैर नेताओं के परामर्श के भारतको युद्ध में झोंक दिया गया। भारतीयों का ख्याल है कि शासन में उनकी कोई आवाज नहीं अतः युद्ध संचालन में कोई जबाबदारी भी नहीं। वे अनुभव करते हैं कि उनके लिए ऐसी कोई चीज नहीं, जिसके लिए वे लड़ें, क्योंकि वे जानते हैं कि संयुक्त राष्ट्रों के घोषित युद्धोद्देश्य उनके लिए लागू नहीं है। ब्रिटिश प्रधान मंत्री चार्चिल ने वस्तुतः घोषित भी कर दिया था कि अटलांटिक चार्टर की खास भारतके लिए लागू नहीं। अस्तु उनका यह सोचना स्वाभाविक है कि अटलांटिक चार्टर सिर्फ गौरांग लोगों के लाभ के लिए बना है। भारतीय सैनिक भाड़े के टट्टू हैं। युद्ध के संबंध में जनता की भावना बहुत खराब है। अकाल की स्थिति, जीवननिर्वाह का बढ़ता हुआ खर्च तथा गतिरोध जारी रहने से कटुता विक्षोभ, तथा उदासीनता बढ़ रही है। भारत के सभी दल ब्रिटिश शासन से मुक्ति और स्वतंत्रता चाहते हैं। इस असंतोषजनक स्थिति का एक ही हल है, वह है-युद्ध के प्रति भारत की जनता के रुख में परिवर्तन। ब्रिटेन का कर्तव्य है कि वह स्थिति में सुधार का प्रयत्न करे तथा भारतीयों में यह विश्वास जागृत करे कि उन्हें भविष्य में स्वतंत्रता दी जायगी। भारत में अपनी फौजी स्थिति को मद्दे नजर रखते हुए इस मामले हमारी आवाज जरूर रहे।

फिलिप्स के विचार स्फटिक के समान स्पष्ट हैं। भारत की स्थिति के विषय में अमेरिका में ब्रिटिश सरकार द्वारा कराये जानेवाले भ्रांतिपूर्ण प्रचार पर उनकी रिपोर्ट वज्र प्रहार है। भारत का पक्ष उन्होंने बड़े अच्छे ढंग से रखा है, जिसके लिए भारत उनका आभारी है। किन्तु चार स्वतंत्रताओं की घोषणा करनेवाले रूजवेल्ट पर इसका क्या असर पड़ा? भारतीय समस्या हल करनेके लिए कुछ करना तो दूर रहा, जान पड़ता है, खुद फिलिप्स की खरी बातें उन्हें नहीं भायीं, तभी ब्रिटिश सरकार के दबाव डालने पर उन्होंने फिलिप्सको, लंदन से जनरल ईसन हावरके राजनीतिक सलाहकार के रूपसे हटा लिया है। अमेरिकाके पत्र इस पर आग बबूला हो गये हैं और लंदन से उन्हें हटवाने में ब्रिटिश सरकार के षडयंत्र की तीव्र आलोचना हो रही है। पत्रों ने साफ लिखा है कि ब्रिटिश सरकार ने अपने रुख द्वारा फिलिप्स का घोर अपमान किया है और इसके प्रतिशोध स्वरूप अमेरिकन सरकार भारत सरकार के राजदूत सर गिरजा शंकर बाजपेयी तथा रेनाल्ड कैम्प बेल की अपनी मान्यता न दे। सिनेट में भी कई प्रस्ताव पेश होने जा रहे हैं। फिलिप्स ने भारत तथा लदन में ब्रिटिश सरकार द्वारा किये गये व्यवहार से असन्तुष्ट होकर दोनों ही पदों से इस्तीफा दे दिया है। इस सारे काण्ड में रूजवेल्ट की सरकार का रुख कोई अच्छा नहीं रहा। जान पडता है उसे अपने मानापमान का ख्याल ही नही है। इस समय वह ब्रिटेन का अन्ध अनुयायी हो गया है और वह किसी भी मामले में ब्रिटेन के बीच हस्तक्षेप नहीं करना चाहता। प्रेसीडेण्ट रूज्वेल्ट के आफिस में फिलिप्स की रिपोर्ट का १ साल तक पडा रहना हद दरजे की उदासीनता का परिचायक है। जब हम अमेरिका को भी भारत के प्रति उपेक्षापूर्ण व्यवहार करते देखते हैं तो हमें बडी निराशा होती है। अमेरिका का रुख 'हाथी के दांत खाने के और एवं दिखाने के और होते हैं,' की कहावत चरितार्थ कर रहा है। वास्तविक बात यह है कि वर्तमान युद्ध साम्राज्य वादी स्वार्थोंकी रक्षा और अभिवृद्धि की लिए लड जा रहा है। स्वतंत्रता और गणतंत्र का बुरका वास्तविक युद्धोद्देश्यों को नहीं ढक सकता। वर्तमान युद्ध ने कितने ही देशों की दुरंगी नीतिका पर्दा ऐसा फाश किया है कि अब वे दुनियाको ठगने लायक नहीं रह गये। हमें अमेरिका के रुख पर तरस जरूर आता है-क्षोभ या घृणा का भाव मनमें हर्गिज नहीं उठता। जो हो, निर्भीकता के साथ भारतका पक्ष रखने के लिए हम मि० फिलिप्स का अभिनंदन करते हैं।

कस्तूरबाफंड

आज देशके कोने कोने में बड़े बड़े नगरों से लेकर छोटे छोटे गांवों तक में कस्तूरबा फंड एकत्र किया जा रहा है। जिसकी जैसी सामर्थ्य है, वह उसी हिसाब से इस फंडमें दे रहा है। कस्तूरबा की स्मृतिको चिरस्थायी बनाने के पुनीत भावसे प्रेरित होकर यह फंड खोला गया है। उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए प्रस्तर मूर्ति बनाकर ही संतोष न कर लिया जायगा बल्कि ग्राम्य अंचलों में, जो उन्हें बहुत प्रिय थे, रहने वाली असंख्य महिलाओं के उत्थान का कार्य प्रारंभ किया जायगा। भारत में यह पहला मौका है, जब कि देहातों की अज्ञान, अंध विश्वास, निरक्षरता और अस्वस्थतासे दबी हुई देवियों के उत्थान का विचार किया गया है। हम यह जानते हैं कि इतने बड़े काम के लिए ७५ लाख का फंड अपर्याप्त ही सिद्ध होगा, किन्तु काम तो प्रारंभ हो ही सकता है। एक बार काम शुरू हो जाने पर धनके अभाव से यह अपूर्ण रह जायगा ऐसी कल्पना भी करना गलत है। ग्रामों की ओर-वह भी वहां की अनुन्नत गृह देवियों के प्रश्नों की ओर ध्यान देकर फंड के ट्रस्टियों ने बड़ा अच्छा काम किया है। और इसका श्रेय तो महात्मा गांधी को सबसे अधिक है, क्योंकि उन्होंने ही फंडके उद्देश्य में महिलाओं के उत्थान की जगह ग्राम्य अचलों की महिलाओं का उत्थान वाक्यांश शामिल कराया है।

अब तक ५० लाख के करीब इकट्ठे हो चुके हैं। समय अब बहुत थोड़ा रह गया है-इसी महीने भर का समय और है, अतः जिन जिन ने अभी तक अपना हिस्सा न दिया हो, वे अविलम्ब दे दें। देशव्यापी फंड में १ लाख से लेकर १ पैसा तक का महत्व है। किसी को अपनी सामर्थ्य कम होने पर फंड को सहायता करते झिझकना नहीं चाहिए। हमें आशा है, शीघ्र ही वह पूरा हो जायगा।

भड़कने की क्या बात?

आर्य समाज बागली ने अपनी एक बैठक में एक प्रस्ताव पास किया है, जिसकी प्रतिलिपि हमारे पास भेज कर सम्पादकीय लेख या टिप्पणी लिखने के लिए अनुरोध किया है। इसके लिए हम आर्य समाज बांगली को हार्दिक धन्यवाद देते हैं। किन्तु हम खेद के साथ यह कहते हैं, कि प्रस्ताव में व्यक्त आशंका निराधार है। प्रस्ताव में कहा गया है:-

> "आर्य समाज बांगली आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान और मालवा से अनुरोध करती है कि वह अपने अधीनस्थ समाजों को आदेश दे कि वह राजस्थान में, जो राजस्थानी भाषा का प्रश्न हिन्दी की प्रतिद्वन्द्विता में खडा किया जा रहा है, उसका विरोध करे क्यों कि यह आन्दोलन राष्ट्रीयता के लिए घातक है। प्रांतीय बोलियों के प्रचार से वैदिक साहित्य व वैदिक संस्कृतिको क्षति पहुंचेगी और एक प्रकार से जो कार्य समाज ने अब तक किया है वह नष्ट हो जायगा। अतः वैदिक धर्माभिमानियों को सचेत रहता चाहिए।"

हम समझते हैं, बागली आर्य समाज व्यर्थ ही भयातुर है। दुनिया में सबको जिन्दा रहने का अधिकार हैं। 'जिन्दा रहो और दूसरे को भी जिंदा रहने दो' यही एक आदर्श नीति हो सकती हैं। जब सबके लिए स्वच्छन्द विकास का मार्ग खुला है, तो खतरे, भय या आशंका का क्या काम? जहांतक हमे जानकारी है, राजस्थानी आक्रमणकारी भाषा के रूप में अपना पथ नही प्रशस्त करना चाहती। जिस तरह बंगला, गुजराती, मराठी, तामिल, तेलगू, मलयालम, उडिया, आदि वैदिक संस्कृतिको क्षति नही पहुंच रही हैं, उसी तरह राजस्थानीसे भी उसे कोई क्षतिन होगी। इसके विपरीत वह अपने माध्यम द्वारा मारवाड़ के गांव गांव मे वैदिक सभ्यता और संस्कृति फैला सकती है बशर्ते कि वह उनसे आकृष्ट हो। श्री कुँवर चांदकरणजी शारदा राजस्थानी में वेदोंका अनुवाद करने जा रहे हैं। यदि यह कार्य सम्पन्न हुआ, जिसके विषय में संदेह करने का कोई कारण नहीं है, तो निस्संदेह राजपूताना आर्य समाज का एक अच्छा गढ़ बन जायगा। हम आर्य समाजी बंधुओं से अनुरोध करते हैं कि वे अपने मस्तिक से आतंक और संदेह को निकाल बाहर करें और धैर्य पूर्वक अध्ययन करें कि राजस्थानी उनका अहित करती है या हित।

देश विदेश की चर्चा

जर्मनी की दुर्गति

मित्र फौजें विद्युत गति से आगे बढ़ रही हैं। फ्रांस के अधिकतर भाग का उद्धार कर उन्होंने बेलजियमकी ओर प्रयाण किया और देखते देखते ब्रुसेल्स पर आधिपत्य जमाकर अन्दरूनी भागों में अग्रसर हो रही हैं। जर्मन फौजें बड़ी विपत्ति में पड़ गयी हैं। छोटी छोटी टुकड़ियां मित्र फौजों के व्यूह में फंसी पड़ी हैं, वे इस व्यूह से निकल जाने में सफल हो जायंगी, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। ऐसा जान पड़ता है कि अब नाजियों का संभल सकना असंभव है। अफ्रीका से इटली, इटली से फ्रांस, फ्रांससे बेल्जियम यह उनके भागने का क्रम है। बेलजियम से भी उनका भागना निश्चित है और वह दिन दूर नहीं, जब कि खुद जर्मन भूमिपर घमासान युद्ध छिड़ेगा।

अब जर्मनी किस स्थान पर से जमकर लड सकेगा? लक्षणों से प्रतीत होता है कि खुद जर्मनी में अंदर की सीग फ्रीड लाइन पर ही वह बढ़ती हुई मित्र फौजों को रोकने की अतिम चेष्टा करेगा।

दक्षिण इंग्लैण्ड में गोलाबारी

गत १ सितम्बर को दक्षिण इंग्लैंड में जर्मनी ने अपने विशाल तोपखाने का प्रयोग किया। जर्मन न्यूज एजेन्सी ने घोषित किया कि 'जर्मनों का विशालकाय शस्त्रास्त्रों का प्रयोग केवल आक्रमणकारी ब्रिटिशसेना के विरुद्ध नहीं हो रहा है बल्कि दक्षिणी इंग्लैण्ड के यातायात साधनों और फौजी केन्द्रों के भी विरुद्ध हो रहा है।' बर्लिन के जानकार हल्कों ने यह नहीं बताया कि तैयारी और आक्रमण की है अथवा दूर फेंके जानेवाले शस्त्रास्त्रों का प्रयोग मात्र है। दूर तक गोले फेंकने वाले तोपखानों का यह प्रदर्शन इतिहास की पहली घटना है।

लाल फौज का बढ़ाव

लाल फौज भी अति वेग से बढ़ रही है। उसने रूमानिया में घुस कर बुखारेस्ट ले लिया है। रूमानिया के अन्य बहुत से स्थानों पर भी उसका अधिकार हो गया है। वहां एक नयी सरकार गठित की गयी है जिसमें अन्य दलों के प्रतिनिधियों के सिवाय कम्यूनिस्ट पार्टी के भी प्रतिनिधि हैं। लाल सेना बल्गेरिया पहुंच गयी है और आशा की जाती है कि वह शीघ्र ही युगोस्लाविया की सीमा पर पहुंच जायगी। बहुत जल्दी बाल्कन में रूस-युगोस्लाविया मोर्चा स्थापित होने जा रहा है। इस से यूनान और दक्षिण यूगोस्लाविया में स्थित जर्मन फौजें खतरे में पड़ जायंगी। उत्तर में रूसी फौजें कारपेथियन्स को पारकर ट्रान्सिलवानिया के उस भाग पर आक्रमण करने की तैयारी कर रही हैं जो वियना निर्णय के अनुसार रूमानिया द्वारा हंगेरी को दिया गया था।

जर्मनी सुलह चाहता है

उस दिन जर्मन हाईकमांड के प्रवक्ता डीटमारने एक और अपील ब्राडकास्ट करते हुए मित्रराष्ट्रों से अनुरोध किया कि वे अपने युद्धोद्देश्योंमें संशोधन करें और जर्मनी से सुलह कर लें। उन्होंने कहा कि यह भयंकर संग्राम तब तक जारी रहेगा, जब तक कि हमारे विरोधी अपने युद्धोद्देश्योंपर अडे रहेंगे और तर्क तथा न्याय का उन पर असर नही पडेगा।

प्रशांत में युद्ध ज्वाला

जर्मन न्यूज एजेन्सी ने उस दिन कहा कि मनीला नगर खाली हो गया है। मुसाफिरों के आवागमनपर प्रतिबंध लगा दिये गये हैं। जिन लोगों के पास परमिट होंगे, वही मनीला में प्रवेश पा सकेंगे। मनीला फिलीपाइन की राजधानी है। साथ ही सुमात्रा के दो प्रमुख स्थानों पर भी वैमानिक आक्रमण किये गये।

चर्चिल रुज्वेल्ट भेंट

शीघ्र ही मि० चर्चिल और प्रेसीडेण्ट रूज्वेल्ट कनाडा के किसी स्थान पर मिलनेवाले हैं। कहा जाता है कि फिलिप्स के प्रति किये गये ब्रिटिश सरकार के रुख के खिलाफ इस समय अमेरिका में जो तूफान मचा हुआ है उसके विषय में विचार होगा।

फिलिप्स आंखके कांटे क्यों?

मि. फिलिप्स के प्रति ब्रिटिश सरकार ने क्यों बेरुखाई दिखाई, इसकी पृष्ठभूमि अब दुनिया के सामने आ गयी है। मि. फिलिप्सने प्रेसीडेण्ड रुज्वेल्ट को जो रिपोर्ट दी थी उसमें उन्होंने साफ कहा कि भारत को पूर्ण स्वाधीनताका वचन दिये बिना भारत जापान के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण आधार स्थल नहीं बन सकेगा। फिलिप्स की इस रिपोर्ट पर ब्रिटिश सरकार कुपित हो गयी और लंदन में आइसन होवर के सलाहकार के रूप में उनके साथ कोई सहयोग नहीं किया। एवं अमेरिकन सरकार से अनुरोध कर उन्हें वापस बुलवा लिया। ब्रिटिश सरकार के इस रुखके खिलाफ अमेरिका में जबर्दस्त असंतोष है। कई प्रस्ताव उपस्थित किये जा रहे हैं। सर गिर्जाशंकर के वापस बुला लिये जाने की भी मांग की जा रही है।

फिलिप्स का पत्र

श्री विलियम फिलिप्स का पत्र, जिसका प्रतिनिधि कालविन ने अपने प्रस्ताव में जिक्र किया है, और जो 'अमेरिकन' नामक पत्र में छपा है, इस प्रकार है—

"यह खयाल करते हुए कि भारत जापान और बर्मा के खिलाफ हमारी भावी हलचल का मुख्य अड्डा है, यह बात बहुत जरूरी हो जाती है कि हमारे पक्ष में विरोधी और उदासीन भारत न रहे। यह स्पष्ट है, जापान के खिलाफ युद्ध में हमारी सर्वोपरि जबाबदारी रहेगी। इसके आसार नहीं दिखाई देते कि ब्रिटिश महज सहायता से अधिक और कुछ करना चाहते हैं। आज सिर्फ कानूनी दृष्टि से ही भारतीय जनता युद्धरत है।"

"बगैर नेताओं से परामर्श किये भारत को युद्ध में झोंक दिया गया। भारतीयों का खयाल है कि शासन में उनकी कोई आवाज नहीं अतः युद्ध संचालन में कोई जवाबदारी भी नहीं। वे अनुभव करते हैं कि उनके लिये ऐसी कोई चीज नहीं जिसके लिये वे लड़ें। क्योंकि वे जानते हैं कि संयुक्त राष्ट्रों के घोषित युद्धोद्देश्य उनके लिये लागू नहीं।

"ब्रिटिश प्रधान मन्त्री ने वस्तुतः घोषणा की थी कि अटलांटिक चार्टर की धारा भारत के लिये लागू नहीं अतः यह अस्वाभाविक नहीं कहा जायेगा अगर भारतीय नेता आश्चर्य करें कि यह चार्टर सिर्फ गोरी जातियों के लिये ही है। मौजूदा भारतीय फौज महज भर्ती की सेना है। जनरल स्टिलवेल ने स्थिति विशेषतः भारतीय अफसरों के कमजोर मनोबल पर चिन्ता प्रकट की है।

गांधी-जिन्ना भेंट

९ सितम्बर को बंबई में

आगामी ९ सितम्बर को बंबई में मि० जिन्ना के निवास स्थान पर गांधी जिन्ना भेंट होगी।

"युद्ध के प्रति आम जनता का रुख और भी खराब है। अकाल की स्थिति, जीवन निर्वाह के बढ़ते हुए खर्च तथा गतिरोध जारी रहने से कटुता, विक्षोभ तथा उदासीनता बढ़ रही है। यद्यपि भारत विभिन्न राजनीतिक दलों में बंटा हुआ है, फिर भी सभी का एक ही उद्देश्य है वह है—ब्रिटिश शासन से स्वतन्त्रता और आजादी।

"इस जबरर्दस्त असंतोषजनक स्थिति, जिस के कि हम दुर्भाग्यवश किन्तु, गंभीर शिकार होगये हैं, का एक ही हल है और वह है—युद्ध के प्रति भारत की जनता के रुख में परिवर्तन। उनमें इस भावना का संचार हो कि हम चाहते हैं कि वे संयुक्त राष्ट्रों के प्रति जवाबदारी ग्रहण करें।

"राजनीतिक स्थिति को देखते हुए इस दिशामें सुधार की उम्मीद नहीं। पुनः असफल होने के बावजूद, ब्रिटेन का यह आदि कर्तव्य हो जाता है कि वह स्थिति में सुधार का प्रयत्न करे तथा भारतीयों में यह विश्वास जागृत करे कि उन्हें भविष्य में स्वतंत्रता प्रदानकी जायेगी। केवल शब्दों से कोई फायदा नहीं। उनसे हालत और बिगड़ती है।

"इस दिशा में अपनी सद्भावना की गारण्टी के रूप में केन्द्र में प्रतिनिधि मूलक सरकार की स्थापना का आश्वासन दिया जाये जिसे सीमित अधिकार प्रदान किये जायें। प्रेसीडेंट महोदय, यह मेरा दृढ विश्वास है कि भारत में हमारी फौजी स्थिति को मद्देनजर रखते हुए इस मामले में हमारी आवाज जरूर रहे। ब्रिटेन के लिये यह कहना ठीक नहीं कि यह तुम्हारा काम नहीं जब कि हमें अकेले ही जापान के खिलाफ युद्ध में बड़ा पार्ट अदा करना है।"

सत्यार्थ प्रकाश की जब्ती के लिए कोशिश

लाहोर (डाकसे) कतिपय मुसल्मानों ने 'सत्यार्थ प्रकाशविरोधी कानूनी कार्रवाई समिति' का निर्माण किया है और लाहोरके सीनियर सबजजकी अदालतमें एक दरखास्त दी है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' के उर्दू संस्करणके १४ वें समुल्लासको जब्त कर लिया जाय, क्योंकि उसके द्वारा मुसलमानोंकी धार्मिक भावना पर आघात पहुंचता है। मामलेकी सुनवाई अक्तूबर महीनेमें होगी।

ब्रिटिश-सरकार की मंशा

भारत कभी भी आजाद न किया जायगा

एक प्रेस-प्रतिनिधि द्वारा प्रश्न किये जानेपर श्री. पुरुषोत्तमदास टण्डन ने कहा कि लार्ड वावेल द्वारा गांधीजी को जो उत्तर दिया गया है, उससे यही आशा झलकती है कि सत्ता छोड़ने की ब्रिटिश-अनिच्छाका कारण युद्ध की परिस्थिति नहीं है वरन् अंग्रेज सत्ता छोड़ना ही नहीं चाहते। ब्रिटिश सरकार के रुख से यह भी प्रकट है कि अंग्रेज लड़ाई में हार जाना पसन्द करेंगे, किन्तु भारत की सत्ता छोड़ना हर्गिज कबूल न करेंगे।

टण्डनजी से निम्नलिखित प्रश्नोत्तर हुए:—

'क्या आप की राय में, जिन लोगों ने देश-प्रेम से प्रेरित होकर कानून तथा समाजहित के विरुद्ध ध्वंसात्मक कार्य किये, उन्हें अपराधी बताना उचित है?

उत्तर—सारे संसारमें यह सभी सरकारोंका नियम है कि उनके द्वारा बनाये गये कानूनों के तोड़नेवालों को अपराधी बताया जाता है। यही उनके लिए सरल भी है। स्वतन्त्र भारतीय सरकार भी ऐसा ही करेगी। किन्तु सभी युगोंमें महान उद्देश्योंकी ज्योतिसे प्रज्वलित आत्माओंने तत्कालीन सरकार और व्यवस्थाकी परवाह न करके अपने उच्च लक्ष्यकी प्राप्तिके लिए सर्वस्वका बलिदान कर दिया है। अपने निर्णयमें उन लोगोंने भले गलती की हो, किन्तु उन्हें अपराधी कहना कुतर्ककी पराकाष्ठा है।

प्रश्न—जिन लोगोंने अगस्त-आन्दोलनमें भाग लिया उनकी आम-रिहाईके लिए क्या आप सरकारको सलाह देंगे?

उ०—सरकारको मैं अनेक सत्परामर्श दे सकता हूं, किन्तु सुनता कौन है? अतः अपने शब्दोंका अपव्यय मुझे अभीष्ट नहीं।

प्र०—जिन लोगोंको नजरबन्द कर दिया गया है अथवा जिनकी सजा हो गयी है, उनके परिवारकी देख-भालका दायित्व राष्ट्रपर है, क्या आप इस भावनाके समर्थक हैं? टण्डनजीने उत्तरमें कहा, 'अवश्य'

हिन्दू-मुसलिम समस्या और मुल्क की आज़ादी

[पृष्ठ १ का शेष]

की बात या किसी और ऊंची बात की सोचें। इन दोनों के बीच में थोड़े से बीच की श्रेणी के लोग हैं। जाहिर है कि राष्ट्रीय आन्दोलन के नेता इन्हीं में से निकल सकते हैं। इनमें कुछ पढ़े लिखे हैं और कुछ व्यापारी। पढ़े लिखे लोगों को अपनी रोजी के लिये अधिकतर सरकार ही का मुंह ताकना पड़ता है। इस लिये वे अधिकतर सरकार ही के असर में रहते हैं। उनकी जरूरतें इतनी अजीब हैं कि इन में आपस में काफी प्रतिस्पर्धा और एक दूसरे से डाह बनी रहती है। व्यक्तियों की प्रतिस्पर्धा और महत्वाकांक्षा बड़ी आसानी से जगह जगह साम्प्रदायिक वैमनस्य का रूप ले लेती है। व्यापारी लोगों की आमदनी भी एक बहुत बड़े दरजे तक सरकार की खुशनूदी पर निर्भर है। हिन्दुस्तान की राजनैतिक समस्या पर विचार करते समय हमें इस देश की इस सामाजिक हालत को ध्यान में रखना चाहिये।

महत्वाकांक्षा, प्रतिस्पर्धा और ईर्षा की अंधियारी में एक दूसरे से डर बढ़ते जाते हैं। इस डर के भूत को उतारने के लिये मिठास और समझदारी की बातचीत, सब के भले की इच्छा, धीरज, उदारता और प्रेम की रोशनी की जरूरत है। हिन्दुओं का यह फर्ज है कि मुसल्मानों के इस डर को उनके दिलों से दूर कर दें कि हिन्दू बहुमत में होने के कारण हमेशा हमारे दुश्मन रहेंगे। मुसल्मानों का फर्ज है कि वे हिन्दुओं के दिलों से इस डर को निकाल दें कि दोनों की जन्म भूमि हिन्दुस्तान की रक्षा करने में उन्हें मुसल्मानों से पूरी मदद नहीं मिलेगी। दोनों को इस बात को समझना चाहिये कि एक दूसरे से दुश्मनी रखकर दोनों में से किसी के भी स्वप्न सच्चे साबित नहीं हो सकते, और बिना आपसी समझौते के न हिन्दू आजाद हो सकते हैं और न मुसल्मान। मुसल्मानों को अगर पाकिस्तान कायम करना है तो उन्हें हिन्दुओं को इस बात का विश्वास दिलाना होगा कि पाकिस्तान की योजना काबिले अमल है और दोनों के फायदे की है। हिन्दू अगर मुसल्मानों को एक हिन्दुस्थान के अन्दर रखना चाहते हैं तो उन्हें मुसल्मानों को विश्वास दिलाना होगा कि इसी में मुसल्मानों का फायदा है। हिन्दुओं को इस तरह के काम नहीं करने चाहियें जिनसे यह असर पड़े कि उनके दिल में मुसल्मानों की कोई खास क़द्र नहीं है और न वे मुसल्मानों के सहयोग की परवाह करते हैं। मुसल्मानों को अपना जायज़ मक़सद पूरा करने के लिये हिन्दुओं को न किसी तरह के डर दिखाने चाहियें और न धमकियां देनी चाहियें। समस्या की कुंजी एक दूसरे को राजी रखने में है, एक दूसरे को दबाने में नहीं, चाहे अन्त में देश का बटवारा हो या देश एक रहे। रजामन्दी का मतलब यह है कि आइन्दा के लिये जो भी तजवीजें सामने आवें उन्हें हम शान्ति और समझ के साथ दोनों का और सबका फायदा नुकसान देखते हुये उन पर विचार करें।

आइन्दा के लिये असली सवाल देश की केंद्रीय सरकार की बनावट और उसके अधिकारों का है।

इस बारे में मुसलिम लीग का नज़रिया यह मालूम होता है कि केन्द्रीय सरकार की बनावट चाहे कैसी हो, चूंकि सारे देश में मिलाकर हिन्दुओं का बहुमत है इसलिये केन्द्र में हमेशा हिन्दुओं ही का जोर रहेगा और मुसल्मान हमेशा के लिये उनके मातहत रहेंगे। इससे बचने का सिर्फ एक तरीका बटवारा है, यानी हिन्दुस्तान में दो या ज्यादा स्वाधीन राज्य कायम कर दिये जावें। ख्याल यह है कि इस बटवारे से मुसल्मानों की पूरी हिफ़ाजत हो जायगी क्योंकि एक तो उनका एक अलग राज्य होगा जिसमें उन्हें इसलामी आदर्शों के अनुसार सामाजिक, आथिक और राजनैतिक उन्नति करने का पूरा मौका मिलेगा और दूसरे जो मुसलमान बाकी हिन्दुस्तान में रहेंगे उनके लिये मुसीबत के वक्त वहां आजाद मुसलिम-राज पनाह लेने की जगह होगी।

लेकिन थोड़ा सा गौर करने से मालूम होगा कि ये दोनों उम्मीदें गलत हैं। पञ्जाब, सरहद, बलूचिस्तान और सिन्ध को मिला कर मुसलिम इलाका माना जाता है। इस इलाके में इस समय ६२ फी सदी मुसलिम और ३८ फी सदी गैर मुसलिम हैं। यह नामुमकिन है कि मुसलिम बहुमत गैर मुसल्मानों के इतने बड़े अल्पमत के विचारों और आदर्शों की अवहेलना करके उन्हें नाराज करके रह सके। पाकिस्तान की आबादी के ताने बाने में ही 'आपसी समझौता' शब्द बुने हुये दिखाई दे रहे हैं। और न आज कल के जमाने में कोई राज किसी खास मजहब के मजहबी उसूलों के सहारे चलाया जा सकता है। जिन देशों में सौ फीसदी आबादी मुसल्मानों की है उन्होंने भी तजुर्बे से इस बात को अच्छी तरह समझ लिया ह।

ऐसी हालत में दूसरे सूबों के मुसल्मानों के लिये जिसे सबसे बड़ी पनाह की जगह समझा जाता है वह शायद टूटी हुई किश्ती का काम भी न दे सके। इस तरह की पनाहगाहें दोनों तरफ बगावतें, बदअमनी और द्वेष ही पैदा कर सकती हैं। यह शाहराह सीधी खाने जंगियों और बरबादी की तरफ जाती है। ऐसी फिजा में प्रेम और सच्ची हमसायगी का पनप सकना नामुमकिन है।

बटवारे के खिलाफ सबसे बड़ी दलील यह है कि इससे देश की वह आजादी ही खतरे में पड़ जाती है जिसे हिन्दू और मुसल्मान दोनों चाहते हैं। इस कशमकश की दुनिया में हिन्दुस्तान की हैसियत क्या है? सर वाल्टर लेटन के इस कहने में काफी सचाई है कि इस समय हिन्दुस्तान के पास इतना धन और उद्योग धंधों की तरक्की के लिये इतना काफी समान नहीं है कि वह रूस, अमेरिका, ग्रेटब्रिटेन या जर्मनी जैसी ताकत को चुनौती दे सके। अगर हम देश का बटवारा कर डालें तो हमारी यह शक्ति और भी अधिक घट जावेगी। उस सूरत में हमारी बहुत सी शक्ति एक दूसरे से निपटने में ही खर्च होगी और किसी बाहरी खतर का मुकाबला करने में बहुत कम काम आ सकेगी।

पाकिस्तानी इलाके के पास किसी सूरत में भी इतना धन नहीं बच सकता कि उससे वह आजकल के वैज्ञानिक युग में अपनी रक्षा आप कर सके। बटवारे की सूरत में दोनों ओर मिलाकर रक्षा का खर्च बेहद बढ़ जावेगा और निश्चिन्तता और भी कम हो जावेगी। बहुत छोटे राज्य आजकल के जमाने में अपनी आजादी कायम नहीं रख सकते। अतलान्तिक महासागर से लेकर हिन्दुस्तान की सरहद तक बहुत से मुसलिम देश हैं लेकिन शायद एक तुर्की को छोड़कर उनमें से एक भी पूरी तरह आजाद हुकूमत नहीं है। आजादी का पूरा सुख आज कल केवल बड़े बड़े राज ही भोग सकते हैं।

हिन्दुस्तान के भविष्य के लिये यदि कोई आशा हो सकती है तो वह केवल मिलकर रहने में ही है। हिन्दू और मुसल्मान मिलकर ही इस देश को उस लक्ष्य तक पहुँचा सकते हैं जो हजारों बरस से देश के सम्प्रदायों को एकता की तरफ खींच रहा है और उन्हें मिलकर रहने का पाठ पढ़ा रहा है। मानव उन्नति में जो हिस्सा हिन्दुस्तान के लिये बदा है उसे हिन्दू और मुसल्मान मिलकर ही पूरा कर सकते हैं। मिलकर ही वे एक ऐसी हुकूमत कायम करेंगे जो न हिन्दू होगी और न मुसल्मि बल्कि जो हिन्दुस्तानी होगी और जिसके भावी कारनामों के सामने इस देश का चमकता हुआ भूतकाल भी फीका पड़ जावेगा।

एक बार यदि हम इस बुनियादी सचाई को समझलें तो एक एसी योजना तैयार कर लेना, जिससे एक दूसरे पर सन्देह और डर के बादल छट जावें, जिससे सब का आत्म गौरव कायम रह सके और उदार और उच्चतम आदर्शों के अनुसार प्रेम और समआदर की नीवों पर आजाद हिन्दुस्तान की हुकूमत का ढाँचा तैयार हो सके, राजनीतिज्ञों के लिये कोई मुशकिल काम नहीं है।

मदनगंज (किशनगढ़) में आदर्श-बालिका-विद्यालय

मदनगंज (किशनगढ़)। स्थानीय मंडी में कुछ धनीमानी विद्याप्रेमी सज्जनों के शुभ प्रयत्न से उक्त संस्था की स्थापना होगई है। इसका उद्घाटन ता. २४ सितम्बर सन १९४४ ई० रविवारको श्रीमान दीवान बहादुर ला० लखपतरायजी सिकन्द, बार. एट. ला., पी. एच. डी. चीफ मेम्बर किशनगढ़ स्टेट के कर कमलों से होगा। बाहर से भी नेता गण पधारेंगे। बड़े हर्ष का विषय है कि धनीमानी सज्जनों ने विद्याप्रेम का परिचय दिया। आशा है। भविष्य में भी इसी उत्साह से सहयोग देते रहेंगे।

—**मनोहरलाल बाहेती**
मंत्री ए. बी. विद्यालय

हमारी जातीय पञ्चायतें

(पृष्ठ ४ का शेष)

अतः न्यायानुसार जो व्यक्ति या संस्था के साथ वात्सल्यपूर्ण व्यवहारों को नहीं सकती, अपने आश्रितों एवं अनुयायि लिए उनके कष्ट निवारणार्थ अपने सर्वस्व हंसते हंसते बलिदान नहीं कर सकती, व्यक्तियों या संस्थाओं को दण्ड देने या नियंत्रण स्थापित करने का कोई अधिका हो सकता। अतः जब तक जातीय पं अपने पवित्र उद्देश्यों को भली प्रकार हृद करके अपने कर्तव्य पालन में तत्पर न जायं, उनके द्वारा किसी भी बन्धुको दण्ड का विचार किसी भी प्रकार न्याय या संगत नहीं कहा जा सकता।

अन्तमें हम पंचायतों के कर्णधारों से प्र करते हैं कि आप समाज के शासक बनने क्रूर लालसा छोड़कर समाजकी सेवा करने व्रत धारण कीजिये। यदि आपके त्याग बलिदानों में कुछ भी सचाई होगी तो स अपने आप आपकी आज्ञाओं को सहर्ष शि धार्य करलेगा। उस समय आपको अपनी आ मनवाने के लिए चोखले (प्रांत) की पंच एकत्र करने का कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। अ है आप अपने कर्तव्यों पर गंभीरता पूर्वक वि करके ही कोई निर्णय करेंगे।

[पृष्ठ ५ का शेष]

बनाने में कुछ उठा नहीं रखा। पुस्तक दूसरा पाठ [नागरिक जीवन] और दो प शिष्ट [मेरा गांव, और नागरिकता कसौटी] नये बढ़ाये गये रेल तार और डाक के पाठों में इन विषयों ऐसे नियमों का भी समावेश कर दिया गया जिनसे नागरिकों को प्रायः प्रतिदिन पड़ता है। अन्य पाठों में भी आवश्यक सं धन किया गया है। इस संस्करण की सामग्री छोटे टाइप में दी गयी है और संस्करण के अंतिम दो पाठ (ग्राम और न प्रबंध तथा हमारे देश का राज्य प्रबंध) लि दिये गये हैं। नागरिक शिक्षा हमारे रा जीवनके लिए अनिवार्य और महत्वपूर्ण है हुए भी अवतक इसकी उपेक्षा की गयी है नागरिकता के भावों से वंचित रहने से ह देशके नवयुवकों में सामाजिक चेतना विक नहीं हो पायी और उन्होंने समाजके प्रति अ कर्तव्यों का पालन करने में अवहेलना की है नागरिक विषयका अध्ययन नवयुवक के भा हितके लिये तो आवश्यक है ही, विद्यालय के प्रबन्ध तथा उसकी कठिनाइ का ज्ञान होने के लिए भी अपरिहार्य है इसके अध्ययनसे व्यक्तियोंकी सामाजिक नैतिक चेतना का विकास होता है और सब शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य है। श्री केला प्रस्तुत पुस्तक में इस विषयका ऐसे ढंग से वर्णन किया है कि वह औसत विद्यार्थियों की समझ में आसानी से आ जा इस उपयोगी पुस्तक का तीसरा संस्करण नि लने पर हम केलाजीको धन्यवाद देते हैं।

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India
Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

9-2 Not in the Book

—वावेल पत्रव्यवहार

गान्धीजी के सभी सुझाव नामञ्जूर

अल्प संख्यकों के हितोंकी रक्षाका बहाना

'जनता को सशक्त बन खुद सत्ता छीननी होगी'

—गान्धीजी

ी दिल्ली, १७ अगस्त। एक सरकारी ट में कहा गया है कि हाल में ही गांधीजी इसराय लौर्ड वावेल के बीच निम्न पत्र ार हुआ है:—

वाइसराय को गांधीजी का पत्र

'दिलखुश'
पंचगनी,
१५ जुलाई १९४४

मित्र,

निस्सन्देह आपने 'न्यूज क्रानिकल' के निधि मि० गेल्डर को दिये गये मेरे वक्त- की अधिकृत प्रतिलिपि को देखा होगा, जो ीय समाचारपत्रों में प्रकाशित हो चुकी है। समाचारपत्रों के प्रतिनिधियों को बताया है वे वक्तव्य प्रारम्भिक रूपसे आपको दिखला- लिए ही थे। मि० गोल्डर ने निस्सन्देह ावना के कारण मुलाकत को समय से पूर्व ही शित करवा दिया। मुझे इसका खेद है। भी वक्तव्यों का प्रकाशन, एक तरहसे, तौरपर [illegible]शीर्वाद स्वरूप होगा, यदि आप १७ [illegible] के पत्र में की गयी

आ[illegible] भारत में पाकिस्तान[illegible]। सब से [illegible]क चर्चा है। जब से महात्मा गांधीजी ने इस प्रश्न पर मि० जिन्ना से समझौता या वातर्चात करने की अपनी इच्छा तथा सहमति प्रगट की है तब से तो यह प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो गया है। गान्धी–राजगोपालाचारी सूत्र द्वारा पाकिस्तान के सिद्धान्त को मान लेने पर आज भारत के घरघर में बस पाकिस्तान की ही चर्चा सब के जुबान पर है, और दिल व दिमाग में है।

भारत के भविष्य के सम्बन्ध में विचार करनेके बाद हम लोग स्वभावतः राजनैतिक और सामाजिक दृष्टि से और प्रायः व्यर्थ के पक्षपात से पूर्ण हो जाते हैं। फिर भी भारत के सम्बन्ध में कुछ आधारभूत आर्थिक सचाइयाँ हैं जिन से हम इन्कार नहीं कर सकते हैं, और जिनका भारत के भविष्य से बहुत गहरा सम्बन्ध है? इन के विषयमें मतभेद होने की गुञ्जायश बहुत ही कम है, और इन्हीं पर हमें अधिक ध्यानपूर्वक विचार करने की भी आवश्यकता है। इन्हीं में से एक विषय है भारत की खनिज-पदार्थों की निधि। निःसन्देह आजके औद्योगिक जगत् में किसी भी राष्ट्र की समृद्धि तथा शक्ति के लिये उसके पास खनिज पदार्थों का बाहुल्य होना परमावश्यक है। धार्मिक मतभेद को लेकर के भारतीय राष्ट्र को दो भौगोलिक हिस्सों में बाँटने से पहिले हमें भारत की खनिज सम्पत्ति को ध्यान में रखना होगा।

मि. जिन्ना की माँग के अनुसार भारतको 'पाकिस्तान, और हिन्दुस्तान,' नामक दो भागों में बांट दिया जाना चाहिये। पाकिस्तान में निम्न प्रान्त या प्रदेश सम्मिलित किये जाते हैं:—

बलूचिस्तान, बंगाल, उत्तर पश्चिमीय सीमा प्रान्त, पञ्जाब, सिन्ध, काश्मीर स्टेट, और आसाम।

घोषणा कर दे कि अगस्त १९४२ के प्रस्ताव के अनुसार सार्वजनिक भद्र अवज्ञा आन्दोलन करने का जो विचार प्रकट किया गया था, वह बदली हुई परिस्थिति के कारण कार्यान्वित नहीं होगा और कांग्रेस युद्धोद्योग में पूर्ण सहयोग देगी। यदि ब्रिटिश सरकार की समझौता करनेकी इच्छा है तो पत्र-व्यवहार के स्थानपर मित्रतापूर्ण वार्तालाप होना चाहिए। परन्तु मैं आप के हाथ में हूं। मैं तबतक दरवाजा खटखटाता रहूंगा, जबतक कि सम्माननीय समझौते की जरा भी आशा है।

उपर्युक्त अंश लिखने के बाद मैंने लार्ड मुंस्टर द्वारा लार्ड्स सभामें दिये गये भाषणको देखा है। उन्होंने जो संक्षेप में कहा है, वह मेरे सुझावका अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व करता है। यही संक्षिप्त अंश पारस्परिक और मित्रतापूर्ण विचारविनिमय के लिए आधारका काम दे[illegible]ता है।

(ब) युद्धकाल में परिवर्तन करना असम्भव है, जिसका अर्थ ही 'राष्ट्रीय सरकार' होता है और जैसा कि आप सुझाव पेश करते हैं कि उसे केन्द्रीय असेम्बली के सम्मुख जिम्मेदार बना देना चाहिए।

इन शर्तों का उद्देश्य केवल जातीय और धार्मिक अल्पसंख्यकों और अछूतों के हितोंकी रक्षा करने के कर्त्तव्य की पूर्ति करना तथा देशी राज्यों से हुई सन्धियों का आदर करना ही है।

(४) इन्हीं शर्तों पर सम्राटकी सरकारने वर्तमान विधान के अंतर्गत कामचलाऊ सरकारकी स्थापनामें भारतीय नेताओंको भाग लेनेके लिए निमंत्रित किया था। मैं इसे स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि जबतक युद्धका अन्त नहीं हो जाता, रक्षा और फौजी कार्यवाहियों की जिम्मेदारी सरकार की जिम्मेदारियों से अलग और विभाजित नहीं की जा सकती; और जबतक लड़ाई खतम नहीं हो जाती तथा नया विधान [illegible] कोई कारण नहीं देखता कि उस विधान के सम्बन्ध में आरम्भिक कार्यवाही उतनी ही जल्दी, शुरू न कर दी जाय जितनी जल्दी कि भारतीय नेता उस सम्बन्ध में सहयोग करने को तैयार हो जाते हैं। यदि वे विधान-रचनाके सम्बन्ध में समुचित समझौतेपर पहुंच जाते हैं तो युद्ध के बाद अन्तिम परिणामपर पहुंचने और संधिसम्बन्धी व्यवस्था करने के लिए अनावश्यक समय नष्ट करने की जरूरत नहीं है। इसकी आरम्भिक जिम्मेदारी भी भारतीय नेताओंपर ही है।

आपका शुभचिन्तक
वावेल

सरकार सत्ता छोड़ना नहीं चाहती

सेवाग्राम १८ अगस्त।

वायसराय के उत्तर के सम्बन्ध में म. गांधीजी ने प्रेस प्रतिनिधिको निम्न आशय का वक्तव्य दिया है:—

प्रकाशित पत्रव्यवहार से स्पष्ट हो जाता है कि मैंने वायसराय की मांगोंको पूरा करने में कुछ भी उठा न रखा था। सरकारी उत्तर इस बात का निश्चित प्रमाण है कि ब्रिटिश सरकार भारतीय जनता का सहयोग और उ[illegible]करने की इच्छा नहीं रखती।

● ले०—चार्ल्स एच. जाहर बर ●

युद्ध के बाद संसार के व्यापार तथा उद्योगों में भारत के खनिज पदार्थों का बहुत अधिक महत्वपूर्ण भाग रहेगा। आधुनिक संसार में औद्योगिक शक्ति के लिये किसी भी देश के पास कोयला, लोहा और तेल इन तीनों का होना अनिवार्य है।

कोयला

सब खनिज पदार्थों में भारत में कोयला सबसे प्रथम आता है। उत्तम, मध्यम श्रेणी, और लकड़ी तथा अन्य तत्वों से बना कोयला भारत में मिलता है। यह आम तौरपर सभी रियासतों में पाया जाता है, और लगभग ९८ प्रतिशत [illegible] विचार करें तो हम देखेंगे कि उत्तम श्रेणी के कोयले के बड़े-क्षेत्र गंगा के पश्चिमी मोड़पर एक कमान के रूप में फैले हुए हैं, (जहां गंगा बिहार और बंगाल की सीमाओं के मध्य से गुजरती है) और कुछ मध्यप्रान्त के पश्चिम किनारे के दक्षिणी भाग की ओर फैलकर एकदम ही मद्रास प्रेसीडेन्सी में गोदावरी नदी के दक्षिण पूर्वीय मुहाने की ओर छितरा गये हैं। पूर्व के दो प्रान्त बिहार और उड़ीसा हैं। ये दोनों ही हिन्दू प्रधान प्रान्त हैं। यहां १९३१ में हिन्दू ३ करोड़ १० लाख थे और मुसलमान केवल ४० लाख थे। धार्मिक आधारपर भारतको दो भागोंमें विभक्त करने पर बिहार और उड़ीसा हिन्दुस्तान के ही हिस्से आयेंगे। भारत के खनिजपदार्थों का सर्वोत्तम और सर्वाधिक स्रोत इन्हीं दोनों प्रान्तों में ही है। भारतके वर्तमान और भविष्य के औद्योगिक विकास में इन दोनों प्रान्तों को जो स्थान तथा महत्व है उसपर दो सम्मतियाँ नहीं हो सकती है। यह ध्यान में रखना चाहिये कि दोनों प्रान्त बंगाल की पाकिस्तान स्टेट के साथ साथ फैले हुए हैं; और बिहार तो एकदम बंगाल और पाकिस्तान की उत्तर पश्चिम की पांच मुस्लिम स्टेट्स के बीच में पड़ जाता है।

मध्यभारत में भी अनेक कोयले की खानें हैं, इनमें जोहिया के क्षेत्र सम्भवतः सबसे बड़े और कीमती हैं। इन क्षेत्रों में १०० मिलियन टनके लगभग उत्तमश्रेणीका कोयला निहित है, ऐसा तखमीना लगाया गया है। वर्धा घाटी के कोयले के क्षेत्र मध्य प्रान्त में

(शेष पृष्ठ २ पर)

कोयले के प्रदेश
आसाम क्षेत्र
सी. पी. क्षेत्र
वर्धा गोडवन क्षेत्र
उ० बिहार क्षेत्र
रानीगंज क्षेत्र
कर्णपुरा क्षेत्र
झरिया क्षेत्र
बोकारो क्षेत्र
बीकानेर क्षेत्र
जम्मू क्षेत्र
मियांवाली क्षेत्र
क्वेटा क्षेत्र
डान्डो क्षेत्र

पेट्रोलियम के प्रदेश
डिग्बोई
बदरपुर
खौड़
धुलियां–झरट

लोहे के प्रदेश
मैसूर
चाँदा
सिंहभूम–केवन्झार

मैंगनीज की कच्ची धात के प्रदेश
नागपुर
गढ़ा
विजगापटम
गोआ
बिहार

क्रोमियम कच्ची धात के प्रदेश
मैसूर
नंजनगुड

सोने के प्रदेश
कोलार (मैसूर)

बौकसाईट के प्रदेश
जम्मू
कटनी
बालाघाट
भामूनी
लोहरदगा
कोल्हापुर
बेलगाम

ताम्बे के प्रदेश
सिंहभूम

मैगनेसाईट प्रदेश
सलीम
मैसूर

अभ्रक प्रदेश
चम्पारन
नैलोर

हिन्दू-मुसलिम समस्या और मुल्क की आज़ादी

[पृष्ठ १ का शेष]

की बात या किसी और ऊंची बात की सोचें। इन दोनों के बीच में थोड़े से बीच की श्रेणी के लोग हैं। जाहिर है कि राष्ट्रीय आन्दोलन के नेता इन्हीं में से निकल सकते हैं। इनमें कुछ पढ़े लिखे हैं और कुछ व्यापारी। पढ़े लिखे लोगों को अपनी रोजी के लिये अधिकतर सरकार ही का मुंह ताकना पड़ता है। इस लिये वे अधिकतर सरकार ही के असर में रहते हैं। उनकी जरूरतें इतनी अजीब हैं कि इन में आपस में काफी प्रतिस्पर्धा और एक दूसरे से डाह बनी रहती है। व्यक्तियों की प्रतिस्पर्धा और महत्वाकांक्षा बड़ी आसानी से जगह जगह साम्प्रदायिक वैमनस्य का रूप ले लेती है। व्यापारी लोगों की आमदनी भी एक बहुत बड़े दरजे तक सरकार की खुशनूदी पर निर्भर है। हिन्दुस्तान की राजनैतिक समस्या पर विचार करते समय हमें इस देश की इस सामाजिक हालत को ध्यान में रखना चाहिये।

महत्वाकांक्षा, प्रतिस्पर्धा और ईर्षा की अंधियारी में एक दूसरे से डर बढ़ते जाते हैं। इस डर के भूत को उतारने के लिये मिठास और समझदारी की बातचीत, सब के भले की इच्छा, धीरज, उदारता और प्रेम की रोशनी की जरूरत है। हिन्दुओं का यह फर्ज है कि मसलमानों के इस डर को उनके [illegible] के इरादे

की बिल्कुल पोल खोल दी और साथ ही दुनिया के सामने अपनी और कांग्रेस की स्थिति स्पष्ट कर दी। अब भी यदि किसी को उभय पक्षों के इरादों के विषय में सन्देह हो, तो सिवाय पक्षपात के इसका और कोई कारण नहीं हो सकता। महात्मा गांधी ने १५ जुलाई को लार्ड वावेल से पत्र व्यवहार आरंभ किया और उनका ध्यान गेल्डर को दिये गये अपने वक्तव्य की ओर आकृष्ट किया। लार्ड वावेल ने २२ जुलाई को गांधीजी को उत्तर दिया, गांधीजी ने फिर उन्हें २७ जुलाई को पत्र लिखा। लार्ड वावेल को १७ अगस्त तक उत्तर देने का अवसर नहीं मिला। उस दिन एक तरफ गांधीजी को उनका उत्तर मिलता है, दूसरी तरफ गांधी-जिन्ना मिलन के एक दिन पहले अर्थात १८ अगस्त को पत्रों में प्रकाशित कराने के लिए गांधीजी से परामर्श किये बिना उसे एसोसियेटेड प्रेस के हवाले कर दिया जाता है! गांधीजी ने गतिरोध दूर करने के लिए वायसराय के सामने सुझाव पेश करते हुए कहा कि ब्रिटिश सरकार भारतीय स्वाधीनता की अविलम्ब घोषणा करे, केन्द्रीय धारा सभा के प्रति उत्तरदायी एक राष्ट्रीय सरकार स्थापित करे और बिना भारत के आर्थिक उत्तरदायित्व के यहां युद्ध संचालन किया जाय। इसके एवज में उन्होंने अगस्त प्रस्ताव रद्द करने के लिए कांग्रेस वर्किंग कमेटी को सलाह देने और युद्ध प्रयास में पूर्ण सहयोग करने का वचन दिया। और इस सिलसिले में कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्यों से परामर्श करने की सुविधा चाही एवं इसे प्रदान करने में आपत्ति होने पर वायसराय से ही मिलने की इच्छा प्रकट की

साथ दोनों का और सबका फायदा नुकसान देखते हुये उन पर विचार करें।

आइन्दा के लिये असली सवाल देश की केंद्रीय सरकार की बनावट और उसके अधिकारों का है।

इस बारे में मुसलिम लीग का नज़रिया यह मालूम होता है कि केन्द्रीय सरकार की बनावट चाहे कैसी हो, चूंकि सारे देश में मिलाकर हिन्दुओं का बहुमत है इसलिये केन्द्र में हमेशा हिन्दुओं ही का जोर रहेगा और मुसल्मान हमेशा के लिये उनके मातहत रहेंगे। इससे बचने का सिर्फ एक तरीका बटवारा है, यानी हिन्दुस्तान में दो या ज्यादा स्वाधीन राज्य कायम कर दिये जावें। ख्याल यह है कि इस बटवारे से मुसल्मानों की पूरी हिफाजत हो जायगी क्योंकि एक तो उनका एक अलग राज्य होगा जिसमें उन्हें इसलामी आदर्शों के अनुसार सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक उन्नति करने का पूरा मौका मिलेगा और दूसरे जो मुसलमान बाकी हिन्दुस्तान में रहेंगे उनके लिये मुसीबत के वक्त वहां आजाद मुसलिम-राज पनाह लेने की जगह होगी।

लेकिन थोड़ा सा गौर करने से मालूम होगा कि ये दोनों उम्मीदें गलत हैं। पञ्जाब, सरहद, बलूचिस्तान और सिन्ध को मिला कर मुसलिम इलाका माना जाता है। इस इलाके में इस समय ६२ फी सदी मुसलिम और ३८ फी सदी गैर मुसलिम हैं। यह नामुमकिन है कि मुसलिम बहुमत गैर मुसलमानों के इतने

एक तरफ इम्पीरियल प्रिफरेन्स का कायम रहना और दूसरी तरफ भारत की आर्थिक उन्नति का बीड़ा उठाना कितना असंगतिपूर्ण व्यापार है!

लार्ड वावेल ने जो कुछ कहा है वह ब्रिटिश सरकार के विचार और इरादे की प्रतिध्वनि मात्र है। इसमें विजेता सुलभ दर्प, अहंमन्यता और सत्ताका मद मुखरित है। भारत ने स्वतंत्रता के लिए छटपटाहट दिखाई और अधीर स्वर से गुहार मचायी। सरकार ने पशुबल का प्रयोग कर छटपटाहट और गुहार की गति बंद कर दी और अब अपनी सफलता पर फूल कर कुप्पा है एवं भारत के राजनीतिक गतिरोध को कायम देखने में ही अपनी शान देखती है। मानव जाति के इतिहास में ऐसा एक भी उदाहरण नहीं मिलता जब कि पशुबल द्वारा किसी देशकी गुलामी से मुक्त होने की आकांक्षा और उमंग को हमेशा के लिये मिटा दिया गया हो। दमन हमेशा असन्तोष की आग को प्रच्छन्नरूप से सुलगाता रहता है और उसे अपना असली रूप दिखाने के लिए अपने आप मौका देता है। हम मानते हैं कि भारत को अब अधिक समय तक गुलाम बना रखना ब्रिटिश सरकार के बूते के बाहर की बात है। भारत स्वाधीन होगा और होगा समय चाहे जो लगे। सत्ता भीख मांगने से नहीं मिला करती वह तो अपने बल से ली जाती है। महात्मा गांधीने इस पत्र व्यवहार पर अपना वक्तव्य देते हुए ठीक ही कहा है कि "गवर्नमेण्ट तबतक हमें सत्ता न देगी जबतक कि हम नैतिक उपायों द्वारा छीन लेने के लिए काफी शक्तिशाली न बन जायंगे। यदि जिन्ना के साथ समझौता करने में मैं सफल हो जाऊं, तो सरकार को

हमारी बहुत सी शक्ति एक दूसरे से निपटने में ही खर्च होगी और किसी बाहरी खतर का मुकाबला करने में बहुत कम काम आ सकेगी।

पाकिस्तानी इलाके के पास किसी सूरत में भी इतना धन नहीं बच सकता कि उससे वह आजकल के वैज्ञानिक युग में अपनी रक्षा आप कर सके। बटवारे की सूरत में दोनों ओर मिलाकर रक्षा का खर्च बेहद बढ़ जावेगा और निश्चिन्तता और भी कम हो जावेगी। बहुत छोटे राज्य आजकल के जमाने में अपनी आजादी कायम नहीं रख सकते। अतलान्तिक महासागर से लेकर हिन्दुस्तान की सरहद तक बहुत से मुसलिम देश हैं लेकिन शायद एक तुर्की को छोड़कर उनमें से एक भी पूरी तरह आजाद हुकूमत नहीं है। आजादी का पूरा सुख आज कल केवल बड़े बड़े राज ही भोग सकते हैं।

हिन्दुस्तान के भविष्य के लिये यदि कोई आशा हो सकती है तो वह केवल मिलकर रहने में ही है। हिन्दू और मुसलमान मिलकर ही इस देश को उस लक्ष्य तक पहुँचा सकते हैं जो हजारों बरस से देश के सम्प्रदायों को एकता की तरफ खींच रहा है और उन्हें मिलकर रहने का पाठ पढ़ा रहा है। मानव उन्नति में जो हिस्सा हिन्दुस्तान के लिये बदा है उसे हिन्दू और मुसलमान मिलकर ही पूरा कर सकते हैं। मिलकर ही वे एक ऐसी हुकूमत कायम करेंगे जो न हिन्दू होगी और न मुसलिम बल्कि जो हिन्दुस्तानी होगी।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें। वे माहेश्वरी समाज के उत्साही कार्यकर्त्ता थे और सदा परोपकार में रत रहते थे। उन के निधन से माहेश्वरी समाज के सार्वजनिक जीवन को हानि पहुंची है। उनका सच्चा स्मारक यही है कि हमारे नव युवकों में उन के समान त्याग पूर्वक सेवा करने वाले व्यक्ति अधिक संख्या में उत्पन्न हों।" चांदकरण शारदा

मुस्लिम लीग प्रस्तावित पाकिस्तान

(पृष्ठ १ का शेष)

सबसे अधिक विस्तार में फैले हुए क्षेत्रोंमें से हैं। इनमें १५ अरब टनके करीब उत्तम श्रेणीका कोयला होनेका अनुमान किया गया है।

सन् १९१५ और १९३४ के बीच हिसाब लगाने पर पता चला था कि भारत में उत्तम व्यापार के योग्य कोयल केवल १०१५० मिलियन था। कोयले के ये खदान मुख्यतः निम्नस्थानों में हैं:-कर्णपुरा के क्षेत्र (पूर्वीय बिहार), रानीगंज के क्षेत्र (मुख्यतः दक्षिणपश्चिमी बंगाल में परन्तु पूर्वी बिहार में भी फैले हुए), झरिया के क्षेत्र (बिहार), और बोकारो के क्षेत्र (बिहार)। इस के सिवा उक्त क्षेत्रों से भी परे गोदावरी घाटी के विशाल कोयले के क्षेत्र हैं जो कि हैद्राबाद के बीच से प्रारंभ होकर मद्रास में से होते कोकनाडा के समुद्र तक चले गये हैं। यहाँ सर्वोत्तम कोयला ६४०० मिलियन टन होने का अनुमान। है उक्त दोनों स्थानों के कोयले के खदान आसानी के साथ कई सदितक बने रहेंगे।

हमारी जातीय पञ्चायतें

(पृष्ठ ४ का शेष)

अतः न्यायानुसार जो व्यक्ति या संस्था कि के साथ वात्सल्यपूर्ण व्यवहारों को नहीं नि सकती, अपने आश्रितों एवं अनुयायियों लिए उनके कष्ट निवारणार्थ अपने सर्वस्व हंसते हंसते बलिदान नहीं कर सकती, व्यक्तियों या संस्थाओं को दण्ड देने या क नियंत्रण स्थापित करने का कोई अधिकार हो सकता। अतः जब तक जातीय पंचा अपने पवित्र उद्देश्यों को भली प्रकार हृदयङ्ग करके अपने कर्तव्य पालन में तत्पर न जायं, उनके द्वारा किसी भी बन्धुको दण्ड का विचार किसी भी प्रकार न्याय या संगत नहीं कहा जा सकता।

अन्तमें हम पंचायतों के कर्णधारों से प्रार्थ करते हैं कि आप समाज के शासक बनने क्रूर लालसा छोड़कर समाजकी सेवा करने व्रत धारण कीजिये। यदि आपके त्याग बलिदानों में कुछ भी सचाई होगी तो सम अपने आप आपकी आज्ञाओं को सहर्ष शि धार्य करलेगा। उस समय आपको अपनी आ मनवाने के लिए चोखले (प्रांत) की पंचा एकत्र करने का कष्ट नहीं उठाना पड़ेगा। आ है आप अपने कर्तव्यों पर गंभीरता पूर्वक वि करके ही कोई निर्णय करेंगे

ट्रोलियम की पैदावार द है। औद्योगिक विकास तथा शक्ति किसी देश के पास पैट्रोल के कुएँ होना आवश्यक है। यद्यपि इधर कुछ सालों भारतमें पैट्रोल की पैदावारमें पहिले की वृद्धि हुई है जो कि आजकल प्रतिवर्ष २७ मिलियन गैलन के लगभग हो रही है, पर भी यह भारत जैसे विशाल जनसंख्या विस्तृत भूखण्ड के देश को देखते हुए ही मामूली है;—उसकी इस पैदावार से भारतकी अपनी घरेलू आवश्यकताएँ भी पूरी हो सकतीं। वास्तव में, भारत जितना कर रहा है उतना तो यहाँ विदेश से क्रूड और किरोसीन प्रतिवर्ष आ जाता है कुछ अचम्भा नहीं कि लगाकर मेहनत-खोजकर यदि भारतकी भूमिमें उन्हीं साधनों तथा आदि को बरता जाये जो कि अमेरिका काकेशस में बरते जाते हैं, तो भारतमें विशाल परिमाण में उत्तम श्रेणीका पैट्रोलि पैदा होने लगे और उससे भारतकी जरूरि कुछकाल के लिये पूरी पड़ जायें। फिर पैट्रोलियम के विषय में भारतका सुदूर भवि बहुत चमकीला नहीं दीख पड़ता। संसार पैट्रोलियम की कुल पैदावार का १ सैकड़ा भारतसे प्रतिवर्ष पैदा होता है और इसमें भी ¾ हिस्सा बर्मा से आता रहा है।

भारत के मुख्य तेल क्षेत्र प्रधानतः स्थानों में हैं। आसाम में जो तेलके क्षेत्र हैं एक विस्तृत कमान के रूपमें दक्षिण की को मुड़कर पूर्वी बंगाल में फैल हुए हैं। तैल क्षेत्र बर्मा के इनांजौंव के मशहूर तेल कुओं और बर्माके अन्य तैल क्षेत्र के बले के हैं। इनमे भी नाम लेने तो केवल डिग्बोई और बदरपुर के ही बदरपुर में किसी वक्त अच्छे परिणाम में

(शेष पृष्ठ ८ पर)

9-2 Not in the Book

गान्धी–वावेल पत्रव्यवहार

गान्धीजी के सभी सुझाव नामञ्जूर

अल्प संख्यकों के हितोंकी रक्षाका वहाना

'जनता को सशक्त बन खुद सत्ता छीननी होगी'

—गान्धीजी

नयी दिल्ली, १७ अगस्त। एक सरकारी प्रेस-नोट में कहा गया है कि हाल में ही गांधीजी और वाइसराय लौर्ड वावेल के बीच निम्न पत्र व्यवहार हुआ है:—

वाइसराय को गांधीजी का पत्र

'दिल्खुश'
पंचगनी,
१५ जुलाई १९४४

प्रिय मित्र,

निस्सन्देह आपने 'न्यूज क्रानिकल' के प्रतिनिधि मि० गेल्डर को दिये गये मेरे वक्तव्योंकी अधिकृत प्रतिलिपि को देखा होगा, जो भारतीय समाचारपत्रों में प्रकाशित हो चुकी है। मैंने समाचारपत्रों के प्रतिनिधियों को बताया है कि वे वक्तव्य प्रारम्भिक रूपसे आपको दिखलानेके लिए ही थे। मि० गोल्डर ने निस्सन्देह सद्भावना के कारण मुलाकत को समय से पूर्व ही प्रकाशित करवा दिया। मुझे इसका खेद है। फिर भी वक्तव्यों का प्रकाशन, एक तरहसे, छिपे तौरपर आशीर्वाद स्वरूप होगा, यदि आप मेरे १७ जून १९४४ के पत्र में की गयी प्रार्थना में से एकको भी मंजूर कर सकेंगे।

आपका
(हस्ताक्षर) कें० एम्० गांधी

वाइसराय का उत्तर

नयी दिल्ली,
२२ जुलाई १९४४

प्रिय मि. गांधी,

आपके १५ जुलाई के पत्र के लिय धन्यवाद। आपने मि. गेल्डर के सम्मुख जो वक्तव्य दिये हैं और वादमें उनका जो स्पष्टीकरण किया है, उसे मैंने देखा है। मैं नहीं समझता कि इस समय मैं उनपर उपयोगिता के साथ आलोचना कर सकता हूं। मैं केवल वही दुहरा सकता हूं, जो मैंने अपने अन्तिम पत्र में कहा था कि यदि आप मेरे सम्मुख प्रत्यक्ष और रचनात्मक नीति प्रस्तुत करेंगे, तो मैं उसपर विचार करूंगा।

आपका शुभचिन्तक
(हस्ताक्षर) वावेल

गांधीजीका ठोस सुझाव

कैम्प, पंचगनी
२७ जुलाई १९४४

प्रिय मित्र,

आपके २२ अगस्त के पत्र से मुझे निराशा हुई, यह मैं अवश्य मंजूर करूंगा; किन्तु मैं निराशा के सम्मुख भी कार्य करने का अभ्यस्त हो गया हूं। मेरा ठोस सुझाव यह है:—

यदि तुरन्त ही भारत की स्वाधीनता की घोषणा कर दी जाती है और केन्द्रीय असेम्बली के सम्मुख जिम्मेदार राष्ट्रीय सरकार इस शर्त पर स्थापित की जाती है कि युद्धकाल में फौजी कार्यवाहियां जैसी अभी हैं, जारी रहेंगी; किन्तु भारतपर किसी तरहका आर्थिक भार न पड़ेगा—तो मैं कांग्रेस कार्य-समिति को यह सलाह देने के लिए तैयार हूं कि वह यह घोषणा कर दे कि अगस्त १९४२ के प्रस्ताव के अनुसार सार्वजनिक भद्र अवज्ञा आन्दोलन करने का जो विचार प्रकट किया गया था, वह वदली हुई परिस्थिति के कारण कार्यान्वित नहीं होगा और कांग्रेस युद्धोद्योग में पूर्ण सहयोग देगी। यदि ब्रिटिश सरकार की समझौता करनेकी इच्छा है तो पत्र-व्यवहार के स्थानपर मित्रतापूर्ण वार्तालाप होना चाहिए। परन्तु मैं आप के हाथ में हूं। मैं तवतक दरवाजा खटखटाता रहूंगा, जबतक कि सम्माननीय समझौते की जरा भी आशा है।

उपर्युक्त अंश लिखने के वाद मैंने लार्ड मुंस्टर द्वारा लार्ड्स सभामें दिये गये भाषणको देखा है। उन्होंने जो संक्षेप में कहा है, वह मेरे सुझावका अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व करता है। यही संक्षिप्त अंश पारस्परिक और मित्रतापूर्ण विचारविनिमय के लिए आधारका काम दे सकता है।

आपका शुभचिंतक
(ह०) एम० के० गांधी

वाइसराय का कोरा जवाब

नयी दिल्ली
१५ अगस्त १९४४

प्रिय मि० गांधी,

आपके २७ जुलाई के पत्र के लिए धन्यवाद। (इसके वाद पत्रमें गांधीजी के सुझावको दुहराया गया है):—

(२) सम्राटकी सरकार इस वात के लिए अत्यधिक चिन्तित रही है और है कि भारतीय समस्या का समाधान हो जाय। परन्तु आपने जो सुझाव पेश किये हैं, वे सम्राट की सरकार के लिये विचारविनिमय का आधार मानने लायक नहीं है और यदि आपने गत २८ जुलाई को कामन्स सभा में मि० एमरी का दिया हुआ वयान पढ़ा है, तो आप इसे समझ सकते हैं। ये सुझाव उसी तरह के हैं, जैसे अप्रैल १९४२ में मौलाना अबुलकलाम आजाद ने सर स्टैफर्ड क्रिप्स के सम्मुख पेश किये थे और सरकार के उन्हें नामंजूर करने के कारण भी वही हैं, जो पहले थे।

(३) उन सब कारणों को विस्तार में दुहराये विना मैं आपको याद दिलाऊंगा कि सम्राट की सरकार ने उस समय यह स्पष्ट कर दिया था:—

(अ) युद्ध समाप्त होनेपर निर्धारित न की गयी स्वाधीनता की 'ऑफर' की यह शर्त होगी कि भारत के राष्ट्रीय जीवन के मुख्य हित भावी विधान की रचनापर एकमत हो जायें और सम्राट की सरकार से सन्धि-सम्बन्धी आवश्यक व्यवस्था करने का वार्तालाप कर लें।

(ब) युद्धकाल में परिवर्तन करना असम्भव है, जिसका अर्थ ही 'राष्ट्रीय सरकार' होता है और जैसा कि आप सुझाव पेश करते हैं कि उसे केन्द्रीय असेम्बली के सम्मुख जिम्मेदार बना देना चाहिए।

इन शर्तों का उद्देश्य केवल जातीय और धार्मिक अल्पसंख्यकों और अछूतों के हितोंकी रक्षा करने के कर्तव्य की पूर्ति करना तथा देशी राज्यों से हुई सन्धियों का आदर करना ही है।

(४) इन्हीं शर्तों पर सम्राटकी सरकारने वर्तमान विधान के अंतर्गत कामचलाऊ सरकारकी स्थापनामें भारतीय नेताओंको भाग लेनेके लिए निमंत्रित किया था। मैं इसे स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि जबतक युद्धका अन्त नहीं हो जाता, रक्षा और फौजी कार्यवाहियों की जिम्मेदारी सरकार की जिम्मेदारियों से अलग और विभाजित नहीं की जा सकती; और जबतक लड़ाई खत्म नहीं हो जाती तथा नया विधान कार्यान्वित नहीं हो जाता तबतक सम्राट की सरकार और गवर्नर जनरल की सम्पूर्ण क्षेत्रपर पूरी जिम्मेदारी रहेगी। जहांतक लड़ाई के व्यय और तत्सम्बन्धी भारत के अंश का सवाल है, यह सम्राट की सरकार और भारत-सरकार के बीचका अनिवार्य प्रश्न है और वर्तमान आर्थिक व्यवस्थाका वार्तालाप दोनोंमें से किसी भी ओर से शुरुआत करनेपर ही फिर से आरम्भ हो सकता है!

(५) ऐसी हालत में, यह स्पष्ट है कि जैसा कि आप सुझाव पेश करते हैं, उसके आधार पर विचार-विनिमय करने से कोई उद्देश्य सिद्ध नहीं होगा। यदि हिन्दू मुसलमान और अन्य महत्वपूर्ण अल्पसंख्यकों के नेता वर्तमान विधान के अनुसार व्यवस्थित कामचलाऊ सरकार में सहयोग देनेके लिए तैयार हों, तो मेरा विश्वास है कि अच्छी प्रगति हो सकेगी। ऐसी कामचलाऊ सरकार को सफल बनाने के लिए पहले ही आवश्यक है कि हिन्दू मुसलमान और अन्य महत्वपूर्ण हित परस्पर नये विधानकी रचना के सिद्धान्तपर एकमत हों। पारस्परिक समझौते का यह सवाल भारतीयों का अपना सवाल है। जबतक भारतीय नेता निकट सम्बन्ध स्थापित नहीं कर लेते, तबतक मुझे सन्देह है कि मैं खुद सहायता के बतौर कुछ कर सकूंगा। मैं आपको याद दिलाऊंगा कि अल्पसंख्यकसम्बन्धी समस्याएं सरल नहीं है। ये वास्तविक समस्याएं हैं और उन्हें केवल आपसी समझौते और सद्भावनासे ही सुलझाया जा सकता है।

(६) युद्धके बाद कामचलाऊ सरकार का कार्य-काल इस बातपर निर्भर रहेगा कि कितनी तेजीसे नया विधान तैयार किया जाता है। मैं कोई कारण नहीं देखता कि उस विधान के सम्बन्ध में आरम्भिक कार्यवाही उतनी ही जल्दी, शुरू न कर दी जाय जितनी जल्दी कि भारतीय नेता उस सम्बन्ध में सहयोग करने को तैयार हो जाते हैं। यदि वे विधान-रचनाके सम्बन्ध में समुचित समझौतेपर पहुंच जाते हैं तो युद्ध के बाद अन्तिम परिणामपर पहुंचने और संधिसम्बन्धी व्यवस्था करने के लिए अनावश्यक समय नष्ट करने की जरूरत नहीं है। इसकी आरम्भिक जिम्मेदारी भी भारतीय नेताओंपर ही है।

आपका शुभचिन्तक
वावेल

सरकार सत्ता छोड़ना नहीं चाहती

सेवाग्राम १८ अगस्त।

वायसराय के उत्तर के सम्बन्ध में म. गांधीजी ने प्रेस प्रतिनिधिको निम्न आशय का वक्तव्य दिया है:—

प्रकाशित पत्रव्यवहार से स्पष्ट हो जाता है कि मैंने वायसराय की मांगोंको पूरा करने में कुछ भी उठा न रखा था। सरकारी उत्तर इस बात का निश्चित प्रमाण है कि ब्रिटिश सरकार भारतीय जनता का सहयोग प्राप्त करने की इच्छा नहीं रखती।

मैं कांग्रेस तक ही अपने को सीमित नहीं रखना चाहता, क्योंकि इसकी मुख्य मांग का सभी राजनीतिक दलों ने समर्थन किया है। जहाँ तक पारिभाषिक युद्ध विजय का सम्बन्ध है, उन्हें इसके समर्थन की जरूरत ही नहीं, और नैतिक समर्थन को वे घृणा से देखते हैं। वायसराय के प्रस्ताव का निचोड़ यह है कि जबतक भारत की तमाम मुख्य पार्टियां भारत के भावी नये शासन-विधान के लिये राजी न हो जायं तबतक विधान में कोई परिवर्तन नहीं किया जायेगा और आज की तरह ही भारत-सरकार का कार्य-चलता रहेगा। सरकारी उत्तर में दलों का नाम निश्चित न देकर दृष्टान्तरूप से ही दिया गया है। मुझे जरा भी सन्देह नहीं है कि मौका आने पर जादूगर के झोले से और भी नाम, पेशकर दिये जायंगे, इसलिये यह कहना मुश्किल ही है कि कब और कैसे ब्रिटिश सरकार सत्ता को दूसरे हाथों में सौंपेगी? यह स्फटिक की तरह स्पष्ट है कि ब्रिटिश सरकार उस सत्ताको, जो उसे ४० करोड़ पर प्राप्त है, तबतक नहीं छोड़ना चाहेगी जबतक कि (भारत की) ४० करोड़ जनता यथेष्ट शक्तिशाली बनकर खुद उसके हाथ से इसे न छीन ले। मैं यह आशा कभी नहीं छोड़ूंगा कि भारत इसे केवल नैतिक साधनों से ही प्राप्त करेगा।

खाद्य की समस्या अभी तक सुलझी नहीं है। जैसा मैंने सोचा है, वैसी ही राष्ट्रीय सरकार इसका असली हल कर सकेगी। अन्य उपाय सिर्फ मृगमरीचिका ही होंगे। बड़े

(शेष पृष्ठ ८ पर)

राजस्थानी भाइयोंकी सामाजिक उन्नतिके सुझाव

(ले० श्री. हरिकिशनजी राठी, ऐक्टिंग सेक्रेटरी राजस्थान हितकारक मण्डल, अमरावती)

अमरावती में सैकड़ों नहीं अपितु हज़ारों की तादाद में राजस्थानी भाई निवास करते हैं। इतना होने भी संतोषजनक रीति से हमारा यह अमरावती नगर सामाजिक बातों में जैसा बढ़ा-चढ़ा होना चाहिये था वैसा नहीं पाया जाता है। यहाँ पर इनी गिनी दोचार बगैर पर्दे के विवाह-शादियाँ इस एक साल के अर्से में हुई हैं, और ओसर मोसर बन्द होगये हैं, पर क्या केवल इतने से हम ने बहुत सामाजिक प्रगति कर ली? इतने से ही यदि हम सन्तोष करके बैठ जायें तो हम बड़ी भारी गलती कर रहे होंगे।

अमरावती में सौभाग्य से माहेश्वरी ओसवाल और अग्रवालों में अच्छे बड़े धनी मानी सज्जन हैं, लेकिन फिर भी अमरावती के दौर्भाग्य हैं कि जिन बातों से सामाजिक समस्यायें हल हो सकती हैं उनमें से एक भी बात की सुविधा इस नगर में नहीं है।

अमरावती शहर में जिन बातोंकी विशेष रूपसे कमी अनुभव की जाती है उनपर हम नीचे संक्षेप में विचार करते हैं:—

(१) अमरावती बरार की राजधानी है, और शिक्षा का मुख्य केन्द्र है लेकिन यहाँपर राजस्थानी भाइयोंके लिये एक छात्रावास की कमी बहुत जोरों से खटकती हैं। अपने बच्चोंके निवासके लिये उपयुक्त व्यवस्था न होनेके कारणसे ही राजस्थानी भाई अपने बच्चोंको शिक्षा के लिये अमरावती भेजने में संकोच अनुभव करते हैं।

(२) अमरावती में बहुत से क्लब्स (गोष्ठियाँ) हैं, लेकिन राजस्थानी भाइयों के लिये पृथक क्लब्स की बड़ी जरूरत है, जहां हरभाई एक दो घण्टे आराम से घरेलू खेल (कैरम, पिंगपाँग आदि) खेले और अपना विनोद करें। जहां सब लोग मिलते जुलते है वहां पर सामाजिक बातोंपर चर्चा भी स्वभावतः सहजभावसे हुआ ही करती है। इसके विपरीत अगर लोगों को किसी मीटिंग में बुलाया जाये तो कोई भी भाई रुचि के साथ नहीं आयंगे और उन्हें वहां जाना समय गवाँना लगेगा, और वक्त काटना मुश्किल हो जायेगा। परन्तु उन्हीं लोगों को खेलकूद और चाय के बहाने से निमंत्रित करके बुलाया जाये तो आप देखेंगे कि वही भाई खुशी-खुशी उपस्थित होंगे—इस तरह क्लबों से 'एक पन्थ दो काज' होते है।

(३) अमरावती में विधवाओंके लिये कमाने को ऐसे साधन जुटायें जायं जिनसे वे अपने अपने घरों में बैठ-बैठ ही अपनी पेट की समस्याको हल कर सकें। इस के लिये, उदाहरणार्थ कोई ऐसा मण्डल खोला जा सकता है जहाँ पर पापड़ बनाना, सूत कातना, या इसी तरह के अन्य काम प्रारंभ किये जा सकते हैं जिन्हें करके विधवायें अपना पेट पाल सकती हैं? आज के युद्ध के जमाने की मँहगाई में विधवाओं को जिन तकलीफों का सामना करना पड़ रहा है उसे भुक्तभोगिनी बेचारी विधवाएँ ही जानती हैं, दूसरे क्या जाने!!

(४) चौथी आवश्यकता है स्त्री शिक्षा की। महिलायें मानव समाज का आधाअंग मानी जाती हैं, इस लिये उनका शिक्षित होना बहुत जरूरी है। मारवाड़ी महिलाओं में शिक्षा की कमी होने की वजह से ही तो हमारे समाज में अभी तक प्राचीन कुरूढियाँ प्रचलित हैं। अगर हम स्त्रियों को सुशिक्षित कर दें तो आसानी के साथ हम समाज से पुरानी कुरूढ़ियों को दूर कर सकते हैं। अब प्रश्न यह उपस्थित होता है कि शिक्षा किस प्रणाली से दी जाये? मेरी सम्मति में इस के लिये एक स्कूल खोलना चाहिये, जहाँपर दो घण्टे की पढ़ाई हो। पहिले एक घण्टाभर उन्हें रामायण और महाभारत की चौपाइयाँ और श्लोक हारमोनियम तथा तबलेपर गाकर सुनाये जायें। स्त्रियां इस प्रोग्राम को 'राम नाम' समझ करके ही अधिक संख्या में उपस्थित होने लगेंगी। शेष दूसरे घण्टेमें उन्हें सीना, पिरोना, लिखना-पढ़ना सिखाया जाये ताकि वे वर्तमान परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त कर सकें। फिर कुछ दिनों बाद नगर से बाहर की किन्ही विदुषी महिला को बुलवा करके उनका भाषण कराया जाया करे तो महिला छात्राओंमें पर्याप्त ज्ञानवृद्धि हो सकेगी।

(५) उक्त कार्यों के साथ-साथ राजस्थानियों के लिये एक आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रसूतिगृह (Maternity Home) का होना भी अति आवश्यक है। इस प्रसूतिगृह में स्त्रियों को हर प्रकार की योग्य सुविधा मुहय्या की जाये। प्रसूतिगृहके चालू खर्चों के लिये परिस्थिति तथा समयानुसार इलाज कराने वालों से पैसा भी लिया जा सकता है, पर सदा यह ध्यान रखना होगा कि यह पैसा केवल नाममात्र का शुल्क (फीस) भर ही हो। अन्यथा धनवानों को छोड़कर दूसरे लोग इस योजना से विशेष लाभ न उठा सकेंगे।

ऊपर के सुझावों के अतिरिक्त कुछ अन्य सुझाव या योजनायें भी हैं, परन्तु उनके पूर्ण करने के लिये लाखों रुपयों की आवश्यकता होगी अतः मैं आज उनपर यहाँ कुछ भी लिखना उचित नहीं समझता। उनपर भगवान् ने चाहा तो, फिर कभी प्रकाश डालूँगा।

अब प्रश्न उठता है कि उपरोक्त स्कीमों को कार्य में परिणत करने के लिये जो रुपये की जरूरत पड़ेगी वह किस तरह पूरी की जाये? उसके लिये मेरी विनम्र सम्मति में दो सुगम मार्ग हैं। मोटे तौरपर इन सब योजनाओं को पूरा करने के लिये कुल डेढ़ लाख के लगभग रुपयोंकी जरूरत होगी। प्रथम मार्ग तो यह है कि हमारे धनीमानी भाई अधिक से अधिक धन का दान देकर उपरोक्त योजनाओंके निमित्त धन इकट्ठा कर देवें। ऐसा यदि हो जाये तो सारा कार्य बिना किसी विशेष बाधा या तकलीफ के असानी के साथ सम्पन्न किया जा सकेगा है। दूसरा मार्ग है यदि धनवान लोग इन कार्यों के लिये दान रूप में, रुपयोंकी मदद न करना चाहते हों तो वे हिस्सों [Shares] के रूप में दस बीस व्यक्ति मिल कर, कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ करें और उसपर जो लाभ होवे उससे ही उक्त योजनाओं का सञ्चालन किया जाये। इस दूसरे मार्गको अपनाने में यह लाभ होगा कि हिस्सेदारों की रकम को भी नुकसान न पहुँचकर उस के नफे से ही संस्थाओंका कार्य योग्य रीति से चल सकेगा, और नये व्यवसाय में आवश्यक रूप से हमारे अनेक बेकार राजस्थानी भाइयों को कोई अच्छा काम भी मिल सकेगा। इस तरह इस नफेसे ही संस्थायें चार पांच वर्षों में ही अपने पैरों पर खड़े रहनेलायक हो सकेंगी और एक दिन ऐसा आयेगा कि तब उन्हें इस रकम की विशेष आवश्यकता न पड़ेगी।

इन्हीं सब विचारों के साथ धनवानों से विनम्र भाव से अपील करता हूँ कि वे इन योजनाओं की ओर अपना ध्यान देवें। उक्त योजनायें केवल अमरावती नगर के लिये ही न होकर भारत के समस्त स्थानों के लिये भी हो सकती हैं। अमरावतीका तो एक उपलक्षण के रूप में मानों नामनिर्देश किया गया है।

म्हारी काश्मीर-यात्रा

[ले०-भारत केसरी धर्मवीर श्रीमान कुँवर चांदकरणजी शारदा, अजमेर]

मैं ई वर्ष ही असाढ़ का महीना में काश्मीर गयो अठा का डूँगरा की बर्फीली चोट्याँ मीठा जल का झरना, रंग-बिरंगा भाँत २ का फूल, चीनार का ऊँचा २ घेर घमेर बड़ पीपल जिसा पेड़, चावला की हरी भरी खेती, मीठा और स्वादिष्ट फल सभी ई प्रदेश में इत्तो सुन्दर मनोहर और चित्त रमा बाड़ो बणा दियो है कि बाणी से बखान कोनी करनी आवे; और जो यात्री अठै आवे है, वो ईकी घणी २ प्रशंसा करै है। और इने रामजी का स्वर्ग के समान बतावै। मैं नाव के पाछे बांधकर ले जावै है। गर्मी ऋतु ठण्डी २ हवा चालै, और हेम का पर्वतां बहता हुआ स्वादिष्ट मधुर साफ सुन्दर वाला झरना, सब खायो पीयो हजम कर है। गर्म्यां में तो गिलास खुबानी और बिदाम शहतूत आदि फल खावा ने खूब है। और भादवा आसोज में आड़ू आलू बुखा नाश पाती सेव आदि स्वादिष्ट फल मिले है आपां के अठै तो गावां में पटेलां छाछ मिल गई खाँड खोपरो मिल गये अठै योरुप अमरीका चीन इत्यादि सभो जगहाँ का यात्री देख्या। विदेशी लोग इने योरुप का स्विटजर लैण्ड से भी बढ़कर बतावै है। डूमराँ की घाट्यां में समुद्र तट सूँ ५ हजार फुट ऊँचो सुन्दर नद्याँ, काच जिशा निर्मल जल वालो झरना वालो प्रदेश ई पृथ्वी भर में कही नहीं है। डल झील में सुन्दर २ नावाँ में घूमबो, हर्‍या २ डूँगरा पर चढ़बो अर्‍या २ मखमल के समान हरी २ घास पर घूमवा में घणो आनंद आवै है। अठै जित्ती सड़कां जावै हैं वीके साथ ही साथ डूगराँ ने काटती हुई नद्यां बहवै है। अठा का खेत ऊलर और डल झील में लकड़ी का तख्ता बिछा २ व्यांपर मिट्टी नाख २ कर काश्मीरी लोग खेती करै है ई खेताँ ने चोर चुराकर भी ले जावे है। जब खेती पक जावै है तो चोर ई खेतां ने आपकी तो जाणों राम जी मिल गयो। और टाबरां ने गुड़ की डली, काचरा, जायफल, अनार, बाल्म, ककड़ी, मूली गाजर मिल गया तो बस जाणों मेवा को आनंद लूट लियो। पण काश्मीर के गावां की लुगाइयां और टाबर तो बागां का मीठा सेव नाशपाती खाकर और चाय पीकर आनंद लूटे है, खेता में गीत गावे है और निवाणा करता जावे है। यांकी राग दर से ठीक इस्सी मालूम पड़े हैं ज्यान आपां के अठे भादवां का महिना में तेजाजी गाता हुवा लोग लुगांया दृष्टी गोचर होवे हैं। पण फरक इत्तो ही है कि आंपा के ऊंठे मेला खेलडा में रंग बिरंगा कपड़ा पहरेयाडी लुगांया और लोग गेहूं भरना रंग का होवे और काश्मीर का लोग लुगाई गोरा चट्ट अनार का गुल्या जिस्या घंडा पूठरा होवे है। टाबर भी बहुत ही सुन्दर होवे हैं। पण काश्मीर में मुसल्मानी धर्म का प्रचार के कारण अठे का लोग बहुत गन्दा होवे हैं। यदि ये लोग सफाई से रहना लाग जाले तो वास्तव में काश्मीर स्वर्गभूमि हो जावें। और अठाका लोग लुगाई इन्द्र का दर्बार की गन्धर्व और अप्सरा जिस्या दीखवा लाग जावें। मुगल बादशाह जहांगीर और शहाजहां अठेका "शालामार" बाग और "निशात" बाग में प्रकृति को आनन्द लूटवाने कई महिना तक रहता हा। और आज दिन भी या बागा मे काश्मीर की राजधानी श्रीनगर में इतवार के दिन हजारा काश्मीरी सुन्दर २ वस्त्र पहर कर अठाँका फव्वारा को और बागीचा का सुन्दर फुलां को तथा बहता चश्मा आनन्द लूटवा मेला होवे है। हाथां चाय पीवा को शमावार और तमाखू पीवा को हुको लियां धीरें २ बिना पर्दावाली लुगाइयां के साथ सैर करता हुया घूमता फिरता आनंद लूटता घणा बाहा लागे है।

(नोटः—श्री शारदाजी ने राजस्थानी भाषा में अपनी काश्मीर यात्रा पर एक लेखमाला देते रहने का वचन दिया है। उक्त माला का यह प्रथम लेख है। —'सम्पादक')

मारवाड़ी भाषा में वेदों का अनुवाद

श्री. शारदाजी का श्रावणी पर व्रत

'राजस्थानी साहित्य की उन्नति कोरे प्राचीन डिंगल भाषा की कविताओं तथा मारवाड़ी दोहे और गीतों के छापने से नहीं होगी परन्तु हम को वर्तमान साहित्य भी रोचक ढंग से मारवाड़ी भाषा में लिखना पड़ेगा तथा हमारा धार्मिक साहित्य भी मारवाड़ी भाषा में तैयार करना होगा। मैंने रक्षा बन्धन के पर्व पर यह व्रत लिया है कि एक २ वेद मन्त्र का अनुवाद मैं मारवाड़ी भाषा में करूंगा।'

— चांदकरण शारदा

यूरोप में एक और नया मोर्चा

मित्र-राष्ट्रोंने दक्षिणी फ्रांसमें सेनाएं उतारकर एक नया आक्रमण आरंभ किया है। इस आक्रमणमें अमेरिकन, ब्रिटिश और फ्रेंच सेनाएँ भाग ले रही हैं। इस समय यूरोपके हिटलरी दुर्गपर पांच दिशाओंसे प्रचण्ड आक्रमण हो रहे हैं। जर्मनीके पूरबमें रूसी सेनाएँ पूर्वीप्रशाकी सीमाके बिलकुल नजदीक पहुंच गयी हैं। वारसामें जर्मनोंके खिलाफ पोलिश-देशभक्तोंने विद्रोह कर दिया है और बाल्टिक प्रदेशकी करीब ३० डिवीजन जर्मन सेनाएं 'मृत्यु-मुख' में पड़ गयी हैं। नारमेण्डीमें जनरल आइसनहोवरकी फौजें जर्मनोंको पछाड़ती हुई पेरिसकी ओर द्रुतगतिसे बढ़ रही हैं। १९ अगस्त तक मित्रसेनाओंके पेरिस से केवल कुछ ही मील दूर रहने की खबर है। यहांपर लगभग ७०० वर्गमीलके घेरेमें जर्मन सेनाध्यक्ष फील्ड मार्शल वान क्लुग की सतवीं जर्मन सेना उसी तरह विनाशकारी घेरेमें फंसती जा रही है, जिस तरह फील्ड मार्शल पालुस की छठीं जर्मन सेना स्टालिनग्राड में रूसी सेना के घेरेमें फंसकर नष्ट हो गयी थी। इटलीमें जनरल अलेक्जेण्डरकी सेना फ्लोरेंसपर कब्जा करके पो-नदीकी ओर, जर्मन जनरल फील्ड-मार्शल केसेरलिंगकी 'गोथिक दुर्गपंक्ति' का भेदन करनेकी तैयारी कर रही है। आकाश से मित्र-विमान दिन-रात समस्त जर्मनी और जर्मन-अधिकृत देशोंपर धुआंधार बमवर्षा करनेमें व्यस्त हैं। अब जनरल सर हेनरी मेटलैण्ड विल्सन की भूमध्यसागरी रणक्षेत्र की सेना ने दक्षिणीं फ्रांसपर चढ़ाई करके जर्मनीके खिलाफ एक नया मोर्चा कायम कर दिया है। इस समय जर्मनीको एक साथही पांच मोर्चोंपर विरोधी ताकतों और फौजोंका जबर्दस्त मुकाबला करना पड़ रहा है। दक्षिणी फ्रांसमें मित्र-सेनाएं 'नाइस और मर्सलीजके बीच करीब एकसौ मील लम्बे समुद्र-तटके दर्मियान उतारी गयी हैं। कहा जाता है कि मित्रोंका यह नया आक्रमण नारमेण्डीपर किये गये आक्रमणसेभी बड़ा और विकराल है। करीब १४ हजार मित्र-सैनिक हवाई जहाजों द्वारा, समुद्रतटकी जर्मन रक्षापंक्तिके दो मील पीछे उतारे गये हैं। इनमें छतरीधारी मित्रसैनिक और ग्लाइडरों द्वारा उतारे गये सैनिक भी हैं, जो स्थलसेनाके दो डिवीजनोंके बराबर हैं। मित्रोंकी ओरसे इसके पहले किसी भी आक्रमणमें एक साथ इतने सैनिक हवाई जहाजों द्वारा कभी नहीं उतारे गये थे। मित्र-सेनाओंके फ्रेंच-धरातलपर उतरते समय जर्मनों की ओरसे कोई पुरअसर मुकाबला भी नहीं किया गया। दक्षिणी फ्रांसके मोर्चेसे जो ताजा खरीता मिला है उसके अनुसार मित्र-सेनाओंने अपना पहला लक्ष्य प्राप्त कर लिया है और नाइस-तथा मार्सेलीजके बीच एक अच्छे भूभागपर कब्जा कर लिया है। फ्रेंच सेनाएं प्रथम बार चढ़ाईमें भाग लेकर, अपनी मातृभूमिको जर्मनोंसे स्वतंत्र युद्ध कर रही हैं। भूमध्यसागर के रास्ते दक्षिणी फ्रांसपर मित्रोंने जो आक्रमण किया है, उसकी संभावना कुछ दिनों पहलेसे ही की जा रही थी।

देश विदेश की चर्चा

दक्षिणी-फ्रांस में फौजें उतार कर मित्रराष्ट्र अब पेरिस के पूरब पहुंच गये हैं। रोन नदीसे सींचे जानेवाले फ्रेंचप्रदेश में जर्मन-विरोधी फ्रेंच तत्वों का प्रभाव अधिक है। अगर मित्र-सेनाओंने रोन नदी के सीधमें कदम बढ़ाया तो, उन्हें देशभक्त-फ्रांसीसियों का क्रियात्मक सहयोग मिलेगा और जर्मनी के जिगरमें मित्रसेना अधिक तेजी से प्रवेशकर सकेंगी। हिटलर की जा सेनाएं इस समय पेरिस के पूरब और पूर्वोत्तरकी दिशाओं में जूझ रही हैं उन्हें भी पृष्ठभाग में छोड़कर मित्र-सेनाएं आगे निकल सकेंगी। ऐसी दशामें जर्मन-सेना दो भागोंमें विभक्त हो जायगी। अगर मित्रसेनाओं ने दक्षिणी-फ्रांसमें उल्लेखनीय प्रगतिकी तो उनके इस बढ़ाव के फलस्वरूप जर्मनों को शीघ्रही पेरिस से हटकर 'स्यूज-पंक्ति' अथवा 'सीगफ्रीड दुर्गपंक्ति' की ओर चले जानेको बाध्य होना पड़ेगा। दो मोर्चों पर एक साथ युद्ध ही करने से हिटलर हमेशा घबराता था। मगर आज उसे एक साथही पांच मोर्चों पर लड़ना पड़ रहा है। लक्षणोंसे प्रतीत होता है कि मित्रसेनाएं पहले रोन नदीके मुहानेपर और उसके आस-पासके इलाके पर कब्जा करेंगी। इसके बाद वे रोन नदीके इर्दगिर्दके प्रदेशसे आगे बढ़ेंगी। नाइस और मर्सलीजके बीच मित्रोंने काफी बड़े भूभाग पर अधिकार कर लिया है। दक्षिणी फ्रांसमें लगभग ८०० मित्र जहाज सेना उतारनेके काम में लगे हुए थे। अगर इटलीमें मार्शल केसेलरिंगकी गोथिकपंक्ति' को भेदन करके जनरल अलेक्जेण्डर की सेनाएं शाघ्रही उत्तरी इटलीमें पहुंच सकी तो, दक्षिण फ्रांसकी मित्रसेनाओंसे उत्तरी इटलीकी मित्र-सेनाओंका मेल बहुत शीघ्र हो जायगा। रोममें मि० चर्चिलने मार्शल टीटो और युगोस्लावियाकी देशभक्त सेनाके अन्य अफसरोंसे भी परामर्श किया है। इससे प्रकट होता है कि मित्रराष्ट्र एड्रियाटिक सागरको पार करके अल्बानिया और युगोस्लावियामें भी अपनी सेनाएं उतारेंगे। शायद बाल्कन पर भी मित्रोंकी चढ़ाई शीघ्रही आरम्भ होगी और इसी समय तुर्की भी जर्मनीके खिलाफ रणक्षेत्रमें उतरनेका ऐलान कर सकता है। १५ अगस्तको प्रातःकाल, दक्षिणी फ्रांसमें सेनाएँ उतारते समय जनरल विल्सनने अपने एक ब्रौडकास्टमें फ्रांसीसियोंसे अपील की है कि:—"मित्रराष्ट्रोंकी सेनाए दक्षिणी फ्रांसमें उतर गयी हैं। इन फौजोंका उद्देश्य जर्मनोंको खदेड़ कर नारमेण्डीसे बढ़नेवाली मित्र-सेनाओंसे शीघ्र हाथ मिलाना है। फ्रेंच-सेना अपने देशको स्वतन्त्र करनेके लिये, पहली बार अपने देशकी भूमिपर शत्रुसे लड़ रही है। १९१८ को स्मरण रखो। हरेक फ्रांसिसीको अपना कर्तव्य पूरा करना चाहिये। विजय निश्चित है।" यूरोपीय युद्धकी प्रगति और मित्रसेनाओंके सफल आक्रमणको देखते हुए जर्मनीकी हालत बुरी है, लेकिन अभी नैराश्यपूर्ण नहीं है। यद्यपि नाजी जी-जानसे लड़ रहे हैं, फिर भी १९१८ की घटनाओंकी पुनरावृत्ति हो रही है। यदि जर्मनोंने अपनी फौजें आल्स-पर्वतकी पंक्तिके पीछे हटा लीं तो वे दूसरे बर्षतक युद्ध जारी रख सकते हैं। जर्मनी को अब रक्षात्मक युद्ध करना पड़ रहा है और रक्षात्मक युद्धका अन्तिम परिणाम पराजय तथा आत्म-समर्पण होता है।

मातृभाषामें ही शिक्षा होनी चाहिये

प्रान्तीय भाषाओं के अग्रदूत गान्धीजी

श्री देसाई का भाषण

'कस्तूरबा राष्ट्रीय स्मारक कोष' के सहायतार्थ आयोजित एक कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री भूलाभाई देसाई ने अपने भाषण में कहा:—

बच्चों को मातृभाषामें ही शिक्षण दिया जाना चाहिये। आज इस कार्य में हमें जो कुछ भी सफलता मिली है, उसका श्रेय गान्धीजी को है। उनके प्रयत्न से ही प्रान्तीय भाषाओं में जागृति हुई। १९१८ में, अहमदाबाद में मि. जिन्ना की अध्यक्षता में बम्बई प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन हुआ था। उन दिनों दक्षिण अफ्रीकासे गान्धीजी भारत लौटे ही थे और उस सभा में उपस्थित थे। आभार प्रदर्शन का समर्थन मैं करनेवाला था कि गान्धीजी ने धीरेसे मुझसे कहा कि इस सम्मेलन की कार्यवाही तो अंग्रेजी में हुई है, और हमें मातृभाषा को अपनाना है।

इंग्लैण्डमें यह नहीं सोचना पड़ता है कि वहाँ जर्मनी या फ्रेंच भाषा में बोलना होगा, लेकिन भारत एक ऐसा अभागा देश है, जहाँ बोलने से पहिले सोचना पड़ता है कि कौनसी भाषामें बोलना चाहिये।

जापानपर भी हमला !

जापान के नये प्रधान मन्त्री जनरल कोइसो को भय है कि अब मित्र-सेनाएं खास जापानी टापूपर भी आक्रमण कर सकती हैं। जर्मन रेडियो ने जापानी प्रधान मन्त्री का एक भाषण उद्धृत किया है जिसमें उन्होंने कहा है कि:—'जापानी टापूपर मित्र-सेनाओं के आक्रमण की संभावना को अब योंही नहीं टाला जा सकता। दुश्मन की ताकत और उसके इरादों का पता हम अब लगा सकते हैं। शत्रु हमारे दक्षिणी प्रदेशों में हमारी यातायात-पंक्ति को काट देना चाहता है। अतएव, समस्त राष्ट्रीय शक्ति की पूरी लामबन्दी करनी चाहिये ताकि जापान अपनी कठिनाइयों को पार कर सके।' जापानी टापूपर मित्रों के आक्रमण का खतरा कितना बढ़ गया है, इसका पता जनरल कोइसो के उपयुक्त ऐलान से लगाया जा सकता है। प्रशांत के रणक्षेत्र में मित्रों की ताकत बहुत बढ़ गयी है। गत २९ जुलाई को प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट, सैनिक कान्फरेन्स करने और निरीक्षण करने होनोलुलू गये हुए थे। वहांपर उन्होंने जनरल मैकआर्थर, एडमिरल चेस्टर निमित्ज, एडमिरल हेलसे और एडमिरल लीहीसे परामर्श किया। होनोलुलूमें तीन दिन रहकर प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टने प्रशांतके युद्ध की प्रगतिपर अपने सेनापतियोंकी राय ली है। दक्षिण-पश्चिमी प्रशांतमें मित्र-सेनाओंकी गतिविधियोंसे प्रकट होता है कि फिलिपाइंस टापुओंपर अमेरिकन नौसेना और हवाई सेनाके हमले होनेवाले हैं। टोकियोमें भी ऐसा ही विश्वास किया जा रहा है। १० अगस्तको अमेरिकाके 'सर्वश्रेष्ठ उड़नकिला विमानों' ने सुमात्रा और खास जापानी टापूपर हमला किया। क्यूशूके पश्चिमी भागमें बमवर्षा की गयी और नगास्कीके जहाज बनानेके कारखानेको बमवर्षासे क्षतिग्रस्त किया गया। आसाम-बर्माके मोर्चेपर जापानियोंको भगा दिया गया है और मित्र-सेनाने टामू पर फिर कब्जा कर लिया है। उत्तरी बर्मामें भी जापानियोंकी भारी पराजय हुई है। इससे साफ है कि जापानियोंको भी अपनी पराजयके लक्षण दिखायी दे रहे हैं!

जिन्ना के रुख में परिवर्तन

लगभग ७ महीनेके बाद उस दिन मि. जिन्ना गत शुक्रवारको बम्बई पधारे। बम्बई प्रांतीय मुस्लिम लीगकी ओरसे मि. जिन्नाका सार्वजनिक स्वागत करनेका पहली बार आयोजन किया गया था और यह आयोजन पूर्ण सफल रहा। बम्बई आनेपर जिन्ना साहबका बड़ा शानदार स्वागत किया गया और उनके स्वागतार्थ एक लम्बा जुलूस निकाला गया। कम्यूनिस्टों और छात्रों ने भी इस स्वागत और जुलूसमें भाग लिया।

बम्बई पहुँचनेपर लीगका झण्डा फहराने की रस्म-अदायगी करते हुए मि० जिन्ना ने अपने संक्षिप्त भाषणमें कहा कि—'आप लोगोंको एक बात कभी नहीं भूलनी चाहिये। इस बातको आप लोग हमेशा अपने दिल-व-दिमागमें तरोताजा रखें कि चाहे जैसे भी हो हम पाकिस्तान अवश्य प्राप्त करेंगे। हिन्दुस्तानके १० करोड़ मुसलमानोंके लिये यह जिन्दगी और मौतका सवाल है। अगर अपने इस मकसदको हासिल करनेमें हम कामयाब न हुए तो हिन्दुस्तानसे हमारी हस्ती मिट जायगी।'

मि. जिन्नाके इस भाषण में एक बात खास ध्यान देने योग्य है कि अपने संक्षिप्त भाषण में और उससे पूर्व लाहौर में जो वक्तव्य गान्धी-राजगोपालाचारी के सूत्र के उत्तर में दिया था उसमें उन्होंने मुस्लिम लीग का ध्येय (मकसद) पाकिस्तान बताया है। पहिले वे जिस तरह तुरन्त पाकिस्तान लागू कर देने की मांग पर जोर दिया करते थे, हालके उनके भाषणों में उसकी झलक नहीं मिलती है। मि. जिन्ना मालूम पड़ता है अब इस बात पर भी राजी हो जायेंगे कि भारत का विधान ऐसा बनाया जाये जिससे धीमे धीमे मुस्लिम बहुल-प्रान्तों में पाकिस्तान लागू हो जाये।

श्री देवसुमन की मृत्यु की जाँच की माँग

दिल्ली १५ अगस्त :

श्री देवसुमन की टेहरी गढवाल की जेल में हुई मृत्यु पर देश में स्थान स्थान पर क्षोभ और शोक प्रकट किया गया है और पोलिटिकल एजेन्ट से प्रार्थना की गयी है कि वे श्री देवसुमन की मृत्यु के सन्देहात्मक कारणों की जाँच करें, और स्टेट से श्री देवसुमन के परिवार को भरणपोषण का खर्च दिलायें। श्रीनगर, पौडी, ऊखीमठ, कर्णप्रयाग और लैन्सडौन में भारी शोक सभाएं हुई।

अ० भा० देशी राज्यलोकपरिषद के प्र० मंत्री श्री व्यासजी ने एक स्वतंत्र जाँच समिति द्वारा खुली जाँच की माँग की हैं।

शाहपुरा में नये दीवान

यहां पटना राज्यसे रायबहादुर मदनगोपालजी दीवान नियुक्त होकर आये हैं। उनसे प्रजामंडल के अध्यक्ष श्री अभयसिंहजी डांगी और लक्ष्मीदत्तजी कोटिया ने प्रजामंडल के जब्त कागजात म्यूनिसिपैलिटी तथा बेगार के संबंध में बातें की।

२००००) की लागत से " मीरा मन्दिर "

मीरा के जन्मस्थान मेड़ता में अभी हालमें कलकत्ता के सुप्रसिद्ध सेठ श्रीमंगतीरामजी रामकुमारजी ने २०००० की लागत से मेवाड राज्य की भक्तशिरोमणि मीरा की एक संगमर्मर की मूर्ति बनवाकर मीरा मंदिर की स्थापना की है। इसका उद्घाटन करते हुए अ. भा. राजस्थानी साहित्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री श्री सुमनेशजी ने मन्दिर के तत्वावधान में साहित्य विभाग खोलने और मीरा के ग्रन्थ माला के प्रतिष्ठान की सिफारिश की।

इस अवसर पर मेवाड़ के अनेक स्थानों से १५००० स्त्री पुरुष पधारे।

इन्दोर धारा सभा के चुनाव

प्रजामंडल के १४ उम्मीदवार निर्विरोध जीते

इन्दोर १४ अगस्त। इन्दोर धारा सभा के चुनावों में प्रजामंडल के उम्मीदवारों को अपूर्व सफलता मिली है। प्रजामंडल के १४ सदस्य निर्विरोध चुने गये हैं। धारा सभा के कुल सदस्य ३७ होंगें।

अभी हाल में की गई इन्दोर राज्य की इस घोषणा के अनुसार कि इन्दोर राज्य प्रजामंडल अगस्त प्रस्ताव के सम्बन्ध में विचार करने के लिए अपनी प्रतिनिधि सभा की बैठक कर सकता है, यहां उस सभा की एक असाधारण बैठक बुलाई गई। श्री भानुशाह की अध्यक्षता में स्थिति पर ४ घन्टे विचार हुआ। अन्त में राज्य से यह पूछना तय हुआ कि इन्दोर नरेश ने प्रजामंडल को बिना शर्त फिर कानूनी संस्था घोषित करने का आश्वासन दिया था उसके सम्बन्ध में उसका रुख अब क्या है। इस सम्बन्ध मे राज्य का रुख जान लेने के बाद प्रतिनिधि सभा की बैठक फिर होगी।

हमारा राजस्थान
ART CORNER

[मारवाड़ी पब्लिसिटी ब्यूरो नयी दिल्ली द्वारा]

मारवाड़ में ९ अगस्त की धूम

दिल्ली १४ अगस्त। मारवाड के समस्त राज्यों में ९ अगस्त १९४२ को की गई कांग्रेसजनों की व्यापक गिरफ्तारियों के विरोध में दिवस मनाया गया। उदयपुर में प्रजामंडल के कार्यालय में सभा हुई। देश की समस्या के जल्दी सुलझने के लिये ईश्वर से प्रार्थना की गई। भील विद्यापीठ और हिन्दी विद्यापीठ में भी यह दिवस मनाया गया। महाराणा कॉलेज बन्द रहा। वहां वन्देमातरम के गायन के बाद सोशल सर्विस लीग की स्थापना का निश्चय किया गया। अन्य संस्थाओं नें भी दिवस मनाया गया।

जयपुर में नगर प्रजमण्डल के तत्वावधान में सभा हुई। भरतपुर में भी इस सम्बन्ध में अन्य कार्यक्रम पूरा करने के साथ साथ प्रजापरिषद की ओर से सभा की गई।

९ अगस्त को इन्दोर तथा मध्यभारत के पडौसी राज्यों में हडताल रखी गई। गांधीजी के आदेशानुसार सामूहिक प्रदर्शन नहीं किये गये। उपवास भी रखा गया। वनस्थली श्री श्रीप्रकाश जो के सभापतित्व में शान्ता भवन में सभा हुई।

वैधानिक सुधारों पर सम्मति देने की मनाई

जोधपुर १४ अगस्त। जोधपुर में प्रतिनिधि सलाहकार असेम्बली पर यह रोक लगा दी है कि वह वैधानिक सुधारों के सम्बन्ध में अपना कोई मत नहीं दे सकता। असेम्बली में इसका विरोध करते हुए श्री इन्द्रनाथ जी मोदी ने पूछा जब कि जोधपुर सरकार ने व्यक्तियों और गौशाला जैसी संस्था को इन सुधारो के सम्बन्ध में अपना मत देने की स्वतंत्रता दे रखी है तो प्रतिनिधि सलाहकार असेम्बली जैसी संस्था को इस सम्बन्ध में अपना मत देने से क्यों रोका जाता है।

राजपूताना हिन्दू कान्फ्रेंस

अजमेर १८ अगस्त :

राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभाके तत्त्वावधान में राजपूताना हिन्दू कान्फ्रेंस पुष्कर में पीतियों के नोहरे में कार्त्तिकी मेलेपर ता. २९-३० अक्टूबर को होगी। सभापति पद के लिये डा० श्यामप्रसादजी मुकर्जी व कान्फ्रेंस का उद्घाटन करने के लिये स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी से प्रार्थना की गई। स्वागत समिति बन गई है। स्वागताध्यक्ष श्री कुंवर चांदकरणजी शारदा चुने गये हैं।

अखण्ड भारत दिवस

हिन्दू सभा अजमेर तथा कैसरगंज हिंदू सभा की ओर से ता. १ अगस्त से ७ तक नगर के मोहल्ले २ में अखंड भारत दिवस के उपलक्ष्य में सभायें की गई। आस पास के ग्रामों में हिन्दू सभायें स्थापित की गई।

मारवाडी कवि सम्मेलन

मारवाडी समाज के लिये ही नहीं, अपितु दिल्ली और नई दिल्ली के लिये भी मारवाडी कवि सम्मेलन का तीन दिन का महान सफल आयोजन एक अभूतपूर्व घटना थी, जिसकी चर्चा प्रायः चारों ओर सुनने में आ रही थी। पहिले दिन सभापतिका आसन 'कल्याण' सम्पादक और गीताप्रेस के संचालक श्री हनुमानप्रसादजी पोद्दार और रायसाहब सेठ खुशीरामें छारियानें, दूसरे दिन रतनगढ़ के पण्डित मणिरामजी आयुर्वेदाचार्य ने और तीसरे दिन श्री दानवीर सेठ जुगलकिशोरजी बिडला ने ग्रहण किया। तीनों दिन दीवान हाल खचाखच भरा रहा। राजपूताना और मध्यभारत के विभिन्न भागोंसे पचास के लगभग कवि पधार थे, जिनमें चुरु, लाडनू, अल्वर, बीकानेर, जोधपुर, और इन्दौर के कवियोंका स्थान विशेष था। श्री मुकुल, श्री महिपाल सिंह, श्री भंडारी, श्री अक्षय, श्री चन्द्रदेव, श्री उज्ज्वलन्त, श्री हरीत, श्री भट्ट, श्री गोविंद व्यास, श्री सुमनेश श्री नाथूदानजी महियारिया, सुबोधकुमार अग्रवाल, श्री नन्दकिशोर, श्री सुधीन्द्र, श्री शशि श्रीकिंकर, श्री त्रिपाठी, जननायकश्री जयनारायण व्यास के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रायः सभी की कविताएँ पसंद की गयीं।

इस अवसर पर दानवीर सेठ जुगलकिशोरजी बिडला के सभापतित्व में स्थानीय मारवाडी साहित्य परिषद की स्थापना की गई और मारवाडी कविसम्मेलन के लिये श्री सुमनेश को संयोजक बनाकर स्थायी समिति बनाई गई, जिसका कार्यालय जोधपुर में रहेगा।

कवियों के सम्मान में कई आयोजन भी किये गए। लाला सांवलदासजी लोहिया ने शानदार चाय पार्टी दी। बिडला मन्दिर में श्री जुगलकिशोरजी बिडला ने कवियों का सम्मान किया।

बीकानेर में दो करोड़ की योजना

बीकानेर। मालूम होता है कि म्यूनिसपैल्टी के अध्यक्ष सेठ बद्रीदासजी डागा के स्तीफे से पैदा हुई झेंप को मिटाने के लिए ही बीकानेर में सुधारों के लिए दो करोड़ की पंचवर्षीय योजना की गई है। इसके लिए एक महकमा भी अलग कायम किया गया है। ग्लास फेक्टरी, बैंक, शिक्षा, सफाई, रेल्वे, सड़कें, कृषि, सिंचाई आदि को इस योजना में शामिल किया गया है।

महाराज के दौरेका उल्लेख करते हुए बताया गया है कि महाराज ने अन्य मंत्रियों को भी इसी प्रकार दौरे करने का आदेश दिया है।

श्री मौलीचन्द्रजी का वक्तव्य

टेहरी गढवाल के दीवान श्रीमौलीचन्द्र शर्मा ने श्री देवसुमन की मृत्यु से पहिले महाराज से राजनीतिक मामलों में मत होनेपर स्तीफा दे दिया था। ऋषिकेश आपने एक भेंटमें बताया कि श्री देवसु अमर हो गये। परन्तु इस दुर्घटना के आघा को हम उम्र भर भूल नहीं सकते। दीवान रहते हुये भी एक सच्चे देशभक्त युवक की मृत्यु जेल में हो गई। मैंने उनकी रि के लिये काफी जोर लगाया। लेकिन प्रयत्न असफल रहा और मुझे स्तीफा दे लिये वाध्य होना पड़ा मैं ने यह स्तीफा उन मृत्यु से पहिले ही दे दिया था। यह ब दान व्यर्थ न जायगा। यह सदा के लिये हृदय में तीर का काम कर गया।...

गिरफ्तारी के समय उनके साथ किये दुर्व्यवहार को आपने सभ्यता से रहित बताया पता चला है कि उनकी लाश भी उनके सम्बन्धियों को नहीं दी गई। कई दिन बाद मृ का समाचार दिया गया। उनके भाई भी गां नजर बंद हैं।

" रतलाम किधर " की प्रतिक्रि

रतलाम। मारवाड़ी प्रगतिसंघ नई दिल्ली मंत्री श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार द्वारा प्रकाशि " रतलाम किधर " पुस्तक पर हुई प्रतिक्रि के समाचार रतलाम, भोपाल और बम्बई मिले हैं। रतलाम में इस पुस्तक के विरु भगदड़ मच गई है। प्रजामंडल के मंत्री चांदमल महता के यहां तलाशी में इस पुस्त की दो प्रतियाँ पुलिस उठा ले गई और उन गिरफतार भी कर लिया गया। इसी प्र भोपाल में रतलाम की पुलिस ने इस पुस्त के सम्बन्ध में श्री शाकिरअली साहब के बया लिये हैं। रतलाम के पोलिटिकल विभाग अलग किये जानें पर मेजर शिवजी ने ही पड़ाव डाल रखा है। रतलाम के कुशा का चक्र यहां रहते हुए भी ये ही चला रहे बम्बई से मेजर शिवजी और रतलाम महा से श्री कन्हैय्यालाल जी की मुलाकात होने समाचार मिला है। यह भी अफवाह है षडयंन्त्र का एक और मामला तैयार कि जा रहा है।

मेवाड़ में औद्योगिक संगठन

उदयपुर। मेवाड़ के गृह उद्योगों का संग करने के लिए मेवाड़ इंडस्ट्रीज के नाम से संस्था का संगठन किया गया है जिसके लि सेठ कमलनयन बजाज, सेठ सत्यनारायण नाथानी, सेठ दामोदरलालजी मानसिंह की सेठ श्री गोपालजी मोहता आदि की स्वीकृ प्राप्त कर ली गई है। अन्य सज्जनों के साथ बातचीत चल रही है। सप्लाई विभाग धांधली और पक्षपात का एक उदाहरण सामने आया है। चावल की लगभग २०० बोरियों का वितरण किया जाना था। स विभागने दो दो बोरियां बड़े अफसरों के घरों पहुंचा दी। दीवान सर टी वी राघवाचार्य के भी दो बोरियां भेजी गयी उन्होंने रखने से इन् कर दिया। उन्होंने कह दिया कि उनके हिस्से जो आयगा वे अपने दूकानदार के यहां से ले इसकी सर्वत्र चर्चा हैं।

७५ वीं गांधी जयंति

श्री रामकिशनजी धूत, मंत्री हैद्राबाद राज्य खादी प्रचार संघ सूचित करते हैं कि संघ के कार्यकारी मंडलने ७५ वीं गांधी जयंति इस वर्ष बृहद् रूपसे मनाने का निश्चय किया है। 'बापू' की जन्मतिथि आश्विन कृष्ण १२ ता. २ आक्टोवर है इस लिये इस वर्ष १४ सितंबर ४४ आश्विन कृष्ण १२ से ता. २ आक्टोवर ४४ आश्विन शु. १५ तक ७५ वीं गांधी जयंति मनाई जायगी। घर घर में चरखा और खादी के प्रचार के वास्ते उचित कार्यक्रम बनाया जा रहा है। कार्यक्रम को सफल बनाने के वास्ते उपसमितियां बनाई जा रही हैं। संघ की शाखाओंको भी चाहिये कि अभीसे ७५.वीं गांधी जयंति की तैयारियां प्रारम्भ कर दें।

मारवाड़ी सम्मेलन

जुलाई महीने का कार्य विवरण।

संयुक्त प्रान्त में श्री वीरेन्द्र कुमार जी शर्मा, श्री शिव कुमारजी तिवारी प्रान्तीय अधिवेशन के प्रचार कार्यमें संलग्न होकर प्रतिनिधि बना रहे हैं। साथ ही इन स्थानों में शाखा सभाएं स्थापित की हैं:-साहेबगंज (तिवारी पट्टी) रामकोला, खुर्जा, डिवाय, बुलन्दशहर, तथा फर्रुखाबाद, फैजाबाद, मऊनाथभंजन, गोरखपुर, देवरिया, चौरीचौरा, शाहगंज, मालीपुर, अकबरपुर, प्रतापगढ़, और पड़रौना की शाखा सभाएं पुनर्गठित हुई। बंगाल के प्रचारक श्री रामजी शर्मा, शाखा सभाओं का नवनिर्वाचन, नवीन शाखाओं की स्थापना, और स्थानीय संस्थाओं के सुसंचालन के संबंध में दौरा कर रहे हैं। इस प्रान्त के राजशाही, चारघाट, चन्द्रमोल, और गोपालपुर की शाखा सभाओं का पुनर्गठन के साथ जन गणना कार्य भी हुए हैं। सिराजगंज में पवनाजिलासभा का कार्य सुव्यवस्थित रूप से संगठित कर दिया गया है। साथ ही राजशाही में विद्यालय, पुस्तकाल्य, तथा व्यायामशाला को सुव्यवस्थित रूप से संचालित करने के लिए कुछ सज्जनों ने निश्चय किया। इस अवधि में मऊनाथभंजन में 'संगठन-दिवस' मनाकर आजमगढ़ जिला सभा की स्थापना की गई है। संयुक्त प्रान्त के चौरीचौरा, गोलाबाजार, साहेबगंज, फैजाबाद, रामकोला, मऊनाथभंजन, में नवयुवक संघ खोले गये हैं। इसके अतिरिक्त मऊनाथभंजन, साहेबगंज में पुस्तकाल्य तथा व्यायामशालाएं स्थापित हुई। पडरौना में शीघ्र ही विद्यालय खोलने का निश्चय हुआ।

भालचंद्र शर्मा,
संगठन मन्त्री।

माहेश्वरी नवयुवकों को दंड

शहापुरा की माहेश्वरी पंचायत ने माहेश्वरी नवयुवकों पर फी व्यक्ति १। सवासेर मकई जुर्माना किया था, इसलिये कि माहेश्वरी बाल्चर मंडलके उत्सव पर इन्होंने व्यावर निवासी जयदेवजी धूत को यहाँ आमन्त्रित कर स्वागत किया व इसके बाद में उनकी पुत्री की शादी में सम्मिलित रहे। नवयुवकों ने दंड देकर जाति में रहना उपयुक्त समझा।

—संवददाता

राजस्थानी संसार
ART CORNER

अ. भा. मारवाड़ी सम्मेलन

वर्किंग कमेटी की द्वितीय बैठक की कार्यवाही

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सम्मेलन कार्यालय, कलकत्ता में वर्किंग कमेटी का द्वितीय अधिवेशन सम्मेलन के उपसभापति श्री तुलसीराम जी सरावगी की अध्यक्षता में गत ता. २६-७-४४ के दिन के २ बजे, प्रारम्भ हुआ। वर्किंग कमेटी की गत बैठक को कार्यवाही स्वीकृत करने के पश्चात ता. १-११-४३ से ३०-६-४४ तक का कार्य विवरण, आय व्यय आदि पर निश्चय हुआ। कस्तूरबा स्मारक कोष के लिये आगत सदस्यों ने सहायता देने की अपील प्रकाशित करने का निश्चय किया तथा जयपुर एक्सेस प्राफिट टेक्स पर फिलहाल विचार स्थगित रखा गया। कमेटी में आये अन्य मुख्य प्रस्तावों में राष्ट्र के वर्तमान गतिरोध पर एक प्रस्ताव महत्वपूर्ण स्वीकृत कर सरकार से बन्दियों को मुक्त कर वांछनीय समझौते के लिये अनुरोध किया गया। कमेटी ने राजपूताने की उन रियासतों की भूरि भूरि प्रशंसा की जिन्होंने औद्योगिक विकास की ओर ध्यान आकर्षित किया है तथा व्यवसायिओं को यथोचित सुविधाएं प्रदान की हैं। कमेटी ने इस सम्बन्धमें एक प्रस्ताव द्वारा राजस्थान की अन्य रियासतों का ध्यान आकर्षित करते हुए इस ओर कार्यवाही करने की अपील की है।

अये हुये पत्रों पर विचार के पश्चात आवागमन की कठिनाई के कारण स० प्र० मंत्री, श्री जगन्नाथ प्रसादजी गोयनका का स्तीफा स्वीकार किया गया एवं २५, २६ अगस्त को होने वाले संयुक्त प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अवसर पर बनारस में अ० भा० समिति की आगामी बैठक बुलाने का निश्चय हुआ।

बजरंगलाल लाठ
मन्त्री

कन्ट्रोल अव्यवस्था

शाहपुरा—

यहाँ कन्ट्रोल की व्यवस्था बहुतही असन्तोष जनक है बाजार में २ पैसे का गुड़ मुश्किल से मिलता है व ।) आने का गुड़ प्राप्त करने के लिये धक्के खाने पड़ते हैं और जाये में भी लोगों को बड़ी परेशानी रहती है। शहरबासियों को डिलेवरी के समय के लिये २) रु. का गुड़ प्राप्त करने के लिये मेडिकल सर्टिफिकेट के साथ ~) के टिकिट लगाकर दरखास्त देनी पड़ती है तो ग्रामीणों को अपने गांव के पटवारी से यह तस्दीक करानी पड़ती है कि इसके जाया है तब ≈)। खर्च करने पर २) रु. का गुड़ मुश्किल से मिलता है।

माहेश्वरी पुस्तकालय कलकत्ता

गत जुलाई मास में पुस्तकाल्य से घर ले जाकर सदस्यों द्वारा ६४६ पुस्तकें, विद्यार्थियों द्वारा १६४, और भ्रमणशील विभाग द्वारा ४३ पुस्तकें पढ़ी गई व वाचनालयमें ३६१ पुस्तकें पढ़ी गयीं वाचनाल्यकी कुल उपस्थिति २५०८ रही। ९७ सदस्य बढ़े। कुल पुस्तकें ३९३५ हैं। २००) श्रीमान सेठ रामचन्द्र दाऊदयालजी कोठारी १०१) सेठ भागीरथीजी मोहता द्वारा १०१) सेठ दुर्गादासजी मूधड़ा द्वारा और ५१) सेठ शिवबक्सजी मोहता द्वारा पुस्तकाल्य को विशेष सहायता स्वरूप प्राप्त हुये हैं साथ ही पन्नालालजी कोठारी B. L. द्वारा तीन पुस्तकें मिलीं। उपरोक्त महानुभावों की उदारता पर पुस्तकाल्यकी ओर से अनेकानेक धन्यवाद।

माणिकलाल डागा "विशारद"
अवैतनिक मंत्री।

राजस्थानी साहित्य सम्मेलन

कार्य कारिणी समिति के निश्चय

अ. भा. राजस्थानी साहित्य सम्मेलन की कार्यकारिणी की बैठक गत १९।२० जुलाई को सम्मेलन के प्रधान कार्यालय में हुई। बीकानेर से सम्मेलन के सभापति श्री. ठाकुर रामसिंहजी और प्रो. नरोत्तमदासस्वामी बैठक में सम्मिलित होने के लिए आए थे। प्रारंभ में प्रधानमंत्री श्री. सुमनेशजी ने सम्मेलन की प्रवृत्तियों का सिंहावलोकन किया। श्री. जयनारायणजी व्यास ने उसके बाद सम्मेलन के उद्देश्यों को कार्यरूप में परिणत करने के लिए एक योजना पेश की जो विचार विमर्श के बाद स्वीकार की गई। सम्मेलन के कार्य को सुचारु रूपसे संचालित करने के वास्ते बीस हजार रु. का वार्षिक बजट स्वीकार किया गया। इसके साथ ही यह भी निश्चय किया गया कि सम्मेलन विभिन्न विषयों पर राजस्थानी भाषा में १२ पुस्तकें आगामी वर्ष प्रकाशित करे और उसके लिए बारह हजार रु. का विशेष बजट भी मंजूर किया गया।

प्रत्येक प्रांत में से राजस्थानी समाज के प्रमुख साहित्यिक विद्वान् एवं व्यापारी श्रीमंतोंमें से १११ सज्जनों की एक स्थायी समिति Standing committee का संगठन किया गया है जिसकी बैठक शीघ्र ही दिल्ली में होनेवाली है।

गीत

मानव युग-युग का दुखियारा!
+
अन्तर में निज आग लगाये,
अपनी चिर की प्यास जगाये,
कम्पित पग, अनजाना मग है, दृग-द्वय से बहती जलधारा!
मानव युग-युग का दुखियारा!

लड़ता है अविराम निरन्तर,
शान्ति-सौख्य का नाम कहाँ, पर,
प्राणों की बाजी दे जूझा, हारा; जूझा, फिर-फिर हारा!
मानव युग-युग का दुखियारा!

युग-युग से यह जलता आया,
लड़ते-मरते चलता आया,
किन्तु कहाँ तू पहुँचा मानव, यहीं भटकता मारा मारा!
मानव युग-युग का दुखियारा!

रमेशचन्द्र माहेश्वरी 'प्रदीप'

रायसाहब भोपालचन्द लोढ़ा

जांच के लिये कमीशन नियुक्त

मारवाड लोकपरिषद एवं जनता की वर्षों पुरानी मांग की अब सुनवाई हुई जान पड़ती है। अकाल एवं पाली की नहर के सम्बन्ध में गोलमाल करनेके आरोप रायसाहब भोपालचन्द लोढ़ा के विरुद्ध लगाए गये थे। अब उनको नौकरी से अलग करके जांच के लिये एक कमीशन नियुक्त किया गया है और उसको जल्दी से जल्दी अपनी रिपोर्ट महाराज के समक्ष उपस्थित करने का आदेश दिया गया है।

मालपाणीजी का तबादला

श्री शरतचंद्रजी मालपाणी बी. काम. का. जो आर्थर रोड जेल में थे वहां से नासिक सेंट्रल जेल में ट्रांसफर कर दिया गया है। आप पहले वर्ली आर्थर रोड बायकला जेल में थे और अब सेंट्रल जेल नासिक में रखे गये हैं। आप पर फारवर्ड ब्लाक के कार्य कलापमें लिप्त रहने का आरोप है। स्मरण रहे की आप ता. ३० मई १९४३ को गिरफ्तार किये गये थे।

[पृष्ठ २ का शेष]

निकलता था, परन्तु अब धीमे-धीमे इस की पैदावार की ताक्त बहुत घट गयी है। सन १९३२ में यहाँ से केवल ८४७००० गैलन तेल निकला था, पर सन १९३८ में बिल्कुल भी नहीं निकला। डिग्बोई के क्षेत्र से सन १९३७ में ६६७१८४३७ गैलन तेल निकला था, और इस का भविष्य भी अधिक आशामय जान पड़ता है। तेल के अन्य क्षेत्र पञ्जाब में हैं। पञ्जाब में इन के स्थान तथा नाम खौड़, धूलियाँ और छरठा हैं। खौड़ की पैदावार में इधर कुछ कमी आगयी थी, पर फिर भी वैज्ञानिकों ने जो नयी खोजें की हैं उन से वहाँ तेल के अनेक स्थानों का पता चला है—कुछ हैरानी नहीं कि आगे चलकर पञ्जाब के भी क्षेत्र विशाल परिमाण में तैल देने वाले सिद्ध हों। पर अभी सब कुछ भविष्य के गहरे अन्धकार में छिपा पड़ा है।

समस्त तेल पाकिस्तान में

भारत का तेल जिन जिन स्थानों में हैं वे स्थान प्रायः सारे के मुस्लिम भारत में ही हैं। ऐसी दशामें हिन्दुस्तान को अपनी औद्योगिक उन्नति के लिये एक बड़ी भारी चीज से हाथ धोना पड़ता है।

औद्योगिक प्रधानतामें मैंगनीज, और क्रोमियम का भी बड़ा हाथ रहता है कारण ऊंची जातिके फौलाद में उक्त दोनों की जरूर पड़ा करती है। फौलाद को सख्त तथा मजबूत बनाने के लिये उसमें मैंगानीज मिलाना होता है। भारतमें मैंगनीज की अच्छी पैदावार है। वास्तव में इधर कुछ सालों में इस सम्बन्ध में भारत की गणना सर्व प्रथम श्रेणी में की जाने लगी है। उदाहरणार्थ, सन् १९३८ में भारत की पैदावार युनाईटेड स्टेटस ऑफ अमेरिका के बाद थी, और भारत के प्रतियोगी दक्षिणी अफ्रीका की पैदावार से दुगुनी के लगभग थी। सन् १९३७ में सबसे अधिक मैंगनीज का कच्चा धातु मध्य प्रान्तों में पैदा हुआ था। भारतकी कुल पैदावार में से ६५·८ सैंकड़ा सी. पी. का था, मद्रास ने १६·२ प्रति सैंकड़ा, बम्बई ने ५·६, बिहार और उड़ीसा ने १·१ प्रति सैंकडा, और मैसूर ने ०·५ सैंकड़ा उत्पन्न किया ये सभी स्थान 'हिन्दुस्तान' में हैं। मैंगनीज को विदेश भेजने के लिये मुख्यतः हिन्दूभारतस्थित नगरों तथा बन्दरगाहों का ही उपयोग होता है। इसमें केवल कलकत्ता एक अपवाद था, पर जब से मद्रास प्रेजीडेन्सी स्थित विजगापट्टम का नया बन्दर बना है तब से कलकत्ताके मुकाबले में हिन्दूभारत को एक बड़ा बन्दर मिल गया है जहांसे चीजें विदेशों को भेजी जा सकती हैं।

स्टीलमें मिलाने के लिये दूसरी मुख्य खनिज धातु है क्रोमियम। इसे लोह के साथ मिला देने से फौलाद में जहां सख्ती तथा मजबूती आती है, वहाँ लोहा पूर्वापेक्षा जंगारप्रूफ भी बन जाता है। क्रोम प्रायः समस्त भारत में थोड़ी तादाद में पायी जाती है पर मुख्यतः यह बलूचिस्तान, मैसूर, बिहार, और उड़ीसा में ही होती है। इसके सम्बन्ध में अभी खोजें पूरी नहीं हो पायी हैं, पर फिर भी ऐसा कहा जा सकता है कि यह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में समानरूप से पाया जाता है।

कीमती धातु

कीमती धातुओं में भारत के सुवर्ण का नाम लिया जा सकता है। मैसूर में कोलार की सोने की खानें हिन्दू भारत में हैं। यहाँ पर सन् १९३७ में २८००० आदमी काम करते थे, और पैदावार थी ३३०७१० टोरी औंस। वास्तवमें मैसूर का यह जिला संसार की सुवर्ण खानों की पैदावार के दृष्टिकोण से एक मुख्य स्थान रखता है। मद्रास प्रेजीडेन्सी के अनन्तपुर जिले में भी सोनेकी खानोंकी विद्यमानता का भूगर्भशास्त्रियों ने पता लगाया है। अभी अनतपुर में कार्य प्रारम्भ नहीं हुआ है।

लोहे से विभिन्न मूल धातुओं में बौक्साईट और एल्यूमिनियम का नाम आता है। इनका बड़ा भाग हिन्दू भारत में ही है। कुछ-कुछ काश्मीर में भी पाये जाते हैं—परन्तु बड़ी तादाद में मध्यप्रान्त, बम्बई और बिहार में ही मिलते हैं। अभी तक भारत के औद्योगिक जीवन तथा प्रगतिपर भारत के बौक्साईट और एल्यूमिनियम ने विशेष असर नहीं डाला है। साधारणतः इनकी खानें भारत में अभी अविकसित दशा मे ही है। फिर भी एल्यूमिनियम की पैदावार और उसके सम्बधित भारत के उद्योगों के विकास के लिये कुछ कम आशायें नहीं हैं। एल्यूमिनियम जो अभी तक भारत में बनता है वह मुख्यतः यहाँ की घरेलू आवश्यकताओं को ही पूरा करता है।

भारत में प्रतिवर्ष ७००० टन ताम्बा खानों से निकलता है। इस की मुख्य खानें उड़ीसा प्रान्त के सिंहभूम जिलेमें मोसाबनी और धोबनी में हैं। ये स्थान भी हिन्दू भारत में ही आते हैं।

[पृष्ठ ३ का शेष]

दौर्भाग्य की बात है कि ऐसे कठिन वक्त पर कायदे आज़म बीमार पड़ गये, और डाक्टरों की सलाह के अनुसार, जबतक वे रोगमुक्त नहीं होजाते मुझ से भेंट नहीं कर सकते। हम दोनों का यथार्थ आन्तरिक समझौता वायसराय के पत्र द्वारा व्यक्त ब्रिटिश सरकार की दृढ़ नकारात्मक अस्वीकृति को स्वीकारोक्ति में बदल सकता है। हम सब को भगवान् से प्रार्थना करनी चाहिये कि कायदे आजम शीघ्रही स्वस्थ होकर मुझसे मिलें और परमपिता हमारे हृदयों पर अपना ऐसा प्रभाव डालें कि हम लोग उचित रीति सें समस्या को हलकर सकें।

हम लोगों के समझौते से प्रभावित होनेवाले सभी दलों को मैं यकीन दिलाता हूँ कि, हम लोग किसी भी ऐसी शर्त पर समझौता नहीं करेंगे जिसमें किसी दलके हित की उपेक्षा होगी या किसी एक दल के साथ ही समझौता होगा। यदि राजाजी के (समझौता) सूत्र में दोष पाये जायेंगे, जैसा कि कुछ हिन्दुओं और सिखों ने दोष सुझाये हैं, तो उसमें संशोधन होसकता है। समस्या का कोई भी हल तबतक चिरस्थायी नहीं होसकता जबतक वह प्रत्यक्ष में ठीक न हो और जबतक कि वह समूचे भारत को मान्य न हो।

बिड़ला क्लब—

शनिवार ता. १-७-४४ के दिन कलकत्ता में तीसरे पहर ५ बजे स्थानीय जैन भवनमें बिड़ला क्लबका प्रथम वार्षिकोत्सव बड़े समारोहके साथ सम्पन्न हुआ। सभापतिका आसन श्री लक्ष्मी निवास बिड़लाने ग्रहण किया। श्री गगन बिहारी मेहता प्रधान अतिथि थे। उपस्थितोंमें सर्व श्री भागीरथ कानोडिया, सीताराम सकरिया' बसन्तलाल मुरारका, मंगतूराम जयपुरिया, बिलास राय केजरीवाल, तुलसीराम सरावगी, देवदत्त मित्र, हीरालाल सोमानी, उमराव प्रसाद अमेरिया, मि० एन. सी. सेन और नवलकिशोर अग्रवाल थे। आरम्भमें क्लबके सभापति श्री गङ्गाप्रसाद भोतिका ने क्लबके प्रथम वर्षके जीवनकी विविध कार्यवाहियों पर प्रकाश डालते हुए एक संक्षिप्त भाषण दिया। क्लब द्वारा संचालित कतिपय क्रीड़ा प्रतियोगिताओंके विजेताओं और बङ्गाली स्टाफ द्वारा अभिनीत चन्द्रगुप्त नाटकके सफल अभिनेताओंको श्री मेहताजीके हाथसे पुरस्कार प्रदानके बाद समारोहके सभापति श्री बिड़लाजी ने सुन्दर संक्षिप्त भाषण दिया जिसमें क्लब सदस्यों को संसार की तीव्र प्रगति के साथ चलते रहने की क्षमता अर्जन करने को कहा। श्री मेहताजी ने अपने भाषण में क्लब जीवन को समुन्नत करने के विविध ढंगों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि अवकाश के समय का सदुपयोग करने का क्लब अच्छा साधन है बशर्ते कि वह पाश्चात्य दुर्गुणों से अपने को मुक्त रख सके। बिड़ला स्टाफ के श्री बादल चटर्जी ने अपने मैजिक तथा श्री गङ्गाधर मुखर्जी और रेडियो आर्टिस्ट श्री सुधीर चक्रवर्ती ने अपने सुन्दर गान द्वारा उपस्थितों का मनोरंजन किय क्लब के सेक्रेटरी श्री द्वारका प्रसाद टावरी धन्यवाद प्रदान के बाद समारोह समाप्त हुआ श्री महावीर जैन और श्री टावरीजी आग सज्जनों की अभ्यर्थना और कार्य संचालन बड़ी तत्परता के साथ संलग्न देखे गये।

शब्द चित्र

कागज भुवण रा झरोखा में उभी श कामिनी स्नेहासिक्त आख्या बिछाय रही प्रीतमरा प्रेममारग पर, ओर कलम सखी गागा कर के रही है—

'बरसां रा बिछड्या राजन् घर आसी। मेंदी राच्या हाथ में धीरा दियो लेणे उजाल पाड रही है भूल्या–भटक्या साजण रा भक्ति मारग पर, ओंर प्रेमसखी सूं गागा कर रही है—

'मीरां नणंदल रा वीरा घर आसी। पारिजात सूं कोमल भाव फूल थिरक रया स्वामी दर्शन रा कल्पनास्पर्श सूं ओर, विचार-सितार री तारा छेड छेडने गाय रही है—

'बोली रा मीठा वाङ्मय घर आसी।'

यूं गावता गावता, साहित्य साजण चिंतन में मगन दर्शनातुरा शब्दकामिनी पेलांरा दिन याद आया; 'नीला घोडारा अस वार री 'जय एक लिंगजी' री गंभीर ध्वनि-स्मृति सूं भाषा भामिनी रा रोम रोम स्फूर्तिमा हूय कर सताल नृत्य करती हुई वा गाव लागी—

'भारत रा प्यारा प्रीतम घर आसी।
केशरिया धारी क्षत्रिय घर आसी।'

सौ. **नंदुबाई ओसवाल**, पूना

विश्व संघ की ओर

लेखक

'भारतमें अंग्रेजी राज्य' आदिके रचयिता

और

पंडित सुन्दरलाल
भगवानदास केला

संसार की महत्वपूर्ण समस्याओं पर विचार; मूल्य ३)
देशी राज्य शासन; सजिल्द मूल्य ३॥)

भारतीयशासन	१॥)	ब्रिटिश साम्राज्यशासन	१)
मातृवन्दना	।≈)	भारतीय अर्थशास्त्र	३)
नागरिक शिक्षा	॥≡)	साम्राज्य और उनका पतन	१।)
भारतीय जागृति	१।)	हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ	॥।≈)
निर्वाचन-पद्धति	॥−)	पूर्वकी राष्ट्रीय जागृति	१॥)
अपराध चिकित्सा	१॥)	भारतीय सहकारिता आन्दोलन	२)
भारतीय राजस्व	॥।≈)	कौटिल्यके आर्थिक विचार	॥।≈)
अर्थशास्त्र शब्दावली	१)	भारतीय विद्यार्थी विनोद	॥≈)
राजनीति शब्दावली	।॥)	नागरिक कहानियाँ	॥≈)
श्रद्धांजलि	॥।=)	अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य	॥।)
विश्ववेदना	॥।=)	भव्य विभूतियाँ	॥≈)

पुस्तक प्राप्तिका पता—

भगवानदास केला, भारतीय ग्रन्थमाला; दारागंज [इलाहाबाद]

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B, at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India
Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

एक प्रति का ।≈)

[अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र]

Reg. No. B 4441

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी
श्री. राधाकृष्ण लाहाटी

— प्रवर्तक —
स्व० भागीरथदासजी भूतड़ा

कार्यालय
अली चेम्बर्स, डीन लेन,
फोर्ट बम्बई

वर्ष ३५, संख्या ७]

बम्बई ता. ७ अगस्त १९४४

[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

तीसरी ताकत सांप्रदायिक एकता में बाधक

गतिरोध नहीं मिटाना चाहती

गुप्त कार्यवाही को मैं पसंद नहीं करता

देश रचनात्मक कार्यक्रम अपनाये

——महात्मा गांधीकी अपील

गत २६ जुलाई की रातमें लार्ड सभाके बहसके सम्बन्धमें महात्मा गांधीने प्रेस प्रतिनिधिसे कहा,—'भारतीय समस्याके सम्बन्धमें होनेवाली लार्ड सभा की बहसको मैंने गौरसे पढ़ा है। मैं मानता हूं, कि इससे मुझे बडी निराशा हुई। लार्ड मुन्स्टरं ने शुद्ध रूपसे मेरे प्रस्तावोंका संक्षिप्त विवरण दिया है। यह इतने क्रियात्मक सुझाव हैं कि मैं इसे कभी सोच ही नहीं सकता था।

यदि मैत्री-पूर्ण विचार-विनिमयके लिये भी मेरे सुझाव आधार-स्वरूप स्वीकार नहीं किये गये और कांग्रेसकार्यसमितिके उन सदस्योंसे भी मिलने की इजाजत नहीं दी गयी—जो अधिकार पूर्वक बोलनेका हक रखते हैं, तब मैं अनिच्छापूर्वक इस नतीजेपर पहुंचता हूं, कि ब्रिटिश सरकार उस मसलेको हल करना नहीं चाहती, जिसे मैं गत्यवरोध मानता हूं और सरकार इसे ऐसा नहीं मानती। उलझन मिटानेके लिये चाहे जितना भी सच क्यों न कहूं, पर मैं जानता हूं, कि मैं कुछ नहीं कर सकता बशर्ते ब्रिटिश सरकार भी इसके लिये अपना रुख न दिखाये। मेरी बड़ी इच्छा थी, कि बहसमें साम्प्रदायिक मतभेद की चर्चा न की जाती। मैं सदासे कहता रहा हूं और आज भी कहता हूं कि यह मतभेद तब तक बना रहेगा जबतक दोनोंके शोषण के लिये एक तीसरा दल शासन करता रहेगा। जिसे मैं सच मानता हूं, वही मैंने कहा है। मेरे लिये परिस्थिति इतनी गम्भीर है कि मैं इसे छिपा नहीं सकता।

गुप्त कार्य वंद हो

गत २८ जुलाई को महात्मा गांधी ने निम्न लिखित आशय का वक्तव्य दिया था। तोड़-फोड़ और ध्वंसात्मक कार्य कर जायदाद को क्षति पहुंचाना पूर्ण हिंसा है। छिपी कार्यवाही सक्रिय अहिंसात्मक नीति के लिए घोर बाधा है अस्तु जो लोग गुप्त रूपसे काम करते हों वे वाहर आजायें और जेल जानेका खतरा उठायें।

अपने वक्तव्यके दौरानमें गांधीजी ने कहाः—मुझ से मिलनेवाले इस बातको पूछते हैं, कि क्या गुप्त कार्यवाहीको मैं पसन्द करता हूं। इस गुप्त कार्यवाहीमें तोड़फोड़, ध्वंसात्मक कार्य गैरकानूनी पर्चोंका छापना आदि है।

मुझ से यह भी कहा गया है कि कुछ कार्यकर्ता गुप्त कार्यवाही न करते, तो क्या करते। कुछ लोगों का कहना है, जायदादका नष्ट करना—जिस में यातायातके साधनोंको अस्त-व्यस्त कर देना है, बशर्ते उससे मनुष्योंके मारे जानेका खतरा न हो, तो क्या वह अहिंसात्मक कार्य न समझा जायेगा। इसके समर्थनमें दूसरे देशोंके उदाहरण उपस्थित किये गये और कहे गये हैं, कि वहां इससे भी निकृष्ट कार्य किये गए हैं। इसके जवाब में मेरा कहना है कि जहां तक मैं जानता हूं किसी राष्ट्रने अपनी स्वतन्त्रताके लिये सत्य और अहिंसाका पूर्ण रीतिसे उपयोग नहीं किया।

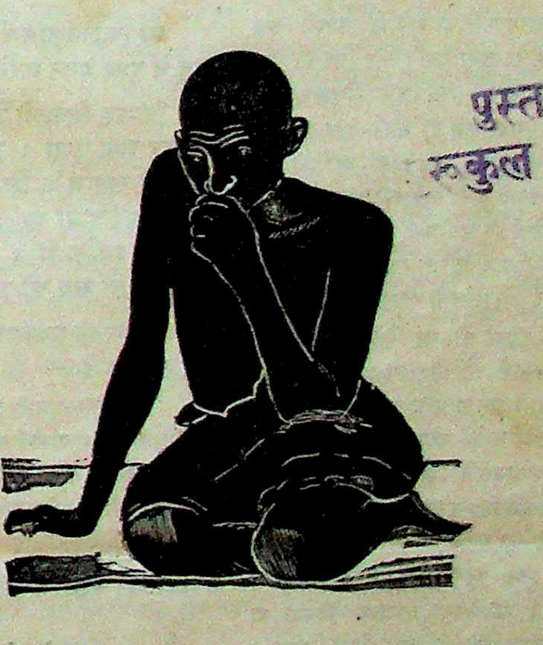

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

इस मापदण्डको देखनेसे मैं निस्संकोच भावसे आपसे कहता हूं कि निर्दोष गुप्त कार्यवाही स्वतः अहिंसात्मक नीतिमें कोई स्थान नहीं रखती। तोड़-फोड़, चीजोंका नष्ट करना आदि स्पष्ट हिंसा है। यद्यपि यह कहा जाता है कि इस नीतिसे जनता का ध्यान आकृष्ट हुआ है और उनमें उत्साह आया है, किन्तु मेरी स्पष्ट यह राय है, कि इससे समूचे आन्दोलनको ठेस लगी है। मैं क्रियात्मक कार्यक्रममें पूर्ण आस्था रखता हूं और वे कार्यक्रम यह हैं— (१) साम्प्रदायिक एकता, (२) अस्पृश्यता मिटाना, (३) मादक वस्तु निषेध, (४) खादी, (५) गांवके अन्यान्य उद्योग, (६) गांवका स्वास्थ्य (७) नयी या बुनियादी शिक्षा, (८) बालिगोंको शिक्षा देना, (९) स्त्रियोंकी उन्नति, (१०) तथाकथित आदिम निवासियोंकी सेवा, (११) स्वास्थ्य और सफाईकी शिक्षा, (१२) राष्ट्रभाषाका प्रचार, (१३) अपनी मातृभाषाके प्रति प्रेम, (१४) आर्थिक समानताके लिये उद्योग।

यदि इनको समूचा देश कार्यान्वित करनेमें लग जाये, तो हमलोग शीघ्रातिशीघ्र अपने ध्येयपर पहुंच जायें। जो कार्यकर्त्ता अभी भी गुप्त कार्यवाहीमें लगे हुए हैं, मैं उनको सलाह देता हूं, वे बाहर निकल आयें और जेल जानेका खतरा उठायें।

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० ७ अगस्त १९४४

लोकमान्य तिलक की पुण्यतिथि

१ अगस्त के दिन समग्र भारत में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की चौबीसवीं पुण्यतिथि मनायी गयी। सन १९२० की प्रथम अगस्तको भारत के राजनैतिक आकाश के उस प्रचण्ड सूर्य ने अपनी भौतिक लीला संवरण की थी।

ब्रिटिश राज्य की कारगुजारियोंके विरुद्ध जन-जागृति पैदा करनेका अति कठिन कार्य सम्पादन करनेके सारे गुण उनके स्वभावमें ही थे। पहला गुण धैर्यका था। नेताकी सेवा पवित्र कार्यमें है; यह ईश्वरको मान्य है फिर उसके लिये इहलोकके सत्ताधारी कुछ भी मानें, यही उनकी दृढ़-निष्ठा थी। इस कर्मनिष्ठाके लिये कैदकी सजा सुनाये जानेपर जो उद्‌गार उन्होंने निकाले थे, वह किसीके मुंहसे भी निकलना संभव नहीं—"इहलोककी सत्ताको जवाब तलब करने के लिये और एक महान शक्ति है और उसे मेरा कार्य पसन्द होनेसे बन्दीगृहमें मेरा वह कार्य अधिक होगा।" तिलकको अपने कार्यमें कितनी अगाध श्रद्धा थी, यह बात इन शब्दोंसे प्रकट होती है। यह शब्द उचारण करते ही थोड़े ही समयमें उन्हें कैदखानेमें ले जाया गया। ५२ वर्ष की उम्र यानी वृद्धावस्था, फिर शरीर रोगग्रस्त, बच्चे अल्पायु, सिरपर कर्ज का भार—ऐसी स्थितिमें छः वर्ष की सजा! अन्य किसी व्यक्तिको ऐसी हालतमें इतनी लम्बी अवधिकी सजा होती, तो उसकी छाती ही फट जाती! परन्तु लोकमान्य तिलकको गाड़ीमें बैठते ही गहरी नींद आयी। यह उनके धैर्य और विवेककी परीक्षा थी।

लो० तिलक को सर वैलेन्टाइन शिरोलने बड़ा खतरनाक और भारतीय असंतोषका जनक लिखा था। उसका प्रतिवाद करते हुए हम भी यह स्वीकार करनेमें लोकमान्यका गौरव समझते हैं कि दर असल वे 'भारतीय अशांतिके जनक थे!' कांग्रेसकी शुरुआतके दिनोंमें कांग्रेसके नरमदली नेता प्रार्थना, आग्रह और अनुरोध द्वारा स्वराज्य प्राप्त करनेके कोरे प्रस्ताव पास किया करते थे। लोकमान्य तिलकका विश्वास था कि स्वराज्य मांगनेसे नहीं मिला करता। दरअसल कुर्बानी करके आजादी हासिल की जाती है। इसीलिये उन्होंने यह नारा लगाया था कि—'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम उसे प्राप्त करेंगे!' (Swaraj is our Birth Right!) लोकमान्य तिलकके धैर्य और विवेकशीलताकी अनेक उत्साहप्रेरक बातें हैं। नेताका धैर्य ही एक प्रकारका जन-बल होता है। यदि नेता संकट कालका उग्र-स्वरूप अनुभव करके धैर्यहीन हो जाता है तो जनोत्साहका अवसान हो जाता है और उसके गिर जानेमें देर नहीं लगती। संकटके समय नेताके दुस्साहससे जनताके पीछे हटनेका परिणाम बहुत दूरतक होता है और पीछे हटनेसे होनेवाली हानि काफी असेंतक जनताको भोगनी पड़ती है। लोकमान्य तिलकको अपने जीवनमें महान निराशामय परिस्थितिसे अविराम संघर्ष करना पड़ा। उनके उत्साह, उनके गीता-अध्ययन के तत्वज्ञानने उन्हें सदैव स्थिर बनाये रखा। निराशाने उनके हृदयमें कभी घर नहीं किया। फलकी आशा छोड़कर केवल कर्त्तव्य-पालन करनेवाले व्यक्तिके जीवनमें निराशा कभी बाधक नहीं हो सकती। जिस व्यक्ति को ऐसी आशा है, उसके पास निराशा कभी फटक नहीं सकती। लोकमान्य तिलकमें प्रखर बुद्धि थी, उसे उन्होंने देशको अर्पित कर दिया, यह उनकी विशेषता थी। विद्वत्ता और कर्तव्यपालन बहुधा सहचारिताका द्योतक है। लोकमान्य तिलक विद्वान और कर्तव्यपालक दोनों थे। निष्कलंक चारित्र्य ही उनका महान और श्रेष्ठतम् गुण था। सम्पत्ति, बुद्धि, विद्वत्ता अथवा प्रथम श्रेणी की कार्य करनेकी चतुरता न होनेपर भी काम चल सकता है, लेकिन शील-चरित्रके बिना जनतामें आदर नहीं हो सकता। विशुद्ध-शील ही लोकमान्य तिलकका विलक्षण प्रभावशील गुण था।

हमारा देश

(ले०-श्री बद्रीप्रसाद तोष्णीवाल, प्रयाग)

[गताङ्कसे आगे]

प्राचीन कालमें भारतीय वाणिज्य जाल दूर दूरके देशोंमें फैला हुआ था। यहाँ की बनी हुई वस्तुएँ आदर्श मानी जाती थीं और उनकी जबर्दस्त मांग थी। जब मुसलमानों ने मिश्र पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया तब योरपवासियों को भारत का सामुद्रिक मार्ग ढूँढ़ निकालने की चिंता हुई। स्पेन की तरफ से कोलम्बस और उसके कुछही बाद पुर्त्तगाल वालों की तरफसे वास्कोडिगामाने इस कार्यको करने का बीड़ा उठाया जिसमें वास्कोडिगामा सफल हुआ। जिस दिन वास्को डिगामा भारतवर्षके खोज की शुभ सूचना लेकर पुर्त्तगालकी राजधानी लिसबन पहुंचा उस दिन उसके स्वागतमें लिसबनको खूब सजाया गया और बडी जबर्दस्त आतिशबाजियां व रोशनी हुई। सारे नरनारी खुशी से फूले नजर आ रहे थे। उन दिनोंमें भारतकी आपसी फूटने विदेशी व्यापारियों को यहां पर अड्डा जमाने में साथ दिया। व्यापारियों की इसी कम्पनी ने हमारे देश के हरे भरे व्यापार को जिस निर्दयता से नष्ट कर दिया वह किसी से छिपा नही हैं। ब्रिटेन में भारतीय केलिको (Calico) का व्यवहार सन १७०१ में कानूनन जुर्म करार दे दिया गया। यह घटना उन दिनों में भारत के बढ़ते हुये व्यापार का एक सुन्दर उदाहरण है। सन १८१५ में यहां से १३,००,००० पौं. का सूती कपड़ा इंगलैण्ड को भेजा गया। बाद में धीरे २ जैसे २ अंग्रेजों का पैर भारत वर्ष में जमा वैसे ही यहां का व्यापार कुचल दिया गया। कपड़े का निर्यात तो दूर रहा, यहां पर ब्रिटेन से कपड़ों से लदे हुए जहाज आने लगे। सौभाग्य से अब हम लोग इस तरफ सम्हल गये हैं। आज दिन हमारा देश अपनी आवश्यकता से कुछ ही कम सूती कपड़ा स्वयंही तैयार कर लेता है। यहां पर ३९५ मिलें चल रही हैं जिनमें करीब ५ लाख आदमी काम करते हैं। इन मिलोंमें करीब ४५० करोड़ गज कपड़ा बनता हैं। किंतु भारत वर्ष को प्रति वर्ष ६५० करोड़ गज कपड़े की आवश्यकता होती है। १५० करोड़ गज़ कपड़ा हाथ से और छोटी २ मशीनों सें तैयार किया जाता हैं जिससे करीब ४० लाख मनुष्यों की जीविका चलती है। अतः हम लोगों को दूसरे देशों से सिर्फ २५ करोड़ गज कपड़ा मंगवाना पड़ता है जिस की पूर्ति इंग्लैंड और जापान करते हैं।

भारत माँ के गर्भ में अभी अतुल संपत्ति खनिज पदार्थ के रूप में छुपी पड़ी है। इस खज़ाने को वह अपने लाड़ले पुत्रों के लिये सदैव खोलने को तैयार हैं यदि कोई इस ओर चेष्टा करें। आज दिन करीब ३०५,००० भारतवासी इस व्यवसाय में लगे हुए हैं। प्रति वर्ष करीब २८ करोड़ रुपयों का खनिज पदार्थ निकलता है। वैसे तो भारतवर्ष में सभी प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं किंतु मेंगनीज, कोयला और मोड़ल (Mica) अधिकता से निकलता है। मेंगनीज धातु के खजाने में हमारे देश का नंबर रूस के बाद आता है। कोयले के उत्पादन में भारत को संसार में नौवाँ स्थान मिलता है। यहाँ की मोड़ल की खानें तो संसार प्रसिद्ध हैं।

आज कल छोटे बड़े सभी कारखाने विद्युत शक्ति (Electricity) से चलाये जाते हैं, जिसे पैदा करने के लिये dynemo को चलाना पड़ता है। Dynemo चलाने में कोयला खर्च होता है। कोयले की जगह Dynemo चलाने के लिये जल प्रपात काम में लाये जा सकते हैं। भारत वर्ष जल से शक्ति पैदा करने वाले देशों में तृतीय हो सकता है। प्रयत्न करने पर आसानी से २७० लाख Horse power जल शक्ति मिल सकती है।

इतनी संपत्ति के होते हुए भी हमारा देश दरिद्र है इसका एक मूल कारण इस देशकी देनका उपयोग न होना है। किन्तु प्रश्न यह उठता है कि इसको कौन करे!!

श्री किशनलालजी लाहोटी के देहावसान पर

श्रद्धेय जाजूजी, श्री रामकृष्णजी धूत, माननीय बियाणीजी के शोकोद्गार

श्री किशनलालजी लाहोटीके स्वर्गवास पर श्रद्धेय श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू ने दुःख प्रगट करते हुए अपने वक्तव्य में कहा है—

"कराड़ निवासी श्रीयुत किशनलालजी लाहोटी के स्वर्गवास की खबर जानकर दुःख हुआ। उनका हमारे बीच से चला जाना बम्बई प्रान्त के माहेश्वरी समाज के लिये बड़ा आघात है। उन्होंने समाज को कई प्रकार से लाभ पहुँचाया था। वे बड़े मिलनसार, उत्साही, और त्यागपूर्वक सेवा करनेवाले व्यक्ति थे। उनका जीवन दूसरों के लिये शिक्षाप्रद था। मृत्यु के सामने तो सब की लाचारी रहती है।"

माननीय श्री बृजलालजी बियाणी ने श्री किशनलालजी लाहोटी के निधन पर शोक प्रकट करते हुए लिखा है:—

"श्री किशनलालजी उर्फ भाऊसाहब लाहोटी के स्वर्गवास के समाचार से मार्मिक व्यथा हुई। महाराष्ट्र के राजस्थानी समाज ने एक हीरे को खोया है। उनका निधन सार्वजनिक हानि है। मुझे उनके स्वभाव, उनकी लगन, नम्रता तथा मिठास का स्मरण है। मेरी श्रद्धांजलि तथा उनके कुटुम्बियों के प्रति समवेदना है।"

श्री रामकृष्णजी धूत सभापति अ. भा. माहेश्वरी महासभाने स्व. किशनलालजी लाहोटी के शोक संतप्त परिवार के प्रति समवेदना प्रकट प्रकट करते हुए एक तार भेजा है।

अहमदनगर में शोक सभा

गत १३ जुलाई को अहमद नगर के सभी राजस्थानी भाइयों की एक सभा हुई जिसमें निम्नलिखित शोक प्रस्ताव पास हुए:—

(१) अहमद नगर के राजस्थानी भाइयोंकी यह सभा कराड निवासी श्रीमान् भाऊ साहेब किसनलालजी लाहोटीके आकस्मिक निधनपर शोक प्रकट करती हुई परमपिता परमात्मासे प्रार्थना करती है कि वह उनकी आत्माको चिर शांति प्रदान करें। उन जैसे समाज के कर्णधार के निधनसे समाजकी बडी क्षति हुइ है ऐसा समझती हुई यह सभा उनके कुटुंबियोंपर आयी हुई इस आपत्तिमें हार्दिक संवेदना प्रकट करती है।

(२) अहमदनगर के मारवाड़ी विद्यार्थी भुवन की यह सभा पू. भाऊसाहेब किसनलालजी लाहोटी के एकाएक स्वर्गवास पर शोक प्रकट करती हुई उनकी आत्माको शांति मिले ऐसी परमात्मासे हार्दिक प्रार्थना करती है! और उनके कुटुंबियोंपर आयी हुई इस आपत्तिमें सहभागी हैं!

चंपालाल झंवर,
अ. ला. शो. सभा, नगर.

एशिया में हमारा भविष्य

(लेखक—डेमरी वेस)

दि सैटरडे ईवनिंग पोस्ट के संयुक्त सम्पादक मि. डेमरी वेस अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिके विशेषज्ञ हैं। आपने इस लेख में बताया है कि एशिया में अमेरिकाके स्वार्थ भविष्य में कैसे सुरक्षित रह सकते हैं।—संपादक

पर्ल हार्बरके बाद अमेरिकनों के दिमागमें यह बात भरने की कोशिश की गयी कि पहले हिटलरको पराजित करना चाहिए। इसके लिए प्रशांत की सभी हरकत स्थगित करने की आवश्यकता थी। कहना न होगा कि कुछ अमेरिकन। विशेषतया वे जिनका कि यूरोप सम्बन्ध है, यह विश्वास करने लग गये कि हमारे लिए एशिया की अपेक्षा यूरोप अधिक महत्वपूर्ण है।

मुझे यह अनुमान सर्वथा अयौक्तिक जान पड़ता है क्योंकि यह बहुत संभव है कि युद्धोत्तर पोलैण्ड या यूगोस्लाविया अथवा फ्रांस या यूनान में होनी वाली किसी भी घटना की अपेक्षा अमेरिका का प्रत्यक्ष वास्ता प्रशांत अचल के भविष्य से अधिक हो। यह क्यों संभव है? क्योंकि यूरोपियन हमारी युद्धोत्तर सहायता या बिना सहायताके अपने प्रश्न हल करने जा रहे है। रूसियों, अग्रेजों फ्रेञ्चों; वेल्जिनों एवं अन्य दूसरों ने इसे बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है। यूरोप के हमारे दोनों मित्र राष्ट्रों—ब्रिटेन और रूस का हम अमेरिकनों की अपेक्षा यूरोपके भविष्य से अधिक वास्ता है, और इसीकारण उन्होंनें कई बातोंकी घोषणा कर डाली है, हम आज भी उन बातों की घोषणा करने से हिचकिचाते हैं। किन्तु प्रशान्त में यह बात नही है। वहां हम भयंकर और स्थायी कर्तव्य वरण कर चुके हैं। हो सकता है, हममें से कुछ यह ठीक ठीक न समझ सकें कि हमनें अबतक क्या किया है। न केवल हमने जापान को पराजित करने का बीडा उठाया है वरन सामरिक मित्रराष्ट्र के रूप में जापान का अस्तित्व मिटने के बाद एशिया में एक आदर्श शासन व्यवस्था स्थापित करने की जिम्मेदारी भी स्वीकार कर चुके हैं।

अधिकतर अमेरिकन इस बातपर सहमत हैं कि जापान को रौंदे बिना हम मान नही सकते। किन्तु इसके बाद क्या? यह एक प्रश्न है जिस पर हमने अबतक गंभीरतापूर्वक विचार नहीं किया है। काहिरा सम्मेलन नें अनेक घोषणाओं द्वारा इस पर प्रकाश डालनेका प्रयास किया।

उसमें (काहिरा सम्मेलन) प्रतिज्ञा की गयी कि जापान से उस के शाही इलाके छीन लिये जायेंगे, जापानियों को खास जापान के सीमित क्षेत्रमें रहने के लिये बाध्य किया जायेगा, एवं कोरिया को अन्ततः स्वाधीनता दे दी जायगी। यह भी अनुमान लगाया गया कि चीनी इलाका न केवल ज्यों का त्यों बना रहेगा बल्कि वह बढ़ाया जायगा। किन्तु जापानियों को अपने ही द्वीपों म बने रहने की गारण्टी देने वाला कौन है, जब कमजोर और अशिक्षित कोरियावासी स्वायत्त शासन के लिए तैयारी करते होंगे तब उनकी स्वाधीनता की गारंटी कौन करेगा? कौन इस बातका आश्वासन देने जा रहा है कि चीन की प्रादेशिक अखण्डता कायम रहेगी? इन कामों को महान सामरिक एवं आर्थिक शक्ति से सम्पन्न राष्ट्रही कर सकते हैं। काहिरा सम्मेलनमे अपनी सुदूर पूर्वीय योजना यह मानकर बनायी है कि चीन विश्वके चार महान राष्ट्रोंमें से एक है।

मैं चीनमें १० वर्ष रहा हूं और यह जानता हूं कि चीनी महान पुरुष हैं। किन्तु मुझे यह भी पता है कि चीनी राष्ट्र में एक महान राष्ट्र होनेके बहुत ही कम गुण हैं। चीनके पास न आधुनिक ढंग की पैदल सेना है, न जल सेना है और न गगन सेनांही है। बड़े बड़े उद्योग धंधे तो है ही नहीं, छोटे छोटे भी बहुत कम हैं। कोयला, लोहा, तेलजैसी—प्राकृतिक सम्पदाका भी उसके पास घाटा ही है। जब तक ये सब चीज न हों तबतक कोई राष्ट्र आधुनिक, औद्योगिक राष्ट्र बन ही नही सकता। उसके पास अन्य साधन भी उतने नही हैं जितने कि लोग समझते हैं।

इस समय चीन के १० प्रति शत अधिवासी लिखना पढ़ना जानते हैं कृषि बहुत पुराने ढर्रे पर की जाती है। जंगल एक प्रकार से नहीं ही हैं। बाढ नियंत्रण व्यवस्था इतनी रद्दी है कि कुछ वर्षों के अंतर से भीषण बाढ़ से अति व्यापक अकाल पड़ता रहता ह। सड़कें और रेल्वे लाइनें कम और दूर दूर हैं। सफाई की व्यवस्था अच्छी नहीं है। प्लेग का अकसर दौरदौरा रहता है। और सर्वोपरि जापान का मुकाबला करने की बात के सिवाय आज चीनी ऐक्य बद्ध नहीं हैं। मार्शल चांग काई शेक की सरकार ने चीनी कम्यूनिस्टों के साथ अनिच्छा से समझौता कर रखा है। किन्तु उभय पक्ष एक दूसरे को घृणा की दृष्टि से देखते हैं। यह घृणा इतनी प्रचण्ड है कि जापान का दबाव हटते ही पुन गृह. युद्ध न छिड़ेंगे यह नहीं कहा जा सकता।

चीन की वर्तमान परिस्थितियों की आलोचना करते हुए व्हाइट हाऊस के घनिष्ट सम्पर्कमें रहने वाले वाशिंगटन के संवाददाता अर्नेस्ट लिंडले ने अभी हाल मे लिखाथा स प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट ने बराबर इस दलीलको आडे हाथो लिया है कि चीन प्रथम श्रेणी का राष्ट्र नहीं है। उन्होंनें इस दलील के मुकाबिले ये दलीलें दी हैं:—

(१) चीनको प्रथम श्रेणी का राष्ट्र मानना इस लिए आवश्यक है जिससे कि प्रशांतका युद्ध गोरी और काली जातियों के संघर्ष का रूप न ले।

(२) चीन दो एक पीढ़ियों में प्रथम श्रेणी का राष्ट्र हो जायगा। यह दूरदर्शी राजनीतिज्ञता है।

मैं मि. लिण्डले से सहमत हूं कि यह दूरदर्शी राजनीतिज्ञता है। किन्तु यह कहने का साहस करता हूं कि अत्यधिक दूरदर्शी राजनीतिज्ञता है। चीनके प्रथम श्रेणी का राष्ट्र बननेके पूर्व-उन एक दो पीढ़ियों में ऐसी क्या बात होने जा रही है? चीन विषयक वर्तमान तथ्यों को छिपाना में भयंकर भूल मानता हूं। उन्हें असंगत कहकर नही उड़ाया जा सकता।

मैं इसे भूल इस लिए मानता हूं क्योंकि इससे अमेरिकनों के अंदर यह धारणा बनती है कि सुदूर पूर्व में हमें केवल जापान को पराजित करना है और तब हम अपने चीनी मित्रों को शत्रु के हाथ से लेकर प्राप्य वस्तु दे सकेंगे। यह भूल इसलिए है, कि इससे वरण किए हुए एशिया के हमारे कर्तव्यों के वास्तविक स्वरूपका कोई आभास नहीं मिलता।

प्रशांत अंचलमें हमने जो कर्तव्य अपना रखा है वह एक प्रकार की राष्ट्रगत राजनीति है, क्योंकि काहिरा में सुदूर पूर्व में युद्धोत्तर शासन की जो रूपरेखा बनायी गयी थी उसमें संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और ब्रिटिश साम्राज्य ने अरक्षित एशियाई राष्ट्रों के भविष्य की गारंटी की थी। सोवियट रूस ने तबतक के लिए एशिया में अपनी स्थिति का स्पष्टीकरण करना स्थगित कर रखा है जबतक कि यूरोपमें युद्ध समाप्त नहीं हो जाता। आज हमें इस बातसे आशा होती है कि सोवियट और ब्रिटिश साम्राज्य चीन की प्रादेशिक अखण्डता का सम्मान करने, जापानियों को अपने ही टापुओं में बने रहने एवं कोरिया को पथप्रदर्शन करने में; ताकि वह अन्ततः स्वतंत्र हो जाय, हमारे साथ हार्दिक सहयोग करेंगे।

१९२२ में जब हमने चीनी इलाकों में न घुसेन के लिए नौ राष्ट्र संधि में शामिल होनेके लिये जापानियोंको तैयार किया तो उस समय हमने यह समझा कि सुदूर पूर्वके भविष्य का निपटार करनेमें हम सफल हो गये। तब हमने यह विश्वास कर भूल की कि इस समझौते के कार्यान्वित होनेके लिए अमेरिकन सामरिक शक्ति के प्रयोग की आवश्यकता नहीं है। हमने प्रशांतमें अपनी सामरिक शक्ति घटा दी, यद्यपि वह पहलेही से अपर्याप्त थी!

यदि हम वह गलती फिर करेंगे, तो इसका दोष हमें स्वयं अपने मत्थे मढ़ना होगा। क्योंकि जापान चाहे, जितनी बुरी तरह से हराया, या निरस्त्र किया जाय, वह है एक सामरिक राष्ट्र और चीनकी अपेक्षा युद्ध कलामें अधिक प्रवीण है। युद्ध समाप्ति के बाद चीन बिल्कुल अरक्षित स्थितिमें रहेगा। हमें इस बातका विश्वास नहीं है कि वह खुद अपनी रक्षा कर सकने में समर्थ हो सकेगा—सुदूर पूर्वके अन्य देशों का शासन प्रबंध करना तो बहुत दूर की बात है। चीन के पास आवश्यक सामरिक और आर्थिक शक्ति नहीं है और दीर्घ काल तक यह शक्ति उसमें न आ सकेगी।

अस्तु एशिया में हमारा परिकल्पित युद्धोत्तर शासन केवल अमेरिका, ब्रिटेन और रूस के आपसी दृढ़ समझौते द्वारा कायम रखा जा सकता है। आज से नहीं लगभग एक शताब्दी से अमेरिका चीन की अखण्डता और व्यापार मे मुक्तद्वार की नीतिके लिए प्रयत्नशील रहा है। किन्तु सामरिक शक्ति का प्रयोग करने में आनाकानी करने का ही यह नतीजा है कि जापान ने चीन पर चढाई कर दी और उसको बुरी तरह पीट रहा है। प्रशांत में और एशिया में रूस, ब्रिटेन, अमेरिका एवं अन्य यूरोपीय राष्ट्रोंके स्वार्थ हैं। अस्तु सभी राष्ट्रों को अपने अपने स्वार्थों को कायम रखने या उन्हे पुनः प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना होगा। जहां तक अमेरिका का सम्बन्ध है, उसे सामरिक एवं नौशक्ति कायम रखनी होगी।

माहेश्वरी सहायता—

गंगा बिसनजी मुराड़िया जौहरी बाजार, आगरा से रु. ६-८-०।

बिडलाछात्रवृत्ति

श्री लूणकरणजी गांधी, अम्रावतीने बिडला-छात्र वृत्तिके रूपमें प्राप्त १६० लौटा दिये हैं।

गौरवपूर्ण सफलता

श्री दमयंती देवी लाहोटीने युक्त प्रान्त की वर्नाक्यूलर अपर मिडिल परीक्षा में इस वर्ष अत्यन्त उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। आप प्रथम श्रेणी में अंगरेजी व अर्थमेटिक विषयों में विशेष योग्यता (Distinction) के सहित उत्तीर्ण हुई हैं। आपकी आयु केवल १२ वर्ष ४ मास है। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि आपने युक्तप्रांत की कुल छात्राओं में तृतीय स्थान (position) प्राप्त किया है, और माहेश्वरी छात्राओं में सर्व प्रथम हैं। आप आर्य कन्या पाठशाला नजीबाबाद की छात्रा थीं।

"आप नजीबाबादके स्व. ला. हरशरणजी लाहोटी की, जो माहेश्वरी समाज के एक प्रतिष्ठित एवं सेवा परायण व्यक्ति थे, सुपुत्री हैं। और ला सत्येन्द्रकुमार लाहोटी की जो अपने पू. पिताजी की भांति सेवा परायण नवयुवक हैं, छोटी बहिन हैं।

कुमारी शांता चन्दनमल वेदमुथा सासवडने इस साल बम्बई विश्वविद्यालय की मैट्रिक परीक्षा द्वितीय श्रेणीमें पास की है। आपको गत सत्याग्रह आंदोलन में चार मास की सजा हुई थी। महाराष्ट्रके ओसवाल समाजमें आप इस साल प्रथम महिला हैं, जिन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की हो।

मि० विलियम सी. बुलिट

सन १९१९ की वार्साई की संधि का

इस लेखके लेखक मि० विलियम सी. बुलिट सन् १९१७ में अमेरिकन स्टेट डिपार्टमैन्ट के असिस्टैन्ट नियुक्त किये गये थे। वे फिलैडैल्फिया के "पब्लिक लैजर" के ५ साल तक विदेश संवाददाता का काम करते रहे हैं। सन् १९१९ में आप भी सन्धि-सम्मेलन में शामिल हुए थे, और उनदिनों कर्नल हाऊस के नीचे काम करते थे। आपको सन्धिकाल की समस्त घटनाओं व चक्रों का बड़े नज़दीक से अध्ययन करनेका मौका मिला था। अपने उस अध्ययन के बाद उन्होंने विस्तृत लेख लिखे थे। यह उन्हीं लेखोंमें से एक लेखका सारांश है। —**सम्पादक**

वार्साई की सन्धि के बाद संसार को सच्ची शान्ति या सुलह के दर्शन नहीं हुए। केवल एक तिलमिलाहटभरा शस्त्रविराम ही दुनिया को मिला। हमें वार्साई की सन्धि से सबक सीखना चाहिये।

सन्धि में मुख्य सत्ता अमेरिका, ग्रेटब्रिटेन और फ्रांस के हाथ थी। तीनों देशों के नेता थे बुड्रो विल्सन, लायड जार्ज, और क्लीमैन्शू। तीनों नेताओं का उद्देश्य था ऐसे संसार की रचना करना जिसमें न्याय, स्वतंत्रता और शान्ति का साम्राज्य सर्वत्र हो।

परन्तु वे फेल क्यों हुए?

फ्रांस के नेता क्लीमैन्शू की आन्तरिक इच्छा थी कि जैसे भी बने फ्रांस को जर्मनी के हमलों से सर्वथा सुरक्षित बना दिया जाये उन्हें पता था कि फ्रांस की पराजय जो होते होते रह गयी वह किसी चमत्कार के कारण ही। परन्तु ये चमत्कार सदा संभव नहीं हैं। युद्ध में ब्रिटिश साम्राज्य और अमेरिका की हताहत संख्या केवल ३५ लाख ४० हजार थी, पर अकेले फ्रांस के ६१ लाख ६१ हजार व्यक्ति हताहत हुए थे। ऐसी दशा में फ्रांस का पुनरुत्थान उसके अपने सिपाहियों द्वारा एक पीढ़ी तक होना असंभव था। ऐसी हालत में मित्रराष्ट्रों की सेनायें उसकी सुरक्षा के लिये जर्मनी के खिलाफ मोर्चा लेने का फ्रांस को विश्वास दिलावें अतएव फ्रांस ने 'राष्ट्रसंघ' और अन्तर्राष्ट्रीय पोलिस की सेना की रचना पर जोर दिया।

प्रधान मंत्री लायड जार्ज 'शक्ति के समतुलन' पर विश्वास रखते थे। वे यह नहीं चाहते थे कि उनके मित्र-राष्ट्र अधिक सशक्त व बलवान बनजायें और जर्मनी बिल्कुल निःशक्त हो जाये। कारण, हो सकता है कि आगे जाकर कभी उन्हें जर्मनी को ही अपना मित्र बनाना पड़े। ब्रिटेनको सशक्त बनाने के लिये लायड जार्जने यत्न किया कि समस्त भूमण्डल पर ब्रिटेन को उपनिवेश मिल जायें। उसीके अनुसार जर्मनीके अफ्रीकाके उपनिवेश, व प्रशान्त सागर के द्वीप समूह ब्रिटेन ने हथिया लिये, और टर्की के लेबानन, फिलस्तीन, ट्रांस जोर्डन, इराक और अरेबिया से भी खूब फायदा उठाया।

लायड जार्ज राष्ट्रसंघ तो चाहते थे पर वे फौज से लैस और सशक्त राष्ट्रसंघ के पक्ष में न थे। और वे संघ के किसी भी सदस्यराष्ट्र पर आक्रमणकी दशा में उसकी सहायता के लिये युद्ध में उतरने का वायदा भी न किया चाहते थे। इसी का परिणाम था कि मञ्चूरिया और अबीसीनिया पर हमला होनेपर ब्रिटेन मैदान में नहीं उतरा।

इनके विपरीत प्रैजीडेन्ट रूजवेल्ट का स्वप्न था संसार में सदा के लिये शान्ति की स्थापना।

विल्सन अपने स्वप्नों को पुरा करने या देखने में फेल हुए। वे किस लिये असफल हुए उसका अपना इतिहास है।

दुनिया के और आदमियों की तरह विल्सन में भी कुछ कमियाँ थीं। वह भावुक व्यक्ति थे। अपने भावनाशील वाक्यों से वह मानव के हृदयों को पिघला देते थे। इसके साथ वह स्वतः अपने वचनों का पालन करना चाहा करते थे, परन्तु अपनी अपीलों के लिये उपयुक्त मार्ग तैयार करने का उन्हें कभी फिक्र व ख्याल न होता था। भावनावश उन्होंने कल्पना की आँखों देखा कि उनकी भावुक अपीलों से संसार के राजनीतिज्ञ स्वार्थ-त्याग की भावना से भरपूर होकर मस्ती से झूमेंगे और संसार में न्यायपूर्ण और स्थिर शान्ति का अवतरण होगा।

प्रे. विल्सन ने भावनावश अनेक सुवर्णीय अवसर गवाँ दिये। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका जब गत युद्ध में उतरा था तो उस से पूर्व ग्रेट ब्रिटेन के परराष्ट्र सचिव मि० बाल्फोर अमेरिका गये थे। मि. बाल्फोर ने विल्सनको बताया था कि उनदिनों मित्रराष्ट्रों की स्थिति बड़ी निराशाजनक व संगीन थी—मित्रराष्ट्रों का सम्पूर्ण जीवन अमेरिका से मिल रही आदमियों, पैसों, बारूद शस्त्रास्त्र और खाद्यसामग्री की सहायता पर बुरी तरह निर्भर कर रहा था।

उनदिनों मौका था कि विल्सन जो चाहते मित्रराष्ट्रों से शर्तें मनवा लेते पर विल्सन अपने इस सुयोग से चूक गये। उसी वक्त ग्रेट ब्रिटेन अन्य देशों के साथ गुप्त संधियाँ तथा समझौते करनेमें लगा था। प्रैजिडैन्ट विल्सन ख्याल करते तो इस सब तरह की चीजोंको रुकवा सकते थे। जापान और ग्रेट ब्रिटनमें एक गुप्त सन्धि हुई थी जिसके अनुसार भूमध्य के दक्षिणवर्ती प्रशान्त महासागरस्थित द्वीपसमूह जिनपर अभी तक जर्मनोंका कब्जा था वे ब्रिटिश साम्राज्यमें मिला दिये गये थे, और भूमध्य के उत्तर के जर्मनी के द्वीपसमूह जापान को सौंप दिये गये थे। आज जापान के उन्ही द्वीपों को लेने के लिये अमेरिकाके हजारों व्यक्तियों को अपने प्राण गवाँने पड़े हैं।

पूरे १७ महीनों तक मित्रराष्ट्र अमेरिकासे प्राप्त सहायता के भरोसे युद्ध के गाड़े को खींच रहे थे। सच बात तो यह है कि अक्टूबर १९१८ में जबतक जर्मनी का पतन न होगया तबतक मित्रराष्ट्र केवल अमेरिका के भरोसे ही दम बाँधे हुए थे। उन दिनों विल्सन चाहते तो मित्र राष्ट्रों को अपनी मनचाही शर्तों से बाँध सकते थे। परन्तु उन्होंने इस मौके से कुछ भी लाभ न उठाया। विल्सन ने अमेरिका के युद्धोद्देश्यों को अपने १४ पायटन्स में बताया और अपने शानदार भाषणों में घोषित किया, पर यह नहीं किया कि जर्मनी के पतन से पहिले पहिले मित्रराष्ट्रों को अपनी शर्तें मानने को बाधित कर लेते।

इसी तरह सन्धि की शर्तों की सुरक्षा के लिये आवश्यक था कि वह सीनेट की पूर्ण सहायता लेते, पर उन्होंने इस की ओर ध्यान ही नही दिया। रिपब्लिकन्स के एक बड़े दल ने, जिस में भू०पू० प्रैजीडेन्ट टैफ्ट, और भू०पू० सैक्रेटरी ऑफ स्टेट ऐलिहूरूट भी थे, ने सन्धि की शर्तों को क्रियां में लाने के लिये एक लीग बनाने पर जोर दिया था, और अपना पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया था, पर विल्सन ने उनकी इस प्रार्थना को ओर कुछ भी ध्यान न दिया। तब परिणामतः सीनेट का रुख विल्सन के प्रतिकूलसा ही हो उठा।

विल्सन ४ दिसम्बर १९१८ को जॉर्ज वाशिंग्टन जहाज से यूरोप की ओर रवाना हुए थे। उन्हें पूर्ण विश्वास था कि जिस शान्ति का उन्होंने वचन दिया है उसे वह संसार में स्थापित करने में अवश्य सफल होंगे। पैरिस, लन्दन और इटलीमें जनताने दिल खोलकर उनका स्वागत किया। इन तीनों स्थानों की किसान जनता विल्सन की फोटो के सामने बत्तियाँ जलाकर उसकी आरती उतारा करते थे। इन सब दृश्यों से विल्सन को अपने वायदों की तथा मिशन की शक्तिमें और भी दृढ़ विश्वास होगया। इस में कुछ भी सन्देह नहीं कि वह उस वक्त मानवका एक सच्चे नैतिक नेता बन गये थे। उन्हें पूरी तरह यकीन था कि यूरोप की सरकारें चाहे विरोध भी क्यों न करें पर मेरे आदर्शों के अनुसार वहां की प्रजा प्रभावित होकर के उसको क्रिया में परिणत कराकर छोड़ेंगी।

कान्फ्रैंस के प्रोग्राममें सबकी सहमति न हो पायी थी। क्लीमैन्शू का प्रस्ताव था कि पहिले सन्धि की शर्तें बनाली जायें और बादमें राष्ट्रसंघ के नियमादि बनाये जायें। विल्सन का आग्रह था कि सन्धि की शर्तोंपर वादविवाद करने से पूर्व हमें राष्ट्रसंघकी स्थापना कर लेनी चाहिये। उनकी युक्ति थी कि इससे पेरिसमें सन्धि की बात करने आये हुए राजनीतिज्ञोंको एक सच्चे ईसाई की तरह आचरण करने की प्रेरणा मिलेगी, और सन्धि की शर्तोंपर वार्तालाप अधिक अच्छे वातावरणमें हो सकेगा।

विल्सन का काम करने का अपना तरीका था। न तो क्लीमैन्शू और नाहीं लायड जार्ज ने व्यक्तिगत रूपमें राष्ट्रसंघ के नियमादि बनाने में कोई सहयोग दिया, परन्तु विल्सनने इसके लिये भी पूरी तत्परता और उत्तमतासे क्रियात्मिक सहयोग दिया। विल्सन को तब परिणामतः मिलिटरी, आर्थिक, और औपनिवेशिक समस्याओं के सम्बन्ध में विचार करने को बहुत कम वक्त मिल सका। परन्तु २४ जनवरी को आदेशान्तर्गत शासन (मैनडेट्स) का प्रश्न लीग की कौन्सिल में आया। ब्रिटिश प्रतिनिधि ने एक प्रस्ताव रखा जिसका आशय था कि जर्मनीको किसी भी हालत में उस के उपनिवेश नहीं लौटाये जायेंगे।" जिस समय यह प्रस्ताव आया सारी सभा स्तब्ध रह गयी। सब सोचने लगे कि जर्मनी को जिस सर्वां सन्धि या मित्रता का विल्सन ने वचन दिया था क्या उस के साथ इस प्रस्ताव का कुछ मेल है?

विल्सन ने एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्र के हाथों सौंपे जाने का, या उसमें मिलाये जानेका स्पष्ट रूपसे अनेक बार विरोध किया था। १४ शर्तों की पाँचवी धारा में विल्सनने स्पष्टतः इसका उल्लेख भी किया था—इन शर्तों को सभी मित्रराष्ट्रों ने सन्धिका आधार माना था। परन्तु लायड जार्ज की इस माँग को कि जर्मनी से उसके सारे उपनिवेश छीन लिये जायें, विल्सन ने मंजूर कर लिया। विल्सन को फुसलाया गया कि जर्मनी के पास उपनिवेश रहने देना संसार के लिये खतरनाक होगा। —इस तरह विल्सन ने जो संधि की शर्तों के लिये प्रथम कदम उठाया उससे जर्मन राष्ट्र को यह विश्वास होगया कि उसके साथ न्याय नहीं किया जारहा है।

अमेरिका वापिस लौटने से एक दिन पूर्व १४ फरवरी १९१९ के दिन विल्सन ने सन्धि सम्मेलन की पूरी बैठक में राष्ट्रसंघ के नियमादि पढ़कर सुनाये। यद्यपि वे बहुत थके हुए थे परन्तु फिर भी प्रसन्नता से भरे हुए थे। अपनी सफलता की प्रसन्नता में उन्हों ने कहा था, जो लोग पहिले एक दूसरे के प्रति अविश्वास से भरे हुए थे वे ही अब मित्र और साथी के रूप में आनन्दपूर्वक रहा करेंगे ठीक जैसे एक कुटुम्ब के प्राणी रहते हैं। अविश्वास और कूट षडयन्त्र का बीज नष्ट कर दिया गया है।" अमेरिका के लिये प्रस्थान करने से पूर्व विल्सन ने कर्नल हाऊस को बताया था कि वे किस तरह मित्रराष्ट्रों के नेताओं के साथ मिलीटरी, भूमिखण्ड, हर्जाना और आर्थिक सम्बन्धी समस्याओं की शर्तोंपर बातचीत चलायेंगे। सम्मेलन में इन सब बातों पर बड़े आशापूर्ण वातावरण में विचार प्रारंभ हुआ परन्तु जब मित्र राष्ट्रों की माँगें कर्नल हाऊस ने सुनीं तो उसने प्रै० विल्सन को निराशामें भरकर लिखा था, अब यह स्पष्ट हो चुका है कि जिस सन्धि व शान्ति की आशा हम लोगों ने की थी वह अब दूर का स्वप्न हो चुकी है।"

ऊपर के पत्र को पाकर विल्सन इस प्रकार के दुख के साथ जबर्दस्त मोर्चा लेनेके लिये १४ मार्च को फ्रांस लौट आये।

पेरिस पहुँचने के दिन ही मध्यान्ह के वक्त

परिणाम— वर्तमान महायुद्ध

वह क्लीमैन्शू और लायड जॉर्ज से मिले। विल्सन ने निश्चय किया हुआ था कि किसी भी कीमत पर वह समझौता न करेंगे। परन्तु ठीक इसके विपरीत, वह मोर्चा लेने के लिये असाधारण रियायतें देने पर उतर आये। उत्सुकता के आवेश में उन्होंने यह भी मंजूर कर लिया कि यदि कभी फ्रांस पर जर्मनी हमला करेगा तो संयुक्त राष्ट्र अमेरिका की फौजें तुरन्त ही फ्रांस की ओर से जर्मनी के विरोधमें लड़ेंगी।

पेरिस की कॉन्फ्रेन्समें उपस्थित अमेरिकनों में से प्रायः सभी का यह विश्वास था कि अमेरिका की सीनेट फ्रांस को दिये गये इस आश्वासन वाली शर्त को कभी मन्जूर नहीं करेगी।

२७ मार्च के दिन क्लीमैन्शू ने माँगकी कि फ्राँसको राईनलैन्ड पर ३० साल तक कब्जा रखने का हक मिले और सार का इलाका फ्रांस में मिला दिया जाये। तब इस पर विल्सन को बड़ा बुरा लगा और वे खीझ कर बोले कि, "फ्रांस भूमि अधिकार के सम्बन्ध में जो बातें यहाँ चला रहा है उससे हमारा कुछ भी सम्बन्ध नहीं है, शस्त्रविराम के दिनों तक किसी ने भी कभी फ्रांस द्वारा सार की घाटी को फ्रांस में मिलाने के इरादे की बात न सुनी थी।" इसपर क्लीमैन्शू और विल्सन में बड़ी नोंकझोंक हुई। क्लीमैन्शू ने कहा आप हमारी माँग को न मानकर हमें बर्बाद करदेना चाहते हैं। ऐसी दशा में फ्रांस सन्धिपत्र पर हस्ताक्षर न करेगा। इस पर विल्सनने कहा कि ऐसी धमकी देकर फ्रांस अलग होना चाहता है, तो वैसी दशा में आप चाहते हैं कि मैं वापिस अपने घर लौट जाऊँ? इसके उत्तर में क्लीमैन्शू ने कहा, नहीं जनाब आप क्यों जायेंगे, मैं ही चला जाता हूँ। और ऐसा कहकर क्लीमैन्शूने ऐंठ कर कमरे से बाहर की ओर चलने को कदम बढ़ा दिये। तब विल्सन एक विचित्र द्विविधा में पड़गये। यदि इन माँगों को मानते हैं तो यह सच्ची तथा न्यायपूर्ण सन्धि न होगी और वह अपने ही हाथों से नये युद्धों के बीज बो रहे होंगे, और संसार को जो आशायें दिलाई हैं उन से विश्वासघात करना होगा। परन्तु उधर दूसरी ओर यदि सम्मेलन इसी बात पर भंग कर दिया जाता है तो अमेरिका और यूरोप में एक विकट राजनैतिक संग्राम छिड़ेगा जैसा कि आज तक कभी न छिड़ा होगा—और विल्सन का साथ देने वाले बहुत ही कम मित्र होंगे। तब विल्सन ने चाहा कि वह मित्र राष्ट्रों पर अपना प्रभुत्व बतलाये परन्तु प्रभुत्व बतलाने का मौका तो विल्सन ने अपने हाथों से कब का खोदिया था।

३ अप्रैल को विल्सन को दिमाग तथा शरीर दोनों बड़े थके तथा रुग्ण अनुभव हुए। उन्हें जोरों की खाँसी होगयी, साँस तक लेना मुस्किल हो गया था। बुखार १०३ डिग्री तक था। हालत बड़ी नाजुक हो रही थी। ऐसी दशा में भी सम्मेलन का काम तो चालू ही था। और दो दिन के बाद लायड जार्ज, क्लीमैन्शू, इटली के प्रधान मंत्री ऑरलैन्डो, और कर्नल हाऊस विल्सन के बैठके में जुटे और कर्नल हाऊस बारबार बैठकसे उठकर विल्सन के शयनागारमें जाकर उन्हें बातचीत की प्रगति की सूचनायें देते जाते थे। उस समय हर्जाने की बात चल रही थी। विल्सन का मत था कि जर्मनी पर उतनी ही रकम लादी जाये जिसे वह ३० वर्षों में आसानी से चुका सकेगा। उनका ख्याल था कि लायड जार्ज उनकी इस बात का समर्थन करेंगे। परन्तु विल्सन को यह देखकर हैरानी तथा दुःख हुए कि लायड जार्जने इसका सख्त विरोध किया। तब अगले दिन विल्सन ने, हुक्म दिया कि अमेरिका अब आगेसे ग्रेट ब्रिटेन को और फ्रांसको और अगाऊ रकमें ऋण न देवें। और उन्होंने कहा कि आगे बात चलाना फिजूल है अब मुझे जार्ज वाशिंग्टन में बैठकर ब्रेस्ट वापिस लौट जाना चाहिये। तब क्लीमैन्शू ने विल्सन के घनिष्ट मित्र एडमिरल ग्रैसन, जो कि उनके घरेलू डाक्टर भी थे, से कहा कि, क्या विल्सन बीमारीका बहाना न बनाये हुए थे? ग्रैसन ने उत्तर दिया, बहानेबाजी विल्सन के खूनमें नहीं है।" उन्हीं दिनों अमेरिकासे विल्सनको दो तार मिले। एक में लिखा था कि 'जार्ज वाशिंग्टन' द्वारा जब आप फ्रांस गये तो यहाँ लोगोंने उसे आपका अधैर्य समझा, अब यदि आप वापिस लौट आयेंगे तो उसे मैदान छोड़कर भाग आना समझा जायगा।" दूसरेमें लिखा था कि पैसा अब रोकने से कुछ लाभ नहीं। तब लाचार विल्सन को हर्जाने के सम्बन्ध में झुकना पड़ा और ब्रिटेन की माँग को मानना पड़ा। इसके बाद विल्सन ने चारों नेताओं की मीटिंग से समस्त अमेरिकनों को अलग कर दिया। लायड जार्ज और क्लीमैन्शू को उन के सलाहकार मदद दे रहे थे पर विल्सन अब इकले ही रह गये। विना किसी सलाहकार के ही उन्हों ने १४ शर्तों को वार्साई की सन्धि के रूप में बदलने की सहमति प्रदान की।

विल्सन ने अपने को दिलासा दिया कि जो भी कुछ अन्याय अभी किया जा रहा है राष्ट्रसंघ समयान्तर में जाकर उस सबको ठीक कर देगा। अनेकबार उन्होंने अपने मित्रों से कहा था, मैंने सन्धि की शर्तों को कभी भी मन्जूर न किया होता यदि मुझे यह विश्वास न होता कि कालान्तर में राष्ट्र-संघ सन्धि की शर्तों में योग्य संशोधन कर देगा।"

वार्साई की संधि की शर्तें जर्मनी के प्रतिनिधियों को ७ मई के दिन सौंपी गयी। इन शर्तों के अनुसार और और चीजों के साथ जर्मनी ने जो चीजें गँवाईं वे इस प्रकार थीं—

(१) अलसेस और लोरेन प्रांत फ्रांस को दे दिये गये।

(२) सार की घाटी अन्तारराष्ट्रीय कमिशन के नियंत्रण में चली गयी (जब तक १५ साल बाद आम जनमत न हो। सार की कोयले की खानें फ्रांस को मिल गयीं।

(३) उ० श्लेसविग डेनमार्क को दे दिया गया।

(४) उपरी साइलीशिया आधा दक्षिणी भाग, पोसन और ब्रोमबर्ग का बड़ा भाग और पूर्वी प्रशा को जर्मनी से पृथक करनेवाला समुद्र तक का कौरिडर, पोलैंड को सौंप दिया गया।

(५) डैनज़िग शहर का शासन राष्ट्र संघ के सपुर्द कर दिया गया।

(६) जर्मनी के तमाम उपनिवेश छीन लिये गये।

(७) जर्मनी के मर्चेन्ट मैरीन जहाज जो १६०० टन से भारी थे और छोटे जहाज जो १००० टन और १६०० टन के बीच के थे वे ग्रेट ब्रिटेन को हर्जाने के रूप में दिलवाये गये।

(८) जर्मन फौज की संख्या घटाकर १ लाख कर दी गयी और इसी अनुपात में उसे बन्दूकें तथा गोला बारूद भी घटाना पड़ा और शेष बर्बाद कर दिया गया। तमाम किलेबन्दी तोड़ दी गयी। राईन के तटवर्ती प्रदेशोंमें पूर्ण निःसैनिककरण।

(९) जर्मन नेवी का आत्मसमर्पण, और उसके बाद जर्मनी को केवल छःछोटे युद्धपोत, छः हल्के वजन के क्रूजर, १२ विध्वंसक और ३२ तारपीडो नावें रखने का अधिकार दिया।

(१०) जर्मनी को तमाम आर्मी नेवी एयरक्रैफ्ट को और दूसरे हवाई सामान को नष्ट करने का हुक्म दिया गया। उसे समुद्री और फौजी हवाई सेनायें रखना बिल्कुल निषिद्ध कर दिया गया।

इस सन्धि के सम्बन्ध में उन दिनों सर्वत्र जो भाव प्रकट किये गये वे यही थे कि जर्मनी से विद्वेष पूर्ण सख्ती का बर्ताव बरता गया है। जर्मन जाति में उक्त सन्धि के प्रति जबर्दस्त घृणा तथा रोषकी भावनायें उठनी स्वाभाविक थीं। उन दिनों ठीक हिटलर के समान कितने विशेषज्ञों में इन शर्तों के खिलाफ घृणा व विद्रोह के भाव प्रगट हुए थे।

२८ जून १९१९ को वार्साई की सन्धि पर हस्ताक्षर किये गये। संयुक्तराज्य अमेरिका की सीनेट ने सन्धि को प्रमाणित नहीं किया और अनेक विषयों की शर्तों के प्रति विरोध प्रगट किया।

आखिर वार्साई की सन्धि से किस को लाभ पहुँचा? फ्रांस को सुरक्षा प्राप्त करने में सफलता नहीं मिली। संसार में एक स्थायी शान्ति स्थापित करने का विल्सन का स्वप्न पूरा नहीं हुआ। लायड जार्ज ने अपने शक्तिसंतुलन की नीति के जोर पर और ब्रिटिश साम्राज्य को अनेक भूखण्ड दिलवा कर समझा कि ग्रेट ब्रिटेन को शानदार सफलता मिली। परन्तु सत्य पुकार पुकार कहता है कि लायड जार्ज भी असफल रहे। कारण, ब्रिटिश जाति को शान्ति से बैठना नहीं मिला—विजय के ठीक २० वर्ष बाद ब्रिटेन को पहिले महायुद्ध से भी अधिक भीषण विश्वव्यापी संग्राम और विनाश का सामना करना पड़ा।

सचमुच वार्साई की सन्धि के दुःखान्त खेल में कोई भी विजयी न बन सका। सम्पूर्ण मानव जाति के हाथ केवल विनाश और घोर यंत्रणा ही आये—और उन के साथ मिली उसे गहरी हार, सिर्फ हार!!

स्व. भगवानबक्सजी सोमाणी

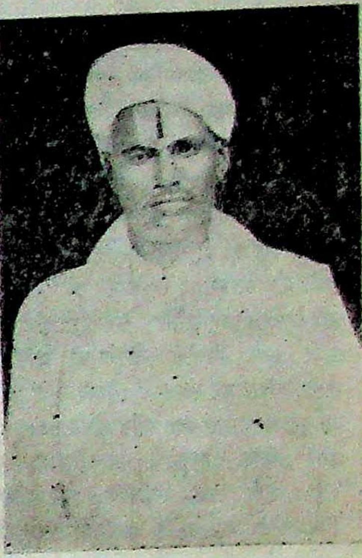

गत १६ जुलाई की रात मौलासर निवासी सेठ भगवान बक्सजी सोमाणी का मौलासर (मारवाड़) में ६५ वर्ष की अवस्थामें स्वर्गवास हो गया।

प्रारम्भ में मौलासर के सोमानी परिवार की स्थिति साधारण थी। उनकी पढ़ाई लिखाई साधारण हुई तथा वे जल्दी व्यापारमें लग गये। पहिले कलकत्ता तथा बादमें बम्बईमें उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र बनाया। वर्तमान में कलकत्तामें सेठ हजारीमल सोमानी, सोमानी ब्रदर्स लि०, तथा बम्बईमें श्रीनिवास काटन मिल्स लि०, रामदयाल सोमानी कं० आदि फर्म तथा कम्पनियां इनकी ओर से चलती हैं।

स्वर्गीय सेठजी स्वभाव के बहुत ही कोमल, दयालु तथा परोपकारी थे। दरिद्रनारायण की सेवा करना उन्होंने अपना धर्म बना रखा था। इधर करीब १५ वर्ष से वे व्यापारादि कार्यों से अलग होकर ईश्वर चिन्तन तथा परोपकार के कार्यों में लगे हुये थे। गांव में उनकी ओर से संस्कृत-विद्यालय, स्कूल, औषधालय, तथा मंदिर आदि संस्थायें चल रही हैं। गांव के तथा आसपास के दीन दुखियों की सेवा में ही उनका अधिक समय लगता था। स्थानीय फणसवाड़ी तथा श्री. वेंकटेश मन्दिर के संस्थापक जगद्गुरु श्री. स्वामी अनंताचार्य जी महाराज के वे बहुत ही प्रिय शिष्य तथा अनुगामी थे। उक्त आचार्य चरणों के वैकुण्ठवास के बाद श्री. वेंकटेश मन्दिर के कार्य संचालन में आपकी बहुत दिलचस्पी रही है।

हम सेठजीके शोक संतप्त परिवारके प्रति समवेदना एवं उनकी आत्माकी शांतिके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं।

देश विदेश की चर्चा

जर्मनी की संकटपूर्ण स्थिति

इन दिनों नाजी-जर्मनीको एक साथ ही कितने मोर्चोंपर लड़ना पड़ रहा है। स्पष्टरूपसे ६ मोर्चे दिखायी देते हैं, जो इस प्रकार हैं—(१) घेरलू फूटका मोर्चा (२) जर्मन-अधिकृत देशोंकी बागी जनताका मोर्चा (३) हवाई हमलोंका मोर्चा (४) रूसी मोर्चा (५) फ्रांसका मोर्चा और (६) इटालियन मोर्चा। इस प्रकार एक साथ ही ६ मोर्चोंपर ६ प्रचण्ड ताकतें यूरोप के हिटलरी किलेको तोड़-फोड़ रही हैं। मि० चर्चिलने अपनी फ्रांसकी यात्रामें कनाडियन सैनिकोंके सामने भाषण करते हुए ठीक ही कहा था कि यूरोपमें लड़ाईका अन्त अपेक्षाकृत शीघ्र हो सकता है। मि० चर्चिल एक ऐसे व्यक्ति हैं जो असामयिक और अनिश्चित घोषणाएं प्रायः कम करते हैं। जर्मनी ने महासंहारक गुप्तास्त्रों के प्रयोग की धमकी दी है। मित्रराष्ट्रों के युद्धपोतों को जर्मनी के गोताखोर जहाज रोक नहीं सके। जर्मन नौसेना पराजित हो गयी है और फ्रांसपर मित्र-राष्ट्रों का आक्रमण रोकने में उसे सफलता नहीं मिली। अब जर्मनी 'रेडियो टारपीडो'का प्रहार करके मित्रोंकी नौसेना को क्षतिग्रस्त करनेकी चेष्टा कर सकता है। इसी तरह और भी कुछेक गुप्तास्त्रों का प्रयोग हो सकता है। मगर केवल गुप्तास्त्रोंके प्रयोग से ही युद्ध नहीं जीता जा सकता। इससे सिर्फ विनाश हो सकता है। मित्रों की शक्ति जर्मनों की अपेक्षा अब बहुत बढ़ गयी है। स्टाकहोम के हल्कोंमें १९१८ की केसर और उसकी ग्रैंड कौंसिलकी ऐतिहासिक बैठकको स्मरण किया जा रहा है, जब यह निर्णय हुआ था कि 'युद्धमें विजय तो नहीं हो सकती पर अभी पराजयभी नहीं हुई है।' जर्मनी के जनरल युद्ध बन्द करना चाहते हैं, लेकिन वे दो दलोंमें विभक्त हैं। जर्मनीके 'जंक' ब्रिटेन और अमेरिकाकी ओर झुके हुए हैं। दूसरे दल वाले सोवियट रूसके साथ समझौता करनेके पक्षमें हैं। लेकिन नाजी पार्टीके लोग अभी युद्ध जारी रखनेपर तुले हुए हैं। साधारण जर्मन जनता युद्धका शीघ्र अन्त होता देखना चाहती है। वह लड़ाई की स्थितिसे ऊब गयी है। इस सम्बन्धमें यह ध्यान देने योग्य बात है कि हिटलरने जनरल गुडेरिनको जर्मन सेना का नया चीफ आफ स्टाफ बनाया है। गुडेरिन कभी मौस्कोमें जर्मनीके फौजी प्रतिनिधि थे। वह अब जर्मनों के प्रमुख टैंक विशेषज्ञ हैं। गुडेरिन जर्मनीमें 'पूर्वी लोगों' के नेताओंके रूप में विख्यात हैं। उन्हों ने रूससे लड़ाई छेड़नेका घोर विरोध करते हुए कहा था कि 'लालसेनाको परास्त नहीं किया जा सकता।' कहा जाता है कि पूर्वी मोर्चे से लौटने के बाद उन्होंने इस बात पर जोर दिया है कि सोवियट यूनियन से समझौता कर लिया जाय। उन के रुख को देखते हुए हिटलर द्वारा नये चीफ आफ स्टाफ के स्थानपर जनरल गुडेरिनका नियुक्त किया जाना बड़ा महत्वपूर्ण है। रूसी सेना प्रशिया की सीमाके करीब पहुंच चुकी है। बहुत सम्भव है कि पहले रूस से ही समझौता करने का प्रयास जर्मन अधिकारी करें।

रूसी मोर्चेसे निरन्तर पीछे हटती हुई जर्मन सेनाएँ अब एक ऐसे सर्वनाशकी ओर अग्रसर होती जा रही हैं, जिसकी तुलना १८१३ के संकटसे भी नहीं हो सकती। पूर्वी मोर्चेसे जो समाचार मिल रहे हैं उनसे यह तो नहीं प्रकट होता कि जर्मन सेनाओंका अन्त हो चुका है, किन्तु इतना स्पष्ट है कि जर्मन अपनी पितृभूमिके पहले कहीं भी रक्षा-व्यवस्था संगठित करनेमें समर्थ नहीं हो रहे हैं। पूर्वी प्रशाका हाथसे निकलना निश्चित है। रूसी सेना बिलकुल सीमापार पहुंच गयी है।

तुर्की और युद्ध—

तुर्कीने जर्मनीसे अपना कूटनीतिक सम्बन्ध भंग कर दिया है और अब ऐसा प्रतीत होता है कि वह शीघ्र ही जर्मनीके खिलाफ युद्धकी घोषणा करने जा रहा है। अगर तुर्कीनें मित्र-राष्ट्रों के पक्षमें होकर जर्मनी के खिलाफ जंगका ऐलान कर दिया तो मित्र-राष्ट्रों को बड़ा फायदा पहुंचेगा। ऐसी परिस्थितिमें मित्र-राष्ट्र ईरानका लम्बा मार्ग छोड़कर बासफोरसके जल डमरूमध्यसे ओडैसाके बन्दरगाहपर, रूसके लिये आसानीसे और कम समयमें आवश्यक युद्ध-सामग्री उतार सकेंगे। इसके सिवा भूमध्यसागर और बाल्कन देशोंमें भी मित्र-राष्ट्रोंकी स्थिति बहुत मजबूत हो जायगी। एजियन सागरके जर्मन अधिकृत टापुओंपर मित्र-सेनाएं सरलतासे हमला कर सकेंगी और वहांसे शत्रुओंका महत्त्व नष्ट कर सकेंगी।

इटली में मित्रों की प्रगति

नोरमेण्डी की लड़ाई ने इटली में होनेवाली मित्रसेना की कारवाई के महत्वको मन्द कर दिया है। परन्तु इटली की लड़ाई भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। यहां भी पूर्वी और पश्चिमी मोर्चे के समान ही विजय लहर फैल रही है। जर्मनों ने फ्लोरेंस को 'खुला नगर' घोषित कर दिया है। यदि फ्लोरेंस में युद्ध नहीं होना है तो इसका अर्थ यही है कि जर्मनों की 'गोथिक रक्षा पंक्ति' आरनो नदीके तटपर नहीं है, जैसा कि कभी-कभी समझ लिया जाता है। संभवतः केसलरिंग पो नदी के दक्षिण में अंतिम बार मित्र सेना का जमकर मुकाबला करेगा। उसका यह मोर्चा स्पीजिया और मस्सासे आरंभ होगा और पहाड़ों में होता हुआ एड्रियाटिक तट तक चला जायगा। स्पीजिया और मस्सामें समुद्र तटसे ही बड़े उंचे पहाड़ आरंभ हो जाते हैं। लेघोर्न बन्दरगाह का उपयोग होते ही उत्तरी इटली में जनरल एलेक्जेण्डर के आक्रमण का रूप प्रकट हो जायगा। इटलीमें मित्रराष्ट्रोंकी फौजी सरकारके हस्तक्षेपसे इटलीकी नयी प्रजातन्त्री सरकारके शासन-कार्यमें बड़ी बाधाएं पहुंच रही हैं। गत सप्ताह इटलीकी नयी सरकारके प्रधान मंत्रीने दबी जबानसे इस बातकी शिकायत भी की थी। मगर इटली आज एक पराजित देश है। अतएव, उसकी आवाज और उसके जजबातका विशेष आदर नहीं हो सकता। पराजय और पराधीनतामें ज्यादा फर्क भी नहीं होता!

फ्रांसका मोर्चा—

फ्रांसके रणक्षेत्रमें अमेरिकन सेनाएं जर्मनों को पछाड़ती हुई ब्रिटेनी प्रान्तकी राजधानी रेनेसपर कब्जा करके आगे बढ़ गयी हैं। मगर ब्रिटिश और कडानियन-फौजोंको वैसी सफलता नहीं मिल रही है, जैसी पहले मिली थी। जर्मनोंके जोरदार जवाबी हमले हो रहे हैं। ब्रिटिश सेनाओंको आउनेके पश्चिमोत्तर कुछ पीछे भी हटना पड़ा हैं। शायद जनरल मौंटगोमरी किसी खास रणनीतिसे काम ले रहे हैं। वे अमेरिकन सेनाओंको चेरबोर्ग प्रायद्वीपसे निकलकर ब्रोस्ट प्रायद्वीपमें पहुंच जानेका मौका देना चाहते हैं और उधर नारमण्डीमें जर्मनोंकी जबर्दस्त सेनाको फंसाये रखना चाहते हैं। इस नीतिमें उन्हें सफलता भी मिल रही है और वे युद्धकी वर्तमान प्रगतिसे संतुष्ट हैं। जर्मन सेनाके तगड़े जवाबी हमले ब्रिटिश और कनाडियन सेनाओंपर ही हो रहे हैं। उधर अमेरिकन सेना जर्मनोंको पछाड़ती हुई ब्रेस्ट प्रायद्वीपमें बढ़ती जा रही है। जर्मनोंपर घेरेका खतरा उपस्थित हो रहा है।

जापानभी संकटमें—

इन दिनों जापानी सेनाओंको प्रायः सभी मोर्चोंपर पराजित होना पड़ रहा है। इस वर्ष फरवरीमें फील्ड मार्शल सूगीके पृथक किये जानेके बादसे जापानका रणनीतिकी असफलता की सारी जिम्मेदारी जनरल तोजोपर रही है। जापानके सरकारी क्षेत्रोंमें भीतर ही भीतर बड़ा है और तोजो-मंत्रिमण्डलके पतनका कारण यह मतभेद ही है। प्रत्येक मोर्चे पर दबाव पड़ने पर जापानी भी नाजियोंकी तरह अपने पदाधिकारियोंमें परिवर्तन करके अपनी स्थिति संभालना चाहते हैं। जापानी सेना तथा नौ-सेनाके सामने कठिन समस्या उपस्थित है। बर्मा के मोर्चे पर जापानी सेनाएं पराजित हो रही हैं। आसामकी सीमा जापानियोंसे करीब-करीब मुक्त सी कर ली गयी है। उत्तर बर्मामें मिचीनाके रणक्षेत्र में मित्रोंकी शक्ति बहुत बढ़ गयी और वहांके मुक्त किये गये इलाके में मित्रोंने असैनिक सरकार भी स्थापित कर दी है। लार्ड मौंटबेटनके कमाण्डकी नौ-सेनाके युद्धपोत ने सुमात्रा के सेबांगपर फिर हमला किया है। उधर मध्य प्रशांत में अमेरिकन सेना ने गुआम टापूपर कब्जा कर लिया है। पर्ल-हार्बरकी घटनाके बाद जापानियों ने गुआमपर ही पहले कब्जा किया था। यह टापू खास जापानके निकट है। गुआमपर अमेरिकन सेनाएं अगर अपना कब्जा बनाये रख सकीं तो ब्लादीवोस्तकी तरह गुआम भी जापानकी छातीपर रखा गया पिस्तौल के समान सिद्ध होगा। यहांसे अमेरिकन विमान और जु जापानी द्वीपपर लगातार खतरा पैदा रहेंगे। यद्यपि मित्र-राष्ट्रोंकी फेहरिस्तमें का नम्बर जर्मनीके बाद रखा गया है जापानकी हालत भी जर्मनीकी ही तरह कमजोर होती जा रही है। इधर कुछ चीनमें भी जापानी सेनाकी गति शिथिल गयी है और चीनी फौज हमला कर रही

जापान विरोधी मोर्चा—

उत्तरी बर्माके मिचीना नगरपर मित्र- ने कब्जा कर लिया है। प्रशान्त में सेनाएं बराबर हार रही हैं। मेरियस द्वीप टीनियन टापूपर अमेरिकनोंका पूरा अ हो गया है। न्यूगिनी टापूका युद्ध खत्म आया। डच न्यूगिनीमें अमेरिकनोंको नीय सफलता मिली है। मकडेनपर अमे उडनकिला विमानोंनें हालमें ही प्रचण्ड मण करके सिद्ध कर दिया है कि जाप कोई जगह मित्रविमानोंके हमले से अब क्षित नहीं है। मकडेन मंचूरियाका कहा जाता है। यह जापानका शस्त्रागार जाता है। यहां जापानके अनेक कारखाने इन कारखानोंको सुरक्षित रखना जा लिये जीवन-मरणका प्रश्न उत्तरी बर्मामें मिंचीनाका पतन बर्मा जापानी सेनाकी कमजोरीकी निशानी मिचीनाके पतनसे मित्रसेनाएं साल्विन न ओर तेजीसे बढ़ सकेंगी और साथही ब का खुलना भी संभव हो जायगा! बर्मा, और प्रशांतके रणक्षेत्रमें जापानी सेना हारोंसे प्रकट होता है कि जापान भी जर्म तरह अब रक्षात्मक युद्ध लड़ने को विव गया है और विजय पानेकी उसकी आश अब मिट गयी है।

राजनीतिक उलझन—

'सेवाग्राम आराम करने के लिये नहीं रहा हूं'—पंचगनी से प्रस्थान करनेके महात्मा गांधी ने कहा। अगले दो-तीन स तक वे अत्यधिक कार्यव्यस्त रहेंगे। स सामने गांधीजीने समझौतेका जो प्रस्ताव है वह ब्रिटिश सरकार को मंजूर नहीं गांधीजीके प्रस्तावपर विचार करनेके लिए मि० एमरी अथवा मि० चर्चिलकी स तैयार नहीं है। ब्रिटिश राजनेता भारतीय रोधको बनाये रखना चाहते हैं। भा स्वाधीनता देनेके बजाय वे भारतको खु और समृद्धशाली बनानेके लिये अधिक उ हैं। भारतके औद्योगिक विकासका प्रश्न उ राजनीतिक प्रश्नको, ब्रिटेनके कूटनीतिक मायाजालमें छिपा देना चाहते हैं। श्री श्यामदास बिड़ला, जे. आर. डी. टाटा, होमी मोदी और सर पुरुषोत्तमदास ठाकु आदिने भी भारतके औद्योगिक विकास सम्ब ब्रिटिश नीतिका सख्त विरोध किया है। तीय उद्योगपतियोंने स्पष्ट कह दिया है भारतकी आर्थिक उन्नति एक जिम्मेदार रा सरकारही कर सकती है। अतएव, भा लिये औद्योगिक विकासके पहले राजनी अधिकार अपरिहार्य है। युद्धके बाद तैयार मालकी खपत करके भारतका शोषण करनेकी गरजसे ही ब्रिटिश रा भारतकी आर्थिक उन्नतिका ढोंग रच रहे हैं

न्दौर विवाह-वितण्डा

श्री श्रीकृष्णजी कचोलियाने इन्दोर विवाह ण्डा के संबंध में अपना एव, वक्तव्य हमारे प्रकाशनार्थ भेजा है । इसमें आपने इस ण्डाके विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला । सब से पहले तो आपने श्री शिवचन्द्रजी णीके भ्रमात्मक वक्तव्य का उत्तर दिया है । प लिखते हैं:—

श्री ईनाणीजी का यह कथन गलत है कि भाइयों में परस्पर वैमनस्य है और इसी नस्य के कारण कँवरलालजी के विवाह में छन्न रूपसे वाधा पहुँचायी गयी। दूसरी वात है कि भाई साहब रामविलासजी ति वहिष्कृत किये ही नहीं गये प्रश्न दूसरा है कि समाज के सब लोग से व्यवहार करते थे या नहीं। चूंकि उनके दों में उस ५ वर्षकी भयंकर स्थिति में भी लोगभाई साहब के साथ ही रहे हैं इस- भी आपसी वैमनस्य के स्थानपर स्नेह को ही धिक श्रेय मिल सकता है। हमारे यहां के येक कार्य में आरम्भ से अन्ततक भाई राम लासजी का प्रधान और महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है र रहेगा। भाई रामविलासजी की जेलयात्राके मय मैं भी जेल में था। भाई चाँदमल वाहर रर-था, किन्तु एक व्यक्ति ३ दूकानों के ार्य का सुचारूप से संचालन नहीं कर सकता वल इसी आधार परश्री कंवरलालजी को दूकान ा कार्य भार सोंपा गया था। यह त्रिल्कुल भ्रमात्मक है कि उनके अतिरिक्त और कोई विश्वस्त व्यक्ति था नहीं।

मेरे भाई, श्री रामविलासजीका विवाह १९२३ में अजमेर में था। उस समय श्री कंवरलालजी सांगानेर (मेवाड) में रहते थे। विवाहके कुछ गोपनीय प्रश्नोंके आधारपर श्रीकंवरलालजी अपनी माताजी एवं बहनको लेकर अजमेर पहुँचे। जब उनके पिताजीको इस घटना की खबर लगी तो वे भी अजमेर आये। परन्तु श्री कंवरलालजीद्वारा उनकी उपेक्षा की गयी और सारा विवाह-कार्य श्री कंवरलालजीद्वारा सम्पादित हुआ। आज उस घटनाको इक्कीस वर्ष व्यतीत हो गये हैं और अब कोई यह कहनेका साहस करे कि श्री कंवरलालजी की आयु २५-३० वर्ष की है, तो क्या यह कभी संभव हो सकता है? ४ या ९ वर्ष का वालक अपने मां-वाप का तिरस्कार कर अपनी वहन का विवाह कर सकता है, इसपर कौन विश्वास कर सकता है? इस समय कंवरलालजी की अवस्था कमसेकम ४१ वर्ष की तो है ही। और जहां तक लड़की की आयुका संबंध हैं, मैं यह निर्विवाद कहूंगा कि लडकी की अवस्था अधिक से अधिक १२ वर्ष की है। आशा है, इस स्पष्टीकरणसे वास्तविक घटना क्रम पर प्रकाश पड़ेगा।

'युवकों' द्वारा उत्तर

जिन नवयुवकों ने इन्दोर में सम्पन्न विवाह की आलोचनात्मक विवरण प्रकाशित कर इस सम्बन्ध में वितण्डा की सृष्टि की थी, उन्हों ने विपक्ष के तर्कों का उत्तर देते हुए अपना अंतिम वक्तव्य हमारे पास भेजा है, जिसका सारांश हम छाप रहे हैं:—

ता. २१ जून १९४४ के 'माहेश्वरी' में 'इन्दौर विवाह-वितण्डा की गूँज, शीर्षक के नीचे तीन पत्र प्रकाशित हुये हैं। उसमें सत्य को छिपाने का भरसक भरसक प्रयत्न किया गया है। उम्र के विषय में तीनों पत्र एक दूसरे के विरोधी हैं। भंवरलालजी (लड़की के भाई) लिखते हैं कि अवस्था तीस से तेतीस वर्ष की है। प्रभुदयालजी काकाणी २५ से ३० वतलाते हैं और श्रद्धेय ईनानीजी तो गोलमाल भाषा का प्रयोग कर जैसे अब वचना चाहते हैं। वे लिखते हैं, २५ वर्षमें हमारा अन्दाज है। मास्टर साहबने अभी भी यहां यह स्पष्ट नहीं किया है कि वर्तमानमें उनका अन्दाज है या भूतकालमें था। इसके वाद भी फिर वही शब्दजालका प्रयोग कि संभव है वह २५-३५-५० तीनों ही अवस्थाके नहों।

वधुकी उम्र भंवरलालजी ने तेरह वर्ष तीन माह वतलाई है। हमें यह ज्ञात हुआ है कि वे अशिक्षित हैं, शायद अक्षर ज्ञानतक नहीं। अतएव उनकी लेखनीपर विश्वास नही होता। विश्वास भी कैसे हो, जब कि उन्होंने ही चन्द व्यक्तियोके सन्मुख इस वातको कवूल किया है कि पूर्व सिंगतमें लडकीकी उम्र करींव ४-६ मासकी थी अतः यहां यह निर्विवाद सिद्ध हो जाता है, कि लड़की की उम्र करीवन १२ वर्ष से कम ही हैं।

उनका ख्याल है कि हम युवकों को किसी द्वेष-पूर्ण हृदयने उत्तेजित किया है लेकिन उनकी यह धारणा विल्कुल निर्मूल है। हमोर पास तो सिर्फ एक पत्र अपरचित व्यक्ति नवलकिशोर के नामका आयां था जिसने ही हमें घटना स्थलपर पहुँचने के लिये वाधित किया था। रही मारपीट की वात। ईनानीजी ने इतना तो कवूल ही किया है कि युवकों ने चौधरीजी का हाथ पकड़कर कड़े शब्दों का प्रयोग किया। चूं कि चौधरीजी पर तमाम युवक एक साथ मेड़ बकरी की नाई आ भिड़े और लगे देने कोई धक्का, कोई मुक्का। कटु वाक्यों के पैने तीर तो सभी छोड़ रहे थे। इसी घाँघूमें शायद या तो मास्टर साहब ने यह ख्याल ही न रखा हो कि युवकों ने कड़े व ओछे शब्दों के साथ २ धक्के मुक्के की वर्षा करदी थी या फिर मास्टर साहब की परिभाषा में जबतक कोई घायल न होय जाय तबतक मारपीट ही न मानी जाती हो। उनके इतने असभ्यता पूर्ण वर्त्तावपर भी हमोर व्यवहार में शिष्टता की लेशमात्र भी कमी नहीं आई।

शिक्षिता महिलाएँ

★

सौ. नन्दूबाई ओसवाल, पूना

"माहेश्वरी" के जुलाई के अंकका ७ वाँ पृष्ठ अब भी आंखों के सामने है। अन्य समाज की भाँति हमारी कन्याएँ भी शिक्षा-क्षेत्र मे आगे बढ़रही हैं यह देख हृदय में जो आनन्द उमड़ रहा है वह किन शब्दों में व्यक्त करें?

जरूर, हाथ की अंगुलियों पर गिनी जाने वाली इस संख्या पर ही हमे संतुष्ट नहीं रहना है फिर भी हमें यह नही भूलना होगा कि, जिस समाज में अभी अभी स्त्रीशिक्षा को अशुभ गिना जाता था (मैने कई बड़ी बूढियों कों यह कहते देखा है कि 'लुगायां रा हाथकी कलम उणारो सुहाग छुटावे') उसी समाज की यह छोटीसी संख्या है।

यह निश्चित है कि हमारे कार्यकर्ताओं के अथक परिश्रम के कारण, स्त्री शिक्षा को अमंगलप्रद तो नहीं ही पर अत्यावश्यक समझे जाने तक की समाज की मनोभूमिका तैयार हो रही है। इसीसे वर्ष प्रतिवर्ष अधिकाधिक संख्यामें उच्चशिक्षाप्राप्त महिलाएँ दृग्गोचर होती रहेंगी।

सम्भव है कि इन शिक्षित कन्याओंकी नामावली देखकर समाज में बहुतेरे स्थानोंपर यह चर्चा छिड़ी होगी कि 'अब ये आगे क्या करेंगी' आदि।

समाज में ऐसा वर्ग हमेशा मौजूद रहता है कि जो सब अच्छे बुरे कामों की निन्दा ही करता है। इस की ओर ध्यान देना अपना समय फिजूल गँवाना है। परन्तु सौभाग्य से समाज में एक ऐसा वर्ग भी निर्माण हो रहा है जो, शिक्षित महिलाओं स सामाजिक व राष्ट्रीय सेवा की अत्यधिक अपेक्षा करता है, और यह है भी ठीक। समाज व देश की विपन्नावस्था की ओर सुशिक्षितोंका ही विशेष ध्यान जाता है, अर्थात् फिर इस विपन्नावस्थाको मिटाने के प्रयत्न भी उन्हीं की ओर से खास तौरपर होने ही चाहियें। और जिस उच्चाशय को सामने रख मातापिताओं ने अपनी कन्याओं को शिक्षित किया है, वह आशय, वह अपेक्षा हमारी कन्याएँ क्या पूरा न करेंगी? वे अब स्वयं विचारक बन गई हैं। अपनी अपनी अभिरुचि, शक्ति, आकांक्षा व परिस्थिति के अनुसार कार्यक्षेत्र को ढूँढ कर सेवामय बनने का जरूर प्रयत्न करती ही रहेंगी।

हमें तो उन के लिए आज इतना ही कहना ठीक होगा कि इस सेवा को बाहरी भाव से-एक फैशन तरीके-ग्रहण न कर एक आत्मधर्म तरीके अंतःकरणपूर्वक ही उसे स्वीकार करना चाहिए। आत्मधर्म को कुचलकर भौतिकता में ही संपूर्ण विश्वास रखना यह आज के विश्वविद्यालय की शिक्षा का बड़ाभारी दोष है। इस दोष को छोड़ कर ही सेवा को ग्रहण करना चाहिए।

समाज और राष्ट्रमें तो ऐसे अनगिनत कार्य हैं जिसे हम मौन रहकर आत्मीयता से कर सक्ते हैं, परन्तु जिन्हें इतना विशाल त्याग बल एवं अनुकूलता न होवे उन के लिए विशेषतः नारी जाति को पारिवारिक कार्यक्षेत्र तो सहज रूप में प्राप्त होता ही है। इस क्षेत्र में 'सेवा' का ध्येय लेकर अगर शिक्षिता नारी प्रवेश करेंगी तो बुद्धिचातुर्यता, कार्यदक्षता, सहनशीलता, विनयसंपन्नता एवं स्नेहसुरभि आदि अनेक आवश्यकीय उपगुणों के द्वारा वह अपने परिवार को 'आदर्श परिवार' कर सक्ती हैं। कम से कम सुखशांतिमय कुटुम्ब तो कर ही सकेंगी? आज हमारे समाज का पारिवारिक जीवन कितना निकृष्टतम हो गया है इसका चित्र खींचनेकी कोई जरूरत नहीं है। शिक्षित बहनें विद्याका घमंड व फैशनका भूत स्कूलों में ही छोड़कर संसारक्षेत्र में पदार्पण करेंगी तो वह उपरिनिर्दिष्ट गुणों द्वारा इस निकृष्टतम संसार को कौटुंबिक जीवनका उत्कृष्टतम किये बिना नही रहेंगी। इसके लिए मूलतः उन्हें भारतीय-सभ्यता पर अटल विश्वास होना जरूरी है।

इस का अर्थ कोई यह न समझे कि हम पारिवारिक जीवन में ही मग्न रहकर समाज व देश को भूल ही जायें। कुटुम्ब में रहकर भी समाजकी सेवामें अपनी शक्ति अनुसार हम भाग लेसक्ती है, लेना जरूरी है। पारिवारिक ऋण के साथ हमें देश और समाज का ऋण भी तो चुकाना ही है। और यह ऋण जितना जल्दी चुके उतना अच्छा ही तो है। परन्तु ऊपर पारिवारिक सेवा क्षेत्र का जो निर्देश किया गया है वह उन्हो के लिए है जो अपना सर्व समय देश चिंतन में देने में असमर्थ हैं। परिवार की योग्य सेवा भी देश सेवा का एक अंग ही समझना चाहिए।

बस, तो आज शिक्षित महिलाओंके लिए इतनाही काफी है।

हमारा राजस्थान

इन्दोर में धारा सभा के चुनाव

इन्दोर राज्य प्रजामंडल ने धारा सभा के १७ स्थानों के लिए १५ उमीदवार खड़े किए हैं, जिनके नामजदगी के पत्र २७ जुलाई को पेश कर दिए गए हैं। कुछ विशेष स्थानों के लिए भी प्रजामंडल उम्मीदवार खड़े कर रहा है।

मारवाड़ में नवजीवन

राजनीतिक जीवनका पुनर्संगठन

पाली २९ जुलाई

यहां गतसप्ताह मारवाड़ कार्यकर्ता सम्मेलन और मारवाड़ी लोकपरिषद की प्रतिनिधि सभा की बैठकें होकर राजनीतिक जीवन को फिर से संगठित कर सुदृढ करने के लिए जो प्रयत्न किया गया उसमें पूरी सफलता प्राप्त हुई। बनारस से युक्तप्रान्त के सुप्रसिद्ध कांग्रेस नेता और केन्द्रीय असेम्बलीके सदस्य श्री श्रीप्रकाशजी एम. एल. ए. भी उपस्थित थे।

राजस्थानी संसार

पुस्तकालय की महत्ता

श्री रघुनाथदासजी बांगड

सीकर के श्री महावीर पुस्तकालय का ३७ वाँ वार्षिकोत्सव गत १९ जुलाई को डिडवाना निवासी श्री रघुनाथदासजी बांगड़ के सभापतित्व में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भाषण देते हुए श्री बांगड़जी ने कहा, ज्ञानकी आगार पुस्तकोंका प्रचलन मनु महाराज के समय से ही जारी है एवं प्राचीन काल में देवमंदिर, राजप्रासाद एवं उच्च कोटी के विद्वानों के आश्रमों में पुस्तकों के संग्रहालय थे। जैनोंके मंदिरों और उपाश्रयों में हिन्दुओं के मठों और मंदिरों में बौद्धों के विहारों तथा संघारामों में हस्तलिखित पुस्तकों के द्वारा शिक्षाक्रम संचालित होता था। आगे चलकर आपने यह बताया कि तत्समयके विश्वविद्यालयोंमें विशाल पुस्तकालय थे। साहित्य के आलोकसे हमारा अन्तःकरण अविद्या तथा मोहके अन्धकारसे मुक्ति पाता है। प्रत्येक कालका इतिहास साहित्यिक विचारव्यापी धाराओंका परिणाम है। इससे देशकी क्या आर्थिक क्या सामाजिक क्या राजनीतिक और क्या आध्यात्मिक सभी समस्याओंपर व्यापक प्रभाव पड़ता है। सफल लेखनी से लिखी गयी पुस्तकें राष्ट्रके जीवनमें नवीनताका सूत्रपात कर देती हैं। आपने पुस्तकालयोंके संबंधमें निम्न लिखित महत्वपूर्ण सुझाव उपस्थित किये:—

(क) पुस्तकोंका चयन और विभाजन पाठकों की मनोवैज्ञानिक अवस्था के आधार पर हो—

(ख) पुस्तकनिर्वाचिनी-सभा में संस्था के योग्यतम सभासद पूरी छान-बीन के पश्चात् किताबें मंगावें।

(ग) यदि संभव हो, तो बालकों तथा किशोरों के पुस्तकालयमें आनेका समय सर्वथा सुरक्षित रहे। उस समय उनके योग्य पुस्तकें अल्मारी से निकाल कर फर्श या मेज पर जैसा भी प्रबंध हो, रख दी जावें। किसने कितनी पुस्तकें पढ़ीं, इसका पूरा ब्योरा रखा जावे। ३ माह या ६ माह के अन्त में उन पठित पुस्तकों में से प्रश्नावलि छांट कर सम्बन्धित पाठकों की जांच हो। अच्छे प्रमाणित होने वाले छात्रों को पारितोषिक दिये जावें। इस रीति का प्रचलन पब्लिक पुस्तकालय बोस्टन में सन् १८९५ से सफलतापूर्वक हो रहा है।

(घ) बालकों से यदि हो सके तो किसी प्रकार का सदस्यता शुल्क न लिया जावे।

(ङ) साधारण सदस्यों से अगर आवश्यक हो तो बहुत कम चन्दा लिया जावे।

(च) पुस्तकालयका स्थान अधिक दूर न हो।

(छ) पुस्तकालयोंकी उपयोगिताको बढ़ानेके लिये उनकी देखरेखमें फुटकर व्याख्यान-माला, वाद-विवाद-प्रतियोगिता और कवि सम्मेलन किये जायें।

(ज) प्रत्येक रियासत अथवा प्रान्त में एक केन्द्रीय कार्यकारिणी सभा हो, जिसमें उस रियासत अथवा प्रान्त के प्रत्येक पुस्तकालय के प्रतिनिधि सम्मिलित हों। व्यापक नीति का निरीक्षण इन केन्द्रीय सभाओं द्वारा हो। इस संगठन में सरकारी प्रतिनिधि को भी सम्मिलित करना उपयुक्त होगा।

(झ) सम्पूर्ण रियासत अथवा प्रान्त के पुस्तकालयों के हिसाब की जांच-पड़ताल के लिये एक केन्द्रीय आय-व्यय परीक्षक कार्यालय रहे।

सभापतिजी ने पुस्तकालय को २ हजार रु० एवं सीकर की अन्य संस्थाओं को ५०० रु० दिये।

बीकानेर म्युनिसिपैलिटी

बीकानेर म्यूनिसपैलिटी के लोकप्रिय प्रधान श्री बद्रीदास जी डागा के म्यू. से दिये गए स्तीफे से यहां काफी हलचल मच गई है। स्तीफा देते हुए आपने सरकार पर काफी आरोप लगाये हैं। सदस्यों की लापरवाही की शिकायत आपने यहां तक की कि ७५ प्रतिशत बैठकें कोरम के अभाव में नहीं हो सकीं।

मारवाड़ी सम्मेलन की शाखा

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन कलकत्ता ने उस दिन एक शाखा लखनऊ में स्थापित की और एक बृहत् सभा में निम्न लिखित पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए:—

सभापति—मांगीलालजी एडवोकेट
उप सभापति—हंसराजजी गट्टानी
,, ,, रामनिवास लाहोटीजी
,, ,, लक्ष्मीचन्दजी डागा
मंत्री—कृष्ण गोपाल कलयंत्री एडवोकेट
उप मंत्री—पूनमचन्दजी सेठिया
,, ,, भानीरामजी बोथरा
कोषाध्यक्षः—श्यामलालजी धुवाँलिया

कृष्ण गोपाल कलयंत्री, मंत्री

डा० पूर्णकला शारदा M. B. B. S.

डाक्टर पूर्णकला शारदा, एम्. बी. बी. एस. राजस्थान केसरी श्री कुँवर चाँदकरणजी शारदा के अनुज डाक्टर मानकरणजी शारदा अजमेर की सुपुत्री हैं।

आप प्रथम माहेश्वरी कुमारी हैं जिन्हों ने डाक्टरी की इतनी उच्च परीक्षा लेडी हार्डिंग कॉलेज नयी दिल्ली में अध्ययन करके पंजाब यूनिवर्सिटी से पास की है। ये लेडी हार्डिंग कॉलेजमें सर्व प्रथम रहीं। इस सफलतापर माहेश्वरी परिवार की ओरसे आपको बधाई।

संयुक्त प्रान्तीय मारवाडी सम्मेलन

संयुक्त प्रान्तीय मारवाडी सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन आगामी ता. २५, २६, अगस्त १९४४ को बनारस में होने जा रहा है। इसके सभापति कानपुर के श्रीयुक्त कैलाशपतजी सिंहानिया ने होना स्वीकार कर लिया है। इसके स्वागताध्यक्ष श्री बृजलालजी खेमका और स्वागत मन्त्री श्री बैजनाथजी केड़िया हैं। संयुक्त प्रान्त की समस्त शाखाओंसे अनुरोध है कि वे अधिकाधिक संख्या में अपने प्रतिनिधि उक्त अधिवेशन के समय बनारस भेज। कोई भी शाखा सभा बिना प्रतिनिधिके रहे ऐसा नहीं होना चाहिए। तभी हम समाज में जीवन ला सकेगें। **—बजरंग लाल लाठ**

प्रधान मन्त्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन।

गढवाल के वीर मैक्स्विनी श्री. देवसुमन का स्वर्गवास

दिल्ली ३१ जुलाई

टिहरी के लोकनेता और अ० भा० राज्य लोकपरिषद की स्थाई समिति के श्री देव सुमन के टिहरी जेल में हुए का समाचार सभी देशी राज्यों में बहुत साथ सुना जाएगा। आप ३ मई से अनशन कर रहे थे। २५ जुलाई को स्वर्गवास हुआ। राज्य के प्रकाशन का कहना है कि आपने ११ अनशन समाप्त कर दिया था। बाद में निया हो गया और निमोनिया से आपका में स्वर्गवास हुआ।

श्री देवसुमन बहुत ही शान्त अत्यन्त मिलनसार स्वभाव के और अपनी के कार्यकर्ता थे। अगस्त १९४२ के लनके सिलसिले में आपको नजरबन्द पहिले देहरादून में और बाद में आगरा नजरबन्द रखा गया। गतवर्ष वहां से होनेके बाद आप रचनात्मक कार्य भावना से गढ़वाल गए थे और इस में सार्वजनिक वक्तव्य देने के अलावा धिकारियों से पत्रव्यवहार भी किया फिर भी आपको गिरफतार किया गया आप पर मुकादमा चलाकर लम्बी सजा दी

जेल में किए गए दुर्व्यवहार के आपने अनशन किया और वीर मैक्स्वि समान ७० दिनके अनशन के बाद पर लोक सिधार गए।

श्री शिवदास बाबू का देहाव

अम्रावती। यहां के सुप्रसिद्ध दानवीर श्री शिवनाथ बाबू का बम्बई में उनके स्थानपर हार्टफेल हो गया। आप बडे सार व्यक्ति थे। आपके निधनसे यहां राजस्थानी समाज को काफी धक्का पहुंचा आप हमेशा तन, मन, धन से समाज देश के कार्यों के लिये मुक्तहस्त से मदद थे। आप के निधन की खबर पहुंचने पर का बाजार एक दिन बंद रहा। परम मृतात्मा को शांति एवं शोक संतप्त परिवार धैर्य दे।

श्री. गोकुललाल असावा

अजमेर २९ जुलाई। श्री गोकुल असावा रिहाई के बाद लगाए गए प्रति की अवेहलना कर अजमेर म्यू० सीमा लांघकर कस्तूरबा फंड के लिए जमा करने को किशनगढ़ को चले वहां उन्हें किशनगढ़ पुलिस की मदद अजमेर की पुलिस ने गिरफतार परन्तु किशनगढ़ पुलिस ने एक्स्ट्राडिशन कार्रवाई हुए बिना उन्हें अजमेर पुलिस सौंपने से इन्कार कर दिया।

वर की आवश्यकता

एक मथुरा निवासी १४ वर्षीया माहेश्व (भूतड़ा व राठी) कन्या के लिये योग्य चाहिये। कन्या शिक्षित सुंदर व गृहकार्य कुशल है। **प्यारेलाल माहेश्वरी, रामस रोड, नसीराबाद (राज.)**

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants or India
Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

एक प्रति का ।≈)

Reg. No. B4441

[अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र]

प्रवर्तक
स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

‘ उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ’

प्रकाशक
श्री. बसन्तलाल श्राफ़
बी. ए. बी. एस. सी. एल्‌एल्. बी.

कार्यालय
अली चेम्बर्स, डीन लेन,
कोर्ट बम्बई

वर्ष ३५, संख्या ५]

बम्बई ता. ७ जुलाई १९४४

[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

यह वर्तमान महायुद्ध किस लिये ?

ले०-लायांनेल फील्डन

यह भीषण युद्ध किस लिए लड़ा जा रहा है। लाखों मानव किस लिए आज अपनी प्राणाहुति दे रहे हैं, और कष्ट झेल रहे हैं? भारतीय कांग्रेसनें सन १९३९ मे यह प्रश्न किया था, परन्तु आज दिन तंक इसका किसीसे उत्तर नही बन सका है। हाँ मैन्शन हाऊस के शब्दों में इसका उत्तर यदि दें तो यही कि "हम अपनी सत्ता कायम रखनें के लिये लड़रहे हैं।" जनतंत्रवादियों ने प्रोपेगेण्डा किया हुआ है कि यह जग आजादी के लिये लड़ा जा रहा है, दूसरी ओर अधिनायकतंत्रवादियों का कहना है कि वे संसार में नयी व्यवस्था कायम करनेके लिये युद्ध कर रहे हैं।

जनतंत्रवादी पक्ष की राय में स्वतंत्रता का मोटे तौर पर अर्थ है व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार जीने का हक, और उसे जबन मिलिटरी में भर्ती न करना, उस पर जासूसी पहरा न होना, और किसी अन्य प्रकार से उस के काम में दखल न देना, और उसे ‘स्टेट’ की अपेक्षा अपने तथा अपने परिवार के लिये श्रम करने का हक़ आदि है। अधिनायकवाद की दृष्टि में नयी व्यवस्था का अर्थ है समस्त जनता को स्टेट की सर्विस के लिये योजनानुसार फौज में भर्ती करना। इस प्रकार जनतंत्र का पक्ष कुछ अस्पष्टता के साथ मलिन व्यष्टिवाद वाले समाज के उद्देश को लेकर चलता है। उधर अधिनायकवाद व्यष्टिवाद को अस्वीकार करके एक नियंत्रित व्यवस्था के द्वारा मानवीय कुशलताके ध्येय को पकड़े हुए है। यही हैं वर्तमान युद्ध में प्रवृत्त होने के अपने २ कारणों को बतलाने वाले नारे तथा युद्धोद्देश्य। परन्तु यह निश्चित है कि सैनिक विजयोंसे मनुष्य की मौलिक गुत्थियाँ कभी नहीं सुलझ सकती है। जो विचार तथा परिस्थितियों विजयोंको जन्म देती हैं वे विजय की अपेक्षा कहीं प्रबल होती हैं। अन्तमें हम देखते हैं कि जनतंत्रका और अधिनायक तंत्रका दीवाला निकला जाता है। तब हमें फिर पूछना पड़ता है कि वर्तमान युद्धोंमें क्या विजय अधिनायक तंत्रोंसे प्राप्त की जा सकती है, और क्या जिस चीजको नष्ट करन के लिये हम लड़ रहें हैं अन्तमें उसी चीज़ को ही तो हम जन्म नहीं दे बैठते? "मैन दी मास्टर," पुस्तकमें गिराल्ड हर्डने ठीक ही लिखा है "आधुनिक शस्त्रोंको चाहे जो भी कोई इस्तेमालमें लाये, वह सभ्यता का विनाश कर सकता है। वर्तमान सैनिक भर्ती और आधुनिक नवीन ढंग के शस्त्रास्त्र मानवीयता का नाश ही करेंगे। इससे कुछ मतलब नहीं कि किसके झण्डे के नीचे, किन नारों के साथ, उन तरीकों को बरता जा रहा है। सीधी सी बात है यदि कोई साईनाइड जहर खाता है तो उसकी मौत निश्चित है, चाहे उक्त जहर आत्मघात के लिये जान बूझकर खाया गया हो और चाहे वह हृदय को बल देने वाला समझकर खाया गया हो"

इस विषयमें जेम्स बर्नहमके निम्न विचार बड़े स्पष्ट हैं:—

युद्धके कारण अनेक पक्षपातपूर्ण विचारोंने लोगोंको थर्रा दिया है उसीका परिणाम है कि एक ओर तो हम स्वतंत्रताकी बातें करते है पर दूसरी ओर हम लोगोंकी कानूनन आमसैनिक भर्ती करते हैं, बड़े-बड़े राज्य हड़प रहे हैं, राजद्रोही करार देकर जनता को बन्दी बना रहे हैं, और लोगोंकी चिट्ठी-पत्री पर सख्त सैंसरशिप बैठाया हुआ है। हम अपने सन्तोष के लिये यह मान बैठे हैं कि युद्ध समाप्त होते ही ये सब असम्बद्धताएं चर्चिल की या अन्य जनप्रिय व्यक्ति की छड़ी के इशारे से आपसे आप दूर हो जायेंगी।

मगर हमें संदेह है कि आज युद्ध के दिनों में लोगों को इतनी अच्छी अच्छी तनख्वाहें तथा ओहदे देकर हमने जो आदतें उनमें डालदी हैं वे शायद ही युद्ध के बाद स्थिति को और समाजके ढांचको बदलनें देंगे। युद्ध के बाद भी स्थिर सेना बड़े पैमाने पर निश्चित रूप से रखनी होगी जिसका अर्थ होगा—व्यक्तियों की पृथक सत्ता को कुचलना।

युद्ध के बाद औद्योगिक मशीनें बढ़ जायेंगीं और लोगों को रोजगार की भी जबर्दस्त तलाश होगी परिणामतः उन्हें चाहते अनचाहते मजूरों की भर्तीमें दाखिल होना पड़ेगा। अनुभव ने हमें बताया है कि यूरोप के विभिन्न राष्ट्रोंके कारण सामयिक आर्थिक और सामाजिक आवश्यकताओं के साथ उनका मेल नहीं बैठ पाता है। विभिन्न टेरिफ, कानून मुद्रा, पास पोर्ट, सीमा निर्धारण, नौकरशाही और स्वतंत्र फौजों ने भ्रमियों, व्यापारके प्रवाह, और आधुनिक टैकनोलोजी के उपयुक्त तथा माँगे गये कच्चे माल का गला घोंट दिया है। यह स्पष्ट है कि इनको कुचला जा रहा था। आज ये जर्मनीद्वारा पीसे जारहे थे। अब १९३९ से पूर्व की स्थिति बर्दाश्त नहीं की जा सकती है। अमेरिका घोषणा कर सकता है कि वह ताकत के जोर पर देशों की सीमायें बदले जानेको (इतिहासमें केवल इसी तरह मुख्य परिवर्तन हुए हैं) मंजूर नहीं करेगा, और लन्दन तथा वाशिंग्टन एक राजधानी से दूसरी राजधानी को भागे हुए शरणार्थियों को अपने यहाँ स्वीकार कर सकते हैं, परन्तु इन उच्च नैतिक विचार स्वप्नों के बावजूद भी मृत राजनीतिक प्रणाली की नसों में खून का एक कतरा भी नहीं डल सकेगा"

ऊपर के उद्धरणों के लेखक मि० जेम्स बर्न का विचार तथा मत है कि संसार से डिमोक्रैसी, डिक्टेटरशाही, और राष्ट्रीयता का नामो निशां मिट जाना चाहिये, और उसके स्थान पर संसार में ३ या ४ बड़ी बड़ी सुपर स्टेट्स होनी चाहियें। ये स्टेट्स इन्डस्ट्री की मुख्य केन्द्र होंगी, और इन में संचालन का मुख्य हाथ उन मैनेजरों के हाथों में होगा जो मैशीन का नियंत्रण करेंगे। यह रूस की तरह कुशल कारीगरों का अधिकारपूर्ण शासन सञ्चालन होगा। इसमें योजनाकारों की दुनिया बसेगी, और यह वह तर्कसंगत प्रणाली का विकास होगा जिसका ध्येय मशीनों द्वारा मनुष्य को अधिकतम भौतिक सुखप्रदान कराना होगा।

ऊपर के मतपर विभिन्न सम्मतियाँ और दृष्टिकोण हो सकते हैं। मैं भी इस से पूर्णतया सहमत होने का प्रोत्साहन नहीं पाता हूँ। परन्तु फिर भी इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि इस प्रकार की दुनिया की संभावना के चिन्ह कुछ कम नहीं हैं। सैनिककरण और हिंसावाद आज जिस प्रकार बढ़ रहे हैं, उससे उक्त संभावना के चिन्ह दृष्टिगोचर होते हैं। क्रिश्चियन चर्च की असफलता और सोशलिज्म और क्रिश्चियन चर्चका भौतिक सम्पत्ति तथा भौतिक सफलता का शिकार होना भी इसीका संकेत है। यदि मानव इन्डस्ट्रियल मशीनों से, और बड़े बड़े व्यवसायों से सांसारिक सफलताओं के लिये अनीश्वरवादी और गला काटने वाला बनादिया जायेगा तो सुपरस्टेट्स में भी आपस में युद्ध निश्चित है, और अन्तमें जबर्दस्ती तथा मारकाट के द्वारा नौकर-शाही और टैकनीशियनों के मातहत यह संसार सैनिक भर्ती और शासन द्वारा शासित होगा और एक विशालतम पैमानेपर हिटलर के ही स्वप्नों को पूरा करेगा।

इन सब से हमारे असली प्रश्न का समाधान नहीं होता कारण ऐसा होने से भी व्यष्टि की प्रगति अस्थायी रूपमें या स्वेच्छाचारिताके साथ रोक दी गयी होगी सर्वदाके लिये नहीं। मनुष्य का उद्देश्य केवल दीमकों की वल्मीक या मधुमक्खियों का छत्ता भर नहीं होसकता है। व्यष्टिवाद से समालोचना को जोर मिलता है और समालोचना से जबर्दस्ती का नाश होता है। एक शिक्षित व्यक्तिको किसी भी प्रतीक के प्रति सम्मान प्रगट करनेमें तकलीफ अनुभव होती है—यह प्रतीक चाहे पुरोहित हो, चाहे राजा हो, और चाहे पार्लमेण्ट या कोई पताका हो। स्वभावतः एक आज़ाद समाज आत्मनिर्णयके हक पर आश्रित होकर उक्त बन्धनोंसे छूट भागना चाहा करता है। इस प्रवृत्तिको समाज के नेता दबाया करते हैं—ये नेता खतरे की गंध ले लिया करते हैं; और मशीनें, प्रोपेगेण्डा के जबर्दस्त एकाधिकार, और यातायातके साधनों की फुर्ती आदि उनके हाथमें तुरुपचाल के ताश के पत्तेका काम देते है। तब व्यक्ति अपने ही चींटियोंके घरौंदेके नीचे पिस जाता है। तब भौतिक से अन्य उद्देश्यों और निष्ठाओं नष्ट होजाने पर काम, योजना, और सैनिककरणकी पुकार मचती है। और परिणामतः डिमोक्रैसी अपने को डिक्टेटरशिप का बाना पहिनालेती है, और डिक्टेटरशाही सुपर स्टेटका और यह संसार एक कारखाने में बदल जाता है। परन्तु व्यक्तिकी उत्पत्ति को नहीं रोका जा सकता है। जल्दी या देरसे जब मनुष्य यह देखता है कि भौतिक स्वत्वकी दौड़ उसे युद्ध की ओर लेजाती है और युद्ध फिरसे उसे गुलामी में धंकलते हैं, और गुलामी से फिर युद्ध मचते हैं तब वह बारबार यही प्रश्न करता है कि आखिर यह सब किस लिये?

निःसन्देह कुछ लोगों की दृष्टि में युद्धों से रुक रुक कर होते हुए भी, भौतिक उन्नति का उद्देश्य मनुष्य के कल्याण के लिये ही है। परन्तु

(शेष पृष्ठ २ पर)

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० ७ जुलाई १९४४

अन्यायपूर्ण आर्डिनेंस

युद्ध शासकोंको स्वेच्छारिताका प्रदर्शन करने का दुर्लभ अवसर प्रदान करता है । देश की सुरक्षाके नाम पर वे अपने हितोंके प्रतिकूल दीख पडनेवाली प्रवृत्तियों पर मारात्मक प्रहार कर उन्हें हमेशाके लिए दफना देनेके लिए निर्भय आगे बढ़ते हैं। शांतिकालके कानून उन्हें अपर्याप्त नजर आते हैं—उनके स्थानपर वे आर्डिनेंस पर आर्डिनेंस निकालते हैं, जनताको अपनी शक्तिका प्रदर्शन कर आतंकित करते हैं और इस प्रकार चाहते हैं कि सबके सब उनकी इच्छाओंके आगे आत्मसमर्पण करें। दूसरे शब्दोंमें एक प्रकारके फौजी कानूनोंका बोलबाला हो जाता है, और सर्वसाधारणको उनका पालन करनेके लिए बाध्य किया जाता है । अस्तु युद्ध एक ऐसे भयंकर वातावरण की सृष्टि करता है जिसमें स्वाभिमानी व्यक्तियोंका दम घुटने लगता है । जब से भारत सरकारने जबर्दस्ती भारतको इस द्वितीय महासमर में कुदाया है, युद्ध की न्यामतों को इकट्ठा करते करते भारत अघा गया है । वह और न्यामतों को दूर से नमस्कार करता है किन्तु दयालु भारत सरकार से नयी नयी न्यामतें उसे वख्श किये बिना रहा ही नहीं जाता ।

भारत को अभी हाल में कागज नियंत्रण आर्डिनेंस के रूप में एक नयी न्यामत वख्श की गयी है । भारत सरकार का इसे दुर्भाग्य ही मानना चाहिए कि वह तो " भारतीयों के हित के लिए " न्यामतों की वर्षा कर रही है, किन्तु भारतीय चिल्ला चिल्लाकर कहते हैं—" ना बाबा, अब मेहरबानी करो, न्यामतों का अजीर्ण हो गया ", पर नटखट भारतीयोंकी वह क्या परवाह करे ? उसे तो अपना फर्ज अदा करना है चाहे उसे लोग जो कहें । भारतीय अवश्य नटखट हैं जैसा कि अपनी अपहृत स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए छटपटाने वाले व्यक्ति होते हैं चाहे वे जिस देश धर्म या जाति के हों । और आजादी के लिए छटपटाहट एवं व्याकुलता स्वाधीनता कामी व्यक्तियों के लिए अनिवार्य है । भारत सरकार का यह आर्डिनेन्स भारत के शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जीवन पर घातक आक्रमण है । इसके अनुसार इस वर्ष व्यवहृत किये जाने वाले कागज (अखबार छपनेवाला कागज अपवाद है) का परिमाण गत वर्ष व्यवहृत कागज के परिमाण का एक तिहाई होना चाहिए, शैक्षणिक पुस्तकों के लिए परिमाण आधा है । हैण्डबिलोंका वितरण निषिद्ध कर दिया गया है ।

यदि पेपर कंट्रोल (कागज नियंत्रण) आर्डिनेन्स बनानेवाले सज्जन बुद्धिमान और व्यवहारी होते तो कतई ऐसी वाहियात शर्तें न रखते जो कि कतई व्यवहार्य नहीं है । मिसाल के तौरपर हम एक बात देकर इसको स्पष्ट करेंगे । उन्हों ने यह आदेश दिया है कि व्यापारी अब तक वही चोपड़ियों आदिमें जितना कागज इस्तेमाल करते थे वे अब उसका ३० प्रति शतही इस्तेमाल करें । क्या ही अच्छा होता वे साफ साफ यही कह देते कि व्यापारी अपनी दुकानों में ताला लगा कर अपने अपने घर बैठ जायें । न रहें बाँस न बजे बाँसुरी । व्यापारी लोगों को इतनी फुरसत ही कहां थी कि वे अपनी बहियों मे लिख २ कर अपनी कलम को घिसते । जब व्यापार करना है तो काम व्यवस्थित रखने के लिये जितना हिसाब–कितना पत्रव्यवहार रखना जरूरी है उतना ही रखते थे । अब उनको यह कहना कि इन को घटा कर ३० प्रतिशत बनावें इसका क्या अर्थ है । यह तो वे ही बुद्धिमान लोग बतायें जिन्होंने राज्य सुव्यवस्था का भार अपने कन्धोंपर ले रखा है ।

इस आर्डिनेन्स का परिणाम यह होगा कि जिन पत्रिकाओं को न्यूज प्रिंटका कोटा नहीं प्राप्त है उन्हें अपने पेज घटाकर एक तिहाई कर देने होंगे । प्रत्येक प्रेसका छपाईका काम ७० प्रतिशत कम हो जायगा और इस प्रकार ७० प्रतिशत प्रेस कर्मचारी बेकार हो जायंगे ।

ज्ञान के वाहक पत्रों पर जो यह प्रहार किया गया है वह सर्वथा अनुचित, गर्हित एवं अन्यायपूर्ण है । भारत के पत्रोंके इतिहासमें अधिकारियों द्वारा इस प्रकार का प्रहार पहले कभी नहीं हुआ था । यह कागज नियंत्रण है या ' कागज ' विनाशकी कुटिल चाल ? सरकारको कागज नियंत्रण की उतनी चिन्ता नहीं है जितनी कि ज्ञान और चेतना का प्रसार कर सोते हुए भारतीयोंको जागृत करनेके काममें संलग्न पत्र पत्रिकाओंके जीवन प्रदीपको बुझा देने की । भारतीय पत्रोंके लिए यह गर्व की बात है कि उन्होंने हमेशा अपने देशके स्वातंत्र्य आन्दोलन का हार्दिक समर्थन किया है और ब्रिटिश साम्राज्यवादके कारनामोंकी भर्त्सनाकी है । जान पडता है, उनके इस रुख से ही भारत सरकार चिढ़ी है और कागज नियंत्रण का बहाना कर उनका अस्तित्व मिटाने पर आमादा है । भारतीयों पर कागज नियंत्रण आर्डिनेंस लाद कर खुद कागज का दुरुपयोग करना सरासर अन्याय है । उसके और विभागों के विषयमें हम कुछ अधिक नहीं जानते किन्तु नेशनल वार फ्रंट जिस ढंगसे कागज की बर्बादी कर रहा है उसे हम भली भांति जानते हैं । फौजमें भर्ती होनेके संबंधमें लाखों की संख्यामें छपे हुए पर्चों की बाढ़ सी आ गयी है । जिधर ही देखिये, उधर ही पर्चे ' बेरहमी ' के साथ बंट रहे हैं । और मजा यह कि अधिकतर व्यक्ति पर्चे पर नजर दौड़ाते ही उसे फेंक देते हैं । क्या सरकारके इस तिकडम से घबडा कर भारतीय पत्र चिरसञ्चित अपनी विचार धाराओंका परित्याग कर देंगे ? हम जोर देकर यह कहना चाहते हैं कि यदि सरकार को ऐसी आशा है, तो वह मूर्खोंके स्वर्गमें रहती है । इस आर्डिनेन्स को रद्द करानेके लिए देशके कोने कोनेमें जो आन्दोलन हो रहा है उसका हम हार्दिक समर्थन करते हैं और सफलता प्राप्त न होने तक इसे जारी रखनेके लिए आन्दोलनकारिओंसे अनुरोध करते हैं ।

" माहेश्वरी " के पाठकों से

हमें अपने दयालु एवं शुभाकांक्षी पाठकों तथा विज्ञापन दाताओं से यह निवेदन करते हुए दुःख होता है कि उपरोक्त आर्डिनेंस के फलस्वरूप ' माहेश्वरी ' अब केवल आठ पृष्ठोंका ही निकला करेगा । इस आकस्मिक क्रमविकासने हमारी योजनाओंपर हरताल फेर दिया । हम वर्तमानं वर्षमें माहेश्वरीको और भी अच्छी पत्रिका बनाना चाहते थे । हमें भय है, ८ पृष्ठोंमें हम वांछित मैटर न दें पायेंगे । फिर भी हम ' माहेश्वरी ' का स्टैण्डर्ड जरा भी न गिरने देंगे और इतने ही पृष्ठोंमें जो भी संभव हो सकेगा, देते रहेंगे ।

लेखकों से हम यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि अब वे जो भी लेख या सूचना प्रकाशनार्थ भेजें वह बहुत संक्षिप्त होनी चाहिए । यदि वे ऐसा न करेंगे तो शायद हम उनकी रचनाओं या सूचनाओंका इच्छा होते हुए भी प्रयोग न कर पायेंगे । आशा है, हमारी दिक्कतों को देखते हुए ऐसा करनेमें उन्हें हिचकिचाहट न होगी ।

अन्तमें हम अपने विज्ञापनदाताओं से भी दो शब्द कहना चाहते हैं । अबतक उन्होंनें ' माहेश्वरी ' को जो सहयोग और सहायता प्रदान की हैं, उसके लिए " माहेश्वरी " परिवार उनका आभारी है । आशा है, जिस स्थितिमें हम आज पड़ गये हैं, उसमें भी वे अपना सहयोग देना जारी रखेंगे । हम न्यूजप्रिंट कोटा प्राप्त करने के लिए फिर प्रयत्न कर रहे हैं । परिणाम ज्ञात होने में काफी समय लग सकता है । इस दर्मियान क्याही अच्छा हो यदि विज्ञापनदातागण घटे हुए पृष्ठों के अनुपात से अपने विज्ञापन संक्षिप्त कर हमारे पास उनको छापने के लिए भेज दें । यदि कोटा मिल गया तो हम फिर से उनके विज्ञापन को पहले जितना स्थान देना शुरू कर देंगे ।

चाचीजी का सम्मान

माहेश्वरीके पाठकोंको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अजमेर निवासी बन्धुओंने श्रीमती गुलाबदेवीजी भट्टड़को आगामी विजयादशमीको उनके ७१ वें वर्षमें पदार्पण करने पर सम्मान प्रदान करनेका सुनिश्चय किया है । श्रीमती गुलाबदेवीजी भट्टड़ने, जो कि सारे अजमेरमें चाचीजी के नामसे प्रसिद्ध हैं, अपने जीवनके लगातार गत ४५ वर्षोंसे महिला शिक्षा क्षेत्रमें जो कार्य किया है वह समाजके लिये एक गौरव की बात है ।

श्रीमती गुलाबदेवीजी का जीवन हमारी बहनों के लिये ही क्या अपितु जो सार्वजनिक सेवा से प्रेम रखते हैं उनके लिये भी अनुकरणीय है । स्वर्गीय श्री० मथुरादासजी भट्टड़ ने स्वामी दयानन्दजी की प्रेरणा और सामाजिक सुधार से ओतप्रोत होकर उस समय स्त्रीशिक्षा की उपयोगिता एवं महत्ता को दृष्टि में रख कर जो कार्य प्रारंभ किया उसे लगातार ३५ साल तक पतिवियोग के पश्चात आत्मवत पुत्र की भाँति प्रेम सिंचन कर विकसित किया और जिस की छत्रछाया में हजारों बहनों ने शिक्षित होकर अपने मनोमंदिर को आलोकमय बनाया वह सदा के लिये संस्मरणीय है ।

और अभी भी इस वृद्धावस्थामें अपने जीवनका समय अपने पतिके वचनों को सही मानती हुई कल्याणकारी, परोपकारमय ढंगसे व्यतीत कर रही हैं । उसीका यह सुपरिणाम है कि उस संस्थामें करीब ४०० लड़कियाँ निःशुल्क शिक्षा पा रही हैं । पू० चाचीजी देशकी जो अनुपम सेवा कर रही हैं उसे अजमेरवाले ही क्या, राजस्थान एवं भारतवर्षके मारवाड़ी भाई बहन उक्त अवसर पर सम्मान समारंभमें सहयोग दकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करनेमें कभी नहीं चुकेंगे ऐसा हमें पूर्ण विश्वास है । ऐसे बहुत कम अवसर आते हैं जब हम अपने हृदय की भावनायें ऐसे गौरवमय व्यक्तियों के प्रति व्यक्त कर सकते हैं । यह एक अवसर ऐसेही प्रकार का है । इस काम के लिये अजमेर में जो समिति वहां के गणमान्य व्यक्तियों के तत्त्वावधान में बनी है उसको पूरापूरा सहयोग करना चाहिए ।

वर्तमान महायुद्ध

(पृष्ठ १ का शेष)

फिर भी मुझे सन्देह है कि यह सुख तथा शान्ति की गारन्टी दे सकता है कि नहीं ~~निःसन्देह त्याग के बिना कोई उत्तम~~ प्राप्त भी की जा सकती है इस में मुझे सन्देह है । आज क युद्धों में विजय का अर्थ है दूसरों की पराधीनता । अतः इस तरह से प्राप्त शान्ति चिरस्थायी नहीं हो सकती है । यूरोप के भौतिकवाद तथा सैनिककरणकी नकल यदि पूर्वीय देश करेंगे तो उसका निश्चित परिणाम अन्य देशोंके माल पर भारी कर विरोध, और अधिक समर्थ होने पर नये बाजारों की तलाश ही होगी । तब नये और विशाल युद्धोंसे यह संसार थर्रा उठेगा ।

भारतीय प्रश्न के उत्तर का समाधान सबसे उत्तम यही है, जैसा कि मैंनें भारत में रहनेपर अनुभव किया था, कि यूरोप की भौतिक लालसा नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टि से दीवालिया साबित होचुकी है. भारतीय दृष्टिकोण हमें उस रस्ते पर चलनेसे चेतावनी देता है। भारत को पूर्ण विश्वास है कि यूरोपकी शासन पद्धतियाँ और रीतिरिवाज, भारतके लाखों व्यक्तियों के जीवनों में प्रसन्नता नहीं लासकेंगे भारत को समझ लेना चाहिये कि उसके लम्बे इतिहास में मैशीनोंके दास पश्चिमके मुकाबले में जीवन के बेहतर उदाहरण भरे पड़े है, सन्तुष्टि के बेहतर चान्सवाले उसके अपने जीवन के रास्ते उसके पास है, और औद्योगीकरण की विरोधिनी, सरल जीवनवाली, अहिंसासे पूर्ण, धार्मिकता से युक्त, भारतकी आवाज को आज हमें पागलपन कहकर नहीं टाल देना होगा। मेरा विश्वास है भारत अपनी इस विशेषता के साथ यदि मित्र की तरह भी तटस्थ मित्र रहकर हमारा मित्र बन जाये तो वह आज के दुःखी तथा रुष्ट दास की अपेक्षा हमारे अधिक काम में आयेगा ।

कांग्रेस पर लगाये गये अभियोगों के धुर्रे

भारत सरकार पर गांधीजी के प्रत्यारोप

निष्पक्ष न्यायालय में मामला पेश करो

कांग्रेस का अहिंसात्मक विद्रोह रद्द न होगा

भारत सरकारकी ओरसे १२५ पृष्ठोंमें 'गांधीजीसे पत्र-व्यवहार' शीर्षक एक पुस्तिका प्रकाशित की गयी है, जिसमें टाटेनहम-पुस्तिका (उपद्रवोंके लिये कांग्रेसकी जिम्मेदारी') का गांधीजी द्वारा ७८ पृष्ठोंमें दिया गया जवाब भी शामिल है। अगस्त १९४२ से अप्रैल १९४४ तक एक ओर गांधीजी तथा दूसरी ओर लौर्ड लिनलिथगो, लौर्ड वावेल लौर्ड सेमुअल और भारत-सरकारके बीच जो पत्र-व्यवहार हुआ था, वह भी इसमें शामिल है।

> "मैं कांग्रेस के विद्रोह को जो अहिंसात्मक है, रद नहीं कर सकता। मुझे उस के लिए अभिमान है। भविष्य के लिए आश्वासन देने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता जब कि मैं अपने को निरपराध मानता हूं। मे बंदी बने रहने में ही संतुष्ट हूं।"

१५ जुलाई १९४३ को लिखे गये पत्र में गांधीजीने सरकारी पत्रिकामें लगाये गये आरोपोंका जवाब दिया है और कहा है:—

'साधारणतया उपद्रवोंको इस तरह देखना होगा कि वे गिरफ्तारियोंके बाद हुए और इसलिए गिरफ्तारियां ही उनका कारण हैं। जैसा कि पत्रिका के शीर्षक से ही मालूम होता है, आरोपोंका उद्देश्य कांग्रेसपर जिम्मेदारी लादना था। सरकार का तर्क इस प्रकार है कि मैंने और बादमें कांग्रेसने अप्रैल १९४२ से सार्वजनिक आंदोलन की तैयारियां शुरू कर दी थीं, जबकि पहले-पहल मैंने भारत से अंग्रेजों को चले जानेवाले विचारको जिसे भारत छोड़ो' कहा जाता है, आगे रखा; सार्वजनिक आंदोलन से निश्चय ही हिंसा होती; मैं और कांग्रेसजन, जिन्होंने मेरी सलाह मानना स्वीकार किया था, चाहते थे कि हिंसा हो; नेता इसका प्रचार भी कर रहे थे और इस तरह किसी भी हालत में उपद्रव होने ही थे तथा गिरफ्तारियों के कारण हिंसात्मक आंदोलन की आशंका थी और सरकार ने उसे फैलने के पहले ही नष्ट कर दिया। सरकार की पत्रिका के तर्कों का यही सारांश है।

कांग्रेस कैसे जिम्मेवार

'मैंने यह बतानेकी कोशिश की है कि मेरे 'भारत-छोड़ो' सुझावके कारण ही किसी तरहकी भी सार्वजनिक आन्दोलनके लिये तैयारी नहीं कर ली गयी थी, हिंसात्मक कार्यवाही करनेका मेरा अथवा किसी भी कांग्रेसजनका कोई इरादा नहीं था। मैं घोषित कर चुका हूं कि यदि कांग्रेसजन हिंसात्मक कार्यवाहीमें हाथ बटायेंगे तो वे मुझे अपने बीचमें जीता न पायेंगे। मैंने कोई सार्वजनिक आन्दोलन शुरू नहीं किया, ऐसा शुरू करने की सारी सत्ता मुझे सौंप दी गयी थी; मैं सरकारसे वार्तालाप चलानेका विचार कर रहा था और मैं आन्दोलन तभी शुरू करता यदि वार्तालाप भंग हो जाता तथा मैंने वार्तालापके बीच २-३ सप्ताहका समय सोचा था। ऐसी हालतमें यह स्पष्ट है कि यदि गिरफ्तारियां न होतीं तो ९ अगस्त १९४२ और उसके बाद जो उपद्रव हुए, वे न होते। प्रथम तो मैंने वार्तालापको सफल बनाने के लिये अपनी सारी शक्ति लगा दी होती और दूसरे यदि मुझे विफलता भी मिली होती तो मैंने उपद्रवोंको टाला होता। सरकारने भी जैसे कि अगस्तके समय दमन किया था, वैसे ही वह ऐसे आन्दोलनका भी दमन करनेमें कम योग्य सिद्ध न हुई होती और तब मुझपर अथवा कांग्रेसके खिलाफ उसके सम्मुख कोई कारण होता। सख्त कार्यवाही करनेके पूर्व सरकारका यह फर्ज था कि वह कांग्रेसनेताओं और मेरे भाषणोंका अध्ययन करती, जो अ. भा. अधिवेशनमें दिये गये थे। कांग्रेस-नेता इस बातके इच्छुक थे कि आन्दोलन अहिंसात्मक हो और वह भी जब कि वे जानते थे कि कोई भी हिंसात्मक आन्दोलन सफल नहीं हो सकता, और उसे महान शक्तिशाली और तैयार सरकारके विरुद्ध सामना करना पड़ेगा। जनता द्वारा जो भी हिंसात्मक कार्य हुए हैं, चाहे वे कांग्रेसमैन रहे हों अथवा अन्य लोग, नेताओं की इच्छा न होनेके बावजूद भी हुए हैं। यदि सरकार इसके खिलाफ मानती है तो यह बात निष्पक्ष ट्रिब्यूनलके सम्मुख निसंदेह सिद्ध होनी चाहिये। किन्तु जब कारण निश्चित है, तब उपद्रवोंकी जिम्मेदारी इस तरह अन्यपर लादनेकी क्यों चेष्टा की जाती है? भारतव्यापी गिरफ्तारियोंको कार्यान्वित करनेकी सरकारी कार्यवाही इतनी हिंसात्मक और सख्त थी कि जो जनता कांग्रेस से सहानुभूति रखती थी, वह अनुशासन खो बैठी। इसका मतलब यह नहीं है कि कांग्रेस उनका सहयोग करती है, पर इसका यह अर्थ जरूर है कि मानव स्वभावके धैर्य और शान्तिकी भी सीमा होती है। यदि मानव-स्वभावके धैर्यसे कहीं ज्यादा सरकारकी कड़ी कार्यवाही हुई, तो उस कार्यवाहीके करनेवाले और करानेवाले ही विस्फोट आदिके लिये जिम्मेदार हैं, जो कि बादमें हुए। सरकार यह जोर देकर कह सकती है कि गिरफ्तारियां जरूरी थीं। मैं भी यह कह सकता हूं कि सरकार क्यों अपनी कार्यवाहीके परिणाम स्वरूप हुई घटनाओंकी जिम्मेदारी माननेसे लज्जित होती है? आश्चर्य तो यही है कि जब सरकार जानती है कि उसकी इच्छा ही कानून है, तब क्यों अपनी कार्यवाहीको जायज बतानेकी जरूरत समझती है।

> "यदि भारत को स्वाधीनता दे दी जाती तो कांग्रेस जन जो गत ५० वर्षों से आजादी के लिए प्रयत्नशील हैं, स्वेच्छापूर्वक जापान विरोधी मोर्चे में शामिल होकर मित्रराष्ट्रों का उत्साहपूर्वक साथ देते।"

> "कारावास में रहना सत्याग्रही के लिए भारयुक्त नहीं है। उसके लिए तो वह स्वाधीनता का प्रवेशद्वार है।"

कांग्रेसके प्रति इतना क्रोध!

कांग्रेस हमेशा सारे भारतका प्रतिनिधित्व करनेका प्रयत्न करती रही है, चाहे यह कितना छोटा और अपूर्ण प्रयत्न रहा हो। कांग्रेसने ६० वर्षोंके अपने इतिहासमें कभी भी भारतकी आजादी के ध्रुव तारे से अपनी दृष्टि नहीं हटायी। गणतन्त्र के सच्चे अर्थ में कांग्रेस धीरेधीरे प्रगतिपथपर बढ़ती गयी है। यदि यह कहा जाय, जैसा कि कहा जाता रहा है कि कांग्रेस ने गणतन्त्र की भावना ब्रिटेन से सीखी और कोई भी कांग्रेसमैन इस वक्तव्य का खण्डन न करेगा, किन्तु साथ ही यह भी कहा जायगा कि इस गणतन्त्रात्मक प्रणाली का मूल पुरानी पंचायत की प्रणाली में था। यह प्रणाली नाजी, फासिस्ट अथवा जापानी प्रभुत्व के सम्मुख झुक नहीं सकती। ऐसी संस्था जिस की सांस ही आजादी हो और जो सब से संगठित और जबर्दस्त साम्राज्यवाद से संघर्ष कर रही हो, उसकी विदेशी प्रभुताका प्रतिरोध करनेकी कोशिश एक व्यक्ति के रूपमें रहकर नष्ट हो जायगी। जब तक कि कांग्रेस अहिंसाके साथ जुड़ी हुई है, तब तक वह अदमनीय और अजेय है।

"कांग्रेसके प्रति सरकार जो इतना असाधारण क्रोध-प्रदर्शन कर रही है, उसका कारण क्या है? इसके पहले मैंने ऐसा चिड़चिड़ापन नहीं देखा था। 'भारत छोड़ो' का मेरा प्रस्ताव तो कारण नहीं है—उपद्रव कारण नहीं हो सकते क्योंकि अंग्रेजोंके चले जानेकी बात ज्योंही मैंने प्रस्ताव रूपमें प्रकाशित की, सरकार ने क्रुद्ध रूप धारण करना शुरू किया। उसका प्रतिफल, ९ आगस्तकी आम गिरफ्तारीके रूपमें प्रकट हुआ—जिसकी तैयारी पहलेसे ही कर ली गयी थी—केवल प्रस्ताव पास हो जानेकी प्रतीक्षा थी।

> "मैंने कोई सार्वजनिक आन्दोलन शुरू नहीं किया। ऐसा करने की सत्ता भर मुझे सौंप दी गयी थी; मैं सरकार से वार्तालाप करने का विचार कर रहा था और मैं आन्दोलन तभी शुरू करता यदि वार्तालाप भंग हो जाता। कांग्रेस के नेताओं को अचानक गिरफ्तार कर के सरकार ने स्वयं अपने युद्ध प्रयास में बाधा पहुंचायी।"

'भारत छोड़ो' की व्याख्या

तथापि प्रस्तावमें 'भारत छोड़ो' वाली बातके अतिरिक्त और कुछ नया नहीं था। सामूहिक आन्दोलन तो सन् २० से ही कांग्रेसके कार्यक्रममें रहा है, यह सभी जानते हैं। किन्तु स्वतन्त्रता एक प्रवंचना बनी रही। कभी हिन्दू-मुस्लिम अनैक्य, कभी देशी राजाओंके प्रति किये गये वायदे, कभी दलित वर्गके हितकी दुहाई, कभी युरोपियनोंके निहित स्वार्थ स्वाधीनताके राजद्वारका अवरोध करते रहे। 'फूट डालो और शासन करो' का अविश्रान्त स्रोत प्रवाहित रहा। कालचक्र उस स्रोतकी बालुकाराशिको अनावृत करने लगा। युद्धरत राष्ट्रोंके बीच रक्तकी नदियां बह चलीं और राजनीतिक-चेतनापन्न भारत मूक दर्शक बना रहा—जनवर्गमें जड़ता व्याप्त रही थी। अतः 'भारत छोड़ो' की चीत्कार मच गयी—उसने स्वाधीनता आन्दोलन को शरीर प्रदान किया। उस चीत्कारका कोई जवाब नहीं था उस वेदनापूर्ण चीत्कारमें उन लोगों के स्वर गूंजने लगे जो विश्व-संकट में हाथ बटानेके लिए तड़प रहे थे।

साम्राज्यवाद और नाजीवादसे लोकतन्त्रका उद्धार करनेकी आकांक्षामें उस चीत्कारका मूल निहित है। यद्यपि कांग्रेसकी मांग-पूर्ति से प्रतिगामी शक्तियों के किसी भी विशाल समूहपर लोकतन्त्र की विजय सुनिश्चित हो जाती और जापान-जैसेके [illegible] चीन-रूसका पिंड छूट जाता, किन्तु मांगसे सरकार चिढ़ गयी। जो लोग उस मांगके साथ थे उनपर अविश्वास किया गया और इस प्रकारके 'अविश्वासी' ही युद्ध-प्रयासके सबसे बड़े बाधक बन गये। ८ अगस्तकी रात तक कांग्रेसकी कार्रवाई प्रस्तावोंतक ही सीमाबद्ध रही। युद्ध-प्रयासमें कांग्रेस को बाधक बताना सरासर गलत है। ९ अगस्तके उषाकालमें कांग्रेस बन्दीगृहकी सीखचोंके अन्दर बन्द कर दी गयी।

सरकार ही जिम्मेदार

"उस के बाद क्या हुआ उस के लिए एकमात्र सरकार जिम्मेदार है। जिस मांग को

(शेष पृष्ठ ४ पर)

स्टर्लिंग ऋण की समस्या

प्रो. अमरनारायण अग्रवाल

युद्धका एक अच्छा आर्थिक परिणाम यह हुआ है कि हमको यदि राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त नहीं हुई तो विदेशी ऋणसे मुक्ति अवश्य मिली है। हमने युद्धके आरम्भसे ही ग्रेटब्रिटेन और अमेरिकाको बहुत-सा लड़ाईका सामान पैदा करके भेजा है। अमेरिकासे हमें जितना धन मिला वह सब ब्रिटनने ले लिया। साथ ही हमने जो सामग्री विलायत भेजी उसके लिए भी वह हमारा देनदार हो गया। इस प्रकार धीरे-धीरे ब्रिटन पर हमारा ऋण बढ़ता गया। ब्रिटेनेके पास इतना साधन नहीं था कि वह हमें माल या सोनेके रूपमें अदा कर सके। अतः पहले तो हमने जितना रुपया ब्रिटेनसे उधार लिया था उसका भुगतान किया फिर उसके बाद जितना ऋण ब्रिटेनपर चढ़ता गया, उसके बदलेमें उसने हमे परचे लिखकर दे दिये और वादा किया कि युद्धके पश्चात् वह हमारा रुपया अदा कर देगा। इन परचोंको 'स्टर्लिंग सिक्योरिटीज' कहते हैं। आजकल हमारे पास यह परचे ८०० करोड़ रुपयोंसे अधिकके इकट्ठे हो गये हैं और आशा की जाती है कि युद्धके समाप्त होते होते यह रकम १,००० करोड़ रुपये तक पहुँच जायगी।

कर्जका भुगतान

इस प्रकार संसारके रुपयेके बाजारमें अब हम ऋणी न रहकर साहूकार बन गये हैं। १,९०० करोड़ रुपया बड़ी रकम है और अगर ब्रिटेन हमें इस रकमके बदलेमें युद्ध समाप्त होते ही मशीन आदि दे दे, तो हमें उद्योगीकरणमें बहुत सहायता मिले। बिड़ला-टाटा आर्थिक योजनामें स्टर्लिङ्ग सिक्योरिटीजको ऊँचा स्थान दिया गया है। इस योजनामें कुल १० हजार करोड़ रुपया लगेगा, और इसके $\frac{१}{१०}$ भाग, अर्थात् १ हजार करोड़ रुपये, के आनेकी आशा इसी साधनसे की गयी है। इससे स्पष्ट है कि यदि हमको यह स्टर्लिङ्ग ऋण न चुकाया गया; तो हमारे आर्थिक योजनाके सारे स्वप्न मिट्टीमें मिल जायँगे।

इस विषयमें इस योजनाके लेखकोंको बहुत आशा थी कि हमें स्टर्लिङ्ग सिक्योरिटीजको अवश्य ही यन्त्र आदिमें परिणत करनेका पूरा-पूरा अवसर मिलेगा, पर हमें आरम्भसे ही भय था कि ऐसा होनेमें बहुत-सी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ेगा। पहली बात तो यह है कि युद्धके पश्चात् यन्त्रों आदिकी चारों ओर कमी होगी; खासकर ब्रिटेनको युद्ध द्वारा नष्ट किये गये घर, मशीन और उपभोगका सामान बड़ी मात्रामें तैयार करनेके लिए मशीनोंकी बहुत आवश्यकता पड़ेगी; अतः ब्रिटेन स्वयं हमारे लिए मशीनें न दे सकेगा। सोना देनेमें असमर्थता प्रगट की है। उनके कथनानुसार संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाने उनसे सब सोना पहले ही हथिया लिया है और अब वे कहींसे भी सोना लाकर हिन्दुस्तानको नहीं दे सकते। डालर आदि देनेमें भी ब्रिटेनको ऐसी ही कठिनाई पड़ेगी। अतः ब्रिटेनके पत्र और विद्वान् अबतक यह कहते चले आ रहे थे कि वे हिन्दुस्तानको केवल उपयोगका सामान जैसे साइकिल, कपड़ा, दवा आदि दे सकते हैं। यदि हिन्दुस्तान यह नहीं लेना चाहता तो हम और कुछ दे भी नहीं सकते।

बलिदानका परिणाम ?

यह दृष्टिकोण भारतके लिए भयावह था, और है। हमारे यहाँ जितना भी उद्योगीकरण हुआ वह प्रायः उपयोगके सामान तक ही परिमित है। आधार-उद्योग, जैसे लोहेके कारखाने, केमिकल बनानेके फर्म, मशीन तैयार करनेवाली फैक्टरियाँ आदि हमारे यहाँ केवल नामके लिए हैं। राष्ट्रीय मतके अनुसार, ब्रिटेन ने इस बातका सर्वदा ध्यान रखा है कि भारतमे आधार-उद्योग स्थापित न होने दिये जायँ; अन्यथा यहाँ उसके पक्के मालकी खपत बन्द हो जायेगी। अतः यदि युद्धके पश्चात् हमारे स्टर्लिंगके बदले ब्रिटेनने अपना उपयोग का सामान यहाँ भेजना आरम्भ कर दिया तो हमारे थोड़ेसे वर्तमान उद्योगोंको धक्का लगेगा। स्टर्लिंग सिक्योरिटीज प्राप्त करनेके लिए देशने बड़ा बलिदान किया है; स्वयं कपड़े न पहनकर ब्रिटेनको कपड़ा पहुँचाया, बङ्गालको भूखों मारकर मित्रराष्ट्रोंको भोजन दिया। हर प्रकारसे ब्रिटेनकी सहायता हमने की और हमारे देशवासियोंनें ऊँची कीमतें, चलनाधिक्य चोर-बाजार आदिके सब आर्थिक विकारोंके दुष्परिणामोंको सहन किया। यह बलिदान अब भी चल रहा है। इन सबके बदलेमें हमें स्टर्लिंग सिक्योरिटीज मिली है। यदि उन्हें ब्रिटेनने उपभोगके सामानमें परिणत कर दिया तो हमारे उद्योगका नाश हो जायगा और हमारे बलिदानका नतीजा हमारा आर्थिक विनाश-मात्र होगा।

अभी हमलोग इस मुसीबतसे छुटकारा पानेकी चिन्तामें थे ही कि विलायतके प्रसिद्ध विद्वान् लार्ड केन्स और प्रसिद्ध आर्थिक पत्र इकनामिस्ट ने एक नया प्रस्ताव रखा है और उसका जोरदार शब्दोंमें प्रतिपादन किया हैं। इनका कहना है कि स्टर्लिङ्गके इतनी मात्रामें एकत्र होनेकी अवश्य कोई वजह होगी, नहीं तो इतनी जल्दी भारतवर्षकी आर्थिक अवस्था इतनी न पल्ट जाती। कारण यह है कि युद्ध-व्यय सम्बन्धी समझौता भारतके अनुकूल और ब्रिटेनके प्रतिकूल पड़ता है। ब्रिटेनने जितनी भी लड़ाइयाँ लड़ी हैं उनसे भारतका भी हित-साधन हुआ है, अन्यथा अबतक हिन्दुस्तान जापानियोंका उपनिवेश हो गया होता। अतः हिन्दुस्तानको इस व्ययका एक अच्छा भाग सहन करना चाहिए और स्टर्लिङ्ग ऋणका कुछ भाग इसी ओर लगाना चाहिए।'

भारतके साथ अत्याचार

इसका मतलब खुले शब्दोंमें यह हुआ कि ब्रिटेन भारतवर्षको उससे लिया गया ऋण वापस नहीं देना चाहता। श्री घनश्यामदास बिड़लाने जोरदार शब्दोंमें इस नीतिका विरोध किया है और अन्य व्यापारियों तथा औद्योगिकोंने उनका साथ दिया है। उनके मतमें यह भारतवर्षके साथ अत्याचार है। यह मत पूर्णतः ठीक भी है। भारतवर्षने अबतक अपना पेट काटकर नङ्गे रहकर ब्रिटनकी सहायता की और अबतक यह आशा किये बैठा रहा कि ब्रिटेन अपने वादेकी प्रतिष्ठा बनाये रखेगा और उसके बदले में मशीन आदि देगा जिसकी सहायतासे इस देशमें उद्योगीकरण और आर्थिक योजनाकी नींव उचित रूपसे पड़ सके; पर जैसे ही अन्तर्राष्ट्रीय चलन-समितिके अधिवेशनका अवसर आया और स्टर्लिङ्ग ऋणके सम्बन्धमें निश्चय होनेका समय आया, वैसे ही ब्रिटेनका रुख एकाएक बदल गया और भारतवर्षके अधिक युद्ध-व्यय सहन करनेकी बात होने लगी।

युद्धके व्ययका विभाजन १९३९ के समझौतेके अनुसार अबतक होता आया है और ब्रिटेनने भी इसके विरुद्ध आवाज नहीं उठायीं। फिर एकाएक क्या बात हुई कि ब्रिटनको उसमें कुछ दोष दिखाई देने लगा? अगर उसमें दोष ही था, तो उसपर इसके पहले भी ध्यान जाना चाहिये था। इसके अतिरिक्त, बलिदान और कष्टके हिसाबसे भारतवर्षने जितना भी युद्ध-व्यय बर्दाश्त किया है वह ब्रिटेनके बलिदान और कष्टसे यदि अधिक नहीं तो किसी प्रकार कम भी नहीं है। फिर क्यों भारतपर व्ययका अधिक भार डाला जाय इन प्रश्नोंका कोई समुचित उत्तर नहीं मिलता। ऐसा प्रतीत होता है कि ब्रिटेन इस ऋणसे अपना पीछा छुड़ानेकी चिन्तामें है और इसके लिए इधर-उधरसे बहाना खोज निकालनेमें व्यस्त है।

अंग्रेज कर्ज चुकानेके पक्षमें नहीं

ब्रिटनमें अधिकतर यह समझा जाता है कि भारतके पास इतना स्टर्लिंग इसलिये जमा हो गया है कि उसने ब्रिटेनकी आपत्तिसे पूरा-पूरा लाभ उठाया है और इस प्रकार अन्धेके हाथ बटेर लग गयी है; इसलिये ऋणको न चुकानेमें कुछ भी बुरा नहीं। हम भारतीयोंको मालूम है कि यह मत वास्तविकतासे कोसों दूर है। ब्रिटेनकी सहायता करनेमें हमें बहुत कष्टोंका सामना करना पड़ा है। ब्रिटेनने जो वादा किया है, वह उसे पूरा करना चाहिये। जैसा कि श्री बिड़लाने कहा है, ब्रिटेनको भारतकी परतंत्रतासे लाभ नहीं उठाना चाहिये, नहीं तो दोनों देशों के मध्य जो असन्तोष है वह और बढ़ जायगा और इस देशमें ब्रिटेनके वादोंमें जो रहा-सहा विश्वास है वह भी जाता रहेगा।

कुछ ही दिनोंमें अन्तर्राष्ट्रीय चलन-समितिकी बैठक होनेवाली है जहाँ इस बातका निबटारा होगा। हमें सन्तोष है कि इस बैठकमें भारतके प्रतिनिधि सर चेटियर और सर शराफ भी सम्मिलित होंगे। उन्होंने जोरदार शब्दोंमें घोषित किया है कि वे स्टर्लिंग सिक्योरिटीजकी रक्षा करनेका भरसक प्रयत्न करेंगे।

माहेश्वरी सहायता

१०१) श्रीकृष्णजी चाण्डक बम्बई (फर्म गुहारमलजी रामकरणजी) अपने पुत्र श्री. रामनिवासजी के विवाह के उपलक्ष्में।

११) नवयुवक मण्डल, दोहद की तरफ से माहेश्वरी सहायतार्थ।

(पृष्ठ ३ का शेष)

मैं न्यायोचित और सम्मानपूर्ण मानता हूँ, उस के प्रति सरकार का अविश्वास यह सिद्ध करता है कि लोकतन्त्र के प्रति अपनी भक्ति की उसकी दुहाई और युद्धोत्तर स्वाधीनता की सारी बातें एक छल मात्र हैं! यदि सरकार ईमानदार होती तो कांग्रेसने सहायता करनेका जो प्रस्ताव किया था, उसका वह स्वागत करती। आधी शताब्दी से भारत की स्वाधीनताके लिए लड़नेवाले कांग्रेसवादी भारत की अभिनव प्राप्त स्वाधीनता की रक्षा के लिए मित्र राष्ट्रों के झडे के साथ होते। किन्तु भारत को मित्र और समान राष्ट्र बनने देना सरकार को स्वीकार नहीं। जिन लोगों ने यह मांग की, उन्हें सरकार ने कार्यक्षेत्र से अलग कर दिया। अभी भी कुछ लोगों का इस प्रकार पीछा किया जा रहा है मानों वे खतरनाक अपराधी हों।

सरकारकी अन्य करतूतें

कांग्रेसके रचनात्मक विभागपर प्रहार करके सरकारनें देशके सर्वोत्तमजनोंके सहयोगसे भी अपनेको वंचित कर लिया है जिनकी उपादेयता युद्धके लिए देशके गृह उद्योगोंके संघटनमें अमूल्य सिद्ध होती। अखिल भारत चर्खा-संघ जिसने देशके गरीबोंमें तीन करोड़ रुपये वेतनके रूपमें वितरित किया है, खासतौरपर शिकार बनाया गया है। इसके अध्यक्ष श्री जाजूजी तथा अन्यान्य कार्यकर्त्ता अकारण नजरबन्द कर दिये गये हैं। खादीकेन्द्र, जो ट्रस्ट सम्पत्ति हैं, सरकार द्वारा जब्त कर लिए गये हैं। जब्त करनेवाले स्वयं इन केन्द्रोंका संचालन नहीं कर सकते, जो एक दुःखकी बात है। अधिकारियों द्वारा खादी और चर्खा जला डाले गये हैं। कुमारअप्पा ब्रदर्स द्वारा संचालित अखिल भारत ग्राम-उद्योग संघकी भी वही दुर्गति हुई है। श्री विनोबा भावे तथा अन्य रचनात्मक कार्योंमें लगे हुए लोग पकड़ लिए गये हैं सरकारके लिए सोचने की बात है। उक्त प्रकारकी संस्थाओंका सत्यानाश और उनके निरीक्षकोंकी धरपकड़, मेरी रायमें युद्ध प्रयासमें सबसे बड़ी बाधा पहुंचाना है। उच्चतम अधिकारी इस बातपर आत्मसंतोष की घोषणा करते हैं कि इस अभागे देशमें अपरिमित धन-जनकी प्राप्ति हो रही है जब कि भारतके अधिवासी भोजन वस्त्र और जीवनकी अन्यान्य आवश्यकताओंसे पीड़ित हैं—मुझे सचमुच आश्चर्य होता है।

मैं दावेके साथ कहता हूं कि यदि सरकारने कांग्रेस-कार्यकताओंको गिरफ्तार न कर लिया होता और उनकी सेवाओंका उपयोग किया होता तो आज देशमें जो दुर्भिक्षका हाहाकार मचा हुआ है, वह कभी न होने पाता। कमसे कम उसकी यह विभीषिका कभी न देखनेको मिलती। बिहार भूकम्प और गुजरातकी बाढ़के दृष्टान्त सामने हैं। सरकारी आरोपका मेरा उत्तर समाप्त होने जा रहा है। मेरी इच्छाके विपरीत यह लम्बा हो गया है। केवल मेरे सहकर्मियोंको और मुझे इसके लिए अर्थ श्रम करना पड़ा है और यद्यपि इसे प्रकाशित करनेके लिए मेरा आग्रह है ही, फिर भी मैं

(शेष पृष्ठ ७ पर)

गांधीजी का बोझ

जब से महात्माजी आगाखां महल से बाहर निकले हैं तभी से उनके कन्धों पर ढेर का ढेर बोझ लादा जा रहा है।

अगस्त प्रस्ताव वापिस क्यों नही ले लेते? वे लार्ड वावेल से पत्र व्यवहार क्यों नहीं करते? वे एसा कुछ क्यों नहीं करते जिससे अंग्रेज उनपर विश्वास कर सकें? ऐसा कुछ जिसमें मि. चर्चिलका संसारव्यापी सत्ता स्थापित करने का कार्य अधिक सरल हो सके?

वे अभी तक मौन धारण क्यों किए हुए हैं? प्रार्थना करते हुए क्यों बैठे हैं? राजनैतिक गत्यवरोध का अन्त क्यों नहीं करते? वे एक परिषद का आयोजन क्यों नहीं कर रहे हैं? क्रिप्स प्रस्तावों को मंजूर कर लेने के लिए क्यों तैयार नहीं हो रहे हैं? उन्हें प्रान्तीय मंत्रि-मंडलों को पुनः कायम कर लोगों के लिये सत्ता प्राप्त करने का प्रयत्न क्यों नहीं करना चाहिए?

वे जिन्ना साहेब को पत्र क्यों लिखते हैं; उनसे मिलते क्यों नहीं? उन्हें पाकिस्तान को मंजूरकर सांप्रदायिक समस्या का हल कर लेना चाहिए। वे इस मामले में हिन्दुओं का नेतृत्व क्यों नहीं कर रहे हैं?

वे ऐसा कोई प्रयत्न क्यों नहीं करते जिससे इस समस्या का हल हो जाय? लोग ऐसे और इसी तरह के हजारों प्रश्न पूछते हैं। कुछ चाहते हैं और उसे करने की प्रार्थना करते हैं।

मैं यह नहीं सुझाना चाहता कि गांधीजी को कुछ करना चाहिए या नहीं करना चाहिए। मैं एक क्षण के लिए भी यह नहीं सोचता कि बड़े बड़े शक्तिशाली राष्ट्रों का बोझ ढोने में समर्थ गांधीजी के कन्धे इस बोझ से झुक जायंगे। किन्तु सहज़ कुछ चाहने से ही हम प्रगति नहीं कर सकेंगे। जब लोग उनके इस बोझ में हिस्सा बटाने को तैयार नहीं हैं तो उन्हें ही कुछ क्यों करना चाहिए? वे भारत की शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं, वे उस शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जिसके बिना ब्रिटेन भारतीय समस्या को हल नहीं कर सकता तथा मुसलमान देश को दो टुकड़ों में विभाजित नहीं कर सकते। वे ही इस नैतिक दृष्टि से दिवालिया संसार में नैतिक नियमों का प्रतिनिधित्व करनेवाले एकमात्र व्यक्ति है। उन्हें कोई जल्दी नहीं है तथा वे तब तक ठहर सकते हैं जबतक हिन्दुस्थान और यह दुनिया उनकी सच्ची कीमत नहीं आंक सकती।

मि॰ चर्चिल को अपने साम्राज्यवादी रुख को बदल कर गांधीजीके दृष्टिकोण को समझने की कोशिश क्यों नहीं करनी चाहिए, उद्दण्ड मि॰ एमरी को बेवकूफी से भरी बातें बन्द कर गांधीजी से हाथ क्यों न मिलाना चाहिए? लार्ड वावेल उनसे सम्बन्ध स्थापित कर यह जानने की चेष्टा क्यों नहीं करते कि आया वे जापान के पक्षपाती हैं अथवा जापान को मदद करना चाहते हैं; तथा आजकी स्थिति में भी भारत और ब्रिटेन के युद्धोत्तर सम्बन्धों के विकास में सहयोग देना चाहते हैं या नहीं? मुस्लिम लीगी अपने सदर को गांधीजी से मिलने और समझौता करनेके लिए क्यों नहीं समझाते? इस देश में अल्पमत इतना उच्छृङ्खल क्यों है जिसके कारण बहुमत दल के नेता को फटे चिथड़े धारण कर उनके सन्देहाच्छन्न हृदयोंका जीतने का प्रयत्न करना पड़े?

लेखक

श्री. कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी

इन प्रश्नोंके मूलमें लोगोंका जो रुख है वह स्वाभाविक अथवा स्वयंस्फुरित नहीं है। वह संगठित है। वह संसार व्यापी उस प्रचार का एक अंग है जिसके द्वारा यह सिद्ध करने की चेष्टा की जा रही है कि यदि गांधीजी इस हद तक न जाकर आगाखाँ महलमें लौट जायंगे या लौटा दिये जायंगे तो उन्हें भारतीय स्वाधीनता की सब से बड़ी रुकावट कहा जा सकेगा। वास्तविक स्थिति यह है कि वे यदि एक या दूसरी समस्या को हल करने की चेष्टा करते भी हैं तो अन्य समस्याएं अपने संकुचित दृष्टिकोण की उलझनों के कारण उनके उस प्रयत्न को असफल बनाने के लिए खड़ी की जाती हैं।

संसारव्यापी प्रचार के संगठन से गाफिल हिन्दुस्थानी इस जाल में फंस जाते हैं और प्रचार के इस सम्मिलित गान में अपना भी स्वर मिलाने लगते हैं।

गांधीजी तब तक स्थिति को सुलझाने के लिए कुछ नहीं कर सकते जब तक ब्रिटिश सरकार उन्हें ऐसा नहीं करने देती। और यदि वे कुछ नहीं कर सकते तो इसका कारण भी यही है कि ब्रिटेन उन्हें कुछ करने देना नहीं चाहता। ब्रिटेन चाहता है कि हम आलसी बनकर बैठे रहें तथा यदा कदा प्रश्न पूछा करें।

इस सम्बन्ध में गांधीजी पर भी उतना ही बोझ है जितना प्रत्येक भारतीय पर है। उनकी शक्ति हम सब भारतीयों की दी हुई संयुक्त शक्ति है। अतएव सब दलों और सब विचारों के भारतीयों का या फिर जितने भी दल एकत्रित हो सकें उन सबका यह फर्ज है कि वे आपस में मिलजुल कर उन्हें एक ऐसा सर्व सम्मत कार्यक्रम बनाने के लिए आमन्त्रित करें। हिन्दुस्थान जिससे ब्रिटेन और सारी दुनिया का सामना कर सके।

कस्तूरबा स्मारक के लिए चंदा

उज्जैन में महेश नवमी उत्सवके सिलसिले में एकत्रित हुए माहेश्वरी बंधुओं ने माता कस्तूरबा स्मारक कोषके लिए १२१ रु. चंदे के रूप में प्रदान किये थे। हम चंदा देनेवाले महानुभावों को धन्यवाद देते हैं।—मोहनलाल बाल्दी मंत्री श्री माहेश्वरी समाज उज्जैन।

पारिवारिक मोह

[गताङ्क से आगे]

(ग) अच्छा उपाय यह है कि मा बाप अपने बच्चों का पालन पोषण तो करें, लेकिन पारिवारिक मोह का नियंत्रण करना, उसे काबू में रखना सीखें, उनका प्यार मर्यादा में रहे, वह मोह की सीमा तक न पहुंच जाय। हमें उन महान पुरुषों और स्त्रियों का विचार करना चाहिये, जिन्होंने अपनी सन्तान के मोह के लिए देश या समाज की भलाई का त्याग नहीं किया। मिसालके तौर पर गौतम बुद्धने अपना परिवार इस लिए छोड दिया ताकि वह आध्यात्मिक खोज में लग सके। बाद में उन्होंने अपनी स्त्री और पुत्रको भी समझा बुझा कर इस बात के वास्ते तैयार कर लिया कि वे निर्धन रह कर मानव समाजकी सेवा अर्पण हो जायँ। सुकरातने अपनी स्त्री और बच्चों के लिये सम्पत्ति नहीं चाही। उसने निर्धनता में जीवन बिताया और जरूरत पड़ने पर निर्धनता में ही मृत्युका आलिंगन किया।

योरोप में अनेक धर्मनिष्ट ईसाइयों ने अपने धर्म पर अटल रहने के लिए अपने पारिवारिक मोह का सर्वथा परित्याग कर दिखाया। भारत वर्ष आदि देशोंका इतिहास भी ऐसी मिसालों से भरा पड़ा है। स्थानाभाव से यहाँ उनका उल्लेख नहीं किया जाता। आजकल समाजवाद की लहर है। समाजवाद के प्रवर्तक कार्लमार्क्सने और उसकी पत्नि जेनीने अपनी जन्मभूमिसे दूर लन्दन में बड़े संकटोंका जीवन व्यतीत किया। उनके बच्चों को कई बार रोटी तक नहीं मिली और भूखे रहना पड़ा। वीर दम्पति ने मानव समाज की भलाई के लिए पारिवारिक हितोंको हंसते हंसते न्यौछावर कर दिया। उनके बच्चों का पालन पोषण गरीबी में हुआ, और वे भी बड़े होकर अपने मां बाप की तरह समाजवाद के प्रचार में लग गये। कैसा अनुकरणीय उदाहरण है। सारा परिवार एक ऐसे उच्च आदर्श से प्रेरित था, जिसने उसे मोह से सर्वथा मुक्त कर दिया था।*

बस, पारिवारिक मोह के दोषों से सावधान रहो। अपने साथियों और हितचिन्तकों की अवहेलना न करो, जो तुम्हें परिवार बनाने से पहले बहुत प्यारे थे। सामाजिक जीवन से केवल इस लिए अलग मत हो कि अब तुम अपने बाल बच्चों के साथ ज्यादह वक्त गुजारना चाहते हो। लोगों की भलाई के आन्दोलनों में धन और समय लगाने में कमी न करो। अगर कुटुम्ब से तुम्हारा प्रेम तुम्हें स्वार्थी और लोभी बनाता है तो वह अभिशाप है, वरदान नहीं। सच्चा प्रेम मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास करता है, ह्रास नहीं। उससे पुरुष और स्त्री दोनों को यह प्रेरणा मिलनी चाहिए कि वे अपने शरीर और मन को देश और समाज की उन्नति में लगावें। अगर तुम प्रेम के स्वामी रहते हो तो वह आदर्श की तरफ तुम्हारी चढ़ाई को आसान कर देता है, लेकिन अगर तुम प्रेम के दास बन जाते हो तो वह तुम्हें पतन के गड्ढे में जा गिराता है।

सारांश यह कि पारिवारिक जीवन हमारे नैतिक विकास में बाधक नहीं होना चाहिए। परिवार प्रथा के रहते हुए भी पारिवारिक मोह हटाया जा सकता है। यदि मनुष्य इसी भावना से परिवार में रहे तो उसे अपने बाल बच्चोंका पालन पोषण करने से कोई हानि नहीं हो सकती। बच्चों को हमें अपनी निजी मिलकियत नहीं समझना चाहिए। हमें यह मानना चाहिए कि वे मानव समाज के बच्चे हैं, जो देखभाल के लिए हमारे सुपुर्द किये गये हैं। हमें उनको इस बात का अभ्यास कराना चाहिए कि वे हमसे माता या पिता के रूप में बेजा मोह न करें; उनका प्रधान कर्तव्य मानव समाज के प्रति है, हमारे प्रति नहीं। हमें उनके लिए बहुत अधिक कमाने या जोडकर रखने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, और न उनके लिए स्कूल, कालेज, व्यापार या राजनीति में अनुचित रियायतें हासिल करने की ही कोशिश करनी चाहिए। हमें उनको उनकी योग्यता से अधिक ऊंचे या विशेष आमदनी वाले पदोंपर नियुक्त करके या कराके समाजद्रोह या देशद्रोह का दोषी नहीं बनना चाहिए। उनके मस्तिष्क को क्षुद्र पारिवारिक विषयों में कैद नहीं करना चाहिए उनका ध्यान हमें म्युनिसिपल राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय बातोंकी ओर दिलाना चाहिए। हमें चाहिए कि हम उनमें लड़कपन में ही नागरिकता की भावना का विकास करें, जिससे बड़े होनेपर वे अपने सामाजिक कर्तव्यों का ठीकठीक पालन कर सकें। यदि हम ऐसा करें तो मानव जाति का हित साधन होगा, और हमारे बच्चोंका भी भला होगा। यह काम कुछ कठिन अवश्य है, परन्तु असाध्य नहीं है। महान पुरुषों और महान स्त्रियों ने ऐसा कर दिखाया है, वे समाज के बड़े हित के सामने परिवार के हित को गौण समझते हैं। हमें भी इस का अभ्यास करना चाहिए।

---

* कार्ल मार्क्स, सुकरात और गौतम बुद्ध आदि महापुरुषों के बारे में विशेष इस ग्रन्थमाला की 'श्रद्धांजलि' पुस्तक में लिखा गया है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

गत तारीख २८,६, ४४ को स्टैंडिंग कमेटी की बैठकमें सर्व सम्मतिसे निश्चय हुआ कि अ० भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की वर्किंग कमेटी की बैठक आगामी तारीख २३ जुलाई, रविवारको सम्मेलनके प्रधान कार्यालय १४२, बी. हरिसन रोड, कलकत्तामें तथा समिति की बैठक होनेवाले यू. पी. मारवाड़ी सम्मेलन, प्रथम अधिवेशन के अवसर पर जो आगामी तारीख २५, २६, अगस्त को बनारस में सम्पन्न होने जा रहा है, बुलाई जाये।

निश्चित समय एवं कार्यक्रम की सूचना समयानुसार सदस्यों की सेवामें भेजी जायेगी।

बजरंग लाल
प्रधान मन्त्री।

देश विदेश की चर्चा

श्वेत-रूसके मोर्चेपर लाल-सेनाने जर्मनोंके खिलाफ जबर्दस्त आक्रमण आरंभ कर दिया है। रूसी सेनाके इस आक्रमणका इन्तजार एक लम्बे अर्सेसे किया जा रहा था। रूसने श्वेतरूस की राजधानी मिंस्क पर कब्जा कर लिया है। वारसा और बर्लिन के द्वारमें प्रवेश करनेके लिये लाल सेनायें आगे बढ़ रही हैं। रूसी सेनाएं उधर फिनलैण्डमें भी सफल प्रहार कर रही हैं और जनरल गोवोरोवके नेतृत्वमें रूसियोंने मैनरहीम–रक्षापंक्तिको तोड़ दिया है और कैरेलियन स्थल-डमरूमध्यसे फिनसेनाको पीछे हटाकर, रूसियोंने विपुरी पर कब्जा कर लिया है। विपुरी, जिसे वाईबोर्ग भी कहते हैं, फिनलैण्डका तीसरा सबसे बड़ा नगर है। १९३९-४० की फिन रूस लड़ाईमें यह नगर विध्वंस हो चुका था। यह इमारती लकड़ीका सबसे बड़ा निर्यातकेन्द्र है। लड़ाई आरंभ होनेसे पहले वहांकी आबादी लगभग ८० हजार थी। फिनलैण्डके शासन का अधिकार जर्मन-सैनिक-कमान ने अपने हाथ में ले लिया है। हालमें ही जर्मनी के परराष्ट्र-मन्त्री वान रिबनट्राप हेल्सिंकी गये हुए थे। जर्मन-अधिकारियों को भय हो रहा है कि फिनलैण्ड कहीं हथियार न डाल दे। फिनलैण्ड-स्थित जर्मन सेना के कमाण्डर जनरल डीटलका प्रणान्त हो गया है। रूसी सेनाएं उधर फिनलैण्डके मोर्चेपर और इधर श्वेत-रूस के मोर्चेपर भारी हमले कर रही हैं। फ्रांसमें नारमण्डी के मोर्चेपर मित्रसेनाओंको भी उल्लेखनीय सफलताएं मिली हैं। गत पखवारे के आरंभ में फ्रांस में चेरबोर्ग का और श्वेत-रूस में वितेब्स्कका पतन प्रायः एक साथ ही हुआ। इस से स्पष्ट है कि यूरोप के हिटलरी दुर्गपर पश्चिम और पूरब, दोनों दिशाओं से, मित्रराष्ट्रों की निश्चित योजनानुसार भीषण प्रहार हो रहे हैं। लन्दन के बकिंघम राजप्रासाद में पहुंचने या मौस्को के सरकारी दफ्तर क्रेमलिन में बैठने की हिटलर की ख्वाहिशें और हसरतें मासूमी की हालत में ही मर गयी हैं।

२२ जून १९४१ में जब बड़े तड़के ही जर्मन सेनाने रूसपर आक्रमण किया था, तो हिटलर और उसके सेनापतियोंको शीघ्र ही पूर्ण विजय प्राप्त करनेका विश्वास था। कितनी ही बार हिटलरने माइक्रोफोनपर कहा कि रूसी सेनाकी कमर तोड़ी जा चुकी है और वह कभी भी उठ न सकेगी। फिर भी जर्मन सेनाका मास्को और लेनिनग्राड पहुंचनेका स्वप्न पूरा न हुआ। आखिर जर्मनोंको स्वीकार करना पड़ा कि 'संख्या और सामान' की दृष्टिसे रूसी उनसे श्रेष्ठ हैं। हिटलरने जर्मन सेनापतियोंको अपमानित करके सेनाका नेतृत्व अपने हाथमें कर लिया। इतना होने पर भी स्टालिनग्राडमें जर्मनोंकी ऐसी पराजय हुई, जैसी पहले कभी नहीं हुई थी। तबसे लाल सेनाकी विजययात्रा जारी है। मार्शल स्टालिनके शब्दोंमें 'रूसी सेना वोल्गासे कार्पेथियन और रूमानिया तथा चेकोस्लोवाकियाकी सीमा तक पहुंच गयी है।' अब लाल सेनाके दस्ते पोलैण्ड, पूर्वी प्रशा और बाल्टिकदेशोंकी सीमाओंपर पहुंचकर खास जर्मनीपर खतरा उपस्थित कर रहे हैं। उधर इटली में जनरल अलेक्जेण्डरकी प्रगतिसे हिटलर के यूरोपीय दुर्गका एक और द्वार खुल गया है। फ्रांसमें मित्रसेनायें पेरिसकी ओर कदम उठा रही हैं, श्वेत-रूसमें लाल सेना वारसाकी सड़कपर बढ़ रही है और इटलीमें ब्रिटिश तथा अमेरिकन सेनाएं फ्लोरेंस और इटलीके एक मशहूर बंदरगाह लेग्रोर्नकी ओर प्रगति कर रही हैं। इस प्रकार जर्मन सेनाओंपर चहुंमुखी मार पड़ रही है।

नारमेण्डीके मोर्चेपर अपनी सैनिकस्थिति मजबूत बना लेनेके पश्चात् जनरल आइसनहोवर उत्तर और दक्षिणमें सेनाएं उतारकर जर्मनीके खिलाफ और भी कई मोर्चे खोल सकते हैं। मध्य-पूर्वमें जनरल विलसन भी एक बहुत बड़ी सेना लिये पड़े हैं। भूमध्यसागरके क्षेत्रमें जनरल विलसनकी गतिविधि भी काफी महत्त्वपूर्ण और विचारणीय है। संभव है कि मध्य-पूर्वकी मित्र-सेनाएं दक्षिणी फ्रांस अथवा यूनान या यूगोस्लावियामें उतारी जायं और जर्मनीके खिलाफ चारों ओरसे प्रहार आरंभ हो जाय। लंदनमें कूटनीतिक परिस्थितिके प्रेक्षक, यूरोपको स्वाधीनता दिलानेके लिये पश्चिममें मित्रराष्ट्रों द्वारा की गयी सैनिक कारवाईको असाधारण राजनैतिक महत्त्व दे रहे हैं। यूरोपमें मित्र-सेनाओंके पदार्पण और श्वेत-रूस तथा फिनलैण्डमें रूसीसेनाकी प्रगतिसे चीनवालोंको नवीन उत्साह मिला है। अब सभी जगह यह अनुभव किया जाने लगा है कि यह सब एक ही युद्ध है और जर्मनीके विरुद्ध जोभी प्रहार यूरोपमें किया जाता हैं वह वास्तवमें उसके मित्र जापानके विरुद्ध भी होता हैं। यदि यूरोप में युद्ध की अवधि में एक दिन की भी कमी होती है तो इसका मतलब यह होता है कि एशिया में जापान के प्रभुत्व की अवधि में भी एक दिन की कमी हो गयी है। यूरोप के तटस्थ-देशों की राजधानियों में भी नारमेण्डी में मोर्चा खुलनेका प्रभाव दिखायी देता है। इस समय मित्रराष्ट्रों को, चीन के सिवा, बाकी सभी मोर्चों पर सफलता मिल रही है। इस सैनिक सफलताका राजनीतिक प्रभाव जर्मनी के छुटभइयोंपर भी अवश्य पड़ेगा। रूमानिया, हंगरी और बल्गारिया चुपचाप घटनाचक्रकी प्रगति को देख रहे हैं। फिनलैण्ड की जनता रूस से संधि करने के पक्ष में होती जा रही है। किन्तु जर्मन-प्रचार की तेजी और संवादोंपर सेंसर की कड़ाई के कारण यह प्रतिक्रिया स्पष्ट नहीं दिखायी देती।

इस समय जर्मनीपर भारी संकट है और डा० गोयबल्सने मंजूर भी किया है कि—'यह शब्दशः सत्य है कि अब हमें अपने अस्तित्वकी रक्षाके लिये लड़ना पड़ रहा है। सर्वांगीण युद्ध एक कठोर परीक्षक है। शत्रु बहुत ही प्रबल है।'

बर्मा और आसामके मोर्चेपर भी मित्र-सेनाओंने प्रगति की है। मणिपुररोड खुल गया है। परन्तु, इम्फालपर अभी खतरा बना हुआ है। इम्फालसे ३५ मील पूर्वोत्तरकी ओर उखरूलके पास जापानियोंकी ताकत पहले ही जैसी बनी हुई है और इम्फालके दक्षिण विष्णुपुर के इलाकेमें भी जापानी दस्ते जोरों की सरगर्मी दिखा रहे हैं। उत्तरी बर्मामें चीनी और अमेरिकन सेनाने मोगांगपर कब्जा कर लिया है। मिचीना पर मित्रोंका खतरा बढ़ गया है और चीनी दस्तोंने एक स्थानपर बर्मा-रोड खोलनेके प्रयासमें उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। वर्षाकालके कारण बर्मा मोर्चेपर कोई शिथिलता नहीं आयी। इससे स्पष्ट है कि दोनों पक्ष काफी तैयार और सचेत हैं। प्रशांतसे जिन महान नौ-सैनिक युद्धोंके संवाद मिले हैं उनके परिणाम जापान की पराजयके रूपमें दिखायी दिये हैं। जापानी अपने महानतम युद्धपोतोंको अमेरिकन आक्रमणसे बचाये रखना चाहते हैं। सेपानमें अमेरिकन सेनाके उतर जानेसे टोकियो, अमेरिकन बमवर्षकोंकी मारके भीतर आ गया है। इस संकटके निवारणके लिये जापानी इस द्वीपमें अपनी शक्ति बढ़ाना चाहते थे और रसद पहुंचनेके मार्गों को सुरक्षित रखना चाहते थे। उद्देश्य जो भी रहा हो, मगर जापानी नौ-सेनाको सफलता नहीं मिली। प्रशांतके द्वीपोंको बाहरी शृंखलापर अमेरिकाका प्रभुत्व स्थापित हो गया है। टोकियोके रणोन्मत्त सेनापतियोंके लिये भविष्य अन्धकारमय है। युद्धके पूर्वार्ध में धुरी-शक्तियोंने सफलता प्राप्त की थी। अब उत्तरार्ध में मित्रराष्ट्रोंको सफलता मिल रही है। युद्धके परिणामकी अन्तिम घड़ी सन्निकट आती जा रही है।

पाकिस्तान के खिलाफ मुसलमानों में देशव्यापी लहर

मि० जिन्ना के पाकिस्तान आन्दोलन के खिलाफ मुसलमानों में एक लहर दौड़ती नजर आती है। २ जुलाई के दिन लाहौर में अहरार कान्फ्रेंस के अवसरपर अपने स्वागत-भाषणके सिलसिलेमें मौलवी मजहरअली अजहर एम. एल. ए. ने विचार प्रकट किया कि पाकिस्तानका नारा केवल वोट प्राप्त करनेके उद्देश्यसे उठाया गया है।

मौलवी मजहरअलीने कहा कि ब्रिटिश सरकारने पाकिस्तानकी मांगको ठुकरा दिया, किन्तु मि. जिन्नमें इतनी हिम्मत नहीं कि इस प्रश्नपर वे ब्रिटिश सरकारसे लड़ सकें। हां, सिक्खों और हिन्दुओंको अलबत्ता उन्होंने धमकाया है कि अगर वे लीगकी मांगमें बाधक होंगे तो कुचल दिय जायेंगे। चुनावमें अहरारोंको हरानेके लिए, जिस प्रकार शहीदगंज का नारा लगाया गया था, उसी प्रकार मुसलमानोंको पाकिस्तानके नारेसे धोखा दिया जा सकता है और चुनाव जीता जा सकता है। शहीदगंज आखिर नहीं मिला, उसी प्रकार पाकिस्तान भी कभी न मिलेगा। मौलवी मजहर अलीने मि० जिन्ना की तीव्र आलोचना की और कहा कि मलिक खिज्र हयात खांसे करारी हार खाकर, लीगी नेताको समझ आ जानी चाहिए थी।

मि० जिन्ना की दोहरी चाल

युद्ध के सम्बन्ध में लीग के रुख की आलोचना, करते हुए अध्यक्ष ने बताया कि मि० जिन्ना दोहरी चाल चलते हैं। एक ओर मुसलमानोंको सलाह देते हैं कि युद्ध-प्रयास से अलग रहें, दूसरी ओर व्यक्तिगत रूपसे सहयोग करनेका वे अधिकार देते हैं। लेकिन दो आकाओं को वे खुश नहीं कर सकते। यदि वे ब्रिटिश सरकार की सहायता करना ही चाहते हैं, तो उन्हें स्व० सिकन्दर हयात खां और मलिक खिज्र हयात खां तिवाना के पदचिन्होंपर चलना चाहिए। मुसलमानों को वे बहुत दिनतक धोका न दे सकेंगे।

सहारनपुरमें भी इसी मास सहारनपुर जिला मुस्लिम मजलिस की एक मीटिंग में अखिल भारतीय मुस्लिम मजलिस के प्रधान मौलाना ख्वाजा अब्दुल मजीदने अपने भाषण में पाकिस्तान के सम्बन्धमें जो वक्तव्य दिया वह बड़े मार्के का है।

सहारनपुर जिला मुस्लिम मजलिसकी एक मीटिंग आल इंडिया मुस्लिम मजलिसके सदर मौलाना ख्वाजा अब्दुल मजीदकी अध्यक्षतामें हुई। अपने भाषणमें ख्वाजा साहबने मुस्लिम लीगकी पाकिस्तानकी मांगकी निन्दा की और कहा कि मुस्लिम लीगकी वर्तमान नीति भारतकी गुलामीको स्थायी बनाये रखना है। जब इरान, फिलस्तीन आदि मुस्लिम देश भी अपनी आजादीकी रक्षा नहीं कर सकते तो भला भारतके कुछ अल्पमत रखनेवाले प्रांत क्योंकर अपनी आजादीकी रक्षा कर सकेंगे? यदि मुसलमान सच्चे हैं और उनमें ईमान है तो वे अपने देशकी आजादीके लिये कार्य करें।

इस मीटिंगमें यू० पी० के भूतपूर्व मिनिस्टर मि० हाफिज मोहम्मद इब्राहिम, और अन्य पंजाब तथा यू० पी० के प्रमुख—मुसलमान हाजिर थे।

भारतमें अनेक स्थानोंमें मुस्लिम लीग की सदस्यतासे स्तीफे देने की खबरें मिली हैं। ये सब बातें यही संकेत करती हैं कि मि. जिन्ना जिस बलबूते पर अपना स्वप्नमहल बनाये बैठे थे वह उनका सहारा अब उनके पास नहीं रहा है।

१५ जुलाई तक मि. जिन्नाके पञ्जाबके मैदानमें उतरने की खबर है। मगर वे लाहौर पहुँचकर अब कुछ कर धर सकेंगे इसकी आशा नहीं।

'चाचीजी' का विशेष सम्मान

अभी हालमें अजमेरमें आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान और मालवाके वार्षिक अधिवेशनमें मथुराप्रसाद गुलाबदेवी आर्यकन्या विद्यालय की संस्थापिका एवं संचालिका कर्मयोगिणी श्रद्धेया गुलाबदेवीजी भट्टर (चाचीजी) के विशेष सम्मानार्थ (अभिनंदन और थैली अर्पण) एक प्रभावशाली उपसमिति बनायी गयी। आशा है, समितिकी ओरसे अपील प्रकाशित होनेपर प्रत्येक राजस्थानी दिल खोलकर इस पवित्रकार्य में कुछ धन देकर अपने कर्तव्यका पालन करेगा।

बंबई विश्व विद्यालय की परीक्षाएं

गुजरात और बंबई के उत्तीर्ण माहेश्वरी छात्र छात्राओं की नामावली

हम बंबई और गुजरातके बंबई विश्वविद्यालय की विभिन्न परीक्षाओंमें उत्तीर्ण माहेश्वरी छात्र छात्राओं की नामावली सहर्ष प्रकाशित कर रहे हैं। यह देखकर कितना हर्ष होता है कि हमारा समाज भी अब शिक्षा आदिमें अन्य समाजों से टक्कर लेने लायक धीरे धीरे बन रहा है। हम उत्तीर्ण छात्र छात्राओंको हार्दिक बधाई देते हैं। —सम्पादक

कुमारी कुंजलता

माहेश्वरी समाज में सर्व प्रथम कानूनी परीक्षा पास करनेवाली बहन

कुमारी शांता धूत

आप श्री. नारायणदासजी धूत पूना की सुपुत्री हैं। आपने मैट्रिक परीक्षा में ७३ प्र. श. अंक प्राप्त किये हैं।

बी. काम.

(१) नानाभाई मनोहरलाल मालाणी

बी. एस. सी.

(१) रमेचन्द्र मदनलाल हेडा-द्वितीय श्रेणी

बी. ए.

(१) तनसुखलाल माणिकलाल लखोटिया
(२) वल्लभदास मनमोहनदास हेडा-द्वितीय श्रेणी
(३) कुमारी उषा हसमुखलाल हेडा
(४) श्रीमती जयवन्ती अशोकचन्द्र, सुपुत्री श्री. रणछोड़लाल पोपावाला

इंटर आर्ट

(१) रमेशचन्द्र मनहरलाल मालाणी
(२) बहन हंसा वृन्दावनदास मालपाणी

इंटर कामर्स

(१) अरविंद कंचनलाल हेडा

इंटर साइन्स

(१) विपिनचन्द्र झंवरलाल हेडा
(२) युगल किशोर जमनादास भूतडा
(३) नवनीतलाल जगमोहनदास लखोटिया

सेकंड एम. बी. बी. एस.

(१) नंदवदन छोटेलाल लखोटिया

एल्. सी. पी. एस्.

लालजी गोपालदासजी मर्दा-द्वितीय श्रेणी

(शेष कालम ४ पर)

कुमारी मिणालदेवी हेड़ा

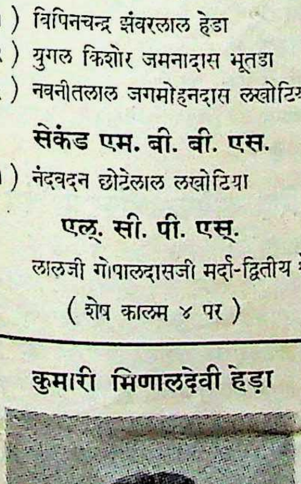

आप श्री. हीरालाल जी हेड़ा की पुत्री हैं। इसी वर्ष मैट्रिक परीक्षा पास की है।

कुमारी शोभना हेड़ा

आप श्री. मनसुखलाल जी हेड़ा की सुपुत्री हैं। आपने इस वर्ष मैट्रिक परीक्षा पास की है।

(पृष्ठ १ का शेष)

एफ. वाई. ए.

(१) इन्द्रजीत चिमणलाल हेडा

मैट्रिक

(१) कुमारी किरणलता कृष्णलाल हेडा
(२) कुमारी मिणालदेवी हीरालाल हेडा
(३) कुमारी मृदुला चिमनलाल लखोटिया
(४) कुमारी शोभना मनसुखलाल हेडा
(५) प्रद्युम्न हीरालाल मालपाणी
(६) प्रवीणचन्द्र अर्जुनलाल सट्टावाला नागोरी
(७) कुमुदचन्द्र नटवरलाल कालाणी
(८) कुमारी राजकुमारी लाहोटी
(९) ,, सुमन मानधन्या
(१०) ,, मीरा झंवर

(पृष्ठ ४ का शेष)

मुख्य उद्देश्य सरकारको यह बताना है कि कांग्रेस और मुझपर लगाये गये आरोप मिथ्या हैं। सरकार को पता होगा ही कि भारतीय जनता इस पर अविश्वास करती है और विदेशी प्रचार के लिए इस की रचना हुई, यह लोगों की धारणा है।

आरोप वापस लो

सर तेजबहादुर सप्रू और माननीय श्री. एम० आर० जयकर जैसे व्यक्तियों ने अपनी राय दे दी है कि आरोप में कानूनी दृष्टि से कोई प्रामाणिक बात नहीं है। अतः सरकार को आरोप वापिस ले लेना चाहिए। भूमिका में कहा गया है कि सरकार के पास ' बहुमूल्य प्रमाण " हैं। शायद लक्ष्य कुछ नजरबन्दों-पर हो। मेरी राय है कि चूंकि सरकार उन सबूतों को जाहिर नहीं कर सकती, अतः नजरबन्दों को उसे रिहा कर देना चाहिए और उस के बाद जो लोग अपराध करते पाये जायें, उन्हें दण्ड दे। सरकार शक्तिशाली है, उसे डर काहेका ? किन्तु अप्रमाणित आरोप न लगाये जाएं। अन्तमें मैं यह भी कह देना चाहता हूं कि यदि मुझे बताया गया कि कौन सी बात मैंने गलत कही है तो प्रमाणित होनेपर मैं, उसे मान लूंगा। जैसा मुझे लगा वैसा मैंने लिखा है।"

सर मेक्सवेल को पत्र

१५ फरवरी १९४३ को असेम्बलीमें होम मेम्बर सर रेजिनाल्ड मेक्सवेलने अपने भाषणके सिलसिलेमें जो झूठी बातें कही थीं, उनकी ओर उनका ध्यान आकृष्ट करते हुए गांधीजीने एक लंबे पत्रमें लिखा था कांग्रेस जनोंने जापानियोंकी सफलतासे किसी तरहका लाभ उठाने की न तो आशा की और न इच्छा ही लोकमत की आंतरिक भावना सत्ताके भयंकर प्रदर्शनसे दमन करना किसी आंदोलनको पराजित करना नहीं है।

"मैं कांग्रेसके विद्रोहको, जो अहिंसात्मक है, रद्द नहीं कर सकता। मुझे कोई सफाई नहीं पेश करनी, क्योंकि मुझे अपराध का ख्याल तक नहीं है। और भविष्य के लिये आश्वासन देनेका कोई प्रश्न ही नहीं उठता। कारावासमें रहना सत्याग्रहीके लिए भारयुक्त नहीं है। उसके लिए कारावास स्वाधीनताका प्रवेशद्वार है।

अगस्त प्रस्ताव निर्दोष है। कांग्रेसने भारतकी गुलामी को असह्य और सुधार के परे समझा तथा उसने गुलामी के खिलाफ अपना सर उठाया इसमें अपराध क्या था ?

गुलामों का ध्येय स्वतंत्रता

महात्मा गांधीने नजरबंद कैम्प पूनासे १५ मई १९४३ को लार्ड सैम्युएल को एक पत्र लिखा था जिसमें लार्ड्स सभा में उनके द्वारा कही हुई कुछ बातों का खंडन किया था। गांधीजी ने लिखा था:—आपने जो यह कहा था कि कांग्रेसदल लोकतन्त्रवाद के सिद्धांत को छोड़ बैठी है, वह सरासर गलत है। कांग्रेस ने कभी भी लोकतन्त्र के सिद्धान्त को नहीं छोड़ा है। वह सदा लोकतंत्रवाद की ओर अग्रसर होती रही है। जो व्यक्ति चार आने वार्षिक चंदा देता है और शांत एवं वैध उपायों से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए सतत प्रयत्नशील है वह इसका सदस्य हो सकता है। इसके प्रेसीडेण्ट या कार्य समिति के सदस्यों को जो अधिकार प्राप्त हैं, वही अधिकार एक साधारण सदस्य को भी प्राप्त हैं। कांग्रेस के भीतर भी विभिन्न दल हैं। कांग्रेस का ध्येय अहिंसा है। कांग्रेसी स्वेच्छासे अनुशासन मानते हैं। कांग्रेस मिनिस्टरों को इस्तीफा देने के कांग्रेस आदेश को सर्वसंवाद आप क्यों मानते हैं ? सच पूछा जाय तो वे कांग्रेस कार्यसमिति के प्रति वैसे ही उत्तरदायी थे, जैसे कि निर्वाचकों के प्रति। इसका स्पष्ट कारण यह है कि कार्य समिति भी उन्हीं निर्वाचकों से अधिकार प्राप्त करती जिसके वे जिम्मेवार मंत्री है।

कुमारी किरणलता हेड़ा

आप श्री. कृष्णलाल जी हेड़ा की सुपुत्री हैं। इस वर्ष मैट्रिक परीक्षा पास की है।

राजस्थानी संसार

माहेश्वरी सभा छापर

ज्येष्ठ शुक्ला ९ को छापर में माहेश्वरी सभा के तत्वावधान में महेश जयंती महोत्सव मनाया गया। श्री सीतारामजीशास्त्री ने सभापतिका आसन ग्रहण किया। श्री चुन्नीलालजी करवाने सभा की गतवर्ष की रिपोर्ट पढ़ सुनायी। उन्होंनें बताया कि गत वर्ष जो योजनाएं बनायी गयी थीं वे कार्य रूपमें परिणत की गयीं। महोत्सव काफी धूमधाम के साथ मनाया गया। कई युवको नें इस बात की प्रतिज्ञाकी कि आगामी महेश नवमी के पूर्व हममेंसे हरएक निरक्षरको साक्षर बना देगा अंतमें इस वर्षके लिए समाजके निम्नलिखित व्यक्ति पदाधिकारी चुने गयेः-

सभापति–श्री मोटारामजी बाहेती
उप सभापति–श्री हुलासचंदजी करवा
मंत्री–श्री लादूरामजी जाजू
उप मंत्री–श्री कृष्णलाल करवा
कोषाध्यक्ष–श्री फूसराजजी सारड़ा
पुस्तकाध्यक्ष–श्री रूपचंदजी करवा, गोवर्धनजी मूदड़ा, जीवनमलजी तापड़ियाँ
बैंकर्स–श्री भेरूदानजी बाहेती
हिसाब निरीक्षक–श्री मोहबत रामजी राठी

के. एल करवा, मंत्री माहेश्वरी सभा छापर।

इन्दोर विवाह वितण्डा की गूंज

श्री रामविलास जी कचोलिया, इन्दोर लिखते हैः—"माहेश्वरी के ता. ७-६-४४ के अंक में ९ वर्ष की लड़की का विवाह शीर्षक जो संवाद प्रकाशित हुआ हैं, उससे मेरा प्रत्यक्ष संबंध है, इस लिए यह आवश्यक है कि मैं अपनी ओर से इस घटना का स्पष्टीकरण कर दूं ताकि किसी को जरा भी भ्रम न रह जाय और स्थिति साफ हो जाय

(१) वास्तविक स्थिति यह है कि लड़के की आयु ३३ व ३५ के मध्य में हैं और लड़की की १३ वर्ष २ मास की है। लड़की की आयु ९ वर्ष बताकर जो शोरगुल मचाया गया है उसका कोई आधार नहीं है। नवयुवकों ने जब अदालत में अर्जी पेश की तो हाकिम ने लड़का और लड़की की उम्रों के सिलसिले में २ गवाह पेश करने का हुक्म दिया, पर उन्हें कोई गवाह नहीं मिला जिससे लडकी की आयु ९ वर्ष और लडके की आयु ५० वर्ष बताने के दावे की पोल खुल गयी (२) मारपीट तो दूर रही, अपशब्दों तक का किसी ने व्यवहार नहीं किया। (३) सब्जी बाग में पुलिस के पहरे के विषय में मैं यह कहना चाहता हूं कि अभी हाल में यहां १५ हजार की चोरी हो गयी थी तब से बराबर दो सिपाई नियुक्त रहते हैं। विवाह से सिपाहियों के तैनात होने का कोई संबंध नहीं है।

आशा है, मेरा वक्तव्य पढ़ने के बाद लोगों का भ्रम, यदि किसी का हो, दूर हो जायगा।

(श्री. कचोलियाजी के वक्तव्य के साथ हम इस वितण्डा को समाप्त करते हैं। इस संबंध में अब कुछ भी प्रकाशित न किया जायगा।—सं०)

कलकत्ता माहेश्वरी सभा द्वारा मेयर का स्वागत

गत ता. १८।६।४४ रविवारको माहेश्वरी सभा तथा उसकी शाखा-समितियोंने कलकत्ताके नवयुवक मेयर श्री. आनन्दीलालजी पोद्दार, M. L. A. का स्वागत अपने हालमें किया। समाजके प्रतिष्ठित एवं गण्य मान्य सज्जन इस अवसर पर उपस्थित थे।

सर्व प्रथम श्री. शिवकृष्णजी झंवरने मेयर का अभिनन्दन करते हुए उन्हें बधाई दी और कहा कि इतनी कम उम्रमें तथा हिन्दी भाषा भाषियोंमें सर्व प्रथम इस पदको पानेवाले आपही हैं। श्री शिवरतनजी बिन्नाणी ने गैर बंगाली जनता तथा कार्पोरेशनके गैरबंगाली कर्म चारियों के प्रति किये जानेवाले पक्षपात पूर्ण अनुचित व्यवहार की कटु आलोचना की तथा मेयर से उनके अधिकारों की रक्षा के लिये कहा। नवयुवक श्री माणिकलालजी डागाने कलकत्ते की विशाल आबादी के अनुपात में वोटरों की क्रमसंख्या पर असंतोष प्रगट किया तथा बड़ा बाज़ार की शिक्षा व स्वास्थ्य की गिरती हुई अवस्थाकी ओर मेयरका ध्यान आकर्षित किया।

सेठ मँगतूरामजी जयपुरियाने मेयर से अपना घनिष्ट संबंध बताते हुये कहा कि मेयर के पूर्वजों ने भी समाज की काफी सेवा की है तथा वर्तमान मेयर महोदय से भी हम वैसी ही आशा रखते हैं।

नवयुवक श्री. सूरज रतनजी चाण्डक ने अपने भाषण में मकान मालिकों की स्वार्थलिप्साकी कटु आलोचना करते हुए मेयर सेअपीलकी कि वे किरायेदारों की असुविधाओं की ओर ध्यान दें।

मेयर श्री० आनन्दीलालजी पोद्दारने अपने संक्षिप्त किन्तु सारगर्भित भाषण में इस आयोजन के लिये माहेश्वरी सभा को धन्यवाद देते हुए आश्वासन दिलाया कि अपने कार्यकाल में बड़ा बाजार की सर्वांगीण उन्नति के लिये प्रयत्न करेंगे। साथ ही अपने इन कार्यों में जनता के सहयोग के लिये भी अपील की।

शिवचंदजी सोनी
मंत्री, माहेश्वरी सभा, कलकत्ता

राजस्थानी कलाकारोंसे

'चूरू साहित्य गोष्ठी' राजस्थानके लेखकों और कवियों की मौलिक सुन्दर रचनाओंको प्रकाशित करनेका आयोजन कर रही है–किसी व्यापारिक दृष्टिसे नहीं बल्कि प्रकाशनके अभावने राजस्थानके जिन उच्च कलाकारों और उनकी मौलिक कलाकृतियोंको अंधेरेही में छिपा रक्खा है उनको प्रकाशमें लानेके लिए है।

अतः राजस्थान के लेखकों और कवियोंसे निम्नपते पर पत्रव्यवहार करने की प्रार्थना की जाती है।

सुबोध कुमार अग्रवाल प्रकाशन विभाग
चूरू साहित्य गोष्ठी
पो. चूरू (बीकानेर)

हमारा राजस्थान

तिजारा और राजगढ़ में म्यूनिसिपैलिटियां

अलवर। तिजारा और राजगढ में म्यूनिसिपैलटियां कायम करने के लिए दो वर्ष पहिले की गई घोषणा को सर सिरेमल बापना की दीवानगीरी में भी इस रूप में कार्य में परिणत किया जाना अत्यंत खेद का विषय है। सीटों का बटवारा सांप्रदायिक आधारपर करते हुए जमीन व मकानों के प्रतिनिधियों का बंटवारा भी सांप्रदायिक आधारपर किया गया है। शहरों के इस जहर को भी इस प्रकार कस्बों में भी दाखिल किया जा रहा है। नाजिम तथा हेड मास्टर सरकारद्वारा नामजद होंगें। दो गैर-सरकारी सदस्यों में एक हरिजन होगा। दोनोंका प्रधान नाजिम ही रहेगा। ३०० रु. की जायदाद १९ रु. मकान किराया या मिडिल की सनद मत का आधार हैं।

शाहपुरा की विचित्र आज्ञा

उदयपुर। शाहपुरा की पुलिस को एक नया काम सौंपा गया है, वह यह कि कडी को धूपसे तेज लू चलने पर भी किसी दूकानदारको दूकान पर परदा न लगाने दिया जाय। जो दूकानदार पुलिसके कहनेसे परदा नहीं हटाता, उसका परदा पुलिस उठा देती है। मसनद और तकिया लगा कर दूकानपर बैठना पहिले ही बन्द हैं। हालांकि यह सभी जगह आम रिवाज है। कहते हैं कि शासकको दूकानदार की ये हरकतें पसंद नहीं हैं।

मारवाड़में जन जागृति : स्थान स्थान पर महिला सम्मेलन

दिल्ली। मारवाड में महिला जागृति की आवश्यकता को बहुत अनुभव किया जा रहा है और उसके लिए जहां तहां उद्योग भी किया जा रहा है। राजनैतिक एवं सामाजिक सम्मेलनोंके साथ महिला सम्मेलनोंका आयोजन किया जाना विशेष आशाजनक है। सांभरमें माहेश्वरी नवयुवक मंडलके विशेष अधिवेशनके साथ श्री सरस्वतीदेवी दूधानाके सभापतित्वमें महिला सम्मेलन भी हुआ। इसी प्रकार अलवर राज्यमें तिजारा जिला सम्मेलनके साथ श्री शकुंतला देवीके सभापतित्वमें किए गए महिला सम्मेलन का आयोजन सफल रहा। मथुरा, भरतपुर और अलवर से आई हुई महिलाओं के कारण तिजारा की महिलाओं में काफी जागृति हो गई। श्रीमती प्रियम्वदा-देवी, लक्ष्मी देवी और श्रीमती उपाध्याय ने महिलाओं से पर्दा त्यागने, शिक्षित होने और देश के कामों में भाग लेनेकी अपील की। इसका स्त्रियोंपर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। उदयपुर का महिला मंडल राजसमुद्र में गर्ल गाइड कैम्प लगा रहा है। उसने पिछले वर्ष १००० महिलाओं को प्रतिवर्ष साक्षर बनाने का कार्यक्रम ५ वर्ष के लिए बनाया है। चौमू, जयपुर में सितम्बर के अन्तिम दिनों में राजस्थान प्रान्तीय महिला सम्मेलन करने को आयोजन किया जा रहा है।

श्री विजयवर्गीय का वक्तव्य

ग्वालियर। ग्वालियर राज्य सर्वजनिक सभाका वार्षिक अधिवेशन स्थगित हो जानेसे उसके अध्यक्ष श्री गोपीकृष्णजी विजयवर्गीयने राज्य का दौरा शुरु किया है। खाचरोद और बड़नगर में आपको सभा के कार्य के लिए थैलियां भेंट की गईं। आपने एक वक्तव्य निकाल कर सभा के कार्यकर्ताओं से अपील की है कि उनको जनसेवा, जनकष्ट निवारण, जनसम्पर्क तथा रचनात्मक कार्यों में प्रयत्नशील रहना चाहिए। सभाओं तथा सम्मेलनों में शासन के अप्रगतिशील रुख की आलोचना करते हुए उसकी त्रुटियों की भी चर्चा की जानी चाहिए। शासनसुधारों तथा प्रजातंत्र की ओर बंद की गई प्रगति से भी जनता को अवगत करना चाहिए। नागरिक स्वतंत्रता पर लगाए गए प्रतिबन्धों की तथा न्याय विभाग में किए जाने वाले हस्तक्षेप की निन्दा की जानी चाहिए। मजदूरों और किसानों की सेवा करते हुए प्रजा के संगठन को खूब दृढ बनाना चाहिए। तभी राज्य पर उत्तरदायी शासन की मांग के लिए जोर डाला जा सकेगा।

श्री. श्रीप्रकाशजी की रिपोर्ट

१९४२ के मई मास में जोधपुर में लोक-परिषद द्वारा शुरू किए गए आन्दोलनका अध्ययन करन के लिए म. गांधी ने श्री. श्रीप्रकाश जी को नियुक्त किया था। उन दिनों आप वहां दो बार गए थे, लेकिन अगस्त आन्दोलनके कारण आप अपनी रिपोर्ट गांधीजीके पास न भेज सके थ वह आपने अब उनके पास भेजी है। इसमें किसानों पर जमीदारोंकी ज्यादतियों की, सुधारों की, और राजबंदियों के साथ सरकार के व्यवहार की चर्चा की गई है। जोधपुरके पुलिस इंस्पेक्टर श्री त्रिवेदी ने श्री श्रीप्रकाशजी को बदली हुई स्थिति को देखने के लिए बुलाया बताते हैं।

रिहा कार्यकर्ताओंपर प्रतिबंध

अजमेर। अजमेर जेल से श्री शंकरलाल वर्मा के रिहा किए जाने के बाद श्री विश्वम्भरनाथ भार्गव, बालकृष्ण गर्ग बालूराम जी जाट और मूलचंद जी असावा भी रिहा कर दिए गए हैं। इन सब पर पुलिस की आज्ञा के बिना शहर से बाहर न जाने, कांग्रेस के काम में भाग न लेने किसी कांग्रेसजन से बात न करने की पाबन्दी लगा दी है।

ब्यावर में आदर्श विवाह

ब्यावर, ३० जून—ब्यावर के समाजसुधार प्रेमी श्री जयदेव जी आर्य ने अपनी कन्या चि. पवित्राकुमारी का शुभ विवाह जाति बन्धन तोड कर गुरुकुल कांगडी के स्नातक पं. क्षितीशकुमार वेदालंकार से किया है। कन्या पक्ष माहेश्वरी और वर पक्ष अग्रवाल है। पहिले विवाह के समान इस विवाह की भी ब्यावर में काफी चर्चा रही।

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A , B. Sc., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

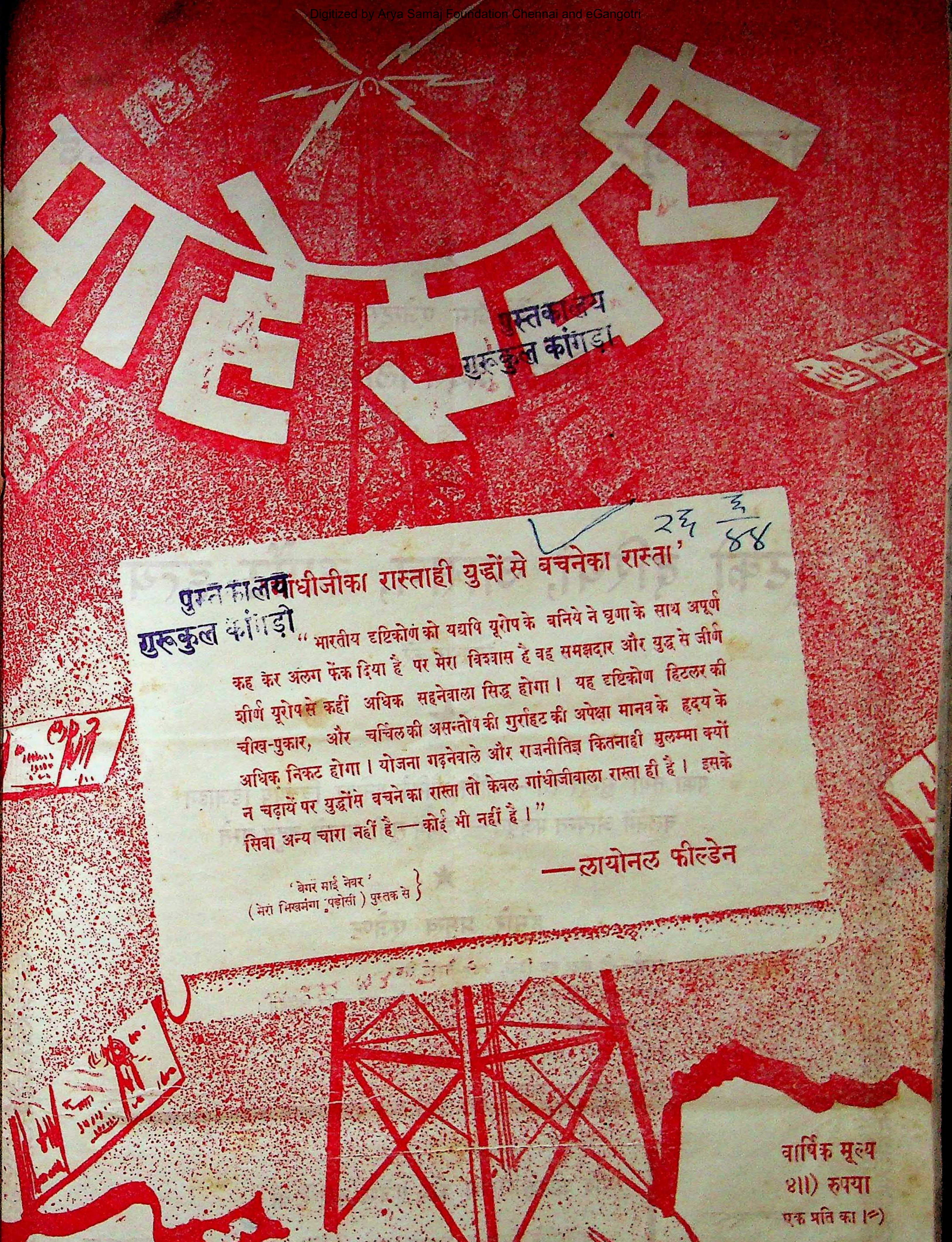

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

२६ ३/44

[illegible]धीजीका रास्ताही युद्धों से बचनेका रास्ता’

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

“भारतीय दृष्टिकोण को यद्यपि यूरोप के बनिये ने घृणा के साथ अपूर्ण कह कर अलग फेंक दिया है पर मेरा विश्वास है वह समझदार और युद्ध से जीर्ण शीर्ण यूरोप से कहीं अधिक सहनेवाला सिद्ध होगा। यह दृष्टिकोण हिटलर की चीख-पुकार, और चर्चिल की असन्तोष की गुर्राहट की अपेक्षा मानव के हृदय के अधिक निकट होगा। योजना गढ़नेवाले और राजनीतिज्ञ कितनाही मुलम्मा क्यों न चढ़ायें पर युद्धोंसे बचने का रास्ता तो केवल गांधीजीवाला रास्ता ही है। इसके सिवा अन्य चारा नहीं है—कोई भी नहीं है।”

—लायोनल फील्डेन

‘बेगर माई नेबर’
(मेरा भिखमंगा पड़ोसी) पुस्तक से }

वार्षिक मूल्य
४॥) रुपया
एक प्रति का ।=)

वर्ष ३५
संख्या ४

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

पाक्षिक

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

कार्यालय—अली चेम्बर्स, ढीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

बिड़ला जूट मैन्यूफेक्चरिंग कं. लिमिटेड

★

मैनेजिंग एजेन्ट्स

बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

८, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

★

जूटकी दरियां, आसन, कार्पेट इत्यादि

व्यवहार करें

★

पका तथा सुन्दर रंग — भाँति भाँतिके मनोहर चित्रमय डिजाइन
चलनेमें अत्यन्त मजबूत — दाममें सूती मालसे बहुत सस्ते

★

हमारे प्रमुख एजेण्ट

बम्बई—दि मोटर हुड डिपो, ४८० सैंढर्स्ट रोड

अहमदाबाद—दि अग्रवाल हेशियन एजन्सी, जेठालाल वकील बिल्डिंग।

कराची—मेसर्स जे. ललवानी ऐण्ड कम्पनी, कागजी बाजार

इन्दोर—होम्स इंडस्ट्रियल एजेन्सी यशवंतगंज

खानदेश, पूना, अहमदनगर और नासिक — मेसर्स लाहोटी ब्रदर्स, राजस्थान चौक, संगमनेर (अहमदनगर)

यदि आपके शहरमें कोई एजेण्ट नहीं है तो
एजेंसीके लिए हमसे पत्र-व्यवहार करें।

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़
बी.ए., बी.एस्.सी. एल्एल.बी.

' उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत '

वर्ष ३५, संख्या ४]
बम्बई ता. २१ जून १९४४
[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

' विश्व संघ की ओर ' नाम की पुस्तक से, जो अब शीघ्र ही छपने वाली है, एक लेख ' परिवार ' ' माहेश्वरी ' के पिछले अंकमें प्रकाशित हुआ है । परिवार मानव समाज के संगठन की एक आवश्यक मंजिल है, उस की मर्यादा है। परिवार का प्रभाव, एक सीमा से आगे बढ़ने पर समाज के व्यापक हित साधन में बहुत बाधक हो जाता है । इस विषयपर इस लेख में सुन्दर प्रकाश डाला गया है । '

– सम्पादक

पारिवारिक मोह

[ले.—श्री. पंडित सुन्दरलालजी और श्री. भगवानदासजी केला]

पिछले लेख में बताया जा चुका है कि आदमी के सामाजिक संगठन की सब से पहली कुदरती और आवश्यक सीढ़ी परिवार है। परिवार में बालकों का पालन पोषण होता है और उन्हें अगली पीढ़ी का भार उठाने के योग्य बनाया जाता है। यदि माता पिता अपनी संतान के साथ जैसा चाहिए स्नेह भाव न रखें, और उनके लिए तरह तरह का कष्ट न उठावें तो बालकों की परवरिश होना कठिन है। इसी तरह पति पत्नी का, भाई बहिनका, भाई भाई का, या बहिन बहिन का, एक दूसरे से प्रेम दोनोंके लिए हितकर और जरूरी होता है। सब अपने निजी सुखका त्याग करके भी एक दूसरेको आराम पहुंचाने और उसका भला करने में हिस्सा लेते हैं। इस तरह सामाजिक जीवन में परिवार प्रथाका उपयोग जाहिर है। लेकिन हर चीज और हर बातकी एक मर्यादा होती है। एक सीमा तक हर चीज उपयोगी होती है, उसके आगे वह उपयोगी होने की जगह हानिकारक होने लगती है। तब कहा जाने लगता है कि इसका दुरुपयोग हो रहा है। समझदार आदमीको चाहिए कि अतिका सर्वत्र त्याग करे; किसीबात के भी दुरुपयोगका मौका न आने दे।

परिवार प्रथा के बारे में विचार करनेपर मालूम होता है कि बहुतसे पुरुषों और स्त्रियोंका अपनी संतान से इतना ज्यादह प्यार होता है कि वे उसके लिए विशाल मानव हित की अवहेलना करने लगते हैं। वे भूल जाते हैं कि समाज में दूसरे भी लाखों बच्चे हैं, और उनके साथ भी प्रेम और न्यायका व्यवहार होना चाहिए। इस तरहके माता पिता परिवार प्रथा के दुरुपयोग के दोषी हैं। वे अपने छोटे छोटे परिवारों में इतने रम जाते हैं कि उन्हे बड़े मानव समाज का ध्यान नहीं रहता, जैसे आँख के सामने एक पाई रख लेने से सूरज नजर नहीं आता। अपने परिवार के साथ बहुत अधिक अनुराग होने से स्वार्थ, लोभ, और अनुदारता बढ़ते हैं। इसीसे बड़े बड़े कल कारखानों के मालिक लाखों मजदूरों का पेट काट कर करोडों रुपये कमाते हैं, और उसे अपने छोटेसे परिवार के लिए शौकीनी और विलासिता में उड़ाते रहते है, और जो धन बचता है, उसे मरते समय अपने बाल बच्चों के नाम वसीअत कर जाते हैं। हिन्दुस्तान में जिन अमीरों के सन्तान नहीं होती, वे अकसर अपने खानदान के किसी बालकको गोद ले लेते हैं, जिससे उनका वंश चले। ये गोद लिये हुए बालक मुफ्त का धन पाकर प्रायः बिगड़ जाते हैं, और आरामतलबी या भोग विलास का जीवन बिताते हैं। बहुत सी औरतोंके जब सन्तान नहीं होती तो वे जादू टोनेका आश्रय ले लेती हैं, और दूसरों के बच्चोंका अनिष्ट सोचने में भी कुछ संकोच नहीं करतीं। 'सौतेली माँ' ये शब्द ही निर्दयता के सूचक हो गये हैं। इस तरह संतान की कामना या परिवार की भावना ही पुरुषों और स्त्रियों के घोर पतनका कारण बन जाती है।

परिवार के मोह से बहुत से आदमी अपने पड़ोसियों को लूटते और देश या राज्य को बरबाद करते हैं। इससे ईमानदारी का सार्वजनिक जीवन असम्भव होजाता है। हर राजनीतिज्ञ राष्ट्र को हानि पहुँचा कर भी अपने परिवार को लाभ पहुँचाने की कोशिश करता हैं। चीन ईरान और हिन्दुस्तान जैसे देशोंमें सार्वजनिक भावना के बहुत कम होने का एक खास कारण यही नैतिक दोष है। क्या आश्चर्य है कि मशहूर समाजवादी नेता रोबर्ट ओवन ने घरों को स्वार्थ और छल का अड्डा बताया है। यही बात बड़े पैमाने पर लीजिए। रोम के सम्राट् मारकस औरीलियस ने अपने निकम्मे लड़के कोमोडस को अपना उत्तराधिकारी बनने में मदद दी। औलिवर क्रामवेल की अपने खानदान का राजनैतिक महत्व बढ़ाने की कोशिश ने इंग्लैंड में लोकतंत्रवाद के पक्ष को नष्ट कर दिया।

इस जमाने में विवाह और पारिवारिक जीवन ने बहुत से प्रगतिशील आन्दोलनों को उत्साही प्रचारकों और धुनके पक्के कार्यकर्ताओंसे वंचित कर दिया है। विवाह से पहले बहुत से पुरुष और स्त्रियाँ तरहतरह के आंदोलनों और आदर्शों के साथ खूब जोश से काम करते हैं, लेकिन जब उनके प्रेम और सेवा के लिए उनका परिवार हो जाता है तो उनके उच्चतर कर्तव्यों की अवहेलना होने लगती है। फिर, उन्हें सभा सोसायटियों में जाना भी कठिन मालूम होने लगता है। विवाह ने ऐसे कितने ही देश सेवकों का खात्मा कर डाला। हरबर्ट स्पेन्सर ने कहा था कि अगर मेरा विवाह हो जाता तो मैं ' सिंथेटिक फिलासफी ' (समन्वयात्मक दर्शन) पर निबंध न लिख सकता। बहुत से वीर स्त्री पुरुष कैद से और आर्थिक हानि से ज्यादहतर इस लिए डरते हैं कि उन्हें अपने बाल बच्चों की बहुत फिक्र रहती है। परिवार आदमी को ऐसे मौकों पर कायर बना देता है।

इसी दृष्टि से समय समयपर परिवार प्रथा का घोर विरोध हुआ है। यूनान का दार्शनिक अफलातून (प्लेटो) रक्षक वर्ग या सैनिक वर्ग के लिए परिवार प्रथा को उठा देना चाहता था। अनेक बौद्ध और ईसाई साधु इसी लिए आजीवन अविवाहित या कुआँरे रहने लगे जिससे वे परिवार में लिप्त न हों। ऐसी बातें थोड़े से लोगों में ही परिमित रहीं। आम तौर से परिवार प्रथा बराबर चलती रही है। बात यह है कि पुरुष और स्त्रीमें मिलकर एक दूसरे के साथ रहने की इच्छा स्वाभाविक है। बालिग होनेपर यह प्रवृत्ति एक बार सब में जागती है। अरस्तू (एरिस्टोटल) के शब्दो में ' प्रेम एक समय में एक ही वस्तु के साथ होता है।' प्रेम केवल विषय वासना की पूर्ति ही नही चाहता वह गहरा व्यक्तिगत स्नेह भी चाहता है। हर आदमी और हर औरत की यह इच्छा होती है की कोई व्यक्ति ऐसा हो, जिसे मैं खूब चाहूं और जो मुझे सब से अधिक चाहे। पतिपत्नी सम्बन्ध की जड़में यही भावना है। संतान हो जाने पर पुरुष और स्त्री दोनों संतान को प्यार करते हैं, और उसे प्यार करने में दोनों का एक दूसरे के प्रति अनुराग मालूम होता है।

यह पारिवारिक प्रेम जब मर्यादा से बाहर हो जाता है, जब यह मोह का रूप धारण कर लेता है तो मनुष्य अपने दूसरे कर्तव्यो की अवहेलना करने लगता है। इस लिए अब हम इस परिवारिक मोह को रोकने के उपायों पर विचार करते हैं।*

(क) कुछ लोगों की राय है कि पुरुषों और स्त्रियों दोनों को प्यार करने और पालने के लिए दूसरों के बच्चे दिये जायें। क्योंकि पुरुष और स्त्री दोनों का यह स्वभाव होता है कि वे किसी न किसी बच्चे से निजी और स्नेहपूर्ण सम्बन्ध रखना चाहते हैं, इस लिए वे उस दूसरे के बच्चे को भी अवश्य प्यार करेंगे, परन्तु उनके प्रेम का सामाजिककरण हो जायगा। वे उस बच्चे की खातिर न तो दूसरे बच्चों को कष्ट पहुँचाने की कोशिश करेंगे, और न समाज या देश के साथ छल कपट करेंगें। पुरुष और स्त्री दूसरे के बालक में अपनेपन की भावना इतनी ज्यादह नहीं रख सकते; और इस अपने पराये की भावना से ही समाज का अनिष्ट होता है। इस तरह यह तजवीज इस भावना को रोक कर रखने के लिए अवश्य उपयोगी है। लेकिन जाहिर है कि यह तजवीज बनावटी और अस्वाभाविक है; यह इसका बड़ा दोष है, जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

(ख) यह कहा जाता है कि बच्चोंका पालण पोषण निजी तौर पर न हो, बल्कि सरकारी या राष्ट्रीय शिशु-शालाओंमें, सीखे हुए कर्मचारियों की देखरेखमें हो। किसी बालिग आदमीका किसी बच्चेसे व्यक्तिगत

(शेष पृष्ठ २४ पर)

---

* Hints for self-culture के आधार पर।

माहेश्वरी
ART CORNER

“ कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ”

बम्बई, ता० २१ जून १९४४

गांधी-वावेल पत्रव्यवहार

महात्मा गांधी और लार्ड वावेलके बीच गत फरवरी, मार्च और अप्रैलके महीनोंमें हुआ पत्र व्यवहार प्रकाशित हो गया, जिसे हम अपने पाठकों की जानकारी के लिए अविकल रूपमें इसी अंक के पृष्ठ ४-५ पर छाप रहे हैं। इस पत्र व्यवहार का सूत्रपात तव हुआ जब कि आगाखां महलमें नजरबंद महात्मा गांधी एवं उनके कुछ साथियों को भारत सरकार की ओरसे उनकी नजरबंदी के कारण बताये गये और उनसे अपनी सफाई देने के लिए कहा गया। गांधीजी ने इस सरकारी नोटिस का तुरंत जवाब भेज दिया और इसके साथ ही वायसराय लार्ड वावेल से पत्र व्यवहार भी शुरु कर दिया। यह पत्र व्यवहार शासक और शासित, उत्पीडक और उत्पीडित, सत्ताधारी और सत्ताहारी पक्षों की टेर बड़े अच्छे ढंग से अभिव्यक्त करता है। अवश्य ही दोनोंकी शैली में जमीन आस्मान का अंतर है जो स्वाभाविक है। जब दोनों के हित पृथक हैं, रास्ते पृथक हैं और पृथक हैं—समस्त समस्याओं के विवेचन के दृष्टिकोण तो इन सबको व्यक्त करनेकी शैली में अंतर होगा ही। भारतमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के सर्वोच्च प्रतिनिधि लार्ड वावेलकी सारी विचार-धारा ब्रिटिश प्रधान मंत्री मि० चर्चिल की इस घोषणा की शाखामात्र है कि “ मैं ब्रिटिश साम्राज्य का अंत करने के लिए प्रधान मंत्री नहीं बनाया गया हूं, और अपनी अपहृत स्वतंत्रता को पुनः प्राप्त करने के लिए छटपटानेवाली भारतीय जनता की विश्वस्त प्रतिनिधि कांग्रेस एवं उसके सूत्रधार महात्मा गांधी की विचारधारा का स्रोत है—पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करनेकी भीष्मप्रतिज्ञा। इस दृष्टिकोण के साथ पत्रव्यवहार का मंथन करने पर घोर निराशा होती है और ब्रिटिश सरकारके युद्धोद्देश्य का असली स्वरूप अपने नग्न रूप में हमारे सामने आ जाता है। वावेल के पत्रों को पढ़ जाइये केवल यही सार निकलता है कि भारत को न आज स्वतंत्रता मिलेगी, न कल और न कभी भी। ब्रिटिश साम्राज्यवाद ‘ भारत के हित के लिए ’ अपने पैर जमाये रहेगा। दूसरी ओर महात्मा गांधी पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करने की भारतीयों की भीष्म प्रतिज्ञा जोरदार शब्दों में दुहराते हैं और यह घोषित करते हैं कि अंग्रेजी राज्य के अन्तर्गत आज सारा का सारा हिन्दुस्तान एक विशाल कैदखाने के रूप में परिवर्तित हो गया है और सरकार के जेलखाने इस बड़े जेलखाने के अंदर के जेलखाने हैं जिनसे स्वाधीनता वाहिनी का कोई भी सैनिक हर्गिज नहीं डरता।

* * *

सरकार ने महात्मा गांधी और कांग्रेस पर झूठे आरोप लगाकर उन्हें दुनिया में बदनाम करने की जो कुत्सित चेष्टा की है, उससे महात्मा गांधीको मार्मिक व्यथा पहुंची है। झूठे आरोपोंकी चोट कोई मामूली नहीं होती। वह रोम रोम में व्याप्त होकर आदमी को व्याकुल कर देती है। और वह व्याकुलता तब और भी उग्ररूप धारण करती है जब कि आरोप लगाने वाला अपने अधिकारों के मद में कुछ सुनना ही नहीं चाहता और आरोपों को दुहारा दुहारा पर व्यथित हृदयको क्षतविक्षत करनेमें आनंद अनुभव करता है। महात्मा गांधी इन अभियोगोंसे जरा भी विचलित नहीं हुए, क्योंकि उन्हें बदनाम करनेवालों की ठीक वैसीही गति हुई या हो रही है जैसीं कि सूर्य पर थूकने की चेष्टा करने वालों की होती है। गांधीजीकी विचारधारा और सिद्धांत स्फटिक के समान स्पष्ट हैं। उनकी राजनीतिमें कुटिलता, धूर्तता और गोपनीयताके लिए कोई स्थान नहीं है। वह तो विश्वके मानवमात्रके हितैषी हैं और मानवताका उद्धार और मंगल देखना चाहते हैं। तभी वह ब्रिटिश साम्राज्यवाद के भारत-स्थित प्रतिनिधि तकको ‘ प्रियमित्र ’ कहकर सम्बोधित करते हैं। अलबत्ता उन्होंने लार्ड वावेल को चुनौती दी है कि मेरे तथा कांग्रेस पर लगाये गये अभियोगों को एक निष्पक्ष न्यायालय द्वारा साबित कीजिए, क्योंकि गवर्नमेण्ट अभियोक्ता, जज और जेलर का पार्ट खुद ही नहीं अदा कर सकती। उन्होंने साफ कहा है—“ अगस्त प्रस्ताव के पास होते ही गवर्नमेण्ट आतंकित हो उठी और उसने अकस्मात समस्त कांग्रेसी कार्यकर्त्ताओं को जेल खानों में डाल दिया जिसके फलस्वरूप देशमें दुःखद काण्ड हुए। यदि सरकार गिरफ्तारीमें जल्दबाजी न करती तो देशमें रक्तपात हर्गिज न होता। अगस्त प्रस्ताव की निर्दोषिता का इससे बढ़कर क्या प्रमाण हो सकता है कि उसमें केवल भारतीयोंकी वेदतापूर्ण गुहार थी—इसके अलावा और कुछ नहीं। हिंसा कांग्रेस की क्रीड नहीं। जिन कांग्रेसियों नें अहिंसा के विधान के प्रतिकूल आचरण किया उनको ऐसा करनेके लिए कांग्रेस ने कभी कोई अधिकार नहीं दिया। भारत छोडों के नारे में भारतीयों के जीवन मरण की मांग-स्वतंत्रता की आकांक्षा निहित है। सरकारने नारे का बिलकुल गलत और विषैला अर्थ लगाया। भारत छोड़ो कांग्रेस का उद्देश्य युद्धप्रयासमें बाधा डालना नहीं था। सरकार नें गलत रुख लेकर खुद संकट को आमंत्रित किया और सारे दुःखद काण्डों की जिम्मेवारी उसीपर हैं। ”
महात्मा गांधी की इस चुनौती को स्वीकार करने की लार्ड वावेल ने हिम्मत नहीं लगायी। केवल आरोप लगा देना और साबित करने की चुनौती स्वीकार करने से कतराना प्रमाणाभाव का निर्देशक है। इस प्रसंग में हमें मास्को केस का स्मरण आ रहा है। मास्को केस के नाम से स्टेलिन की सरकार ने जो अभिनय किया था उसका उद्देश्य ट्राट्स्की को बदनाम करना था। उनपर तमाम झूठे आरोप लगाये गये। उस वक्त निर्वासित ट्राटस्की ने स्टेलिन को चुनौती देते हुए कहा था-“यदि एक अन्तर्राष्ट्रीय ट्रिब्यूनल के सामने तुम मुझ पर लगाये गये आरोप सिद्ध कर दो तो मैं उसी क्षण अपने आप को तुम्हें सौंप दूंगा, फिर चाहे तुम मुझे गोली से उड़ा देना या तिलमिलवा तिलमिलवाकर मारना, मैं सांस न लूंगा। ” लेकिन स्टेलिन अन्तर्राष्ट्रीय ट्रिब्यूनल के सामने जानेकी हिम्मत न कर सके। इसी तरह की हिचकिचाहट आज गांधीजी एवं कांग्रेस के सम्बन्ध में ब्रिटिश सरकार दिखा रही है।

* * *

इधर भारत सरकार कांग्रेस तथा महात्मा गांधी पर झूठे और हास्यास्पद अभियोग लगाकर ही चुप नहीं हो गयी, बल्कि उसने ‘१९४२-४३ के उपद्रवों के लिए कांग्रेस जिम्मेवार, नामक एक पुस्तिका हजारों कीं संख्या में छापकर भारत तथा विदेशों में उसे प्रचारित किया। अधिकतर विवेकशील विदेशियोंनें अभियोग पर विश्वास नहीं किया जैसा कि समय समयपर इस देशमें प्रकाशित उनके मंतव्यों से स्पष्ट है। सरकार विना किसी अपराध के हजारों कांग्रेसियोंको जेलके सीखचोंके अंदर वंद कर देती हैं, उनपर घृणित आरोप लगाती है, पुस्तिका छपवाकर उसे देशविदेशों में प्रचारित करती है और विदेशों में अपने आदमी भेजकर कांग्रेस के विरुद्ध प्रचार करवाती है, किन्तु कांग्रेसको आरोपों का उतर तक देने की सहूलियत नहीं देती। भारत रक्षा विधान की नंगी तलवार से प्रेस मालिक आतंकित हैं और बेचारे इच्छा होते हुए भी आरोपों का उत्तर सम्वलित पुस्तिका छापने की हिम्मत नहीं कर सकते। महात्मा गांधी और वावेल के बीच हुए पत्र व्यवहार के अखवारों में प्रकाशित होनेके पूर्व महात्मा गांधी ने बाम्बे क्रानिकल के सम्पादक के पास दो जिल्दों में समस्त पत्र व्यवहार की नकलें भेजी थीं। दोनों जिल्दें फुल्स्केप साइज के २०० पृष्ठोंकी हैं। साथ में गांधीजी ने जो पत्र लिखा था वह बडे मार्केका है और अपने पाठकों की जानकारी के लिए हम उसे नीचे प्रकाशित कर रहे हैं। उन्होंने लिखा है:—

+ \+ \+

“ आगाखां महल में नजरबंद होने की हालत में भारत सरकार के साथ मैंने जो पत्रव्यवहार किया था, उसकी नकल दो जिल्दों में आपके (सम्पादक बाम्बे क्रानिकल) पास भेज रहा हूं।

“ दूसरी जिल्द “१९४२-४३ के उत्पातों के लिए कांग्रेस जिम्मेवार है ” नामक सरकारी पुस्तिका के उत्तर की नकल है और प्रथम जिल्द उपरोक्त उत्तर एवं सार्वजनिक महत्व की स्फुटित समस्याओं के सिलसिले में किये गये पत्र व्यवहार की नकल।

“ मैंने दयालु मित्रों की सहायता से नकलें साइक्लोस्टाइल द्वारा छपाली थीं। संसरशिप की कठिनाइयों के कारण मैंने किसी प्रेस में इन्हें नहीं छपाया। ऐसा न हो कि भारत सरकार पत्र व्यवहार के कुछ अंश आपात्तिजनक समझे, इस लिए मैं मित्रों में ही इसे प्रचारित कर रहा हूं। आप अपने मित्रों को ये जिल्दें पढ़ा सकते हैं बशर्ते कि पत्र व्यवहार गुप्त रहे। ”

लार्ड वावेलने महात्मा गान्धीसे युद्धप्रयासमें पूर्ण सहयोग करनेके लिए देशवासियोंको सलाह देनेका प्रस्ताव किया है, और क्रिप्स प्रस्तावोंके उपहार की ओर इशारा किया है। इसके जवावमें महात्मा गांधीनें कहा है-“ जहां विश्वास नहीं, वहां सहयोग कैसे हो सकता है? जब गवर्नमेंटका भारतीयों पर विश्वास नहीं है तो भारतीय ही उस पर कैसे विश्वास करें। ब्रिटेनका यह काम है कि वह भारतीय जनसाधारणके निर्वाचित प्रतिनिधियोंके साथ सहयोग करै। वर्त्तमान विश्वसंघर्षको देखते हुए भविष्यके वायदेका कोई मूल्य नहीं है। भारतीयों की मांगोंको पूरा करनेसे ही युद्ध प्रयत्नमें उनका सहयोग मिल सकता है। भारतसे चले जानेके नारेमें भारतीयों की यही मांग प्रदर्शित की गयी है। ” उपहारके इस प्रलोभनका गांधीजोने खूब टकसाली उत्तर दिया है। क्या ब्रिटिश सरकारके वायदे और उपहार प्रथम बार रखे जा रहे हैं, जिनपर भारतीको विश्वास हो जाय? हम इन वायदों की हकीकत देख चुके हैं। सबसे जादा उल्लेखनीय वायदा गत महासमर के दर्मियान किया गया था। भारतीयों कों युद्ध प्रयत्न में सहयोग करने के लिए कहा गया और इसके पुरस्कार स्वरूप युद्ध की समाप्ति पर स्वायत्तशासन का बचन दिया गया। लेकिन युद्ध समाप्त होतेही वायदा भी समाप्त हो गया, उसके एवज में रौलट ऐक्ट और जलियानवाला बाग का नृशस हत्याकाण्ड भारत ने देखा। जिन म० गांधीने गत महासमर में ब्रिटिश सरकार की सहायता की और बाद में उन्हें धोखा हुआ, वह आज ब्रिटिश सरकार के वायदों की मरीचिका में कैसे फँस सकते हैं? वास्तविकता तो यह है कि ब्रिटिश सरकार औपनिवेशिक स्वराज्य भी देनेको तैयार नहीं है, क्योंकि इसमें साझेदारी,

सम्पादकीय

समान मर्यादा, किसी युद्धमें तटस्थ रहने का अधिकार और ब्रिटिश राष्ट्र संघ से पृथक होनेतक का अधिकार निहित है। चर्चिल और वावेल के पास भारत को देनेके लिए कुछ भी नहीं है। अलब्बत्ता वह शासन प्रबंध में अपनी शर्तोंपर भारतीयों का सहयोग अवश्य चाहते हैं। महात्मा गांधी और कांग्रेस का अपराध केवल यह है कि वह भारतीयों के अधिकारोंको हमेशा के लिए छोड़ देनेको प्रस्तुत नहीं हैं। मित्र राष्ट्रों के युद्धोद्देश्य—गणतंत्र और स्वाधीनता की रक्षा पर ब्रिटिश राजनीतिज्ञों की भारत विषयक नीति कैसी अच्छी टीका है!

लार्ड वावेल ने महात्मा गांधी से बड़े जोरों से अनुरोध किया है कि असहयोग बंद कीजिए और अगस्त प्रस्ताव को रद कर दीजिए। इसका गांधीजी ने उन्हें उत्तर देते हुए ठीक ही कहा है कि "जो प्रस्ताव सैकडों स्त्री पुरुषों की लंबी वहस और विचार के बाद पास हुआ था उसे रद करने का मुझे क्या अधिकार है? यह एक आदमी का काम नहीं है। यह तो वे ही सब लोग कर सकते हैं, जिन्हों ने उसे पास किया था। इसके लिए संयुक्त रूपसे इस पर विचार करने की आवश्यकता है। क्या आप (वावेल) कांग्रेसियों को ऐसा करने का मौका देंगे।" कहना न होगा कि वावेल साहब इसके लिए तैयार नहीं हुए। कांग्रेस जैसी एक गणतांत्रिक संस्था के नेता से एक बार उस संस्था की सर्वोच्च कमेटी के अधिवेशन में स्वीकृत प्रस्ताव को खुद वापस करनेका प्रस्ताव कितना अनुचित हैं? कांग्रेस कोई नाजी या फेसिस्ट पार्टी तो है नहीं, जिसमें एक ही व्यक्तिको सब अधिकार प्राप्त हों और वह भेड़ की तरह सैंकड़ों व्यक्तियों को हांके। हम पूछते हैं कि यदि वावेलकी सरकार कांग्रेसियो को एक स्थानपर मिलने देती, तो उसपर संकट का कौनसा पहाड़ टूट पड़ता? हमारी धारणा है कि सरकार गतिरोध दूर करना चाहतीही नहीं क्योंकि आत्मतुष्टि के भावसे वह ओतप्रोत दिखती है। उसे स्वेच्छा सें सेनामें भर्ती होनेंवाले व्यक्ति मिल ही रहे हैं, युद्ध प्रयास ठीक ठीक चल ही रहा है चाहे जनसाधारण का सहयोग हो या न हो, तव वह गतिरोध मिटाने के झमेले में क्यों पड़े? वह गांधीजी की इन वातों की क्या परवाह करे कि 'हम पर विश्वास करो तो हम नाजीवाद, फैसिज्म, जापानवाद आदि वादों के खिलाफ लड़ने में तुम्हारी बहुत मदद कर सकते हैं? वावेल साहव कांग्रेस के प्रतिनिधियों की "योग्यता," "महान विचारों" के तो कायल हैं किन्तु, उनकी नीति और उपायों को व्यर्थ और अव्यावहारिक बताने के अपने कर्तव्य से वाज नहीं आना चाहते। क्या ऐसे व्यक्तियों की नीति और उपायों को व्यर्थ और अव्यावहारिक बताते हुए इसके पहले कभी सुना गया है?

सारे पत्र व्यवहारसें एक ओर यथार्थताका सामना करनेसे कतराने और दूसरी ओर उसके लिए जोर, एक ओर साम्राज्यवादी आधिपत्यको कायम रखनेका संकल्प और दूसरी ओर उससे पिण्ड छुड़ानें की छटपटाहट दिखती है।

स्टर्लिंग पावना देने से इन्कार

श्री घनश्यामदासजी विड़ला का वक्तव्य

'वम्बई-योजना' के प्रवर्त्तक श्रीयुत घनश्यामदासजी विड़लाने निम्न लिखित वक्तव्य प्रकाशित किया है:—

"लॉर्ड केनीजने इण्डो ब्रिटिश आर्थिक समझौतेको स्वीकार करनेके लिये जो राय जाहिर की है, उसे देखते हुए मुझे भय है कि चूं कि इस सुझावका मतलव केवल इतना ही है कि भारतका जो इंगलैण्डपर ऋण है, उससे वह साफ इनकार करता है अर्थात् स्टर्लिंग पावना देनेसे इनकार करना चाहता है जो इस समय ब्रिटेनमें जमा है।

राजनीतिक दुरअवस्थासे लाभ उठाकर महा दुर्भाग्यपूर्ण इण्डो-ब्रिटिश सम्बन्धकी ऐसी बातें करते हैं। अबतक भारतने इन महान कष्टोंको इस आशासे धीरजके साथ सहन किया कि जब युद्ध समाप्त हो जायेगा, तव इंगलैण्ड उसके ऋणको चुका देगा जिससे भारतकी उत्पादन शक्तिके बढ़ानेमें सहायता मिलेगी। लेकिन आज यदि इंगलैण्ड उस ऋणको देनेसे इन्कार करता है, तो भारतकी युद्धोत्तर निर्माण की योजनाको गहरी ठेस पहुंचती है, अभाव बना ही रहाता है और दुख बढ़ता है।

भारत ऋणी देश

युद्धके पहले भारत एक ऋणी देश था इसलिये नहीं कि उसने कभी किसीसे पैसा या माल उधार लिया, बल्कि इसलिये कि वह वर्मा, अफगान, एबीसीनिया और समय-समय होने वाली लड़ाइयोंके खर्चसे अन्यायतः दवाया गया और चीन प्रशिया, नेपाल, सीलोन, मलाया, जावा और केप कोलोनी, मिस्र आदि जैसोंकी अनेक यात्रायें करनी पड़ी हैं। इनसे भारतको क्या लाभ हुआ है? जब भारतने यह मांग की कि सुयोग्य समझौतेके लिये उसकी ऋण-स्थिति की एक निष्पक्ष पंचायत द्वारा जांच कराली जाय, इगलैण्डके अर्थ विशेषज्ञोंने इस बातपर विरोध किया कि भारत अपने पवित्र ऋण को छोड़ देनेकी कोशिशमें है। इसमें भारतका क्या दोष है? लौर्ड केनीज जैसे प्रमुख व्यक्ति भारतकी

अब भारतको ऐसी स्थितिपर लाया गया है कि वह उस 'पवित्र' ऋणको लेनेका अधिकारी है।

किन्तु जब इंगलैण्डको देनेका सुअवसर आया, तब लौर्ड केनीज जैसे जिम्मेदार व्यक्ति यह सुझाव करते हैं कि वह ऋण दिया ही न जाय। लौर्ड केनीज इस प्रकारका प्रस्ताव अन्य उपनिवेशोंसे नहीं कर सकते, क्योंकि वे सब देश स्वतन्त्र हैं।

इंगलैण्डके राजनीतिक वचनोंपर अबतक भारतको विश्वास करनेको कहा गया। क्या लौर्ड केनीज यह सोचते हैं कि एक धनी देशके द्वारा एक दुर्भिक्ष पीड़ित देशको कर्ज देनेसे इनकार करनेसे उस विश्वासमें खलल नहीं पड़ेगा?

लौर्ड केनीज कहते हैं कि "इस बात का कोई महत्व ही नहीं रह जाता कि दीन भारतीय किसानोंपर भार बढ़ता जा रहा है यदि कोई यह महसूस करे कि भारतमें सभी रक्षा व्यय, चाहे वह भारतीयों द्वारा या मित्र सरकारों द्वारा किया जाये वह हर हालतमें भारतीय जनताके ही मत्थे होगा।

यह नग्न सत्य है कि अबतक जो भी युद्ध सम्बन्धी खर्च किया गया है चाहे वह भारतीयोंने किया हो अथवा मित्र-सरकारोंने वह सब खर्च भारतने ही अपने मत्थे किया है। लेकिन क्या उन्हें यह मालूम है कि इसका क्या नतीजा हुआ है? मृत्यु रोग और कष्ट! मै इस बातके लिये चुनौती देता हूं कि कोई यह बताये कि क्या अन्य किसी देशने भारतसे बढ़कर अधिक किया है? लाखों आदमी बंगालमें क्षुधासे तिलमिलाकर काल कवलित हो गये। क्या युद्ध क्षेत्रमें मरनेवालोंकी अपेक्षा इनका कम महत्व है? इन्हे भी युद्ध के हताहतोंसे कम न समझा जाय। आज भी लाखों आदमी पीड़ित हैं और मृत्युद्वारपर खड़े हैं क्योंकि देशमें पर्याप्त औषधि का अभाव है। भारतमें अन्नके अभावके कारण यह नहीं है कि भारतमें मुद्राका अधिक प्रसार हुआ, बल्कि यह अन्नाभाव युद्धके कारण ही हुआ है। अन्य चीजोंका भी यहां अभाव है, और यह ताज्जुव ही है जबकि भारतने युद्धके लिये अधिकसे अधिक हर तरह की मदद पहुंचायी है, उसके उत्पादनकी वृद्धि की नितान्त उपेक्षा की गयी है।

अतएव, दीन भारतीय किसानोंपर यह कोई भार न होगा, यह लौर्ड केनीज का कथन अपमानजनक है और उससे दुर्भावना की बू निकलती है। उनका यह सुझाव कि अमेरिका और इंगलैण्ड द्वारा किया गया रक्षा व्यय भारतपर ही ऋण है, इससे गरीब जनताको राहत मिलेगी, भारतीय बुद्धिशाली व्यक्तियोंके लिये अपमानकी बात है। भारतको आर्थिक बालबोधका पाठ न पढ़ाया जाय! उसे यह भली प्रकार मालूम है कि जूता कहाँ काटता है!

लन्दन सिटीके संवाददाताने यह सुझाव पेश किया है कि भारतको अमेरिका द्वारा दिया हुआ अधिक सोना उसके मुद्रा-प्रसारको कम कर देगा। यह भी कहा गया है कि यदि अमेरिकाने भारतको अधिक सोना दिया होता तो बंगालमें दुर्भिक्ष नहीं होता! यह सब कोपलकल्पित है। चावलके स्थानपर सोना थोड़े ही खाया जाता! यदि भारतका ऋण सोनेके रूपमें दिया जानेका है, तो आज सोनेका जो भाव संसारके चालू बाजारों में है, उसीके मुताबिक दिया जाना चाहिये, न कि मुद्रा-प्रसारके कारण बढ़े हुए बनावटी भावोंसे।

वास्तवमें भारतको अधिक ठोस पदार्थों की जरूरत है जिससे कि उसका उत्पादन बढ़े और वह भूखे मानवोंकी रक्षा कर सके। भारतके स्टर्लिंग पावने को वापस दे देनेसे ही भारतीयोंके मापदण्डके ऊंचा होनेकी आशा है। अतः ऐसी बातें हमारे गलेके नीचे नहीं उतर सकती हैं, जब कोई व्यक्ति क्षुद्र हृदयसे स्टर्लिंग पावनेको वापस देनेसे इन्कार करनेकी कल्पना करता है।

हिन्दुस्तान चेरिटी ट्रस्ट कलकत्ता

राजा बलदेवदास विड़ला माहेश्वरी छात्रवृत्ति

(१) किसी युनिवर्सिटीकी या किसी बोर्ड आफ हाईस्कूल ऐण्ड इंटरमिजिएट की कमसे कम आई. एस. सी. परीक्षोत्तीर्ण योग्य माहेश्वरी छात्रोंको टेकनिकल शिक्षा प्राप्त करने के हेतु अधिकतम ४ वर्षके लिए ७५ रु० प्रति मासके हिसाब से ६ छात्रवृत्तियां दी जायंगी।

(२) छात्रवृत्ति उन्हीं छात्रों को दी जायगी जो निम्न लिखित शिक्षण संस्थाओं में प्रविष्ट होना चाहेंगे या प्रविष्ट हो चुके होंगे:—

(क) बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी के इञ्जीनियरिंग कालेज में या

(ख) कलकत्ता युनिवर्सिटी के अप्लायड केमिस्ट्री डिपार्टमेण्ट में या

(ग) दि इंडियन इन्स्टीटयूट आफ साइंस बंगलोर में या

(घ) बम्बई युनिवर्सिटी के डिपार्टमेण्ट आफ टेकनोलाजी में या

(ङ) किसी अन्य इञ्जीनियरिंग कालेज या टेक्निकल इन्स्टीटयूट में जिस में डिग्री या डिप्लोमा प्राप्त करने के लिए ३ वर्ष तक अध्ययन करना पड़े और जिसे बोर्ड आफ सेलेक्शन स्वीकार करे।

(३) छात्रवृत्ति के इच्छुक छात्रों को (क) अपने अच्छे स्वास्थ्य (ख) शैक्षणिक योग्यता और (ग) आचरण के विषय में सन्तोषप्रद प्रमाण देना होगा।

(४) छात्रवृत्ति के उम्मेदवार को बोर्ड आफ सेलेक्शन के सामने इंटरव्यूके लिए उपस्थित होना पड़ेगा। बोर्ड का निर्णय अंतिम होगा।

(५) छात्रवृत्ति प्राप्त छात्रों के शिक्षण संस्था में फेल हो जाने या असन्तोषप्रद प्रगति करने पर अथवा आचरण और व्यवहार के विषय में प्रतिकूल रिपोर्ट मिलने पर छात्रवृत्ति बंद कर दी जायगी।

(६) प्रत्येक वर्ष की ३१ जुलाई तक हिन्दुस्तान चेरिटी ट्रस्ट, ८ रायल एक्सचेञ्ज प्लेस, कलकत्ता की मार्फत मंत्री राजा बलदेवदास बिडला टेकनिकल स्कालरशिप कमेटी के पास आवेदन पत्र पहुंच जाने चाहिए।

'भारत छोड़ो' का नारा दर्दभरी गुहार थी

अंधाधुंध-गिरफ्तारियां ही दुःखद काण्डोंका कारण

गान्धीजी और लार्ड वावेल में पत्रव्यवहार

गत फरवरी मार्च और अप्रैल मासों में महात्मा गान्धी जी और वायसराय लार्ड वावेल के बीच पत्रव्यवहार हुआ था। उक्त पत्रव्यवहार की प्रतिलिपियाँ गाँधी जी द्वारा कुछ चुने हुए भारतीय सार्वजनिक व्यक्तियों में वितरित की गयी थीं। एसौसियेटैड प्रेस ने इन पत्रों को छापा है। इस पत्रव्यवहार को पढ़ने से भारत में उपस्थित राजनीतिक गतिरोध के प्रश्नों के सम्बन्ध में पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। गाँधीजी ने इन पत्रों में 'भारत से चले जाओ' काँग्रेस के अगस्त प्रस्ताव का स्पष्टीकरण किया है।

—'सम्पादक'

महात्मा गांधीका पत्र

नजरबन्द कैम्प—
१७, फरवरी १९४४।

"प्रियमित्र;

यद्यपि आपसे मिलनेका आनन्द मुझें नहीं प्राप्त हुआ है तो भी आपको मैं 'प्रियमित्र' सम्बोधित कर रहा हूं। ब्रिटिश सरकारके प्रतिनिधि मुझे ब्रिटेनका, सबसे बड़ा नहीं तो कमसे कम एक महान शत्रु तो समझते ही हैं। परन्तु मैं चूकि अपने आपको मानवताका एक मित्र और सेवक मानता हूं और मानवतामें ब्रिटेन भी शामिल है, इसलिये अपनी सद्भावनाके संकेतस्वरूप मैं आपको, भारतमें ब्रिटेनका सर्वोच्च प्रतिनिधि समझकर, अपना 'मित्र' कहकर पुकारता हूं।

"मेरे कुछ साथियोंके साथ ही मुझे भी पहले पहल एक नोटिस मिला है जिसमें मुझे बताया गया है कि मैं नजरबन्द क्यों रखा गया हूं। साथ ही मुझे यह भी अधिकार मिला है कि मैं अपनी नजरबन्दीके खिलाफ अपनी सफाई दूं। मैंने अपना जवाव भेज दिया है; मगर सरकारने मुझे अभीतक कोई उत्तर नहीं दिया। सरकारके जवाबका १७ दिनोंतक इन्तजार करनेके बाद मैंने एक स्मरण-पत्र भी भेजा है।

"मैंने कहा है कि ऐसे नोटिस मेरे साथियोंमेंसे केवल कुछ ही लोगोंको मिले हैं। हमलोग कुल छः व्यक्ति एक साथ नजरबन्द हैं। किन्तु सिर्फ तीन व्यक्तियोंको ही सरकारी नोटिस मिले हैं।

"मैं उसी वातको फिर दोहराता हूं जो मैंने आपके पूर्वाधिकारी (लार्ड लिनलिथगो) को लिखे गये अपने पत्रमें कहा था कि कांग्रेस और मेरे विरुद्ध जो अभियोग लगाये गये हैं उन अभियोगोंसे कांग्रेस और मैं सर्वथा निर्दोषी हूं। कांग्रेसपर लगाये गये सरकारके अभियोगोंकी और सरकारपर लगाये गये कांग्रेसके अभियोगोंकी पूरी जांच करके सत्यको खोज निकालनेका काम तो केवल एक निष्पक्ष अदालत ही कर सकती है।

"रिहाईके प्रस्तावपर हालमें ही केन्द्रीय असेम्बलीमें सरकारी पक्षकी पुष्टिमें जो तकरीरें की गयी हैं और श्री सरोजनी देवीकी जबानबंदीका जो हुक्म जारी किया गया है, उसे मैं आगसे खेलना समझता हूं। जापानकी पराजय और मित्रोंकी विजयमें अन्तर समझते हुए जब मैं विश्लेषण करता हूं तो मैं इस नतीजेपर पहुंचता हूं कि मित्रोंको अपनी विजयके साथ ही भारतको विदेशी बंधनसे मुक्त कर देना चाहिये। भारतकी आत्मा समस्त विदेशी बंधनोंसे मुक्त होकर पूर्ण स्वाधीनताका मुतालबा करती है और इसलिये भारत जापानी पराधीनताका मुकाबला ब्रिटेन अथवा किसी दूसरेके साथ भी समान रूपसे मिलकर करेगा। भारतकी इस भावनाका कांग्रेस पूर्णरूपेण प्रतिनिधित्व करती है। कांग्रेस बढ़कर एक ऐसा मजबूत संगठन हो गया है कि उसकी जड़ भारतके धरातल में बहुत नीचेतक पहुंच चुकी है। इसलिये, यह पढ़कर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ है कि सरकार देशकी वर्तमान परिस्थितिसे संतुष्ट है। क्या सरकारको भारतसे धन और जन, दोनों ही नहीं मिल रहे हैं? क्या सरकारका शासन-यंत्र सरलतापूर्वक संचालित नहीं हो रहा है? इस तरहकी आत्म-तुष्टि ब्रिटेनके लिये खतरनाक है और भारत तथा सारी दुनियाके लिये भी खतरनाक है। ब्रिटेनके उच्च-पदाधिकारी इस तरहकी भावनाका परित्याग करके अगर शीघ्र ही हृदय नहीं टटोलेंगे तो उनकी वर्तमान धारणा बड़ी भयावह सिद्ध होगी!

"विश्व-संघर्ष और संसार-संकटको देखते हुए भविष्यके आश्वासनोंका कोई मूल्य नहीं है। आजके विश्वव्यापी संघर्षमें समस्त देशोंका भाग्य एक साथ सन्निहित है और इसलिये समस्त मानवताके भाग्यके फैसलेका प्रश्न उपस्थित है। अतएव अगर युद्धका अन्त करके विश्व-शान्ति स्थापित करनी है और इससे भी ज्यादह खूंखार दूसरी लड़ाई लड़नेकी तैयारी नहीं करनी है तो भविष्यके आश्वासनोंके बजाय इसी दम और इसी वक्त ईमानदारीका प्रदर्शन करना लाज़मी है। इसलिये, युद्ध-का-प्रयासका वास्तविक अर्थ तो एकान्तरूपसे यही हो सकता है कि भारतका मांग पूरी कर दी जाय और भारतीयोंको संतुष्ट किया जाय। 'भारत छोड़कर चले जाओ' के नारेमें भारतीयों की यही मांग स्पष्टरूपसे मौजूद है। भारत सरकारनें बिला वजह इस नारेका जो गलत, घातक और विषैला अर्थ लगाया है वह 'भारतसे चले जाओ' नारेका अर्थ कतई नहीं है। यह नारा ब्रिटेनके प्रति और सारी मानवताके प्रति मित्रतापूर्ण भावनासे ही बुलंद किया गया है।

"मैं लिख चुका। मेरा विश्वास है कि अगर मैं ब्रिटेनका एक मित्र होनेका दावा करता हूं और मैं उसका मित्र हूं भी तो अपने गम्भीर और गहरे विचारों को आपसे प्रकट करनेमें मुझे कोई रोक नहीं सकता। इस नजरबंद कैंपमें पड़े रहनेमें मुझे कोई आनंद नहीं हैं, जहांपर बिला मेरें किसी प्रयासके मुझे आराम पहुचाने को वस्तुएं मिला करती हैं और जबकि मैं यह जानता हूं कि बाहर लाखों आदमी अन्नाभावसे तड़प-तड़पकर दम तोड़ रहे हैं। परंतु मैं उस हालतमें स्वयं को बिलकुलही निस्सहाय महसूस करूंगा, अगर मैं इस कैदसे बाहर गया और वह खाद्य पदार्थ न पासका जिसके द्वारा जीवन संभव और सार्थक होता हैं।

आपका—
एम्. के. गांधी

वायसरायका उत्तर

"प्रिय गांधीजी

"१७ फरवरीके आपके पत्रके लिये धन्यवाद। अपनी नजरबन्दीकी सफाईका जवाब अब आपको मिल चुका होगा। यह जानकर मुझे खेद हुआ ह कि आगाखां-महलके तीन आदमियोंको नोटिस अभीतक नहीं मिला। इसकी शीघ्र व्यवस्था की जायगी।

"मैं उम्मीद करता हूं कि अखबारोंमें आपको मेरा वह भाषण देखनेको मिल गया होगा जो मैंने व्यवस्थापिका सभामें दिया था। उस भाषणमें मेरे विचार व्यक्त किये गये हैं और मैं उसे दोहराने की जरूरत नहीं समझता। आप अगर पढ़ें तो उस भाषण की एक प्रति आपकी सुविधा के लिये मैं इस पत्र के साथ नत्थी करके भेज रहा हूं।

"इस सुअवसरसे लाभ उठाकर श्रीमती गांधी (कस्तूरबा गांधी) की मृत्युपर, आपके प्रति मैं अपनी और अपनी पत्नी की समवेदना प्रकट कर रहा हूं। हम समझते हैं कि इतने लम्बे वर्षों तक संग रहनेके बाद श्रीमती गांधीकी मृत्युसे आपको कितनी भारी क्षति पहुंची है।"

आपका—
वावेल

गांधीजीका दूसरा पत्र

नजरबन्द कैम्प
९ मार्च, सन १९४४

प्रिय मित्र!

गत १७ वीं फरवरीके मेरे पत्रका जवाब आपने बहुत जल्द दिया, इसके लिये मैं आपको धन्यवाद देता हूं। पहले आपको और श्रीमती वावेलको अपनी धर्मपत्नीकी मृत्युपर सहानुभूति प्रकट करनेके लिये धन्यवाद देता हूं। यद्यपि मैं उनके लिये उनकी मृत्युका स्वागत करता था, कि वह जीवन-यातनासे मुक्त हो जायें किंतु मैं जितने कष्ट की सोचता था, उनकी मृत्युसे मुझे उससे अधिक कष्ट हुआ। हमलोग निराले ढङ्गके दम्पति थे। गत सन् १९०६ ई० से हम दोनों पारस्परिक सलाहसे ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करते थे—जैसा हम लोग पहले कभी भी न थे। मैं नहीं चाहता था, फिर भी हमलोगोंमें भिन्नता मिट गयी, हमदोनोंका अस्तित्व एक हो गया। उन्होंनें अपनेको मुझमें समर्पण कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ, कि वह सचमुच मेरी अर्द्धाङ्गिनी बन गयीं। दृढ़संकल्प की वह एक स्त्री थीं, जिसे आरम्भिक जीवनमें दुराग्रही समझनेकी मैं भूल करता था। किन्तु उनके दृढ़संकल्पने उनको अनजानमें अहिंसात्मक असहयोगका मेरा गुरु बना दिया।

इसका अभ्यास मैंने अपने परिवारमें ही आरम्भ किया था। जब मैंने गत सन् १९०६ ई० में इसका राजनीतिक क्षेत्र में उपयोग किया, तब यह अधिक व्यापक बना और इसका नाम सत्याग्रह पड़ गया। जब दक्षिण अफ्रिकामें भारतीय जेल जाने लगे, तब श्री कस्तूरबा भी एक सत्याग्रही थीं। उनको मेरी अपेक्षा अधिक शारीरिक कष्ट उठाना पड़ा। यद्यपि वह कितनी ही बार जेल गयीं, किन्तु इस बारकी जेल-यात्राको उन्होंने सरल नहीं माना, हालांकि सब तरहकी सुविधायें उनको उपलब्ध थीं। मेरी गिरफ्तारी, साथ-साथ अन्योंका पकड़ा जाना और तुरंत उनके भी गिरफ्तार हो जानेसे उनको मार्मिक पीड़ा हुई। इससे उनमें कटुता आगयी। वह किसी गिरफ्तारीके लिये तैयार न थीं। मैंने उनको विश्वास दिलाया था, कि सरकार मेरी अहिंसामें विश्वास करती है। वह मुझे तबतक न पकड़ेगी, जबतक मैं स्वतः जेल जानेके लिये आग्रह न करूं। निस्संदेह उनकी अन्तरात्मा पर ऐसी गहरी ठेस लगी, कि गिरफ्तारीके बाद उन्हें भीषण अतिसार हो गया। लेकिन डाक्टर सुशीला नायर की देख-रेखसे उनको बड़ा आराम मिला, क्योंकि वह भी साथ ही गिरफ्तार हुई थीं। यदि वह उनकी देखरेख न करतीं, तो शायद मेरी नजरबन्दी के स्थानमें वह पहुंच भी न पातीं! यह आकर मेरे साथ उनको बड़ा सन्तोष हुआ

गान्धी-वावेल पत्र-व्यवहार

और विना विशेष उपचारके वह अच्छी भी हो गयीं। किन्तु उनके हृदयकी कटुता कम न हुई और धीरे धीरे वह क्षीण होने लगीं और चली गयीं।

(२) उक्त वातोंको जाने दीजिये, मुझे श्री कस्तूर बाके वारेमें सरकारी वक्तव्य पढ़कर बड़ा दुःख हुआ। उसमें उनके वारेमें विल्कुल झूठी वात कही गयी थी। यह मेरे लिये वड़ी अमूल्य थीं। मैं आपसे कहूंगा कि आप वह कागज मंगायें और पढ़ें, कि मैंने भारत सरकार के एडिशनल सेक्रेटरीसे कैसी शिकायत की थी।

(३) अव मैं आपके उस भाषण की ओर आता हूं, जिसे आपने केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभामें दिया था। जव समाचारपत्र आप के भाषण को लेकर आये, उस समय मैं श्री. कस्तूरवाकी रुग्णशय्या के पास था। मीरावाईने ए० प्रेसकी रिपोर्ट पढ़कर मुझे सुनायी। किन्तु उस समय मेरा ध्यान दूसरी ओर था। फलतः आपके भाषण की प्रतिलिपिका मैंने स्वागत किया। मैने अव इसे ध्यानपूर्वक पढ़ा है। इसे पढ़ने के पश्चात मुझे कुछ कहने की इच्छा हुई। जैसे आपने कहा, कि "मेरे व्यक्त किये हुए विचारोंको अन्तिम बात नहीं समझ लेना चाहिये।" मुमकिन है, कि इस पत्र से उसमें कुछ संशोधन हो।

(४) दूसरे पृष्ठके मध्यभागमें 'भारतीय जनता' की वात आप कहते हैं। मैंने अन्यान्य वड़ेलाटोंके भाषणोंमें पढ़ा है, कि भारतमें रहनेवाले लोग भारतीय जनताके नामसे अभिहित होते हैं। फलतः भारतीय जनता और भारतके लोगोंमें कुछ अन्तर है?

(५) १३ वें सफे पर भारतके स्वायत्त शासनकी चर्चा आपने की है। आपने कहा है,—'मुझे पूर्ण विश्वास है, कि उपर्युक्त वातें केवल ब्रिटेनकी आन्तरिक इच्छा ही नहीं, वल्कि वह इसे शीघ्रही व्यवहारिक रूपमें देखना चाहता है। वर्त्तमान स्थितिमें सिर्फ इतनी ही शर्त्त है कि कोई वस्तु जर्मनी और जापानकी जीतके पहले आड़े न आये। साथही यह निश्चित है, कि वैधानिक समस्याके सुलझानेके समय उनके हितोंकी ओर वड़ा ध्यान रखा जायेगा। जिन्होंने युद्धमें हमारी सहायता की है, जो सबके हितके लिये युद्धरत हैं; उन सैनिकोंकी ओर ध्यान रहेगा। जिन लोगोंने हमारे साथ काम किया है, तथा देशीराज्योंके शासन और शासितोंसे हम वचनवद्ध हैं, उनका भी हित देखनाही पड़ेगा। अल्पसंख्यक हैं, जिन्होंने अपने हितको हमें सौंपा है और हम पर विश्वास करते हैं, हमें उनका भी ध्यान रखना पड़ेगा। लेकिन जवतक भारतके दो दल आपसमें समझौता न कर लें, तबतक स्थितिको हम प्रगतिशील नहीं मानते। इसपर बिना तर्क किये हुए मैं इसका समन्वय करने का साहस करता हूं,—'हम ब्रिटिश उन भारतीय सैनिकोंके बगलमें खड़े रहेंगे, जिनका अस्तित्व हमने दिया और भारतमें अपने शासन और शानको स्थायी रखनेके लिये जिन्हें ट्रेण्ड किया गया। जिनका अनुभव बताता है, कि वे दूसरे राष्ट्रोंके साथ युद्धके लिये हमारी पूरी मदत कर सकते हैं। हम देशी नरेशोंके हितोंकी भी रक्षा करें, जिनमें कितने ही हमारी सृष्टि हैं और उन सबका अस्तित्व हमपर निर्भर करता है, चाहे वे अपनी प्रजाके उत्साहको भले ही कुचल डालें, पर हम हस्तक्षेप न करेंगे। इसी तरह हम अल्पसंख्यकों के हितके रक्षक हैं। जब बहुसंख्यकवाले हमारे शासनके विरोधकी बातें करते हैं, तब हम उनके विरोधके लिये अल्पसंख्यकोंको प्रोत्साहन देते हैं और उनके विरुद्ध प्रयोग करते हैं। इसमें कोई अन्तर नहीं कि वहुसंख्यक भारतीय जनमतसे एक शासन स्थापित करना चाहते हैं। हमलोग तबतक शक्ति हस्तान्तरित न करेंगे, जबतक हिन्दू और मुसलमान आपसमें समझौता कर हमलोगोंके सामने न आयें।'

सरकारने जो रुख अख्तियार किया है और जैसी मैंने व्याख्या कि है उसमें कोई नयी बात नहीं। इस तरह स्थितिको निराशाजनक मानता हूं। ऐसा कहनेमें मैं यह समझता हूं, कि राहमे चलनेवाले साधारण व्यक्ति की भावना मैं व्यक्त कर रहा हूं। इस नैराश्यपूर्ण चिन्ता से ही क्षोभपूर्ण नारा निकला,—'भारत छोड़ जाओ,' आज देश में जो घटना घट रही है, उसे देखते हुए 'भारत छोड़ जाओ' की व्याख्या जैसी मैंने विचारपूर्वक की है, विल्कुल उपयुक्त है।

(६) आपके भाषणको पढ़ते हुए मैंने यह बात देखी है, कि 'भारत छोड़ जाओ' के सिद्धान्त के विज्ञापकोंको आप समाज से जातिच्युत व्यक्ति नहीं मानते। आप उनको बड़े उच्च विचार के व्यक्ति मानने हैं। तब उनके साथ वैसा ही व्यवहार कीजिये और उनकी व्याख्यामें विश्वास कीजिये और इससे आप गलती न करेंगे।

(७) क्रिप्सके प्रस्ताव का स्पष्टीकरण करते हुए १६ वें सफेके मध्यमें आपने कहा है,—'नेताओंकी मुक्तिकी मांग तब-तक बेमतलब है, जबतक उन लोगों के सहयोगका कोई चिन्ह दिखाई न पड़े। इसमें सलाह लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं, प्रत्येक नजरबन्द स्वतः निर्णय कर सकता है, कि 'भारत छोड़ो' के प्रस्ताव को वह वापिस लेता है, जिससे इतनी भीषण स्थिति उत्पन्न हुई। वह यह भी ऐलान करें कि आगेके महान कार्योंमें उनका पूर्ण सहयोग रहेगा।' इस सम्बन्धमें १९ वें और २० वें सफेपर भी फिर सहयोग के लिये वकालत की गयी है कि 'एक महान संस्था आज हमसे अलग है। मैं मानता हूं इसमें कितनी योग्यता और महानता मौजूद है। किन्तु मैं उसकी वर्तमान नीतिपर खेद प्रकट करता हूं। इन उपायों को मैं असार और अव्यवहारिक मानता हूं। भारतकी वर्त्तमान और भावी समस्या सुलझानेके लिये मैं इस अङ्गका सहयोग चाहता हूं। यदि कांग्रेसके नेता यह महसूस करें, कि वे वर्त्तमान भारत सरकारमें भाग लेना नहीं चाहते, फिर भी समस्याओंके हल करनेमें वे सहायक बन सकते हैं। तो उनका स्वागत है किन्तु मैं उन नेताओंको मुक्त करनेका कोई कारण नहीं देखता, जो गत १९४२ ई० की अगस्तकी घोषणाके जिम्मेदार हैं। जबतक मुझे यह विश्वास हो न जाये, कि असहयोग और बाधा की नीति वापस ले ली गयी, जिससे किसीका लाभ नहीं, बल्कि वह एक भ्रांतिमूलक और हानिकारक नीति थी तवतक रिहाईपर मैं विचार कर नहीं सकता।'

(८) इसपर मुझे बड़ा आश्चर्य होता है, कि आप जैसा सुप्रसिद्ध सैनिक और समझदार व्यक्ति भी ऐसी धारणा रखे! शत-शत-स्त्री-पुरुषोंने अच्छी तरह वाद-विवाद कर जिस प्रस्तावको पास किया हो, उसे कोई व्यक्तिगत बात कैसे कह सकता है? जो प्रस्ताव प्रतिष्ठापूर्वक, सोच समझ कर और बाकायदा पास किया गया है, उसे तो सम्मिलित विचार-विनिमयसे ही वापस लिया जा सकता है। इस आवश्यक योजनाके बाद व्यक्तित्वका प्रभाव पड़ सकता है, लेकिन इसके पहले नहीं। क्या कोई भी कैदी अपनी अंतरात्माका प्रयोग कर सकता है? उससे कुछ करनेकी आशा करना क्या न्यायोचित और उपयुक्त है?

(९) कांग्रेसके प्रतिनिधियोंमें अधिक योग्यता और समझदारी आप पाते हैं, फिर भी आप उनकी नीति और उपायों को 'निस्सार और अव्यवहारिक' कहते हैं। क्या दूसरा वक्तव्य पहले वक्तव्यका खण्डन नहीं करता? योग्य और समझदार आदमी भ्रांतिपूर्ण परिणामपर पहुंच सकते हैं, किन्तु उनकी नीतिको 'निस्सार' और 'अव्यवहारिक' बताने की बात मैंने कभी नहीं सुनी है। जब वे लाखों व्यक्तियों के प्रतिनिधि माने जाते हैं, तब क्या किसी फैसले के पहले आपके लिये उचित नहीं, कि उनकी नीति और उपाय के हानि-लाभपर आप उनसे बातचीत करें।

क्या यह सर्वशक्तिमान और सत्ताधारी सरकारको शोभा देती है, कि उन निरस्त्र व्यक्तियोंको छोड़नेमें वह डरे, जो निरस्त्र और अहिंसावादी जनता के प्रतिनिधि हैं! साथ-साथ आप मुझे कार्यसमिति के सदस्यों से मिलने देने में संकोच क्यों करते हैं। मुझे मिलने दीजिये, ताकि उनके भी विचारको मैं जान सकूं और उनकी प्रतिक्रिया को।

(१०) इसके बाद 'भारत छोड़ जाओ' के प्रस्तावके 'भीषण परिणाम' की चर्चा आपने की है। किंतु 'कांग्रेसकी जिम्मेदारी' आदि सरकारी पुस्तिकाके जवावमें मैं इसके सम्बन्धमें काफी कह चुका हूं। यदि आपने उनको न देखा हो, तो आपका ध्यान उस पुस्तिका और अपने जवाबकी ओर आकृष्ट करता हूं। मै जो कुछ पहले कह चुका हूं उसीपर मैं पुनः जोर देता हूं। यदि सरकार अपनी कार्यवाहीको जरा रोकती तथा मेरे और कार्य समितिके सदस्योंके भाषणोंको गौरसे पढ़ती, तो शायद आजका इतिहास कुछ और तरह ही लिखा जाता।

(११) आपने इस बातको बड़ा महत्व दिया है, कि आपके शासनपरिषदके सदस्योंमें भारतीयोंकी प्रधानता है। बेशक, किन्तु वे भारतीय होनेपर भी भारतीयों के प्रतिनिधि नहीं। उनमें और गैरभारतीयोंमें कोई भेद नहीं। इसके प्रतिकूल यदि कोई अभारतीयों द्वारा प्रतिनिधि चुना जाय, तो वह भी भारतीयोंका प्रतिनिधि हो सकता है।

(१२) मैं देखता हूं, कि रङ्गरूटों के सम्बन्धमें आपने भी वही गल्ती की है, जो साधारण लोग किया करते हैं। आपने कहा है कि लोग स्वेच्छासे या उत्साहपूर्वक सेनामें भर्त्ती हुए हैं। जिस व्यक्तिने फौजको अपना पेशा बनाया है, वह जहां भी मजदूरी पायेगा काम करेगा।

स्वेच्छासे भर्त्ती होनेका अर्थ दूसरा है। यह भारतीय सैनिकोंकी भर्त्तीसे कहीं ऊंचा अर्थ रखता है। क्या वे वही स्वयंसेवक या स्वेच्छासे भर्त्ती होनेवाले सैनिक नहीं हैं, जिन्होंने जलियानवाला बागके हत्याकाण्डमें गोलियां चलायी थीं? आज भारतीय सैनिक जो बाहर गये हैं और अपनी अद्वितीय वीरताका प्रदर्शन कर रहे हैं, क्या ब्रिटिश सरकारकी आज्ञासे अपने भाइयोंको गोलीका अचूक निशाना न बनायेंगे? फिर भी उनके मालिक उनको स्वयंसेवकका प्रतिष्ठित नाम देनेमें नहीं चूकते!

(१३) आप समूचे भारतमें विमानसे उड़ते फिरते हैं। आप बङ्गालके कङ्कालोंमें भी जानेसे नहीं हिचके। मैं आपकी उड़ानोंके लिये एक बाधक सुझाव देता हूं। आप अहमदनगर तथा आगाखां महलमें अपने कैदियोंके हृदय और विचार जाननेके लिये उत्तर पड़ें। हम चाहे जितनी ब्रिटेन की आलोचना करें और भारतमें ब्रिटिश नीतिकी निन्दा करें, फिर भी हम सब ब्रिटेनके मित्र हैं। यदि आप विश्वास कर सकें; तो हम लोगों को आप नाजीवाद, फासिस्टवाद, जापानवाद आदिके घोर विरोधी और अपने बड़े मददगार पायेंगे।

(१४) अब मैं आपके २५ वीं फरवरी के पत्र की चर्चा करता हूं। मैंने तथा मीराबाई ने जो शिकायत की थी, उसका जवाब मिला। अन्यान्य लोगों को नोटिसें मिल गयी हैं। मुझे जो जवाब मिला है, उसे मैं मजाक समझता हूं। मीराबाई का जवाब अपमान है। केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभामें एक प्रश्नके उत्तरमें गृह-मन्त्री ने जो जवाब दिया है, वह जवाब कहा नहीं जा सकता। आपने कहा है, कि केसों की जांचका समय अभी नहीं आया है। इस समय सरकार के पास प्रार्थना-पत्र आ रहे हैं। जिस नौकरशाही ने लोगोंको बिना विचार नजरबन्द कर रखा है, यदि वही विचार करने बैठे, तो यह न्यायका एक तमाशा होगा, क्योंकि उसके न्याय करने की कोई इच्छा नहीं। मेरा दृष्टिकोण सरकारको मालूम है। मेरे विरोध होनेपर भी मुझे एक असम्भव आदमी समझ लिया जाये। किन्तु श्री मीराबाई के संबंध में

(शेष पृष्ठ २३ पर)

भारतीय उद्योगों के बन्धन

लेखक
श्री रतनलाल बांगड़

यह सर्व विदित है कि १९ वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक भारत वर्ष शक्तिशाली शिलाकारी संस्थाओं के कारण एक उत्पादक देश था और वह अपनी औद्योगिक योग्यता तथा प्रगति की दृष्टि से किसी भी युरोपीय देश की समानता कर सकता था। यहाँ यह कहने की जरूरत नहीं है कि किस प्रकार उस के उद्योग धन्धे गत महा युद्ध के प्रारम्भ होने के समय तक ईस्ट इंडिया कम्पनी ब्रिटिश पार्लियामेंट तथा भारत सरकार की लेसेज फेअर पॉलिसी द्वारा निर्बल बनाये जा चुके थे। यह आवाज चारों दिशाओं से उठायी गई। और कुछ रूचि रखने वाले भागों से अभी तक उठाई जा रही है कि भारत प्रधानतः एक कृषि प्रधान देश और उसका उद्धार कृषि के द्वारा ही हो सकता है लेकिन क्या इस बात पर भो जोर देने की आवश्यकता है कि औद्योगिक उन्नति किसी भी प्रकार से कृषि की उन्नति में बाधक नहीं है ?

गत महायुद्ध ने अधिकारियों को उद्योग धन्धों के न केवल आर्थिक वरन सैनिक महत्व को भी समझने को बाध्य कर दिया। भाग्य-वश गत महायुद्ध के समय भारत को युद्ध का बोझ सहन न करना पड़ा और युद्ध को मनुष्य के प्रतिदिन के जीवन में दुखद रुकावट डालने वाली घटना समझा गया तथा इधर उधर थोड़े से सुधारों के साथ प्राचीन आर्थिक सिद्धांतों को अपनाने की इच्छा होती दिखाई दी। औद्योगिक कमीशन ने देश के उद्योगों की प्रगति के लिए कार्यशील सरकार के सहयोग के महत्व पर अत्यधिक जोर दिया जिसके परिणाम स्वरूप सरकार ने पृथक रक्षण Discriminative Protection की नीति को फिस्कल कमीशन की सिफारिश के अनुसार अपनाया और इससे कुछ हदतक भारतीय धंधे विदेशी उद्योगों की स्पर्धा से बच गये और उसमें सुधार करने का अवसर मिल सका। फिर भी सरकार का रुख विशेष उत्साहवर्धक नहीं था। इम्पीरियल प्रिफरेंस के सिद्धांत को स्वीकार करने से भारत को अपने बढ़ते हुए धंधों के लिए क्रय विक्रय का बाजार चुनने की स्वतंत्रता नहीं रही।

इन सब रुकावटों के होते हुए भी हमारे उद्योग धंधे संघर्ष लेते रहे और उन्होंने प्रशंसनीय उन्नति की जिससे यह सिद्ध हो गया कि भारतीय धंधों -की वृद्धि की अभी बहुत सम्भावना है। लेकिन हमें यहां इस प्रगति के उपर अधिक गर्व करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह दूसरे देशोंकी तुलना में बिलकुल महत्वहीन हैं। इससे हमें केवल यह विश्वास अवश्य हो जाता है कि संसार के दूसरे देशों ने अनुकूल वातावरण पाकर जो कुछ किया है उसे करने में हम भी समर्थ हैं। हमारी त्रुटियां हमें उन बन्धनों का खोज पूर्ण विश्लेषण करने को बाध्य करती हैं जिन्होंने हमारे उद्योगों को जकड़ रखा है तथा उन बन्धनों को पूर्णतः तोड़ने के साधन तथा मार्ग खोजने को विवश करती है। हमें चाहिए कि हम सदा के लिए प्राचीन दुनिया से सम्बन्धित समस्त विचारों को त्याग दें और प्रारम्भ से ही युद्धोपरान्त आर्थिक ढांचे को बनावें।

रुपए को सब से अधिक सुरक्षित कार्य में लगाने की इच्छा तथा कुछ हदतक जोखिमें न उठाने की इच्छा हमारे उद्योगों की प्रगति में बाधा डालती है। पूंजी सदा न लगने का यह कारण नहीं है कि देश में रुपये की कमी है वरन् उसका मुख्य कारण यह है कि व्यापारी जो कि धन सम्पन्न हैं वे उस समय तक उद्योगों में पूंजी लगाने को तैय्यार नहीं होते जब तक कि उनको कम से कम इतना लाभ्य-लाभ Dividend पैदा न हो जितना कि उस समय बैंक के ब्याज की दर हो। कभी कभी तो प्रखर बुद्धिवाले तथा उसमें विशेष रूचि रखने वाले द्वारा निर्मित अत्यन्त दृढ़ उद्योगों की स्कीम केवल इसलिए फलदायक सिद्ध नहीं होती कि उसमें किसी बड़े उद्योगपति Business Magnet का आश्रय प्राप्त न हो सका। कोई भी देश जो उद्योगों की प्रगति द्वारा उन्नति को प्राप्त होना चाहता है उसे समय समय पर धन और प्रयत्न की जोखिम अनिवार्य रूप से उठानी ही पड़ेगी ताकि उचित प्रतिशत सफलता प्राप्त हो सके।

प्रधान उद्योगों Key Industries की वृद्धि तथा उन पर अनुशासन ये महत्वपूर्ण समस्याएं हैं। लिसेज फेअर के सिद्धान्त को सारहीन समझ कर बहुत समय पहिले से ही अस्वीकार किया जा चुका है और इन उद्योगों Key Industries का पूंजीपतियों के हाथ से समाज के हाथ में चले जाने में किसी को भी आपत्ति नहीं हो सकती यदि राज्य संभाल-वाली सरकार सच्चे अर्थों में राष्ट्रीय सरकार हो।

हमें प्रधान वस्तुओं Capital Goods के अभाव को भी हटा देना चाहिए। यद्यपि भारत वर्ष में अनेक मशीनों का निर्माण किया जा सकता है फिर भी हमें कुछ समयतक इस प्रकारके सामान के लिए विदेशी आयात पर ही निर्भर रहना पड़ेगा। भारतीय उद्योग–पतियों ने युद्ध काल में विदेशों से इस सामान के आयात की कठिनाइयों को सदाही स्वीकार किया है और ब्रिटिश सरकार तथा भारत–सरकार को युद्ध काल में युद्ध प्रयत्नों को बढ़ाने की इच्छा को कभी भी कम नहीं समझा है। लेकिन जब वे देखते हैं कि जहाज में Consumergoods उपयुक्त पदार्थों को तो anti-inflationary measure के स्वरूपस्थान मिल जाता हैं और उन मशीनों को लाने के लिए स्थान नही दिया जाता जिनके द्वारा उपरोक्त पदार्थों का निर्माण देश में ही किया जा सकता है और उनको (उद्योग-पतियों) विरोध में आवाज उठाने के लिए दोषी नही ठहराया जा सकता है। यह वाञ्छनीय है कि सरकार युद्ध काल में तथा उसके उपरान्त उद्योग धन्धों की वृद्धि करने के लिए जो नीति काम में लाना चाहती है उस का खुलासा कर के सब आशंकाओं की निवृत्ति कर दें। वे उद्योग जो युद्ध काल में वृद्धि को प्राप्त हुए हैं अथवा जिन की उत्पत्ति ही इस काल की है और जिन की शान्ति काल में वृद्धि होने की सम्भावना है वे विदेशी उद्योगों के कम्पीटीशन में पड़ने से पूर्व ही विशेष रक्षण तथा प्रधान वस्तुओं Capital goods को प्राप्त करने की सुविधाएं प्राप्त करने के पूर्ण अधिकारी हैं।

युद्ध के कारण देश के यातायात के साधनों पर जो बोझा पड़ रहा है उसने यातायात की सुविधाओं की अयोग्यताका पूर्ण दिग्दर्शन करा दिया है। किसी भी देश के बढ़ते हुए उद्योग धन्धों को यातायात की पूर्ण सुविधाओं के अभाव में निश्चय ही अनेक रुकावटों का सामना पड़ता है। रेलों तथा सड़कों में वृद्धि की जानी चाहिए और लोकोमोटिव एवं रोलिंग स्टाक को बढ़ाने की भी आवश्यकता है। यह सिद्ध हो चुका है कि यदि सुविधाएं प्रदान की जाएं तो भारत वर्ष सब प्रकार के लोकोमोटिव का निर्माण कर सकता है और वह जहाज निर्माण के उद्योगों को भी बढ़ा सकता है।

शक्ति तथा ईंधन Power and fuel की कठिनाइयां युद्धोपरान्त अधिक रहेंगी। भारत वर्ष की कोयले की खदानें तथा दक्षिणी आफ्रिका के कोयले का आयात युद्ध के बाद चालू हो सकता है। दोनों मिलकर उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति करने में काफी सहायक होंगे। इसी प्रकार यहां पर हाइड्रो-इलेक्ट्रिक की वृद्धि के लिए भीं काफी सम्भावनाएं हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि तेल के लिए भारत को विदेशी आयात पर ही निर्भर रहना पड़ेगा और इस प्रकार के आयात के लिए उचित सुविधाएं मिलने का प्रबन्ध कर लिया जाना चाहिए।

एक दूसरी कठिनाई और भी है वह यह कि देश कृषि उन्नति की दिशामें बहुत पिछड़ा हुआ है। उद्योगों के लिए कच्चे पदार्थ प्राप्त करने तथा देश की बढ़ती हुई जन संख्या की आवश्यकता पूर्ति के लिए भूमि की उत्पादक शक्ति में कई गुनी वृद्धि करने की आवश्यकता है और औद्योगिक योजनाही के साथ साथ कृषि की उन्नति की योजनाएं भी बनाई जानी चाहिएँ और कृषि के लिए वैज्ञानिक उपायों को प्रयोग में लाना चाहिए और खाद देने के लिए भी वैज्ञानिक तरीकों को काम में लाना जरूरी है। इसके अलावा वर्तमान वैज्ञानिक क्रिया का प्रयोग अन्य कच्ची वस्तुओं एवं खनिज पदार्थों को ढूंढ निकालने के लिए भी होना चाहिए।

इस बातसे कोई इन्कार न करेगा कि इस युद्धमें विजय पानेके लिए तथा इन्फ्लेशनको हटानेके लिए करों एवं ऋणोंके द्वारा अधिकसे अधिक सहायता मिलनी चाहिए और इस कार्यमें उद्योगपतियों तथा जनता की ओरसे सहायता आनेमें कोई अनिच्छा नहीं। परन्तु प्रत्येक देशमें इस बातकी सीमा होती है जो जनता की आर्थिक स्थिति पर निर्भर रहती है और उसी हद तक लोगों की कर देने की शक्ति बढ़ाई जा सकती है। भारतवर्ष जैसे देशके लिए कर नीति न तो वैसी हो सकती है और न होनी ही चाहिए जैसी इंग्लैंड जैसे अत्यंत औद्योगिक देशमें हो सकती है। अधिक कर वस्तु की उत्पत्ति के मूल पर ही आघात करता है और हमारे उद्योगोंकी उन्नति में बाधा पहुंचाता है तथा इस भांति वह उस सोत को ही बंद कर देता है जहां से युद्ध के प्रयत्नों के लिए सहायता का प्रवाह बहता है। यह कई बार बतलाया जा चुका है कि इंफ्लेशन को हटाने के लिए सबसे मुख्य अस्त्र उत्पादन में वृद्धि करना है। यह अच्छा होगा कि हमारी सरकार कच्चे पदार्थों एवं अन्य भिन्न भिन्न वस्तुओं पर भारी कर लगाने की अपेक्षा इन्फ्लेशन को हटाने के लिए इस अस्त्र का भी उपयोग करे भारी करों द्वारा भारतवर्ष के उद्योग धन्धों की मुख्य सहायता का नाश होता है एवं विदेशीय आयात की तुलना में उन्हें हानि उठानी पड़ती है।

अंतिम परन्तु मुख्य बात यह है कि पूंजीपति एवं श्रमजीवियों का पारस्परिक सम्बन्ध सन्तोषप्रद एवं समन्वयात्मक होना चाहिए। पूंजीपतियों एवं श्रमजीवियों में आपस में ठीक ठीक समझ का न होना ही सबसे बड़ी बाधा एवं अत्यंत औद्योगिक दुर्दशा हो सकता है जो किसी देश पर आ सकती है। इस विषयके लिए सम्पूर्ण औद्योगिक ढांचेमें ही पूर्ण परिवर्तन होना चाहिए एवं लाभको ठीक ठीक बांटने की साहसिक रीतिके प्रयोग को कार्यान्वित करना चाहिए। पूंजीपतियोंको सदा ही मजदूर संघ आदि संस्थाओंको शंका की दृष्टिसे नहीं देखना चाहिए। साथ ही मजदूरोंको भी दोनों की भलाईके लिए पूंजीपतियोंके साथ सहयोग रखना चाहिए। क्योंकि श्रमजीवी ही मालको अधिक मात्रामें खपानेके लिए मुख्य रहेंगे इसलिए उनकी व्यय करने की शक्तिको बढ़ानेके लिए उनके जीवनके इस रुखको ऊँचा उठानेके लिए उनके स्वास्थ्य एवं शिक्षा की अभिवृद्धि के लिए, किसी भी औद्योगिक योजनामें, चाहे वह कहीं से भी उत्पन्न हो उन साधनों को मुख्य स्थान मिलना चाहिए।

येही समय हैं जब कि बड़ी बड़ी योजनाएं बनाई जा सकती हैं। युद्ध की शिक्षाएं अभी तक आंखों से ओझल नहीं हुई हैं। उस महान युद्ध के पश्चात् अनेक देशों में युद्ध के पहिले के आर्थिक ढांचे में इधर उधर कुछ नरम परिवर्तन के बाद उन्हें फिर से उत्पन्न करने की उत्कट अभिलाषा एवं अधिक क्रियाशीलता दिखाई पड़ती थी परन्तु युद्ध जनित नवीन समस्याओं को समझने में पूर्ण असफलता रही। उस का परिणाम यह

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सांभरमें महेश जयंती व माहेश्वरी संमेलन

समाजकी विभिन्न समस्याओंका सुंदर विवेचन

समाज सुधार की दिशा में ठोस कार्य हों

अध्यक्ष श्री गजाधरजी सोमाणी का अभिभाषण

सांभरलेक (डाक द्वारा)। गत ३१ मई को महेश जयंति तथा सांभरलेक जिलान्तर्गत माहेश्वरी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री गजाधरजी सोमाणीने अपने अभिभाषण में अध्यक्ष बनाये जाने के लिए आभार मानते हुए कहाः माहेश्वरी जाति की उत्पत्ति क्षत्रियों से मानी जाती है और ऐसी आख्यायिका है कि प्राचीन काल में जयपुर राज्यान्तर्गत एक स्थान में एकबार खंडेला के राजा तथा उनके ७२ उमराव एक विराट यज्ञ करवा रहे थे। वे लोग यज्ञ नियमों को भंगकर वहांपर मद्य का उपयोग करते हुये नशे में हो गये। अतः इसपर यज्ञ के ऋषियों ने यज्ञ को इस प्रकार विध्वंस्त होते देखकर उनको पाषाणवत् हो जाने का श्राप दिया और वे सब ज्यों के त्यों वहीं तत्काल पाषाणारूप बन गये। अन्त को उनकी धर्मपत्नियों की प्रार्थना पर भगवान शिव तथा जगन्माता पार्वती प्रकट हुयी और उन्होंने उनको पुनः सचेत कर दिया और साथ ही उनसे यह भी प्रतिज्ञा करवाली कि वे भविष्य में कभी मद्यमांस ग्रहण न करेंगें और न ही हिंसादि कार्य करेंगे। अतः कहते हैं कि जिन भगवान महेश ने उनको जीवनदान दिया था उन्हीं के नाम से बाद को "माहेश्वरी" जाति की उत्पत्ति हुई। माहेश्वरी जाति के प्रारंभिक उत्पत्ति के इतिहास का आज का दिवस हमें स्मरण दिलाता है और यह उपयुक्त ही है कि हमलोग प्रतिवर्ष इस उत्सव को मनाते हैं और समाज की भावी उन्नति आदि कतिपय विषयों पर स्थान २ पर चर्चा करते हैं।

वर्तमान युद्ध और भारत

वर्तमान युद्ध को आरम्भ हुये आज करीब ५ वर्ष हो रहे हैं। और सारा विश्व आज इस भीषण ज्वाला से दग्ध हो रहा है। यद्यपि धुरी शक्तियों का बल शनैः २ क्षीण हो रहा है और मित्र शक्तियों का दवाव वढता ही जा रहा है फिर भी शत्रुओं के अन्तिम पराजय के पूर्व अभी भी युद्ध का रूप और भी कितना भीषण तथा उग्र होगा तथा कबतक चलेगा इसका कोई निश्चित अनुमान लगाना बहुत कठिन है। हमारे भारत की पुण्यभूमि भी अभी रणक्षेत्र बनी हुयी है और युद्ध जनित परिस्थितियों से देशवासियों की कठिनाइयां उत्तरोत्तर बढ़ती चली जा रही हैं। यों तो आज दैनिक आवश्यकता की सभी वस्तुओं का मिलना दुर्लभ हो गया है परन्तु मानवजीवन की प्रधान आवश्यकता खाद्यसामग्री की समस्या हमारे लिये सबसे अधिक कठिन हो रही है। हम लोग अभी हाल ही में बंगाल के भीषण दुर्भिक्ष को भूले नहीं हैं जिसके परिणामस्वरूप हमारे असंख्य भाई बहिन करालकाल के अकाल ही में शिकार बन गये और आज भी लाखों अपने अमूल्य स्वास्थ्य को खोकर के दयनीय दशा में छटपटा रहे हैं। साथ ही कपड़ा तथा कतिपय दैनिक व्यवहार की अन्य आवश्यक वस्तुओंको सुलभ मूल्य में मिलने का जटिल प्रश्न ऐसा है जिसपर सरकार तथा जनता दोनों ही को हर समय सचेत तथा प्रयत्नशील रहना अनिवार्य है। आपने देशकी वर्तमान विषम परिस्थिति में विभिन्न समस्याओं को सुलझाने के लिये राष्ट्रीय सरकार की आवश्यकता बताई।

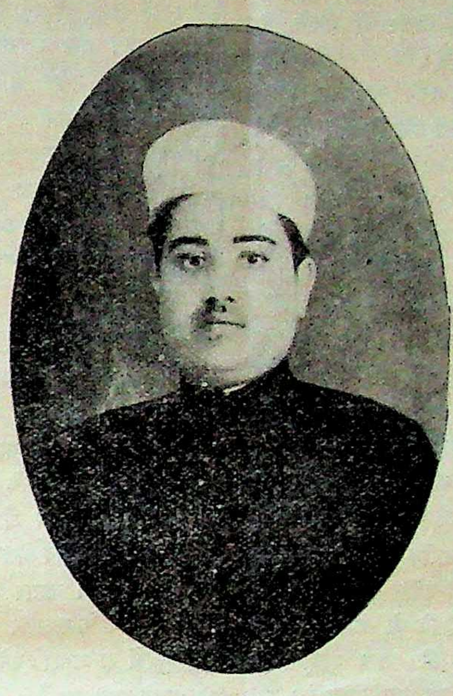

श्री गजाधरजी सोमाणी

युद्ध और उद्योगधन्धे

युद्ध से एक ओर समस्त विश्व में अपार धनजन की क्षति हो रही है तो दूसरी ओर समस्त राष्ट्रों के उद्योगधन्धों का भी बहुत विकास हुआ है। युद्ध सामग्रियों की आवश्यकता इतनी विशाल एवम् विस्तृत है कि सभी देशों के कल कारखाने अपनी पूर्णशक्ति के साथ रातदिन सामग्रियों के उत्पादन में लगे हुये हैं और कितने ही देशों में नवीन कारखानों का भी बहुत विस्तार हुआ है। सरकार की कुछ उदासीन नीति से यद्यपि हमारे देश में नवीन कारखानों का जितना विकास होना चाहिये था उतना नहीं हो पाया है फिर भी आज देश के कोने २ में विभिन्न कारखाने द्रुतगति से सामग्रियों के उत्पादन में लगे हुये हैं। हमारी मारवाड़ी जाति एक व्यापारकुशल जाति है और हर्ष की बात है कि इस युद्धजनित व्यापार धन्धों के विकास में हमारी जाति का भी पर्याप्त हाथ है और लोगोंने व्यापार के विभिन्न क्षेत्रों में काफी लाभ उठाया है।

युद्धोत्तर योजनायें

युद्धोत्तर योजनाओं की आज विश्व भर में चर्चा चल रही है। यदि मानव सभ्यता को हर २५ वर्षोंसे नृशंस एवं विनाश के भीषण प्रहार से सुरक्षित रखना है तो इस युद्ध के बाद होने वाली शांति की स्थापना ऐसे सिद्धान्तों पर सुदृढ़ स्थापित करनी पड़ेगी ताकि विभिन्न राष्ट्रों में पारस्परिक विद्वेष एवम् प्रतिस्पर्द्धा की भावनाओं को पनपने का कारण ही उपस्थित न रहे। भारत में भी आज युद्धोत्तर आर्थिक विकास की योजनाओं की भरमार हो रही है। उनमें सबसे मुख्य स्थान उस योजना को प्राप्त है जो इस देश के आठ सुप्रसिद्ध उद्योगपतियों द्वारा प्रकाशित हुयी है। हमारा व्यापार और उद्योगधन्धों से घनिष्ठ सम्बन्ध है और इसीलिये आर्थिकविकास की प्रकाशित किसी भी योजना पर हमारा पूर्ण ध्यान जाना चाहिये। हमें इन योजनाओं के विभिन्न पहलुओं का सावधानी से विश्लेषण करना चाहिये ताकि हम समय पर ऐसी योजना के कार्यान्वित होनें में अपना उचित भाग ले सकें।

अन्य देशों की अपेक्षा हमारी दशा बहुत ही पिछड़ी हुई है। यहां युद्ध के पहले ही हमारे करोड़ों भाइयों को भरपेट अन्न नहीं मिलता था और आज तो उस दशा का और भी गम्भीर रूप हो गया है। जब भरपेट अन्न मिलने की यह दशा है तब अन्य आवश्यक पौष्टिकपदार्थ, फल, तरकारी 'दूध आदि की तो चर्चा ही क्या है? आज शहरों में एक रुपये सेर दूध मिलना भी मुश्किल हो रहा है। ऐसी हालत में हमारे देशवासियों की स्वास्थ्य सम्बन्धी हालत जितनी नाजुक तथा गम्भीर है, इसका अनुमान आप कर सकते हैं। अन्न के बाद कपड़े का भी हाल कम गम्भीर नहीं है। युद्ध के पहिले जन-गणना के हिसाब से औसत फी आदमी करीब १६ गज कपड़ा प्रतिवर्ष मिलता था। अब यह औसत भी अन्य देशों की तुलना में बहुत ही कम था। दृष्टांत में अमरीका औसत ६४ गज का था। परन्तु अब तो कपड़ा प्रति आदमी करीब गज से अधिक नहीं मिल रहा है जबकि विशेषज्ञों के मत के अनुसार कम से कम ३० गज कडड़ा प्रतिवर्ष हरेक मनुष्य को अवश्य मिलना चाहिये।

अन्न, वस्त्र तथा मानवजीवन के अन्य आवश्यक वस्तुओं के ऐसे भीषण अभाव का ही यह परिणाम है कि आज एक भारतीय की औसत आयु करीब २६ वर्ष की है जब कि पाश्चात्य देशों के मनुष्यों की औसत आयु ६० वर्ष से कम नहीं है। बच्चों की मृत्यु संख्या प्रति सहस्र पाश्चात्य देशों में ३८ से लेकर ६१ तक है तो अपने यहां १६७ है और अपने यहां जब करीब ६००० मनुष्यों के पीछे एक डाक्टर है तो इंगलैण्ड में ७७५ आदमियों के पीछे एक है।

हमारा समाज

मैंने ऊपर विश्वयुद्धजनित परिस्थिति तथा युद्धोत्तर योजनाओं की ओर आप का ध्यान आकर्षित किया है उसका एकमात्र कारण यह है कि मारवाड़ी समाज—जिसका कि माहेश्वरी समाज एक प्रधान अंग है—को ऐसी योजनाओं के कार्यान्वित होने में बहुत महत्वपूर्ण भाग लेना है। व्यापार तथा उद्योगधन्धों के विकास में हमारी स्वाभाविक प्रवृत्ति है और देश के व्यापारिक क्षेत्र में मारवाड़ी समाज को जो गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है वह हमारे लिये गर्व की वस्तु है। परन्तु, दुर्भाग्यवश शिक्षा के अभाव में उद्योगधन्धों के विकास के आधुनिक ढंगों से सर्वथा अपरिचित होने से हमारे समाज के महानुभावों का औद्योगिक क्षेत्र की ओर ध्यान आरंभ ही से कम रहा और इसलिये हम उस क्षेत्र में उतनी उन्नति नहीं कर सके जितना देश के व्यापारिक क्षेत्र में हमारे प्रमुख स्थान के अनुरूप हम कर सकते थे, लेकिन विगत १० वर्षों में इस दिशा में समाज के दृष्टिकोण में काफी परिवर्तन हुआ है। हर्ष की बात है कि आज हमारी समाज के धनी सज्जनों का ध्यान कल कारखानों की ओर पूर्णरूप से आकृष्ट है और हमारे समाज ने इस दिशा में महत्वपूर्ण सफलता भी प्राप्त की है। उदाहरण के लिये कपड़े की मिलों का ही प्रश्न ले लीजिये। देशभर की समस्त मिलों में मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित कारखानों का करीब २५ प्रतिशत भाग है और इस प्रकार देश के महान राष्ट्रीय औद्योगिक क्षेत्र में हमारा स्थान बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी तरह सीमेन्ट, पेपर,

(शेष पृष्ठ ८ पर)

विशाल साधन सम्पन्न जापान

जापान आर्थिक घेर में घिरा हुआ है। अमेरिका की नेवी जापान के जहाजों को जलसमाधि देने में लगी हुई है, और जापान ने जो प्रदेश जीते थे संयुक्तराष्ट्र की वीरसेनायें उसे फिर अपने कब्जे में लेती जारही हैं, ऐसी विकट परिस्थिति में जापान अपने अन्दर के साम्राज्य में खनिज पदार्थों तथा अन्य सामग्रियों को अधिक व्यवस्थित करने के महान् यत्न में लगा है। जापान उक्त पदार्थों को अपने दक्षिण प्रदेशों से जहाजों में लादकर ठेठ जापान में पहुँचा कर उन्हें सुरक्षित स्थानों में रखवा रहा है ताकि भविष्य में यदि कभी जापान पर घेरा डलजाये तो उसे अपने दक्षिणी उपनिवेशों का मुंह न ताकना पड़े। जापान के पास खनिज द्रव्यों आदि का निम्न प्रबन्ध है–

कच्चा लोहाः—संसार के कच्चे लोहे का लगभग ३% जापान के पास है। इसका एक बड़ा भाग ठेठ जापान के भीतरी भाग में ही है। मलाया तथा फिलिपाइन से भी उत्तम दर्जेका लोहा जापान के प्रयोग में आ रहा है।

कोयलाः—जापान के कोयले का अधिकांश परिमाण ठेठ जापान, उत्तरी चीन, और मञ्चूरिया से आता है। मौसमी जलविद्युतशक्ति भी कोयले की जगह काम में लायी जाती है।

तेल—जापानियों का दर्पपूर्ण दावा है कि इन्डीजमें ७०% सर्वोत्तम श्रेणीके तेल के कूप खूब अच्छी तरह चल रहे हैं। ताराकरण द्वीप से यह उत्तम तेल निर्बाधरूपेण जहाजों पर लद सकता है। जहाजों की कमी के कारण वह मँचूरिया के निम्नकोटिके शेल ऑयल को प्रयोग में ला रहा है।

ताम्बा—जापान के अपने जापानी द्वीपों में ताम्बे की अच्छी खाने हैं और लेपान्टो और फिलिपाइनकी ताम्बेकी खानों में पूरी ताकत से काम चालू है। फिलिपाईन के बाढ़वाली सोने की खानों की मैशीनों का उपयोग ताम्बेकी उत्पत्ति में हो रहा है। कीमती एल्यूमिनियम का उपयोग भी ताम्बे की उत्पत्ति के संग्रह को बढ़ाने में किया जा रहा है।

कपासः—युद्ध से पूर्व जापान, अमेरिका, ब्राजील, भारत और मिश्र से कपास खरीदा करता था। अब वह अपने समस्त साम्राज्य में स्वयं कपास की खेती कर रहा है, और बिस्फोट तथा टेक्सटाईल्स के लिये कपास की गुद्दी काम में लाता है।

ऊन और खालें:—जापान के पास ऊन और खालों का संग्रह अधिक नहीं–इन के लिये उसे उत्तरीय चीन और भीतरी मंगोलिया पर आश्रित रहना होता है। थोड़ी मात्रा में ये चीजें उसे सोवियट रूस से भी मिल सकती हैं।

चावलः—संसार का ७० % चावल जापान के उपनिवेशों में पैदा होता है। फिर भी जापान में जबर्दस्त खुराकबन्दी की गयी है, और जापानियों को सलाह दी गयी है कि वे खास जापान में पैदा खाद्य सामग्री से ही अपना गुजारा करें कारण सामान लानेवाले जहाजों की कमी के कारण चावलका एक बड़ा भाग इन्डो-चायना, बर्मा, और थाईलैण्डमें पड़ा सड़ रहा है।

सोयाबीन व अन्य अनाजः—कभी संसार के सब से बड़े सोयाबीन प्रोडेक्टस के निर्यात व्यापार वाले मञ्चूरिया के पास के प्रदेशों से जापान को अपने भोजन तथा मैन्यूफेक्चरिंग के लिये सोयाबीन मिलता है। चावल खाने के अभ्यस्त जापानी लोग आज अपने नित्यप्रति के भोजन में जौ मिलाकर काम चला रहे हैं। फिर भी आज दिन तक उन्हे अन्य अन्न बाहर से मंगाने की आवश्यकता नहीं हुई है।

रबड़—संसार के कच्चे रबड़ का ९५% सैकड़ा रबड़ आज जापान के नियंत्रण में हैं। सुविधा की दृष्टि से जापान अधिकांश रबड़ इन्डो-चायना से ले रहा है। मलाया तथा दक्षिण के अन्य भूभागों के बहुत दूर पड़ने से वहां की रबड़ जापान में नहीं लेजाई जा रही है।

टिन—संसार की दो-तिहाई टिन की खाने मलाया तथा, नौर्थ ईस्ट इन्डीज, और थाईलैण्डमें थीं। जापान अधिकांश टिन मलायाके खुले-गड्ढोंवाली खानोंसे प्राप्त करता है। मलाया की इन खानोंमें मजूरोंको थोड़ी तनख्वाह पर जबरदस्ती काम करना होता है।

बौकसाइटः—उत्तरीय ईस्ट इन्डीज, और मलाया से जापानको सर्वोच्च श्रेणीका बौकसाइट इतना मिल जाता है कि जो फारमूसा मञ्चूरिया और जापान की तमाम एल्यूमिनियम की मिलों के लिये पूरा पड़ जाता है। अभी दक्षिण भूभागसे चावल न मंगाकर उसके बदले जहाजों पर बौकसाइट भरनेके लिये जापानने आर्डर दिया था।

पटुआ–संसारका सर्वोत्तम और मजबूत पटुआ ९०% फिलिपाईनमें होता है। जापान ने लूजोन में पटुआ के रस्से बनाने का कारखाना खोला है जो अकेला जापान की बड़ी से बड़ी ५ फैक्टरीयों की बराबरी करता है। यह पटुआ मछली पकड़ने की जालियाँ और जहाज के रस्से और पाल आदि बनाने के काम में आता है।

नारियलः—संसार के मुख्यतम ५ व्यापारिक स्रोतों में से ३० नागरिक क्षेत्र जापान के कब्जे में हैं। तीनों से उसे अपनी जरूरियात से भी कहीं अधिक वानस्पतिक तेल मिल सकता है। आजकल नारियल का मुख्य उपयोग उपनिवेशों के अन्दर ग्लिसरीन बनाने और ईन्धन के लिये जलाने का ही है।

कुनीनः—साधारणतया संसार की समस्त कुनीन उत्पत्ति का ९०% जावा के ३७५०० एकड़ भूमि में बोये सिन्कोना के पेड़ों से प्राप्त होता था। परन्तु आज जापान केवल उत्तर पूर्वीय इन्डीज की फैक्टरियों से ही अपने सिपाहियों के लायक कुनीन पैदा कर लेता है।

युद्धोपयोगी अन्य खनिजः—विशाल पूर्वीय एशिया क्षेत्र के अन्दर जापान अपने युद्ध-गतिविधि के उपयुक्त समस्त आवश्यक खनिज पदार्थ प्राप्त कर सकता है। जापान आजकल ठेठ जापान में खनिज पदार्थों तथा अन्य सामग्रियों के उत्पादन के यत्न में है ताकि उनके जहाज अन्य उपयोगी कार्योंमें लगाये जासकें, और उपनिवेशों के ट्रेन्ड सिपाहियों और मशीनों का अधिकतम उपयोग किया जासके और जापान अपने दक्षिण भूभागों पर आश्रित न रहे।

सांभरमें महेश जयंती व माहेश्वरी संमेलन

(पृष्ठ ७ का शेष)

चीनी, जूट आदि के कारखानों में भी अपनी समाज के महानुभावों का भी पर्याप्त हाथ है। अभी हालमें जितने बड़े बड़े बैंक स्थापित हुए हैं वे तो प्राय सभी मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित हैं और नवीन बीमा कम्पनियों के निर्माण में भी हमारा समाज सन्तोषप्रद दिलचस्पी ले रहा है। समाज की भावी उन्नति की दृष्टि से यह प्रगति बहुत ही उत्साह तथा आशा की सूचक है परन्तु फिर भी इस दिशा में हमें सर्वदा सचेष्ट तथा सावधान रहने की परमावश्यकता है।

औद्योगिक विकास व युवक

ऊपर मैंने अपने समाज के औद्योगिक विकास का जो आशाप्रद चित्रण किया है उसको लक्ष्य में रखते हुये यह अवश्य ही खेद एवम् निराशा की बात है कि मारवाड़ी समाज के युवकों को इन विभिन्न औद्योगिक प्रवृत्तियों के संचालनार्थ जो स्थान मिलना चाहिये था वह नहीं मिल रहा है। वास्तव में कारखानों के विभिन्न विभागों के सञ्चालन के लिये उपयुक्त योग्य युवकों का अभाव हमारे लिये एक बहुत ही खटकने वाली वस्तु है। हमारी औद्योगिक उन्नति के साथ २ हमारे युवकों को भी अधिकाधिक संख्या में उन उत्तरदायित्वपूर्ण पदों के संचालन के योग्य बनना पड़ेगा। शिक्षा में यों तो अपना समाज पिछड़ा हुआ है ही परन्तु औद्योगिक शिक्षा का तो अपने समाज में बहुत ही शोचनीय अभाव है।

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न है और समाज के बहु संख्यक युवकों को उद्योग शिक्षण में प्रवृत्त कर कारखानों में उत्तरदायित्वपूर्ण पदों का संचालन करने के योग्य बनाने के लिये हमें आवश्यक सांधनों का आयोजन करना चाहिये।

समाज सुधार की दिशामें आपने कुछ ठोस रचनात्मक कार्य करने की आवश्यकता बतायी।

शिक्षा

समस्त सुधारों का मूल्य आधार शिक्षा है। जबतक समाज का अधिकांश भाग शिक्षित नहीं हो जाता तबतक ठोस उन्नति की कल्पना करना व्यर्थ है। और शिक्षाप्रसार की ओर हमें पूर्ण ध्यान देना चाहिये। सांभर जैसे नगर में एक हाईस्कूल न होना बहुत ही खटकने वाली बात है परन्तु मुझे यह जानकर हर्ष हुआ है कि इस कमी की शीघ्र पूर्ति होने की आशा है। हाईस्कूल की सुविधा होने के साथ २ यहां एक 'माहेश्वरी होस्टल' का होना भी परमावश्यक है ताकि बाहर के छात्रों को विद्याध्ययन के समुचित साधन प्राप्त हो सकें। ग्रामीण पाठशालाओं की स्थापना की ओर हमारा ध्यान जाना चाहिये। इस सम्बन्ध में मैं आपलोगों का ध्यान श्री जोधपुर सरकार द्वारा स्थापित "श्री महाराजकुमार हनुमंतसिंहजी लोकोपकारक फंड" की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। इस फंड के द्वारा सरकार और जनता दोनों ही मिलकर जनहित के कितने ही महत्वपूर्ण कार्यों का सम्पादन कर सकते हैं।

महिला जागृति

समाज की महिलायें अपने कर्तव्य तथा उत्तरदायित्वको पूर्णरूप से समझ सकें इसके लिये उन्हें सर्वप्रथम शिक्षित बनना पडेगा। हर्ष की बात है कि आज बालिकाओं की शिक्षा की प्रायः सभी लोग आवश्यकता समझने लगे हैं परन्तु इस दिशा में जो कार्य हो रहा है वह कदादि पर्य्याप्त नहीं हैं। समाज के प्रत्येक व्यक्ति को यह संकल्प कर लेना चाहिये कि कोई भी बालक बालिका समुचित शिक्षा से वंचित न रहे। साथ ही महिलाओं में जागृति होने के लिये और भी बहुत कार्य करने की आवश्यकता है। हमारे समाज की महिलाओं की वेषभूषा जेवर पहिनने की प्रथा, रहन सहन आदि में काफी परिवर्तन की आवश्यकता है। उनके स्वास्थ्यसुधार के लिये यह आवश्यक है कि वे दिनभर घर की सीमा में ही बैठी न रहकर बाहर के स्वतन्त्र वायु मंडल से लाभ उठा सकें।

फजूल खर्च

हमारे इस सम्मेलन का सबसे महत्वपूर्णकार्य समाज में फैली हुयी फजूलखर्च की विविध प्रवृत्तियों को रोक देने के हेतु कोई ठोस योजना बना लेना है। यदि संगठित तथा एकमत होकर इस जिले के माहेश्वरी सर्दार इस सम्बन्ध में कोई निश्चित योजना बना सकें तो हमारा यह सम्मेलन सार्थक हो सकता है। धन और शक्ति का सदुपयोग जिधर होना चाहिये उस ओर न होकर के वृथा बाह्याडंबरों में जो भीषण दुरुपयोग हो रहा है यह बहुत ही अवांछनीय है। समाज की इन शक्तियों को राष्ट्र तथा समाज निर्माण के पुण्यकार्य की ओर आकृष्ट करना चाहिये।

युवकों से दो शब्द

किसी भी जाति या समाजके अभ्युत्थान का सारा उत्तरदायित्व युवकों पर हैं, यह निर्विवाद है। राष्ट्र निर्माण का सारा कार्य युवकों के उत्साह एवम् लगन पर अवलंबित है। समाज का सारा भविष्य युवकों के हाथ में है। इसलिये युवकों को कर्मवीर, उद्यमशील, अध्यवसायी तथा प्रगतिशील बनना पडेगा। हमारे हृदय में देश, जाति एवम् समाजसेवा की दृढ भावनाओं का विकास होना चाहिये। आज सार्वजनिक सेवाभावोत्पन्न युवकों का अभाव दीख रहा है और चारों ओर सार्वजनिक कार्य्यों के प्रति उदासीनता तथा शिथिलता के भाव दृष्टिगोचर हो रहे हैं। समाज के होनहार युवकों के लिये यह एक असह्य परिस्थिति है। हम युवकों को समाजसेवा के क्षेत्र में अग्रसर होने के लिये दृढसंकल्प होना पड़ेगा। सार्वजनिक कार्य्यों में अधिकाधिक दिलचस्पी लेते हुये समाजसेवा के लिये हमें अधीर और बेचैन बनना पड़ेगा। प्रेम और सद्भावना के दृढ़सूत्र में आबद्ध होकर जननी जन्मभूमि की वर्तमान हीनदशा का अन्त करने के लिये हमारे दिलों में व्याकुलता होनी चाहिये। उत्साह, लगन और स्फूर्ति से हम लोगों को राष्ट्र और समाज के अभ्युत्थान की विविध प्रवृत्तियों की ओर अग्रसर होना चाहिये।

आक्रमण का वर्ष

●

● ले०—चार्ल्स जे. वी. मुरफी ●

मि. चर्चिल ने १९४४ को निश्चय का वर्ष कहा है और मि० स्मट्स की राय में यह भाग्य निर्णय का वर्ष है। हम अमेरिकनों दृष्टिकोण से यह वर्ष ऐसा है जिसकी हमें भारी कीमत देनी होगी।

अमेरिका, ब्रिटेन और रूस के सर्वसाधारण आदमियों के ख्याल से आक्रमण का अर्थ है यूरोप पर पश्चिम की आर से हमला। इस लेख में मैं इस विषयपर विचार नही कर रहा हूं कि हमला कब शुरू होगा, कारण आम आदमी इस बात को अच्छी तरह समझे हुए हैं कि हमला कल भी हो सकता है और न तो फिर प्रोग्रामके अनुसार-वसन्त या ग्रीष्म ऋतु में किसी भी वक्त। कुछ ऐसे भी सन्देहशील व्यक्ति हैं जिन्हें सन्देह है कि इतनी शेखी वघारा हमला कभी होगा भी कि नहीं, उनका यहाँतक ख्याल है कि कहे के मुताबिक असली हमला तो न होगा हाँ जर्मनी की ताकत को पीस डालने के लिये संभव है रूस और मेडिटेरेनियन की सेनायें जर्मनी पर जबर्दस्त और लगातार बमबारी करें। इस मत का आधार केवल अनुमान पर ही है अतः मित्रपक्ष की प्रजा को इसमें रत्तीभर भी विश्वास नहीं है। लोगों की यह दृढ़ धारणा है। जर्मनी को निश्चित रूपेण पराजित करने के लिये जर्मनी की फौजों से प्रत्यक्ष युद्ध में मोर्चा लेकर उन्हें हराना होगा।

साधारणतः वसन्त का आगमन आक्रमण लिये सर्वोत्तम काल समझा जाता है। परन्तु यह ध्यान में रखना चाहिये कि उत्तम मौसम जैसे हमें लाभकर होगा, वैसे ही वह शत्रुपक्ष को भी लाभप्रद होसकता है। गत चार वर्षों से जर्मन फौजें वसन्त की बड़े उत्सुकता तथा विश्वास के साथ प्रतीक्षा करते आये हैं। वसन्त में उन्होंने पहलें भी की हैं। अपनी इच्छानुसार उन्होंने हमपर भारी चोटें भी उन दिनों की हैं। परन्तु अब जरा पासा पलट गया है। रूसके भयंकर बर्फानी मोर्चों पर से पीछे लौट रही जर्मन फौजों को अब वसन्त के कारण केवल साँस लेने भर की फुर्सत मिल सकी है। अनन्त संख्या में और अविराम भाव से जब रूसी फौजें पीछे लौटती जर्मन फौजों पर धावा बोल रही हों तो बसन्तही उन्हें कुछ साँस लेने की फुर्सत देता है। सैनिक दांव पेंच के दीवालिए जर्मनी के पास अब एक ही अवलम्ब बाकी रह गया है कि, जब कभी उस पर कोई आक्रमण करके बढ़ता आये तो वह उस पर पूरी ताकत के साथ खिसिया कर टूट पड़े और अपनी दुश्मन डिमोक्रैटिक फौजों को समुद्र की ओर ढकेल दे और इतनी बुरी तरह उनके परतें उड़ा दे कि वे भविष्य में फिर कभी आक्रमण का ख्याल भी न लायें। एंग्लो-अमेरिकनों की फस्ट टीम लन्दन में विराजमान है। उसके मुख्य खिलाड़ी कप्तान आईसनहोवर, टैड्डा, और मॉन्टगोमरी हैं।

गत एक वर्ष से ये तीनों आदमी मिल कर काम कर रहे हैं, और एक दूसरे की ताकत को खूब समझते हैं। उन्हें अपनी सफलता के ऊपर विश्वास है। उन्हों ने ही रोमेल को उत्तरी अफ्रीका से खदेड़ा, भूमध्यसागर से दुश्मनों का सफाया किया, सिसली, सार्डीनिया, और कोर्सिका पर कब्जा किया इटली की कमर तोड़ कर रख दी, और ब्रेनर की घाटी के मार्ग पर अपनी शक्तिशाली फौजें तैनात कर दीं।

तीनोंके दफ्तर लन्दनमें हैं। तीनोंने मिलकर हमले की पूरी पूरी तैयारी की हुई है। छोटीसे छोटी मामूली जगह पर भी फौजी दौड़-धूप नजर आती है। उधर चैनलके पार हिटलरने नॉर्वेसे बिस्को की खाड़ी तक की किलेबन्दी की पश्चिमी दीवार की रक्षाके लिये जनरल रोमेलको नियुक्त किया हुआ है। रोमेल की नस-नस से हमारे जनरल परिचित हो चुके हैं।

हम जब हमला करेंगे पूरे भरोसेके साथ। जर्मनोंके साथ जबर्दस्त मुठभेड़ होगी यह तो निश्चित है, पर यह मुठभेड़ कब होगी और इसकी क्या कीमत देनी होगी, इस सम्बन्ध में तरह-तरह की अटकलें तथा सम्मतियां हैं। युद्धमें न लड़ने वाले व्यक्तियों को उनके अति विश्वास के कारण बुराभला कहा जाता है। हमारी अमेरिकन जनता आज खून की प्यासी है। हवाई विभाग के मंत्री सर आर्चिबॉल्ड सिन्कलेयर ने जनवरी में चेतावनी दी थी कि जर्मन यद्यपि रूस के मैदानों में बुरी तरह पीछे हटे हैं, और उसने जन धन की भारी हानि उठाई है, पर फिर भी उसकी फौजें अभी तक पूर्ण रूप से संगठित हैं। स्टालिनग्राड के मोर्चे पर जर्मनी को जितना नुकसान उठाना पड़ा उतना कभी किसी ने न उठाया होगा, पर बावजूद इसके जर्मन फौजें कठिन से कठिन जंग लड़नेके लिये तैयार हैं, और अडिग भाव से युद्ध में जूझ रही हैं।"

जर्मन फौजों के ज्ञान के विशेषज्ञ एक अमेरिकन अफसर की राय है, कि हमने यह भ्रान्त धारणा बना ली है कि जर्मनों की शक्ति टूट गयी है। असल बात यह है कि सब नुकसानों के बावजूद भी जर्मनी की फौजी ताकत वैसी की वैसी ही है, हाँ हमारी ताकत जहाँ पहिले ३०–३५ थी वहाँ वह अब ११५ या १२० परिमाण तक पहुँच चुकी है।

युद्ध के सम्बन्ध में लड़ाई का क्षेत्र ध्यान में रखने की वस्तु है। तारावा, पैन्टेलेरिया, सिसिली, और सलेरनो काफी उड़ान की दूरीपर हैं। बिस्के की खाड़ी पर नौर्विक से फ्रांसीसी बंदरगाह तक रक्षा के प्रश्न पर विचार करें तो जर्मनों को बड़ी मुश्किल का सामना करना पड़ रहा है। जर्मनी की फौज रूसी तथा इटालियन मोर्चों पर काफी बड़ी तादाद में घिरी हुई हैं, ऐसी दशा में ४३७० मील लम्बे समुद्री तट को सुरक्षित रखना आसान काम नहीं है। परंतु फिर भी यह स्पष्ट है कि साजसामान के साथ इस लम्बे तट पर फौजें उतारने लायक स्थान अन्य स्थानों की अपेक्षा बहुत ही कम हैं। जर्मनी इस बात को बखूबी समझता है कि इस तट पर मित्रपक्ष की फौजों को उतरने से रोका नहीं जा सकता है। जर्मनी समुद्र तट पर हमारा कब्जा स्थिर रूपसे न जमने देने के लिये भी काफी लड़ेंगे पर उनका मुख्य उद्देश्य होगा समुद्री बन्दरगाहों को हमारे हाथों में न पड़ने देना। जर्मन इस बात को खूब अच्छी तरह समझते हैं कि ब्रिटिश तथा अमेरिकन फौजें कितने ही अन्दर तक घुस जायें और लम्बे चौड़े समुद्र तट पर कब्जा भी जमालें पर जब तक जर्मनों का बन्दरगाहों पर कब्जा रहेगा, मित्रपक्ष उनका बाल भी बाँका न कर सकेगा। बल्कि इस तरह मित्रसेनाओं को रसद तथा कुमक न पहुंचने से आक्रमण बिल्कुल विफल हो जायेगा। इस बात को खूब समझ कर के ही जर्मनो ने बन्दरों पर खूब जबर्दस्त किलेबन्दियाँ की हुई हैं।

हमें यह भी कभी न भूलना चाहिये चाहिये कि हमारे जनरलों ने बार बार हमें चेताकर कहा है कि, यूरोप पर कब्जा जमाते हुए बड़े खतरे से सामना करना होगा।

उस दिन प्रातः डिप्पे में कनाड़ा की फौजों को जर्मनों से लोहा लेते जो कठिनाई अनुभव में आई थी, वह सहज नही भुलायी जा सकती। उनके सामने मनुष्य की ऊँचाई से दुगुणी ऊँची ठोस 'कंक्रीटकी समुद्री तट की दीवार खड़ी थी जिसपर टैंको का रत्तीभर भी असर न होता था। जर्मन फौज इस युद्ध में नई से नई चाले चलेंगी। दूसरी ओर हवाई उड़ानों से, यूरोपियन शरणार्थियो से, और जर्मनी में उतरकर आर्या पार्टियों से हमने जर्मनी के विषय में बड़ी महत्वपूर्ण सूचनाए व खोजे पता की हैं। इसके परिणाम स्वरूप आज हमें युरोपियन देशों की असली शक्ति का पूरा-पूरा ज्ञान प्राप्त हो सका है।

ब्रिटिश और कनैडियन फौजें आज गत तीन वर्षों से हमले की तैयारियाँ करती रही हैं। यूरोप पर हमला करने में हमें अद्भुत उपायों और अजूबा शस्त्रास्त्रों का सहारा लेना होगा। रोकेट गनों से द्रव आग तक के साजोसामान व हथियारों से लैस होकर हम जंग में जूझेंगे और जर्मनों को उनके मजबूत किले में ही घोट कर रख देंगे।

एक बड़े मार्के की बात यह है कि हम इस युद्ध में बड़े मपेतुले खर्चों के हिसाब के साथ बढ़े हैं!

आज सन् १९४० वाली हालतसे ठीक उल्टी स्थिति है। आज ब्रिटिश फौजोंके हाथोंमें अच्छेसे अच्छे शस्त्रास्त्र हैं। रूसी फौजोंको भी हमने हथियारोंसे लैस कर लिया है। अब युद्धमें इकले ब्रिटेनने नहीं जूझाना है। अश्रुतपूर्व शक्तिशाली मित्रशक्तियाँ पारस्परिक सहयोगसे दुस्मनको नाकों चेन चबायेंगी।

एयर चीफ मार्शल हैरिसका कहना है कि जर्मन कभी मामूली गल्ती नहीं करते हैं। वे सदा भारी भूलें ही करनेके आदी हैं। जर्मनोंने अटलान्टिकका मैदान खो दिया है। उत्तरीय अन्तरीपसे परे शार्नहोर्स्ट की जबर्दस्त समुद्री पराजय के बाद से जर्मनों ने दाव हारना शुरू कर दिया। उसके बाद से आकाश में उनका प्रभुत्व नहीं रहा और वे बुरी तरह हर जगह पीछे ही पीछे धकेले जाने लगे। अब तो जर्मन लोगोंको बस इस मनोकल्पना से ही जरा आराम मिलता है कि इस युद्ध में भारी मारकाट और नुकसानों को ब्रिटिश और अमेरिकन, और खासकरके अमेरिकन आराम से पचा नहीं सकेंगे।

(यह लेख यूरोप में दूसरा मोर्चा खुलने के पहले लिखा गया था। सम्पादक)

भारतीय उद्योगों के बन्धन

(पृष्ठ ६ का शेष)

हुआ कि तत्कालीन आर्थिक पद्धति अपने मार्ग से फिसल गई और फलतः वस्तुओं का मूल्य कम होने लगा एवं बेकारी तथा दुःख उत्पन्न हुए। इस समय युद्ध के बीच में ही युद्धोत्तर रचनाओं की योजनाएं सामने आ रही हैं। भारत-सरकार भी अपनी शक्ति-भर प्रयत्न कर रही है। इसी समय में भारतवर्ष के कुछ अग्रगण्य उद्योगपति, बम्बई योजना लेकर आगे बढ़े हैं। यद्यपि वायसराय महोदय ने स्वयं यह कहा है कि यह योजना उनकी सरकार के विचाराधीन है, तथापि कुछ सज्जनों ने इस पर केवल इस लिए आक्रमण किया है कि यह पूंजीपतियों की उपज है। देशी एवं विदेशीय बहुत से आलोचकों ने उस योजना के उद्देश्यों को बिलकुल गलत ढंग से समझा है और इस लिए उसकी निंदा करते हुए उसपर अयोग्य निर्णय दिए गए हैं। उस योजनामें तो केवल अमूल्य सुझाव सामने रखे गए हैं जिन पर विरुद्ध सम्मतियां और आलोचनाएं भी मांगी गई हैं। यह तो केवल वह ताना बाना है जिस पर कि सम्पूर्ण ढांचे को अभी खड़ा करना है। अन्य आलोचनाएं ये हैं कि यह योजना केवल आदर्शात्मक हैं और यह खेती तथा श्रम को उपयुक्त प्रधानता नहीं देती है। परन्तु यह भुलाया नहीं जा सकता कि उस योजना का मुख्य ध्येय जीवन के रहन सहन को बहुत ऊंचा उठाना है और उसके बनाने वाले विद्वान श्रमजीवियों की उपादेयता को नहीं भूले हैं जिन पर ही बहुत कुछ उद्योग धन्धों की सफलता निर्भर रहती है। उस योजना-निर्माताओं ने यह बहुत ही स्पष्ट कर दिया है कि अपने उद्देश्योंको प्राप्त करने में जो कठिनाइयां मूल्य चुकाने और त्याग करनेके मार्गमें आवेंगी उनपर आरूढ़ होना ही चाहिए। चूंकि उन्होंने देश को वचन दिया है कि अभी तो कुछ और भी विशेष विवरण बाकी हैं जो अभी बनाए जा रहे हैं अतएव उनपर अन्तिम निर्णय नहीं देना चाहिए।

अन्य योजनाएं भी हमारे सामने आई हैं और अधिक के लिए हमें वचन मिला है परन्तु इस विषय में हमें सतर्क रहना चाहिए। हमारी राजनीतिक स्वतंत्रता रुकी हुई है क्योंकि हम ऐसी शासन व्यवस्था की योजना नहीं कर सकें हैं जो कि सब को मान्य हो।

तृतीय महासमरके व्यूह से कैसे बचा जाय?

लेखकः—**रीनहोल्ड नीवर**

उदार अन्तर्राष्ट्रीयतावादियों के आदर्शों और अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच की यथार्थताओं में थोड़ा संबंध है । जब कि आदर्शवादियों को अब भी एक प्रकार की विश्व सरकार की स्थापना या कम से कम एक विश्वसंघ के अन्तर्गत एक अन्तर्राष्ट्रीय पुलिस दल के गठन की आशा है, वास्तविक प्रश्न यह है कि वे महान राष्ट्र जो सम्प्रति संघर्ष में ऐक्य बद्ध हैं, आपसी स्पर्धा जिससे नये महासमर की अनिवार्य रूपसे सृष्टि होगी, बचाने के लिए कोई प्रभावशाली समझौता कर सकते हैं या नहीं? मास्को और तेहरान सम्मेलनों के बावजूद पारस्परिक सुरक्षा की व्यवस्था की दिशा में कोई अधिक प्रगति हुई नहीं दीख पड़ती । यदि कोई बुनियादी समझौता न होगा तो तीसरे महासमर के लिए पथ प्रशस्त हो जायगा । इस प्रकार के समझौते का स्पष्टतया स्वरूप होगा, यूरोप और एशिया का 'प्रभाव क्षेत्रों में विभाजन जो संभवतः आंचलिक संघों के नाम से प्रसिद्ध होगा ।

स्पष्टतया विश्वके राष्ट्रोंके समक्ष उपस्थित समस्या का इस प्रकार का हल अंतर्राष्ट्रीय अराजकता की बीमारी का केवल शमन है। प्रभाव क्षेत्रों के रूप में बटवारा हो जाने पर महान राष्ट्र अविलम्ब संघर्ष को टालेंगे, किन्तु अन्ततः संघर्ष अधिक समय के लिए स्थगित नहीं होगा । इस प्रकार की व्यवस्था से निश्चय ही विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों के बीच में पड़ने वाले गैर आबाद इलाकों का जिनमें प्रत्येक राष्ट्र अपना प्रभाव विस्तारित करना चाहेगा, प्रश्न हल नहीं होगा । उदाहरण के लिए यूरोप के विभाजनसे उसके समूचे ढांचे के प्रति फ्रांस या जर्मनी के संबंध का प्रश्न नहीं हल हो सकता । विश्व की सुरक्षा के प्रश्न का हल जो जर्मनी को ध्वस्त करना बताते हैं, वे मुझे भय है, यथार्थवादी दृष्टिकोण से इस प्रश्नपर विचार नहीं करते । जर्मनी को ध्वस्त करके विश्वसुरक्षा का प्रश्न हल करने की कोशिश के दर्मियान यूरोप की आर्थिक अस्तव्यस्तता उक्त प्रश्न को और कठिन बना सकती है। इसके अलावा जर्मनी के टुकड़े टुकड़े किये हुए अंचल राष्ट्रों की स्पर्धा के शिकार बनेंगे । प्रत्येक राष्ट्र विजित राज्य के किसी न किसी भाग को अपने अधिकार में करने की कोशिश करेगा (जर्मनी के अंग विच्छेद की योजनाओं की अफवाह का अभी हाल में लंदनटाइम्स ने विरोध किया था, उससे सहज ही संदेह होता है कि ब्रिटेन इस प्रकार की नीति का विरोधी है) यदि विश्व असंगठित बना रहा, तो इस बात की सभावना है कि विनाशकी अति निर्दयी योजनाएं कार्य रूपमें परिणत न होंगी क्योंकि एक चालाक विजित राष्ट्र अपने विजेताओंमेंसे किसी एकको दूसरेके विरुद्ध खड़ा कर अपनेको दुर्दशासे बचा सकता है । विजित के प्रति निर्दयता हमें सुरक्षा नहीं प्रदान कर सकेगी—इसके विपरीत विजित राष्ट्र प्रतिहिंसा के भावसे ओतप्रोत हो जायगा और वहां ऐसा आन्दोलन उठ खड़ा होगा जो हिटलर और मुसोलिनी जैसी हस्तियों के हाथमें राष्ट्रका नेतृत्व प्रदान करेगा और इसका जो परिणाम होगा उसकी हम कल्पना कर सकते हैं ।

संक्षेपमें, विश्व को व्यवस्था चाहिए । फिर भी एक विश्व सरकार या एक विश्व संघ की पूर्णतया विकसित वैधानिक व्यवस्था के बहुत कम आसार दिखते हैं । वे महान राष्ट्र, जो वर्तमान महासमर में विजयी होने के लिए आज कन्धे से कन्धा भिड़ाकर धुरी राष्ट्रों से लड़ रहे हैं, अपनी सत्ता एक विश्व सरकार को सौंप देगें, ऐसा समझने का कोई कारण नहीं है । इसको जाने दीजिए, इससे बहुत ही नरम एक बात का भविष्य भी कोई अधिक उज्ज्वल नहीं है। यह बहुत ही नरम बात होगी। ऐसी साझेदारी जिस के द्वारा वास्तविक पारस्परिक सुरक्षा विषयक संगठन भय को, जिससे मित्र राष्ट्र भयंकर शत्रु बन जाते हैं और उनमें से प्रत्येक मार्केका लाभ उठाने की स्पर्धा करने लगता है और इस प्रकार आगामी महासमर के लिए क्षेत्र तैयार होता है, मिटाया जाय। इस प्रकार की साझेदारी की संभावना अभी भी है, यद्यपि आसार कोई अच्छे नहीं हैं, और एक विश्व सरकार की स्थापना होने के लक्षण तो बिल्कुल ही नहीं दीख पड़ते, क्योंकि विश्व सरकार के लिए प्रभुत्व में काटछाँट और इच्छा एवं विचार शक्ति द्वारा एक सार्वभौम राजनीतिक सत्ता की सृष्टि की आवश्यकता है । छोटे-छोटे राष्ट्रों को साधारण समझौतों में शामिल करना होगा, क्योंकि उनके सहयोग बिना ये समझौते संभव नहीं हैं ।

विश्व के बड़े बड़े राष्ट्रों में मेल होने (छोटे राष्ट्रों की सुरक्षा की गारंटी और अनीति के राह पर सर उठाने वाले को दुरस्त करना मेल के उद्देश्यों के अंग हो सकते हैं) की संभावना कम से कम किसी ऐतिहासिक आधार पर टिकी होती है। राष्ट्र एक समान उद्देश्य के लिए लड़ रहे हैं और उन्होंने कई बातों का एलान किया है। विभिन्न सहायता एवं पुनरुत्थान मूलक संगठनों में योगदान किये बिना वे लड़ाई बंद भी नहीं कर सकते यद्यपि यह स्पष्टतया कहा जा सकता हैं कि अभी यह बिल्कुल निश्चित नही है कि विजेता मित्र राष्ट्रों की आम फौजें रहेगी । एवं समान शत्रुकी प्राजय हो जानें से बेशक संयोग आंशिकरूप से मिट जाता है, किन्तु इसके विपरीत ऐतिहासिक साझेदारी और अपरिमित शक्ति रहती है जिसपर अस्तव्यस्तता के भय की वजह से शत्रु का आतंक अनुभव होनेपर नये राजनीतिक ढाँचे बनाये जा सकते हैं । आमतौर पर यह समझा जाता है कि महान राष्ट्र यूरोपके संगठन के विरोधी हैं क्योंकि उन्हे भय है कि फलस्वरूप अन्ततः यूरोप महाद्वीप पर जर्मनी का प्रभाव हो जायगा । फिर भी असंगठित यूरोप में शक्तिशाली जर्मनी का खतरा बढ़ा और यदि मित्र राष्ट्रों के बीच महानतम एकता कायम न होगी तो वह फिर बढ़ेगा ।

प्रश्न उठता है कि मित्र राष्ट्रों के बीच कैसा समझौता हो? समझौता व्यापक होना कितना आवश्यक है, इस पर मैं समझता हूं, दो मत नहीं हो सकते। समझौते के अन्दर क्या क्या हो इसपर मैं विशद रूपसे अपने विचार अभी व्यक्त करना नहीं चाहता, हां यह अवश्य कह देना चाहता हूं कि इसमें यूरोप और एशिया के पुनर्गठन का प्रश्न अवश्य रहे । यूरोप और एशिया का पुनर्गठन एक दूसरे से बिल्कुल स्वतंत्र और पृथक नहीं हो सकता क्योंकि आज तीन और संभवतः चार राष्ट्रों के हाथ में सत्ता है। इन में से चीन को छोडकर न तो कोई पूरा का पूरा यूरोपियन है और न कोई पूरा का पूरा एशियाही है । अस्तु महान राष्ट्रों के संरक्षण में महाद्वीपीय संघ कायम होने चाहिए, क्योकि उनके बिना, महान राष्ट्रों के बीच किसी टिकाऊ समझौते की कल्पना भी नहीं की जा सकती। विश्व की घटनाएं राष्ट्रों में मेल होने की आवश्यकता बता रही हैं।

यूरोप की समस्या को लीजिए। हमें भय है, जो बिना कारण नहीं हैं, कि रूस यूरोप महाद्वीप पर प्रभुत्व जमाने की कोशिश कर सकता है । रूस को भय है, जो अयौक्तिक नहीं है, कि हम उसके खिलाफ महाद्वीपपर प्रभुत्व जमाना चाहते हैं। प्रभुत्व की भावना के मूलमें है आंशिक रूपमे दूसरे द्वारा प्रभुत्व जमाये जाने का भय। जब कोई राष्ट्र इस तरह के भय का शिकर हो जाता है, तो वह आक्रमणात्मक रूप धारण करना ही आत्मरक्षार्थ सबसे अच्छी युक्ति समझता है। मैं यह निस्संकोच कहना चाहता हूं कि यदि यह खेल खेला गया तो रूस को जीतने की बहुत अधिक सम्भावना है। किन्तु इस प्रकार की सफलता या असफलता भी मुख्य समस्या के साथ असम्बद्ध है । महाद्वीप पर रूस या पश्चिमी राष्ट्रों की सफलता से तीसरा महासमर रुकनेवाला नहीं, एक पक्ष या दूसरे पक्ष की पूर्ण सफलताके पूर्व ही युद्ध छिड़ जायगा ।

मित्र राष्ट्रों के आपसी मेल के प्रश्न का विवेचन करते समय हम रूस की महत्ता की उपेक्षा नहीं कर सकते । यह कितने अफसोस की बात है कि रूसके महत्व को अनुभव नहीं किया जाता । आवश्यकता यह है कि रूस के साथ समझौता किया जाय किन्तु यह तभी हो सकता है जब यूरोप के प्रजातान्त्रिक पुनर्गठन की योजना बनाली जाय । यदि इस प्रकारका समझौता न किया जायगा तो प्रतिक्रियावादी फैसिस्ट और अर्द्ध फैसिस्ट ताकतों की मार्फत यूरोप के पुनर्गठन की व्यर्थ चेष्टा जारी रहेगी चाहे उसकी कड़ी से कड़ी आलोचना क्यों न हो। यह जारी रहेगा, क्योंकि यूरोप महाद्वीप पर रूस के प्रभुत्वका भय नाक में दम किये रहेगा और इस को ठीक सिद्ध करता रहेगा । केवल एक ऐसे समझौतेसे जो कि इस आपसी भयका निराकरण करे यूरोपके गणतांत्रिक राष्ट्रोंको असली समर्थन मिल सकेगा, और इस प्रकारका समझौता केवल तभी सफल हो सकता है जब कि गणतांत्रिक ताकतोंके समर्थनको यूरोप महाद्वीप के पुनर्गठन और एकीकरण की एक योजनाका अविच्छिन्न अंग बनाया जाय ।

यूरोपके पुनर्गठन की योजनामें उसके आर्थिक जीवनके पूर्णतया पुनर्गठनका विधान होना चाहिए, आर्थिक जीवनका ऐसा पुनर्गठन होना चाहिए ताकि राष्ट्रीय करोंकी असम्बद्धता का अंत हो जाय और एक सी मुद्रा नीति के कारण पण्योंका स्वच्छन्द रूपसे आवागमन हो । यूरोपकी राजनीतिक एकतासे नाजियों द्वारा जर्मन, फ्रेंच, एवं अन्य सम्पत्ति के जप्त किये जाने से उत्पन्न प्रश्न हल करनें मे बडी सहूलियत होगी सम्पत्ति विषयक सम्बन्ध में भी आमूल परिवर्तन करना होगा किन्तु पूर्ण राष्ट्रीयकरण की योजना में सर्वसर्वावादिता का खतरा निहित है । जरूरत है राष्ट्रीय और व्यक्तिगत सम्पत्ति में समन्वय करने की । यदि ऐसा होगा तभी समस्त विश्वकी गरीबी की समस्या के हल होने की कुछ आशा की जा सकती है । इस प्रकार का समन्वय रूस और पश्चिम के सम्बन्ध को काफी अच्छा बना देगा । इस प्रकार की कोई योजना यूरोप महाद्वीप के लिए लाभप्रद सिद्ध होगी। क्योंकि इससे अस्तव्यस्तता के स्थान पर आर्थिक सुव्यवस्था कायम होगी ।

इस प्रकार के समझौते आवश्यक ही नहीं हैं बल्कि स्थायी शांति के लिए अनिवार्य भी हैं। गणतांत्रिक राष्ट्रों में आज ऐसे गुट्टों का जोर है जो अपनी आर्थिक शक्ति को कायम रखना और विस्तारित करना चाहते हैं। इस लिए कि उन्हें अपनी आर्थिक शक्ति का भविष्य बहुत अन्धकारपूर्ण दीख पडता है। हो सकता है कि इन गुट्टों का इस प्रकार की योजना के खिलाफ विरोध इतना प्रचण्ड रूप धारण कर ले कि उसे कार्यान्वित न किया जा सके। किन्तु यदि इस प्रकार का विरोध दबाने में सफलता मिल जायेगी तो निश्चय ही तृतीय महासमर टाला जा सकेगा ।

किसान सम्मेलन

ग्वालियर राज्य किसान सभा का पांचवा सालाना जल्सा डॉ. बालकृष्ण शर्मा के सभापतित्व में ता. २ व ३ जून को बड़े समारोह से मनाया गया । अखिल भारतीय किसान सभा के प्रेसीडेन्ट स्वामी सहजानंद सरस्वती उद्घाटन के लिये बुलाये गये थे ।

SHIP BRAND FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

हिन्दुस्तान, सीलोन, और विदेशमें लोकप्रिय

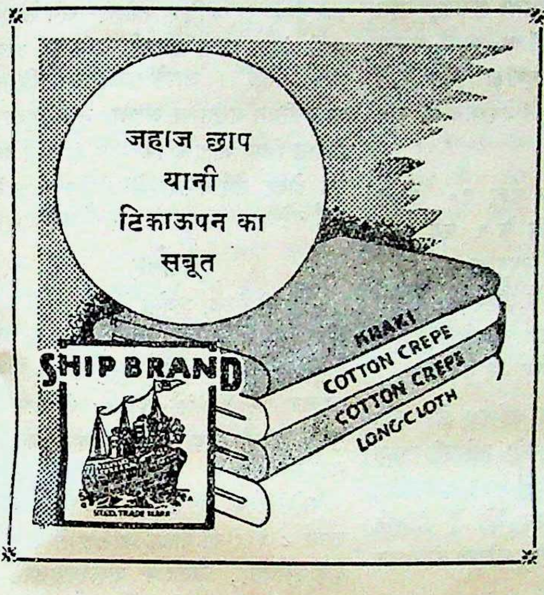
जहाज छाप
यानी
टिकाऊपन का
सबूत
SHIP BRAND
KHAKI
COTTON CREPE
COTTON CREPE
LONG CLOTH

क्योंकि

१ वे स्वदेशी हैं,
२ पक्के रंगके हैं,
३ मज़बूत हैं,
४ सर्वोत्तम हैं,
५ कीमत में सस्ते हैं।

SHIP BRAND
FABRICS

कौटन क्रेप सफेद व रंगीन, खाकी ड्रिल, ट्विल व पगड़ी क्लाथ, सफेद ड्रिल, ट्विल, लौंगक्लाथ, साटिन ड्रिल, फास्ट ब्ल्यू ड्रिल, ग्रे ड्रिल, पापलीन सफेद व रंगीन, दसूती सफेद व रंगीन, कैसमेन्ट क्लाथ रंगीन, नीटींग क्लाथ, शीटींग क्लाथ, टेवल क्लाथ सफेद, मरसीराईज़ लौंगक्लाथ, क्रेप, पापलीन, टसर, शरटींग टौवल, नैपकीन वगैरह वगैरह।

'जहाज छाप' कपड़ा सुंदर, स्वदेशी और सस्ता है

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons

Head Office —— AMRITSAR

Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

देशके विभिन्न भागोंमें महेश जयंती

देशके विभिन्न स्थानोंमें ज्येष्ठ शुक्ल ९ को धूमधामसे महेश जयंती महोत्सव मनाया गया नीचे हम अब तक प्राप्त विवरण प्रकाशित कर रहे हैं:—

सांभरलेक

गत ३१ मई को सांभर के राजस्थानी समाज विशेषतः माहेश्वरी समाज में उत्साह और आनंद की एक अपूर्व लहर दीख पड़ी, जब महेश जयन्ति उत्सव और जिला माहेश्वरी सम्मेलन के अध्यक्ष सेठ गजाधरजी सोमानी सांभर स्टेशन पर पधारे। भगवान महेश की जयध्वनि के बीच अध्यक्ष महोदय का हार्दिक स्वागत किया गया। एक शानदार जुलूस के साथ सभापति श्री सोमानीजी नियत स्थान पर पहुंचाये गये।

दिनमें २ बजेसे महेश जयन्ति तथा सम्मेलन का कार्य विद्वान ब्राह्मणोंद्वारा वैदिक रीति से भगवान महेश की पूजा सम्पन्न की जाने के बाद बालिकाओंके गायन और स्कूल से बालकों के मंगलाचरण के साथ स्थानीय माहेश्वरी भवन में, जो प्रस्तुत उत्सव के लिये अच्छे रूपसे सजाया गया था शुरू हुआ। स्थान प्रतिनिधियों माननीय दर्शकों तथा स्वागत सदस्यों से खचाखच भरा हुआ था। माहेश्वरी समाज के अलावाभी बहुत से कार्यकर्ता कवि, विद्वान इस अवसरपर पधारे थे। स्वागताध्यक्ष श्री चांदरतनजी मोहता बी. कोम. ने अपने भाषण में अधिवेशन बुलाने का कारण बताकर अध्यक्ष की सर्वविध योग्यता का वर्णन करते हुए उनसे प्रधानासन ग्रहण करने को निवेदन किया। प्रमुख कार्यकर्ताओं के अनुमोदन समर्थनों के बाद श्री. महेश्वर की जयध्वनि के साथ मनोनीत सभापति सेठ गजाधरजी सोमाणी ने अध्यक्ष का आसन ग्रहण किया। आप ने जो महत्वपूर्ण भाषण दिया, वह अन्यत्र प्रकाशित है। आपके भाषण के बाद श्रीमान शाह मदन गोपालजी कावरा, श्रीमान शिववल्लभजी मानधणा के वक्तव्य हुए और विषय निर्वाचिनी की घोषणा के बाद अधिवेशन की कार्रवाई स्थगित की गई।

सायंकाल ७ बजे से श्री महेश भगवान का एक सुन्दर चित्र, जो इसी उत्सव के लिये विशेष तौर पर बनाया गया था, एक सुन्दर रथ में, जिसके ऊपर पुष्पोंका छत्र बड़ा दर्शनीय था, विराजमान कर एक बृहत् जुलूस पुनः निकाला गया। जुलूस के साथ जयन्ती महोत्सव के अध्यक्ष सेठ सोमानीजी की सवारी भी उनमें और सांभरजिलेके माहेश्वरियों की अगाध श्रद्धा को प्रकट कर रही थी। माहेश्वरियोंके अतिरिक्त अन्य सभी समाजोंके माननीय सज्जन भी जलूस के साथ चल रहे थे। जलूस माहेश्वरी भवनसे शुरू हुआ और छोटे मोटे सभी बाजारों तथा मोहल्लोंमें बैंडबाजों कीर्तन मंडलियों, झंडीफरियोंके साथ जगह २ सांभर निवासियोंका स्वागत सत्कार लेता हुआ ३ घन्टेबाद माहेश्वरी भवनमें ही आकर समाप्त हुआ। सांभर में संभवतः इतना बड़ा विशाल जलूस पहला था। जिसका विना किसी भेदभावके सब जातियों की ओरसे हार्दिक स्वागत हुआ। रातमें १२ बजे तक विषय निर्वाचिनी समिति की बैठक हुई।

ता. १ जून को सुबह ९॥ बजे माहेश्वरी सम्मेलन था। दूसरा खुला अधिवेशन जोधपूर की संगीत पार्टी के गायन के पश्चात् सेठ सोमाणीजी की अध्यक्षता में शुरू हुआ। मंत्रीने आगत सन्देश सुनाये जिनमें श्री सेठ घनश्यामदासजी बिडला, सेठ रामकृष्णजी धूत अध्यक्ष माहेश्वरी महासभा, श्री रामगोपालजी मोहता, सेठ रघुनाथदासजी बांगड, श्री हिम्मतसिंहजी तापड़िया रेवेन्यु मिनिस्टर जयपुर स्टेट, श्री मुकुन्ददासजी तापडिया, श्रीराधाकृष्णजी लाहोटी, श्री गोवर्धनलालजी कावरा, श्री बालकृष्णजी मोहता, श्री सदासुखजी कावरा, व्रजवल्लभदासजी मुंधडा, आदि के सन्देश उल्लेखनीय हैं। अध्यक्ष की ओरसे श्री कस्तुरबा के निधन का शोकात्मक प्रस्ताव पेश हुआ जिसे सबने खड़े होकर स्वीकृत किया। श्रीमान शाह मदनगोपालजी कावरा ने एक समाजसेवी दलका नाम पेश करते हुए घोषित किया कि यह दल समाज सुधार के कार्यक्रम में विशेष दिलचस्पी से कार्य करेगा। कुछ अनावश्यक रस्म व दिखाव में भाग न लेगा और अपने दल को बढाने की हर समय चेष्टा करता रहेगा। इस घोषणा का युवक समाजमें विशेष स्वागत हुआ।

दोपहर में महिला सम्मेलन हुआ जिसका नेतृत्व श्री सरस्वती देवी दुधाणी वड़ोदा ने किया। स्वागताध्यक्षा श्री कस्तूरी देवी सोढानी मंत्रिणी श्री सरला देवी शारदा के भाषण हुए। रातमें ९ बजे से कवि सम्मेलन हुआ जिसमें सामयिक कवितायें बड़ी प्रभावकारक रहीं। अध्यक्षपद से औपसंहारिक भाषण देते हुए सेठ गजाधरजी सोमानीने कविता के महत्व और कार्य का वर्णन बड़े सुन्दर शब्दोंमें किया।

ता. २ को प्रातः अधिवेशन की तीसरी खुली बैठक सेठ सोमाणीजी के सभापतित्वमें पुनः शुरू हुई। सांभरमें छात्रावास खोलने, एक जातीय कोष, जिसमें सेठ सोमाणीजीनें १ हजार देकर उसकी वृद्धिका श्रीगणेश किया, स्थापित करने, लन्दन चेम्बर्स ऑफ कामर्स की परीक्षाओं का प्रबन्ध करने तथा माहेश्वरी भवन के अवशिष्ट भाग को बनाने के बाबत प्रस्ताव पास हुए। दिनमें पुनः साहित्य सम्मेलन हुआ और रात्रिमें माहेश्वरी सम्मेलन जिसमें सेठ सोमाणीजी का औपसंहारिक व्याख्यान बड़ा प्रभावशाली हुआ। आशा की जा रही है कि इस सम्मेलन का प्रभाव जयपुर तथा जोधपुर दोनों जगहों के माहेश्वरियों पर हुआ है और वे आवश्यक सुधारों का स्वागत करने को उद्यत हो गये हैं।

विजयनगर

जेष्ट शुक्ला ९ को माहेश्वरी समाज ने ही नहीं, बल्कि सर्व हिन्दू भ्राताओंने महेश जयन्ति विजय नगरनारायण हाई स्कूल के कम्पाउन्डमें बड़ी धूम धाम और उत्साह के साथ मनायी।

प्रातः काल ८ बजे से कार्य शुरु हुआ प्रार्थना, हवन, भजन आदि के पश्चात् बच्चों व नवयुवकों के खेल भी हुये। श्री माणकचंदजी आर्यने भी जो कि यहाँ के आर्य वीर दल के दलपति हैं आसन करके बताये।

रात्रि को ८ बजे शिव मंदिर से महेश भगवान की सवारी निकाली गई, श्रीमान् पं. श्रीरामजी के सभापतित्व में सभा की गई। सर्व प्रथम गायन प्रतियोगिता रक्खी गई इस में श्री. शंकरलालजी कोंकण प्रथम रहे।

भाषणों के पश्चात पारितोषिक वितरण हुआ। श्री. कल्यान मलजी शारदा ने स्वागत पर अपना बनाया शुभ भजन सुनाया, महेश जयन्ति महोत्सव के मनाने का कारण बताया और महेश भगवान के गुणोंका वर्णन करते हुये भाषण भी दिया। जयध्वनि के साथ सभा विसर्जन की गई।

दूसरे दिन गुरुवार जेष्ट शुक्ला १० तारीख १ जून ४४ ई. को रात्रि के ९ बजे आर्य समाज भवन में माहेश्वरी नवयुवक मंडल की स्थापना की गई। मंडल के उद्देश्य और नियम आदि बनाये गये, पश्चात पदाधिकारियों का चुनाव हुआ साथ ही सदस्य भी बने।

जिन हिन्दू भाइयों ने महोत्सव को सफल बनाने मे योग दिया उन्हें माहेश्वरी समाज की ओर से धन्यवाद देता हूं। उन दानवीरोंको हम विशेष रूप से धन्यवाद देते हैं जिन्होंने धन से सहायता देकर इस महोत्सव को सफल बनाया।

कुं. लक्ष्मीनारायण जैथल्या
सिद्धान्तरत्न
श्री महेश जयन्ती महोत्सव
विजयनगर

ग्वालियर

गत ३१ मई सन ४३ को स्थानीय मित्र मण्डल के तत्वावधान में श्री मावलियाजी के बगीचे में महेश जयन्ती महोत्सव सुप्रसिद्ध समाज सेवी बाबू रघुनाथदासजी बांगड के सभापतित्व में मनाया गया। सर्व प्रथम विद्वान ब्राह्मणों द्वारा महेश पूजा आर्ती तथा प्रसाद वितरण होनेपर आगत महानुभावों का स्वागत ठंडाई व ताम्बूल आदि के द्वारा किया गया उसके बाद श्री राघवबाबू का महत्वपूर्ण भाषण जयन्ती के महत्वपर हुआ। आपने अपने भाषण के सिलसिले में माहेश्वरी महासभा की स्वागत-समिति को लेकर जो मतभेद स्थानीय माहेश्वरी युवको में होगया था जिसके कारण ग्वालियर में मित्र मण्डल के रहते हुए एक नई संस्था जिसका नाम माहेश्वरी युवक संघ है, बनगई थी उसे दूर कर एक ही संस्था में संगठित होने की मार्मिक अपील उपस्थित माहेश्वरी जनतासे की। इस प्रसंग में आपने दोनों संस्थाओंके कार्यकर्ताओं की बातें बड़े ध्यानसे सुनीं, मतभेद होनेके कारणों पर विचार करते हुए आपने कहा कि जब दोनों संस्थाओंका एक उद्देश्य है—समाज-सेवा, तो ये दोनों संस्थायें समाजमें पार्थक्य बढ़ाने की कारण क्यों बने? बांगड़जी ने प्रस्ताव किया कि दोनों समानोद्देश्य हैं—संस्थाओं की दो-दो प्रतिनिधियों की एकता कमेटी बने जो दोनों के विधानों पर विचार कर एक ही संयुक्त विधान बनावे। यह प्रस्ताव दोनों दलों ने सहर्ष स्वीकृत किया और इस सब कमेटी के प्रधान तथा दोनों दलों के बीच एकता कराने के लिये मध्यस्थ का पद श्री राघव बाबू को दिया गया।

इस अवसर पर दूसरी नवीन संस्था युवक संघ के उत्सव में भी श्री रघुनाथदासजी बांगड़ सादर आमंत्रित हुए यहां भी उक्त संस्था का आतिथ्य स्वीकृत करने के बाद आपने संयुक्त शक्ति से कार्य करने की आवश्यकता बताई। आपके एकतापोषक विचारों का उपस्थित जनता पर अच्छा असर हुआ। विश्वास किया जाता है कि शीघ्र हीं दोनों दल एक होकर समाज-सेवा में संयुक्त शक्ति से कार्य करेंगें। —संवाददाता

अजमेर

माहेश्वरी मंडल, अजमेर में गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी महेश नवमी महोत्सव बड़े समारोहके साथ मिती ज्येष्ठ शुल्क ९ सं. २००१ तदनुसार ता. ३१ मई १९४४ को श्रीमती गुलाब देवीजी भट्टड़ के सभापतित्व में मनाया गया।

महेश नवमी के उपलक्ष में मिती ज्येष्ठ शुल्का ८ व ९ को बालक बालिकाओं के खेल दौड़, कुश्तियां, गायन व वादविवाद प्रतियोगिता एवं व्यायाम प्रतिस्पर्धा इत्यादि हुये।

इस वर्ष वादविवादका विषय "वर्तमान समय को देखते हुये अन्तर्जातीय विवाह समाज के लिये हितकर है" था। इस कारण समाजके नवयुवकों ने वादविवाद प्रतियोगिता में बड़ी दिलचस्पी से भाग लिया।

श्रीमती गुलाब देवीजी जो चाचीजी के नाम से हमारे शहर में मशहूर हैं हमारी जाति की एक आदर्श विदुषी हैं जिन्हों ने ५० वर्ष से राजस्थान में स्त्री शिक्षा का प्रचार कररही है और अजमेर में बालिकाओंका एक स्कूल चला रही है न कर कमलों से करीब १२० पारितोषिक वितरण किये। महेश भगवान् की जय घोषणा करते हुये सभा विसर्जन की गई।

बालमुकुन्द झंवर
मंत्री—माहेश्वरी मंडल, अजमेर

लश्कर (ग्वालियर)

गत ३१–५–४४ को श्री मारवाड़ी नवयुवक संघके तत्वावधानमें महेश जयंतीके उपलक्षमें श्री गोपालजीके मंदिरमें महेश भगवानका पूजन हुआ, हस्तलिखित पत्र 'युवक'का उद्घाटन हुआ व प्रसाद आदि वितरण हुए। श्री रघुनाथदासजी बांगडजी पधारे। आप को हस्तलिखित पत्र दिखाया गया, आपने उ देखकर सुंदर प्रयास बताते हुए युवकोंको संगठित होकर समाजोन्नति करनेके लिए कहा।—मंत्री

(शेष पृष्ठ २४ पर)

माहेश्वरी किस ओर?

श्री जीवनलालजी चाण्डक

'माहेश्वरी' ३५ वें वर्ष में पदार्पण कर चुका है, खुशीकी बात है, और 'माहेश्वरी' को इस ३५ वीं वर्ष गांठपर बधाई देना भी स्वाभाविक है। मनुष्य जब एक एक वर्ष बाद अपनी वर्षगांठ मनाता है, तब उसे अपने जीवन के कार्यका ख्याल हो जाता है। वह सोचता है, मुझे क्या करना था, मैंने क्या किया और मुझे क्या करना चाहिये। वह अपनी गलतियों-का ख्याल करता है, और निश्चय करता है कि आगे के लिये ऐसी गलतियां वह नहीं करेगा। कई बातोंका सोचकर मापकर वह अपना आत्म-निरीक्षण करता है।

मेरी समझसे 'माहेश्वरी'को भी अपनी इस वर्षगांठ पर अपना आत्मनिरीक्षण करना चाहिये। उसे सोचना चाहिये की वह क्यों पैदा हुआ, उसके जीवनका अन्तिम साध्य क्या है, और अपना कर्तव्य पूरा कर करने में उसे कहांतक सफलता प्राप्त हो चुकी है। पहले सवाल का जवाब यह है कि वह माहेश्वरी जातिके लिये पैदा हुआ है, उसका नाम भी इसी बातकी पुष्टि करता है। दूसरी बात यह है कि माहेश्वरी समाज की सर्वांगीण उन्नति करनाही माहेश्वरी का अन्तिम लक्ष्य है। तीसरा सवाल यह उपस्थित होता है कि क्या 'माहेश्वरी' अपने कर्तव्य का पूरी तरह पालन कर रहा है? क्या उसकी अन्तरात्माको यह विश्वास है कि उसे, अपने अन्तिम साध्यके लिये जितना करना चाहिये, वह सब उसकेद्वारा हो रहा है? जवाब है हां, कर्तव्यपालन करता तो है किन्तु पूरी तरह से नहीं। कारण यदि माहेश्वरी का जन्म माहेश्वरी जातिके उत्थानके लिये है तो उसे देखना चाहियें की सच्चा समाज कहां बस रहा है, उसको किस बातकी अवश्यकता है, और उस आवश्यकता की पूर्ति माहेश्वरीद्वारा होती है या नहीं। माहेश्वरी को हरदम यह याद रखना चाहिये कि माहेश्वरी समाज मायने इस विशाल भारत भूमिके इने गिने शहरों में रहने वाले चंद व्यापारी, पूंजीपति या पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त लोग ही नहीं हैं। हमारा सच्चा समाज राजस्थानके विशाल वक्षस्थलपर तथा हजारों ग्रामों तथा कस्बों मे बसा हुआ है। हमारे हजारों लाखों भाई जो मारवाड, तथा देहातों एवं कस्बों में रहते हैं, उनकी हालत क्या है? वे किस तरहसे अज्ञानरूपी घोर अंधकार में अपना जविन बिता रहे हैं। उनको योग्य मार्ग दर्शन की अत्यंत आवश्यकता है। रूढियोंसे होनेवाली हानियां समझाकर नई अच्छी बातों की ओर उन्हें आकृष्ट करना माहेश्वरीका कर्तव्य है। किन्तु आज माहेश्वरी की बढ़ी चढ़ी विद्वत्तापूर्ण भाषा, गहन चर्चा, पाश्चात्य प्रकाण्ड विद्वानोंके अनूदित लेख और दूसरी बातें उन लोगोंकी समझमें नहीं आतीं। और मेरी समझमें माहेश्वरीको इन सारी बातोंकी इतने गहराई में जाने की आवश्यकता भी नहीं है। यह जातीय पत्र होनेसे जातीय सवालोंको हल करना और उस विषयकी चर्चा करनाही माहेश्वरी का कर्तव्य है। यह बात हम मानेंगे की आज का माहेश्वरी का रूप कुछ जातिय और बहुतांश में राष्ट्रीय है। किन्तु राष्ट्रीयताका प्रचार करनेवाले कई पत्र हैं। माहेश्वरी को उस में इतना हस्तक्षेप करने की कोई आवश्यकता नहीं है। कई समाज मिलकर ही राष्ट्र बनता है। हमारा समाज अगर सुधर गया तो हमारे राष्ट्र का एक हिस्सा सुधरेगा जिसे हम मानेंगे और दुनिया मानेगी। इसी कारण से भक्तिराष्ट्र की और सेवा समाज की यह माहेश्वरी को अपना ध्येय रखना चाहिये। और तदनुसार आचरण करना चाहियें। और एक साधे सब साधत है, सब साधे सब जाय। यह ख्यालमें रखना चाहिये।

आज हमारे समाजमें सुधारकोंका तथा पुराने मतवालोंका द्वंद चल रहा है। सच्चे दृष्टि-कोणसे देखा जाय तो वह कहना पड़ेगा कि दोनों पक्ष कुछ अंशमें गल्ती पर हैं और कुछ अंशमें सचाईसे संलग्न हैं। पुरानी किन्तु निरर्थक और नुकसानकारक रूढियोंको पालकर लकीर के फकीर बने रहना, बुढ़े लोगोंका दोष है, तो सुधारके अन्धाधुन्ध धुनमें पुरानी अच्छी बातों को ठुकराकर नई दोषपूर्ण बातें ग्रहण करना सुधारकों का दोष है। सुधारक लोग पुरानी बातों को एकदम से तोड़ना चाहते हैं किन्तु उन की गल्ती यह हो रही है कि पुरानी बातों की जगह नई बातें या नया अनुशासन प्रचलित करने में वे बुरी तरह से असफल रहे हैं। ऐसा नहीं होना चाहिये। सुधारकों की इस जल्दबाजी ने समाज को बड़ा धक्का पहुँचाया है तथा समाज के अनुशासन में दखल दी है। जब तक कि नया औजार तयार नहीं होता तब तक हाथों से काम करने के बजाय, पुराने औजारों से काम लेनाही बुद्धिमानी है। अन्यथा या तो काम बिगड जायगा या बंद होगा। फर्ज कीजिये कि एक राजा के राज्यमें दोष पूर्ण राज्यव्यवस्था प्रचलित है। किन्तु जब तक दोषरहित नई राज्य व्यवस्था कायम नहीं की जा सकती तब तक पुरानी दोष पूर्ण व्यवस्था को बंद करके अराजकता फैलानाही बुद्धिमानी नहीं कही जा सकती। बिल्कुल यही दशा हमारे समाजकी है। पुरानी पंचायतों को सुधारकों ने तोड़ा किन्तु नये मंडल या अन्य संस्थायें चलाकर समाजमें अनुशासन रखनेमें सुधारक असफल रहे। फल स्वरूप समाज स्वच्छंद और सच्छाचारी बनता जा रहा है। अंकुश न होनेसे समाज का अनुशासन लगभग नष्ट होगया है। सब लोग अपनी मन-मानी करने लगे हैं। इसका परिणाम हमारे दिलोंपर भी होगया है। और पहले की हम दर्दी, प्रेमभाव और परस्पर सहायता करने की वृत्तिका लोप होता जाता है। इन नये दोषोंको तथा पुराने दोषोंको हमें हटना पड़ेगा। यह हटाने में माहेश्वरी को हमें हरदम मार्ग दर्शन करना चाहिये। माहेश्वरी को जाति की नब्ज हरदम हाथमें रखनी चाहिये। जरा बिगाड़ होतेही तुरन्त सूचना देनी चाहिये कि तुम्हारे समाजरूपी शरीरमें यह बिगाड़ हुवा है। साव-धान हो जावो। साथमें योग्य उपाय योजना रूपी दवा देकर और उसके विपरीत आचरण न करने का पथ्य देकर समाज को निरोगी करना चाहिये। माहेश्वरी समाजरूपी दुनिया के 'माहेश्वरी' रूपी इस स्थितप्रज्ञ ज्ञान योगी को हरदम सचेत रहकर समाज का रक्षण करना चाहिये।

मैंने कुछ दिन पूर्व 'समाज धर्म के संशोधन की आवश्यकता शीर्षक लेख लिखकर माहेश्वरी माननीय, विद्वानों तथा सुयोग्य संपाद-कोंका एवं सुधारकों का ध्यान उस लेख की ओर आकृष्ट किया था। और उसमें उनसे प्रार्थना की थी कि हमारे सारे समाजिक कार्योंका संशोधन होना चाहिये। हमारे समाजधर्म का मार्गदर्शिका तैय्यार करनी चाहिये। उसमें शास्त्रोंके आधार, विद्वानों के मत, परिस्थितिका विचार करके हमको नामकरण विधिसे लेकर मौसर तथा श्राद्धतक क्या करना चाहिये, किस तरहसे करना चाहिये, इन सारी बातोका सविस्तर वर्णन देना चाहिये। बिना इसके हमारे समाज सुधारका काम नहीं हो सकता। जब तक हम लोग साधारण लोगोंको सारी बातें नहीं समझाते तब तक वे हमारा कहना कैसे सुनेंगे? किसी सुधारक भाईने या हमारे नेताने इस ओर ध्यान नहीं दिया। किंतु मैं फिरसें सब सुधा-रकों से, नेताओंसे तथा माहेश्वरी के सुयोग्य संपादकोंसे प्रार्थना करूंगा कि आप सब मिलकर यह प्रयत्न आरंभ करें दूसरे कामोंमें शक्ति खर्च करनेके बजाये इसमें शक्ति खर्च करें। माहेश्वरी को भी ऐसे विषयोंकी चर्चा छेड़नी चाहिये, सब लोगों को अपनी अपनी राय प्रकट करनी चाहिये, तब ही तों 'वादे वादे जायते तत्व बोधः' के न्यायसे हमें सचाईका भान होगा? 'माहेश्वरी' से मैं नम्रता से निवेदन करूंगा कि वह दूसरी बातोंको छोडकर अपनी सारी शक्ति इसी कार्यसे खर्च करे, इसीमें उसके जीवनकी सफलता है।

[श्री चाण्डकजीने माहेश्वरी के ३५ वें वर्ष में पदार्पण करने पर खुशी जाहिर करते हुए जो विचार पेश किये है, इस लिए हम उनके विशेष रूपसे आभारी हैं। हमें श्री चाण्डकजीने आत्म निरीक्षण करने की जो सलाह दी है, उसका स्वागत करते हुए उनसे निवेदन करते हैं कि वह अपने विचार समय समय पर भेजते रहें।

जिस Ideology से हम काम कर रहे है वह श्री चाण्डकजीको पसंद नहीं है यह तो विचार भेद है। जो जो समाजसेवा के काममें लगे हैं, उनकी विचार धारा पृथक पृथक हो सकती है, किन्तु कल्याणकर विचार से किये गये कार्य 'सर्व देव नमस्कारं, केशवं प्रति गच्छति।' श्री. चाण्डक जी के दिल में कई सवाल उठे हैं। वह यह जानना चाहते हैं कि माहेस्वरी जिस उद्देश्य से जन्मा, उस कर्तव्य का पूरी तरह पालन किया है या नहीं? माहेस्वरी का प्रकाशन जिस उद्देश्य से हुआ है, उस उद्देश्य में आज भी कोई फर्क नहीं आया है। माहेश्वरी समाज की सर्वाङ्गीण उन्नति के विचारों से माहेस्वरी का प्रादुर्भाव हुआ और उसी उद्देश्य को लेकर अपने मार्ग पर वह चल रहा है। हो सकता है कि प्रत्येक मनुष्य के समाज को सर्वाङ्गीण उन्नति के पथ पर लेजाने विचार जुदे जुदे हों। श्री चाण्डक जी को शिकायत है कि सम्प्रति माहेस्वरी की जो भाषा प्रणाली है वह लोगों की समझमें आ नहीं सकती। हमारा भी प्रयत्न है कि जितनी सरल भाषामें बात कही जाय, हम कहे और यदि बारीकीसे ध्यान दिया जाय तो हमारी यह बात सही पायी जायगी। हम जानते हैं, भारतवर्ष की आबादी आज ७ लाख गांवोंमें बसी है और हम यह भी जानते हैं कि देशमें शिक्षाका प्रचार बहुत ही कम है। इसकी कठिनाईका हल तो हमारी राष्ट्रीय सरकार ही कर सकेगी, बाकी शिक्षा प्रचार के लिए पत्रके जरिये जितना भी संभव है, उतना हमें ही नहीं अपितु देशके गण्यमान्य नेताओंको भी पूरा पूरा ख्याल है।

हम श्री चांडिकजीके इन विचारोंसे सहमत नहीं है कि माहेश्वरी का कलेवर, माहेश्वरी के पृष्ट इसी लिए रिजर्व रहें कि हम नामकरण विधिसे लेकर मोसर तथा श्राद्धोंतक क्या करना चाहिए किस तरह करना चाहिए आदि बातों का सविस्तर वर्णन छापें। जिस प्रकार आज माहेश्वरीका प्रकाशन हो रहा है, वह श्री चाण्डकजी को पसंद नहीं है यह तो उनके उपरोक्त लेखसे स्पष्ट है। माहेश्वरी समाज देश का एक अंग है और जब हम समाज की सर्वांगीण उन्नति देखना चाहते हैं और जिसमें हम देश का हित समझते हैं तो हम समाज को देश विदेशोंमें उपस्थित होनेवाली समस्याओंसे अपरिचित कैसे रख सकते हैं? समाज और देशकी भलाई के सम्बन्धमें देश विदेशमें भिन्न भिन्न प्रकारकी विचार धाराएं बह रही हैं। देशों के जीवन मरण के सवाल उनके सामने खड़े हैं। इस तूफान में कोई व्यक्ति कहे कि हमारे समाज की नौका सुरक्षित रूपसे चल सकती है यह तो विचार की कमी है। राष्ट्र की भक्ति करते हुए जो भी कार्य होता है वह समाज सेवा की कल्पना से ही होता है।

माहेश्वरी में सभी विषयों पर लिखा जाता है। क्या वे सब बातें समाज के सर्वाङ्गीण हित में नहीं आतीं? यदि वह माहेश्वरी की फाइल उठाकर देखें तो यह बात उनकी समझमें आ जायगी, जो भी भाई अध्ययन पूर्वक अनेक विषयों पर लेख भेजते हैं उन के लेखों को बराबर स्थान दिया जाता है। जिस प्रकार श्री. चाण्डक जी चाहते हैं उस प्रकार यदि कोई भाई लिखना चाहें तो उनके लिए भी माहेस्वरी के पृष्ठ खुले हैं। विवाह आदि प्रथाएं सुधारक की दृष्टि से कैसे हो सकती हैं, हमने माहेश्वरी के ७ जुलाई १९४२ के अंक में पृष्ठ १७ पर श्री. हरिकिशन जी राठी के 'सुधारक विवाह कैसे हों' शीर्षक लेख पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। **सुधार के संबंध में हमारा यह मत है कि विकासशील और परिवर्तित संसार में सुधार एक नियत मर्यादा में बांधा नहीं जा सकता। विवेक-बुद्धि से समय, धन**

(शेष पृष्ठ २१ पर)

थिरकन

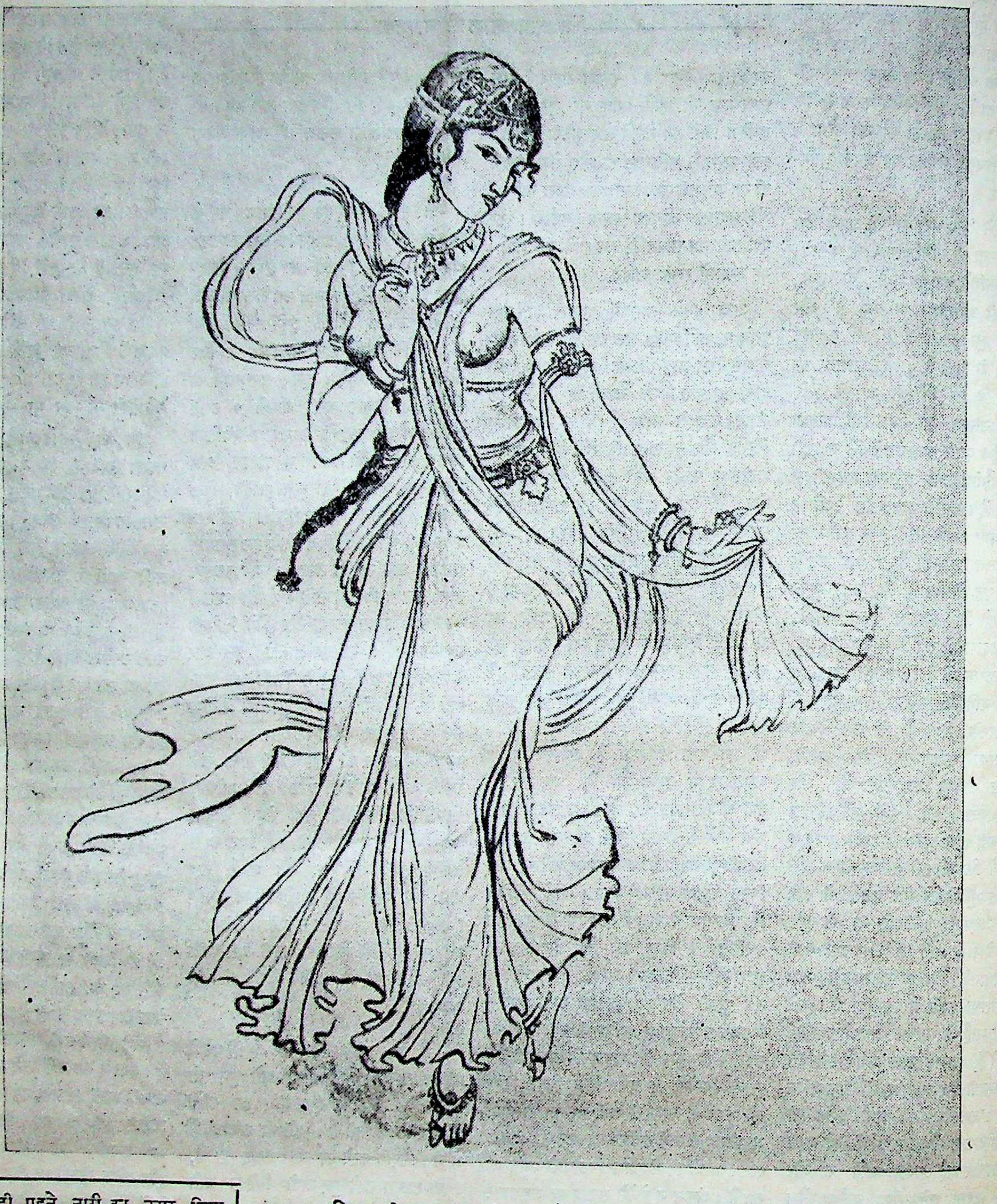

साड़ी पहने नारी का ऊपर दिया निरूपण महान् कलाकार श्री असित कुमार ने किया है।

लन्दन की रायल सोसायटी ऑफ आर्ट्स ने आपको अपना सदस्य बनाया। आपकी अनेक कलाकृतियाँ लन्दन के दक्षिण केसिंग्टन अजायबघर में रक्खी गयी हैं श्री असित कुमार हलदर भारत के सर्वश्रेष्ठ कलाकारों में से हैं, और सन १९२५ से लखनऊ स्कूल ऑफ आर्ट्स ऐन्ड क्रैफट्स के प्रिन्सिपल चले आते हैं

मुश्किल से पसन्द करनेवाले शौकीन लोग चुनी हुई बनावट के; फैशनेबल डिजायनों के और टिकाऊ रेशों के वस्त्र ही चाहते हैं।

इस लिये कला के पारखी ऐसे ही महीन और नरम वस्त्रको चुनते हैं जिस की साज सजावट से अंग-अंग थिरक उठे। ये महीन परन्तु मजबूत बुनती के और मनपसन्द डिजायनों के वस्त्र केशोराम कौटन मिल्स में बने हैं। प्रत्येक अवसर के उपयुक्त साड़ियों, धोतियों और कमीजों का कपड़ा यह मिल आपकी भेंट करती है।

केशोराम

श्रेष्ठ सूती वस्त्र

श्री जयनारायणजी व्यासका वक्तव्य

जोधपुर । श्री जयनारायण जी व्यास ने जो ३० मई की रातको सिवाना किले से मुक्त किए गए थे, एक लम्बे वक्तव्य में मारवाड लोक परिषद और राज्य के बीच हुए समझौते के सम्बन्ध में स्थिति स्पष्ट की है, इसमें उन्होंने कहा है; मुझ अपने दांतों के इलाज के सम्बन्ध में जब यहां आना पड़ा था तब बातचीत के सिलसिल में कई ऐसी बातें मालूम हुईं जिनके बाद अधिक समय तक आन्दोलन जारी रखने की जरूरत महसूस नहीं होती थी इनमें मुख्य हैं, सरकार का उन सुधारों के लिए कदम उठाना जिनके लिए लोक परिषद प्रयत्नशील है। सरकार की शासनसुधार आर्थिक सुव्यवस्था सम्बन्धी घोषणा के साथ इसके लिए श्री सुधाकर जी की सेवाएं प्राप्त करना, जागारी बन्दोवस्तके लिए एक अफसर की नियुक्ति और उसे उन मामलोंके सुलझाने की सत्ता देना जिससे किसानोंको कष्ट और हानि होती है, जागीरी पुलिसका सरकारी पुलिस विभागके मातहत होना आदि कार्योंसे यह विश्वास हो गया है कि वर्तमान स्थितिमें सरकारके साथ सहयोगमें रह कर काम करने की काफी गुंजाइश है।

उन्होंने सरकारी घोषणा देख कर जो एक वक्तव्य जोशमें निकाल दिया उसके सम्बन्ध में कहा है कि वह मुझे अधिकारियोंसे मिलनेसे पूर्व नहीं निकालना चाहिए था। इन्स्पेक्टर जनरल पुलिसके पत्रसे इस सम्बन्धमें भ्रम दूर हो गया। अन्तमें उन्होंने कहा कि हम क्षमा याचना करके नहीं छूटे हमने केवल ऐसी नीति की घोषणा की है जो परिषदके लिए हितकर है

प्रजानेताओं की दीवान से भेंट

अलवर राज्य प्रजामंडल के नेता श्री रामचंद्र उपाध्याय, शोभारामजी, मा० भोलानाथजी और हरनारायणजी शर्मा ने पहिली बार अलवर के दीवान सर सिरेमल बापना से भेंट की और राज्य में वैधानिक सुधार जारी करने, जागीर माफी की प्रजा को जमीन पर हक देने आदि के सम्बन्ध में बातें कीं। इस भेंट को प्रजामंडल के क्षेत्रों में आशा की दृष्टि से देखा जाता है। तिजारा जिला सम्मेलन धूमधाम से सम्पन्न हो गया है।

यहां कस्तूरबा स्मारक के लिए श्री सेठ काशीरामजी संग्रह समिति के संयोजक नियुक्त हुए हैं। कोष में गृहमंत्री श्री खुबीरसिंहजी और अन्य प्रमुख व्यक्तियों ने चन्दा दिया है। अधिक धन का संग्रह जारी है।

श्री भवानीदयालजी की अपील

अजमेर। श्री भवानीदयालजी सन्यासीने अजमेरमें होनेवाले राजस्थान प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनके विशेष अधिवेशनके सम्बन्ध में एक लम्बी अपील निकाल कर प्रान्तके साहित्य प्रेमियोंसे सम्मेलनको जीती जागती संस्था बनानेका आग्रहपूर्ण अनुरोध किया है।

भोपालमें कस्तूरबा स्मारक कोष

भोपाल। यहां श्री शाकिर अली और प्रजापुकार के सम्पादक श्री लालसिंहजी कस्तूर स्मारक कोषके लिए धन संग्रह करने का यत्न कर रहे हैं।

हमारा राजस्थान
ART CORNER

(मारवाड़ी पब्लिसिटी ब्यूरो नयी दिल्ली द्वारा)

इंदौर में नागरिक स्वाधीनता परिषद

इंदौर। सैयद अब्दुल्ला ब्रेल्वी की अध्यक्षता में यहां नागरिक स्वाधीनता परिषद सफलता के साथ होगई। परिषद में संयोजकों की ओर से श्री कृष्णकांतजी व्यास महाराजा शिवाजीराव होल्कर के समय से लेकर अब तक की स्थिति का विवेचन करते हुए कहाः अब इंदौर में सभा, जुलूस, भाषण, लाउडस्पीकर के प्रयोग की स्वतंत्रता नहीं है। स्वतंत्र विचार प्रकट करने वाले देश के कई पत्रों का राज्य में प्रवेश नहीं है। यहां नागरिक स्वाधीनता बिल्कुल नहीं है। इंदौर राज्य पब्लिक सिक्यूरिटी ऐक्ट और भारत रक्षा कानून का प्रयोग जोरों से किया जा रहा है। सरकार मुकदमा विना चलाये चाहे जिस को गिरफ्तार करके जेल में रख सकती है और परेशान कर सकती है। अगस्त १९४२ में प्रजामंडल के गैर-कानूनी घोषित होने के समय प्रजामंडल पत्रिका बन्द हो गयी थी वह अभी तक बन्द है। जनता की एकमात्र संस्था का यह हाल है। जिस व्यक्ति को पकड़ना चाहिए उसे न पकड़ कर दूसरे को भी यहां पकड़ा जा सकता है। सरकार ने उन व्यक्तियों को राज्य से निर्वासित कर रखा है जिनका दोष केवल यही है कि वे नागरिक स्वतंत्रता के लिए लड़ते थे। उन्होंनें बताया कि श्री. कन्हैयालालजी वैद्य तो इंदौर स्टेशन पर भी नहीं उतरने दिये जाते।

इसके बाद व्यासजी ने नागरिक स्वाधीनता प्राप्त करनेके उपाय बतायें। परिषद में २०० प्रतिनिधि और २००० के लगभग निमंत्रित सज्जनों ने भाग लिया।

मेवाड़ में सभाबन्दी कानून का वार

उदयपुर। मेवाड में सभाबन्दी कानून पुनः लागू करने का पहिला वार राजसमुद जिले के नवयुवक सम्मेलन पर किया गया है। यहां के नवयुवक मंडल का वार्षिक उत्सव २४, २५, २६ मई को सम्मेलन के रूप में होने जा रहा था और उसके लिए कानून के अनुसार इंस्पेक्टर जनरल पुलिस से आज्ञा माँगी गई। लेकिन उन्हों ने प्राइम मिनिस्टर से आज्ञा लेने की बात कह कर टाल दिया। प्राइम मिनिस्टर से निवेदन किया गया कि मंडल सर्वथा सार्वजनिक संस्था है उस पर भी उन्होंने करने की आज्ञा न दी।

कुम्हेर राजनैतिक सम्मेलन

भरतपुर। तहसील कुम्हेर में ११ और १२ जून को दूसरा राजनैतिक सम्मेलन हुआ इसके साथ ही किसान सम्मेलन और खादी प्रदर्शन का भी आयोजन किया गया था।

अजमेर में साहित्यिक समारोह

अजमेर। गत सप्ताह यहां साहित्यिक सम्मेलनों की धूम रही। प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का विशेषाधिवेशन मुनि श्री जिनविजय जी के सभापतित्व में होकर सम्मेलन का विधान स्वीकृत किया गया। विधान के स्वीकृत न होनसे सम्मेलन का सारा कार्य पिछले चार वर्षोंसे रुका पडा था। उसका दूसरा सम्मेलन कहीं नहीं हो सका। विधान के स्वीकृत होने के बाद दूसरा अधिवेशन कोटा में करना निश्चित किया गया। कार्यसमिति के रिक्त स्थानोंकी पूर्ति करके सम्मेलन को प्रभावशाली बनाने का तय किया गया।

इसी अवसर पर राजस्थान के प्रभावशाली साहित्यिक और यशस्वी पत्रकार श्री सुन्दरलालजी गर्ग की स्मृति में वाणी मंदिर और वाणी वाचनालय की स्थापना की गई। हिन्दी पत्र प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया था जिसका उद्घाटन श्री भवानीदयालजी सन्यासी के हाथों से कराया गया। राजपूताना पत्रकार सम्मेलन का दूसरा अधिवेशन स्वामी भवानीदयालजी सन्यासी के सभापतित्व में हुआ जिसका उद्घाटन श्री सत्यदेव विद्यालंकार ने किया। सम्मेलन की कार्यसमिति का चुनाव होकर स्वामी भवानीदयाल सन्यासी उसके अध्यक्ष और श्री सत्यदेव विद्यालंकार कार्यकर्ता अध्यक्ष तथा मीरा के श्री अम्बालाल और श्री मनमलजी मंत्री चुने गए।

कवि सम्मेलन बहुत ही कामयाब रहा। मारवाड के कवियों की प्रतिभा का चमत्कार देख कर लोग मुग्ध रह गए। इसी अवसर पर अजमेर साहित्यसंघ की भी स्थापना की गई। सर सेठ भागचंजी सोनी, राजासाहब मिनाय, ठाकुर साहब बदनौर और मसूदा के प्रधान कामदार श्री यज्ञदत्त का इस समारोह को कामयाब बनाने में विशेष सहयोग रहा।

बामनियामें भील दीक्षा

बामनिया इंदोरमें राजस्थानी भील सेवक संघकी ओरसे क्षात्रधर्म दीक्षा धर्म सम्मेलन डूंगर विद्यापीठमें दिल्लीके स्वामी चिदानन्दजी सरस्वती की अध्यक्षतामें हुआ। भील बालकोंके नए नाम रखे गए और हजारों को यज्ञोपवीत दिया गया। निम्न आशयके प्रस्ताव सम्मेलनमें स्वीकृत हुएः १, भीलों को जरायम पेशा न मानकर जरायम पेशा जातियों की सूचीमेंसे उनका नाम निकाल दिया जाय, २, उन्हें क्षत्रिय माना जाय, ३, बेगार प्रथा उठाई जाय, ४ अपने धर्मग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की रक्षा। ५ हिन्दू आर्य संस्थाओंसे भीलोंके उत्थान की ओर ध्यान देनेका अनुरोध ६ गांधीजी की दीर्घायुके लिए प्रार्थना।

सांभर मारवाड़ी महिला परिषद

सांभर। यहां १ और २ जून को माहेश्वरी युवक मंडल के तत्वावधान में मारवाड़ी महिला सम्मेलन हुआ। इसमें बड़ौदा की श्रीमती सरस्वतीदेवी दुहाणी अध्यक्ष थीं। श्रीमती कस्तूरीदेवी सोढ़ानी के स्वागत भाषण के बाद श्रीमती सरलादेवी शारदा, गंगादेवी सोढानी, उर्मिलादेवी सोढानी, कमलादेवी गुट्टे, मूलचंदजी अग्रवाल और श्री रामप्रसादजी हुरकट के भाषण हुए।

सम्मेलन में श्रीमती कस्तूरबा की मृत्यु पर शोक प्रकाश के बाद बाल विवाह निषेध, पर्दा निषेध और स्त्री शिक्षा प्रचारके सम्बन्ध में प्रस्ताव स्वीकृत हुए। महिला मंडल की स्थापना की गयी इसकी अध्यक्षा श्रीमती जानकीदेवी मानधाना चुनी गईं।

अध्यापक सम्मेलन

झुंझुनू। यहां राजपूताना शिक्षण मण्डल के तत्वावधान में पं० मुरलीधर जी के सभापतित्व में आयोजित अध्यापक सम्मेलन पूरी सफलता के साथ सम्पन्न हो गया। मण्डल के सुपरवाइजर जयपुर राज्य अध्यापक संघ के सहकारी मंत्री श्री ज्ञानेन्द्रजी, श्री ताडकेश्वर शर्मा, और मण्डल के स्थायी सभापति श्री सनत्कुमार जी शर्मा के भाषणों के बाद प्रस्तावों पर चर्चा हुई। श्रीमती कस्तुर बा के निधन पर शोक, गांधी जी की रिहाई पर हर्ष, श्री श्रीनिवास जी बगडका की रिहाई की बम्बई सरकार से मांग, वेतन की ग्रेड मे वृद्धि, सहकारी समिति की स्थापना, नियमावलि में संशोधन, स्थायी कार्यालय झुंझुनू में रखने, और कूदनकांड की निन्दा के प्रस्ताव पास किये गये।

जयपुर बलाई सम्मेलन

जयपुर। जयपुर बलाई सम्मेलन मनोहरपुर में ४ और ५ जून को श्री भूरामलजी गुरावा के सभापतित्व में हुआ। पं० हरिश्चन्द्र जी शर्मा ने सम्मेलन का उद्घाटन किया। चर्खासंघ के उत्पत्ति केन्द्रों के तथा आसपास के हजारों बलाई सम्मेलन में शामिल हुए। सम्मेलन में श्री हीरालाल जी शास्त्री, श्री दौलतमलजी भंडारी और श्री देशपांडे जी के भाषण हुए। मद्य निषेध, बेगार, लागबाग और चुंगी कौडी की प्रथाओं के विरोध, बलाई बालकों को सरकारी स्कूलों में दाखिल करने के सम्बन्ध में कई प्रस्ताव पास हुए

'हिन्दू' महासभाके प्रधान मंत्री श्री देशपांडे श्री खापर्डे के साथ रियासती हिन्दू-महासभा की कार्य समिति की बैठकमें शामिल होनेके लिए जयपुर गए थे। जयपुर स्टेशन पर उन्हे राज्यमें प्रवेश न करनेका नोटिस दे दिया गया।

गवालियर राज्य सार्वजनिक सभा का अधिवेशन

गवालियर। गवालियर राज्य सार्वजनिक सभा का अधिवेशन उज्जैन में होने वाला था वह सितम्बर या अक्तूबर के लिए स्थगित कर दिया गया है। साथ ही मध्यभारतीय महिला सम्मेलन भी तभी तक के लिए स्थगित कर दिया है।

राय साहेब रेखचंद गोपालदास मोहता

स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स

अकोला (बरार)

तारका पताः—MOHTA

टेलिफोन नं. ३४ और ५६

बरार की सबसे बड़ी और खुद मालिकी की एकमात्र अप-टु-डेट मिल

★ ★ ★ ★

इस मिलमें सब तरहका कोरा, धुला व रंगीन शुद्ध स्वदेशी कपड़ा व सूत तैयार होता है।

प्रोप्रायटर
सेठ गोपालदास मोहता, एम्. एल. ए. हिंगणघाट.
बैंकर, लैण्डलॉर्ड, टेक्सटाईल, आईल एण्ड राईस मिल्स
व जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरियोंके मालिक
प्रेसिडेण्टः—
सी. पी. एण्ड बरार फेक्टरी ओनर्स एसोसिएशन

सम्पूर्ण रूपसे
● भारतीय पूंजी ●
● भारतीय श्रम ●
● भारतीयप्रबन्ध ●

सस्ता व टिकाऊ होनेसे भारतके प्रत्येक विभागमें हमारा कपड़ा उपयोगमें लाया जाता है

हमारे कन्सर्न्स

फैक्टरियाँ

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, अकोला

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, वर्धा

बुलाकीदास गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, हिंगणघाट

दूकानें

भीखणचंद रेखचंद (हैड आफिस) हिंगणघाट

राय साहेब रेखचंद गोपालदास, अकोला

रायसाहेब रेखचंद गोपालदास, वर्धा

हमारे मैनेजमैण्ट के लिमिटेड कन्सर्न्स

लक्ष्मी बैंक लिमिटेड, अकोला (शेड्युल)
सी. पी. एण्ड बरार की सबसे बड़ी
जोइन्ट स्टॉक बैंक
शाखाएँः—बम्बई (५३ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट और ज़वेरी बजार), दिल्ली (चांदनी चौक), ८ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्ता, नागपुर (इतवारी, सीताबर्डी मेनरोड), रायपुर, अमरावती, हिंगणघाट, वर्धा, खामगाँव, बरहानपुर, खंडवा, जलगांव, गोन्दिया, द्रुग और धमतरी.

श्री गणेश आईल मिल्स लि. गोन्दिया.
इस मिलका शुद्ध व सस्ता तेल सब जगह प्रसिद्ध है

गोपालदास मोहता एण्ड कं. लि.
शाखाएँः—अकोला, नागपुर और गोन्दिया
इस कम्पनीमें सब तरहके कपड़े व सूतका काम होता है।

बुलाकीदास मोहता एँण्ड कं. लि. अकोला.
यह कई कंपनियोंकी मैनेजिंग एजन्ट व मैनेजिंग डायरेक्टर है

नेशनल कॉमर्शियल कारपोरेशन लि. बम्बई
शाखाएँ अकोला खामगाँव
इसके डिपार्टमेण्ट्सः—काटन जत्था, मिल व जिन स्टोर्स बीमा व अन्यान्य एजेन्सियें

एडवान्स ट्रेडिंग कम्पनी लि. अकोला
शाखाएं—बम्बई, वर्धा, राजनांदगांव
इस कम्पनीमें रुई, सरकी व अनाज वगैरे के कमिशन का काम होता है।

कॉमर्शियल इन्श्युरन्स कंपनी लिमिटेड, (लाईफ)
एडवान्स इन्श्युरन्स कंपनी लिमिटेड, (जनरल)

इन्दोर विवाह–वितण्डा की गूंज

गत ७ जून १९४४ के माहेश्वरी अंक में इन्दोर में ६ मई को माहेश्वरी समाज में हुए एक विवाह और उसके सिलसिले में उपस्थित हुए अप्रिय प्रसंग का विवरण प्रकाशित हुआ था। हमने यह निवेदन किया था कि हमारे कुछ लिखने के पूर्व यदि सम्बन्धित व्यक्ति सारी बातों का स्पष्टीकरण कर दें, तो बहुत अच्छा हो। इसपर हमारे पास जो कई पत्र आये हैं उन्हें हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं:—

जिस लडकीकी शादी हुई थी उसके भाई श्री भंवरलालजी गणेशीलाल ने लिखा है:—

ता. ७–६–४४ का "माहेश्वरी" पढ़कर मुझे बहुत दुःख हुआ। मैं सौगंध खाकर कहता हूं कि मेरी बहन रतनबाई जिसका कि अभी हाल में विवाह हुआ है, तेरह वर्ष व तीन महीने की है। मुझे उन सज्जनों की हरकत पर जिन्होंने विवाह को रोकने की कोशिश में बगैर उम्र की जांच किये ही मजिस्ट्रेट के यहां अर्जी दी थी, बड़ी हंसी आती है। क्या इसी को सुधार कहते हैं? ईनानीजी व प्रभुदयालजी काकाणी को इस विषय में कोई ज्ञान नहीं था। यह संबंध तो मेरे पिता ने एक अन्य व्यक्ति के साथ जो कि पहले वह अपने आपको माहेश्वरी कहता था बाद में अन्य जाति का निकला किया था। बाद में जब ईनानीजी को वह बात मालूम हुई तो हम लोंगो को वे इन्दौर ले आये। इन्होंने हम को दो चार लडके बतलाये। परंतु वे सब नट गये तब श्रीकंवरलालजी ने जो कि तीससे तेतीस साल के लगभग हैं, हां भरली और हमने विवाह करदिया।

श्री. **प्रभूदयाल काकाणी**, छावनी इन्दोर

मैंने ता. ७।६।४४ का माहेश्वरी पत्र पढ़ा। उसमें नवयुवकोंने ९ वर्ष की कन्या का विवाह लिखा है वह बिल्कुल असत्य है। साथ ही इसके उन्हों ने लिखा है कि विजातीय संबंधका विरोध इन्दोर ही में हो गया था यह भी बिल्कुल झूठ है। श्री. ईनानीजी को तो मैं अपने साथ अपने समुदाय के लोगों से मिलाने ले गया था मैं जो उस समुदाय का सरपंच हूं तथा शामपुर के गणेशराम सोमाणी के कुंटुम्बी तक भी जब तक गणेशरामने देवबख्शजी बाहेती के घर पर आकर उस विवाहसंबंधी निमंत्रण नहीं दिया तब तक इस मामले से अपरिचित थे। मैंने उन युवकों का सप्रेम स्वागत किया, उन्हें लड़की देखनेको कहा। उन सब ने यही कहा कि हमें आप पर पूर्ण विश्वास है, हम कुछ नहीं देखते जो इस प्रकार विश्वास कर चले जाते हैं वे आध घंटे ही बाद क्यों पुनः आकर अविश्वास करते हैं? यही कारण था जिसकी वजह से व्यर्थ का उपद्रव खड़ा हुआ। इसके अतिरिक्त श्री. चौधरी साहबके इन आवेशपूर्ण शब्दों से कि "हम लड़की को देख कर ही जावेंगे और उसे तुम्हें दिखाना पड़ेगा" कटुता उत्पन्न हुई। लड़की पक्ष के युवक भी बिगड़ गये। मैंने दोनों पक्षों को गर्म नर्म शब्दों से शान्त किया और ईनानीजी और रामविलासजीने इन चारों युवकों को नम्रतापूर्वक संतोष दिला दिया था। परन्तु इन महाशयों के वहां से चले जाकर फिर वापिस आकर इस प्रकार उपद्रव मचाने का क्या उद्देश्य था यह मेरी समझमें नहीं आया। मैं आपको पूर्ण विश्वास दिलाता हूं कि लड़की की आयु १३ वर्ष से अधिक है, और लड़के की आयु २५ और ३० के भीतर है क्योंकि मैंने विवाह के समय इन के माता पिता से बातचीत इस विषयमें खास करके की है। मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने कृपा कर मुझे अपना मत भेजने की आज्ञा दी है।

श्री शिवचंदजी ईनानीने अपने पत्रमें लिखा है:—

"मुझे इस बातका दुःख है कि मेरे मित्रोंने ने तो मेरे द्वारा वर्णित घटनाका कुछ भाव समझा और न माहेश्वरीमें प्रकाशनके लिए लेख भेजनेके पूर्व एवं आज तक भी लड़का–लडकी की ठीक अवस्था जाननेका प्रयत्न किया। जिस प्रकार किसी द्वेषपूर्ण हृदयने इन महाशयोंको उत्तेजित किया, उसी प्रकार स्थानीय आर्य समाजी भाइयोंको भी विवाहके ७ दिन पूर्व गुमनाम चिट्ठी लिखकर आवेशमें डाला था, परंतु आर्य समाजियोंने इस गुमनाम चिट्ठीके पाते ही अपनी शंकाओंका समाधान उचित तौरसे मिलकरके लिया। चाहिए तो यह था कि माहेश्वरीमें वर्णित चार सज्जनोंको यदि गुमनाम चिठ्ठी दोपहरको मिली थी तो वे दिनमेंही संबंधित व्यक्तियोंसे मिलकर सारी बातें जान लेने का कष्ट करते परंतु वैसा नहीं किया। मैं और श्रीयुत प्रभुदयाल जी यदि कुछ अवकाश निकालकर समाजोन्नति के पवित्र उद्देश्यसे इधर उधर जाते हैं तो इसका यह मतलब नहीं कि हम समाज के नैतिक पतन पर उतारू हो गये हैं। मेरे मित्रों की युवावस्था ने उन्हें आवेश में शीघ्रही डाल दिया और वाद विवादने उग्ररूप पकड़ लिया। मारपीट बिल्कुल नहीं हुई। लड़की पक्ष के कुछ युवकों ने श्री जगन्नाथ जी चौधरी का हाथ पकड़कर कड़े शब्दों में कहा था "क्या करोगे? क्या चाहते हो? लड़ने के लिये आये हो, क्या? आदि आदि" मुझे शाब्दिक युद्ध के अतिरिक्त कुछ विशेष नहीं दिखा। वास्तवमें गुमनाम चिट्ठी भेजने वाले मित्र की सहायता की धुनमें इन युवकों ने जांच पड़ताल में संयत भाषा, नम्रता, आदि का प्रयोग करने की कोई जरूरत ही नहीं समझी। यदि वे दिनमें मुझसे सब बाते पूछ लेते तो इस घटना का कोई प्रसंग ही न आता। उन्होंने गुमनाम की कदर प्रत्यक्ष से अधिक की। अफसोस यह है कि उन्हें अदालती कार्रवाई के लिए समय मिल गया पर दिनमें मुझसे मिलने के लिए समय नहीं मिला। लड़की और लड़का तथा इन दोनों के संबंधी आज भी इसी इन्दोर में हैं। मैं उनसे प्रार्थना करूंगा कि वे अपनी शंकाओं का समाधान करलें। हो सकता है कि कोई व्यक्ति किसी की दृष्टि में ३० का जंचे वही दूसरे की दृष्टिमें ३५ या २५ का जंचे और असलियत मालूम होनेपर वह २९ या ३२ का निकल जाय। मैंने यदि २५ वर्ष लिखा है तो यह मेरा अन्दाज है या था न तो मेरेपास कुँवरलाल की जन्मपत्री है न उन युवकों के पास। संभव है वह २५, ३५ और ५० तीनोंही अवस्था के न हों, पूर्ण जांच होने से पूर्व मेरे मित्रोंनें अवस्था सम्बधी जो जानकारी प्रकट की है वह झूठी है। कुँवरलाल की माता और पिताही इसके लिए विशेष जानकर मानें जा सकते हैं–अन्य नहीं। लड़की की उम्र के सम्बधमें मैंने खुद कुराबर ग्राम के कतिपय सज्जनों से जांच की है। मैं अबभी दावेसे कहता हूं कि लड़की किसीभी अपरिचित व्यक्ति को १३ वर्ष से भी कम नही जँच सकती।

मैं यह भी बता देना आवश्यक समझता हूं कि इस प्रकार के उपद्रव किस कारण किसने खड़े किये। मेरे मित्र शायद जानते भी होंगे कि इन्हीं प्रिय मित्रों की कृपा का फल था कि श्री रामविलासजी कचोलिया को विनाकारण लगभग ५ वर्षों तक जाति बहिष्कार के झगड़ों का मुकाबला करना पड़ा था। उन झगड़ों के कारण श्री रामविलासजी के कनिष्ट भ्राताओं को अपनी संतानों के विवाह संबंध खोजने में काफी कष्ट झेलने पड़े थे इस कारण भाइयों में परस्पर वैमनस्य चला आ रहा था। जब गत साल श्री रामविलासजी को जेल यात्रा करनी पडी तो उनकी पत्नी रुग्ण थी और उन्हे अपनी दुकान का चार्ज संभाल लेने वाला अपने साले के अलावा कोई विश्वस्त व्यक्ति नहीं दीख पड़ा। अस्तु उन्होंने अपने साले कंवरलाल को सम्पूर्ण गृहकार्य, रुग्णाकी सेवा, और दुकान आदि कार्यों के प्रबंध का भार सौंपा। यह सब उनके भाइयोंको असह्य मालूम हुआ और उन्होंने कंवरलालको मारा भी तथा काफी झगड़ा हो गया था। इधर कंवरलाल ने अपनी जिम्मेवारियां इस खूबी से निबाहीं कि जब राम विलासजी जेलसे बाहर आये तो उनपर बहुत खुश हुए और अपने खर्च से शीघ्र उनकी शादी करने की इच्छा प्रकट की। यह उनके भाइयों को बुरा लगा।

इस दर्मियान श्री. प्रभुदयाल ने एक सप्ताहकी छुट्टी प्राप्त की थी। उन्होंने मुझसे कहा कि चलिए इस सप्ताह में अपने जाति भाइयोंसे मिलें तथा कुछ सुधार योजनाएं उन्हें सुझायें। हम लोग सारंगपुर आदि जानेवाले थे कि इसी लड़की का माजरा सरपंच होने से इनके सामने आया। इन्होंने आज्ञा दे दी कि गणेशराम सोमाणी को जाति बाहर किया जाय। मुझे उनकी यह आज्ञा असह्य और अनुचित जँची। मैंने इस संबंधमें अपने विचार रखे जो सर्व सम्मति से मान लिये गये। जिससे एक कुँवारी लडकी सामने दिखी। इसके पिताको हरचंद समझाया कि शादी १२ मास देर से करो किन्तु वह न माने और मुझसे पूछा गया कि क्या इन्दौर में कोई युवक तैय्यार हो सकता है। उन ग्रामीण पंचोंकी सम्मति और आज्ञानुसार दो तीन नवयुवकों से पूछा गया किन्तु वे इतने भीरू विदित हुए कि पंचायत–रूढि के विरुद्ध कुछ भी करने को तैयार न हो सके। तब कंवरलालजी से पूछा गया और उन्हे लडकी दिखायी गयी। वह विवाह करने को तैयार हो गये और लडके लडकी के सभी संबंधियों ने इसका समर्थन किया। चांदमलजी और श्रीकृष्णजी कचोलिया अपने भाई रामविलास से कुछ विरोध प्रत्यक्ष में न कर विवाह में उपद्रव मचाना चाहते थे। उन्हों ने पहले आर्य समाज की ओर से गुमनाम चिठ्ठी भेजी। वहां सफल न होने पर माहेश्वरी सजनों को भेजी और इस प्रकार का उपद्रव मचाया। नवयुवकों को सब बातें बतला दी गयीं और उन्होंने कहा भी कि हमें संतोष हो गया पर पुनः आधे घंटे बाद आये और आवेश पूर्ण ढंग से पेश आये जिस पर वाक युद्ध हो गया परंतु मार पीट जैसा कोई कार्य नहीं। पुलिस का पहरा केवल इस लिए था कि उसी स्थानपर श्री. निगम साहब रजिस्ट्रार सेण्ट्रल इंडिया एजेन्सी के यहां १५ हजार रु. की दो दिन पहले चोरी हो गयी थी जिसकी तलाशी के कारण रात में अपरिचित व्यक्तियों को पुलिस बाग में नहीं आने देती थी। यह है कच्चा चिठ्ठा!

यू. पी. मारवाड़ी सम्मेलन

अधिवेशन की तैयारियाँ

सूचित करते प्रसन्नता होती है कि बनारसमें युक्त प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलनके अधिवेशनका आयोजन इसी श्रावण अथवा भादो मासमें होने जा रहा है। अभी तक निश्चित तिथि की घोषणा नहीं हुई है किन्तु स्वागत समिति गठन गत तारीख ३, ६, ४४ को हो गया। श्री बृजलालजी खेमका स्वागताध्यक्ष, श्री बैजनाथजी केडिया स्वागत मंत्री चुने गये। वहांके बंधु समारोहको पूर्ण रूपेण सफल बनानेके लिए विशेष प्रयत्नशील हैं।

बिरला बालिका विद्यापीठ

बिरला बालिका विद्यापीठ, पिलानी, ता. १७ जुलाई को खुलेगा। राजपुताना बोर्ड द्वारा स्वीकृत हाई स्कूल तक लड़कियों की शिक्षा के लिये हर प्रकार की सुविधाएं हैं: जैसे चार दीवारी के भीतर बड़े बड़े छात्रावास, खेल के मैदान, अध्यापिकाओं के रहने के स्थान और गृह कार्य व्यायाम, संगीत तथा चित्र कला पर विशेष ध्यान।

छात्रावास तथा विद्यालय में कोई फीस नहीं है। छात्राओं को केवल अपने खान, कपड़ों तथा पुस्तकों का खर्चा देना होता है। गरीब छात्राओं को छात्रवृत्ति भी दी जाती है। सम्पूर्ण विवरण के लिये प्रिंसिपल बालिका विद्यापीठ, पिलानी से पत्र व्यवहार करें।

कमज़ोर, और कच्चे कागज़ों के पेकिंग से होनेवाली

अपने व्यवसायकी हानिको बचाइये

हमारा मज़बूत, चीमड़ और सुन्दर

गैंडा मार्का

बैम्बू पल्प का बना हुआ क्राफ्ट पेपर

आपकी मुसीबतों को दूर कर देगा

यह उच्चकोटि का पेकिंग कागज़ है

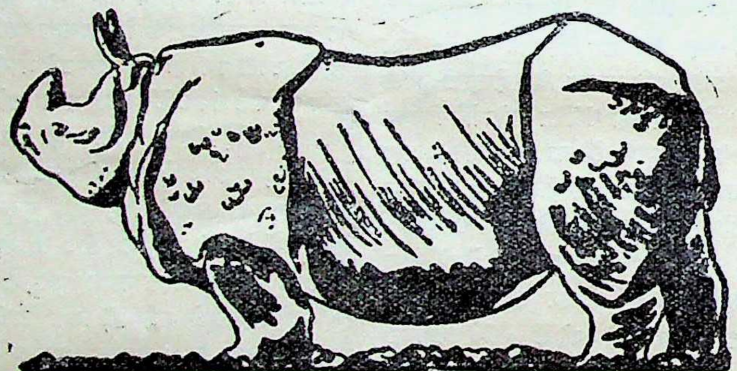

भारतीय बाजारमें आज इसका प्रतिस्पर्धी नहीं

हमारी मिल वाटरप्रूफ कागज (Water Proof Craft Paper) तथा हरेक किस्मका बोर्ड भी तैयार करती है।

एक वार इस कागज़ और बोर्ड का व्यवहार करनेपर
आप दूसरे पेकिंग कागज़ और बोर्ड का नाम न लेंगे

ओरिएण्ट पेपर मिल्स लिमिटेड

८, रायल ऐक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता

राजस्थानी संसार

समयकी माँगको पहचानो

हमारे समाजको समयकी माँग दिखलाते तो हमारे नेतागण थक गये लेकिन हमारा बहुजन समाज जिन बातोंके बारेमें सोचना चाहिये, उनके बारेमें नहीं सोचता । यह हमारे लिये अत्यंत दुःखका विषय है, धनका बुरी तरह प्रदर्शन करनेकी मानो हमारे समाजको आदतही पड़ गई है । धनका अगर सदुपयोग किया जाय तो वह दुगुना चौगना बढ़ने के साथ हमारी शान तथा प्रतिष्ठा भी बढ़ेगी । लेकिन दुरुपयोग करनसे हम अपनी इज्जत शान और प्रतिष्ठा खोदेंगे। करीब २।३ रोज पूर्वही कुछ मित्रोंसे ज्ञात हुआ है कि नासिक जिलेके दिंडोरी तालुके के एरियामें ९ प्रतिष्ठित राजस्थानी बाँधवोंके नाक काट दिये गये, यह दुःखद समाचार सुनकर तो बहुत दुःख हुवा और होना स्वाभाविक भी है,– लेकिन इससे समाज अबकी समयकी माँग को पहचानता हुआ अपने नेताओंके द्वारा प्रदर्शित मार्गपर चलेगा ऐसी मुझे दृढ़ आशा है। जिन सज्जनोंकी नाकें काट दी गयी हैं उन लोगोंके प्रति सहानुभूति प्रगटकरने में मेरी कलम असमर्थ है, अब भी समाज के अन्दर ऐसी कुरीतियाँ प्रचलित है कि जिनका रहना हमारे जीवनके लिये एक खतरनाक घटना है। शादी मौसर आदि रूढ़ियों के पीछे धनका मनमाना प्रदर्शन किया जाता है, जोकि आजके जमानेमें नहीं करना चाहिये । हमारे समाजकी महिलाओंको आज हजारों रुपयोंकें जेवर कीमती वस्त्र पहिनकर रास्तोंसे गुजरना अच्छी बात नहीं है । समय बहुतही खराब है, एक ओर अरबों रुपये खींचे जारहे हैं तो दूसरी ओर करोड़ों लोग भूखकी आग से छटपटा रहे हैं । इन बातोंका जोकि हमारे जीवन के लिये खतरनाक सावित हो चुकी हैं अमल बंद होना चाहिये । राष्ट्रीय औद्योगिक करणमें यह फिजूल खर्ची लग जानी चाहिये। इससे हमारी प्रतिष्ठा शान तथा इज्जत बढ़कर हमारे रहनसहनका स्टैण्डर्ड भी ऊँचा हो जायगा । हमें समयको देखकर सब बातोंमें परिवर्तन करना चाहिये । इसी में ही हमारा गौरव और रूढी पालन है । मैं समाजके नेताओंसे इन सब बातों में जन साधारण के पथप्रदर्शन के लिए अपील करता हूं ।

सुरेशराठी

मन्त्री श्री समाज सेवादल ।
प्रधान कार्यालय,
C/oजमना निवास, नासिक.

अ. भा. मारवाड़ी महिलासम्मेलन के लिये एक अपील

अनेक विचारों के बाद मैं यह वक्तव्य प्रकाशित करने को बाध्य हुई हूँ। जब दिल्ली में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन हुआ था, तब मैं आशा से भर गई थी। इसकी आवश्यकता तो सब महसूस करते हैं कि समाजसुधार के लिये यह जरूरी है कि स्त्रियोंमें भी काम हो ताकि वे पुरुषों के कंधे से कंधा लगा कर जीवन के कार्यों में अपने अनुरूप सहयोग प्रदान कर सकें। यही कारण था कि मैंने उक्त सम्मेलन की सभानेत्री बनना स्वीकार किया था। मेरी आंतरिक कामना है कि मैं समाज की कुछ सेवा कर सकूँ। मेरा मन्तव्य है कि प्रत्येक समाज के सदस्य को समाज की उन्नति के लिए कार्य करना चाहिये । सम्मेलन को हुए आज एक वर्ष हो रहा है । इस बीच हम कुछ भी नहीं कर पाये हैं ।

अ. भा. मा. महिला सम्मेलन ने सात महिलाओं की एक कमेटी बनाई थी और उसको यह काम सुपुर्द किया था कि वह महिला-सम्मेलन के विधान को तैयार करे । यह काम सबसे महत्वपूर्ण था और इसके पश्चात् ही दूसरे काम हाथ में लिये जा सकते थे । किन्तु अनेक प्रयत्न करने के पश्चात् भी मैं किसी का भी सहयोग न प्राप्त कर सकी ।

अ. भा. मा. महिला सम्मेलनका यह प्रथम वर्ष था । काम करनेके लिये पैसों की आवश्यकता होती है। जैसेः—प्रचारार्थ अपना साहित्य छपवाना व भ्रमण करना आदि । महिला सम्मेलनके पास उसके लिये कोई अपनी निजी शक्ति न थी। इसके लिये मैंने अखिल भारत वर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन को लिखा कि वे हमें कुछ सहायता प्रदान करें किन्तु वहाँसे कुछ भी सहायता प्राप्त न हो सकी ।

मुझे सम्मेलन की इस दुर्दशा पर बहुत दुःख है। मैं विनम्र भावसे महिला सम्मेलनके आयोजकों से पूछना चाहती हूँ कि ऐसे संमेलनोंसे क्या लाभ? सिवाय फिजूलखर्ची और समय की बरबादी के।

संसार अपने इतिहास का एक सुखद प्रगतिशील काल का सृजन करने के लिये आज यह भयावह संघर्ष कर रहा है । यह परिवर्तन का युग है । हम आगे ही पिछड़े हुए हैं फिर भी हम आँखें क्यो मूंद लेते हैं वास्तविकता से ? हमें बहुत काम करना यह सब स्वीकार करते हैं। फिर भी यह अकर्मण्यता क्यों?

अब भी समय है । मैं सब मारवाड़ी महिलाओं से और विशेष कर शिक्षितों से नम्र निवेदन करती हूँ कि वे अपने समाज की दशा सुधारने के लिये एक सूत्र में बँध कर कार्य करने के लिये कटिबद्ध हों और पूर्ण सहयोग प्रदान करें ।

निवेदिका

सरला कुमारी शारदा

विना घूंघट विवाह सफेद झूठ!

"माहेश्वरी" पत्र संख्या ३ ता. ७ जूनके अंकमें सीहोर विवाह की रिपोर्टमें जो यह कहा गया है कि उसमें घूंघट को स्थान नहीं दिया गया यह बात सर्वथा असत्य है। विवाह तो घूंघटमें ही हुआ है, सम्भवतः वर महोदय के विचार घूंघट के विरोध में हों इस कारण भविष्य में पर्दा न रखा जाय, यह बात दूसरी है। इसकी सत्यता भी आनेवाला समय बतायेगा। हां वर महोदय अवश्य शुद्ध खादी की पोशाक में थे। लेकिन वधू के लिये जो वस्त्र वरी में भेजे गये सब विदेशी बनारसी काम के थे। कुछ इनी गिनी रुढ़ियों को छोड़कर सब मुख्य रुढ़ियां यथाविधि अपनाई गईः–मिलनीमें रूपचंदजी (कलदार) मध्यस्थ थे। बरणा जान मनाना, बरी, भात, दहेज, दागडदोल्या, पग धुपाई, अश्लील गायन सब को यथापूर्व स्थान था। भात की जीमणवार में दांतघिसाई टैक्स दिया लिया गया। वर महोदय ने जीमणवार में भेंट स्वीकार की मगर कुछ बढ़ जाने के बाद।

रुढियां जिनका त्याग किया गया—

(१) वर महोदय ने जामा या (बागा) नहीं पहना।

(२) मोढ़ विवाह संस्कार के अतिरिक्त नहीं बांधा गया।

(३) जुआ जुई नहीं हुए। कांकण डोरे अवश्य खुलें।

(४) कामण स्त्रियों द्वारा गाया गया मगर नापा नूपी नहीं हुई ।

भट्टी को लात लगाना, तनी खोलना सब हुए। यदि वर महोदय थोड़ा साहस दिखाते और दृढ़ रहते तो अवश्य ही यह विवाह सुधारपूर्ण, अनुकरणीय, आदर्श विवाह हो सकता था। वर वधू अवश्य ही सुसंस्कृत और जोड़ा श्रेष्ठ और योग्य है। **—एक प्रत्यक्ष दर्शी**

मध्यभारत के रियासती कार्यकर्ताओंसे

खंडवा (डाक से)। मध्यभारत देशी राज्य लोक-परिषद् के प्रधानमंत्री श्री कन्हैयालाल वैद्य ने मध्यभारत के रियासती कार्यकर्ताओं और संस्थाओं के नाम नीचे की अपील प्रकाशित की है:—

'तीन वर्ष बाद परिषद् की कार्यसमिति की बैठक २ और ३ जुलाई को खंडवा में हो रही है। अतएव जुलाई ४१ से आज तक के राजनैतिक, मजदूर किसान आदि आंदोलन, हलचलें, हड़तालें, गिरफ्तारियों, सजा जुर्माने निर्वासन, मुकदमें आदि जो जो घटनाएं– मध्यभारत की मालवा, बुन्देलखंड, बघेलखंड भोपाल, ग्वालियर आदि एजन्सी की रियासतों में हुई हैं उन सबकी विश्वस्त और विस्तृत तथा लिखित जानकारी मध्य भारत की रियासतों के राजनैतिक मजदूर किसान कार्य कर्ता और संस्थाओं के पदाधिकारी ३० जून तक खंडवाके पत्ते पर भेजने की कृपा करें, जिससे कि परिषद की कार्य समिति के सामने उन विवरणों को रक्खा जा सके और उचित सिंहावलोकन किया जा सके।

श्री शारदाजी की काश्मीर यात्रा

राजस्थान केसरी कुंवर चांदकरणजी शारदा प्रधान राजस्थान प्रान्तीय हिंदू सभा अजमेर अपने पूरे स्टाफ के साथ काश्मीर रियासत का भ्रमण कर रहे हैं। २७ मई को राजौरी काश्मीर में जम्मू काश्मीर राज्य हिन्दू सभा के अधिवेशन में भाग लेकर अब आप श्रीनगर पहुंच गये हैं। श्री शारदाजी काश्मीर राज्य की हिंदू सभा सम्बंधी हलचलों का निरीक्षण कर रहे हैं और काश्मीर में स्थान स्थान पर हिंदू सभाएं स्थापित करने की योजना बना रहे हैं।

भील सेवा संघ, उदयपुर

मेवाड़में करीब पांच साल पहले, सन् चालीसके अकाल के समय, भील सेवाका कार्य आरम्भ किया गया था। सन् बयालीसमें इस कार्य को अधिक संगठित रूप देनेके लिये 'भील सेवा समिति' की स्थापना की गयी और अब इसके कार्य क्षेत्रको वृहत रूप देने और इसकी हलचलोंको चतुर्मुखी बनाने के लिये इसे 'भील सेवा संघ' में परिणत कर दिया गया। श्रद्धेय ठक्कर बापा इस संघके मार्गदर्शक हैं। आपने संघको २५०) प्रति माह सहायता दिलानेकी व्यवस्था भी कर दी है। संघने भीलोंमें अनेक प्रकारके सेवा कार्य आरम्भ कर दिये हैं, योग्य कार्यकर्ता और धनाभावके कारण जो सेवा-कार्य अभी प्रारम्भ नहीं किये जा सके हैं, वे भी उचित व्यवस्था होते ही शीघ्र शुरू कर दिये जायंगे।

राजस्थान भील विद्यापीठ

संघने समस्त राजस्थानके भील-बच्चोंके अनुरूप उच्चसे उच्च शिक्षा देनेकी क्रियात्मक व्यवस्था तथा कार्य-पद्धति निर्धारित करके विक्रम-द्विसहस्राब्दि महोत्सवके शुभ अवसरपर 'राजस्थान भील विद्यापीठ' की स्थापना उदयपुरमें कर दी है। इसमें भील छात्रोंके लिये उच्चसे उच्च शिक्षाका प्रबन्ध किया गया है। विद्यापीठ की ओरसे एक छात्रावास भी चलाया जाता है, जिसमें इस समय चालीस छात्र रहते हैं।

पञ्चवर्षीय योजना

संघने भील सेवाकी एक पंचवर्षीय योजना तैयार की है। इस योजनानुसार भील बालकों की शिक्षाके साथ-साथ उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थितिको ऊंचा उठानेका भी भरसक प्रयत्न किया जायगा। संघको अपनी सम्पूर्ण पंचवर्षीय योजना कार्यान्वित करनेके लिए २८२१०) की आवश्यकता है।

बम्बईके नागरिकोंसे अपील

संघकी सहायतार्थ धन-संग्रह करने के लिये मेवाड़ प्रजामण्डलके अध्यक्ष श्री माणिक्यलालजी वर्मा हाल में बम्बई आये हुए थे। और कई दिन रह कर वापस चले गये हैं निम्न पतों पर सहायता भेजी जा सकती है।

(१) मंत्री, भील सेवा संघ उदयपुर
(राजपुताना)

(२) जीवनदास-एस-सम्पत युनाइटेड पोटरीज स्लासेवर मार्ट ८० ए मुहम्मद अली रोड बम्बई. फोनः—२४७६२

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियां, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

बिक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

IMPERIAL TRADING Co.

Alli Chambers, Tamarind Lane, Fort,
Telegrams: "LOOMSPRING"

BOMBAY.
Telephone No. 27580.

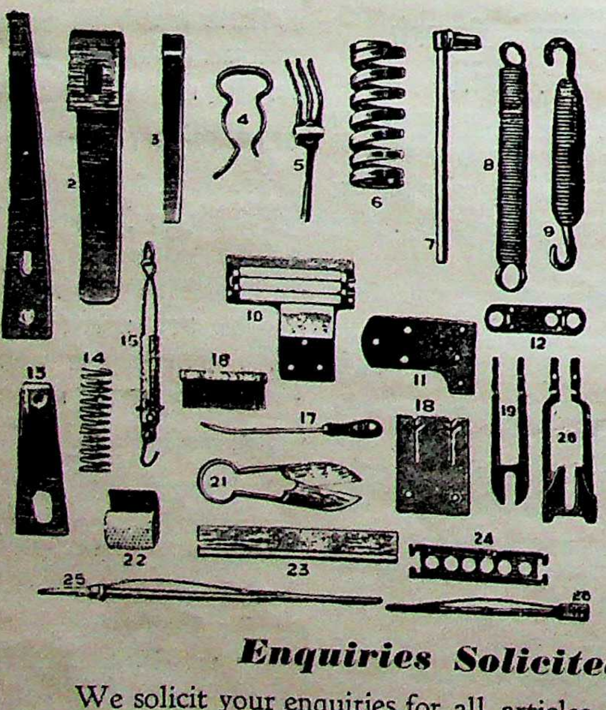

OUR SPECIALITIES

Springs, Temples and all accessories for Spinning and Weaving Machinery

BESIDES, WE HOLD AN EXTENSIVE STOCK of

- Stripping Fillets
- Burnishing „
- Folding „
- Plaiting „
- Winding „
- Likering „
- Card Strippers
- Walton Metallic Brush
- Lickerine Wires
- Lap rods & Oils cans Braime & "K"
- Pot eyes for Bleaching dept.
- Hydraulic Ram Rings
- Jackson & Harries Fastners
- Blue Glass Rods & Creel Steps
- Card Chains & Link Chains
- Hickory wood Picking Sticks
- Dobby Lattices Comber Boards & Taper Pegs
- Perth Gauge Glass & Glass Lubricators
- etc. etc. etc. etc.

Enquiries Solicited

We solicit your enquiries for all articles connected with the Spinning & Weaving Industry and can quote you competitive prices.
We will gladly send to you our latest price list on application.

Agents :—
RATILAL & Co., Cross Lane, Railwaypura Post, AHMEDABAD.
B. N. MODI & Co., 14/24, Civil Lane, CAWNPORE.

देश विदेश की चर्चा
ART CORNER

यूरोपपर चढ़ाई

तेहरान और काहिरामें किये गये सैनिक-निश्चयोंको अन्ततः उत्तरी फ्रांस पर ५ जून को चढ़ाई करके कार्यान्वित कर दिया गया। यूरोपपर चढ़ाई हो गयी। हिटलरी दुर्गकी अभेद्य 'पश्चिमी दीवाल' तोड़ दी गयी। हालैण्डसे लेकर स्पेनकी सीमा तक, समुद्रके किनारे बनायी गयी जर्मनोंकी दुर्गपंक्तिका भेदन कर दिया गया। दूसरा मोर्चा खुल गया। नाजियोंकी 'गुलामी' से यूरोपको 'आजाद' करनेकी कार्रवाई शुरू हो गयी। आज उत्तरी फ्रांसके रणक्षेत्रमें, हिटलरका विनाश कर डालने के लिये बनायी गयी योजनाओंको क्रियात्मक रूप दिया जा रहा है। इसे हम संसारकी पीड़ित मानवताके उद्धारकी लड़ाईतो नहीं मानते किन्तु यूरोपके पुनरुद्धारका युद्ध अवश्य मानते हैं।

मित्र-सेनाओंको फ्रांसपर चढ़ाई किये १५–१६ दिन हो चुके हैं। आक्रमणके प्रथम सप्ताहमें मित्र-सेनाओंको जैसी सफलता मिली थी वैसी सफलता दूसरे सप्ताहमें नहीं मिली। जर्मन-सेनाओंने ज़ोरदार जवाबी हमला शुरू कर दिया है। कई स्थानोंपर जर्मनोंको सफलता भी मिली है। इसमें शक नहीं कि मित्र सेनाएं जैसे-जैसे फ़्रांसमें आगे बढ़ेंगी वैसे-वैसे जर्मनोंका प्रत्याक्रमण जोर पकड़ता जायगा। मित्र-सेनाएं फ़्रांसमें अपने समुद्रतट-स्थित अगली चौकियोंसे कहीं-कहीं १८ मीलतक भीतर घुस गयी हैं और ८० मील लम्बे इलाकेमें मित्रोंने अपनी सेनाके आधारस्थलोंको मजबूत बना लिया है। फ़्रांसके चार-पांच सौ वर्गमीलपर मित्रोंका अधिकार हो गया हैं। फ़्रांसमें अमेरिकन सेना के कमाण्डर जनरल ओमर ब्रेडलेने कहा है कि फ्रांसके धरातलपर मित्र-सेनाओंके आधारस्थल अब काफी मजबूत और सुरक्षित हो गये हैं। अबतक मित्र-सेना के करीब १६ हजार सैनिक फ्रांसमें हताहत हुए हैं। जर्मनीके लगभग १० हजार सैनिक बन्दी बनाये गये हैं। जनरल मौंटगोमरी चेरबोर्ग प्रायद्वीपपर कब्जा कर लेना चाहते हैं और उनकी फौजें इसी उद्देश्यकी पूर्ति के लिये जोर लगा रही हैं। केनका पतन होनेके पहले महाविकराल युद्ध होनेकी संभावना है। उसदिन मित्रराष्ट्रोंकी एक सैनिक विज्ञप्तिमें कहा गया था कि:—"थोड़े समयके लिये तो बहुत बड़ी चिन्ता महसूस की जा रही है। अगर जर्मनोंने तेजीसे बढ़कर प्रत्याक्रमण किया तो संभव है कि मित्र-सेनाओंको खदेड़कर शत्रु समुद्रमें ढकेल दे।' लेकिन अब शायद यह चिन्ता दूर हो गयी है। फ्रांसमें मित्र-सेनाके पैर मजबूत हो गये हैं और उसकी अग्रगति जारी है। जोरदार जवाबी हमलोंके बावजूद भी जर्मनसेनाको प्रायः पीछे ही हटना पड़ रहा है।

मैनरहीम लाइन भंग

रूसीसेना ने फिनलैण्डपर आक्रमण कर दिया और रूसियोंने फिनोंकी पुरानी तथा नई मैनरहीम रक्षापंक्तियोंका भेदन कर दिया है। लालसेना फिनलैण्डके वीबोर्ग (विपुरी) नामक नगरकी ओर बढ़ रही है। फिनलैण्डका काम तमाम करनेके बाद रूसीसेनाएं शायद बाल्कन अथवा पोलैण्ड होकर जर्मनीपर आक्रमण आरम्भ करें। रूसियोंके रणकौशलसे जर्मनोंको भारी चिन्ता हो रही है। प्रशांतमें मित्र-सेनाओंने मेरीना द्वीपपुंजके सैपान टापूपर आक्रमण किया है। अब मित्रसेना मध्य-प्रशांतमें पहुंच गयी है। इससे जापानके समुद्री यातायात पर भारी खतरा उपस्थित हो गया है।

जापानमें बम वर्षा

गत पखवारेमें भीमकाय अमेरिकन वायुयानोंने खास जापानी टापूपर हमला करके टोकियो तथा अन्य कई जापानी नगरोंपर प्रचण्ड बमवर्षा की। इससे जापानमें घबराहट फैल गयी है। आसाम-बर्माके मोर्चेपर मित्रोंने कोहिमासे जापानियोंको भगा दिया है। परन्तु जापानी दस्ते अभी तगड़ा मुकाबला कर ही रहे हैं। जापानी हमलेसे चीनकी हालत चिन्ताजनक हो रही है। जर्मनोंने इंगलैण्डपर बम बरसानेके लिये बिना चालकके विमान भेजना आरम्भ किया है। जर्मनीके इस गुप्तास्त्रसे इंगलैण्डमें बेचैनी-सी महसूस हो रही है मगर नाजियोंके गुप्तास्त्रको विफल बनानेकी आवश्यक तैयारियां कर ली गयी हैं। इस युद्धमें अभी और कितने ही घातक गुप्तास्त्रोंके प्रयोग देखनेको मिलेंगे—जहरीली गैसें भी चलेंगी!

पञ्जाब में जिन्ना के स्वप्नों का अन्त

पञ्जाब के सभी मुस्लिम मिनिस्टरों द्वारा मुस्लिम लीग की सदस्यता से स्तीफा दे दिये जाने के कारण मि॰ जिन्ना के पंजाब में प्रभुता सम्बधी सभी स्वप्नों का अन्त हो गया। कहा जाता है कि असेम्बली के अन्य यूनियनिस्ट सदस्य भी लीग से त्यागपत्र दे रहे हैं।

मि॰ जिन्ना ने, कहते हैं, अन्त में समझौते के लिये भारी कोशिश की ताकि इस तरह प्रभुता पर पर्दा न पड़े। नवाब इस्माईल से भी उन्होंने समझौते की कोशिश की और प्रधान मन्त्री के काका मि. अल्लाबख्श तिवाना से भी हस्तक्षेप करने की प्रार्थना की जिन्होंने मि. जिन्ना के दुर्व्यवहार के डर से कुछ भी करने से साफ इनकार कर दिया।

कहा जाता है कि कांग्रेसी दल, अहरार, हिन्दूमहासभा दल, तथा सिखों के साथ रहकर यूनियनिस्ट संयुक्त मोर्चा कायम कर रहे हैं। मुसल्मानों के पत्र मि. जिन्ना की निन्दा कर रहे हैं। 'इन्कलाब' और 'शाहबाज' ने मि. जिन्ना को चेतावनी दी है कि पञ्जाब उनकी झक के सामने न झुकेगा। रोहतक से प्रकाशित होनेवाले यूनियनिस्ट पार्टी के पत्र 'जाट गजट' ने मि. जिन्ना की निन्दा की है, और इस बात पर हर्ष प्रकट किया है कि यूनियनिस्टों ने उन्हें हमेशा के लिये पराजित कर दिया। मि. जिन्ना को सलाह दीगयी है कि वे पञ्जाब के मामलेमें दखल न दें और चेतावनी दी गयी है कि उनके कार्यसे मुस्लिम लीग पतनोन्मुख हो रही है। पत्रने कहा है कि पञ्जाबको इस बातका अभिमान है कि वह जिन्नाको पञ्जाबसे भाग जानेके लिए बाध्य कर सका।

भारत में शिशुओं की मृत्युसंख्या

कामन्स सभा में भारत की जनसंख्या में वृद्धि और बच्चों की मृत्यु के सम्बन्ध में प्रश्न पूछे गये थे। भारत मंत्री मि॰ एमरीने उत्तर में बताया कि सन १९३१ की मर्दुमशुमारी के अनुसार भारत में बच्चों की मृत्युसंख्या प्रति-हजार पीछे ४५१ थी। १९४१ में अर्थात दस वर्षों में भारत की जनसंख्या में १½ फी सदी के लगभग वृद्धि हुई है।

द. हैद्राबाद में करघों पर से टैक्स माफ

निजाम सरकार ने एक फरमान निकाल कर आज्ञा दी है कि किसी जागीर मे करघों से टैक्स वसूल न किया जायेगा। इस नयी आज्ञा से जुलाहों को कई लाख का लाभ होगा, और रियासत में गरीबों को वस्त्र मिलने में सुविधा की आशा की जाती है।

बम्बई में उपज बढ़ाने का यत्न

बम्बई प्रान्त में अन्नकी खेती अधिक बढ़ाने के लिए सरकार पूर्ण उद्योग कर रही है। इस योजना के अनुसार ८ लाख एकड़ भूमि जिसमें खेती नहीं होती थी, अब खेती के काम में लायी जायेगी। इस योजना का मूलकारण है बम्बई प्रान्त में ८ लाख टन खाद्य पदार्थ की कमी। उक्त योजना के अनुसार बम्बई सरकार ने बंजर पड़ी हुई १ लाख ४६ हजार एकड़ भूमी खेतिहरों को ३ वर्ष तक बिना लगान जोतने को दी है। आशा की जाती है कि इससे प्रथम वर्ष ही १ लाख टन गल्ला उत्पन्न होगा, और खाद्य के सम्बध में बम्बई काफी स्वावलम्बी बन जायेगा।

सिन्ध में दहेज विरोधी कानून

कुछ दिन पूर्व सिन्ध में दहेज विरोधी कानून पास हुआ था। सिन्ध के गवर्नर ने उस पर अपनी स्वीकृति देदी है। स्वास्थ्यमंत्री डा. हेमनदास एक दहेजविरोधी संघ स्थापित कर रहे हैं। इस प्रथा के विरोधी घोर प्रचार के साथ साथ वह एक ऐसी संस्था स्थापित करना चाहते है जिस में वे लोग अपना नाम दर्ज करायेंगे जिन्होंने दहेज न लेने की प्रतिज्ञा की है। समय समय पर इनके नाम प्रकाशित किये जायेंगे। एक हिन्दू नवयुवक संघ की भी स्थापना होगी, जो दहेज लेने देने वालों पर निगाह रखेगा।

सीमा प्रान्त में अन्नसंकट

पेशावर। कोहाट और हज़ारा जिलों में आटे का अभाव है, और जनता बड़ी असन्तुष्ट है। कोहाट में इसी लिये हड़ताल भी रही और लोगों ने एक जुलूस निकाला जिसमें आटे की माँग करते हुए पोस्टर ले जाये जा रहे थे।

भारतमें मोटरें बनेंगी

समझा जाता है कि बिड़ला बन्धुओंने भारतमें मोटर गाड़ियोंका कारखाना खोलनेके लिये शेयर बेचने और मूलधन लगाने की जो स्वीकृति भारत सरकारसे माँगी थी वह मिल गयी है। प्रस्तावित योजनाके अनुसार भारत में जो कारखाना खोला जायगा उसमें मोटर गाड़ियां और ट्रक वगैरह बनेंगे।

निजाम स्टेट के जागीरदारोंको चेतावनी

द. हैदराबाद रियासत के निजाम ने रियासत के समस्त जागीरदारों को चेतावनी की है वे जल्द से जल्द अपनी जागीर का शासन सुधारें। जागीरदार अपने कर्तव्य पालन में उपेक्षा करते हैं अतः उनकी आलोचना होती है जो कि बिल्कुल अवांछनीय है। यदि पांच वर्ष के अन्दर जागीरदार अपने शासन की व्यवस्था को ठीक नहीं कर लेते तो सरकार को समुचित कार्यवाही करनी पड़ेगी जो रियासतें प्रगतिशील प्रमाणित होंगी उन्हें ही बने रहने दिया जायेगा।

नजरबंदों की बातें

एक ताजे प्रेस नोट में बताया गया है कि नज़रबन्दी और प्रतिबन्ध के आर्डिनेन्स में संशोधन किया गया है जिसके अनुसार नज़रबन्दों के साथ की गयी सरकारी लिखापढ़ी का भेद बताना या प्रकाशित करना दण्डनीय अपराध होगा।

मध्यभारत रियासती पत्रकार सम्मेलन

इंदौर में मध्यभारत रियासती पत्रकार सम्मेलन का अधिवेशन स्वराज्य सम्पादक श्री सिद्धनाथ माधव आगरकर के सभापतित्व में सफलता पूर्वक हो गया। सभापति ने अपने भाषण में रियासती पत्रकारों की कठिनाइयों का विस्तार से वर्णन करते हुए उनके संगठन पर जोर दिया। सम्मेलन में पत्रकारों की स्थिति, पत्रकार कला की उन्नति और पत्रोंपर लगाई गई बन्दिशोंके सम्बन्ध में कई प्रस्ताव पास हुए। स्थायी समिति का निर्माण किया गया। इसके सभापति श्री आगरकर जी, कार्यवाहक सभापति श्री वैजनाथ जी महोदय और मंत्री श्री सूर्यनारायण जी शर्मा चुने गये।

माहेश्वरी! किस ओर?

(पृष्ठ १३ का शेष)

और शक्ति का अपव्यय किये बिना समय के अनुकूल ढंग से त्याज्य के परित्याग और उपादेय के उपादान के साथ किया गया कार्य सुधारपूर्ण कार्य है।

हम मानते हैं कि 'वादेवादे जायते तत्वबोधः' इसी लिए तो जो भाई जिस किसी समाज हितके तर्कपूर्ण विचारसंगत लेख भेजते हैं, उनका स्वागत ही करते हैं। किन्तु हम इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं हैं कि हम दूसरी बातों को छोड़ कर श्री चाण्डकजी के विचारानुसार अपनी सारी शक्ति उसी कार्य में लगायें जिसमें वह माहेश्वरी के जीवनकी सफलता मानते हैं। —सम्पादक माहेश्वरी

राजस्थानी संसार

उदयपुरमे नई लोकपरिषद

खंडवा। राजपुताना और मध्यभारत के लिये जो एक नई संस्था उदयपुरमें बनानेकी योजना की गई थी और उस सिलसिले में मध्यभारत देशी राज्य लोकपरिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष प्रधान मंत्रीको पत्र भेजकर संयोजकने राय मांगी थी। इस पत्र के उत्तरमें श्री कन्हैयालाल वैद्यने अपनी राय देते हुए संयोजक को लिखा है कि "अच्छा तो यह है कि आप मध्यभारत की भांति राजपुताना की प्रांतीय परिषद बनानेका कार्यकरिये। रियासतों की संस्थाओं को अ. भा. देशी राज्य लोक परिषद की नीति पर चलना चाहिये। दोनों प्रांतोंके लिए नया संगठन बनाना न तो आवश्यक है और न उचित है। केवल विचार परिवर्तन के लिए दोनों प्रान्तोंके कार्यकर्ता मिलें इस के लिए नई संस्था वनाना न केवल अनुचित है बल्कि-जनता को भ्रम में डालने वाला हानिकर विचार है। आशा है आप ऐसा गलत कदम न उठाते हुय राजपुतानाकी प्रान्तीय परिषद के संगठन को बनानें की ओर ही अपनी शक्ति और समय को खर्च करेंगे।"

मुक्त कार्यकर्ताओं का स्वागत

मारवाड लोक परिषद की नागौर शाखा के प्रमुख कार्यकर्ता सर्व श्री. शिवदयालुजी दवे व चौधरी श्री. झूमरलालजी जो कि जोधपुर सरकारद्वारा भारत रक्षा कानून की दफा २६ बी. के मातहत गिरफ्तार किये गये थे, दो साल नजरबन्द रहने के बाद रिहा होकर कल शाम को ट्रेन द्वारा नागौर पधारे।

स्टेशन पर करीव ५०० आदमी उपस्थित थे और जब जुलूस नरवास दरवाजे के पास पहुँचा तो लोगों की संख्या हजारों तक पहुँच चुकी थी। जुलूस बड़ी धूमधाम के साथ बाजार से होता हुआ उनके घरतक पहुँचा, वहाँ श्री दवेजी का व्याख्यान होने के बाद जुलूस समाप्त हुआ। मंत्री

मारवाड़ लोक परिषद

(शाखा नागौर)

माहेश्वरी नवयुवक संघ लश्कर

ता. १६।५।४४ की बैठक में श्री माहेश्वरी नवयुवक संघ के आगामी वर्ष के लिये निम्न लिखित पदाधिकारी चुने गयेः—श्री. वासुदेवप्रसाद जी माहेश्वरी सभापति, श्री. विट्ठलदास जी भैय्या उपसभापति, श्री. लक्ष्मीनारायणजी मालपाणी मंत्री, श्री. कृष्णगोपाल जी लाहोटी उपमंत्री, व श्री. रामस्वरूपजी परवाल कोषाध्यक्ष।

३१ मई को रात्रि के १० बजे से उसी स्थान पर संघ का वार्षिक अधिवेशन श्री. रामस्वरुप जी परवाल की अध्यक्षता में हुआ। जिस में कई सामाजिक कार्यकर्ताओं के भाषण एवं कवितायें पढ़ी गयीं। मंत्री ने वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनाई। तत्पश्चात सभापति जी के भाषण के बाद महेश भगवान की जयघोष के साथ सभा की कार्यवाही समाप्त हुई।

लक्ष्मीनारायण मालपाणी, मंत्री

माहेश्वरी-पुस्तकालय कलकत्ता—

गत अप्रैल मास में पुस्तकालय से घर ले जाकर पढ़ी जानेवाली पुस्तकों की संख्या ८०० और वाचनालय में पढ़ी जानेवाली पुस्तकों की संख्या ४६० रही। वाचनालयकी कुल उपस्थिति २८८५ रही। ४० नयी **प्रगति शील** पुस्तकें खरीदीगईं। पुस्तकों की कुल संख्या ३९१४ होगईं। १६ नये सदस्य बने।

गत मई मासमें पुस्तकालय से घर ले जाकर ५२० पुस्तकें पढ़ी गईं। वाचनालय में पाठकों द्वारा ३८१ पुस्तकें पढी गईं। कुल उपस्थिति ५५९२ रही, १६ नये सदस्य बढ़े। प्रगति शील ११ पुस्तकें खरीदी गई अव पुस्तकोंकी कुल संख्या (३९२५) हों गयी। हिन्दी वङ्गला और अंग्रेजी के सभी दनिक साप्ताहिक पाक्षिक और मासिक प्रमुख २ पत्र-पत्रिकायें आती हैं। जनताको अधिकाधिक लभ उठाना चाहिये।

माणिकलाल डागा—"विशारद"

अवै. मंत्री।

कस्तूरबा निधि कूचामन

पू. कस्तूरबानिधि के दाताओं की एक सूची माहेश्वरी में प्रकाशित करायी जा चुकी है। उसके वाद यहां के उत्साही मित्रों के सहयोग से ४०१ रु. एकत्रित करके कोष बंबई आफिस को भेज दिया है। दाताओं को हार्दिक धन्यवाद। **माणिकचंद्र जे. कोठारी**

इन्दोर नागरिक स्वाधीनता परिषद में स्वीकृत प्रस्ताव

विषय निर्वाचिनी में समिति दुवारा पास किये प्रस्ताव खुले अधिवेशन के सामने रखे गये और पास हुए। शोक प्रस्ताव के पश्चात् गांधीजी के स्वास्थ्य के लिये कामना की गई। तीसरे प्रस्ताव में इन्दौर सरकार की दमन नीति की निन्दा करते हुए श्रीमन्त से नागरिक स्वाधीनता पर लगी हुई विभिन्न पावन्दियों को हटा देने की अपील की गई। अन्य प्रस्तावों में भाषण स्वातंत्र्य पर लगी हुई रुकावटें दूर करने, इन्दौर सार्वजनिक रक्षा कानून हटा देने प्रजा मण्डल को कानूनी करार देने पत्र प्रकाशन पर से पावन्दी हटाने और निर्वासन की अन्यायपूर्ण आज्ञाओं को रद्द करने की माँग की गयी।

म० भारत देशीराज्य लोक-परिषद

खंडवा। मध्य भारत देशी राज्य लोक-परिषद की कार्य समिति की एक आवश्यक बैठक परिषद के कार्यवाहक अध्यक्ष श्री. सिद्धनाथ माधव आगरकर की अध्यक्षता में खंडवा में २ और ३ जुलाई १९४४ को होगी।

आवश्यकता है।

एक २२ वर्षीय खानदानी एवं स्वस्थ माहेश्वरी युवको के लिये सुन्दर एवं सुशिक्षित कन्याकी आवस्यता है। युवकको १५० मासिक को आमदनी है। कृपया माल्ह-एवं राठी खापवाले पत्र व्यवहार का कष्ट न करें।

बाक्स ५०० 'माहेश्वरी' अली चेम्बर्स

डीन लेन, फोर्ट बंबईके पतेपर

पत्रव्यवहार कीजिये।

परीक्षा फल

नागपुर विश्वविद्यालय की विभिन्न परीक्षाओं में जो राजस्थानी छात्र बैठे थे उनमें से जो उत्तीर्ण हुए हैं उनके नाम इस प्रकार हैंः—

एम्. ए.	श्रेणी
कुमारी दिनेशनन्दिनि चोरडिया	द्वितीय
माणिक बुलीदान हरजाल	,,

बी. एस. सी. (टेक्नोलॉजी)	श्रेणी
जी. एस्. लड्ढा	प्रथम
श्यामसुन्दर गोवर्धनदास व्यास B. Sc.	,,

बी. एस्. सी. (पास)	
श्री किसनदास अग्रवाल	पास
हुकुमचन्द्र माहेश्वरी	द्वितीय श्रेणी

बी. ए.	श्रेणी
फूलचन्द सोनी	तृतीय
गोवर्धनदास जोधराज अग्रवाल	,,
रतनलाल सीताराम चमेडिया	द्वितीय
झबूलाल खंडेलवाल	,,
राधाकिसन मानकलाल सादानी	,,
बन्सीलाल दीपचन्दजी वनवत	तृतीय
भरतचन्द्र कावरा	,,
खुशीलाल श्रावक	,,
रामेश्वर बी. पांडे	द्वितीय
नर्मदाप्रसदजी केवलीया	,,

इन्टर सायन्स	श्रेणी
व्रिजरतन सादानी	द्वितीय
चंपेश्वरप्रसाद अग्रवाल	तृतीय
कुमारी कुसुद मोहन अग्रवाल	द्वितीय
मानेकचन्द सुराणा (गणित, फिजिक्स प्राविण्य)	प्रथम

एल्. एल्. बी. (प्रीव्हियस)
नारायणदास एल्. राठी B. Com.
एन्. जे. अग्रवाल M. Sc.

बी. कॉम् श्रेणी

(गोविंदराम सेक्सरिया कॉलेज ऑफ कामर्स वर्धा)

मदनगोपालजी जाजू	प्रथम

(आप विश्वविद्यालय की वी-कॉम में सर्व प्रथम आये हैं, आपको स्टॅटिस्टिक्स् में डिस्टिंक्शन भी मिला है। आप प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण एकमेव विद्यार्थी हैं)

दूलीचंद धनराज बोथरा	तृतीय श्रेणी
गणेशदास लड्ढा	द्वितीय ,,
गोपीकिसन मदनगोपाल टावरी	,, ,,
प्रतापचंद दीपचंद चुड़ानी	तृतीय ,,
प्रेमरतनसादानी	पास
सत्यनारायण बंसीलाल अग्रवाल	पास
सूरजमल बाकलीवाल	द्वितीय श्रेणी

इन्टर कॉमर्स

(G. S. college of Commerce)

प्यारेलाल गुगलिया	पास
चेनकरन फत्तेपुरिया	तृतीय श्रेणी
गोकुलप्रसाद अग्रवाल	,, ,,
गोपीकृष्ण राठी	द्वितीय ,,
गोविंददास कावरा	तृतीय ,,
हरिप्रसाद सिंघी	द्वितीय ,,
केशरदास कचरूदास मारवाड़ी	,, ,,
पुरुषोत्तम बालकृष्ण मूंधड़ा	,, ,,
श्यामसुन्दर अग्रवाल	तृतीय ,,
उदयचंद बंठिया	,, ,,
विठ्लदास शंकरलाल राठी	,, ,,

इन्टर आर्ट	श्रेणी
श्री. आर. बी. अग्रवाल	तृतीय
,, श्रीकिशन आचार्य	तृतीय
,, जे. एस. गोइनका	द्वितीय
कु. तारा एस. गोइनका	तृतीय
श्री. गुलाबचंद अग्रवाल	,,
,, लक्ष्मीनारायण सिंगी	,,

अमरावती राजस्थान हितकारकमंडल उत्तीर्ण विद्यार्थीयों को हार्दिक धन्यवाद देते हुवे प्रार्थना करता है कि, वे अपना परीक्षाफल पत्र-द्वारा मंडल को सूचित कर दिया करें जिससे प्रकाशित करने में दिक्कत न हो।

शिक्षण के विषय में मंडल एक बात की ओर समाजका ध्यान आकर्षित करना चाहता है। वह यह कि हमारे नवयुवकों का खयाल मेडिकल की ओर बिल्कुल नहीं है, व वस्तुस्थिति भी यह है कि प्रांत में कोई मेडिकल-कॉलेज नहीं व अन्यप्रांतों में प्रवेश की बहुत कठिनाइयां पैदा होती है। जो राजस्थानसमाज सार्वजनिक कार्यों में हरदम आगे रहा, वह अपना एक मेडिकल कॉलेज नहीं खोल सकता।

अभी अभी नागपूर युनिव्हर्सिटी के प्रमुख मेम्बर ने अपील की है कि, मेडिकल कॉलेज खोलनेके लिये सिर्फ ५७,००० की जरूरत है, वह मिल जानेसे राबर्टसन् मेडिकल स्कूल कॉलेज में परिणित किया जा सकता है।

हम जानने हैं कि इस युद्ध-जन्य परिस्थिति में आधुनिक पद्धति से परिपूर्ण मेडिकल-कॉलेज शुरू करना संभव नहीं। परंतु आयुर्वेदिक की भी वही दशा है। हम समाज के कार्य कर्ताओं से प्रार्थना करते हैं कि, वे इस ओर कदम वढ़ायें।

रामगोपाल मालपानी

सेक्रेटरी राजस्थान हितकारक मंडल

नागरिक अधिकार रक्षा समिति

जनताके नागरिक अधिकारों की रक्षा करने और स्वतन्त्रता अपहरण पर सतर्कतापूर्वक दृष्टि रखनेके लिये परिषदने नागरिक अधिकार रक्षा समिति की स्थापना की है, जिसमें श्री. जडियाचीं श्री. खादीवाले श्री. कृष्णकान्तजी व्यास, श्री. ओक, श्री. नेवासकर, दीघे, द्रविड़ वकील, व्ही. व्ही. द्रविड नारायणसिंहजी और मनोहरसिंहजी मेहता : संयोजकः हैं। इस समिति को राज्यके अन्य भागोंके ६ सज्जनों को कोआप्ट करनेका अधिकार दिया गया है।

आवश्यकता है

एक ३४ वर्षीय अग्रवाल विधुर के लिये एक लगभग २२ वर्षीय बाल विधवा की आवश्यकता है। कृपया "भूत" खांपवाले पत्र व्यवहार न करें।

पत्र व्यवहार का पताः—

श्री. सीताराम विहाणी

बालमुकुंद महादेव

बोगड़ा (बंगाल)

गांधी–वावेल पत्रव्यवहार

(पृष्ठ ५ का शेष)

क्या होगा ? आप जानते हैं, कि वह एक एड-मिरल और हिन्द महासागर के एक भूतपूर्व प्रधान सेनाध्यक्षकी बेटी हैं। उन्होंने आरामकी जिन्दगीको तज दिया है और मेरी किस्मतके साथ उन्होंने अपनी किस्मत मिला ली है। उनके मां-बापनें भी उनको आज्ञा और आशीर्वाद दे दिया है । वह जन-सेवामें अपना समय देती हैं । मेरी प्रार्थनासे वह उड़ीसाकी दुर्दशा देखने गयी थीं। सरकार प्रतिक्षण जापानी आक्रमणकी प्रतीक्षा कर रही थी। कागजात हटा देने या जला देने और समुद्री तटसे सिविल अधिकारियोंको हटा देनें-की बात सोची जा रही थी । श्री मीराबाईने कटकके हवाई अड्डेको अपना सदरमुकाम चुना; वहांका सेनाध्यक्ष उनकी सहायतासे प्रसन्न था। तदनंतर वह नयी दिल्ली गयीं और वहां जनरल सर एलेन हार्टले और जनरल मोरन्सवर्थ । से उनकी मुलाकात हुई । वे लोग उनकी सेवाओंसे संतुष्ट थे । फिर मैं यह समझ नहीं पाता कि वे क्यों नजरबन्द की गयीं ? उनको जीते जी गाड़ देनेका तो एकमात्र कारण यही दिखाई देता है कि वह मेरे साथ रहने की अपराधिनी हैं । मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि वे बहुत जल्द छोड़ दी जायें । मैं यह भी कहना चाहता हूं कि वह उस बीमारी से मुक्त नहीं, जिसके लिये मेरी प्रार्थनापर भारत-सरकारने कप्तान सिमकाक्सको भेजा था। यदि वे नजरवन्दी में अपंग हो जायें तो यह एक बड़ी दुर्घटना होगी । मैंने श्री मीराबाईकी चर्चा इस लिये की है कि उनके प्रति घोर अन्याय किया गया है।

(१५) वर्षों बीते, जब मैं दक्षिण अफ्रीकामें टाल्सटाय फार्ममें लड़कों और लड़कियोंको कवि वर्डस्वर्थ की 'प्रसन्न योद्धाका चरित्र' कविता पढ़ाता था, इस पत्रके लिखनेके समय मुझे उसकी याद हो गयी। यदि मैं उस योद्धाको आपमें देख सकूं, तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होगी। धुरी-शक्ति और मित्रोंके व्यवहार और उपायोंमें कोई अन्तर न होगा, यदि यह युद्ध केवल पशुबलकी परीक्षाके लिये हो रहा है।

आपका—

एम० के० गांधी

वायसरायका उत्तर

नयी दिल्ली, १७ जून ।

प्रिय गांधीजी,

९ मार्चका आपका पत्र मिला । आपने कामन्स सभामें एक प्रश्नके उत्तरमें दिये गये मि.. बटलरके जवाब की शिकायतका पत्रमें जिक्र किया है। उसका उत्तर होम-सेक्रेटरी आपको अलग देंग।

मैं तो सिर्फ इतना ही कह सकता हूं कि मुझे हार्दिक खेद है यदि आपके मन पर यह असर हुआ है कि भारत-सरकारने श्रीमती गांधीकी बीमारीमें उपेक्षा की। मिस स्लेडके मामले पर, जैसा आप उनके बारेमें कहते हैं, जांच की जायेगी।

इससे कोई लाभ न होगा यदि हम लम्बी बहसमें पड़ें और आपके पत्र की तमाम छोटी-मोटी बातोंका उत्तर भी मैं नहीं देना चाहता । किन्तु भारतकी भावी प्रगतिके बारेमें मैं अपने विचार व्यक्त करना चाहता हूं। उचित यही है कि मैं एक स्पष्ट वक्तव्य प्रकट कर दूं जिससे आपकी वर्तमान नजरबन्दीके कारण भी मालूम हो जायं।

ब्रिटिश सरकारी ओरसे सर स्टेफर्ड क्रिप्स, जो सरकारी मसविदा लेकर भारत आये थे उससे ब्रिटिश सरकारी प्रबल आकांक्षा स्पष्ट प्रकट होती है कि वह भारतके प्रमुख दलोंके बीच समझौते होकर बनाये गये विधानके अन्तर्गत भारतको स्वायत्त सरकारके अधिकार सौंपनेका तैयार हैं। कहनेकी जरूरत नहीं है कि मैं उस उद्देश्यका समथर्क हूं।

फिलहाल, बहुत काम करना है, विशेषतया आर्थिक क्षेत्रमें । भारत को आधुनिक संसारमें उचित स्थान प्राप्त करने के लिये बहुत काम करना है। परिवर्तन लाने के उद्देश्यका स्वागत करने का उसे सदैव तैयार रहना चाहिये। उन दिशाओं में उन्नति करनी चाहिये जिनसे वह अबतक अपरिचित रहा है और भारतीय जन-समाज का 'स्टैंडर्ड' ऊंचा करना चाहिये। इस तरह का कार्य अराजनीतिक है। इससे राजनीतिक समझौता करानेमें भी शीघ्रता हो सकती है। लेकिन अब उसके लिये ठहरना नहीं चाहिये । भारत के सामने अनेक महत्त्वपूर्ण प्रश्न हैं और यदि वह अधिक प्रयत्नशील होता है तो अनेक नयी-नयी समस्याएं उत्पन्न होती हैं जिनका हल करने की योग्यता भारत में होनी चाहिये। भारत इन समस्यायोंको संसार से पृथक रहकर शीघ्र कदापि हल नहीं कर सकता, अथवा उसके लिये बिना ब्रिटेनकी अनुभवशील शासन-व्यवस्थाकी योग्यता के इन समस्याओं का भी हल करना असंभव होगा। किन्तु यह ऐसा काम है कि इसमें भारत की सभी पार्टियों के नेता इस विश्वास से सहयोग दे सकते हैं कि वे स्वाधीनताके ध्येय की पूर्ति की दिशा में अपने देशकी सहायता कर रहे हों।

मुझे खेद है कि कांग्रेसकी वर्तमान नीति भारतकी उन्नति और स्वायत्त सरकारके प्राप्त करनेमें भारतीयोंकी प्रगति में बाधक है। भारत और संसार भरमे युद्धमें धुरी देशोंके सामनें मित्र राष्ट्रोंकी विजय अवश्यम्भावी होनेपर भी जिस कांग्रेस वर्किंग कमेटीनें सहयोग करनेसे इनकार कर दिया है, आपनें उसे माना, कांग्रेसी मंत्रियोंको इस्तीफा देनेके लिए आज्ञा दी और शासन-व्यवस्थामें या युद्ध-प्रयासमें कोई भाग न लेनेकी ठान ली । जिस संकट कालमें जापानी भारतपर चढ़ाई करनेको तैयार बैठे थे, उस समय कांग्रेस वर्किंग कमेटीनें यह प्रस्ताव पास किया कि अंग्रेज भारत छोड़ दें । मेरा पूर्ण विश्वास है कि यदि अंग्रेज पूर्ण रूपसे भारतको छोड़कर चले जाय तो भी भारतकी समस्याओंका तुरत हल नहीं हो सकता।

मैं आपको या कांग्रेस पार्टीको इस बातके लिये दोषी नहीं बताता कि आप लोग इच्छा-पूर्वक जापानियोंकी मदद करने के पक्षमें हैं। लेकिन गांधीजी, आप तो बड़े ही चतुर व्यक्ति हैं, आपने क्या यही नहीं समझा होगा कि इस प्रस्तावसे युद्धप्रयासमें बाधा पहुंचेगी । मैं तो यह सोचता हूं कि आपको हमारे ऊपर विश्वास ही न रहा कि हम भारतकी शत्रुसे रक्षा कर सकते हैं । आप लोगोंने हमारी सैनिक संकटापन्न अवस्थामें अनुचित लाभ उठा कर राजनीतिक लाभ उठाने की चेष्टा की । जो लोग देशकी रक्षाके लिये जिम्मेदार हैं उनके लिये दूसरा उपाय ही क्या था, सिवा उस प्रस्तावके समर्थकोंको गिरफ्तार करने के। देशमें जो अशान्ति हुई उसके लिये साधारणतया कांग्रेस की जिम्मेदारी थी। उस समय मैं सेनापति था। कांग्रेस के नामपर, कांग्रेसी झण्डा फहराते हुए कांग्रेसके समर्थकों ने बर्मा-सीमा के यातायात सम्बन्धका विच्छेद कर दिया था, अतः जो कुछ हुआ, उसके लिये मैं कांग्रेसको निर्दोष नहीं मान सकता और मेरा विश्वास है कि आप जैसा एक अनुभवशील व्यक्ति इस बात से अनभिज्ञ नहीं रह सकता कि आपकी अनुसरण की हुई नीतिका क्या परिणाम होगा ?

मैं यह विश्वास नहीं करता कि कांग्रेस पार्टी की इस कार्रवाई में सारा भारत शामिल था और न मैं यही विश्वास करता हूं कि कांग्रेस के असहयोग की मनोवृत्तिका भारत की बहुसंख्यक जनता ही समर्थन करती है।

मैं विश्वास करता हूं कि भारतके हितमें यदि कॉंग्रेस पार्टी कार्य करना चाहती है, तो उसे अपनी असहयोगकी नीतिको त्याग देना चाहिये और भारतके आर्थिक एवं राजनीतिक विकासमें लगी हुई अन्य भारतीय पार्टियों तथा अंग्रेजोंके साथ सहयोग करना चाहिये। मैं समझता हूं कि ऐसा करनेसे आप भारतकी बहुत बड़ी सेवा करेंगे।

आपका–

(सही) **वावेल**

गांधीजीका वाइसरायको तीसरा पत्र

नजरबन्द कैम्प
९ अप्रैल, १९४४

प्रिय मित्र,

आपका २८ मार्चका भेजा हुआ पत्र मुझे ३० मार्चको मिला। धन्यवाद। आपने स्पष्ट उत्तर दिया है । आपकी स्पष्टवादिता सराहनीय है। मित्रता सच्ची बनी रहे, मेरी मांगे स्पष्ट है है भले ही कभी कभी वे सुखद न हों। जो कुछ कहता हूं यदि आपको उससे आघात पहुंचे, तो कृपया क्षमा कीजियेगा। यह दुखकी बात है कि मैंने अपने पत्रमें जिन महत्त्वपूर्ण बातों का उल्लेख किया है, उनपर आप ध्यान ही नहीं देना चाहते।

आप चाहते हैं कि वर्तमान शासन व्यवस्था के साथ कांग्रेस सहयोग करे और भारत की भावी निर्माणकी योजना में हाथ बटाये । कांग्रेसकर्मी यह नहीं विश्वास करते कि सरकार भारत का मुख उज्ज्वल करने की योग्यता रखती है । पिछले कटु अनुभव और वर्तमान शासन व्यवस्था के रहने के कारण ही सरकार में यह अविश्वास पैदा हुआ है। क्या यह बड़ी बात नहीं है कि आपने भारतीय प्रजाके साथ, उसके ही चुने प्रतिनिधियोंके साथ सहयोग नहीं किया जब कि आप यह उम्मीद करते हैं कि वह आपके साथ सहयोग करे ? यही सब तो अगस्त प्रस्तावमें सन्निहित है। प्रस्तावका स्पष्ट अर्थ हिंसा नहीं, आत्म-भोग है। इस नियमके विरुद्ध किसीने भी, चाहे वह कांग्रेसकर्मी हो या अन्य कोई, यदि आचरण किया तो उसे कांग्रेसके नामपर ऐसा करनेका अधिकार नहीं था। लेकिन मैं देखता हूं कि जिस प्रकार लार्ड लिनलिथगोको यह प्रस्ताव खला था, वैसे ही आपको भी खला है। आपको मालूम होना चाहिये कि मैं इसी बातपर तो इस विषयमें शरीक हुआ हूं । मैं अपने विचार बदल नहीं सकता।

यह आप की बड़ी उदारता है कि आपने मुझे "श्रीमान" अनुभवी और बुद्धिमान कहा है। लेकिन मुझे यह कहने दीजिये कि आपके द्वारा दिये गये इन तीनों पुरस्कारोंने मुझे यह समझनेमें समर्थ नहीं किया कि कांग्रेसका प्रस्ताव युद्ध प्रयास में बाधक सिद्ध होगा। कांग्रेसवादियों की जल्दबाजी से गिरफ्तारी की जिम्मेदारी एकमात्र सरकारपर ही है। इस तरह उसने ही संकटापन्न स्थितिको आमन्त्रित किया, न कि प्रस्ताव के प्रवर्त्तकोंने।

आप मुझे याद कराते हैं कि आप उस समय सेनापति थे। क्या ही उत्तम होता यदि बल्वेके भयकी अपेक्षा, शस्त्रों की अपार शक्ति में आपके कार्यों द्वारा विश्वास प्रतिपादन होता! यदि सरकारने अपने हाथ उस समय ढीले किये होते, तो सच ही, उन महीनोंमे रक्तपात कदापि नहीं होता और यह भी बहुत संभव है कि जापानियोंका खतरा भूतकालकी बात हो जाती। दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हुआ । यही कारण है कि जापानियोंका वह खतरा अब भी बना हुआ है। फिर भी, सरकार स्वाधीनता और सत्यपर दमन-नीति के लानेमें तत्पर है।

अभी नजरबंदोंके सम्बंधमें सरकारने जो नया आर्डिनेंस निकाला है, उसका मैंने अध्ययन किया है और मुझे सन् १९१९ के रौलेट एक्टकी याद हो आती है, उसे काला कानून कहा गया था । आप जानते होंगे कि उस काले कानूनसे प्रचण्ड आंदोलन पैदा हो गया था । लेकिन आज वाइसरायके हाथोंसे असंख्य फर्मान जारी किये जाते हैं, उनके सामने उसका आना उतना महत्व नहीं रखता । सन १९१९ की ही भांति आज एक प्रांत में ही नहीं, बल्कि समस्त भारतमें फौजी कानूनका राज्य है। सब काम बदसे बदतर होता जा रहा है।

आप कहते हैं—"यह मुझे स्पष्ट ज्ञात होता है कि आपको हम लोगों द्वारा देशकी रक्षा करने की योग्यतामें विश्वास नहीं और आप सामरिक हीन परिस्थितिसे राजनीतिक लाभ उठानेकी चेष्टामें थे।" मैं इन दोनों ही अभियोगोंको मंजूर नहीं कर सकता । मैं आपको यह राय देता हूं कि स्वर्ण मार्गका अनुसरण करना चाहिये और आपको अपना वक्तव्य वापस ले लेना चाहिये, और जबतक आप निष्पक्ष पंचायतके सामने अपने सबूतोंको न पेश करें तथा उसपर निर्णय न पा लें, तबतक अपने फैसलेको स्थगित रखें। मुझे विश्वास नहीं है कि आप ऐसा करेंगे। क्योंकि सरकारने कांग्रेस-

(शेष पृष्ठ २४ पर)

गांधी–वावेल पत्रव्यवहार

(पृष्ठ २३ शेष का)

कर्मियों तथा अन्य व्यक्तियोंके सम्बन्धमें वादी न्यायाधीश और जेलर को एक ही अर्थमें सम्मिलित कर दिया। इस तरह अभियुक्तके लिये अपना उचित बचाव कर सकना बिल्कुल असंभव हो गया। नये फर्मानके द्वारा अदालतोंके फैसले निरर्थक बना दिये गये। इस असाधारण स्थितिमें किसी भी व्यक्ति की स्वाधीनता सुरक्षित नहीं कही जा सकती। शायद आप यह कहें कि यह युद्ध-कालकी अवश्यकता है!

जैसा कि आज मैं भारतकी कल्पना करता हूं, यह एक बहुत बड़ा कैदखाना है जिसमें चालीस करोड़ आत्माएं रहती हैं। आप उसके एकमात्र आका हैं। सरकारी कैदखाने इस कैदखानेके अन्तर्गत कैदखाने हैं। आपने मेरे पत्रके उत्तरमें जो भाव व्यक्त किये हैं उनसे मैं सहमत हूं कि मेरे जैसे व्यक्तिके लिये सरकारी जेलखाना ही उचित स्थान है। और जबतक सरकारके हृदयमें, विचार में और नीतिमें परिवर्तन नहों होता, तबतक मुझे आपके जेलखानेमें रहनेमें ही संतोष है। सिर्फ मैं यह चाहता हूं कि आप मुझे तथा मेरे साथी कैदियोंको किसी दूसरी जेलमें नजरबंद करदें, जहां आपका जो यहां खर्च हो रहा है, उसकी अपेक्षा वहां दसवां हिस्सा भी खर्च न हो

मैंने मि० बटलरके तथा भारत मंत्री के वक्तव्योंकी जो शिकायत की थी, उसके संबंधमें होम सेक्रेटरीनें मेरे पास उत्तर भेजा है। वे उत्तर बड़ेही असंतोषजनक हैं। आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने कुमारी मीरा बहनके मामलेपर मेरे कथनानुसार ही विचार किया है।

आपका

(सही) **एम्. के. गांधी**

पारिवारिक मोह

(पृष्ठ १ का शेष)

सम्बन्ध न हो, और न कोई बालक किसी व्यक्तिविशेषको पिता या माताके रूपमें माने। इस तजवीजमें तर्क या गणित की सी सादगीका गुण है, लेकिन यह सचाई भुला दी गयी है कि मनुष्यका जीवन तर्क या गणितसे कहीं ज्यादह पेचीदा है। अगर पुरुषों, स्त्रियों और बच्चोंमें एक दूसरेसे अपनापन या व्यक्तिगत प्रेम न रहे, और सब मशीनके पुर्जों की तरह रहें तो सम्भव है कि वे किसी साधु संन्यासीकी तरह परिवारके मोहसे बचे रहें, लेकिन वे मनुष्य जातिके अच्छे नमूने नहीं हो सकते। हम चाहते है कि पुरुष और स्त्रियाँ पूरी तरह विकसित हों, और उनमें दिल और दिमाग दोनों के सब असली गुण मौजूद हों। जो बालिग आदमी किसी बालक को 'अपना' नहीं कह सकता, वह आमतौरपर उदास रूखा और अपनी निजी चिन्ताओं में ही लीन रहेगा। और जिस बालक को पालने वाले ऐसे आदमी (माता पिता आदि) नहीं होते जिनका उसके साथ खास अपनेपनका अनुराग हो, वह कभी ऐसा स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट और प्रसन्न नहीं होगा, जैसा उसे होना चाहिए। अनाथालयों में रहने वाले और घरों में पलने वाले बालकों में साफ फर्क होता है। इसलिए बालिगों में सुख और बच्चोंकी ठीक ठीक वृद्धि दोनों दृष्टिसे यह प्रणाली हानिकर है, इसे त्याग देना चाहिये। (अपूर्ण)

महेश जयंती उत्सव

शाहपुरा

शाहपुरा नगर में महेश जयन्ती महोत्सव ब्यावर निवासी श्रीमान् जयदेवजी धूत के सभापतित्व में ता. ३० व ३१ मई को बड़े धूमधाम से मनाया गया। ता. ३० मई को सुबह ११ बजे श्रीमान् जयदेवजी धूत अपनी चार सुपुत्रियों सहित शाहपुरा पधारे। मोटर स्टेन्ड पर माहेश्वरी व ओसवाल बालचरों व नवयुवकों तथा आर्य समाज के सदस्यों ने उनका शानदार स्वागत किया।

शामको ७ बजे माहेश्वरी व्यायाम शाला में बालचरों के लकड़ी मिल्ट्री व मनोविनोद के खेलों का प्रदर्शन हुआ। व्यायाम शालासे प्रदर्शन समाप्त होने पर सभापतिजी एक विराट जलूस द्वारा मंडल के आफिस पहुंचाये गये। रात को ९ बज सें १२ बजे तक एक खुला अधिवेशन मंडल के सभा भवन में हुआ जिसमें श्री सुमित्रा कुमारीजीने आर्यसमाज के चौथे नियम पर, श्रीमती धीरजदेवीजीने संघटन पर तथा श्रीमान सभापतिजीने माहेश्वरियों की उन्नति अवनति व उत्पत्ति पर भाषण दिये। ता. ३१ मई को सुबह महेश जयन्ती के उपलक्ष में यज्ञ हुआ।

रात को ९ बजे से १२ बजे तक दिगम्बर जैन भोजन शाला में महेश जयन्ती के उपलक्ष में एक बृहद सभा हुई। तत्पश्चात् माहेश्वरी बाल-चर मंडलकी तरफ से माहेश्वरी व्यायाम शाला में हुये टूर्नामेंट के पारितोषिक सभापति जी के करकमलों द्वारा वितरण हुए।

दोनों रोज के अधिवेशनों में स्त्रियों व पुरुषों की उपस्थिति हजारों में व आशा से अधिक थी। धूतजी को माहेश्वरियों एवं आर्यसमाजियों ने पार्टिया दीं। धूतजी ने ११) आर्यसमाज शाहपुरा को भेंट किए।

—संवाददाता

पीपाड़

यहां पर माहेश्वरी नवयुक मंडल के उद्योग से गत ज्येष्ट शुक्ला नवमी तदनुसार तारीख ३१-५-१९४४ बुधवार को महेश जयंती महोत्सव बड़ी धूम धाम से सम्पन्न हुआ—

शाम को ६ बजे श्री लक्ष्मीनाथजी (माहेश्वरी पंचायती) के मंदिर से श्री महेश भगवान् की सवारी का जलूस नगर के मुख्य २ बाजारों व मोहल्लों से होकर निकला और रातको ८ बजे मंदिरमें आकर विसर्जित हुआ। उसी रोजरात का १० बजे श्री लक्ष्मीनाथजी (माहेश्वरी पंचायती) के मंदिरमें श्रीमान् बाबू लक्ष्मी नारायणजी मालाणी (संयुक्त संपादक माहेश्वरी पत्र) के सभापतित्वमें एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमें हरीवल्लभजी काबरा (प्रधान हिन्दु सभा) और श्री पंडित रामगोपालजी उपाध्याय के ओजस्वी भाषण हुए बादमें श्रीमान् रामप्रसादजी वानप्रस्थी शास्त्राचार्य की व्यायाम की उपयोगिता व संगठन शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता पर भाषण हुआ। सभापतिजीके भाषण के बार मीटिंग समाप्त हुई।

मदन गोपाल बंग
मंत्री—माहेश्वरी नवयुवक मंडल
पीपाड (मारवाड़)

श्री माहेश्वरी पुस्तकालय कानपुर

श्री माहेश्वरी पुस्तकालय कानपुर का अधिवेशन ता. ३१–५–४४ बुधवार महेश नवमी को श्रीमान लाला बालकृष्ण जी माहेश्वरी (मूंदड़) की अध्यक्षतामें सायंकाल ८। बजे से प्रारम्भ हुआ। सर्व प्रथम माहेश्वरीजी नेमहेश भगवानका पूजन व आरती की। बाद में बाबू लालकृष्ण भुराडिया ने महेश नवमी के विषय में भाषण दिया।

इस के बाद पं. ज्ञानेन्द्रनाथ पाँडे ने कविता पाठ किया। मंत्रींजी ने पिछली वार्षिक रिपोर्ट सुनाई व लिखित भाषण पढ़ा। पं. बाबूलालजी मिश्रा एडवोकेट के भाषण के बाद इस प्रकार चुनाव हुआ:—

सभापति—लाला बालकृष्णजी माहेश्वरी (मूंदड़ा) उप सभापति पं. गोपीकृष्णजी शर्मा B. A. L. L. B. वकील सा. उप सभापति लाला राधेमोहनजी गुप्ता, उप सभापति गंगा नरायनजी भुराडिया, प्रधान मंत्री–ला. सूरजमलजी सोमानी, उप मंत्री लाला श्याम बिहारीलाल लोईवाल, कोषाध्यक्ष–लाला लालकृष्णजी भुराडिया।

सदस्य लाला गनेश नारायनजी भुराड़िया, सदस्य लाला बुद्धसेनजी अग्रवाल, सदस्य लाला बद्रीप्रसादजी बाहेती।

इसके बाद सभापति श्री. माहेश्वरीजीका जोरदार भाषण हुआ। सभापतिजीको धन्यवाद देकर अधिवेशन समाप्त हुआ।

सूरजमल सोमानी
प्रधान मंत्री

माहेश्वरी मंडल अजमेर

माहेश्वरी मंडल, अजमेर की बैठक श्रीमान रामकृष्णजी तोषनिवाल के सभापतित्व में आगामी वर्ष के चुनाव तथा महेश नवमी के लिये ता: १९ मई १९४४ को बुलाई गई। सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि महेश नवमी महोत्सव सदा की भांति मनाया जावे। आगामी वर्षके लिये निम्नलिखित सज्जन सर्व सम्मतिसे पदाधिकारी चुने गये।

(१) श्री चांदमलजी चंडक, प्रधान (२) श्री अमरचंदजी तापड़िया (राजगढ़ वाले), उप प्रधान (३) श्री बालमुकुन्द जी झँवर, बी. ए., एल. एल. बी. वकील, मंत्री (४) श्री चांदमल जी मोदी, उप मंत्री (५) श्री भागीरथ मलजी पलोड़, कोषाध्यक्ष (६) श्री बिरधीचंदजी लखोटिया, एडवोकेट हिसाव निरिक्षक.

प्रबन्ध कारिणी कमेटी के सदस्य

(७) श्रीमान् राम कृष्णजी तोषनीवाल (८) श्री बसंती लालजी नोगजा एडवोकेट (९) श्री अमरचंदजी ईनाणी एडवोकेट (१०) श्री धनपत रायजी जैथल्या (११) श्री श्रीकरणजी शारदा वकील।

बालमुकुन्द झंवर
मंत्री
—माहेश्वरी मंडल, अजमेर

मंदसोर (दशपुर)

माहेश्वरी युवक संघ मंदसोर (दशपुर) के उपलक्ष में जेठ सुद ९ को महेश नवमी का उत्सव बडे समारोह से मनाया गया।

प्रातःकाल ७ बजे प्रभातफेरी निकाली गई, सायंकाल ४ बजे एक बड़ाभारी जुलूस निकाल गया जो रातको करीब ११ बजे माहेश्व पंचायत मंदिर में आकर समाप्त हुआ। इ जुलूस में मंदसोर के माहेश्वरी समाज के स नरनारी सम्मिलित थे। जुलूस समाप्त होने पश्चात् एक विराट सभा हुई और जिसमें खा मन्दसोर के माहेश्वरी समाज पर श्री नंदराम ननवाणाने काफी प्रकाश डाला और उनसे य प्रार्थना की कि अपनी आपसी फूटको मिटाक देश व जाति को उन्नति के शिखर पर चढ़ाने क प्रयत्न करें।

बद्रीलाल मंडोवरा
—मंत्री
माहेश्वरी नवयुवक संघ
मंद सौर

व्यासजीका सार्वजनिक सम्मान

जोधपुर। मारवाड़ लोक परिषद क विधान, समझौता हो जांने के कारण अ जल्दी चालू होगा। प्रतिनिधि सभा की बैठ अभी कुछ समय बाद होगी। तब तक का संचालन के लिए श्री अभयमल जैन कार्यालय, तुलसीदास राठी के कोष और हिसाब, गणेशीलालजी व्यास को जागीरी मामल और श्री जयनारायणजी व्यास को प्रकाशन क कार्य सौंपा गया है।

जोधपुर में रिहाई के बाद जलूस निकाल कर और सार्वजनिक सभा होकर रिहा नेताओं का सार्वजनिक स्वागत किया गया। सभा में व्यासजी को २०० रु. की थैली भेंट की गई। सोजत रोड में सार्वजनिक सभा हुई जिसमें उन्हें १०१ की थैली भेंट की गई। सोजत रोड के बाद व्यास जी सोजत सिटी, पाली आदि होते हुए जोधपुर लौट गए। सभी स्थानों पर आपका सार्वजनिक सम्मान किया गया। और आपको थैलियां भेंट की गयीं।

मारवाड लोकपरिषद् और सरकार के बीच हुए समझौते के बाद लोकपरिषद ने एक बुलेटिन निकाल कर पुनः स्थिति स्पष्ट की है। उसमें कहा गया है कि जेल और किलों में रखे हुए उनके साथियों ने व्यासजी को परिषद के रवैये में परिवर्तन की आवश्यकता महसूस करके समझौता करने का अधिकार दे दिया था। सरकारी वक्तव्य से गलतफहमी होने से एक बार समझौता टूटता हुआ दिखाई दिया, लेकिन आई. जी. पी. के स्पष्टीकरण से स्थिति सुधर गई और ३० मई को सब राजबन्दी रिहा कर दिए गए। लोकपरिषदकी ओरसे कोई लिखित आवेदन पत्र देने की बात गलत बताई गई है।

रामपुर ठिकानें से निर्वासन

मारवाड के रामपुर ठिकाने में वहां के लोगों और ठिकानेंदारों में कुछ मारपीट हो जाने से राज्य के दीवान ने लोकपरिषद के कुछ कार्यकर्ता ठिकाने से निर्वासित कर दिए है और उन पर ठिकाने के किसी भी गांव में न आने की पाबन्दी लगा दी।

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल

इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड

संस्थापित सन् १९१९

★

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—: हमारी शाखाएं :—

अहमदाबाद (गांधी रोड)
बोटाद (काठियावाड़)
कलकत्ता (१३५, कैनिंग स्ट्रीट)
लाहौर (दी माल)
कम्पाला (युगाण्डा) (बाम्बो रोड)

★

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेण्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए :—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :— सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

श्रीमती एनोफील—जनशत्रु नं० १

मलेरिया, जो सबसे अधिक भयावह और हमारे देशका अत्यन्त साधारण रोग है, प्रतिवर्ष २० लाखसे अधिक व्यक्तियोंके प्राणोंका गाहक बनता है। इसके लगातार आक्रमणोंसे उत्पन्न विभिन्न शिकायतोंके कारण और भी अधिक संख्यामें लोगोंको कष्ट सहना पड़ता है।

तथापि मलेरियाका कारण सिर्फ एक ही प्रकारके मच्छर—'एनोफील' और वह भी स्त्री जातिके मच्छरोंसे पैदा होता है। यह मच्छर मलेरियाग्रस्त लोगोंका खून चूसकर दूसरोंके शरीरमें रोगके कीटाणुओंका प्रवेश कराता और इस प्रकार मलेरिया फैलाता है।

इन मच्छरोंकी उत्पत्ति बंधे जलाशयोंमें होती हैं, अतएव उनका विनाश करनेके लिये पहला आक्रमण यहींसे शुरू होना चाहिये। इन जलाशयोंको भर दें अथवा बिल्कुल पानी निकाल फेंकें या पानीमें कीटाणुनाशक औषधियां डाल दें जब भी सम्भव हो, मशहरीके नीचे सोयें और श्रीमती एनोफीलको अपनेसे दूर रखें।

यदि, इसपर भी आप मलेरियाके शिकार हो जायें तो तत्क्षण किसी अनुभवी डाक्टरकी सलाह अपनी हिफाजत और रोग विस्तार रोकनेके लिये लें।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

भारत के जनस्वास्थ्यकी हिफाजतके लिये यह चेतावनी
दी जा रही है। इस विज्ञापनके हस्ताक्षरकारियों और
जनताका स्वार्थ एक ही समान है।

न्यू एशियाटिक इन्स्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड

जीवन, आग, जहाज, दुर्घटना, खतरा आदिके बीमेका
कारबार करती है।

हेड आफिस—न्यू एशियाटिक बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नयी दिल्ली।

कलकत्ता आफिस—८ रॉयल एक्सचेञ्ज प्लेस। ❀ बंबई आफिस—इम्पीरियल बैंक एनेक्स बिल्डिंग फोर्ट, बंबई।

मद्रास आफिस—२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट जार्ज टाउन।

माहेश्वरी

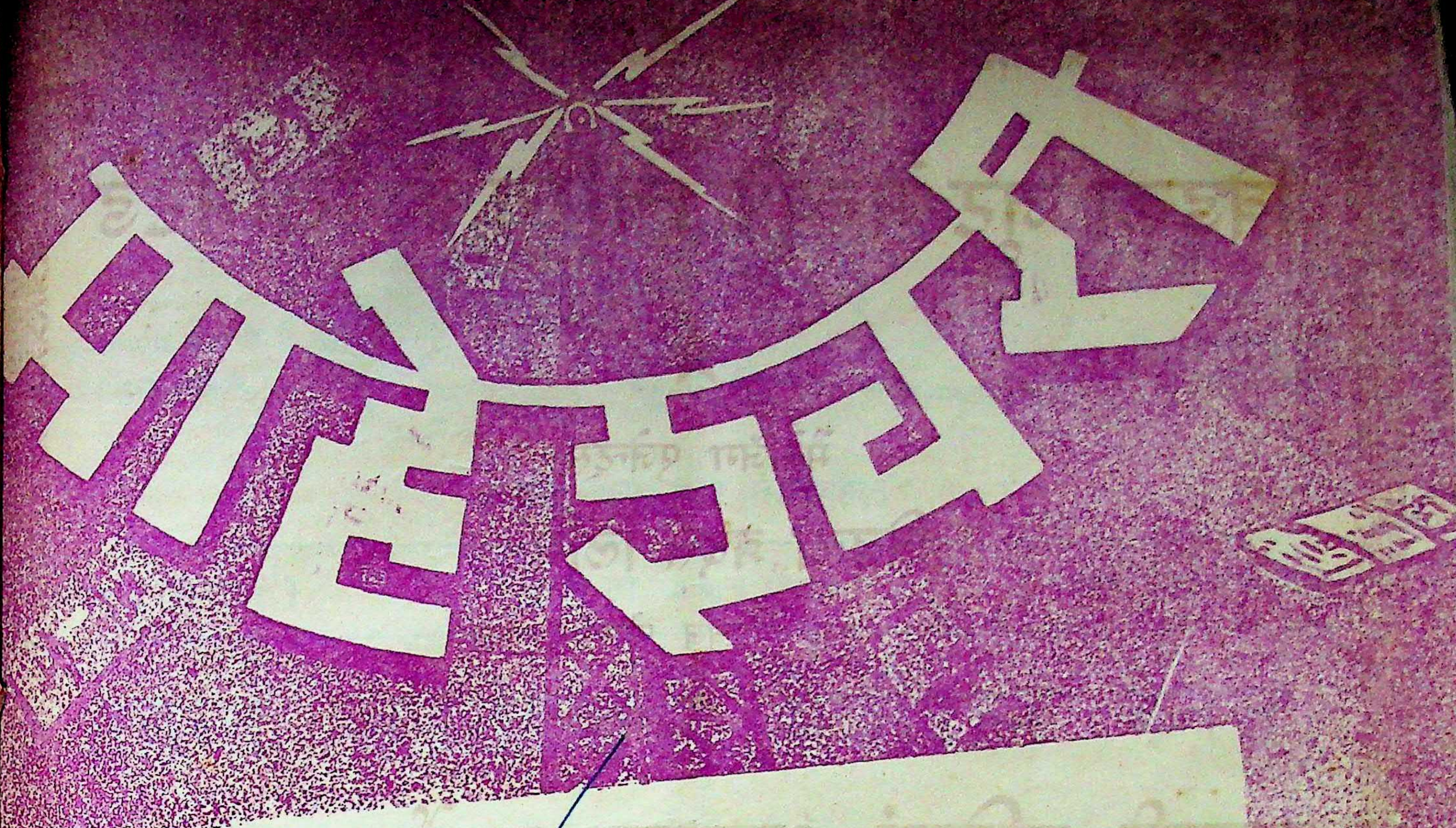

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

' अगस्त प्रस्ताव वापस नहीं '

" मैं अगस्त प्रस्ताव को वापस नहीं ले सकता। आप चाहे इस पर मुझसे भलेही मतभेद रखें किन्तु मेरे जीवन की यही श्वास है। मैं आज शर्मिंदा हूं कि क्यों बीमार पड़ा। मुझे मालूम होता है कि ज्योंही मेरी तबीयत बिलकुल ठीक हो जायगी त्योंही मैं फिर गिरफ्तार कर लिया जाऊंगा। "

—महात्मा गांधी

डा० एम. आर. जयकर को
२०-५-४४ को लिखे गये पत्र से

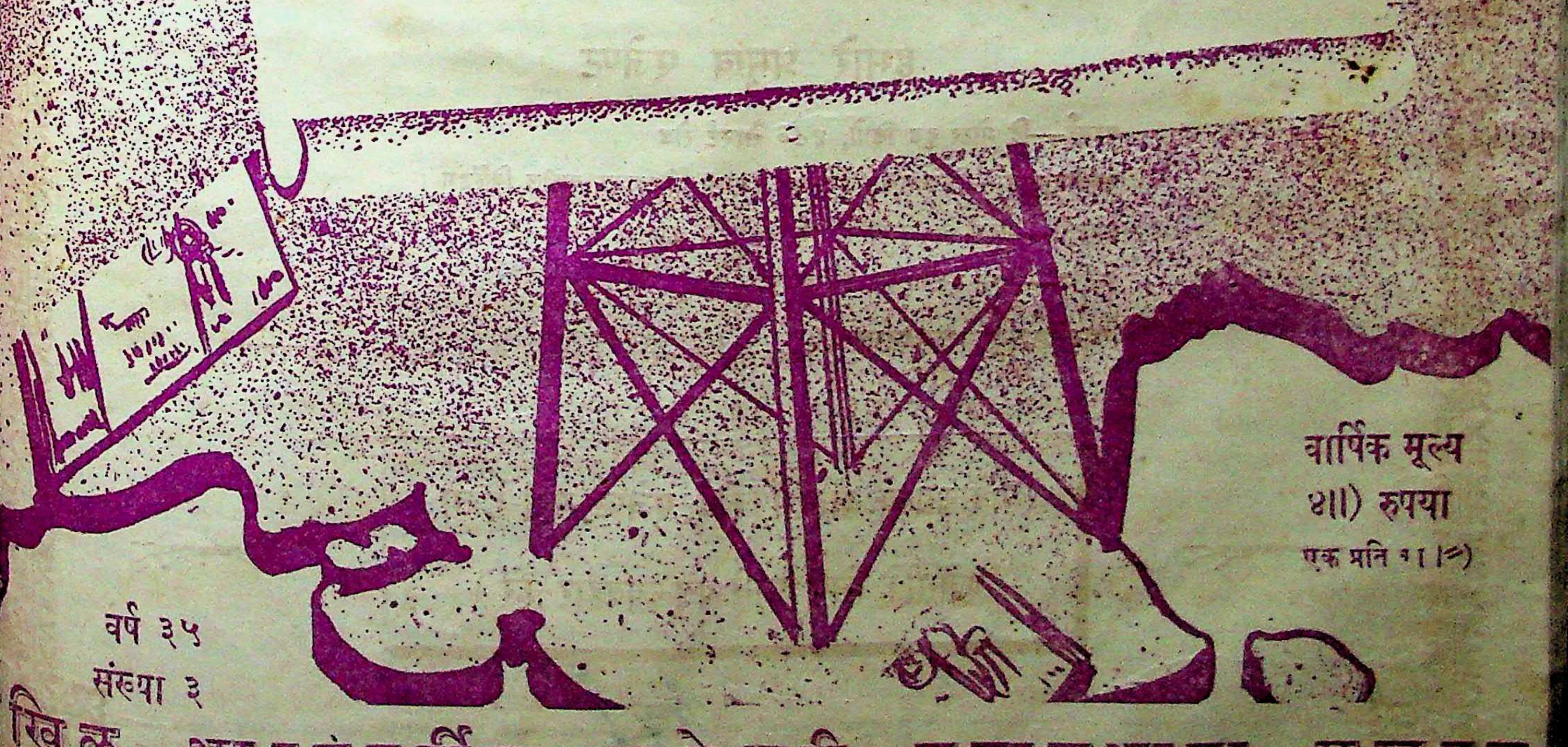

वार्षिक मूल्य
४॥) रुपया
एक प्रति १।=)

वर्ष ३५
संख्या ३

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा
पाक्षिक
कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

बिड़ला जूट मैन्यूफेक्चरिंग कं. लिमिटेड

* * *

मैनेजिंग एजेन्ट्स

बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

८, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

* * *

जूटकी दरियां, आसन, कार्पेट इत्यादि

व्यवहार करें

* * *

पक्का तथा सुन्दर रंग—भाँति भाँतिके मनोहर चित्रमय डिजाइन
चलनेमें अत्यन्त मजबूत—दाममें सूती मालसे बहुत सस्ते

* * *

हमारे प्रमुख एजेण्ट

बम्बई—दि मोटर हुड डिपो, ४८० सैंढर्स्ट रोड
अहमदाबाद—दि अग्रवाल हेशियन एजन्सी, जेठालाल वकील बिल्डिंग ।
कराची—मेसर्स जे. ललवानी ऐण्ड कम्पनी, कागजी बाजार
इन्दोर—होम्स इंडस्ट्रियल एजेन्सी यशवंतगंज
खानदेश, पूना, अहमदनगर और नासिक } मेसर्स लाहोटी ब्रदर्स, राजस्थान चौक, संगमनेर (अहमदनगर)

यदि आपके शहरमें कोई एजेण्ट नहीं है तो
एजेंसीके लिए हमसे पत्र-व्यवहार करें ।

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़
बी.ए., बी.एस्.सी. एलएल.बी.

' उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत '

वर्ष ३५, संख्या ३]
बम्बई ता. ७ जून १९४४
[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

महान जनतंत्रवादी प्रेजीडेन्ट वेनस

(लेखक—**टी. के. मेनन**)

छोटें राष्ट्रों के समूह में प्रेजीडेन्ट स्टुअर्ड वेनस ही एक ऐसे व्यक्ति हैं जो कि अपने राष्ट्र की जनता की राष्ट्रीय और राजनीतिक भावनाओं का प्रतिनिधित्व पूर्णरूप से करते हैं।

गत २८ मई १९४४ के दिन इस महान् स्टेट्समैन ने अपनी ६० वीं वर्षगाँठ मनायी। मि. वेनस की बर्षगाँठ का सबन्ध जेकोस्लोवाकिया के राजनीतिक, आर्थिक, और सामाजिक महत्व से है यह सदा ध्यान में रखना चाहियें। यूरोप तथा संसार के भविष्य से जैकोस्लोवाकिया का गहरा ताल्लुक है। इसीलिए जर्मनी के महान् राजनीतिज्ञ बिस्मार्क ने कहा था :—"बोहिमिया यूरोप का किला है" शायद इसी लिए हिटलर अपने सुडेटन जर्मनों के भी भाग्यके विषयमें आवश्यकता से अधिक चिन्तित था।

वेनस ने प्रेग के पश्चिमवर्ती कोजलेनी नामक कस्बे में २८ मई सन् १८८४ के दिन जन्म लिया था। इनके मातापिता के १० सन्तान थे और इनके पिता एक गरीब कृषक थे, अतः वे इनको बचपन में वहुत अधिक शिक्षा न दिला सके। १९०४ में प्रेग में मैट्रिक पास करने के बाद वे अपने बलबूते पर ही ऊँची शिक्षा के लिये पेरिस चले गये। पेरिसमें उन्होंने पत्रकार का काम शुरू कर दिया। पेरिस से वे जैक साप्ताहिक पत्रों में 'पेरिस के पत्र' नामक स्तम्भ लिखकर भेजने लगे जिससे उन्हें ४ पौण्ड प्रतिमास आय होने लगी। इतनी रक़मसे बमुश्किल उनका खाने पीने का खर्च चलता था, अतः परिणामतः वे पेरिस के विलासमय जीवन के चक्रमें पड़ने से बचे रहे और जोरों से अध्ययन में जुट गये। कुछ ही दिनों में वे फ्रांसीसी भाषामें निष्णात हो गये और वहीं रहते उन्होंने अनेक प्रख्यात ग्रन्थों का अनुवाद किया और "आस्ट्रिया की समस्या और जकोस्लोवाकिया का प्रश्न": नामक मशहूर लेख लिखकर डाक्टर की डिग्री हासिल की।

पूर्वोक्त लेख और दूसरे लेखों से फ्रांसके राजनीतिक तथा शिक्षा क्षेत्रोंमें बेनस का नाम बड़े सम्मान के साथ लिया जाने लगा।

इसके बाद वे इंग्लैण्ड और जर्मनी गये और १९०८ में प्रेग वापिस लौटे और वहाँ की जैक यूनिवर्सिटी में राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर नियुक्त हो गये। उनदिनों प्रो० थोमस मसारिक, जैक रिपब्लिक के जन्मदाता, भी उसी विश्वविद्यालय में प्रोफेस्सर थे। डा० वेनस उनके परमभक्त बन गये।

सन् १९१४ के गत महायुद्ध में जब बेलग्रेड में प्रथम गोलीकाण्ड हुआ तब वेनस अपना ग्रीष्मावकाश वहीं बिता रहे थे। वेनस ने युद्ध में इंग्लैण्ड के उतरने पर भविष्यवाणी की थी कि आस्ट्रो-हंगेरियन केन्द्रीय शक्तियों का पतन हो जायेगा, और उनका साम्राज्य छिन्नभिन्न हो जायेगा। युद्ध के प्रभाव का गहरा अध्ययन करने के लिये वेनस प्रेग गये। पासपोर्ट लेकर वे मसारिक से मिलने गये। मसारिक उनदिनों अपने देश से बाहर चले गये थे। यह मार्ने के भारी मोर्चे की प्रातःकाल की बात थी।

जैक देशभक्तों के एक दल ने प्रेग में एक स्वदेशी केन्द्रीय संस्था स्थापित की थी, जिसका आगे चलकर 'माफिया' नाम पड़ा। डा० वेनस इसके प्रमुख सदस्य बनाये गये, और आपने यूरोप के दूर-दूर के स्थानों की यात्रायें करके यूरोप भर के समस्त जैकों और स्लोवाकों को संगठित किया। इस बीच आस्ट्रो-हंगेरियन अधिकारियों को इस सब जालसाजी की गन्ध मिली, और उन्होंनें राजद्रोह के भयंकर अपराध पर बेनस, मसारिक और माफिया के अन्य सदस्यों के नाम गिरफ्तारी का एक अति आवश्यक वारन्ट निकाला। बेनस यह सब जानते ही अपने कुछ विश्वस्त साथियों के साथ स्वदेश का परित्याग कर अन्यत्र कूच कर चुके थे। पोलिस ने तब रोग शय्या पर पड़ी उनकी जीवन संगिनी—अन्ना बेनस को गिरफ्तार कर लिया और चिरकाल के लिये जेलके सींकचों में बन्द कर दिया।

उधर डा० वेनस तथा मसारिक ने दिनरात एक करके परदेस में जैकोस्लोवाकिया की स्वाधीनता के लिए उत्कट आन्दोलन किया। इसी के परिणामस्वरूप मित्रराष्ट्रों ने पैरिस की सन्धि शर्तों में जैकोस्लोवाकिया को एक स्वतंत्र राष्ट्र घोषित किया। स्वभावतः जैकोस्लोवाकिया रिपब्लिक के प्रथम सर्वसम्मत प्रधान मसारिक नियुक्त हुए और डा० वेनस विदेश सचिव। डा० वेनस ने अपने इस पद को जिस उत्तम योग्यता से सम्हाला उसकी विदेशी राष्ट्रों तक ने मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। डा० बेनस ने यत्न करके फ्रांस और रूस के साथ विशेष महत्वपूर्ण सन्धियाँ की और जैकोस्लोवाकिया, रूमानिया और युगोस्लाविया को एक पृथक समूह में संगठित कर दिया।

सन १९२४ में जेनेवा का जो मशहूर प्रोटोकोल संसार से युद्धों का अस्तित्व मिटा देने के लिये बना था, उस में डा० वेनस का मुख्य हाथ था। सन १९३२ में डा० बेनस ने, जापान ने जो मन्चूरिया और चीन पर हमला किया था, उस के विरुद्ध अपना प्रतिवाद भेजा, और सन १९३४ में उन्हों ने अबीसीनिया पर इटली के आक्रमण की खुले आम निन्दा की और राष्ट्र संघ पर इटली के खिलाफ़ कार्यवाही करने के लिये जोर डाला। ऐंग्लो-ईरानियन ऑयल कन्सैशन संघर्ष में उन्होंने ग्रेटब्रिटेन और पर्शिया के झगड़ों को निपटाने के लिये मध्यस्थ का काम किया और जब रूसने ब्रिटिश टैकनिकल स्टाफ़ के कतिपय व्यक्तियों को जासूसी के अभियोग में गिरफ्तार किया था तो आपने ही उसमें मध्यस्थ बनकर इंग्लैण्ड और रूस के झगड़े का अन्त किया था।

भारतसे सहानुभूति

डा. बेनस और स्वर्गगत प्रो. मसारिक भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन के प्रति सदैव शुभ भावनाएँ रखते थे। दोनों ही महात्मागान्धीजी के अनन्य प्रशंसक थे, विशेष कर उन्हें महात्माजी की सत्य तथा अहिंसा की नीति बड़ी ही पसन्द थीं। मसारिक की म० गान्धीजी से भेंट करने की उत्कट तथा प्रबल इच्छा थी। गान्धीजी गोलमेज परिषद के दिनों जब इंग्लैण्ड में थे तो मसारिक ने अपनी कन्या को गान्धीजी के पास इसलिये भेजा था कि वह उन्हें जैकोस्लोवाकिया राष्ट्र की ओर से निमंत्रण देकर ले आवे। परन्तु भारत में उनदिनों राजनीतिक आन्दोलनकी गतिविधि कुछ ऐसी विकट हो उठी थी कि चाहते हुए भी गान्धीजी उक्त निमंत्रणको स्वीकार न कर सके थे।

यूरोप के अन्य देशों की अपेक्षा जैकोस्लोवा किया में भारतीयोंके साथ बड़े स्नेह व सम्मानका व्यवहार किया जाता रहा है। प्रेग के इन्डो-जैकोस्लोवाक इन्स्टीटयूटने भारतीय संस्कृति तथा सभ्यताको जनप्रिय बनानेमें जो उद्योग किया था, उसकी जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी होगी। इसी संस्थाकी ओरसे विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर, पं. जवाहरलालजी नेहरू, श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित और अन्य भारतीयोंको उस देशकी ओरसे सम्मानपूर्ण निमंत्रण मिले थे।

दिसम्बर १९३५ में जब मसारिक ८५ वर्ष की वय में रिटायर हुए तो उनके स्थान पर बेनस प्रैजीडेण्ट बने।

जर्मनी के राइनलैण्ड को हस्तगत करलेने के कार्य पर प्रैजीडेण्ट बेनसने लोकार्नो सन्धि के अनुसार जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करने का साहस किया था। सन् १९३७ और १९३८ में डा० बेनस ने खुले आम जनतंत्र देशों को चेतावनी दी थी कि हिटलर या अन्य आक्रान्ताओं को खुश करने के नीति से भयंकर युद्धका सामना करना पड़ेगा। म्युनिक आदि की सन्धियां डा० बेनस की भविष्यवाणी के ज्वलन्त उदाहरण हैं। हिटलर ने कितनी बार बेनस को अपने साथ मिलाने की कोशिश की, पर बेनस उसकी चाल में न आये, न आये!!

(शेष पृष्ठ ९ पर)

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० ७ जून १९४४

यह एकाङ्गी सांसारिक सुख कैसा ?

कभी कभी दोस्त लोग ऐसा सवाल करते हैं कि उनकी पत्नी या तो घर गृहस्थी के काम की नहीं है या प्रसूति के पश्चात् उसके दिमाग पर ऐसा कोई असर हो जाता है जिस का परिवर्तन पागलपन की बीमारी में हो जाता हैं । और इस कारण से वह अपने पतिको सांसारिक सुख दे नहीं सकती । ऐसी हालत में वे यह चाहते हैं कि उनकी पत्नी उनके पुनः विवाह करने के प्रस्ताव को अपनायें या उसका विरोध न हो ।

एकपत्नी रहते हुए दूसरा विवाह करने के विचार के संबंध में हमारा मत क्या है, यह हम माहेश्वरी के द्वारा कई बार व्यक्त कर चुके हैं । ऐसे विवाहों का हमने विरोध भी किया है और लोगोंको परामर्श भी दिया है कि ऐसे विवाहों का समाज द्वारा विरोध किया जाना चाहिए ताकि ऐसे विवाह न रचे जायं । जो सज्जन या मित्र ऐसे विवाह करने के पक्षपाती रहते हैं, वे दलील देते हैं कि उस स्त्री की डाक्टरों द्वारा परीक्षा और चिकित्सा करायी गयी है और डाक्टरोंने राय दी है कि वह घर गृहस्थी के कामके लिए उपयोगी नहीं है । अतः उनकी रायसे यह लोग यह सिद्ध करना चाहते हैं कि उनके दुवारा विवाह करने के प्रस्तावका समर्थन हो । हम देखते हैं कि पुरुष अपने अनुकूल जो बात होती है उसे ठीक सिद्ध करने में तनतोड़ मेहनत करते हैं । पुरुष तो स्त्रीके घर गृहस्थी के अयोग्य होने के आधार पर अपना दुवारा विवाह करने के लिये समाज का नैतिक समर्थन प्राप्त करने की कोशिश करता है, किन्तु जब स्त्री को उससे शिकायत होती है-कभी कभी तो ऐसी शिकायत कि जिसे और बर्दाश्त करना प्रत्येक दृष्टि से उसके लिए असह्य हो जाता, तो उसको उसे व्यक्त नहीं करने दिया जाता । पुरुष जाति कितनी स्वार्थी है कि जब तक स्त्री उसके सौख्य और आनंद का साधन रहती है, तब तक वह बड़ी कदर से रखी जाती है, किन्तु ज्योंही इसमें जरा भी कमी होने लगती है, त्योंही पुरुष का उसके प्रति सारा रुख ही बदल जाता है । उसकी मर्यादा और सम्मान का सूर्य अस्त हो जाता है और वह एक नौकरानी से भी गयी गुजरी हालत में पहुंच जाती है ? उसके लिये पातिव्रत का पालन करना अनिवार्य है किन्तु पुरुष के लिए पत्नीव्रत का पालन कोई जरूरी नहीं-वह चाहे तो रोज उसे भंग करे और पत्नी चूं नहीं कर सकती । जो समाज इस भयंकर अन्याय को टुकुर टुकुर निहारने की धृष्टता और बेवकूफी करता है उसकी नींव कदापि दृढ़ नहीं बनी रह सकती । 'स्त्री पुरुष की अर्द्धांगिनी है ' यह केवल पोथियों में ही है । व्यवहारिक जीवन में इस आदर्श वाक्य का कहां ठिकाना है ? अगर स्त्री अर्द्धांगिनी है तब तो किसी भी अवस्था में न छोड़ी जानी चाहिए ठीक उस तरह जिस तरह कि पति चाहे जैसा कालाकलूटा, मूर्ख, अशिष्ट, विक्षिप्त और भयंकर रोगग्रस्त हो तो भी पत्नी अपना कर्तव्य और धर्म बराबर निभाती रहती है ।

कई बार यह भी देखा जाता है कि लड़के लड़की का चुनाव माता पिता द्वारा होता है और होता है—धन द्रव्य को देख कर । लड़के लड़कियों में बसने वाले व्यंगों का पारस्परिक भान कतई नहीं कराया जाता, परिणाम यह होता है कि विवाह होने के पश्चात जब वे एक दूसरे के निकट आते हैं और जब उनको उन व्यंगों का परिचय होता है तो उनका हृदय तिलमिला जाता है । लड़का तो अपने रोष को प्रकट कर सकता है और डाक्टरों और अन्य शुभचिंतकों के सहारे दुबारा विवाह रचाने की कोशिश करता है । लड़की के माता पिता अपने कृत कार्यों का प्रायश्चित्त उसके (जामाता) दुवारा विवाह की सम्मति प्रदान करके करते हैं । लडकेका विवाह होता है-ठाठ बाटसे होता है-कानून उसके पक्षमें हैं और दावत उड़ानेवाले तो मिल ही जाते हैं । किन्तु यदि लडकीको पतिके व्यंगका भान होता है तो वह क्या कर सकती है ? सिर्फ वही जो उसके नसीबमें इनकी लिखित आज्ञाओंसे बदा होता है—आंसू ।

वास्तवमें होना तो यह चाहिए कि लड़के और लड़कियां अपने भावी जीवन की यथार्थता को सम्यकरूपसे समझें और अपने जीवनको सुखदुःखमें बिताने की क्षमता रखें तभी उनका पारस्परिक वैवाहिक जीवन महत्व रख सकता है । यद्यपि लड़के लड़कीके विवाह की आयुकी मर्यादा क्रमशः १८ और १४ वर्ष मानी गयीं है, फिर भी वह कोई ऐसें चुनाव में सहायक नहीं सिद्ध हो सकती । इसका-१८, १४ का अर्थ तो यही समझना चाहिए, जहां १४, १६ या इसके अंदर भी लड़केके गोदमें खेलती हुई लडकीकी आयु से लगाकर १०-१२ वर्षकी आयु तक की लडकियों के साथ विवाह के नामपर जो नाटक रचा जाता था उसका उच्चाटन हो इस लिये यह मर्यादा १८-१४ की रखी गई है । हमारी तो मान्यता है कि जहां लड़के लड़की पारस्परिक विचारपूर्ण चुनावसे विवाहबद्ध होंगें वहां इस प्रकार के अनुभव शायद ही मिलें ।

दोस्त यह शंका उठा सकते हैं कि जहां स्त्रीको प्रसूतिके समय पागलपन या दिमाग विकृति आ जाती है वहां युवकके लिए दुवारा विवाह कर लेनें सें क्या हर्ज है । जैसे लड़की की हालत बीमारी की अवस्था में ऐसी हो सकती है वैसे मान लेना चाहिये कि लडकों की भी तो हालत ऐसी हो सकती हैं । हम लडकी से संयम और त्याग की अपेक्षा रखतें हैं तो क्यों नहीं युवक उसी संयम और त्याग का परिचय दें ? आखिर हमारा वैवाहिक जीवन त्याग और संयम ही पर तो स्थित है । इसको पारस्परिक महत्ता को समझने और कृत्य करने में ही मंगल और कल्याण है । अतः हम चाहते हैं कि दूसरे के हित को ध्यानमें रखते हुए श्रेयस और प्रियकर मार्ग अपनाया जाय इसी में सबका भला है ।

यह सौदा !

एक सज्जन लिखते हैं—" एक माहेश्वरी ४५ वर्ष के हैं जो विवाह करने की तैयारी कर रहे थे, उन्हें समझा बुझाकर रोका है । वह इस शर्त पर राजी हुए हैं कि उनका विवाह किसी प्रौढ़ विधवाके साथ करा दिया जाय । वहां के नवयुवकों ने यह शर्त स्वीकार कर ली है । अब आपका और हमारा कर्तव्य है कि हम उनके लिए किसी प्रौढ़ अवस्थावाली विधवा का पता लगायें । आप कृपा कर पत्रमें ' आवश्यकता ' है शीर्षक के अन्तर्गत इस विषयका विज्ञापन निकाल दीजिये । "

जिन बंधुने ४५ वर्ष की उम्रमें विवाह करनेका विचार किया, किन्तु वहांके नवयुवकों के समझाने पर रुक गये, इसके लिए हम उनका एवं वहांके नवयुवकोंका हार्दिक अभिनंदन करते हैं, किन्तु हमें यह भी कहते दुःख होता है कि जिस शर्त पर नवयुवकोंने उक्त महाशय के साथ सौदा किया है, वह बिल्कुल अनुचित है । हम यह बतला देना चाहते हैं कि वृद्ध विवाह रोकनेका यह मतलब नहीं है कि हम किसी वृद्ध के साथ इस प्रकार का सौदा कर उसको पुनः विवाह करने के लिए प्रोत्साहन दें और यह भी वृद्ध विवाह कैसा कि हम उनके साथ सौदा करें कि किसी प्रौढ़ विधवा के साथ शादी करा देंगे । शादी कोई खिलौना नहीं है जो किसी के हाथमें देकर उसको संतुष्ट कर दिया जाय । यह काम तो हमें ठीक वैसा ही लगता है जैसे कि कोई बच्चा चाकू के साथ खेलता हो और यह भय देखने पर कि वह कहीं अपने शरीर पर जखम न करले उसको उसे त्यागने के लिए खिलौने के मिष से राजी कर लिया जाय । किसी बहन के विधवा हो जाने का यह मतलब नहीं हैं कि हम उसको किसी भी वृद्ध व्यक्ति के साथ विवाह करने के लिए उकसायें । हम विधवा विवाह के हिमायती हैं, किन्तु इस प्रकार के विचारों को प्रश्रय नहीं दे सकते । इस तरह के विवाह किसी भी समाज को रसातल में पहुँचाने के लिए पर्याप्त हैं । अतः वृ महाशयजी के साथ जो सौदा किया गया है वह सर्वथा अनुचित और अवांछनीय है । अखिर वहां के नवयुवकोंने क्या सोचकर यह सौदा किया हैं । क्या इस प्रकार वृद्ध विवाहों सें समाजका भला हो सकता है ? हमारी तो निश्चित राय है कि प्रत्येक घटनापर उसके स्वतंत्र गुणावगुण पर ही विचार करना चाहिए । यदि ऐसे सौदेसे ये नवयुवक बंधु अपने को मुक्त करलें तो कोई गलती नहीं करेंगे किन्तु उनका यह कदम स्तुत्य ही माना जायगा । हम वहां के ' नवयुवकों से अनुरोध करते हैं कि वे इस सौदे को रदकर दें और वृद्ध विवाहों का विरोध करने के दर्मियान इस प्रकार के सौदे भविष्य सें कभी न करें ।

सोवियट मित्रसंघ और हम

गत ३-४ जून को बम्बई में सोवियट मित्र संघ की अखिल भारतीय कांग्रेस हुई जिसमें रूसके प्रति भारतकी मित्रता और घनिष्ठ सम्पर्क में और वृद्धि करने की आवश्यकता बतायी गयी और साथही रूसको समस्त विश्वके मानव समाजके उद्धार का नेता तक घोषित किया गया ।

सोवियट रूसके प्रति पददलित, उत्पीड़ित और शोषित मानव समाज की सद्भावना त से है, जब कि वहां के बहादुर मजदूर किसानों ने लेनिन-ट्राट्स्की के नेतृत्व में विश्वके इतिहास में एक अभूतपूर्व क्रांति कर राजसत्ता अपने हाथ में ली थी और अपनी ही जैसी स्थिति में समस्त विश्वके श्रमजीवियों को देखने की प्रबल उत्कंठा से प्रेरित होकर उनका नेतृत्व और पथ प्रदर्शन करनेके लिए २ मार्च १९१९ को थर्ड इन्टरनेशनल नामकी एक क्रांतिकारी संस्था स्थापित की थी । वास्तवमें रूसने मानवताके उद्धार का बीड़ा उठाया था और यह थर्ड इंटरनेशनल विश्वक्रांतिका ' जनरल स्टाफ ' था । जब तक लेनिन जीवित रहे, रूस अपने आदर्श पर दृढ़ रहा और सन्तोषप्रद गतिसे तदनुरूप कार्य करने की कोशिश की, किन्तु उनके आंख मूंदने पर विश्वके पीड़ित और शोषित मानव समाजके दुर्भाग्यसे स्टेलिन रूसका डिक्टेटर हुआ जिसने विश्वक्रांतिके सिद्धान्त को वाल्गामें फेंककर उसकी जगह एक देशमें साम्यवादके स्वनिर्मित सिद्धान्तको अपनाया, गृहयुद्ध, अकाल, और कई देशोंमें क्रांतियों की असफलताने, जिसके लिए नेतृत्व जिम्मेदार है--स्टेलिनको इस सिद्धांत को कार्यरूपमें परिणत करनेमें मदद की । वहां के जन साधारण मायूसी के भंवर में अस्तव्यस्त हो चुके थे इस लिये सर्वथा प्रतिगामी सिद्धांत उन्हें अपील कर गया ! इसके बाद रूस का सारा स्वरूप ही बदल गया । उसने जो कुछ किया अपने निजी स्वार्थ की दृष्टिसे । लेनिन और कम्युनिज्म का. नाम लेकर जो लज्जास्पद और विश्वक्रांति विरोधी कार्य किये गये उनका लम्बा इतिहास है और यहां उनके विवेचन में हम नहीं पड़ना चाहते । स्टेलिन ने २३ अगस्त १३३९ को जर्मनी के साथ संधि कर सारी

दुनिया को आश्चर्य में डाल दिया और इसके ठीक १० दिन बाद वर्तमान महासमर का श्रीगणेश हो गया। स्टेलिन की हरी झंडी देखकर हिटलर ने प्रायः सारे यूरोप को रौंद डाला और रूस स्वयं भी इस लूटपाट से अलिप्त नहीं रहा। फिनलैण्ड पोलैण्ड आदि को वह हजम कर गया ठीक उसी ढंगसे जिस प्रकार हिटलर और मुसोलिनी ने कई देशों को हजम किया। अंत में जून १९४१ में हिटलर ने अत्यधिक शक्तिशाली होकर खुद रूस पर धावा बोल दिया। स्टेलिन के विश्वक्रांति के पथ से भ्रष्ट होकर कभी एक साम्राज्यवादी राष्ट्रसे, कभी दूसरे से और आखिर में फैसिस्ट राष्ट्रों से गठबंधन करने का यह परिणाम था, जो उसे जल्दी ही भोगना पड़ा। अस्तु—

* * *

रूसके प्रति मानव समाज का सम्मान प्रतिष्ठा और आकर्षण धूलिमें मिल गया। मित्र राष्ट्रों के साथ पैक्ट कर उसे और भी विशुद्ध राष्ट्रीयतावादी बनना पड़ा और थर्ड इंटरनेशनल को दफना कर स्टेलिन ने डंके की चोट यह घोषित कर दिया कि विश्व की उत्पीड़ित मानवता जहन्नुम में जाय उसे तो केवल रूसका हित देखना है। इस करतूत से रूसके प्रति लोगों में विराग हो गया और इसे दूर करनेके लिए सर्वत्र सोवियट मित्रसंघ जैसी संस्थाओं की स्थापना की गई है यही इसकी पृष्ठभूमि है।

+ + +

रूसने जिस बहादुरी के साथ अपने आक्रान्ता से लोहा लिया है वह स्पर्धा की वस्तु है। हम उसके अधिवासियों की दृढ़ता, साहस, और सहनशीलता की मुक्त कंठ से प्रशंसा करते हैं, किन्तु हम उसके अतीत के रुखों के कारण हाल की उसकी भयंकर भूलों की तरफसे आंख नहीं मींच सकते। अपने आदर्श से पथभ्रष्ट होकर उसने स्वयं अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारली हमें उसकी दशापर तरस आता है ओर यह स्वाभाविक ही है कि ऐसी दशामें उसके प्रति लोग वही रूखलें जो कि किसी भी पथ भ्रष्ट के प्रति लिया जाता है। जर्मनों का सफलता पूर्वक मुकाबला या नीम समाजवादी सामाजिक व्यवस्था की आड़ में उसकी भूलोंको सर्वथा भुलादेना संभव नही है। सौहार्द्र या मित्रता जबर्दस्ती किसीपर नहीं लादी जाती। यह तो हृदय की चीज है और इसका आदिस्रोत है-एक दूसरे के हितों का चिंतन और उसके साधन के लिए आप्राण चेष्टा। और यह भी बड़े मजेकी बात है कि रूस बेरुखाई दिखाये और उसके अंध भक्त हमसे उसके प्रति मित्रता और सौहार्द्र प्रदर्शित करने की अपील करें! हम यह कहने के लिए बाध्य हैं कि भारत के जीवन मरण के प्रश्न—पूर्ण स्वाधीनता में रूसकी कोई दिलचस्पी नहीं है। क्या रूस के कर्णधारोंने इसके प्रति कभी अपना मुंह खोला है? इसके विपरीत उन्होंने बेशर्मी के साथ अटलांटिक चार्टर पर अपनी मुहर लगादी जिसमें भारतीयोंको स्वाधीनतासे वंचित रखा गया है। हब्शियों और निग्रो लोगों के साथ भी उन्होंने कौनसा अच्छा सलूक किया है?

वास्तविकता तो यह है कि आज रूसके राष्ट्रीय साम्यवाद और ब्रिटिश अमेरिकन साम्राज्यवाद में गठबंधन है। स्टेलिन ऐसा कोई कदम नहीं उठा सकता जो ब्रिटिश अमेरिकन साम्राज्यवाद के हितों के खिलाफ जाय। भारत में उसके एजेण्टों द्वारा वर्तमान महासमर को लोकयुद्ध सिद्ध करने को असफल चेष्टा में यह तथ्य निहित है। हम पूछते हैं जब रूस यूरोप के अन्य पूंजीवादी या साम्राज्यवादी राष्ट्रों जैसा आचरण कर रहा है, तब भारतीयों से उसके प्रति सौहार्द्र या मित्रता की आशा रखने की धृष्टता क्यों? आज जब भारतीय अपनी स्वाधीनता के लिए आकुल प्राण हों, उसे प्राप्त करने के लिए छटपटा रहे हों, तो उनसे यह कहना कि यह लोकयुद्ध है, तुम शांत रहो, परले दर्जे की गद्दारी और राष्ट्र अहित है। सोवियट मित्र मंडल में प्रसिद्धि के भूखे कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति अवश्य घुसे हैं, या उन्हें घुसाया गया है, किन्तु इससे कोई चमत्कार हो जाना स्वप्न है। भारतीयों को सोलह दूनी आठ का, पाठ पढ़ाना अब संभव नही है। वे अपना हितैषी समझने की क्षमता रखते हैं।

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल

हम अन्यत्र प्रकाशित श्री. किशनलालजी लाहोटी चेयरमैन माहेश्वरी विद्याप्रचारक मंडल के कार्यकारी मंडल के वक्तव्य की ओर बंबई प्रांत वासियों का ध्यान आकृष्ट करते हैं।

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल के द्वारा लगभग १७-१८ साल से बंबई प्रांत में शिक्षा प्रचार का कार्य हो रहा है। जगह जगह विद्यार्थी भुवनों का निर्माण, छात्रवृत्ति वितरण, आदि कार्य होते रहते हैं। मंडल को अभी अभी बहुत काम करना है। स्त्रियों में शिक्षा का प्रसार, बालमंदिर का निर्माण, शारीरिक, मानसिक विकास, जगह जगह पुस्तकालयों, वाचनालयों द्वारा ज्ञान का प्रसार अभी बहुतेरे काम हैं। योंतो मंडल को लोगोंने सहायता पहुंचायी है और प्रवृत्तियोंमें सहयोग दिया है, किन्तु हम कहते हैं कि जिस प्रकार अधिक सहयोग की अपेक्षा है, तद्रूप न मिली है, तो भी भविष्य अति उज्ज्वल है। हम बंबई प्रांतवासियों से सादर अनुरोध करते हैं कि यह संस्था उनकी है, इसकी प्रवृत्तियोंमें तन, मन, धन से अपना योग देना चाहिए, जितना वे योग देंगे, उतना ही मंडल का कार्य अधिक बढ़ेगा। मंडल की ओर से वर्तमानमें विद्यार्थियों को छात्रवृत्तिके रूपमें जो सहायता पहुंचायी जाती है वह बहुत ही अल्प है और कई ऐसी भी छात्रवृत्तियोंका रखना जरूरी है जिनसे कि प्रतियोगितामें सर्वोच्च गुण प्राप्त करने वालों को प्रोत्साहन दिया जाय।

सावरकरका प्रलाप

जो सावरकर किसी समय अपनी सारी शक्ति भारत को स्वाधीन देखने के लिए लगा रहे थे, वही आज भारत में साम्प्रदायिक द्वेष की अग्नि दहकाने, राष्ट्र हितोंपर कुठारघात करने और लोगों को गुमराह करने में लगा रहे हैं। उनका यह पतन निस्संदेह शोचनीय है। साम्प्रदायिकता के भूतने वस्तुतः उन्हें पागल बना दिया है। कोई चाहे जो भी कार्य करें, उसे वह साम्प्रदायिक द्वेष के दृष्टिकोण से देखने के आदी हो गये हैं। स्व. कस्तूरबा स्मारक फंड जैसे विवादहीन कार्यमें अड़ंगा डालने की कुत्सित चेष्टा इसका एक ताजा उदाहरण है। आप फर्माते हैं:—"कस्तूरबा स्मारक फंड मुसल्मानों के ज्यादह काम आयगा इस लिए उसमें हिन्दुओं को एक पैसा भी न देना चाहिए। यह भी हो सकता है कि इस फंड का रुपया राजनीतिक (स्पष्टतया कांग्रेस) कामों मे व्यय किया जाय," जब फंड की ओर से स्पष्टतया यह घोषित कर दिया गया है कि फंड में जो कुछ आयगा, वह स्त्रियों की शिक्षा और उनके उद्धार के कार्यों में व्यय किया जायगा, तो फिर रकम के व्यय के संबंध में शंका प्रकट करना उन्हें शोभा नहीं देता। ऐसी शंका उनके कलुषित हृदय का परिचय देती है। क्या वह स्त्री शिक्षा के पक्षपाती नहीं हैं? क्या वह यह नहीं चाहते कि स्त्रियों की आज जो स्थिति है वह बदले?

फंडका केवल इसीलिए विरोध क्योंकि उसके चेयरमैन महात्मा गांधी हैं? और मुस्लिम अधिक फायदा उठायेंगे, इस आशंका का क्या आधार है? यदि इस फंड की रकम से शिक्षा विषयक कोई आयोजन बनेगा और उससे मुस्लिम स्त्रियां भी लाभ उठायेंगी तो इसमें हर्ज क्या है? राष्ट्रीयता इस प्रकार का भेदभाव हर्गिज नहीं स्वीकार करती। अगर उनकी राष्ट्रीयता इतनी संकुचित है, तो वह उन्हींके लिए मुबारक हो। कांग्रेस से वह लड़ें हिंन्दू हितों के बहाने बनाकर किन्तु कस्तूरबा स्मारक फंड जैसी राष्ट्रीय हित की चीज का विरोध करना उन्हें उचित नहीं है। इससे तो देशवासी उन्हें प्रचंड राष्ट्रहित विरोधी मानेंगे।

सूर्य नमस्कार

अन्यत्र श्री मुरलीधरजी लोया पूना, की सूर्य नमस्कार के सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति प्रकाशित हो रही है। हम उनकी प्रार्थना का हृदय से स्वागत करते हैं। सूर्यनमस्कार की विधि को विशेष रूप से औंध के पंतप्रतिनिधि ने चालना दी है और महाराष्ट्र में तो इसका पर्याप्त प्रचार है। सूर्य नमस्कार में दोनों क्रियाएं साथ-साथ में होती है, एक तो जीवनदाता सूर्य भगवान के प्रति हमारी श्रद्धायुक्त अञ्जलि, एवं शरीर का स्वास्थ्यप्रद व्यायाम। इस व्यायाम में एक यह खूबी है कि सारे शरीर को व्यायाम मिलता है। यदि हम बराबर इस प्रार्थना का अभ्यास करें तो ४ मास में १ करोड़ की संख्या कोई बहुत अधिक नहीं है। हम श्री मुरलीधरजी से यह प्रार्थना करते हैं कि उनको इस चातुर्मास के अन्त में ऐसा आयोजन रखाना चाहिये कि जिसमें उत्साही भाई बहिन भाग लेकर औरों को उत्साह प्रदान करा सकें। प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले भाइयों को सफलता पर पारितोषिक भी रखें।

चातुर्मासमें सूर्य नमस्कार

(श्री. मुरलीधरजी लोया)

व्यायामप्रेमी सज्जनों को यह विदित करते हमें सन्तोष है कि गतवर्ष 'माहेश्वरी' के ३४ वें वर्ष के ५ म अंक में श्रीसूर्यनमस्कारों के लिये प्रार्थना की गयी थी, जिसका समुचित उत्तर स्थानस्थानपर अनेक भाइयों ने उस प्रार्थनाके अनुसार नमस्कार व्यायाम करके दिया, उसके लिए मैं हृदयसे उनका आभार मानता हूं।

मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि बागलकोट के बन्धुओं ने इस ओर अधिक ध्यान दिया।

गतवर्ष के बन्धुओं के सहयोग से उत्साहित हो इस वर्ष पुनः 'माहेश्वरी' के द्वारा माहेश्वरी' के पाठकों की सेवा में विनम्र-निवेदन करता हूँ कि सूर्यनमस्कार व्यायाम को अपनाकर प्रतिदिन कमसेकम १०८ नमस्कार, या इतना शक्य न हो तो १२ नमस्कार भी नमस्कार के रूप में वह इस संकल्प में सहयोग दें। मनुष्य के लिए जीवन में व्यायाम का एक विशेष स्थान है, और इसकी उपयोगिता के संबन्ध में बहुत कुछ कहाजाचुका है, और हम नहीं समझते कि सुज्ञ पाठकों के लिये लाभ बतलाने की और आवश्यकता अब रह जाती है। व्यायाम में सूर्यनमस्कार एक ऐसी विधि है जिसमें एक पन्थ दो काज होते हैं:—ईश्वर के प्रति श्रद्धायुक्त अञ्जलि एवं शारीरिक स्वस्थता।

मुझे आशा है कि प्रत्येक भाई बहिन आबालवृद्ध इसमें सभी योग दें तो यह प्रार्थना सुगमता से सफल होसकती है।

वज्रपात

हमें यह लिखते हुए दुख होता है कि अटाव के उत्साही युवक कार्यकर्ता श्री. बन्सीलालजी काबराका एकाएक स्वर्गवास हो गया। अपने तीन चार साथियोंके साथ अटाव से २।३ कोस की दूरी पर तापी नदी में तैरने गये थे। वहां तैरते तैरते ही वे अपघात के शिकार हो गये। श्री. बन्सीलालजी में समाज एवं देशसेवा की भावना खूब भरी हुई थी। कॉलेज के जीवन में ही उनका अधिकतर ध्यान रचनात्मक कार्योंमें लगा हुआ था जिससे अपने साथियोंमें वह काफी लोकप्रिय थे। श्री. काबराजीका जीवन यूं एकाएक जल्दी ही संपुष्ट में आजानेसे श्रीमती वासंती देवी पर एकाएक वैधव्य का पहाड टूट पड़ा और सब दोस्तों में दुःख की छाया पड़ी है। हम श्रीमती वासंती देवी एवं उन छोटे बच्चों एवं उनके परिवार के प्रति हार्दिक समभावना प्रगट करते हैं। ईश्वर श्री. काबराजी की आत्माको शांति दें।

श्रीश्रीप्रसादजी झंवरका देहान्त

श्री कोलवार माहेश्वरी सभाके कोषाध्यक्ष, जातिके कर्णधार, परमहितैषी श्रीयुत बा. श्री प्रसादजी झंवर रईस फरूखाबाद ता० १३ मई सन् १९४४ ई० को दोपहरके बाद लगभग ४१ वर्ष की आयुमें स्वर्गवासी होगये। आपने तीन वर्षके समयमें सभाके फण्ड बढ़ाने और कार्यको सुचारु रूपसे चलानेमें यथाशक्ति परिश्रम किया। आपके इस असामयिक निधन से सभाको जो क्षति पहुंची है वह असहनीय है।

परमात्मासे प्रार्थना है कि दिवंगत आत्माको शान्ति और शोक ग्रसित परिवारवालोंको धैर्य प्रदान करे।

समाज संगठन की पहली सीढ़ी—परिवार

ले०—**श्री. पं. सुन्दरलालजी** व **श्री. भगवानदासजी केला** दारागंज (प्रयाग)

◆

भारतमें अंगरेजी राजके लेखक श्री पं. सुन्दरलालजी ने तथा श्री. केलाजीने हालमें एक पुस्तक लिखी है, जो शीघ्र छपने वाली है। उसका नाम है—" विश्वसंघ की ओर " उसके तीन खंड हैं—(१) अब तक की यात्रा, (२) रास्ते की बाधाएँ, (३) कहाँ पहुंचना है। इसमें बताया गया है मनुष्यने किस प्रकार परिवार, कबीला और जाति बनायी, गाँव और नगर बसाये, राष्ट्र, संघ-राज्य और साम्राज्य स्थापित किया। उसकी गति संसार भरके सब राज्योंको मिलाकर सबका एक विश्व संघ बनाने की ओर है। इस लक्ष्यको किस तरह प्राप्त किया जाय।

यह लेख इस अप्रकाशित पुस्तक का एक अध्याय है।

मानव जाति की सेवा के लिए परिवार तुम्हारा सब से छोटा कार्य-क्षेत्र है। इस में तुम, तुम्हारी पत्नी और तुम्हारे बच्चे होते हैं। प्राणिशास्त्र की दृष्टि से परिवार समाज की स्वाभाविक इकाई है।

—हरदयाल

मनुष्यों में धीरे-धीरे सामाजिक भावना का विकास हुआ है। परिवार से शुरू करके आदमी अधिकाधिक बड़े संगठनों की ओर बढ़ता रहा है। इस समय संसार में छोटे-बड़े अनेक संगठन हैं। अब हम मुख्य मुख्य संगठनों में से हरेक के सम्बन्ध में कुछ विचार करेंगे। पहले हम परिवार को लेते हैं। यह समाज संगठन का सब से पहला और कुदरती स्वरूप है। परिवार में प्रायः एक पुरुष, उसकी स्त्री और उसके बच्चे माने जाते हैं। पुरुष और स्त्री का एक दूसरेके प्रति स्वाभाविक प्रेम और आकर्षण होता है, उसका प्रत्यक्ष फल संतान है।

परिवारके रूपमें समाज-संगठन जैसा इस समय है, ऐसा शुरूमें नहीं था। बहुत पुराने जमानेमें स्त्री पुरुषोंमें विवाह-शादी करके टिकाऊ सम्बन्ध कायम करनेका रिवाज नहीं था। बच्चे केवल मा के साथ रहते थे; उस समय परिवारका अर्थ था, मा और उसके बच्चे। पीछे जा कर, पिता भी परिवारका सदस्य होने लगा। कहीं-कहीं दो या अधिक भाई अपने-अपने स्त्री-बच्चों सहित एक साथ रहने लगे। इस दशामें बालक अपने माता पिता के ही साथ नहीं रहते, बल्कि अपने चाचा चाची, ताऊ ताई आदिके साथ रहते हैं। ऐसे परिवार को संयुक्त परिवार कहते हैं। हमारे देशके आदमी इससे अच्छी तरह परिचित हैं।

परिवार दो तरह के होते है—एक, पितृ प्रधान; जिनमें बालक अपने पिता, पितामह (बाबा) और प्रपितामह (परबाबा) आदि के वंश के माने जाते हैं, और हर आदमी की जायदाद का उत्तराधिकारी उसका बड़ा लड़का समझा जाता है। दूसरे, मातृ प्रधान; जिनमें वंश माता, नानी आदि के नाम से चलता है। जायदाद पर अधिकार स्त्री का होता है, और उसकी वारिस उसकी बड़ी लड़की होती है। परिवार किसी भी तरह का हो, वह सारे समाज का छोटा सा रूप है। उस से समाज का व्यापक रूप बनता और विकसित होता है। पुरुष स्त्री दोनों एक दूसरे की सहायता और सेवा करते हैं; और दोनों मिलकर अपने बच्चों की जरूरतों को पूरा करते हैं।

परिवार आदमी को सामाजिकता की शिक्षा देने वाली एक प्रमुख संस्था है। इसमें पुरुष और स्त्री को यह मौका मिलता है कि एक दूसरे के लिए त्याग करना और कष्ट उठाना सीखें, हर व्यक्ति दूसरे के स्वभाव, आदर्श और रुचि के साथ अपने स्वभाव, आदर्श और रुचि का मेल बैठावे, सामंजस्य पैदा करे, और वह भी इस तरह कि एक दूसरे के विकास में सहायक हो, बाधक न हो। प्रेम चाहता है—सेवा, संयम, उदारता और त्याग। जब पुरुष-स्त्री एक दूसरे के लिए इन गुणों का अभ्यास करते हैं तो वे जीवन के व्यापक क्षेत्र में भी इन गुणों का परिचय देते हुए समाज के लिए अपनी उपयोगिता बढ़ाते हैं।

संतान होजाने पर पुरुष और स्त्री दोनों उनकी ओर आकर्षित होते हैं; उसके हित में दोनों का हित, और उसके सुख में दोनों का सुख केन्द्रित होजाता है। यहाँ तक कि अनेक बार संतान के हित के लिए वे अपने सुख-दुःख को बिल्कुल भूल जाते हैं। यदि यह भाव ठीक-ठीक बढ़ता जाय, जैसे हम अपने बच्चे को प्यार करते हैं, वैसा ही दूसरों के बच्चों को प्यार करें, यदि संसार के स्त्री-पुरुष जाति, धर्म, व्यवसाय, देश, रंग आदि के भेदों को भूलकर मानव संतान की सेवा-सुश्रुषा में लग जावें तो हमें पारिवारिक जीवन से मिलने वाली शिक्षा का असली और पूरा फल मिल जाय।

इसी तरह सन्तान की दृष्टि से विचार किया जा सकता है। हम अपने माता-पिता की संतान हैं। माता पिता ने हमारे पालनपोषण के लिए जो कष्ट उठाए हैं, उसका वर्णन नहीं हो सकता। यदि मा अनेक बार स्वयं सर्दी, गरमी, भूख, प्यास आदि सहकर हमारे सुख-सुविधा की चिन्ता न करती तो कौन जाने हमारी क्या गति होती; हम इतने बड़े हो भी पाते या नहीं। पिता ने हमारे वास्ते कितना परिश्रम किया है, इसकी मधुर स्मृति हृदय में रखने की चीज है। माता, पिता का हम पर कितना ऋण है, यह तो केवल अनुभव का ही विषय है। बड़ा होने पर जब कोई खुद माता-पिता बनता है, तभी उसे इस बात का कुछ ठीक ठीक ज्ञान हो सकता है। निदान माता पिता के प्रति हमारा एक महान कर्तव्य है, और यह कर्तव्य एक दरजे तक दूसरे सम्बन्धियों या रिश्तेदारों आदि के प्रति भी है, जिन्हों ने हमारे साथ बहुत स्नेह किया है, और जो हमारे हितैषी रहे हैं। कभी-कभी ऐसा होता है, कि सन्तान के जन्म से पहले ही बाप का देहान्त हो जाता है, या जब बच्चा थोड़े दिन का होता है, मा चल बसती है, या वह ऐसी अस्वस्थ होती है कि बच्चे की सारसंभार तो क्या, उसे अपनी छाती से दूध भी नहीं पिला सकती। ऐसी हालत में निकट सम्बन्धी बच्चे का भरण पोषण करते हैं। यदि बालक को उनकी सहायता, प्रेम, और संरक्षण न मिले तो उसका जीना और बढ़ना कठिन हो जाय। फिर बड़े होने पर भी हमें उनसे कई तरह की मदद मिलती रहती है। सारांश यह कि हर आदमी खुद अपने साथ और दूसरों के साथ होने वाले व्यवहार से अच्छी तरह समझ सकता है कि आदमी अपने सगे सम्बन्धियों का कितना ऋणी होता है।

हमें चाहिए कि उन सब से प्रेम करें, और उनके साथ आदर सम्मान, दया और शिष्टाचार का व्यवहार करें। यदि वे कमजोर या रोगी हों तो उनकी सेवा सुश्रुषा करें और उनके स्वास्थ्य और इलाज की व्यवस्था करें, हमेशा उन्हें प्रसन्न रखने की कोशिश करें। ऐसा करना हमारा कर्तव्य है, और हमें इसका इमानदारी से पालन करना चाहिए। इस बात को पूरी तरह ध्यान में रखना है। साथ ही यह भी याद रखना है कि हमारे इस कर्तव्य की एक मर्यादा या सीमा है, जिसका हमें उल्लंघन नहीं करना चाहिए।

हमारा काम अपने मा—बाप से और जहां तक हो सके दूसरे सम्बन्धियों से प्रेम करना है। इसका मतलब यही नहीं कि हम उनकी हर आज्ञाको शिरोधार्य करने के लिए मजबूर हैं। जब हम बड़े हो जायँ, हमारी विवेक बुद्धि जाग जाय और हम भलेबुरे पाप पुण्य को समझने लगें तो हमें किसी बात का निर्णय करने के वास्ते, कर्तव्याकर्तव्य का निश्चय करने के लिए अपने अन्तःकरण से काम लेना चाहिए; हमें अपना माता—पिता या किसी दूसरे के कहने पर भी आँख मीच कर नहीं चलना चाहिए। हर आदमी का अन्तःकरण अलग है। हमारा अन्तःकरण हमारी माता के या पिता के अन्तःकरण से पृथक है; हमें अपने अन्तःकरण की स्वतंत्रता की रक्षा करना जरूरी है।

अकसर जब कोई व्यक्ति बड़ा होंने पर भी अपने माता पिता के साथ रहता है, खासकर भारतवर्ष और चीन में, जहां संयुक्त परिवार की प्रथा है, युवकों के व्यक्तित्व का ठीक-ठीक विकास नहीं होने पाता; वे बात-बात में यही चाहते हैं कि उनका कोई बड़ा बूढ़ा उन्हें रास्ता दिखावे, वे किसी भी विषय में अपनी आज़ाद राय नहीं रखते, और यदि रखते हैं तो उसे साफ़ ज़ाहिर नहीं करते, उनके मन में एक तरह की लज्जा, संकोच या हिचकिचाहट रहती है, उन्हें डर रहता है कि न जाने माता पिता की राय क्या हो, यदि हमने अपना मत पहले प्रगट कर दिया तो कहीं उनसे विरोध न हो जाय; ऐसी हालत में दूसरे आदमी हमें ही दोष देंगे। इसलिए वे चुपचाप माता पिता या दूसरे बड़े बूढ़ों की हां में हां मिलाते रहते हैं। अनेक बार यह देखने में आया है कि किसी युवक की, कुछ रीति रिवाजों या रूढ़ियों में कोई श्रद्धा नहीं है, वह उन्हें व्यर्थ ही नहीं, हानिकर मानता है, फिर भी उनका पालन वह केवल इसलिए करता है कि ऐसा न करे तो माता पिता बुरा मानेंगे। पिछले दिनों इस देश में कितने ही युवक ऐसे पाये गये हैं जो केवल शुद्ध खादी पहिनना, देश की आज़ादी के आन्दोलन में क्रियात्मक भाग लेना, और पर्दा प्रथा, मरणोत्तर जाति-भोज (औसर मौसर) आदि का त्याग करना चाहते हैं। वे कहते हैं, क्या करे लाचार हैं, बुढ़ा या बुढ़िया यानी बाप मा बैठे हैं, तब तक हम ये बातें नहीं कर सकते; उनका शरीर पूरा हो जाने पर हम स्वतंत्र होंगे।

यद्यपि कुछ सुन्दर अपवाद भी मिलते हैं, पर आम तौर पर रूढ़ियों के मामले में बड़े बूढ़ों का मत और उनकी विचारधारा युवकों से भिन्न होती है, और वे अपने दृष्टिकोण को उचित से अधिक महत्व देते हैं और युवकों से आशा करते हैं कि वे हमारे विचार के अनुसार ही सब काम करें। यह ठीक है कि उनकी उम्र अधिक होने के कारण उनका अनुभव दीर्घ काल का है, परन्तु जमाने के साथ साथ परिस्थितियां बदलती रहती हैं, हर पीढ़ी की समस्याएँ अलग-अलग होती हैं। मनुष्य जाति के सामने नए आदर्श, नए सिद्धान्त और नयी विचार-धाराएँ आती रहती हैं। जिस बात को हमारी पीढ़ी बहुत अच्छा समझती है और बड़ी बुद्धि-मानी और घोर परिश्रम का फल मानती है, उसी बात को अगली पीढ़ी सम्भव है निकृष्ट और गयी गुज़री माने। यदि सब बच्चे हर बात में अपने माता पिता का ही अनुकरण करते रहें तो मानव जाति की उन्नति ही कैसे हो? समाज जहां का तहां रहे।

जल का प्रवाह बन्द हो जाने पर वह सड़ जाता है। मानव समाज को भी ऐसे दुर्भाग्य से बचाने की बड़ी जरूरत है। यदि गौतम बुद्ध अपने माता पिता की इच्छानुसार ही अपना जीवन व्यतीत करते तो संसार उनके महान उपदेशों से वंचित रह जाता। कार्ल मार्क्स का पिता चाहता था कि उसका पुत्र ऐसे विषयों के पढ़ने में लगे, जिनसे खूब धन कमा सके, उसकी दृष्टि से समाजवाद आदि की खोज

और चिन्तन में लगना व्यर्थ और बेकार था, परन्तु कार्लमार्क्स ने अपना स्वतंत्र मार्ग निश्चित किया, उसने समाज को धन से कहीं अधिक मूल्यवान वस्तु दी, और अपने साथ अपने पिता का नाम भी चिरस्मरणीय बना दिया।

युवावस्था नयी नयी बातों के सोचने वाली, आशावादी, साहस वाली, जोखम उठाने वाली, गलतियों से न घबराने वाली, और आगे बढ़ते रहने वाली होती है; इसके विपरीत, बूढ़े आदमी आम तौर पर पुरानी बातों में लगे रहते है; फूँक फूँक कर पाँव रखते हैं, कठिनाइयों से बचते हैं, पुराने ज़माने की रूढ़ियों और रीति रस्मों से चिपटे रहते हैं, नया प्रयोग करने का उत्साह नहीं रखते; वे अपने पुराने अनुभवों का गर्व करते हैं, और अच्छे से अच्छे नवयुवकों का व्यवहार देखकर भविष्य के प्रति अश्रद्धा और आशंका प्रकट किया करते हैं। जब तक दोनों पक्ष काफ़ी गम्भीरता और समझदारी से काम न लें उनमें संघर्ष की सम्भावना बनी रहती है। इसीलिये लाला हरदयाल का मत है कि युवक हो जाने पर हर पुरुष और स्त्री को, चाहे वह अविवाहित ही क्यों न हो, अपने माता पिता आदि बड़े बूढ़ों से पृथक् घर बसा कर स्वतन्त्र रूप से रहना चाहिए; भविष्य को भूत के साथ, आशा को निराशा के साथ या जीवित को मृतक के साथ बांधे रखना ठीक नहीं।

इस विषय में मतभेद की बहुत गुँजायश है; हमें लाला हरदयाल के कथन में अत्युक्ति मालूम होती है और अव्यवहारिकता भी। तनिक विचार कीजिये; लड़की का प्रायः चौदह पन्द्रह वर्ष की उम्र में, और लड़के का बाईस चौवीस वर्ष की उम्र में विवाह हो जाता है। इतनी उम्र तक वे शिक्षा पानेमें लगे रहते हैं। ज्योंही लड़का कालिज से छुट्टी पाकर अपनी जीविका कमाने में लगे, उसे दुनिया का यथेष्ट अनुभव नहीं हो जाता। लड़की घर के काम धन्धे की कुछ जानकारी भले ही प्राप्त कर ले, परन्तु गृहस्थी की गाड़ी चलाने के लिये उसमें जैसी योग्यता चाहिए वह एकदम नहीं आ सकती। ऐसी दशा में यदि यह नवदम्पति अपना अलग परिवार बना कर रहें तो उनका मार्ग बहुत कष्टदायक होगा। अभी उन्हें अपने बड़ों के संरक्षण की जरूरत है। स्वयं उनके विवाहित जीवन के लिये भी यह अच्छा है कि वे बिल्कुल स्वच्छन्द न रहें। योग्य माता पिता और सास ससुर के मर्यादित नियंत्रण में वर वधु के आपसी विरोध का अवसर कम आता है, और वे अपने आप को एक दूसरे के अधिक अनुकूल बना सकते हैं। इसके अलावा बीमारी की हालत में उन्हें अनुभवी आदमियों की जरूरत हो सकती है।

यदि संयोग से वे अपने परिचित जनों से दूर किसी दूसरे स्थान में रहते हों, और युवक कहीं आफिस आदि में काम करता हो तो नववधु की बीमारी कितनी कष्टदायक हो जाती है, इसका सहज ही अनुमान किया जा सकता है। ऐसे अवसर पर माता पिता या सास ससुर के साथ रहने से कितना आराम और सुविधा मिल सकती है। सम्भव है, यह कहा जाय कि युवक युवती की अपेक्षा मां बाप के बीमार रहने की सम्भावना अधिक है; इस तरह उनसे जितना आराम मिलेगा, उससे ज्यादह हमें उनकी सेवा करनी होगी। लेकिन यह भी तो एक कारण है कि हमें जहाँ तक हो सके अपने माता पिताके पास रहना चाहिए। जब तक हम असहाय और दूसरोंके मोहताज थे, तब तक तो हम उनके आसरे रहे, अब जब हम किसी काबिल हुए और उन्हें हमारी मदद की जरूरत हुइ तो हम उन्हें अकेला छोड़ कर अलग रहने लगें, यह कहाँ की भलमनसाहत है। यह हमारी खुदगरजी और कृतघ्नता ही होगी। ऐसी गलत और कमजोर बुनियाद पर मानव समाज सुसंगठित नहीं हो सकता। हमें तो कृतज्ञता, निस्वार्थता, सेवा और त्याग की मिसाल कायम करनी है। इन बातोंका मौका हमें सबसे पहले पारिवारिक जीवनमें मिलता है, उसका हमें अपनी शक्ति भर उपयोग करना चाहिए।

यह कहा जाता है कि माता पिता की दृष्टि भूतकाल की ओर रहती है, और युवकों की भविष्य की ओर। परन्तु क्या इन दोनों के मेल और समन्वय की ज़रूरत नहीं है? केवल भूत काल की बातों से हमारा गुज़ारा नहीं हो सकता, और केवल भविष्य की बातों में भी हमें लीन न हो जाना चाहिए। हमें वर्तमान काल को संभालना है, जो भूत और भविष्य दोनों का संधिकाल, दोनों के मिलने की जगह है। इसलिए बेहतर है कि हम माता-पिता के साथ रहते हुए उनके भूतकाल के अनुभवों से लाभ उठावें। हाँ, माता पिता आदि का भी कर्तव्य है कि वे युवकों के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करते रहें और व्यक्तिस्वातंत्र्य का ध्यान रखे। जब तक कोई खास ज़रूरत तथा कोई अनिवार्य कारण उपस्थित न हो तब तक वे उनके काम-काज में फ़जूल दखल न दें। इस तरह प्रेम और समझ से काम लिया जावे तो युवकों और बड़े-बूढ़ों में मतभेद की दीवार बहुत चौड़ी नहीं होने पाती।

प्रौढ़ आयु के बहुतसे सज्जनोंमें युवकोंसे बढ़ कर उत्साह, साहस, आशा और नवीनताका आदर पाया जाता है। वे 'साठा सो पाठा' की कहावत चरितार्थ करते हैं। इसके विपरीत, कितने ही युवक अपनी भरी जवानी की उम्र में भी बुढ़ापेका भार ढोये फिरते हैं; उनमें निरुत्साह, निराशा और निस्तेजता का दुखदायी समावेश होता है।

इस प्रसंगमें प्राचीन भारतीय प्रथाका विचार करना; उपयोगी होगा। यहाँ पुराने जमानेमें आश्रम व्यवस्था चलती थी। उसके अनुसार आदमी पचीस वर्ष की आयु तक विद्या उपार्जन करके गृहस्थाश्रममें प्रवेश करता था, और जब उसके बड़े लड़केका विवाह होकर उसके सन्तान हो जाती थी, यानी करीब पचपन वर्ष की उम्र में वह वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश कर लेता था। इस तरह उसकी सन्तान अपना काम चलाने में स्वतंत्र हो जाती थी, उस पर माता पिता के विचारों का प्रतिबन्ध नहीं रहता था। बुढ़ापा और यौवन अलग-अलग हो जाते थे। बूढ़े लोग घूमते फिरते थे और गृहस्थों को उपदेश देकर उनका पथ-प्रदर्शन या रहनुमाई करते थे। परन्तु समाज का काम चलाने वाले युवक और युवतियाँ (गृहस्थी) ही होते थे, जो गृहस्थ आश्रम का शुरू का कुछ समय (दो चार वर्ष) अपने पिता माता के संरक्षण में रहने कारण कुछ सांसारिक अनुभव प्राप्त कर चुकते थे।

इस तरह यह आवश्यक है कि एक दरजे तक युवकों के मत स्वातंत्र्य का आदर किया जाना चाहिये। पालन करने के विशाल क्षेत्र में अपने महान कर्तव्य का पालन करने के लिये वे सदा स्वाधीन रहें; हाँ ऐसा करते समय वे न तो विनय और शिष्टाचार को तिलाञ्जलि दें, और न उस ऋण को भूलें जो, उन्हें माता पिता आदि के प्रति प्रेम और सेवा करके चुकाना है।

यह स्पष्ट है कि परिवार हमारे सामाजिक संगठन की पहली और आवश्यक सीढ़ी है। किन्तु कुछ दशाओं में यह आगे की सीढ़ियों के लिये बाधक भी हो सकता है, और हो जाता है। यह अलग विषय है।

माहेश्वरी विद्याप्रचारक मंडल की ओर से प्रार्थना

बन्धुओ,

माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डल से आप भली भाँति परिचित हैं। यह संस्था गत १५ साल से बम्बई प्रान्त में शिक्षाप्रचार का कार्य कर रही है। इसके द्वारा पूना, शोलापूर, अहमदनगर में जो विद्यार्थीभुवन चलाये जाते हैं और हजारों रुपये छात्रवृत्ति के रूप में बाँटे गये है उसका विवरण आप को समय २ पर अखबारों के द्वारा ज्ञात कराया गया है। संस्था ने जो अल्पस्वल्प प्रगति की है उससे किसी भी समाज प्रेमी बन्धु को सन्तोष नहीं हो सकता। अभी भी मण्डल के सामने बहुतेरे कार्य हैं। कई जिलों में विद्यार्थियोंकी सुविधा के लिये विद्यार्थीभुवन का निर्माण होना जरूरी है। स्त्रियों में शिक्षाप्रचार के संबंध में यत्रतत्र छात्रवृत्ति देने के अलावा कोई विशेष कार्य नहीं हो पाया है। बच्चों की शिक्षा के लिये बालमंदिर, जो विद्यार्थी वार्षिक परीक्षा में उच्च गुण प्राप्त करके अपनी बुद्धिमत्ता का परिचय देते है उनको प्रोत्साहन देना उच्चतम शिक्षा प्राप्त करने के साधन सुलभ कराना, एवं ज्ञानाभिरुचि बनाये रखने के लिये पुस्तकालय, वाचनालय आदि की स्थापना करना आदि बहुतेरे कार्य हैं। इन सारे कामों में आप सज्जनों का सहयोग नितान्त आवश्यक है।

वर्तमान में मण्डल करीब १२००–१३०० रुपया छात्रवृत्ति के रूप में वितरण करता है। ये रकमें बहुत ही अल्प हैं। युद्ध के कारण सब चीजें महंगी हो गयी हैं। जहाँ विद्यार्थी को पहले सालाना ४५०–५०० रु० खर्चा आता था वहां आज लगभग दुगुना खर्च आता है। हम जो सहायता पहुंचाते हैं वह इतनी अल्प है कि वह किसी प्रकार भी उसकी मदद नहीं कर सकती। अतः मण्डल का वार्षिक बज़ट भी बढ़ाना होगा। मण्डल के पास अभी जो चल संपत्ति है उसके ब्याज की आमदनी बहुत कम हो गयी है। और और कामों को भी शुरू करना जरूरी है। अहमदनगर में भवन निर्माण का कार्य भी हमारे सम्मुख है। जलगांव आदि स्थानों मे भी कार्य करना है। यह तभी संभव है कि आप लोगों की पूरी तौर से मदद रहेगी।

हम उम्मीद करते हैं कि आप सज्जन इस ओर ध्यान देकर उत्साह से इस कार्य में सहयोग देंगे।

निवेदकः—**किसनलाल प्रेमराज लाहोटी**

चेअरमेनः—**मा. वि. प्र. मं.**

'माहेश्वरी' सहायता

५१) श्री गणेशदासजी राधाकिशनजी बागड़ी जालना द्वारा अपनी सौ. बहन के विवाह के उपलक्षमें।

३१) श्री कन्हैयालालजी भट्टड़ इन्दोर द्वारा अपनी सुपुत्री के विवाहोपलक्षमें।

५१) श्री तुलसीरामजी बाहेती नांदेड़ द्वारा चि. द्वारकादास के विवाहोपलक्षमें।

४२) एक शुभचिंतक द्वारा।

११) श्री रामसुखजी मंत्री उज्जैन द्वारा अपने सुपुत्र श्री दौलतरामजी मंत्री एम. ए. एल् एल्. बी के विवाह के उपलक्षमें।

५) श्री बालप्रसाद मोतीलाल काबरा उमरखेड द्वारा भाई देवकरणजी काबरा के विवाहोपलक्षमें।

अ० भा० माहेश्वरी महासभा सहायता

१००) श्री वल्लभदासजी राठी अम्रावती द्वारा अपने सुपुत्र श्री राधाकृष्णजी के विवाहोपलक्षमें।

बिडला छात्रवृत्ति सहायता वापिस

२००) रु. श्री सूरजकरणजी हीरालालजी करवा जालना ने लौटा दिये।

---

* हम यह भी याद रखें कि बड़ी उम्रका अर्थ सदैव बुढ़ापा नहीं होता।

*जब किसी युवक को यह अनुभव हो कि माता-पिता की आज्ञा का पालन करना उसके अन्तःकरण के आदेश के विरुद्ध है, तो वह उसे पालन न करे, और यदि ऐसे प्रसंग बार-बार आने से परस्पर में कटुता आने की आशंका है, तो युवक का उनसे अलग रहना ठीक ही है। परन्तु यह विशेष दशा की ही बात है, साधारण नहीं। माता-पिता से सिद्धान्तों में मतभेद होते हुए भी युवकों को उनके प्रति आदर-भाव रखना आवश्यक है।

विटैमिनों की खोज

डा० सत्यप्रकाश एम. एस. सी; डी. फिल

भोजन जीवन के लिये नितान्त आवश्यक है, इसके सम्बन्ध में किसी को भी क्या सन्देह हो सकता है ? पेट में लगी भूख की तड़फ भोजन से ही जाती है, इस बात का अनुभव तो पशुपक्षियों तक को है। अलबत्ता हरेक जाति के प्राणियों के भोजन में थोड़ासा अन्तर अवश्य है, और परिस्थितियों के परिवर्तित होनेपर हम बहुतसी ऐसी चीजें भी खाना सीख जाते हैं, जिन्हें शायद हम स्वभावतः न खाते। जहां तक पशुपक्षियों का सम्बन्ध है हम कह सकते हैं कि वे स्वभावतः इस बात को अच्छी तरह समझते हैं कि उनके जीवन के लिये खाने की आदर्श वस्तुएँ क्या हैं। पर जिन पशुओं को मनुष्य ने पालकर परतंत्र बना रखा है, अपने भोजन के साथ, उसने उनका भोजन भी बिगाड़ रखा है। भोजन के ज्ञान के अभाव के कारण राष्ट्र की बड़ी हानि होती है। इसलिये भोजन के रहस्य को ठीक ठीक समझना हमारे लिये नितान्त आवश्यक है। यों तो हमारे चिकित्साशास्त्रों में स्थान-स्थान पर इसका उल्लेख मिलता है कि कौन से रोग में कौनसा खाना हितकर है, और कौनसा अहितकर। प्राचीन पद्धति के अनुसार वात पित्त और कफ नामक त्रिदोषों का सम्बन्ध भिन्न भिन्न भोजनों से लगाया जाता था। इस के साथ ही हम यह भी सुना करते हैं कि अमुक भोजन गरम तासीर (गुण) रखता है, अमुख ठण्डी। इस प्रकार हमने अनेक पद्धतियों से भोजन के रहस्य को समझने का प्रयत्न किया है।

वर्तमान पाश्चात्य पद्धति में भोज्य पदार्थों के वर्गीकरण का स्पष्ट प्रयत्न विलियम प्राउट के समय से होता है। इसने सन १८३४ में प्रकाशित अपनी एक पुस्तक में इस बात का उल्लेख किया है कि समस्त भोजनों में तीन प्रकार के पदार्थ होते हैं—(१) शक्कर के विभाग के (२) चिकनाई के विभाग के और (३) ऐल्ब्यूमिन विभाग के। इस के बाद मुल्डर ने (१८०२–१८८०) भोजन में प्रोटीनों और जान्तव प्रोटीनों की परीक्षा की और यह बताया कि जीवन में सब से अधिक उपयोग प्रोटीनों का है। सन १९४४ में ब्रसिंगाल्ट ने यह भी बताया कि नमक के समान खनिज पदार्थों के विना भी भोजन पूर्ण नहीं समझा जा सकता।

भोज्य पदार्थों की रासायनिक परीक्षा का आरंभ १८०० के लगभग आइन होफ के समय से होता है। इस ने पशुओं पर भोजन के प्रयोग प्रारम्भ किये। लीबिग की रासायनिक खोजों ने इस विषय को और अधिक प्रोत्साहित किया। पर सब से अधिक काम कार्ले वायट के नेतृत्व में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम तीस वर्षों में हुआ। म्यूनिक की प्रयोगशालाओं में इसके प्रोत्साहन से जो काम हुआ वह भोजन शास्त्रके इतिहास में अमर रहेगा। वायट ने बताया कि प्रौढ़ावस्था में जितना प्रोटीन हम खाते हैं, वह सबका सब शरीरमें संचित नहीं रह पाता और यह भोजनके पचनेके बाद यूरिया या इसी तरहके और पदार्थ बनकर मलमूत्र के रूप में बाहर निकल जाता है। चिकनाईवाले पदार्थ शरीरमें वसा के रूपमें संचित रहते हैं। शक्कर या स्टार्च की तरह के अंश यकृत और मांस पोशियों में ग्लाइकोजन के रूपमें इकट्ठे रहते हैं। उसने यह भी बताया कि यदि आवश्यकता से अधिक शक्करवाले पदार्थ खाये जायेंगे, तो वह शरीरमें चर्बीमें परिणत हो जायेंगे, और इस चर्बीसे शरीरको आवश्यकता पड़ने पर शक्ति या सामर्थ्य मिलेगी।

वायटका एक विद्यार्थी एट्वाटर था। यह १८२५ में अमरीका आया और वहाँ उसने भोजन परीक्षणके सम्बन्धमें एक विस्तृत आयोजना तैयार की। इसने अमरीकाके खाद्य-पदार्थोंके रासायनिक विश्लेषण की एक विस्तृत तालिका प्रकाशित की। इस तालिकामें प्रोटीन वसा, और कार्बोहाईड्रेट के साथ-साथ उसने यह भी बतलाया कि किस भोजनसे कितनी शक्ति हमें कैलरियोंमें मिलती है। उसका कहना था कि सुखाये हुए भोजनसे जीवन सुचारू रूपसे चल सकता है।

वायट ने भोजनके सम्बन्धमें जो आदर्श उपस्थित किया वह यह था——साधारण श्रम करनेवाले व्यक्ति को ११८ ग्राम प्रोटीन, और अधिक कम करनेवालेको १४५ ग्राम प्रोटीन चाहिये। किन्तु येल यूनिवर्सिटीके प्रोफैसर चिट्टेनडेनने अपने प्रयोगोंसे यह सिद्ध कर दिया कि साधारण श्रम करने वाला व्यक्ति ३६ ग्राम प्रोटीन पर स्वस्थता से जीवन व्यतीत कर सकता है और अच्छे श्रम करनेवाले व्यक्ति को भी प्रतिदिन ५० ग्राम प्रोटीन से अधिक नहीं चाहिए। इसी समय होरेस फ्लेचर और डा० सोमेरेन ने यह प्रतिपादन किया कि भोजन जितना ही अधिक चबाकर खाया जायेगा, उतना ही अधिक लाभकर होगा।

बीसवीं शताब्दि के आरंभ तक भोजन के सम्बन्ध में जितने प्रयोग हुए, उन्होंने हमारे ज्ञान को बढ़ाया तो, पर फिर भी बहुत सी उलझनें रहगयीं। कई पदार्थ ऐसे थे जिनमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, चर्बी आदि की मात्रायें लगभग एकसी थीं; पर तब भी स्वास्थ्य पर वे पदार्थ बिल्कुल भिन्न प्रभाव डालते थे। इससे स्पष्ट था कि भोजन में प्रोटीन आदि का परिमाण जानना काफी नहीं है कुछ और बातें भी जाननी आवश्यक हैं। लोगोंका ध्यान इस बातपर गया कि सभी प्रोटीन एकसे लाभदायक नहीं होते। भोजनकी उपयोगिता कुछ विशेष प्रोटीनोंपर निर्भर है।

सन् १८७३ में फोर्स्टर ने नमकरहित भोजन पर प्रयोग किया। यहाँ नमक से हमारा तात्पर्य दालमें ऊपर से डाले जाने वाले नमकसे नहीं है, किन्तु हमारा अभिप्राय उन सभी रासायनिक लवणों (salts) या खनिज पदार्थोंसे है जो खानेवाली चीजों में प्राकृतिक रूप से पाये जातें हैं। फोर्स्टर ने माँस को तबतक पानी में उबाला जबतक उबालनेमें घुलघुल कर नमक आते रहे। जब पानीमें नमकका और आना बन्द होगया तो उसने इसमें वसा, शक्कर, और स्टार्च मिलाये और फिर इन्हें कुत्तोंको खिलाया फल यह हुआ कि ये कुत्ते उन कुत्तों से भी पूर्व मर गये जो भूखे रखे गये थे। जिन कबूतरों को नमक रहित कैसीन (दूध के छैने में से निकाला पदार्थ) और स्टार्च व चर्बी पर रखा गया उन में फोर्स्टर ने देखा कि उन्होंने भोजन करना बन्द कर दिया, उन के शरीर का तौल कम होगया और उनको विशेष तरह की बेचैनी होने लगी। १३ से ३१ दिनों में ये कबूतर मर गये। कहने का तात्पर्य यह है कि भोजन में थोड़ीसी मात्रा में जो प्राकृतिक नमक होते हैं वे जीवन के लिये इतने आवश्यक हैं कि उन की पूर्ति मांस, घी, तेल, शक्कर से नहीं होसकती।

सन १८९५ में पैसक्केलिस नामक एक व्यक्ति ने मुर्गी के बच्चों को १४०% प्रोटीन, ६५% स्टार्च, ४% डैक्सट्रिन, ४% शक्कर, ९% तेल, २% लकड़ी, का बुरादा और १% साधारण नमकपर और १% अन्न से निकले नमक मिश्रण पर रखा। बच्चों ने भोजन काफी खाया, पर फिर भी वे मर गये। १९०६ में जैकब ने कबूतरों और चूहों पर प्रयोग किये। इन्हें स्टार्च; प्रोटीन, चर्बी और नमक चारों चीजें जो उस समय भोजन की पूर्णता की आदर्श थी; दी गयी, तथापि कबूतर ४ सप्ताह में और चूहे ४ मास में मरगये। इसी प्रकार के और भी प्रयोग भोजन के सम्बन्ध में हुए जिनसे यह निश्चित होगया कि केवल प्रोटीन, चर्बी, स्टार्च, और नमकों से ही हमारा जीवन नहीं चलसकता। इन प्रयोगों के आधारपर सन १९०६ मे हापकिन्स ने यह घोषणा की कि "कोई भी प्राणी शुद्ध प्रोटीन, चर्बी, और कार्बोहाइड्रेट के मिश्रण पर जीवित नहीं रह सकता। भले ही इस मिश्रण में खनिज पदार्थ भी मिला लिये जायें, तथापि इतने पर जीवित रहना संभव नहीं। प्राणियों का जीवन उन वनस्पति पदार्थों या माँसों पर ही अवलम्बित है जिनमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, और चर्बी के सिवा अन्य अगणित चीजों की सूक्ष्म मात्रायें विद्यमान हैं।" हापकिन्स ने इसी उद्धरण में यह भविष्यवाणी भी की कि रतौंधी और मिठुआ या सूखा की बीमारी भोजन में इन आवश्यक सूक्ष्म अंशों के अभाव के कारण ही होती है।

जो यूरोपीय नाविक केवल नमक के साथ मांस खाकर ही जीवन-निर्वाह करते थे, उन्हें एक विशेष बीमारी हो जाती थी जिसे 'स्कर्वी' कहते हैं। समुद्र की लंबी यात्राओं में इन्हें शाक-तरकारी आदि ताजी चीजें नहीं मिलती थीं। पहली बार सन् १७२० में क्रैमर ने इस बीमारी की परीक्षा की। यह व्यक्ति आस्ट्रिया में सैनिक चिकित्सक था। उसका कहना है कि "स्कर्वी ऐसा भयंकर रोग है कि जिसकी कोई दवा ही नहीं। इस रोग में न तो चिकित्सा से काम चलता है और न चीर-फाड़ से। हां, अगर ताजी हरी तरकारियां काफी मात्रा में खाई जायं, या यदि रोगी को नारंगी या नीबू मिल जाय, या नींबू–संतरेका गूदा ही पहले से सुरक्षित रख लिया जाय, जिसका लेमोनेड बनाया जा सके, और तीन-चार औंस की खुराकों में दिया जाय, तो इस भयंकर बीमारी से बचना संभव है। इसका और कोई इलाज नहीं है।"

क्रैमर ने जो बात सन् १७२० में कही थी, वह आज १९४४ में भी उतनी ही सच्ची है।

बच्चों को मिठुआ सूखा या रिकेट्स की जो बीमारी होती है, उसका भी एकमात्र इलाज बच्चों को ताजा दूध, ताजा मक्खन या इसी तरह के अन्य प्राकृतिक पदार्थों का सेवन कराना ही है।

धान कूटने के लिए इस युग में जब से नई मशीनों का प्रचार बढ़ा और अच्छा पालिश किया हुआ चावल अधिक खाया जाने लगा, तब से एक बीमारी खास तौर से फैलने लगी। इस बीमारी का नाम 'बेरीबेरी' है। यह बीमारी हजारों वर्षों से चली आ रही थी, पर इसका प्रकोप गत ४० वर्षों में अधिक बढ़ा। जापान की समुद्री सेना के लोगों में यह बीमारी विशेष रूप से होने लगी। सन १८८२ में टैकाकी ने जापानी सेना को जब-जब चावल खिलाना बंद किया और उसके स्थान में मांस, रोटी, फल और तरकारियों का अधिकाधिक सेवन कराया, तब-तब यह रुक गई। यह स्पष्ट प्रकार से सिद्ध होगया है कि इस बीमारी का संबंध चावलों से है। जावा की जेलों में भी इस बेरीबेरी का रूप बढ़ रहा था। सन १८९ में बोर्डरमैन ने जो प्रयोग किये उनमें यह पता चला कि सफेद साफ चावल खानेवाले हर ४० आदमियों पीछे १ आदमी में यह रोग होता था, पर जो विना पालिश का मामूली चक्की में कुटा चावल खाते थे उनमें १७०० आदमियों पीछे किसी एक विरले आदमी को ही बेरीबेरी होती थी। ३ लाख आदमियों पर प्रयोग करके यह बात देखी गयी थी। अतः यह स्पष्ट होगया कि चावलों की सफाई, कुटाई और पालिश संबंधी क्रिया में चावल का कोई तत्त्व नष्ट हो जाता है जिसके अभाव से बेरीबेरी का रोग उत्पन्न होजाता है। डच वैज्ञानिक आइकमैन ने बेरीबेरी और चावलों के संबंध पर सब से अधिक प्रयोग किये। सफेद चावलों में जब-जब चावल की भूसी मिलाई गई, तब-तब बेरीबेरी का रोग मिट गया।

यहां हमने यह देखा कि स्कर्वी, रिकेट्स और बेरीबेरी नये तीन ऐसे रोग हैं जिनका कारण भोजन में पदार्थ का 'होना' नहीं है—बल्कि भोजन में कुछ विशेष सूक्ष्म तत्त्वों का 'न होना' है। इन्हीं सूक्ष्म तत्त्वों को हम आज 'विटैमिन' कहते हैं। शीगा और कुसमा

(शेष पृष्ठ १६ पर)

मध्य प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन

राष्ट्रीय संग्राम में हिंदी पत्रों का प्रभावशाली योग

पत्रकारिता एक पवित्रतम व्यवसाय है : जनता के सच्चे उत्कर्ष में हम सहायक हों

अध्यक्ष श्री रामगोपालजी माहेश्वरी का अभिभाषण

सागर (डाकसे)। मध्यप्रान्तीय हिन्दी पत्रकार सम्मेलन के अध्यक्षपद से भाषण देते हुए 'नवभारत' (नागपुर) सम्पादक श्री रामगोपालजी माहेश्वरी बी. ए. एल. एल बी. ने कहा :—

आज हम जिस स्थिति से गुजर रहे हैं, वह विश्व के इतिहास में अश्रुत है—विश्वव्यापी महायुद्ध ने समस्त संसार को एक भयानक विभीषिका में डाल दिया है । युद्धलिप्त और तटस्थ, दुनिया के सभी देश, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में, युद्धजन्य कठिनाइयों, अभावों तथा आपदाओं के भयङ्कर शिकार बन रहे हैं । विश्व-संघर्ष की आँच और कृत्रिम राजनैतिक परिस्थिति, इस दोहरी चक्की में पिसकर हमारे देश की अवस्था तो और भी शोचनीय हो रही है । अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से, इस युद्ध में हमारी सहानुभूति मित्र-पक्ष के साथ है, जो विश्व में प्रजातंत्र की स्थापना और स्वाधीनता की प्रतिष्ठा के नामपर यह युद्ध लड़ रहा है । पर हमारी इस सहानुभूति का, व्यावहारिक दृष्टि से, आज किसी के लिये कोई मूल्य नहीं है । यदि प्रजातंत्रवादी समूह या उन्हीं का एक प्रधान अङ्ग, दूसरी ओर, हमारी अपनी प्रगति के मार्ग में बाधक हो—स्वतंत्रता व प्रजातंत्र के पथ पर हमारी गति को अवरुद्ध करने का कारण हो—तो यह स्थिति एक बड़ी विचित्र उलझन व समस्या खड़ी कर देती है । प्रजातंत्र व स्वाधीनता के युद्ध में, पराधीनता से स्वतंत्रता की ओर, निरंकुश सत्ता से लोक-प्रतिनिधि शासन की ओर हमारी स्वाभाविक गति होनी चाहिये थी; उनके स्वर में हमारा भी स्वर उसी आंतरिक प्रेरणा व पुकार को लेकर सम्मिलित होना चाहिये था । पर यह स्थिति पैदा करने के बजाय, उल्टे युद्ध के नामपर आज हमें चुप रहने को कहा जाता है । हमारे स्वर व शक्तियों को और कड़े नियन्त्रण वा प्रतिबन्धों के शिकंजों में कसा जा रहा है । युद्धजन्य कठिनाइयों के कारण जनता घोर कष्ट में है और युद्ध-व्यवस्थाओं के नामपर उसकी स्वतंत्रता, वाणी और प्रवृत्तियों को, एक कृत्रिम एवं आतंकपूर्ण सृष्टि के जरिये, न केवल आज ही बल्कि कल लिये भी बांधने की चेष्टा की जा रही है !

देश की वर्त्तमान स्थिति और पत्रकार

मैं इस स्थिति का जिक्र किसी राजनैतिक मंच से नहीं कर रहा हूँ; एक पत्रकार के नाते अपनी मर्यादा की संपूर्ण प्रतीति रखते हुये ही, एक ईमानदार पत्रकार की हैसियत से उस स्थिति के अंकित कर रहा हूं जो हमारी लेखनी को रोज आंदोलित कर रही है। पत्रकार राजनैतिक कार्यकर्त्ता नहीं है; साथ ही, वह सुषुप्त व चेतनाहीन प्राणी भी तो नहीं है । दुनिया पत्रकार से सच्चा प्रकाश चाहती है और पत्रकार भी जनता के लिये निष्काम कर्त्तव्य से प्रेरित होकर यह निरंतर जीवन-संग्राम की जिंदगी अपने लिये चुनता है । फिर मिथ्यापन, कृतिमताएं, दूषण और अन्यायों से वह क्यों न जूझे ? पत्रकार को जनता की आत्मा का रक्षक, उसके हितोंका प्रहरी और लोकमत का निर्माता माना जाता है । फिर मैं अत्यंत विनय के साथ कहना चाहूँगा कि एक भारतीय पत्रकार का कर्त्तव्य अपने देश की स्वतंत्रता के पुरस्कार और जन-हितो की रक्षा से बढ़कर और क्या हो सकता है ? यह तो एक नैमित्तिक घटना है कि पत्रकार व राजनैतिक कार्यकर्त्ता आज एक ही भाषा में बोलते दिखाई देते हैं । पर यह हमारा दोष नहीं; दोष प्रस्तुत स्थिति का है जिसके लिये कि हम जिम्मेवार नहीं हैं ।

सत्ता के साथ संघर्ष

यह परिस्थिति, दुर्भाग्य से हमें उस सत्ता के साथ संघर्ष में ले आती है जिसके हाथों में आज शासन की बागडोर है । जनता और शासन आज एक ही भावना से अनुप्राणित नहीं है अतः एक प्रत्यक्ष अंतर, जो बहुधा विविध संघर्षों का रूप धारण कर लेता है, हमारे देश में हर जगह काम करता दिखाई देता है । अधिकारीगण हमें "अत्युच्च जिम्मेवारी" का परिचय देने को कहते हैं, पर सत्य यह है कि यह अत्युच्च जिम्मेवारी की भावना ही हमें उनके साथ अधिक संघर्ष में लिप्त कर देती है । तथापि हममें सद्भाव का अभाव नहीं है । हमें अपनी व्यावहारिक सीमाओंका भी भलीभांति ज्ञान है; हम जानते हैं कि शासन एक सर्वोच्च सत्ता है और देश के स्थायी व अस्थायी कानूनों के बन्धनों से हम मुक्त नहीं हैं । तथापि, अपने मूलभूत कर्तव्य की उपेक्षा भी तो हमारे लिये संभव नहीं है । इस परिस्थिति में, यदि समाचार पत्र और सरकारके बीच सहयोग की गुंजायश रह सकती है तो तभी, जब यदि एक ओर हम अपनी सीमाओंका ख्याल रक्खें, तो दूसरी ओर, सत्ता भी हमारी भावनाओं व कर्तव्य के प्रति आदर-बुद्धि रक्खे । युद्धके कारण सत्ता और समाचार-पत्रोंके बीच बहुत अंतर है । उसके निवारणका यत्न सम्पूर्ण सद्भावके साथ अ. भा. संपादक सम्मेलन करता आया है । इस संस्था व सरकारके बीच जो प्रथम समझौता हुआ वह 'दिल्ली एग्रीमेंट' के रूपमें मशहूर है, जिसके द्वारा हमने युद्ध-प्रयत्नमें बाधा न डालनेका आश्वासन दिया और दूसरी ओर सरकारने यह आश्वासन दिया कि वह समाचार-पत्रोंके कर्तव्य-पालन में यथासंभव दखल न देगी । सन ४२ के अगस्तके बाद देशमें जोरोंका तूफान आया और उसने स्थितिको काफी उग्र बना दिया । तब यह भय पैदा हो गया था ! कि समझौतेका यह सूक्ष्म तंतु भी शायद टूट जायगा पर संतोष की बात है कि स्थिति सम्हल गई । सरकारने समझौते के प्रति एकदम बेरुखी नहीं दर्शायी और फलस्वरूप 'बंबई समझौते' का जन्म हुआ, जिसे मैं दिल्ली समझौते की व्याख्यामात्र समझता हूं । इस समझौते के अनुसार, तोड़-फोड़ व यातायात में विघ्न आदि के समाचार बिना पूर्व अनुमति के प्रकाशित न करना हमने मंजूर किया । बदले में, योग्य समाचार, बशर्ते कि वे अतिरंजित, सनसनीखेज व प्रमाणहीन न हों, प्रकाशित होने में आपत्ति न करना सरकारने मंजूर किया ।

प्रेस एडवाइजरी सिस्टम

दिल्ली समझौते के फलस्वरूप प्रांतों व केन्द्र में प्रेस एडवाइरी सिस्टम शुरू हुआ, जो भारत के समाचार-पत्र व शासन के बीच सम्बन्धों में एक नई घटना और नूतन प्रयोग था । इसका आधार सरकार का यह आश्वासन है कि सिवा जरूरी मौकों के, वह किसी समाचार पत्र के खिलाफ बिना इस कमिटीको पूर्व सलाह के, कोई कार्रवाई न करेगी ! तब से, गत तीन वर्षों से, इस पर अमल हो रहा है । इन कमेटियों से कोई लाभ है या नहीं, इसके निर्णय का आधार गत तीन वर्षों के कार्य का विवरण ही हो सकता है । मेरा ख्याल है, इस सम्पर्क से सरकार तथा समाचार-पत्र, दोनों को ही लाभ पहुंचा है—वे परस्पर के अधिक सम्पर्क में आये हैं और फलस्वरूप, परस्पर के दृष्टिकोण को समझने में मदद मिली है । साधारणतः सरकारों ने कमेटी की सिफारिशों की उपेक्षा नहीं की है, तथापि ऐसे उदाहरणों का भी एकदम अभाव नहीं है, जब कि केन्द्रीय व प्रांतीय सरकारों ने समझौते का सरासर उल्लंघन करते हुए पत्रों पर अनुचित प्रतिबन्ध लगाये या कठोर वार किये हैं ।

राजनैतिक हेतु-सिद्धि के लिए सत्ताका प्रयोग

इन प्रतिबन्धों या वारोंके पीछे, प्रायः सदा ही राजनैतिक हेतु-सिद्धिका प्रयोजन रहा है । समझौतेके अनुसार, सरकारको सिवा उन समाचारों या सामग्रीके जिसके प्रकाशनसे युद्ध-कार्यमें विघ्न पड़ने की संभावना हो, अन्य सामग्रीको रोकने या उसके प्रकाशन पर प्रतिबन्ध लगानेका हक नहीं है, तथापि, युद्ध-प्रयत्नमें बाधा या सार्वजनिक शांति की रक्षाके नाम पर, सरकार अकसर अपनी दृष्टिसे अरुचिकर या अवांछनीय समाचारों व वक्तव्यों आदि पर रोक लगा, उक्त समझौते के उल्लंघन की प्रवृत्ति दर्शाती रही है । श्री राजगोपालाचार्य, श्रीमती नायडू आदिके प्रतिबन्धित वक्तव्य इसके उदाहरण हैं । विदेशोंको जाने या आनेवाले समाचारोंके विषयमें भी सरकार का यही रुख रहा है । सरकार की इस प्रवृत्तिका संपादक सम्मेलन सदैव प्रबलतम विरोध करता आया है और करता रहेगा, कारण सरकार के राजनैतिक प्रयोजन की सिद्धिके लिये हम सत्य एवं देश-हितों की बलि चढ़ाने को तैयार नहीं हो सकते । सरकार के लिये अपना दृष्टिकोण या हेतु यदि प्रयोजनीय है, तो समाचार पत्रों के लिये देश-हित उससे अधिक महत्व रखता है । सरकार यदि समझौते पर अमल करना चाहती है तो यह निंदनीय मनोवृत्ति उसे त्याग देनी चाहिए । सरकार की इस प्रवृत्ति के प्रति समाचार पत्रों में उग्र असंतोष है । अतः मैं सरकार को यह चेतावनी देना आवश्यक समझता हूं कि यदि उसने इस ओर गौर नहीं किया तो प्रस्तुत समझौता किसी भी समय तिनके की तरह क्षणमें टूट सकता है । सरकार खयाल रक्खे कि अपने संरक्षणके ख्याल से समाचार पत्र इस समझौते के सूत्रमें नहीं बंधे हैं । संरक्षण की अपेक्षा कर्त्तव्य उनके लिये प्रधान वस्तु है जिसका पालन करते हुए सत्ता के निरंकुश वारों को उन्होंने सदैव धैर्यपूर्वक अपनी गर्दन पर झेला है और मौका पड़ने पर आगे भी वे ये आघात सहर्ष सहन करने को तैयार रहेंगे । समाचार-पत्रों को दबानेमें सरकार कभी सफलीभूत नहीं हो सकती; चिनगारी पर राख डाली जा सकती है पर उसकी आभा को नष्ट नहीं किया जा सकता । देश के वर्त्तमान दुर्भाग्यपूर्ण वातावरण में कटुता की वृद्धि यदि सरकार का उद्देश्य नहीं, तो समाचार-पत्रों के सद्भाव की उसे कम कीमत न आंकनी चाहिये ।

प्रान्तीय सरकार का रुख

हमारी प्रांतीय सरकार का रुख भी बहुत उदार नहीं है यह कहते हुये मुझे खेद होता है । जो वक्तव्य तथा सामग्री अन्य प्रांतों में प्रकाशित की जा सकती है, उस तक पर हमारे यहां अकसर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है और फलस्वरूप, प्रांतीय पत्रों की प्रतिष्ठा को, तुलनात्मक दृष्टि से, आघात पहुँचता है । भंसाली प्रकरण प्रांतीय सरकार की मनोवृत्ति का एक निकृष्ट उदाहरण था जब कि इस बारे में एक शब्द तक न छापने का हुक्म जारी कर दिया गया था । 'स्लेयर एपीसोड' तथा हितवाद' व 'नागपुर टाइम्स' पर के प्रस्तुत मामले इसी मनोवृत्ति के अच्छे नमूने हैं । राजबन्दियों सम्बन्धी समाचारों के विषय में तो प्रान्तीय सरकार बहुत ही मार्मिक भावना रखती प्रतीत होती है ! मैं इसका कारण समझने में असमर्थ हूं । हो सकता है, राजबंदी प्रांतीय सरकार की दृष्टि में घोर अपराधी हों पर उनकी चरण-रज सिर पर चढ़ानेमें देश अपने को धन्य समझता है । वे जेल में हैं यह सही, पर वे स्वतंत्रता-संग्राम के प्रखर योद्धा हैं यह हम कभी नहीं भूल सकते । उनके लिये हम

(शेष पृष्ठ १६ पर)

क्या हत्यामें मजा आता है?

ले०-फ्रैंसिजेक राडिसजोंस्की

पिछले कुछ महीनों में संवादपत्रों में स्निपर और गुरिल्ला लड़ाकों के व्यक्तिगत अनुभवों के विषय में अनेक लेख प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें से एक का शीर्षक था "जर्मनों का वध करने में मुझे आनंद आता है।" और यह लेफ्टिनेण्ट ल्यूडमिना पेवलीचेनका नामक एक रूसी महिला स्निपर की कलम से, जो ३०० जर्मनों को मौत के घाट उतार चुकी हैं, एवं जिसमें उन्हें आनंद मिला है, लिखा गया है। अब मुझे इस बात पर पूर्ण विश्वास है कि यदि आप १० गुरिल्लों के पास पहुंचें और उनसे पूछें कि क्या वे अपने शत्रुओं को मौत के घाट उतारना पसंद करते हैं, तो उनमें से ९ नकारात्मक ही उत्तर देंगे। क्यों कि मनुष्य स्वभाव और संहार तथा वध के लिए उस की लिप्सा के विषय में चाहे जो कुछ कहा जाय एक साधारण व्यक्तिको किसी की भी जान लेनेमें आनंद नहीं मिल सकता! कोई इसमें तभी प्रवृत्त होता है जब कि वह स्वयं खतरे में पड़ जाता हैं या आवेग के वशीभूत हो जाता है, किन्तु फिर भी उसे आनंद तो नहीं ही आता। मेरे इस मतका आधार न केवल पोलैण्ड में गुरिल्ला युद्धों और संघर्षों में महीनों व्यतीत करनेवाले व्यक्तियों के साथ किया गया वार्तालाप बल्कि मेरे अपने निजी अनुभव भी हैं।

वध करने का मेरा पहला अनुभव ४ सितम्बर १९३९ का है। सुरक्षित और युद्ध कार्य में प्रवृत्त की जाने वाली सेना का आफिसर होने के कारण मैं उस समय दक्षिण पोलैण्डमें एक छोटीसी सिगनल टुकडीका नायकत्व कर रहा था। हवाई हमले की चेतावनीके थोडी ही देर बाद यह खबर आयी कि शत्रु पैराशूटिस्ट हमारी चौकियों के पास उतारे गये हैं। एक को छोड़कर सभी दो घंटेके अंदर पकड़े लिये गये। जो पकड में नहीं आया, उसने खूब उत्पात मचाया। रेडियो स्टेशन में काम करनेवाले ४ व्यक्तियों को उसने मौत के घाट उतार दिया और जो भी उसकी तरफ़ जाता उस पर फायर करता। संयोग से हमारे एक आदमी ने एक खलिहान से एक जर्मन को फायर करते देखा, किन्तु दूसरे फायर में उसका काम तमाम हो गया। जर्मनने फायर करना जारी ही रखा। मैं दूसरी ओरसे खलिहान में घुसा। उसने मुझे नहीं देखा और न मेरे आने की आहट ही पायी। अस्तु मैंने उसपर दो फायर किये। उसने चारों तरफ नजर दौड़ाई और मुझे अपनी गोली का निशान बनाने की कोशिश में ही था कि मैंने फिर फायर किया। वह पीठके बल गिर पड़ा और जोरसे कराहने लगा। थोड़ी ही देरमें उसके प्राणपखेरू उड़ गये। मैं बिना उसकी तरफ देखे चलता बना। वह पहला आदमी था जिसको मैंने जानसे मार डाला था।

आगामी १० दिनोंमें जर्मनोंने अपनी जबर्दस्त शक्तिका प्रयोग कर हमें बहुत परेशान कर दिया और पूर्व की ओर पीछे हटनेको हम विवश हो गये। कितनीही बार हम लोग एक दूसरेसे पृथक हो गये। यह जीवनमरण का युद्ध था। हममें से प्रत्येक को शत्रु से लड़ना और उसका सफाया करना था। इस प्रश्नपर विचार करने का समय नहीं था। मैंने एक जर्मन को पकड़ लिया, उसे अपने ठीक सामने रखा और तब उस पर फायर किया। अपने हाथ में बंदूक लिए हुए वह जमीन पर गिर पड़ा। ऐसे अवसरों पर इस बात से मुझे खुशी होती थी कि मैं धूलि में नहीं पड़ा हूं। अब भी लगभग ४ वर्षों के बाद जब मैं पोलैण्ड में मौत के घाट उतारे हुए जर्मनों के विषय में सोचता हूं, तो मुझे कोई आनंद नहीं अनुभव होता। मुझे अपने कृत्यों पर गर्व भी नहीं होता। किन्तु जब मैं लोओ की रक्षा में लगा हुआ था तो बिना किसी संकोच और हिचकिचाहट के अनेक जर्मनों की जीवन लीला का अंत किया था।

लोओ पर शत्रु द्वारा दो सप्ताह तक लगातार बम वर्षा और गोलाबारी की जाने के बाद हमारे पास की गोली बारूद खत्म हो गयी और रक्षा कर सकने में सफल होने की आशा न रही। तब हम लोगों ने जर्मनों पर अंतिम करने का निश्चय किया। हम में से आठ, जो हथगोलों, चाकुओं और रिवाल्वरों से लैस थे, एक जर्मन मोरटार बैटरी के चालकों का शिकार करने के लिए निकले, किन्तु कुछ कर सकने के पहले ही शत्रु ने हम लोगों को पकड़ लिया। मैं एक निकटस्थ गांव ले जाया गया! दूसरे दिन मैं एक जर्मन फौजी अदालत में पेश किया गया जिसने मुझे गोली से उड़ा देने का फैसला किया। फिर भी ८ दिन के लिए यह दण्ड स्थगित कर दिया गया। इस दर्मियान मुझसे जिरह की गयी और सोमवार के प्रातःकाल मुझे गोली से उड़ा देने का निश्चय किया गया। हममें से १८ एक खंतीमें बंद कर दिये गये थे और उसके चारों ओर संतरी तैनात थे। हम लट्ठों के बीच से उन्हें देख सकते थे। हमने देखा कि अधिक रात बीतने पर संतरी सो जाते हैं अस्तु भाग निकलने का निश्चय किया। हम लोगोंने तदनुसार भाग निकलने का प्रयास किया और उसमे सफल हुए। पर हां एक सशस्त्र संतरी को सख्त घायल करना पड़ा। हम जंगलों में घुस गये और वहां पोलिश गुरिल्लों के एक जत्थे में शामिल हो गये। लगातार तीन सप्ताह तक हम लोगोंने जर्मनों को हर प्रकार की क्षति पहुंचायी, सैनिकों को गोली के घाट उतारा, उनकी कारों को रोकने की व्यवस्था की, उसमें बैठे हुओं को गोली से उड़ाया, गोलीबारूद को भण्डारो पर धावे किये और जंगलों, खलिहानों एवं खाइयों में सोये। अनेक बार जब मैंने जर्मनों का वध किया तब केवल बदला लेने की भावना से। वह भी तब जब कि वह अति प्रचण्ड थी किन्तु वस्तुतः मैं यह पसन्द नहीं करता था।

केवल एक बार मैं एक जर्मन को गोली से उड़ा कर बहुत प्रसन्न हुआ था, इसका कारण यह नहीं कि यदि मैं पहल न करता तो वह मेरी जान ले लेता बल्कि इस कारण कि वह कठिन काम था। इसने एक प्रकार से खेल के मैच जैसा रूप ग्रहण किया जिसमें मैं जीता। अपनी फौज के हित के लिए जब जब शत्रु पक्ष के आदमियों का सफाया करना आवश्यक जान पड़ा तब तब मैं जरा भी नहीं हिचका, क्योंकि वैसा करना मेरा पुनीत कर्तव्य था।

अब इंग्लैण्ड से मैं खाद्य और बंदूके लाने के शांततापूर्ण कार्य में व्यस्त हूं। किन्तु अकसर जब पोलैण्डके खूनी दिनों और वहां के अपने अनुभवों की याद आती है तब मन निस्संकोच यह कहता है कि एक साधारण पुरुष या स्त्री को किसी दूसरे व्यक्ति की जान लेने में कभी आनंद नहीं आयेगा।

इंदौर रा. नाग. स्वाधीनता परिषद

अध्यक्ष सै० अब्दुल्ला बरेलवी का भाषण

इन्दोर (डाकसे)। इन्दोर राज्य नागरिक स्वाधीनता परिषद का खुला अधिवेशन गत २८ मई की रातको ठीक ८॥ बजे गुजराती समाज हालमें वंदेमातरम् राष्ट्रीय गीतके साथ प्रारंभ हुआ इसमें २०० प्रतिनिधियों और करीब २००० निमंत्रित प्रेक्षकोनें हिस्सा लिया। बांबे क्रानिकलके यशस्वी सम्पादक जनाब सैय्यद अब्दुल्ला बेरलवी साहब ने अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए कहाः--

इनसान के लिए सांस लेना जितना जरूरी है उतनी ही जरूरी नागरिक स्वाधीनता एक राष्ट्र के लिए है। पंडित जवाहरलालजी नेहरू ने अपने एक भाषण में इस पर जोर देते हुए कहा हैः—

"नागरिक स्वाधीनता हमारे लिए कोई हवाई चीज या कोरी सैद्धान्तिक चाह की वस्तु नहीं है। हमारे लिए राष्ट्र के व्यवस्थित विकास और तरक्की की दृष्टि से वह एक बहुत जरूरी चीज है। एक समस्या को हल करने का यह एक सभ्य अहिंसक तरीका है जिसके विषय में लोग अलग अलग रायें रखते हैं।

अपनी विरोधी रायको जबरदस्ती दबा देना और उसे प्रकट होने का मौका भी न देना इसलिए कि हम उसे नापसन्द करते हैं, ऐसा ही है मानो किसी आदमी से नाराज होकर उसे अपना दुश्मन समझ कर उसका सर फोड दें, और इसमें तो हमें कामयाबी भी नहीं मिलती। जिस आदमी का सर फोड़ दिया जाता हैं, वह तो मर भी जाता है। पर जबरदस्ती के साथ दबाई हुई राय वहीं खत्म नहीं हो जाती। वह तो जिन्दा रहती है और उसे जितना भी दबाया जाता है उतनी ही वह जोर पकडती जाती है।"

हमारी राष्ट्रीय महासभा देश की आजादी के साथ साथ जनता की नागरिक स्वाधीनता की रक्षा और वृद्धि के लिए भी सदा लड़ती रही है। उसने हमेशा यह भी साफ साफ कह दिया है कि वह आजादी अंगरेजी भारतकी भांति देशी राज्योंके प्रजाजनोंकी भी आजादी होगी।

अगस्त प्रस्ताव में कांग्रेसने घोषित किया है कि वह जनता के शोषण को बन्द करना चाहती है इस लिए राजनैतिक आजादी का अर्थ होगा भूखों मरने वाले करोड़ों लोगों की आर्थिक आजादी। इसी प्रस्ताव में जनता के वे तमाम मौलिक अधिकार भी गिनाये गये हैं, जो कांग्रेस की तरफ से मंजूर किये जानेवाले या खुद स्वराज्य सरकार के विधान में होंगे। अभी तो इन में से कुछेक का ही गिना देना काफी होगा। अधिकार ये होंगे कि हिन्दुस्तान के हर आदमी को अपने विचार प्रकट करने की आजादी होगी। लोग स्वतंत्रता पूर्वक अपना संगठन कर सकेंगे और जिसमें नीति और कानून का विरोध न हो ऐसे तमाम कार्यों के लिए सभा सम्मेलन निःशस्त्र, शान्तिपूर्वक किये जा सकेंगे। कानून के खिलाफ किसी भी आदमी को न तो कैद किया जायगा और न उसके मकान में कोई घुस सकेगा या उसकी जायदाद को कब्जे में या जब्त किया जा सकेगा।

आपके राज्य में भारत रक्षा विधान के ढंग पर सन १९४१ में बनाया गया एक सार्वजनिक रक्षा विधान नामक कानून है। नागरिक स्वाधीनता के मूलभूत सिद्धान्तों पर यह एक जबरदस्त आक्रमण है। इसी प्रकार सन १९३९में आपकी सरकार द्वारा जो हुक्म जारी किया गया है वह भी इससे किसी प्रकार कम मनमाना और सख्त नहीं है। इसके अनुसार किसी भी व्यक्ति को कैद या निर्वासित करने के अधिकार सरकार को दे दिये गये हैं। दूसरे प्रकार की नागरिक स्वाधीनता की भी हालत इससे किसी प्रकार अधिक अच्छी नहीं है। मुद्रण स्वातंत्र्य पर काफी कड़ी बन्दिशें हैं। यहां तो प्रभात फेरी या जुलूसों के निकाले के लिए भी पुलिस के सर्वोच्च अधिकारी की इजाजत लेनी पड़ती है। और अक्सर इसका मिलना बड़ा कठिन होता है। अगस्त १९४२ से सार्वजनिक सभाओंपर पाबन्दियां है। इस तरह व्यवहारतः जनता के मुंहपर ताले डाल दिये गये हैं। यह देखकर दुःख होता है कि सरकार की अन्न सम्बन्धी नीति और जनता की कठिनाइयों के बारे में भी उसे अपनी आवाज उठाने की स्वतंत्रता नहीं हैं। प्रजा मण्डल ही एक ऐसी संस्था है जो प्रजाजनों की मुसीबतों को मैदान में लाकर लोकमत का प्रकाशन किया करती थी। पर उसे भी गैर कानूनी घोषित कर दिया गया हैं। पिछले वर्ष नवम्बर में जब श्रीमन्त अमेरिका से लोटे थे राजनैतिक कैदी और नजरबन्द जेल से मुक्त कर दिये गये थे। श्रीमंत के इस कार्य ने जनता में यह आशा पैदा कर दी थी कि रिहाइयों के बाद श्रीमंत जनता की उत्तरदायी शासन की मांग पूरी करने की दिशा में जरूर कोई महत्त्वपूर्ण कदम उठावेंगे। पर दुर्भाग्य की बात है कि ये आशायें अबतक सफल नहीं हो पाई हैं।

राजस्थानी साहित्य

हिवड़ै की लालसा

ले.—श्री मोहनलालजी माहेश्वरी

कलाण मोटो सैर भी कोनी छोटो सो गाँवडो भी कोनी, ठीक ठीक मोकलै घरा की वस्ती है। ठेसण को गाँव होणै सैं रात दिन लोगां को आणो-जाणो वण्यो रैतो। लंबो बेपार कोनी थो पण मीनत-मजूरी करण हालै नै निभाव की जंगा थी। गाँव ठेसण सै डेढ़ दो कौस लागै है।

अठै रै सेठा रो काम पर देसा मांय चलै थो। वरस-दो-बरस से वायलकोयल घर की सम्हाल लैणनै, अर गाँव कै खातरजी टूटण लाग ज्यातो जद ही पधारता। ठैसण सै आंवतां गांव वड़तां अी पैली पोत सेठ संचैलालजी री हेली थी। सेठा कनै मोकला पीसा हा, उण्यै छिप्यै को बी पतो कोनी लागतो। राज तेज मैं चोखी चलती ही। ल्यारै भाई हा, क्यांकी वी कमी को ही ना। मोटी मोटी जंगा सेठां को बेपार चालतो। पण सेठां रै मूं पर सदां उदासी छायी रैती। स्यों कूं थो धन-दरब, नौकर-चाकर, सगा-समंदी, मान-इज्जत, पण घर रो च्यानणो, आख्यां री ज्यौत हिवड़ै रोजी हुलस, बुढ़ापै रो सारो, जीवड़े रे प्यार को हकदार, माया ममता रो इधकारी आगलै जनम की आसा, कुल को दीपक एक लाल को थो ना। वैं विना क्यों कूं फीको थो—विना बींद री जनेत सो।

सेठां नै रोजीना सुपनो आतो कै धूल सैं भरेड़ो, बिनाकारण तरै तरै की लीलावा सैं दसावतो, फूला कीसी कलियां चमकावतो, वालगोपाल आर वना की गोदी में बैठ ग्यो। छाती ठंडीं हो ज्याती:। पण आंख खोलतां अी माथो ठोक लेता—सारी रात जागता अी वीत ज्याती। टाबरां बिना घरघर अी कोनी। टाबर घर रो रतन छे दीपक छे। वैं विना घर अंधेरो छै। बिना बालगोपाल रैं घर मांय रैणो जोराण रै माय रैणो कै बराबर है। टाबर वैरी नै वी मो लेवै।

चीर चाल्येड़े घड़ै कै पाणी की जिया सेठा री उमर वी वीतती जाही। घणी उमर को होअी हीं ना, पण पूतरी चिंता वनाने बूढ़ा बणाणै मैं जलदी करै ही। पण हारैड़े अर चारयू कान्यासै निरासर एक सहारे भगवान की बनानै आसा बणेड़ी थी। सेठा निरास होण हालाको था नी। दूर दूर सैं पंडता नै वुलार एक जिग रचायो। धरमपुन करयो अर पंडतां रै कैणैकै गैल गंगामाअी कै दरसण खातर चाल्या।

पैली किलासरो एक डिबो रिजार्व करा'र सेठा सेठाणीजी अर च्यार हल्यिा रै लागै गंगाजी तांअी चाल पड़या। गाड़ी चलती जा ही, ठेसणपर ठेसण आयी अर गयी। सेठा की आल्यांमें नींद कठै। सोचण लागग्या—मीनख रो जमारो पायो, पण बोबीत ज्यासी—जयां ओ छोटोसी ठेसण आयो अर चल्यो गयो। आ गाड़ी रुक ज्यावै अर चाल पड़ै। कदे म्हारली गाडी भी रुक ज्यासी, बिनां अंजन की आगीनै कुण खींच सी अर लाल री लालसा जगतां इ सेठां को आंख्या भर आयी। बैठ्यां बैठ्यां झपकी आगी। सपणां देख्यो गंगा मायी आयी अर एक भोतअी सोवणो सरूप टाबर सेठां कनै राख'र चली गयी। जाणै टावर सेठां कानी हाथ करै—मनै गोदी लेल्यो। सेठा की नींद उचटगी पण आंखको खोलीना। सोच्यो सपने मैं अी हो पलक रो सुख भोग ल्यूं। सांच देखता डर लागै हो। पण आंख्या मींच्या सेठां नै वैं ई टावर रै रोवण की सी आवाज आयी। सेठां आल्यां जोरसूं मींचली। आवाज आती रयी—मैं तो जानूं हूँ, सूत्यो तो कोनी अर सेठां डरता डरता आंख्या खोली।

देख्यो साच्याणी एक टावर दरवाजै कै सारै पड़्यो रो वै है। सुपनो याद आयो। गंगामाई देगी है। सेठाणीने जगायी। लकसर जंखसण को ठेसण निकल्योंई हो। उछाव को ठिकाणो नईं रयो। सेठाणी बैं चांद के टुकड़ै वै आनंद छाती सै चिपा लियो। मिलरै बोल्या—गंगामाई की जै। नौकर जाग्या; देख्यो सेठाणी गींगलो खिलावै है—दो दो वरस की तनखा वनांनै मुफ्त मिली। भाख फाटण लागगी ही। गंगामाईरो किनारो दीखण लाग ग्यो हो। गाडीरो डब्बो इव सुरगरो टुकड़ो होग्यो है।

रस्तो पलका मैं बीत्यो। गंगामाई पर जाहो घणो दान पुन्न करयो। एक मंदर बणायो, अर कलाण पूठा आग्या। घरै आर बामण वै जिमाया, दान धरम करयो।

हँसता-खेलता सोला सावण वीत ग्या। धनराज जुआण होण लाग ग्यो। जगां जगां से सगपण की बातां चालण लागी। सेठां सोच्यो—आजकल के जमानै को छोरो है—टाबर पढ्यो लिख्यो मिल ज्यातो तो ठीक रहतो। संबंध कठैई जच्यो कोनी। क्यूं-न-क्यू काण कसर रै ज्यावै तिलौढ़ हो सो काम आवै! राजगढ़ स एक मोटा सेठां को काम-काज यू० पी० माँय जौर से चालै हो। कानपर, भागलपर मैं मीलड़ियाँ थी। पण सेठां खुद लस्कर री दुकान कोई काम देख्या करता। फरम को नाम करोड़ीमल लालचन्द पड़तो। करोड़ीमल जी आपरी बाई को सुगन सेठ संचयलालजी नै भेज्यो।

मोकलो धन, मान मरतब, टाबर सरूप अर ऊपर सैं पढ्यो-लिख्यो, सौने मैं सुगंध। और के चाऐ। मुदी होग्यो अर फागण सुदी छको ब्यांव मंड्यो। सजधज र बरात चाली। दोनूं कान्यां ठाडी आसामियां। ठीकरी की जगा रूपियो लाग्यो।

जनेत लस्कर ठेसण पूंची। खूब आवभगत होयी। लोगांनै राम सीता को ब्याव याद आगयो। जनेत सजा'र चाली। दरवाजै कनै सैं निकली। मंगता दांत हिरावे लागा—रिपियां की बौछाड होई। एक बूढ़ली कूणै मैं बैठी ही—चुपचाप। एक रिपियो और बैंके सूंजडै माथै पर लाग्यो—पट। वा उपर नैं देख्यो अर देखकी रयी। बींद की मोटर की गैल गैल चाल पड़ी - आंख्या बींद पर गडायां।

'रांड आंख्यां मैं घालली', एक धक्को अर लाग्यो अर लोग बैं बूढ़लीं नै चींथता-बचाता निकलग्या। सारै दिन बंडै ईपड़ी रई। संज्या होयी—ढुकाव निकल्यो—बैंई रस्तै। बूढ़ली खड़ी होणी—घोड़ी रै गैलै गैलै चालण लागगी।

"रांड खांसी", एक धक्को लाग्यो अर मरनी सी जा पड़ी—बंचेड़ा बानूं दांत बारनै आग्या। रात री ग्यारै बंज्याका फैरा था। कन्यादान वास्तै सेठ करोडीमल आया—आज म्हारे हिवड़े री लालसासरी होसी—ईसो वर, घर म्हांनै मिल्यो ईसो कोई चैई को मिलै ना।

चौकीदारां काल्ह खांवती, मूंडै रै लोअी बुवावती वाअी बूढ़ली मां घुस्याअी। सेठा करोड़ीमलजी ओअी है गंगू? बेटो गंगू? थारो लाल। आजर सोला साल पैली की याद करो। इसी अी बाल ही। मैं हूं रामूड़ी। थारै लाल नै गैणैरे लोभ सै खागी ही। आज मैं सूख स्यूं मरस्यूं। अेक पलक मनै चैन को पड़ी ना—रोज फोड़ कोड़ रे माथो सुजा लिओ। आज मेरै हिवडै की लालसा पूरी होअी। ओ देखो गंगू कै स्यामीं माथै को निसाण।

सेठाणी निकल'र बार आयी, बेटै न देखतां अी सूकेड़ो दूध हरयो होग्यो—धार छूट'रै धनराज (गंगू) रै मूं माय पड़ी। बेटा गंगू—मां बेटै न गोदी मैं भर लियो।

आज म्हारै हिवड़ै की लालसा पूरी होअी।

अर सेठ संचयलालजी सोचण लागरया हा अरै म्हारै हिवड़ै की लालसा......।

(लेखक को इस कहानी पर अखिल राजपूताना साहित्य सम्मेलन चूरु से इसी वर्ष प्रथम पुरस्कार तथा दो तीन मानपत्र प्राप्त हुए थे।

—संपादक)

महान जनतंत्रवादी प्रेजीडेन्ट बेनस

(पृष्ठ १ शेष का)

इसी का परिणाम था कि हिटलर जैकोस्लोवाकिया को हड़पने के साथ बेनस को खत्म कर देना चाहता था। अपने देशपर अपने कारण संकट आता देखकर डा. बेनस ५ अक्टूबर १९३८ के दिन अपने देश से निर्वासित हो गये। कुछ दिन इंग्लैण्ड रहकर वे अमेरिका चले गये और शिकागो विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर नियुक्त हो गये। अब वे जानबूझकर राजनीतिक आन्दोलनों से अपने को पृथक् रखने लगे। परन्तु यूरोप में वर्तमान महायुद्ध के छिड़ते ही डा. बेनस ने फिर से नाजियों की आक्रमण-नीति के विरुद्ध जोरों की आवाज उठायी।

स्टालिन के मित्र

सन् १९४३ में आपने अमेरिका और मास्को की दो महत्वपूर्ण यात्रायें कीं। कनाडा के प्र० मंत्री मि. मैकन्जी किंग के निमंत्रणपर आप कनाडा भी गये। मास्को में स्टालिन, कालिनिन, मोलोटोव, वोरोशिलोव, और अन्य रूसी नेताओं के साथ उनकी बड़ी लम्बी बात-चीत हुई थी। यह स्मरण रखना चाहिये कि स्टालिन और बेनस बड़े गाढ़ दोस्त हैं। स्टालिन यूरोप के समस्त राजनितिज्ञों की सम्मति की अपेक्षा बेनस की सम्मति को सब से अधिक कीमती मानते हैं।

तेहरान की कान्फ्रेंस में भी डा० बेनस एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में सम्मिलित हुए थे। और ईरान के शाहनशाह के विशेष आग्रहपूर्ण निमंत्रण पर वहाँ और दो दिन तक ठहरे थे। डा० बेनस ने वहाँ ठहर कर ब्रिटिश और इरानियों में चले आते पुराने झगड़े को बड़ी बुद्धिमतापूर्वक समाप्त करादिया। इस के लिए शाह ने आप को बड़ा ही धन्यवाद दिया था। मिश्र में किंग फरुख के साथ आपने युद्धस्थिति पर देर तक बातचीत की और जनरल डिगॉल के निमंत्रण पर आप एल्जियर्स गये और युद्धसम्बंधी अनेक महत्वपूर्ण प्रश्नों तथा समस्याओं पर विचार विनिमय किया। एल्जियर्स में उन्हें रुग्णशय्या पर पड़े हुए प्रधान मंत्री मि० चर्चिल का मराकेश से आकर मिलने का खास निमंत्रण मिला था।

डा० बेनस के गाढ़ परिचय में आये समस्त व्यक्तियों की एकमत से यह सम्मति है कि वे राजनैतिक के साथ-साथ आर्थिक तथा नैतिक भावना को लिये हुए विशुद्ध जनतंत्रवादी विचार के व्यक्ति हैं। डा० बेनस स्वभाव में अत्यन्त सहिष्णु हैं, और दूसरे के विचारों के दृष्टिकोण को अपनाने के लिये सदा उद्यत रहते हैं। उनकी बातचीत या भाषण में आप को 'राजनीतिक व्यवहार' की गन्ध भी नहीं मिलेगी। उन के समस्त वक्तव्य सदैव सरल और सुस्पष्ट होते हैं। उनमें सन्देह की जरा भी गुंजायश नहीं होती है।

जनतंत्र के अभ्युदय और उन्नति के लिये आज डा० बेनस सदृश व्यक्तियों की ही सब से अधिक आवश्यकता है। एक सुप्रसिद्ध अंग्रेज इतिहास लेखकने डा० बेनस का चरित्र निम्न प्रकार से अंकित किया है:—

"प्रेसीडेन्ट बेनस मानव के जीवित रहने, स्वतंत्रता, और प्रसन्नता के अधिकारों के लिये, शुभभावनापूर्ण व्यक्तियों के लिये सर्वत्र न्याय के लिये, ईमानदार और नैतिकतापूर्ण सरकार की स्थापना के लिये लड़ रहे हैं—और ये लड़ाई लड़ते वे वक्त न किसी के सिर कोई दोष मढ़ते हैं, न कठोर वाक्य और न घृणा की भावना ही" जीवन के प्रति उनका जो दृष्टिकोण है वह संसार के अन्य सभी राजनीतिज्ञों की अपेक्षा महात्मा गान्धीजी और उनके विचारों से ही अधिक मेल खाता है।

श्री ओमजी पेरोल पर रिहा

जयपुर के एकमात्र नजरबन्द श्री ओमदत्तजी को उनकी सास के बीमार होने के कारण दो मास के पेरोल पर छोड़ा गया है। आपकी रिहाई की मांग अभी प्रजामंडल के अधिवेशन में एक विशेष प्रस्ताव पास करके की गई थी। आप अगस्त आन्दोलन के सिलसिले में नजरबन्द किए गए थे। और इस समय जयपुर जेल में अकेले ही नजरबन्द राजबन्दी थे।

मातृ-पितृ स्तम्भ
ART CORNER

खिलाड़ी, खेल, खिलौने

२६

लेखक

श्री. श्रीनिवासजी झँवर बी. ए.

खेल बड़ों के लिये मनोरंजन की वस्तु हैं किन्तु बालकों के लिये खेल बहुत ही महत्वपूर्ण कर्त्तव्य है, धर्म है। अधेड़ पुरुष दफ्तर या दुकानों से दिन भर काम-काज करके थके मांदे घर लौटते हैं इस दिन भर के कठिन परिश्रम की थकावट को दूर करने के लिये मनुष्य खेलते हैं, खेलने से उनकी थकावट दूर होती, है उन्हें अपने शरीर में नवीन स्फूर्ति का अनुभव होता है किन्तु बालक इस लिये खेलते हैं कि उनमें बहुत अधिक शक्ति है, स्फूर्ति है और इस शक्ति और स्फूर्ति से खेल के साधन द्वारा वे अपने आपको भविष्य में आने वाली दैनिक जीवन की कठिनाइयों का सामना खेल खेल में ही करना सीखते हैं।

बालक खेलते खेलते ही बड़े होते हैं और खेल खेलमें ही वे दैनिक जीवन की आवश्यकताओं का अनुभव प्राप्त करते हैं। खेलने से ही बालक की मांसपेशियां मजबूत होती हैं। उसकी कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों का विकास होता है, वह जीवन में अपने उपयुक्त स्थान की पूर्ति करने की शिक्षा प्राप्त करता हैं। इस लिये प्रत्येक बालक के खेल, खिलौने, साथी, आदि उसके जीवन निर्माण में कल्पनातीत महत्व रखते हैं। बड़े के लिये जैसे कहा जाता है कि “मुझे बताए वह क्या पढ़ता है और मैं आपको बतादूंगा उसका आचरण जीवन व्यक्तित्व कैसा है” अथवा “मनुष्य अपने मित्रोंद्वारा पहचाना जाता है कि शरीफ है या सुशील है या लुच्चा लफंगा है” उस भांति बच्चे के खिलौने, उसकी रुचिवाले खेल और उसकी खेल में रुचि आदि देखकर कोई भी मानस-शास्त्री उस बच्चे के भविष्य का वर्णन कर सकता है।

माता-पिता और कुटुम्बियों की बालकों के प्रति ममता स्वाभाविक रहती है किन्तु इस ममता को अज्ञानवश हम लाड़-प्यार की उस सीमा तक बढ़ा देते हैं जहां से कि बच्चे का अहित होना आरम्भ हो जाता है। जैसे कि बच्चे छोटे पौधे को शीघ्र बड़ा कर देने की अभिलाषा से उसे आवश्यकता से अधिक सींचते हैं और परिणामस्वरूप बढ़ने के बजाय वह पौधा गल जाता है। माता पिता को यह कहने का अवसर नहीं आना चाहिये कि “I loved him not wisely but too well” इसके लिये निम्नाङ्कित नियमों का पालन किया जाना आवश्य है:—

(१) बालक अपने किसी भी खेल या कार्य में तन्मय है तो उसे न छेड़ो। हां यदि भोजन का या सोने का समय हो चुका हो—देर बहुत होगई हो तो ही बालक का ध्यान भंग करो अथवा यदि बालक पर कोई खतरे की संभावना हो तो ही उसके कार्य में दस्तन्दाजी करें। यदि आज आप लाड़ प्यारवश बालक की स्थिरचित्तता, संलग्नता, तन्मयता, बार २ तोड़ देंगे तो यह बालक अस्थिर बुद्धि पराश्रित और चिड़चिड़ा हो जायगा। हम लोगों की यह धारणा रहती है कि बड़े होने पर सब अपने आप सीख जायेंगे लेकिन आप चारों और दृष्टि फैलाकर देखिये कि आपकी जानकारी में ऐसा कोई एक भी व्यक्ति है जो अपने किसी भी कार्य को एक घंटे से अधिक एकचित्त ध्यानावस्थित होकर कर सके? यह परिणाम बालकों को बाहर छोड़कर उनका ध्यान भंग करने काही है। यदि आपको विश्वास नहीं होता हो तो डा० मान्टसरी के सिद्धान्तों पर चलने वाली किसीभी शालामें जाकर देख लीजिये। बालकों की तन्मयता को देखकर दंग रह जायेंगे। जहांतक हो सके आप दूरसे बच्चे की कार्यवाही को प्यारसे देखते रहिये और जब बच्चा कार्य समाप्त करले उस वक्त उसकी प्रशंसा करके अपना प्यार जता दीजिये। यदि बच्चा आपकी सहायता मांगे तो उसकी इच्छानुसार जितनी सहायता वह चाहता है उतनी ही दीजिये। अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से उनकी रचनात्मक प्रवृत्तियों को कुन्द मत कीजिये।

(२) यदि बालक आप के साथ खेलना चाहे तो अवश्य खेलिये, किन्तु बालक की खेल की व्यवस्था और ढंग को मान कर ही खेलिये। इस प्रकार व्यवस्था में कोई त्रुटि हो तो बालक से ही उसका समाधान पूछिये ताकि उसकी कल्पना शक्ति का विकास और भाषा की वृद्धी हो। यदि आपने उसे अपने मनोनुकूल चलने पर बाध्य किया तो वह अपना विकास नहीं कर पायेगा और उसे सदैव दूसरों का मुंह ही देखना पड़ेगा।

(३) बच्चों को आप खिलौने देकर उनका दिल बहलाव करना चाहते हों तो उन्हें आवश्यकता से अधिक खिलौने न दें। बालक एक समय में एक खिलौने से ही तन्मय होकर खेलता है। यदि आपने उसको आवश्यकतासे अधिक खिलौने दे दिये तो वह बौखला जायगा और उसका ध्यान जल्दी जल्दी उचट जाया करेगा।

(४) बालक एकही खिलौने से अधिक दिनों तक खेलना पसन्द नहीं करते हैं। उन्हें परिवर्तन और भांति २ के खिलौनों की आवश्यकता अति शीघ्र होती है इसलिये जहां बालक एक खिलौने से अरुचि प्रगट करे आप फौरन उसे दूसरा खिलौना ला दीजिये।

(५) बच्चों को “नहीं’ कहना भूल जाइये। हमारी आदत है कि हम प्रत्येक वस्तु के लिये भयभीत रहते हैं और बच्चों को कहते हैं ‘मत छुओ’ ‘मत लेओ’ आदि। आपको यह ध्यान रखना चाहिये कि बच्चे के आसपास की सभी वस्तुऐं बच्चे को चिल्ला चिल्लार पुकारती हैं—“हमें देखो हम से खेलो, हमारी आवाज सुनो, हमें पहचानो आदि।”

उपरोक्त नियमों के साथ ही साथ हम माता-पिताओं को बालकों की भिन्न २ अवस्थाओं में खेल तथा साथी की आवश्यकता से भी परिचित कर देना चाहते हैं ताकि खिलौनों का विवेचन सुबोध हो जाय।

बालकों में प्रकृति दत्त दो वृत्तियां रहती हैं जिनसे कि वे अपने आसपास की और दैनिक आवश्यकता कीं वस्तुओं को प्राप्त करते हैं—प्रथम क्रियात्मक और दूसरी परिचयात्मक। क्रियात्मक वृत्तिसे बालक हिलना, डोलना, खड़ा होना, चलना, कूदना, दौड़ना, पकड़ना, हाथ पांव चलाना, बोलना आदि ये क्रियाएँ करता है। इस वृत्तिका विकास इतर प्रकारकी शारीरिक कसरतों से होता है जो कि बालक खेल २ में अनायास ही प्राप्त कर लेता है। परिचयात्मक वृत्ति का विकास बालक देखकर, सुनकर और स्पर्श करके करता है।

इन दोनों वृत्तियों का विकास :किन्हीं बालकों में जल्दी ही हो जाता है और कोई २ बालक देर से विकास कर पाते हैं। जैसे कि कोई बालक जल्दी चलना या बोलना सीख लेते हैं और कई बच्चों को कई महीने और लग जाते हैं। इसलिये बच्चों के खिलौने उनकी योग्यता, आवश्यकता और उगाव Growth के मानसे ही लाने चाहिये खिलौने की पसन्दगी बालकों की उमर का ख्याल करके करने बजाय उनके विकास को ध्यान में रखकर करना चाहिये। आइये, हम आपको इस कार्य में सहायता दे सकते हैं।

(१) **शैशव**: नवजात शिशु प्रकाश, अंधेरा और आवाज इन तीनों से अधिक प्रभावित होता है इस लिये इस आयु में बच्चे को आप घुंघरूवाले चटकीले रंगके खिलौने दीजिये, झुनझुना दीजिये, सफेद कोड़ियों से गुंथी गेंद वगैरह दीजिये। अच्छा हो यदि आप ये खिलौने बालक के पास लटका दें या कान के पास बजावें ताकि वह इन्हें देखकर या आवाज सुनकर लेने के लिये हाथपांव फटकारेगा इस प्रकार उसका मनोरञ्जन भी हो जायगा और वह व्यायाम भी करलेगा।

(२) उक्त स्थिति से निकल कर बालक इस अवस्थामें आता है जब कि वह प्रत्येक वस्तु का ज्ञान मुंहसे ही प्राप्त करने की चेष्टा करता है इस लिये प्रत्येक वस्तु को वह मुंह में रखने का प्रयत्न करता है। अब उसके दांत निकलने की वय भी आनेवाली ही होती है इस लिये उसके मसूड़े Gums में दांतों की पेड़िया बंधने लगती हैं और मसूड़े सख्त होने लगते हैं। परिणाम स्वरूप वह चीजों को चूसने और चबाने में ज्यादा आनन्द प्राप्त करता है। इसलिये इस आयु में ऐसे छोटे २ खिलौने दीजिये जो कि धोए जा सके जिनका रंग चटकीलाहो, जो रबड़की तरह मुलायम हों किन्तु शीघ्र टूटने वाले न हों, जिनके किनारे तेज धारवाले न हों, जिनमें से तार वगैरह नहीं निकल रहे हों ताकि बच्चेके मुँहमें जाकर चुभ न सकें। यह ध्यान रहे कि खिलौनों पर नुकसानदायक रंगरांगन लगा हुआ नहो नहीं तो मुंहमें लार saliva से गल कर यह पेटमें चला जायगा और विकार उत्पन्न कर देगा। मोटी चाबियोंका झुमका, गिर्राया, छोटे कलईके चम्मच, लकड़ी या पीतलके खिलौने आदि वस्तुएं बच्चेको इस आयुमें दी जा सकती हैं। जिस वक्त बच्चे के दांत निकलनेवाले होते हैं या एक दो दांत निकल चुके हैं उस वक्त बच्चा चीजों को मुंहमें जोरसे दबानेमें अधिक आनन्द प्राप्त करता है। इस अवस्थामें यदि हो सके तो सख्त रबरकी चूसनी या संगमरमर की बत्तियां या हड्डियोंके लंबे टुकड़े बालकको चूसने और चबाने के लिये दिये जा सकते हैं। यदि बालक दलिया, सूजी आदि खाने लग गया हो तो ये चीजें इन खिलौनों पर लेप करके (coating) भी दी जा सकती है।

हां बेहतर होगा यदि ये खिलौने बालक की दृष्टि के सामने किन्तु उसकी पहुँचसे कुछ दूर रक्खे जायें ताकि वे इन्हें पकड़ने के लिये हाथ पांव मारें या रेंग कर उनके पास जायं। इस प्रकार परिश्रम से प्राप्त खिलौने से बच्चे का मनोरंजन भी अधिक होगा और उसका आवश्यक व्यायाम भी हो जायगा।

(३) इस प्रकार खेलते २ बालक लगभग १ वर्ष का हो जायगा। अब बालक में एक नवीन आदत स्पष्ट दिखने लगती है। वह अब अपने आसपास की वस्तुओं को भी देखने पहचानने और समझने का प्रयत्न करता है। इस आदत का आरम्भ तबसे होता है जब कि बालक लुका-छिपी का खेल आरम्भ करता है। बालक अपने आपको किसी वस्तु की आड़ में छुपा लेता है और थोड़ी ही देरमें वहां से निकलकर खिलखिला कर हंसता है। यदि आड़ न होतो बालक अपने मुंह को ही ढकलेता है और ‘ता’ करने पर कपड़ा हटा कर खिलखिला कर हँसता है। घरके बड़े, बूढ़े बच्चे सभी बालक के साथ यह लुकाछिपी का खेल बड़े चावसे खेलते हैं। धीरे धीरे बालक पेटियाँ या डिब्बों के ढक्कन खोलने और बंद करने में आनन्द प्राप्त करता है, किताबों के पन्ने उलटता है, कागजकी चर चर आवाज सुनने के लिये कागज

(शेष पृष्ठ २४ पर)

SHIP BRAND FABRICS

SELL ON THEIR MERITS !

हिन्दुस्तान, सीलोन, और विदेशमें लोकप्रिय

सुंदर, स्वदेशी पक्के रंगके मज़बूत और कीमतमें सस्ते

सफ़ेद ड्रिल
,, ट्विल
,, लौंग क्लाथ
साटिन ड्रिल

★

टेबल क्लाथ
सफेद ६०" व ६८"
शर्टिंग क्लाथ
सफेद ५४", ६०" व ५८" की साईज़में

★

कैसमेंट क्लाथ
अन्य कई रंगोंमें
दोसूती क्लाथ
सफेद व रंगीन
टौवल, नैपकिन वगैरह

जहाज छाप

जहाज छाप ब्लिच्ड क्रेप

पर्दे, खोल, स्त्री, पुरुष और बच्चोंके कपड़ों के लिए

CURTAINS, COVERS, LADIES', GENT'S AND
BLEACHED CREPE IS UNIQUE FOR GENTS SHIRTS
CHILDREN'S WEAR

"जहाज छाप" कपड़ा बरतिये—शर्टिंगके लिए 'जहाज छाप' ब्लिच्ड क्रेप उत्तम कपड़ा है

कौटन क्रेप

सफेद व अन्य ३४ प्रकार के पक्के रंगों व अन्य कई रंगोंकी डिज़ाइन में।

पापलीन

सफेद व अन्य २४ प्रकारके पक्के रंगों, आकर्षक छपाई व अन्य रंगोंकी डिज़ाइन में।

अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डालने व मित्रों तथा सबंधियों में अपने प्रति आदर भाव उत्पन्न करानेके लिए जहाज मार्का कपड़ा बरतिये।

खाकी ड्रिल्स, ड्रिल्स व
मरसीराईज़ डाईड:—
ब्लिच्ड पापलीन
ब्लिच्ड क्रेप
,, कोटिंग
,, ड्रिल
,, साटिन ड्रिल
,, लौंग क्लाथ
,, स्ट्राइड शर्टिंग

जहाज छाप

'जहाज छाप' कपड़ा सुंदर, स्वदेशी और सस्ता है

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons

Head Office——AMRITSAR
Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

विद्यार्थियों के ध्यान देने योग्य सूचनाएं

[इस समय देशभरमें शिक्षाके विस्तारका प्रयत्न किया जा रहा है। सारा देश इस बातके लिये प्रयत्नशील है कि शिक्षाका अधिकाधिक प्रसार हो। मारवाड़ी समाजमें भी शिक्षाकी तरफ अभिरुचि बढ़ रही है। इस नवीन वर्षके विद्यालयोंके सत्र प्रारम्भ हो रहे हैं। इसलिये हम मारवाड़ी भाइयों की जानकारीके लिये "कहां कहां उनको विद्यार्थिभुवनों और छात्रवृत्तियों की सुविधा और सहायता मिल सकती है" इसका परिचय दे रहे हैं। यह परिचय हम अपनी जानकारीके अनुसार दे रहे हैं। यदि किसी विशेष संस्था या दानी महोदय द्वारा दी गई छात्रवृत्तिका उल्लेख इसमें न हुआ हो और वे हमें सूचित करें तो हम उसे 'माहेश्वरी' में सहर्ष स्थान देंगे। आशा है हमारे पाठक गण इससे जरूर लाभ उठावेंगे। —सं०]

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मण्डलकी ओर से पूना, शोलापुर और अहमदनगरमें विद्यार्थी भुवन

बम्बई प्रांतमें माहेश्वरी तथा अन्य मारवाड़ी समाजोंके स्कूलों व कालेजोंके विद्यार्थियोंके लाभके लिये तीन विद्यार्थीभुवण पूना, शोलापुर और अहमदनगरमें चल रहे हैं। ये तीनों विद्यार्थीभुवन क्रमशः

१. रा. ब. हणमन्तराम रामनाथ विद्यार्थी-भुवन, पूना

२. सन्तोकीराम रामसुख विद्यार्थी भुवन, शोलापुर

३. मारवाड़ी विद्यार्थी भुवन, अहमदनगर।

गर्मियोंकी छुट्टियोंके बाद खुल गए हैं। इनमें प्रवेश पानेके इच्छुक विद्यार्थी शीघ्र ही मं माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल ९९ नारायण पेठ पूना नं. २ से पत्र व्यवहार करें।

छात्र वृत्तियां

इन संस्थाओंके अतिरिक्त मारवाड़ी विद्यार्थियोंकी सहायताके लिये बहुतसी छात्रवृत्तियां भी वितरण की जाती हैं। इन छात्रवृत्तियोंसे विद्यार्थी लाभ उठा सकते हैं। जो विद्यार्थी शिक्षा पानेकी दृढ़ अभिलाषा रखते हों और इन छात्रवृत्तियोंका लाभ उठाना चाहें वे इनके लिये शीघ्र प्रयत्न करें।

माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डलकी तरफसे छात्रवृत्तियोंका वितरण

माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डलकी तरफ से प्रतिवर्ष अनेक छात्रवृत्तियां दी जाती हैं।

इसके अतिरिक्त बंबई विश्वविद्यालयकी मैट्रिक व इण्टरमीजिएट आर्टसकी परीक्षाओंमें संस्कृतमें जो माहेश्वरी विद्यार्थी सबसे अधिक अंक पायेगा और आगे भी अध्ययन जारी रखना चाहेगा उसे भी स्व. श्रीरामजी सोमाणी १००) छात्रवृत्ति एक साल तक दी जायगी। विद्यार्थी गण मन्त्री माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डल, ९९ नारायण पेठ पूना नं. २ से पत्रव्यवहार करें।

बिड़ला कालेज पिलानी

बम्बई प्रान्तसे बाहर रहने और शिक्षा पाने के इच्छुक मारवाड़ी बन्धुओंके लिये पिलानी का बिड़ला कालेज एक उत्तम संस्था है, जहां सामान्य शिक्षाके अलावा अनिवार्य शिल्पकी शिक्षा भी जाती है, जिससे विद्यार्थियोंको शिक्षा समाप्त करनेपर जीविका कमाने के लिये कठिनाई उठानी पड़े। राजस्थानमें यह अपने ढंगकी एक ही संस्था है। राजस्थानके मारवाड़ी बन्धुओंको इस संस्थाका यथा सम्भव लाभ उठाना चाहिये। यहांका शिक्षा-शुल्क तथा अन्य व्यय भी बहुत कम है जिससे शिक्षा सुलभ है। और जो विद्यार्थी उतना खर्चा भी नहीं उठा सकते और संस्थामें पढ़नेके अभिलाषी है उन्हें:—

माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डल (पूना) के मंत्री की ओर से

जो भाई माहेश्वरी विद्याप्रचारक मण्डल द्वारा संचालित पूना, शोलापूर और अहमदनगर के विद्यार्थीभुवनों से लाभ उठाना चाहते हों वे अपने आवेदन पत्र ऊपर लिखित पतेपर भेजें।

इस मण्डल की ओर से छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं।

शोलापूर के कॉलेज में दाखिल होने वाले गरीब विद्यार्थियों के लिये यह एक विशेष सुविधा है कि श्री. लक्ष्मी नारायणजी राठी द्वारा विद्यार्थीयोंको "फ्रीशिप" मिलती है। हम देखते हैं कि शोलापूर के पासके जिलोंके कई छात्र दूर २ के कालजों में भर्ती होने को जाते हैं। इससे तो उनको शोलापूर की सुविधाओंसे लाभ उठाना चाहिये।

पूनामें गतसालसे कॉमर्स कॉलेज खुल गया है। कॉमर्स की शिक्षा के लिये दूसरी जगह जाने की बनिस्वत पूना जैसे शिक्षा केंद्र का फायदा उठानाही श्रेयस्कर है। यहां इंजिनियरिंग, कृषि, विज्ञान आदि कॉलेजेज़ हैं एवं शिक्षा क्षेत्रमें कई प्रवृत्तियां चलती रहती हैं उसका भी वे लाभ उठा सकते हैं।

अहमदनगर जिले में एवं पासमें मारवाड़ी समाज की जन संख्या विशेष रूपमें है। वहां के छात्रों को शिक्षा प्राप्ति में रहने आदि की काफी दिक्कत उठानी पड़ती थी। और कई माता पिता अपने लड़कों को अच्छी शिक्षा देने की इच्छा रहते हुए भी जगह आदि की सुविधायें अप्राप्त होनेसे अपनी इच्छा को सफल करने में कठिनाई महसूस करते थे। यह देखकर वहां भी मण्डल गत ४।५ वर्षोंसे छात्रावास चला रहा है। हम उम्मीद करते हैं कि अहमदनगर जिला एवं उसेक पासके विद्यार्थी इस संस्थासे अवश्य लाभ उठायेंगे।

बिड़ला बन्धुओंकी तरफसे छात्रवृत्तियां

भी सहायताके रूपमें दी जाती हैं। जो विद्यार्थी इन छात्रवृत्तियों का लाभ उठाना चाहें वे बिड़ला कालेज पिलानी (जयपुर राज्य) से पत्रव्यवहार कर सकते हैं और इन छात्रवृत्तियों के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

बालिका विद्यालय

बिड़ला बन्धुओं की ओर से बालिकाओं के लिये भी पिलानी में एक विद्यालय चल रहा है। उससे भी पूरा लाभ उठाया जाना चाहिये।

बनारस हिन्दू युनिवर्सिटीके स्त्रियोंके कालेजमें बिड़ला छात्रवृत्तियां

श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला ने अपनी पत्नी श्रीमती गुलाबदेवी बिड़लाके नामसे २५०००) स्त्रियोंके कालेजकी विद्यार्थीनियोंके लिये छात्रवृत्तियोंके निमित्त दिये हैं। इस रकमके ब्याजसे प्रतिवर्ष १० छात्रवृत्तियां प्रतिमास १५) के हिसाबसे दी जाती हैं।

श्री घनश्यामदासजी बिड़लाने अपनी पत्नी श्रीमती महादेवी बिड़लाके नामसे ५०००० के शेअर्स इसी कामके लिये दिये हैं। इस शेयरोंकी आमदनीसे प्रतिवर्ष २० छात्रवृत्तियां प्रति माह १५) के हिसाबसे दी जाती है। इन छात्रवृत्तियोंके देनेके नियम निम्न प्रकार हैं—

१. ये छात्रवृत्तियां श्रीमती गुलाबदेवी बिडला छात्रवृत्तियां तथा श्रीमती महादेवी बिड़ला छात्रवृत्तियां नामसे दी जायंगी।

२. १० छात्रवृत्तियां श्रीमती गुलाबदेवी बिड़लाके नामसे और २० छात्रवृत्तियां श्रीमती महादेवी बिड़ला के नामसे दी जायंगी।

३. ये छात्रवृत्तियां स्त्रियों के होस्टल में रहने वाली स्त्रियों के कालेज और सेण्ट्रल हिन्दू कालेज की गरीब और अपेक्षा रखने वाली विद्यार्थिनियों को वर्षमें १० मास के लिये दी जांयगी।

४. छात्रवृत्तियां सर्व प्रथम माहेश्वरी या अग्रवाल जाति की लड़कियों को दी जांयगी।

५. छात्रवृत्ति प्राप्त करनेवाली विद्यार्थिनी की छात्रवृत्ति बन्द कर दी जायगी यदि सिण्डीकेट की दृष्टि में उसकी प्रगति असन्तोषजनक होगी।

६. सिंडीकेट को, जब वह आवश्यक समझे छात्रवृत्तियों के नियमों में परिवर्तन और परिवर्धन करने का अधिकार रहेगा, बशर्ते कि पहले से श्री रामेश्वरदासजी बिड़ला या श्री घनश्यामदासजी बिड़ला या उनके उत्तराधिकारी की सम्मति प्राप्त कर ली हो।

विश्वम्भरलाल हाईस्कूल बगड़

बगड़ (जयपुर स्टेट) में श्री. विश्वम्भरलालजी माहेश्वरी की तरफ से भी सीनियर कैम्ब्रिज की परीक्षाओं के लिये एक हाईस्कूल चल रहा है। इससे भी राजस्थानी भाई यथा सम्भव लाभ उठा सकते हैं।

श्री. ठाकुरदासजी राठी स्कालर-शिप फण्ड

इस के इलावा श्री. ठाकुरदासजी राठी स्कालरशिप फण्ड से किंग एडवर्ड कालेज अमरावती में पढ़नेवाले चार विद्यार्थियों को प्रत्येक को मासिक २० रु. की छात्रवृत्ति श्री. वल्लभदासजी राठीकी ओर से दी जाती है। माहेश्वरी विद्यार्थी को प्रथम पसन्दगी दी जाती है। यह छात्रवृत्ति खासकर बरार के माहेश्वरी समाज के लिये है। माहेश्वरी विद्यार्थी न होने से मारवाड़ी समाज के विद्यार्थी को भी इसका लाभ दिया जाता है। इस छात्रवृत्ति के सम्बन्ध में भी किंग एडवर्ड कालेज, अमरावती में पढ़नेवाले विद्यार्थी श्रीयुत वल्लभदासजी राठी, अमरावती से मिलकर या पत्रव्यवहार द्वारा सहायता पा सकते हैं।

माहेश्वरी हितकारिणी सभा, बंबई की ओर से भी छात्रवृत्तियां दी जाती हैं पता यह है—मंत्रीजी माहेश्वरी हितकारिणी सभा मार्फत श्री. शिवरतन कम्पनी भूलेश्वर बंबई। हिन्दुस्तान चेरिटी ट्रस्ट ८, रायल एक्सचेञ्ज प्लेस कलकत्ता भी छात्रवृत्तियां दिया करता है।

माहेश्वरी बाल विद्यालय रतलाम को १००१ रु.

श्री. गोरधनलालजी नवाल ने अपने पूज्य पिता लछमनलालजी नवाल का स्वर्गवास होने पर उनकी स्मृतिमें श्री माहेश्वरी बाल विद्यालय रतलाम को १००१ रु. का दान दिया है। आपने मोसर प्रथा को तिलाञ्जलि दी है। इस सराहनीय कार्य के लिए हम उनको धन्यवाद देते हैं। माहेश्वरी नवयुवक मंडल (उक्त विद्यालय का संचालक) दिवंगत के शोक संतप्त कुटुम्बियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करता है और मृतात्मा की शांति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है।

मंत्री **माहेश्वरी नवयुवक मंडल रतलाम।**

माहेश्वरी पुस्तकालय-वाचनालय कानपुर

तृतीय–वार्षिकोत्सव सम्पन्न

प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी शुभ मिति जेष्ठ शुक्ला नौमी सम्वत २००१ तदनुसार ता० ३१–५–४४ बुधवार सायंकाल ७॥ बजे श्री महेश नवमी उत्सव एवं पुस्तकालय का तृतीय वार्षिकोत्सव श्रीमान् बालकृष्णजी माहेश्वरी (मूँदड़ा) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर वार्षिक चुनाव भी हुआ।

निवेदकः—
बद्रीप्रसाद माहेश्वरी (बाहेती)
मंत्री

खिड़की की चटकनी लगाते हुए प्रदीप ला-बहुत जोरसे वर्षा होरही है।

परन्तु मनोरञ्जन का ध्यान इस ओर नहीं । सोडे की खाली बोतल को मेजपर रखकर ने पूछा अभी क्या बजा होगा?

प्रदीपने कलाई पर बँधी हुई घड़ी की ओर । वह बोला--ठीक दस बजे हैं।

और फिर भी आप पत्थर की मूर्ति की खड़े हैं! भूल गये क्या?

'क्या?' प्रदीपने पूछा।

मनोरञ्जन ने उत्तर दिया--बड़ी कमजोर है तुम्हारी याददाशत अरे याद। नहीं पन्ना ने तुम्हें कहा था?

'क्या?'

'यही कि अगर तुमने आज वहाँ पहुँचने गफ़लत की, तो वह तुमसे कभी भी नहीं लेगी।

'सच!!'

'ज़वानी की क़सम–हम झूठ थोड़े ही बोल रहे हैं। सच मानो प्रदीप, पन्ना तुम पर जी जान से मरने लग गयी है। तुम्हें उसका दिल नहीं तोड़ना चाहिये।'

कुर्सी पर बैठते हुए प्रदीप बोला–मैं ऐसा कौनसा खूबसूरत हूँ कि जिस पर पन्ना जैसी सुन्दरियों की शहज़ादी रहम करे। मैं उसके रहम का मुत्तम्मनी हूँ।

'यकीन करो दोस्त, पन्ना तुम्हें हदसे ज्यादा प्यार करने लग गयी है। और हाँ, आप यहाँ कुर्सी पर तनकर क्यों बैठ गये हैं। कपड़े पहनिये, सैण्ट लगाइये और फिर चल दीजिये मेरे साथ।

प्रदीप बोला–पर बाहर तो बारिश हो रही है।

'बारिश हमारे इरादों को हरगिज़ नहीं मिटासकती।'

'पर जायँगे कैसे?' प्रदीप ने पूछा।

उसने उत्तर दिया—ठीक उसी तरह जैसे प्यासा कुए के पास जाता है। ठीक उसी तरह जिस तरह लोहा चुम्बक के पास। क्या और मिसाल दूँ इस ढंग की?

प्रदीप बोला—बस रहने दो। मैं कपड़े पहनता हूँ।' और वह कपड़े बदलने दूसरे कमरे में चला गया।

मनोरञ्जन ने प्याली में बची हुई शराब मुँह में उंड़ेल ली और फिर बोतल हिला कर देखा। इस में चन्द कतरे शराब के मौजूद थे। कार्क हटाकर उस ने बोतल को मुँह पर लगाया और बची हुई शराब हलक के नीचे उतार ली। बोतल वापिस जगह पर रखकर ज्योंही वह खड़ा हुआ त्योंही सामने वाली खिड़की हवा के एक तेज़ झोंके के साथ खुल गयी और उसका सारा मुँह एक बारगी पानी की बौछार से तर होगया। वह दौड़कर खिड़की के पास पहुँचा और सारा जोर लगा कर किसी तरह उसने खिड़कीके पल्ले भिड़ा दिये और उसके उपरान्त चटकनी चढ़ाकर मुँह पोंछनेके लिये उसी जगह खड़ा होगया।

शेरवानी और चूड़ीदार पायजामा पहिनकर प्रदीप कमरेमें दाखिल हुआ। बरसाती कोटको कंधेमें डालते हुए वह बोला—लो मैं तो तैयार होगया।

मुँह पोंछकर मनोरञ्जन ने रूमाल जेब में रखा और बोला—अच्छा तो चलो।

कहानी
ART CORNER

कमीनी

लेखक—**मुंशी बावरा**

दूसरे कमरे में आकर मनोरञ्जन ने अपना बरसाती कोट खूंटी परसे उतारा और पहिनते हुए प्रदीप से बोला—पन्ना से तुम झेंपा मत करो। जब तुम चुप हो जाते हो तो उसका जी दुखी होने लग जाता है।

प्रदीप ने उत्तर दिया—पर मैं बोलूँ भी तो क्या? फिजूल बोलने से तो अच्छा है कि चुप रहा जाय।

"चुप तो रहना ही नहीं चाहिये। ये लो अपना छाता। पन्ना बड़ी हँसमुख है। अरे, मेरा छाता कहाँ गया? कोने में पड़ा है। आवो।"

नीचे उतर कर दोनों ने छाता तान लिया और चुपचाप पड़क के किनारे-किनारे दुकानों के नीचे-नीचे चलने लगे। बरसात जोरों पर थी। अपने आप को छींटों से बचाते हुए दोनों कोतवाली के पास वाली गली में घुसे। यह रास्ता दालमण्डी को जाता था। इस लम्बे, तंग और बदूबदार रास्ते पर बीस कदम चलने के बाद दोनों दाहिनी हाथ वाली गली में मुड़े। यहाँ से ठीक सामने जो कोठा चमकता हुआ नजर आता था, वह पन्ना का ही था।

मनोरञ्जन कमरे में कदम रखते हुए बोला–आपका खादिम हाज़िर है।

पन्ना मुस्करायी और आंचल को सर पर खींचती हुई बोली ओह आप हैं। मैं तो डर गयी थी। हाँ आज वह बैंक के मैनेज़र साहब आपके साथ तशरीफ नहीं लाये?

मनोरञ्जन ने कहा–उन्हें आपके बगैर चैन नहीं और आपको उनके बगैर चैन नहीं। ये खड़े हैं आपके वे!

प्रदीप ने तब कमरे में कदम रखा। युवती ने बड़े अदब से झुककर सलाम करते हुए कहा नाचीज़ का सलाम कबूल हो।

प्रदीप ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया–नमस्ते!

बरसाती कोट और छाता एक ओर उतारकर दोनों गद्देपर खिसक कर बैठ गये। पन्ना अपनी जगह से उठी और पायल की झंकार करती हुई इनके सामने आकर बैठ गयी। पानदान को अपने पास खिसका कर वह बोली, बारिशकी वजह से आप लोगों को यहाँ तक पहुँचने में बड़ी मुसीबत उठानी पड़ी होगी।

मनोरञ्जनने चुटकी लेते हुए उत्तर दिया–मुसीबत, कैसी मुसीबत!! यह तो पानी ही बरस रहा था–अगर आग भी बरसती होती तब भी प्रदीप यहाँ आये बगैर चैन नहीं पाता।

पन्ना ने कनखियों से प्रदीप को देखा।

* * *

'कितने रुपये देगया प्रदीप?' मनोरंजन ने गद्दे पर बैठते हुए पन्ना से पूछा।

पन्ना ने उत्तर दिया–जो देगये, वे तुम्हारे सामने रखे हैं।

नोटों को गिनकर वह बोला–बस तीन सौ रुपये ही? कोई बात नहीं–धीरे-धीरे रास्ते पर आजायेगा। तुम जरा होशियार रहना।

'क्या मतलब?'

'यही कि कहीं उसकी मोहब्बत का शिकार न बन जाना। और हाँ, उसे यह तो मालूम नहीं होनें दिया न कि तुम मेरी स्त्री हो।'

'नहीं, मैंने कोई ऐसी बात उनके सामने नहीं की।

'ठीक किया। मुर्गी मोटी है। अच्छा तो तू जा, और मेरे लिये चाय बनाला।'

'मैं बगैर नहाये अभी किसी काम में भी हाथ नहीं लगाऊंगी। अभी तो मेरी नींद भी पूरी नही होने पायी है–मैं थोड़ी देर और सोऊंगी।'

'खैर मै कहीं होटल वगैरह में खा-पीलूँगा और यह कहकर मनोरंजन नोटों का बण्डल हाथमें उठाकर चलने के लिये खड़ा हुआ।

पन्नाने पूछा–क्या सभी रुपये ले जावोगे?

'और नहीं तो क्या?'

'तब मैं क्या खाऊंगी। मकानवाले का अभी किराया नहीं चुकाया है। वह आता ही होगा। महरी को भी उसकी तनख्वाह देनी है। दुकानवाला तकाजे पर तकाजे कर रहा है।'

'तो क्या तुम्हारे पास थोड़ा बहुत भी रुपया नहीं है?'

'आपका ख्याल है कि मैं झूठ बोल रही हूं!'

'सो बात नहीं है। अच्छा, मैं एक काम कर आऊं दस बजे के करीब आऊंगा, तब तुम्हें रुपया दे दूंगा।'

माफ कीजिये, मुझे रुपये इसी वक्त दे दीजिये। आप अबके गये कैसे और कब नजर आयेंगे सो मुझे मालूम है। रुपये आपके पास हैं हो जायेंगे आप जुआरियों में और एक दांव में सब कुछ खो देंगे।'

'मैं आजकल जुआ नहीं खेलता हूँ। मैं थोड़ी देर में आता हूँ।'

रास्ता रोककर पन्ना बोली–आपको सुबह ही सुबह यह झगड़ा करने की क्या आदत पड़ गयी है? आप रुपये दे दें अभी।

हारकर मनोरञ्जन ने पचहत्तर रुपये के नोट पन्ना के हाथ में रख दिये। पन्ना ने नोटों को फेंक दिया और बोली–यह क्या खैरात मिल रही है? मेरा दो सौ रुपये बगैर ज़रा सा भी काम नहीं चलेगा।

मनोरञ्जन ने मुँह फाड़ कर कहा–दो सौ!!!

–'क्यों! आपने तो इस तरह की शक्ल बनायी जैसे मैंने लाखों रुपयों की फरमाइश कर दी हो। लाइये दो सौ।'

मनोरञ्जन ने पचहत्तर रुपये और पन्ना के हाथ में रख दिये और बोला–'पचास फिर।' और ऐसा कहकर वहाँ से चल दिया।

* * *

मनोरमा को घर में आये साल भर से ज्यादा अरसा हो गया था, परन्तु प्रदीप ने उससे अभी तक खुल कर बातें नहीं कीं। एक दिन वह अपने पतिसे पूछ बैठी–आप शायद मुझसे नाराज़ हैं?

'नहीं तो।'

'मैं आपकी सेवा शायद अच्छी तरह से नहीं करती हूँ?'

'ऐसी बात नहीं है मनोरमा।'

'देखिये, आप आजकल खाना भी पेट भर कर नहीं खाते हैं। मैं कुछ बनाती ही खराब हूँ।'

'यह बात नहीं है मनोरमा। तुममें सब गुण हैं। पर क्या बतलाऊँ मेरी कुछ तबियत ही इन दिनों खराब सी रहने लग गयी है। सर दर्द करता रहता है।'

'तो लाइये मैं आपका सर दबा देती हूँ।'

'एक दिन की बात हो तो कहूँ, पर यह तो......!'

'तो इस से क्या? मैं आप की जन्म भर सेवा करूंगी।' और ऐसा कहकर मनोरमा प्रदीप का सर दबाने लगी। परन्तु प्रदीप चाहता था कि वह इस समय पन्ना को देख पाता तो अच्छा था।

उसी रात को मनोरञ्जन शराब के नशे में पन्ना के कोठे पर जा पहुँचा। पन्ना उस समय एक खास आदमी के साथ घुल-घुल कर बातें कर रही थी। पन्ना उससे कह रही थी–तो आज रातको ही चलना ठीक है। मेरे पास बीस हज़ार के नोट हैं–दोनोंके लिये जिन्दगी भर काफी होंगे। और ऐसा कहकर उसने बीस हजार के नोट अपने इस खास आदमीके सामने रख दिये।

मनोरञ्जनने कमरेके बाहरसे इन बातोंको सुन लिया। कमरेमें दाखिल होकर मनोरञ्जनने पूछा–कहाँ चलने की तैयारी है?

पन्ना इस सवालसे एक बार घबरासी गई, परन्तु तुरन्त ही सम्भल कर बोली–तुम्हें इससे?

'ओहहो! मुझे क्या इससे!! ये कौन हैं?'

'ये मेरे दोस्त हैं।'

'इन्हींके साथ जानेका इरादा किया है। क्यों ठीक है ना?

पन्ना चुप रही। मनोरञ्जन बोला–मत भूल पन्ना कि तू मेरी ब्याहता है। मुझे तेरे पर पूरा पूरा हक है।

पन्नाने उत्तर दिया–यह रोब किसी और को दिखाना। जो अपनी ब्याहता की इज़्ज़त–आबरू सरे बाज़ार बिकवाता फिरता है–उसका अपनी ब्याहता पर क्या हक़ हो सकता है यह सब दुनिया जानती है। यहां से निकल जाओ।

'बेअदब पन्ना! गुस्ताख़!! कमीनी!!!'

'मेरे टुकड़ों पर पलने वाले कुत्ते की यह मज़ाल की मेरी ही तौहीन करे। यह हिमाक़त!!'

(शेष पृष्ठ २४ पर)

सौंदर्य शालिनी

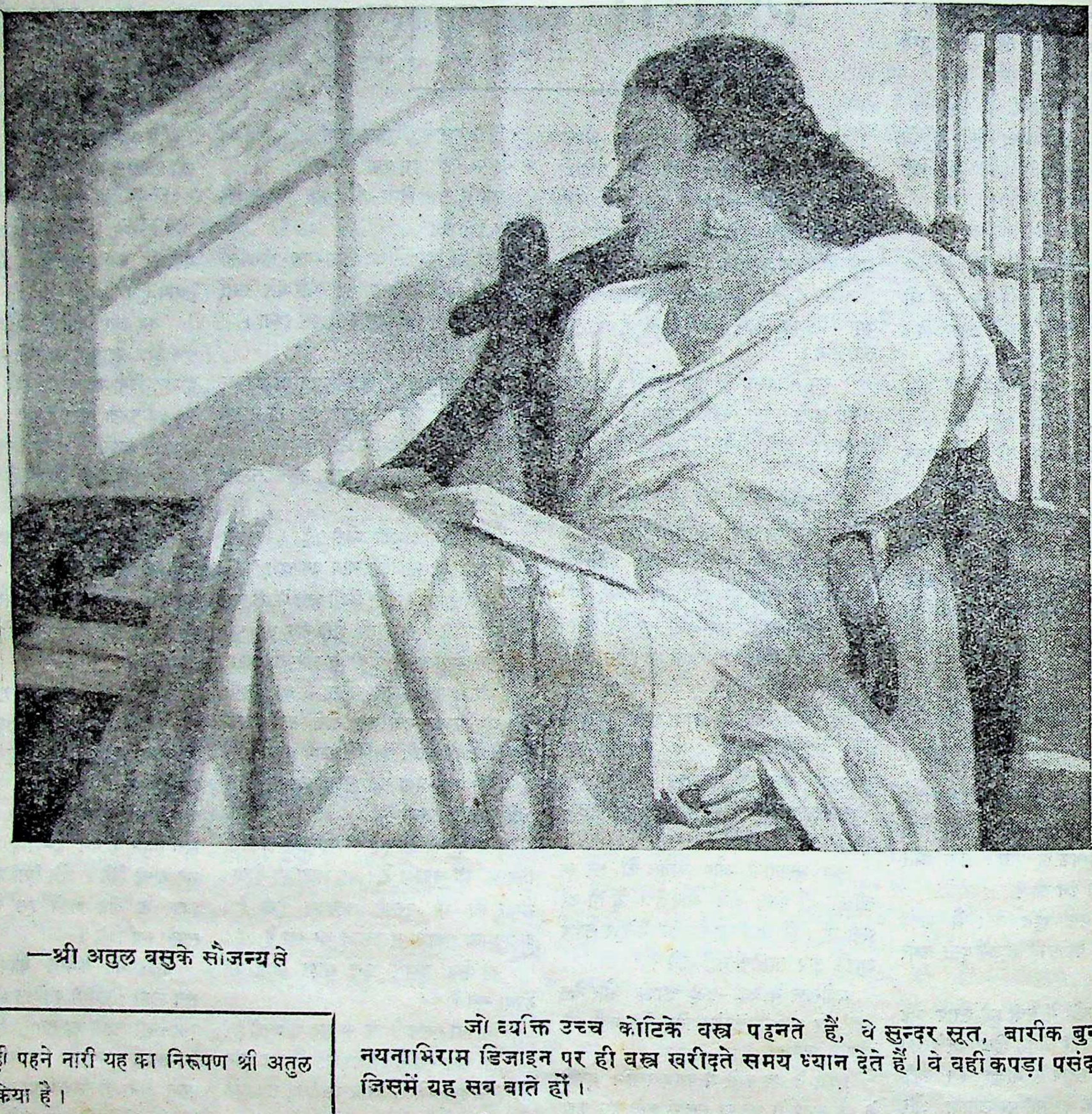

—श्री अतुल वसुके सौजन्यसे

साड़ी पहने नारी यह का निरूपण श्री अतुल वसुने किया है।

श्री वसु चित्र लेखन विद्या के विशेषज्ञ हैं और आपकी बड़ी ख्याति है। कलकत्ता विश्वविद्यालयसे छात्रवृत्ति प्राप्त कर आपने स्कूल आफ् पेण्टिंग, रायल एकाडेमी आफ आर्ट्स्, लंदनमें शिक्षा प्राप्त की थी। भारत सरकारने आपसे दिल्ली स्थित वायसराय तथा जंगी लाट के निवास स्थानोंमें दिवंगत सम्राटोंके चित्र बनवाये थे।

जो व्यक्ति उच्च कोटिके वस्त्र पहनते हैं, वे सुन्दर सूत, बारीक बुनाई और नयनाभिराम डिजाइन पर ही वस्त्र खरीदते समय ध्यान देते हैं। वे वही कपड़ा पसंद करते हैं, जिसमें यह सब बाते हों।

घटिया सूतसे बने वस्त्रमें पहले चाहे जो आकर्षण रहे, किन्तु बढ़िया सूतसे बने वस्त्रकी ही सुन्दरता हमेशा कायम रहती है।

हमारी काटन मिलमें साड़ियां, धोतियां और कमीजके कपड़े तैयार होते हैं, जो कि न केवल दूसरोंके चित्त पर प्रभाव डालते हैं, वरन् वस्त्र पहननेवालेका भी सौन्दर्य बढ़ाते हैं।

❀ केशोराम ❀

श्रेष्ठ सूती वस्त्र

बोलो तो....!

रस-सी, निर्मम जगती पर
जीवन की कान्ति कहाँ है ?
ज, कहो, चिरप्यासे जिस के
में वह चिर-शांति कहाँ है ? ॥ १ ॥

कोलाहलमय जीवन-पथ यह,
परिवर्तन इस के कन-कन में;
एक व्यथा के बाद दूसरी
हँसती आती है जीवन में। ॥ २ ॥

एक स्वप्न के बाद दूसरा
सदा यहाँ प्रस्तुत रहता है,
सागर यहाँ समस्याओं के,
प्रतिपल मन उनमें बहता है ! ॥ ३ ॥

हैं भविष्य की छिन्न उलझनें,
व्यथा कथाएँ, कठिन हार है,
मानव को सुख दीप गगन का
आशा की बस विमल धार है। ॥ ४ ॥

पर वह भी सूखी मिलती है
जब 'कल' आती है जीवन में,
सदा डूबता-उतराता मन
काल-उदधि के चल आँगन में। ॥ ५ ॥

अरमानों की राख यहाँ है,
अन्धकार है, नहीं सहारा
बढ़ते शान्ति शिखर वह चढ़ते
रो देता विश्वास हमारा ! ॥ ६ ॥

आशा, बस केवल आशा ही
में तो हम चक्कर खाते हैं,
तन-मन जर्जर, गिरते-पड़ते
फिर भी हम बढ़ते जाते हैं ! ॥ ७ ॥

दूर किनारा धूँधल-सा पट
चुम्बक सा उस में आकर्षण,
समय सिन्धु में जीवन तिनका,
उर पर है तृष्णा का बन्धन; ॥ ८ ॥

मृत्यु एक दिन तभी यहाँ पर
मन्द-मन्द गति से आती है।
बेसुध हम, वह जीवन-जाली
तोड़ मरोड़ चली जाती है ॥ ९ ॥

जीवन की अन्तिम घड़ियाँ हैं,
फिर भी शान्त न हो पाती है,
तृषित, दानवी देन, वासना
ों प्यासी ही रह जाती है ! ॥ १० ॥

क्यों कब तक यह लिये हमारे,
बोलो तो, जग के जीवन धन,
या, 'अनन्त तक,' भाग्य-रेख है,
'रोएगा जगती का कनकन ! ॥ ११ ॥

—रमेशचन्द्र माहेश्वरी 'प्रदीप'

यौवन भी एक पहेली है

●

नवनीत दीप मृदु आशाएँ
भोली तुतली सब भाषाएँ
अज्ञान-जन्य जिज्ञासाएँ
हो गईं अदृष्ट बचपन के संग १

सुन्दर स्वाभाविक चुलबुलाहट
आनन्द भोर और अल्हड़पन
संसार-ज्ञान के सुखद स्वप्न
हो गए विलीन बचपन संग ही २

कर चुका प्रथम सोपान पान
यौवन की आई मधु बेला
वारिधि की भाँति उमड़ रहा
नव उत्साह और जीवन फैला ३

पी यौवन-मदिरा का प्याला
आरम्भ किया नर्तन गायन
पल में मुकुलित होगए नेत्र
छाई मादकता और बेहोशी ४

विद्युत चमकी वसुधा कांपी
स्वागत को बादल गर्जे उठे
बासंती पवन बन गई विजन
सोए पक्षी गण जाग उठे ५

दिल में दावानल धधक उठी
चेतनता-शान्ति हो गए भंग
पशुता बर्बरता का पेख नृत्य
हो गया शिथिल प्रत्येक अंग ६

यौवन भी एक पहेली है
धू-धू और धाँय धाँय जलती
यह सुन्दर एक हवेली है
यौवन भी एक पहेली है ७

एस. माहेश्वरी

गीत

●

क्यों कर मिट्टी से प्यार न हो ?
मिट्टी ही की काया अपनी, काया का क्यों शृंगार न हो ?
माना-है क्षणभर का जीवन, पर अमृत पुत्र तेरा चेतन-
पाता है मूर्त्त जगत् से ही नव स्पन्दन, चिन्मय आराधन,
जिस सुमन अङ्क में रहा उसी पर सौरभ क्यों बलिहार न हो ?
क्यों कर मिट्टी से प्यार न हो ?

जो क्षणभंगुर, जो है नश्वर, जिसका पल में होता विनाश,
उसकी ही स्नेह-वर्त्तिका पर निर्भर तव प्राणों का प्रकाश,
तुम जिसे धुवाँ कहते वह तो उद्गार परम पावन मधुमय,
उस के ही छाया-पट पर नित खेला करते हैं सृजन प्रलय,
फिर जड़ से चेतन का क्यों कर मनुहार-प्यार अभिसार न हो ?
क्यों कर मिट्टी से प्यार न हो ?

'हरि'
सम्पादक 'लोकसेवक'

मध्य प्रांतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन

[पृष्ठ ७ का शेष]

अनुचित आंदोलन नहीं करना चाहते, न इसकी आवश्यकता समझते हैं, इसका मैं प्रांतीय सरकार को विश्वास दिलाता हूं। हमारी इस विषय में दिलचस्पी केवल यह है कि उनके साथ सम्मानपूर्ण और योग्य व्यवहार हो; उनकी ओर उचित लक्ष्य दिया जाये। समाचार-पत्रों के पास सदैव पूर्णतः अधिकृत जानकारी ही नहीं आती; कारण इसका उनके पास कोई प्रत्यक्ष जरिया नहीं है। तथापि समाचारों की सत्यता व प्रमाणबद्धता पर हर जिम्मेवार संपादक ध्यान देता है और बम्बई एग्रीमेंट की रुह से उसे इस कोटि के समाचार प्रकाशित करने का अधिकार है। इस अधिकार पर आक्रमण करना न केवल अनुचित है, बल्कि समझौते का प्रत्यक्ष भंग भी है। यदि प्रांतीय सरकार पत्रों के साथ सहयोगपूर्ण व्यवहार देखने की पक्षपाती है, तो उसके प्रस्तुत रुख में संशोधन आवश्यक है।

संगठन ही हमारा बल

मुश्किल यह है कि सरकार के पास सत्ता का बल है, जिसका वह आक्रमणकारी मनोवृत्ति के साथ, चाहे जब प्रयोग कर बैठती है। इसके विपरीत सरकार से समझौते पर अमल करवाने की कोई शक्ति हमारे हाथ में नहीं है। इस स्थिति में संगठन ही हमारा बल है। अ० भा० सम्पादक सम्मेलन के रूप में भारतीय प्रेस में सर्व प्रथम समाचार-पत्रों की संगठित शक्ति उदित हुई है और संगठनबद्ध प्रेस क्या कर सकता है, इसका उदाहरण भी उसने पेश किया है। हमारा कर्त्तव्य है कि इस संगठन को हम दृढ़ बनाएं औरं उसमें अधिक दिलचस्पी लें। इसी प्रकार, अ० भा० हिन्दी पत्रकार संघ की ओर भी मैं आपका ध्यान आकर्षित करता हूँ; जो हिन्दी प्रेस को एक सूत्र में आबद्ध करने की चेष्टा कर रहा है। इस संघ की अबतक की प्रगति और कार्य से मुझे सन्तोष नहीं है, पर इसमें हमारा अपना भी दोष है, यह स्मरण रखने की जरूरत है।

हिन्दी पत्रों की परम्परा

आइये, अब हम अपने गुण—दोषों पर भी तनिक दृष्टिपात कर भविष्य के लिए अपना पथ निर्धारित करें। हिन्दी पत्रों की यह उज्ज्वल परम्परा है कि वे सदैव राष्ट्रीयता के तेजस्वी दूत रहे हैं; राष्ट्रीय-संग्राम में उन्होंने सदा अपना प्रभावशाली योग दिया है और राष्ट्र-विरोधी शक्तियों को निर्भीकतापूर्वक चुनौती दे, राष्ट्रीय हित, राष्ट्रीय भावना व राष्ट्रीय प्रगति का पुरस्कार किया है। इस प्रांत के प्रमुख हिन्दी पत्र भी, इसी उज्ज्वल परम्परा से प्रेरित व दीक्षित हैं, यह हमारे लिए सन्तोष ही नहीं, अभिमान की भी बात है। अपने इस पहलू पर, इस प्रांत के अन्यान्य पत्रों की तुलना में निश्चय ही हम सगर्व सिर ऊंचाकर सकते हैं। तथापि, हिन्दी पत्रों की, अन्य दृष्टियों से, अन्य समाचार-पत्रों की तुलना में जो त्रुटियां हैं वे भी स्पष्ट हैं। हर जगह लोग यह प्रश्न कर उठते हैं कि हिन्दी पत्र बंगला या गुजराती पत्रों की भांति उन्नत क्यों नहीं हैं? हम स्वयं महसूस करते हैं कि इन पत्रों की तुलना में हिन्दी के पत्र उतने उन्नत नहीं हैं, यद्यपि भारतवर्ष में हिन्दी के लिए सबसे विशाल क्षेत्र है। हिन्दी पत्र गिनती में कम नहीं पर आंतरिक और बाह्य स्वरूप में वे निश्चय ही पीछे हैं। इसका कारण यह है कि यद्यपि राष्ट्रीय भावना की प्रखरता में हम सबसे अगली पंक्ति में होने का दावा कर सकते हैं, अपने रूप को सजाने व संवारने में हमने सामयिक कल्पनाओं को नहीं अपनाया है। बौद्धिक दृष्टि से हम कुछ पुराने ढर्रे के हैं, नवीनता व काल्पनिकता, साहस और सामयिकता हमारे मस्तिष्क में उतनी झकझोर नहीं पैदा करती। अक्सर, उत्तमता का स्थान हम सस्तेपन को दे देते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि हिन्दी पत्रों की आर्थिक भीत ऊंची नहीं उठने पाती और साधन हीनता हिन्दी पत्र तथा उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों की, फिर वे संचालक के पदपर हों या सम्पादक या उनके सहयोगी के रूपमें, आकांक्षा को सीमित कर देती है। पर अब तक का अनुभव, इस आत्म-वंचना से आंखें खोलने के लिये काफी होना चाहिये। हिन्दी के पत्र यदि अखिल भारतीय प्रेस में अपने क्षेत्र, संख्या, प्रभाव व परम्परा के अनुरूप अपने लिये अग्रिम व प्रमुख स्थान प्राप्त करना चाहते हैं; तो अपनी प्रस्तुत कल्पनाओं में हमें संशोधन करना होगा और हिन्दी के व्यापक हितों की दृष्टि से, जिन पर अन्ततोगत्वा हमारा अपना व्यक्तिगत हित भी सन्निहित हैं, अपने पत्रों का प्रकाशन व संचालन करना होगा।

पत्रकारिता—एक पवित्रतम व्यवसाय

वह समय आ चुका है, जब पत्रकारित्व एक ‘मिशन’ ही नहीं, बल्कि पवित्र व्यवसाय भीं बन चुका है। विदेशों में यह धंधा एक भव्य व्यवसाय का रूप धारण कर चुका है और भारत में भी व्यावसायिक दृष्टि से, यह एक आकर्षक वस्तु बनता जा रहा है। मैं मानता हूँ कि भावना प्रधान पत्रकारों के लिये पत्रकारिता सदैव प्रधान व इसका व्यावसायिक अङ्ग गौण स्वरूप ही रक्खेगा, तथापि, किसी भी क्षेत्र में काम करते हुए उसकी समयानुकूल प्रवृत्तियों व आवश्यताओं के प्रति जागरूक न रहना भी दूरदर्शिता नहीं कही जा सकती। अतः हिन्दी पत्रों के अभ्युदय के लिये यह नितांत आवश्यक है कि हम पत्रों के व्यावसायिक स्वरूप पर भी ध्यान दें और इसके बल से जो शक्ति प्राप्त हो, उसका पत्रों को और सर्वांग सुन्दर, विपुल व विविध अधिकारपूर्ण सामग्री से ससेवार, हर तरह आकर्षक, उन्नत तथा क्षमताशील बनाने में विनियोग करें।

व्यापक क्षेत्र

भारत में समाचार पत्रों के लिये अभी भी बहुत व्यापक क्षेत्र मौजूद है और यही बात हमारे अपने प्रांत के लिये भी कही जा सकती है। वह समय आ रहा है जब न केवल विविध विषयों के पत्रों की अधिक मांग होगी, बल्कि जब हर केन्द्र एक छोटे पर उत्तम पत्र का पोषण कर सकेगा। जनता में ज्यों-ज्यों शिक्षा का प्रचार व जागृति का संचार होगा, देश में अधिक पत्रों तथा पत्रकारों की जरूरत होगी। इस हालत में, आज हमारे बीच प्रतिस्पर्द्धा का तो प्रश्न ही नहीं है। प्रतिस्पर्द्धा के भ्रम से पत्रों का रूप व कलेवर सस्ता करने के बजाय, हमें सामूहिक उत्थान की दृष्टि से काम करना चाहिये। किसी भी क्षेत्र में एक घटक का अन्य घटकों पर प्रभाव पड़ता है, अतः आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी पत्रकार-कला को भव्य स्वरूप प्रदान करना। हम सब पत्रों के संचालन के पीछे अपना लक्ष्य बनायें—पत्रों का तथा उनके भीतर निष्ठापूर्वक काम करने वाले सहयोगियों का धरातल तथा जीवन-मान ऊंचा उठाने की ओर ध्यान दें। तभी सुयोग्य तथा प्रतिभाशाली लेखक तथा कलाकार इस क्षेत्र की आकर्षित होंगे और उच्च शिक्षित तथा बुद्धिमान पाठक भी हिन्दी पत्रों को विशेष आदर के साथ अपनायेंगे। हिन्दी पत्रों की उपयोगिता तथा आकर्षण की दृष्टि से हमें कुशल व सुयोग्य पत्रकारों की आवश्यकता है, जो पत्रों की बढ़ती जानेवाली जिम्मेवारियों का भार ग्रहण कर सकें। इस दृष्टि से, मैं आदरणीय भाई बनारसी दासजी चतुर्वेदी द्वारा प्रस्तुत पत्रकार विद्यालय की योजना का स्वागत करता हूं।

महान उत्तरदायित्व

आधुनिक नागरिक जीवन में मैं सबसे बड़ा उत्तरदायित्व पत्रकारों का मानता हूं। देश का वर्तमान व भविष्य, बहुत कुछ हम पत्रकारों के राष्ट्रीय जीवन में योग पर निर्भर होगा। राजनैतिक क्षेत्र के किसी कार्यकर्ता की अपेक्षा पत्रकार का उत्तरदायित्व अधिक है, कारण पत्रकार एक बार काले हरुफों में अपने विचार व्यक्त करने के बाद फिर उनके प्रभाव को वापस नहीं ले सकता। समाचार—पत्र का सम्पादक जनता का मार्ग—दर्शक है; वह चाहे तो जनता को अमृत या विष, कुछ भी पिला सकता है। बिना गंभीर विचार के दूषित नीति का अवलम्बन, किसी दूषित वस्तु का पुरस्कार या दूषित मनोवृत्ति को प्रोत्साहन जन—जीवन में विष का संचार करनेवाला कार्य है और योग्य वस्तु का योग्य ढंग से समर्थन व पुरस्कार जनता के लिये अमृत—पान। सार्वजनिक जीवन में सभी व्यक्ति, सभी विचार या प्रवृत्तियां सार्वजनिक हित की रक्षा या अभिवृद्धि में सहायक नहीं होतीं; जनता के सच्चे हितों की रक्षा व उसके सुरक्षित तथा व्यवस्थित मार्ग—क्रमण के लिये, उनमें किसका, किस ढंग से तथा किस सीमा तक समर्थन किया जाय, इस पर निरंतर पैनी दृष्टि रखना आदर्श पत्रकार का कर्त्तव्य है। पत्रकार जनता के नामपर और जनता के लिये कलम उठाता है; जन हित और राष्ट्र—कल्याण की दुहाई देता है। वह यदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष में जनता में विभेद, कटुता, अश्रद्धा तथा हीन रुचि को फैलाने सहायक हो तो इससे बढ़कर और सार्वजनिक पाप हो सकता है? समाचार सम्पादक जनता के मार्ग-प्रदर्शन के ना कार्य-क्षेत्र में आता है, वह यदि स्वयं सुसभ्य, जिम्मेवार, सुरुचिपूर्ण और सं सम्पन्न नागरिक का सुंदर चित्र अपने में स्थित न कर सके, तो और किससे आशा की जा सकती है और हम किस प्र अपने देश की जनता की प्रगति व उत्थान स्वप्न देख सकते हैं?

पत्रकारत्त्व और शिक्षकत्व, इन दो पेशों मैं पवित्रतम व्यवसाय मानता हूं। शिक्षक अपेक्षा भी पत्रकार मेरी दृष्टिमें समाज उत्तम सेवक है—इस कारण कि वह स समाज के पथ-प्रदर्शन का काम करता अपनी योग्यता, प्रतिभा, लगन और सेवा- के निदर्शन तथा उपयोग का पत्रकारत्व सुन्दर व सुरम्य स्थान है। आर्थिक दृष्टि से यह क्षेत्र अब उपयुक्त बनता जा है। अतः साहित्यिक व सार्वजनिक रुचि रखनेवाले युवकों के लिये भी में शिक्षा-क्षेत्र की अपेक्षा पत्र—क्षेत्र में अधिक उपयुक्त व उपयोगी है। अतः मैं उन्हें इस क्षेत्र में आने के आदरपूर्वक निमंत्रित करता हूं।

तो बन्धुओ, आइये, हम जिस महान से कलम का पेशा अखत्यार किये हैं उसे भव्य, अधिक क्षमतापूर्ण; अधिक कर्तव्य अधिक प्रभावशाली बनायें; इस देश की धीन और पिछुडी जनता के सच्चे उ सहायक हों और उसे मार्ग की विपत्ति बाधाओं तथा मरीचिकाओं से बचाते सुन्दर भविष्य की ओर अग्रसर करें— ऐसे भविष्य की ओर, जो हमारे अती समान ही महान, हमारे आदर्श की भांति उज्ज्वल और हमारे देश की परम्परा की ही प्रकाशमान हो।

आभार प्रदर्शन

मेरे पुत्र चि. गणेशदास लड्ढा बी. एस. (टेक) एवं मेरे भतीजे चि. लक्ष्मीनार लड्ढा के विवाह ता. ६ मई १९४४ को श भवन अजमेर में सानन्द एवं सादगीपूर्ण स हुये। इस शुभ अवसर पर जिन महानुभावों शुभाशीर्वाद एवं सन्देश भेजकर अपने का परिचय दिया है उन सबके प्रति व्य गत रूपसे आभार प्रकट करना कठिन होने मैं इस पत्रद्वारा उन सब के प्रति आभार प्र करता हूं। —श्रीकृष्णदास लड्ढा

अमरावती

विटैमिनों की खोज

(पृष्ठ ६ का शेष)

ने १९११ में यह भी देखा कि अगर चा की भूसी को १३०° तक गरम किया ज तो इसका लाभकर अंश नष्ट हो जाता पानी १००° पर उबलता है और इस ताप पर गरम किये जाने के बाद भी चावल भूसी खराब नहीं होती। तेल या घी में को जब तला जाता है तो तापक्रम २०० २५०° होता है, और उस तापक्रम पर के सब उपयोगी विटैमिन नष्ट होजाते हैं।

कौन क्या कहता है ?

युद्धके बाद अंग्रेज भारत से चल दें

भारत की समस्याके समाधानके लिये ब्रिटेनके सभी हल्कोंमें भारी अधीरता जाहिर की जा रही है। कहा जा रहा है कि किसी तरह भी भारतीय गतिरोधका हल करना चाहिये। पार्लमैन्टके सदस्य मि० मार्टिनने तो यहाँ तक कहा है:—

अंग्रेजोंके लिये भारतमें अब केवल एक ही कार्य करना बाकी रहा है, और वह है युद्धके बाद भारतसे चल देना तथा भारतीयोंके हाथमें भविष्यका निर्णय पूरी तरहसे सौंप देना। यदि ऐसा नहीं किया जायेगा तो ब्रिटेन को भारी क्षति पहुंचेगी और भारतसे ही नहीं बल्कि सारे संसारसे हमारा नैतिक प्रभाव विलीन हो जायेगा। फिर भी कंजर्वेटिव पार्टी अभी तक भारत के मामले में कोई दिलचस्पी लेती हुई नहीं दिखायी देती। वह अभी तक अपने परम्परागत रूढ़िवाद पर टिकी हुई साम्राज्यवादी मनोवृत्तिका परिचय दे रही है। प्रधान मंत्री मि० चर्चिल और भारतमंत्री मि० एमरी अपनी हठधर्मी पर कायम हैं, और उन पर भावनाओं, धारणाओं और व्यापक आग्रहों का अभी तक कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

साम्राज्यके लिये खतरनाक !

दक्षिणी अफ्रीकाके पैगिंग ऐक्टकी आलोचना करते हुए मैनचैस्टर गार्जियनने अपने अग्रलेख में लिखा है:—

डरबनस्थित भारतीयोंके कितने ही अधिकारोंको पैंगिंगऐक्ट छीनता है। यह केवल दक्षिणी अफ्रीकाके लिये ही नहीं वरन समस्त साम्राज्यके लिये खतरनाक और अवांछनीय है। जिस साम्राज्य में मानवसमाजके साधारण स्वत्व की रक्षा नहीं, उसमें सभ्यता का सर्वथा अभाव है, और वह साम्राज्य उस रोमन साम्राज्यकी तरह है जो भेदभाव रखते हुए विशिष्ट जनता की सरकार बनाना चाहता था।

यह बात भारत और यहाँ स्पष्ट है। दक्षिणी अफ्रीका इस बातको महसूस नहीं कर रहा है, बल्कि भारतीयोंके प्रवेशसे आतंकित हो रहा है। किन्तु इसका बड़ा सीधासा इलाज था कि भारतीयोंको दक्षिणी अफ्रीकाका बनालिया जाता। तब परिणामतः कालान्तरमें भारतीय अपनी भाषा भी भूल जाते और दक्षिणी अफ्रीकाको अपना देश समझने लगते। वे वहीं की आदतें और रहन-सहन की पद्धतिको स्वीकार कर लेते।

गतिरोध का इलाज

दिल्ली प्रान्तीय जमाअत उल्मा कान्फ्रैन्स के अवसर पर अध्यक्षपद से भाषण देते हुए मौलाना फखरुद्दीन अहमद ने कहा:—

देश के भीषण राजनैतिक गतिरोध को दूर करने के लिये केन्द्र में एक संयुक्त राष्ट्रीय सरकार की स्थापना होनी चाहिये। बिना इसके देश का उद्धार सम्भव नहीं। ब्रिटिश सरकार हिन्दू-मुस्लिम सवाल खड़ा करके भारत को आजादी न देने का सिर्फ एक बहाना करती रही है। हिन्दू-मुस्लिम समझौता अच्छी चीज़ है, पर केवल उसी के लिये आजादी को नहीं टाला जा सकता है। हमारा प्रथम कर्तव्य हिन्द को आजाद कराना होना चाहिये। पाकिस्तान जैसी माँगों से हिन्द कभी आज़ाद नहीं होगा, और न तरक्की कर सकेगा। ऐसी हालत में 'पाकिस्तान' का नारा बुलन्द करके हम मुल्क का कुछ भी भला नहीं करेंगे। हमें एक होकर के अपने मक़सद की ओर बढ़ना चाहिये।

भारतीयों से भेदभाव

'रॉयल सैन्ट्रल एशियन जर्नल' में स्याम के भूतपूर्व मिनिस्टर सर जोसेफ क्रोसबी लिखते हैं कि दक्षिण पूर्वी एशिया में ही नहीं वरन पूर्व के सभी स्थानों में भारत की स्थिति महत्व पूर्ण है। ईरान में रूस द्वारा और अरब में अमेरिका द्वारा जो कार्यवाहियाँ हो रही हैं, उनसे यह जरूरी है कि ब्रिटेन भी भारत के साथ अपनी नीति में परिवर्तन करे। अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों के साथ काले होने के कारण बहुत ही दुर्व्यवहार किया जाता रहा है। वहाँ की श्वेत जाति ने परिस्थिति और भी बिगाड़ दी है। यदि रंगभेद को नहीं मिटाया जायेगा तो भारतीयों का असन्तोष बढ़ता जायेगा, और भारत ब्रिटिश कॉमनवैल्थ का सदस्य रह सकेगा, यह भी सन्दिग्ध ही है।

'कुचले हुए भाव मर नहीं सकते'

इन्दोर राज्य नागरिक स्वाधीनता सम्मेलनके अध्यक्षपदसे भाषण देते हुए 'बाम्बे क्रानिकल' संपादक मि. सैय्यद अबदुल्ला बरेलवीने कहा वर्तमान स्थितिमें मैं यह समझता हूं कि जितना भी अधिक नागरिक अधिकारोंको सुरक्षित रखना संभव हो उतनाही देशके लिए उपयोगी है, क्योंकि जिस प्रकार मनुष्यको सांस लेना महत्वपूर्ण और आवश्यक है उसी प्रकार एक राष्ट्रके लिए स्वाधीनता आवश्यक और महत्वपूर्ण है। एकबार पं. जवाहरलाल नेहरूने अपने एक भाषणमें कहा था कि एक राष्ट्र की प्रगति और विकासके लिए नागरिक स्वाधीनता परमावश्यक है। यह सभ्यतापूर्ण ध्येयकी प्राप्ति है जिसके संबंधमें कुछ लोग मतभेद करते हैं। किसी देशके लोकमतको जबतब कुचल देना और अपने विचार भी प्रकट न करने देना, क्योंकि उसे हम नापसंद करते हैं यह वैसीही बात हुई जैसे दुश्मनकी खोपड़ी तोड़ना क्योंकि हम उसे नापसंद करते हैं। खोपड़ी तोड़ी जासकती है, मनुष्य मर सकता है लेकिन कुचले हुए भावोंको कोई मार नहीं सकता। जितना ही अधिक दमन और बलप्रयोग किया जायगा उतना ही अधिक प्रजामें बल आयेगा। मेरा मत है कि देशी राज्यों और ब्रिटिश भारत के बीच बना बटी मतभेद है। ब्रिटिश भारत और देशी राज्य दोनोंके लिए भारत की स्वाधीनता एक ही अर्थ रखती है। ब्रिटिश भारत इसके लिए प्रयत्नशील है, अतः एक स्वाधीनताप्रिय भारतीय के नाते मेरा यह परम कर्तव्य है कि मैं यथासंभव देशी राज्यों की प्रजाको स्वाधीनता प्राप्त करनेमें पूर्ण सहायता करूँ।

मि. जिन्नासे आशा नहीं

अखिल भारतीय मुस्लिम मजलिसके जनरल सेक्रेटरी खां बहादुर शेखमोहम्मद जान एम.एल.सी ने अपने एक वक्तव्यमें कहा है:—मि. जिन्नाके नाम लिखा गया महात्मा गांधीका पत्र प्रकाशित हो गया और अल्लामामशरीकी की सारगर्भित अपील के बावजूद भी लीगके नेता टससे मस नहीं हुए। अतः यदि महात्मागांधी अब भी मि. जिन्नासे मिलनेकी कोशिश करें तो भी उससे कोई लाभ होने की आशा नहीं है। व्यक्तियों, सम्प्रदायों अथवा राज्योंके बीच समझौते और एकताका तबतक कोई तय नहीं हैं जबतक कि वे लक्ष्यसाम्य न अनुभव करें—जब तक कि एक संयुक्त मोर्चा बनाने का दोनोंने दृढ़ संकल्प न कर लिया है। दुर्भाग्यवश मि० जिन्ना और उनके दोस्तों में उक्त बातकी कमी है। यही कारण है कि जिन्ना साहब गांधीजी के निमंत्रण को स्वीकार न कर सकेंगे। गांधीजीके लिए अब यही मार्ग रह जाता है कि अपनी बातें वे सीधे मुस्लिम जनता के सामने रख दें और उसे अपने पक्षमें कर लें। जब मि. जिन्ना देश की मौजूदा दुरवस्था की वेदना गांधीजी की तुलनामें शतांश भी नहीं अनुभव करते, तो उनसे कोई आशा नहीं की जासकती।

अमेरिका के माल को अच्छी खपत है

अमेरिकन सप्लाई और एक्सपोर्टर्स एसोसियेशन (न्यूयार्क) के कार्यालय में भाषण देते हुए मि. एस. एम. अहमद ने कहा: भारत अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति के साथ आर्थिक विकास के लिए भी उत्सुक है। पिछले दिनों में भारत में काफी उद्योग विकास हुआ है और उन से युद्ध प्रयास में काफी मदद मिली है। उस का उद्योग विकास अब पहले से दुगुना है। ठीक अमेरिका की ही भाँति भारत भी मानवसंहार से बचा हुआ है अर्थात उस की जनता उतनी नहीं मारी गई जितनी अन्य देशों की। भारत में जिन लोगों के पास अपार पूंजी है, वे उसे नये उद्योगों में लगायेंगे: अमेरिका के लिए भारतीय बाजारों में स्थान देने को भारत की व्यापारिक संस्थाएं तैयार है।

राजनीतिक प्रगति के बारेमें आपने कहा भारत ने अपने बाजारों में अंग्रेजों के प्रभुत्व को शिथिल करने के लिए काफी प्रयत्न किये हैं साथही भारतीयों की भावना ब्रिटिश उद्योग धंधे तथा अफसरों के बीच बुरी होती जा रही है जिससे कितने पुराने भारतीय व्यापारिक संबंध टूट गये हैं। अतः अमेरिका का जो माल भारत जायेगा, उसकी भारतीय बाजारोंमें काफी पूछ होगी। इस तरह से भारतीय बाजारोंमें अमेरिका के घुसने का अच्छा मौका है, ऐसा मौका पहले कभी हाथ नहीं लगा।

पत्रकार विद्यालयकी स्थापना हो।

श्री कन्हैयालालजी वैद्य लिखते हैं:—हिन्दी जगत और हिन्दी पत्रकार प्रेमियों की एक स्वरसे यह मांग चली आ रही है कि हिन्दी पत्रकार विद्यालयकी स्थापना की जाय। श्री बनारसी दासजी चतुर्वेदी और श्री सम्पूर्णानन्दजी ने इसकी आवश्यकता पर कुछ महिने पूर्व पत्रों में चर्चा की थी। अब सचित्र दरबार के सम्पादक भाई श्री सम्पतलालजी पुरोहित ने इस विषय में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं:—"इसी समय हम हिन्दी साहित्य एवं देश प्रेमियों के समक्ष यह भी सुझाव रखना चाहते हैं कि गुप्तजी के स्मारक के निमित्त एक ऐसा आयोजन हो, जो देश के लिए एक अत्यन्त नवीन उपयोगी देन हो। चूंकि गुप्तजी का जीवन पत्रकार के नाते बहुत कुछ बीता है अतः यदि उनकी स्मृति में "पत्रकार शिक्षालय" का स्थापना हो तो देशके एक बहुत बड़े अभाव की पूर्ति होने की आशा की जा सके।"

इस प्रश्न पर श्री शिवप्रसादजी गुप्त की स्थायी यादगार के लिए हिन्दी प्रेमी जनता, 'आज' और काशी विद्यापीठ के संचालकों और अखिल भारतीय पत्रकार सम्मेलन को ध्यान देकर पत्रकार विद्यालय की स्थापना की योजना करना चाहिये।

अनैक्य और भारत की आजादी

मौन्टरियल में हुई मजूर कान्फ्रैंस में भारतीय प्रतिनिधि मि० आफताब अली, जो कि भारतीय मजदूर संघ के प्रेजीडेन्ट हैं, ने भारतीय स्वतंत्रता के सम्बन्ध में निम्न आशय का वक्तव्य दिया:—

भारतीय स्वतंत्रता का प्रश्न अब राजनीतिक नहीं, बल्कि ४० करोड़ भूखे भारतीयों का आर्थिक प्रश्न है। आपने लार्ड हैलिफैक्स के उस वक्तव्य को चुनौती दी जिसमें उन्होंने कहा था कि ब्रिटिश सरकार भारतको आजाद करने के लिये इच्छुक है, बशर्ते भारत के हिन्दु-मुसलमान तथा अन्यान्य दलवाले एक मत हों। मि० अलीने कहा, राजनीतिक अनैक्यता के कारण भारत की आजादी रोक रखना ब्रिटन की गलती है। कारण पूरी राजनीतिक एकता कभी प्राप्त नहीं हो सकती। लोकतंत्रवादी राष्ट्रों में भी ऐसी एकता नहीं पायी जाती है। अमेरिका में भी इसका अभाव है। चाहे जो कुछ भी हो बहुमत के आगे ब्रिटिश सरकार और भारत के आर्थिक नेताओं को किसी दिन झुकना ही पड़ेगा।

राजनीतिक तथा धार्मिक मतभेद होते हुए भी आज भारत की समस्त जनता अपने देश को आजाद देखने के लिये उत्सुक है।

यदि भारत में कभी गृहयुद्ध होगा, तो वह हिन्दू-मुसल्मानों के बीच अथवा किसी धार्मिक या राजनीतिक दलों के बीच न होगा, बल्कि यह उनके बीच होगा, जिन के पास सत्ता या धन है, और जिनके पास कुछ नहीं है। अन्तमें आपने एक चेतावनी दी है, "भूखा, गुलाम, और दरिद्र भारत सदा तब तक विश्वशान्तिके लिये खतरा बना रहेगा, जब तक संसार इस बातको स्वीकार न कर लेगा कि भारत अपने राजनीतिक भाग्यका निपटारा आप करनेका हक रखता है।

कमज़ोर, और कच्चे कागज़ों के पेकिंग से होनेवाली

अपने व्यवसायकी हानिको बचाइये

हमारा मज़बूत, चीमड़ और सुन्दर

गैंडा मार्का

बैम्बू पल्प का बना हुआ क्राफ्ट पेपर

आपकी मुसीबतों को दूर कर देगा

यह उच्चकोटि का पेकिंग कागज़ है

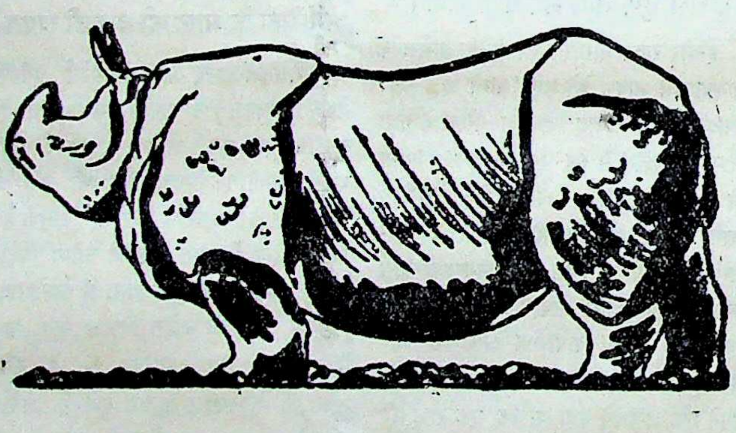

भारतीय बाजारमें आज इसका प्रतिस्पर्धी नहीं

हमारी मिल वाटरप्रूफ कागज (Water Proof Craft Paper) तथा हरेक किस्मका बोर्ड भी तैयार करती है ।

एक बार इस कागज़ और बोर्ड का व्यवहार करनेपर
आप दूसरे पेकिंग कागज़ और बोर्ड का नाम न लेंगे

ओरिएण्ट पेपर मिल्स लिमिटेड

८, रायल ऐक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

इंदौर में धारासभाका चुनाव

इंदौर सरकारने ५ वर्ष पूर्व घोषित सुधारोंके अनुसार राज्यकी धारा सभाका आम चुनाव करनेका निश्चय किया है। वर्तमान धारासभा सन १९३६ में चुनी गई थी, जिसका अवधि सन १९३९ में समाप्त हो गई। तब से उसका जीवन ४ बार बढ़ाया जा चुका है। सरकारने एक विज्ञप्ति में कहा है कि जिन मतदाताओंके नाम सूची में न हों वे २२ मई तक अपने नाम दर्ज करा लें। वर्तमान सूची जो १९४२ में बनी थी अब बदल गई है। इस कार्य के लिए दो मास का समय मांगा गया है और राज्य के सब चुनाव कार्यालयोंमें सूचियां रखने की प्रार्थना की गयी है। प्रजा-मंडलके कार्यकर्ता चुनाव लड़नेके पक्षमें हैं। राज्यने आम चुनावों की घोषणा कर देनेपर भी सभाबन्दी की आज्ञा अभी वापिस नहीं ली है।

मध्यभारत में अन्न की कमी

मध्यभारत देशी राज्य लोकपरिषद की स्थायी समिति के सदस्य श्री कन्हैयालाल वैद्य ने मध्य-भारतीय देशी राज्योंकी अन्न स्थितिके सम्बन्ध में लिखा है:–१९४२ में मध्यभारत के झाबुआ राज्य में अन्न के अभाव में सड़ा अन्न और जंगली पेड़ों के पत्ते खाने के कारण १०००० भील मर गये। जावरा और सुठालिया में भूखों की भीड़ पर राज्य और व्यापारियों नें गोलियां और मंदसौर में पुलिस नें लाठियां चलायीं। दूसरे राज्यों में भी ऐसी ही अनेक घटनाए हुईं। देहातोंमें लोग अन्न की पुकार मचा रहे हैं। इस वर्ष गेहूंकी फसल कम हुई है और ओलों से भी हानि हुई है। इस स्थिति का कारण चोरी से माल वाहर भेजना और अन्न का संग्रह करना है। यदि वर्तमान अवस्था में सुधार न हुआ तो अन्न की स्थिति और भी उग्र रूप धारण कर लेगी।

नागरिक स्वाधीनता परिषद

इंदोर राज्य स्वाधीनता परिषद श्री सैयद अब्दुल्ला ब्रेल्वी की अध्यक्षता में २८, २९ और ३० मई को हुई। उसी समय मध्य भारत रियासती पत्रकार सम्मेलन भी स्वराज्य सम्पादक श्री आगरकर जी की अध्यक्षता में हुआ।

राजस्थानी साहित्य सम्मेलन

जोधपुर। राजस्थानी साहित्य सम्मेलन के प्रधान मंत्री श्री. सुमनेशजी स्वास्थ्य ठीक न होनेसे चिकित्सा के लिए यहां आ गए हैं। उनके यहां रहने तक राजस्थानी साहित्य सम्मेलन का कार्यालय यहां ही रहेगा।

श्री शाकिरअली जेल से रिहा

भोपाल। भोपाल राज्य प्रजामंडल के भूत-पूर्व प्रधान तथा मध्यभारतीय लोक परिषद की कार्यकारिणी के सदस्य श्री. शाकिरअली खां को जेल से मुक्त कर दिया गया है। उन्हें अगस्त १९४२ में कांग्रेस आन्दोलन के सिलसिलेमें एक वर्ष की सख्त कैद और १०० रु. जुर्माने की सजा दी गयी थी.। उनकी कैद की सजा समाप्त होने पर उनका जुर्माना उनके मित्रोंने अदा कर दिया। जनताने जेलपर उनका स्वागत किया और प्रजामंडल के कार्यालय पर भी उन्हें देखने के लिए बहुत भीड़ जमा थी।

हमारा राजस्थान
ART CORNER

(मारवाड़ी पब्लिसिटी ब्यूरो नयी दिल्ली द्वारा)

अल्वर में मिल

अल्वर में स्टेशन से आध मील की दूरी पर रेल व जयपुर रोड के किनारे पर खुले खेतों में लगाये गये शामियानें में १८ मई की शाम के ७ बजे राज्य के दीवान सर सिरेमल जी बापना ने तेजप्रताप मिल का शिलान्यास बडे समारोह के साथ किया। सुंदर सजाये हुए पंडाल में अल्वर के नागरिक, व्यापारी, अफसर और दिल्ली तथा जयपुर से आये हुए सेठ, साहूकार, व्यापारी तथा पत्रकार बहुत वड़ी संख्या में उपस्थित थे। श्री सत्यदेव विद्यालंकार सम्पादक विश्वमित्र नंई दिल्ली ने प्रारम्भिक भाषण में मिल के संस्थापकों सेठ सोहनलाल जी मुरारका और सेठ हनुमानदास जी सोडानी का परिचय दिया और अलवर के उद्योगीकरण के लिए हर्ष प्रकट करते हुए उसकी राजनीतिक प्रगति के लिए भी आशा प्रकट की।

सेठ सोहनलाजी मुरारका ने दीवान सर सिरेमलजी बापना को मानपत्र भेंट करते हुए बताया कि अन्य राज्यों की तुलना में अलवर का शासन उद्योगींकरण के सम्बन्ध में कितना प्रगतिशील है और महाराज भी इसमें कितनी अधिक दिलचस्पी लेते हैं। मिल में ४०० करघे और २५ हजार तकुए लगाने की घोषणा करते हुए आपने यह भी घोषणा की कि शेयर की कीमत कम रखते हुए कुछ हिस्सा अल्वर वालों के लिए भी सुरक्षित रखा जायेगा। राज्य की ओर से दिए गए १५ वर्ष के एकाधिकार की बात कह कर आपने अन्य सब सहूलियतों के लिए भी महाराज, दीवान तथा अन्य अधिकारियों का आभार माना और भविष्य में उनके सहयोग पर पूरा भरोसा प्रकट किया।

सर सिरेमलजी बापना ने अपने छोटे से भाषण में मिल के भविष्य को उज्ज्वल बताते हुए सेठ मुरारका और सेठ सोडानी के सत्साहस की सराहना की और शिलान्यास की विधि सम्पन्न की। अन्त में मिठाई, फल, चाय और शर्बत आदि से सब उपस्थित सज्जनों का आतिथ्य सत्कार किया गया। हर्ष उत्साह और प्रसन्नताके वातावरणमें सारी कार्यवाही सम्पन्न हुई।

गांधीजीके आरोग्यके लिए प्रार्थना

जयपुर प्रजामंडल की शहर कमेटीके तत्वावधान में एक सभा में महात्मा गांधीके आरोग्य के लिये प्रार्थना की गई। इसमें श्री देवींशंकरजी तिवाडी, शिवविहारी तिवाडी, हीरालालजी शास्त्री और श्री मनोहरलाल सभाध्यक्षके भाषण हुए जिन में गांधीजी की रिहाई पर हर्ष प्रकट किया गया।

इंदौर अनाज परिषद:

श्री. जड़ियाजी का वक्तव्य

इंदोर के जनसेवक श्री. हजारीलाल जी जडिया ने इंदोर की अन्न समस्या और अनाज परिषद के सम्बन्ध में एक वक्तव्य देते हुए परिषद के संयोजक श्री. रामेश्वरदयालजी तोतला के पत्रोंमें प्रकाशित किए गए वक्तव्यको भ्रमपूर्ण वताया है और कहा है कि अनाज के सम्बन्ध में दिये गये सरकार के वचन के बारे में अपना संशोधन लेकर जब मैं विषय विवेचिनी समिति में पहुंचा तो मैंने प्रस्ताव के प्रस्तावक श्री. खांडे जी को बहुत कहा कि यदि वे उसे स्वीकार कर लें तो मैं उसे पेश करूं, लेकिन उन्होंने स्पष्ट हां या ना में उत्तर न देकर टालने की चेष्टा की। मुझे व्यक्तिगत स्पर्द्धा के कारण अपनी बात की अवहेलना होती देख कर अत्यन्त दुःख हुआ। मैं जनता को कहना चाहता हूं कि मैंने अनाज समस्या और सभाबन्दी के बारे में जो वचन दिया है उसे पूरा करूंगा। मैंने अनाज समस्या के बारे में शीघ्र ही एक सम्मेलन करने का निश्चय किया है। इसमें यह विचार किया जायगा कि इंदोर सरकार ने ८ अगस्त १९४२ को प्रजा के प्रति जो वादे किये थे उनका पालन हुआ या नहीं। यदि इससे यह प्रकट हो कि उन वादों का पालन नहीं हुआ है तो भविष्य के लिए परिषद में कार्यक्रम भी बनाया जायगा।

वीकानेर प्रजापरिषद

ज्ञात हुआ है कि बीकानेर राज्य प्रजापरिषद के प्रधान बाबू रघुबरदयालजी महाराजा साहब और प्रधान मंत्री से राज्यकी वर्तमान राजनैतिक स्थिति और अन्य महत्त्वपूर्ण प्रश्नोंके सम्बन्ध में बातचीत करनेके लिए पत्र-व्यवहार कर रहे हैं। जल्दी ही दोनों पक्षोंके बीच मुलाकात होने की सम्भावना है।

बीकानेर म्युनिसिपाल्टीने एक प्रस्ताव पास करके महाराजा से प्रार्थना की है कि बिजली का महकमा जनता के लिए पानी का उचित प्रबन्ध नहीं कर सका है इस लिये यह कार्य महकमेके हाथ से लेकर एक जल व्यवस्थापक बोर्ड बना कर उसके सुपुर्द कर दिया जाय जिसमें गैर सरकारी सदस्यों का बहुमत हो।

भरतपुर राज्य ऋण मुक्त

भरतपुर राज्य ने १२ लाख की अन्तिम किस्त देकर मोरवी राज्य का समस्त ऋण चुका दिया है। इसकी खुशी में राज्य भर में एक दिन की छुट्टी रही। यह ऋण स्व. महाराज किशनसिंहजीके समयमें ८० लाख रुपए था। उनके निर्वासन का कारण यह भी था।

राजस्थान हिन्दी साहित्य संम्मेलन

उदयपुर। राजस्थान हिन्दी साहित्य संम्मेलनके प्रधान मंत्री श्री जनार्दन रायने एक वक्तव्यमें कहा है:—राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन का विशेष अधिवेशन अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलन के ३२ वें अधिवेशन के साथ साथ जयपुरमें करनेका निश्चय किया गया था और उसके अनुसार पं० लक्ष्मीलाल जी जोशी कुलपति हिन्दी विद्यापीठ उसके संयोजक नियुक्त किए गए थे, किन्तु अ० भा० हिन्दी साहित्य सम्मेलनका अधिवेशन सितम्बर के लिए स्थगित हो गया। अब राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलनको अजमेरसे निमंत्रण मिला है। संयुक्त मंत्री पं० दुर्गाशंकर अजमेर जाकर इस संम्बन्धमें आवश्यक बातें और व्यवस्था कर आये हैं। विशेष अधिवेशन ४।५ और ६ जूनको होगा। राजस्थानके समस्त साहित्यिक और पत्रकार अधिकसे अधिक संख्यामें अजमेर पहुंच कर सम्मेलनके पुनर्गठन और वैधानिक प्रगतिके कार्यमें सहयोग दें। मेरे कार्य व्यस्त रहनेके कारण प्रधान कार्यालय का कार्य श्री दुर्गाशंकरजी दुर्गावतने संभाल लिया है और राजस्थान साहित्य का सम्पादन श्री मोतीलालजी मनोरिया और उदयसिंहजी। भटनागर एम. ए. ने। राजस्थान हिंन्दी साहित्य सम्मेलन सम्बन्धी सब पत्रव्यवहार श्री दुर्गाशंकर जी दुर्गावत सं. मंत्री राजस्थान हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नाम से किया जाय। दुर्भाग्य है कि विधानके अनुसार दूसरे अधिवेशनसे पूर्व मेरा त्यागपत्र स्वीकार नहीं हो सकता।

जयपुर राज्य प्रजामंडळ

जयपुर राज्य प्रजामंडळ की सभानेत्री श्रीमती जानकीदेवी बजाज ने अगले वर्षके लिए नई कार्यसमिति का संगठन निम्न प्रकार किया है:– उपाध्यक्ष श्री हरिश्चन्द्रजी शर्मा, प्रधानमंत्री श्री हीरालालजी शास्त्री, उपमंत्री श्री मातादीनजी मंगेरिया और श्री पूर्णचन्द्रजी जैन, कोषाध्यक्ष श्री शिवबिहारीजी तिवाडी। सदस्य, श्री देवीशंकरजी तिवाड़ी, कपूरचंदजी पाटणी, स० हरलालसिंहजी, सम्पत कुमार शर्माजी श्री टीकारामजी पालीवाल, श्री देशपांडेजी, श्री दौलतरामजी भंडारी, श्री रामकरणजी शर्मा और श्री विजयचंद जैन हैं। अन्तिम ४ सदस्य आजाद मोर्चे के हैं।

साक्षरता प्रसार

बीकानेर। बीकानेर हिन्दी साहित्य सम्मेलन का सरदार शहर स्थित कार्यालय बहुत ही सराहनीय कार्य कर रहा है। इसके साक्षरता प्रचार विभाग की ओर से उसके मंत्री श्री गौरीशंकरजी ने एक अपील प्रकाशित कर के राज्य के शिक्षा प्रेमी युवकों विशेषतः विद्यार्थियों से अनुरोध किया है कि वे छुट्टी के दिनों का सदुपयोग राज्य में साक्षरता का प्रचार करने, शिक्षा का प्रचार करने, और समाजसुधार के आन्दोलन को बलशाली बनाने के लिए करें। अविवाहित कन्याओं और युवकों में अशिक्षितों के साथ विवाह न करने, उच्च शिक्षा प्राप्त करने, हानिकारक कुप्रथाओं को दूर करने और पुस्तकालय तथा वाचनालय स्थापित करनेका अनुरोध करते हुए आपने कहा कि इस दिशामें अपने कर्तव्य का पालन करते हुए शिक्षा प्रेमी युवक ही कुछ वर्षोंमें सारे राज्य को साक्षर एवं शिक्षित बना सकते हैं।

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियाँ, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

विक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

IMPERIAL TRADING Co.

Alli Chambers, Tamarind Lane, Fort,
Telegrams: "LOOMSPRING"

BOMBAY.
Telephone No. 27580.

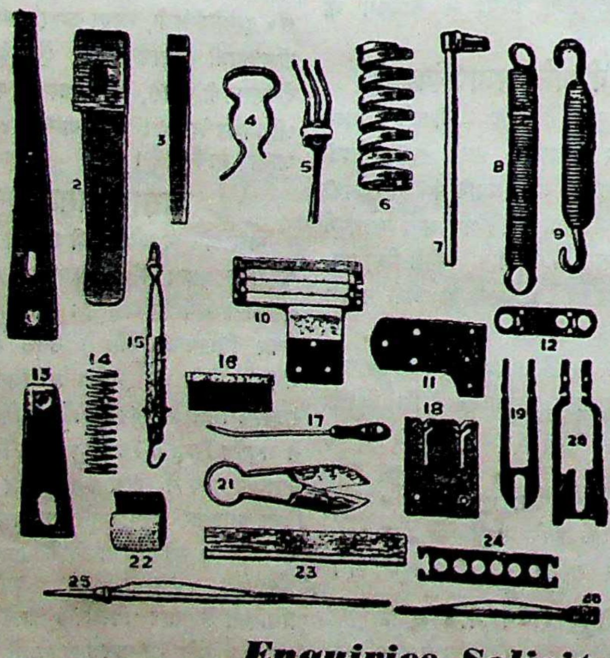

OUR SPECIALITIES

Springs, Temples and all accessories for Spinning and Weaving Machinery

BESIDES, WE HOLD AN EXTENSIVE STOCK of

- Stripping Fillets
- Burnishing „
- Folding „
- Plaiting „
- Winding „
- Likering „
- Card Strippers
- Walton Metallic Brush
- Lickerine Wires
- Lap rods & Oils cans Braime & "K"
- Pot eyes for Bleaching dept.
- Hydraulic Ram Rings
- Jackson & Harries Fastners
- Blue Glass Rods & Creel Steps
- Card Chains & Link Chains
- Hickory wood Picking Sticks
- Dobby Lattices Comber Boards & Taper Pegs
- Perth Gauge Glass & Glass Lubricators
- etc. etc. etc. etc.

Enquiries Solicited

We solicit your enquiries for all articles connected with the Spinning & Weaving Industry and can quote you competitive prices.
We will gladly send to you our latest price list on application.

Agents :—
RATILAL & Co., Cross Lane, Railwaypura Post, AHMEDABAD.
B. N. MODI & Co., 14/24, Civil Lane, CAWNPORE.

देश विदेश की चर्चा
ART CORNER

रोम का पतन

ब्रिटेनके प्रेक्षक इटलीके युद्धकी प्रगतिसे बड़े संतुष्ट प्रतीत होते हैं। उनका ख्याल है कि युद्धकी आरंभिक हानि मित्रराष्ट्रोंके लिये बहुत अच्छी साबित हुई है। लड़ाई में इस समय मित्रराष्ट्रोंको भारीं सफलता मिल रही है। उन्होंने बहुत बड़ी संख्यामें जर्मन सैनिक बन्दी बना लिये हैं। बहुतसे क्षेत्रों पर उनका कब्जा हो गया है। जर्मनीकी साधारण सामरिक नीतिमें शिथिलता आने लगी है। नाजी प्रचारका स्वर भी पहलेकी अपेक्षा कहीं अधिक मंद पड गया है। जनरल अलेक्जेण्डरका आक्रमण आरम्भ होते ही नाजी सेनाकी गुस्ताव पंक्ति टूट गयीं और हिटलर-पंक्ति में भी दरार कर दी गयी। मार्शलके सेलरिंगपर इन पक्तियोंके टूटनेका बड़ा कुप्रभाव पड़ा है। मित्रसेनाएं क्रमशः रोमके निकट पहुँचती जा रही हैं और जर्मनोंका पीछे हटना जारी है। लीरीघाटी और समुद्रके बीचमें पांचवीं सेनाकी प्रगति इस युद्धकी एक महत्वपूर्ण विजय है। इटालियन हवाई अड्डोंसे मित्र हवाई सेना अनवरत आक्रमण कर रही है। इन आक्रमणोंका उद्देश्य जर्मनीके औद्योगिक स्थानोंका और इटली तथा जर्मनीके मध्य यातायातका विनाश करना है। इटलीका रणक्षेत्र मित्रराष्ट्रों की युद्धनीति की रूपरेखा उपस्थित करता है। इटलीपर मित्र-आक्रमण, पश्चिमी यूरोप पर होनेवाले भावी मित्र-आक्रमणों का एक अंग है। जर्मनी उस की ओरसे निरपेक्ष नहीं है। पूर्व और पश्चिम से जर्मन भारी जंगी तैयारी कर रहे हैं। यूरोप के सभी युद्धक्षेत्रों और संभावित युद्धक्षेत्रों में जर्मनी की तैयारी प्रायः पूर्ण हो चुकी है और नाजी प्रचारक अपनी इन तैयारियों का गर्वपूर्ण प्रचार भी कर रहे हैं। मित्रराष्ट्र इस सम्बन्धमें सचेत हैं और जर्मनी की शक्ति तथा बुद्धिका उन्हें ठीक अनुमान है। अपने सामने प्रस्तुत महत्वपूर्ण कार्यका महत्व भी वे समझ रहे हैं।

गत ४ जून को अति विकराल युद्ध के बाद रोमनगर का पतन हो गया। रोम के पतन से धुरी राष्ट्रों की पहली राजधानी मित्रों के अधिकारमें आ गयी है। इसके साथ ही आधे इटली पर मित्रों का कब्जा हो गया है। केसलरिंग की फौजें रोम के उत्तर की तरफ भाग रही हैं। इस समय रूसके मोर्चे पर एक तरहका सन्नाटा सा है। इससे जर्मनीको चिंता बढ़ रही है। जर्मन जनरलोंका विश्वास है कि पश्चिममें एंग्लो-अमेरिकन आक्रमण के आरम्भ होते ही पूर्वमें रूस भी जोरदार हमला शुरु करेगा।

चीनमें गृहकलह

होनानमें जापानी जीतोंकी डींग हांकते हुए शत्रु के ब्रोडकास्ट यह दावा करते हैं कि स्वतंत्र चीन की हालत अब पहलेसे बहुत विकट हो गयी है। लेकिन पहले की तरह अब भी चीनियों ने बता दिया है कि उनमें शत्रु का मुकाबला करने की शक्ति बहुत है। पीपिंग हांको रेलवेके ६० मील लम्बे इलाकेपर, जहां जापानियों ने हालमें ही अधिकार किया था, चीनियों ने जवाबी हमला कर दिया है। इन दिनों चीन से घरेलू झगड़ों की खबरें मिल रही हैं, जो निस्संदेह चिन्ताजनक हैं। ऐसे संकटकालमें, जब कि एक प्रबल शत्रु चीनका सर्वनाश कर डालनेपर तुला हुआ है, चीनमें दो प्रतिद्वन्द्वी सत्ताओंका होना निश्चय ही बड़े खेदकी बात है। मार्शल चांगकाईशेकके समझौता करनेके पक्षमें होते हुए भी, उनके कुछ गुमराह सलाहकर कम्यूनिस्टोंसे समझौता करने देना नहीं चाहते। जापानी सेनाने लुंघाई रेलवेकी ओर आक्रमण कर दिया है। यदि वह सफल हो गयी तो चीनकी कम्यूनिस्ट और कुओमिन्तांगकी सेनाओं का सम्बन्ध टूट जायगा और चुंगकिंग तकके लिये खतरा उत्पन्न हो जायगा। आशा है, प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टके विशेष प्रतिनिधि मि० वालेस चीनके इस घरेलू झगड़ेका अन्त करानेमें सफल होंगे।

मिचीना पर मित्रपक्ष का हमलाः—नागा पहाड़ों में वर्षा प्रारंभ

इम्फालके मोर्चेपर जापानी सैनिकोंको यद्यपि आगे बढ़नेमें सफलता नहीं मिली है तो भी इस बातके चिन्ह दिखायी दे रहे हैं कि दुश्मनको, विशेषकर विष्णुपुर क्षेत्रमें, कुछ कुमक मिल गयी है और इस कारण वह जोरदार सैनिक कार्यवाही करना चाहता है। अपने तोपखानोंकी अग्निवर्षाकी सहायतासे मित्रसेनाकी मोर्चे बन्दियोंपर जापानियोंने जितने प्रत्याक्रमण किये सब विफल कर दिये गये। इम्फाल-मोर्चेके विष्णुपुर क्षेत्रमें आक्रमण करनेके लिये जापानियों को मैदानमें रक्षित सेना उतारनी पड़ी। जापानी सेना प्रबल प्रत्याक्रमण कर रही है। जापानियोंके ३३ वें डिवीजनकी सेनाको, जो उनकी सर्वोत्तम लड़ाकू सेना बतायी जाती है और जो इस समय सिलचरकी दिशामें विष्णुपुरके इर्दगिर्द जवाबी हमले कर रही है, नयी कुमक मिल गयी है। जापानियोंकी गतिविधि और जंगी सरगरमियोंसे प्रकट होता है कि वर्षाकाल आरम्भ हो जानेपर भी जापानी सेना भारतकी सीमामें जमकर आक्रमण करते रहनेको तैयार है। उधर उत्तरी बर्मामें जनरल स्टिलवेलकी अमेरिकन एवं चीनी सेनाएं मिचीनापर जोरदार आक्रमण करनेमें व्यस्त हैं। मिचीनापर मित्रसेनाओंने घेरा-सा डाल दिया है और नगरपर कब्जा करने के लिए घनघोर लड़ाई हो रही है। इस मोर्चेपर जापानी तगड़ा मुकाबला कर रहे हैं। मिचीना के रेल्वे-स्टेशन पर चीनी सेनाने अधिकार कर लिया था मगर बाद का ताजा समाचार है कि जापानियों ने रेल्वे-स्टेशनपर फिर कब्जा कर लिया है। मिचीना और उत्तरी बर्मा के अन्य स्थानों पर मित्र-विमान बड़े पैमाने पर आक्रमण-मूलक कारवाई कर रहे हैं किन्तु बादलों और वर्षा के कारण यह पहले जैसी जोरदार नहीं है।

बम्बई काण्ड की क्षतिपूर्ति

एक विस्तृत ब्यौरेवार सरकारी विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है जिसमें बताया गया है कि—"बम्बई अग्निकाण्ड और विस्फोट के फलस्वरूप जिन लोगों को क्षति उठानी पड़ी है, उन्हें मुआवजा अदा करने के सम्बन्ध में सरकार ने निश्चय किया है। विस्फोट तथा अग्निकाण्ड की पालिसी के अन्तर्गत जिन सम्पत्तियों का आग सम्बन्धी बीमा हो गया था, उन्हें १०० प्रतिशतक मुआवजा देने का भारत सरकार ने निश्चय किया है।"

अग्निकाण्ड और विस्फोट के खतरों के विरुद्ध जिन सम्पत्तियों का बीमा हुआ था और उन की जिम्मेदारी सरकार को लेनी पड़ी, उनके सम्बन्ध में आग बीमा कम्पनियां तथा लायड ने १२॥ प्रतिशत मुआवजा अदा करने का वचन दिया है। शेषकी अदायगी भारत सरकार करेगी।

बम्बई काण्ड के फलस्वरूप जिन लोगोंको व्यक्तिगत चोटें या साम्पत्तिक क्षति उठानी पड़ी है, उन्हें भी मुआवजा देने के बारे में सरकार ने जो निश्चय किया है, वह ब्यौरेवार विज्ञप्ति में प्रकाशित किया गया है।

चोरबाजारों के मालकी क्षति की कोई पूर्ति न की जायगी। बुलियन, जवाहरात, सेक्यूरिटी आदि की क्षतिका भी मुआवजा न दिया जायगा।

मि. वैलेस भारत आयेंगे

अमेरिका के प्रैसीडैन्ट रूजवैल्ट की ओरसे विशेष निरीक्षण के लिये चीन भेजे गये वाइस प्रैसीडैन्ट मि० हैनरी वैलेस भारत की यात्रा भी करेंगे। इस बात की संभावना भी है कि वे भारत आकर महात्मा गान्धी और कॉंग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्यों से विशेष कर पण्डित जवाहरलालजी नेहरू से मिलेंगे। कहा जाता है प्रैजीडैन्ट रूजवेल्ट चाहते है कि भारतीय नेताओं से उनके लिये मि० वैलेस कुछ जानकारी प्राप्त करें।

जर्मनी की विमान शक्ति

'एयरोप्लेन 'पत्र' का कहना है कि जर्मनीपर जब मित्रों की सेनायें सीधा हमला करेंगी तो जर्मनों की हवाई सेना अधिक से अधिक २५०० विमान मित्रों के खिलाफ लड़ाई में लासकेगी।

जर्मनी में १२ हजार भारतीय बन्दी

विश्वस्त स्रोत की सूचना है कि जर्मनी के पास १२००० भारतीय युद्ध बन्दी के, रूप में हैं।

मध्यप्रान्त में गेहूँ की कमी

मध्यप्रान्त में गेहूँ की बेहद कमी है, किन्तु सरकारी अधिकारी आशावादी रुख धारण किये हुए हैं और केन्द्रीय सरकार तथा अन्य प्रान्तीय सरकारों की सहायता से अभाव की पूर्ति करने की आशा रखते हैं।

भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी

अमेरिका की कम्यूनिस्ट पार्टी के भंग होने के बाद अब यह भी उम्मीद की जाती है कि ब्रिटिश कम्यूनिस्ट पार्टी भी भंग हो जायेगी। एक कम्यूनिस्ट नेता ने कहा है कि भारतीय कम्यूनिस्टों को अपनी पार्टी भंग कर देनी चाहिये, अथवा उसे कॉंग्रेस में शामिल होजाना चाहिये।

आस्ट्रेलिया से भारत को अन्न

गत मई १९४३ से १९४४ तक एक वर्ष में आस्ट्रेलिया से भारत में २५९५००० टन गेहूं और ३६००० टन आटा भारत आया है।

मिलों पर सरकारी नियंत्रण : वस्त्रों के मूल्य में कमी

भारत की अनेक मिलों को भारत सरकार के टैक्स टाईल कमिशनरने सीधे अपने अधिकार में लेलिया है। इन मिलों द्वारा उत्पन्न माल भविष्य में सीधा टैक्स टाईल कमिशनर के आदेश से वितरित हुआ करेगा।

एक प्रेस नोट में बताया गया है कि टैक्स टाईल कंट्रोल बोर्ड की उद्योग समिति की एक बैठक में तय हुआ कि जून मास के बाद से निर्धारित वस्त्र और सूत के मूल्य में प्रतिरुपया क्रमशः १॥ और २ आने की कमी होनी चाहिये। टैक्स्टाईल कमिशनर ने उक्त सिफारिश मन्जूर कर ली है। जून १९४३ से जबसे कंट्रोल लागू हुआ है यह चौथा अवसर है जब कि मूल्य में कमी की गयी है।

पञ्जाब के प्रधान मंत्री लीग की सदस्यता से वञ्चित

अखिल भारतीय मुस्लिम लीग की एक्शएन कमेटी ने एक वक्तव्य में घोषित किया है कि, मुस्लिम लीग की एक कमेटीने निर्णय कर दिया है कि मलिक खिज्र हयात खाँ तिवाणा को लीग की सदस्यता से निकाल बाहर कर दिया जाये, और वे तबतक फिर मैम्बर न बनसकेंगे जबतक कि लीग की वर्किंग कमेटी उनपर से निष्कासन का प्रतिबन्ध न हटाले।

'नवजीवन प्रेस' वापिस लेनेसे नकार

महात्मागान्धीजी के नवजीवन प्रेस को जिला मजिस्ट्रेट ने वापिस सौंपना चाहा था, किन्तु प्रेस के मैनेजर ने इस आधार पर लेनेसे नकार-कर दिया कि उक्त प्रेस के कुछ महत्वपूर्ण सामान वापिस नहीं लौटाये जारहे हैं।

भारतीयों को अमेरिकन नागरिकता

अमेरिका के १५० प्रमुख अमेरिकन मिशनरियों तथा भारतीयों ने अमेरिकन कॉंग्रेस के पास एक आवेदन पत्र भेजकर भारतीयों को अमेरिकन नागरिकता के अधिकार प्रदान करने के लिए कानूनी व्यवस्था की मांग की है। हस्ताक्षरकारी समुदाय अमेरिका स्थित संस्थाओंके द्वारा भी उक्त कार्य की सफलता के लिये प्रयत्नशील है।

नौ वर्ष की लड़की का विवाह !

युवकों के साथ अभद्र व्यवहार

इन्दौर में गत ता. ६ मई को माहेश्वरी समाज में एक विवाह इस ढंगसे हो गया है जिसको लेकर समाज में कई तरह की चर्चाएं और नवयुवकों में असंतोष उत्पन्न हो चुका है। उसदिन माहेश्वरी समाज के सार्वजनिक कार्योंमें दिलचस्पी रखने वाले कुछ नवयुवकों को दोपहर में पत्र मिला जिस में लिखा था कि "इन्दौर रेजीडेन्सी एरिया में वस्ती के बाहर नौलखा सब्जी बाग में एक विवाह हो रहा है जिसमें वरकी आयु ५० वर्ष और कन्या की आयु ९ वर्ष की है, लड़की को बचाइये।" कुछ युवकोंने इस संबंध में जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया परन्तु खास जानकारी प्राप्त नहीं हुई। बाद में यह पता लगा कि वर समाजके एक प्रमुख सुधारक श्री रामविलासजी कचोलियाके रिश्तेमें साले हैं अतः आप और इन्दौरके प्रचंड सुधारकोंके अगुआ गिने जानेवाले और माहेश्वरी महासभाके एक प्रमुख सदस्य श्री शिवचंदजी ईनानीका इस विवाहमें सहयोग है, तब स्वभावतः ही नवयुवकों की दिलचस्पी बढ़ गई। उनसे मिलकर सारी परिस्थिति जान लेने व वर कन्याको आंखोंसे देख लेनेके लिये रात्रिके लगभग ९ बजे श्री कल्याणमलजी लाखोटिया, श्री बाबूलाल मालू, श्री जगन्नाथ चौधरी, श्री मानकचंद पलोड़ ये चारों व्यक्ति विवाह स्थल पर पहुंचे। वहां श्रीयुत रामविलासजी कचोलिया, श्री शिवचंदजी ईनानी और श्री प्रभुदयालजी कांकणी गार्डन सुप्रिन्टेन्डेन्ट नौलखा बाग ये तीनों सज्जन मिले और काफी देरतक बातचीत हुई। बातचीत में श्री ईनानीजी और कचोलियाजी ने यह विश्वास दिलाया कि उक्त पत्र वाली बातमें कोई तथ्य नहीं है। हम लोगों के रहते ऐसा कार्य कभी नहीं हो सकता। विवाह महासभा के नियमों के अनुकूल ही हो रहा है। गये हुए लोगों ने वर को दूर से देख लिया था और उसकी आयु लगभग ३५ वर्ष की प्रतीत हुई। इन लोगों ने कन्या को देखने की इच्छा प्रगट की इसपर पहिले तो ईनानीजी ने कहा कि आप देख सकते हैं, परंतु बातचीत के द्वारा हर तरह से व्यक्तिगत रूपसे विश्वास दिलाते रहे और लड़की को दिखाने की बात हर तरह से टालते रहे। अंत में साफ इन्कार कर दिया। इस पर श्री. लखोटिया जी आदि सभी मित्र उठ कर बाहर चले आए और वहां आकर परस्पर बातचीत की कि अब क्या करना चाहिये। जब तक हम लड़की को न देख लें तब तक इस सत्यासत्य का निर्णय कैसे करें? यदि पत्र में लिखित बात झूठ है तो समाज में उसका खंडन करने के लिये लड़की को देख लेना और भी जरूरी है। यह सोचकर श्री. बाबूलालजी मालू व श्री. जगन्नाथजी चौधरी दोनों पुनः भीतर गये और श्री. ईनानीजी से नम्रतापूर्वक अनुरोध किया कि पत्र के आरोप का खंडन करने के लिये ही आप लड़की को दिखला दें। बस इस पर श्री ईनानीजी एकदम बिगड़ गये और काफी गरम शब्दों में अपनी नाराजगी प्रगट करते हुए कहा कि 'आइये देख लीजिये' और फिर श्री. कचोलियाजी को आवाज दी। गये हुए दोनों व्यक्तियों ने समझा कि लड़की को दिखला रहे हैं अतः श्री. जगन्नाथ चौधरी वहीं खड़े रहे और श्री. बाबूलाल मालू बाहर दूरी पर जो दो मित्र खड़े थे उन्हें बुलाने के लिये गये। इतने में भीतर वह कांड होगया जिसकी कल्पना किसी को भी न थी और न हो सकती थी। श्री. ईनानीजी के आवाज लगाने पर कचोलियाजी के बदले श्री. प्रभुदयालजी आये और आते ही वे अपने आफिसरी ढंग से चिल्लाकर बोले" हम इन्हें लड़की नहीं दिखा सकते, इन्हें कोई हक नहीं हैं। निकालदो इन्हें इस बगीचे से और अभी सबको पुलिसके हवाले कर दो" आदि २। बस उनकी यह आवाज सुनते ही १०, १५ आदमी, जो आसपास लगे हुए थे, एकदम निकल पड़े और श्री चौधरी को पीट दिया। वे लोग गालियां भी बकने लगे कि साले बड़े कांग्रेसी और सुधारक आये हैं। इसके बादही श्री लखोटियाजी आदि तीनों मित्र भी भीतर पहुंच गये। इनके आतेही वहां दो व्यक्ति जो कांस्टेबल की अधूरी ड्रेस पहिने हुए खडे थे वे सबको कोतवाली में लेजाने के लिये धरपकड़ की धमकी देने लगे। श्री लखोटियाजी आदि सभी युवक कोतवालीमें जाने व गिरफ्तार होने के लिये सहर्ष तैयार हो गये, परंतु उधरके लोगों ने बीच बचाव करनेका नाटक किया और धमकी वहीं रह गई। श्री ईनानीजी ने भी तैश में आकर कई बातें कहीं कि मैं तुम लोगों को और तुम्हारे बापदादाओं को अच्छी तरह जानता हूं बड़े सुधारक बनने चले हैं!

जिस समय उपरोक्त मारपीट हुई और अनर्गल बातें कही गयीं उस समय श्री कचोलियाजी ईनानीजी और प्रभुदयालजी तीनों वहीं उपस्थित थे परंतु किसीने भी उक्त असभ्य व्यवहार को रोका नहीं बल्कि मारपीट होजाने के बाद श्री ईनानीजी ने उलटे यह कहा कि "क्या अभी तक तुम्हारे दिमाग की गर्मी शांत नहीं हुई?" अस्तु इसके बाद उक्त चारों युवक वापस चले आये। शहर में आकर उन लोगों ने श्रीयुत श्रीनिवासजी झंवर B. A. और श्री रामस्वरूपजी गट्टाणी (नोमच) को इसी जानकारी के लिये वहां फिर भेजा। परतु वे लोग भी वहां जाकर लड़की नहीं देख सके, वापस आना पड़ा।

सारी घटना का संपूर्ण संक्षिप्त और सही वर्णन यह है। अब सवाल यह है कि यदि लड़की की आयु छोटी नहीं थी तो फिर इन प्रमुख सुधारकों ने दिखलाने से इन्कार और इतना रोष क्यों प्रगट किया? जबकि देखने गये हुए लोग भी अपरिचित नहीं बल्कि घनिष्ट परिचय के थे। अतःकम उमर की जो शंका पहिले थी वह इस असभ्य व्यवहार के कारण दूर होने के बजाय बढ़ी है।

यह तो निश्चित है कि कन्या की आयु महासभा की नियमावली के अनुकूल तो नहीं है। इसका निर्णय तो श्री. ईनानाजी के उस वक्तव्य से ही होगया है जो कि इसी ता. २१ मई के पिछले अंक में ही प्रकाशित हुआ है। उस वक्तव्य में वर्णित आपका "मध्यभारत का दौरा" (?.) भी बहुत ही मजेदार है। सारा ध्यान पूर्वक पढ़ने पर प्रतीत होता है कि आप एक निश्चित उद्देश्य या कार्यको लेकर ही निकले थे। पहिले आप, सीधे श्यामपुर पहुंचे। वहां से यह जानकारी मिलने पर कि अमुक ग्राम में अमुक व्यक्ति, के लड़की है, और उसने किसी ठाकुर के साथ संबंध कर दिया है, आप वहां गये। आपने उस व्यक्तिको समझा कर वह विजातीय संबंध तुड़वाया और लड़की का संबंध श्री. कंवरलालजी के साथ करवा दिया। इस के बाद एक स्थान पर और जाकर आप वापस चले आये। इस दौरे में आपको जिन माहेश्वरी व्यक्तियों का परिचय मिला उनके नाम वक्तव्य में दे दिये। बस यही मध्य भारत का दौरा है (?) जिसे आपने माहेश्वरी में प्रकाशित करवा दिया है।

जो युवक विवाह स्थल पर जानकारी प्राप्त करने के लिये गये थे उनसे आप लोगों ने कहा था कि हमारे रहते महासभा के आदर्शों के विपरीत कोई कार्य हो नहीं सकता। क्या १३ वर्ष की लड़की का विवाह महासभा के आदर्श और नियमानुसार है? वरकी आयु भी ईनानजी ने वंक्तव्य में २५ वर्ष बतलाई है। कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति श्री कंवरलालजी देखकर बतला सकता है कि वास्तव में उन आयु कितनी है। हम अवस्था के विवाह एक बार छोड़ भी दें तब भी युवकों के सा श्री ईनानीजी सरीखे कथित चोटी के सुधार की उपस्थिति में जो व्यवहार हुआ है वह तक उचित और सभ्य कहा जायगा। आ है श्री ईनानीजी सारे मामले पर उचित प्रक डालना आवश्यक समझेंगे। **—संवाददा**

(इस सम्बन्धमें हमारे कुछ लिखने पूर्व यदि सम्बन्धित व्यक्ति सारी बातों स्पष्टीकरण कर दें तो बहुत अच्छा हो। अन व्यक्ति भी यदि अधिकारपूर्वक इस विष कुछ लिखेंगे तो हम सहर्ष उसे 'माहेश्वरी' स्थान देंगे। —सम्पादक)

मध्यभारत में महिला आन्दोल

उज्जैन। मोरेना में हुए सालाना अधिवे के साथ ग्वालियर में जिस महिला आन्दो का सूत्रपात किया गया उसे अब मध्यभा व्यापी बनाने की कोशिश की जा रही है सौभाग्यवती श्रीमती मदनदेवी नवाल म भारत की प्रगतिशील राष्ट्र सेविका हैं जिन्हों बालबच्चों के साथ सत्याग्रह किया था जेल में बीमार होने के कारण रिहा की गई थी १०—११ जून को आप उज्जैन में मध्यभारत महिला सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन कर हैं। अध्यक्ष पद के लिए इंदौर की राष्ट्रसेवि श्रीमती रुक्मिणी बहिन से और उद्घाटन लिए श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित से प्रार्थना गई है।

देशी राज्य शासन

पृष्ठसंख्या ५६० सजिल्द मूल्य साढ़े तीन रुपये

महत्वपूर्ण समस्याओंका विचार

नमूनेकी ७० रियासतोंकी शासन पद्धति

राजनैतिक आन्दोलनका परिचय

भारतीयशासन	१।)	ब्रिटिश साम्राज्यशासन	१)
मातृवन्दना	।=)	भारतीय अर्थशास्त्र	३)
नागरिक शिक्षा	।।=)	साम्राज्य और उनका पतन	१।)
भारतीय जागृति	१।)	हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ	।।।=)
निर्वाचन-पद्धति	।।-)	पूर्वकी राष्ट्रीय जागृति	१।।)
अपराध चिकित्सा	१।।)	भारतीय सहकारिता आन्दोलन	२)
भारतीय राजस्व	।।=)	कौटिल्यके आर्थिक विचार	।।।=)
अर्थशास्त्र शब्दावली	१)	भारतीय विद्यार्थी विनोद	।।=)
राजनीति शब्दावली	।।।)	नागरिक कहानियाँ	।।=)
श्रद्धांजलि	।।।=)	अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य	।।।)
विश्ववेदना	।।।=)	भव्य विभूतियाँ	।।=)

पुस्तक प्राप्तिका पता—

भगवानदास केला, भारतीय ग्रन्थमाला; दारागंज [इलाहाबाद]

प्रथम मध्यभारतीय महिलासम्मेलन

मध्य भारतीय बहिनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि प्रथम मध्यभारतीय महिला सम्मेलन ता. १० एवं ११ जून को उज्जैनमें होने वाला है।

इसके अध्यक्ष पद के लिए इन्दौर की सुप्रसिद्ध सेविका रुक्मणी बहन से एवं उद्घाटन के लिए श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित से प्रार्थना की गई है।

श्री सूरजमलजी सोमानी का विवाह

कानपुर माहेश्वरी समाज के उत्साही कार्यकर्ता, श्री माहेश्वरी पुस्तकालय के जन्मदाता एवं श्री माहेश्वरी विद्यालय प्रबन्ध समिति के सदस्य श्री सूरजमलजी सोमानी का शुभ विवाह ता. ३०-४-४४ को जबलपुर निवासी श्री ला० जमुनादासजी चांडक की सुशील कन्या गोपीबाई के साथ सम्पन्न हुआ: विवाह अव सरपर कई पुरानी रीतों का अंत कर दिया गया। देशरत्न कुँवर चांदकरणजी शारदा वगैर की मंगल कामनायें प्राप्त हुई—

रामस्वरूप लोईवाल
कानपुर

विश्वमित्र-संचालक का 'नवजीवन' को सराहनीय सहयोग

नवजीवन-संपादक श्री. कनक 'मधुकर' इन दिनों उदयपुर से कलकत्ता आये हुए हैं। सेठ घनश्यामदास जी बिड़ला ने पत्र के लिए आप को ५००) की सहायता प्रदान की है। *अन्य मारवाड़ी* सज्जनों द्वारा आपको और भी सहयोग मिला !

विश्वमित्र-संचालक बाबू मूलचन्दजी अग्रवाल ने अपनी शुभकामना के साथ १५१) की सहायता के रूप में एक पत्रकार बंधु के इस शुभ प्रयत्न में जो सहयोग प्रकट किया है, वह विशेष उल्लेखनीय है।

श्री. कलयंत्रीजी को मानपत्र

राजस्थानी वीर श्री. कन्हैयालालजी कल्यंत्री को गुलाबदेवी कन्या विद्यालय और वनिताश्रम अजमेरकी ओरसे गत शुक्रवार को २ अभिनन्दन-पत्र दिये गये। श्री. कल्यंत्रीजी क गत २५ वर्षोंमें देशी राज्य प्रजाकी व हरिजन समाज तथा खासकर पिछड़ी हुई राजस्थानी स्त्री समाजके उत्थानार्थ, श्रीमती सत्यवती देवी कल्यंत्रीके साथ की गई सेवाओंकी प्रशंसा की गई। हालमें राजस्थान के बाढ़ पीडितोंकी सहायतार्थ वम्बईसे, वायसराय व चीफ कमिश्नर तथा राजाओंको यथा समय तार आदि देकर तथा वम्बई प्रान्तके भिन्न २ स्थानोंसे जो सहायता भिजवानेकी सफल तत्परता दिखाई इस लिये बाढ़ पीड़ित बन्धु सदैव के लिये आपके अभारी रहेंगे।

उत्तरमें श्री. कल्यंत्रीजीने कहा कि, मैं तो स्वामी दयानन्द और पू. महात्मा गांधीजीके पदचिन्होंपर चलता हुआ मूक सेवा करनेमें आनन्द अनुभव करता हूँ। आपने आगे कहा कि गुजरात की भाँति राजस्थान की स्त्री शक्तिका उत्थान तभी होगा जब धनिक और शिक्षित बन्धु अपनी सम्पूर्ण शक्ति इस कार्यमें लगा देंगे।

राजस्थानी संसार

सीहोर में शुभ विवाह

उज्जैन माहेश्वरी समाजके प्रमुख अग्रगण्य नेता श्री रामसुखजी मंत्रीके सुपुत्र श्री दौलतरामजी मंत्री एम्. ए., एल्, एल्. बी. साहित्यरत्नका पाणिग्रह संस्कार ग्वालियर निवासी स्वर्गीय श्री मदन मोहनजी शारदाकी भानजी, सीहोर निवासी स्वर्गीय श्री सुखदेव प्रासादजी भंडारी की सुपुत्री सौ. कांक्षिणी कमला देवीके साथ संपन्न हुआ।

वर आरंभ से ही विवाह में होनेवाली रूढ़ियों तथा घूंघट प्रथा के विरोध में था। अतः वरवधू के असीम उत्साह से तथा वर वधूके निकटस्थ संबंधियोंके सुधारक विचार होनेसे, विवाहमें घूंघट प्रथा रुढियों आदिको स्थान नहीं दिया गया। वर खादी प्रेमी होनेसे पूर्ण तया शुद्ध खादीकी पोशाकमें था।

विवाहके शुभावसर पर निम्नाङ्कित संस्थाओं को वरके पिता की ओरसे दान दिया गया:—

(१) श्री "माहेश्वरी" पत्र बंबई ११)
(२) "माहेश्वरी समाज" उज्जैन ११)
(३) अपंग सेवाश्रम उज्जैन ५)
(४) आदिनारायण मन्दिर जीर्णोद्धार ६)

मंत्री
श्री माहेश्वरी समाज उज्जैन

जातीय आदर्श विवाह

ब्यावर ता. ११-५-४४ को ६॥ बजे श्रीयुत जयदेवजी महादेवजी धूत की सुपुत्री सौ. कां. धीरज कुमारी विद्याविभूषिता, स्नातिका कन्यागुरुकुल हाथरस का पाणिग्रहण संस्कार मेरठ निवासी बाबू रामचंद्रजी अग्रवाल के सुपुत्र आनन्द प्रकाशजीके साथ, राजगुरु धुरेन्द्रजी शास्त्री तथा पं जयदेवजी शर्मा विद्यालंकार मी. मां. तीर्थ, चतुर्वेद भाष्यकार, एवं आचार्य भद्रसेन की अध्यक्षता में सानन्द सपन्न हुआ।

इस विवाह में यह विशेषता थी कि श्रीयुत् धूतजीने जातीय आक्षेपों को सहन करते हुये भी आदर्श मार्ग का अवलम्बन किया।

सुधार पूर्ण विवाह

जालना निवासी श्री. गंगाविशनजी बागडी: (दु. फर्म गनेशदास राधाकिसन बागडी) की कनिष्ट बहन सौ. कांक्षिणी रुक्मिणी का शुभ विवाह एरंडोल निवासी, स्व. प्रेमराजजी कावरा के सुपुत्र चि. कुंवर दामोदरदासजी के साथ मिती ज्येष्ट व ३ गुरुवार ता. ११ मई १९४४ को वैदिक पद्धति से संपन्न हुआ।

इस विवाह में पर्दा प्रथा को कतई स्थान नहीं दिया, तथा रुडियों का पूर्ण रूप से बहिष्कार किया गया था। लगभग चार हजार को संख्या में जनता उपस्थित हुई। विवाह अत्यंत सादगी से हुआ।

श्री. बागडीजी ने इस विवाहके उपलक्षमें ५१) रु. माहेश्वरी पत्र को दिये हैं।

माहेश्वरी बालचर मण्डल शाहपुरा

माहेश्वरी बाल-चर मण्डल शाहपुरा का तृतीय वार्षिक अधिवेशन ज्येष्ठ सुद अष्टमी व नवमी महेश जयन्ती तदनुसार तारीख ३० व ३१ मई को श्रीमान् जयदेवजी धूत (ब्यावर) के सभापतित्व में समारोह पूर्वक मनाया गया।

–रामनिवास मूंदड़ा, मंत्री
बाल-चर मण्डल शाहपुरा (राजपूताना)

पुस्तकालयों तथा विद्यालयों की स्थापना

मारवाड़ी सम्मेलन के प्रचारक श्रीरामजी शर्मा ने बंगाल प्रान्त के मारवाड़ी भाइयों की जन गणना के सम्बन्ध में प्रान्तमें भ्रमण का काम शुरू कर दिया है। सर्वप्रथम आप नदिया जिले के चुआडांगा, मेहरपूर, मुन्शीगन्ज, आलमडांगा तथा नईहट्टी में गये नईहट्टी में एक नया पुस्तकालय खुलवाया। मेहरपूर में शाखा सभा का नव निर्वाचन कराया तथा वहां पर भी एक पुस्तकालय की स्थापना की। चुआडांगा में श्री बैजनाथजी बागला ने ५०० पुस्तकें प्रदान कर एक पुस्तकालयकी स्थापना कर दी है। आलमडांगा में मारवाड़ी बालक बालिका विद्यालय की स्थापना हुई तथा २०० पुस्तकों से एक पुस्तकालय स्थापित किया गया। साथ ही पुस्तकालय के खर्च के लिए १२५ रुपये नकद चन्दा एकत्रित हुआ। बालक बालिका विद्यालय के खर्च के लिए वहां के मारवाड़ी भाइयों ने बिक्री पर प्रति सैंकड़ा एक आना विद्यालय कोष में देने का निश्चय किया।

भालचन्द्र शर्मा
संगठन मन्त्री।

श्री राजस्थान हितकारक मंडल अमरावती

मंडल को निम्न लिखित सज्जनों ने दान दिया है। अतः मंडल उनको हार्दिक धन्यवाद देता है—

२१) श्री. सीतारामजी रामकुंवरजी बजाज, श्री चीन्नूर श्री रामरतन बाबू के विवाहोपलक्षमें।

२०) श्री. श्रीकृष्णदासजी लड्डा अमरावती, श्री बाबू गणेशदास तथा लक्ष्मीनारायण के विवाहोपलक्षमें।

११) श्री रामपालजी रामबिलासजी मुंदड़ा, बाबू रामविलास के विवाहोपलक्षमें।

३१) श्री बालकिसनजी हुकुमचंदजी बजाज चांदा, श्री भागीरथजी की विवाहोपलक्षमें–श्री विठ्ठलदासजी बजाज पूना स्वतः के विवाहोपलक्षमें–हाईस्कूल के लिये स्कालरशिप।

५) श्री बालप्रसादजी मोतीलालजी काबरा श्री उमरखेड श्री देवकरण बाबू के विवाहोपलक्षमें।

बीकानेर में अनमेल विवाह

विगत वैशाख में बीकानेर के श्री गंगाविशनजी डागा का व्याह एक खासी रकम के एवज में डूंगरगढ़ के झंवरों की १४ वर्षीय कन्या से हो गया। वर महोदय लखपति है। व्याह के वक्त आपकी उम्र ६८ साल और छः मास से कुछ अधिक थी।

इस पर डागों की पंचायत इकट्ठी हुई एवं वर महोदय पर रु. १५०००) दंड लगाया गया जो अबतक अदा नहीं किया गया है, सुनते हैं श्री गंगाविशन रु. २०००) तक देने को प्रस्तुत हैं।

समाज के कर्णधारों को इस प्रकार के अनमेल विवाहोंपर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए।

कमलनयन शर्मा, बीकानेर

मध्यभारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन

बागली (डाकसे)। मध्य भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनका तृतीय अधिवेशन बागली (ग्वालियर राज्य) में ४।५।६ जूनके बजाय ११।१२।१३ जून सन १९४४ को होना निश्चित हुआ है अतः सब साहित्य प्रेमियोंसे निवेदन है कि उक्त तिथियों पर बागली पधारकर सम्मेलनको सफल बनायें। बागली आने की सूचना शीघ्र स्वागत मंत्रीको देनेकी कृपा करें। बागली इन्दौर स्टेशनसे ३६ माइल दूर है। मोटर बस चलती है।

विनीत–**रामगोपाल ईनाणी, एडवोकेट**
बागली

भयंकर वज्रपात !

कचौरा (अलीगढ़) के उत्साही एवं होनहार नवयुवक तथा भूपालदास दुर्गाप्रसाद फर्म के मालिक दुर्गाप्रसादजी मोहता का स्वर्गवास जेठ वदी १२ सम्वत् २००१ को हो गया। आप अपने पीछे अपनी पत्नी एक कन्या और दो अबोध पुत्र छोड़ गये हैं। बृजमें इस असामायिक मृत्युसे अपार शोक छाया हुआ है। ईश्वर सन्निकट संबंधियो और छोटी आयुकी पत्नी को धैर्य और मृतात्माका शांति प्रदान करें।

हीरालाल हरकुट मंत्री माहेश्वरी मंडल, कचौरा, अलीगढ़।

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल

वर्तमान यातायात की असुविधा आदि कारणों से आपकी सेवा में पहुंच नहीं सकते है। फिर भी हम निवेदन करना चाहते हैं कि जो बन्धु इस संस्था के द्वारा विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति पारितोषिक आदि देना चाहते हों वे रकम, एवं कोई खास सुझाव हो जिसका अमल करने में हम समर्थ हैं, वह लिखकर भेजें। उनकी यह भेंट मण्डल साभार स्वीकार करेगा।

निवेदक
किसनलाल प्रेमराज लाहोटी
चेअरमन
मा. वि. प्र. मंडल पूना।

आवश्यकता है

मारवाडी ग्रेज्यूएट्स एवं अन्डर ग्रेज्यूएट्स की, बीमा एवं बैंक लाइन में। वेतन योग्यतानुसार। नीचे लिखे पते पर सर्टीफिकेट एवं प्रशंसा पत्र सहित अर्जी भेजें।

बाक्स नंबर १५० '**माहेश्वरी**'
अलीचेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट बंबई

कमीनी

(पृष्ठ १३ का शेष)

मनोरंजन का गुस्सा इतना ज्यादा बढ़गया कि उससे जवाब देते नहीं बना। उसने आव देखा न ताव, कोने में पड़े हुए डण्डे को उठा लिया और लड़खड़ाता हुआ पन्ना की ओर बढ़ा। इसी समय प्रदीप भी वहां आ पहुँचा। मनोरंजन का डण्डा छीन कर वह पन्ना से बोला–'क्या बात है? आज यह गरमागरमी कैसी। ये नये साहब कौन हैं पन्ना?

पन्ना तो चुप रही परन्तु मनोरंजन बोल उठा–अरे यार इस कमीनी कौम का क्या! रोज़–रोज़ नये यार–बाग इनके पास आते हैं। इनका क्या इतवार। चलो।

अब पन्ना से भी चुप न रहा गया। वह बोली ठहरिये प्रदीप बाबू। आप जानते हैं ये मनोरंजन कौन हैं?

इससे पाहले कि प्रदीप कुछ कहे, मनोरञ्जन बोल उठा–प्रदीप मुझे अच्छी तरह से जानता है। परन्तु तुझ कमीनी को तो आज ही पहिचान पाये हैं। चलो प्रदीप।

पन्ना कहने लगी–हम लोगों की कौम कमी ही होती है प्रदीप बाबू। परन्तु आप जानते हैं हम लोगों को कमीना किसने बनाया? ये मनोरञ्जन मेरे पति हैं और मैं इनकी व्याहता हूं।

यह सुनकर प्रदीप चौंक उठा। मनोरञ्जन बोला–यह सब झूठ है। तू मेरी स्त्री नहीं है।

पन्ना ने कहा–प्रदीप बाबू आपको सुनकर ताज्जुब नहीं होना चाहिऐ कि मनोरञ्जन मेरा पति है। इसी ने मुझे मज़बूर करके कोठे पर बिठलाया। इसी ने मुझे कमीनी बनाया।

प्रदीप ने मनोरञ्जन की ओर मुँह घुमाया, परन्तु वह वहां से चला गया था। पन्ना बोली–मनोरञ्जन शराब पीता था, जूआ खेलता था और महफिलों में आता जाता था। परन्तु इन सब के लिये रुपयों की दरकार होती है। इसलिये उसने मुझे अपना ज़रिया बनाया। आप खड़े क्यों है बैठ जाइये।

प्रदीप पास में बैठ गया। पन्ना कहने लगी अब मेरा जी इस पेशेसे ऊब गया है, इस लिये मैं चाहती हूँ कि मेरी बाकी जिन्दगी कहीं दूर शान्ति के साथ बीते। और इस काम के लिये मैंने इन नये साहब को चुना है।

'आपसे मुझे हमदर्दी है इस लिये मेरा फर्ज है कि मैं कुछ फायदे की बातें आपको बतलाऊँ।'

'क्या आपने कभी सोचा कि आपकी स्त्री मुझसे ज्यादह सुन्दर है? क्या आपने कभी सोचा कि आपकी स्त्री मुझसे ज्यादा पाक है? शायद नहीं! और भी कई ऐसी बातें हैं जिनकी ओर आपने ध्यान नहीं दिया। अगर ठण्डे दिलसे आप इन बातों की ओर गौर करते तब आपको मालुम होता कि आपकी स्त्री मुझसे ज्यादा खूबसूरत, नेक, पाक और आपकी जीवन भर सेवा करनेवाली है।'

'पाप का रूप बाहरी सुन्दर होता है। इस लिये पहिले पहल इन्सान उसी की ओर अग्रसर होता है। परन्तु जब इसका कडुआ फल चखनेको मिलता है तो बादमें पछताता है।

इतना कहकर पन्ना सुस्ताने लगी। कुछ देर बाद वह बोली–आपकी शादी हो चुकी है प्रदीप बाबू, अब आपकी जिम्मेदारियाँ भी बढ़ गई हैं। इसलिये आपको सोच समझ कर चलना चाहिये। परमात्मा की दया से कल आपके बालबच्चे होंगे। उनको खिलाना पिलाना, पालना-पोसना आपका धर्म होगा। अगर आप इसी तरह से हम कमीनों का ख्याल रखेंगें तो सोचिये उनका क्या हाल होगा। आप बरबाद हो जायँगे। इस लिये आपको सम्भल कर चलना चाहिये।

'अभी आपकी नई नवेली स्त्री के हाथों की मेंहदी भी नहीं सूखने पायी है। आप उसके हाथों की ओर देखिये। आप उन हाथों को हरवक्त आपकी सेवा करने को तैयार पायेंगे। आप उन्हें सेवा करने का मौका दीजिये। सच समझिये आप निहाल हो जायंगे।'

'आप अपनी स्त्री को समझने की कोशिश कीजिये, आप उससे डरिये मत। कभी-कभी हम लोग एक-दूसरे को समझने ही की कोशिश नहीं करते इसलिये आपस में घृणा करते है, एक दूसरे से दूर रहते हैं। यही गलती आपने की है। इस लिये आप उसे अपनासा बनाने की कोशिश कीजिये अगर वह अनपढ़ है, उसे पढ़ाइये। अगर वह बदतमीज़ है उसे तमीज़ सिखलाइये। यह सब आपका फर्ज है।'

'देखिये काफी रात होगयी है उठिये अपने घर जाइये। आपकी स्त्री आपकी बाट देख रही होगी। उसे परेशान करना अच्छी बात नहीं है। आप जाइये, वह आपको देखकर बहुत प्रसन्न होगी। आप भी उसे प्रसन्न कीजिये और आज से यह प्रतिज्ञा कर लीजिये। कि आप अपनी स्त्री के ही बनकर रहेंगे।

प्रदीप वहाँ से चलकर सीधा घर आया। मनोरमा उसकी बाट जोह रही थी। प्रदीप उससे बोला—मनोरमा मेरा सर दर्द कर रहा है, इसे दबा दो।' और यह कहकर प्रदीप पलंग पर जा लेटा। मनोरमा उसके पास बैठ गयी और सर दबाने लगी। प्रदीपने उसके हाथ अपने हाथों में ले लिये और ध्यान से उनकी ओर देखने लगा। मेहंदी अब भी उन हाथों में लगी हुई थी। मनोरमा ने पूछा—क्या देख रहें हैं आप?

प्रदीप ने उत्तर दिया—कितने सुन्दर हाथ हैं।

मनोरमा ने अपने हाथ अलग करने चाहे। प्रदीप बोला—नहीं मनोरमा, तुम देवी हो। मैं इतने दिन तुम्हें समझ न सका था।

मनोरमा की आँखों में आँसू छलछला आये। वह बोली—मैं आपकी दासी हूँ।

'मैं ठीक कह रहा हूँ मनोरमा। मैं इतने दिनों अन्धेरे में था। मुझे माफ करो।' और ऐसा कह कर मनोरमा के आँसुओं को पोंछा वह बोला—हाँ जानती हो किसने मुझे तुम्हारे इस असली रूप का ज्ञान कराया?

मनोरमा इस प्रश्नसे चौंक उठी। उसने पूछा–किसने?

प्रदीप बोला–एक कमीनी......।

अभी–प्रदीप आगे बोल भी नहीं पाया था कि नीचे सड़क पर बहुत जोरसे आवाज हुई। प्रदीप और मनोरमा बहुत जल्दीसे नीचे आये?

सड़क पर दो मोटरें आपसमें टकरा गई थीं। प्रदीप और मनोरमा भीड़को चीरते हुये लाशोंके पास गये। प्रदीपने ध्यानसे उनकी ओर देखा। दो आदमी और एक स्त्री मर चुके थे और दोनो मोटरोंके दो ड्राइवर जख्मी होकर एक ओर खड़े थे। मनोरमाने प्रदीपसे पूछा–ये औरत कौन है?

प्रदीप बोला–बेचारी कमीनी पन्ना !!!

महेश नवमी उत्सव बंबई

माहेश्वरी हितकारिणी सभा बम्बई की ओरसे जेठ शुद ९ को मारवाडी चेम्बर ऑफ कॉमर्स के हॉल में महेश नवमी का उत्सव श्री रामदयालजी सोमाणी के सभापतित्व में मनाया गया।

ठाकुर जोरावरसिंहजी द्वारा ईश-स्तवन एवं एक भजन गायन उपरान्त शारीरिक व्यायाम-पटु प्रोफेसर सत्यपालजी के शिष्य ने आसनों के कई प्रकार बताये।

इसके पश्चात् श्री सोमाणीजीका भाषण हुआ। आपने जो माहेश्वरी जाति इतिहास नामक किताब प्रकाशित हुई है उसमें माहेश्वरियों का उत्पत्तिकाल बतलाया है उस संबंधमें शंका प्रदर्शित करते हुए एक विश्वसनीय और खोजपूर्ण इतिहास मिल जाना चाहिये इसका प्रतिपादन किया। तत्पश्चात् कई वक्ताओं के भाषण हुए। श्री. बृजवल्लभदासजी मूंधडा ने अपने भाषण में कहा कि जेष्ठ सु. ९ के दिन जो महेश नवमी उत्सव मनाया जाता है वह दिन ठीक है कि नहीं उसकी आज चर्चा करना उपयुक्त न होगा। इस संबंध में कई तर्कोंके उपस्थित होनेपर तत्समय यही विचार रहा कि जबतक ऐतिहासिक खोजद्वारा कोई निश्चयात्मक मिती उपलब्ध न हो तबतक जो भी दिन मनाया जाता है वही ठीक है। माहेश्वरियों की उत्पत्ति संबंधीं ऐतिहासिक खोज की आवश्यकता आपने बतलायी। आगे चलकर आपने बम्बई में माहेश्वरी भुवन की आवश्यकता बतलायी एवं कहा बम्बई प्रान्त में माहेश्वरियों की संख्या बहुत बहुत बड़ी तादाद में है, अतः मारवाडी समाज में सार्वजनिक कार्य का अंगुआपन उसको लेना चाहिये।

श्री बसंतलालजी मालपाणीनें अपने भाषण में पारस्परिक प्रेम की वृद्धि होनी चाहिये और जो स्नेह, प्रेम आज ५० वर्ष पहले दृष्टि-गोचर होता था वह आज इस धनयुग में लुप्त हो रहा है उसके पुनः रूढ होनेपर जोर दिया। अ. भा. महिला परिषद की मन्त्राणी सौ. रमणगोरी बहन हेड़ानें सार्वजनिक कार्य में पुरुषों को स्त्रियोंका साथ लेना चाहियें और पर्दाप्रथा उठानेपर जोर दिया। श्री मोतीलालजी तापडियाने अपने भाषण में कहा कि ऐसे उत्सव प्रसंग समयपर हमें ऐसे कोई निश्चय करने चाहिये जिसका हम पालन करते रहें और समाजोन्नति की योजनाओं को बनाकर कार्य में परिणत करने से देश की उन्नति सरल हो सकती है।

श्री. राधाकृष्ण जी लाहोटी ने अपने भाषण में श्री. सोमाणीजी के इस सुझाव–माहेश्वरी समाज के उत्पत्ति के ऐतिहासिक खोज का समर्थन करते हुए कहा कि वर्तमान युग में कोई बुद्धिवादी आदमी इस बातमें कतई विश्वास नहीं कर सकेगा कि ७२ उमराव किसी के शाप से पत्थर बन गये और उनकी स्त्रियोंके रुदन से श्री. पार्वतीजी का दि काँपा और उनके अनुनय पर भगवान शिव ने मन्त्रोच्चारण द्वारा उनको सजीव बना दिया।

ऐसी किंवदन्तियोंमें कोई तथ्य नहीं है उचित तो यह है कि श्री सोमाणीजी जै आदमी इसमें आगवानी ले अन्वेषणके कार्य हार्दिक मदद कराके इतिहास लिखावें।

एक बहनके स्त्रियोंके सामाजिक कार्य सहयोग देने की अपील करनेके पश्चात श्री रामनारायणजी राठीने श्री लाहोटीजीकी बात जोरोंसे समर्थन किया और कहा कि माहे महासभाको इसमें नेतृत्व लेना चाहिये, और एक समिती बनाकर इसकी खोज करनी चाहि और जिस निर्णय पर ये पहुंचेंगे वह लोगोंके लिये मान्यप्रद और हितकर होंगे आपने बहनों में जो पर्दा प्रथा है उसको हटानेके संबंधमें और उनमें शिक्षा प्रसार की आवश्यकता पर जोर दिया।

श्री रामनाथजी झंवर द्वारा सभापति धन्यवाद देने पर सभा विसर्जित हुई।

हमारा राजस्थान

जोधपुर में समझौताः सब राजब रिहा

अन्त में जोधपुर में भी सम होकर सब राजबन्दियों को रिहा कर दि गया है। २४ मई को एक सरकारी वि में यह कहा गया है कि मारवाड़ लोक प ने यह आश्वासन दिया है कि वह सरका साथ सहयोग की नीति से काम लेकर मार्ग में कोई अड़चनें पैदा नहीं करेगी युद्धप्रयत्नों भी बाधा नहीं डालेगी। दूसरी मारवाड़ के लोकनायक श्री. जयनारा व्यास ने अपने एक लम्बे वक्तव्य में जो होने के पहिले दिया गया है, बताया है उनकी या लोक परिषद की ओर से स्वीकारं करने जैसी कोई बात नहीं हुई। उन्होंने श्री. गंगादासजी के बार बार मिल किए गए आग्रह पर पुलिस इंस्पेक्टर जनरल कई बार लम्बी मुलाकातें करके उनके इस को दूर करने का यत्न किया कि परिषद महाराज या उनकी सरकार के विरुद्ध जा दारों के साथ मिल कर कोई षडयंत्र रचा है

खिलाड़ी खेल, खिलौने

(पृष्ठ १० का शेष)

फाड़ता है, घरकी वस्तुओं को फेंकता तोड़ता है, है और पानी तथा मिट्टी से अपने मलमूत्रसे ही खेलता है।

यह अवस्था बहुत ही सावधानी से लने का समय है क्योंकि दो वर्ष की आयु बच्चा अपने हमजोलियों के संग खेलना नहीं करता है। इस आयुतक उसका एकाकी–स्वयं को प्रसन्न करना ही रहता है के लिये वह बड़ों के आचरण की नकल का बहुत प्रयत्न करता है। यदि बड़ों ने भी अनुचित, अनुपयुक्त या अयोग्य बालक के सामने किया तो बालक भी वैसा व्यवहार करने का प्रयत्न करता है। इस में नकल करने की प्रवृत्ति अधिक रहती है।

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल

इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड

संस्थापित सन् १९१९

★

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—: हमारी शाखाएं :—

अहमदाबाद
(गांधी रोड)

बोटाद
(काठियावाड़)

कलकत्ता
(१३५, कैनिंग स्ट्रीट)

लाहौर
(दी माल)

कम्पाला (युगाण्डा)
(बाम्बो रोड)

★

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेण्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए :—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :— सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B.A., B. Sc., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India
Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

श्रीमती एनोफील—जनशत्रु नं० १

मलेरिया, जो सबसे अधिक भयावह और हमारे देशका अत्यन्त साधारण रोग है, प्रतिवर्ष ३० लाखसे अधिक व्यक्तियोंके प्राणोंका गाहक बनता है। इसके लगातार आक्रमणोंसे उत्पन्न विभिन्न शिकायतोंके कारण और भी अधिक संख्यामें लोगोंको कष्ट सहना पड़ता है।

तथापि मलेरियाका कारण सिर्फ एक ही प्रकारके मच्छर—'एनोफील' और वह भी स्त्री जातिके मच्छरोंसे पैदा होता है। यह मच्छर मलेरियाग्रस्त लोगोंका खून चूसकर दूसरोंके शरीरमें रोगके कीटाणुओंका प्रवेश कराता और इस प्रकार मलेरिया फैलाता है।

इन मच्छरोंकी उत्पत्ति बंधे जलाशयोंमें होती है, अतएव उनका विनाश करनेके लिये पहला आक्रमण यहींसे शुरू होना चाहिये। इन जलाशयोंको भर दें अथवा बिल्कुल पानी निकाल फेकें या पानीमें कीटाणुनाशक औषधियां डाल दें जब भी सम्भव हो, मशहरीके नीचे सोयें और श्रीमती एनोफीलको अपनेसे दूर रखें।

यदि, इसपर भी आप मलेरियाके शिकार हो जायें तो तत्क्षण किसी अनुभवी डाक्टरकी सलाह अपनी हिफाजत और रोग विस्तार रोकनेके लिये लें।

* * *

भारत के जनस्वास्थ्यकी हिफाजतके लिये यह चेतावनी
दी जा रही है। इस विज्ञापनके हस्ताक्षरकारियों और
जनताका स्वार्थ एक ही समान है।

न्यू एशियाटिक इन्स्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड

जीवन, आग, जहाज, दुर्घटना, खतरा आदिके बीमेका
कारबार करती है।

हेड आफिस—न्यू एशियाटिक बिल्डिंग, कनाट सर्कस, नयी दिल्ली।

कलकत्ता आफिस—८ रॉयल एक्सचेञ्ज प्लेस। ❀ बंबई आफिस—इम्पीरियल बैंक एनेक्स बिल्डिंग फोर्ट, बंबई।

मद्रास आफिस—२८९ लिंगा चेट्टी स्ट्रीट जार्ज टाउन।

माहेश्वरी

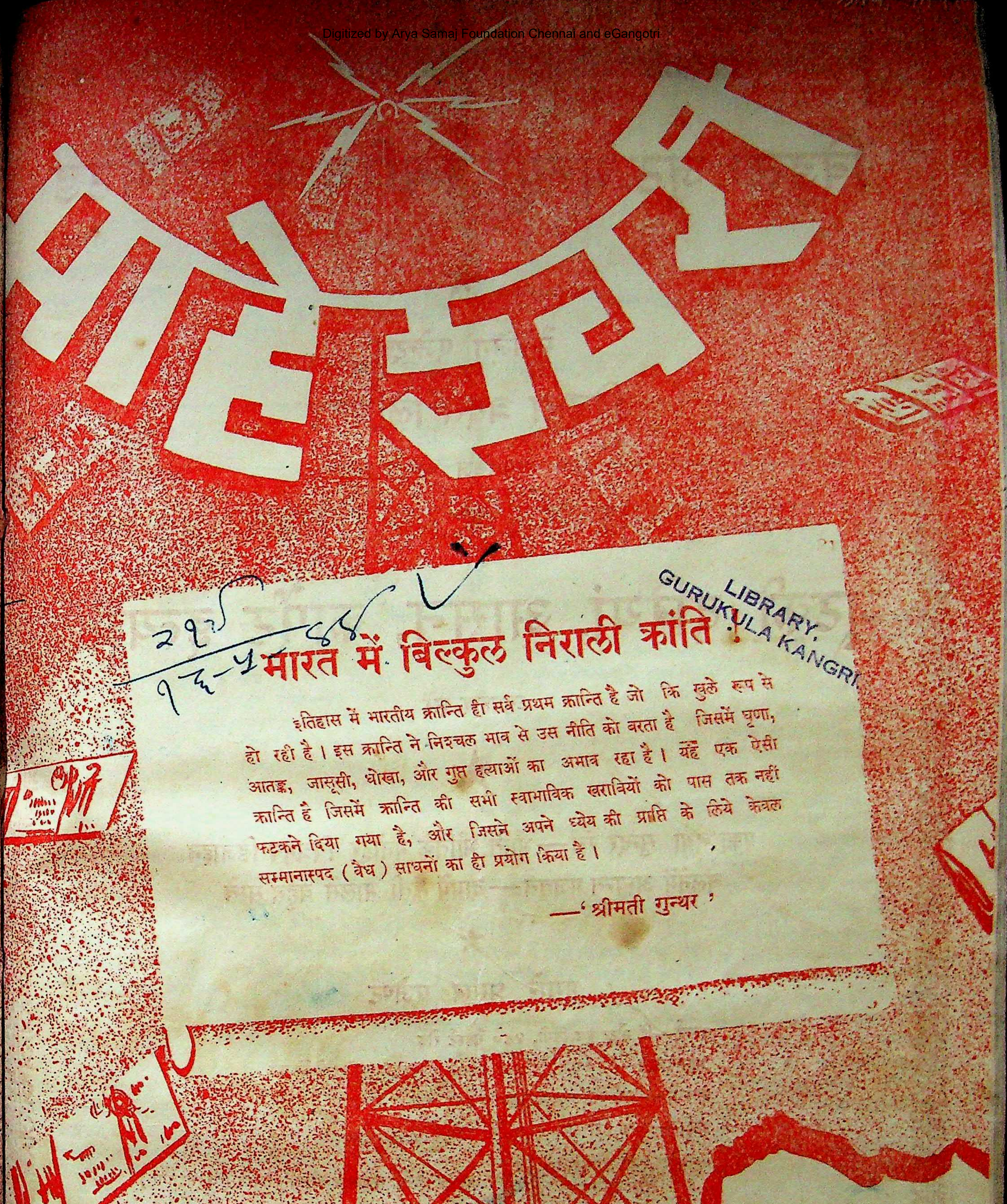

२९२५ ४४
१६-५

LIBRARY,
GURUKULA KANGRI

भारत में बिल्कुल निराली क्रांति !

इतिहास में भारतीय क्रान्ति ही सर्व प्रथम क्रान्ति है जो कि खुले रूप से हो रही है। इस क्रान्ति ने निश्चल भाव से उस नीति को बरता है जिसमें घृणा, आतङ्क, जासूसी, धोखा, और गुप्त हत्याओं का अभाव रहा है। यह एक ऐसी क्रान्ति है जिसमें क्रान्ति की सभी स्वाभाविक खराबियों को पास तक नहीं फटकने दिया गया है, और जिसने अपने ध्येय की प्राप्ति के लिये केवल सम्मानास्पद (वैध) साधनों का ही प्रयोग किया है।

—'श्रीमती गुन्थर'

वार्षिक मूल्य
४।) रुपया
एक प्रति का ।≈)

वर्ष ३५
संख्या १

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

प्रवतक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा
पाक्षिक
कार्यालय—अली चेम्बर्स, ग्रीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

बिड़ला जूट मैन्यूफेक्चरिंग कं. लिमिटेड

* * *

मैनेजिंग एजेन्ट्स
बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड
८, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

* * *

जूटकी दरियां, आसन, कार्पेट इत्यादि

व्यवहार करें

* * *

पक्का तथा सुन्दर रंग — भाँति भाँतिके मनोहर चित्रमय डिजाइन
चलनेमें अत्यन्त मजबूत — दाममें सूती मालसे बहुत सस्ते

* * *

हमारे प्रमुख एजेण्ट

बम्बई—दि मोटर हुड डिपो, ४८० सैंढर्स्ट रोड
अहमदाबाद—दि अग्रवाल हेशियन एजन्सी, जेठालाल वकील बिल्डिंग।
कराची—मेसर्स जे. ललवानी ऐण्ड कम्पनी, कागजी बाजार
इन्दोर—होम्स इंडस्ट्रियल एजेन्सी यशवंतगंज
खानदेश, पूना, अहमदनगर और नासिक — मेसर्स लाहोटी ब्रदर्स, राजस्थान चौक, संगमनेर (अहमदनगर)

यदि आपके शहरमें कोई एजेण्ट नहीं है तो
एजेंसीके लिए हमसे पत्र-व्यवहार करें।

LIBRARY,
GURUKULA KANGRI.

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल मुरारका
बी.ए., बी.एस्.सी. एलएल.बी.

' उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत '

वर्ष ३५, संख्या १]
बम्बई ता. ७ मई १९४४
[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

जीवन और जागृतिका संदेशवाहक 'माहेश्वरी'

● [लेखक श्री. **विश्वभरप्रसाद शर्मा**, सम्पादक ' आलोक '] ●

"माहेश्वरी" सम्पादक श्री. भाई राधाकृष्ण जी लाहोटी का स्नेहयुक्त पत्र मिला कि "माहेश्वरी" १ मई से ३५ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है...आप इस अवसर पर अपना शुभ संदेश भेज कर अनुग्रहीत करें।" 'माहेश्वरी' के साथ मेरा वीसों वर्षोंका अभिन्न सम्बंध है। एक लंबे अर्से तक मुझे उसका सम्पादन करने और इस नाते माहेश्वरी समाज के निकट सम्पर्क में आनेका सौभाग्य प्राप्त हो चुका है। अतः श्री. लाहोटी जी का पत्र पाकर अनेक चिर संचित स्मृतियां जागृत हो उठीं। तपोधन श्रद्धेय श्री कृष्णदासजी जाजू की प्रेरणा से मैंने अ० भा० माहेश्वरी महासभा के गत ५० वर्षों के इतिहास का १९४१ के सत्याग्रह आंदोलन के वक्त नागपुर सेन्ट्रल जेल में संकलन किया था। उक्त इतिहास लेखन के सिलसिले में 'माहेश्वरी' पत्र के अतीत के ऊपर भी वहुत सी मूल्यवान सामग्री मिली। जेलसे निकलने के बाद माहेश्वरी महासभा के इतिहास सम्पादन के सिलसिले में हमें मेरठ, सहारनपुर, हापुड़ और देहली आदि अनेक स्थानों पर कुछ प्राचीन सामग्री प्राप्त करने के लिये भ्रमण करना पड़ा। इस भ्रमणकाल में काफी सामग्री मिली और उससे 'माहेश्वरी' के अतीत इतिहास पर बहुतसी बातें मालूम हुईं हमने इस संबंधमें कुछ सज्जनों को 'माहेश्वरी' के पुराने अंक, माहेश्वरी महासभाकी पुरानी रिपोर्टें आदि सामग्री भेजने के लिये भी लिखा था। हमें यह कहते हर्ष होता है कि त्याग और साधना की मूर्ति श्रीमती गुलाबदेवीजी भट्टर अजमेर ने हमें बहुतसी मूल्यवान सामग्री भेजी। महासभा के इतिहास में हमने उसका कृतज्ञतापूर्वक उपयोग किया है और वह चीज यथा समय माहेश्वरी समाज और माहेश्वरी के पाठकों के समक्ष प्रस्तुत होगी।

ये पंक्तियां लिखते समय हमारे समक्ष "मासिक पत्र माहेश्वरी'' के संवत १९५१ और ५२ के कुछ अंक मौजूद हैं। उस वक्त आज का विविध विषय विभूषित और प्रगतिशील 'माहेश्वरी' पत्र आठ पेजी साइज पर करीब १६ पृष्ठों में निकलता था। हम आसानी से अनुमान कर सकते हैं कि आज से ५०-५५ वर्ष पहले का जमाना इतना साधनसम्पन्न और वैज्ञानिक न्यामतों से परिपूर्ण नही था। मुद्रण कला तो उस वक्त शिशु अवस्थामें थी। हिन्दीका जो परिष्कृत रूप आज दिखाई पड़ता है, उसका भी उस समय शैशवकाल था। हर जगह उर्दू तौर तरीकोंका वोलवाला था और हिन्दु या मुसल्मानों की भाषामें कोई भेद न होता था। हिन्दुओं की व्याहशादियों तक की चिट्ठियां उर्दूमें लिखी जाती थीं और अगर कहीं हिन्दीको प्रश्रय मिला भी तो उस पर उर्दू की छाप रहती थी। वस्तुतः हिन्दी और उर्दूमें उस वक्त केवल लिपि का भेद था। इसी हिसाबसे सामाजिक संस्थाओंका कार्य भी चलता था।

"माहेश्वरी" का जन्म

हां, हम यह कहना चाहते थे कि आज के सुसम्पादित और मुद्रण कलाके सुन्दरतम स्वरूप 'माहेश्वरी' का जन्म इसी साधन विहीनता के युगमें सबसे पहले संवत् १९४९ वि० में स्व. ला. रामविलास जी शारदा द्वारा अजमेर में हुआ। अजमेर से एक अंक ही निकल कर उसका प्रकाशन वहां से बंद हो गया। संवत् १९५० में आगरे से फिर इसका प्रकाशन आरंभ हुआ किन्तु वहां से भी दो अंक निकलकर उसका प्रकाशन फिर कुछ अर्से तक स्थगित रहा और फिर चैत्र सुदी १५ संवत् १९५१ को हापुड़ में श्री. हरशरण दासजी तापड़िया के सम्पादकत्व में इस का प्रकाशन आरंभ हुआ। लेकिन "माहेश्वरी" के प्रकाशनका यह सिलसिला भी ज्यादा लम्बा न चला। हापुड़ से 'माहेश्वरी' का प्रकाशन कुछ वर्ष बाद श्री. हरशरणजी तापडिया का स्वर्गवास हो जाने से बंद हो गया। 'माहेश्वरी' फिर इस तरह दीर्घ काल तक बंद रहा। करीब १० वर्ष बंद रहने के बाद चैत्र संवत् १९६८ में फिर 'माहेश्वरी' ने स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा के सदुद्योगों से पुनर्जन्म प्राप्त किया।

श्री. भागीरथदासजी भूतड़ा के सम्पादकत्व में प्रकाशित होने से पूर्व 'माहेश्वरी' का नाम 'महेश्वरी' था और माहेश्वरी शब्द का उस वक्त समाज में प्रचलन नहीं के बराबर था। हापुड़ से प्रकाशित होनेवाले 'महेश्वरी' के कुछ अंक आफिशियल प्रेस मेरठ में मुद्रित हुए और उसके बाद वह वैदिक यंत्रालय अजमेर से छपता रहा लेकिन उसका प्रकाशन स्थान हापुड़ ही रहा। उसके मुखपृष्ठ पर "श्रीगणेशायनमः" के अलावा संस्कृत में "कः कालः कानि मित्राणि, को देशः को व्ययागमौ। कश्चाहं काचमे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः।" तथा "सजातो येन जातेन..." श्लोक छपते थे और उसके नीचे "परिवर्ती संसार में जन्म्या सो मर जाय। जात बधावो जो करे अजर अमर हो जाय॥" इसके बाद "महेश्वरी" शब्द टाइप में ही लिखा रहता था और उसके नीचे एक दोहे के बाद यह छपा रहता था—"महेश्वरी सदर सभा की आज्ञानुसार तथा महेश्वरी कुलभूषण रावबहादुर श्यामसुन्दर लाल जी लोईवाल, (किशन गढ राज्य के प्रधान) के आश्रय से सम्पादक ला. हरसरन दास तापड़िया द्वारा स्थान हापुड़ जिला मेरठसे हर पूर्णमासी को प्रकाशित होता है। मूल्य १ रु० साल"

"माहेश्वरी" की आजसे ५० वर्ष पूर्व की भाषा आज के जितनी साहित्यिक और परिष्कृत नहीं-थी, न सम्पादकीय लेखोंका कोई नियम था। सम्पादकीय के नाम पर एकाध छोटासा नोट रहता था। और कभी कभी लेख सामग्री दूसरों की होती थी। किन्तु वह सब सामग्री जाति सुधार विषयकी रहती थी और समाजके लोग उसे न केवल दिलचस्पीसे पढ़ते थे बल्कि उसकी नसीहत पर अमल करना अपना फर्ज समझते थे।

"वैश्य हितकारी" जनवरी सन् १९३६ के अंक में वैश्य महासभा की रिपोर्ट में "माहेश्वरी महा सभा अजमेर के वार्षिक अधिवेशन" का भी विवरण दिया गया है। इस विवरण में "माहेश्वरी पत्र" का भी जिक्र है। लिखा गया है कि "माहेश्वरी महत सभाने जातिहित और सुधार के जो कार्य अब तक किये हैं उनमें से एक मुख्य कार्य यह भी है कि सभा के उद्योग से एक छोटासा "माहेश्वरी" नामक मासिक पत्र निकल्ल प्रतिमास माहेश्वरी सरदारों की सेवा में भेज जावे। इस पत्र से जो लाभ हो रहे हैं या होंगे वह किसी महाशय से छिपे नहीं। यह पत्र प्रथम संवत् १९४९ वि. में ला. रामविलासजी शारदा के प्रबंध से अजमेर नगर से निकला। परन्तु शोक कार्यकर्ताओं के अभाव से पानी के बुलबुले के तुल्य एक ही वार उठकर फूट गया। फिर संवत १९५० में आगरा नगर से उसने दूसरी बार जन्म ग्रहण किया परन्तु शोक जब केवल दो ही मास का बच्चा था आलस्यरूपी शीतला का खाजा बन गया। तीसरी बार अब इसने मिति चैत्र सुदी १५ संवत् १९५१ को हापुड़ में जाकर फिर जन्म लिया और तब से आज पर्यन्त ला. हरसरनदासजी तापड़िया सम्पादक महेश्वरी पत्रकी गोदमें अमन करता

(शेष पृष्ठ ७ के कालम ३-४ पर)

श्री. रामकृष्ण जी धूत सभापति अ. भा. माहेश्वरी महासभा ने माहेश्वरी के लिए भेजी हुई अपनी शुभ कामना में कहा है:—

"माहेश्वरी ३४ वाँ वर्ष पूरा कर ३५ वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है, यह हर्ष की बात है। माहेश्वरी आप के सम्पादकत्व में उत्तरोत्तर उन्नति करता रहे, यह मेरी आन्तरिक कामना है।

विश्ववंद्य महात्मागांधी

ईश्वर आपको शीघ्र स्वस्थ करें

माहेश्वरी

" कर्मण्येवाधिकारस्ते
मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० ७ मई १९४४

नववर्ष !

मनुष्य किसी भी अवस्था में एवं परिस्थिति में अपने नये वर्ष के प्रवेश में खुशी और आनन्द मानाता है जो कि स्वाभाविक है। सुखी पुरुष इस आशा से कि आगामी वर्ष गतवर्ष की तुलना में और अधिक सुखकर और समृद्धियुक्त बीते, और दुःखी पुरुष अपने दुःखसे आगामी वर्ष में छुटकारा पाते देखें। नये वर्ष के उदय पर आगामी वर्ष के लिये अनेक विचारों की एवं नयी नयी योजनाओं की सृष्टि में वह मग्न रहता है। 'माहेश्वरी' भी अपने नये वर्ष के प्रवेश के समय अपनी खुशी आनन्द मनावे यह भी स्वाभाविक ही है। यद्यपि हमारी उस सुखी पुरुष की तरह की स्थिति नहीं है और न उस दुःखी पुरुष की भाँति हम दुःख का चिन्तन करते हैं फिर भी यह बात निश्चित है कि इस आनन्द और प्रसन्नता में एक अदृश्य कमी को जरूर अनुभव करते हैं। देश के अनेक रत्न आज जेल के सींकचों में देश की आजादी की कामना के दोषारोपणसे बन्द हैं। अन्न की कमी के कारण भूखसे पीड़ित अनगिनत भाई-बहनों के करुण क्रन्दन की आवाज चारों ओरसे सुनाई पड़ रही है। आम महंगी के कारण सर्वसाधारण की—मध्यम श्रेणी एवं नियत आमदनीवालों की स्थिति अधिक दयनीय व शोचनीय होती जा रही है। ऐसे दुःसमय में समय व परिस्थितिको विचार कर धैर्यपूर्वक मार्ग अतिक्रमण करते हुए भविष्यत का सुखद चित्र मनमें अंकित करके हँसते हँसते आगे बढ़ते जाना, यही प्रेयस् और श्रेयस् है।

यद्यपि 'माहेश्वरी' संवत् १९४९ से इस धरतीतल पर प्रगट हुआ है और बीच बीचमें रोगी आदमी की भाँति उसको जीवन रुग्णावस्था में कुछ समय बिताना पड़ा हो फिर भी आज वह प्रकाशन के ३५ वें वर्षमें पदार्पण कर रहा है, उस समय जिन दिवंगत महान आत्माओं ने समाज सेवा की भावना से प्रेरित होकर अपना जीवन लोकहित कार्यों की ओर लगाया उनको एवं जिन विद्यमान पुरुषों ने इस कार्यको आगे बढ़ाने में भरसक अविरत परिश्रम किया है उन सब की सेवाओं का स्मरण एवं धन्यवाद अञ्जलि प्रदान करना, हमारा प्रथम कर्तव्य है। जबतक समाज सेवा की भावना हम में विद्यमान रहेगी तब तक उन पुरुषों को भूलना असम्भव है।

कई लोगों की यह कल्पना है कि यह पत्र एक ऐसे समाज का है जिनका अधिकतर जीवन व्यावसायिक क्षेत्रोंमें बीतता है, और यह यह आम ख्याल है कि जिस प्रकार की पगड़ी इन व्यावसायिक लोगों में बाँधी जाती है, वह प्रायः धनिक समाज का ही प्रतीक है। ये दोनों विचार जब ऐसे लोगों में हम पाते हैं जो कि इस समाज के अति निकट सम्पर्क में आये हैं तब हमें दुःख से कहना पड़ता हैं कि वह अपनी अति निकटता का दुष्परिचय दे रहे हैं। एक प्रकार की पगड़ी बाँधनेसे या उस भूमिसे ही आनेवाले सारे लोग धनी नहीं हो जाते हैं। राजस्थान अपनी वीरता के लिये विख्यात है, बंगाल अपनी भावना के लिये, मद्रास अपनी विद्वत्ताके लिये, एवं महाराष्ट्र ब्राह्मण अपने समाजसेवा के लिये। इसका अर्थ ऐसा नहीं होजाता कि ये भावनायें वहां के सभी निवासियों में शतप्रतिशत भरी पड़ी हैं। और यूँ तो विदित ही है कि भारत किसी जमाने में बहुत ही धनिक रहा होगा किन्तु आज वह गरीब है और यहाँ तक है कि उसके प्रति व्यक्ति की दैनिक आय ३ आने है। अर्थ-शास्त्रों से हम देख सकेंगे कि देश के विशाल भाग में ऐसे लोग हैं जिनकी संख्या बड़े परिमाण में गिनी जाती है पर जिन्हें दिन में एक समय का भी अन्न मयस्सर नहीं तो फिर आखिर यह समाज भी तो उस देश का अंगांगी है, अतः यह कहना कि यह पत्र एक धनवान समाज का है, ये दोनों ही बातें गलत हैं।

'हम कई बार यह बतला चुके हैं कि यद्यपि यह पत्र अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा का मुखपत्र है फिर भी जो समस्यायें इस समाजके सम्मुख हैं वे ही समस्यायें प्रायः सारे भारत वर्षके सम्मुख हैं। और भारत वर्ष की उन्नतिमें इस समाज की उन्नति निहित है और प्रत्येक समाजके लोग दूसरे समाजोंके हित और अधिकारों की ओर न्याय पूर्ण बर्ताव करते हुए और भारत का समष्टिरूपसे हितको ध्यानमें रखते हुए प्रगति की ओर उद्योग करें तो इसमें ही भारत की प्रगति है। अतएव हम समय समय पर लोगोंसे इस कार्यमें मदद लेनेके लिये अपील करते रहे हैं, उनको हम फिर आज दोहरा रहे हैं।

हम अपने इस नये वर्षके उपलक्षमें पाठक बन्धु, लेखक और कविगण, व माहेश्वरीके कार्यको आगे बढ़ानेमें सहयोग देनेवाले अनेक उदार हृदय बंधुओं, एवं विज्ञापनदाताओंको शुभकामना समर्पित करते हैं। और आगामी वर्षमें भी उनकी ओरसे इसी प्रकारसे सहयोग मिलता रहेगा हम ऐसी उम्मीद करते हैं।

इस वर्ष के उपलक्ष में हम दो शब्द विद्यार्थियों एवं युवकों की सेवा में कह देना चाहते हैं। उनकी ओर हमारा खास आकर्षण रहना स्वाभाविक है। देश में और विदेशों में देश और विदेश की वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए हम उनसे आग्रह करते हैं कि हमारे देश के लिये जो श्रेयस् हो और जिस सिद्धान्त पर इस पत्र की नींव है उस की सुरक्षा करते हुए अपना सहयोग हमें प्रदान करें। जबतक हम अधिक क्रियावान् और सामयिक विचारों से प्रेरित होकर काम करने के लिये आगे न आयेंगे तबतक हम अपने देश को वर्तमान अवस्था से ऊपर न उठा सकेंगे। आज जो महात्मा एवं अन्य देश-बन्धु जिन महान् तपस्याओंमें लगे हुए हैं, और जिस आकांक्षा से प्रेरित होकर अनेक दुःख व यंत्रणायें झेल रहे हैं, उनके कार्यों में हम कायिक, मानसिक, व आर्थिक सहयोग न देंगे तो हम अपने कर्तव्यों से विचलित हो रहे होंगे, एवं आत्म-हत्या कर रहे होंगे। अतः हम उन से अपील करते हैं कि देश की वर्तमान परिस्थिति को वह सोचें और जहाँ-जहाँ समाज के कष्टों को, दुःखों को बढ़ाने का कार्य होता हो, उस को निडरता के साथ रोकें, एवं देश की आजादी और उन्नति में पूर्ण रूप से सन्नद्ध हों।

समाज में वृद्धविवाह

इन दिनों में कई मित्रों ने हमारा ध्यान खेंचा है कि समाज में वृद्धविवाह काफी जोरोंसे हो रहे हैं। यों तो विवाहोंके सम्बन्ध में सामाजिक पत्रोंमें कितनीवार लिखा जा चुका है एवं ऐसे विवाहों के प्रति समाज में रोष पैदा करने के लिये समाज में जितना भी कार्य करने की जरूरत है वह किया गया है, और किया जाता है। जब जब आन्दोलन बहुत जोर पकड़ता है, और अत्रतत्र युवकगण उन विवाहों को रोकने की भरसक कोशिश करते है तब तब ऐसे विवाह करने की इच्छा रखने वाले लोग अपने विचारोंसे विचलित हो जाते हैं। अधिकतर देखा गया है कि समाज सुव्यवस्थाके नियमों को तोड़नेवाले वही लोग होते हैं जिनके मन में धनका अभिमान व घमण्ड इतना आजाता है कि वे अपने आपको ही विधाता मान बैठते हैं। हम देखते हैं कि और स्थानों पर तो अच्छे कामोंके करने में उनकी बुद्धि को लकवा मारा रहता है, किन्तु ऐसे कार्य करनें में वे आगे आ जाते हैं। हम युवकोंसे आग्रह करते हैं कि समाज को घुन लगानेवाले ऐसे व्यक्तियों को ऐसे कार्य करने से उपराम करावें।

और थोड़ा आगे बढ़िये

विवाह मौसम में हमारे पास रचनेवाले विवाहों के अवसरों पर उपस्थित होने व आशीर्वचन प्राप्त करने के लिये कई निमंत्रण पत्र आते रहते हैं। इन्हें पाकर प्रसन्नता होती है और विशेष प्रसन्नता तब जब होती है कि पुराने विचारों के पुरुषों की ओर से आमंत्रण पत्रों में विवाहेच्छुक वरवधू के चित्र साथसाथ में दिये जाते हैं। किन्तु दुःख होता है जब विवाह संस्कार के समय वधू को घूँघट कराया जाता है, जिसे वह अपनी मृत्यु तक उसी अवस्था में रखने की अभिलाषा रखते हैं।

हम उन भाइयों की सेवा में आदर व प्रेम के साथ कह देना चाहते हैं कि निमंत्रण पत्र भेजते वक्त वे पर्दा प्रथा कुसंस्कार को त्यागने का साहस प्रकट करते हैं—उदाहरणार्थ प्रायः जो निमंत्रण पत्र हमें मिलते हैं उन पर वरवधू के फोटो छपे हुए होते हैं जो कि बिल्कुल खुले मुँह होते हैं। रूढ़िग्रस्त भाइयों के ऐसे पत्र पाकर हमें यह सोचकर प्रसन्नता होती है कि अब ये भाई भी सुधारपूर्ण कार्य करने की ओर प्रवृत्त हो रहे हैं। पर हमें यह देखकर फिर खेद होता है कि विवाह के शुभ संस्कार पर कन्या को घूँघट ही कराया जाता है। हम यह जानते हैं कि अनेक वार कन्या के अभिभावको के दिलों में पर्दाप्रथा का अन्त करने का भाव रहता है, फिर भी बिरादरी के कतिपय व्यक्तियों के दबाव या अभ्यासवश वे लोग घूँघट में ही विवाह होने देते हैं। ऐसे सज्जनों से हमारा निवेदन है कि जहाँ आपने सुधारकदम बढ़ाने का साहस किया है वहाँ अच्छे कार्य के लिये थोड़ा और आगे बढ़िये। डरना तो खराब कामों में चाहिये, अच्छे काम करने में भय, लज्जा व शंका क्यों करनी ?

बहुत बड़ी जरूरत की पूर्ति

बीकानेर के सेठश्री छोटूलालजी मोहताने माहेश्वरियों में विधवा विवाह प्रचलित करने और विवाह करनेवाली माहेश्वरी स्त्रियों की सहायताके लिए माहेश्वरी विधवा विवाह सहायक फंड स्थापित कर और स्वयं १० हजार रु. देकर फंडकी रजिस्ट्री कराकर समाजकी एक बहुत बड़ी जरूरत की पूर्तिकी है। निर्दोष युवतियों को पतिके मर जानेपर आजीवन वैधव्य जीवन बिताने के लिए समाज द्वारा बाध्य किया जाना ऐसा नृशंस अत्याचार है कि उसकी जितनी भी निंदा की जाय थोड़ी है। समाजका विधान अन्याय, और पक्षपातपूर्ण एवं एकांगी है। पुरुषपर विवाह के मामलेमें कोई प्रतिबंध नहीं है, किन्तु स्त्री अपने जीवन में केवल एकही बार विवाह कर सकती है और पतिके मरने के वक्त वह बलात् सन्यासिनी बनायी जाती है जिसका दुष्परिणाम प्रत्यक्ष है। एक तरफ तो समाजमें अनाचार फैल रहा है और दूसरी तरफ समाज दिनवदिन क्षीण हो रहा है। इस वस्तुस्थितिका अन्तकरना ही वास्तविक और ठोस समाज सेवा है। जबतक विधवायें बिलखती रहेंगी, कोई भी समाज उन्नत और बलिष्ठ नहीं हो सकता। श्री छोटूलाल जी ने यह फंड स्थापितकर माहेश्वरी समाज की अमूल्य सेवा की है। हमें यह जानकर और खुशी हुई कि सुप्रसिद्ध समाज सुधारक श्री रामगोपाल जी मोहताने अपनी ओरसे १० हजार रु. प्रदानकर फंडको दूना कर दिया है। हम मोहता द्वय को इस समाजोपयोगी कार्य के लिए धन्यवाद देते हुए समाज के धनीमानी सज्जनों से इस फंड को बढ़ाने के लिए मुक्त हस्तसे दान देने का अनुरोध करते हैं।

(शेष पृष्ठ २४ के कालम ४ पर)

गुरुकुल कांगड़ी का समावर्तन-समारोह

वर्तमान शिक्षामें आमूल परिवर्तन आवश्यक

गुरुकुल प्राचीन संस्कृतिकी परम्पराका रक्षक है

स्नातको ! अपने आचरणसे सच्चे आर्य बनो

डा० अमरनाथजी झाका दीक्षांत भाषण

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी हरद्वारके ४२वें वार्षिकोत्सवके अवसर पर दीक्षांत भाषण देते हुए इलाहाबाद विश्वविद्यालयके वायस चांसलर श्री अमरनाथजी झाने कहा:—

भारतीय संस्कृति की प्राचीन परम्परा को सुरक्षित रखनेवाली इस संस्था में आने का मुझे अवसर मिला है, मेरा सौभाग्य है । भारद्वाज मुनि के आश्रम के समीप प्रयाग विश्वविद्यालय के अध्ययन-अध्यापन में मेरा अब तक जीवन व्यतीत हुआ है और भागीरथी से यही प्रार्थना है कि "त्वदर्पितदृशः स्यान्मे शरीरव्ययः ।" परन्तु प्रयाग में फिर भी आधुनिक उथल-पुथल, चहल-पहल पर्याप्त मात्रा में है । यहाँ आकर विशेष धन्य अपने को मैं इसलिए मानता हूँ कि इस शान्त वातावरण में विद्या, चिन्तन और तप के सभी साधन एकत्रित हैं, और यहाँ सुख से, निःशंक, विद्यार्थी और गुरु, एकाग्र मन से अपने कर्तव्य का पालन कर सकते हैं, क्योंकि "निकटे जागर्ति जाह्नवी जननी ।"

गुरुकुल की स्थापना भारतवर्ष के प्राचीन सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए हुई है । "पुराणमित्येव न साधु सर्वम्"—यह सत्य है और समय के अनुसार समाज में परिवर्तन होना भी उचित है । परन्तु सभ्यता के कुछ ऐसे मूल सिद्धान्त हैं जिनका परिपालन आवश्यक है । भारतीय संस्कृति की कुछ विशेषतायें हैं जिनके कारण यह अभी तक संसार की संस्कृतियां में है और जिनकी जीवित रहने की शक्ति का प्रमाण यह है कि और प्राचीन संस्कृतियाँ नष्ट हो गईं और यह अभी तक विद्यमान है । हाँ, और जीवित रहेगी यदि हम इसके अयोग्य न सिद्ध हों, यदि हम अपने पूर्वजों के निर्धारित मार्ग का अनुसरण करते रहें, यदि हम यह स्मरण रखें कि "तस्मात् शास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ।"

* * *

वर्तमान शिक्षा पद्धति

भारतवर्ष में जो शिक्षा-प्रणाली आजकल प्रचलित है उसमें बहुत से गुण हैं । विज्ञान की शिक्षा, इतिहास और भूगोल की शिक्षा, मनोविज्ञान की शिक्षा, इत्यादि कई अंशों में इससे हमारा बहुत उपकार हुआ है और हो रहा है । पश्चिमीय ज्ञान और पश्चिमीय भाषाओं के सीखने का अवसर मिलता है । परन्तु इस शिक्षा-पद्धति के आदि निर्माताओं की मनोवृत्ति अशुद्ध थी । उनका विश्वास था कि यूरोप की पुस्तकों की एक अल्मारी में जितना ज्ञान मिलेगा उतना समस्त पूर्वीय ज्ञान भाण्डार में भी नहीं है । इस दूषित धारणा से हमारी शिक्षा-प्रणाली अब भी कलुषित है । पश्चिम की सब वस्तुओंका हम सम्मान करते हैं और अपनी सब वस्तुओं की अवहेलना करते हैं । सबसे बड़ा दोष इस प्रणाली में यह रहा है कि शिक्षा एक विदेशी भाषा द्वारा दी जाती रही है । मैं अँगरेज़ी भाषा का विरोधी नहीं हूँ । मैंने अँगरेज़ी साहित्य का रसास्वादन किया है । अँगरेज़ी के अध्ययन और अध्यापन में मुझे आनन्द मिला है । अँगरेज़ी के प्रधान लेखकों की कृति को मैं बड़ी रुचि से पढ़ता हूँ । अँगरेज़ी विश्वव्यापिनी भाषा हो गई है । भारतवर्ष में भी अँगरेजी का प्रचार रहेगा और रहना चाहिए । अँगरेजी का व्यवहार तो अभी बहुत दिन तक इस देश में होता रहेगा । परन्तु यह अनुचित है कि यह भाषा शिक्षा का माध्यम हो । प्रत्येक बच्चे का यह अधिकार है कि उसकी शिक्षा उसकी मातृभाषा द्वारा ही हो । उसी से बच्चा सुशिक्षित हो सकता है । प्रारम्भिक कक्षाओं के बच्चों के प्रति अन्याय है कि मातृभाषा के अतिरिक्त किसी और भाषा द्वारा उसकी शिक्षा हो । मध्यमवर्ग में सम्भव, है कि सभी मातृभाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने में कठिनाइयाँ हों और मुख्य प्रान्तीय भाषा का ही उपयोग हो—परन्तु उस समय तक विद्यार्थी मन से और शरीर से इस भार को सह सकेगा । उच्च कक्षाओं में भी यथाशीघ्र देशी भाषाओं द्वारा ही शिक्षा होनी चाहिए । इससे सम्भव है कि व्यय कुछ बढ़ जाये, कई संस्थाओं में एक से अधिक भाषा का प्रबन्ध करना आवश्यक हो । बम्बई में गुजराती और मराठी के भिन्न-भिन्न वर्ग होंगे, संयुक्तप्रान्त, पंजाब और बिहार में हिन्दी और उर्दू के भिन्न भिन्न वर्ग होंगे । परन्तु फिर भी अपनी भाषा में अपने विचारों को हम सुगमता से प्रकट कर सकेंगे और विद्यार्थी सुगमता से समझ सकेंगे । इसके लिये आवश्यक है कि प्रत्येक पाठ्य विषय पर देशीय भाषाओं में पुस्तकें लिखी जायँ । जितनी हिन्दी और उर्दू के प्रचार के लिए संस्थायें हैं उनको चाहिए कि और सब काम को छोड़कर इस ओर ध्यान दें और उत्तम से उत्तम पुस्तकें लिखवायें और प्रकाशित करें । यहाँ गुरुकुल में आरंभ से ही समस्त शिक्षा हिन्दी में हो रही है और यहाँ की एक विशिष्टता है जिसकी जितनी प्रशंसा की जाय कम है ।

वर्तमान शिक्षा पद्धति की दूसरी कमी यह यह है कि इसमें धार्मिक शिक्षा का कोई स्थान नहीं है । राजकीय विद्यालयों में इसका कारण यह था कि राजधर्म देश के निवासियों के धर्म्मों से भिन्न था और धार्म्मिक शिक्षा का प्रबन्ध राजकीय शिक्षाविभाग से होना कठिन था । ऐतिहासिक कारण जो कुछ भी हो, फल यह हुआ कि, लगभग पचहत्तर वर्ष से हम लोगों में धार्म्मिक शिक्षाओं का अभाव रहा है । हमारी पाठशालाओं और हमारे मकतबों में आरम्भ से ही धार्म्मिक शिक्षा प्रधानता रखती थी । धर्म्म का यथार्थ ज्ञान, धार्म्मिक तत्त्वों का परिचय, धर्म्म के इतिहास का अनुशीलन, भिन्न-भिन्न धर्म्मों के सिद्धान्तों का ज्ञान, समुचित रूप से शिक्षित पुरुष की भाँति जीवन व्यतीत करने के लिए आवश्यक है । चरित्र के संगठन के लिए धर्म्म का प्रभाव बहुत ही प्रबल होता है । हमारी शिक्षाप्रणाली में इस सुधार की बहुत बड़ी आवश्यकता है । संसार की बहुत-सी उलझनें, बहुत-सी समस्यायें सुलझ सकती हैं, बहुत-सी अनिष्ट प्रवृत्तियाँ धार्म्मिक शिक्षा द्वारा नष्ट हो सकती हैं । इस शिक्षा से पाशविक अंश हमारी प्रकृति से दूर हो सकता है । इसका प्रभाव हम पर यह पड़ेगा कि हम समस्त सृष्टि से अपने को संलग्न समझेंगे, हम में दया और वात्सल्य का भाव आ जायेगा, हम अपने स्रष्टा के समीप पहुँचने का प्रयास करेंगे, हम अपने को सच्चरित्र, सदाचारी, लोकसेवानिरत बना सकेंगे, मन से, वचन से, शरीर से सत्य और शिव का अनुसंधान करेंगे । "नित्यो धर्मः सुखदुःखे त्वनित्ये ।" गुरुकुल में धर्म्म की शिक्षा होती है, यह सन्तोष का विषय है । यथार्थ धार्मिक पुरुष वह है जिसके विचार, मत, और भाव में संकीर्णता न हो । "नैको मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम् !" यह आवश्यक है कि अपने धर्म का परिपालन करते हुए हम यह भी मानें कि औरों को भी अपने धर्म के पालन करनेका अधिकार है । जो पुरुष वास्तवमें धार्मिक है वह तो कभी अन्य मतों और धर्मों की अवहेलना नहीं करेगा । उसका सिद्धान्त है—"वसुधैव कुटुम्बकम् ।"

वर्तमान शिक्षा-प्रणाली की एक और कमी यह है कि अधिकतर विद्यालय शहरों में स्थापित हुए और इसके कारण विद्यार्थियों को अपने घरों से बहुत दूर जाकर रहना पड़ता है । कई बड़े प्रासादतुल्य विद्यालय बन गये, छात्रावास भी सुन्दर से सुन्दर बने, विद्यार्थियों का रहन-सहन भी आवश्यकता से अधिक विलासमय हो गया ।

(अपूर्ण)

माहेश्वरी विधवा विवाह सहायक फण्ड

बीकानेर के सेठ श्री छोटूलाल जी मोहता ने माहेश्वरियों में विधवा-विवाह प्रचलित करने और विवाह करने वाली माहेश्वरी स्त्रियों की सहायता के लिए 'माहेश्वरी विधवा विवाह सहायक फण्ड' स्थापित किया है जिसमें आपने १००००) दे कर फंड की रजिष्ट्री करवा दी है और निम्न लिखित सज्जनों को इसके ट्रस्टी मुकर्रर किया है ।

(१) रा. ब. सेठ शिवरतनजी मोहता
(२) सेठ चांदरतन जी मूंधड़ा
(३) सेठ वृजरत्न जी करनाणी
(४) श्रीमान् बालकृष्ण जी मोहता
(५) श्रीमान् छोटूलाल जी मोहता (संस्थापक)

इस फण्ड में बीकानेर के माननीय श्रद्धेय सेठ श्री रामगोपाल जी मोहता ने अपनी ओर से १००००) की बड़ी रकम देकर फण्ड को एकदम दुगुना कर दिया है । अन्य सुधार प्रेमी धनीमानी माहेश्वरी सज्जनों से निवेदन है कि इस फण्ड में उदारता पूर्वक सहायता प्रदान करें ।

विधवा विवाह करने के इच्छुक व्यक्तियों व विधवा बहिनों को इस से लाभ उठाना चाहिये । पूछताछ और पत्रव्यवहार निम्न पते से करें ।

बालकृष्ण मोहता

मंत्री—माहेश्वरी विधवा विवाह सहायक फण्ड
एवं विधवा विवाह सहायक सभा
११ विश्राम भवन
बीकानेर ।

"माहेश्वरी" का ३५ वें वर्ष में पदार्पण

'माहेश्वरी' के ३५ वें वर्षमें पदार्पण करनेके उपलक्षमें देश के विभिन्न क्षेत्रोंके जिन लब्धप्रतिष्ठ सज्जनोंने हमारे पास शुभ कामनाएं भेजी हैं, उनका आभार मानते हुए हम उनकी शुभ कामनाएं नीचे प्रकाशित कर रहे हैं।

—सम्पादक माहेश्वरी

विभिन्न क्षेत्रोंसे शुभकामनाएं

श्री राम गोपालजी मोहता बीकानेर

भूतपूर्व सभापति अ० भा० माहेश्वरी महासभाः—

"माहेश्वरी ३५ वें वर्षमें पदार्पण कर रहा है, यह अत्यन्त खुशीकी बात है। माहेश्वरी की यह बहुत बडी विशेषता रही है कि एक उपजाति विशेषका पत्र होते हुए भी उसके अनेक लेख राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं पर होते हैं। लाहोटीजी योग्य सम्पादक हैं। उनके सम्पादनमें पत्र की बहुत उन्नति हुई है और अधिक उन्नति होने की आशा की जा सकती है। देशमें दुर्भाग्यसे जातीयता, प्रांतीयता, साम्प्रदायिकता आदि विभिन्न अन्तर्विरोधी अहंकार काम कर रहे हैं, जिनकी वजहसे हमारे समय, शक्ति और धनका उपयोग जनताकी वास्तविक भलाईके लिए नहीं हो रहा है। परम्परागत अंधविश्वास और सांस्कृतिक श्रेष्ठताके मिथ्या अभिमानने हमारी राष्ट्रीयताको भी जनता की वास्तविक भलाईकी योजनाओं और आन्दोलनोंसे विमुख करके अतीतके आदर्शोंके स्वप्न देखनेवाली बना दिया। वास्तविकता और भविष्यसे हम विमुख हो रहे हैं। हमारी संकुचित राष्ट्रीयता की दृष्टि हमें प्रगतिशील दुनियासे सामञ्जस्य उत्पन्न करने में सहायक न होकर नाजिज्म और फासिज्म की तरफ ढकेल रही है। सदियों से चली आनेवाली व्यक्ति पूजा की भावना हमें डिक्टेटरशिप की ओर ले जा रही है। यह स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व का मार्ग नहीं है। हमें यदि आगे बढ़ना है तो अंधी मान्यताओं—अतीत के मृत आदर्शों और व्यक्ति पूजा की भावनाओं को त्यागकर वर्तमान की ठोस वास्तविकता पर आना पड़ेगा। प्राचीन संस्थाओं और बुजुर्ग नेताओं की प्रतिगामिनी प्रज्ञा पर ही निर्भर रहना छोड़कर नये सिरेसे अधिकांश जनता के अधिक सुख को लक्ष्यमें रखते हुए सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में क्रांति की भावना जगानी होगी। "माहेश्वरी" से मैं आशा करता हूं कि वह भी इस नवीन नेतृत्व में अपने हिस्से का योग देगा।"

श्री हरविलासजी शारदा, अजमेर

"यह पढ़कर मुझे बहुत हर्ष हुआ कि माहेश्वरी पत्र ३४ वर्ष पूरे कर अब ३५ वें वर्ष में प्रवेश करता है। परमात्मा इसको चिर आयु करें।

'माहेश्वरी' पत्र माहेश्वरी जाति के लिए बड़ा उपकारक है। इसके लेख अमूल्य हैं और जातीय सुधार के लिए हर एक माहेश्वरी को इसे अवश्य पढ़ना चाहिए। भारतवर्ष के आर्य भाषा के अच्छे पत्रों में से यह एक है। कागज, छपाई उत्तम है। मैं आशा करता हूं कि हर एक माहेश्वरी भाई, इसको बराबर पढ़ता रहेगा और जहां जहां दस पांच भी माहेश्वरी रहते हों वहां इसका प्रचार करेंगे।"

रायसाहब श्री पन्नालालजी लाहोटी गुलबर्गा।

"राष्ट्र, हिन्दी साहित्य, एवं माहेश्वरी समाज सेवक 'माहेश्वरी' को अपने जीवन के ३५ वें वर्ष में पदार्पण करने पर बधाई! यह निस्संदेह हिन्दी भाषा के पाक्षिक एवं साप्ताहिक पत्रों में सर्वोत्कृष्ट है। विचारोत्तेजक लेख, निर्भीक सम्पादकीय विचार धारा, समाज चर्चा, राजस्थानी संसार की खबरों का समुच्चय, इसकी अपनी विशेषताएं हैं। यह पत्र दिनदूनी रात चौगुनी गतिसे अपने ध्येय की ओर अग्रसर हो, यह मेरी आन्तरिक कामना है।"

श्री मुरलीधरजी लोया, पूना

कोषाध्यक्ष अ. भा. माहेश्वरी महासभा

"माहेश्वरी पत्र अपने ३५ वें वर्षमें पदार्पण कर रहा है, यह अत्यन्त उत्साह वर्द्धक है। इसने आज तक जो समाज सेवा की है, वह सर्वविदित है। इस पत्र की दिन प्रतिदिन उन्नति हो, यह मेरी आन्तरिक कामना है। इस पत्रका कायापलट करनेमें आपने स्वयं जो परिश्रम किया है उसके लिए आपको धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

श्री. नारायणलालजी पित्ती बंबई

"मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुए कि माहेश्वरी १ मईसे अपने ३५ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि जिस प्रकार आज तक यह जनता की सेवा करता रहा है, उसी प्रकार भविष्य में भी उसे सर्वसाधारण का हित करने में सफलता मिले।"

श्री गजाधरजी सोमाणी बंबई

"माहेश्वरी पत्र अनेक कठिनाइयों एव विषय परिस्थितियों को पार करके आज अपने जीवनके ३५ वें वर्षमें प्रवेश कर रहा है। इस अर्सेमें न मालूम हिन्दीके कितने पत्रोंने जन्म लिया और कितने कराल कालके गालमें समा गये। हर्ष की बात है कि अपने जीवनकी दीर्घ कालकी अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी माहेश्वरी आज जीवित हीं नही अपितु उन्नत एवं उत्कृष्ट पत्रोंकी गिनती में है। मैं माहेश्वरी की उत्तरोत्तर उन्नतिकी की कामना करता हूं और आशा करता हूं कि वह देश और समाजकी अधिकाधिक सेवा करता रहेगा।"

श्री गंगाविशनजी सिकची—

"माहेश्वरी ने श्री राधाकृष्णजी लाहोटी के सञ्चालन और सम्पादन में कायापलट करके देश की और समाज की सराहनीय सेवा की है। १ मई से माहेश्वरी ३५ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है, यह जान कर हरेक माहेश्वरी को प्रसन्नता होनी स्वाभाविक है। मैं आशा करता हूं इस कठिन समय में 'माहेश्वरी' समाज और देश के लिए पथ प्रदर्शक होगा।"

श्री रघुनाथसिंहजी मोहता मद्रास

"असंख्य झंझावात में दृढ़तापूर्वक कायम रहनेवाला 'माहेश्वरी' सफलतापूर्वक अपना ३४ वां वर्ष समाप्त कर प्रथम मईसे ३५ वें वर्षमें पदार्पण कर रहा है, यह हमारे माहेश्वरी समाजके लिये गौरव की बात है। भाई राधाकृष्णजी लाहोटी एवं उनके सहकारी इसके लिये अवश्य धन्यवादके पात्र हैं जिनके परिश्रमसे माहेश्वरी का मस्तक ऊँचा उठा है। मेरा विश्वास है कि माहेश्वरी इसी प्रकार दिन पर दिन उन्नति करता रहेगा।"

श्री माखनलालजी चतुर्वेदी सभापति अ. भा. हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा सम्पादक कर्मवीर, खंडवा

"सुरुचि, साहित्यक दृष्टिकोण, समाज सेवा की लगन, और देशभक्ति के पथ को गति पर मैं माहेश्वरी के संचालकों को बधाई देता हूं।

डा० हेमचन्द्रजी जोशी, डी लिट्.

"माहेश्वरी ३५ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है, यह जानकर बहुत खुशी हुई। हिन्दी पाक्षिक पत्रों में मैं माहेश्वरी को सर्वश्रेष्ठ समझता हूं, क्योंकि यह पत्र छपाई, सफाई, सजावट, आदि से लेकर अंत तक उत्तम लेखों और सुघड सम्पादनकला तक की दृष्टि से हिन्दी में सर्वोत्तम है। सम्पादक का कर्तव्य—निष्पक्षता, सत्यकीसेवा और ज्ञानकी खोज तथा प्रकाशन—आप जिस तरह निभाते हैं, उसका जोड़ हिन्दी में नहीं मिलता। हिन्दी के पाक्षिकों की जो दुर्दशा है, उसे देखकर मुझे महान दुःख होता है। पर आपके पत्रसे मुझे सदा परम सन्तोष मिलता है। आपका पत्र जातीय होनेपर भी उसमें आप राष्ट्र हितकर जितने लेख छापते हैं उसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोडी है मैं आपको इस शुभ अवसर पर हार्दिक बधाई देता हूं और परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह इस देश तथा अपनी जातिकी सेवा के लिए दीर्घ जीवन दे।

श्री सियाराम शरणजी गुप्त,
चिरगांव (झांसी):—

"जातीय पत्र होकर भी माहेश्वरी राष्ट्रीय पत्र है। उसकी कोटिके ऐसे ही किसी अन्य पत्र का परिचय मुझे नहीं है। उसकी उदार दृष्टि के लिए मेरे मन में उसके प्रति विशेष आदर है। आज जब वह अपने पैंतीसवें वर्षमें पदार्पण कर रहा है, तब उसे मेरा प्रेम और शुभ कामनाएं सादर समर्पित हैं। उत्तरोत्तर प्रौढ़ होकर, आशा है, वह जन संस्कृति की उत्तरोत्तर अधिक सेवा करेगा।"

श्री. रामनारायणजी राठी बंबई—

"मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष होता है कि माहेश्वरी ३५ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। पिछले कुछ वर्षों में पत्र की यथेष्ट उन्नति हुई है और इसके लिए वर्तमान सम्पादक तथा संचालक धन्यवाद के पात्र हैं। अपनी शुभ कामना का सन्देश भेजते हुए मैं यह चाहता हूं कि हमारे जातीय संगठन के इस एक मात्र पत्र की दिन प्रति दिन अधिकाधिक उन्नति होती रहे। साथ ही यह सूचित करना आवश्यक है कि पत्र धार्मिक विवादास्पद विषयोंसे बिल्कुल अलिप्त रहे जिससे समाजमें अकारण वाद प्रतिवाद का अवसर न आये।

इस अवसर पर मैं पत्र के संस्थापक श्री. भागीरथदासजी भूतड़ा को जिन्होंने अनेक कठिनाइयों के बीच इसे जीवित रखा है, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।"

शाह गोवर्धनलालजी काबरा, कूचामन

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि 'माहेश्वरी' अपने जीवन के ३४ वर्ष समाप्त कर १ मई से ३५ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है। अपने समाज की सेवा के साथ साथ राष्ट्र की सेवा करना इस पत्र की प्रारंभ से एक बहुत बड़ी विशेषता है। लेखों का चयन, छपाई, सफाई, निर्भीकतापूर्ण सम्पादकीय मंतव्य और समाजोपयोगी विविध चर्चाओं की दृष्टि से यह पत्र हिन्दी में अद्वितीय है। ईश्वर से मैं इस के दीर्घ जीवन के लिए प्रार्थना करता हूं।

श्री. लक्ष्मीनिवासजी बिडला कलकत्ताः—

"यह जानकर प्रसन्नता हुई कि माहेश्वरी ने अपने जीवन के ३४ वर्ष पूर्णकर लिये हैं और अब वह ३५ वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। मैं इसकी पूरी सफलता चाहता हूं।"

श्री विश्वम्भरलालजी माहेश्वरी बंबईः—

"माहेश्वरी पत्र प्रथम मई से अपने ३५ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा है, यह जानकर मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इस पत्रसे सम्बद्ध सभी व्यक्तियोंको मैं इस अवसर पर बधाई देतां हूँ। मैंने देखा है कि इस पत्रने भूतकालमें देश की महती सेवा, और खास तौर पर हमारी जाति की प्रशंसनीय सेवा की है। आज कल युद्ध के कठिन दिनों में भी हमारे इस माहेश्वरी पत्रने बड़ी तेज प्रगति की है। मैं प्रार्थना करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह प्रगति कायम रहेगी और यह पत्र प्रथम श्रेणीके पत्रों की पंक्तिमें गिना जाता रहेगा।"

श्री रामगोपालजी माहेश्वरी सम्पादक 'नवभारत' नागपुरः—

"माहेश्वरी १ मईसे ३५ वें वर्षमे पदार्पण कर रहा है, यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई। आपके सम्पादकत्वमें माहेश्वरीने आशातीत आकर्षण तथा लोकप्रियता प्राप्त की है—आपने अनेक कार्योंमें व्यास रहते हुए भी जिस साहस तथा लगनसे माहेश्वरी को नया रूप प्रदान कर उसे सेवाके लिए अधिक क्षमताशील बनाया, उसकी प्रशंसा सभी की जुबान पर है। आशा है आगामी महीनोंमें माहेश्वरी और उत्कर्ष करेगा।"

श्री कृष्णलालजी बागड़ी बंबईः—

'माहेश्वरी' पत्र आज ३४ वर्ष पूरा करके ३५ वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। इस अवधिमें इस पत्रने माहेश्वरी समाज तथा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की अत्युत्तम सेवाएं की हैं जिसके लिये पत्र सम्पादन समिति और विशेषकर भाई राधाकृष्णजी लाहोटीका मैं हृदयसे अभिनन्दन करता हूं। मेरा विश्वास है, यह पत्रिका हिन्दी भाषा की उत्तमोत्तम पत्रिकाओंमेंसे एक है, अतः प्रत्येक भाषा और राष्ट्रप्रेमी भाई बहिनको इससे सहयोग करना चाहिये। मैं ईश्वरसे इस की उत्तरोत्तर वृद्धि एवं प्रगतिके लिये प्रार्थना करता हूं।"

राजस्थान केसरी

श्री चांदकरणजी शारदा, अजमेर

"यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि प्रथम मईसे माहेश्वरी अपने ३५ वें वर्षमें पदार्पण कर रहा है। मैं इस पत्र की ३५ वीं वर्षगांठ पर आपको हार्दिक बधाई देता हूं और परम पिता परमात्मासे प्रार्थना करता हूं कि इसकी उत्तरोत्तर उन्नति हो। जब स्वर्गीय भगीरथ दासजी भूतड़ाने इस पत्रको निकाला था, उस समयसे मैं बराबर इस पत्रमें अपने लेख भेजता रहा हूं। मैंने अपना पहला लेख सन १९११-१२ में जब मैं आगरा कालेज में एम. ए. एल. एल. बी में पढ़ता था, इस पत्रको भेजा था। सम्पादकजीने बड़े प्रेमसे उसे छापा था और आगे भी लेख लिखने के लिए उत्साहित किया था। इसके वर्तमान सम्पादक महोदय कृपा कर अब भी मेरे लेख छापते रहते हैं। गत ३५ वर्षोंमें इस पत्र के द्वारा न केवल सामाजिक सुधार की जागृति हुई है बल्कि देश की राजनीतिक परिस्थिति सुधारनेमें भी इस पत्रका पूरा हाथ रहा है। और जबसे यह पत्र बंबईसे निकला है, तबसे तो रूपरंग, आकार, विचार सभी बातोंमें दूसरे पाक्षिक-साप्ताहिक पत्रोंसे बाजी मार ले गया है। और प्रत्येक साहित्य प्रेमी इसे जातिगत नामका होते हुए भी भारतके प्रमुख पाक्षिक पत्रोंमें गिनते हैं। यह हमारे लिए बड़े गौरव की बात है कि हम अपने छोटे छोटे स्वार्थों और संकुचित दायरोंको छोड़कर आगे बढ़ रहे हैं। परमात्मा हमें बल दे कि हम सामाजिक सुधार करते हुए अपनी प्यारी मातृभूमिको शीघ्र ही स्वतंत्र करनेमे सफल हों।

श्रीघनश्यामदासजी बिडला, कलकत्ता

"माहेश्वरी के लिय मेरी शुभ कामना। आशा है, इस पत्र को एक उच्च कोटि का पत्र बनाने में आप सफल होंगे।

श्री रामदेवजी पोद्दार बंबई

भू.पू. अध्यक्ष अ.भा. मारवाड़ी सम्मेलन

"यह जानकर मुझे प्रसन्नता हुई कि माहेश्वरी ३५ वें वर्ष में पदार्पण कर रहा हैं। 'माहेश्वरी' ने समाज की जो सक्रिय सेवा की है, वह बड़ी सराहनीय है। पत्र की आकृति, गेटअप, छपाई आदि सभी सुंदर हैं। मैं हृदय से आप के पत्र की उन्नति चाहता हूं।"

श्री. गुलाबचंद्रजी नागौरी, आनन्दाश्रम

"माहेश्वरी ३५ वाँ वर्ष माहे पदार्पण कर रह्यो छे इण बदले बधाई रुबरु आकर देवाको विचार हो पण मने पूरो आराम देवाको सरकार धार लीनी छे। मने ढाके फल माहे स्थानबद्ध कर दिनो। सभा माहे शरीक होणो तथा व्याख्यान देणो वी मुजब ही सरकारी धान्य पॉलिसी का विरुद्ध वृत्तपत्र, हस्तपत्रकादि शू प्रचार करबाकी मनाई कर दिनी छे सू अब रुबरु आकर दे सकूं नही! माहेश्वरी पत्र की बागडोर जठेताई आपका हाथमें छे बठे तांई तो वो दड़ाछट चालतो ही रहशी तथा गंभीर विषय की चर्चा वीमें होती ही रहशी। आ पूरी खातरी छे। माहेश्वरी पत्र की नीति समस्त राष्ट्र की सेवा करबाकी आपकी उमंग बधती ही रहेगी आ शुभकामना प्रगट कर कलम ने विश्राम देडाछूं।

श्री पूर्णमलजी लाहोटी गुलबर्गाः—

'माहेश्वरी' अपने जीवनके ३४ वर्ष समाप्त कर ३५ वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है, यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई। इस पत्र ने न केवल माहेश्वरी जाति के लोगों वरन् राष्ट्र एवं हिन्दी भाषाके प्रेमियों के भी दिलों में अपने लिए एक स्थान बना लिया है। सुरुचिपूर्ण पाठ्य सामग्री, छपाई सफाई, गेटअप सभी दृष्टियों से यह हिन्दी भाषामें बेजोड़ पत्र है। वर्तमान सम्पादक द्वय इसके प्रगतिशील विकास के लिए बधाई के पात्र हैं। पत्र और भी अच्छा निकले और देशके कोने कोने में अपने लिए स्थान बनाये, यह मेरी आन्तरिक कामना है।"

'माहेश्वरी' सहायता

१०१) रायसाहब विठ्ठलदास जी राठी ब्यावर द्वारा अपने सुपुत्र श्री. मुकुंददास जी के विवाहोपलक्ष में।

५१) श्री. नारायणदास श्यामबिहारी डिबाई वालों द्वारा श्री. श्याम बिहारी जी सोढ़ानी के विवाहोपलक्ष में।

२१) श्री. जुगल किशोर जी जाजू द्वारा अपने भाई के विवाहोपलक्ष में।

अ. भा. माहेश्वरी महासभा सहायता

१००) श्री. कलभदास जी राधाकिशन जी राठी अमरावती द्वारा अपनी सुपुत्री के विवाहोपलक्ष में।

श्री बृजवल्लभदासजी मूंधड़ा

भू. पू. सभापति अ. भा. माहेश्वरी महासभा, बंबईः—

"माहेश्वरी के प्रत्येक पाठक शुभ चिन्तक एवं देश तथा समाज हितैषी को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि उनका प्यारा पत्र माहेश्वरी ३४ वर्ष समाप्त कर ३५ वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। यों तो माहेश्वरी की जन्म तिथि से इसे ५० वर्ष से अधिक आयु का वृद्धत पत्र मानना चाहिए किन्तु बीच बीच में बन्द रहकर यह पत्र बंद स्थिति के दिनोंकी बाद देकर पैंतीस वर्ष का युवक बना हुआ है। इस पत्र का जीवन कई संकट झेल चुका है, पर आज कुछ वर्षोंसे यह बंबई में रहकर भाई राधा कृष्णजी लाहोटी के सम्पादन और संचालन में उन्नति के पथपर आरूढ़ है। मैं इस पत्रको पाक्षिकसे बढ़कर साप्ताहिक और दैनिक रूपमें देखना चाहता हूं और यह भी चाहता हूं कि यह हमेशा अपने स्वरूप की व्यापकता बनाये रखे। इसकी सेवाएं सार्वजनिक रहें और इसका नाम माहेश्वरी ही रहकर भारत वर्ष के कोने में रहनेवाले देश, समाज और साहित्य के प्रेमियों को यह बता दे कि यह सेवा माहेश्वरी समाज की ओर से समस्त भारत वर्ष और तात्विक दृष्टिसे देखा जाय तो सारे विश्व की सेवा है और एक समाज विशेष की ओरसे सेवा होनेके कारण मात्रसे इसका नाम समाज विशेषका द्योतक है। अतएव प्रत्येक समाजके प्रत्येक व्यक्तिको इसे अपनाना चाहिए। मैं श्री लाहोटीजीको इस पत्रके सफल उत्थान के लिए बधाई देता हूं।

मध्यभारत में कैसे काम हो?

श्री रमेशचंद्रजी माहेश्वरी बड़ोदा लिखते हैः—

इधर बहुत समय से मध्य भारतीय माहेश्वरी सम्मेलन की चर्चाएं हो रही हैं और यद्यपि प्रत्येक मध्यभारतीय शिक्षित माहेश्वरी बन्धु ऐसे संगठन का हृदय से स्वागत करने के लिए प्रस्तुत है किन्तु खेद है कि इन चर्चाओं ने अभीतक कोई क्रियात्मक रूप नहीं ग्रहण किया। मेरी राय में इस असफलता के दो कारण हो सकते हैं।

१ सहयोग का अभाव

२ अर्थ का अभाव

यद्यपि बिखरी हुई चर्चाएं और प्रयत्न तो हुए हैं किन्तु इस दिशा में जहाँ तक मेरी जानकारी है अभीतक कोई समवेत प्रयत्न नहीं हुआ। यदि कुछ प्रमुख म. भारती माहेश्वरी कार्यकर्ता बन्धु एक स्थल पर एकत्रित होकर स्थिति पर विचार करें तो मुझे विश्वास है इसमें असफलता न होगी।

इसी कार्यकर्ता सम्मिलन के अवसर पर एक अस्थायी समिति का निर्माण कर लिया जाय तथा भविष्य का कार्यक्रम बना लिया जाय कि जिस से कार्य एक निश्चित योजना के अनुसार आगे बढ़ सके।

(शेष पृष्ठ ८ के कालम ४ पर)

क्या गांधीवाद और समाजवाद परस्पर विरोधी हैं ?

१२–विकेंद्रीकरण एवं ग्राम संस्कृति

लेखक—**श्री हरिश्चन्द्रजी हेड़ा,** बी. ए. एल. एल. बी.

इस लेखमें सबसे पहले हम यह देखेंगे कि सर्वोदय विकेन्द्रीकरण पर क्यों जोर देता है। इसका सबसे बड़ा कारण तो यह है कि अहिंसापर अधिष्ठित समाज केंद्रीकरण कर ही नहीं सकता। अहिंसक समाज लाजमी तौर पर विकेंद्रीकरण पर जोर देगा। कारण जहां उद्योगों का केंद्रीकरण किया जाता है वहां सम्पत्ति बहुत बड़े परिमाण में एकत्र हो जाती है जहां सम्पत्ति एकत्रित हुई वहां संग्रह और परिग्रह आही जाते हैं। सर्वोदय परिग्रह के विरुद्ध है, वह तो अपरिग्रह का पुरस्कर्ता है। इस लिये अपरिग्रह और संग्रह दूसरे शब्दोंमें केंद्रीकरण साथ साथ नहीं चल सकते।

महात्मा गांधी के शब्दों में "जिस चीज की हमें जरूरत नहीं है, उसे जिसके अधिकार में वह हो उसके पास से उसकी आज्ञा लेकर भी लेना चोरी है। अनावश्यक एक भी वस्तु न लेनी चाहिये। पृ. ३५ मं. प्रभात

(२) "जो वास्तव में चुराया हुआ नहीं है वह अनावश्यक संग्रह करने से चोरी कासा माल हो जाता है। परिग्रह का अर्थ है–संचय या इकट्ठा करना। सत्यशोधक अहिंसक परिग्रह नहीं कर सकता। परमात्मा परिग्रह नहीं करता। 'चाही' वस्तु वह रोज की रोज पैदा करता है।"

पृ. ३९ मं. प्र.

(३) "सब लोग अपनी आवश्यकता, भर ही संग्रह करें तो किसी को तंगी न पडे और सबको सन्तोष रहे। आज तो दोनों तंगी अनुभव करते हैं। करोड़पति अरबपति होनेकी चेष्टा करता है, फिर भी उसे सन्तोष नहीं रहता। कङ्गाल करोड़पति होना चाहता है। दरिद्रको केवल पेट भरनेभरको ही मिलने से सन्तोष होता दिखाई नहीं देता। परन्तु दरिद्रको अपने पेट भर पाने का अधिकार है, और उसे उतना प्राप्त करा देना समाज का धर्म है"।

पृ. ४० मं. प्र.

४ "सच्चे सुधारका, सच्ची सभ्यताका लक्षण परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि उसका विचार और इच्छापूर्वक घटाना है।

पृ. ४२ मं. प्र.

सर्वोदय के विकेन्द्रीकरण के विरुद्ध होने क दूसरा कारण यह है कि अहिंसक साधन से संपत्तिका रक्षण नहीं किया जा सकता। इस प्रश्न का विवेचन श्री घनश्यामदासजी बिडलाने समुचित प्रकार से किया है : "धन सम्पत्ति संग्रह, मालजायदाद इत्यादि की रक्षा क्या अहिंसा से हो सकती है? हो भी सकती है और नहीं भी। जो लोग निजी उपयोग के लिये संग्रह करके बैठे हैं, संभव नहीं कि वे अहिंसा नीति के पात्र हों अहिंसा यदि कायरता का दूसरा नाम नहीं, तो फिर सच्ची अहिंसा वह है जो अपने स्वार्थ के लिए संग्रह करना नहीं सिखाती। अहिंसक को लोभ कहां? ऐसी हालत में अहिंसकको अपने लिए संग्रह करने की या रक्षा करने की आवश्यकता ही नहीं होती। योग–क्षेम के झगड़े में शायद ही अहिंसाका पुजारी पड़े। 'निर्योगक्षेम आत्मवान्'–गीताने यह धर्म अर्जुन जैसे गृहस्थ व्यक्ति को बताया है। यह तो संन्यासी का धर्म है ऐसा गीता ने नहीं कहा। गीता संन्यास नहीं, कर्म सिखाती है जो गृहस्थ का धर्म है। अहिंसावादी का भी शुद्ध धर्म उसे योग–क्षेम के झगड़े से दूर रहना सिखाता है। पर संग्रह करना और उसकी रक्षा करना 'स्व' और 'पर' दोनोंके लाभ के लिये हो सकता है। जो 'स्व' के लिये संग्रह लेकर बैठे हैं, वे अहिंसा धर्म की पात्रता सम्पादन नहीं कर सकते। जो 'पर' के लिये संग्रह लेकर बैठे हैं, वे गांधीजी के शब्दों में 'ट्रस्टी' हैं। वे अनासक्त होकर योग–क्षेम का अनुसरण कर सकते हैं। वे संग्रह रखते हुए भी अहिंसावादी हैं, क्योकि उन्हें संग्रह में कोई राग नहीं। धर्म के लिये जो संग्रह है वह धर्म के लिए अनायास छोड़ा भी जा सकता है और उसकी रक्षा का प्रश्न हो तो वह तो धर्म से ही की जा सकती है, पाप से नहीं। इसके विपरीत जो लोग संग्रह में आसक्त हैं वे न तो अहिंसात्मक ही हो सकते हैं न फिर अहिंसा से धन की रक्षा का प्रश्न ही उनके सम्बन्धमें उपयुक्त है। पर यह संभव है कि ऐसे लोग हों जो पूर्णतः अहिंसात्मक हों, जो सब तरह से पात्र हों और अपनी आत्मशक्ति द्वारा यदि उन्हें ऐसा करना धर्म लगे तो, किसी के संग्रह की भी रक्षा कर सकें।

"पर यह कभी नहीं भूलना चाहिये कि अहिंसक और हिंसक मार्ग की कोई तुलना है ही नहीं दोनोंके लक्ष्य ही अलग अलग हैं। जो काम हिंसासे सफलतापूर्वक हो सकता है चाहे वह सफलता क्षणिक ही क्यों न हो–वह अहिंसासे हो ही नहीं सकता। मसलन हम अहिंसात्मक उपायोंसे साम्राज्य नहीं फैला सकते, किसीका देश नहीं लूट सकते। इटलीने अबीसीनियामें जो अपना साम्राज्य स्थापित किया, वह तो हिंसात्मक उपायों द्वारा ही हो सकता था।

"इसके माने यह हैं कि अहिंसासे हम धर्म की रक्षा कर सकते हैं, पाप की नहीं। और संग्रह यदि पापका दूसरा नाम है, तो संग्रह की भी नहीं। अहिंसामें जिन्हें रुचि है, वे पाप की रक्षा करना ही क्यों चाहेंगे? अहिंसा का यह मर्यादित क्षेत्र यदि हम हृदयंगम कर लें, तो इससे बहुत-सी शंकाओंका समाधान अपने आप हो जायगा। बात यह है कि जिस चीज़ की हम रक्षा करना चाहते हैं वह यदि धर्म है, तब तो अहिंसात्मक विधियोंसे विपक्षीका हम सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकते हैं। और यदि वह पाप है, तो हमें स्वयं उसे त्याग देना चाहिये और ऐसी हालत में प्रतिकारका प्रश्न ही नहीं रहता।" बापू पृ. २१–२२

विकेंद्रीकरण के विरुद्ध होने का तीसरा कारण यह है—सर्वोदय को इस बात का खतरा है कि इंग्लैंड और अमेरिका के समान बड़े बड़े उद्योगों का निर्माण होगा। इन उद्योगों का रक्षण करने के निमित्त राज्यसत्ता में रशियाके समान अधिक हिंसा एकत्रित करनी पड़ेगी। जितने बड़े कारखाने होंगे उनका रक्षण उतना ही अधिक जोखिम का हो जायगा। रक्षण में जिस कदर जोखम बढ़ेगी उसी कदर अधिक शक्ति राज्य संस्थामें रखनी होगी। राज्य में जितनी अधिक शक्ति रखी जायेगी उतनी ही व्यक्ति की स्वतंत्रता कम हो जाती है। सर्वोदय प्रारंभसे ही व्यक्तिवादका संरक्षण करना चाहता है। समाजवाद प्रारंभिक अवस्थामें व्यक्तिवाद को जरा भी महत्व नहीं देता वह तो मजदूर वर्गकी डिक्टेटरशिप निर्माण करना चाहता है। हालांकि दोनों विचारधारायें अंतमें जाकर अराज्यवादी बनती हैं। परन्तु समाजवाद वहांतक पहुंचनेके लिए डिक्टेटरशिप को कुछ समय के लिए स्वीकार करना अनिवार्य समझता है, तो सर्वोदय व्यक्तिवाद और प्रजातंत्रको कभी भी छोड़ना नहीं चाहता।

केंद्रीकरण के विरुद्ध सर्वोदयने जो राय बनाली है उसका चौथा कारण यह है कि सर्वोदय के विचारों के अनुसार संपूर्ण राष्ट्रीयकरण करने पर भी यंत्रों में जो दोष हैं वह पूरे तौर पर दूर नहीं होते। राष्ट्रीयकरण से केवल इतना फरक पड़ता है कि पूंजीवादी समाजमें जहां पूंजीपति व्यक्ति का शोषण करते हैं उसके बजाय राष्ट्रीयकरण में सत्ता जिनके साथ में है वह वर्ग शोषण करने लगता है। समाजवाद भी पहले पहल एक राष्ट्र और उसके बाद सारे विश्व को स्वावलंबी बनाना चाहता है। सर्वोदय इतना बड़ा घटक न लेकर छोटे छोटे घटक को अधिक से अधिक स्वावलंबी बनाना चाहता है।

पांचवा कारण जो केंद्रीकरणके विरुद्ध है वह यह है कि केंद्रीकरणसे समवितरण असंभव बन जाता है। सम या तुल्य वितरण बड़े बड़े उद्योगोंके रहते हुए नहीं हो सकता। वह तो छोटे छोटे पर सारे देश से बिखरे हुये उद्योगोंसे ही बाध्य है, इस पर गत लेखमें विचार किया गया है। विकेंद्रीकरण का इस कदर विवेचन करनेके बाद समाजवाद और सर्वोदयके बीच एक मूलभूत मतभेद की ओर हमें ध्यान देना चाहिए। परिश्रम की प्रतिष्ठा करते हुये भी समाजवाद 'अधिकसे अधिक फुरसत' का पुरस्कर्ता है। सर्वोदय 'अधिकसे अधिक फुरसत" का विरोधी है। इसे समझनेके पहले सर्वोदयके पास परिश्रम की जो प्रतिष्ठा है, उसे समझ लेना चाहिए।

"जो अपने हिस्सेका काम किये बिना ही भोजन पाते हैं वे चोर हैं।" गांधीजी नवजीवन. २९–१०–२९

"बिना प्रामाणिक परिश्रम के किसी भी चंगे मनुष्यको खाना देना मेरी अहिंसा बरदाश्त नहीं कर सकती। अगर मेरा वश चले तो जहां मुफ्त खाना मिलता है ऐसा प्रत्येक सदावर्त या अन्न क्षेत्र बन्द करा दूं। उनकी बदौलत राष्ट्रका पतन हुआ है और आलस्य, सुस्ती तथा गुन्नाहगारी को बढावा मिला है।"

—गांधीजी सर्वोदय डिसेंबर १९३५ मुख पृष्ठ

"करोड़ों लोग बेकारी के कारण उत्तरोत्तर अधिकाधिक पतित हो रहे हैं, उनकी आत्म मर्यादा नष्ट हो चुकी है, और उनमें ईश्वरके प्रति कोई श्रद्धा नहीं रह गई है। कल्पना कीजिये यह कैसा भयानक संकट है। उन्हें ईश्वर का सन्देश सुनाने की मैं हिम्मत नहीं कर सकता। सामने यह जो कुत्ता बैठा है, उसे ईश्वर का सन्देश सुनाना और जिनकी आंखोंमें रोशनी नहीं है, रोटी का एक टुकड़ा ही जिनका देवता है, उन्हें ईश्वर का संदेश सुनाना एक साही है। म पवित्र परिश्रम का पैगाम लेकर ही ईश्वर संदेश सुनाने जा सकता हूं।"

—गांधीजी सर्वोदय मार्च १९३९ का मुख पृष्ठ

"भगवान का यह कानून है कि हर एक मनुष्य अपनी मेहनत से जीये। दुनियामें बिना शारीरिक श्रमके भिक्षा मांगने का अधिकार केवल सच्चे संन्यासी को है...लेकिन ऐसे संन्यासी को छोड़कर और किसी को भी अकर्मण्य रहने का अधिकार नहीं है। दुनिया में आलस्य को पोसने जैसा दूसरा भयंकर पाप नहीं है।

विनोबा 'सर्वोदय' अक्तूबर १९३८ पृ. ३९

"कार्यकरना मनुष्य के लिये अनिवार्य है। रोटी के लिये मनुष्य को हाथ, पैर हिलाने चाहिए, यह ईश्वरीय नियम है। मालिक मजदूर का भेद सर्वव्यापक हो गया है और गरीब अमीर से ईर्षा करता है। यदि सब अपनी रोटी के लिये खुद मेहनत करें तो ऊंच नीचका भेद दूर हो जाये।"

—गांधीजी मंगल प्रभात

इस स्थान पर टाल्स्टॉयके विचार जिनका गांधीजी पर बहुत प्रभाव पड़ा है, दे देना अप्रासंगिक न होगा।

"मेरा प्रथम और असंदिग्ध कर्तव्य यह है कि मैं स्वयं मेहनत करके अपने लिये तथा दूसरों की सेवा के लिए खाने, कपड़े, मकान आदिका प्रबंध करूं, क्योंकि संसार के प्रारंभ से यही मनुष्य का संदेह रहित और अनिवार्य कर्तव्य रहा है। क्या करें पृ. २८२

"क्या करें? इस प्रश्नका बड़ा सीधा सा जवाब मुझे मिला–पहले तो यह करो कि जो बातें तुम्हारे लिए जरूरी हैं उन्हें खुद करो।"

क्या करें पृ. २८४

"हम अपने दिलमें यह बिठालें कि खाना और काम न करना यह बड़ी ही भयानक स्थिति है। आग लगाने जैसे आततायीपन के समान बुरी और भयंकर है।"

क्या करें पृ. २९२

"किन्तु हमारा उद्देश्य तो मनुष्यों को बनाना है। वास्तव में आनन्द तो जीवन में है, और जीवन है श्रम में।" क्या करें पृ. २९६

परिश्रम की प्रतिष्ठामें समाजवाद भी विश्वास करता है पर इस चीज़ को जिस हद तक सर्वोदय ले जाता है वह सर्वोदय की विशेषता है। परिश्रम की प्रतिष्ठा का बयान करते हुये विनोबा कहते हैं:—

"एकने मुझसे कहा—गांधीजीने पीसना, कातना, जूते बनाना वगैरह काम खुद करके परिश्रम की प्रतिष्ठा बढ़ा दी। मैंने कहा मैं ऐसा नहीं मानता। परिश्रम की प्रतिष्ठा किसी महात्माने नहीं बढ़ायी। परिश्रम की खुद की ही इतनी प्रतिष्ठा है कि उसने महात्मा को प्रतिष्ठा दी।" सर्वोदय २।१४५

इस प्रकार हम देखते हैं कि सर्वोदय की दृष्टिमें श्रम की जो प्रतिष्ठा है वह और समाजवाद की दृष्टिमें श्रम की जो प्रतिष्ठा है उसमें महत्व का अन्तर है। समाजवाद श्रम की प्रतिष्ठा को मानते हुये भी श्रम की मात्रा को अधिक से अधिक कम करना चाहता है और सर्वोदय श्रम की मात्रा को एक निश्चित सीमा से नीचे नहीं लाना चाहता। सर्वोदय श्रम की प्रतिष्ठा व्यक्तियों के स्वास्थ्य की दृष्टि से नहीं करता अपितु वह यह सब कार्यवही समाजके स्वास्थ्य की दृष्टिसे करता है। वास्तवमें वात यह है कि समाजवादका दृष्टिकोण भौतिकवादी होनेके कारण वह आध्यात्मिक या नैतिक उन्नतिको हमेशा सामने नहीं रख सकता। सर्वोदय नैतिकतापर सबसे अधिक जोर देता है, इसलिये उसकी मान्यता दादा धर्माधिकारीके शब्दोंमें निम्न प्रकार है "सारांश, जहां केवल परिश्रम समाज की सेवाका साधन होता है, वहां उसके प्रति रुचि पैदा हो जाती है और अगर सेवा भावना उत्कट हो, तो उसमें आनन्द भी आने लगता है। मनुष्य की भोगवृत्ति और सेवावृत्तिमें जिस मात्रामें अविरोध या एकता स्थापित होती है, उसी मात्रामें वह सुसंस्कृत या सभ्य बनता जाता है।" सर्वोदय २।५४३

(२) तथा "गांधीजी के विचार में समाजोपयोगी परिश्रम, मनोविनोद और मनुष्य की सांस्कृतिक उन्नति में ऐसा कोई अनिवार्य विरोध नहीं है। बल्कि ज्यों ज्यों इन तीनों का अन्तर कम होगा, त्यों त्यों मनुष्य की और मनुष्य-समाज की उन्नति होगी। अगर किसी-न-किसी प्रकार का शारीरिक श्रम सामाजिक जीवन के लिये आवश्यक है, तो वह व्यक्तिगत जीवन के विकास के लिये भी जरुरी है। पराक्रम और उपयोगिता की भावना अगर व्यायाम और कवायद को आनन्दमय बना सकती है, सामुदायिक जीवन की भावना अगर खेल को मजेदार बना सकती है, तो यह आशा करना अयौक्तिक क्यों होना चाहिये कि सामाजिक जीवन-सिद्धि की अर्थात् सेवाधर्म की भावना शरीर, श्रम को भी आन्दमय बना देगी? श्रम, उपयोगिता और सेवाका समन्वय ही संस्कृतिका, या सामाजिक उन्नति का सर्वश्रेष्ठ साधन है।

"अतः गांधीजीकी अर्थ नीतिमें इस बातका आग्रह है कि हमारी भविष्य की समाज-रचना में मनुष्यके शरीर-परिश्रमका आवश्यक और पर्याप्त स्थान रहना चाहिये इसलिये उनकी आवश्यक व्रतमालिका में शरीर-श्रमका भी समावेश किया गया है।

—सर्वोदय २।५४४।५४५

केंद्रीकरण, विकेंद्रीकरण का यह जो विवेचन हुआ है, उसे समाप्त करने के पूर्व एक गलतफहमी को दूर कर देना आवश्यक है, जैसा कि आमतौर पर समझा जाता है। सर्वोदय प्रत्येक गांव को स्वावलंबी बनाना चाहता है, पर इसका अर्थ यह नहीं कि वह प्रत्येक गांव को एक दूसरे से आर्थिक दृष्टि से पृथक करना चाहता है।

इसमें संदेह नहीं कि सर्वोदय प्रत्येक गांव को या घटक को स्वावलंबी करने की ओर अग्रसर रहता है। पर वह गांव या इस प्रकार के घटक को राष्ट्र या संसार से एकदम न पृथक कर सकता है और न करने का इच्छुक है।

"परन्तु खादी मनोवृत्ति के माने जीवन की आवश्यकताओं के उत्पादन और विभाजन का विकेंद्रीकरण है। इसलिये अब तक हम इस सूत्र का विकास कर सके हैं कि हरेक गांव अपनी जरुरत की सारी चीजों का उत्पादन तथा उपयोग खुद करे और साथ साथ शहरों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में भी हाथ बढ़ाये"। —गांधीजी 'रचनात्मक कार्यक्रम'

निस्संदेह केंद्रीकरण और विकेंद्रीकरण के प्रश्नपर दूसरे शब्दों में उत्पादन का घटक कितना बड़ा हो इस प्रश्न पर इन दो विचार धाराओं में महत्व का भेद है। सर्वोदय विकेंद्रीकरण करना चाहता है अतः वह घटक छोटा रखना चाहता है। वह घटक आखिर होगा कितना बड़ा? एक मनुष्य निस्संदेह नहीं हो सकता। एक मनुष्यके लिये स्वावलंबी बनना संभव नहीं है। गांधीजीके कई लेखोंसे ऐसा मालूम होता है कि वह एक गांवको घटक बनाना चाहते हैं। पर यह भी संभव नहीं है। किशोरीलाल मशरूवालने इस प्रश्न पर तफसीलमें जाकर निम्न राय जाहिर की है—

"मुझे इस समय ऐसा लगता है कि गांव यह घटक न हो, लेकिन तहसील एक छोटासा शहर (१०–१५ हजार आबादीका) तथा उसके चारों तरफके गांव इन्हें घटक रखना होगा। तहसीलसे छोटा घटक ठीक नहीं होगा। स्वयं पूर्णता का सिद्धांत प्रत्येक गांव में अमल में नहीं लाया जा सकेगा।"

गांधीवाद पृ. ९८

अब हम सर्वोदय और समाजवादके और एक महत्त्वपूर्ण मतभेद पर विचार करेंगे। समाजवादी योजनामें बड़े बड़े शहरों की प्रधानता है। सर्वोदय इसके विपरीत बड़े बड़े शहर निर्माण करना नहीं चाहता। अपितु वह गांवों को कायम रखकर ग्रामीण संस्कृतिका विकास करना चाहता है। यह क्यों? सर्वोदय ग्राम और ग्रामीण संस्कृतिपर इतना जोर क्यों देता है?

"तुम कारखानों की संस्कृति पर अहिंसा को खड़ा नहीं कर सकते, परन्तु वह स्वयंपूर्ण गांवों की बुनियाद पर खड़ी रह सकती है। यदि हिटलर भी चाहे तो वह सात लाख अहिंसक देहातों को उजाड़ नहीं सकेगा। इस सारी प्रक्रियामें वह स्वयं अहिंसक बन जायेगा। ग्रामीण अर्थशास्त्र जैसे कि मैंने उसकी योजना की है शोषण को पूर्णतया खत्म कर देता है, और शोषण ही तो हिंसा का सार है।" गांधीजी हरिजन ४–११–३९.

——महादेव देसाई के लेख से—

यह चीज़ महत्त्व की है। यंत्रोंपर जिस राष्ट्र के अर्थ शास्त्र की बुनियाद है वह राष्ट्र अहिंसक हो ही नहीं सकता। वह तो हिंसा द्वारा ही अपनी रक्षा करेगा। अहिंसक व्यक्ति के समान अहिंसक राष्ट्र ऐश्वर्य के पीछे दीवाना नहीं होगा। वह कम से कम पर, उचित आवश्यकताओं की पूर्तिपर समाधान मानेगा। समाजवाद अधिकसे अधिक ऐश्वर्य की ओर जाना चाहता है और सर्वोदय सादगी की ओर। इस सादगी से कोई गरीबी का अर्थ न ले। सर्वोदय दरिद्रता को हरगिज बर्दाश्त नहीं करता। मशरूवालानें सर्वोदय की दृष्टिसे 'सुखी समाज की अर्थ व्यवस्था' शीर्षक लेख में कम से कम सुविधायें प्रत्येक परिवार को कितनी मिलनी चाहिये इसका तफसील से उल्लेख किया है। उसमें से निम्न बातों से सर्वोदय का कम से कम जीवन निर्वाह के तरीके का विचार आ सकेगा।

(१) आठ साल से कम और साठ साल से अधिक उमर वालें का पूर्णतया पालन, आठ से सोलह वर्ष तक की आयुवालों का अंशतः पालन।

(२) बच्चों को शारीरिक, मानसिक, और बौद्धिक तालीम।

(३) पुरुष औसतन साढ़े छः घण्टे, स्त्रीको चार तथा आठसे सोलह वर्ष की आयुवाले बालकको एक घण्टा काम करना पड़े। दूसरे शब्दोंमें इन्हें सालमें तीन सौ दिन आठ, पांच और एक घण्टा काम करना पड़े।

(४) सुचारुरूपसे निर्वाहमें भरपेट अन्न, कुछ दूध, घी, कुछ फल, कपड़े, चारपाई, मसहरी, साबुन, दियाबत्ती, अखबार, पुस्तकों के अलावा महमानदारी, यात्रा, बीमारी, व्याह मृत्यु आदि अवसरोंके लिये बचत सम्मिलित है।

(५) हरेक को १०'×१०' का एक कमरा, रसोई घर, स्नानघर, भंडार आदि अलावा—

इससे मालूम हो जायेगा कि सर्वोदय स्वस्थ, सुखी और संतोषी जीवन बनाना चाहता है।

इस हदतक विवेचन करने के बाद गांधीवाद और समाजवाद दोनों विचार धाराओं की आध्यात्मिक तथा आर्थिक पहलुओंका तुलनात्मक अध्ययन खत्म होता है। अगले लेख में कुछ अन्य पहलुओंका सरसरी तौर पर विवेचन कर यह लेखमाला समाप्त हो जायगी।

जीवन और जागृति का संदेशवाहक "माहेश्वरी"

(पृष्ठ ५ का शेष)

हुआ आज १ वर्ष ८ महिने का हुआ है। जब से यह पत्र प्रकाशित हुआ है, महेश्वरी सरदारों की सेवामें पहुंचने लगा है। माहेश्वरी महाशयों को सचेत करता जाता है। इस पत्रके अनेक लाभ हुए। इसने माहेश्वरी जाति में प्रचलित बहुतसी कुरीतियों को दरशाया है और आगे को बहुत कुछ सुधार करनेवाला है।...इसमें ला० हरसरन दास जी महाशय का उद्योग सराहनीय है। जातिसंबंधी खबरों के अभाव का यह कारण है कि स्वजाति बंधु पुरुषों में प्रथम विद्या ही न्यून है और लिखे पढ़े मनुष्य कम हैं। वे ऐसी खबरें भेजने में आलस्य रूपी घोर घोर निद्रा में सोये हुए हैं। ऐसी खबरों की जाति सुधार के लिये अत्यन्त आवश्यकता है। विद्वान महाशय इस तरफ ध्यान देवें। माहेश्वरी पत्र के संवाददाताओं को सभा धन्यवाद देती है और आशा करती है कि आगामी को यह महाशय अपनी लेखनी को शिथिल न करेंगे। इस के अब तक ५०० से अधिक ग्राहक हैं।"

सन १९१० इ. में अलीगढ से यह पत्र मासिक रूप में ही निकला और लगभग १० वर्ष तक मासिक रूपसे निकलता रहा। इसके बाद श्री. भागीरथदासजी भूतड़ा ने उद्योग करके इसका अपना प्रेस खड़ा किया और श्री माहेश्वरी महासभाका (जैसलमेरी माहेश्वरी सभा का आगे चलकर परिवर्तित नाम) के देहली अधिवेशन में "माहेश्वरी" को देहली से चलाने की मांग के अनुरूप भूतड़ाजी अलीगढ़ से उसे देहली ले आये और मासिक से "माहेश्वरी" देहली आकर साप्ताहिक बन गया लेकिन पत्र के संचालन में काफी आर्थिक कठिनाइयां आने से आगे चलकर श्री. भागीरथदास भूतड़ा ने इसे अ० भा० माहेश्वरी महासभा के अधीन कर दिया। बम्बई महासभाधिवेशन के बाद अर्थात कोलवार कांडका आरंभ होने पर यह पत्र अ० भा० माहेश्वरी महासभाके अधिकारमें आगया। उस वक्त महासभाके प्रधान मंत्री स्व. रामकृष्णजी मोहता और स्व० आईदानजी मोहता थे। यह १९२३।२४ की बात है। इसी वक्त हम भी "माहेश्वरी" में शामिल हुए। 'माहेश्वरी' के सम्पादक उस वक्त कुछ समयके लिये श्री रामप्रसादजी कुरकट हुए मगर बादमें श्री विश्वेश्वर चंद्रजी धूत बनाये गये। उनसे पहले और स्व० भूतड़ाजी के संचालन कालमें श्री. कर्णकविजी उसका सम्पादन करते थे।

माहेश्वरी महासभा का कार्यालय कलकत्ते में था अतः मंत्री मंडल के निकट निरीक्षण में रखने की दृष्टि से माहेश्वरी पत्र और इस को देहली से कलकत्ता ले जाया गया। तभी वहां कई प्रकार की असुविधाओं के कारण प्रैस जल्दी चालू न हो सका और उसका सम्पादन कार्य भी श्री. पं. धर्मानंदजी त्रिपाठी और हमारे सिपुर्द हुआ। श्री. विश्वेश्वरचंद्रजी धूत तथा इतर एक कर्मचारी कलकत्ते में पहुँचने के बाद बिदा कर दिये गये। कलकत्ता उस वक्त कोलवार कलह का अखाड़ा था। कलकत्ते से उस वक्त "माहेश्वरी बंधु" "माहेश्वरी गौरव" और "माहेश्वरी जगत" नामक तीन माहेश्वरी जातीय पत्र और निकलते थे। ये तीनों क्रमशः डीडू पंचायत, डीडू माहेश्वरी संघ और सनातन धर्मीय माहेश्वरी सभा के मुख्य पत्र थे। चौथा 'माहेश्वरी' भी अ. भा. माहेश्वरी महासभा का मुख पत्र वहां जा पहुंचा।

(शेष पृष्ठ १९ के कालम ४ पर)

आर्थिक योजना कैसै सफल हो ?

" एक अर्थशास्त्री "

अक्सर यह दलील की जाती है कि आर्थिक योजना के विचार में नूतनता कुछ भी नहीं है, यह पुराने विचार का पूरकमात्र है। पुरानी आर्थिक अयोजित व्यवस्था अर्थात् पूंजीवाद में भी, जो कि अयोजित व्यवस्था समझी जाती है योजना के बहुत कुछ तत्व आ ही जाते हैं। इन तत्वोंको लाने में उत्पादक और खरीदार दोनों ही का हाथ रहता है। उदाहरण के लिए उत्पादक को यह निश्चय करना पड़ता है कि वह कौनसी वस्तु किन ढंगों से तैयार कराये। ये सब निश्चय वह अपने निजी स्वार्थ को देखते हुए करता है और उत्पादन का एक ढर्रा बना लेता है। कैसे अधिक से अधिक फायदा हो बस केवल इसी विचार से उसका सारा उत्पादन होता है। दूसरे शब्दों में समाज के हित और आवश्यकताओं के लिए उत्पादन नहीं होता बल्कि उत्पादक के अधिकाधिक मालामाल होने के लिए। उत्पादनका यह ढंग उत्पादन में अराजकता की सृष्टि करता है। आर्थिक योजना इस प्रकार की अराजकता के उच्छेदन का बिगुल बजाती है।

यह अनेक प्रकार से सिद्ध किया जा सकता है कि समाज के थोड़े से उत्पादन साधन सम्पन्न व्यक्तियों द्वारा निजी स्वार्थ साधन के लिये किये जाने वाले उत्पादन से समस्त समाज के हित एवं आवश्यकताओं को अनुलक्ष कर किये जानेवाला उत्पादन कहीं अधिक उपयोगी और श्रेयस्कर होगा। यथार्थतः अब इस प्रश्न पर कोई बहुत बड़ा वितण्डा नहीं रहा है। आर्थिक योजना के कार्यान्वित होने के संबंध में अब तक जो संशय और आपत्तियां थीं, उनका निराकरण हो चुका है और इस तथ्य से इसकी आवश्यकता पैदा होती है कि "यह व्यक्तिगत मुनाफाखोरी वाली उत्पादन प्रणाली का अंत कर समाजोपयोगी उत्पादन प्रणाली का रास्ता बताता है। केवल व्यक्तिगत मुनाफाखोरी के विचार से किया जाने वाला उत्पादन पूंजीवादी जगत के सामने जो परिस्थितियां पैदा करता रहता है, उनसे हम सभी परिचित हैं। कभी भयानक तेजी, कभी भयानक मंदी एवं बेकार मजदूरों की संख्या का बढ़ना उसके वैशिष्ट्य हैं (सोवियट कम्यूनिज्म- सिडनी एण्ड बियेट्रिस वेब पृष्ठ ६६१)। जब कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में उत्पादक के केवल अधिकाधिक लाभ के विचार से चीजों का उत्पादन होता है। सुयोजित आर्थिक व्यवस्था के अन्तर्गत समाज की आवश्यकता की पूर्ति के लिए उत्पादन होता है। इसका सब से बड़ा आर्थिक गुण यह है कि यह उत्पादन चक्र को अबाध रूप से चलाती रह सकती है, जो कि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के लिए संभव नहीं है, क्योंकि उसका उत्पादन चक्र मुनाफे की काफी गुंजायश न दिखने पर अवश्य ही बंद कर दिया जायगा। दूसरा बड़ा फायदा एक रूसी पर्यवेक्षक के शब्दों यह होता है कि "सुयोजित अर्थव्यवस्था श्रमजीवियों में की सृजनात्मक क्षमताको बढ़ाती और उसे प्रोत्साहन देती है जबकि अबतक की अर्थ व्यवस्थाओंने इसका हनन किया है और श्रमजीवियों को लालच, युद्ध और मौतकी ओर ढकेला है। अब एक ऐसे समाज का निर्माण हो रहा है जो कि जनता भी सृजनात्मक क्षमता से लाभ उठाते हुए उसमे वृद्धि करने का अविराम प्रयास कर रहा है।" इतिहास मैं यह एक अनोखा क्रमविकास है। (हेरी. एफ. वार्ड लिखित "इन प्लेस आफ प्राफिट'-पृष्ठ ९३ जिसका उद्धरण सोवियट कम्यूनिज्म के ६४७ वें पृष्ठ पर दिया हुआ है)।

इस लेख में विद्वान लेखक ने आर्थिक योजना के उद्देश्य और महत्व का निरूपण करते हुए उसके सफलता पूर्वक कार्यान्वित होने की अपरिहार्य शर्तें बतायी हैं। पूंजीवादी देशों में इस प्रकार की योजना क्यों सफल नहीं हो सकती इस पर आपने सम्यक रूपसे प्रकाश डाला है। लेख अत्यधिक विचारोत्पादक है। –सम्पादक

अयोजित पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था की उत्पादन प्रणालीसे सुयोजित अर्थ व्यवस्था की उत्पादन प्रणाली की श्रेष्ठता सिद्ध करनेके लिए और जोरदार दलीले दी जा सकती हैं, किन्तु मैं उन सबको पेश करने की कोई आवश्यकता नहीं समझता। यदि यह अनुभव कर लिया जाय कि यह पूँजीवादी व्यवस्था के सारे दोषों को मिटाती है तो पर्याप्त होगा। मुनाफाखोरी की भावना के लिए कोई स्थान न होनेसे यह समाज के लिए बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती है। न यह पूँजीवादी प्रणाली की तरह बेकारों की फौज खड़ी करती है और न मजदूरों का निर्दय शोषण ही। यही एक ऐसी प्रणाली है, जो आर्थिक समस्याओं का स्वतः समाधान कर सकती है। पूँजीवादी व्यवस्था की असफलता सूर्य के प्रकाश की तरह स्पष्ट है। सभी अर्थ शास्त्री इस एक बात को मानते हैं कि गत महासमरके बाद से पूँजीवाद बराबर संकट की भँवर में बुरी तरह फंसा हुआ है। पूंजीवादी अर्थ शास्त्री आजतक इसका कोई संतोषप्रद उत्तर नहीं दे सके हैं। अल्बत्ता उन्होंने इस दिशामें कोशिश की है और पूँजीवाद के संकट में फंस जाने का कारण यह बताते हैं कि इस व्यवस्था के संचालन में गड़बड़ी पर गड़बड़ी होती रही है। किन्तु इन गड़बड़ियों का कोई कारण होना चाहिए। केवल यह कहने से काम नहीं चल सकता कि कुछ उत्पादकों ने भूलें कीं जिन से यह संकट उपस्थित हो गया है। इस के विपरीत ऐसे भी अर्थशास्त्री हैं, जो कि इस परिस्थिति का विश्लेषण और व्याख्या कर सकने का दावा करते हैं, और उनका दावा ठीक है, इस कारण कि अपने विश्लेषण के बल पर संकट के बार बार उपस्थित होने के संबंध में ठीक ठीक भविष्यवाणी करने में सफल हो गये हैं। उदाहरण के लिए १९२८ की मंदी के विषय में प्रोफेसर वारगा की भविष्यवाणी का उल्लेख किया जा सकता है। इसके अलावा यह बात भी स्मरण रखनी जरूरी है कि गत भयंकर मंदी में, जब कि समस्त विश्व भारी संकट से त्रस्त था, सोवियट रूस की अर्थव्यवस्था न केवल इससे अप्रभावित रही, वरन आर्थिक उन्नति के पथ पर वास्तवमें छलांगे मारती आगे बढ़ रही थी। यह कुछ तथ्य हैं जो साधारण पाठकको निहित प्रश्न को ठीकसे समझनेमें सहायता पहुंचा सकते हैं। अस्तु यह साफ है कि पूंजीवादी व्यवस्था की नींव कायम रखने की कोशिशके साथ साथ आज की आर्थिक समस्याओंको हल करने की कोशिशों की असफलता सुनिश्चित है। दूसरे शब्दोंमें पूंजीवादी व्यवस्थाके अन्तर्गत किसी आर्थिक योजनाका कार्यान्वित किया जाना असंभव काम है। यदि यह कार्यान्वित की भी जाय, तो भी उससे हमारे समक्ष उपस्थित आर्थिक समस्याका समाधान होना तो दूर की बात है नयी समस्याएं अलबत्ते पैदा हो सकती हैं।

आर्थिक योजना के उद्देश्य एवं इसके साधारण स्वरूप के विषयमें उपरोक्त मंतव्य के आधार पर कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। आर्थिक योजना सुचिन्तित कार्य है अस्तु उसका उद्देश्य योग्य ही होगा। आर्थिक योजना का उद्देश्य समाज के समस्त व्यक्तियोंके रहन सहन का स्टैण्डर्ड ऊंचा करना कहा जा सकता है। यह केवल तभी हो सकता है जब कि उत्पादन व्यक्तिगत मुनाफाखोरी के लिए न होकर समाज के उपभोग के लिए हो। उत्पादन के उद्देश्य में इस प्रकार का परिवर्तन तब तक संभव नहीं है, जब तक कि उत्पादन के साधन कुछ थोड़े से व्यक्तियों के हाथ में पड़े रहेंगे। अस्तु आर्थिक योजना के कार्यान्वित होने की अनिवार्य शर्त है उत्पादन के साधनोंपर समस्त समाजका अधिकार हो। यह भी आवश्यक है कि उत्पादन समाजके पूर्ण नियंत्रण में हो। आर्थिक योजना को केवल एक ऐसी सरकार ही कार्यान्वित कर सकती है, जिसका नियंत्रण स्वयं जनसाधारण ही करते हों। हां, तो एक आर्थिक योजना के सफल होने के लिए उत्पादनके साधनों पर समाजका अधिकार होना और सर्व साधरण की सरकार का होना अत्यावश्यक है।

किन्तु हम देखते यह हैं कि योजनाएं तो गढ़ी जा रही हैं, किन्तु उनके कार्यान्वित होने की शर्तोंका जिक्र नहीं किया जाता। यह सारा काम कितना अस्वाभाविक और खोखला है।

जर्मनी का उदाहरण हमारे सामने है। वहां दो चार चार वर्षीय आर्थिक योजनाएं कार्य रूपमें परिणत की गयीं किन्तु उपरोक्त शर्तों की बिना पूर्तिके ही। अस्तु परिणाम वही हुआ जो होना चाहिए था। उनसे जनसाधारण की आर्थिक स्थिति कतई नहीं सुधरी। नाजी पार्टीके समर्थक कुछ थोड़से पूंजीपति और उद्योगपति अवश्य मालामाल हो गये।

पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था के अन्तर्गत आर्थिक योजनाओं की रचना पुरानी अर्थव्यवस्था को कायम रखने की कोशिश के सिवाय और कुछ नहीं है। विचारशील जनसाधारण इस प्रकार की कोशिश के घातक प्रभाव से भलीभांति परिचित हैं। यह बिलकुल स्पष्ट हो चुका है कि वर्तमान आर्थिक व्यवस्था को कायम रखने की इस प्रकार की कोशिश केवल युद्ध, नर संहार और लूटपाट के लिए मार्ग प्रशस्त करने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकती। यह पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था द्वारा उत्पन्न की गयी समस्याओं का समाधान नहीं करती, बल्कि सब से बुरे ढंग की आर्थिक गुलामी का मार्ग खोलती है।

देश सेवा के नाम पर यह 'विषकुम्भम् पयोमुखम्' की कहावत चरितार्थ करने वाला मक्कारीपूर्ण कुचक्र है।

मध्यभारत में कैसे काम हो ?

(पृष्ठ ५ का शेष)

सहयोग वृद्धि अर्थ संग्रह तथा प्रचार के उद्दश्यों को लेकर यदि उल्लिखित समिति के प्रतिनिधि मंडल के रूप में ही कुछ विशिष्ट कार्यकर्ता सारे मध्यभारत का दौरा करें तो मैं सोचता हूँ क्योंकि Back ground बहुत कुछ तैयार हो चुका है उक्त तीनों उद्देश्यों की पूर्ति में विशेष कठिनाई न होगी।

दौरा करने वाला यह प्रतिनिधि-मंडल समय और सुविधा की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है और मेरा अनुमान है थोड़ी सी कठिनाइयाँ उठाने के बाद हमारे सहयोग, प्रचार और अर्थसंग्रह के तीनों ही प्रश्न कुछ अंशों में हल होजायेंगे और हम सफलता के बहुत निकट पहुँच जायेंगे।

बाहर के सहयोग की हमें आशा रखनी चाहिये किन्तु सर्वथा उसीपर निर्भर उचित न होगा। मैं समस्त मध्य भा. माहेश्वरी बंधुओं का और विशेष कर इन्दौर के बन्धुओं का कि जिन पर मध्यभारत का विशेष उत्तरदायित्व है तथा भाई रामचंद्र जी नवाल का इस पत्र की ओर ध्यान आकर्षित करता हूं। मुझे विश्वास है कि अनुभवी बंधु आगे आ, हमारा पथ प्रदर्शन करेंगे कि जिससे समय के साथ हमारे भी कदम उठ सकें। चर्चा का अब समय नहीं है। युद्ध का बहाना भी उचित न होगा।

क्या उत्साही बंधु इधर ध्यान न देंगे!

(श्री. रमेशचन्द्र जी माहेश्वरी ने जो सुझाव पेश किये हैं, उन पर हम फिर अपने विचार व्यक्त करेंगे।) —सम्पादक

युद्ध और भारतीय इण्डस्ट्रियाँ

(एक जानकार)

वर्तमान युद्ध से पूर्व यद्यपि भारत संसार के औद्योगिक देशों में मुख्य समझा जाता था, परन्तु वास्तविक स्थिति अत्यन्त असन्तोषजनक थी। आवादी का १०% मुश्किल से उद्योगों में काम करता था, और इसमें से केवल १% ही संगठित उद्योगों में था। भारत सरकार की कमेटी की रिपोर्ट से पता चलता है, "भारत में औद्योगिक प्रगति बहुत थोड़े परिमाण में थी, और अन्य देशों की तुलना में बड़ी धीमी थी। हमारा मत है कि भारत के सीमा विस्तार, आबादी और उसके प्राकृतिक साधन स्रोतों को देखते हुए यह विकास बहुत ही कम था। औद्योगिक ढाँचा कुछ ठीक ढंग पर नहीं है, और बहुत स्थानों पर पर्याप्त रूपसे विकास भी नहीं कर रहा है।

युद्धने औद्योगिक स्थिति सुधारनेक हमें एक अनुपम अवसर प्रदान किया था। जहाजोंके आवागमन की असुविधाएँ, विनिमय नियंत्रण, युद्धके शस्त्रास्त्रों की भारी मांग को पूरा करनेमें उद्योगपतियोंमें प्रतिस्पर्धा, देशमें पगप्रसार प्रवृत्ति, और मध्य पूर्व और सुदूर पूर्वके मैदानोंके लिये भारतको शस्त्रागार बनाने के ब्रिटिश सरकारके निश्चय आदिने भारतीय उद्योगोंकी 'शीघ्रतम वृद्धिके लिये मनोवैज्ञानिक तथा वास्तविक अभीष्ट प्रभाव डाला है।

भारत सरकारने भी आश्वासन दिया कि युद्धोत्तर काल में योग्य भारतीय इन्डस्ट्रियों को सब तरह की उचित सहायता दी जायेगी परिणामतः भारतीय व्यवसायियों ने समयानुकूल साहस किया, और जहाँतक शक्य था उद्योगों का विस्तार किया और नये व्यवसायों को प्रारम्भ किया। यह विस्तार केवल संगठित उद्योगों तक ही सीमित नहीं रहा।

१९३८ और १९४२ के दर्मियान देश की फैक्टरियों में ३०% अधिक व्यक्ति काम में लगे थे। इस वृद्धि का एक कारण प्रान्तों में फैक्टरी विधान का लागू होना भी था। उदाहरणार्थ बम्बई में १९३९ के विधान के अनुसार १० या २० कारीगरोंवाले व्यवसाय पर भी फैक्टरी विधान लागू होगया है। इस की वजह से रोजगारी में भी अच्छी तरक्की हुई। अधिक वृद्धि १९४१ में हुई। १९४२ में जापान के युद्ध प्रवश के कारण और वृद्धि की आशायें थी पर वे पूरी न हो सकीं। ऐसा जान पड़ता है वर्तमान यंत्रों से उत्पादन अपनी चरम सीमा को पहुंच चुका है।

नौकरियों की यह वृद्धि अधिकतर सरकारी तथा स्थानीय फण्ड फैक्टरियों और एञ्जीनियरिंग तथा कॉटन टैक्सटाईल धन्धों के कारण हुई। १९३८-४२ में ५४३८०० अतिरिक्त कार्यकर्ताओं में से २५२२०० या ४५ सैकड़ा से अधिक व्यक्ति उक्त तीन ग्रुप्स में नियुक्त थे। इसके बाद लकड़ी, पत्थर, ग्लास, खनिज, धातु और खाद्यपान, और तम्बाकू आदि में थे।

इस तरह स्पष्ट है कि युद्धोद्योगोंवाले धन्धों में सबसे अधिक विस्तार हुआ। उद्योगों के उप विभागों में भी भिन्नभिन्न विस्तार हुए। वस्त्रव्यवसायों में सूती धन्धे में पूर्णतः और ऊनी में सापेक्षिक, और विविध में सबसे अधिक विस्तार रहा। इन्जिनीयरिंग विभाग में विविध तथा सामान्य इन्जिनीयरिंग में अपेक्षया सबसे अधिक विस्तार हुआ, और इसके बाद इलेट्रिकल इंन्जिनीयरिंग और जहाजी कारखानों में। खनिज विभाग में विविध तथा फौंड्री में लोहा तथा इस्पात की अपेक्षा अधिक नियुक्तियाँ हुईं। लकड़ी, पत्थर, और ग्लास के ग्रुप में विविध तथा ग्लास फैक्टरियो में सबसे अधिक वृद्धि हुई और तदनन्तर सीमैन्ट, इंटों और टाईल्स फैक्टरिओं में।

काम करनेवालों की तादाद के बढ़ने के क्या कारण थे, इस विषय की पूरी-पूरी जानकारी हमें नहीं मिल सकी है। अनेक प्रान्तों के आँकड़ों से पता चलता है कि वृद्धि का अधिक कारण काम के दुगुने तिगुने शिफ्ट का होना था। प्लान्ट के न मिलने से, स्पेयर पार्ट्स और आवश्यक कच्चे माल के विदेशों से न आ सकने से, और वर्तमान पूञ्जी पर नियंत्रण के कारण से और अधिक नयी फैक्टरियाँ न खड़ी हो सकीं।

गत चार सालों में सभी उद्योगों ने खूब पैसा बनाया है। युद्धकालीन औद्योगिक विस्तार देश में एकसरखा नही हुआ है। नियुक्तियों में ८०% के करीब वृद्धि बम्बई, बंगाल, यू. पी., मद्रास और पञ्जाब में हुई है। तुलनात्मक दृष्टि से नियुक्तियों में सब से अधिक वृद्धि पञ्जाब और दिल्लीमें हुई है, और सबसे कम सिन्धमें। युद्धसे पहिले तक बंगाल सबसे आगे था, और उसके बाद क्रमशः बम्बई, मद्रास, यू. पी. बिहार, और पंजाब।

युद्धकालमें भारतीय औद्योगिक उत्पादनमें कोई उल्लेखनीय हेर-फेर नहीं हुआ है। खरीदारोंके लिये चीजें बनानेवाले उद्योगधन्धोंने बहुत अच्छी प्रगति की है। फिर भी इन्डस्ट्री का ढांचा यथापूर्व ढिलमिलसा ही रहा है। बुनियादी उद्योगोंका यहाँ स्पष्टरूपसे अभाव है। इसी बातका आर्थर मूरने संकेत करते हुए कहा था, "भारतमें उत्पादनका परिमाण तो बहुत बढ़ गया है परन्तु योग्यता की श्रेणियाँ बहुत ही सीमित रही हैं। भारत में अधिक लोहा व फौलाद ढालने की और मशीनोंके कलपुर्जे बनानेके लिये नयी भट्टियों तथा फाऊन्ड्रियोंके चिन्हतक नहीं हैं।" अपनी इस भूलके लिये इस देशको भारी कीमत देनी पड़ रही है। युद्धके प्रारंभ में ही यदि इस दिशाकी ओर कुछ यत्न किया जाता तो आज भारत युद्ध सामग्रीके तयार करने में अधिक सहायक सिद्ध हो रहा होता, और पगप्रसार प्रवृत्ति आसानीके साथ रोकी जासकी होती। केवल इस ओर ध्यान न देने के कारण ही आज उद्योग तथा यातायात प्रणाली पर व्यर्थ का भार पड़ रहा है।

इस सम्बन्ध में युद्धकाल के सुअवसर का लाभ उठाकर आस्ट्रेलिया और कनाडा ने जो अपने देशोंके औद्योगिक ढाँचे को सुदृढ़ बनाया है वह ध्यान देने योग्य है। अभी एक लेखक ने उनके सम्बन्ध में लिखा है, "भारतकी अपेक्षा खराब स्थिति से प्रारंभ करके आस्ट्रेलिया ने अपने स्टील के उत्पादन की वृद्धि बड़ी तेजी से की है, और केवल दो वर्षों के भीतर ही अपनी सरकारके आधीन और ब्रिटिश अमेरिकन और अन्य उद्योगपतियों को अपने देश में माल उत्पन्न करने की फैक्टरियाँ बनाने को निमंत्रित करके अपने कारखानों में ही हवाई जहाज वायरलैस, और अन्य मैशीनरी बनानी शुरू कर दी है। कनाडा में सरकार ने ७ सरकारी सहोयोग स्थापित किये हैं, जिनमें से चार में तरह-तरहके हवाई जहाज, शैल्स, रायफलें, और तत्सम्बन्धी औजार, एक में मैशीनों के कलपुर्जे आदि बनाये जाते है, और बाकी दो आवश्यक युद्धोपयोगी सामग्री खरीदते हैं।" भारत सरकार यदि चाहती तो यह सब काम अकेली ही कर सकती थी, पर उस ने इस ओर कुछ भी नहीं किया बल्कि उसके विपरीत सर विश्वेश्वरैया की ओटोमोबाईल इन्डस्ट्री की योजना तक को सरकार ने क्रियान्वित नहीं किया। शायद उनकी योजना इसप्रकार की है जिससे युद्धोत्तर काल में भारत में ब्रिटिश माल पूर्ण सुरक्षा के साथ बिका करेगा। हमारे इस सन्देह की सम्पुष्टि लार्ड वाल्टन के ताजा वक्तव्य से होजाती है, जिसमें उन्होंने कहा था कि, ब्रिटिश माल का निर्यात उपनिवेशों और आश्रित राज्यों में स्थायी रूप से खपाया जा सकेगा।

भारत के औद्योगिक ढाँचे की गम्भीर दरार को पूरने के लिये नयी इन्डस्ट्रियों के प्रारम्भ करने के प्रश्न के अलावा भारतीय उद्योगपातियों में वर्तमान इन्डस्ट्रियों के भविष्य के बारे में भारी चिन्ता उत्पन्न हो गई है—खासकर वे नयी इन्डस्ट्रियों का युद्ध के ठीक बाद के काल में क्या बनेगा, इस चिन्ता से ग्रस्त हैं।

अभी हाल में विदेशों से सूती माल, बाईसिकलें, बिजली के पँखें, आदि यहाँ के उद्योगपतियों तथा जनता की सलाह के बिना ही भारत में आये और उनमें से कितनी ही चीजें इंग्लैण्ड की कीमतों से भी कम मूल्य पर यहाँ बेचीं गयीं, जिस से खरीदारों के दिलों पर भारत में बनी चीजों के विषय में कीमतों के हिसाब से उल्टा असर पड़ा। इस कुप्रभाव का दिग्दर्शन कुमार राजा सर मुथिया चेट्टियर चेट्टिनड ने फिडरेशन ऑफ इण्डियन चेम्बर्स ऑफ कॉमर्स एन्ड इन्डस्ट्री की नयी दिल्लीमें हुई गत मीटिंगमें कराया था। उन्होंने कहा था, "गवर्नमेंट ने जो आयात की छूट देनेका निश्चय किया है, उससे पगप्रसार की प्रवृत्ति तो रुकती नहीं बल्कि भारतके बढ़ते हुए औद्योगीकरण पर उसका निश्चितरूपसे हानिकर प्रभाव पड़ेगा। एक प्रान्तके प्रधान सर्जनने खुलेरूप में अपने अधीनस्थ अस्पतालोंके नाम सरकूलर भेज कर यह हिदायत की है कि वे इस देशमें बने हुए औषध और टिंचरों को प्रयोग में न लायें (जिन्हें कि वे लोग गत दो वर्षों से काममें ला रहे थे)। आखिर युद्धके संकटपूर्णकालमें जिन भारतीय औषध आदि ने इतनी अमूल्य सेवायें की, उन्हें बन्द करके उनके स्थान पर विदेशी औषध आदि को फिरसे जारी कराने का क्या मायना? इस नीति से भारत का युद्धोत्तर काल में औद्योगीकरण कैसे होसकेगा?"

सरकार अभी और कुछ नहीं तो इतना तो कमसकम करदे कि वह यहाँ के उद्योगपतियों में अपना विश्वास उत्पन्न करे, और एक उद्योग विधान के अनुसार एक कमेटी बना दे जो युद्ध समाप्त होते ही यातायात के रास्ते तथा सुविधायें मिलने पर ब्रिटेन के निर्यात आदिके दावे के औचित्य आदि पर विचार करसके। इस के साथ साथ सरकार की युद्धोत्तर निर्माण योजना मैशीन को भी दुरुस्त करने की सख्त जरूरत है। अर्थशास्त्रियों ने जो कुछ इंग्लैण्ड की परिस्थितियों के विषय में लिखा है वह भारत पर भी कुछ कम लागू नहीं होता। अर्थशास्त्रियों ने जो कहा था उसका सारांश था, "हम अपने गुस्से को कम नहीं करसकते। सब काम बड़े ढिलमिल तरीके से हो रहा है। तथ्य यह है कि, इस युद्ध की हार जीत संसार के भविष्य पर निर्णयात्मक प्रभाव डालेंगे। हम उन्हीं चैम्बरलेनी तरीकों से चल रहें हैं। हम अभी लुढ़क रहे हैं, जहां कि हमें भागा दौड़ी से काम करना चाहिये था.

उज्जैनमें गुंडोंका जोर

उज्जैन (डाकसे)। पिछले कुछ समय से उज्जैन में गुण्डों का जोर दिन दिन बढ़ता जा रहा है। पिछले महीने डाक्टर तारानाथ और एक स्त्री की हत्या की घटना ताजी ही है। अब यहां के एक वकील श्री. कुंवर बहादुर सक्सेना को गुण्डोंने धमकी का लिखित पत्र डाक से रजिस्ट्री द्वारा भेजकर लिखा है कि तुम्हें चेतावनी दी जाती है तुम मारे जाओगे।" पिछले वर्ष भर से उज्जैन के एक साहित्यिक श्री. दीनानाथ व्यास के विरुद्ध एक मुकदमा चल रहा है। श्री. कुंवर बहादुर उस मुकदमे की पैरवी कर रहे हैं। श्री. दीनानाथ के विरोधी नहीं चाहते कि उन की पैरवी या बचाव कोई वकील करे। किन्तु जब श्री. सक्सेना पैरवी करने लगे तो उन्हें धमकी दी गई और अब गुण्डोंने लिखित धमकी रजिस्ट्रीसे भेजी है।

गुण्डों की हरकतें बढ़ रही हैं। ऐसे ही गुण्डों की हरकतोंसे कुछ वर्ष पूर्व एक पत्रकार श्री. बूटी की बड़ी ही निर्दयता से उज्जैन में हत्या हुई थी। उस समय भी महाराजा ग्वालियर ने स्वयं ध्यान देकर उस गुण्डेशाही को रोका था।

मातृ-पितृ स्तम्भ
ART CORNER

न सोने के कारण

२५

श्री. श्रीनिवासजी झंवर

गत ता. २१–२–४४ के 'माहेश्वरी' में हम नींद की आवश्यकता और माताका परिचय करा चुके हैं। उसी लेखमें बालकके न सोनेके कारणों के विवेचन को भी प्रारम्भ कर दिया था।

(१) **डर**: हां तो उस लेखमें हम बालकके भयके कारण न सो सकने के सम्बन्ध में विचार आरम्भ कर चुके थे। किन्तु पाठकों की सुविधाके लिये हम भयके कुछ स्वरूपों पर पुनः विचार करेंगे।

यदि डरके मारे बालक की नींद रातमें उचट जाती है तो इसकी पहचानका सरल साधन यही है कि इस प्रकार नींद रात्रिमें एक वक्तसे ज्यादा बार कभी नहीं उचटेगी, तथा दूसरे दिन सुबह बालकको शायद याद भी नहीं आएगा कि भयके मारे गत रात्रिको उसकी नींद उचटी थी। इस प्रकार नींद उचटने के पश्चात् बालक शीघ्र ही निद्राग्रस्त हो जायगा।

कभी २ स्वस्थ बालकों की नींद भी भयसे उचट जाती है, क्योंकि शायद उन्होंने किसीसे कोई भयानक कहानी सुनी है या भयानक रोमाञ्चकारी दृश्य देखा है और स्वप्नमें उसी दृश्य या कहानी की याद आजानेसे वे भयसे चौंक उठते हैं। यदि भयका कारण यही हो तो आप शांतिसे बालक से नींद उचटनेका कारण पूछिये और उसे समझा दीजिये कि कहानी कल्पनाकी बात थी वास्तवमें ऐसी भयानक बातें नहीं हुआ करती हैं। यदि बालकको आपके समझाने के ढंगपर विश्वास हो गया तो वह निश्चिंत होकर सो जायगा। ऐसी हालतमें आप बच्चेको प्रकाशमें सुलाइये, दरवाजा खोल दीजिये या स्वयं उसके पास ही बिस्तर करके सो जाइये। किन्तु सावधान! बालक को कोई अवाञ्छित या न मिलने योग्य या बहुत बड़ा इनामका प्रलोभन देकर सुलानेका प्रबन्ध न करें नहीं तो वह भय बालकके मनमें जड़ पकड़ लेगा।

(२) **कोई खास आदतः** कुछ बालकों को देखा गया है कि वे अपनी गुड़िया को पास रखकर ही सोते हैं। ऐसी आदत वाले बालक अपनी गुड़िया को पास में देखने के लिये भले ही चौंक कर उठ जायं और संतुष्ट होकर पुनः सो जायं, ऐसी आदतें यदि अस्वास्थ्यकर न हों तो बेकार छुड़ाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये।

कभी २ बच्चे अंगूठा मुँह में चूसते २ सोने की आदत डाल लेते हैं। कुछ बच्चों की आदत कोई चीज खाते २ सोने की पड़ जाती है। बाद की आदत बहुत खराब है क्योंकि खाने की कोई वस्तु यदि मुँह में रह गई और नींद में गले में अटक गई या स्वास नली में चली गई तो बहुत दुखदायी हो सकती है। इसलिए ऐसी आदतें. बालक के हित और अहित को जांचकर ही छुड़ाना या रहने देना चाहिये।

(३) **उत्तेजनाः** क्याआपका बालक सोनेके वक्त के थोड़ी देर पहले ही अपने भाई बहिन या अन्य किसी से लड़ा है? ख्वाह यह लड़ाई खुशी की ही क्यों न हो? यदि इस प्रकार का कोई कारण उत्तेजना का हो गया हो तो आप उसे उसी वक्त सोने को बाध्य न करें क्योंकि उत्तेजित अवस्था में सो सकना असम्भव बात है। बेहतर यह होगा कि आप संगीत से या किस्से कहानी से बालक का ध्यान परिवर्तित कर दें और फिर उसे सुलावें।

उत्तेजनाकारक अन्य कोई कारण भी बालक को नहीं सोने देगा जैसे यदि बालक खेल रहा हो और आप उसे एकाएक जाकर कहें–"हूँ १० बज गए, तुम्हारा सोने का वक्त होगया, अभी खेल बंद करके एकदम सो जाओ...... आदि" अथवा घर में यदि कुछ दिलचस्प रुचिकर कार्य हो रहा हो, या रेडियो-रेकार्ड आदि बज रहे हों तो भी बालक सोने जाना पसंद नहीं करेगा और सोने का वक्त टालने की हरचंद कोशिश करेगा। ऐसे अवसर पर आपको सोचना चाहिये कि क्या आप ठीक १० बजे चन्द्रकान्ता उपन्यास पढते २ बंद करना पसंद करेंगे? ऐसे अवसर पर कोई आपको आज्ञा दे तो आप के मन में अवहेलना की भावना नहीं आऐगी? ऐसे मौके पर बालक की तन्मयता और लगन को ठेस पहुँचाना अहितकर होगा। इस लिये या तो आप उसे समय और प्रदान करें अथवा स्वयं आदत बनालें कि ठीक २० मिनिट पूर्व बालक को सूचना दे दी जाय कि १० मिनिट में बालक अपना खेल समाप्त कर ले ताकि वह ठीक समय पर सो सके। यही अधिक उपयुक्त है।

(४) **सोने का समय निश्चित है? उपयुक्त है?** जिस प्रकार भूख लगने के समय रोटी और प्यास के वक्त पानी की याद आती है उसी भांति सोने के वक्त बालक को अपने आप नींद की चाह होना चाहिये। इस चाहके लिये आवश्यक यह है कि बालक का सोने का समय निश्चित हो और आदत युक्त होने के लिये यह भी जरूरी है कि यह आदत बचपन से ही डाली जाय। लेकिन यदि बालक को सोना अरुचिकर प्रतीत हो रहा हो तो आप उसके बिस्तर को और साफ कर दीजिये, उसकी पसंद की चीजें सोने के कमरे में रख दीजिये। फिर देखियेगा कि वही बच्चा खुशी खुशी सोने चला जायगा।

हां, यह जरूर ध्यान रखिये कि आप बालक के प्रत्येक कार्यमें सोना, खाना, शौचादि से निवृत्त होना आदि सभी कार्य निश्चित समय पर ही होना चाहिये, नहीं तो बालक किसी एक कार्य की पाबन्दी पसंद नहीं करेगा। हां यह भी कहना असामयिक नहीं होगा कि समय की पाबन्दीमें ज्यादतीसे काम लेना भी अनुचित है।

(५) **तवज्जुहः** क्या आप अपने बच्चेको अत्यधिक या अतिन्यून या ईर्ष्योत्पादक लाड़ करते हैं? यदि आप अधिक लाड़-प्यार करते हैं तो लाड़ले तो सिर पर बैठकर ही नाचते हैं। शायद इसी लिये बालहठको भी अति दुःसाध्य हठ बताया गया है। यदि आप कम प्यार करते हैं तो उपेक्षित बालक समय पर सोता है या नहीं इसकी आपको क्या चिन्ता? यदि आप एकको ज्यादा और दूसरे को कम प्यार करते हैं तो उपेक्षित बालक ईर्ष्यासे आपके और लाड़ले बालक के सम्बन्ध और लाड़ले बालक को हानि पहुंचाने के विचारोंमें ही मग्न रहेगा। यह बालक ठीक समय पर कभी न सो सकेगा। यदि बालकमें ईर्ष्या उत्पन्न हो रही हो तो भविष्य सुखमय बनानेके लिये आपका कर्तव्य है कि उसे आप इस प्रकारके व्यवहारके कारण समझा दें। यदि बालकको केवल समझानेसे संतोष न हो तो अन्य उपायोंका अवलम्ब लें किन्तु ईर्ष्या अधिक न बढ़ने दें।

हां यह भी ध्यान रखिये कि ईर्ष्या मिटाने के प्रयत्न में आप अपेक्षाकृत अधिक तवज्जह न देने लग जांय अन्यथा यह बालक सदैव अपनी बात मनवा लेने को आपको तंग करता रहेगा। साथ ही यह भी ध्यान रक्खें कि यदि बालक की मांग उचित हो तो उसकी उपेक्षा न करें लेकिन आपको कुछ स्वतंत्रता चाहिये तो बच्चे को भी कुछ अधिक स्वच्छन्द बना दें और साथ ही उसे उसकी जिम्मेदारियों को भी समझा दें। यदि बालक अपनी जिम्मेदारियों को समझ लेगा तो वह आपको कभी दिक नहीं करेगा।

(६) **सुखी सान्ध्यः** यह तो आप मान ही लेंगे कि जिस घर में कलह होती है वहां सुख, समृद्धि और शान्ति नहीं आ सकती है। बच्चों का सुख और शान्ति का प्रमाण आयु के अनुसार उनकी स्वस्थ बाढ़ है जिसके लिये कि गहरी नींद भी अनिवार्य है। लेकिन गहरी नींद तभी आसकती है जब नींद के समय के पहले के दोतीन घंटे हंसी खुशी में बीतें हों। इसलिये यह ध्यान रखें कि बच्चे शाम के वक्त सदैव आनंद विभोर रहें।

यहां यह सूचना ध्यानमें रखी जा सकती है कि बालक को ठीक समय पर सुला देने के लिये यह आवश्यक नहीं है कि निश्चित समय के घंटे, २ घंटे पहले से ही घर में सब लोग चुप हो जांय, स्वाभाविक शोरगुल और हंसी मजाक बंद हो जाय। आप केवल यही ध्यान रखें कि घरका वातावरण स्वाभाविक और प्रफुल्ल रहे। हाँ बालक के सोनेके बाद भी घर के वातावरण में कोई अस्वाभाविकता न आने दी जाय क्योंकि मान लीजिये कि आज तो वह आपके आश्रय में है इस लिये आप उसके सोनेके बाद उसके कमरे के पास भी चुपचाप जायंगे, आहिस्ता बोलेंगे किन्तु भविष्यमें जब वह बड़ा होगा तब उसे यह सब साधन शायद न मिल सकें इस लिये घर के वातावरण में कोई असाधारणता या अस्वाभाविकता न आने दें। बच्चा दिन भर के खुशी के विचारों को साथ लेकर सोए, मां-बाप के लिये प्यार और आदर लेकर सोए तथा आगामी कलके लिये सुन्दर कल्पनाएँ लेकर सोए। इस लिये सुबह उठने से लेकर रात के सोने के वक्त तक आप के घर का सारा वातावरण, कार्य व्यवहार, खुशी प्यार और दुलार से ओतप्रोत हो।

(७) **स्वतंत्र बिस्तर और स्थानः** आपका बालक भावी नागरिक होगा। इसलिये बचपन में ही उसे यदि आप अपनी भावी जिम्मेदारियों को वहन करने की समझ और कौशल सीख लेने दें तो उसे अपना जीवन-निर्माण करना अति सुगम हो जायगा। इसके लिये बेहतर हो यदि आप उसे एक स्वतंत्र कमरा देदें जहां कि वह अपने छोटे से मन की नन्हीं सी दुनिया बसाले। यदि अधिक कमरे न हों तो उसी कमरे में उसकी सोने की व्यवस्था भी कर दीजिये। इस प्रकार वह स्वतंत्र बिस्तर पर अपने निजी कमरे में निश्चिंत होकर सो सकेगा। बालक का बिस्तर काफी लंबाचौड़ा हो जिस पर कि वह मनमानी लोट-पलोट कर सके। कई बालक नींद में लातें फटकारते हैं या लौट २ कर जमीन पर लुढ़क जाते हैं। ऐसे बालक को आप साथ लेकर सोयेंगे तो आपकी सुखमय नींद हराम हो जायगी और बालक की फिक्र हमेशा सिर पर रहेगी। इसलिये आप उसे अपना अलग बिस्तर दे दें जहां कि वह आराम से सोकेगा। तकिया देना अनावश्यक है।

सोने के वक्त बालक के दिन के कपड़े खुलवा लीजिये, सोने के कपड़े पहना दीजिये, पानी पिला दीजिये, पेशाब करवा लीजिये ताकि बिस्तर गंदा न हो, दातुन कुल्ले करवा लीजिये ताकि दांतों में अटके हुए रोटी के टुकड़े निकल जांय और मुँह में जहर न बढ़े। यथासम्भव यह सब कार्य बालक की आदत में शुमार करवा दीजिये ताकि वह स्वयं ही यह सब काम रोज कर लिया करे। फिर उसे बिस्तर पर सुलाकर मौसम के अनुसार गरम लिहाफ आदि ओढ़ा दीजिये। यदि कमरे कम हों तो चादर तानकर या अन्य किसी रूपसे कमरे को विभक्त कर दीजिये लेकिन स्वतंत्रता न खोइये।

(८) **हल्का भोजनः** शाम के वक्त बच्चों को हल्का भोजन दीजिये ताकि वे आराम से सो सकें। आप यह जानते हैं कि रातको नींद में हमारे अवयवों की हरकतें बंद हो जाती हैं इसलिये यदि भारी भोजन दिया गया तो वह पचेगा नहीं, परिणाम यह होगा कि बालक का

(शेष पृष्ठ १७ पर)

SHIP BRAND FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

हिन्दुस्तान, सीलोन, और विदेशमें लोकप्रिय

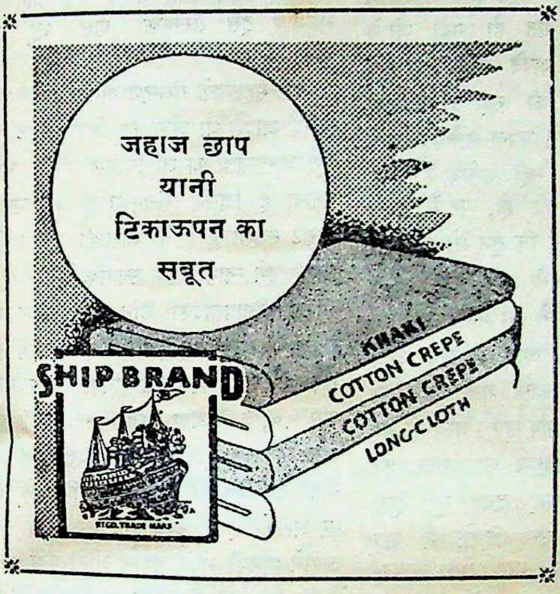
जहाज छाप
यानी
टिकाऊपन का
सबूत
KHAKI
COTTON CREPE
COTTON CREPE
LONG CLOTH
SHIP BRAND
REGD. TRADE MARK

क्योंकि

१ वे स्वदेशी हैं,
२ पक्के रंगके हैं,
३ मज़बूत हैं,
४ सर्वोत्तम हैं,
५ कीमत में सस्ते हैं।

SHIP BRAND
FABRICS

कौटन क्रेप सफेद व रंगीन, खाकी ड्रिल, ट्विल व पगड़ी क्लाथ, सफेद ड्रिल, ट्विल, लौंगक्लाथ, साटिन ड्रिल, फास्ट ब्ल्यू ड्रिल, ग्रे ड्रिल, पापलीन सफेद व रंगीन, दसूती सफेद व रंगीन, कैसमेन्ट क्लाथ रंगीन, नीटींग क्लाथ, शीटींग क्लाथ, टेबल क्लाथ सफेद, मरसीराईज़ लौंगक्लाथ, क्रेप, पापलीन, टसर, शरटींग टौवल, नैपकीन वगैरह वगैरह।

'जहाज छाप' कपड़ा सुंदर, स्वदेशी और सस्ता है

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons

Head Office —— AMRITSAR

Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

शिवप्रसादजी गुप्त

ले–डा० हेमचन्द्रजी जोशी डी. लिट्

बा. शिवप्रसाद गुप्तके स्वर्गवाससे भारत मां का वह नररत्न उठ गया जिसकी पूर्ति होना असंभव सा ही दिखता है। भारतमें कभी आर्य संस्कृति के समय मानवों का अभाव न था। इसीलिए मनु महाराज ताल ठोककर दुनिया को ललकार पाये कि

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्व मानवाः॥

अर्थात संसारके सब मानव भारतमें पैदा होनेवालों (आर्यों) के चरणोंमें बैठकर अपना अपना चरित्र सुधारें। था एक भारतीय इतिहासका स्वर्णमय युग, जब दुनिया भारतवासियोंके चरित्रके सामने सर नवाती थी और चीन, जापान, खोतान, जावा, सुमात्रा, बाली अमेरिका तक अपना गुरु मानते थे, पर वह जमाना लद गया। आज हम लाख अपना और अपने देशका गर्व करें किंतु इसका कुछ मतलब नहीं होता। यूरप और उसकी नकल करनेवाला जापान हमसे सभ्यता और संस्कृतिमें आगे हैं। म. गांधी आदि दो चार अपवाद हैं। स्व. बां. शिवप्रसाद गुप्त इनमें एक थे और मानवताके गुणों में किसीसे कम न थे।

१९१६ ई. की बात है। बी. ए. पास करने के बाद मैं एम. ए. पढ़ने काशी गया। मेरे मित्र और गुरु डा. राधाकुमुद मुकर्जी उस समय हिंदू विश्वविद्यालय में इतिहास के अध्यापक थे, उनके कहनेपर मैं बनारस गया था। एक रोज शामको डा. राधाकुमुद ने मेरा परिचय बा. शिवप्रसाद गुप्त से कराया। उन्होंने प्रो. बिनय सरकार से मेरा नाम सुन रखा था। मिलनेपर बहुत खुश हुए और यह खुली हंसी और चेहरेपर स्वाभाविक उल्लास देखकर मैंने समझा कि किसी ऐसे महात्मा के निकट पहुंचा हूं जिसे मैं अपने से बहुत ऊंचा अवश्य समझ रहा था पर अपने से दूर नहीं था। बाबूजी के चेहरे पर आत्मीयता की मुहर थी। बातचीत होने के बाद मैंने समझा कि किसी कुटुम्बी जन के पास आ गया हूं। क्या उदारचरित है कि सबको अपना सगा-सा समझते हैं। मनुष्य में ये गुण मुझे कम देखनेको मिले थे; और आजतक भी दो चार मनुष्यों में बड़ी कठिनता से मिले हैं सो मैं इस महात्मा की मानवता पर जो इस पृथ्वी की होनेपर भी स्वर्गीय थी लट्टू हो रहा था।

कुछ ही दिनोंमें उन्होंने मुझे अपने निकट ले लिया। मुझे आज्ञा दी कि मैं कालेज में भी पढ़ूं और उनका प्राइवेट सेक्रेटरी बन जाऊं। अंधेको क्या चाहिए? दो आंखें। इस मानवके निकट रहना मैं अपना परम सौभाग्य मानने लगा। उस समय बाबूजी पृथ्वी की प्रदक्षिणा करके भारत पहुंचे ही थे। सारे संसारका अनुभव छान फटककर और उसे आर्य संस्कृति के वातावरण के अनुकूल बनाकर लाये थे। इस लिए उन्हें एक ऐसा ज्ञानमंदिर प्रतिष्ठित करने की सूझी जो राष्ट्रभाषा हिंदी के द्वारा जनता के पास उच्च और उपयोगी साहित्य पहुंचाय। इस उद्देश्य से ज्ञानमंडल की स्थापना की गयी। इसकी देखरेखका काम भी इन पंक्तियों के क्षुद्र लेखक को सौंपा गया। फिर क्या था; जितने दिनों बा. शिवप्रसादजी का साथ रहा नित नवीन ज्ञान मिलता और मानवता से प्रेम बढ़ता। उन दिनों बाबूजी 'पृथ्वी–प्रदक्षिणा' पूरी कर रहे थे। इस ग्रंथ में उनके मौलिक विचार थे। उन की दृष्टि निराली थी और उन अंधकारमय स्थानों में ज्योति की जगमगाती किरणें दीखती थी जहां हमें कुछ भी नहीं सूझ सकता। 'पृथ्वी–प्रदक्षिणा' के अंतिम पृष्ठ उन्होंने मुझे डिक्टेट करवाये थे। इससे मुझे पता चला कि दुनियाका चक्कर बहुतों ने काटा किंतु बा. शिवप्रसादजी की आंख ही दूसरी थी। गालिब ने नीचे दिए हुए शेरमें ऐसी ही आंखोंकी फरयाद की है:—

ऐसी एक जाम पिला साक़िए मैनोश मुझे,
दोनों आलम नज़र आने लगें बेहोश मुझे।

इस मानवकी वह साहित्यिक दृष्टि देखकर मैंने साहित्यका पहला पाठ पढ़ा। उनका साहित्य सहृदयतासे ओतप्रोत था। जब कभी साहित्यिक प्रसंग छिड़ता तो उनके मुंहसे हिंदी और उर्दूके लेखकों के अवतरणों का प्रवाह बहने लगता था। एक बार गालिबकी चर्चा छिड़ने पर वे बोले कि गालिबका यह शेरः–

हमको मालूम है जन्नतकी हक़ीक़त लेकिन,
दिलके बहलाने को गालिब यह ख्याल अच्छा है।

गालिबकी आत्माका निदर्शन लगता है और ठीक है। इस पर उन्होंने समझाया कि मनुष्य ने स्वर्गकी रचना करके अपने को परम स्वार्थी बना लिया है; क्योंकि स्वर्ग कीं कामना करनेवाले अधिकांश धर्मात्मा समाजहित रूपी नकद धर्म की उपेक्षा करके स्वर्गमें जाने के लिए नाना प्रकार के बुद्धि और युक्तिहीन उपायोंका अवलंबन करते हैं कि भले ही उनकी आंखोंके सामने सारा समाज जहन्नुम रसीद हो जाय पर उनकी कल्पित स्वर्गकी सीढ़ी बन जाय। क्या ऐसे नीच स्वार्थके दलदलमें फंसी हुई आत्मायें कभी स्वर्गका दर्शन कर सकती हैं। ईश्वर ऐसा 'न्याय रहित' नहीं हो सकता और यदि असंभव संभव हो जाय और ईश्वर ऐसा हो कि इन पापियोंको स्वर्गमें स्थान दे तो इसका जोरदार प्रतिवाद करना पड़ेगा। स्वर्ग असलमें मूर्खों के दिलको संतोष देनेका एक उपाय है। उनकी ये बातें सुनकर मैं दंग रह गया। एक आस्तिक धर्मात्मा जो नित दो बार संध्या करता है, मानवहितके नामपर ईश्वरका प्रतिवाद करनेको तैयार है। धन्य है यह मानवता जो संसारको अपना परिवार समझकर उसकी सेवाके अतिरिक्त किसी अन्य कामको अपना काम नहीं समझती।

एक दिन मैं उस समय नन्दन साहूकी गलीमें स्थित अजमतगढ़ कोठीमें आफिस टाइममें प्रतिदिन की भांति गया और अपने स्थानपर बैठकर काम करने लगा। इस कोठीमें उस समय पहले मंजिलके बहुत बड़े एक हालमें उनके नाना आफिस थे। मैं काम करने ही लगा था कि एक सिपाही आया और बोला कि बाबू साहब अमुक कमरेमें हैं और कह गये हैं कि आप आते ही उनसे मिल लें। मैंने समझा कोई जरूरी काम होगा। तुरत उनके पास पहुंचा वे उस समय उस कमरेमें थे जहां चारों तरफ आलमारियों में उनके कपड़े सजाकर रखे हुए थे। मेरे वहां पहुंचते ही उन्होंने बैठने को मुझे एक कुर्सी दी और कहा आइये बैठिये। इस सम्मान से मैं घबरा गया क्योंकि यह नयी बात थी। मैं मन ही मन सोच रहा था कि देखें क्या नया गुल खिलता है। इतने में उन्होंने कहा–"मैं तुमसे बहुत खुश हूं।" मैंने न समझा कि ऐसी क्या बात हो गयी जो ये मुझसे बहुत खुश हैं। अपने सामने तो इन्हें खुश करनेकी चेष्टा तक की नहीं। सो उत्तर दिया–"मैं तो नितप्रति अपना कर्तव्य करता हूं।" बोले–"अजी, नहीं कर्तव्य के लिए नहीं, सो तो तुम करते ही हो; पर मैं तुमसे अधिक प्रसन्न इसलिए हूं कि तुम मेरे आने पर और कारिंदोंकी तरह कभी खड़े होकर हाथ नहीं जोड़ते।" अब मैंने इस मानवका हृदय समझा। मेरी आंखों में आंसू छलछला आये और तुरंत उठकर उनके लाख मना करने पर भी–मैंने इस महात्माके पांव छुए। धन्य हो यह मानवता जो मेरे इस अवगुण का आदर कर रही है जिसके कारण कई जगह मुझे बुरी ठोकरें खानी पड़ीं। उस दिनसे मैं बाबू शिवप्रसादजी का भक्त बन गया। ऐसी आत्माओंका गुण भला कौन गा सके। मालूम पड़ता है कि कोर्निश बजाने या फर्शी सलाम करने के अवसरों की चोट से ग़ालिब की आत्मा विकल हो उठी थी। इसीलिए उसने गाया है:—

ग़ालिब वजीफ़ख़्वार हो दो शाह को दुआ,
वह दिन गये कि कहते थे नौकर नहीं हूं मैं।

मैं उनके साथ १९१६ में सीतापुर की प्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन में गया और वहां उनका दानी और उग्र राजनीतिक रूप देखा। इस महात्मा के सामाजिक और राजनीतिक विचार उच्च कोटि के थे। हिंदी भाषा की उन्नति के लिए उन्होंने ज्ञानमंडल खोला और वहां से पुस्तकों के प्रकाशन के अतिरिक्त जो दैनिक पत्र 'आज' निकाला वह आज भी हिंदी का सर्वश्रेष्ठ पत्र है। अन्य पत्र तो चीथड़े रूप में ही निकल रहे हैं। और राष्ट्रभाषा हिंदी का गौरव बढ़ाने के स्थान पर घटा रहे हैं।

बाबूजी का ज्ञानप्रेम आदर्श था। पृथ्वी–प्रदक्षिणा के समय वे कई लाख रुपये की पुस्तकें अपने साथ लाये थे और इनका पुस्तकालय आदर्श था। सब विषयों की नयी उत्तम पुस्तकें तुरंत मंगा ली जाती थीं। जब मैंने बाबूसाहब की नौकरी छोड़ दी थी तब भी बाबू साहब ने मुझे आज्ञा दी थी कि जो नयी पुस्तक मैं पसंद करूं उसे खरीद लूं और पढ़नेके बाद उनकी लाइब्रेरीमें भेज दूं।

उनके दानके विषयमें क्या लिखा जाय। उनका तो सब कुछ दूसरोंके लिए था। हजारों संस्थाओंको उन्होंने सहायता दी। न मालूम कितने छात्र उनकी सहायतासे पढ़ पाये और कितने साहित्यिक उनकी मददसे आगे बढ़े। काशीविद्यापीठ पुस्तकालय और ज्ञानमंडलमें उनके बीस लाख रुपये लग गये।

उनका हिंदी प्रेम अपूर्व था। १९२९ की बात है कि एक रोज बर्लिनमें उनका पत्र मिला कि पेरिस आकर मुझसे मिलो, उसके भीतर उनका विजिटिंग कार्ड भी था जिसके ऊपर हिंदीमें नाम था नीचे रोमन अक्षरोंमें। वे जब तार देते थे तो हिंदी भाषामें (रोमन अक्षरोंमें) भेजते थे। विक्रम संवत और भारतीय सौर तिथिका उन्होंने बहुत प्रचलन किया। उन्होंने ज्ञानमंडलसे सौर पञ्चांग निकाला जिसकी हजारों प्रतियाँ वे मुफ्त भारतीय तिथिके प्रचारकी दृष्टिसे बांटते थे। एक प्रति सदा समयपर इस लेखकके पास भी पहुंच जाती थी।

इस महात्माके संस्मरण अनेक हैं। उनका चरित्र आदर्श था और राष्ट्रनिष्ठा अटल और पूर्ण भारतमाता का जो विशाल मंदिर उन्होंने बनाया है जिसमें संगमरमरपर भारतमाताका विराट नकशा है। वे भारतकी एकता और उसकी पूर्ण स्वाधीनताके उपासक थे।

बा. शिवप्रसादका दान कोई तौल नहीं सकता। कारण यह है कि सब दान वे गुप्त रूपसे देते थे। पर उनके दानकी संख्या कमसे कम ५०, ६० लाख कही जा सकती है। आठ नौ बरसकी उम्रमें उन्होंने बहुत आदमियोंको यह लिखकर दे दिया था कि बड़े होने पर आपको इतने रुपये दूंगा। ये सब रुपये उन्होंने ऋणकी भांति चुकाये और कहा जाता है कि एक ऐसी हुंडीका भुगतान कुछ ही वर्ष पहले कराया गया था।

इस वीर ने कांग्रेसकी भी बड़ी सेवा की। उसके ये कोषाध्यक्ष रहे और तीन बार जेलकी यात्रा की। तीसरी बार इनपर फालिज गिरा जिससे ये पूरी तौरपर कभी न संभल सके। मैं इस महात्माकी आत्माको बार बार प्रणाम करता हूं। मेरे तो बाबू शिवप्रसाद गुप्त पितातुल्य थे। उनके अहसान कहांतक गिनाऊं!

जोधपुर में फिर बलवा

ता. २१ अप्रैल को जोधपुर–राज्य के फलौदी परगने के मलार गाँव में फिर हिन्दू-मुस्लिम दंगा हो गया और कई हिन्दू मुसलमानों द्वारा घायल हुए। इसकी जाँच के लिये देशभक्त कुँ० चाँदकरणजी शारदा ने अपना विशेष प्रतिनिधि मलार भेजा, जिससे ज्ञात हुआ कि इसमें मुस्लिम लीग की शरारत है। मुस्लिम लीग के अधिकारी मलार गाँव में आये थे और उन्हों ने ही जबर्दस्ती दो मंदिरों के बीच में मस्जिद बना ली। और हिन्दूओं के प्रतिवाद करने पर उन्हें मारा-पीटा। मुस्लिम दफेदार ने मजिस्ट्रेट की आज्ञा बिना गोली चलाई जिस से बहुत से हिन्दू घायल हुए जिनमें से एक की स्थिति चिन्ताजनक है। इस अवसर पर श्री शारदाजी ने जोधपुर नरेश को तार दिया है कि वे गुण्डों को उचित दण्ड दे कर हिन्दुओं के साथ न्याय करें।

इस निरुद्देश्य शिक्षा प्रणालीका अंत हो

यह देख कर दुःख होता है कि आज की हमारी शिक्षा का न कोई उद्देश्य है, न ध्येय है और न मूल भूत सिद्धांत है। हमारे पास केवल एक संकुचित दृष्टिकोण और अनिश्चित भविष्य है। सम्प्रति हमारे सामने यही एक समस्या है कि शिक्षाकी वर्तमान शोचनीय स्थितिसे कैसे छुटकारा मिले।

●

श्रीजंग बहादुर माथुर

●

स्कूलोंकी शिक्षा का लोगों की वर्तमान आवश्यकताओं से मेल नहीं खाता। आधुनिक शिक्षित व्यक्ति का क्यों न मजाक उड़ाया जाय जब कि कई साल नष्ट करने पर भी उसका ज्ञान अपरिपक्व और अध कचरा है। हमारी वर्तमान विचार पद्धति सर्वथा दूषित है।

हम परिवर्तनशील युग में रहते हैं। हमारे जीवन में अति तीव्र गति से अनेक प्रकार के परिवर्तन हो रहे हैं। लगभग एक शताब्दी पूर्व हमारी जीवन धारा पर विज्ञान एवं पाश्चात्य सभ्यता ने जो धक्का लगाया था, वह ऐसा प्रचण्ड सिद्ध हुआ कि उसने हमको बिल्कुल श्रम हीन कर दिया। बाह्यरूप से हम अर्वाचीन रीतिरिवाज, जीवनप्रणाली एवं पेशों को अपनाने, मशीनों और यातायात के साधनों का उपयोग करने, वैज्ञानिक ज्ञान अर्जित करने एवं वैज्ञानिक उपकरणों से लाभ उठाने का आंशिक प्रयत्न कर रहे हैं, किन्तु आन्तरिक रूप से हम अब भी बदलते हुए समय के साथ नहीं चल रहे हैं।

वास्तविक बात यह है कि हम जबर्दस्ती उस पथ पर ढकेले जा रहे हैं, जिसे हमने स्वेच्छा से अपने लिए नहीं वरण किया। उद्योगधंधे और वाणिज्य व्यवसाय हमारे देशमें पैर जमाने और विकास करने के लिए आये जरूर हैं, किन्तु जनसाधारण के हमारे नेता उन्हें ग्रहण करने के लिए अनिच्छुक एवं अप्रस्तुत हैं। हमारे देश की जीवनधारा किस दिशा को जाय, इस पर जबर्दस्त मतभेद है। भारत में पूर्व और पश्चिम के बीच द्वन्द्व युद्ध हो रहा है। और इससे हमने मानसिक रूप से अपने को विज्ञान एवं विज्ञान जन्य परिवर्तनों के अनुकूल नहीं बनाया। दूसरे शब्दों में हमने अपने अन्दर वैज्ञानिक मनोभाव नहीं पैदा किया। किन्तु कुछ आन्दोलन ऐसे हैं, जो विश्व-आन्दोलन हैं। वे विश्व के सभी देशों में पहुंचते हैं—चाहे देर से पहुंचें या जल्दी। कोई भी हस्ती कभी उन्हें रोक नहीं सकती। बदलता हुआ जमाना मनुष्य में अधिक और अभिनव ज्ञान, कुशलता, योग्यता एवं क्षमता चाहता है। आज जीवन के द्वार में प्रवेश करते हुए व्यक्ति से २० वर्ष पूर्व की अपेक्षा अधिक तैयारी की अपेक्षा की जाती है। राष्ट्र अपने अधिवासियों को जीवन में पदार्पण करने के लिये स्कूलों में तैयार करता है। जब से भारत में वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्रवर्तित हुई है, तब से अब तक कभी भी हमारे स्कूल बदलते हुए भारतीय जीवनको अनुलक्ष कर शिक्षार्थियों को शिक्षा नहीं दे सके। वे देशवासियों एवं उन की आवश्यकताओं से बराबर दूर रहे हैं और समय की आवश्यकता के अनुकूल लोगों को तैयार करने के अपने कर्त्तव्य का पर्याप्त रूप से पालन नहीं किया। न तो देशवासियों की शिक्षा की भूख मिटाने के लिए स्कूलों की काफी संख्या ही बढ़ी और न वर्तमान स्कूलों का पाठ्यक्रम ही बालिग समाज के उपयुक्त है। दोनों के बीच की दीवाल बराबर चौड़ी होती जा रही है। फिर भी देशभर में स्कूलों और छात्रों की संख्या बढ़ रही है और परिणामतः शिक्षा विभाग के कार्य और संचालन विषयक दायित्व में वृद्धि हो रही है। यह सारी प्रगति होते हुए भी यह दुःख का विषय है कि शिक्षा के वास्तविक प्रश्न की बुरी तरह उपेक्षा की जा रही है।

स्कूलों में जो विषय पढ़ाये जा रहे हैं वे सभी महत्वपूर्ण एवं उपयोगी हैं-ऐसा नहीं कहा जा सकता। वास्तविकता तो यह है कि इन बातों पर जरा भी विचार किये बिना अनेक विषय पाठ्यक्रमें ठूंस दिये गये हैं। इस प्रकार उपयोगिता या एकीकरण का कोई भी विचार किये बिना लिखना, पढ़ना, गणित, भूगोल, बीजगणित, इंग्लिश, हिन्दी, उर्दू, बंगला, फ़ारसी, संस्कृत, अरबी, विज्ञान, ड्राइंग, बढई का काम, कला, संगीत, आदि विषय शामिल कर लिये गये हैं।

जब कि स्कूलों से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित एवं उनमें दिल्चस्पी लेने वाले लोग अकेले स्कूल प्रबंधमें व्यस्त हैं, पाठ्यक्रम तैयार करने और पाठ्य पुस्तकों की रचना करने का काम युनिवर्सिटियों एवं कालेजों के प्रोफेसर पर छोड़ रखा गया है।

वे अपने ही विशेष विषयों एवं उनके तार्किक क्रमविकाससे दिल्चस्पी रखते हैं और न तो वे कभी बच्चोंके सम्पर्कमें आते हैं और न न बालकोंके मन, उनकी आवश्यकताओं तथा क्षमताके विषयमें ही कुछ जानते हैं। इसलिए वे ऐसी पुस्तकें लिखते हैं, जो तार्किक, नीरस एवं संकुचित दृष्टिकोणसे ओतप्रोत रहती हैं। प्रत्यक्ष है कि ऐसी पुस्तकें बच्चोंके लिए बिल्कुल व्यर्थ हैं किन्तु कोर्समें रखकर वे ही उन्हें पढ़ाई जाती हैं। वे कभी भी ऐसे प्रश्न नहीं छूते जिनमें बच्चोंको बहुत दिल्चस्पी रहती है। अतीत में जो तथ्य सर्वत्र स्वीकार किये जा चुके हैं, केवल उनके वर्णनसे बच्चोंको क्या फायदा हो सकता है? ये रचयिता यह नहीं सोचते कि जटिल बातें कितनी मुश्किलसे बच्चों की समझमें आती हैं। छात्रों को इस प्रकार की पाठ्य पुस्तकें पढ़ाना ठीक वैसे ही है जैसे कि भूखे लोगों के गलों में पत्थर ठूंसना। प्रोफेसर ही प्रवेशिका परीक्षाओं के परीक्षक होते हैं और वे प्रश्न पत्रों में ऐसी नीरस और जटिल बातें पूछते हैं, जो छात्र बिना समझे हुए बहुत परिश्रम से रट लेते हैं। यही कारण है कि स्कूलों की शिक्षा का लोगों की वर्तमान आवश्यकताओं से मेल नही खाता।

तब क्या इसमे कोई आश्चर्य है कि लोग वर्तमान शिक्षा पद्धति को सर्वथा बुरी और अव्यावहारिक कह कर उसकी निंदा करते हैं और आज के शिक्षित व्यक्ति का मजाक उड़ाते हैं? लेकिन दोष किसका है-वर्तमान शिक्षा पद्धति का या उसके अन्तर्गत शिक्षा पाये हुए लोगों का? आधुनिक शिक्षित व्यक्ति का क्यों न मजाक उड़ाया जाय जब कि कई साल नष्ट करने पर भी उसका ज्ञान अपरिपक्व और अधकचरा है। विचार पद्धति दूषित है, किसी काम में पहल करने की हिम्मत नहीं होती तथा आत्म विश्वास का सर्वथा अभाव है।

निरुद्देश्य शिक्षा

यह देखकर दुःख होता है कि आज की हमारी शिक्षा का न कोई उद्देश्य है, न ध्येय है और न कोई मूलभूत सिद्धांत है। हमारी शिक्षा का कोई दर्शन नहीं है। जब कोई सिद्धांत ही नही है तब व्यवहार में उसका ठीक होना कहां संभव है। न कोई ध्येय है, जिसकी दिशा में हम प्रयास करें। हमारे पास केवल एक संकुचित दृष्टिकोण और अनिश्चित भविष्य है। हमारी शिक्षा का क्या उद्देश्य हो और उसके तत्वज्ञान का कैसे निर्माण किया जाय—ये बहुत बड़े सवाल हैं। सम्प्रति हमारे समक्ष यही एक समस्या है कि शिक्षा की वर्त्तमान शोचनीय स्थिति से कैसे छुटकारा मिले।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में सुधार करने की कोशिशें की जा रही हैं। किन्तु इन कोशिशोंमें अधिकतर का उद्देश्य वर्तमान मशीनरी का दिखाऊ पुनर्गठन करना है। कोई आमूल परिवर्तन करने का कतई विचार नहीं जान पड़ता। दृष्टिकोण में पूर्ण परिवर्तन या समस्त स्कूल पद्धति का पुनर्गठन या शिक्षा का समूचा ढांचा बदलने के इरादे का सर्वथा अभाव है।

अत्यधिक आवश्यक बात है-शिक्षा का शास्त्रीय ढंग से अध्ययन और बाल स्वातंत्र्य, कर्मण्यता एवं पहल की वकालत के साथ साथ शास्त्रीय प्रणाली का अवलंबन। हमें शिक्षा विषयक अपने विचारों का गंभीरतापूर्वक विश्लेषण करना चाहिए और यह निरूपण करना चाहिए कि क्या पढ़ाया जाना चाहिए, क्यों पढ़ाया जाना चाहिए और कैसे सर्वोत्कृष्ट ढंगसे पढ़ाया जा सकता है? अपने विचारों का स्पष्टीकरण करने और निश्चित निष्कर्षों पर पहुंचने के सिवाय स्थितिमें सुधार होनेकी और कोई सूरत नजर नहीं आती।

अमेरिकामें अभिनव परीक्षण

बहुत से अमेरिकन स्कूल और शिक्षण संस्थाएं वर्षों से इस प्रकार का महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

विनेटक योजना या प्रणालीमें इस आन्दोलन की सभी आवश्यक बातोंका समावेश है, वैसे यह सब योजनाओंमें उत्कृष्ट एवं लोकप्रिय भी है। २४ वर्षोंसे उक्त योजना शिकागोके उपनगर विनेटक के स्कूलोंमें कार्यान्वित हो हो रही है। इस योजना की रचना डा. कार्लटन वाशबर्न एवं उनके कुछ साथियोंने की है। यह योजना कक्षाओंमें अध्यापकों द्वारा की गयी गवेषणाओं एव शिक्षा विषयक परीक्षणों का परिणाम है। अस्तु इसमें शिक्षा विषयक सारी समस्याओंका समाधान निहित है। विनेटक योजनाके सिद्धान्त या दर्शन स्वयं वाशबोर्नके शब्दोंमें सुनिये। अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक "बच्चों के अनुकूल स्कूलका पुनर्गठन" की भूमिकामें वह कहते हैं:—

"हम यह स्वीकार करते हैं कि प्रत्येक बच्चे और प्रौढ़को सुखद और संतोषप्रद जीवन यापन करने का अधिकार है। अस्तु प्रत्येक व्यक्ति को अपने विचार व्यक्त करने एवं अपनी अभिरुचि के अनुसार अपना विकास करने का अधिकार मिलना चाहिए। व्यक्ति एक विशाल सामाजिक जीवन का अखंड अंग है, उसकी आवश्यकताओं, रुचि, शिक्षा एवं ज्ञान पिपासा, आदि की उपेक्षा हर्गिज नहीं की जा सकती।"

विनेटक स्कूलों का संचालन इसी आदर्श पर होता है। प्रत्येक साधारण बच्चे को कम से कम क्या क्या बातें जाननी चाहिएं ताकि वह सुखद और संतोषप्रद जीवन यापन कर सके इसका भी निर्धारण करने की चेष्टा की गयी है। उदाहरण के लिए गणित को लीजिए। वाशबर्न बच्चों को समस्त गणित पढ़ाने की आवश्यकता नहीं समझते। वह कहते हैं कि अधिकतर बच्चों को गणित की जो जो बातें जाननी आवश्यक हों केवल उन्हीं की शिक्षा दी जानी चाहिए न कि अनुपयोगी और व्यर्थ की जटिल बातें उनके दिमाग में भरने की कोशिश की जानी चाहिए। इलिनोइस के स्कूलों के प्रिन्सिपलों एवं सुपरिण्टेण्डेण्टों ने गणित के पाठ्य क्रम की रचना की समस्या की सावधानी के साथ परीक्षा करने के लिए वाशबर्न की अध्यक्षता में ७ शिक्षा शास्त्रियों की एक समिति गठित की थी। इस समिति ने अति महत्वपूर्ण निष्कर्ष निकाले और बताया कि किस आयु में बालक गणित की क्या चीजें सीख सकते हैं। उनके निष्कर्षों के अनुसार बालक ६॥ वर्ष की आयु के पहले सादे जोड़, ९। वर्ष की आयु के पहले लंबे जोड़,

(शेष पृष्ठ २३ पर)

साड़ी पहिने नारी का सौन्दर्य

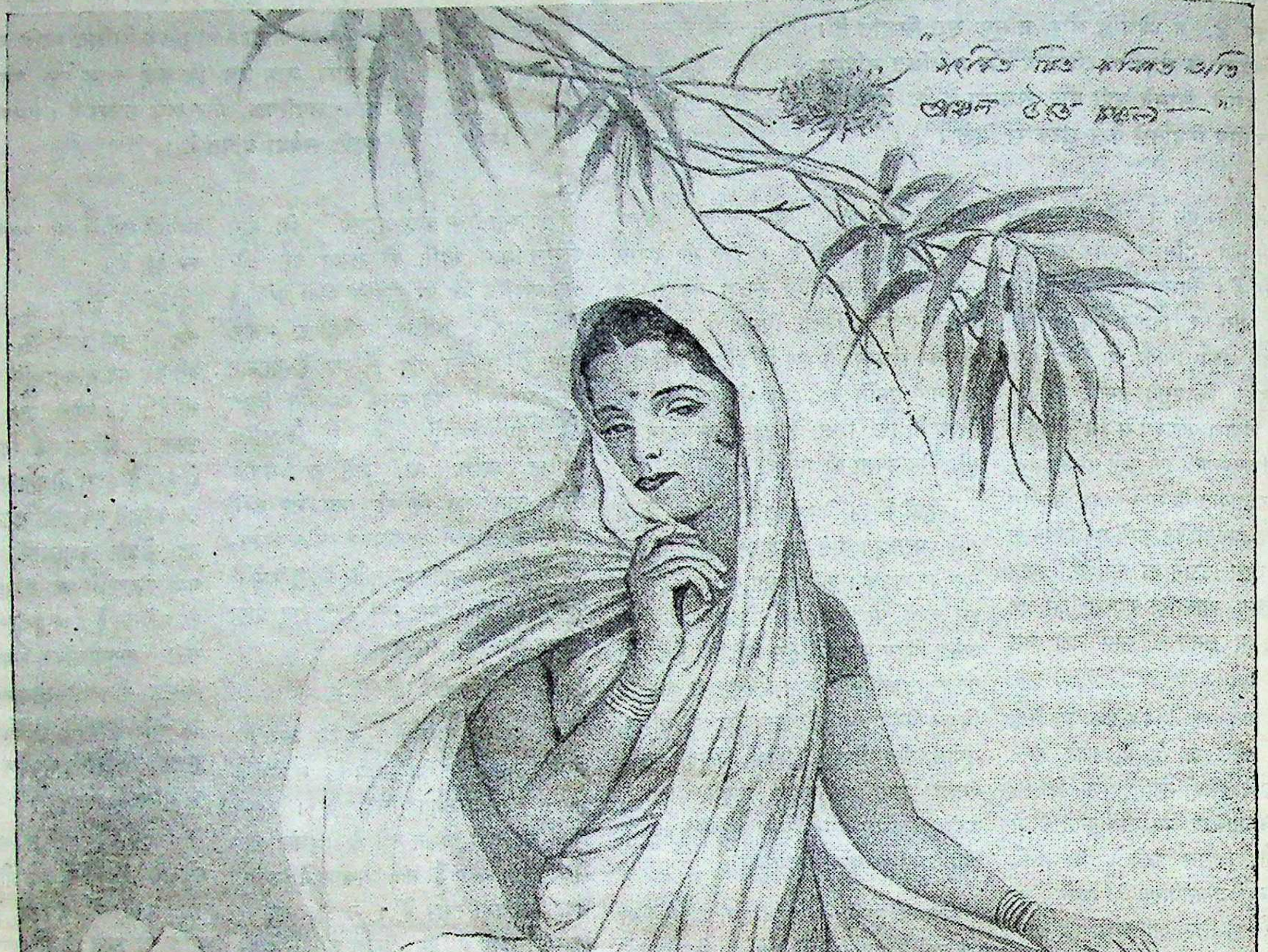

—श्री जे. पी. गांगुली।

'साड़ी पहिने नारी'का यह निरूपण सुप्रसिद्ध कलाकार श्री. जे. पी. गांगुलीने किया है।

सपरिषद वायसरायने १९४१ में आपके गुणों पर मुग्ध होकर आपको सर्टीफिकेट प्रदान किया था।

आप प्रथम भारतीय हैं जिन्हें दि आर्डर आफ "कवेलियर" टू दि काउन आफ इटली प्राप्त हुआ है। न्यूयार्क कला प्रदर्शनी की ओरसे, जिसमें ७९ देशोंकी कलाओंका प्रदर्शन किया गया था, आपको एक पदक प्रदान किया गया था।

जो व्यक्ति पोशाक की अपनी अभिरुचिके लिए प्रसिद्ध हैं, वे सर्वदा वही कपड़ा पसंद करते हैं, जो सुन्दर जँचता है।

घटिया सूत पहली नजरमें अच्छा दीख पड़ सकता है, किन्तु केवल बढ़िया सूतसे बना हुआ वस्त्र ही चलते हुए व्यक्तिके शरीर पर शोभायमान हो सकता है।

हमारी मिलकी साड़ियां धोतियां, और कमीजोंका कपड़ा बनाते समय विभिन्न प्रकार के सूत पर सावधानीके साथ विचार किया जाता है। केशोरामके कपड़ोंकी बुनाई बारीक और डिजाइन मौलिक होते हैं।

केशोराम

श्रेष्ठ सूती वस्त्र

मारवाड़ प्रां. सनातनधर्मसभा का अधिवेशन

शिक्षा, मंदिर, व दानप्रणालीमें सुधार की अपील:

राजनीति और धर्म को मिलाने की सलाह

गत २०।२१।२२ अप्रैल को मारवाड़ का तिप्राचीन नगर डीडवाना विविध सामयिक त्सवों का केन्द्र बना रहा। यह पहला ही सर था जब सनातन धर्म के पंडाल में रिजनों को भी स्थान दिया गया था। प्रथम न प्रातः एक जुलूस, जिसमें डीडवाना की नता सम्मिलित थी, श्री डीडवाना हिन्दी तकालय से निकल कर आनन्द भवन स्थित डाल में पहुंचा और ध्वजोत्तोलन के बाद सभा परिणत होगया। सभा में उपस्थिति करीब ॥ हजार की थी। मंगलाचरण और गायन से श्री सनातन धर्म विद्यालय के बालकों श्री दरबार कन्या पाठशाला की बालिकाओं सम्पन्न किया, के बाद स्वागताध्यक्ष युवक न बाबू रघुनाथ दासजी बांगड़ ने अपना वागत भाषण पढ़ा, जो नीचे प्रकाशित हैः—

मानसिक विकास आत्मा की पिपासा और संसारिक कार्यों को पूर्ण करने के लिए शिक्षा अनिवार्य है, किन्तु राजभाषा के अध्ययन को समयानुकूल मानते हुए भी पाश्चिमी सभ्यता के अन्धानुकरण का समर्थन नहीं किया जा सकता। इस सभ्यता ने हमारी भाषा, भाव, वेषभूषा, संस्कृति, एवं हमारे शास्त्र के प्रति हमारे दृष्टिकोण को भी विकृत कर दिया है। हम मानसिक स्वतन्त्रता से हाथ धो बैठे हैं। समय का स्थान मिथ्या हास्य विलास ने, धर्म धर्मविहीनता ने, पूज्यजनों के आदर का भाव उपेक्षा ने ग्रहण कर लिया है। इसप्रकार हमारा समाज नैतिक दिवालियेपन को अपनाकर धूमिल दिशा की ओर मशीन की भाँति कदम बढ़ा रहा है। किसी भी सहृदय व्यक्ति को इससे सन्तोष होना असम्भव है। इसलिये भारत के जर्जरित शरीर में विज्ञान, जाग्रति और सामयिकता की पुट देकर उसको नवीन रूप में अनुप्राणित करना ही हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता है। इसके साथ २ मानव जाति के अर्द्धभाग के लिए शिक्षा का दरवाजा बन्द करके उन्नति के स्वप्न देखना गगन पुष्प की कल्पना है। उचित तो यह है कि कर्तव्य के नाते स्त्री समाज में विशेष रूप से शिक्षा का प्रसार करें। शिक्षित महिला ही देश की चारु शिक्षा और उन्नति का आधार है।

हमारे मन्दिर

मन्दिर हिन्दू सभ्यता और संस्कृति के केन्द्र हैं। हमारी इस प्राचीन संस्था ने जिसका अस्तित्व किसी न किसी रूप में समस्त विश्व में विद्यमान है बाहरी आक्रमणों से हमारी जिस प्रकार रक्षा की है, वह इतिहास के पाठकों से छिपी नहीं है। प्राचीन काल के मन्दिर युद्ध-काल में विशाल और सुदृढ़ शिविर और शान्तिकाल में हमारे शिक्षामन्दिर और स्थायी अतिथिशाला का भी काम देते थे। उनका पुजारीवर्ग वैद्य, ज्योतिषी, प्रारम्भिक शिक्षक और धर्मोपदेशक का कार्य करता था, त्याग और तपस्यामय उनका जीवन सारे समाज का पथ प्रदर्शन किया करता था। किन्तु आज लज्जा और दुःख के साथ यह कहने के लिए बाध्य होना पड़ता है कि हमारे मन्दिरों का वर्तमान रूप उस अतीत कालीन आदर्श को आँखों से ओझल कर चुका है। फलतः उनके प्रति हमारी श्रद्धा क्रमशः क्षीणतर होती जारही है। उनके पतन के कारणों के विवेचन के लिये यह उपयुक्त अवसर नहीं है। किन्तु यदि भक्तजन और पुजारीवृन्द अपने कर्तव्य को थोड़ा थोड़ा समझने और पालन करने की ओर ध्यान दें तो निश्चय ही मन्दिरों के प्रति दुर्बल होती हुई हमारी श्रद्धा को पुनः पुष्ट और सजग कर उन्नति क्रम में वद्ध अपना रिक्त स्थान पूरा कर सकते हैं। जिसकी नितांत आवश्यकता है।

गोधन

गोधन इस देश के आर्थिक ढाँचे की रीढ़ है। क्या धार्मिक, क्या आर्थिक दोनों ही दृष्टियो से कृषिप्रधान इस देश भारतमें गौओं का महत्वपूर्ण स्थान है। अतीत में हुए युद्ध बता रहे हैं कि तात्कालीन भारत का गोधन कामधेनु ही समझा जाता था। आजकल की गतिविधि में निःसन्देह हम अपने आप को उस धनको ह्रास से बचाने में असमर्थ-सा पाते हैं किन्तु उस प्रदेश को छोड़कर कमसे कम उन प्रान्तों में जहाँ गोवध कानून न निषिद्ध है, हमें इस विषय में कुछ ठोस कार्य करना चाहिये।

परिस्थिति चक्र इतनी अकल्पनीय तेजी से घूम रहा है कि यदि हम अब भी इस विषय में असावधानी से काम लेंगे तो वह मर्यादा जिसको राजर्षि दिलीप ने स्थापित किया था—टूक टूक होजावेगी और दूध दही की नदी बहानेवाले इस देश की सन्तान दूध और घी की बूँद बूँद के लिये तरसेगी। बैलों के अभाव में या ऊँचे भावमें मिलने से हमारा अन्नदाता किसानबन्धु परिस्थिति का गुलाम होकर हाथ पर हाथ रखकर बैठ जानके लिए विवश हो जायगा।

आइये, अकर्मण्यता को छोड़कर कुछ स्फूर्तिप्रद उद्योगों का अवलम्बन करें।

हमारी दानप्रणली

सनातनी विश्व की भारी धन राशि दान के विविध अङ्गों में सराहनीय कार्य कर रही है किन्तु दुःख यह है कि हमारा दान अधिकांश में विवेकपूर्ण नहीं होता। अतएव उसका अधिकसे अधिक सदुपयोग नहीं होता, रचनात्मक और ठोस कार्योंके आय-स्रोत निर्बल होनेके कारण उनके कार्यक्षेत्र सीमित हो जाते हैं। हमें चाहिए कि हम अपनी विचार धारा प्रसार करने में उदासीन न रहें, प्रत्युत राजा अशोक और स्वामी विवेकानन्द का अनुकरण करते हुए अपने सिद्धातों को निनादित कर दें।

राजनीति में हमारा स्थान

बाहरसे आनेवाले व्यक्तियोंने मुख्य समस्याओंसे हमारा ध्यान बटानेके लिए "राजनीति धर्म से पृथक है" का नारा बुलन्द किया जिसका हमने अन्धानुकरण किया। परिणाम यह हुआ कि राजनीति जो धर्म का एक अकाट्य अंग है उससे पृथक् करदी गई। उससे पृथक् हुआ निस्तेज धर्म उपेक्षणीय होने लगा। इस शिथिलता को दूर करने के लिए समय समय पर प्रयत्न किया गया 'किन्तु मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की, इसका कारण था-रोग का गलत निदान। हम यह बात अब समझ पाये कि धर्म यदि देश की आत्मा है तो राजनीति उसकी जागरूक और स्फूर्ति दायिनी शक्ति। आत्मा और शक्ति का जो अटूट सम्बन्ध है यह बतलाने कीं आवश्यकता नहीं है। राजनीति से दूर रहकर हमने अपार हानि उठाई है। किन्तु महंगी कीमत चुकाने पर भी हमारे सनातनी बन्धु अभी उस क्षेत्रमें प्रविष्ट होने और अधिकार कर लेने की आवश्यकता को गम्भीरतापूर्वक अनुभव नहीं कर रहे हैं। उसका भयावह परिणाम हमारे सामने है। देश की राजनैतिक परिधि में हमारा कोई परिगणनीय स्थान नहीं। इस क्षेत्रमें काम करनेवाली प्रमुख पार्टियोंसे हमारा भले ही कहीं कहीं कोई छोटा मोटा मतभेद हो किन्तु सिद्धान्त अथवा साधनों की विभिन्नता के होने पर भी साध्य राष्ट्र की स्वतन्त्रता भेद का विषय नहीं हो सकता।

पाकिस्तान और हम

विमलयशा और विजयी राजर्षि भरत द्वारा बसाये हुए भारत के विभाजन का प्रश्न कुछ व्यक्तियों द्वारा अधिकृत एक संस्था ने उठाया है। यह हमारी सांस्कृतिक परम्परा और भौगोलिक सत्ता में स्वार्थ निहित असह्य हस्तक्षेप है। इसका सब से घोर प्रतिवाद सनातनी जनता को करना चाहिये। यह आश्चर्य की बात है कि सदियों तक इस देश के जीवनमें घुलमिल जाने पर भी अभी तक बाहरी देशों के सुख ही हमारे कुछ बन्धुओं के दिमाग में चक्कर लगाते रहते हैं। समय की माँग है कि हम इस तुच्छ भेदभाव को भूल जायं और भारत को जिसे उसकी परिस्थिति ने अविभाज्य बनाया है अपनी मातृ-भूमि मानते हुए—भाई भाई के समान रहने का पाठ हृदयंगम कर लें। प्रातःकालीन स्नान करनेवाला प्रत्येक सनातनी—

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदे सिन्धु कावेरी जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु॥

इस श्लोक का पाठ करता हुआ 'भारत एक और अखण्ड है' की मानो प्रतिज्ञा करता है।

हर्ष का विषय है कि आज हमारे मारवाड़ में जनजागृति का सञ्चार हो रहा है जिसका यह महान् आयोजन ज्वलन्त उदाहरण है। हम सब उस प्राचीन सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिये कटिबद्ध हैं किन्तु एकमात्र पुरानेपन के लिये ही मर मिटना हमें अभीष्ट नहीं। हम सुधार चाहते हैं संहार नहीं। हमारे सामने अनेक सभ्यताएं, साम्राज्य दो दिन तक इस विश्व के उपवन में खिलकर कुम्हला गये किन्तु हम आज भी पूर्ण आत्मविश्वास के साथ इस कार्यक्षेत्र में अचल खड़े हैं। हमारा विश्वास है, इस विज्ञान के प्रखर आलोक से चकाचौंध दुनिया को एक दिन यही सदियों से पादाक्रांत और जर्जर काय भारत स्थायी शान्ति और अमर जीवन-संगीत देगा। हम प्रकृति के रंगमंच के केन्द्र रहे हैं, हमने ही विचित्र पहेलियों को हल किया है।

आशा है, भविष्य में भी इसी देश के चमकते सितारे विश्व की उलझी गुत्थियों को सुलझाने में पथप्रदर्शक होंगे। इसी उद्गम से प्रादुर्भूत विविध मत और उपमत इसी में अपना सुखद अवसान पायेंगे।

विविध जिलोंसे समागत प्रतिनिधियों के अनुमोदन-समर्थन करने पर अध्यक्षका आसन काशीके महापंडित श्री देवनायकजी आचार्यने ग्रहण किया।

सभापतिजी का अभिभाषण

उपर्युक्त सम्मेलनों के मनोनीत सभापति श्री देवनायक आचार्य ने अपने अभिभाषण के सिलसिलेमें कहाः—

वर्तमान समयमें हरएक बात राष्ट्रीयताकी कसौटीपर कसी जाती है। अतः धर्मका भी राष्ट्रीयताकी दृष्टिसे परीक्षण करना आवश्यक हो जाता है। इस परीक्षामें भी सनातन धर्म पूर्ण रूपसे उत्तीर्ण होता है। राष्ट्रके लिए शिक्षा, व्यापार, शिल्प कला, कर्मोंका सुन्दर विभाजन, अर्थकी सुव्यवस्था, वस्तु निर्माण, मानवता, परस्पर सद्भाव, संघटन, सबके ऊपर विश्वबन्धुत्व और समानता आदि वस्तुओंकी आवश्यकता बतलाई जाती है। सनातन धर्ममें वर्ण व्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, उपासना मार्ग आदिके ऐसे सुन्दर विधान हैं कि जिन्हें देखते हुए मानना पड़ता है कि उपर्युक्त राष्ट्रहितकी बातोंका इतना सुन्दर समन्वय अन्यत्र कहीं हो ही नहीं सकता।

उदाहरणके लिए शिक्षाको लें। शिक्षासे ही मानवताका विकास और राष्ट्रसेवाकी योग्यता प्रथम अवस्थामें प्राप्त होती है। आज दिन भारतवर्षमें जैसी शिक्षा चल रही है उससे प्रायः सभी निराश हो चुके हैं। इसमें न मानवताका

[शेष पृष्ठ २४ पर]

कमज़ोर, और कच्चे कागज़ों के पेकिंग से होनेवाली

अपने व्यवसायकी हानिको बचाइये

हमारा मज़बूत, चीमड़ और सुन्दर

गैंडा मार्का

बैम्बू पल्प का बना हुआ क्राफ्ट पेपर

आपकी मुसीबतों को दूर कर देगा

यह उच्चकोटि का
पेकिंग कागज़
है

भारतीय बाजारमें
आज इसका
प्रतिस्पर्धी नहीं

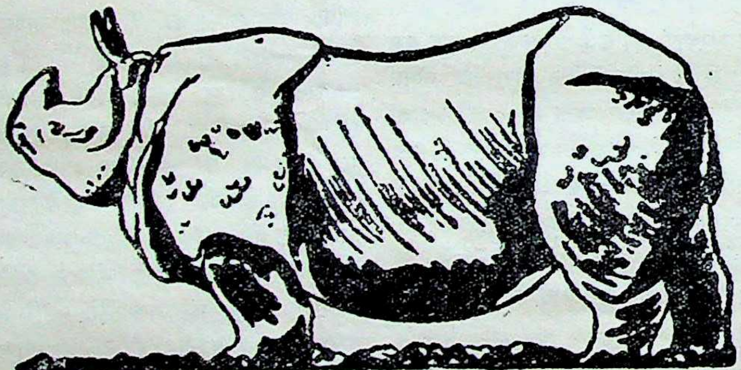

हमारी मिल वाटरप्रूफ कागज (Water Proof Craft Paper)
तथा हरेक किस्मका बोर्ड भी तैयार करती है।

एक बार इस कागज़ और बोर्ड का व्यवहार करनेपर
आप दूसरे पेकिंग कागज़ और बोर्ड का नाम न लेंगे

ओरिएण्ट पेपर मिल्स लिमिटेड

८, रायल ऐक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता

मारवाड़ी सम्मेलन बम्बईका उत्सव

सभापति श्री सोमाणीजी का सुझावपूर्ण भाषण

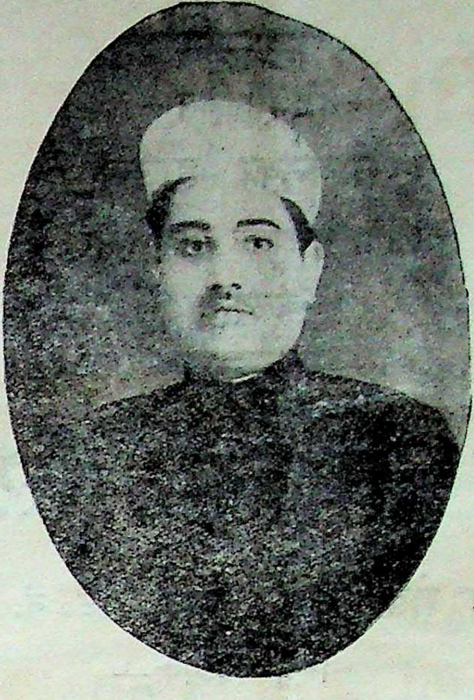

श्री. गजाधरजी सोमाणी

गत २३-४-४४ को मारवाड़ी सम्मेलन का २० वां वार्षिकोत्सव श्री गजाधरजी माणी के सभापतित्व में सम्पन्न हो गया। ने अभिभाषण में श्री सोमाणीजी ने १ वर्ष र्मियान विश्वमें हुई महान् घटनाओं का ख करते हुए कहा कि आज हमारी इस री मातृभूमि भारतीय वसुन्धराकी पवित्र भी रणक्षेत्र बन रही है। बंगाल के भीषण ल का भी आपने उल्लेख किया और देशके मान गतिरोध पर चिन्ता प्रकट की। इसके आपने राजपूताना फ्लड रिलीफ कमेटी, राम पोद्दार बालिका विद्यालय, मारवाड़ी री पुस्तकालय और विक्रम द्विसहस्राब्दि त्सव का विशद रूपसे उल्लेख किया। बंबई हालके अग्निकांडके संबंधमें आपने कहाः—

अब हाल ही में बम्बई में भयंकर विस्फोट ा अग्निकांड से धनजन की जो भीषण ति हुई है, वह आप लोगों को ज्ञात है। ग्निपीड़ितोंके सहायतार्थ सम्मेलनके कार्य-ओं ने रिलीफ कार्यका आयोजन करने में ड़ी तत्परता दिखायी है। सम्मेलन की ओरसे लीफ केन्द्र खुले हुये हैं। भोजन, वस्त्र तथा ने की व्यवस्था की जा रही है और यह हायता अभी चालू है। इस रिलीफ कार्यको और भी विस्तृत तथा व्यापक बनाने की योजना न चुकी है और आशा है कि क्षतिग्रस्त नताकी यथोचित सेवा करने में सम्मेलन सफल हो सकेगा।

भावी कार्यक्रम

राजस्थान तथा बम्बई में अभी ·रिलीफ कार्यकी आयोजना करने में सबसे अधिक अड़चन रही है। अपने समाजके किसी ऐसे ायी संगठनकी जिसके अभावमें इस तरहके लीफ कार्यों का सुचारुरूप में संचालन होना ठिन होता है। अतः इस सम्बन्धमें मैं म्बईके मारवाड़ी समाजका ध्यान एक ऐसे ायी संगठनकी ओर आकृष्ट करना चाहता हूं ससे इस तरहके कार्य्यों का सुचारुरूपसे पादन हो सके।

अतः यहांपर अपने सम्मेलन द्वारा संचालित क ऐसी सेवा समितिका संगठन होगा चाहिये िसमें समाजके सार्वजनिक सेवा भावी कतिपय ुवकोंका सहयोग हो और जो इस तरहके दैवी कोप अथवा अन्य आवश्यताओंके समयमें शके किसी भी भागमें रिलीफ कार्यका सुचारु पसे संचालन कर सकें। मेरा यह विश्वास है कि आवश्यकता पड़ने पर धनकी कमी नहीं हेगी और निःस्वार्थ सेवापरायण कार्यकर्ता-ओंके द्वारा संचालित यदि कोई ऐसा स्थायी ंगठन होगा तो समय २ पर हम लोग जनता नार्दन की देशके किसी भी भागमें सेवा कर-नेमें समर्थ हो सकेंगे। आशा है कि बम्बईके पनी समाजके उत्साही कार्यकर्ताओंका ध्यान स ओर जावेगा।

मारवाड़ी टेकनिकल ट्रेनिंग स्कीम

एक ओर जब कि इस विश्वयुद्धसे धन और जनकी अपार हानि हुई है तो दूसरी ओर विविध राष्ट्रों के उद्योगधन्धोंमें भी काफी अभिवृद्धि हुई है। इस देशके उद्योगधन्धोंका भी युद्धके कारण काफी विकास हुआ है और की बात है कि अपने समाज के लोगोंका भी इस विकासमें पर्याप्त हाथ है। परन्तु इतना विकास होनेपर भी यह खेदका विषय है कि आज भी समाजके सैकड़ों युवक कलकत्ते व बम्बई जैसे बड़े २ नगरोंमें निरुद्देश्य भटक रहे हैं। देशके बढ़ते हुए इन उद्योगधन्धोंमें हमारे समाजके युवक पर्याप्तरूपसे भाग ले सकें इसके लिये आवश्यक है कि शिक्षाका अधिकाधिक प्रचार हो और खासकर युवकोंके लिये ऐसी विशेष शिक्षा प्राप्त करनेके साधन उपलब्ध किये जायें जिनसे वे भिन्न २ उद्योग धन्धोंके उत्तरदायित्वपूर्ण पदोंको सम्हालनेके योग्य बन सकें। बम्बई जैसे उद्योग धन्धोंके विशाल केन्द्रस्थानमें जहां की टोटल काटन मिलोंमें अपने समाजके द्वारा संचालित काटन मिलोंका करीब २५ प्रतिशत हिस्सा है अपने समाजके युवकोंके लिये टेकनिकल ट्रेनिंग की खास सुविधा का न होना एक खटकने वाली बात है। इस संबन्धमें बातचीतके सिलसिले में कतिपय मित्रोंने काफी सहानुभूति दिखाई है और पूर्ण चेष्टा किये जानेपर इस तरहकी योजना सफलता की पूर्ण आशा है।

मारवाड़ी हिन्दू अस्पताल

बम्बईमें अपने समाजके द्वारा संचालित एक सुविशाल मारवाड़ी हिन्दू अस्पतालकी योजना बन रही है और इस योजनाको फलीभूत करनेके लिये काफी धनराशि एकत्रित भी हो चुकी है और इस सम्बन्धमें और अधिक उद्योग निरन्तर जारी है। बम्बई जैसे विशाल नगरमें अपने समाजके अनुरूप एक विशाल अस्पताल की आवश्यकता आज वर्षोंसे महसूस होती आई है और यह हर्षका विषय है कि उस योजनाके कार्य्यान्वित होनेके शुभ लक्षण अब दीख रहे हैं। इस तरहके विशाल आयोजन के लिये अभी और भी काफी धन संग्रहकी आवश्यकता है और मैं समाजके सभी महानुभावोंसे साग्रह अपील करता हूं कि इस योजनाको शीघ्र सफलीभूत बनानेके लिये अधिकसे अधिक सहयोग और सहायता प्रदान करने की कृपा करें।

न सोने के कारण

(पृष्ठ १० का शेष)

पेट दुखेगा, या कब्जियत हो जायगी और उसे गहरी नींद नहीं आयगी। इसलिये दूध देना अधिक श्रेयस्कर है क्योंकि दूध तरल भोजन होता है। फलों का रस भी दिया जा सकता है।

(९) आलोचना न करेंः। यदि आपका बालक गहरी नींद से नहीं सोता हो तो उसके सामने या उसकी उपस्थिति में दूसरों के सामने उसकी आलोचना न करें। यदि आप को भी गहरी नींद नहीं आती हो तो यह बात बच्चे के सामने न कहें। यदि कारण वश आप को देर से सोना पड़ता हो तो आप कहिये कि “बच्चे तुम बड़े भाग्यवान हो कि तुम्हें जल्दी सोने को मिलता हैं, हमें तो घर का दफ्तर का काम काज करना है इस लिये थोड़ी देर और जगना पड़ेगा लेकिन यदि हमारे पास काम नहीं होता तो हम भी तुम्हारी भांति जल्दी ही सो जाते......आदि।”

(१०) नींद उचटनाः अक्सर यह देखा जाता है कि बच्चे सुबह के वक्त जल्दी उठकर सोनेपर शोर मचाने लगते हैं, माता पिता को उसी वक्त मीठी २ नींद आती है इस लिये वे और भी चिढ़ते हैं और नाराज होते हैं। कई मां बाप बालक को रात में देर से इसी लिये सुलाते हैं कि वह सुबह जल्दी न उठे। ये दोनों ही बातें अस्वास्थ्यकर हैं। किन्तु बच्चा जान बूझकर आपको सताने को नहीं उठता है। देखिये कि वह उघड़ गया होगा या उसने पेशाब कर दिया होगा और जहां या गीला लगनेसे रोता होगा, या किसी बाहरी शोरगुलने उसे कच्ची नींदमें ही उठा दिया होगा। बड़ा होने पर सपने और भयावह कहानियां और दृश्य भी नींद उचटा सकते हैं। ऐसी सभी परिस्थितियोंमें माँ को चाहिए कि वह बालकको बगैर रोशनी किये ही घुमा फिराकर या बिस्तर बदल कर सुला दे लेकिन स्वयं अशान्त न न हो और बड़बड़ाए भी नहीं। खास करके जब बच्चे स्कूल जाना आरम्भ करते हैं उन दिनोंमें अक्सर डरसे उनकी नींद उचट जाती है इसलिये माँ के दुलार भरे शब्द और हल्की थपथपी बच्चेको पुनः सुलादेगी।

(११) दो प्रहरसे अधिक सोनाः यह स्वाभाविक है कि बालक सुबहसे उठ कर खूब खेलें तो दोपहरको वे थक जायं और आराम करें। बच्चोंके स्वास्थ्यके लिये दोपहर को सोना आवश्यक है लेकिन यदि वे दोपहरको बहुत देर तक सो लेंगे तो रातको स्वाभाविक ही है कि उन्हें देरसे नींद आये। इस लिये बेहतर यह होगा कि आप दोपहर को उसे जल्दी उठादें और रातको जल्दी ही सुलादें।

(१२) नींद या सजाः कई माताएँ यह चाहती हैं कि उन्हें बच्चे की रखवाली से फुर्सत मिले। फुर्सत पाने का वे एक यही साधन जानती हैं कि बच्चे सो जांय इस लिये वे बड़बड़ाती रहती हैं। बच्चा सो जाय तो पाप करे या कि “निगोड़े को नींद भी नहीं आती है” आदि। इन तिरस्कारपूर्ण कटूक्तियों को सुन कर बच्चा बिस्तरके पास जाने से नफरत करने लगता है, वह रोता है चिल्लाता है हाथ पैर पटकता है। इसलिये यदि वह थक भी चुका हो और सोने का वक्त भी हो चुका हो तो भी वह बिस्तर देखते ही रो देगा। इस लिये बालकों के सामने ऐसे कटु वचन नहीं बोलने चाहियें और न उसे सजा देने के लिये जबर्दस्ती सुलाना ही चाहिये। सजा और नींद में कोई सम्बन्ध नहीं है।

(१३) कम सोने का भ्रमः कई वक्त माता-पिता को यह भ्रम हो जाता है कि उनका बच्चा आवश्यकता से कम सो रहा है, इस भय से वे किसी बीमारी की आशंका करने लगते हैं किन्तु वास्तव में बालक स्वस्थ रहता है और उसे किसी भी प्रकार की खास तवज्जह की आवश्यकता नहीं होती है। इसको जानने का सुलभ साधन यही है कि कमसे कम १५–२० दिन तक आप बालक के दिन और रात में सोने के कुल समय को नोट करें और औसत निकालें तो आपको प्रतीत होगा कि बालक कम नहीं सोता है बल्कि आपको भ्रम हो गया है।

(१४) थकावट या बीमारीः कई वक्त यह भी देखा गया है कि बालक अधिक श्रम कर के बहुत थक जाते हैं तो उन्हें समय पर नींद नहीं आती है या वे नींद के भरे हुए होने पर भी, बिस्तर पर जाते ही रोने लगते हैं।

कभी २ यह भी देखा गया है कि जुकाम से या कब्ज से या सर्दी से बालक का नाक नाक कुन्द हो, जाता है उसे सांस पूरा नहीं आता और वह घबराकर रोने लगता है। यदि साधारण स्वास्थ्य में कोई खराबी आगई हो तो उसे शीघ्र मिटाने की कोशिश कीजिये।

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियां, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

बिक्री—विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

IMPERIAL TRADING Co.

Alli Chambers, Tamarind Lane, Fort,
Telegrams: "LOOMSPRING"

BOMBAY.
Telephone No. 27580.

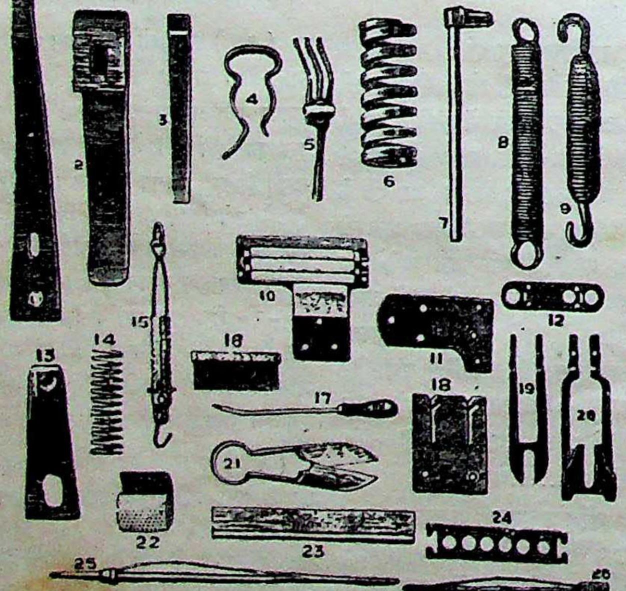

OUR SPECIALITIES

Springs, Temples and all accessories for Spinning and Weaving Machinery

BESIDES, WE HOLD AN EXTENSIVE STOCK of

Stripping Fillets
Burnishing „
Folding „
Plaiting „
Winding „
Likering „
Card Strippers
Walton Metallic Brush

Lickerine Wires
Lap rods & Oils cans Braime & "K"
Pot eyes for Bleaching dept.
Hydraulic Ram Rings
Jackson & Harries Fastners
Blue Glass Rods & Creel Steps

Card Chains & Link Chains
Hickory wood Picking Sticks
Dobby Lattices Comber Boards & Taper Pegs
Perth Gauge Glass & Glass Lubricators
etc. etc. etc. etc.

Enquiries Solicited

We solicit your enquiries for all articles connected with the Spinning & Weaving Industry and can quote you competitive prices. We will gladly send to you our latest price list on application.

Agents :—
RATILAL & Co., Cross Lane, Railwaypura Post, AHMEDABAD.
B. N. MODI & Co., 14/24, Civil Lane, CAWNPORE.

सट्टेका दुष्परिणाम

★ (लेखक—श्री. आईदानजी वियाणी) ★

सट्टे के सम्बध में अध्ययन व जानकारी न कुछ लिखना अनधिकार चेष्टा है पर उद्देश से कि जो व्यवसाय के अध्ययनशील मर्मज्ञ हैं उनका ध्यान इस ओर आकर्षित और वे व्यापारी वर्ग में चेतना उत्पन्न कर सत्यपथ पर लाकर उन्नत बनाने के साधनों निर्माण करें, मैं इस विषय पर लिखने का हस कर रहा हूं। अधिक समय से चली आई की रूढ़ि घातक सिद्ध होने पर भी सट्टे के ड़े मोहवश उससे चिपके हुए हैं! जिस पार को पेशेका स्वरूप प्राप्त हो जाता है, खराब होने पर भी उसके करने वाले उसे राब नही समझते । कोई कहे इस सभ्य व्यवसाय को बधिक की उपमा नी, वह इसलिये कि वे सहसा दूसरे का य पानें की भावना रखते हैं। हजारों व्यक्तियों के द्रव्य की बलि लेकर करोड़पति बनने का दुःसाहस करते हैं, तो क्या बधिक से कम हैं? बुरा कार्य किसी अवस्था तुल्य नहीं होता। जिस लेखनी द्वारा जनोद्धार होता है, उसके विपरीत कार्य करनेवालों को कलम कसाई ही कहेगें। कतल, कलम, कनक, न्ता इनका दुरुपयोग करनेवालों की गणना धिकों में है।

सट्टे से अधःपतन हुआ है यह कलंक है, इससे आर्थिक मानसिक शारीरिक शक्ति क्षीण होती है। यह छूत की बीमारी है, जिससे समाज और देश परेशान है। इसीके कारण नियंत्रण के विष का जन्म हुआ है जिससे बहुत से सट्टे के जंतुओं का नाश हुआ है पर अनेकों की जीविका का अपहरण हुआ है बेकारी बढ़ी है, लाखों की अकाल मृत्यु हुई है, लोभ और सट्टे के फंदे में पड़कर तेजी को उत्तेजना न देते तो इन संकटों का सामना नहीं करना पड़ता। अभी भी सोने चांदी का सट्टा कायम ही है। हमारी अविचारशील नीति के कारण इसपर भी अकुंश लगे तो कोई आश्चर्य नहीं। पहले छोटेसे छोटे धन्दें द्वारा अनेकों की जीविका चलती थी। व्यवसाय ही मनुष्य जीवन और उसके विकास का साधन है पर उचित मार्ग से चलावें और सुरक्षित रख सकें तब। युद्ध के प्रथम जिस अल्प मुनाफे पर संतोष कर व्यवसाय चलाते थे जिससे अनेक कुटम्बों का निर्वाह होता था, जिस से शान्ति थी वही व्यापार खर्चीली व्यवस्था के हाथों जाने से बेहद मुनाफे का सट्टा वहां अल्प संतोष कहां। व्यापार हुतों के हाथों निकल गया मंहगी बढ़ी हाहाकार मचा। अब फिर से हम अल्प संतोष सें काम लें! व्यवसाय हमारे हाथों आये! तब ही अनेकों का निर्वाह और राजा प्रजा को शान्ति प्राप्त हो सकेगी। अनुचित लोभ राजा प्रजा दोनों के लिये घातक है। प्रजा के दारिद्र्य से राज्य पनप नहीं सकता। तेजी उठाने में लाभ तो क्रम क्रमसे ही हुआ वह भी अल्प लोगों को पर मंहगीं का फल सबको भुगतना पड़ रहा है। तेजी को भड़काना अपने पैरों कुल्हाड़ी मारना है।

सट्टेबाजों का बड़ा ही विचित्र रवैया है। जहां कहीं युद्धके शोर गर्मी के सम्वाद आये तो लगे तेजी की आग भड़काने। घसराने में भी देरी नहीं जिससे सहज ही में लाखों का नफा नुकसान हो जाता है। समझमें नहीं आता कि नित मिती की युद्धकी हलचलों से सट्टे का क्या सम्बन्ध है? असाध्य युद्ध परिस्थिति में संग्रह की भावना हो सकती है पर असाध्य की अवस्था निराली होती है। आजकल करते करते चार वर्ष व्यतीत हो गये न जाने और कितना समय लगे। पर सट्टेवालोंको इतना विचार करनेका अवकाश ही कहां, वे तो अफीमचीकी भांति जिस ओर झुक पड़े फिर गड्डा हो या खाई हो। तेजी मंदीका आधार उपज न उपज आवक जावक पर होना चाहिये। जब कि एक ही स्थानसे सोना चांदी लेकर अपने वालोंको देना है। तो फिर प्रतियोगिता से भाव बढाने की आवश्यकता ही क्या? इससें खल वृत्तिका ही आभास मिलता है। संग्रह करना आपको उचित जान पड़ता है तो करें पर तेजी भड़काकर क्यों? हर एक व्यक्ति जेरबारी कर्त्तव्यमूढ बन गया है मनको सान्त्वना देते हुए कहता है कि सब की गति सो अपनी, यह दुःखावस्था के उद्गार हैं। सुखावस्थामें तो किसीकी ओर आंख उठाकर नहीं देखते मत्सरी भावसे काम लेते हैं। यही हमारी अधोगतिका कारण है। हमें एक दूसरे के सुखमें सुख और दुःखमें दुःखका अनुभव करना चाहिये। तभी सहानुभूती बढ़ेगी और संकटोंसे छुटकारा होगा। जिस प्रकार हम अपने कुटुम्ब के लिये कष्ट उठानेमें आनन्द मानते हैं तो देश को अपने कुटुम्बवत् मानने पर कितने आनन्द का अनुभव होगा। इसके लिये विशेष त्याग की भी आवश्यकता नही, सद्भाव और सहानुभूति की आवश्यकता है जिससे अद्वितीय लाभ होता है। पर आज लाभ की भावना न रखते सेवा भाव होना चाहिये। वृक्ष को बराबर सीचने पर ऋतु पर फल मिलते हैं इसी प्रकार राष्ट्र सेवा से भी समय आने पर अमृत फलों की प्राप्ति होगी।

व्यक्ति विशेष की तरकी यह राष्ट्रका शोषण है, राष्ट्र को सबलता से व्यक्ति को महत्त्व है। इसका यह अर्थ नही कि व्यक्ति विशेष उन्नति न करें व्यक्ति देश को लाभ पहुचा कर स्वयं पुष्ट बन सकता है। लक्ष यही रहे कि देश की सबलता में मेरी सबलता है देश की दुर्बलता से मेरी सबलता समय आने पर मिट्टी में मिल जायगी, अनेक भाइयों के भूखे रहने पर मैं ही पेट भर कैसे खा सकूंगा, अपने भले के लिये स्वतः प्रयत्नशील होना आवश्यक है पर राष्ट्र के हित की भावनासे। अपनी शक्तिका संघ शक्तिमें प्रवेश करने से वह और भी विकसित होगी। जितना संघ शक्तिको उपयोगी बनावेगें उतना ही व्यक्तित्व ऊँचा उठेगा, और वह कायम रह सकेगा। इस लिये हमें जगह जगह संघ की स्थापना कर इसे उपयोगी बनानेके प्रयत्न में लग जाना चाहिये। मनुष्य अल्प श्रम द्वारा ही अधिक लाभ की इच्छा रखता है पर वह कीमत के अनुसार ही मिलती है। उदासीन न रहते पुरुषार्थ सामने आना चाहिये। पुरुषार्थ से प्राप्त वस्तु ही फली भूत होती है। सट्टे का द्रव्य तो बरसाती नालेका पूर है जो कुछ ही समय तक इठलाता है, फिर दुर्गंधी का पात्र बन जाता है। कहें कि सट्टा यह नया नहीं है कई दिनों से चला आरहा है इसीसे भाग्य की शीघ्र ही परीक्षा होती है, और फिर सभ्य देशों में भी तो होता है। मेरा उत्तर है है कि कोई प्रथा काफी समय से चली आनेके कारण ही अच्छी नहीं हो सकती। परिणाम से भली बुरी मानी जाती है। राजा नल युधिष्ठरादि को भाग्य की परीक्षा करने की परीक्षा करने के कारण किन किन संकटों का सामना करना पड़ा यह सर्व श्रुत है। अब सवाल रहा सभ्य देशों का। एक तो सभ्यता की आड़ में असभ्य कृत्य भी हुआ करते हैं। दुसरे सूत्र उन के हाथों होने से दुर्बलों का शोषण कर वे मोटे बनते हैं। न हम स्वतंत्र है। और न हममें राक्षसी पुरुषार्थ है। और न भारतीय संस्कृति ऐसे कार्यों का अच्छा ही मानती है इसलिये हमारा कल्याण हमारी संस्कृति पर ही चलने में है। सच्चा व्यापार वही जो कच्चे से पक्के पर्यंत तैयार करके देशान्तर भेजा जाय जिसकी उपज यहाँ न हो सके बाहर से मंगा सांस्कृतिक रुप दे बाहर भेजे, तरह तरह के अविष्कार करे। यह सब स्वतंत्रता की बातें है दासता में रहे सहे को सुरक्षित रखना कठिन हो रहा है। बडे झाड़ के नीचे छोटे पौधें का फलना फूलना कठिन है। फिर भी संघशक्ति द्वारा जितना हस्तगत करते बने करनेके निरंतर प्रयत्न करें। इतने पर अनुचित कायदे की रुकावटें आएं तो संघशक्ति द्वारा प्रतिकार कर सफलता प्राप्त करें।

हमारे लिये दो ही मार्ग हैं एक तो व्यवसायिक उन्नति के लिये प्रयत्नशील बनें या सादगी पर उतर आयें। सात्विक भोजन आवश्यक वस्त्राभूषण! अपनेवालोंद्वारानीति वस्तुओं द्वारा निर्वाह। मनुष्य जितनी आवश्यकतायें बढ़ाता है उतने ही कष्टों का सामना करना पड़ता है, अच्छे पदार्थ के लिये पिंजरे में रहना स्वीकारने की अपेक्षा स्वतंत्रता के जंगल में रहकर कष्टसे प्राप्त वस्तुओं से निर्वाह. करना कहीं अच्छा है। पिंजरे के मालिक ने खुराक नहीं दी तो चुपके से मरने की अपेक्षा क्या कर सकते हैं? जो कुछ हो संघशक्ति के सिवाय निस्तार नहीं उसकी आवाज में आवाज बुलंद करो। उसी की आवाज पर सब कुछ न्यौछावर कर दो। सत्य का अवलंब हो। आप कष्ट सहें, दूसरे को न हों इसीमें कल्याण है।

[पृष्ठ ७ का शेष]

देहली में 'माहेश्वरी' का साहित्यिक स्वरूप विशेष था, वह कलकत्ते जाकर नष्ट हो गया और उसका कारण वहां का तत्कालीन संघर्ष मय कारण था। लेकिन "माहेश्वरी" ने अपनी गंभीरता फिर भी न छोड़ी। विशेष संघर्ष "माहेश्वरी बंधु" और "माहेश्वरी गौरव" में ही चला। "माहेश्वरी जगत" भी आगे चलकर बंद हो गया। यह पत्र अपने कार्टूनों और सामाजिक हास परिहास के लिये उस समय अपना विशेष महत्व रखता था। "माहेश्वरी" का आगे चल कर कलकत्ते में प्रेस भी चालू हो गया और रामकृष्णजी मोहता ने एक अच्छा प्रेस बनाने के लिये काफी रुपया दिया था। मगर दौर्भाग्यवश प्रेस अंत तक घाटे की वस्तु ही रहा। स्व० मोहताजी "माहेश्वरी" के कार्यमें काफी दिलचस्पी लेते थे और पाठकों को यह सुनकर आश्चर्य होगा कि इतने बड़े व्यस्त व्यापारी होते हुए भी रामकृष्णजी प्रायः माहेश्वरी के लिये लेख और अग्रलेख लिखाया करते थे। उनकी भाषा बहुत परिष्कृत होती थी, और उनके विचारों का प्रवाह कभी भंग नहीं हो पाता था। पं. धर्मानंदजी त्रिपाठी के त्यागपत्र देकर देश चले जानेके कारण माहेश्वरीके सम्पादन का सम्पूर्ण भार हमारे ऊपर आया। कलकत्तेमें लगभग तीन वर्ष माहेश्वरी रहा और उसके बाद पंढरपुर महासभाधिवेशन की तैयारीके लिये उसे बम्बई स्थानान्तारित कर दिया गया। बम्बईमें महासभाधिवेशनके लिये अर्ध साप्ताहिक कर दिया गया था। अधिवेशनके बाद महासभाके नियमानुसार 'माहेश्वरी' का प्रकाशन बम्बईसे ही ३ वर्ष तक होता रहा।

बंबईके बाद मंडलके निर्णयानुसार उसे १९२९ के अंतमें आगराके लिये स्थानान्तरित किया गया। श्री. बा० डालचंदजी भट्टड़ बी. ए. एल. एल. बी. (बाद में एम. ए. और सन्यासी) उसके अवैतनिक सम्पादक मनोनीत हुए। हमें भी संयुक्त सम्पादक के रूप में आगरे रहना पड़ा। आगरे में करीब १॥ साल पत्र चला और असहयोग आंदोलन में उससे एक लेख की ज़मानत मांग ली गई। उस समय महासभा के अधिकारी वर्ग ने जमानत न देकर पत्र का प्रकाशन ही बंद कर देना उचित समझा। लेकिन १९३० के आंदोलन की समाप्ति से कुछ समय पूर्व उसका प्रकाशन १९३१ में सहारनपुर से फिर आरंभ हुआ और उस का सम्पादन करनेके सिलसिले हमें में भी आगरा छोड़कर सहारनपुर जाना पड़ा। सहारनपुर में सन् ३३ तक "माहेश्वरी" चलता रहा तथा माहेश्वरी महासभा के सभापति श्री. ब्रिजलालजी वियाणी और प्रधान मंत्री नंदकिशोरजी गोदाणी में कुछ मत भेद हो जाने के कारण उस का प्रकाशन सहारनपुर से भी बंद हो गया। यह मतभेद इतनी ज्यादा उग्रताको पहुंचा कि कुछ समय तक 'माहेश्वरी' पत्र सहारनपुर और नागपुर से एक साथ निकलने लगा। इस जातीय संघर्ष में अपनी स्थिति और और सम्पादकीय प्रतिष्ठा अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये हमने नागपुरसे "माहेश्वरी" निकलनेसे पूर्व ही अपना सम्बंध विच्छेद कर सहारनपुर से

(शेष पृष्ठ २३ के कालम ४ पर)

कस्तूरबा की मृत्यु पर शोकप्रस्ताव अस्वीकार

भरतपुर। भरतपुर असेम्बली के इस अधिवेशन के प्रथम दिन १७ अप्रैल को उस समय बड़ा क्षोभ उत्पन्न हुआ जब सरकारी नामजद अध्यक्ष ने स्व. कस्तूरबा गांधी के निधन सम्बन्धी शोकप्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया और इस सम्बन्ध में सभा के बहुसंख्यक सदस्यों की सम्मति जानने से भी इन्कार कर दिया। इसके विरोध में प्रजापरिषद दल के सदस्य ५ मिनिट के लिए भवन से बाहर निकल गए। समिति ने श्री युगलकिशोर जी चतुर्वेदी का कुंवर रतन सिंह जी द्वारा संशोधित वह प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया जिसमें अहल्कारों की सालाना तरक्की १ रु. से ३ रु. और २ रु. से ४ रु. करने की सिफारिश की गई थी। अधिवेशन के पांचवें दिन चो. अमीरखांने प्रस्ताव रखा कि अकाल के दिनों में जो थाम की जाती है उसकी जगह माफी का रिवाज कायम किया जाय। यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। राज्य में नमक बनाने के उद्योग को फिर से शुरू करने का प्रस्ताव भी पास हुआ।

ग्वालियर में हिन्दी राजभाषा

राष्ट्र भाषा हिन्दी के व्यवहार के लिये वर्षों तक यत्न करने के बाद वर्तमान महाराजा ने हिन्दी को राज्यभाषा स्वीकार कर लिया और राज्य आज्ञाएं आदि जो निकलती हैं वे शुद्ध हिन्दी में निकलने लगी हैं। यही नहीं कानूनकी पुस्तकें भी शुद्ध हिन्दी में बनायी जा रही है एक तरफ तो महाराजा और मिनिस्टर तथा जनता यह कार्य कर रहे हैं दूसरी ओर राज्यके कुछ अफसर हैं जो न केवल हिन्दी के बदले उर्दू बल्कि फारसीका प्रयोग और प्रचार हिन्दी लिपी में आज भी कर रहे हैं।

उज्जैन के सूबा श्री. बृजकिशोर चतुर्वेदी की एक ताजी आज्ञा जो २२ अप्रैल को उन्हों ने जारी की है नीचे दी जाती है। श्री. चतुर्वेदी को कुछ खुशामदी लोगों ने मध्यभारत हिन्दी साहित्य सम्मेलन की साहित्य परिषद का सभापति बनाया था। किन्तु फिर भी श्री. चतुर्वेदी महाराजा गवालियर और राजआज्ञाके विरुद्ध हिन्दी की हत्या करने और फारसीका प्रचार करनेमें किस प्रकार लगे हैं—नोटिस तेहत दफ २६ गवालियर डिफैन्स रूल्स हरगाह मेरे इल्ममें यह बात लाई गई है और मुझे यकीन है कि आप चन्द भाषण देनेवाले हैं, जिनसे अन्देशा है कि रियासत गवालियरके तेहफ्फुजमें व अमन अमानमें व लम्वायक आम्मामें नीज उन तालुकातमें जो हिज़ हाईनेस महाराजा साहब सेंधिया के हजरत मलके मुअज्जम और उनके मुताल्लिकीनसे हैं और जंग मौजूदा की मुताल्लिक कार्रवाईयोंमें फर्क आवेगा और चूंकि मैं यह जरूरी समझता हूं कि आपकी मज़कूरे वाला हरकात व अप आपसे रोका जाय लिहाजा उन इख्तयारातके तेरह जो जेरूल दफा २६ गवालियर डिफैन्स रूल्स अता फरमाये गये हैं मैं हस्ब जेल हुक्म सादिर करता हूं कि २२ अप्रेलसे २२ अक्टोबर ४४ छे माह तक हद्द जिला उज्जैनमें किसी सभामें किसी किस्मका कोई भाषण न दें, न किसी जलूस में भाग लें।

मेरे दस्तखत व मोहर सूबातके तेहत जारी किया गया।

हमारा राजस्थान

(मारवाड़ी पब्लिसिटी ब्यूरो नयी दिल्ली द्वारा)

जयपूर मीणा सम्मेलन

नीम का थाना। पिछले दिनों यहां जयपुर राज्य मीणा सम्मेलन की खूब धूम रही। कोई ५००० मीणा राज्य के भिन्न भिन्न भागोंसे आये होंगे बाहर से अनेक प्रतिष्ठित मीणा पधारे थे। इनमें झालावाड के नाजिम श्री रामसिंह जी, मीणा वीर के सम्पादक श्री दुर्गाप्रसाद जी, देवली के मा. गोरूलाल जी, अलवर के श्री हर्षसहायसिंह जी, और हरिसिंह जी शाहजहांनपुर के थानेदार श्री रामसिंह जी और मा. छोटेलाल जी, दादरी के श्री गणपतराम जी, जयपुर के श्री लक्ष्मीनारायण जी और मा. भौंरीलाल जी के नाम उल्लेखनीय हैं। आजाद मोर्चे के नेता बाबा हरिश्चन्द्रजी शर्मा वकील, बाबा गोविंददासजी, मा. रायकरणजी शर्मा, चर्खा संघ के देशपांडेजी, श्री वंशीधरजी शर्मा और दिल्ली से विश्वमित्र सम्पादक पं. सत्यदेव विद्यालंकार आदि महानुभाव पधारे थे। १६ अप्रैल की शाम को श्री हरिश्चन्द्रजी शर्मा ने राजस्थान चर्खा संघ की ओर से आयोजित खादी प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। रात को तीन बजे तक खुले अधिवेशन की कार्यवाही हुई। स्वागतमंत्री श्री अर्जुनदेवजी और स्वागताध्यक्ष श्री चिमणरावजी ने अपने भाषणों में उन असुविधाओं का मार्मिक और हृदयस्पर्शी वर्णन किया जो जरायम पेशा कानून और चौकीदारी प्रथा के कारण मीणा जाति को भोगनी पड रही हैं। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री सत्यदेव विद्यालंकार और सभापति के पद से मुनि मगनसागरजी महाराज के बहुत ही ओजस्वी भाषण हुए। दोनों भाषणों में मीणा जाति से आत्मोद्धार करने की अपील की गई थी। नाजिम श्री रामसिंहजी का भाषण भी बहुत ही मर्मस्पर्शी रहा। श्री तारासिंहजी, श्री कमलसिंहजी, और श्री अरिदसालसिंहजी के भजनों की धूम रही।

दूसरे दिन रात के दो बजे तक अधिवेशन हुआ और निम्न आशय के सात प्रस्ताव पास हुए।

१, राष्ट्रनेताओं और राष्ट्रमाता कस्तूरबा के निधन पर शोक और अ. भा. मीणा क्षत्रिय महासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष नाजिम श्री नारायणसिंहजी की मृत्यु पर शोक तथा उनके प्रति श्रद्धांजलि।

२, शराब के दुर्व्यसन तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का अनुरोध।

३, शिक्षाप्रसार और कम से कम अपने को साक्षर बनाने की अपील तथा सरकार से मीणा जाति के लिए प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य करने, मीणा आबादी के गांवोंमें विद्यालय स्थापित करने बालक एवं बालिकाओं को छात्रवृत्ति देने और शिक्षित युवकों को योग्य नौकरियां देने की मांग की गई।

४, जरायम पेशा कानून और सन ४३ के नोटीफिकेशन को रद्द करने की जोरदार मांग तथा जातीय भाइयों से अपने संघठन, आन्दोलन एवं आचरण से यह प्रकट करने का अनुरोध किया गया कि वे इन कानूनों को मानने के लिए तैयार नहीं हैं।

५, जबरन लागू की जाने वाली चौकीदारी प्रथा उठाने का आग्रहपूर्ण अनुरोध।

६, म. गांधी के नेतृत्व में विश्वास, राष्ट्र की आजादी की मांग का समर्थन, दमन नीति की निन्दा' नेताओं की रिहाई और राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की मांग।

७, प्रस्तावों को कार्य रूप में परिणत करने के लिए एक उपसमिति का निर्माण।

देश के कोने कोने से सम्मेलन के लिए सन्देश प्राप्त हुए थे। सेठ जुगलकिशोर बिडला, श्रीमती जानकीदेवी बजाज, श्री हीरालालजी शास्त्री, श्री विद्याधरजी कुलहरि, श्री गुलाबचन्द्र पाठ नागपुर, श्री चिरंजीलालजी अग्रवाल, सेठ भागीरथमलजी कानोडिया, श्री चांदकरणजी शारदा और जयपुर के पुलिस इंस्पेक्टर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

तीसरे दिन सबेरे सम्मेलन के प्रचार के लिए लगभग ३००० रु. का चन्दा बात की बात में इकट्ठा हो गया। श्री देशपांडेजी, श्री मूलचंदजी अग्रवाल और श्री लक्ष्मीनारायण जी के साथ श्री सत्यदेव विद्यालंकार मीणों के गांव नयावास में गए। जहां विद्यालंकारजी ने मीणा विद्यालय और राजस्थान चर्खासंघ की उत्पादन शाखा की स्थापना की। चर्खा संघ के अनेक कार्यकर्ता भी इस अवसर पर उपस्थित थे। रात को मुनि मगनसागरजी महाराज का उपदेश हुआ और सत्यवचन नाम अभिनय हुआ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

जयपुर। हिन्दी साहित्य सम्मेलन जयपुर में २१, २२ और २३ मई को होने वाले ३२ वें अधिवेशन की स्वागत समिति के अध्यक्ष सेठ रामनाथजी पोद्दार चुने गए हैं। स्वागत समिति ने अधिवेशन का कार्य पूरे उत्साह के साथ शुरू कर दिया है।

राजस्थान प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन को फिर से संगठित करने का कार्य भी पूरे उत्साह के साथ शुरू कर दिया गया है। उसके सभापति मुनि श्री जिन्विजय जी ने प्रान्त के लोगों के नाम एक लम्बी और मार्मिक अपील प्रकाशित की है। २६, ३० अप्रेल और १ मई को प्रान्त के साहित्यिकों का एक सम्मेलन उदयपुर में इसी सम्बन्ध में विचार करने के लिए बुलाया गया था।

चाँदकरणजी शारदा का उदयपुर में अभूतपूर्व स्वागत

महाराणा तथा महाराज कुमार से भें

देशभक्त कुँ० चांदकरणजी शारदा त स्वामी व्रतानन्दजी आचार्य गुरुकुल चित्तौड़ ता० २४ अप्रैल को उदयपुर पधारे। स्टेशन आपका प्रतिष्ठित नागरिकों द्वारा स्वागत कि गया और फूल-मालाओं से आप को गले भर दिया। महर्षि दयानन्द और हिन्दू-नेता के जयघोषों से सारा स्टेशन गूँज उठा। आ राज्य के अतिथि-भवनमें ठहराये गये। आ दोनों ने सर टी. वी. राघवाचार्य, महाराज कुम तथा महाराणाजी से भेंट की। श्री शारदाजी महाराणाजी को सत्यार्थ प्रकाश भेंट कि और हिन्दू-सभा के उद्देश्यों की चर्चा की उत्तर में महाराणाजी ने कहा कि यदि मह दयानन्द न होते तो हिन्दू-धर्म का बड़ा हा तो जाता। श्री महाराज कुमार को स्वामी व्रतानन्दजी व शारदाजी ने धार्मिक उपदेश दि जिन्हें आपने ध्यान से सुना। आपको आ समाज तथा हिन्दू-सभा की ओर से मान-प भेंट किया गया व आप के महत्वपूर्ण भा हुए। तथा इसी अवसर पर हिन्दू-सभा क चुनाव भी किया गया। श्री हरिजन पाठशा के छात्रों को शारदाजी ने १०) मिठाई के लि प्रदान किये।

बम्बईमें सहायता केन्द्र

मारवाड़ी-छात्रसंघ ने मारवाड़ी सम्मेल बम्बई के सहयोग से बिड़ला वाड़ी, १ फाणसवाड़ीमें एक सहायता केन्द्र खोला जहाँ पर निराश्रित भाई बहनों के खाने, र तथा कपड़े की व्यवस्था की गई। दवाद का भी उचित इन्तजाम किया गया है। ख की जगह से लोगों को हटाने के लिये श्री सीताराम पोद्दार बालिका विद्यालय की बस क भी प्रबन्ध किया गया है। स्वयं आकर य टेलीफोन नं० ३०६४८ या २८८३४ प सूचना प्रदान करें।

समिति बनाई गई

इन्दोर राज्य अनाज परिषद की ओर नगर और जिलों व परगनों के ४१ प्रतिनिधि की एक समिति बनाई गई है। जो कि अन्न समस्या और अनाज के संबंध में आम जन की रोजमरा की तकलीफो व शिकायतों ध्यान में रखकर उचित कार्यवाही करती रहेगी इस समिति ने १३ व्यक्तियों की एक कार्य कारिणी समिति बनाई है जिसके अध्यक्ष मिश्रीलालजी गंगवाल और मंत्री श्री रामे दयालजी तोतला हैं।

श्री विष्णु महायज्ञ

इन्दोर में आगामी ता. १० मई तदनु ज्येष्ट वदी २ बुधवार से श्री १०९ स्वामी राघवाचार्यजी, रमावैकुन्ठ पुष्कर मठाधीश संचालन में नवकुन्ड दशलक्ष हवनात्मक श्री म विष्णु यज्ञ और अखंड हरिनाम संकीर्तन ता. २० मई शनिवार तक छत्रीबाग में होने जा रहा है। इस यज्ञ में लगभग ५० हजार के व्य का अनुमान किया गया है। बाहर से भी क प्रमुख विद्वानों के आने की संभावना है। स में मध्यभारतीय सनातन धर्म सम्मेलन एवं अ संघ के विशेषाधिवेशन भी होंगे।

कोहिमा पर जापान का कब्जा ?

नगर पर ब्रिटिश तोपों द्वारा गोलाबारी

जापानियों ने इम्फाल की ओर से अपना ल्य आक्रमण कम कर के अपनी बड़ी ताकत कोहिमा के मोर्चे पर लगायी है। कोहिमा घिर गया है और नगर से दो मील की दूरी से ब्रिटिश तोपें जापानी फौजों पर गोलाबारी कर रही हैं। कोहिमा की ओर जापानी सत्ता सुदृढ़ रूप से स्थापित हो चुकी है। विकट युद्ध की प्रतीक्षा में जापानियों ने जान पड़ता है अपने गोले बारूद जमा कर रखे हैं और इसी लिये शायद वे मित्रों की गोलाबारी का फिलहाल प्रतिकार नहीं कर रहे हैं। कोहिमा नगर में तथा बाहर भी काफी विशाल जापानी सेना डटी हुई है। कोहिमा का युद्ध संभवतः आसाम में जापानी आक्रमण के भाग्य का फैसला कर देगा। यहाँ से जापानियों को खदेड़ना कोई खेल नहीं है। कोहिमा से ४० मील दक्षिण में मऊ में भी जापानियों का प्रबल अधिकार बना है। जब तक कठिन युद्ध के बाद मित्र फौजें इस स्थान पर कब्जा नहीं करतीं मणिपुर रोड साफ हुई नहीं मानी जायेगी।

आसाम युद्धका लक्ष्य

संयुक्त राष्ट्र के युद्ध सचिव मि० स्टिमसन के वक्तव्यके अनुसार भारत बर्मा की सरहद पर हो रहा युद्ध एक ऐसे विकट चक्रव्यूह की लड़ाई के रूप में परिणत हो गया है जिसमें दोनों पक्ष एक दूसरे की रसद लाइन काटने की होड़ दिखा रहे हैं। शत्रुसेना को रसद न मिल सके यही उक्त क्षेत्र की लड़ाईका ध्येय है।

जापानी पनडुब्बी हिन्दमहासागरमें

एडमिरल माउन्ट बेटन की ४ मई की विज्ञप्तिमें बताया गया है कि हिन्दमहासागर में सोकोत्राके दक्षिण पश्चिम (अदन की खाड़ी) में एक जापानी यू बोट दिन दहाड़े दिखाई पड़ा। हमने तारपीडो से उसे बर्बाद कर दिया।

कॉंग्रेसवालोंको मिलने न दिया जायेगा

जापान विरोधी वक्तव्य पर एमरी

मि. एमरी ने नज़रबन्द और गैर नज़रबन्द कांग्रेसी प्रतिनिधियों को मिलने देने की आज्ञा प्रदान करने से इनकार कर दिया है। कामन्स सभा में मजदूर दल के श्री. सोरन्सन ने आसाम के भू० पू० प्रधान मंत्री श्री. गोपीनाथ बारदोलोई के जापानियों के विरोधी वक्तव्य की ओर मि० एमरी का ध्यान आकृष्ट करते हुए एक अपील की थी। मि० एमरी ने उत्तर में कहा कि १९४२ के अगस्त प्रस्ताव को पास कर देने के बाद अब जापान विरोधी वक्तव्य देने पर भी हम उन्हें मिलने नहीं दे सकते।

सूरत और अहमदाबाद की म्युनिसिपैलिटियाँ सरकारी नियंत्रण में

बम्बई सरकार ने सूरत और अहमदाबाद की म्युनिसिपैलिटियों को ३ मई से ३ साल तक के लिये अपने सीधे नियंत्रण में लेलिया है। इन दोनों म्युनिसिपैलिटियों ने अपने अपने प्रेसिडेन्टों के साथ गत १३ वीं अप्रैल को तय किया था कि वर्तमान परिस्थिति में ये म्युनिसिपैलिटियाँ काम न करेंगी।

देश विदेश की चर्चा

गांधीजी बिना शर्त छोड़ दिये गये

महात्मा गान्धी की स्वास्थ्यसम्बन्धी डाक्टरी रिपोर्टों के फलस्वरूप सरकार ने उन्हें बिना शर्त ६ मई को सवेरे ८ बजे रिहा कर दिया।

गान्धी जी गत ९ अगस्त १९४२ को बम्बई में अ० भा० कॉंग्रेस कार्यकारिणी समिति के अन्यान्य सदस्यों के साथ ही गिरफ्तार किये गये थे।

गान्धी जी आगाखाँ महल से कार द्वारा सीधे लेडी ठाकरसी के निवास स्थान पर अपनी 'पर्णकुटी' में लेजाये गये। भीड़ ने गान्धीजी की जय के नारे लगाये। गान्धी जी ने हाथ जोड़ कर सब के प्रणामों को स्वीकार किया।

स्वाभाविक कार्य प्रारंभ करने के लिये गान्धी जी को अभी अपना स्वास्थ्य सुधारनेमें कुछ सप्ताह लगेंगे। ८ मई को गान्धी जी की एक्स-रे द्वारा परीक्षा की जायेगी और यह फैसला किया जायेगा कि गान्धी जी को विश्राम के लिये कहाँ ले जाया जाय।

रिहाईके बाद से गान्धीजीने अनेक व्यक्तियों को मुलाकात का अवसर दिया। प्रायः वे सब की बातें सुनते रहे हैं। वे अधिकांश समय सूत कातने में लगाते हैं। अखबारों को भी सरसरी नजरसे देखते जाते हैं।

रिहाई की शाम को पर्णकुटी के समक्ष गांन्धीजी प्रार्थना में आये। लोगों ने जोर की हर्षध्वनि की। प्रार्थना के बाद गांधीजी ने हरिजन फण्ड के लिये चन्दा किया।

गान्धीजी की रिहाई से देश तथा विदेशों में सर्वत्र प्रसन्नता की लहर दौड़ गई है। संसार के कोने कोने से गान्धीजीके छूटने पर प्रसन्नता के तार आ रहे हैं, और उनके स्वास्थ्य के संबध में जिज्ञासा प्रकट की जा रहीं है।

गान्धीजीके साथ उनके प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलाल, मीराबेन, डा० गिल्डर, और डा० सुशीला नायर भी छोड़ दिये गये हैं।

बम्बईके विस्फोट की जाँच

बीमा कम्पनियों की 'नहीं'

२७ अप्रैल को भारत सरकार ने घोषित किया था कि बम्बई के विस्फोट और अग्निकाण्ड की जाँच के लिये सरकार एक कमीशन नियुक्त करेगी, और पीड़ितों के सहायतार्थ ६ लाख रुपये देगी। तदनुसार अग्निकाण्ड के कारणों की जाँच के लिये सपरिषद् वायसराय ने २ मई को कमिशन नियुक्त किया है। कमीशन के अध्यक्ष बम्बई हाईकोर्टके जस्टिस सर ल्यूनार्ड स्टोन होंगे। आपकी सहायतार्थ पाँच असेसर भी नियुक्त होंगे। कार्यवाही बन्द कमरे में होगी।

विस्फोट के कारणों की जाँच की माँग जनता ने कार्पोरेशन द्वारा की थी। कार्पोरेशन के प्रस्तावों के बाद भारत सरकार ने उक्त निश्चय किया।

१४ अप्रैल के अग्निकाण्ड से जिस इलाके में मकान आदि नष्ट होगये है वहाँ काफी समय बीत जाने पर भी अधिकारी बड़ी तत्परता से मलवा हटा रहे हैं। २ मई तक रेल्वे लाईन के पश्चिम में १६ गलियों और २१३ टूटे मकानों का मलवा हटाने का काम बाकी पड़ा था, क्यों कि वहाँ तब तक भी आग सुलग रही थी। जो लाशें अबतक दबी पड़ी हैं उनसे शहरके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़नेका भय है।

अग्निकाण्ड से प्रभावित क्षेत्रों को फौजके अधिकार में देने की जो अफवाहें थीं सरकारने उन्हें निराधार बताया है।

अग्निकाण्डसे बम्बई की एक अरब रुपये की क्षति होनेका अनुमान किया गया है।

आगकी बीमा कम्पनियों के बीमादारों ने कम्पनियों से क्षतिपूर्ति की माँग की थी जिसके उत्तर में कम्पनियों ने कहा है कि ऐसी घटनाओं की क्षतिपूर्ति के लिये कम्पनियाँ जिम्मेदार नहीं है। मोटर और समुद्री बीमोंकि सम्बन्धमें अभीतक कोई निर्णय नहीं हुआ है।

बीमोंके दावेंके सम्बन्ध में सरकार भी विचार कर रही बतायी जाती है।

भारतीय उद्योगपति ब्रिटेन की ओर

ज्ञात हुआ है कि नौ प्रमुख भारतीय उद्योगपति ब्रिटेनके उद्योगों के प्रतिनिधियों से सलाह मशविरा करने ब्रिटेन जायेंगे ताकि युद्धोत्तर उद्योगोंके विकास आदि की सुविधा हो सके। इन में श्री. जी. आर. डी. ताता, घनश्यामदासजी बिड़ला, सर सुल्तान चिनाय, श्री. कस्तूरभाई लालभाई, और सर पद्मपतसिंहानिया रहेंगे।

राष्ट्रवादी मुसलमानों की मीटिंगें

आजाद मुस्लिम बोर्ड के मंत्री डा० अंसारी ने प्रेस में वक्तव्य दिया है कि ४-५ मई को दिल्लीमें बोर्ड की एक मिटिंग होगी और उसके बाद देशके समस्त राष्ट्रवादी मुसलमानों की ६-७ और ८ मई को मीटिंगें होंगी। इन मीटिंगोंमें देश की राजनीतिक परिस्थिति पर विचार कर राष्ट्रीय विचारोंके आधारपर भारतीय मुसलमानोंके लिये कार्यक्रम निर्धारित किया जायेगा।

पञ्जाब में जिन्ना बुरी तरह असफल

मुस्लिम लीग के प्रेजीडेन्ट मि. जिन्ना ने पञ्जाब में लीगी मिनिस्ट्री कायम करने के लिये पञ्जाब के प्र. मंत्री खिज्र हयातखाँ तिवाना के साथ अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में बातचीत शुरू की थी। पञ्जाब के प्र. मंत्री ने मि. जिन्ना की शर्तें मानने से इनकार कर दिया। मि. जिन्ना ने तिवाना के खिलाफ कड़ी अनुशासन की कार्यवाही करने की धमकी दी है। पञ्जाब के गवर्नर ने बातचीत के भंग होजाने के बाद सरदार शौकत हयातखाँ, जो कि एक मंत्री थे, को मंत्रीदल से बरखास्त कर दिया। आप स्व० सिकन्दर हयात खाँ के पुत्र हैं, और वर्तमान बातचीत के दौरान में मि. जिन्ना का पक्ष समर्थन कर रहे थे।

मुस्लिम लीगी भी खादी पहिरें

१४ मई को सिन्ध प्रान्तीय मुस्लिम लीग की कार्यसमिति की एक बैठक में मौलवी सैयद सदरुद्दीन के उस प्रस्ताव पर विचार किया जायेगा जिसमें सुझाया गया है कि प्रान्तीय लीग तथा उसकी शाखा सभाओं के सभी कार्यकर्ता हाथ की कतीबुनी खादी पहिरें।

संयुक्त निर्वाचन प्रणाली का अन्त

सिंध सरकार ने प्रान्तकी म्युनिसिपैलिटियों तथा जिला बोर्डों आदि में संयुक्त निर्वाचन प्रणाली को खत्म कर देने का निश्चय किया है। संयुक्त निर्वाचन प्रणाली श्री अल्ला बख्श के मंत्रिमण्डल काल से थी।

न्यूगिनी में दो दल उतरे

डच न्यूगिनीमें अमेरिकन आक्रमणकारी फौजोंने दो स्थानोंपर अपने दल उतार दिये है। १ मई को ट्रूक पर ५० टन बम बरसाये गये। अब तमाम हवाई द्वीपोंसे ब्लैक आउटका आर्डर उठा लिया गया है। उधरसे जापान को पूरी तरह मार भगाया गया है।

जेसी के निकट घोर युद्ध : हजारों रूमानियन मारे गये

जेसी के निकट और कार्पेथियन पहाड़ों के पास हजारों की संख्या में रूमानियन सैनिक मर रहे हैं। यहाँ प्रतिदिन हिटलर की फौजें प्रत्याक्रमण करती हैं किन्तु विफल होकर लौट जाती हैं। यहां के मोर्चोंपर नष्ट टैंकों, जली हुई लौरियों और टूटी तोपों के ढेर लगे हैं। सोवीट दल पहाड़ी के निकट तक घुस गये हैं और दर्रे व तराई के मार्गों से आगे बढ़ रहे हैं। जंगल की लड़ाई में रूसी सेनायें बड़ी निपुण हैं। इसके साथ ही सोवीट विमानों की कार्यवाही भी जोर पकड़ रही है तथा रूमानिया के यातायात मार्ग पर व पोलिश सीमा पर वे भीषण हमले कर रहे हैं। सेबास्टोपोल में जो जर्मन तथा रूमानियन सेनायें हैं, वे अव्यवस्थित हो रही हैं। लाल सेना उन्हें परेशान कर के रसद न पहुँचने देकर उन्हें आत्मसमर्पण पर बाधित करने का यत्न कर रही है।

स्पेनद्वारा जर्मनीको मदद

सोवियट न्यूज एजन्सीने बताया है कि मैड्रिड में एक समाचार प्रकाशित हुआ है जिसमें कहा गया है कि जर्मन युद्धोद्योगोंके लिये स्पेन का मानवबल बड़े जोरोंके साथ लगा हुआ है।

राजस्थानी संसार

राजस्थान व मध्यभारत कार्यकर्ता सम्मेलन के संस्मरण

●

(श्री. सीताराम सी. मारू)

राजस्थान व मध्यभारत कार्यकर्ता सम्मेलन के संयोजक श्रीयुत भवानीशंकरजी वैद्य द्वारा प्राप्त आमंत्रण के समय से ही हृदय में तपस्वी कार्यकर्ताओं के दर्शन की उत्कट अभिलाषा जागृत हो चुकी थी। सम्मेलन की प्रतीक्षा कर रहा था।

सम्मेलन में उपस्थित होने के लिये २ अप्रैल के प्रातः उदयपुर की ओर रवाना हुआ। गाडी में नेतागण के दर्शन हुए। उनके साथ ठीक १०॥ बजे मेवाड़ की राजधानी उदयपुर में देवारी स्टेशन के प्रवेश द्वार को पार कर पहुँचे। स्टेशन पर स्वागत के लिये मेवाड़ प्रजामंडलके सभापति एवं सभी प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित थे।

तीसरे पहर दो बजे विषयनिर्वाचिनी समिति का कार्य आरम्भ हुआ। मेवाड़ के चतुर, समय की गतिविधि को पहचाननेवाले प्रधानमंत्री सर. टी. विजय राघवाचार्यने नेताओंके सम्मान स्वरूप कहिये या नागरिकों की मांग को आवश्यक समझ मेवाड़ राज्यसे सभाबन्दी कानून हटाये जाने की घोषणा की। इस प्रथम सफलता के श्री गणेश को बधाई देते हुए कार्य आरम्भ हुआ। इस सम्मेलन के सभापति इन्दौर राज्य प्रजामण्डल के सर्वाधिकारी श्री वि. सी. सरवटे और संचालक सिरोही राज्य प्रजा मंडलके श्री गोकुलभाई भट्ट चुने गये

शाम को सम्मेलन का खुला अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। सर्व प्रथम सम्मेलन के संयोजक श्री भवानीशंकरजी वैद्यने आगुन्तक सज्जनों का स्वागत करते हुए कहा कि "हमारा इस समय महात्मा गांधी के नेतृत्व में पूर्ण विश्वास होना चाहिये। आज यह सम्मेलन उस वीरभूमि पर हो रहा है जिसका कण २ वीरता से भरा हुआ है, जिसके इतिहास के पन्ने अपने बलिदानके खूनसे रंगे हुए हैं। मैं आशा करता हूँ कि यह सम्मेलन केवल प्रस्तावों तक ही सीमित न रहे पर आप जो जगह २ से आये हुए हैं एक दूसरे की परिस्थिति समझ आम नीति कायम कर ठोस काम कर दिखावें। राजपूताना व मध्य भारत में एकता कायम होना कोई कठिन बात नहीं है।"

बाद में मेवाड़ प्रजा मंडल के सभापति श्री. माणिक्यलालजी वर्मा ने कहा कि "११ फरवरी १९४४ को हम सब बिना शर्त रिहा किये गये। इन्हीं दिनों जेल से श्री. बलवन्तरावजी देशपांडे प्रधान मंत्री रा. चर्खा संघ भी बाहर आये। उन्होंने मुझे गोविन्दगढ़ बुलाया उस समय कुछ प्रमुख नेता और भी हमारे साथ थे। वहाँ पर जो विचार विनिमय हुए उनमें मुख्य ये थे (१) रियासतों की जनता को सुधार के नाम पर जो धोखा दिया जा रहा है, उस पर विचार किया जाय।

(२) राष्ट्रीय रक्षा दल की स्थापना की जाय।

(३) एक राजनैतिक लायब्रेरी कायम की जाय।

(४) अध्ययनशील कार्यकर्ता तैयार करने के लिये विद्यापीठ की स्थापना की जाय।

यह सम्मेलन इन्हीं उद्देश्यों से बुलाया गया है जिनपर आप को विचार करना है।"

इसके बाद सम्मेलन के संयोजक दूसरे महारथी श्री. देशपांडेजी ने बड़े ही ओजस्वी शब्दों में कहना शुरु किया—"हमारा यह वर्तमान आन्दोलन देशी राज्यों के खिलाफ नहीं है पर उस ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ है जिसने हमें १५० वर्षोंसे गुलाम बना रखा है। मैं अभी आगा खाँ महल में माता कस्तूर बा के देहावसान के १४ घंटे बाद पूज्य बापू से मिला था उस समय भी वे प्रसन्नचित्त ही दिखलाई देते थे। इस समय हम सब कार्यकर्ताओं को संगठित हो जाना चाहिये।"

इसके बाद श्री मोहनलालजी सुखाड़िया मंत्री मेवाड़ राज्य प्रजा मंडल श्री गोपीकृष्णजी विजयवर्गीय, प्रधान ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभा, श्री. वि. सी. सरवटे सर्वाधिकारी इन्दौर राज्य प्रजा मंडल व श्री हीरालालजी शास्त्री प्रधान जयपुर राज्य प्रजा मंडलने अपने ८ अगस्त ४२ बाद के अनुभव सुनाये।

इसी तरह ता० ३ अप्रेल को भी जोधपुर धौलपुर, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, बांसवाड़ा, राजगढ़ (मध्यभारत), नरसिंहगढ़, भोपाल, भरतपुर, सिरोही, बीकानेर आदि रियासतोंके नेताओंने भी अपने २ अनुभव सुनाये।

शामको खुले अधिवेशनमें निम्न निश्चय किये गये—सम्मेलन स्थायी करने और इसके विधान बनाने के लिये श्री शास्त्रीजी, श्रीविजयवर्गीयजी व श्री सरवटे सरवटे साहब नियुक्त किये गये (३) माता कस्तूरबा स्मारक फंडके लिये चन्दा जमा किया जाय (४) राजबन्दियों के परिवारोंको सहायता देने सम्बन्धी विषय पर सर्व श्री शास्त्रीजी, देशपांडेजी सरवटेजी, वर्माजी व मार्तंडजी की कमेटी बनाई गयीं।

(५) कार्यकर्ताओं व उनकी पत्नियों एवं बालक बालिकाओं की शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध किया जाय।

(६) ब्रिटिश सरकार की रियासतों के मिलाने की नीति पर चतुर नारायणजी मालवीय (भोपाल) को अध्ययन करने के लिये नियुक्त किया गया।

(७) राजपूताना व मध्यभारत के राजनैतिक कार्यकर्ताओं का सुदृढ़ संगठन करने और भावी रीति-नीति तथा कार्यक्रम सम्बधी महत्वपूर्ण सुझाव रखने के लिये एक समिति बनाई गई जो तीन माहके अन्दर अपने विचार पेश करेगी।

इसके अलावा बहुत से महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास हुए।

इस भाँति दो दिन तक बिना विश्राम लिये मीटिंगों में विचार विनिमय होते रहे व ३ अप्रेल की रात को ९ बजे पूरे १॥ साल के बाद उदयपुर में सार्वजनिक सभा हुई। जनता में काफी उत्साह था। नियत स्थान पर लोगों के झुंडके झुंड पहुँच गये थे। सभा में सर्व श्री दांते साहब, सरवटेजी, देशपांडेजी, गोकुलभाई भट्ट, शास्त्रीजी आदि के ओजस्वी भाषण हुए।

ता. ४ अप्रेल को सभी कार्यकर्ताओं ने उदयपुर के ऐतिहासिक स्थानों व सार्वजनिक संस्थाओं को देखा।

उसी दिन शामको ६ बजे की गाड़ी से हम चितौड़ के लिये रवाना हुए।

उदयपुर से विदा होते समय सभी कार्यकर्ता अपने २ हृदयों में एक दृढ़ निश्चय व संगठन की भावना को लिये हुए थे और सभी के मुख सम्मेलन की सफलता से प्रसन्न हो रहे थे। स्वागत समिति का कार्य बहुत सराहनीय रहा।

सारांश में यह सम्मेलन पूर्णरूप से सफल रहा और हम दृढ़ निश्चय और नई भावना के साथ चित्तौड़ लौटे।

देहाती प्रजा त्रस्त

उज्जैन जिले की देहाती जनता को न तो शक्कर मिल रही है और न किरोसिन तेल। इसकी शिकायत कुछ लोगों ने जिला अधिकारी सूबा से की तो उसने कस्टम के डिप्टी कमिश्नर को बताया। जब लोग डि० कमिश्नर के पास गये तो उसने कहा कि जब्ते से टिकिट लगाकर दरख्वास्त करो—तब देखेंगे। गरीब जनता की कोई सुनता नहीं और अफसर एक दूसरे पर टालते हैं।

अत्याचारों का विरोध

अजमेर (डाक से)। राजस्थान प्रान्तीय हिन्दू सभा अजमेर की तां. २२-४-४४ की असाधारण बैठक में जोधपुर राज्य के मलार गाँव में हिन्दुओं पर मुसलमानों द्वारा किये गये अत्याचारों का विरोध किया गया और दूसरे प्रस्ताव में प्रसिद्ध नेता चक्रवर्ती विजयराघवाचार्य के निधन पर शोक प्रकट किया गया।

राजपूताना विद्यार्थी सम्मेलन

नाथद्वारा। मई के अन्तिम सप्ताह में यहां राजपूताना विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों का प्रान्तीय संगठन बनाना है। श्री भगवान दास स्वागताध्यक्ष और मनहर कोठारी स्वागत मंत्री चुने गए हैं।

भरतपुर में शिक्षा का प्रसार

भरतपुर के दीवान श्री रामनाथन ने आर्यकन् विद्यालय के वार्षिकोत्सव पर पारितोषिक वितर करते हुए यह घोषणा की कि राज्य में अने प्राइमरी और मिडिल स्कूलों के अलावा कुछ हा स्कूल भी खोले जायंगे। आर्य कन्या विद्याल को हाईस्कूल बनने पर १०० मासिक सहाय देने का आश्वासन दिया।

भील नेता श्री तेजावत

उदयपुर। उदयपुर के भील नेता श्री मोती लालजी तेजावत को मेवाड सरकार ने म्यूनिसि पल हद में बहुत समय से बंद कर र है। अगस्त आन्दोलन में जेल जाने तक उनक पारिवारिक खर्च के लिए भत्ता दिया जाता था ११ फर्वरी को रिहा करके उनको पहिले समान नजरबन्द रखा गया है। लेकिन पारिवारिक भत्ता नहीं दिया जा रहा है।

श्री शारदाजी की पुत्रीका विवाह

अजमेर, २६ अप्रेल। राजस्थान के सुप्रसिद्ध नेता श्री चांदकरणजी शारदा की सुपुत्री कुमारी सुमित्रादेवी का शुभ विवाह ६ मई को अमरावती के एडवोकेट श्री कृष्णदासजी लड्ढा के सुपु कु. गणेशदासजी के साथ हो रहा है।

ठगबाजी का मुकदमा

मानपुरा से जो खबर प्राप्त हुई है उस अनुसार प्रजासंघ के प्रमुख व एकमा कार्यकर्ता श्री रोडमलजी मुख्तयार पर ४ का मुकदमा कोर्ट में ठगबाजी के संबंध में च रहा है। उनकी सनद भी जब्त करली गई है।

म्यु. से फाइलें गायब

उज्जैन म्यु. के सभापति ने दफ्तरों फाइलोंकी जांच की थी। तामिर विभाग की २७९ मिसलें जांच के समय नहीं मिली थीं। ये मिसलें रतीरामजी इंजीनियर और मु. हेडक्लर्क की देखरेखमें थी।

मिल में हिन्दी

स्थानीय हीरा मिलके मॅनेजर श्री. जॉन मिलका कार्य हिन्दी भाषा और लिपि में कि जानाका आरम्भ किया है।

आवश्यकता है—

"एक कुँवारे, सुदृढ़, शरीर रूपवान् २२ वर्षीय माहेश्वरी (चांडक) युवक के लि सुशील, सुन्दर, स्वास्थ्यपूर्ण, शिक्षिता तथ गृह कार्य्य कुशल माहेश्वरी जातीय कन्या की आवश्यकता है। युवक इंटरमीडियेट तक पढ़ा हुआ है और उसकी निजी माहवार आमदनी १००) है। विवाह शीघ्र करने का विचार है। कृपया निम्न लिखित पते पर पत्र-व्यवहार करें। पोस्ट बोक्स नम्बर ७५. 'माहेश्वरी'

माहेश्वरी कार्यालय, अली चेम्बर्स,
डीन लेन फोर्ट बंबई

—एक १४ वर्षीय माहेश्वरी (भूतड़ा व राठी) कन्या के लिये योग्य वर चाहिये कन्या सुंदर, गृह कार्य में कुशल और हिन्दी मिडिल पास है। निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें:— प्यारेलाल माहेश्वरी रामसर रोड नसीराबाद।

(पृष्ठ १९ का शेष)

ना ही “ विकास ” नामक हिन्दी साप्ताहिक शुरु कर दिया। सहारनपुर के ‘ माहेश्वरी ’ ३१४ अंक श्री. भागीरथदास शारदा के म्पादकत्व में निकले मगर बाद में गोदाणी को उसे बंद कर देना पड़ा और नागपुर से हेश्वरी ’ बराबर निकलता रहा है। नागपुर आकर माहेश्वरी ने कुछ नया बल प्राप्त या। इसका सम्पादन पहले श्री. रामगोपाल जी श्वरी और श्री. भगवानदासजी केला, में अकेले माहेश्वरीजी और अंतिम दिनोंमें . रामगोपाल मूना साहित्यरत्न करते थे।

नागपुर से “ माहेश्वरी ” लगभग १९३५ चला। उसके बाद एक बार फिर श्वरी महासभाके मंच पर शिथिलता आई र ‘ माहेश्वरी ’ का प्रकाशन फिर कुछ य के लिये स्थगित हुआ। इस वक्त श्वरी महासभा के महामंत्री श्री. वृन्दावन-जी वकील और अध्यक्ष श्री. बा० विन्ददासजी मालपाणी थे। “ माहेश्वरी ” प्रकाशन फिर कुछ समय बंद रहा और ३७ में कानपुर महासभाधिवेशनसे पूर्व कत्ते से मासिक रूपमें पुनः उसका आरंभ । कलकत्तेमें १९४० के मध्यतक हेश्वरी ” चला। सूरत महासभाके पश्चात का स्थान फिर परिवर्तित होगया और गभग १५ वर्ष बाद फिर “ माहेश्वरी ” के बंबई वैभव प्रेससे ही प्रकाशित आरंभ हुआ जो निर्बाध गतिसे आज क साप्ताहिक रूप में निकल रहा है। कत्तेमें इसका सम्पादन कार्य आरंभमें कृष्णलालजी बागडीने और बादमें श्री रतनजी चाण्डकने किया।

इस वक्त माहेश्वरी महासभा के प्रधान मंत्री . राधाकृष्णजी लाहोटी एवं श्री लक्ष्मी-रायणजी सालाणी उसके सम्पादक । यह बात निर्विवाद है कि इन सम्पादक यके हाथोंमें जाकर “ माहेश्वरी ” ने आशा-त प्रगति की है। अपने उत्कृष्ट सम्पादन र कलापूर्ण छपाई तथा माडर्न गेट अप की ष्टि से आज “ माहेश्वरी ” हिन्दी पत्रों में ना विशिष्ट स्थान रखता है। यद्यपि ह सामाजिक पत्र है और अ. भा. माहेश्वरी सभाका मुख पत्र होनेसे माहेश्वरी समाज का ही पत्र समझा जाता है लेकिन उस की लेख सामग्री और उसकी उच्च कोटिका सम्पा इस बातका साक्षी है कि वह देशके अच्छे राष्ट्रीय, सांस्कृतिक और सार्वजनिक पत्रोंसे टक्कर ले सकता है। माहेश्वरी समाजके लिये वस्तुतः यह बड़े गौरव की बात है कि उसका जातीय पत्र सारे राष्ट्रका प्रतिनिधित्व करनेका दावा कर सकता है। उसकी लेख सामग्रीके चयनमें सम्पादकों की सजगता और राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक अभिरुचिके पगपग पर दर्शन होते हैं। हमने देखा है कि कई प्रसंगों पर उन्होंने बिना इस बात की परवाह किये कि अमुक धनपति रुष्ट हो जायेगा उनके समाज विरोधी अथवा अनैतिक कार्यों की कटु आलो-चना की। “ माहेश्वरी ” ने जातीय पत्र होते भी लेखोंके चयनका एक स्टैण्डर्ड बना रखा है। यह ठीक है कि उसकी इस नीतिसे कुछ भाई रुष्ट हो सकते हैं लेकिन जहां तक सम्पादकीय शिष्टाचार की सुरक्षा और उत्कृष्ट सम्पादन कला का संबंध है, ‘ माहेश्वरी ’ की वर्तमान सम्पादकीय नीति स्तुत्य और अभिनंदनीय है। वर्तमान सम्पादक इस सम्पादकीय सजगताके लिये प्रशंसाके पात्र हैं और सचमुच उनके हाथों में जाकर आज ‘ माहेश्वरी ’ ने देशके आदर्श समाचार पत्रों में एक आदरणीय स्थान बना लिया है।

“ माहेश्वरी ” का जन्म हुए तो आज लगभग ५२-५३ वर्ष होते हैं लेकिन सन १९१० से उसका प्रकाशन बहुत अल्प विच्छेद के साथ लगातार जारी है। इसी दृष्टि से उसका १ मई से ३५ वां वर्ष आरंभ हुआ माना जाता है। इसके ३५ वें वर्ष में पदार्पण करते समय हम “ माहेश्वरी ” पत्र का अभिनंदन करते हैं और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह चिरजीवी हो और उसके द्वारा राष्ट्र एवं समाज का इसी तरह मंगल होता रहे। आज “ माहेश्वरी ” समाज में जो जीवन और जागृति नज़र आती है उसका जनक यही “ माहेश्वरी ” समझा जाना चाहिये। समाज में अनेक संघर्ष और विग्रह खड़े हुए, लेकिन ‘माहेश्वरी’ उनके बीच निर्भीकता के साथ अविचल खड़ा रहा—उसने एक क्षण के लिये अपने कर्तव्य का त्याग न किया। माहेश्वरी महासभा के संचालकों की भांति उसकी तेजस्विता बराबर प्रखर बनती गई—वह सच्चे शब्दों में माहेश्वरी महासभाका संदेशवाहक बना और समाज में निर्भीकता के साथ सामाजिक क्रांतिका शंखनाद किया। उसकी बदौलत माहेश्वरी समाजमें सैकडों लेखक, वक्ता और कार्यकर्ता पैदा हुए। उसने कभी सांप्रदायिकता, धर्मान्धता अथवा अन्याय का समर्थन नहीं किया। उसने सदा राष्ट्रीयता की हिमायत की और देशकी प्रगतिशील विचारधाराको पोषण किया। माहेश्वरी समाज के बाहर जो लोग उससे परिचित हैं वे जानते हैं कि “ माहेश्वरी ” राष्ट्र के अभ्युत्थान में पूर्ण योग दे रहा है और उसके द्वारा सम्पादनकलाका मापदण्ड ऊंचा हो रहा है। माहेश्वरी समाज के लिये तो ‘ माहेश्वरी ’ गर्व की वस्तु है ही लेकिन ग़ैर माहेश्वरियों के लिये भी वह प्रेम तथा गौरव की चीज़ है। वह इसी तरह फूलता फलता रहे और निर्भीकता के साथ राष्ट्र तथा समाज के कल्याण में जुटा रहे यही हमारी इस अवसर पर उसके लिये मंगल कामना है।

(पृष्ठ १३ का शेष)

१० वर्ष की आयु के पहले गुणा, और १२॥ वर्ष की आयु के पहले लंबे भाग के प्रश्न नहीं कर सकते। उक्त समिति ने बड़े जोरदार शब्दों में सलाह दी है कि गणित की शिक्षा देते समय इन नियमों का ठीक से पालन किया जाय केवल तभी बालक ठीक से सीख सकेंगे।

नीचे के चार्ट में दिखाया गया है कि बालकों को गणित में किन किन चीजों के जानने की जरूरत है और कितनी आयु में वे उन्हें अच्छी तरह सीख सकते हैं।

गणितकी जरूरी बातें	उम्र का हिसाब जिसमें इन्हें सीख जा सकता है
सादा जोड़	७ वर्ष ४ माह
सादी बाकी	८ ,, ११.
३ अंकों का जोड़	१०—१
३ अंकों की बाकी	९—१
भिन्न की जोड़ बाकी	११—१
गुणा	१०—२
सादा गुणा	१०—८
दशमलव का अर्थ	१०—५
दशमलव का सादा गुणा	१३—६
सादा ग्राफ	१३—६
दशमलव का सादा भाग	१२—२
फीसदी के मामूली सवाल	१२—६
दशमलव का भिन्न में रूपान्तर	१३—१०
बट्टे का गुणा	१३—२
भिन्न का भाग	१४—४
फीसदी के कड़े प्रश्न	१३—११
लंबा भाग	१३—७
दशमलव का भाग	१३—११

विनेटक स्कूलोंने विभिन्न विषयों की शिक्षा देनेका अनुपम एवं क्रांतिकारी ढंग निकाला है। उन्होंने काफी परीक्षण करनेके बाद यह ढंग निकाला है कि बालकोंको अलग अलग शिक्षा दी जाय, क्योंकि सबको एक साथ कोई भी बात ठीकसे नहीं समझायी जा सकती। हम आपमेंसे जिन्हें अध्यापनका कुछ भी अनुभव है, वे यह जानते हैं कि सब बालकों की बुद्धि समान नही है—कोई किसी बात को बहुत जल्दी समझ लेता है, किसी को वही बात बड़ी देर में समझमें आती है। अध्यापक समझता है कि सब के लिए एक बात कहकर उस के कर्तव्य की इतिश्री हो गयी। किन्तु इस ढंग से शिक्षा देने से देर से समझने वाले बालकोंको क्या लाभ होता है ? वे समझ नहीं पाते और उस विषय में हमेशा के लिए कच्चे रह जाते हैं। विनटक स्कूलों ने परीक्षण करके यह सिद्ध किया है कि एक ही क्लास में उस क्लास से बहुत अधिक और बहुत कम योग्यता के बालक रहते हैं, उदाहरणार्थ चौथे क्लास में छठें, पांचवें, चौथे और तीसरे क्लास तक की योग्यता के लड़के मिल सकते हैं। इन सब लड़कों को एक समान समझ कर उन्हें एक ही पाठ पढाना और फिर उनसे यह उम्मेद करना कि सब अपना पाठ सुना दें, भयंकर भूल है और लड़कों के बौद्धिक विकास की दृष्टि से घातक है। वाशबर्न की धारणा है कि लड़कों की योग्यता और अभिरुचि का अध्ययन कर उसके अनुकूल उन्हें शिक्षा दी जानी चाहिए। वाशबर्न योजना के अन्तर्गत प्रत्येक विषय के अनेक खंड किये जाते हैं और उन्हें इस ढंग से लिखा जाता है जिससे कि बालक बड़ी सरलता से हृदयंगम कर लेते हैं।

एक एक खंडमें बालकको पारंगत बनाया जाता है। शिक्षा की विशेषता यह है कि अभ्यासके लिए बालकोंको खूब काम दिया जाता है। इससे सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि बालकोंके अंदर आत्म विश्वास की भावना पैदा होती हैं उन्हें अपनी योग्यता की स्वयं परीक्षा करनेका भी मौका दिया जाता है।

गणित की तरह अंग्रेजी भाषा भी विनेटकमें व्यक्तिगत रूपसे पढ़ाई जाती है, और छात्र थोड़े समयमें अधिकसे अधिक योग्यता प्राप्त करते हैं।

भूगोल और इतिहास की भी शिक्षा व्यक्तिगत रूप से और सरल ढंग से दी जाती है। इस तरह विनेटक स्कूलों में प्रत्येक विषय की पूरी शिक्षा दी जाती है। विशेषता यह है कि व्यक्तिगत रूप से सबक पढ़ाये जाते हैं। साथ ही साथ ये स्कूल बालकों की अभिरुचि, विचार स्वातन्त्र्य, सहयोग की भावना और सामाजिक एकरूपता को बराबर प्रोत्साहन देते हैं और उनके आन्तरिक जीवन को विकसित करते हैं।

हमारे देश के शिक्षा शास्त्रियों को वर्तमान शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन करने के प्रश्न पर गंभीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। यह पद्धति कुछ पुरानी और दृढ़ हो गयी है, किन्तु नये प्रगतिशील और स्वतंत्र स्कूल, जो अब हमारे देशमें स्थापित हो रहे हैं इसको हटाकर नयी पद्धति के लिए मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। हमारे स्कूलही भविष्य के सुंदर नागरिक तैयार करने के केन्द्र हैं, किन्तु वर्तमान शिक्षा पद्धति के कारण वे अपने कर्तव्य से च्युत हो रहे हैं। क्या शिक्षाशास्त्री इस शिक्षा पद्धति में परिवर्तन कर इसे भारतीय राष्ट्र के लिए उपयोगी और लाभप्रद बनाने का कार्य अपने हाथ में लेंगे ?

आवश्यकता है

एक स्वस्थ, सुंदर, सुशिक्षित, गृहकार्यमें निपुण १३ वर्षीय लड़कीके लिए, एक ग्रेजुएट और अच्छी आर्थिक स्थितिके युवक वरकी आवश्यक है। वर की आयु २० वर्षसे अधिक न हो। उसका सुंदर और स्वस्थ होना नितांत आवश्यक है। मध्य भारत या राजपूताने के वर को तरजीह दी जायगी। निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

बा. नं. ६० ‘ माहेश्वरी ’ अली चेम्बर्स
डांन लेन फोर्ट बंबई

मारवाड़ प्रांतिय सनातन धर्म महासम्मेलन

(पृष्ठ १५ का शेष)

विकास ही देखा जाता और न राष्ट्रसेवाकी योग्यता। हाँ एक बात अवश्य होती है वह यह कि भारतीय भावोंमें घृणा और पाश्चात्य भावोंकी अविचारित दासता।—

संस्कृत शिक्षा अवश्य भारतीयोंकी अपनी है और भारतीय भावोंको उद्‌बोधन देनेवाली है परन्तु वह भी कुछ ऐसे पाश्चात्य ढांचेमें ढल गई है कि जिससे अभीप्सित बात नहीं सिद्ध हो पाती।

आज दिन संस्कृतकी भी पढ़ाई परीक्षा पास करना और कहीं जीविकाकी व्यवस्था करना बस इतने दो क्षुद्र उद्देश्योंमेंही समाप्त हो जाती है। शिक्षा सम्बन्धी इन त्रुटियोंका यदि वैज्ञानिक ढङ्गसे कारण देखा जाय तो यही कहना पड़ेगा कि शिक्षाका आधुनिक विधान कर्त्तव्य रूपमें नहीं है जिसका स्पष्ट अर्थ है कि धर्महीन है। धर्मानुसारी शिक्षणका एक चित्र सामने आवे तो बरवस स्वीकार करना पड़े कि सचमुच राष्ट्रीय शिक्षा इसे कहते हैं।

श्रुति स्मृतिके विधानानुसार सभी बालकोंको अपने अपने परम्परा प्राप्त विद्याओंको सीखना कर्त्तव्य रूपमें कहा गया है जिसे न करते हुए वे बालक धर्मच्युत समझे जानको डरते हैं। उदाहरणार्थ द्विज बालकोंके सम्बन्धमें मनुका वचन देखें- इस बचनमें

> योऽनधीत्य द्विजो वेदानन्यत्र कुरुते श्रमम्
> स जीवन्नेव शूद्रत्वं सान्वयश्चाशु गच्छति।

स्पष्ट कहा गया है कि द्विज हो तो उसे वेदका अध्ययन अनिवार्य्य है। इस प्रकार विद्या ग्रहणको धर्म कह कर उसके लिए धर्मानुसारिणी पद्धति भी इस वचनसे मिलतीं है।

इस पद्धतिके अनुसार शिक्षण शालमें प्रवेश करनेकी अवस्थाका पता-मनुके इस बचनसे मिलता है।

> " गर्भाष्टमेऽष्टमे वाऽब्दे ब्राह्मणस्योपनायनम् "
> गर्भादेकादशे राज्ञां गर्भात्तु द्वादशे विशः।

इसका अर्थ है कि गर्भसे आठवें अथवा जन्मसे आठवें वर्षमें ब्राह्मण और ग्यारहवें में क्षत्रिय और बारहवेंमे वैश्य बालकका उपनयन होना चाहिए जिसका प्रयोजन है वेदाध्ययन। प्रवेशकी अवस्थासे आरम्भ कर गुरुके आश्रममें निवासके उपयुक्त वेष भूषा और दिनचर्या आदि समस्त बातें विशदरूपसे इस पद्धतिमें मिलती हैं। सबका थोड़ी सूक्ष्म दृष्टिसे विचार करें तो इनका मर्म लोकोत्तर प्रतीत होता है।

वेषमें पलाश अथवा बेणु आदिके दण्ड; मृगाजिन, कौपीन; कमण्डलु; कुशासन, आदि बहुत साधारण और स्वदेशी ही नहीं प्रत्युत स्वप्रांतीय वस्तुओंका ही विधान हैं। दिन चर्यामें प्राकृतिक खुले वातावरणमें रहना, ब्राह्मसुहूर्तमें जागना, गायत्री; सूर्य; अग्नी प्रभृतिकी उपासना कर तेजःपुञ्जका अपनेमें आधान करना, ईश्वरीय ज्ञान विज्ञानके भाण्डार वेदोंको पढ़ना, आश्रममें समागत अतिथि, गौ आदिकी गुरुदेवकी आज्ञानुसार सेवा करना, मध्याह्नके समय सद्‌गृहस्थोंके द्वारपर जाकर गृहदेवियोंको माँ कहकर भिक्षा चर्य्या करना, भिक्षासे प्राप्त अमृतान्नको लाकर गुरुदेवको अर्पण कर उनकी इच्छानुसार प्राप्तान्नका भोजन करना आदि हैं। यह विधान एक गरीब ब्राह्मण बालकसे लेकर-महाराज कुमारों तकके लिए समान है। अब इन विधानोंको मार्मिकतासे देखें। इनमें स्वदेशी ही वस्तुका सेवन है। ब्रह्मचारीको स्वावलम्बी जीवनकी प्रायोगिक शिक्षा है। मितव्ययिताका अपूर्व पाठ है। घर घरमें विद्यमान माताओंकों अपनी माँ समझनेकी परम पुनीत उदार भावनाका क्रियात्मक शिक्षण है। सज्जनों यहाँ हमें इस भावका स्मरण कर रोमाञ्च होता है कि जब मध्याह्नके समय पलाश दण्ड व कमण्डलु हाथोंमें लिए लंगोटी लगाकर एक छोटासा बालक अपनी झोली लेकर किसी भी गृहस्थके दरवाजे पर खड़ा है और गृहलक्ष्मीको अपनी माँ कहकर पुकारता है और भिक्षा माँगता है तो वह सनातन धर्मनुयायी माँ उस बच्चेको जिस रूपमें देखती है वह अवर्णनीय है। उस समय वह माँ उस रसमय भावमें विभोर हो उठती है कि यही समय है यही वेष है यही उमर है और ऐसा ही शब्द है यही भाव है यही धर्म भावसे ओतप्रोत भोले भोले मुखकी प्राकृतिक मधुरता है जिसमें मेरा भी बालक इसी भाँति किसी माँके दरवाजे पर खड़ा होगा—

वस इन भावोंका उद्गम है कि माँ इस बच्चेको और उस बच्चेको अपूर्व अवर्णनीय प्रेम रससे सने हुए एक रूपमें देखती हैं और प्रेमामृतसे सने हुए अमृतान्नके ग्रास उठाकर उस बच्चेकी झोलीमें छोडकर अमृतमयी दृष्टिसे देख उस बालकको आप्यायित करती है। बालक भी भावके वशीभूत हो उसे अपनी माँके रूपमें देखकर प्रसन्न वदन हो आश्रमको लौटता है।

इस प्रकार अध्ययनकी कोमल अवस्थासे ही विश्व प्रेमका प्रायोगिक शिक्षण इस पद्धतिके विधानमें अनायास होता है। यदि महाराज कुमारोंको इस प्रकार अपने देशकी गरीब माताओंका सामना बाल्य कालमें होता रहे तो क्या प्राप्तवयस्क होकर राज्यसूत्र अपने हाथमें लेनेके बाद उन्हे घर घरकी खबर कमीशन डेपुटेशन, एवं सीआईडीके विना ही न हो जाय; क्या उन्हें गरीब माँके साथ अपनी माँ जैसा प्रेम न हो जो सचमुच भारत माँका-प्रेम है। क्या वे सादगीसे रहकर अपने उस देशकी सेवाका पुण्य व्रत न लें

और भी यह कैसा सुन्दर सुयोग होता है कि सभी गरीब व अमीर बालक एक रूपसे गुरुकी दृष्टिमें रहते हुए—अमीरी और गरीबी प्रयुक्त भेदभावको सर्वदाके लिए हटा देते हैं और एकको दूसरेके हृदय तक पहुचनेका सुन्दर अवसर मिलता है। कृष्ण सुदामाका इतिहास केवल भक्तिकी दृष्टिसे ही नहीं बल्कि राष्ट्रीयताकी दृष्टिसे भी देखें तो वह एक ही इतिहास भारतका हृदय-खोलकर रख देता है और इस राष्ट्रीयता और समाजवाद, साम्यवादके युगमें एक बे जोड़ नमूना उपस्थित करता है। यह सनातन धर्मकी राष्ट्रीयता है। सनातन धर्मके आदर्श पर गृहस्थोंकि घर घरमें देवताओंसे लेकर साधारण क्षुद्र प्राणियों तककी क्षुधा पिपासाकी निवृत्तिका कर्तव्यरूपसे विधान है। पञ्चमहायज्ञ, अतिथिसेवा, श्राद्ध, तर्पण, आदि विधियोंमें अति सुन्दर समाज हितकारी संघटनके सूत्र हैं। वानप्रस्थमें इंन्द्रियसंयम व कष्ट सहिष्णुताकी अन्तिम परीक्षा उत्तीर्ण करनेके बाद चतुर्थ आश्रममें प्रवेश होता है। इस आश्रममें बन्धुत्व और समानताका अनुपम पाठ सनातन धर्म सिखाता है। सारा विश्व आत्मा (स्वयं अपना रूप) रूपमें ही नहीं प्रत्युत परम आत्माके विराट् स्वरूपमें प्रेमास्पद होता है।

इसके बाद आपने वेतमान परिस्थिति की विषमता, अप्रदत्त उत्तराधिकार और विवाह बिल, पाकिस्तान, भगवद्‌उपासना, संगठन, शिक्षा की एकसूत्रता, स्त्री शिक्षा, व्यापक प्रचार, समाचार पत्र, धर्म और स्वराज्य देशी राज्य, गौमाता आदि के विषय में अपने सुन्दर विचार व्यक्त किये। विवाह बिलके संबंध में आपने कहा बिलके अनुसार चाहे जिस वर्ण और जाति में विवाह कानून हो सकता है। अब तक जाति बहिष्कार एवं सम्पत्ति के अधिकार से वंचित होने के डर से जो मर्यादा सुरक्षित थी, वह अब आगे न रहेगी। ऐसे बिलों का घोर विरोध करना होगा।

इसके बाद प्रधान मंत्रीजीने आये हुए सन्देश पढ़े और प्रथम दिन की कार्यवाही समाप्त हुई।

द्वितीय दिवसके कार्य श्रीरामानुज संस्कृत विद्यालयके छात्रोंके मंगलाचरण के साथ शुरू हुआ। श्री मरुधराधीश के प्रांत शुभ कामना प्रकट करनेके बाद पहला प्रस्ताव हिन्दू मन्दिरों की वर्तमानदशा पर असन्तोष प्रकट कर उनमें अपेक्षित सामयिक सुधार करनेके सम्बन्धमें स्वागत मंत्री श्री जनार्दनदासजी बांगड़ की ओर से रखा गया। प्रो. पं. शठकोपाचार्यजी शास्त्री एवं पं. रामनिवासजी बहड़के अनुमोदन समर्थन करने पर सर्वानुमतसे पास हुआ। दूसरा प्रस्ताव राजस्थानी भाषा की आवश्यकता एवं औचित्यको प्रकट कर उसके उद्धारार्थ प्रचलित आन्दोलनमें सहायक होनेको राजस्थान क्षत्रिय महासभाके सहकारी मंत्री पं. सम्पत्कुमार मिश्रने उपस्थित किया। श्री० शाह मदन गोपालजी कावरा कुचामन, श्री. सेठ सदासुखजी कावरा कुचामन तथा श्रीमान् बाबू कन्हैयालालजी डागा के अनुमोदन समर्थनों के बाद उक्त प्रस्ताव भी संर्वानुमत से पास हो गया। श्रीमान् शाह गोवर्धन लालजी कावरा के सनातनियों को देश की राजनीति में भाग लेने की आवश्यता बताने वाले प्रस्ताव जिसका अनुमोदन स्वागताध्यक्ष बाबू रघुनाथदासजी बांगड़ और समर्थन पं. रामकृष्णजी वकील मेड़ता ने किया पास होनेपर श्री. शाह मदन गोपालजी कावरा के २ प्रस्ताव पास हुए जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सुधार करने तथा प्रतिनिधि सभा की तरफ से साप्ताहिक पत्र प्रकाशित करने के सम्वन्ध में थे। प्रोफ़ेसर वासिष्ठ, पं. भीमसेन जी शर्मा, पं. घनश्यामचन्द्रजी शास्त्री विद्यामार्तण्ड लछमन गढ़ के भाषणोपरान्त द्वितीय दिवस का कार्य सम्पन्न किया गया।

तृतीय दिवस के अधिवेशन में पाकिस्तान विरोध संस्कृत शिक्षा प्रसार आदि विषयों प प्रस्ताव पास हुए। धन संग्रह की अपील होने पर १८ हजार का चन्दा एक हुआ जिसमें बड़ी कलमें सेठ मंगनीराम बांगड़, सेठ कन्हैया लालजी गटाणी, शा गोवर्धनलालजी कावरा, सेठ रघुनाथदासजी बांगड़, सेठ सदासुखजी कावरा, सेठ सतान जी सारड़ा, सेठ लक्ष्मीनारायणजी मूंधड़ा, से गोपीकृष्णाजी बलदुआ आदि की हैं। आगामी वर्षके लिये सभापति शाह गोवर्धनलालजी कावरा बनाये गये और शेष के चुननेका भार उन्हीं पर रखा गया।

सम्पादकीय

बाबू शिवप्रसाद गुप्त का निधन

(पृष्ठ २ का शेष)

हमने यह समाचार अत्यधिक दुःख के साथ सुना कि बाबू शिवप्रसाद गुप्त २४ अप्रै के प्रातःकाल चल बसे। उनकी मृत्यु से भारत ने एक उत्कट देशभक्त, हिन्दी भाषा ने अपना प्रचण्ड समर्थक और अनन्य भक्त एवं प्रगतिशील सामाजिक आन्दोलनों ने अपनी प्रेरक शक्ति खोदी। पराधीनता जन्य अभिशापों पर जब वह विचार करते थे, तो उनके निर्मूल के लिए वह कमर कसकर अधिक से अधि बलिदान और त्याग करने के लिए तैयार हो जाते थे। उनकी अनुभूति अति प्रखर थी। यही कारण है कि वह प्रत्येक विषय में क्रांतिकारी विचार रखते थे, जब उन्होंने अनुभव किया कि अंग्रेजी यूनिवर्सिटियों से निकलने वाले नवयुवक मेकाले के स्वप्न को पूरा कर रहे हैं तो उनका हृदय विद्रोह कर उठा और उस स्वप्न को विफल करने के लिए १० लाख रु. की निधि बनाकर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय काशी विद्यापीठ की स्थापना कर डाली। भारत के स्वरूप को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने के लिए उन्होंने भारत माता का मंदिर बनवाया, जो दुनिया के मंदिरों के इतिहास में बिल्कुल नयी चीज है। इसमें संगमरमर पर भारत का मानचित्र बनवाया और ऐतिहासिक अध्ययन का तमाम मसाला इकट्ठा किया। वह कांग्रेस आन्दोलनों में कई बार जेल गये, किन्तु अन्धभक्ति को कभी पास नहीं फटकने दिया। कांग्रेस की गलती दीख पड़नें पर वह उसकी आलोचना करने से नही चूकते थे। हिन्दी भाषा तो उनका उपकार कभी नहीं भूलेगी। उसका मान और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए उन्होंने क्या नहीं किया ?

सुप्रसिद्ध दैनिक 'आज' और ज्ञान मंडल उनके हिन्दी प्रेम के जीवित प्रतीक हैं। हिन्दी का नोवलप्राइज मंगलाप्रसाद पारितोषिक उन्होंने ही शुरू किया था।

उनकी मृत्यु से देश को जो क्षति पहुंची है उसकी पूर्ति होनी असंभवसी है। हम दिवंगत की आत्मा की चिरशांतिके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं !!

LIBRARY,
GURUKULA KANGRI

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल
इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड
संस्थापित सन् १९१९

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—: हमारी शाखाएं :—

अहमदाबाद
(गांधी रोड)

बोटाद
(काठियावाड़)

कलकत्ता
(१३५, कैनिंग स्ट्रीट)

लाहौर
(दी माल)

कम्पाला (युगाण्डा)
(बाम्बो रोड)

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेण्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए :—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :— सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B. A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

Reg. No. B4441

दी

न्यु एशियाटिक

की

उन्नति की रफ्तार

केवल जीवन बीमा के आंकड़े ही खुद बता रहे हैं

१९३४......................रु० १५,००,०००

१९३८......................रु० ४१,७४,०००

१९४२.....रु० ६०,००,०००

१९४३......एक करोड़के ऊपर

हम अपने पोलिसी–होल्डरों, काम करनेवालों तथा सभी शुभ चिन्तकों को
इस शानदार सफलता के लिये हृदयसे धन्यवाद देते हैं

कृपया हमें पूछिये लाइफ आग

मोटर वर्कमेन कम्पेनसेशन

मरिन आदि २ बीमों के लिए

न्यु एशियाटिक इंस्युरन्स कम्पनी लिमिटेड

हेड आफिस
नई दिल्ली

वेस्टर्न डिवीजन ऑफिस :—
इंपीरियल बैंक एनेक्स बिल्डिंग, फोर्ट, बम्बई

हमारी शाखाएं:—

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, त्रिचिनापली, लाहौर, इन्दौर, नागपुर, जलगांव, हैदराबाद (दक्षिण) कराची, कालीकट, बनारस

इनके अतिरिक्त अन्य महत्व के स्थानों में हमारी चीफ एजंसियां हैं

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

माहेश्वरी

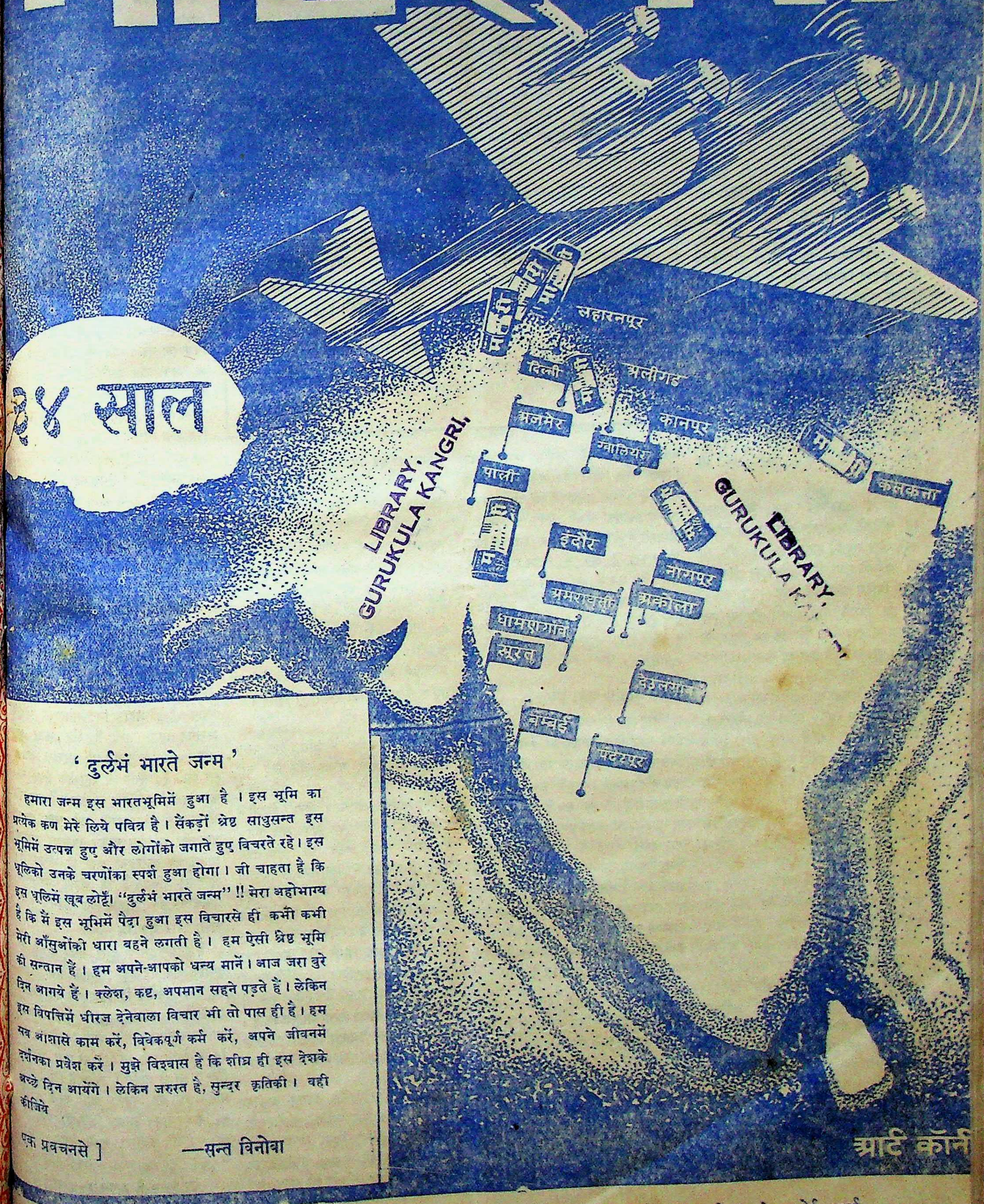
२४ साल
सहारनपुर
दिल्ली
अलीगढ़
अजमेर
कानपूर
ग्वालियर
पाली
कलकत्ता
इंदौर
नागपूर
अमरावती
अकोला
धामणगांव
सूरत
बम्बई
आर्ट कॉर्नर

LIBRARY,
GURUKULA KANGRI,

LIBRARY,
GURUKULA KANGRI

‘ दुर्लभं भारते जन्म ’

हमारा जन्म इस भारतभूमिमें हुआ है । इस भूमि का प्रत्येक कण मेरे लिये पवित्र है । सैंकड़ों श्रेष्ठ साधुसन्त इस भूमिमें उत्पन्न हुए और लोगोंको जगाते हुए विचरते रहे । इस धूलिको उनके चरणोंका स्पर्श हुआ होगा । जी चाहता है कि इस धूलिमें खूब लोटूँ। “दुर्लभं भारते जन्म” !! मेरा अहोभाग्य है कि मैं इस भूमिमें पैदा हुआ इस विचारसे ही कभी कभी मेरी आँसुओंकी धारा बहने लगती है । हम ऐसी श्रेष्ठ भूमि की सन्तान हैं । हम अपने-आपको धन्य मानें । आज जरा बुरे दिन आगये हैं । क्लेश, कष्ट, अपमान सहने पड़ते हैं । लेकिन इस विपत्तिमें धीरज देनेवाला विचार भी तो पास ही है । हम सब आशासे काम करें, विवेकपूर्ण कर्म करें, अपने जीवनमें दर्शनका प्रवेश करें । मुझे विश्वास है कि शीघ्र ही इस देशके अच्छे दिन आयेंगे । लेकिन जरुरत है, सुन्दर कृतिकी । वही कीजिये

एक प्रवचनसे] —सन्त विनोबा

पाक्षिक
कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई.
प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा

★ साम्राज्य के पचड़े से दूर रहो ★

सुश्री पर्ल एस. बक

विश्व विख्यात विदुषी लेखिका पर्ल एस बकने इस लेखमें अपने अमेरिकन देशवासियोंको यह स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि हमने ब्रिटिश साम्राज्यके साथ मिल जानेके मि॰ चर्चिलेके आमंत्रणको स्वीकार किया तो हमारे खिलाफ कल्पनातीत बड़े पैमाने पर युद्ध छिड़ेंगे। साम्राज्यवाद लुप्तप्रयोग सिद्धांत है, क्योंकि आधीसे अधिक दुनिया इसका अंत करनेका दृढ़ संकल्प कर चुकी है। लेख विचारोत्पादक और सामयिक है, अतः हम अपने पाठकोंकी जानकारीके लिए इसे प्रकाशित कर रहे हैं।

—सम्पादक

वर्तमान महासमरमें विजयश्री हमारे हाथमें आनेमें अभी भी इतनी देर है कि हम भविष्य के स्वरूपका ठीक ठीक निरूपण नहीं कर सकते। फिर भी विजय इतनी अनिश्चित नहीं है जितनी कि छः मास पूर्व थी। यदि जापान किसी बहुत बड़ी चालबाजीसे काम न ले, तो इसमें कोई संदेह नहीं कि युद्धमें हम विजयी होंगे। 'हम' से मेरा तात्पर्य संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और ब्रिटेनसे ह जब कि रूस युद्धमें अदा किये गये अपने पार्टके अनुकूल हिस्सा न मांगे। इस मामले में भविष्य के साथ अनिश्चितताका गठबंधन है। किन्तु यदि यह कल्पना की जाय कि चीन और रूस युद्धके बाद मुख्यतया अपने पुनर्गठनमें संलग्न हो जायंगे, और संयुक्त राष्ट्र अमेरिका एवं ब्रिटेन ही भविष्यका निरूपण करेंगे, तो उस भविष्यका युद्धोत्तर चीनके साथ क्या संबंध होगा?

भीतर भी युद्ध

अनिश्चितता अब भी इस बात पर निर्भर करती है कि हमारे दो देशोंमें कौन जीतता है। क्योंकि जो युद्ध दुनियाके चारों ओर हो रहा है वह हमारे दोनों देशोंके भीतर भी हो रहा है। हम सब यह जानते हैं कि विश्वमें लड़ाई जीतना और हमारे दो देशोंमें हारना अब भी संभव है।

ब्रिटिश साम्राज्यके साथ मिल जानके मि. चर्चिलके सुझावको ग्रहणकर हम अमेरिकाके अंदर लड़ाईमें हार सकते हैं। यदि हम मि. चर्चिलके सुझावको अङ्गीकार कर किसी भी रूपमें ब्रिटिश साम्राज्यके साथ मिल जायेंगे, तो हम विश्वके तीन चौथाई लोगोंको यह धारणा बनानेका मौका देंगे कि हम साम्राज्यमें अर्थात् कुछ व्यक्तियों द्वारा बहु संख्यक व्यक्तियों पर शासन, एक जातिसे दूसरीकी श्रेष्ठता अर्थात काली, भूरी और पीली जातियोंसे श्वेतांग जातियोंकी श्रेष्ठता या अन्य राष्ट्रोंसे ब्रिटेन और अमेरिकाकी श्रेष्ठतामें विश्वास करते हैं। हमारे दोनों देशोंके गैर प्रजातांत्रिक व्यक्तियोंके हाथमें सत्ता आयेगी। हमारे सैनिक जब बाहर गणतंत्रके शत्रुओंको पराजित कर निरस्त्र होकर वापस आयेंगे, तो स्वदेशमें उन्हें गैर प्रजातांत्रिक व्यक्ति अधिकारारूढ़ दीख पड़ेंगे। यदि भविष्य का यह स्वरूप हुआ—वैसे मुझे ऐसा स्वरूप न होनेका उतना ही दृढ़ विश्वास है, जितना कि मित्र राष्ट्रों द्वारा धुरी राष्ट्रोंके नष्ट किये जाने पर है—तो सचमुच युद्धोत्तर चीनके साथ हमारा सम्बंध बहुत ही जटिल होगा, क्योंकि चीनमें ब्रिटेन और अमेरिका हमेशा ही दो बिल्कुल स्वतंत्र राष्ट्र रहे हैं और इंग्लैंडके साम्राज्यके साथ हमारे मिल जानेके असत्याभासके अलावा चीनी शेर और बकरीके एक ही घाट पर पानी पीनेके असत्याभासको समझ सकेंगे।

हम अमेरिकनोंने उपनिवेशोंके अधिवासियों पर शासन करना हमेशा ही अस्वीकार किया है। इस दिशामें हमारा पतन हमारे लिए हानिकारक ही सिद्ध हुआ है। उदाहरण के लिए फिलीपाईन द्वीप समूह से व्यय के मुकाबले हम बहुत थोड़ा लाभ उठा सके। हम अपने अंदर दूसरोंपर शासन करनेका गुण कभी पैदा ही नहीं कर सके। अमेरिकनोंने सान्ध्य पोशाकमें अकेले जंगलमें भोजन करना हमेशा हास्यास्पद समझा है। उपनिवेशोंमें शासन करनेका काम कभी भी हम गंभीरतापूर्वक नहीं उठा सके। गर्म जलवायुमें रहकर शासन कायम रखना हमें कभी नहीं पोसाया। नग्न और अर्द्धनग्न लोगोंपर अपनी प्रभुता कायम रखनेके लिए हम कभी जलवायु विषयक कष्ट सहन कर सकेंगे। इसमें मुझे सन्देह है। गर्म जलवायुमें हमें शासन कायम रखनेके प्रयासकी अपेक्षा आराम ही सूझेगा। आरामसे न तो कोई साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है और न कायम ही रखा जा सकता है। जब मैं अपनी इस आरामकी मनोवृत्तिपर विचार करती हूं, तो मुझे शांति प्राप्त होती है और मैं बड़े मजेमें कह सकती हूं कि अमेरिका कभी भी साम्राज्यके चक्करमें नहीं पड़ेगा।

साम्राज्यवाद–नया रूप!

किन्तु यह हो सकता है कि हम अपने ढंगके साम्राज्यका निरूपण करें, ऐसा साम्राज्य जिस पर राज्यकी शक्ति द्वारा नहीं बल्कि साधारण बुद्धि और व्यापारिक चातुरी द्वारा शासन करें। मैं समझती हूं कि यह सच है कि दूसरे देश पर राजनीतिक आधिपत्य स्थापित्य करनेका चाव हमारे अन्दर कभी नही पैदा हुआ। किन्तु यह भी समान रूपसे सच है कि व्यापारसे हमारी प्रीति है और व्यापारसे प्रीति और साधारण बुद्धि द्वारा यह बिल्कुल संभव है कि हम ऐसा साम्राज्य स्थापित करें, जैसा कि इंग्लैण्ड भी कभी न स्थापित कर सका हो। यथार्थतः इसी बातसे इंग्लैण्ड हमसे भय खाता है!

इंग्लैण्ड युद्धमें विजयी होनेके फलस्वरूप बहुतसे अंचलोंका मालिक बन सकता है, जैसा कि गत महासमर की समाप्तिके बाद १० लाख वर्ग मील भूमि उसके हाथ लगी थी। तब हमारे व्यापारिक साम्राज्यके खिलाफ उसका वही संरक्षण होगा जिसका वह भारत, अफ्रीका और अपने समस्त उपनिवेशोंमें इस समय प्रयोग कर रहा है अर्थात् हमारे व्यापारिक फर्म उसके इलाकोंमें नहीं खुल सकते। संक्षेपमें, वह अपने अधीन किसी भी अंचलमें हमारे साथ व्यापारिक प्रतिस्पर्द्धा की परेशानीमें नहीं पड़ेगा। केवल इस प्रकार वह अपने साम्राज्यका पूरा पूरा लाभ उठा सकता है। यदि वह स्वच्छन्द प्रतियोगिता जैसी किसी भी बातके आधार पर अपने इलाकोंमें हमको व्यापार करने देगा तो, उसके हाथ कुछ भी नहीं लगेगा। वह राज्य संचालनका समस्त व्यय और परेशानियां बर्दास्त करेगा और मालामाल हम होंगे। वह ऐसा कभी नहीं करेगा। अस्तु यह मानते हुए भी कि हम साम्राज्यका एक अंग नहीं बनेंगे, जिसके लिए मि॰ चर्चिल हमें आमंत्रित करते हैं, और एक पृथक एवं स्वतन्त्र राष्ट्र कायम रखेंगे, इस बातका खतरा है कि हम स्वयं व्यापारिक प्रभुत्वका साम्राज्य स्थापित करेंगे, जैसा कि कुछ हदतक हमने दक्षिण अमेरिकामें किया है। हमारे देशके बड़े बड़े व्यापारी इस दिशामें सचेष्ट दिखाई देने लग गये हैं। चीनकी तरफ खास तौरसे उनका ध्यान जा रहा है। चीनके उद्योगोंका विकास करनेके उद्देश्यसे बड़े बड़े अमेरिकन व्यापारी ऐक्यबद्ध हो रहे हैं। यह सब स्वार्थसाधनके लिए तैयारी हो रही है।

चीन क्रुद्ध है

चीनको बेशक एक औद्योगिक देश बनना है। इसे चीनियोंसे अच्छा और कोई नहीं जानता। वे हमेशासे यह आशा करते रहे हैं कि ऐसे विश्वका आविर्भाव होगा, जिसमें वे अपनी भूमि पर शांतिपूर्वक कृषि करते रहेंगे। राष्ट्रसंघने लार्ड लिटन की अध्यक्षतामें अपना जो कमीशन मंचूरिया भेजा था, उसने चीनियोंको यह विश्वास करा दिया कि इस प्रकारका विश्व केवल स्वप्न है। वे जानते थे कि जापान लुटेरा है। जब राष्ट्रसंघके कमीशनने जापान द्वारा चीनके अंग मंचूरियाका हड़पा जाना क्षमा कर दिया तो उन्होंने समझा कि 'जिसकी लाठी उसकी भैंसवाली' दुनियामें रहनेके लिए शस्त्रीकरण करना अत्यावश्यक है। यदि उन्हें और किसी प्रमाण की आवश्यकता थी वह उन्हें इस लड़ाईके संचालनके दर्मियान प्राप्त हो गया।

इस संबंधमें चीनियोंके विचार जाननेके लिए आप केवल लिन युटांगकी सबसे नयी पुस्तक "बिटविन टियर्स एण्ड लाफ्टर्स (हास्य और रुदनके बीच) पढ़िये। यह एक क्रुद्ध व्यक्ति द्वारा लिखी हुई पुस्तक नहीं है—यह समस्त क्षुब्ध राष्ट्रकी आवाज है। चीनी सरकार और चीनके अधिवासी लिन युटांगके कथनसे पूर्णतया सहमत हैं और वे उन्हें प्रोत्साहन देते हैं।

फिर कभी नहीं!

चीन जानता है कि अब वह शान्त कृषि प्रधान देश नही बना रह सकता। वह कैसे उद्योगीकरण करेगा यही केवल प्रश्न है। आंशिकरूपसे यह स्पष्ट है कि हम उस प्रश्नका उत्तर निश्चित कररहे हैं। जबतक हम इसे बिल्कुल फौजी युद्ध समझते रहेंगे और मि. चर्चिल तथा प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट इस बातपर अडिग हैं कि पहले युद्धमें विजय प्राप्त करनी है तब शांति के स्वरूपकी चर्चा आरंभ की जा सकती है, चीन सरकारी नियंत्रणमें बड़े बड़े उद्योग शुरू करने को बाध्य है ताकि चीन जल्दी शस्त्रीकृत किया जा सके। यदि आप किसी चीनीके मन की बात जान सकते हैं तो, वह स्पष्टतया कहेगा कि "अब हमें शांत कृषि प्रधान देश बने रहनेकी अपनी पूर्व धारणाको फिर कभी नहीं पास फटकने देना चाहिए। अब महान जलसेना, स्थलसेना और गगन सेना बिना हमारी सुरक्षा संभव नहीं है। हमें स्वयं इन सेनाओंका गठन करना होगा और अपने ही साधनोंसे इन्हें कायम रखना होगा।" अर्थात चीन किसीके भी और आवश्यकता पड़ने पर सबके खिलाफ हथियार उठा सकने लायक ताकत पैदा करनेके लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है।

चीनमें क्रेता बाजार उतना विकसित नहीं है, जितना कि अमेरिकामें है। वहांके लोग सादगीसे रहनेके आदी हैं। एक औसत परिवारके लिए हाथसे बनाया हुआ घर, कुछ टेबुल-कुर्सियां, बिस्तरे, मिट्टीकी तश्तरियां आदि पर्याप्त हैं। घड़ी मितव्ययिताकी श्रेणीके अन्तर्गत समझी जाती हैं और मोटर कुछ लखपति और करोड़पति एवं सरकारी आफिसर रखते हैं। सौख्य की वस्तुओंके लिए चाव केवल तभी पैदा किया जा सकता है जब कि औसत चीनीकी आमदनी कई गुना बढ़ायी जाय और यह आय सरकार अधिकृत शस्त्रास्त्र आदिके बड़े कारखानों द्वारा ही संभव है। अस्तु यह अनिवार्य है कि चीनके बहुसंख्यक श्रमिक बड़े बड़े उद्योगोंमें लग जायंगे।

चीन और गणतंत्र

मैं हृदयसे इस पर दुःख प्रकट करती हूं, क्योंकि चीन बड़े बड़े उद्योगोंके लिए तैयार नहीं है। श्रमिकोंके हितोंके रक्षार्थ वहां प्रभावशाली कानून नहीं हैं। युद्धके बाद लोगोंकी आर्थिक परिस्थिति इतनी शोचनीय हो जायगी कि वे किसी भी मजदूरी पर काम करनेके लिए विवश हो जायंगे। उद्योगोंमें स्त्रियों और बच्चोंकी रक्षा की धारणा पैदा करनी होगी क्योंकि इस समय उसका बिल्कुलही अस्तित्व नहीं है। यदि केन्द्रीकृत रूपमें चीनके उद्योग आरंभ हुए तो अनिवार्यतः मानवको दीर्घ काल

[शेष पृष्ठ ७ के कालम ३–४ पर]

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल भ्राफ़
बी. ए., बी. एस् सी. एलएल. बी.

' उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत '

वर्ष ३४, संख्या २४] बम्बई ता. २१ अप्रैल १९४४ [वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

सभ्यता और प्रगति

● श्री. श्रीरवीन्द्रनाथ ठाकुर ●

विश्वकवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुरने यह भाषण चीनमें दिया था। यद्यपि यह भाषण बहुत वर्ष पूर्व दिया गया था, परन्तु उसमें कही गयी सचाई सभी युगों और सभी समयोंके लिये पथप्रदर्शक है। विशेषकर आजके अर्थदास युगके लोग यदि कवि द्वारा वर्णित सत्यकी झाँकी ले सकें तो विश्व की कायापलट होकर यहाँ फिर ' शिवम् ' और ' सुन्दरम् के दर्शन हों।

—सम्पादक

एक चीना लेखक लिखता है, चीनकी स्थितिका एक घोर दुःखजनक भाग आज यह है कि आजकल चीननिवासियोंको यह कहा जा रहा है कि वे अपनी सभ्यताको तिलाञ्जलि देदें और आधुनिक यूरोपकी सभ्यताको अपना लेवें, यद्यपि समस्त साम्राज्यमें एक भी शिक्षित चीननिवासीको आधुनिक यूरोपियन सभ्यताके विषयमें थोड़ा भी ज्ञान नहीं है।"

एक पत्रिकामें एक फ्रांसीसी विद्वानका एक विचार मैंने पढ़ा है जिसमें उसने लिखा है कि चीन कोई देश नहीं है बल्कि वह तो एक सभ्यता है। मैंने उनका मत पूरी तरह नहीं पढ़ा है, अतः मैं निश्चयसे नहीं कह सकता कि उनका इससे क्या अभिप्राय है। परन्तु मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि, लेखकके विचारोंके अनुसार चीनका नाम लेने से उसके आदर्शोंका ही ग्रहण होता है, किन्हीं खास चीजोंके संग्रह तथा उत्पादनका नहीं।

' सिविलिजेशन ' यूरोपियन शब्द है। हमने आज तक इसके वास्तविक अर्थको जाननेका यत्न नहीं किया है। एक सदीसे अधिक काल बीता जबसे हमने इसे स्वीकार किया है; ठीक जैसे कि पूरे इतमीनानके साथ एक भेटमें मिले घोड़ेको हम स्वीकार कर लेते हैं, और उस घोड़ेकें दाँत गिननेकी पर्वा नहीं करते। अभी कुछ दिनोंसे ही हम यह सोचने लगे हैं कि पश्चिमीय संसार सिविलिजेशन की बात से क्या वास्तविक अर्थ लेता है। हम सोचने लगते हैं, जैसे हमारी भाषामें कोई शब्द मानवीय पूर्णताका अभिप्राय देता है, क्या इस शब्दका भी वैसाही कुछ अर्थ है?

अंग्रेजी " सिविलिजेशन " शब्दके लिये मुझे अपनी भाषाका ' धर्म ' शब्द सबसे अधिक पर्यावाची शब्द जान पड़ता है। धर्मका विशिष्ट अर्थ है वह सिद्धान्त जो हमें संसारमें धारण किये हुए है और हमें अभ्युदयकी ओर लेजाता है।

मनुष्य चाहे तो धर्मको अस्वीकार कर देवे और चाहे तो एक पशु या यंत्रकी तरह उसे मान लेवे और इस तरह अपनेको हिंसित न होने देवे, और चाहे तो बाह्य तथा भौतिक दृष्टिकोणसे वह शक्ति तथा धन प्राप्त कर लेवे परन्तु ऐसा करना उसके लिये मौतसे भी अधिक भीषण होगा। हमारे धर्मशास्त्रोंमें कहा गया है:—अधर्मसे मनुष्य फलता फूलता है, अपनी इच्छित वस्तुओंको प्राप्त करता है, परन्तु अन्तमें समूल नष्ट होजाता है।

जो व्यक्ति केवल आरामके साथ यंत्रकी तरह धनोपार्जन करता है उसमें मनुष्यकी पूर्ण अभिव्यक्ति नहीं होती है। वह तो रंगबिरंगे सलमासितारे कढ़े हुए एक खाली बटुए की तरह है। हमारे शास्त्रोंके अनुसार वह वृद्धिको प्राप्त हुआ, बोलता चालता हुआ और सब हावभावके साथ भी, नाशको प्राप्त होता है।

इसी तरहका विचार चीनके नामी साधु लोटजेने दूसरे तरीकेसे व्यक्त किया है। वह कहता है; जब मनुष्य अपने भीतरके सत्यको प्रकट कर देता है तो वह जीवित रहता है। सत्य ही स्वयमेव धर्म है। लोटजेके आदर्शके अनुसार सामाजिक जीवनमें मानवधर्मकी अभिव्यक्ति ही सभ्यता (civilisations) है।

एक शताब्दिसे अधिक कालसे हम लोग पश्चिमके समृद्धिशाली रथके पीछे-पीछे घिसटे चल रहे हैं। उस रथकी धूलिने हमारे साँसको घोंट दिया है, हमारे कानोंको बधिर कर दिया है, और हमें उसकी तेज रफ्तारने चकनाचूर कर दिया है। हमने मान लिया है कि इस रथकी गति ही प्रगति है, और प्रगति ही सभ्यता है। यदि कभी यह पूछनेका साहस किया कि, किस दिशामें प्रगति, और किस उद्देश्यके लिये प्रगति, तो यह पूर्वीय विचारवालोंका विशुद्ध प्रगतिके सम्बन्धमें उपहासपूर्ण सन्देह करना ही समझा गया। उस दिन अमेरिकाके साप्ताहिक ' नेशन ' में मैंने वह हिस्सा पढ़ा जिसमें उक्त पत्रने ब्रिटिश हवाबाजों द्वारा अफगानिस्तानके ग्रामीण महसूदों पर बमवर्षा करनेके सम्बन्धमें विचार करते हुए यह सत्य प्रकट किया था। जिस घटना पर उक्त पत्रने टिप्पणीकी है वह कुछ इस प्रकार घटी कि एक बमवर्षक विमान को महसूदोंके एक गाँवमें जबर्दस्ती नीचे उतरना पड़ा था, और टूटे हुए जहाज़के ढेरमेंसे उसके हवाबाज बिना किसी प्रकारकी चोटके बच गये, और उन्हें पाँच या छः उन बूढ़ी औरतोंने घेर-लिया था जो कि उनकी बमवर्षासे जान बचाकर भागी थी और अब भयंकर छुरियोंको घुमा रहीं थी।' लन्दन टाइम्स'के सम्पादकने इस घटनाको निम्न प्रकारसे उद्धृत किया है:—

एक सुन्दरी बालाने हवाबाजोंको अपने आँचलकी ओटमें कर लिया और उन्हें समीप की एक गुफामें ले गयी, जहाँ पर एक मालिक (सर्दार) उसके द्वारपर तैनात होगया और उसने छुरियोंसे लैस, और शोर मचाती हुई चालीस व्यक्तियोंकी भीड़को अन्दर जानेसे रोक दिया। उस समय भी आकाशसे बम गिर रहे थे, इसलिये भीड़को गुफामें बैठे हवाबाजोंकी सुरक्षा अखरी। परिणामतः वे गुफामें घुस पड़े जिससे वहाँ दम लेना भी मुश्किल हो उठा। तब हवाबाजोंको उस विरोधी भीड़के अन्दर से निकालकर बाहर ले जाया गया। पड़ोसके मालिकों और एक मुल्ला ने मित्रभावसे उनसे भेंट की और उनके भोजन की व्यवस्था की। स्त्रियाँ उनकी भोजन व्यवस्था की देखभाल करती रहीं, और लद्दा तथा रजमकसे खाने पीनेकी चीजें बेरोकटोक पहुँचती रहीं। २४ वें दिवसके सायंकाल उन्हें लेकर लद्दाकी ओर प्रस्थान किया गया और अगले दिन पौ फटने पर वे वहां पहुँच गये। रक्षा पुरुषों ने हमलेके भयसे हवाबाजोंको महसूदोंका वेष पहिना दिया था। ध्यान देने योग्य विशेष बात यह है कि हवाबाजोंकी रक्षा करनेमें प्रमुख व्यक्ति नवयुवा तथा नवयुवतियाँ ही थे।

ऊपरके वर्णनसे पश्चिमकी आश्चर्यपूर्ण प्रगति के सम्बन्धमें कुछ तथ्य प्रकट होता है। पश्चिम साभिमान यह समझता है कि जिन चीजोंको उसने पैदा किया है, और जिस शक्तिको उसने अपने काबूमें किया है उनके प्रदर्शनसे उसका व्यक्तित्व झलकता है। परन्तु परिणामकी महत्ता और यंत्र की परिपूर्णता उससे इस सचाईको छिपा कर रखती है कि उसके भीतरकी मानवीयता कुचल दी गयी है।

जब मैं बालक था तो मैं आजादीके साथ छोटी-छोटी चीजोंको जोड़-तोड़ कर अपने खिलौने बनाया करता था। इन खेलोंमें मेरे बालसखा भी पूरा-पूरा हिस्सा लेते थे-वास्तवमें मेरे खेलोंका पूर्ण आनन्द मेरे साथियोंका उनमें हाथ बटाने पर ही आश्रित था। एक दिन, हमारे बचपनके इस स्वर्गमें प्रौढ वयसके बाजारू संसारके लालचने प्रवेश किया।

एक अंग्रेजी दूकानसे खरीदा हुआ एक खिलौना, जो कि बहुत बड़ा और आश्चर्यपूर्णतासे सजीव मालूम पड़ता था, हमारे एक साथीको दिया गया था। वह साथी उस खिलौनेको लेकर अभिमानसे फूल उठा और हमारे खेलसे दिल चुराने लगा। उस कीमती खिलौनेको वह बड़ी सावधानीसे हमसे बचाकर रखता था, और सस्ते दामोंके खिलौनेवाले हम संगियोंसे वह अपनेको बड़ा अनुभव करता था। मुझे विश्वास है यदि वह आधुनिक भाषाका प्रयोग कर सकता होता तो वह यही कहता कि उस उपहासास्पद खिलौनेका मालिक होनेके कारण वह हम सबसे अधिक सभ्य था।

अपनी उत्सुकतामें वह यह बात नहीं समझ सका—जो सचाई उस समय उसके लिये कोई महत्वपूर्ण न थी—कि उस आकर्षक लोभ ने उसके पूर्ण खिलौनेसे कहीं अधिक पूर्ण वस्तु, उसके बालस्वभावकी अनुभूतिको धुंधलाकर दिया था। उस खिलौनेसे उसकी सम्पद्का ही भान होता

(शेष पृष्ठ २३ पर)

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन"

बम्बई, ता० २१ अप्रैल १९४४

अ० भा० महिला सम्मेलन

पिछले पखवारे में बम्बई में अ. भा. महिला सम्मेलन का १७ वां अधिवेशन श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय की अध्यक्षतामें धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। लगातार २-३ दिनों तक बंबईमें जबर्दस्त चहल पहल रही—महिला क्षेत्र उत्साह, उमंग, एवं आत्मगौरव की दिव्य भावना से आप्लावित हो उठे। देश के कोने कोने से प्रतिनिधि एवं दर्शक के रूपमें आयी हुई विदुषी महिलाओं ने अ. भा. महिला सम्मेलन की शक्ति, संगठन और स्वरूप का परिचय दिया। विदेशी दर्शक हमारे नारी जागरण का नमूना देखकर स्तब्ध रह गये—साम्राज्यवादी लेखकों की शरारत भरी झूठी बातों का प्रभाव उनके मस्तिष्क से ठीक उसी तरह निकल गया, जिस तरह कि सूर्योदय होते ही कुहासा मिट जाता है। सारा दृश्य आह्लादकारी था और वह हमारे देश के नारी जागरण के मनोहर भविष्य की अधिकारी रूप से भविष्यवाणी कर रहा था। हमारे देश का महिला आन्दोलन अभी अपनी किशोरावस्था में है। नारी जाति के उद्धार एवं उन्नति की पुनीत भावनासे प्रेरित होकर श्रीमती मारग्रेट कजिन्स नामक एक अंग्रेज महिला ने १९२७ में अ. भा. महिला सम्मेलन को जन्म दिया था। तब से यह संस्था संगठित रूप से महिलाओं के अधिकारों के लिए बराबर आवाज उठा रही है। यह हर्ष एवं गौरव की बात है कि हमारे देश के महिला आन्दोलनके मार्ग में पुरुषों ने कभी भी न तो कांटे बिछाये और न उस को पंगु बनाने की कुटिल नीति ही बरती, जैसा कि पाश्चात्य देशों की स्वार्थी पुरुष जाति ने किया था। इसके विपरीत भारत में पुरुष जाति ने महिला आन्दोलन को प्रोत्साहन, सहयोग, एवं सहायता प्रदान की। जब नारी आन्दोलन का सूत्रपात भी न हुआ था, उसके पहलेही १९२५ में भारतीयों की स्वतंत्रता के लिये लड़नेवाली महान् एवं शक्तिशाली संस्था कांग्रेस ने अपने कानपुर अधिवेशन की सभानेत्री पद पर भारत कोकिला श्रीमती सरोजिनी नायडू को बैठाकर यह सिद्ध कर दिया था कि "गुणाः पूजास्थानं गुणिषु न च लिंगं न च वयः"—संस्कृति की इस उक्ति पर भारतका विश्वास है।

अ. भा. महिला सम्मेलनका यह बंबई अधिवेशन कई दृष्टियोंसे महत्वपूर्ण था। अगस्त काण्डोंके बाद देशमें व्याप्त हताशा, अवसाद एवं आकुलताके वातावरणके बीच इसका आयोजन सचमुच संयोजकों की व्यवहारिक बुद्धि एवं दूरदर्शिताका परिचायक है। यह शतप्रतिशत राजनीतिक सम्मेलन भले ही न रहा हो, किन्तु भारतीय स्वाधीनता वाहिनी की एक इकाईके रूपमें अ. भा. महिला सम्मेलनका यह अधिवेशन किसी भी राजनीतिक सम्मेलनसे महत्वमें रंचमात्र भी कम नहीं था। इसने उक्त वातावरणका तिरोधान कर आशा नव उत्साह एवं देश की स्वतंत्रताके लिए मर मिटनेका अमर सन्देश दिया।

* * *

इसने नारी जातिको बताया कि जब तक देश साम्राज्यवादी जुए के नीचे पड़ा रहेगा, तब तक किसी भी प्रकार का उद्धार और उन्नति कदापि संभव नहीं है। वस्तुतः इस अधिवेशन ने एक यथार्थवादी दृष्टिकोण से देश की समस्त समस्याओं का विवेचन किया और समाधान भी बताया। दूसरी महत्व की बात है श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी विदुषी एवं यथार्थवादिनी महिला द्वारा अधिवेशन का सभानेतृत्व किया जाना। सम्मेलन ने कमला जीको अध्यक्षपद के लिए निर्वाचित कर अपने महान कार्य को एक कुशल, सुलझे हुए मस्तिष्क, अविराम गति से परिश्रम करनेवाले और किसी भी सत्ता के सामने शिर न झुकाने वाले व्यक्ति के सिपुर्द किया है। भारत को जिन थोड़ीसी अर्वाचीन विदुषी महिलाओं के लिए गर्व है, उनमें श्रीमती कमला देवी भी एक हैं। वह असाधारण विदुषी, उत्कट देशभक्त, यथार्थवादिनी, अद्वितीय साहसी और सब प्रकार के अत्याचारों एवं अन्यायोंकी प्रबल विरोधिनी हैं। उनकी राजनीति में परीक्षण, समझौते और अनुनय विनय का कोई स्थान नहीं। साम्राज्यवादी पूंजीवादी कभी शोषित मानवता के प्रति न्याय कर सकते हैं इस पर उनका अणुमात्र भी विश्वास नहीं है। वह साम्राज्यवाद के ध्वंस हुए बिना मानव के लिए सुख एवं शांति की सांस लेना असंभव समझती हैं। सर्वोपरि साम्राज्यवाद के स्थान में पूंजीवाद का प्रतिष्ठित होना वह अवांछनीय समझती हैं। वह स्पष्ट कहती हैं कि "सभी शोषक अवांछनीय हैं। चाहे वे काले, सफेद या भूरेमेंसे किसी भी रंगके क्यों न हो।" दूसरे शब्दोंमें वह वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाका विनाश एवं एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था चाहती हैं—जिसमें मनुष्य द्वारा मनुष्यका शोषण न हो, सबको समान रूपसे अपने जीवनका विकास करनेका मौका मिले, और स्त्री पुरुषकी समान मर्यादा हो। नारी स्वातन्त्र्यके विषयमें उनके स्पष्ट विचार हैं। वह स्त्रियोंके लिए पुरुषोंके जैसे अधिकार चाहती हैं—न अधिक और न कम। वह स्वभावतः दुर्धर्ष लड़ाकू हैं। कोई कारण दिखाई भर पड़ जाय वह तुरंत लड़नेके लिए उद्यत हो जायंगी। जब २ भारतमाता की पुकार हुई, तब तब वह अविलंब आगे आयीं और अपने बलिदान एवं त्याग से देशवासियों के हृदय में अपने लिए अच्छा स्थान बना लिया। ऐसी अध्यक्षा पाकर अ. भा. महिला सम्मेलन निस्संदेह अपने ध्येयके मार्ग में अबाध रूप से अग्रसर होगा।

* * *

श्रीमती कमलादेवी ने अध्यक्षा पद से जो भाषण दिया, वह विचारों की स्पष्टता, यथार्थवादिता, संयत शैली, और रचनात्मक सुझावोंकी दृष्टि से सुंदर, विचारोत्तेजक और सारगर्भित है। उन्होंने प्रत्येक प्रश्न की तह तक जाकर वहां निहित कारणों का अवगाहन किया है और अपनी स्वभाव–सुलभ–मुंहफटता के साथ उन्हें सब के सामने रखा है। उन्होंने अपने लंबे भाषण में महिला आन्दोलन का विशद विवेचन करते हुए कहा हैः "नारी आन्दोलन का उद्देश्य पुरुषों से संघर्ष करना नहीं है। यह मूलतः एक सामाजिक आन्दोलन है और हमारा उद्देश्य पुरुषों में, केवल नारी जाति का आदर और सम्मान करने की भावना पैदा करना है। गणतंत्र विरोधी तत्वों तथा अधिकार न देने की नीतिको दूर करना ही इस आन्दोलन का उद्देश्य है। स्त्रियों को भी पुरुषों की तरह अधिकार मिलने चाहिए। पुरुष के स्वभाव को महिलाओं की अयोग्यता के लिए दोषी ठहराना और महिलाओंके आन्दोलन को नर विरोधी स्वरूप देना ठीक नहीं। समाज का स्वरूप ही गलत है एवं उसी को सुधारने की जरूरत है।" परिस्थिति का इससे अच्छा विश्लेषण हो नहीं सकता। उन्होंने नारी जाति की अधोगति का मूल कारण बता दिया और वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में सुधार की अनिवार्यता भी प्रकट की। जहां तक भारत का सम्बन्ध है, अधिकारों के लिए स्त्री पुरुष में संघर्ष होने का कोई प्रश्न ही नहीं है। हमारे यहां नारी को पुरुष का आधा अंग माना गया है और तदनुसार उसके महत्व और उपादेयता की कभी उपेक्षा नहीं की गयी। वैदिक युग में स्त्रियां सब प्रकार से पुरुषों के समान थीं। आज जिस वेद को संसार के बड़े बड़े विद्वान अति सम्मान के साथ पढ़ते हैं, उसके अनेक सूक्तों की रचना महिलाओं ने की थी। स्त्रियों के सहयोग बिना कोई भी यज्ञ एवं अनुष्ठान पूर्ण नहीं समझा जाता था। उस युग की महिलाएं शिक्षा, सभ्यता, और संस्कृति के शिखर पर पहुंची हुई थीं। महाभारत और रामायण काल में भी समाज में महिलाओं का वैसा ही मान रहा। वे सब प्रकार से पुरुषों के समान थीं।

हम मानते हैं, इसके बाद के युगों में महिलाओंके वे अधिकार न रहे, किन्तु फिर भी उनकी मर्यादामें कमी नहीं हुई। इधर कई शताब्दियोंसे अवश्य उनकी स्थिति बिगड़ती रही है, जिसे ठीक करनेके लिए उन्हें पश्चिम के नारी आन्दोलनके आदर्शपर इस देशमें भी नारी आन्दोलनका श्रीगणेश करना पड़ा। पुराणवादियोंको छोड़कर हमारे देश के सभी व्यक्ति नारी को पूर्ण स्वतंत्रता देनेको तैयार है। नारी आन्दोलनके मार्गमें रोड़े न अटकाये जानेकी पृष्ठभूमि में हमारी संस्कृति, हमारा यथार्थवादी दृष्टिकोण, और नारी जाति का महत्व समझने की हमारी प्रवृत्ति है। जिस ढंगसे नारी आन्दोलन का संचालन हो रहा है, उससे हमें पूरी आशा दीख पड़ती है कि पुरुषोंमें नारी जातिका आदर और समान करनेकी भावना पैदा होगी। किन्तु इसीसे वास्तविक प्रश्न हल नहीं हो सकेगा। इसके लिए आवश्यक है—नारी जाति की आर्थिक स्वतंत्रता और यह आर्थिक स्वतंत्रता तब तक नहीं प्राप्त हो सकती, जब तक कि वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में आमूल परिवर्तन नहीं होगा। जब नारी स्वावलंबी हो जायगी, अपने जीवन व्यय के लिए पुरुष पर निर्भर न रहेगी और कन्धे से कन्धा भिड़ाकर जीवन के सभी क्षेत्रों में काम करने लगेगी, तो पुरुष हर्गिज उसकी उपेक्षा नहीं कर सकेगा और न उसे अपनी यौन वासना की तृप्ति का साधन एवं बच्चे पैदा करने की मशीन समझने की हिमाकत कर सकेगा। उसे तो स्त्री को अपना साथी मानना होगा और सभी अधिकार प्रदान करने होंगे। आर्थिक व्यवस्था ही समाज के भाव, विचार और चिन्ता धारा का आदि—स्रोत है। आदिम युग की समाज व्यवस्था में नारी और पुरुष दोनों ही धनोत्पादन करते थे। इस लिए समाज में नारी को गौरवपूर्ण स्थान मिला हुआ था। बाद में समाज में अर्थोपार्जन के क्षेत्र से ज्यों ज्यों नारी दूर हटती गयी, त्यों त्यों उसकी स्वाधीनता का क्षेत्र संकुचित होता गया और अंत में उसे अन्तःपुर में एक कैदी का जैसा जीवन बिताना पड़ा। इस गुलामी में उसकी स्वाधीनता की भावना मिट गयी और वह अपने को पुरुष की दासी समझने में गौरव मानने लगी, किन्तु अन्य देशों के नारी स्वातन्त्र्य की लहर ने हिन्द महासागर में प्रवेश कर उसे जगाया और उसकी भ्रांत धारणा को मिटाया।

* * *

अपने अधिकारों के लिए ही आन्दोलन कर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान लेना उन्हें अभीष्ट नहीं है। तभी वह अपनी ओजस्वी वाणी में कहती हैं कि "यद्यपि सम्मेलन में विभिन्न विचारों की महिलाएं शामिल हैं, तो भी हम सब का उद्देश्य विभिन्न मार्गों पर चलकर देश को स्वाधीन करने का प्रयास करना अवश्य है। अगर हम देश की स्वाधीनता के लक्ष्य को आँखों से ओझल करेंगी तो वह हमारे उत्थान एवं उत्कर्ष के मूलभूत उद्देश्य का नकारात्मक पहलू समझा

संपादकीय

जायगा। स्वाधीनता के अपने लक्ष्य को हम कदापि भुला नहीं सकते। एक पराधीन देश के लोगों के लिए राजनीति तो जीवन की सांस है। इस अनुभूति और भावना को मानने से इन्कार करना जीवन के अस्तित्व को ही मिटा देने के समान है।"

आपकी इस विचार धारामें यथार्थता की छाप लगी है। जब तक देश गुलाम है, न पुरुषों की उन्नति हो सकती है और न महिलाओं की। अस्तु नारी स्वातन्त्र्य के प्रश्न को देश की स्वाधीनता से जोड़कर उन्होंने अपने गंभीर राजनीतिक ज्ञान का परिचय दिया है और योग्यतापूर्वक नारी स्वातन्त्र्य आन्दोलन को देश के स्वातन्त्र्य आन्दोलन की एक इकाई सिद्ध किया है। वर्तमान युद्ध और भीषण तबाही का उल्लेख करते हुए उन्होंने ठीक ही कहा है कि "आज हम देख रही हैं कि संसार की महान शक्तियां, मानव जाति को अधिकाधिक स्वाधीनता देने और सुखी एवं समृद्धशाली बनानेका दावा करके पागलों की तरह जूझ रही हैं, किन्तु यह दावा करती हुई वे लड़ाकू ताकतें इस शर्म व हयाको तनिक भी महसूस नहीं करतीं कि जिन सिद्धान्तों के नाम पर वे लड़ रही हैं, उन्हीं सिद्धांतों से वे करोड़ों आदमियों को स्वयं वंचित किये हुए हैं और उनपर अपनी हुकूमत कायम रखकर निरन्तर शोषणकर रही हैं। जबतक ग्लैंड हिन्दुस्थानको अपने राजनीतिक एवं र्थिक बंधनमें जकडे रहेगा, तबतक मानव जाति के प्रति मित्र राष्ट्रों का दावा सफेद झूठ साबित होता रहेगा। इसी तरह जबतक साम्राज्यवाद और उपनिवेशोंका शोषण करनेकी प्रणाली जारीं रहेगी, तबतक स्थायी शांति असंभव है।" उनके इन विचारोंपर टीका करने की आवश्यकता नहीं हैं। वे स्फटिक के समान बिल्कुल स्पष्ट हैं।

* * *

अपने भाषण के अंतमें श्रीमती कमलादेवीने निम्नलिखित रचनात्मक कार्यक्रम पेश किया. (१) सामाजिक कार्य कार्त्रियों की शिक्षाके लिए एक शिविर खोला जाय (२) नर्सिंगका काम करनेके लिए महिलाओंको काफी संख्यामे भर्ती किया जाय (३) शिशु मंगल केन्द्र और प्रसूति गृह स्थापित करनेके लिये दो या पांच वर्षीय एक योजना बनायी जाय (४) प्रत्येक शाखामें एक व्यक्तिको महिलाओं पर होनेवाले अत्याचारोंके संबंधमें पूर्ण विवरण एकत्र करनेका भार सौंपा जाय (५) हाथकी कारीगरीको प्रोत्साहन देना और शिक्षण वर्ग खोलना। (६) छोटे बच्चोंको दूध दिये जानेके लिए देशव्यापी आन्दोलन किया जाय। इसके लिए "बच्चोंके लिए दूध सप्ताह" या "अ. भा. दूध दिवस" का आयोजन किया जाय (७) महिला कार्यकार्त्रियों को प्रोत्साहन देने के लिए पोस्टरों, सिनेमा स्लाइड्स आदि द्वारा प्रचार (८) महिला कलाकारों और लेखकों को मान्यता दिलाने के लिए आन्दोलन। कहना न होगा कि यह रचनात्मक कार्यक्रम महिला सम्मेलन की नींव सुदृढ़ करने और उसे लोकप्रिय बनाने में तीर की तरह काम करेगा। आशा है, सम्मेलन गंभीरता पूर्वक इस कार्यक्रम को व्यवहारिक रूप देगा और श्रीमती कमलादेवी के योग्य नेतृत्व में अपने लक्ष्य की दिशा में सफलतापूर्वक आगे बढ़ेगा।

गुलामों के लिये राजनीति ही जीवनकी साँस है

नारी आन्दोलन स्त्री-पुरुष का संघर्ष नहीं

महिला सम्मेलनकी अध्यक्षाका भाषण

अखिल भारतीय महिला-परिषद का १७ वां वार्षिक अधिवेशन सेण्डहर्स्ट रोड बम्बई, स्थित वनिता विश्राम गार्डनमें, अधिवेशन के लिये बनाये गये एक विशाल मण्डप में ७ अप्रैल की शाम को ५॥ बजे से शुरु हुआ।

स्वागत गान के बाद परिषदकी पूर्व अध्यक्षा श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित ने नव अध्यक्षा श्रीमती कमलादेवी चटोपाध्याय को सभानेत्री का आसन ग्रहण करने के लिए आग्रह करते हुए कहा:—अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए आज महिला परिषद अपने १७ वर्ष पूर्ण कर रही है। हमारे देश में स्त्रियों की उन्नतिमें मनुष्यों ने अड़चन न डाली। खुशी की बात है कि महिलाओं को अपनी स्वतन्त्रताके लिये पुरुषों से लड़ाई न लड़नी पड़ी। हमारे देशमें आज बंगाल की स्थिति बड़ी खतरनाक है। वहां अ० भा० महिला परिषदने अपना कार्य शुरू कर दिया है। श्रीमती कस्तूरबा गांधी की मृत्युसे भारत के घर-घरमें निराशा छा गई है। इस परिषद पर भी इसका बहुत असर पड़ा है। प्रत्येक भारतीय एक-एक ईंट उनके स्मारक में लगाने का प्रयत्न करेगा। आजसे परिषद की बागडोर श्रीमती कमलादेवी को देने का निश्चय किया गया है। लम्बी मियाद के बाद वे जेल से छुटकर हमारे बीच आयी हैं। विदेशों में भी श्रीमती कमलादेवी ने अ० भा० महिला परिषद के लिये बहुत कुछ किया है।

हर्षध्वनि के बीच श्रीमती कमलादेवी ने सभानेत्री पद को ग्रहण किया और निम्न भाषण दिया:—

"यद्यपि महिलाओंका आन्दोलन काफी प्रगतिशील और विकसित हो चुका है, किन्तु उनके मामले और पक्षके सम्बन्धमें मैं फिरसे कहना चाहती हूं, क्योंकि इसके स्वरूपके सम्बन्धमें पुरुषों और कुछ महिलाओंमें भी गलत धारणाएं हैं। महिलाओंका आन्दोलन सामाजिक आन्दोलन है और समाजको आर्थिक अवस्थाओंके साथ ही साथ अन्य दूसरे परिवर्तनशील प्रभावोंके अनुसार स्वरूप ग्रहण करना आवश्यक है, ताकि समन्वय के मार्गपर जो विरोधी तत्व हैं, वे कमसे कम हो जायं। यह स्त्री–पुरुष सम्बन्धी संघर्ष नहीं है, जैसा कि बहुतसे लोग विश्वास करते है। गणतन्त्र–विरोधी तत्वों तथा अधिकार न देनेकी नीतिको दूर करना ही इस आन्दोलनका उद्देश्य है। स्त्रियोंको भी पुरुषोंकी तरह उत्तराधिकार मिलने चाहिए। पुरुषके स्वभावको महिलाओंकी अयोग्यताके लिए दोषी ठहराना और महिलाओंके आन्दोलनको नर–विरोधी स्वरूप देना ठीक नहीं। समाजका स्वरूप ही गलत है एवं उसी को सुधारनेकी आवश्यकता है। अतः पुरुषोंसे लड़ना महिलाओंके आन्दोलनका उद्देश्य नहीं है। आन्दोलनका उद्देश्य तो महिलाओंमें छिपी हुई योग्यताओंको प्रोत्साहित कर पुरुषोंके प्रति सम्मान प्रकट करना है। हम महिलाको सामाजिक और आर्थिक तत्वके रूपमें प्राणी स्वीकार करना पड़ेगा। गृहणीका कार्य महान है, महिलाएं श्रम-शक्तिका उत्पादन करती हैं। इनका कार्य विस्तृत, अलौकिक और महत्वपूर्ण है। उनके कार्यका मूल्य इसीलिए नहीं आंका जाता, क्योंकि वे धन नहीं लातीं।"

भारतका विदेशियों द्वारा शोषण

महिलाओंकी प्रवृत्तियों आदि पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए श्रीमती कमलादेवीने देशकी दयनीय खाद्य-स्थिति, क्षुधा की ज्वाला और दुरवस्थापर प्रकाश डालते हुए कहा:—जबतक देशका आर्थिक शोषण विदेशी पूंजी के द्वारा होता रहेगा, तबतक इस बहुलता की भूमि में भूख का दौरा रहेगा। राष्ट्रीय सरकार ही सावधानीपूर्वक देश की सामग्री और स्रोतों का उपयोग कर स्थायी अकालों को दूर करने का प्रयत्न कर सकेगी। दुर्भिक्ष में ज्यादातर बच्चोंको ही कष्ट सहन करने पड़ते हैं। असल में उन्हें ही दूध मिलना चाहिए; किन्तु हमारे देश में जो पैसे देता है, उसे ही दूध मिलता है। इस स्थिति को हमें समयपर सुधार लेना चाहिए।

खदानों में स्त्रियां के काम करने की मंजूरी दी जाने की निन्दा करते हुए उन्होंने कहा कि गरीबी से मनुष्य कुछ भी खतरा उठाने को तैयार हो जाता है। हिन्दू-कानून के विधान की पुनर्रचना के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि समाज का स्वरूप और सिद्धांत भी कालान्तर के अनुसार बदला करते हैं। श्रीमती चट्टोपाध्याय ने आगे कहा:—

"महिला-परिषद के राजनीतिक स्वरूप के सम्बन्धमें कुछ शिकायतें हो रही हैं। गुलाम देश की जनता के लिए राजनीति ही जीवन की सांस है। इस प्रेरणा का खण्डन करना जीवन के अधिकार को अस्वीकृत करना है। हम भले ही गुलामी की जंजीरों से बंधे रहें, किन्तु हम स्वप्नों के संसार में, आजादी का विचार करते हुए और उसकी आकांक्षा करते हुए जीवित रहना चाहते है। विभिन्न पार्टियों और मतोंकी सदस्याएं होते हुए भी संस्था के रूप में हम सब देश की आजादी की कामना करती हैं। युद्ध और शांति ने बताया है कि विश्व को आजाद और गुलाम भागों में विभाजित नहीं किया जा सकता। किसी देश की जनता, शस्त्रों के बलपर दूसरे देश की जनता पर शासन करे, और चाहे इस के लिए कोई भी खुलासा क्यों न दे, तो आतंक और हिंसाका प्रसार होता है और मानवीय, भौतिक तथा मानसिक अवनति होती है। पारिवारिक स्वाधीनता से सामाजिक स्वाधीनता और राष्ट्रीय स्वाधीनता तथा अन्तमें विश्व-बन्धुत्व की भावनाएं प्राप्त होती हैं। सशस्त्र विजयोंसे शांति स्थापित नहीं हो सकती। इसी तरह जबतक साम्राज्यवाद और उपनिवेशोंका शोषण करनेकी प्रणाली जारी रहेगी तबतक स्थायी शांति असम्भव है। जिन महान सिद्धान्तोंके लिए बड़े-बड़े राष्ट्र जब लड़नेका दम भरते हैं और दूसरी ओर उन्हीं सिद्धान्तोंको करोड़ों जनता पर लागू करनेसे हिचकते हैं, तब बड़ी निराशा होती है। हरदम 'भारतका क्या होगा' यही प्रश्न कानोंमें गूंजा करता है। भारतपर ब्रिटेन अपना पंजा फैलाये हुए उसको राजनीतिक और आर्थिक दृष्टिसे गुलाम बनाये हुए है; अतः मित्रराष्ट्रों की बातें एक भयङ्कर झूठ मालूम होती हैं। भारत के मामले में ही मित्रराष्ट्रों की खरी परीक्षा हो रही है।"

बंगाल दुर्भिक्ष-पीड़ितों के प्रति समवेदना प्रकट करते हुए उन्होंने कहा—"आज वातावरण उदासी से क्षुब्ध है, आकाशमें वेदना के स्वर गूंज रहे हैं और मानव की नागरिक स्वाधीनतापर लगातार प्रहारपर प्रहार हो रहे हैं और अनिष्ट की छाया मानवके भव्य प्रकाशको ढक रही है तथा लोकमतके अनादरके साथ स्वाभाविक आचार-व्यवहार का असम्मान किया जा रहा है। हमारे देश के लोकप्रिय और राष्ट्रीय नेताओं को नजरबन्द रखकर अशान्ति और दुरवस्थाको दूर करने की उम्मीद करना ही वृथा है। इसी दुरवस्था से हममें बल आना चाहिए। और हमें अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिए। केवल उत्पादन से देशकी दशा सुधारने की बात करनेवालों से लिए इतना ही कहना काफी है कि इस से देशकी समस्याएं हल न होंगी। उत्पादन का आधार, उसका वितरण और आर्थिक स्वरूप का नियन्त्रण आवश्यक है। केवल कुछ को लाभ पहुंचे, ऐसी प्रणाली कभी भी ठीक नहीं। हमें तो समाज को ऊंचे उठाना है, उसको आजादी और समानताको प्राप्त करना है।"

पन्द्रह वर्षीय आर्थिक योजना पर अंतर्दृष्टि

लेखक

एक अर्थशास्त्री

विद्वान लेखकने उक्त योजनाका विशद विवेचन करते हुए यह सिद्ध किया है कि इससे देशके लोगोंकी आर्थिक हालतमें कतई सुधार न होगा और पहले की तरह ही मुट्ठी भर लोग राष्ट्रीय आयका बहुत बडा भाग हजम करते रहेंगे। आपने राष्ट्रीय सम्पदाके वितरणके प्रश्न पर कई व्यावहारिक सुझाव भी पेश किये हैं। हम अपने पाठकोंकी जानकारीके लिए यथार्थतापूर्ण दृष्टिकोणसे लिखा गया यह लेख प्रकाशित कर रहे हैं। **—सम्पादक**

इधर कुछ समयसे आर्थिक योजनाओंकी काफी धूम मची हुई है। विभिन्न क्षेत्रोंने युद्धोत्तर कालके लिए देशके आर्थिक विकासके लिए बहुत-सी योजनाएं प्रस्तुत की हैं। यह देशवासियोंका काम है कि वह यह निर्णय करें कि देश हितकी दृष्टिसे कौन-सी योजनाएं अच्छी हैं और इसी कसौटी पर उनमेंसे चुनाव करें। किंतु चुनाव करनेके लिये इस बातकी जानकारी होनी आवश्यक है कि आर्थिक योजना क्या है और उसमें अन्तर्हित विचारोंको कैसे व्यावहारिक रूप दिया जाय, जिससे कि वास्तवमें लोगोंको लाभ पहुंचे। विभिन्न देशोंकी आर्थिक योजनाओंका इतिहास हमारे सामने है और उसके अनुशीलनके बलपर हम यह कह सकते हैं कि 'आर्थिक योजना' शब्दको ही वांछनीय समझकर उसकी उपादेयता पर विश्वास कर लेना हमारे लिए घातक होगा। रूसमें भी आर्थिक योजना कार्यान्वित की गयी थी और नाजी जर्मनीमें भी। किन्तु इन दो प्रकारकी योजनाओंके परिणाममें जमीन आसमानका अन्तर हुआ। जब कि रूसकी आर्थिक योजनाने रूसियोंके रहन सहनका स्टैण्डर्ड ऊंचा किया और एक नयी सभ्यताको जन्म दिया, जर्मनीकी आर्थिक योजनाके फलस्वरूप वर्तमान महायुद्ध छिड़ा। अस्तु जब हम भारत के लिये आर्थिक योजनाके विषयमें चर्चा छेड़ें तो इस योजनाका स्पष्ट उद्देश्य अपनी दृष्टिके सामने रखना चाहिए।

योजनाका उद्देश्य समझमें आजानेके बाद सारी योजनाको समझना आसान हो जाता है। उद्देश्य समझनेके लिए अर्थ शास्त्रियोंके शब्द जालमें पड़ना बेकार है। योजनाको मन्थन कर हमें स्वयं इसका उद्घाटन करना चाहिए। इस प्रश्नपर दो मत नहीं हो सकते कि आर्थिक योजनाका उद्देश्य करोड़ों देशवासियोंके रहन सहनकी स्थितिमें सुधार करना है। जो भी योजना आप उठायेंगे, उसमें आपका यह वक्तव्य अवश्य मिलेगा कि योजनाका उद्देश्य लोगोंके रहन सहनका स्टैण्डर्ड ऊंचा करना है। इस मंतव्यको देखकर युद्धोत्तर कालके लिए आर्थिक योजना चुनना अत्यधिक कठिन और जटिल है। सभी योजनाओंका एक सा उद्देश्य देख पड़ता है इस लिए हम चाहे जो योजना पसंद करें, इस प्रकार का निष्कर्ष सर्वथा गलत है। मार्केकी बात, जिसे हमें अनुभव करना चाहिए, उद्देश्य विषयक वक्तव्य नहीं है बल्कि उसे कार्यरूपमें परिणत करनेका रास्ता है, जो स्पष्ट रूपसे निर्दिष्ट होना चाहिए। प्रस्तुत लेखमें इसी दृष्टिकोणसे आर्थिक योजनाके एक पहलूका विवेचन करनेका प्रयास किया जायगा।

योजनाकार कहते हैं कि "देशके आर्थिक जीवनके उत्थानकी योजनाको कार्यरूपमें परिणत करनेसे देशमें सम्पदाके उत्पादनमें वृद्धि होगी। हमारी वास्तविक समस्या, जो निर्धनता की समस्या है, तब तक हल नहीं हो सकती जब तक कि देशमें अधिकाधिक सम्पदाका उत्पादन न हो। देशमें सम्प्रति इतना कम उत्पादन हो रहा है कि यदि हम समवितरण की पद्धति जारी कर दें तो भी लोग वैसेही गरीब रहेंगे जैसे कि इस समय हैं। इसलिए यदि हम गरीबीसे अपना पिण्ड छुड़ाना चाहते हैं, तो हमें अधिकाधिक उत्पादनके लिए प्रयत्न करना चाहिए। गरीबीका समान वितरण नहीं किया जा सकता।"

उक्त दलील वजनसे खाली नहीं है। यह सच है कि यदि देशमें सम्पदाका उत्पादन कई गुना नहीं बढ़ाया जायगा, तो हम अपनी गरीबीका सवाल नहीं हल कर सकते। किन्तु इसी स्टेज पर एक बिल्कुल वाहियात बात कही जाती है। हमारे देशमें ऐसे प्रभावशाली और प्रसिद्ध व्यक्ति हैं, जो यह दलील देते हुए देखे जाते हैं कि 'नयी सम्पदाके वितरण का प्रश्न जिसका आर्थिक योजनाके कार्यान्वित होने पर पैदा होना बिल्कुल निश्चित है, अधिक उत्पादन करनेके प्रश्नसे सर्वथा पृथक है। वे कहते हैं कि पहले हम उत्पादन बढ़ायें तब हम उसके वितरणके संबंधमें सोचेंगे। उत्पादन बढ़ानेकी योजना बना लेनेके बाद ही वितरणकी योजना बनायी जा सकती है। जब हम उत्पादन बढ़ानेका कार्य आरंभ कर देंगे, तो उत्पादित सम्पदाके वितरणकी योजना तैयार करना हमारे लिए संभव हो सकेगा। जो लोग उत्पादनका प्रश्न हल करनेके पूर्व ही वितरणका प्रश्न उठाते हैं, वे दालभातमें मूसरचंदकी कहावत चरितार्थ करते हैं। हमें इस प्रकारके गलत कामको पास नहीं फटकने देना चाहिए और जो काम पहले करनेका है, उसे पहले ही करना चाहिए।' देशके आठ उद्योगपतियोंने अपनी आर्थिक योजना (जो बंबई योजनाके नामसे प्रसिद्ध है) सम्बलित जो पुस्तिका प्रकाशित की है, उसमें उन्होंने उत्पादन बढ़ानेके प्रश्नका विवेचन किया है और शीघ्रही वितरण विषयक दूसरी योजना देश वासियोंके समक्ष उपस्थित करनेका वादा किया है। हम नहीं जानते कि यह प्रस्तावित योजना कभी प्रकाशित भी होगी या नहीं, क्योंकि योजनाकारोंमेंसे एक श्री. जी. डी. बिडलाने फेडेरेटेड चेम्बर्स आफ कामर्स ऐण्ड इंडस्ट्रीकी मीटिंगमें योजना पर भाषण देते हुए कहा था कि आर्थिक योजनामें ही उचित वितरण की योजना निहित है। वह योजना पर की गयी इस आलोचनाका कि इससे धनी और धनी होंगे एवं गरीब और गरीब होंगे, उत्तर देनेकी कोशिश कर रहे थे। इस आलोचना और श्री. बिडलजीके उत्तरमें निहित बातको समझ लेना आवश्यक है। बिड़लाजी यह बात सचमुच ठीक कहते हैं कि स्वतः आर्थिक योजनामें वितरणकी योजना निहित है। उचित वितवरण क्या है इसपर हमारे करोड़पति, उद्योगपतियों एवं हमारे अर्द्धनग्न और अधभुखे करोड़ों लोगोंका बीच मतभेद हो सकता है।

वितरणकी योजना आर्थिक योजनाहीमें कैसे निहित है? यथार्थमें अर्थ शास्त्रका कोई भी साधारण तौर पर तेज विद्यार्थी यह जानता है या उसे जानना चाहिए कि वितरणका प्रश्न उत्पादनके प्रश्नके साथ घनिष्ट रूपसे संश्लिष्ट है। आप हमें उत्पादन बढ़ानेका प्रश्न हल करनेका रास्ता बता सकते हैं और वैसेही हम आपको वितरणका प्रश्न ठीकसे हल करनेका रास्ता बता सकते हैं। इस अर्थमें श्री बिड़लाजी जो कुछ कहते हैं, वह बिल्कुल ठीक है। योजना हमें बताती है कि उत्पादनका प्रश्न कैसे हल किया जायेगा और यह वितरणका प्रश्न हल किये जानेके मार्गका इंगित करती है। इस प्रश्नकी समीक्षामें उतरने के पूर्व, मैं वास्तविक तथ्यको और भी स्पष्ट करना चाहता हूँ।

आज भारतकी राष्ट्रीय आय (लड़ाईके पहले) २२०० करोड़ है। इसका अर्थ यह है कि देशभरमें समूचे सालमें तैयार हुए मालका मूल्य (लड़ाईसे पहलेके मूल्यके आधार पर) २२०० करोड़ रु. है। यदि इस रकमको देशवासियोंमें वितरित किया जाय तो प्रत्येक व्यक्ति की सालाना आमदनी ६५ रु. होती है। योजनाकार कहते हैं कि योजनाके १५ वर्षोंके बीच लोगोंकी यह आमदनी बढ़कर १३५ रु. सालाना हो जायगी। किन्तु इससे हमें झट यह निष्कर्ष न निकाल लेना चाहिए कि इस क्रमविकासके फलस्वरूप हममें से प्रत्येक की आय दुगुनी हो जायगी। वस्तुतः प्रत्येक व्यक्तिकी सालाना आमदनी का यह हिसाब अर्थ शास्त्रकी निरर्थक धारणा है। यह लोगोंके रहनसहनकी परिस्थितिके सम्बन्धमें हमें कुछ भी नहीं बताता। इसे समझना कोई कठिन नहीं है। २२०० करोड़ रु. की इस आयका आज वितरण कैसे होता है? आंकड़े, जो कि मोटे तौर पर निकटतम हैं, सारी बातें स्वयं बताते हैं। इस आयका एक तिहाई हमारी जनसंख्याके एक प्रति लोगोंके पास, आमदनीका और एक तिहाई ३४ प्र. श. लोगोंके पास और बाकीका एक तिहाई ६५ प्र. श. लोगोंमें के पास जाता है। अब यदि हम औसत निकालें, तो पता चलेगा कि ४० लाख व्यक्तियोंकी वार्षिक आमदनी १८५०, रु. लगभग १३ करोड़ ६० लाख व्यक्तियोंकी आय ५० रु. और २६ करोड़ व्यक्तियोंकी आय २८ रु. है। इन औसतोंके दृष्टिकोणसे यदि हम देखें, तो सारी स्थिति बिल्कुल भिन्न हो जाती है। ४० लाख व्यक्तियोंकी दैनिक आय लगभग ५ रु., १३ करोड ६० लाख व्यक्तियोंकी २ आने और २६ करोड़ व्यक्तियोंकी १ आना है। अब वितरणके प्रश्नका महत्व बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। यह तो ठीक है कि हमें उत्पादन कई गुना बढ़ाना चाहिए, किन्तु हमें यह बताया जाना चाहिए कि उत्पादित नयी सम्पदाका वितरण कैसे होगा। जबतक यह न बताया जाय, तबतक हमें यह अनुमान लगानेका कोई अधिकार नहीं है कि उत्पादनमें या राष्ट्रीय आयमें वृद्धि होनेसे भारतवासियोंके रहन सहनकी स्थितिमें सुधार होगा।

आइये, अब हम समीक्षामें कुछ आगे बढ़ें। आज जो सम्पदा पैदा की जा रही है, उसका यह असम वितरण क्यों? इस प्रश्नका उत्तर वितरणके प्रश्नकी, जिसे हमें आर्थिक योजनाके अन्तर्गत हल करना होगा, कुंजी होगी। आज सम्पदाका असम वितरण निश्चयही इस कारण नहीं हो रहा है कि थोड़ेसे व्यक्ति जनसंख्याके बाकी लोगोंको लूटनेकी स्थितिमें बैठाये जा रहे हैं। यह सही है कि यह न तो लूट है और न गबन। किन्तु देशमें एक विशिष्ट प्रकारकी आर्थिक पद्धति और सामाजिक ढांचे के अस्तित्वके कारण बिल्कुल ऐसी ही बात हो रही है। उदाहरणके लिए ब्रिटिश भारतमें किसान प्रतिवर्ष ९०० करोड़ रु. मूल्यकी सम्पदा पैदा करते हैं। थोड़ेसे जमीनदार और महाजन इसमेंसे लगभग ३५० करोड़ रु० ले जाते हैं। बाकीका एक हिस्सा व्यापारियों और मध्यम वर्गके आदमियोंके पास चला जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि गरीब किसानों के लिए जो हमारे देशकी समस्त जनसंख्या के ७० प्रतिशत हैं—केवल ४०० करोड़ रु० ही रह जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक किसान की सालाना आमदनी केवल २२ रु० होती है। ऊपर ४ रु० रोज की आमदनी करने वाले जिन ४० लाख व्यक्तियोंका उल्लेख किया गया है, वे हैं—पूंजीपति, बैंकर, व्यापारी आदि।

ये सब तथ्य अब हमें लेखके प्रारंभमें उठाये गये प्रश्नके उत्तरके निकट लाते हैं। आज देशमें उत्पादन इस प्रणालीसे किया जाता है कि मुट्ठीभर लोग अपनी अच्छी स्थिति और साम्पत्तिक अधिकारोंके कारण राष्ट्रीय आय का बहुत बड़ा हिस्सा हजम कर जाते हैं। बस यही कारण है कि वितरण

(शेष पृष्ठ २४ के कालम १-२ पर)

‘बंगाल हिन्दी मंडल’ का समारोह

मौलिक रचनाओं पर पुरस्कार

श्री लक्ष्मीनिवासजी बिड़लाका भाषण

हिन्दी भाषाकी सेवा करनेके ध्येयको लेकर कलकत्तेमें १९४२ में बंगाल हिन्दी मंडल की स्थापना हुई थी। गत वर्ष मंडलने मौलिक साहित्य निर्माण करानेके विचारसे पारितोषिक भेंट करके पुस्तकें लिखानेका निश्चय किया था इस योजनाके अनुसार मंडलने तीन पुरस्कार इस वर्ष दिये हैं। गत १५ अप्रैलको सन्ध्या ३॥ बजे इंडियन चेम्बर ऑफ कामर्सके हालमें माननीय जस्टिस श्री चारुचन्द्र विस्वास सी. आइ. ई. के सभापतित्वमें उक्त पुरस्कार देनेके लिए एक समारोह किया गया था। इस अवसर पर भाषण देते हुए श्री लक्ष्मी निवासजी विड़लाने कहाः—

१९४२ में कुछ मित्रोंने राष्ट्रभाषा हिन्दी की कुछ सेवा करने के विचार से “बंगाल हिन्दी मंडल” नामक संस्था की साधारण-सी रूपरेखा तैयार की थी। उसके अन्य उद्देश्यों को तो तुरन्त हाथ में नहीं लिया जा सका। किन्तु साहित्य-निर्माण करने के उद्देश्य के अनुसार एक छोटी-सी योजना तैयार कर हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकारों के पास उनकी सम्मति जानने के लिए हमने भेजी। योजना हमारी सीधी-सादी थी। यह कि हिन्दी में अच्छे महत्त्वपूर्ण विषयों पर अपने-अपने विषय के निष्णात लेखकों से सुन्दर मौलिक साहित्य तैयार कराया जाये और उन्हें आदरपूर्वक पारितोषिक दिये जायें। मंडल की ओर से एक निर्णायक-समिति नियुक्त की जाये, जिसका निर्णय मंडल तथा लेखकों दोनों को मान्य हो। लेखकों को स्वयं अथवा किसी भी प्रामाणिक प्रकाशन-संस्था से अपनी पुस्तकें प्रकाशित कराने का पूरा अधिकार रहे। विज्ञान, तुलनात्मक दर्शनशास्त्र, इतिहास, जीवनी, नाटक और संत-साहित्य पर उक्त योजना के अनुसार पुस्तकें तैयार कराने की एक छोटी-सी विज्ञप्ति मंडल ने पत्रों में प्रकाशित की।

हमारी इस योजना पर अनेक लब्धप्रतिष्ठ विद्वानोंने कुछ महत्त्वपूर्ण परामर्श दिये। श्रद्धेय डा॰ भगवानदासजी, डा॰ गोरखनाथजी आचार्य क्षितिमोहन सेन, श्री जयचंद विद्यालंकार आदि विद्वानों ने हमें खासा प्रोत्साहन दिया। दिल्ली में श्री वियोगी हरिजी के परामर्श से हरिजन-निवास में बंगाल हिन्दी मंडल का कार्य आरम्भ कर दिया गया। हरिजन-निवास के उत्साही नवयुवक श्री भगवद्दत्तजी ने मंडलके मंत्री-पद का काम योग्यता से किया और कर रहे हैं।

मंडल का प्रधान उद्देश्य बंगाल में हिन्दी का हर तरह से प्रचार और प्रसार करना है। हमारी यह तर्कसम्मत धारणा है कि बंगला में संस्कृतनिष्ठ हिन्दी ही स्वाभाविक रीति से स्थान पा सकती है। बंगला, आसामी, उड़िया, मराठी, गुजराती, तेलगु, कन्नड़, मलयाली आदि प्रांतीय भाषाएँ संस्कृत की पुत्रियाँ हैं और हिन्दी की सहोदराएँ। हिन्दीवालों के लिए जैसे बंगला का अध्ययन और अभ्यास सहज-साध्य है, वैसे ही हिन्दी भाषा का अभ्यास बंगलावालों के लिए सहज होना चाहिए। हम मानते हैं कि हिन्दी में उच्च कोटि के साहित्य का निर्माण कराया जाये तो बंगाल का शिक्षित समाज एक न एक दिन उसे अवश्य प्रेम से अपनायेगा। कालिदास का अभिज्ञान शाकुन्तल देशी भाषाभाषियों की तो बात ही क्या, विदेशी भाषाभाषियों से भी सम्मान प्राप्त कर चुका है।

श्री लक्ष्मीनिवासजी विड़ला

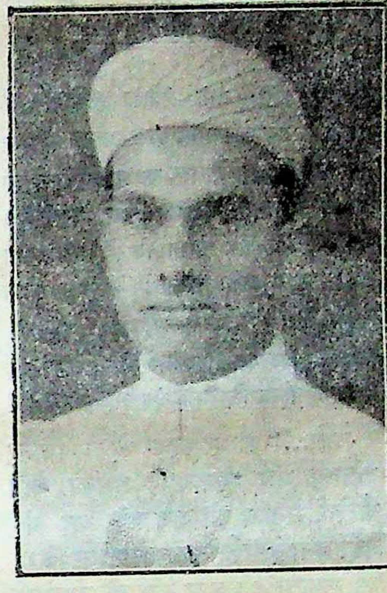

यह हर्ष की बात है कि इधर पचीस वर्ष के भीतर हिन्दी साहित्य ने खासी प्रगति की है। फिर भी अभी काम करने के लिए बहुत बड़ा क्षेत्र पड़ा है। हिन्दी साहित्य पर सम्मति देनेवाले आज दो प्रकारके आलोचक आपको मिलेंगे। कुछ लोगों की दृष्टि में हमारा हिन्दी साहित्य अब काफी संपन्न और समृद्ध हो गया है और उसपर गर्व भी किया जा सकता है। दूसरी सम्मति इससे बिल्कुल उलटी है, और वह यह कि हिन्दी का साहित्य अभी बहुत दरिद्र है, उसमें ऐसा अभी कुछ भी नहीं जिसपर हम संतोष प्रगट कर सकें। ऐसी राय बना लेनेवालों का असन्तोष बिल्कुल अकारण तो नहीं है, पर साथ ही उनके अन्दर ऐसा लगता है कि कुछ हीन भावना काम कर रही है। वे सब कुछ अंग्रेजी के मुकाबले का हिन्दी में चाहते हैं। जब ऐसा उनके देखने में नहीं आता, तो अपना घर उन्हें सूना-सूना-सा दिखने लगता है। हिन्दी ने अपने स्वभाव और प्राप्त साधनों के बल पर जैसी भी जो कुछ प्रगति की है, उसका भी उन्हे प्रायः पता नहीं रहता। पहले प्रकार के आलोचक अतिशयोक्ति से काम ले रहे हैं तो यह दूसरी प्रकार की सम्मति देनेवाले जान या अनजान में हमारे साहित्य के साथ कुछ अन्याय कर रहे हैं। हिन्दी में हम कुछ पढ़ते नहीं, पढ़ना चाहते भी नहीं. और फिर यह शिकायत भी करते रहते हैं कि हिन्दी में पढ़ने के लायक कुछ है ही नहीं! यह कहाँतक उचित है?

काशी नागरी प्रचारिणी सभा, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दुस्थानी एकेडेमी, हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय जैसी साहित्य-संस्थाओं ने अपने सीमित साधनों के बल पर जो सुन्दर काम किया है, उसपर हम अवश्य गर्व कर सकते हैं। शिकायत तो हमें खुद अपने आपकी करनी चाहिए, जो अब भी हम साहित्य-निर्माताओं को जैसा चाहिए वैसा प्रोत्साहन नहीं दे रहे हैं। नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा दिये जानेवाले अनेक पारितोषिकों, हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मंगलाप्रसाद पारितोषिक, वीरेन्द्र केशव साहित्य परिषद् के ‘देवपुरस्कार’ और हिन्दुस्थानी

(शेष पृष्ठ १३ क कालम ३–४ पर)

खाना ही हमें खाता है!

(ले.—**श्री मुरलीधरजी लोया**)

चौका उठा दिया तो क्या हुआ पूड़ी साग बनावो भूख लगी है। जल्दी करो खाली पेट नींद नहीं आवेगी, कुछ मित्रों की रेल्वे द्वारा गन्तव्य स्थान पर रात को १२ बजे पहुचने पर यह आवाज थी। बनते बनाते भोजन करत १॥ बज गया। डटकर आग्रहपूर्वक भोजन होतेही दसपांच मिनट सो गये। “यह समय खाने का नहीं सोने का है—” १२ बजे कही गयी इस मेरी आवाजको कौन सुनता। इस घटना से मैं तो चक्कर में ही पड़ गया। गरीब आदमी बेचारा २-३ दिन तक भूखा रह जाता है। सवेरे है तो शामको नहीं और शाम को है तो सवेरे नहीं। और जिन को अनुकूलता है वह तो खाते खिलातेही यह संसार यात्रा पूरी करते हैं। प्रातः उठते ही जो खाना शुरु होता है रात को बिछौने में पड़ने तक कुछ न कुछ खानेके लिये मुखरूपी चक्की चलती ही रहती है। क्या सचमुच मनुष्यजन्म खाने के लिये ही है?—जीनेके लिये खाना है या खाने के लिये जीना? जन्म के आनन्द में खाना, विवाहोत्सव में खाना, मरने के शोक में खाना, हरेक बात पर खाना ही खाना। किसीसे मिलने भेटने गये तो खाना—क्या संत महन्त, क्या सेठ साहूकार, क्या वकील बैरिस्टर क्या वैद्य डाक्टर कोइ भी खानेको “न” कहता नहीं देखा जाता। किसीने भी पूछने पर यही उत्तर मिलता है कि “आग्रह कैसे तोड़ना? दूसरोंके आग्रहसे खानाही पड़ता है। खुदका दोष छिपाते हैं और दूसरों पर डाल देते हैं। इस खानेसे कितनी तकलीफ होती है यह वह ज्यादह खानेवाला ही पूरी तौरसे जानता है।

प्रतिशत ९९ रोग ज्यादा खानेसे, अव्यवस्थित खानेसे होते हैं। देखिये—एक बड़े घर का १६–१७ वर्षका युवक बीमार पड़ा है। डाक्टर साहेब चिकित्सा कर रहे हैं। उसकी माता कहती है, डाक्टर साहेब; बच्चा कुछ खाता नहीं। इतने दिन होगये। उसको कुछ खानेको दे देवें? डाक्टर कहते हैं, माताजी! ६० वर्षमें जितना खानेवाला था उतना खाना तुमने इसको १५ वर्षमें ही खिला दिया। अब क्या खिलाना है? नहीं डाक्टरसाहेब, कुछ नहीं खाता था। इस को सवेरे उठतेही सिर्फ आधा सेर दूध जबरदस्ती पिलाती थी। १० बजे १ छोटासा बादाम का लड्डू, १ बजे भोजनमें साग, दाल, चावल, रोटी। घी तो ४ चमचा बहुत ही मुश्किल से डालती थी। दुपहर में चाय, चिवड़ा, बर्फी, फिर श्याम को भोजन में दाल, चावल, फुल्का। रात को सोते समय दूध। बस डाक्टर साहेब इतनाही खाता था यह कोई ज्यादा नहीं है। और वह जब किसी मित्र के साथ जाता तो कहीं २ दोचार मित्रों के यहाँ इसको आग्रह से थोड़ा बहुत खानाही पड़ता था। डाक्टर साहेब, अब उसे ठीक करो। डाक्टरसाहेब बोले, अम्माजी, अगर उसे ऐसे ही खिलाती रहोगी तो वह बेमौत मर जायेगा। जठराग्नी बुझ गई है।

अज्ञानवश मातायें बालकों के पेट पर भरपूर अत्याचार करती रहती हैं। उसे खाने का आदी बना देती हैं। सब शरीर बेडोल हो जाता है। रोग घेर लेते है। जिससे असमय में ही अपने प्यारे, आंखों के तारे बालक को खो बैठती हैं और अन्त में सारी उमर पछताती हैं। इतना खाते हुए भी अगर योग्य व्यायाम रहा तो कुछ हरकत नहीं। सोचो समझो और अव्यवस्थित खाना छोड़ो। मुंह बन्द रखो। सामने चीज आते ही हाथ उठता है और मुखमें डाल लेता है। इतनी आदत होगई है कि यह स्वाभाविक ही होजाता है। खाये बिना शरीर टिकेगा नहीं किन्तु खानेका भी परिमाण, है सब बातमें माप है, रोज बही खाते की शिल्क मिलती है वैसे ही खाने पीने की रोकड़ खतावणी रखनी चाहिये। और उमर का आंकड़ा मिलाना चाहिये। कितना खाया, कितना शरीर को उपयोगी हुआ कितना फिजूल गया।

पाठको! खाने के लिये दिन रात में सिर्फ दो बार ही मुख खोला जाये तो क्या बीमारी कभी पास आ सकती है?

क्या गांधीवाद और समाजवाद परस्पर विरोधी हैं ?

लेखक—**श्री. हरिश्चन्द्रजी हेड़ा**, बी. ए. एल. एल. बी.

संपत्तिपर मिल्कियत किसकी रहे तथा उसका वितरण किस प्रकार हो यह मालूम करनेके बाद संपत्ति – निर्माण किस पद्धतिसे किया जाय, संपत्ति निर्माणमें यंत्रोंका क्या स्थान रहेगा तथा ग्रामोद्योगों एवं बड़े बड़े उद्योगोंका क्या संबंध रहेगा, संक्षेपमें आर्थिक संगठन किस प्रकार रहेगा इस विषयपर–इन दोनों विचार धाराओंके मतभेदको मालूम कर लेनेपर विषयके इस पहलूकी चर्चा समाप्त होगी।

समाजवाद की यह स्पष्ट मान्यता है कि उत्पादन साधन जितने ही उन्नत होंगे उतना ही समाज सुखी होगा। वह पूंजीवादी समाज रचनाको बदलकर समाजवादी समाज रचनाका निर्माण ही इसलिए करना चाहता है कि इन उत्पादक साधनोंका और अधिक विकास हो सके। मार्क्सके शब्दोंमें "यह संबंध (आर्थिक संबंध अथवा उत्पादक संबंध) जो उत्पादक शक्तियोंके कारण थे वह इन्हींकी (उत्पादक शक्तियोंके) जंजीरोंमें परिणत होते हैं। तब सामाजिक क्रान्तिका समय आ जाता है।"

—क्रिटिक ऑफ पोलिटिकल एकानामीकी प्रस्तावनासे पृष्ठ १२

मार्क्सके उपरोक्त विधानका विवेचन करते हुये सुप्रसिद्ध मार्क्सवादी अर्थशास्त्रज्ञ एलिऑन् टिव कहता है कि—

"वर्तमान समयमें हम इसी प्रकार एक सामाजिक क्रान्तिके समयमेंसे गुजर रहे हैं। पूंजीवादी समाजके उत्पादक संबंध उत्पादक शक्तियोंके अधिक विकासको कुंठित करनेवाली जंजीरें बन चुकी हैं। पूंजीकी सत्ताको खतम करकेही मज़दूर वर्ग इन जंजीरोंको तोड़ता है। मजदूरोंकी क्रान्ति उत्पादन शक्तियोंको पूंजीवादी बंधनोंसे मुक्त करती है तथा उन्हें असीमित उन्नतिके क्षेत्रमें प्रवेश कराती है।"

—पोलिटिकल एकनामी पृष्ठ १४

वस्तुतः समाजवादकी बुनियाद ही पूंजीवादी समाजकी कठिनाइयोंपर रखी गई है। पूंजीवादी समाजमें जो आर्थिक संकट निर्माण होते हैं उसका विवेचन हमने लेख नं. ३ में किया था। उन्हीं संकटोंसे समाजको बचाना तथा उत्पादक शक्तियोंकी बेलगाम आजादीको कायम रखना समाजवादी आर्थिक व्यवस्थाका मुख्य ध्येय है। उत्पादनके जो लक्षण लेख नं. ३ में बतलाये गये थे उसके पहले और दूसरे लक्षणको मिलाकर पढ़नेसे यह स्पष्ट होगा कि समाजवादी आर्थिक व्यवस्थाका ध्येय उत्पादक साधनोंका अधिकसे अधिक विकास कर कमसे कम समयमें अधिकसे अधिक उत्पादन करना है। यही कारण है कि जहांतक आर्थिक संकटका संबंध है समाजवाद निम्न लिखित तत्त्वोंपर जोर देता है।

(१) यंत्रोंका अर्थात उत्पादन साधनोंका अधिकसे अधिक उपयोग करना।

(२) इसके परिणामस्वरूप आर्थिक संगठनमें अधिकसे अधिक केंद्रीयकरणको आने देना।

(३) यंत्रोंका विकास अधिकसे अधिक कर संपूर्ण मानव जातिसे कमसे कम श्रम लेकर अधिकसे अधिक फुरसत देना।

११—आर्थिक संगठन

इसके विपरित सर्वोदयकी मान्यताके अनुसार यंत्रोंके उपयोग पर आवश्यक बंधन लगाये जाते हैं। सर्वोदय केन्द्रीकरणकी जगह अधिकसे अधिक विकेंद्रीकरण करना चाहता है। यह इन दोनों विचारधाराओंमें मूलभूत मतभेद है अतः सर्वोदय यंत्रोंपर किस हदतक बंधन लगाता है यही हम सर्व प्रथम मालूम करेंगे। पूंजीवादको लाने और इस विशाल और भयंकर प्रमाणमें सारे राष्ट्रोंमें शोषण होनेका कारण यही यंत्र हैं, इसे सर्वोदय नहीं भूलता। परन्तु इसके बावजूद वह यंत्रोंका निर्मूलन नहीं चाहता। वह चाहता है कि यंत्र अपने योग्य स्थानपर जहां वह शोषण न कर सकें तथा मानव जातिको किसी प्रकार नुकसान न कर सकें–रख दिये जाये।

"चरखेका आन्दोलन एक संगठित प्रयत्न है, जो यंत्रोंको अनियंत्रितता तथा शोषणकी स्थितिमेंसे निकाल कर उसको उचित स्थितिमें रखता है। अतः मेरी योजनाके अन्तर्गत यंत्रोंके संचालक लोग अपने या अपने राष्ट्रसंबंधी ही विचार न कर संपूर्ण मानव जातिका विचार करेंगे।

--"लंकाशायरके लोग भारत तथा अन्य राष्ट्रोंका शोषण करना बंद कर देंगे। इसके विपरीत वह ऐसे साधनोंकी खोज करेंगे जिससे हिंदुस्तान अपने देहातोंमें अपनी कपाससे कपड़ा बना सके। इसी प्रकार मेरी योजनाके अन्तर्गत अपने अन्वेषण चातुर्यसे दूसरी जातियोंका शोषण कर खुद अमीर बननेकी कोशिश नहीं करेंगे।" –गांधीजी 'यंग इंडिया'

१७-९-२५

श्रीरामचन्द्रके तीन प्रश्न और गांधीजीके उत्तर इस विषयको और भी स्पष्ट करते हैं।

प्र–१ आप यंत्रोंके सर्वथा विरुद्ध हैं न ?

उत्तर–"कैसे हो सकता है। जब मैं समझता हूँ कि मरा शरीर ही एक बड़ा नाजुक यंत्र है तब यंत्रोंके खिलाफ होकर मैं कहां रह सकता हूँ ?...मेरा विरोध यंत्रोंके संबंधमें फैले दीवानेपनके साथ है, यंत्रोंके साथ नहीं। **परिश्रम का बचाव करनेवाले यंत्रोंके संबंधमें लोगोंका जो दीवानापन है उसीसे मेरा विरोध है।** परिश्रम की बचत इस हदतक की जाती है कि हजारोंको आखिर भूखों मरना पड़ता है, और उन्हें बदन ढकनेतकको कुछ नहीं मिलता। मुझे भी समय और परिश्रमका बचाव जरूर करना है, लेकिन वह मुट्ठीभर आदमियोंके लिये नहीं बल्कि समस्त मानव जातिके लिये। समय और परिश्रमका बचाव करके मुट्ठीभर आदमी धनाढ्य हो बैठें, यह मेरे लिए असह्य है। मैं तो चाहता हूँ हर एकका समय और परिश्रम बच जाये, सबको खाना मिल सके, सब पहन ओढ़ सकें, सर्वोदय हो। यही मेरी अभिलाषा है। आज यंत्रोंके कारण लाखोंकी पीठ पर मुट्ठीभर आदमी सवार हो बैठे हैं और उन्हें सता रहे हैं। क्योंकि इन यंत्रोंके चलानेके मूलमें लोभ है, धन-तृष्णा है, जनकल्याणकी भावना नहीं है।"

प्र. २—'तो बापूजी, आप यंत्रोंके दुरुपयोगके विरुद्ध हैं, सदुपयोगके नहीं ?'

उत्तर—"......हां, लेकिन इसको भी ठीक ठीक समझ लो। ये धनप्राप्तिके साधन पहले दूर करने होंगे, तभी यंत्रोंका सदुपयोग हो सकेगा। तब कारीगरोंके ऊपर असह्य बोझ न रहेगा। **तब वह केवल काम करने वाले ही न रहकर मनुष्य बन जायेंगे।** यंत्र भलेही कल्याण साधन बने रहें। मैं उनका सर्वथा नाश नहीं चाहता। मैं केवल उनकी मर्यादा बांधना चाहता हूँ।"

प्र–३ क्या इस विषयके अंतमें जाने पर यह न कहना पड़ेगा कि सभी यंत्र अनिष्ठकारी हैं ?

उत्तर..."शायद कहना पड़े। **किन्तु जबतक यंत्र मनुष्यपर हमला नहीं करता, मनुष्य को जब तक वह पंगु नहीं बना देता है, तब तक सहन किया जा सकता है। कुछ यंत्र तो उपयोगी रहेंगेही !**

सिंगर की सीनेकी मशीन को ही लो। बड़ी उपकारक वस्तुओंमेंसे यह भी एक है। कैसे मेमशौर्य की कथा इसकी खोजके संबंधमें हैं। सिंगरने देखा कि उसकी पत्नी सारे दिन कपड़े पर झुक झुक कर आंखों पर जोर देकर आहिस्ता आहिस्ता टांके मारती है और बिलकुल थक जाती है। उसके दिलमें यह बात चुभ गई। और अंतमें अपने प्रेमके बल पर उसने सीनेके लिए मशीन खोज निकाली इसीसें केवल अपनी पत्नीकी ही मेहनत नहीं बचाई है बल्कि हर एक शख्स की, जो उसे खरीद सकता है, मेहनत बचाई।" 'नवजीवन'

२–११–२४

डा. राममनोहर लोहियाने प्रश्न किया था कि बिजली उत्पन्न करने, जहाज बनाने, यंत्र बनाने तथा इस प्रकारके यंत्रोंका सर्वोदय समाजमें क्या स्थान होगा। इस पर गांधीजीने जो उत्तर दिया उसका कुछ अंश नीचे उद्धृत किया जाता है।

"उसमें (सर्वोदय की आदर्श समाज व्यवस्थामें) उस हर चीज़का समावेश होगा जो देहातियोंके जीवन सुधारके लिए सहायक होगी। जिन उद्योगोंका डा. लोहियाने जिक्र किया है, उन उद्योगोंकाभी उसमें समावेश होगा; जब कि वह देहातों तथा देहाती जीवनको हानि न पहुँचा रहे हों। मैं इसकी कल्पना कर सकता हूँ कि बिजली, जहाजसाजी, लोहेके कारखाने, यंत्र बनानेके कारखाने तथा इस प्रकारके उद्योग देहाती गृह उद्योगोंके साथ साथ चलते रहें। परन्तु कौनसा उद्योग किस पर अवलंबित रहे इसकी व्यवस्था बदल दी जावेगी।"

—हरिजन २७ जनवरी १९४०

पूंजीवादी समाजमें तथा समाजवादी समाजमें इन बड़े बड़े उद्योगोंको प्रधानता दी जाती है। और इन उद्योगोंकी सुविधाके अनुसार गृह उद्योगोंको चलाया जाता है। सर्वोदय ऐसा नहीं करेगा। उसके पास देहात तथा देहाती समाज प्रधान है। वह उन्हें तथा उनकी सभ्यताको कायम रखना चाहता है। अतः वह इन बड़े बड़े उद्योगोंका इस प्रकार संचालन करेगा कि वह देहातोंके गृह उद्योगोंके सहायक होते रहें। वह उन उद्योगोंका उपयोग कतई बंद कर देगा जिससे देहाती जीवन और गृह उद्योगोंको हानि पहुंचनेका अंदेशा हो। यह मतभेद समाजवाद और सर्वोदयकी आर्थिक व्यवस्थामें मुख्य है। गृह उद्योगोंके मददगार यंत्रोंकी आवश्यकतामें सर्वोदयको शंका नहीं है।

इस प्रकार विवेचनसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सर्वोदयकी मान्यता निम्न प्रकार है।

(१) यंत्रोंके अर्थात उत्पादन साधनके अधिकसे अधिक उन्नति करते समय यह देखना आवश्यक है कि यह सारी क्रिया मनुष्यके लिये हितकारक है या नहीं।

(२) आर्थिक संगठनका केंद्र ग्रामोद्योग रहेगा। बड़े बड़े उद्योग इन ग्रामोद्योगोंको मदद रूप रहेंगे।

(३) आर्थिक संगठनमें विकेंद्रीयकरण पर जोर दिया जायगा।

(४) आर्थिक संगठनका उद्देश्य समूची मानव जातिके लिये अधिकसे अधिक फुरसत देनेका न होकर उसका उद्देश्य मानव जातिके लिये समूची फुरसत होगा।

जहांतक पहले तत्वका संबंध है–उसका बहुत कुछ विश्लेषण ऊपर हो चुका है परन्तु फिर भी काका कालेलकर का एक उदाहरण दे देना अनावश्यक न होगा। "मनुष्यके विकासको न रोकनेवाली 'मशीने' अगर स्वराज्य सरकारके द्वारा चलायी जायं तो गांधीजी उनका विरोध नहीं करेंगे। लेकिन ध्यानपूर्वक देखेंगे तो सही कि ऐसी मशीनें मनुष्यके हितके हैं या नहीं।" 'सर्वोदय' १-१२-५५

जहांतक दूसरे तत्त्वका भी संबंध है उपर संकेत रूपमें विश्लेषण हो चुका है। काका कालेलकरके उसी लेखके और उद्धरणसे यह बात अधिक स्पष्ट हो जायगी।

"**मुख्य बात यही है कि देशका प्राण हाथ कारीगरीसे चलनेवाले ग्रामउद्योगोंके अन्दर समाया हुआ है-** इसलिये राष्ट्रके पास जो कुछ शक्ति है वह प्रथम ग्रामउद्योगोंका 'जीर्णोद्धार' करनेमें ही लगानी चाहिये। वह कार्य जब पूरा होगा तब जाकर हम समाज सत्ताके अधीन चलाये जानेवाले कल कारखानोंकी बात सोच सकेंगे। अगर ऐसे कुछ कल-कारखाने खोलने पड़े कि

जिनकी हस्ती ग्रामउद्योगोंके लिये मददरूप है तो उनका विचार शायद हमें जल्दी ही करना होगा।”

पूर्व इसके कि हम इस विषयको लेकर आगे बढ़ें, क्या यह उचित न होगा कि इस विषय-पर पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताके विचार मालूम कर लें। यह तो सर्व विदित है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू साम्यवादी हैं परन्तु वह भारतीय परिस्थितिसे बेखबर भी नहीं हैं। इसलिये इन दोनों विचारधाराओंके तुलनात्मक अध्ययनके समय हमें पंडित जवाहरलाल नेहरू के विचारोंसे सहायता मिलती है।

“बहुत दिनोंसे मेरे विचार रह चुके हैं कि हमारी राष्ट्रीय संपत्ति, हमारे उत्पादनमें शीघ्र वृद्धि तथा सारे जीवन निर्वाहके स्टैण्डर्डको ऊपर उठानेके लिये हिन्दुस्तानका औद्योगीकरण एवं बड़े बड़े उद्योगोंमें वृद्धि किये बगैर हम अपनी दरिद्रताका निवारण नहीं कर सकते हैं। मैं नहीं समझता कि वह राष्ट्र जिनका औद्योगीकरण नहीं हुआ है आर्थिक दृष्टिसे स्वतंत्र रह सकेंगे।

“और इसके बावजूद मैंने ग्रामोद्योगोंमें वृद्धि एवं प्रसारके लिये काम किया है। मैंने यह केवल राजनैतिक अनुशासनके मातहत नहीं किया है बल्कि इसलिये किया है कि मेरा उनमें विश्वास है। मेरे अन्दर यह जो द्वन्द्व भावना है उसे मेरे कई मित्रोंने सराहा नहीं है। उन्होंने मुझपर आक्षेप लगाया है कि मुझमें या तो इसमें (औद्योगिकरणमें) या उसमें (ग्राम उद्योगोंमें) विश्वासका अभाव है या मैं मेल न कर सकनेवाली शक्तियोंमें मेल करनेका प्रयत्न कर रहा हूं। उन्होंने मुझे कायल नहीं किया और अब भी मेरे यही विचार हैं कि हमें हिंदुस्तानमें बड़े ग्राम उद्योगोंको प्रोत्साहन देना चाहिये। मैं इसे मानता हूँ कि वर्तमान पूंजीवादी पद्धतिमें यह सब आसानीसे नहीं हो सकता। तब उस पद्धतिको ही बदल दो। वास्तवमें इस युद्ध तथा युद्धोत्तर समस्याओंके दबावके मातहत उसका (पूंजीवादी पद्धतिका) नाश होना निश्चित है। उसके स्थानपर हमें एक सुयोजित आर्थिक व्यवस्था लानी चाहिये।

“मेरे विचारोंमें गांधीजीने ग्रामोद्योगों पर जोर देकर हिन्दुस्तानकी बहुत बड़ी सेवा की है। उन्होंने यह कार्य हाथमें लेनेके पूर्व तक हम सभी अथवा तकरीबन सभी लोग इस विषय को अधूरे तौर पर सोच रहे थे और इस प्रश्नमें मनुष्यका जो पहलू है न सिर्फ उसे बल्कि हिन्दुस्तानमें जो परिस्थितियाँ मौजूद हैं उन्हें भी भूले जा रहे थे। हिन्दुस्तान के पास चीनकी भांति बहुत ही ज्यादा मनुष्य बल, बहुत बड़ी बेरोजगारी तथा कमरोजगारी (under employment) मौजूद है। यह व्यर्थ है कि हम हिन्दुस्तानका यूरोपके उन छोटे एवं तंग राष्ट्रोंसे मुकाबिला करें, जिन्होंने आहिस्ता आहिस्ता अल्प परंतु बढ़नेवाली जनसंख्या के साथ अपना औद्योगीकरण किया है। कोई भी योजना जो हमारी श्रमशक्ति का नाश करती है अथवा जो लोगोंको बेरोजगार बना देती है बुरी है। मानवी पहलूको बिलकुल छोड़कर केवल आर्थिक दृष्टिसे देखने पर भी यह हमारे लिये ज्यादा लाभदायक होगा कि श्रम शक्तिका हम अधिकसे अधिक उपयोग करें तथा बहुत बड़ी बड़ी (Specialized) मशीनोंका कम उपयोग करें। अधिक लोगोंको बेरोजगार रखनेसे यह ज्यादा अच्छा है कि हम अधिक संख्यामें लोगोंको कम मजदूरी पर काम दिलायें। यह भी शक्य है कि बहुत बड़ी संख्यामें गृह उद्योगों द्वारा जो संपत्ति तैयार की जायगी वह कुछ फैक्टरियों द्वारा उसी प्रकारका माल तैयार करानेसे अधिक रहेगी।

“हमारा उद्देश्य तो अधिकसे अधिक उत्पादन, तुल्य वितरण तथा बेरोजगारीका पूर्ण अभाव होना चाहिये। हिंदुस्तानकी बहुत बड़ी जनसंख्याको देखते हुये केवल बड़े बड़े उद्योगों द्वारा अथवा केवल ग्राम उद्योगों द्वारा यह उद्देश्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। पहली पद्धतिमें (अर्थात बड़े बड़े उद्योगोंकी योजनामें) कुछ चीजोंका ज्यादा उत्पादन, परंतु बेरोजगारोंकी समस्या लगभग जैसी की वैसी ही रहना तथा तुल्य वितरणका मुश्किल हो जाना—निश्चित परिणाम मालूम होते हैं। यह भी शक्य है कि श्रम शक्तिके अपव्ययके कारण कुल उत्पादन हमारी क्षमतासे कम होगा। **केवल ग्रामोद्योगोंकी योजनामें तुल्य वितरण रह सकेगा।** परन्तु कुल उत्पादन नीचेकी सतह पर रहेगा। इसलिये जीवन निर्वाहका मैयार ऊपर नहीं उठ सकेगा! निसंदेह, चारों ओर फैले हुए ग्रामोद्योग वर्तमान भारतीय परिस्थितिमें जीवन निर्वाहके वर्तमान मैयारको काफी ऊंचा उठा सकेंगे। ताहम वह नीचेही रहेंगे। इसके सिवाय और भी कुछ बातें ऐसी हैं जो किसी भी राष्ट्रके लिये केवल ग्रामोद्योगों पर निर्भर रहना अशक्य बना देती हैं। कोई भी आधुनिक राष्ट्र कुछ आवश्यक वस्तुओंके बगैर जो बड़े उद्योगों द्वारा ही उत्पादन किये जा सकते हैं, जिन्दा नहीं रह सकता। इन्हें पैदा न करनेका अर्थ इन्हें बाहरसे मंगाने पर निर्भर होना है और इस प्रकार दूसरे राष्ट्रों की आर्थिक व्यवस्थापर अवलंबित होना पड़ता है। इसका अर्थ है—आर्थिक दासता और संभवतः राजनीतिक दासता भी।

“अतः यह आवश्यक मालूम होता है कि हिन्दुस्तानमें दोनों ही प्रकारके अर्थात् बड़े और ग्राम उद्योग चलाये जायें। और इन्हें इस प्रकार योजित किया जाय जिससे उनमें संघर्ष पैदा न होने पावे। बड़े उद्योगोंको जितना शीघ्र हो सके उतना शीघ्र प्रोत्साहन दिया जाकर उनमें विकास किया जाना चाहिये। परन्तु इस प्रकार जिन उद्योगोंको प्रोत्साहन दिया जावेगा उनका निर्वाचन सावधानता के साथ किया जाना चाहिये। ऐसे उद्योग बुनियादी उद्योग हों जो राष्ट्रकी आर्थिक शक्ति की नींव होती है तथा जिनपर दूसरे उद्योग धीरे धीरे स्थापित किये जा सकें। विद्युत शक्तिमें वृद्धि औद्योगिक प्रगतिमें सर्व प्रथम आवश्यकता है। यंत्र बनानेका उद्योग, जहाजसाजी, रसायन बनानेके उद्योग, रेल, मोटर आदि बनानेके उद्योगोंका महत्त्व इसके बाद आता है।

‘यह सब और इनके समान दूसरे उद्योग संपत्ति निर्माण करनेवाले तथा श्रम निर्माण करनेवाले उद्योग होते हैं, जो अन्यत्र बेरोजगारी नहीं फैलाते। इसलिये हलके उद्योग प्रारंभमें प्रोत्साहित नहीं किये जाना चाहियें। अंशतः इसलिये कि जो हमारे पास पूंजी है वह सीमित और बड़े उद्योगोंके लिये आवश्यक है; तथा अंशतः इसलिये कि वह ग्रामउद्योगोंके साथ संघर्षमें आनेकी संभावना होनेसे वे रोजगारी पैदा करेंगे।”

— China Builds for democracy की प्रस्तावनासे पृ० ६ से ८

इसमें संदेह नहीं कि आर्थिक संगठन किस प्रकार हो इस संबंधमें सर्वोदय और समाजवाद में बुनियादी मतभेद है। यह मतभेद इन दोनों विचार धाराओंकी दार्शनिक बुनियादों में जो अन्तर हैं उसपर स्थित है। समाजवाद भौतिकवादी दर्शन पर खड़ा है। अपितु वह अधिकसे अधिक भौतिक उन्नति चाहता है। इसके विपरीत सर्वोदय अध्यात्मवाद पर खड़ा होनेके कारण वह सर्व प्रथम यह देखता है कि आर्थिक संगठन मनुष्यके आध्यात्मिक विकासमें किसी भी प्रकार बाधक न होने पावे! यह भौतिक प्रगतिका न तो विरोधी है और न बाधक। हमने पंडित जवाहरलालजीके विचार इतने विस्तारमें इसलिये उद्धृत किये हैं कि इनसे यह मालूम हो जाय कि भारतीय परिस्थिति इन दोनों विचारधाराओंको बहुत दूर तक साथ ले जाती है।

पंडित जवाहरलालजी केवल समाजवादी नहीं हैं वह व्यावहारिक समाजवादी होनेके कारण औद्योगिक संगठनके निर्माणमें सर्वोदयके आर्थिक संगठनके निर्माणसे इतने समीप पहुंच जाते हैं कि जहांसे सर्वोदयके साथका उनका विरोध बहुतही फीका पड़ जाता है। हिंदुस्तानकी लोक संख्या तथा हिन्दुस्तानकी कृषिप्रधानताको ध्यानमें रखनेके बाद कोई देश हितैषी ऐसे उद्योग धंधोंको न चलाना चाहेगा, जो बेकारीको बढ़ानेके कारण बन जावें। बड़े उद्योगोंका निर्वाचन करते समय इसपर जोर देना आवश्यक है कि इस प्रकारके धंधे संपत्तिके साथ साथ श्रमको भी निर्माण करनेवाले हों। बेरोजगारी बढ़ानेवाले उद्योगोंको कदापि प्रोत्सान नहीं दिया जाना चाहिये। इस तत्त्वको यदि समाजवादी ग्रहण करेंगे तो समाजवाद और सर्वोदय बहुत दिनों-तक साथ साथ चल सकते हैं। यहाँपर यह बताना अनुचित न होगा कि समाजवादको इस तत्त्वको स्वीकार करनेमें कोई सैद्धांतिक बाधा नहीं है और देशकी परिस्थिति सामने रखनेके बाद हरेक समाजवादीको इस तत्त्वको स्वीकार करना पड़ेगा।

आर्थिक संगठनमें यंत्रोंका क्या क्या स्थान होगा तथा ग्रामोद्योग एवं बड़े उद्योगोंका परस्पर संबंध क्या होगा इसकी चर्चा करनेके बाद सर्वोदय विकेंद्रीकरण पर क्यों जोर देता है तथा वह किन कारणोंके मातहत अधिकसे अधिक फुरसतका विरोध करता है, इसकी चर्चा अगले लेखमें की जायेगी।

साम्राज्यके पचड़ेसे दूर रहो

(कवर पेज २ का शेष)

तक संकटमें रहना होगा, क्योंकि राजनीतिक गणतंत्रीकरणका प्रारंभ भी उसी समय होगा। चीनने अभी वह ढंग नहीं निकाला जिससे लोग अपना शोषण रोक सकें। चीनने गणतंत्र की स्थापना करनेका दृढ़ निश्चय कर लिया है। अर्थात युद्ध बंद होनेके एक वर्षके भीतर चीनमें वैधानिक सरकार स्थापित होगी। इस सरकारको कई कार्य करने होंगे। उसे लोगोंको शोषणसे बचानेकी व्यवस्था करनी होगी, निरक्षरता दूर करनी होगी और गरीबीको भगाकर लोगोंके रहन सहनका स्टैण्डर्ड ऊंचा करना होगा। भूखों मरते हुए गृहविहीन और युद्धसे परेशान लोग यदि आर्थिक रूपसे स्वतंत्र न होंगे तो वे राजनीतिक रूपसे स्वतंत्र नहीं हो सकते। आज चीनमें मुद्राप्रसार अत्यधिक उग्र रूपमें है। एक चीनी मित्र अमेरिका आनेकी तैयारी में थे। उन्हें एक ऊनी सूट बनवाने की आवश्यकता थी, किन्तु जब उन्हें पता चला कि विदेशी ऊनी कपड़ेका एक सूट बनवानेमें ८००० डालर खर्च पड़ेगा तो उन्हें निराश हो सूट बनवानेका इरादा ही त्याग देना पड़ा। अंतमें वह १४ वर्ष पूर्व अमेरिकामें खरीदा हुआ अपना पुराना सूट पहनकर ही आये। उनकी पत्नीने पतलूनकी सीटमें थेगड़ा लगाया तब कहीं वह पहनने लायक हुआ।

यह तो निश्चित है कि—गणतांत्रिक राष्ट्र धुरी राष्ट्रोंपर विजय प्राप्त करेंगे, किन्तु शांतिका स्वरूप क्या होगा यह बताना बहुत कठिन है। मित्र राष्ट्रोंकी विजयमात्रसे शांति स्थापित होनेकी बातपर मेरा कतई विश्वास नहीं है। क्योंकि मैं यह मानती हूं कि राष्ट्रोंकी स्वाधीनताका युद्ध सामरिक युद्धके मोर्चेपर कभी नहीं जीता जाता। यह प्रत्येक देशमें धीरे धीरे जीता जाता है और उसी तरह हारा जाता है।

यदि हम प्रभुत्व और साम्राज्य स्थापनका निश्चय करेंगे—यदि हम किसी भी रूपमें ब्रिटिश साम्राज्यके साथ मिल जायंगे, तो हम अन्य राष्ट्रोंकी नजरोंमें ब्रिटिश साम्राज्यके अंग बन जायंगे और उस साम्राज्यके खिलाफ सभी अपनेको शस्त्रीकृत करनेमें तल्लीन हो जायंगे। दूसरी और यदि हम अमेरिकन सबके साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध और किसी एकके खिलाफ दूसरेके साथ गठबंधन न करने की परम्परा पर चलेंगे, तो एशिया अफ्रिका और रूसके अरबों आदमी अधिक स्वतंत्रता और आरामके साथ सांस लेंगे।

जो स्वयं अपनी सुरक्षाके लिए आज हमसे अनुरोध करते हैं कि हम उनके साम्राज्यके साथ मिल जायं, वे अपने देश और योरपकी सीमाओंके बाहरकी दुनियाको नहीं जानते। वे यह नहीं समझते कि यदि हम किसी भी रूपमें साम्राज्यके साथ गठबंधन करेंगे तो कल्पनातीत बड़े पैमाने पर हमारे विरुद्ध युद्ध छिड़ेंगे। वे यह नहीं जानते कि साम्राज्य लुप्त प्रयोग है। क्योंकि आधेसे अधिक दुनिया इसको मिटानेके लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है। हम एक ऐसी वस्तुके अंग बनेंगे जिसका सर्वनाश होना बिल्कुल निश्चित है।

युद्धोत्तर चीनके साथ हमारा संबंध साम्राज्यके साथ हमारे संबंध पर निर्भर करता है। भावी चीनका स्वरूप मि. चर्चिलके आमंत्रणका हमारे दिये गये उत्तर पर निर्भर करता है। मुझे आशा है कि अमेरिका स्वयं अपने कल्याणके लिये मि० चर्चिलके आमंत्रणको स्वीकार नहीं करेगा। ‘एशिया ऐण्ड अमेरिकाज’ से।

राजस्थानी साहित्य

★

लेखक—**श्री पं. सत्यदेवजी विद्यालंकार**

भाषा, साहित्य, संस्कृति, इतिहास और परम्परायें किसी भी जाति, समाज, देश एवं राष्ट्की अमरनिधि हैं। हमारे राष्ट्रका कमलके फूलकी पंखड़ियोंकी तरह जिन इकाइयोंके सम्मिश्रणसे विकास हुआ है, उनको पृथक प्रांतोंका नाम दे दिया गया है, लेकिन इन प्रांतोंका निर्माण किसी सिद्धान्त या आदर्शपर न किया जाकर घुणाक्षर न्यायसे किया गया है। अंग्रेजी राज्यकी जड़ें मजबूत करनेके लिए भेदभावकी जिस दुर्नीतिसे काम लिया गया, उससे हमारे इस अभागेदेशमें कई विकट एवं जटिल समस्याएं उत्पन्न हो गयी हैं। साम्प्रदायिकताके समान प्रांतीयताका जहर भी इसी दुर्नीतिसे पैदा हुआ है और उससे हमारा राष्ट्रीय जीवन विषाक्त होकर बुरी तरह जर्जरितभी हो गया है। स्थिति इतनी भयानक बन गयी है कि इसमें अमृतभी जहर बनकर राष्ट्के समूचे जीवनके लिए घातक बन रहा है। यह सब पराधीनताका अभिशाप है। इसलिए इस अभिशापसे मुक्त होकर हमें राष्ट्रीय जीवनकी दृष्टिसे प्रांतीय इकाइयोंको राष्ट्रीयताकी पहली सीढ़ी मानकर उनको दृढ़ एवं बलवान बनाकर उनके पूर्ण-विकासके लिए प्रयत्नशील होना चाहिये। भावना और दृष्टि उदार राष्ट्रीयताको लिए हुए हैं, तो कोई कारण नहीं कि प्रांतीयताका विकास राष्ट्रको बलवान बनानेवाला न हो। इसीलिए किसी भी प्रांतके साहित्य, संस्कृति, इतिहास तथा परम्पराओं के विकासका स्वागत किया जाना चाहिए। हिमालयकी भिन्न भिन्न चोटियोंसे निकलनेवाली सिन्धु, गंगा, जमुना और ब्रह्मपुत्र नदियां यदि अंतमें जाकर राष्ट्रीयताके महासमुद्रमेंही समाजानेवाली हैं तो कोई कारण नहीं कि उनका स्वतंत्र विकास होकर उनके तटपर रहनेवालोंको उनका लाभ न मिले और इस दृष्टिसे प्रान्तीयताका राष्ट्रीयताकी पहली सीढ़ीके रूपमें विकास न हो।

राजस्थान या राजस्थानीकी अपेक्षा मारवाड़ या मारवाड़ी शब्द अधिक सार्थक, उपयुक्त एवं व्यापक जान पड़ता है। पहले शब्दोंको कर्नल टाडने प्रधानता इसलिए दी थी कि मारवाड़में पैर पसारने वाले मराठोंके विरुद्ध राजपूतोंको खड़ा किया जाय और दोनोंको एक दूसरेसे भिड़ाकर मारवाड़की उस महान शक्तिको कुचला जाये जो अंग्रेजी हुकूमतके लिये मुगलों के समान ही कांटा बन सकती थी। मध्यभारत और राजपूतानाके नामसे मारवाड़ के विशाल प्रान्तको दो भागोंमें बांटकर राजपूतों और मराठोंके बीच भी वैसी ही खाई खोद दी गयी जैसी कि हिन्दुओं और मुसल्मानोंके बीचमें खोदी गयी है। इतनाही नहीं एक शक्ति सम्पन्न प्रदेशको इतने टुकड़ों में बाँट दिया गया कि उसका पृथक अस्तित्व सर्वथा नष्ट हो गया। सिन्धसे सतलज तक फैले हुए विशाल प्रदेशका सूचक मारवाड़ शब्द केवल जोधपुरके लिए प्रयुक्त होने लगा और अन्य देशी राज्योंको भी अलग अलग नाम देकर उनकी सत्ता भी पृथक बना दी गयी। अजमेर मेरवाड़ाको भी छोटे छोटे इस्तमरारदारोंमें बाँट दिया गया। इसी प्रकार मध्यभारतमे भी कोई पांच दर्जनसे ऊपर देशी राज्य कायम हैं। इस प्रकार सैकड़ों टुकड़ोंमें बंटे हुए महान मारवाड़की भाषा, संस्कृति साहित्य और परम्पराओंका विकास हो ही नहीं सकता था। महाराष्ट्रमें वहां की भाषा, साहित्य संस्कृति एवं इतिहासको लेकर जो खोज एवं अनुसंधानका कार्य हुआ है और जो कार्य इसी प्रकार गुजरात, बंगाल तथा अन्य प्रांतोंमें हो रहा है वह मारवाड़में नहीं हो सका। मारवाड़ का वीरतापूर्ण इतिहास संसारके किसे भी इतिहासकी बराबरी कर सकता है। वीर महाराणा प्रताप, त्यागवीर भामाशाह और पातियोंको केसरिया बाना पहनाकर आत्मोत्सर्ग करनेवाली देवियोंकी वीर गाथाएं संसारकी किन कहानियोंसे कम गौरवपूर्ण हैं? यहां की संस्कृति अपना स्वतंत्र अस्तित्व रखती है। यहांके साहित्य और भाषामें कौनसी कमी है? दादू, मीरा सुन्दरदास आदि भक्तों ने अपनी वाणियोंसे इसे समृद्ध किया है। डिंगल भाषाकी प्राचीन निधि अपने समयकी किसी भी भाषा की निधिसे कम कीमती नहीं है। लेकिन, आज उनका विकास नहीं हो सकता। क्यों,—केवल इसलिए कि उनको लेकर किसी ऐसे प्रांत विशेषका अस्तित्व नहीं है, जिनके लोगोंमें उनके लिए ममता हो। यदि मारवाड़ एक स्वतंत्र एवं पृथक प्रांत होता तो यह असंभव न था कि यहां भी एक स्वतंत्र विश्वविद्यालय की स्थापना होकर यहां की इन सब विभूतियोंके विकासके लिए कोई प्रयत्न न किया गया होता। इस लिए सबसे पहली और सबसे महान आवश्यकता यहांके लोगों में जिनमें यहांसे बाहर प्रांतोंमें व्यापार व्यवसाय तथा आजीविकाके लिए गये हुए प्रवासी भाई भी शामिल हैं, प्रांतीयता की अदम्य भावनाका संचार कर उनमें एकराष्ट्रीयताकी स्फूर्तिका संचार किया जाय। अंग्रेजी राज्य की भेदभावपूर्ण दुर्नीतिके फलस्वरूप अनेक छोटे मोटे राज्यों की सीमाओंको लाँघकर इस महान प्रदेशके लोगोंका संगठन, भाषा, संस्कृति, साहित्य, इतिहास एवं परम्पराओंके आधार पर किया जाये। वर्तमान और सामयिक समस्याओंके अलग अलग रहते हुए भी भावना, कल्पना एवं आदर्शके नाते उनमें एकत्वकी प्रतीति उत्पन्न की जाय। दिनाजपुरमें इसी सप्ताहमें जो आयोजन किये जा रहे हैं उनको इसी दिशामें एक ठोस काम मानकर उनका हम स्वागत एवं अभिनंदन करते हैं।

बंगालके एक सुदर कोनेमें दिनाजपुर शहरमें इस अयोजनके करनेपर कुछ आश्चर्य प्रकट किया गया है और विरोध भी किया गया है। लेकिन 'बृहत महाराष्ट्र' के नामसे महाराष्ट्रके लोग अपने प्रांतके बाहर दिल्ली तकमें जब संगठन, आन्दोलन एवं अधिवेशन कर सकते हैं तब यदि इतनी अधिक संख्यामें रहनेवाले मारवाड़ी बंगाल, विहार, बंबई अथवा अन्य प्रांतोंमें अपना संगठन एवं आन्दोलन करते हैं, तब इसमें हानि क्या है? बंगाली साहित्य सम्मेलनका अधिवेशन यदि श्री. नलिनी रंजन सरकारकें सभापतित्वमें दिल्ली में तथा अन्य स्थानोंमेंभी हो सकता है तो राजस्थानी साहित्य सम्मेलनके मारवाड़के बाहर होनेमें क्या आपत्ति हो सकती है? निस्सन्देह, यह आन्दोलन एवं संगठन पाकिस्तानी मनोवृत्ति और साम्प्रदायिक दृष्टिकोणसे कदापि नहीं होना चाहिए। इसका स्वरूप विशुद्ध सांस्कृतिक होकर इसका अन्तरात्मा राष्ट्रीय होना चाहिए। राष्ट्र एवं राष्ट्रीयताके लिए पोषक एवं सहायके रूपमेंही इस आंदोलन एवं संगठनका संचालन किया जाना चाहिए। दीनाजपुर तथा अन्य स्थानोंके मारवाड़ी भाइयोंने जिस राष्ट्रीय एवं सार्वजनिक वृत्तिका परिचय दिया है, उससे इस आन्दोलन एवं संगठनके इस रूपमें संचालित होनेमें हमें तनिक भी सन्देह नहीं है, लेकिन प्रवासी मारवाड़ियोंका ध्यान हम मारवाड़की ओर और वहांके राष्ट्रीय आन्दोलनकी ओर पूरे आग्रहके साथ आकर्षित करना चाहते हैं। राष्ट्रीयता अथवा राष्ट्रीय आन्दोलनसे भयभीत होकर उससे दूर रहनेके दिन अब लद गये। अपने अस्तित्व एवं जीवनकी सुरक्षाके लिए राष्ट्रधर्मका पालन करना अनिवार्य हो गया है। इसी लिए प्रवासी मारवाड़ियोंके लिए यह अनिवार्य रूपसे आवश्यक हो गया है कि वे मारवाड़की राष्ट्रीय प्रवृत्तियों और राष्ट्रीय आन्दोलनको बलशाली बनानेमें कुछ भी उठा न रखें। मारवाड़की ओर उनकी सतर्क एवं जागरूक दृष्टि सदा ही बनी रहनी चाहिए।

दीनाजपुरमें होनेवाले आयोजनोंका 'बृहद् मारवाड़' के रूपमें प्रकट होनेवाले महान आन्दोलनकी ओर पहले कदमके रूपमें हम स्वागत करते हैं और वहांके कर्मठ नेताओंको इसके लिए बधाई देते हैं। व्यापार-व्यवसाय एवं धनोपार्जनके क्षेत्रमें मारवाड़ी समाजने जिस अध्यवसाय एवं निर्माण शक्तिका परिचय दिया है, उससे राष्ट्रीय क्षेत्रमें चमत्कार करके दिखाया जा सकता है। देशभक्त सेठ जमनालालजी बजाजने देशके राष्ट्रीय जीवन एवं मारवाड़की जनजागृतिके लिए जो कुछ कर दिखाया उसकी अपेक्षा राष्ट्रमाता मारवाड़के हर सपूतसे रखती है। इस अपेक्षाको पूरा किये विना राजस्थानी भाषाके नाते उठाये गये इस सांस्कृतिक आन्दोलनको सफल एवं सार्थक नहीं बनाया जा सकता।

साहित्य-समालोचना

भारतीय अर्थशास्त्र

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें अर्थशास्त्र विषयपर साहित्यका बहुत ही अभाव है। यह ठीक है कि इन कुछ वर्षोंमें इस विषयपर हिन्दीमें कोई एक दर्जनके करीब पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, परन्तु हिन्दी जैसी भाषाको देखते हुए यह सँख्या न के बराबर ही कही जानी चाहिये। बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि साहित्यकी सेवा को अपना एक प्रधान लक्ष्य-आदर्श मानकर काम करनेवाले कुछ विद्वान लेखकोंने इस विषयकी ओर अपना ध्यान दिया है, और सक्रिय कार्य करना प्रारम्भ किया है। इन विद्वानों तथा उत्साही लेखकों एवं प्रकाशकोंमें मुख्यतम व्यक्ति श्री भगवानदासजी केला हैं। आप लगभग २९ वर्षोंसे हिन्दीकी इस कमी की पूर्तिके लिये जी जानसे कोशिश कर रहे हैं। "भारतीय अर्थशास्त्र" आपकी इसी सतत साधनाका—प्रयत्नोंका फल है।

इस पुस्तकको विद्वान लेखकने छः खण्डों में बाँटा है जो निम्नप्रकारसे हैं—

भारतीय अर्थशास्त्र का विषय, अर्थशास्त्र के भाग, भारतभूमि, जनसंख्या, भारतीय श्रम, पूंजी, व्यवस्था और बड़ी मात्राकी उत्पत्ति, खेती, उद्योगधन्धे, उत्पत्ति की वृद्धि और आदर्श, उपभोग, उपभोगके पदार्थ, रहनसहन और पारिवारिक आय व्यय, उपभोगका विवेचन। मुद्रा, रुपया पैसा, कागजींमुद्रा नोट आदि। विदेशी विनिमयकी दर, बैंक। कीमत, व्यापारके साधन देशी व्यापार, विदेशी व्यापार, विदेशी व्यापारकी नीति। लगान, मजदूरी, सूद, मुनाफा, वितरण और असमानता। विषय सूचि देखनेसेही आसानी से यह पताचल जाता है कि भारतीय अर्थशास्त्रसम्वधी एक भी मुख्य बात पुस्तकमें लिखनेसे न छूटी है।

पिछले सालोंमें भारतकी आर्थिकदशामें बड़े बड़े हेरफेर हुए हैं। श्रीकेलाजीने बड़े परिश्रमके साथ इस ग्रन्थरत्नमें ताजीसें ताजी सूचनायें (Informations) दी हैं। इस पुस्तकमें भारतकी प्रायः समस्त आर्थिक समस्याओंपर पक्षपात शून्य होकर बड़ी गहरी अनुभूतिसे और निडर होकर विचार प्रगट किये गये हैं।

पुस्तककी उपयोगिता का इसीसे पता चलजाता है कि उसे गुरुकुलविश्वविद्यालय कांगड़ी, काशीविद्यापीठ, विहारविद्यापीठ, महिलाविद्यापीठ प्रयाग, और अखिलभारतवर्षीय हिन्दी-साहित्यसम्मेलन आदि जैसी अनेक उच्च तथा प्रमुख राष्ट्रीय संस्थाओंने इस "भारतीय अर्थशास्त्र" नामक ग्रन्थको अपनी परीक्षाओंकी पाठ्यपुस्तकोंकी सूचीमें स्थान दिया है।

यह जमाना आर्थिक है, परन्तु हिन्दुस्थानमें उच्चशिक्षासे शिक्षित ग्रेजूएट तक प्रायः भारतीय अर्थशास्त्रके ज्ञानसे रहित हैं। इस कारण से भी भारतकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। किसी भी देशको समृद्धिशाली बनानेके लिये उस देशके निवासियोंका यह प्रधान कर्तव्य होना चाहिये कि वे अर्थशास्त्रके ज्ञानका सर्वसाधारणके बीच प्रचार करनेमें कोई यत्न उठा न रखें।

भारतीय अर्थशास्त्रका यह तृतीय संस्करण है। युद्धकालमें कागज़ तथा प्रिन्टिंगकी अत्यधिक मंहगाई के दिनोंमें छपनेपर भी ४०० पृष्ठोंसे अधिक पृष्ठोंकी इस पुस्तकका दाम केवल २।।।) रखा गया है। पुस्तक की छपाई आदि सुन्दर है। हम पाठकोंसे केलाजीकी इस पुस्तकके पढ़नेका हृदयसे अनुरोध करते हैं।

(शेष तीसरे काल्म पर)

आर्थिक योजना बनाम गांधीजीका मानववाद

परिमित साधन वाले भारत में ग्रामोद्योगों से कल्याणः यंत्रों को मानव के पास लेजाइये, मानव को गांवों से शहरों की गन्दगी में मत ढकेलिएः बंगीय स्वदेशी आन्दोलन के बाद की भूल की पुनरावृत्ति से बचियेः

★

ले०—श्री मनु सूबेदार

★

मशीनरी विदेशोंसे मंगाये जाने पर उसके सदा अच्छे व ठीक दामों की क्या गारण्टी ? ब्रिटेन से ही माल खरीदने के दबाव का भयः योजना का लाभ धनियों को ही न होः देश का स्वास्थ्य, पशु व जंगल पहिले बचाइयेः

इस योजनाके बनानेवालोंने तथ्यों तथा आंकड़ोंसे यह स्पष्टतया बतलाया है कि संसारके अन्य देशोंकी तुलनामें भारतवर्ष कितना पिछड़ा हुआ है।

शुभ भावनाओंसे प्रेरित व्यक्तियोंद्वारा बनायी गयी इस योजनाका स्वागत करनेसे हमारे अन्तिम ध्येयको कुछ भी हानि नहीं पहुँचेगी।

भारतकी गरीव जनताकी शारीरिक, आर्थिक, और नैतिक उन्नति की सुधारणाही हमारा अन्तिम ध्येय है। कोई ३५ वर्ष पूर्व स्वदेशी आन्दोलन बड़ी जोरोंसे उठा था, परन्तु उसका लाभ भारतके कलकारखानोंको ही मिला। उस आन्दोलनकी कमियोंका हमें म० गान्धीजीसे ही प्रायः पता चला। उस आन्दोलनके परिणामस्वरूप यहाँ विदेशी फैक्टरियाँ खड़ी हुईं और विदेशी नमूनेपर भारतीय कारखाने खड़े हुए जिन्होंने लाखों मजदूरोंका रोजगार छीन लिया, और निपुण कारीगरोंको अनिपुण कारीगर बनादिया। एक ओर उन्नति हुई, पर दूसरी ओर भारी अवनति। सालों यह अमानुषिक और भयंकर सिलसिला चलता रहा। हमें ध्यान रखना चाहिये कि भविष्यकी योजनायें फिर उसी भूलको नहीं दोहरायें। भारतका आर्थिक विस्तार भारतके लाखों व्यक्तियोंको सशक्त तथा प्रसन्नतायुक्त बनानेके लिये ही होना चाहिये। भारतकी उन्नतिका अर्थ है, भारतकी समस्त जनताकी उन्नति। भारतमें जो भी सत्साहस किया जाये वह अधिकतम व्यक्तियोंके कल्याणके लिये किया जाना योग्य है। बाहरसे माल मंगानेकी अपेक्षा भारतमें माल तैयार करना अच्छी बात है, पर इतना करना ही पर्याप्त नहीं होगा। उद्योग धन्धोंका धन और प्रबन्ध पूर्णरूपेण भारतीयोंके ही हाथमें होना चाहिये, परन्तु हमें ध्यान रखना चाहिये कि विदेशोंसे यदि हम कुशल फोरमैन और मैशीनरी मंगायेंगे तो यह हमारे देशके लिये हानिकर सिद्ध होगा। किसी भी आर्थिक भवनकी बुनियाद देशके लाखों गरीब लोगोंका सहयोग होता है। यह जरूरी है कि भारतके परिमित साधनस्रोतोंको हबड़दबड़ में और अनियंत्रित कार्योंमें खर्च नहीं किया जाये।

इस प्रकारकी जल्दबाजी और अनियंत्रिततासे गत डेढ़ सौ सालोंमें जिन भारतीय कारीगरोंने नुकसान उठाया है उनमें सबसे अधिक सँख्या मुस्लिमों और हरिजनोंकी थी। यदि हम भूलको सुधार लें और चक्रको उल्टा दें तो सबसे अधिक नफा इन्ही दोनों समुदायोंको पहुँचेगा। भारतमें आर्थिक विस्तारकी कोई भी योजना हो, उससे उन्हें ही सबसे अधिक लाभ पहुँचाना उसका उद्देश्य होना चाहिये जिन के आर्थिक साधन सब से नीचे दर्जे के हैं। इसी आधार पर मैं हर योजना में ग्रामोद्योगों को ही मुख्य स्थान देता हूँ।

भारतीय कृषि की उन्नति के सुझावों के सम्बन्ध में शायद मतभेद न होवे पर कारखानों में बने माल के प्रश्न के दो पहलू हैं। इस देश के अनेक कल—कारखाने यहां के लाखों कारीगरों की रोजी बर्बाद कर रहे हैं। पैदावारी एक ओर बढ़ती है, और दूसरी ओर घटती है।

यदि हम कारखानों की पैदावार की बढ़ती के अंकों पर ही ध्यान रखेंगे तो गम्भीर भूल करेंगे। भारत का आर्थिक इतिहास इस प्रकार के उदाहरणों से भरा पड़ा है। इस लिये हमारी उन्नति ऐसी होनी चाहिये जिससे काम में लगे कारीगरों की आजीविका न मारी जाये, और हाथ की कारीगरी की जड़ खोखली न होजाये।

बड़े गूढ़ चिन्तन के बाद म. गान्धी ने मानव संस्कृति की घोषणा की है। उसके अनुसार उद्योगधन्धों को मनुष्यों के पास ले जाना चाहिये। हमें मनुष्यों को गाँवो की स्वस्थ वायु से धकेल कर उन्हें शहरोंमें नहीं फैंक देना चाहिये—जहाँ उन्हें मिलते हैं केवल गन्दगीधूल, गलीज़ मिलावटवाला भोजन, भ्रष्टाचार का वातावरण और अन्धेरा तथा धूमधकड़। आज दिन तक हमने शायद ही कहीं शहरों में काम करने वाले मजूरों के रहनसहन आदि की योग्य व्यवस्था की है। ऐसी दशामें किसी भी योजना द्वारा शहरों में उन की संख्या ५गुना बढ़ने का अभिप्राय देश के लिए भीषण रूप से खतरनाक और सांघातिक ही होगा। अगर किसी योजना के अनुसार मैशीनों के लिये पैसा विदेशों को जाये, हिस्सेदारों को अच्छे डिविडन्ड मिलें और कारखानेदारों को खूब नफा होवे, परन्तु मजूरी करने वाले लोग वैसी ही बुरी हालतमें रहें, तो इसे हम उद्योग का विस्तार नहीं कह सकते हैं।

वर्धा की शिक्षा योजना और ग्रामोद्योग योजना मानवीयताके आधार पर थी। दो या तीन कुशलकारीगरोंको एक गांवमें भेजिये। उन्हे आजीविका की वह गारन्टी दीजिये जो उन्हें अन्यत्र काम करने पर मिलती। उन्हें औजार और कच्चा माल दीजिये। उनकी सहायताके लिये वे व्यक्ति दीजिये जो उन्हें काममें मदद करेंगे और साथ ही काम सीखेंगे। कुछ ही महीनों में वे लोग खूब अच्छी तरह काम करने लगेंगे, तब पहिले के कुशल कारीगर केवल देखभालका काम करने लगेंगे। इन लोगों द्वारा तैयार मालकी खपत का जिम्मा राज्य पर होगा, या इसी तरह यह सिलसिला तमाम जिले में जारी हो जायेगा और तब उन्हें एक प्रान्तीय बोर्ड द्वारा परस्पर सम्बद्ध कर दिया जायगा। इस तरह पैदावार बढ़ेगी। युवा—वृद्ध इस के लिये शिक्षित किये जाने पर बीच के दलालों का स्वभावतः खात्मा होजायेगा। पूंजी का उपयोग कच्चे माल, औजारों, और जबतक तैयार माल बिकता नहीं तबतक के काम में होगा। इस तरह पूंजी राष्ट्रीयकरण के आधार पर कमसे कम संभव दर पर हासिल की जासकेगी। व्यक्ति ज्यों ज्यों अधिक निपुण होते जायेंगे त्यों—त्यों वे एक आना से लेकर ८ आने तक प्रतिदिन पायेंगे। इस तरह व्यक्ति जब खेती के कामों से फुर्सत पायेंगे तब भी अपने गावों के स्वाभाविक वातावरणों में रहकर काम कर सकेंगे और अपनी आय भी खासी बढ़ा लेंगे। इस तरीके से लाखों व्यक्ति एक सालके भीतर काफी माल बना सकेंगे, जिस के बड़े हिस्से का उपयोग वे खुद कर सकेंगे। इस रीति से चीजें बड़ी संख्या में और बड़े सस्ते भावों पर तैयार की जा सकती हैं। कुछ गाँव टोपियाँ बनायेंगे, कुछ गाँव जूते और दूसरे गाँव जुराब—बनियान आदि। इस तरह आपस कें सहयोग के साथ श्रमविभाग के अनुसार पृथक् पृथक गाँव साबुन, कागज़, मोमबत्तियाँ, फर्नीचर, बढ़ईगिरी का सामान, पेन्ट, ब्रास पोलिश, खिलौने, दवाइयाँ, पैंसिलें, आदि जरूरियात की सभी चीजें आसानी के साथ बना सकेंगे।

मेरा पूर्ण विश्वास है कि अगले दस सालों के अन्दर भारत की दस्तकारी आज की अपेक्षा २० गुना अधिक बढ़ जायेगी। यह एक तरीका तथा उपाय है जिससे यहाँ के लाखों आदमियों की आजीविका की उन्नति हो सकेगी, और उनके जीवन हर दिशामें उन्नत हो सकेंगे। भारतकी इस तरह उन्नतिके लिये धन तथा साधन सापेक्षिक दृष्टिसे कम ही जुटाने पड़ेंगे, और सबसे अधिक महत्व की बात यह होगी कि सारा आवश्यक साजसामान आदि भारतमें ही पैदा कर लिया जायेगा।

भारतके अधिकांश बालक आज देहातोंमें मिट्टीमें खेलते हुए, बिना किसी प्रकार की ट्रेनिंगके, अपनी दिनचर्या बिताते हैं, पर गांधीजीकी योजनाके अनुसार उनका दिनका आधा वक्त उपयोगी कारीगरीके शिक्षणमें बीतेगा, शेष आधे वक्तमें विद्याभ्यास आदिकी सुविधाएं उनके लिये उपस्थित की जायेंगी।

भारत की परिमित साधन-सामग्री को दृष्टिमें रखते हुए, मैं विश्वासके साथ कह सकता हूँ कि यही एक रास्ता है जिससे भारतमें शीघ्रातिशीघ्र और अच्छी सफलता के साथ आर्थिक विस्तार हो सकता है। भारतीय ग्रामोद्योग को पनपाये बिना हमारा निस्तार नहीं। पहिले से चल रही फैक्टरी इण्डस्ट्री भी साथ-साथ बेशक चले, बशर्ते कि वह उन्हीं चीजों को बनाये जो कि ग्रामोद्योगों तथा हाथ की कारीगरी से न बन सकती हों। उदाहरणार्थ फैक्टरियों में निम्न चीजें बन सकती हैं—स्टील, सल्फ्यूरिक एसिड, बड़े जहाज, लोकोमोटिव एंजिन, मोटरें, डायनामो आदि.

कोई भी योजना तभी चालू हो सकती है जब लाखों प्रजाजन उसे समझ लेवें, दिल से उसका स्वागत करें। केवल कुछ थोड़े से आदमियों द्वारा सोची, और सरकारी कानून के जोर पर चलायी जानेवाली कोई स्कीम कभी कामयाब नहीं हो सकती है। १५ वर्षीय योजनामें इस बात की ओर कुछ भी संकेत नहीं किया गया है।

योजनाकारों ने बताया है कि मशीनरी और उसके पुर्जे विदेशों से मंगाये जायेंगे। मैं पूछना चाहता हूँ कि क्या वे लोग हमें सदा अच्छा माल दिया करेंगे ? क्या जो माल असावधानी के साथ युद्ध में बरता गया है, उसी को मरम्मत करके और नया पेंट कर के खूब ऊँचे दामों पर और नया माल कह कर हमें नहीं दिया जायेगा ? क्या हमें सस्ता और अच्छा माल मिलेगा ? और क्या हम पर केवल ब्रिटेन से ही माल खरीदने का दबाव नहीं डाला जायेगा ?

क्या भारत की इण्डस्ट्री विदेशी माल पर चुंगी उठाने देने पर मुकाबले में खड़ी रह सकेगी ? इसी तरह क्या प्रस्तावित सभी नये उद्योगों को चुंगी कर का संरक्षण मिलेगा ? यदि उन्हें यह संरक्षण दिया जायेगा तो फिर सवाल उठता है कि उसका भार किस पर पड़ेगा—क्या उस जनता पर जो युद्धकाल की भीषण महंगाई और भारी-भारी करों से पहिले ही पिस चुकी है ? संक्षेप में, चीजें उचित कीमतों पर ही तैयार की जानी चाहियें। औद्योगिक उन्नति चाहे कितनी भी जरूरी क्यों न हो, पर हमें यह ध्यान रखना ही होगा कि यह उन्नति चीजों की भारी कीमतें रखकर हासिल न की जाये। जब उद्योगोंका विस्तार हो रहा हो तो उनकी प्रगतिको स्थायी रखना भी आवश्यक होता है। हमें गत महायुद्धके दिनों की बाजार की मंदी को न भुला देना चाहिये। वर्तमान महायुद्धने गत युद्धसे कई गुना अधिक जन-धन व जायदादका संहार किया है। आर्थिक मन्दी समुद्री ज्वार भाटेके समान होती है।

नये उद्योग-धन्धोंको विदेशी व्यापार की हमलावर प्रतियोगिता और घरेलू अन्धाधुन्ध प्रतियोगितासे बचाकर रखना जरूरी होगा।

(शेष पृष्ठ १२ के कालम ३-४ पर

आफतोंका सामना

महात्मा भगवान दीन

आफतें आई हैं, आती हैं और आती रहेंगी। कोई इनसे नहीं बचा।

आफतें सही देहपर ही आती हैं। भूल से वे मन और आत्मापर आई मान ली जाती हैं। दुनिया मानने की ज्यादा है। हम जो समझ बैठें वैसे हो हो जाते हैं। चाहिये यह कि देहपर आई आफ़तों को देह तक ही रहने दें। उन्हें अन्दर दाखिल न होने दें। यह काम ज़रा मुश्किल है, पर अभ्याससे हो सकता है। देह पर आफत झेल लेने का मतलब यह है कि देह पर कुछ भी आये अपने सिद्धान्त पर अटल बने रहें। सिद्धान्त पर अटल रहने का मतलब है—अपनी अन्तरात्मा यानी जमीर की बात पर डटे रहना। जमीर की बात पर डटना घमंड नहीं है हठ भी नहीं है। लोग भले ही उसको यह नाम दे डालें। हठ और घमंड से भी आफतों का सामना होता है; पर कामयाबी नसीब नहीं होती। रावण और दुर्योधन खूब लड़े और कभी कभी अब जीते, अब जीतेसे भी मालूम हुए, पर जीत हुई राम और युधिष्ठिर की ही। इसलिये नहीं कि राम ने रावण को मार डाला या दुर्योधन मारा गया, पर इसलिये कि आज के दिन तक राम और युधिष्ठिर सचाई के निशान माने जाते हैं। हुसेन मरने पर भी जीते थे और जीते हैं। हुसेन को लड़ाई के मैदान में हराने वाले का नहीं, उनको मैदानमें क़त्ल करने वाले का नाम आज बहुत थोड़ों को मालूम है। और क्यों मालूम हो? वह जीतने पर भी हारा था। हुसेन है, पर वह कहां है? राम, युधिष्ठिर और हुसेन अपनी अन्तरात्मा की बात पर डटे रहे और इसलिये उनकी जीत हुई और आज तक जीवित हैं। थे घमंडी या हठी न थे। नम्रता की मूर्ति थे। स्थिरता और नम्रता बहने हैं। हठ का नम्रता से कोई मेल नहीं। आफतों पर या उनके कारणों पर जीत बोलने के लिए जरूरत होती है उन जवानों की, जो जिन्दगी के उसूलों पर बहादुरी के साथ डटे रहते हैं। क्या हमने वैसी आदत डाल ली है? यदि हां, तो आफतें हमारा कुछ न बिगाड़ सकेंगी।

ईसा को क्रूस पर चढ़ाने वाले का नाम कौन जानता है? ईसा तो आधी दुनिया के दिलोंमें घर बनाए बैठे हैं। ईसा ने कौन सी लड़ाई जीती थी? ईसा अपने जमीर की आवाज सुनते थे और उसी को सुनते थे।

मौके पर फुरती से, पर बिना घबड़ाये धीरता से काम लेने वाले की जीत हुआ करती है। उतावले बनकर घिर कर या घबड़ा कर कुछ कर गुजरना धीर वीरों का काम नहीं। उतावलेपन का जीत से कोई सम्बन्ध नहीं। बिना विचारे उतावलेपन से लड़ाई या लडाइयां जीती जा सकती हैं पर विजय-लक्ष्मी के दर्शन नहीं हो सकते। विजय-लक्ष्मी उतावलों को नहीं वरती, उतावले उसकी नजर पर नहीं चढ़ते, उसे तो धीर वीर ही सुहाते हैं। धीर धीर होता ही है। धीरता अचानक नहीं मिलती, उसका अभ्यास करना होता है! महाभारतमें विजय अर्जुन की नहीं हुई, वह हुई कृष्ण की या युधिष्ठिर की। हिन्दू कृष्ण को पूजते हैं, युधिष्ठिर को धर्मराज कह कर पुकारते हैं। अर्जुन को बहादुर मानते हैं—महारथी मानते हैं। असलमें अर्जुन मन का रूपक है और कृष्ण आत्मा का। मन होता है उतावला। वह कुछ कर सकता है तो ढीठ बन कर। आत्मा होता है गम्भीर। स्थिरता, धीरता, मुस्तकिल मिजाजी उसकी खासियतें हैं। मन की नहीं। मन आफतों में फंसा सकता है। फंसाने पर रुला सकता है, पर न विजय दिला सकता है और न उनसे छुटकारा। मन का काम है—अहंकार, खुदी। खुदी अहंकार गिरावट की सीढ़ी का एक अंग है। गिरावट भय से दूर होते चले जाने का नाम है। इसलिये मनके चक्कर में फँस कर तुम अहंकार की तसल्ली में आ जाओगे और समझौते पर आ उतरोगे। समझौता आफतों को दम लेने का अवसर देता है और इसलिये सुख देता सा मालूम होता है। वास्तवमें होता यह है कि आफतें दम लेकर दूने जोरके साथ फिर हल्ला बोल देती हैं और फिर समझौता करने वाले को हाथ मलमल कर पछताना पड़ता है।

समझौता कानों को अच्छा लगता है। हार कानों को कड़वी मालूम होती है। पर समझौता हार से कहीं बुरी चीज है। समझौता हिजड़ा है, हार औरत है। हार ३—हारोंका जोड़ जीत। समझौता ३-समझौतों का जोड़ पतन, मौत। हार में देह को हानि पहुंचती है, कायरों का मन भी दुख मानता है। कायरों का मन देह से लगाव भी रखता है। हार में धीर वीरों का मन दुखी नहीं होता, कमजोर नहीं होता, उलटा बल पाता है। जब मन पर ही असर नहीं होता, तब आत्मा पर असर की चर्चा करना बेकार है। समझौते में अन्तरात्मा सिकुड़ कर रह जाती है। वीर का मन फुंकारता है, कायर का मन आराम की सांस लेता है। पर वीर और कायर दोनों ही की देह उस समय तो आफतोंसे बच ही जाती है। और कायर तो पुकार ही उठता है 'जान बची लाखों पाये'। समझौता बुरी चीज है। समझौते की दोस्ती हिजड़े की दोस्ती है। हिजड़ा वक्त पर सदा धोखा देता है। समझौते को साथ लेकर कभी आफतों में न कूदना चाहिये। समझौते के साथ कूदने पर आफतें घटने की जगह बढ़ेंगी और हम आजीवन दासता के पिंजड़े मे बन्द कर दिये जायंगे।

लाल एक छोटा लाल, चोंच का खूबसूरत पक्षी है। उसकी मादा को मुनिया कहा जाता है। लाल मुनिया के लिये लड़ते हैं। लाल लड़ाने वाले खास खास लालों को मजबूत बनाते हैं, जिस खास लाल ने किसी एक लाल को कुश्ती में जीत लिया उस खास लाल का वह हारा हुआ लाल गैंडा कहलाने लगता है। उसका नाम गैंडा क्यों रक्खा गया? इसका पता नहीं। शायद इस गैंडा के बड़े नाम में 'बृहत्तर प्रजापति' आदि शब्दों की तरह कोई दार्शनिकता हो खैर, वह गैंड़ा कितने ही अच्छे ढंग से बहिश्त में पले पर गैंडा ही रहेगा, यानी जब भी अपने जीतने वाले से लड़ेगा, हारेगा ही। समझौते में यही ऐब है, वह आदमी को अपने प्रतिपक्षी का डाढ़ी बना देता है। समझौते का अर्थ ही सिद्धान्तों से हटना है। समझौते से हम यह बताते हैं कि हम मूर्ख, असमर्थ हैं हमारा आत्मा उतना ऊंचा नहीं है, जितना प्रतिपक्षी का। हार से हम यह बताते हैं कि हमारा आत्मा तो बहुत ऊंचा है, पर हमारा देह निर्बल है। हमारे साधन अपूर्ण हैं। हम प्रबल देह और साधनपूर्ण होकर फिर जुटेंगे और जय बोलेंगे। पांडव जुए में हारे थे, धूर्तता में हारे थे, आत्म बल में तो वे हार कर भी जीते थे। हुसेन साधनों में अपूर्ण थे, आत्मबल में नहीं। वर्तमान लड़ाई में बहादुर जहाजी कप्तान घिर जाने पर जहाज डुबा देगा, दुश्मन के हाथ में नहीं जाने देगा। रूसियों ने जरमनों को खाली गांव दिये आत्माएं नहीं दीं। गांव रूसियों ने फिर ले लिए। फ्रांस, यूनान बेलजियम ने आत्मायें दीं, फिर गांव तो गये ही। अब आत्माएं वापस लें तो गांव मिलें।

यह समझ बैठना भूल है कि वक्त पर हिम्मत हिंजड़ों में भी आ जाती है। जरा सोचने पर यह भूल दूर हो सकती है। बिना विचारे हिम्मत कर जाने का नतीजा सफलता हो सकती है, पर बहुत कम। और जो किसी वजह से ही की जाये, तो टिकाऊ नहीं होती। आमतौर से उनका नतीजा हार ही हुआ करता है। वीर में सोडावाटर का सा उबाल नहीं आया करता। उसमें निरन्तर दहकती आग रहती है। कारण पाकर ही आग ज्वालामुखी का रूप धारण कर चमत्कार कर जाती है। वीर अचानक पैदा नहीं होते। वे बरसों की मेहनत से तैयार होते हैं। हां, वीरत्व का बीज सब में है। पर बीज को वृक्ष का रूप देने में समय लगता है।

समय की सूझपर लोग भरोसा किये बैठे रहते हैं। वह समय पर कभी नहीं आयेगी। समय की सूझ वास्तव में उस निर्जीव शक्ति का दूसरा नाम है, जो एक आदमी में रहती है और जिसके बल पर वह अनेक कष्ट हँसते हँसते झेल लेता है। इस दुनिया में भाग्य को भी स्थान है, पर जीवन में एक ही बार। भाग्य से मिली जीत के सम्बन्ध में कभी ठंडे दिलसे खोज नहीं की गई नहीं तो पता चलता कि जीत भाग्य की नहीं हुई किसी और ही की हुई है। अन्धे के हाथ बटेर लग जाने से अन्धा शिकारी नहीं माना जा सकता।

अन्तरात्मा, जमीर और उसकी बात से कुछ लोग चिढ़ते हैं। वे मन या मस्तक को ही सब कुछ मानते हैं। मन-मस्तक उन्हें कुछ दिखाई-से देते हैं। बिलकुल तो ये भी नहीं दिखाई देते। खैर इस मानवी मशीन का मस्तक भी बड़ा जबरदस्त पुरजा है। आइये उसे भी समझावें।

अन्तरात्मा को भुला कर मन के मानने वालों के मन को दो तरह का माना है। एक ऊपर का मन, एक भीतर का मन Conscious, Sub Conscious भीतर के मन को वे करीब करीब अन्तरात्मा जैसे ही मानते हैं। इस अन्तरात्मा के मिलते जुलते भीतर वालों को भी छोड़िये। भीतर में केवल ऊपर का मन है।

मान लीजिये आप तैरना नहीं जानते। नदी नादान को शोर है। चले गए गहरे में। वहां लगे डूबने। इतने में एक जवान दौड़ता है और अपनी जान जोखिम में डाल कर आपको बचाता है। उसने क्यों बचाया? क्या इसका जवाब इतना काफा हो सकता है? उसने डूबते देखा, आंखों ने मस्तक को खबर दी, देह कूद पड़ी। पांव तैरने में मदद देते रहे, हाथों ने डूबते को घसीट लिया। माना आदमी नहीं, बचाने वाला मशीन था। खैर मशीन नाम से हमें चिढ़ नहीं, वह मशीन ही सही, पर नदी के किनारे खड़ी और मशीन क्या करती रही?

आदमी मशीन ही सही, पर वह जानदार मशीन है। वह मस्तक जिसको तुम एक पुरजा समझते हो, पुरजा ही सही, पर वैसा पुरजा आदमी की बनाई मशीनों में नहीं मिलता। आदमी में वह पुरजा है। कहाँ से आया, कैसे आया, इन बातों को जाने दीजिये। देखना यह है कि किनारे पर खड़ी अनेक मशीनों में से एक मशीन के पुरज़े ने ही इतनी फुरती क्यों दिखाई? उस पुरज़े के मालिक ने बरसों तैरना सीखा, डूब-डूब कर जान बचाना सीखा, डूबते किस तरह बचाने वाले को भी ले डूबते हैं, ये सब बातें यानी उनकी घबराहट में किये कामों से बचने के उपाय सीखे और तब कहीं उसे वह फुरती से कदम रखना आया, जो उसने आज कर दिखाया।

मतलब यह कि अन्तरात्मा की तरह मस्तक को भी तैयारी की ज़रूरत होती है। और यह कि बड़ी-बड़ी तकलीफ़ में होकर ही समय की सूझ जैसी कला सिद्ध होती है। पहले मन देवता को पहचानना होगा, उसे सबल बनाना होगा। कल्पना कबूतरी को दरवाज़ा खोलकर उड़ाना होगा और उसे ज़बरदस्ती घंटो उड़ते रहना सिखाना होगा। विवेक हंसको ज्ञान के मोती चुगाना होगा और उससे सचाई के दूध में से झूठ के पानी को अलग करना होगा।

इस प्रकार मन को और मन की अनेक ताकतों को बढ़ाने में अपना स्वार्थ नहीं है। और इसकी खातिर जिनको छोड़ना पड़े उनको छोड़ना त्याग भी नहीं है। यह सब तो अपने से ठीक ठीक काम लेना है। अपने से ठीक ठीक और पूरा काम लेना ही धर्म है। कबीर की इस बात की कि हथेली पर सर रखकर आओ तो ईश्वर मिलेगा, यह अर्थ नहीं है कि रेल के आगे कट मरो। उसने खुद भी तो ऐसा नहीं किया था। उन दिनों रेल न सही तो बनारस के किनारे गंगा तो थी। नेक बनने में

(शेष पृष्ठ २४ क कालम २ पर)

SHIP BRAND FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

हिन्दुस्तान, सीलोन, और विदेशमें लोकप्रिय

सुंदर, स्वदेशी पक्के रंगके मज़बूत और कीमतमें सस्ते

सफ़ेद ड्रिल
" ट्रविल
" लौंग क्लाथ
साटिन ड्रिल

★

टेबल क्लाथ
सफेद ६०" व ६८"
शर्टिंग क्लाथ
सफेद ५४", ६०"
व ५८" की साईज़में

★

कैसमेंट क्लाथ
अन्य कई रंगोंमें
दोसूती क्लाथ
सफेद व रंगीन
टौवल, नैपकिन
वगैरह

जहाज छाप

जहाज छाप ब्लिच्ड क्रेप

पर्दे, खोल, स्त्री, पुरुष और बच्चोंके
कपड़ों के लिए

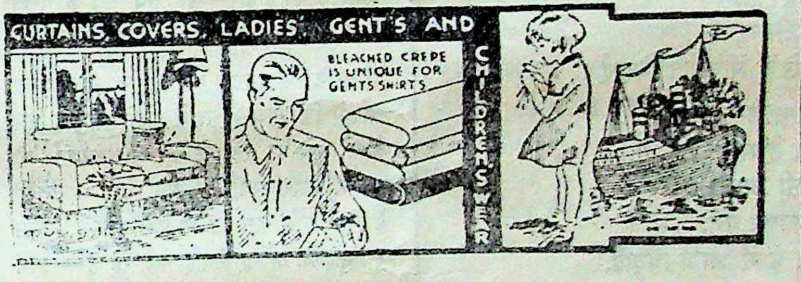
CURTAINS, COVERS, LADIES', GENT'S AND
CHILDRENSWEAR
BLEACHED CREPE IS UNIQUE FOR GENTS SHIRTS

"जहाज छाप" कपड़ा बरतिये—शर्टिंगके लिए
'जहाज छाप' ब्लिच्ड क्रेप उत्तम कपड़ा है

कौटन क्रेप	पापलीन
सफेद व अन्य ३४ प्रकार के पक्के रंगों व अन्य कई रंगोंकी डिज़ाइन में।	सफेद व अन्य २४ प्रकारके पक्के रंगों, आकर्षक छपाई व अन्य रंगोंकी डिज़ाइन में।

अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डालने व मित्रों तथा सबंधियों में अपने प्रति आदर भाव उत्पन्न करानेके लिए जहाज मार्का कपड़ा बरतिये।

खाकी ड्रिलस, ड्रिलस व
मरसीराईज़ डाईडः—
ब्लिच्ड पापलीन
ब्लिच्ड क्रेप
" कोटिंग
" ड्रिल
" साटिन ड्रिल
" लौंग क्लाथ
" स्ट्राइड शर्टिंग

जहाज छाप

'जहाज छाप' कपड़ा सुंदर, स्वदेशी और सस्ता है

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons

Head Office——AMRITSAR
Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

होली को हुड़दंग

"डरयो मतीरे और धड़ींदा"को सद्उपयोग

●

● लेखक—राजस्थान केसरी कुंवर चांदकरणजी शारदा ●

आजकाल पंचायति पार्टीवाला लोग बाग विवाहका अवसर पर घणी शिकायत करे हैं कि ज़मानो घणो खोटो आ गयो और सुधारकॉंकी बण आ गई। व्याव कीकर करां? ५० से बत्था आदमी तो जिमा नहीं सकॉं हॉं। पण म्हारी राय में आ वैको शिकायत फजूल है। क्योंकि आपांके तो जदां व्याण्या घरें जीमबा आवे है तो पहली ही धड़ींदी गाती आवे है। वे गावे है "फलाण पोल धड़ींदो आयो। फलाणकी छाती फाटी। डरयो मतीरे।"

"घीर खीचड्यां जीमर आया।"
"पाणी तो म्हैं जाय पीस्यां।"
"डरयो मतीरे।"

जदां आपांका बडेराही पहली सूंदी इस्या गीत गवा २ कर डर मिटा दियो। तो अब कन्ट्रोल और ५० से बत्था नहीं जीमवाका रेशनिंग की शिकायत करवो तो फजूल है। आप आपका घरांसे जीम चूंठ आकर विवाह में शामिल होणे चाहिजे और घरा जाकर पाणी पीलेणो चाहिजे। व्याहीजीने जरा भी ई रेशनिंग का जमानामें दुःख नहीं देणो चाहिजे। क्योंकि ओ तो मारवाड है। और जगहां तो खाद्य सामग्रीपर रेशनिंग और कन्ट्रोल चाल्यो है। आ उंदाला का दिनां में पाणी पर भी रेशनिंग और कन्ट्रोल हो जावे तो कोई अचरज नहीं। पालीकरी अखिल भारत वर्षीय माहेश्वरी महासभाका प्रधान स्वर्गवासी राय साहब कोडीमलजी माल. तो इतरा सरकारका भक्त हा कि वे ई रेशनिंग और कन्ट्रोल की स्कीम ने इतरा बरसां पहिली ही जातिमें जारी करदी ही। बैंका रचित "शीलाभरण" नामक पुस्तकमें वे लिख्यो है और वे ई टेरने बहुत उत्साह व प्रेमसे गाता हा।

"आछा नहीं लागे कंठी डोरडा
बिन जाति उन्नति।
आछा नहीं लागे कंठी डोरडा"
थे जाणों म्हें न्यात जिमावां। करां न्यातकी सेवा।
जिमा २ कर न्यात बिगाड़ी
खुवा ज़हर का मेवाजी।
नहीं जाति उन्नति।
आछा नहीं लागे कंठी डोरड़ा"

खैर! सरकारकी कृपासे सोनोही कोनी रहे थो अब सो कंठी, डोरा, गेणा गांठांको रिवाज दिन २ लोप होतो जाय छो।

जिमावा झुठावाको रिवाज भी सरकारका डंडाका जोरसे उठ ही गयो। अब तो "राधे गोविंद गावो और तालीया बजाओ।" इंण प्रकारसे पुराण गीत गावा वाली "डरयो मतीरे" वाली लुगायाँ और सुधारक गीत गावा वाला दोनूंही ई बात पर सहमत है कि न्यात नहीं करणो। फजूल खर्च नहीं करणो। और सरकार हिंदकी रेशनिंग और कन्ट्रोलकी आज्ञा मानकर घरमें पैइस्यो को पैइस्यो बचाणो और सरकारको राजभक्त कहवाणो। और भारत रक्षा कानूनका भयंकर भूतसे भी बच जाणो। कितरी अछी बात है।" अबके होलीका हुड़दंग मैं ओही तमाशो रह्यो।

जो "धड़ींदा" और जी डरयो मतीरे" गीत की सुधारक लोग हंसी करता है बींसें ही आप काम सरवा लाग गयो। प्रभु की अपार माया है।

बिदाई-गीत

तुम कहते हो जाने दो पर, कैसे दूं मैं आज बिदाई।
मूकध्वनि, करुणामयस्वर
उन्मनसा मन, औ सूनापन,
केवल एक सहारे पर तो–
अवलंबित है यह जीवन,
कंपित देह सिसकती आहें, कैसे दूं में आज बिदाई।

पागलसा अंतर-रोता है
कुछ भूला-भूलासा है मन,
प्रति पल सिहरनसी उठती है
कुछ लगता है, एकाकी पन,
रोक नहीं पाता हूँ आंसू, कैसे दूं में आज बिदाई,

नित्य प्रतीक्षा करते करते
जब मिलने की बेला आई,
तब कहते हो जाने दो अब
पर-कैसे दूं मैं आज बिदाई,

— 'भ्रमर'

आर्थिक योजना बनाम गांधीजीका मानववाद

(पृष्ठ ९ का शेष)

उन पर किसीका एकाधिपत्य नहीं होना चाहिये। इस तरह संरक्षणका अधिक भार आम जनता पर ही अधिक पड़ेगा, तब उद्योगोंका लाभ कुछ धनवानों की जेबोंमें जाना न्यायसंगत नहीं कहा जा सकेगा।

ग्रामोद्योग के सम्बन्ध में व्यवसायपतियों की ओर से यह सन्देह प्रकट किया जा सकता है कि जब काम किसी निजी लाभ की आशा के बिना होगा तो योग्य व्यक्तियों को उसमें काम करने की कुछ दिलचस्पी न होगी। मेरी राय में भारत के निःस्वार्थभाव व निष्काम सेवाओं के इतिहास को देखते हुए तो यह सन्देह उठाना ही नहीं चाहिये। पश्चिमके सम्बन्धमें भी यह विचार गलत ही है। युद्धों की अपेक्षा लोगों को शान्ति का ध्येय अधिक अपील करता है। दुनिया के सब काम केवल पैसे के लिये नहीं किये जाते हैं। आखिर यूरोप के सिपाही जो आज अपने घर द्वार धन्धेको छोड़कर फौज में थोड़ी-सी तनख्वाह पर नौकरी करते हैं, वह क्या पैसे के लिये ही? रूस का अद्भुत संगठन हमारे सामने है ही—वहाँ सब सब के लिये काम करते हैं—क्या केवल पैसे के लिये ही?

इसके साथ-साथ हमें यह न भूल जाना चाहिये कि आज भारत में लाखों स्त्रीपुरुष ऐसे हैं जो भूखे पेट रह रहे हैं और भारत की समूची मध्यम श्रेणी के लोग ऐसी हालत में हैं कि उनके पास जो भी कुछ पूंजी है, उससे वे बमुश्किल अपना निर्वाह चला रहे हैं—उसमें से एक पाई भी वे कहीं दे नहीं सकते। ऐसी दशा में व्यवसायपतियों द्वारा १० हजार करोड़ की योजना का स्वप्न लेना एक अजीबसी चीज़ ही मालूम पड़ती है। अन्य देशों की तुलनामें भारत के आर्थिक साधन बहुत ही परिमित हैं। १५ वर्षीय योजनाकारों ने यह नहीं बताया है कि उन साधनों का उपयोग किस प्रकार किया जायेगा। उन्हों ने यह भी स्पष्ट नहीं किया है कि उसमें समस्त जनता का क्या भाग रहेगा? यदि समस्त साधनोंका उपयोग नहीं किया जायेगा और नये उत्पादनमें समस्त जनता का तुल्य भाग न होगा तो योजनाको आम जनतासे पूर्ण सहयोग तथा प्रोत्साहन की आशा न रखनी चाहिये।

भारतके सम्बन्धमें किसी भी योजनाको बनाते वक्त सर्वप्रथम भारत की वर्तमान स्थितिका ध्यान रखना होगा। भारतमें आज आर्थिक अव्यवस्था अपनी चरम सीमा पर पहुँची हुई है। युद्ध ने बहुतों को मार डाला है, परन्तु हमें जिन्दा बचे लोगों का स्वास्थ्य सुधारना होगा, जो कि पर्याप्त पोषण के अभाव से गिर गया है। चीजों के दाम बड़े बेतरतीब और ऊँचे हैं। मेरा विश्वास है, बहुत लम्बे काल तक ये कीमतें नीचे नहीं आयेंगी। लोगों पर करों का भरकम बोझ लाद दिया गया है।

आयात और निर्यात व्यापार भारतीयों के हाथों से निकल कर आज विदेशियों के हाथ में चले गये हैं। युद्धकाल में भारतीय जनता को विदेशी सामान १० से २० गुना अधिक कीमतों पर खरीदना पड़ रहा है, पर भारतीय माल विदेशों में रुपये में २ से ३ आना दर पर ही भेजा गया। निर्यात नियंत्रण, लायसेन्स, मालडिब्बा नियंत्रण, जहाज़ नियंत्रण और विदेशियों को अन्य सुविधाओं आदि के कारण भारतीय व्यापारियों को भारत में बनाया अपना माल बहुत ही नीची दर पर बेचने को बाधित होना पड़ा है। यदि उन्हें भी विदेशियों की तरह माल बेचने की पूरी सुविधा तथा आज़ादी मिली होती तो वही माल विदेशों को बड़ी ऊँची दर पर भेजा जा सकता था।

भारत की जनता की देहमेंसे मॉंस-चर्बी सूख गये हैं अब तो वहाँ बस सूखी हड्डियां बाकी हैं। लोग सूखकर कांटा हुए जा रहे हैं। भारतका पशुधन छीजता जा रहा है, देहमें और संख्यामें। भारतके हरेभरे जंगल भारी संख्यामें अन्धाधुन्ध काट डाले गये हैं जिससे पशुओं पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। भारतके भलेके लिये जो योजनायें बनें उनमें इन सबके सुधार करनेका ख्याल किया जाना चाहिये। यह सब काम कुछ साधारण नहीं है।

इंदोर राज्य में अन्न परिषद

इंदोर। देशव्यापी अन्न संकट के साथ साथ इंदोर राज्य में सन १९४२ के आरम्भ से ही अन्न का कष्ट है। इसके निवारण के लिए इंदोर राज्यप्रजामंडल एक अनाज परिषद का आयोजन कर रहा है। प्रजामंडल इस सम्बन्ध में राज्य के प्रत्येक जिले और परगने की स्थिति की जांच करा रहा है जिससे परिषद में उस पर विचार करके जनता का कष्ट दूर करने का प्रयत्न किया जा सके। इस परिषद में सभाबन्दीकानून के कारण निमंत्रित व्यक्ति ही सम्मिलित होंगे। परिषद के कार्यक्रम को पूरा करने के लिए श्री. एन. द्रविड वकील, लाभचंद छजलानी और रामेश्वरदयाल जी तोतला संयोजक की एक समिति बना दी गई है। नागरिक स्वतंत्रता पर लगी हुई रुकावटों को दूर करने के लिए एक नागरिक स्वतंत्रता परिषद भी बुलाई जा रही है।

मेवाड़ में राजस्थान भील विद्यापीठ

उदयपुर। भील सेवा संघ के प्रधान श्री. बल्वंतसिंह जी मेहता के हाथों स्थानीय आर्यसमाज भवन में राजस्थान भील विद्यापीठ की स्थापना की गई है। इसमें ३४ विद्यार्थी भर्ती हो चुके हैं।

गुलाबपुरा में विक्रम द्विसहस्राब्दि के उपलक्ष में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिसमें म. गांधी और पं. जवाहरलाल नेहरू के सम्बन्ध में एक गीत गाये जाने पर अ० सुपरिन्टेण्डेण्ट ने सभापति को उसे बन्द करने का हुक्म दिया। इस बेजा दस्तन्दाजी का विरोध किया गया। अन्त में अ० सुपरिण्टेण्डेण्ट के दुराग्रह के कारण सम्मेलन भंग कर दिया गया। यह अपने ढंग की एक ही घटना है।

कौन क्या कहता है ?

भारतीय क्रांति और युद्ध

विख्यात अमेरिकन लेखक और भारतीय स्वाधीनताके प्रबल समर्थक जान गुन्थरकी पत्नी फ्रैंसेस गुन्थर की 'भारतमें क्रांति' नामक पुस्तक शीघ्रही प्रकाशित हो रही है। इसमें उन्होंने भारतीय क्रांतिको द्वितीय महासमरकी महान घटना बताते हुए भारतीय स्वाधीनताका जोरोंसे समर्थन किया है। अपने पतिके साथ १९३८ में आप भारत पधारी थीं और महात्मा गान्धी एवं पंडित जवाहरलाल नेहरूसे मिली थीं।

अपनी पुस्तकमें श्रीमती गुंथरने लिखा है—मित्र राष्ट्र इस क्रांतिको नष्ट करनेके लिए प्रयत्नशील हैं। उनका यह अड़ंगा अनिष्टकर है। यह भारतको क्रांतिकारी गणतंत्रसे खींचकर फैसिस्ट निराशामें डाल देगा। भारत अपनी स्वतंत्रता प्राप्त करनेके लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है। भारतीयही अपनी यह स्वाधीनता प्राप्त करेंगे। मित्र राष्ट्र एवं खुद इंग्लैण्डका लोकमत ब्रिटिश सरकारको एक प्रतिनिधिमूलक भारतीय सरकारको सत्ता हस्तान्तरित करनेके लिए बाध्य कर सकता है। ब्रिटिश परराष्ट्र नीतिमें तदनुकूल परिवर्तन होना एक क्रांतिसे कम न होगा। नीतिमें इस प्रकारके बुनियादी परिवर्तनका अर्थ होगा—

(१) अविलम्ब भारतकी स्वाधीनताका स्वीकार किया जाना। (२) चीनमें अतिरिक्त प्रादेशिक अधिकारोंका बिना शर्त परित्याग (हांगकांग और कोलूनका वापस किया जाना भी शामिल है) (३) ब्रिटिश आर्थिक नियंत्रणके अन्तर्गत विदेशोंके राष्ट्रीय साधनोंको राष्ट्रकी सम्पत्ति बनाना। (४) गगन और जल शक्तिका पुनर्वितरण। प्रश्न उठता है कि यदि इस प्रकारका परिवर्तन हो तो ब्रिटेनकी सुरक्षाका क्या होगा?

स्पष्टतया मित्र राष्ट्रों एवं ब्रिटिश कामन्वेल्थको इंग्लैण्डकी सुरक्षाकी गारंटी करनी होगी। विश्व के समतुलनके दृष्टिकोणसे ब्रिटेन का अपनी परराष्ट्र नीति में इस प्रकारका परिवर्तन कोई बहुत बड़ी बात न होगी।

ब्रिटेन प्रथम एवं द्वितीय महासमरके ढंगके महासमरमें अमेरिका और अपने उपनिवेशोंकी सहायता बिना अकेले अपनी रक्षा कर सकेगा, यह वर्तमान युद्धकी समाप्तिके बाद निस्संदेह एक विवादास्पद प्रश्न बनेगा। अमेरिका एवं ब्रिटिश कामन्वेल्थके विभिन्न देशोंमें इस समय लोगोंका जो रवैया दीख पड़ता है उसका यह तकाजा है कि ब्रिटेन अपनी परराष्ट्रनीतिमें परिवर्तन करे।

भारतमें ब्रिटिश व्यापार

आगे चलकर श्रीमती गुंथर कहती हैं कि—भारतके हाथसे निकल जानेसे ब्रिटेनके लोगोंको आर्थिक हानि नहीं होगी। भारतमें ब्रिटेनकी जितनी पूंजी लगी हुई है, वह विदेशोंमें लगी हुई उसकी सब पूंजीकी चौथाई है और भारतके साथ उसका व्यापार, जहाज रानी और बैंकिंग कारबार सबका एकपंचमांश है। अस्तु ब्रिटेनके अधिवासियोंके आर्थिक जीवन पर भारत हाथसे निकल जानेका कोई बड़ा असर नहीं पड़ेगा। ब्रिटिश जनसाधारणको भारत पर ब्रिटेनके अधिकारसे कोई वास्तविक लाभ नहीं हुआ। भारत हाथसे निकल जानेसे ब्रिटेनको कुछ असुविधा हो सकती है किन्तु वह थोड़े ही समयमें उसे दूर कर अपनी स्थिति ठीक कर सकता है।

क्रिप्स प्रस्ताव

इसी पुस्तकमें क्रिप्स प्रस्तावका विवेचन करते हुए श्रीमती गुन्थर ने कहा है:—ब्रिटिश सरकारके गणतंत्रके दुगुने स्टैण्डर्ड और मि. चर्चिलके पुराने साम्राज्यवादी विश्वासके कारण मि. क्रिप्स असफल हुए थे न कि भारतीय गणतंत्रके नेताओंके अनुचित और कड़े रुख के कारण।

'जिन्ना अंग्रेजोंकी सृष्टि'

हिन्दू-मुस्लिम समस्याका विश्लेषण करते हुए उन्होंने कहा है—इस प्रश्नका अंग्रेजों ने पोषण किया है और इसे बढ़ानेका श्रेय भी उन्हींको है। साम्राज्यवादी नीतिके यन्त्रके रूप में इसे प्रोत्साहन प्रदान किया गया है।

मि. जिन्ना अंग्रेजोंकी सृष्टि हैं ! बलिदान और त्याग करनेवाले कांग्रेस आन्दोलनकी अपेक्षा मुस्लिम लीगमें, जिसमें ब्रिटिश स्वार्थोंद्वारा प्रदत्त सुअवसर हैं, मि. जिन्नाकी निजी महत्वाकांक्षाओंके लिए अधिक विस्तृत क्षेत्र है। हिन्दू मुस्लिम मतभेदको यह खुला प्रोत्साहन गृह युद्ध पैदाकर सकता है। भारतपर अपना शासन कायम रखनेके लिए यह ब्रिटिश सरकारकी एक चाल है।

अमेरिका और भारत

आगे चलकर श्रीमती गुंथर कहती हैं:—भारतीय स्वाधीनता और युद्धोत्तर अन्तर्राष्ट्रीय संबन्धके प्रश्नके विषयमें ब्रिटेनके प्रति अमेरिकाका उत्तरदायित्व भारत के प्रति उसके उत्तरदायित्वसे कम नहीं है। अमेरिकाको चाहिए कि वह ब्रिटेनको यह विश्वास दिला दे कि वह उसकी पीठ पीछे भारतीय व्यापार पर एकाधिकार स्थापित नही करेगा तथा संयुक्त राष्ट्र मिलकर विश्वव्यापार का संतुलन करें।

रूस और बाडोग्लियो सरकार

अप्रैल मासके विशाल भारतमें 'सम्पादकीय विचार' स्तंभमें उपर्युक्त शीर्षकसे एक महत्वपूर्ण टिप्पणी प्रकाशित हुई है। हम अपने पाठकोंकी जानकारीके लिए उसे उद्धृत कर रहे हैं: रूस द्वारा अकस्मात इटलीकी बाडोग्लियो सरकारके स्वीकार कर लिये जानेसे मित्र राष्ट्रों और संसारके फैसिस्ट विरोधियोंमें बड़ी हलचल मच गयी है। स्मरण रहे, ७ मार्चको बाडोग्लियो सरकारने ब्रिटेन, अमेरिका और रूससे स्वीकृति की प्रार्थना की थी। ब्रिटेन और अमेरिकाने इसे स्वीकार नहीं किया जब कि रूसने ११ मार्चको अपनी स्वीकृति दे दी और १४ मार्चको सरकारी तौरपर इस स्वीकृतिकी घोषणा कर दी। इस संबंधमें पूछे गये प्रश्नोंके उत्तरमें अमेरिकन राज्य सचिव मि. कार्डेल हल और ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव मि. इडेनने कहा है कि रूसने ऐसा करनेसे पहले उनसे कोई सलाह मशविरा नहीं किया तथा उनकी सरकारें बाडोग्लियो सरकारको स्वीकार करनेको तैयार नहीं है।

इस संबंधमें सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि मास्को द्वारा बाडोग्लियो सरकारकी स्वीकृतिकी घोषणा की जानेके २ दिन पहले ही (१२ मार्च) नेपल्सके गैलेरिया–उम्बर्टोके मैदानमें कम्यूनिस्टों, सक्रिय कार्यकर्ताओं, समाजवादियों और प्रजातंत्रवादियों द्वारा आयोजित स्वतंत्र इटलीकी सबसे बड़ी आम सभा हुई थी, जिसमें सर्व सम्मतिसे शाह इमैन्युअल और मार्शल बाडोग्लियोके हटाये जाने तथा असली फैसिस्ट विरोधी दलोंकी सरकार कायम की जानेकी मांग की गयी थी। इटालियन लोकमतके इस प्रबल प्रदर्शन की उपेक्षा कर स्टेलिनने कमसे कम यह सिद्ध कर दिया है कि वह फैसिज्मके अंतके लिए नहीं बल्कि अपने देशसे बर्बर नाजियोंको खदेड़ भगानेके उद्देश्यसे लड़ रहा है। पिछले ५–६ वर्षों की रूसकी वैदेशिक नीतिका जिन्होंने बारीकी के साथ अध्ययन किया है उन्हें यह बतलाने की जरूरत नहीं है कि रूसका प्राथमिक मुख्य हेतु राष्ट्रीय सुरक्षा ही रहा है। उसने हिटलर जैसे भयंकर नाज़ीसे तटस्थता संधि तक की। किन्तु अंतमें जर्मनीने उस पर धावा बोल ही दिया। राष्ट्रीय सुरक्षाके दृष्टिकोणसे भी बाडोग्लियो सरकार की स्वीकृतिका औचित्य सिद्ध नहीं किया जा सकता। बाडोग्लियो के लज्जास्पद काण्ड किसीसे छिपे नहीं हैं। उसकी सरकार में जितने व्यक्ति हैं वे उन प्रमुख फैसिस्टोंमेंसे हैं, जिन्होंने वर्तमान युद्धसे लाभ उठाने—के लिए अपने देशको समराग्निमें झोंका। 'इजवेस्तिया' (रूस सरकारका मुखपत्र) की यह दलील कि रूसको इटलीके मामलेमें अलग रखा गया है, ठीक हो सकती है पर इसका उत्तर स्टालिनका कदम तो हर्गिज नहीं है। इससे फैसिज्मके पुनर्जन्मके आसार जरूर स्पष्ट हो चले हैं।

'बंगाल हिन्दी मंडल' का समारोह

(पृष्ठ ५का शेष)

एकेडेमी के अनेक पुरस्कारोंने बड़े सुन्दर साहित्य का निर्माण कराया है। 'बंगाल हिन्दीमंडल' ने आज इसी पथ का अनुसरण करने का विनम्र प्रयास किया है।

मंडल की दृष्टि में सत्साहित्य किन्हीं भी दामों खरीदा या बेचा नहीं जा सकता। यह पारितोषिक तो हमारे साहित्यकारों के प्रति "पत्र पुष्प" के रूप में कृतज्ञता और श्रद्धा के प्रतीक मात्र हैं। उन्हें श्रद्धापूर्वक पत्र-पुष्प भेंट करते हुए हमें वास्तव में तो अपने आपको गौरवान्वित और कृतकृत्य समझना चाहिए।

जस्टिस विश्वास जो आजके सभापति हैं, उनका तो परिचय क्या दूँ, आप लोग उन्हें सब जानते ही हैं। ऐसा कोई भी सामाजिक या साहित्यिक कार्य न होगा, जिसमें आपका सहयोग न रहता हो। मंडल भी आपके सौजन्य का रस ले चुका है और समय-समय पर आपके परामर्श का लाभ उठा चुका है। आप बंगाल और बंगाल भाषा के हिमायती होकर भी प्रान्तीयता के झगड़ों से परे हैं और हिन्दी भाषा के तो खास प्रेमी हैं।

बंगाल हिन्दी मंडलने डा. देवराज एम. ए. को उनके "पूर्वी और पश्चिमी दर्शन" पुस्तक पर, श्री पं. वासुदेव उपाध्याय एम. ए. को उनकी रचना "विजयनगर साम्राज्यका इतिहास" पर तथा श्री हरिकृष्ण 'प्रेमी' को उनके "विषपान" नाटक पर पारितोषिक देने के लिए आज यह छोटा-सा समारोह किया है। यह पारितोषिक क्रमशः १२५०) रु., १०००) रु. तथा ५००) रु. के हैं। ये तीनों ही सज्जन अपने-अपने विषय के अच्छे प्रख्यात लेखक हैं।

मंडल लेखकों को उचित रायल्टी देकर पारितोषिक प्राप्त पुस्तकों को प्रकाशित करने का भी विचार कर रहा है। हिन्दी-संसार से यथेष्ट प्रोत्साहन मिलता रहा, तो बंगाल हिन्दी मंडल अपने विनम्र प्रयत्नों में सफल होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

आगामी वर्ष ७ पुरस्कार

मण्डल ने आगामी वर्ष के लिये निम्न विषयों पर पुरस्कार देने का निश्चय किया है:—

१—१२५० रु. का एक पुरस्कार ऐतिहासिक आधार पर हिन्दू सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा का विकास। ३०० पृष्ठ

२—१२५० रु. का एक पुरस्कार ऐतिहासिक आधार पर हिन्दू विवाह का विकास। ३०० पृष्ठ

३—१००० रु. का एक पुरस्कार ग्रामनृत्य और आमोद प्रमोद। भारत में प्रचलित ग्रामनृत्यों पर शास्त्रीय रचना। ५०० पृष्ठ

४—१५०० रु. का एक पुरस्कार हिन्दू दर्शन और बौद्धदर्शन पर तुलनात्मक विचार।

५—५०० रु. का एक पुरस्कार ऐतिहासिक नाटक।

६—२५० रु. का एक पुरस्कार राजस्थानी मुहावरे।

७—२५० रु. का पुरस्कार राजस्थानी कहावतें।

नियमों का विवरण निम्न पते से मिल सकेगा—

मंत्री
बंगाल हिन्दी मण्डल
C/o हरिजन कॉलोनी
किंग्सवे, दिल्ली

बम्बईमें रिलीफ केन्द्र

मारवाड़ी सम्मेलन, बंबई ने गत १४ अप्रैल शुक्रवार को शहरमें हुए भयानक विस्फोट में आहत एवं बेघरबार लोगों को सहायता पहुंचाने के लिए रिलीफ केन्द्र खोले हैं और इस कार्यमें ३० हजार रु० व्यय करने का निश्चय किया है।

सौन्दर्य

श्री रमेन्द्रनाथ चक्रवर्ती द्वारा

'साड़ी ओढ़े नारी' का उपरोक्त चित्र श्री रमेन्द्र नाथ चक्रवर्ती की कृति है।

आप कलकत्ता गवर्नमेण्ट स्कूल आफ आर्ट के स्थानापन्न प्रिन्सिपल हैं और इंग्लैण्ड तथा यूरोप महाद्वीपमें एक सुप्रसिद्ध कलाकार के नाम से विख्यात हैं।

सुविभूषित व्यक्ति के लिए आकर्षक और सुन्दर वस्त्र प्राथमिक आवश्यकता है। जो व्यक्ति उपयुक्त वस्त्र व्यवहार करते हैं वे सब जगह अपने प्रति अच्छी धारणा उपस्थित करते हैं।

भारत की विशाल मिलों में परिगणित हमारी काटनमिल्स इसी अवसर के लिए साड़ियाँ, धोतियाँ और कमीज का कपड़ा बुनने में वर्षों से परिपूर्णता प्राप्त कर रही हैं।

सुदृढ़ और बारीक बुनाई सौन्दर्य-वृद्धि के लिये परमावश्यक है और केशोराम ने जो आधुनिक डिजाइन निर्माण की हैं, वह वस्त्र निर्माताओं के चातुर्य और स्टाइल में चार चाँद लगाते हैं।

केशोराम

श्रेष्ठ सूती वस्त्र

शेखावाटी सम्मेलनः प्रान्तीय व्यापार संघ स्थापित

झुंझुनूं। कलकत्ते के सुप्रसिद्ध व्यवसायी और उद्योगपति महनसर निवासी सेठ रामेश्वरलालजी नोपानी के सभापतित्वमें शेखावाटी व्यापारी सम्मेलन समारोह के साथ सम्पन्न हो गया। पहिले दिन वर्षाके कारण रंगमें भंग होने और दूसरे दिन बादलों के घिरे रहने पर भी सम्मेलन उत्साह के वातावरण में हुआ। बाहर के प्रायः सभी स्थानों के स्थानीय व्यापारी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे.। दिल्ली से विश्वमित्र सम्पादक श्री सत्यदेवजी विद्यालंकार और सेठ बिहारीलालजी तुलस्थान, जयपुर से काटजू डायरेक्टर इंडस्ट्रीज कामर्स विभाग जयपुर, लोकवाणी के सम्पादक श्री राजेन्द्रशंकर भट्ट आदि की उपस्थिति उल्लेखनीय है। कलकत्ता से सभापति के साथ प्रसिद्ध समाज-सुधारक श्री गंगाप्रसादजी भौतिका का पधारना भी उल्लेखनीय रहा। पहिले दिन सवेरे सारे शहरमें सभापति का जलूस निकाला गया। लोगों ने बड़े प्रेम से स्वागत सत्कार किया।

पहिले दिन रात को वन्देमातरम गान के बाद सभापति और स्वागताध्यक्ष के सुंदर और सामयिक भाषणों के अलावा श्री. काटजू का भाषण बहुत सामयिक रहा। आपने राज की असफलताओं को स्वीकार करते हुए, रसद की नयी व्यवस्था का आशापूर्ण शब्दों में उल्लेख किया। दूसरे दिन लगभग १५ प्रस्ताव पास किए गए। राष्ट्रमाता कस्तूर बा की मृत्यु तथा स्मृति कोष तथा नेताओं की रिहाई और गतिरोध को दूर करने की मांग के बाद शेखावाटी के उद्योग धन्धों की ओर ध्यान देने की व्यापारियों और जयपुर सरकार से भी मांग की गयी। जकात की तात्कालिक कठिनाइयों को दूर कर वैधानिक ढंग पर उसकी व्यवस्था करने के लिए एक जांच कमेटी नियुक्त करने की मांग की गई। पोल सना की प्रथा को हटाने, पोस्ट पार्सल पर से जकात रद्द करने, यात्रियों की तलाशी न लेने और जकात कानून को प्रकाशित करनेका उल्लेख किया गया। शेखावाटी व्यापारी संघ की स्थापना करते हुए उसका विधान कार्यसमितिका चुनाव भी किया गया। सेठ रामेश्वरलालजी नोपाणी सभापति, बद्रीदास सोढ़ानी मंत्री, और सेठ जीवनरामजी टेकडीवालजी कोषाध्यक्ष चुने गए। अन्य प्रस्तावोंमें शेखावाटी को इलाका गैर माननेकी जयपुर सरकारकी दुर्नीति की घोर निन्दा करते हुए उससे तथा कन्ट्रोल की दूषित नीतिसे पैदा की हुई शिकायतोंकी विस्तारके साथ चर्चा की गई। अधिकारियों की अनैतिकता की ओर राज्यका ध्यान खींचा गया, अतिरिक्त आयकरको घातक, अनावश्यक और अवांछनीय बताकर हटानेका अनुरोध किया गया, सरकारी काम काजमें हिन्दीको अपनाने पर जोर दिया गया, सड़कोंके निर्माण तथा बरसाती पानीसे सिंचाईके लिए लाभ उठानेका आग्रह किया गया, रेलमें माल चोरी हो जानेकी निन्दा की गई, और समुचित व्यवस्थाके लिए अनुरोध किया गया वेजीटेबल पर पाबन्दी लगने पर जोर दिया गया और सीकरके व्यापारियों पर जकातके मामलेमें चलाए गए मुकदमेंकी निन्दा की गई।

हमारा राजस्थान
ART CORNER

(मारवाड़ी पब्लिसिटी ब्यूरो नयी दिल्ली द्वारा)

शेखावाटीकी भयानक उपेक्षा

शेखावाटी। व्यापारी सम्मेलन के सभापति सेठ रामेश्वरलालजी झुंझनू से अपने गांव होते हुए जयपुर में तीन दिन बिताकर उस दिन रात में दिल्ली होते हुए कलकत्ते के लिए रवाना हो गये। आप के जयपुर जाने का उद्देश्य सम्मेलन में स्वीकृत हुए प्रस्तावों और शेखावाटी की समस्याएं जयपुर के उच्च अधिकारियों के सामने पेश करना था। इन तीन दिनों में आप वहाँ के प्रायः समस्त अधिकारियों से मिले। प्रधान मंत्री सर मिर्जा इस्माइल, अर्थमंत्री श्री अमरनाथ अटल, इंडस्ट्रीज एण्ड कामर्स डिपार्टमेण्ट के श्री पी. एन् काटजू आदि के अलावा आप रेल्वे मैनेजर श्री गोण्डपा से भी मिले, स्थानीय व्यापारियों और जयपुर बैंक के बोर्ड की बैठकके लिए आये हुए महानुभावों से भी आपने विचार विमर्श किया और उनका ध्यान शेखावाटी की समस्याओं की ओर सम्मेलन में स्वीकृत हुए प्रस्तावों की रोशनी में आकर्षित किया।

दिल्ली से विदा होते हुए आपने एक पत्र प्रतिनिधि से बातें करते हुए जयपुर के अधिकारियों की उस सहृदयता एवं सहानुभूति की सराहना की जिससे उन्होंने आपकी सारी बातें सुनीं, लेकिन शेखावाटी के प्रति उनके रुख को अत्यंत खेदजनक और निराशापूर्ण बताया। आपने कहा कि सम्मेलनमें जब मैंने जयपुर अधिकारियों की इतनी अधिक शिकायतें सुनीं तब मैं समझता था कि उनकी कुछ कठिनाइयां होंगी। लेकिन जयपुर जा कर उनसे बातचीत करने पर मुझे विश्वास हो गया कि अधिकांश शिकायतें बिल्कुल ठीक हैं और शेखावाटी की भयानक उपेक्षा की जा रही है। शेखावाटी को इलाका गैर मानने की भावना के साथ साथ उसके बारेमें बहुत सी भ्रमपूर्ण धारणाएं उनको घेरे हुए हैं।

जयपुर सरकार द्वारा लगाये गये अतिरिक्त आयकर को अनावश्यक, अवांछनीय और औद्योगिक प्रगति के लिए घातक बताते हुए आपने कहा कि इससे राज्य की आमदनी भी तो नहीं बढ़ेगी। अंत में आपने कहा कि व्यापारी सम्मेलन में कायम किये गये शेखावाटी व्यापारी संघ को जागरूक रहकर जनता में अभाव अभियोगों के लिए सजीव आन्दोलन जारी रखना चाहिए।

श्रीमती जानकीदेवी प्रजामंडल की प्रधाना निर्वाचित

जयपुर। जयपुर राज्यप्रजामंडल के अगले वर्ष के लिए बाकी सब नामों के वापस ले लिए जाने से स्व. देशभक्त सेठ जमनालाल जी बजाज की धर्मपत्नी श्रीमती जानकीदेवी बजाज प्रधाना निर्वाचित कर ली गयीं।

राजपूताना मध्यभारत कार्यकर्ता सम्मेलन

उदयपुर—राजपूताना मध्यभारत कार्यकर्ता सम्मेलन की दूसरी बैठक गोविन्दगढ़के बाद उस दिन उदयपुरमें इंदोरके श्री. ए. वी. सर्वटे के सभापतित्वमें हुई। देशकी राजनैतिक परिस्थितिके साथ साथ जोधपुरकी स्थिति पर खास तौरपर विचार किया गया। गांधीजीके नेतृत्व पर पूर्ण विश्वास प्रकट करते हुए देशके स्वतंत्रताके आन्दोलनमें सहयोग देनेका निश्चय किया गया। जोधपुरके नजरबन्द श्री राधाकृष्णजी जौहरी के अनशनके लिए चिन्ता प्रकट की गई। वहां की परिस्थितिके सम्बन्धमें जोधपुर सरकारके पास एक शिष्टमंडल भेजनेका निश्चय किया गया। सम्मेलनका विधान तैयार करनेके लिए एक उपसमिति नियुक्त कर दी गई। समस्त राज्यों की राष्ट्रीय शक्तियोंको बढ़ाने के लिए वहां की राजनीतिक संस्थाओं से निकट सम्पर्क कायम करने का निश्चय किया गया। मेवाड़ सरकार से प्रजामंडल पर से रोक हटाने की अपील की गयी। सम्मेलन में राजपूताना तथा मध्यभारत के सभी प्रतिनिधि उपस्थित थे।

बीकानेर। बीकानेर के सुप्रसिद्ध देशभक्त वकील श्री. मुक्ताप्रसाद जी का उनकी निवासभूमि अलीगंज में उस दिन स्वर्गवास हो गया। शोक में स्थानीय खादी भंडार एक दिन के लिए बंद रहा। सेठ रामगोपाल जी मोहता के सभापतित्व में एक सभा हुई। श्री. मुक्ताप्रसाद जी सन १९३० से राज्य से निर्वासित थे और निर्वासन में उनका स्वर्गवास हुआ।

ओलों से सर्वनाश

दिल्ली, पिछले दो तीन सप्ताह में राजपूताना मध्य भारत में प्रायः सर्वत्र वर्षा, आंधी और तूफान आने तथा ओले पड़ने के समाचार मिले हैं। इससे खेती को बहुत नुकसान पहुंचा है। तोरावाटी, शेखावाटी, सीकारवाटी और भरतपुर के आस पास वर्षा से विशेष क्षति हुई है।

जड़ियाजी की चिन्ताजनक हालत

इंदोर के प्रसिद्ध जनसेवक श्री. हजारीलालजी जड़िया की हालत पुनः चिन्ताजनक हो गई है। हाथ के नीचे बाजू के दूसरे भाग में पुनः पीप पड़ गया है। पांवल पाँव से मवाद का आना भी वैसा ही जारी है। वह चिकित्सा के लिए बम्बई ले जाये गये हैं।

प्रजामंडल जयंती

अलवर। अलवर राज्य प्रजामंडल की कार्यकारिणी की बैठक होकर १ से १५ अगस्त तक प्रजामंडल की जयंती मनाने का निश्चय किया गया है और जून के प्रथम सप्ताह में तिजारा में जिला राजनैतिक सम्मेलन करने का भी निश्चय किया गया है।

इंदोर में शोक

इंदोर। इंदोर के सर्वप्रिय राजनैतिक कार्यकर्ता और उत्साही सेवाभावी युवक श्री. रूखबचंद जावरेवाले का २८ वर्ष की आयु में बम्बई में स्वर्गवास होजाने से सर्वत्र शोक छा गया। आप पथरी के आपरेशन के लिए वहां गये थे। सफल आपरेशन होजाने के बाद भी दूसरे दिन आपका स्वर्गवास हो गया।

भरतपुर राज्य प्रजापरिषद

भरतपुर।—भरतपुर राज्य प्रजापरिषदकी कार्यकारिणीकी महत्वपूर्ण बैठक पिछले दिनोंमें हुई। उसमें परिषदके सदस्य बनाने की अन्तिम तिथि २१ मई और सभापति की नामजदगी की अन्तिम तारीख २५ जून नियत की गई। म्युनिसिपल उपचुनावमें कुछ भी भाग न लेनेका निश्चय किया गया।

राष्ट्रीय सप्ताहका समारोह

जयपुर। बांसा में १० अप्रेल को राष्ट्रीय सप्ताह के सिलसिलेमें श्री मुरादअली की अध्यक्षतामें एक सभा हुई। इसमें राजस्थान चर्खा संघ के मंत्री श्री बलवंत सांवलराम देशपांडे ने भाषण देते हुए ठिकानों की स्थितिका जिक्र किया और ठिकानेदारों को समय के साथ बदलने को और किसानों के अपने अधिकारों की पूर्तिके लिए निडर होकर कष्ट सहने की सलाह दी। राज बन्दियों के परिवारों के लिए १५१ रु० सहायतार्थ दिये गये। अमरसरमें भी उन्हें ४२५ रु० की थैली और मानपत्र भेट किए गए। दौसा में चर्खा दंगल और हरिजन बस्ती की स्वच्छताका आयोजन किया गया।

मेवाड़। मेवाड़ सरकार ने यद्यपि अभी प्रजामंडल पर से गैरकानूनी ठहराये जाने के प्रतिबन्ध को रद्द नहीं किया है, फिर भी सार्वजनिक सभाओं पर से प्रतिबन्ध हटा लिया है। यह आशा की जाती है कि प्रजामंडल पर से भी शीघ्र ही प्रतिबन्ध हटा लिया जायगा। सार्वजनिक सभाओं पर से रोक हटाये जाने से राष्ट्रीयसप्ताह का कार्यक्रम प्रायः सभी स्थानों पर विशेष उत्साह के साथ मनाया गया। भीलवाड़ा, गुलाबपुरा और उदयपुर में लगभग दो ढाई वर्ष बाद सार्वजनिक सभायें हुईं। कार्यकर्ता सम्मेलन के लिए पधारे हुए नेताओं के भी कुछ स्थानों पर भाषण हुए। चित्तौड़ और गुलाबपुरा में विशेष सभायें हुईं। राजस्थान चर्खा संघ के मंत्री श्री देशपांडे जी गुलाबपुरा पधारे जहां उनके सम्मान में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। मारवाड में: राजस्थान चर्खा संघ द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रायः सारे ही मारवाड़ में राष्ट्रीय सप्ताह मनाया गया। चर्खा संघ की सभी शाखाओं की ओर से खादी फेरी और खादी बिक्री का आयोजन किया गया। बीकानेर में पहिली बार राष्ट्रीय सप्ताह का आयोजन होकर खादी बेची गई। भरतपुर में खादी बिक्री के अलावा प्रजापरिषद के सदस्य भी बनाये गये। जयपुर में प्रायः सभी स्थानों में चर्खासंघ और प्रजामंडल के सहयोग से सप्ताह मनाया गया। अलवर में भी बहुत उत्साह रहा।

कमज़ोर, और कच्चे कागज़ों के पेकिंग से होनेवाली

अपने व्यवसायकी हानिको बचाइये

हमारा मज़बूत, चीमड़ और सुन्दर

गैंडा मार्का

बैम्बू पल्प का बना हुआ क्राफ्ट पेपर

आपकी मुसीबतों को दूर कर देगा

यह उच्चकोटि का
पेकिंग कागज़
है

भारतीय बाजारमें
आज इसका
प्रतिस्पर्धी नहीं

हमारी मिल वाटरप्रूफ कागज (Water Proof Craft Paper)
तथा हरेक किस्मका बोर्ड भी तैयार करती है।

एक बार इस कागज़ और बोर्ड का व्यवहार करनेपर
आप दूसरे पेकिंग कागज़ और बोर्ड का नाम न लेंगे

ओरिएण्ट पेपर मिल्स लिमिटेड

८, रायल ऐक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता

देश विदेशकी चर्चा

देश विदेशकी चर्चा
ART.CORNER

आसाममें जापानी दबाव

इम्फाल, कोहिमा और मणिपुररोडकी ओर जापानियोंका दबाव बढ़ता जाता है। मित्रपक्षके युद्धविशारदोंका कथन है कि पहिले जापानी फौजकी संख्या आदि का हमने जो अनुमान लगाया था, वह ठीक नहीं था। जापानी भारी तैयारीके साथ हमला कर रहे हैं, और मणिपुररोड रेल्वेस्टेशनकी ओर बढ़नेके यत्नमें हैं। टिड्डिमकी ओरसे मित्रसेनायें लगातार कूच करके बिना कोई खास नुकसान उठाये इम्फालकी किलेबन्दीमें सुरक्षित पहुँच गयी है।

द. पू. एशिया कमाण्डकी ताजा विज्ञप्तिमें सूचित किया गया है कि विशनपुरके पश्चिममें जापानियोंको सिल्चरके रास्तेके एक स्थानसे हटा दिया गया है। कोहिमाके सुरक्षित भागमें जापानियोंका भारी दबाव बढ़ा और उन्होंने दोनापुरकी ओर मित्रसेनाओंके खिलाफ जवाबी हमले किये, पर उन्हें पीछे ढकेल दिया गया। बर्मामें चीनी फौजें मौगांग कछारमें और भीतरतक घुस गयी हैं। आराकानके मोर्चेपर कोई उल्लेखनीय कार्यवाही नहीं हुई।

हवाई सदर मुकाम दिल्लीसे कलकत्ता

पू. हवाई कमाण्डके मेजर जनरल तथा संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाकी हवाई सेनाका सदर मुकाम नयी दिल्लीसे कलकत्ता क्षेत्रमें ले जाया गया है। इस परिवर्तनके फलस्वरूप मित्रोंके युद्धकार्यका केन्द्र रणभूमिसे हजार मील निकट आगया।

प्रशान्तका मोर्चा

मित्रसेनाके दूरतक जानेवाले लड़ाकू विमानों ने वाइवाक और सोईके माल पहुँचानेवाले केन्द्रपर बमवर्षाकी। न्यूगिनीक्षेत्रमें २८४ टन बम गिराये; कारोलियन द्वीप समूहपर २७ टन बम गिराये। एन्टडीपके पास एक जपानी बड़ा जहाज डुबाया गया।

सेवास्टोपोलपर रूसी घेरा

सभी मोर्चोंपर रूसी फौजें विजयप्राप्त कर रही हैं। रूमानियाकी ओर बढ़ती हुई लाल सेनाने कालासागरके माल्टा बन्दरपर, जो क्रीमियाके दक्षिणीतटमें दुश्मनका जबरदस्त अड्डा केन्द्र था, कब्जा कर लिया है। १५ अप्रैल कीं रातमें सेवास्टोपोल रेल्वे स्टेशन तथा बन्दरगाहपर भारी हमला किया गया। सेवास्टोपोलकी दिशामें अनेक नगरों पर रूसियोंका अधिकार हो चुका है। सेवास्टोपोल शहर लालसेनाके लिये केवल ३ मील रह गया है। लालसेनाने यद्यपि शहरको प्रायः घेर लिया है, परन्तु जर्मन सेनाओंके प्रत्याक्रमण बड़े पैमानेपर हो रहे हैं जिससे मालूम पड़ता है कि इस नगरके पतनमें बहुत विलम्ब लगजायेगा।

(बाद की खबर)

रूसी सेनाएँ २० अप्रैल के दिन सेवास्टोपोल में प्रविष्ट हो गयी हैं।

चांग-चर्चिल-रुजवेल्टका दिल्लीमें सम्मिलन ?

कतिपय जानकार क्षेत्रोंका अनुमान है कि जापानके खिलाफ मित्र-राष्ट्रोंके 'दक्षिण-पूर्वी एशिया कमाण्ड' की ताकत बढ़ाने और शत्रुपर शीघ्रही प्रचण्ड आक्रमण करनेकी एक योजनांपर विचार करनेके लिये दिल्लीमें ब्रिटेनके प्रधान मंत्री मि. चर्चिल, संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके प्रेसीडेंट रूजवेल्ट, और चीनके मार्शल चांगकाईशेक शीघ्रही मिलनेवाले हैं। इसमें वेटन, जनरल डगलस मैकअर्थर, एडमिरल निमिल्ज, जनरल स्टिलवेल, जनरल अरनौल्ड, कर्नल कौचरैन तथा कई अन्य बड़े फौजी अफसर और सैनिक-सलाहकार भाग लेंगे।

बंगालके दुर्भिक्षकी वास्तविकता

'न्यू स्टेट्समैन' के एक लेखमें कहा गया है कि मि. केसेने दुर्भिक्षके अन्त होनेके सम्बन्धमें जो आशावाद प्रकट किया है, वह भयंकर है। इस दुर्भिक्षके सम्बन्धमें भारत और व्हाइट हाल साधिकार ठीक खबरें नहीं देते थे, उसमें कुछ नहीं था, उसके बाद इसे कम बताया गया, फिर कहा गया कि दुर्भिक्ष नहीं है और अन्तमें मंजूर किया गया है कि केवल १० लाख क्षुधातुर मर गये। रोगसे और जो मरे होंगे उससे यह मृत्यु संख्या ३० लाखतक पहुंची होगी। जबतक मुद्रा-प्रसार रहेगा, तबतक देशमें क्षुधाकी अवस्था जारी रहेगी।

ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलमें परिवर्तन न होंगे !

अधिकारी तौरपर खबर मिली है कि मि. चर्चिल ब्रिटिश मन्त्रिमण्डलमें तत्कालिक परिवर्तन करनेकी कोई इच्छा नहीं रखते। ऐसी हालतमें ब्रिटिश परराष्ट्रसचिव मि. एन्थोनी ईडन वर्तमानमें अपने पदपर आसीन रहेंगे। यह भी पता चला है कि परराष्ट्र-सचिवके पदसे मि. ईड़नको हटानेका मि. चर्चिलने विचार किया था, ताकि ईडन कामन सभाके लीडरके कार्यपर अधिक ध्यान दे सकें; किन्तु अब अनेक कारणोंसे मि. चर्चिलने अपने मन्त्रिमण्डलकी पुनर्रचना का विचार त्याग दिया है।

निष्फल राजा-जिन्ना मिलन

श्री राजगोपालाचार्य श्री जिन्नासे मिले थे। श्रीराजाजीने मिलनेके बाद निराशाजनक शब्दोंमें लोगोंसे कहा, मि. जिन्ना से मिलनेसे मुझे कुछ भी हासिल नहीं हुआ। आपने पंजाबकी यूनियनिस्ट मिनिस्ट्रीकी प्रशंसा की।

बेमौसमी वर्षासे यू. पी. में तबाही

युक्तप्रान्तके गवर्नरने घोषित किया है कि बेमौसमी बारिश होनेके कारण 'रबी' की फसलको जो व्यापक क्षति हुई है, उसके कारण प्रान्तीय सरकारने निश्चय किया है कि जमींनदारों व काश्तकारोंसे युद्ध के चन्देकी वसूली नहीं की जायेगी।

बम्बई में भीषण धडाके: हजारों हताहत

१५ लाख मन अन्न आगसे नष्ट

बम्बईमें १५ अप्रैल शुक्रवारको सायं ४ और ४॥ बजेके बीच दो भीषण धड़ाये हुए जिससे समस्त बम्बई नगर बुरी तरह हिल गया। धड़ाकोंकी आवाज बम्बईके सुदूरवर्ती उपनगरोंतकमें सुनी गयी। नगरके लोगोंमें भूकम्पका भ्रम होनेसे आतंक छा गया।

बम्बईके डाकयार्डमें २॥ बजे एक जहाज़में आग लगी। आगको काबू करनेके सब प्रयत्न विफल हुए और ४ बजेके करीब एक भयंकर विस्फोट हुआ। आग बुझानेके प्रयत्न में बम्बईकी कुछ दमकलें लगी हुई थीं। वें भी धड़ाके में उड़गयीं। धड़ाके इतने जोरके थे कि शहरकी अनेक इमारतोंके दर्वाजों के शीशे चकनाचूर हो गये जिससे अनेक व्यक्ति हताहत हुए। विस्फोटके बाद ही डाक की आग डाक के समानान्तर घने बसे क्षेत्रमें भी फैल गयी।

धड़ाके के बाद धूँएके बड़े बड़े बादल आस्मानमें उठे जो घण्टों एक स्थान परही टिके मालूम पड़ते थे। लोगोंमें तरह तरहकी खबरें फैलने लगीं। अधिकांश कारोबार बन्द हो गये और लोग ट्रेनों, बसों, व लारियोंमें बैठकर सुरक्षित स्थानोंकी ओर जाने लगे। गाड़ियोंमें बेहद भीड़ थी। जी. आई. पी. की कुछ ट्रेनें बन्द हो गयीं। आगकी लपटें मीलों दूरीसे आकाशमें फैली हुई दीखती थीं। आग रविवारतक भी जलती रही।

सरकारी विज्ञप्तिके अनुसार १८ अप्रैलतक दुर्घटनासे ३३४ व्यक्तियोंकी मृत्यु और १७९८ का घायल होना माना गया है।

आगसें सरकारी खाद्यविभागका ५५ हजार टन (१५ लाख ४० हजार मन) अनाज नष्ट होगया।

विस्फोटसे निराश्रित हुए २५ हजार लोगोंको नये राशन कार्ड दिये गये हैं।

जनता की ओरसे अनेक संस्थायें तथा रिलीफ कमेटियाँ निराश्रितोंकी मदद कर रही हैं।

अ. भा. महिला परिषद्का १७ वाँ अधिवेशन

श्रीमती कमलादेवीकी अध्यक्षतामें ८ अप्रैल से १० अप्रैल तक सैन्डर्स्टरोडस्थित वनिता-विश्राम गार्डनमें एक विशाल मण्डपके नीचे बड़े समारोहके साथ अ. भा. महिला परिषद् का खुला अधिवेशन हुआ। परिषद् ने अनेक प्रस्तावोंके साथ जोरदार शब्दोंमें राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना की मांग सर्वसम्मतिसे की प्रस्तावोंको क्रियात्मिकरूप देनेके लिये अनेक सुझावोंपर भी विचार किया गया।

कोयलेके अभावमें मिलें बन्द होंगी

भारतके अनेक प्रान्तोंकी मिलें कोयलेके अभावको अनुभव कर रही हैं। शोलापुरकी सभी मिलोंने १३ अप्रैलसे बन्द होनेकी सूचना निकाली थी, लेकिन अब वे अप्रैल तक बन्द न होंगी। अप्रैलके बाद यदि कोयलेका प्रबन्ध न होसका तो सम्भवतः ये मिलें निश्चित रूपसे कुछ कालके लिये बन्द रहेंगी। अनेक स्थानोंकी मिलोंने काम बहुत कम कर दिया है जिससे हजारों मजूर बेकार हो गये हैं।

सीलोन भारतीय कॉंग्रेस

हेट्टनमें सीलोनस्थित भारतीय कॉंग्रेस का चौथा अधिवेशन होगा। अधिवेशनके लिये 'सत्यमूर्तिनगर' बनाया गया है। भारतके अनेक कॉंग्रेसी नेताओंको आमंत्रित किया गया है।

द. अफ्रीकामें हिन्दूसम्मेलन

९ अप्रैलके दिन मेरिट्जबर्गके सिटीहालमें द. आफ्रिकन हिन्दूसम्मेलनका अधिवेशन हुआ। धार्मिक पुनर्जागरण तथा सुधारपूर्ण विचारोंसे वातावरण व्याप्त प्रतीत होता था। इसमें देशकी समस्त हिन्दूसंस्थायें सॉंस्कृतिक दृष्टिकोणसे भाग ले रही हैं। ३०० प्रतिनिधि शामिल हुए।

'बाम्बे सेण्टिनल' का प्रकाशन बन्द

बम्बईसरकारने 'बाम्बे सेण्टिनल' के सम्पादक मि. बी. जी. हार्निमैनपर इस आशय की एक आज्ञा जारी की है कि वे 'बाम्बे सेण्टिनल' का प्रकाशन बन्द कर दें।

अ. भा. हिं. पत्रकार संघ के सभापति का चुनाव

यह सूचना पहले प्रकाशित हो चुकी है कि अ. भा. हिन्दी पत्रकार-संघ का चतुर्थ वार्षिक अधिवेशन कानपुर में होगा। अब स्वागत-समिति से विचार-विनिमय के पश्चात् अध्यक्ष महोदय ने उनकी तारीखें १४ और १५ मई १९४४ निश्चित की हैं।

उस अधिवेशन के सभापति के चुनाव के लिए चुनाव पत्र संघ के कार्यालय की ओर से सब सदस्यों को भेजे जा चुके हैं और उनको भर कर लौटाने की अंतिम तारीख २५ अप्रैल १९४४ निश्चित की गई है। सदस्यों से अनुरोध है कि वे चुनाव-पत्र उक्त तारीख से पहले ही पहले संघ-कार्यालय, नयाबाजार, देहली के पते पर भेजने की कृपा करें। निर्वाचित सभापति का नाम २७ अप्रैल को घोषित कर दिया जायगा।

रामगोपाल,
कार्यालय-मैत्री

राय साहेब रेखचंद गोपालदास मोहता

स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स

अकोला (बरार)

तारका पताः—MOHTA

टेलिफोन नं. ३४ और ५६

बरार की सबसे बड़ी और खुद मालिकी की एकमात्र अप-टु-डेट मिल

इस मिलमें सब तरहका कोरा, धुला व रंगीन शुद्ध स्वदेशी कपड़ा व सूत तैयार होता है।

प्रोप्रायटर

सेठ गोपालदास मोहता, एम्. एल. ए. हिंगणघाट.

बैंकर, लैण्डलॉर्ड, टेक्सटाईल, आईल एण्ड राईस मिल्स व जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरियोंके मालिक

प्रेसिडेण्टः—

सी. पी. एण्ड बरार फेक्टरी ओनर्स एसोसिएशन

सम्पूर्ण रूपसे

- ● भारतीय पूंजी ●
- ● भारतीय श्रम ●
- ● भारतीयप्रबन्ध ●

सस्ता व टिकाऊ होनेसे भारतके प्रत्येक विभागमें हमारा कपड़ा उपयोगमें लाया जाता है

हमारे कन्सर्न्स

फैक्टरियाँ

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, अकोला

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, वर्धा

बुलाकीदास गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, हिंगणघाट

दूकानें

भीखणचंद रेखचंद (हैड आफिस) हिंगणघाट

राय साहेब रेखचंद गोपालदास, अकोला

रायसाहेब रेखचंद गोपालदास, वर्धा

हमारे मैनेजमैण्ट के लिमिटेड कन्सर्न्स

लक्ष्मी बैंक लिमिटेड, अकोला (शेड्युल)

सी. पी. एण्ड बरार की सबसे बड़ी जोइन्ट स्टॉक बैंक

शाखाएँः—बम्बई (५३ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट और ज़वेरी बजार), दिल्ली (चांदनी चौक), ८ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्ता, नागपुर (इतवारी, सीताबर्डी मेनरोड), रायपुर, अमरावती, हिंगणघाट, वर्धा, खामगाँव, बरहानपुर, खंडवा, जलगाँव, गोन्दिया, द्रुग और धमतरी.

श्री गणेश आईल मिल्स लि. गोन्दिया.

इस मिलका शुद्ध व सस्ता तेल सब जगह प्रसिद्ध है

गोपालदास मोहता एण्ड कं. लि.

शाखाएँः—अकोला, नागपुर और गोन्दिया

इस कम्पनीमें सब तरहके कपड़े व सूतका काम होता है।

बुलाकीदास मोहता एँण्ड कं. लि. अकोला.

यह कई कंपनियोंकी मैनेजिंग एजन्ट व मैनेजिंग डायरेक्टर है

नेशनल कॉमर्शियल कारपोरेशन लि. बम्बई

शाखाएँ अकोला खामगाँव

इसके डिपार्टमेण्ट्सः—काटन जत्था, मिल व जिन स्टोर्स बीमा व अन्यान्य एजेन्सियें

एडवान्स ट्रेडिंग कम्पनी लि. अकोला

शाखाएं—बम्बई, वर्धा, राजनांदगांव

इस कम्पनीमें रुई, सरकी व अनाज वगैरे के कमिशन का काम होता है।

कॉमर्शियल इन्श्युरन्स कंपनी लिमिटेड, (लाइफ)

एडवान्स इन्श्युरन्स कंपनी लिमिटेड, (जनरल)

कहानी
ART CORNER

बीमा

लेखक—मुंशी बावरा

कमला विधवा है, यह बात प्रदीपको उस समय मालूम हुई, जब कमलाका पहला पत्र उसके पास पहुँचा। उसमें लिखा था-"आपका पत्र मिला। जान पड़ता है आप वास्तव में मुझसे प्रेम करने लगे हैं। प्रेम करना पुण्य है या पाप, यह निश्चित करनेकी ताकत मुझमें नहीं है। परन्तु तो भी आपकी प्रेमिका (जैसा कि आपने मुझे अपने पत्रमें सम्बोधन किया है) होनेके नाते मैं अपना फ़र्ज समझती हूं कि अपनी रामकहानी आपको सुना दूं और साथ यह भी मौका दूं कि अगर आपने गलतीसे अपना कदम इस प्रेमकी मञ्जिल पर रख दिया हैं तो बेखौफ आप अपना कदम पीछे हटा लें। सुनिये, मैं विधवा हूँ या दूसरे शब्दोंमें यों कहदीजिये कि मैं वह औरत हूँ जिसे प्रेम करनेका कोई हक नहीं है।"

"मैं उस समय नौ साल की थी। एक दिनकी बात है कि मैं बागमें अपनी सहेलीके साथ खेल रही थी। यही सुबहका सुहावना समय था कि हमारे घरकी बुड्ढी नौकरानी दौड़ी-दौड़ी बागमें आयी और रोती हुई मुझसे बोली, बेटी चल अन्दर चल।"

"मैं नौकरानीके रोनेका अर्थ न समझ सकी और घरमें आयी। माताजी और पिताजी उदास बैठे थे। मुझे देखकर माताजी रोने लगीं और मुझे अपनी छातीसे चिपटा लिया। मैं भौंचक्की सी रह गयी और महान आश्चर्य तो मुझे उस समय हुआ जबकि उस गुस्ताख़ नौकरानीने मेरी खूबसूरत चूड़ियाँ, जोकि सिर्फ कल ही मैंने पहनी थीं, बगैर रहम खाये ही तोड़ डालीं। माता-पिताकी उस समयकी दयनीय मुद्राने मुझे उत्तेजित होनेसे रोक दिया वरना किसी और वक्त में नौकरानीकी इस गुस्ताखीको मैं कभी भी माफ नहीं करती और उसे अपने की कठिनसे कठिन सज़ा देती।"

"मैं विधवा होगई। नौ सालकी अवस्था एक मासूम बचपन—मेरी शादी सात सालकी अवस्थामें हुई थी। मुझे अपने पतिको देखने की उतनी चाह नहीं थी जितनी कि मुझे नये-नये भड़कीले कपड़े पहिनने की थी मैंने अपनी गुड़ियाको भी नये-नये कपड़े पहिनाये और शादीके समयमें उसे अपनी गोदीमें लेकर बैठी। पण्डित क्या बक रहा था इसका मुझे ख्याल नहीं था, पर हाँ इतना मैंने अवश्य देख लिया कि मेरे पतिकी गोदमें कोई गुड्डा नहीं था। मैंने गुस्सेमें अपना मुहँ घुमा लिया और फिर नहीं देखा अपने पतिकी ओर।"

"मैं नहीं जानती कि मेरे पति कैसे थे। और फिर प्यार! बचपन बीत गया। अब मुझे दुनिया रंगीली दिखलायी देने लगी। मैं गुलाबी रंग ज्यादा पसन्द करती हूँ, आपने भी तो शायद मुझे पहली दफा गुलाबी साड़ीमें ही देखा था,"

"मुझे पिताजीने पढ़ाया कि संसारमें किसीको भी धोखा देना, एक इतना बड़ा गुनाह करना है जिसका कोई प्रायश्चित नहीं हो सकता। और फिर आप तो 'किसी' की कन्याको छोड़कर अपनत्वके अधिकारी बन चुके हैं।"

"क्या आप कर सकेंगे अब भी मुझे प्यार?" प्रदीपने सैकड़ों बार इस पत्रको पढ़ा और बार-बार गरदन झुका कर दिलकी धड़कन को जांचने की कोशिश की। दिल उसका मज़ेसे सपाटे भर रहा था, किसी किस्मका उसे फेर फार दिखलायी नहीं दिया।

कमला की अवस्था इस समय, बाइस साल की है। सुन्दर दिखलायी देती है वह, और प्रदीप भी जँचता हुआ सुन्दर जवान है।

चमड़ेके थैले को मेज़ पर रखकर प्रदीप कमला के पितासे बोला मेरा ख्याल है अब आपने पक्का निश्चय कर लिया होगा। देखिये जिन्दगीका बीमा करानेमें अनगिनत फायदे हैं।

कमलाके पिता बोले,–और मैं उन फायदोंको अच्छी तरह जानता हूँ। अफसोस मैं अपनी जिन्दगीका बीमा नहीं कराना चाहता। अब आप...

प्रदीप बोला जी हाँ। एक गिलास ठण्डा पानी पिलवा दीजिये।

कमलाके पिता ने नौकरको पानी लानेको आदेश किया और खुद उठकर बाहर चले गये।

चमड़ेका थैला एक ओर खिसका कर ज्योंही प्रदीपने मुँह ऊपर किया, त्योंही देखा कि कमला पानीका गिलास हाथमें लिये खड़ी है। वह बोला कमला तुम!

"क्या आपने अपनी जिन्दगीका बीमा..."

"हां मैंने अपनी जिन्दगीका बीमा तुम्हारे हाथ कर दिया है। क्या तुम...।"

"पिताजी आरहे हैं मैं जाती हूं।" और ऐसा कहकर कमला चली गयी। प्रदीप ने चमड़े का थैला उठाया और दरवाजेकी ओर बढ़ा।

इसी समय रायमोहन भी वहां आ धमका। प्रदीपको देखकर वह बोला क्यों, क्या वकील साहब ने अपनी जिन्दगीका बीमा करवा लिया? प्रदीपने उत्तर दिया जी नहीं आप अपनी जिन्दगीका बीमा करवा लीजिये।

रायमोहन–अभी नहीं, जरा शादी हो जाने दो, तब हम मियाँ-बीवी दोनों तुम्हारीही मार्फत अपनी जिन्दगीका बीमा करा लेंगे।

प्रदीप–तब तो काफी दिन लगेगें।

रायमोहन–दिन! नहीं, नहीं, ज्यादा दिन नहीं लगेगें। आज सब तय करने आया हूँ।

प्रदीप–ताज्जुब है! आपतो अपना वक्त जाया कर रहे हैं, तय कब कीजियेगा?

रायमोहन–बस वकील साहब आजायँ तब ही समझिये। मैं उनकी लड़की कमलासे शादी करने जारहा हूँ।

यह सुनकर प्रदीप का चेहरा उतर गया। राय मोहन बोला फिकर मत करो, शादी होजानेके बाद मैं तुम्हें बुला भेजूंगा और तुम्हारी मारफत हम दोनों अपनी जिन्दगीका बीमा करायेंगे। खुश!

'जी हाँ, इजाजत हो।' और ऐसा कहकर प्रदीप वहाँसे हट गया।

रायमोहनको ज्यादा देर इन्तज़ार नहीं करना पड़ा। वकील साहब आगये। रायमोहनने हिम्मत करके वकील साहबसे अपनी शादी कमलाके साथ करनेको कहा। पर वकीलसाहब पुराने ख्यालके आदमी थे, वे विधवाविवाहके सख्त खिलाफ थे। इसलिये रायमोहनको मुहँ की खानी पड़ी।

प्रदीपको कमलाका दूसरा पत्र मिला उसमें लिखा था—"जिन्दगीका बीमा तो आप मेरे हाथ करही चुके इसलिये हिम्मत करके कुछ और लिख रहीं हूँ। मैं चाहती हूँ कि अब हमें शादी करलेनी चाहिये और फलस्वरूप हमारे प्रेमको फैलाने के लिये स्थान मिल जायगा। क्या आप कल सुबह मेरे पिताजीसे इस विषय पर बात करनेको आसकेंगे। मैं वहीं पर मिलूंगी। और हाँ, कल रायमोहनसे बातें करते वक्त आपका चेहरा क्यों उदास होगया। याद रखिये अगर शादी करूंगी तो आपहीसे वरना अपनी उम्र यूँही निकाल दूंगी। रायमोहन बदमाश है, उसकी सैकड़ों शादियां हो चुकी हैं।"

प्रदीपमें उत्साह की तरंग हिलोरें मारने लगीं। वह वकीलसाहबसे मिला परन्तु कमला वहां नहीं थी। वकील साहब बोले—गज़ब हो गया प्रदीप। रातसे कमलाका पता नहीं चल रहा है। क्या करूं पूरी बदनामीका सामान बन गया हूँ।

प्रदीपने पूछा—क्या आपने पुलिसमें खबर नहीं की?

'इससे तो बदनामी होनेका ज्यादा डर है। अब तुम कोई उपाय बतलावो।'

प्रदीपने कमलाक पत्र निकाल और वकील साहबको दिखलाते हुए बोला–"यह कमलाका पत्र है उसने आज मुझे यहीं मिलनेको कहा था। इस लिये निश्चयही वह अपनी मरजीसे कहीं नहीं जा सकती। आप इसे पढ़ सकते हैं। हां एक बात मुझे याद आयी। मैं रायमोहनके यहां जाता हूँ आप पुलिसके साथ वहीं पहुँचें।" और ऐसा कहकर वह बगैर कुछ सुने रायमोहनके मकानकी ओर लपका।

रायमोहनके मकानमें ताला लगा था। प्रदीप मकानके पिछवाड़ी गया और पानीके नलके सहारे चढ़कर दूसरी मंजिलमें पहुँचा। खिड़की खोलकर उसने झांका उसे कोई भी दिखलायी नहीं दिया। तब वह कमरेमें दाखिल हुआ और दूसरे कमरेका दरवाजा धक्का देकर खोला। उसने देखा कि कमरेमें खम्भेके सहारे कमला खड़ी है और रायमोहन कुर्सीपर बैठा हुआ सिगरेट पी रहा है।

प्रदीपको देखकर रायमोहन खड़ा हो गया और पिस्तौल निकाल ली और जैसे ही दागने को हुआ प्रदीप उसपर टूट पड़ा। पिस्तौल हाथसे छूटकर एक ओर गिर पड़ी और दोनों एक दूसरेसे गुथ गये।

वकील साहब पुलिस इन्स्पैक्टरके साथ वक्त पर पहुंच गये और रायमोहन हिरासतमें ले लिया गया। प्रदीपको धन्यवाद देकर इन्सपैक्टर वकील साहबसे बोले "अब आप अपनी लड़की की शादी जल्दी ही कर दीजिये।"

इसके जवाबमें वकील साहब ने प्रदीपकी ओर देखा। प्रदीप ने कमलाकी ओर देखा और तब दोनों मुस्करा उठे।

लड्ढा सोनीपरिवारमें आदर्श सुधारक विवाह

ता. २५-२-४४ को ब्याड ता. वाशीम (बरार) निवासी श्री. कन्हैयालालजी लड्ढाके ज्येष्ठ सुपुत्र श्रीबालकृष्णजी लड्ढाका शुभविवाह पिपरिया (होशंगाबाद) निवासी श्रीवल्लभदासजी सोनीकी सुपुत्री सौ. कां. सुश्री कमलादेवीके साथ बड़े उत्साहके साथ सम्पन्न हुआ। इस विवाहकी उल्लेखनीय बात यह है कि श्री लड्ढाजीके कुटुम्बी विवाहके प्रबल विरोधी थे। विरोध इतना तीव्र था कि, आपके कुटुम्बमें ६०-७० आदमी होते हुए भी बरका हल्दीका कार्य महाराष्ट्रियन किसान महिलाओंद्वारा किया गया। श्रीलड्ढाजीने एक छोटेसे खेड़ेमें रहते हुए तथा कुटुम्बियों एवं समाजके विरोधकी परवाह न कर अपने पुत्रका विवाह अत्यन्त सादगीके साथ पर्दा प्रथा तोड़कर किया। विवाहके लिये वर तथा वधूने खादी के वस्त्रधारण किये थे। बरातमें सिर्फ २० ही व्यक्ति गये थे। सौभाग्यवती सावित्री देवीजी बियाणी अकोला तथा श्रीकृष्णदासजी वकील अम्रावतीकी इच्छाके अनुसार सब कार्य सम्पन्न हुआ। विवाहके उपलक्षमें श्रीलड्ढाजीने कुछ संस्थाओं, राजबंदियोंके सहायतार्थ एवं गरीबोंको वितरित कपड़ेका मूल्य देकर ३०१ रु. का दान दिया। दानका विवरण इस प्रकार है:- ११) 'माहेश्वरी' पत्र बंबई. ११) संस्कृत पाठशाला पिपरिया. ७) राजस्थान हितकारक मंडल अम्रावती. ५) हिन्दी शिक्षामंडल अम्रावती. १३१) रु, का कपड़ा बाँटा गया (गरीबोंको) ५१) रु. धर्मार्थ औषधालय ब्याड, ५१) राजबंदियोंके कुटुम्बोंके सहायतार्थ २५) हरिजन विद्यार्थियोंको पुस्तकार्थ ५) नवयुवक मंडल अकोला।

[साहसका परिचय देकर विवाह करनेके लिए श्रीलड्ढाजी एवं उनके संबंधी श्रीसोनी बन्धु बधाईके पात्र हैं। —**सम्पादक**

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियां, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४—६५

बिक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

IMPERIAL TRADING Co.

Alli Chambers, Tamarind Lane, Fort,
Telegrams: "LOOMSPRING"

BOMBAY:
Telephone No. 27580.

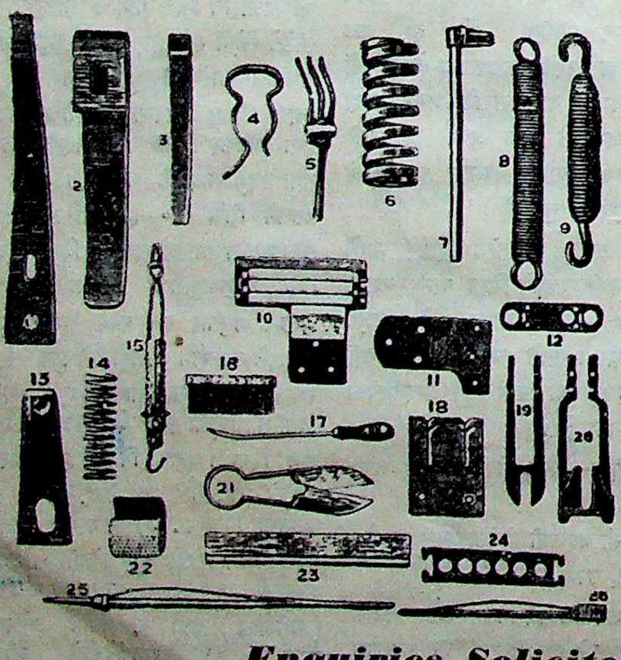

OUR SPECIALITIES

Springs, Temples and all accessories for Spinning and Weaving Machinery

BESIDES, WE HOLD AN EXTENSIVE STOCK of

Stripping Fillets
Burnishing ,,
Folding ,,
Plaiting ,,
Winding ,,
Likering ,,
Card Strippers
Walton Metallic Brush

Lickerine Wires
Lap rods & Oils cans Braime & "K"
Pot eyes for Bleaching dept.
Hydraulic Ram Rings
Jackson & Harries Fastners
Blue Glass Rods & Creel Steps

Card Chains & Link Chains
Hickory wood Picking Sticks
Dobby Lattices Comber Boards & Taper Pegs
Perth Gauge Glass & Glass Lubricators
etc. etc. etc. etc.

Enquiries Solicited

We solicit your enquiries for all articles connected with the Spinning & Weaving Industry and can quote you competitive prices. We will gladly send to you our latest price list on application.

Agents :—
RATILAL & Co., Cross Lane, Railwaypura Post, AHMEDABAD.
B. N. MODI & Co., 14/24, Civil Lane, CAWNPORE.

क्या सोवियट प्रणाली पाकिस्तानकी पोषक है?

★ लेखक—**श्रीजगतापजी** ★

हिटलर के प्रचार का एक मूलभूत सिद्धान्त ह भी है कि एक गलत बात को बार बार ही बताकर कहो तो अन्त में वह सही जंचने गी। कम्युनिस्ट यद्यपि हिटलर के जानी मन हैं, पर केवल उसके नाम के। व्यवहार ये हिटलर के सिद्धांत ही का अनुसरण करते , पर केवल झूठ बोलने और उल्टा-सीधा प्रचार रते में। हिन्दुस्तान के ये कम्युनिस्ट आज ल सोवियट विधान की बार बार दुहाई देकर न सिद्धांत की पुष्टि कर रहे हैं कि जिस कार बोल्शेविक पार्टी ने रूसी समाज के न्तर्गत विभिन्न जातियों को आत्मनिर्णय का अधिकार सम्बंध विच्छेद के हक के साथ थ दिया था उसी तरह हिंदुस्तान में कांग्रेस र्टी को भी हिंदू-मुसलिम समस्या को हल करने के लिए मुसलिम लीग की पाकिस्तान की मांग मंजूर कर लेनी चाहिए। इसके बाद ही यह ह दिया जाता है कि जिस तरह सोवियट यूनियन ने इस सम्बंधविच्छेद के अधिकार को प्रदान कर अपनी एकता को कायम रखा सी तरह कांग्रेस भी मुसलिम लीग की पाकिस्तान वाली मांग को स्वीकार करके हिंदुस्तान की एकता को कायम रखने का प्रयास करे।

पर इसके विपरीत हमारा यह दावा है कि सोवियट विधान की मिसाल हिंदुस्तान में अभी लागू नहीं होती। दूसरे सोवियट विधान की व्यवस्था और राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रस्तावित व्यवस्था में वस्तुतः कोई अन्तर नहीं है। लेकिन इस बात को सिद्ध करने के पहले बोल्शेविक पार्टी की घोषणा और सोवियट विधान की वास्तविकता को समझ लेना चाहिए। पहली बात तो यही है कि सोवियट विधान में सोवियट रूस की विभिन्न १२५ जातियों में सभी को सम्बंधविच्छेद की बात तो दूर रही, आत्मनिर्णय का अधिकार नहीं दिया गया। यदि १२० जातियों को यह अधिकार दिया जाता तो आज सोवियट यूनियन में १६ के स्थान पर १२५ प्रजातंत्र राज्य होते। दूसरी बात यह है कि जिन आबादियों को आत्मनिर्णय और सम्बंध-विच्छेद का अधिकार दिया गया है वह मजहब के आधार पर बनी हुई जातियों को नहीं दिया गया। यह अधिकार जारशाही साम्राज्य के केवल उन अङ्गों को प्रदान किया गया, जो अव्वल तो जार साम्राज्य के शोषित उपनिवेश थे और दूसरे जो मजहब के आधार पर नहीं बल्कि जो आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से एक-सा जीवन व्यतीत करते थे, जिनकी जबान एक थी, जिनका रहन सहन एकसा था और जिनका मानसिक दृष्टिकोण एकसा बन गया था। इस आधार पर जो विभाजन हुआ उसके परिणामस्वरूप १२५ जातियों के रहते हुए भी केवल १६ सोवियट प्रजातंत्र ही निर्मित हो सके।

इसके अतिरिक्त जब प्रारम्भ में इन सोलह प्रजातंत्रों को सोवियट यूनियन से सम्बंध-विच्छेद करने का अधिकार प्रदान करने का प्रश्न उठा तब १६ में से केवल ११ प्रजातन्त्रों ही को यह अधिकार वास्तविक रूप से दिया गया। पर यह मूलभूत संरक्षण सदा सामने रखा गया कि भावना में तो जरूर इन आबादियों को सोवियट यूनियन से सम्बन्ध-विच्छेद करने का अधिकार है, पर व्यवहार में सदा सोवियट यूनियन की एकता ही को श्रेय दिया जायगा। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि सोवियट यूनियन की एकता को किसी भी ऐसी आबादी की ओर से, जिनसे सम्बंध-विच्छेद के अधिकार का उपभोग किया हो, खतरा पैदा हुआ तो तुरंत ही वह अधिकार जबर्दस्ती छीन लिया जायगा और वह आबादी फिर सोवियट यूनियन में मिला ली जायगी। वास्तव में लेनिन का उद्देश्य यही था कि यदि रूसी साम्राज्य की शोषित आबादियो को पूर्ण स्वतन्त्रता का अधिकार नहीं मिला तब मजदूर क्रान्ति का उद्देश्य ही खत्म हो जायेगा और मार्क्सवाद का सिद्धांत उल्टा पड़ जायगा। पर यह भी सहन नहीं किया जा सकता था कि इस अधिकार के उपभोग के परिणामस्वरूप सोवियट यूनियन की एकता भी खतरे में पड़ जाये। इसीलिये उपर्युक्त संरक्षण की आवश्यकता थी और वह उचित भी थी।

सोवियट विधान के इस अधिकार का उपभोग फिनलैंड ने विशेष रूप से किया। पर यह भी सत्य है कि सोवियट यूनियन से अलग होकर फिनलैंड ने दगाबाजी की। यही नहीं कि मेनरहेम ने हजारों कम्युनिस्टों को सरेआम कत्ल कर डाला, बल्कि फिनलैंड के शासकों ने सोवियट यूनियन के विरुद्ध रचे जाने वाले षड्यन्त्र में हिस्सा लिया और उन षड्यन्त्रकारियों को अपने यहाँ स्थान दिया। पर इस सारे कार्य में फिनलैंड को लगभग बीस वर्ष लग गये। अन्त में सोवियट यूनियन ने उस सम्बंधविच्छेद के अधिकार को उपयुक्त संरक्षण की दृष्टि से वापस लिया और फ़िनलैंड की भूमि पर आक्रमण कर दिया।

सोवियट विधान की इस वास्तविकता को सामने रखकर हमें हिन्दुस्तान के इस प्रश्न पर विचार करना चाहिए। हिंदुस्तान में अभी तक कोई भी जाति अथवा आबादी अथवा कोई भी प्रांत केवल मुसलिम लीग के अतिरिक्त हिंदुस्तान से अलग होने की बात नहीं करता। आन्ध्र के देशवासी पृथक प्रांत चाहते हैं पर हिंदुस्तान से अलग राज्य नहीं चाहते। मुसलिम लीग पाकिस्तान की मांग केवलमात्र मजहब के नाम पर कर रही है। यदि जातीयता की उपयुक्त परिभाषा को स्वीकार कर लिया जाय जिसका आधार स्टैलिन द्वारा दीगई परिभाषा है तब फिर यह प्रश्न ही नहीं उठता कि पंजाब के और बंगाल के केवल उन जिलों को आत्मनिर्णय के साथ सम्बंध-विच्छेद का अधिकार मिलना चाहिए जहाँ मुसल्मान बहुमत में हैं। स्टैलिन की जातीयता की परिभाषा के अनुसार पूर्वीय बंगाल अथवा पंजाबी मुसल्मान को वह अधिकार नहीं मिलता जिसके लिए हमारे यहाँ के कम्युनिस्ट उन्हें मुस्तहक समझते हैं।

इसके बाद यदि मुसलिम लीग की पाकिस्तान की मांग को स्वीकार कर लिया जाये तो जो खतरा सोवियट यूनियन को फिनलैंड से बीस वर्ष बाद हुआ वह खतरा हिन्दुस्तान को पाकिस्तान के सम्बंध-विच्छेद करने के क्षण से ही हो जायेगा, क्योंकि मि. जिन्ना अपने पाकिस्तान की रक्षा ब्रिटिश फौजों से ही करना चाहते हैं। इसका अर्थ यह है कि पाकिस्तान में ब्रिटिश साम्राज्यशाही को इस बात का पूरा अवसर मिलेगा कि वह हिन्दुस्तान के विरुद्ध खूब षड़यन्त्र रच सके और फिर स्वतंत्र भारत को अपने पंजे में ला सके। कांग्रेस कभी इस खतरे को ओझल नहीं कर सकती। लेकिन इसके साथ साथ यह बात भी नहीं है कि कांग्रेस भारतसंघ के प्रान्तों को बिलकुल गुलाम बनाकर रखे। कांग्रेस वर्किंग कमेटी के उस प्रस्ताव के अतिरिक्त जिसमें यह कहा गया है कि भारतसंघ के प्रांतों को संघ में शामिल होने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने अपने ९ अगस्त १९४२ वाले प्रस्ताव में यह स्पष्ट कर दिया है कि संघ में शामिल होनेवाले प्रान्तों को अधिक से अधिक स्वायत्त अधिकार रहेगा और कुछ केन्द्रीय विषयों को छोड़कर अवशिष्ट अधिकार भी रहेंगे। इसका अर्थ यह है कि इन प्रान्तों को सांस्कृतिक, आर्थिक, धार्मिक और भाषा सम्बंधी पूर्ण स्वतंत्रता रहेगी।

हमारे देश की मौजूदा स्थिति और मौजूदा राजनीति इससे आगे बढ़ने के लिए अभी सहायता नहीं देती। इसके अलावा मुसल्मानों को कांग्रेस के प्रति सशंकित होने के कौन से कारण हैं। वास्तव में यहाँ तो स्थिति बिलकुल उल्टी है। एक दृष्टि से देखा जाय तो हिन्दुस्तान की अल्प संख्यक जातियां ही बहु संख्यक जाति पर हावी हैं। आज जिन प्रान्तों में ब्रिटिश हुकूमत के साये में मुसलिम लीग के मंत्रिमंडल बने हुए हैं वहांपर जो कारगुज़ारियां हो रही हैं उनसे बहुसंख्यक जाति को जरूर सशंकित होने की गुञ्जायश निकलती है। सिन्ध में हिन्दू बहिष्कार दिवस मनाया गया और पंजाब में हिन्दू महासभा के जुलूस पर लाठी वर्षा की गई और अखण्ड हिन्दुस्तान सम्मेलन करने की इजाज़त नहीं दी गई। पर कांग्रेस मिनिस्ट्री के दिनों में बिलकुल उल्टा हुआ। मुसल्मानों ने कांग्रेस वालों के कानपुर में सिर तोड़ दिये पर एक भी मुसल्मान पर मुकद्दमा नहीं चला। मुसल्मानों ने लखनऊ में कौंसिल भवन पर धावा बोल दिया पर मुसलिम जाति के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई। कानपुर में सरेआम मुसलिम लीग के कार्यकर्ताओं ने कांग्रेस के खिलाफ ज़हर उगला, कांग्रेस नेताओं को गालियां सुनाईं और साम्प्रदायिक वैमनस्यता के वातावरण को खूब फैलाया पर किसी को भी भारतीय दण्ड विधान की धारा १५६ के अनुसार सजा नहीं दी गई। यदि इस सहनशीलता का बदला सारे देशको छिन्न भिन्न करके गारत कर डालना है तब फिर वह स्वीकार नहीं किया जा सकता, ठीक उसी तरह से जैसे सोवियट यूनियन ने फिनलैंड की स्वतन्त्रता को बर्दाश्त नहीं किया।

—'रामराज्य' से

देशी राज्य शासन

पृष्ठसंख्या ५६० सजिल्द मूल्य साढ़े तीन रुपये

महत्वपूर्ण समस्याओंका विचार

नमूनेकी ७० रियासतोंकी शासन पद्धति

राजनैतिक आन्दोलनका परिचय

भारतीयशासन	१।)	ब्रिटिश साम्राज्यशासन	१)
मातृवन्दना	।=)	भारतीय अर्थशास्त्र	३)
नागरिक शिक्षा	॥=)	साम्राज्य और उनका पतन	१।)
भारतीय जागृति	१।)	हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ	॥।=)
निर्वाचन-पद्धति	॥-)	पूर्वकी राष्ट्रीय जागृति	१॥)
अपराध चिकित्सा	१॥)	भारतीय सहकारिता आन्दोलन	२)
भारतीय राजस्व	॥=)	कौटिल्यके आर्थिक विचार	॥।=)
अर्थशास्त्र शब्दावली	१)	भारतीय विद्यार्थी विनोद	॥=)
राजनीति शब्दावली	।॥)	नागरिक कहानियाँ	॥=)
श्रद्धांजलि	॥।=)	अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य	॥)
विश्ववेदना	॥।=)	भव्य विभूतियाँ	॥=)

पुस्तक प्राप्तिका पता—

भगवानदास केला, भारतीय ग्रन्थमाला; दारागंज [इलाहाबाद]

राजस्थानी संसार
ART CORNER

श्री माहेश्वरी नवयुवक पुस्तकालय ब्यावर

धूमधाम के साथ उद्घाटनोत्सव सम्पन्न

ता० २-४-४४ रविवारको श्री माहेश्वरी नवयुवक पुस्तकालय ब्यावरका उद्घाटन श्रीमान् सेठ राय साहब सेठ विट्ठलदासजी राठी, सभापति श्री माहेश्वरी पंचायत बोर्ड एवं मालिक स्थानीय मिल्सके कर कमलोंद्वारा श्री माहेश्वरी भवनमें दिनके ४ बजे सम्पन्न हुआ। माहेश्वरी समाजके गणमान्य सज्जन और नगरके विद्वान् पुरुष उपस्थित थे।

गत दो माससे पुस्तकालयका निर्माण बहुत जोरोंसे चल रहा था। इस निर्माण का बहुत कुछ श्रेय इसके पुस्तकाध्यक्ष प्रो. घनश्यामदासजी बल्दवा एम. ए: बी. कॉम और स्थानीय नारमल स्कूलके मास्टर-विद्यार्थी दुर्गालालजी गगराणीको है। सेठ बद्रीनारायणजी हेड़ा और मंडलके मंत्री का सहयोग भी सराहनीय था।

इस उद्घाटनका समारोह श्रीमान सेठ राठीजी साहबके सभापतित्वमेंही प्रारंभ हुआ। उपस्थित सज्जनोंमें महाराजा श्री उम्मेद मीलके मैनेजर सेठ रामनिवासजी माछर, स्थानीय सनातनधर्म कालेजके प्रिंसिपल श्री एम. के. चक्रवर्ती साहब, प्रो. रामेश्वरप्रसादजी गुप्त, पं. मिश्रीलालजी संत आदि उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त स्थानीय माहेश्वरी समाजके करीब २ सभी गणमान्य सज्जन उपस्थित थे।

ठीक २॥ बजे सभापतिजी सभाभवनमें पधारे। सर्वप्रथम ईश प्रार्थना की गई और तत्पश्चात् श्री. सेठ बद्रीनारायणजी हेड़ाने सर्व सज्जनोंका स्वागत करते हुए श्रीमान सेठ राठीजी साहबसे सभापति पद पर आसीन होनेके लिये प्रार्थना की। उनके सभापति पद लेनेका हर्षध्वनि और करतल ध्वनिसे स्वागत किया गया और उनको पुष्पमाला अर्पित की गई। कार्यक्रमके अनुसार पुस्तकाध्यक्षने सभीके सन्मुख पुस्तकालयकी रिपोर्ट रखी जिसमें बतलाया गया कि पुस्तकालय में अबतक १०२८ पुस्तकें रजिस्टर की गई हैं जो १६ विभागों में विषयानुसार बाँटी गई हैं। बहुत शीघ्र और भी पुस्तकें आ रही हैं और शीघ्र ही इस पुस्तकालय में २००० से ज्यादा पुस्तकें हो जायंगी।

सब पुस्तकें हिन्दी भाषा की हैं. और सब उनके साहित्यिक, सामाजिक और बौद्धिक गुणोंके कारण खरीदी गई हैं। इस पुस्तकालयका उद्देश्य ही ऊंचे साहित्य की वृद्धि करना है।

रिपोर्टके बाद सर्व श्री चांदमलजी मोदी कालू रामजी तोषनीवाल, मिश्री लालजी 'संत' और प्रिंसिपल एम. के. चक्रवर्ती साहबके भाषण हुए। श्री चांदमलजी मोदीने पुस्तकालय के लाभ बतलाते हुए पुस्तकालयोंके कुछ समय बाद बंद होनेका कटु अनुभव बताया। उन्होंने समाजसे यह आशा कि पुस्तकोंका चुनाव सुरुचिपूर्ण और सुंदर हो और यह श्री माहेश्वरी नवयुवक पुस्तकालय कभी बन्द न हो। कालू रामजी तोषनीवालने सदाचार सत्संग और स्वाध्याय पर जोर देकर पुस्तकालयके लाभ बताये। मिश्रीलालजी 'संत' ने अपने काव्यमय भाषणमें पुस्तकोंकी उपयोगिता बताकर पुस्तकालयकी स्थिरता बनाये रखने पर ज्यादा जोर दिया। अन्तमें प्रिंसिपल चक्रवर्ती साहबका विद्वत्तापूर्ण भाषण हुआ जिसमें आपने अनेक शुभ कामनाओंके साथ कई दृष्टांत देकर पुस्तक, पुस्तकालय और उनके चलानेवालों के प्रति सुंदर विचार प्रकट किये।

भाषणोंके पश्चात् पुस्तकाध्यक्षने भाषणों में की गयी शंकाओंका समाधान : किया और उपस्थित लोगोंको विश्वास दिलाया कि पुस्तकालयका उद्देश्य हमेशा ऊंचे और सुरुचिपूर्ण साहित्यकोही यहां स्थान देना होगा और साधारण परिस्थिति आनेपर पुस्तकालयको गश्ती पुस्तकालयका भी रूप दिया जायगा।

इसके पश्चात करतलध्वनिके बीच सभापतिजी ने अपना भाषण प्रारंभ किया। आपने सुंदर और सुललित भाषामें लोगोंको विश्वास दिलाया कि पुस्तकालय बराबर चालू रहेगा और युवकोंको चेतावनी दी कि आप लोगोंका कर्तव्य है कि यह मेरे द्वारा खोला गया पुस्तकालय कहीं जल्दी बंद नहीं हो जाय। चाहे कितनी ही कठिनाइयां आयें, चाहे विचारोंमें कितनाही मतभेद हो पुस्तकालयको बंद करनेका कभी सवाल ही नहीं उठना चाहिये। विचारोंमें मतभेद तो होना ही चाहिये उसके बिना उन्नति संभव नहीं है।

श्री बद्रीनारायणजी हेड़ाने श्री माहेश्वरी नवयुवक मंडल की ओरसे सभापतिजी तथा उपस्थित सज्जनोंको धन्यवाद दिया। आगत सज्जनों का सत्कार पान, इलायची, सुपारीसे किया गया। तत्पश्चात सभापतिजी से पुस्तकालय का उद्घाटन करनेके लिये प्रार्थना की गई और उन्होंने सर्व सज्जनोंके समक्ष पुस्तकालयका उद्घाटन किया। उत्सव समाप्त हुआ और सर्व सज्जनोंको धन्यवादपूर्वक बिदा किया गया।

श्रीधर डोडिया, मंत्री
श्री माहेश्वरी नवयुवक मंडल ब्यावर

बीकानेरमें पुस्तकालय की स्थापना

श्रीरामनवमीके पुनीत अवसरपर श्रीडीडूमाहेश्वरी सेवा समिति कलकत्ता द्वारा स्थापित श्रीडीडूमाहेश्वरी पुस्तकालय (जो कि कलकत्तेमें परिचालित था) का उद्घाटनोत्सव स्थानीय सोनीयोंका चौक श्रीबटुकभैरवजीके मन्दिरके पास सुप्रसिद्ध रायबहादुर बंशीलाल अबीरचन्द फार्मके मालिक विद्याप्रेमी सेठ खुशहालचन्दजी डागा महोदयके करकमलद्वारा करवायागया। उक्त अवसरपर समाजके सुप्रसिद्ध महानुभावोंके अतिरिक्त स्थानीय शिक्षाप्रेमीजनोंकी उपस्थिति संतोषजनक थी। सर्व प्रथम समितिके सभापति सेठ बालमुकुन्दजी डागाने पुस्तकालयका विगत इतिहास एवं इसके द्वारा जनसाधारणकी सेवाओंका उल्लेख करते हुए बीकानेरमें इसकी आवश्यकताका वर्णन किया। श्री. सूर्यकरणजी पूगीलया, लक्ष्मीचन्दजी डागा आदिके भाषण हुए। उक्त अवसरपर पुस्तकालयके कार्यकर्ताओंकी निम्नप्रकार घोषणा की गई।

संरक्षक-सेठ खुशहालचन्द्रजी डागा
सभापति-सेठ द्वारकादासजी डागा
उपसभापति-गणेशदासजी कोठारी
मन्त्री-मथुरादासजी कोठारी
उपमन्त्री-लक्ष्मीचन्द्रजी बिन्नानी
उपमन्त्री-अक्षयचन्दजी सोनी

निम्नलिखित महानुभाव पुस्तकालयको रु. १०१) प्रदानकर आजीवन सदस्य बने हैं:-

(१) श्री. गणेशदासजी कोठारी, (२) श्री. गंगादासजी कोठारी, (३) श्री. गिरधरदासजी फूंभडा, (४) श्री. माणिकचन्दजी कोठारी रु. ५१) सेठ सूर्यकरणजी पूगलिया महोदयने विशेष सहायतार्थ प्रदान किये।

अंतमें सभापति महोदयने शिक्षाप्रचारमें पुस्तकालयकी प्रमुखता एवं इसके द्वारा जनसाधारणकी सेवाओंका उल्लेख करते हुए बीकानेर वासियोंसे पूर्ण तया सहयोग देनेकी आशा प्रकट की। पुस्तकालयमें जनसाधारण के अवलोकनार्थ भारतके प्रायः सभीपत्र पत्रिकाएँ एवं हिन्दी साहित्यकी विभिन्न विभिन्न विषयोंकी पुस्तकें मंगानेकी व्यवस्था की जायेगी। अतः विद्याप्रेमी महानुभावोंको पुस्तकालयसे अधिकाधिक लाभ उठाकर कार्यकर्ताओं के उत्साहको बढ़ाना चाहिये। अंतमें भगवान महेश्वरकी जयघोषके साथ कार्य समाप्त किया गया।

वार्षिक अधिवेशन

श्री सनातन धर्म सभा डीडवाना (मारवाड़) का वार्षिक अधिवेशन व मारवाड़ प्रान्तीय श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा जोधपुर का षष्ठाधिवेशन (सनातन धर्म सम्मेलन) डीडवाना नगर श्री आनन्द भवनमें ता. २०-२१-२२ अप्रैल सन् १९४४ को श्रीमान् पूज्य पं. श्री देवनायकाचार्य्यजी महाराज बनारस की अध्यक्षतामें विशेष समारोहके साथ मनाया जायगा। अधिवेशनमें सनातन धर्मी जनताको संगठित करने, उनमें फैली हुई कुरीतियां मिटाने, शिक्षाका प्रचार करने आदि आवश्यक विषयों पर विचार होगा। और वे पधारे हुए विद्वानोंके धर्मोपदेशक होंगे।

रघुनाथदास बांगड़
स्वागताध्यक्ष

रतलाम महाराज का खर्च

रतलाम। रियासत की आय १५ लाख मान कर महाराज का खर्च २० प्रतिशत निय किया जा रहा है। जनता को चीनी और गु की शिकायत है। भारत सरकार से २०००० मन का जो कोटा मिला है उसमें से ११००० मन शराब के ठेकेदार को दे दिए जाने की खबर है। ६ मास पूर्व दो मास में रतलाम में निर्वाचित म्यूनिसिपेलिटी कायम करने की घोषणा को भी अभी कार्य में परिणत नहीं किया गया है।

सरोजिनी नायडू इंग्लैण्डको

कामन्स सभा में प्रश्न

'कामन्स सभा' में मजदूर-सदस्य मि. कोवेने मि. एमरीसे सरोजिनी नायडूके विषयमें प्रश्न किया कि यदि वे 'हाउस' के सदस्योंका निमन्त्रण स्वीकार कर यहां आना चाहें तों उन्हें इजाजत मिल सकती है? मि. एमरीने उत्तर कि यदि मि. कोवे इस नियन्त्रणकी कोई खबर उन्हें देंगे तो वे (मि. एमरी) भारत सरकारसे इस विषयमें सलाह करेंगे।

अग्निकाण्डकी फिल्म

२२ अप्रैलसे 'इन्फारमेशन फिल्म आफ इण्डिया' द्वारा बम्बई शहरके सभी सिनेमाघरोंमें 'बम्बईमें अग्निकाण्ड' नामक एक 'न्यूस परेड' प्रदर्शित की जायेगी।

सरकारी नौकरोंकी बस्ती

बम्बई सरकार, सरकारी अफसरों और क्लर्कोंके लिये नयी कोलेनी बसाने का प्रयत्न कर रही है। लड़ाई के कारण बम्बई में अनेक सरकारी विभाग खोले गये हैं। इनमें काम करनेवाले नौकरोंकी सुविधाके लिये यह प्रयत्न किया जा रहा है।

माहेश्वरी नवयुवक संघ का चुनाव

श्री माहेश्वरी नवयुवक संघ लश्कर के आगामी वर्ष के पदाधिकारियों का चुनाव ता. ७ मई १९४४ को संघ के कार्यालयमें होगा। स्थानीय युवकों से निवेदन है कि वे ३० अप्रैल १९४४ तक संघ के चार आने वार्षिक सदस्य बनने की कृपा करें।

–मंत्री, **श्री माहेश्वरी नवयुवक संघ**

आवश्यकता है—

बी. एस. सी. (फाइनल-क्लास) में पढ़नेवाले सम्भ्रान्त कुलके एक १९ वर्षीय माहेश्वरी नवयुवकके लिये एक कन्याकी आवश्यकता है। युवकके पास काफी जमीन जायदाद है। दहेजका कोई प्रश्न नहीं, किन्तु यह जरूरी है कि लड़की सुसंस्कृत परिवारकी और शिक्षित एवं सुंदर हो। कृपया बाक्स नं. ५० माहेश्वरी अली चेंबर्स डीन लेन फोर्ट के पते पर पत्र व्यवहार करें।

सभ्यता और प्रगति

(पृष्ठ १ का शेष)

ा, बालककी सर्जनशीलताका नहीं; और न ेलमें बालकके खुले आनन्दकी झलक उससे लती थी।

जो व्यक्ति महसूदके गांवोंपर बम बरसाने ये थे वे अपनी सभ्यताको अपने अभिनव ानिक यंत्ररूपी खिलौनोंकी प्रभावपूर्ण शक्तिके रा ही कूतते थे। इन चीजोंकी कीमत वे तनी अधिक अनुभव करते हैं कि वे अपनी नता पर भारीसे भारी करोंका बोझा भी दनेको उद्यत रहते हैं। ये कर पैसेके ही नहीं ल्कि मानवीयताके भी होते हैं। ये लोग इन खिलौनोंको जन्म देते हैं, और मानवकी मृत्यु-संख्या बढ़ाते हैं और इससे प्रसन्न होते हैं।

दूसरी ओर एक महसूदके दृष्टिकोणसे अतिथि सत्कार एक ऐसा गुण है जिससे वह किसीको मनुष्य समझता है, इस लिये वह स प्रकारके अवसरको कभी नहीं खोयेगा। पने किसी निर्दयी शत्रुको अतिथि बनाते वक्त ी वह इसी व्यवहारको बरतेगा। व्यवहारमें ाकर महसूदको कभी २ इसके लिये भारी कीमत चुकानी होती है, जैसे कि हमें अपनी किसी ी अमूल्य चीजके लिये भारी कीमत देनी होती है। सभ्यताका मिशन यही है कि वह लोगोंको उपयोगिताका ठीक माप बता देवे। एक महसूदमें अनेक अक्षम्य दोष होसकते हैं, परन्तु उसके वैर प्रतिशोधकी तुलनामें आतिथ्य सत्कारको अधिक कीमती समझनेकी बात निःसन्देह सभ्यता कही जाने योग्य है, चाहे म उसे प्रगति न कहें।

एकबार सौ मील परेके एक स्थानसे मुझे कलकत्ता तक मोटर से जाना पड़ा था। सफरमें मोटरकी मशीनमें कुछ खराबी हो जानेसे हमें हर आध घण्टे बाद मशीनमें नया पानी डालना होता था। सबसे पहिला गांव आने पर हमें वहाँ रुक जाना पड़ा और हमने वहाँके एक ग्रामीणसे पानी मंगाया। बेचारा बड़ी तकलीफ उठाकर पानी भरकर लाया—परन्तु जब हमने उसे पानी लानेके लिये इनाम देना चाहा, तो यद्यपि वह ग्रामीण बड़ा गरीब था, परन्तु उसने इनाम लेनेसे इनकार कर दिया। दूसरे १५ गांवोंमें भी ऐसा ही हुआ। एक ग्रीष्मप्रधान देशमें जहाँ यात्रियोंको सदा पानीकी आवश्यकता होती है, और जहाँ गर्मियोंमें पानी बहुत कम रह जाता है, वहाँके ग्रामीण लोग प्यासे यात्रियोंको पानी देना अपना कर्तव्य समझते हैं। आवश्यकता और संग्रहके निर्दयी (अर्थशास्त्रके) नियम के अनुसार वे लोग आसानीके साथ ऐसे स्थानोंमें इसका व्यापार कर सकते हैं। परन्तु उनका धार्मिकभावनाका आदर्श उनके जीवनोंमें घुलमिल गया है, इसलिये उन्हें पानी बेचनेको कहना ऐसा ही है जैसे उन्हें अपने प्राण बेचनेको कहा जाये। इस भावनाको ग्रहण करके वे अपनेको कोई बड़ा गुणी नहीं समझते हैं।

यह कैसी सरल चीज़ है। यह सरलता सदियोंकी संस्कृतिसे उत्पन्न हुई है। इस सरलताकी नकल बड़ी कठिन है। एक चक्केको घुमाकर हजारों सुइयोंमें एक साथ छिद्र करना बेशक मैं कुछ ही सालोंमें सीख लूँ परन्तु एक अजनबी या दुश्मनकी मेहमाननिवाजी सहजभाव से करना सीखनेके लिये कई युगोंकी साधना की जरूरत है। सरलता अपनी कीमतका हिसाब नहीं देती फिरा करती, कोई तनख्वाह नहीं माँगा करती है। इसी लिये जो शक्तिके मदमें चूर हैं वे यह कभी अनुभव कर ही नहीं सकते हैं कि आध्यात्मिक प्रकाशन की सरलता ही सभ्यताकी सबसे ऊँची कृति है। उच्चजीवनके इस विशेष फलका नाश सभ्यशस्त्रों की लोभपूर्ण सर्वभक्षी शक्ति द्वारा किया जाता है। इस तथ्य की सचाई का मुझे तब पता चला जब कि मैं कलकत्ताके एक धनी उपनगरमें पहुँचा जहाँ कि पानी आसानीके साथ बड़े परिमाणमें मिल सकता था, और जहाँ उन्नति चारों ओर विविध प्रकारसे उमड़ी चली आती थी, वहाँ पर लोग पैसोंसे पानी बेचना चाहते थे।

एक सभ्यता तभीतक स्वस्थ तथा सुदृढ़ रहती है जबतक इसके केन्द्रमें वे रचनात्मक आदर्श रहते हैं जो कि उसके माननेवालोंको समान गति तालके सम्बन्धमें सूचित किये रहते हैं। जब इस सृजनशील आदर्श—अर्थात् धर्मका स्थान वासनायें लेलेती हैं तब यह सभ्यता उस सितारेके समान अग्निके शोलोंमें जल उठती है, जिसने अपनी चिता स्वयं प्रज्वलित की है।

गत दो सदियोंसे पश्चिमने अपना रुख प्राकृतिक शक्ति भण्डारकी ओर फेर लिया है और तबसे इसका समस्त ध्यान अप्रतिहत रूपसे उसी दिशाकी ओर खिंचा चला गया है। इस तरह पश्चिमके सभ्यताके आभ्यन्तर आदर्शको शक्तिके प्रेमने धकेलकर अलग कर दिया है।

मानव आदर्श—धर्म, मानवप्रकृति पर नीचे ऊँचे सर्वत्र अपना प्रभाव डालता है। इस आदर्शका प्रकाश सर्वत्र फैला होनेसे बड़ा सौम्य मालूम होता है। महान होनेसे यह बड़ा शान्तिप्रद है, और आसानीसे समझमें आजानेवाला होनेसे यह विनम्रतासे पूर्ण है। इसके मुकाबलेमें हमारे कामभाव संकुचिततासे भरे हुए हैं और लोभ लालसासे बुरी तरह अभिभूत है। लोभकी इसी जबर्दस्त भावनाने आज समस्त पश्चिमीय जगत्को अपने पंजेमें जकड़ लिया है। यह सब बहुत ही थोड़े कालमें हुआ है, और इसने ब्रह्माण्डके समस्त देश और काल पर भौतिकवादकी जबर्दस्त बौछार करके उनका साँस घोट कर रख दिया है। मानवीयता सम्बन्धी एक-एक वस्तुको खण्ड खण्ड कर दिया है।

इस प्रकारकी अस्तव्यस्ततामें एकताका ढाँचा स्थापित करनेका यत्न करते हुए शान्ति, दया, या सामाजिक मंगलके निर्माणके लिये कुछ संस्थाओंकी स्थापना की गयी है। परन्तु उनकी आवश्यकता वैसी ही है जैसे कि एक पानी पीनेका बर्तन हमारी आवश्यकताकी पूर्त्तिकी अपेक्षा जलके लिये अधिक होवे।

मैंने एक स्थान पर प्लेटोका एक विचार पढ़ा है जिसमें वे कहते हैं कि, "एक बुद्धिमान् और सामाजिक जाति तभी तक फले फूलेगी जब तक वह एक इकाई बनकर रहेगी, इस स्थिति से बाहर होने पर उसकी वृद्धि रुक जायेगी, अथवा वह जाति विच्छिन्न हो जायेगी और एक सजीव देहवाली नहीं रहेगी।" इकाईकी यह भावना केवल धर्मकी सजीव विचारणा पर ही टिक सकती है।

लोट्ज़ेने कहा है, कि "अनादि कारणको न जाननेसे वासनायें उत्पन्न होती हैं; ये वासनायें ही पाप हैं। तब हम सुखसुविधाओंके पीछे लगे फिरते हैं, चीजोंके ढेर लगा देते हैं, अनादि पर आवरण पड़ जाता है, वासनायें जाग उठती हैं, और पाप अपने कठोर पैरोंके नीचे जीवनकलीको रौंदता हुआ और मानव का अंगभंग करता हुआ, एक महाद्वीपको जीत कर दूसरे महाद्वीपों की ओर विजय प्रस्थान करता आगे बढ़ता है। और हमें मृत्युके इस कूचके लिये विजय तोरण बनानेको कहा जाता है।" आओ यदि हम इसकी गतिमें विलम्ब तथा रुकावट पैदा नहीं कर सकते तो कमसे कम इसकी विजय माननेसे तो इन्कार करदेवें। जैसा संत लोट्ज़ेने कहा है, आओ हम मौतका वरण करलेवें फिर भी नष्ट न होजावें।

हमारे धर्मशास्त्रोंमें कहा गया है, लोभ पाप है और पापही मृत्यु है। दार्शनिक (लोट्ज़े) ने कहा हैः 'लोभसे बढ़कर कोई भारी आपदा नहीं।' इन वाक्योंमें युग-युगका ज्ञान भरा है। जब प्रजामें लोभ सर्वोपरि होजाता है तब जानलो उसका विनाश निकट है, और तब राष्ट्रसंघ सदृश संगठनमात्र लोगोंकी रक्षा नहीं कर सकता है। एक ही कालमें स्वार्थकी धाराको अनियंत्रित भावसे बहने देनेसे और उसी वक्त उसके बाहर उसकी राहके आरपार एक बाँध बाँधनेकी कोशिश करनेसे कभी सफलता नहीं मिलेगी। रुकावटसे तो बाढ़का पानी और भी अधिक जोरसे फूटकर आगे बढ़ेगा। लोट्ज़ेने कहा है, "स्वार्थसाधनसे कोई व्यक्ति जीवन नहीं पा सकता" जीवनका सिद्धान्त इसी तथ्यमें है, इसी लिये एक समाजके जीवनका निर्माण करनेवाली साधना और शिक्षण वही हो सकती हैं जो कि हमें स्वार्थ पूर्ण लोभको नियंत्रित करनेमें सहायक हों।

जब संसारमें सभ्यता जीवित थी—अर्थात् जब इसकी गतिका सम्बन्ध अभ्यन्तर आदर्शोंसे ही था, बाहर की जोर जबर्दस्तीसे न था, तब धनकी वह कीमत न थी जो उसे आजकल मिल गयी है। इस तथ्यने हमारे जीवनोंमें जो भिन्नता उत्पन्न कर दी है, आप लोगोंने क्या कभी उसका अनुभव नहीं किया? इस विपद्पूर्ण परिवर्तनके हम इतने अभ्यस्त बन चुके हैं कि हम उससे अपने पर लादी जा रही अप्रतिष्ठाको पूर्णतया अनुभव ही नहीं कर रहे हैं।

पुराने समयोंमें लक्षलक्ष रुपये भी यदि आदर्शकी उच्चतासे गौरवान्वित हुए बिना ही जमा हुए होते थे, तो वह धन नहीं माना जाता था। पूर्वमें और पश्चिममें स्वात्मप्रतिष्ठाकी रक्षाके लिये उस धनको निश्चयसे घृणा की दृष्टिसे देखा जाता था, जो धन कि किसी नैतिक उत्तरदायित्वसे शून्य होता था। पेशेके तौरपर पैसा कमाना बुरा समझा जाता था। और जिन मनुष्योंके जीवनका उद्देश्य केवल बड़ा धनलाभ ही था, समाजमें उन्हें नीची दृष्टिसे देखा जाता था।

भारतमें वह भी एक समय था जब हमारे ब्राह्मणोंका आदर उनकी विद्या और पवित्र जीवनके साथ साथ पार्थिव सम्पदाके प्रति उनके उच्चतम निरीहभावके कारणसे भी था। इससे यही पता चलता है कि हमारा समाज इस बातको पूरी तरह समझता था कि उसका अपना जीवन उसके उन आदर्शों पर आश्रित था जो कि स्वार्थवृत्ति सम्बन्धी भावोंसे कभी अपमानित नहीं किये गये हों। परन्तु आज क्योंकि प्रगतिको सभ्यताका विशेष गुण माना जा रहा है और क्योंकि यह प्रगति अनन्त पार्थिव सम्पदाके विस्तारका संग्रह कर रही है, इसी लिए आज विश्वमें धनको सर्वोच्च सत्ता मिल गयी है।

पहले दिनोंमें पण्डितों या अध्यात्मवेत्ताओंके चरणोंमें सम्मान प्रगट करते हुए भी राजाओं को कभी लज्जा अनुभव न होती थी। परंतु आज मनुष्य अपनी मानमर्यादाको भूलकर धनकी मोटी रकम वाले आदमियोंके प्रति ही अपना आदरभाव प्रगट करते हैं। ऐसी कुछ बात नहीं कि उन्हें धनवानोंसे सदा किसी लाभकी आशा हो—वे तो केवल इस बातसे ही कि अमुक इतनी अधिक धनराशिका मालिक है, उसका आदर करते हैं। यह स्थिति सर्वाङ्ग मानव पर भौतिक मानवकी विजय को सूचित करती है।

मैंने एक उदाहरण पहिले भी दिया है जिसमें भारतके हमारे ऋषियोंने कहा है, "अधर्म से मनुष्य खूब फलता फूलता है, वह जिस वस्तुकी कामना करता है, उसे प्राप्त करलेता है, अपने शत्रुओंको पराजित कर देता है, पंतु अन्तमें समूल नष्ट हो जाता है।" अकल्याणकारी सम्पदा सदा तीव्र शक्तिके साथ बढ़ा करती है, परन्तु इसके भीतर मृत्युका बीज फूट रहा होता है। यह सम्पदा पश्चिममें मनुष्यके रक्त पर पालीपोसी गयी है, और इसकी फसल पक कर तैयार हो रही है।

हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद

विक्रमोत्सवके अवसर पर हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद दक्षिण एक इतिहास तैयार कर रही है जिसमें हैदराबादमें हिन्दीका संपूर्ण परिचय होगा। इसमें राज्य की हिन्दी पाठशालाएं, वाचनालय, पुस्तकालय, परीक्षा केन्द्र व अन्य हिन्दी प्रेमी संस्थाओं, प्रेस, मुद्रक व प्रकाशक, समाचार पत्र, लेखक व कवि, दानवीर, हिन्दी सेवी व प्रचारकोंका परिचय रहेगा। जिन संस्थाओंके पते ज्ञात थे उनकी सेवामें प्रश्न सूची भेजी जा चुकी है। यदि किसी संस्थाको प्रश्न सूची न मिली हो तो तुरन्त हो सभा कार्यालयको पत्र लिखकर उसे मंगाकर विवरण भेज देना चाहिए। निवेदक—मधुसूदन दास चतुर्वेदी, इतिहास लेखक हिन्दी प्रचार सभा हैदराबाद।

पन्द्रह वर्षीय आर्थिक योजना पर अंतर्दृष्टि

(पृष्ठ ४ का शेष)

का प्रश्न उत्पादनके प्रश्नके साथ घनिष्ट रूपसे जुड़ा हुआ है। यदि हम उन एजेन्सियों—आढ़तों, को जो राष्ट्रीय आयका बहुत बडा हिस्सा अनियन्त्रित रूपसे हड़प लेती हैं कायम रहने देंगे, तो हम कभीभी उचित वितरण की कोई योजना नहीं बना सकेंगे। इन एजेन्सियों पर नियंत्रण वितरणके प्रश्नके समाधानकी कुञ्जी है। बिना नियंत्रणके उचित वितरण स्वप्न है।

अब हम आर्थिक योजनाके प्रश्न पर आते हैं। इस योजनाकी हमें क्यों आवश्यकता है? इस लिए कि लोगोंके रहन सहनका स्टैण्डर्ड ऊंचा हो। सभी इस पर एकमत हैं या एकमत होनेका बहाना करते हैं। इस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिए हमें देशमें सम्पदाका उत्पादन बढ़ाना होगा। अब प्रश्न उठता है कि इस बातकी क्या गारंटी है कि नयी सम्पदा जो आर्थिक योजनाके अन्तर्गत पैदा की जायगी; मुट्ठीभर लोगों की ही जेबों में न जायेगी और प्रायः सारी जनसंख्या पहले की ही तरह गरीब न बनी रहेगी?

इस विषयमें एकमात्र गारंटी यही हो सकती है कि उत्पादन बढ़ानेकी हमारी योजना इस ढंगकी बनायी जाय ताकि मुट्ठी भर लोग राष्ट्रीय आयका बहुत बड़ा हिस्सा न हजम-कर पायें। हमें डंकेकी चोट यह कहना होगा कि हमारे जमींदार प्रति वर्ष आयकी एक निर्धारित रकमसे अधिक न पायेंगे और यह रकम गवर्नमेन्ट द्वारा उन्हें मिलेगी। इसी तरह हमें महाजनों से कहना होगा कि आप आय की निर्धारित वार्षिक रकम पर ही सन्तोष कीजिए। और साथ ही हमे अपने देश के पूंजीपतियों से कहना होगा कि आप योजना आफिसर के निर्देशानुसार समाज की आवश्यकता की पूर्ति के लिए उत्पादन कीजिए और मुनाफे की निर्धारित औसत से अधिक की आशा न कीजिए। यही बात हमारे व्यापारियों और मध्यम श्रेणी के लोगों के लिए लागू होगी। जब तक हम ऐसा न करेंगे तब तक लोगोंके रहन सहनका स्टैण्डर्ड ऊंचा करनेकी लंबीचौड़ी बातोंका कोई अर्थ नहीं है। हम अपने घरकी छत पर खड़े होकर उच्च स्वर से यह घोषित कर सकते हैं कि देशवासियों को रहन सहन की दयनीय स्थिति देखकर हमें मर्मान्तिक दुःख होता है, और हम स्थिति को बदल देना चाहते हैं,—हम उनकी दशा पर आँसू भी बहा सकते हैं, किन्तु इन सब बातोंसे तब तक कोई लाभ नहीं हो सकता जब तक कि आर्थिक योजना की अपरिहार्य शर्तें ठीक से पूरी नहीं की जायगी। हमें इस योजनाकार या उस योजनाकार के वक्तव्यों पर सहसा विश्वास कर लेने और विभिन्न योजनाकारों की इस अपील या उस अपील से गुमराह होनेके बजाय लोगों की आर्थिक हालतमें सुधार होनेके दृष्टिकोणसे विभिन्न योजनाओंके मूल्य और उपादेयता की जांच करनेका प्रयत्न करना

(शेष २ कालम पर)

आफ़तों का सामना

(पृष्ठ १० का शेष)

कोई नेकी नहीं है। नेकी तो नेकी करने में है। नेकी करने में भी इतनी नेकी नहीं है, जितनी नेकी कर कुएं में डालने में है। नेकी कर, नेकी की नेक भी, चाह नेक चैन न लेने देगी। सुखी होने के लिए उसे भूलना ही पड़ेगा। नेकी निकम्मों का भी काम नहीं। कमजोरों का भी नहीं। कमजोर चिड़चिड़े होतें हैं। चिड़चिड़ेपन से भलाई दूर भागती है।

तकलीफों का सामना करने के लिए मनो बल बढ़ाना ही होगा। मनो-बल बढ़ाने से भी ज्यादा जरूरी है उस मनो-बल से काम लेना। और यही तो सबक है जो सीखना है। यह सबक पैदा होते ही शुरु हो जाता है। प्रकृति नवजात बालक में भूख का कांटा चुभाती है। बालक जोर से चिल्ला चिल्ला कर जमीन आसमान एक कर देता है। इससे दूध तो उसे जिसकी ग़रज हो देता ही है पर उसके फेफड़े खूब मजबूत हो जाते हैं। यह काम बालक आप ही कर सकता है कोई और नहीं। जवान उम्र के लिहाज़ से जवान है, मगर काम के लिहाज़ से समाज के सामने बच्चा है। उसका यह हक है कि बड़े होकर काम की तैयारी तक दूसरे उसे खिलाये पिलाये। अपने 'मैं' को उपयोगिता की नींव पर मजबूत खड़ा कर दूसरों के 'मैं' को समझना आना चाहिये। और टक्करों से बचना चाहिये। घमंड की नीव पर खड़े मैं ही टकराते हैं। मिल बैठ कर काम करने के लिए मैं का मजबूत होना जरूरी हैं।

मैं ओं का ठीक ठीक निर्वाह ही दुनियाकी बढ़वारी कहलाती है। इसी को विकास और Evolution नाम दिया गया है। विकसित मैं यह जान लेता है कि सुखी रहना एक कला है। इससे स्वच्छन्दता की चाह नहीं रह जाती। स्वतन्त्रता प्यारी लगने लगती है। और फिर अकेले ही नहीं हम सब मिलकर उस ओर बढ़ने में लग जाते हैं, जहां हमें पहुँचना है।

दो शब्दों में यों कि 'हम है' के साथ साथ विचारशीलता जाग जाती है, विवेक चमक उठता है। जीते रहने की जरूरत मालूम होने लगती है। इसलिये, हमारा यह परम कर्तव्य है कि हम अपने 'मैं' को सच्चा मैं बनाएं। यही सच्चा मैं हम पर आई आफतों को मन वा आत्मा तक न पहुंचने देगा, तब हम तकलीफोंमें हंसने का चमत्कार दिखा सकेंगे। और सब को अचरज में डाल सकेंगे।

(कालम १ का शेष)

चाहिए। जो आर्थिक योजना इस बुनियादी शर्त की पूर्ति नहीं करती, उससे कभी भी लोगों की हालत सुधर नहीं सकती। अस्तु यह किसी भी आर्थिक योजनाका मूल्य आंकने की कसौटी होनी चाहिए।

सामयिक विचार प्रवाह

वर्ण द्वेषका अंत करो

वर्ण द्वेषका जितना उग्ररूप अमेरिकामें है, उतना अन्यत्र कही नहीं है। इस द्वेषका उद्गम स्थान है, श्वेत दर्प—इसी श्वेत दर्प ने अमेरिकाके कई करोड़ निग्रो लोगोंको दासकी सी स्थितिमें डाल रखा है। अमेरिकाके गोरोंका दृष्टिकोण आज भी पहले ही जैसा है। भारतीयोंके प्रति इनका व्यवहार सर्वथा अनुचित और अन्यायपूर्ण है। वे नागरिक अधिकारोंसे वंचित हैं। यह कितनी असंगतिपूर्ण बात है कि गणतंत्र और स्वाधीनताकी रक्षाके लिए लड़नेका दावा करनेवाला अमेरिका भारतीयोंको नागरिक अधिकार तक नहीं प्रदान करता! वहांकी धारा सभाके कुछ सदस्य इसके लिए प्रयत्नशील हैं, किन्तु इसमें सन्देह है कि वे सफल हों सकेंगे। भारतकी राजपरिषदमें इस आशयका एक प्रस्ताव पास हुआ है कि भारत सरकार अमेरिकन सरकारसे नागरिक अधिकार दिलवानेके लिए प्रयत्न करे। युद्धजन्य परिस्थितियोंमें भारत या ब्रिटिश सरकारसे ऐसी आशा नहीं की जा सकती, क्योंकि दोनों ही देशोंकी सरकारें अमेरिकाके ऐहसानोंसे दबी हैं। हम तो समझते हैं कि सर्वोत्कृष्ट उपाय वर्ण द्वेषके विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन जारी करना है। अमेरिका स्थित भारतीय ही नहीं वरन् अन्य देशोंके लोग भी, जो अमेरिका, कनाड़ा, अफ्रिका और आस्ट्रेलियाकी सरकारों द्वारा भारतीयोंके साथ किये जानेवाले व्यवहारको अनुचित, और मानवताका अपमान समझते हैं सामने आकर अपना क्षोभ व्यक्त करें और दुनियाके सामने अमेरिकाके गणतंत्रके कारनामें रखें। अनुनय विनयसे काम चलता नहीं दीख पड़ता। कोई ठोस काम करना होगा और उसका श्रीगणेश भारतीयोंको ही करना होगा, तभी दूसरे देशोंके मानव हितैषी अमेरिकाको कोसनके लिए आगे बढ़ेंगे।

'हमीं देशभक्त हैं!'

असेम्बलीकी गत बैठकमें कांग्रेस पार्टीके उपप्रधान मि० अब्दुल क्यूम एवं मुस्लिम लीग असेम्ली पार्टीके सर लियाकत अली खां ने यह सिद्ध किया कि वायसरायकी शासन परिषदके भारतीय सदस्य जनसाधारणके प्रतिनिधि नहीं हैं और लोगोंका इन पर विश्वास नहीं हैं। वे गैर जिम्मेवार हैं इसका उत्तर देनेका प्रयत्न डा. खरे ने असेम्बलीमें एवं सर मुहम्मद उस्मान कौंसिल आफ स्टेटमें किया और अपने देशभक्त होनेका बखान किया। उनके देशभक्त होनेमें कोई सन्देह क्यों करें। डा. खरे जैसा कोई व्यक्ति यदि स्वतंत्र देशमें होता और कांग्रेस पार्टी एवं देशवासियोंके प्रति इस प्रकारकी गद्दारी करता, तो उसे क्विसलिंग नामसे विभूषित किया जाता, किन्तु परतंत्र भारतमें तो क्विस्लिंग कोभी देशभक्त की उपाधि मिल सकती है और शासन परिषदके अध्यक्ष लार्ड वावेलने जब उनके देशभक्त होनेका डिंढोरा पीट दिया है तो अब उन्हें और कौनसा सार्टिफिकेट चाहि सर मुहम्मद उस्मानसे हम यही कहना चा हैं कि उनके देशभक्त होनेके संबंधमें तो स्थिति है कि तोता सोनेके पींजड़े में है और मालिक द्वारा दिये गये फलों सन्तोष करता है और मालिकके सि हुए वचनोंको रट देता है। हम उन तोता यही कहना चाहते हैं कि आप देशभक्त लेकिन रवीन्द्र बाबूके शब्दोंमें आप पींजड़े तोतेकी भाँति हैं।

Their love is intense wi longing,

But, they never can f wing to wing.

लोकयुद्ध के प्रचार का पुरस्कार

भारत सरकारके श्रम सदस्य डा. बी. अ अम्बेडकरने केन्द्रीय धारा सभामें एक अना श्यक रहस्योद्घाटन किया है। उन्होंने लालचंद नवलरायके एक प्रश्नके उत्तरमें क कि यह बात सच है कि भारत सरक श्रम विभाग एम. एन. रायकी संस्था इंडि लेबर फेडरेशनको १३ हजार रु. मासि सहायता प्रदान कर रहा है। इस त प्रकट होना निस्संदेह एम. एन. राय उनके अन्ध भक्तोंको अखरेगा और यही भारतके मुट्ठीभर लोगोंपर उन्होंने पाखंड जो प्रभाव जमा रखा है, वह विलुप्त हुए न रहेगा। जब श्री. रायके दलने युद्धको लोकयुद्ध बताकर उसके पक्षमें धुआं प्रचार करना आरंभ किया था तभी लो दालमें कुछ काला जान पड़ा था। किन्तु वादियोंने अपने दलकी ईमानदारीके प्रति उठानेवालोंको फिफ्थकालमके आदमी कहकर करने की चेष्टा की। अब सत्यता सारी दु के सामने आ गयी। भारतमें लोकयुद्ध राग अलापनेवालेका एक दल अभी और जो अपने विचार परिवर्तन का समर्थन जमीन आसमानके कुलाबे मिला रहा यह तथा कथित कम्यूनिस्ट दल यह भी राय पार्टीका पदानुसरण कर राजनीतिक विरोधियोंको फिफ्थ कालम कहकर बदनाम करनेका प्रयास करती है। क्या ही अच्छा हो यदि इसका भी अं ठंडा हो जाय और भोलेभाले मजदूर चंगुलसे निकल आये।

छपते-छपते

—२० अप्रैल की रातमें श्री. विजयराघवा का ९४ वर्ष की आयु में देहान्त हो सन १९२० में नागपुर में हुई कांग्रेस के अ प्रेसीडेण्ट चुने गये थे।

—२१ अप्रैल से 'बाम्बे सेन्टीनल' पु प्रकाशित होने लग गया है। सरकार ने पर से प्रतिबन्ध हटा लिया।

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल

इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड

संस्थापित सन् १९१९

★

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—: हमारी शाखाएं :—

अहमदाबाद
(गांधी रोड)

बोटाद
(काठियावाड़)

कलकत्ता
(१३५, कैनिंग स्ट्रीट)

लाहौर
(दी माल)

कम्पाला (युगाण्डा)
(बाम्बो रोड)

★

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेण्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए :—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :— सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B.A., B. SC., LL. B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

Reg. No. B4441

दी

न्यु एशियाटिक

की

उन्नति की रफ्तार

केवल जीवन बीमा के आंकड़े ही खुद बता रहे हैं

१९३४......................रु० १५,००,०००

१९३८......................रु० ४१,७४,०००

१९४२.....रु० ६०,००,०००

१९४३......एक करोड़के ऊपर

हम अपने पोलिसी-होल्डरों, काम करनेवालों तथा सभी शुभ चिन्तकों को इस शानदार सफलता के लिये हृदयसे धन्यवाद देते हैं

कृपया हमें पूछिये **लाइफ** **आग**

मोटर **वर्कमेन कम्पेनसेशन**

मरिन आदि २ बीमों के लिए

न्यु एशियाटिक इंस्युरन्स कम्पनी लिमिटेड

हेड आफिस
नई दिल्ली

वेस्टर्न डिवीजन ऑफिस :—
इंपीरियल बैंक एनेक्स बिल्डिंग, फोर्ट, बम्बई

हमारी शाखाएं:—

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, त्रिचिनापली, लाहौर, इन्दौर, नागपुर, जलगांव, हैदराबाद (दक्षिण) कराची, कालीकट, बनारस

इनके अतिरिक्त अन्य महत्व के स्थानों में हमारी चीफ एजंसियां हैं

खिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

माहेश्वरी

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

३४ साल

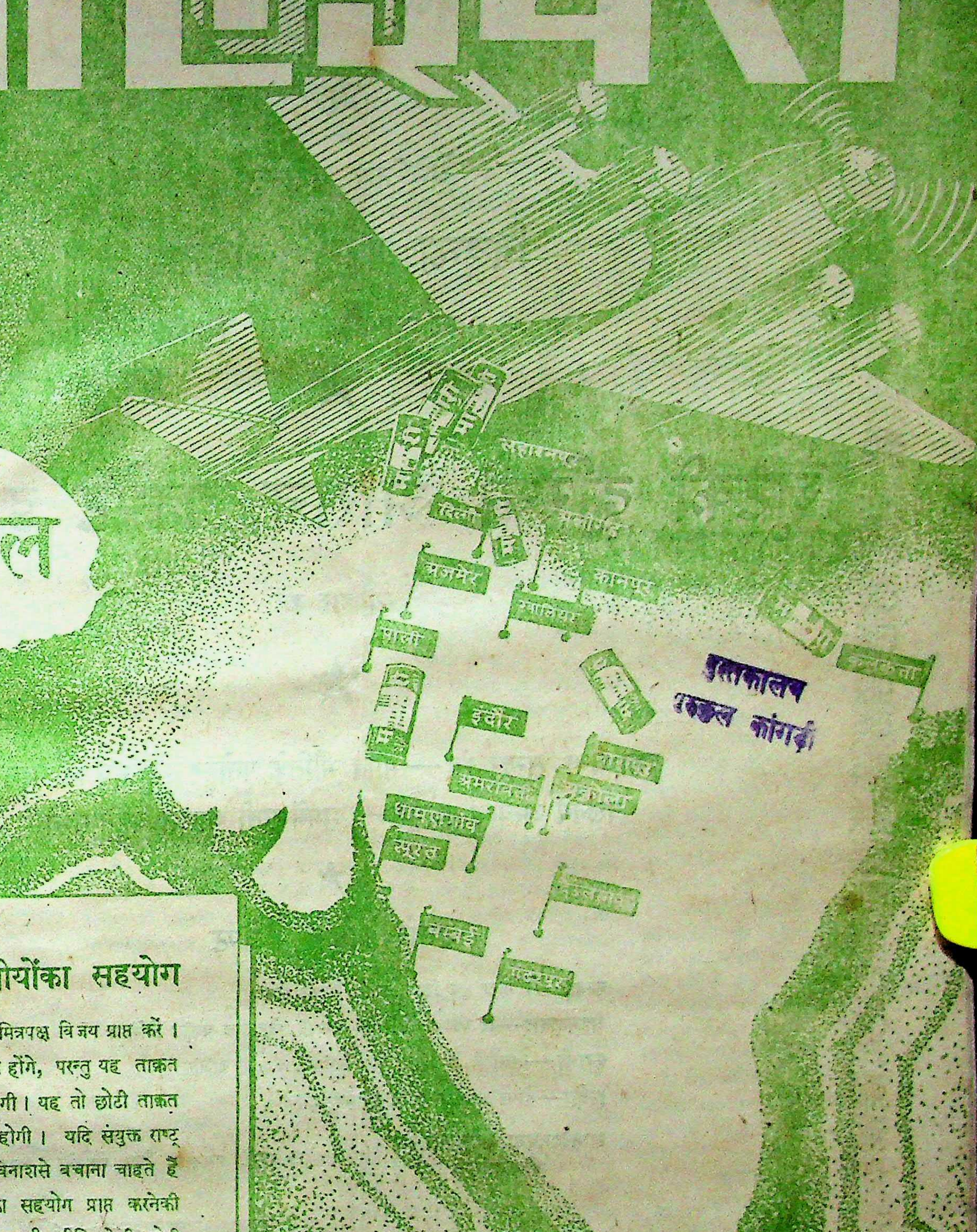
सहारनपुर
दिल्ली
अजमेर
कानपुर
ग्वालियर
पाली
कलकत्ता
इंदौर
नागपुर
अमरावती
धामणगांव
बम्बई

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

विजय और भारतीयोंका सहयोग

“ बहुत सम्भव है युद्धमें मित्रपक्ष विजय प्राप्त करें। मुझे आशा है, वे लोग विजयी होंगे, परन्तु यह ताक़त पर सचाई की विजय नहीं होगी। यह तो छोटी ताक़त पर बड़ी ताक़तकी विजयही होगी। यदि संयुक्त राष्ट्र मानवता को भविष्य के महा विनाशसे बचाना चाहते हैं तो उन्हें इस देशकी जनताका सहयोग प्राप्त करनेकी नीति बरतनी होगी। मित्रपक्षकी नीति ऐसी होनी चाहिये जिससे वे भारतीय जनताकी सदिच्छाएं प्राप्त कर सकें, ताकि विजय लाभ करनेपर वे यह कह सकें कि यह विजय ताक़त पर सचाईकी और अन्याय पर न्याय की थी।”

[असेम्बलीमें अर्थबिल-विरोधी भाषण से] — नवाबजादा लियाकत अलीखां

आर्ट कॉर्नर

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा पाक्षिक कार्यालय—अली चेम्बर्स, हीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

बिड़ला जूट मैन्यूफेक्चरिंग कं. लिमिटेड

★

मैनेजिंग एजेन्ट्स

बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

८, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

★

जूटकी दरियां, आसन, कार्पेट इत्यादि

व्यवहार करें

★

पक्का तथा सुन्दर रंग—भाँति भाँतिके मनोहर चित्रमय डिजाइन
चलनेमें अत्यन्त मजबूत—दाममें सूती मालसे बहुत सस्ते

★

हमारे प्रमुख एजेण्ट

बम्बई—दि मोटर हुड डिपो, ४८० सैंढर्स्ट रोड
अहमदाबाद—दि अग्रवाल हेशियन एजन्सी, जेठालाल वकील बिल्डिंग।
कराची—मेसर्स जे. ललवानी ऐण्ड कम्पनी, कागजी बाजार
इन्दोर—होम्स इंडस्ट्रियल एजेन्सी यशवंतगंज
खानदेश, पूना, अहमदनगर और नासिक } मेसर्स लाहोटी ब्रदर्स, राजस्थान चौक, संगमनेर (अहमदनगर)

यदि आपके शहरमें कोई एजेण्ट नहीं है तो
एजेंसीके लिए हमसे पत्र-व्यवहार करें।

माहेश्वरी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़
बी.ए., बी.एस्.सी. एलएल.बी.

‘ उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ’

वर्ष ३४, संख्या २३]　बम्बई ता. ७ अप्रैल १९४४　[वार्षिक मूल्य ४॥ रुपये

ये गांधी और नेहरू किस लिये दीवाने ?

ले.-डा० लिन युटांग

विख्यात चीनी दार्शनिक डॉ. लिन युटांग भारत की स्वाधीनताके प्रश्न का अकाट्य रूपसे समर्थन कर करोड़ों भारतीयों की अगाध श्रद्धा और स्नेहके पात्र बन चुके हैं। आपके तर्क, वाग्धराप्रवाह, डंके की चोट पर तथ्यको कहने की प्रवृत्ति, और तिलमिला देनेवाली आलोचनाने साम्राज्यवादी क्षेत्रोंमें काफी हलचल पैदा कर दी है। नीचेके मंतव्यमें आपने भारत की स्वाधीनताके प्रश्नको टालनेके लिए बनाये जानेवाले बहानोंके धुर्रे उड़ाये हैं और सिद्ध किया है कि अपने देशकी आजादी और इंग्लैण्ड की दासतासे मुक्ति पानेके लिए लड़नेवाले न पागल हैं और न मूर्ख, जैसा कि स्वार्थवश कुछ साम्राज्यवादी उन्हें समझते हैं।　—सम्पादक

एशियामें महत्वपूर्ण घटनायें घट रही हैं, जिनका प्रभाव भारतवर्षकी ३९ करोड़ जनता पर ही नहीं, बल्कि संयुक्त मित्रराष्ट्रोंके संग्रामके अतिआवश्यक तात्विक स्वरूप और उनकी भविष्यकी प्रगति पर भी बहुत अधिक पड़ रहा है। चीनी होनेके नातें मैं यह जानता हूं कि चीन देशपर इसका सबसे पूर्व प्रत्यक्ष व स्पष्ट प्रभाव पड़ेगा। समयका आदेश है कि हम आज भारतकी इन घटनाओंको एक निठल्ले कोरे आलोचकके समान नहीं परन्तु ब्रिटेन और भारत सदृश दो मित्रराष्ट्रोंके बीच होनेवाले संघर्षमें उत्तरदायित्वपूर्ण भाग लेनेवालों के समान जाँचें तोलें।

हम आज दिनतक हिन्दूविरोधी प्रचारसे अपने विचारोंको पुष्ट करते रहे है। अपने दिलको दिलासा देनेके लिये हम शायद इस भ्रमपूर्ण बात पर भी विश्वास कर सकते हैं कि कॉंग्रेस हिन्दुस्तानकी जनताकी प्रतिनिधिसंस्था नहीं है, हम इस सर्वथा झूठी बात पर भी यकीन कर सकते हैं कि कॉंग्रेसमें भारतीय मुसलमानोंका समावेश नहीं है, श्री जिन्ना हिन्दुस्तानमें एक बहुत ही भारी महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं, अंग्रेजोंको भारतवासी जनता हृदयसे चाहती है और भारतमें सब कुछ बहुत ही सुन्दर है।

झूठा संतोष

हम अपनी नैतिक भावनाकी विजयकी सन्तुष्टिके लिये अंग्रेजोंके इस मतको भी स्वीकार कर लेते हैं कि हिन्दुस्तानको स्वतंत्रता न देनेकी इच्छा रखने वालोंमें हम नहीं हैं, स्वयं भारतवासियोंने कभी एक होकरके इसके लिये माँग ही नहीं की।

इसी प्रकार की सर्वथा भ्रमपूर्ण धारणाओंको स्वीकार करके और क्रिप्स मिशनके बादके महीनोंमें कुछ भी न करके हमीं उस संघर्षको जन्म देनेके लिये जवाबदेह हैं। अमेरिका आदि देशोंमें भारतके खिलाफ जो सर्वथा झूठे अभियोगोंसे पूर्ण मिथ्याप्रचार हो रहा है उससे हम चीनवासियोंको अपनेको दूर रखना चाहिये। बुद्धिमान नागरिक जानते हैं कि अमेरिकनोंके सन्मुख भारतका जो चित्र या वर्णन रखा जाता है वह कलकत्ता तथा नयी दिल्ली स्थित ब्रिटिश सैंसर विभागके अपने दृष्टिकोणसे तैयार किया होता है। उन्हें यह मालूम ही है कि हिन्दुस्तानके सम्बन्धमें जो समाचार दिये जाते हैं वे गलत होते है, और प्रायः तोड़े-मरोड़े होते हैं।

मानवस्वभाव

मानवस्वभावका यह कायदा है कि जिसे हमने चोट पहुँचानी होती है पहले उसे खूब गालियां देते हैं, और गालियां दे देकर यह यकीन दिलाते हैं कि हम जो उस पर चोट कर रहे हैं वह उसीके भलेके लियेही। यह मानवस्वभाव यहाँ भी खूब व्यवहारमें लाया जा रहा है। कहा जाता है कि गान्धीजी मामलेको दबानेवाले राजनीतिज्ञ हैं। गांधीजीमें वस्तुस्थितिको समझनेकी अक्ल नहीं है। गांधी तो केवल अंग्रेजोंका विनाश चाहते हैं ! !

क्यों ?

स्वभावतः प्रश्न उठाता है कि म० गान्धी ऐसे बेवकूफ क्यों हैं ? जवाहरलाल नेहरू और अन्य कॉंग्रेस नेताओं जैसे आदमी भी इतने बेवकूफ क्यों हैं ? भारतीय जनता भी इतनी बेवकूफ क्यों है कि वह उन लोगोंके बहकावों में आजाती है ? हिन्दुओंके विषयमें अमेरिकन आलोचक और सम्पादक गहरे अज्ञानमें पड़े हुए हैं।

इस लिये

“गान्धीजी इसलिये बेवकूफ हैं क्योंकि वे उसी बातके लिये जंग छेड़े हुए हैं जिसके लिये जॉर्ज वाशिंग्टनने युद्ध ठाना था—अपने देशकी आजादी और इंग्लैण्ड की दासताके बन्धनसे छुटकारा ! !

नेहरूजी भी इसीलिये ऐसे बेवकूफ हैं क्योंकि वे भी एक छोटेसे शब्द (स्वाधीनता) में वही भावना जगाये हुए हैं जो कभी थौमस पेन और वाशिंगटनने अनुभव की थी।

समूचा भारतीय राष्ट्र आज आजादीके लिये वैसी ही तड़फन से भरा है, जैसा कि अमेरिका के १३ उपनिवेश अपनी स्वतंत्रताके लिये कभी तड़फ रहे थे। वीर वाशिंगटनने एक दिन जैसा हठ पकड़ा था और जैसी जिद् डी वेलराने आज पकड़ी हुई है, ठीक उसी तरहके आग्रह को गान्धी और नेहरू आज पकड़े हुये हैं। बीते कालमें जैसा कुछ अन्याय अमेरिकन उपनिवेशों और आयर्लैण्डके साथ किया गया था ठीक वैसाही भारी अन्याय आज भारतके साथ किया जा रहा है। आज अमेरिका निवासियोंको जब स्वाधीनता मिल गयी है तो वे लोग यह भूल गये हैं कि यदि किसी राष्ट्रने स्वाधीनता खोदी है तो उसका क्या अर्थ होता है। इसी लिये आज वे भारत की समस्याओंको ठीकसे समझ नहीं सक रहे हैं।

आजादीकी यह जबर्दस्त भावना ही है जिसे आज गान्धी और नेहरू ने उन्मुक्त भाव से संसारभरमें बखेर दिया है। अभी उस दिन सेक्रेटरी हलने स्वाधीनताके लिये युद्धमें कूदने की राष्ट्रोंसे अपील की थी। भारतीय जनता आज सच्चे अर्थोंमें उसकी पुकार पर चलनेको तैयार है। मि. हलको अब पैतरा बदलनेका और भारतीयोंसे इस प्रकार कहनेका मौका नहीं है, कि, तुमको (अपनी) स्वाधीनताके लिये युद्ध नहीं करना चाहिये। हम ग्रीस, यूगोस्लाविया और अधिकृत फ्रांसकी स्वतंत्रता के लिये उत्सुक हैं, परन्तु हम संसारके सबसे बड़े राष्ट्रीय आन्दोलन, जो कि भारतमें चल रहा है, की ओरसे आँखें मूँद लेना चाहते है।” भारत अपनी आजादी चाहता है। क्रिप्स ने उसे यह देनेसे इन्कार कर दिया। भारतीय जनता भी संयुक्त राष्ट्रोंके साथ कन्धेसे कन्धा भिड़ाकर लड़ना चाहती है, पर एक स्वतंत्र राष्ट्रके रूपमें ही। कॉंग्रेसके प्रस्तावमें यह स्पष्ट रूपसे कहा गया था कि भारतीय राष्ट्र मित्रसेनाओंके सैनिकोंको भारतकी भूमिमें रहनेको, और भारतकी रक्षा करने देनेको उद्यत है बशर्ते भारतीयोंको भी एक स्वतंत्र राष्ट्रके समान स्वतंत्रता और बराबरीका दर्जा दे दिया जायें। भारत तत्काल आजादीके लियें एक स्वरसे माँग कर रहा है। उस देशके महान नेता धुरीराष्ट्रोंसे लड़नेके अपने भारी उत्तरदायित्वको उठानेको उद्यत थे, और उसीके लिये स्वाधीनताकी माँग कर रहे थे।

मैं चेतावनी देता हूं कि जबतक भारतको आजादी हासिल नहीं होजायेगी, वह बराबर स्वतंत्रताके लिये युद्ध करता रहेगा।

संकुचित दृष्टि

इन सब स्पष्ट सत्योंके बावजूद भी यदि भारतका हमने जो कुछ छीन लिया है, वह वह उसे लौटानेसे हम इन्कार करते हैं, तो वह वर्गीय और संकुचित राष्ट्रीयताकी राजनीतिका ही एक खेल है। जो इस तरहके राजनैतिक खेल खेलनेके उस्ताद हैं वे अपनी अदूरदर्शितासे और अनिश्चिततासे संयुक्त युद्धोद्योगके विफल होनेके कारण बनेंगे। अपनी १९ वीं सदीकी मनोवृत्ति और साम्राज्यवादी राजनीतिसे हम इस वर्तमान युद्धको नहीं जीत सकते हैं। यह युद्ध हमारे कालसे आगे ही आगे दौड़ रहा है। आओ कदम बढ़ाकर हम इसके साथ हो लेवें।

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० ७ अप्रैल १९४४

अब भी चेतें !

गोरखपुरसे यह मर्मान्तक संवाद प्रचारित हुआ है कि " जिलेके मारतन गांवके किसान रमजानको अपने दो बच्चोंको भूख की व्यथा से ऊबकर मार डालने एवं स्वयं आत्म-हत्या करनेके अभियोगमें आजीवन कालेपानी का दंड मिला है। रमजान का परिवार ३ दिन निराहार रहा, तब उसने यह काण्ड किया। "

यह कोई अकेली घटना नहीं है। नित्य इस प्रकारके काण्ड होते रहते हैं किन्तु वे अखबारोंमें बहुत ही कम प्रकाशित होते हैं। 'सुजलाम्, सुफलाम्, शस्यश्यामलाम्,' भारतमें यह अमानुषिक और बर्बर काण्ड क्यों हो रहे हैं? क्यों मानव अपने ही प्रिय कुटुम्बियोंको मौतके घाट उतारता हैं और आत्मघात द्वारा स्वयं भी अपनी जीवन लीलाका अंत करता है? एक दो व्यक्ति ऐसा करें तो यह कहा जा सकता है कि वे विक्षिप्त हो गये होंगे, किन्तु जब बहुतसे व्यक्ति इस पथका अनुसरण कर रहे हैं, तब उन्हें विक्षिप्त कह कर उनकी इस हरकतमें निहित भीषण समस्या हवामें नहीं उडायी जा सकती। वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाकी बागडोर जिन थोड़ेसे व्यक्तियोंके हाथोंमें है उन्हें अपनी स्वार्थपरता त्यागकर इस समस्याका विवेचन करना होगा और उसका समाधान भी निकालना होगा। गतांकमें हमने वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाके कर्णधारोंसे निवेदन किया था कि वे अब संभल जायें और स्वार्थपरताको तिलांजलि देकर बहुजन समाजके जीवनकी प्राथमिक आवश्यकताओंकी पूर्तिकी ओर ध्यान दें। हमने विलम्ब किये जानेके खतरेकी ओर संकेत करते हुए कहा था कि जब जनता अन्याय, अत्याचार, शोषण, और भयंकर परेशानियोंसे ऊब जाती है, तब वह अधीर होकर वर्तमान व्यवस्थाको चकनाचूर कर देती है और शासनकी बागडोर स्वयं अपने हाथोंमें लेनेका प्रयास करती है। हो सकता है, जनता हमेशा अपने इस विद्रोहमें सफल न हो जैसा कि अतीतमें कई बार उसे पराजित होना पड़ा है, किन्तु सुलझे हुए मस्तिष्कका कर्मठ नेता मिल जानेपर विफलता हाथ लगनेका कोई कारण नहीं है।

हम यह समझते हैं कि इस प्रकारके वीभत्स काण्डोंके लिए हमारी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था उत्तरदायी है। यह व्यवस्था व्यक्तिगत स्वार्थ, अन्याय और शोषणपर आधारित है। अस्तु समाजमें भयंकर आर्थिक विषमता है। उत्पादनके साधन मुट्ठीभर लोगोंके हाथोंमें हैं और वे स्वाभाविक तौरपर असंख्य श्रमजीवियोंकी कमाईसे मौज उड़ा रहे हैं और वे बेचारे श्रमजीवी अत्यधिक कष्टके साथ जीवन यापन कर रहे हैं—जीवन की आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त कर सकना-उनके लिए असंभव है क्योंकि-मालिक उन्हें उतना ही देते हैं जितनेसे कि वे जिन्दा रहकर बदस्तूर उनका काम करते रहें।

यही हाल किसानोंका है। जमीदार भूमि का मालिक है और वह भूमि का उपयोग करनेवालों (किसानों)से इतना अधिक कर वसूल करता है कि रात दिन परिश्रम करने वालोंके लिए बहुत कम बच रहता है। अस्तु किसान भी अपना पेट काटकर अपने भू स्वामियोंके लिए कमाने को विवश है। इसी तरह समाजके अन्य वर्ग भी अन्याय और आर्थिक विषमताकी चक्की में पिस रहे हैं। हमारे देश की नौकरशाहीकी खाद्य नीति और स्वार्थी व्यापारियोंके कुचक्र जो गजब ढारहे हैं वे ऊपरसे! गत वर्षके अकालने बंगालके लाखों मानवोंका संहार कर दिया। जो लोग बच गये हैं उनकी भी दयनीय स्थिति है। भाई कहीं है—बहन कहीं बाप कहीं और मां कहीं। एक प्रकारसे पारिवारिक जीवन छिन्नभिन्न हो गया है। भारतके अन्य प्रान्तोंमें भी अन्नाभावसे जन साधारणको कष्ट है। यह है हमारी सामाजिक व्यवस्था की कृति!

सामाजिक व्यवस्थाओंके परिवर्तनका इतिहास बताता है कि जब कोई सामाजिक व्यवस्था अपने आतंक और अन्यायकी चरम सीमा पर पहुंचती है, तो समाजके जिस वर्गको विशेष कष्ट पहुंचता है और अपने विकासका मौका नहीं मिलता वह अन्य परेशान वर्गोंको लेकर उसे नष्ट करनेको उद्यत हो जाता है। इंग्लैण्डकी औद्योगिक क्रांति, फ्रेञ्च राज्यक्रांति और रूसकी राज्यक्रांति इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। यदि धन लोलुप पूंजीपति मजदूरों का निर्दय शोषण न करते होते तो विश्वके राजनीतिक क्षितिज पर कार्ल मार्क्स का आविर्भाव न होता और न वर्ग युद्ध का नारा विश्वके कोनेकोने में प्रतिध्वनित होता। पूंजीवादके ही गर्भसे उसको ध्वंस करनेवाले कम्यूनिज्मने जन्म लिया है। कम्यूनिज्मके फूलने फलने की जिम्मेवारी विभिन्न देशोंके पूंजीपतियों पर है। भारत का सौभाग्य है कि यहां महात्मा गांधी ऐसे महापुरुषने जन्म लिया है और वह बराबर पूंजीपतियोंको चेता रहे हैं कि जिनके श्रमसे तुम मालामाल हुए हो, उनकी तरफ भी ध्यान दो और उनका असन्तोष दूर करो।

गांधीजी यह सब कैसे करना चाहते हैं? वह कहते हैं—" मेरी रायमें हिन्दुस्तानकी और सारे संसारकी अर्थ व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि उसमें खाने और कपड़ेके बिना कोई न रहने पाये। मैं पूंजीपतियों और जमीदारोंको मिटाना नहीं चाहता किन्तु यह अवश्य चाहता हूं कि वे सम्पदाके सच्चे अर्थमें ट्रस्टी बनें। अगर सम्पत्तिशाली लोग ट्रस्टी जैसा व्यवहार करें तो मुझे नितांत सुख होगा। किन्तु यदि वे चूकें तो न्यूनतम हिंसासे काम लेकर उनसे उनकी सम्पत्ति ले लेनी होगी। " गांधीजीके शब्दोंमें एक या अधिक ऐसे व्यक्तियोंका समूह जो अपने कब्जेमें आयी हुई सम्पत्तिका उपयोग या उत्पादन साधनका इस प्रकारसे संचालन करे जो सर्वोदयके उद्देश्योंके अनुसार हो अर्थात् किसीका शोषण न होता हो ऐसा संगठन ट्रस्टीशिप है। वह ट्रस्टीको मालिक नहीं मानते वह राजाओं, पूंजीपतियों तथा जमीदारोंको ट्रस्टी मानते हैं और यह कहते हैं कि प्रजा, मजदूर तथा किसानों को यह अधिकार है कि यदि यह ट्रस्टी अपने पदका अनुचित उपयोग करने लगे तो उन्हें हटा दें यदि कोई ट्रस्टी अपना फर्ज अदा नहीं करेंगे तो वे तभी तक अपनी सत्ता कायम रख सकेंगे जब तक कि देशके सच्चे मालिकोंमें—उस पर सत्ता या कब्जा कायम करनेकी शक्ति न आ जायेगी।

यह है वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्थाको कायम रखनेका मार्ग। इससे अच्छा मार्ग धनिक वर्गको और कोई नहीं बता सकता। ट्रस्टीपनका सिद्धांत गांधीजीकी अहिंसाकी एक विशिष्ट देन है। क्या धनिक वर्ग इसका अवलंबन कर समाजमें व्याप्त घोर आर्थिक विषमता और असन्तोषको दूर करेगा?

राष्ट्रीय सप्ताह

प्रति वर्षकी भांति इस वर्ष भी ६ अप्रैल से १३ अप्रैल तक देशके कोने २ में राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जा रहा है। प्रतिवर्ष यह सप्ताह कांग्रेसके आदर्श और लक्ष्यकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट करने और इसके लिए त्याग करनेका अमर सन्देश देने आता है। यह हमारे समक्ष अब तक कांग्रेस द्वारा किये गये बलिदानोंका सजीव चित्र उपस्थित करता है और मूक भाषामें अपनी प्रभावोत्पादक अपील भी कर जाता है। जिन लोगोंने देशकी स्वतंत्रताके लिए हंसते २ आत्मोत्सर्ग किया और आज भी कष्टसहन कर रहे हैं, उनके प्रति इस अवसर पर हम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं और आशा करते हैं कि उनका त्याग और बलिदान हमारे देशवासियोंके लिए पथ प्रदर्शक सिद्ध होगा।

१५ वर्षीय योजनाकारोंकी सेवामें

गत दिनोंमें सर पुरुषोत्तमदास ठाकुर, घनश्यामदासजी विड़ला, श्री जे. आर. टाटा, आदि हिन्दुस्तानके उद्योगपतियों अर्थशास्त्रियों द्वारा भारतीय जनता की आर्थि आमदनी की वृद्धि करनेके लिये १५ जो योजना प्रकाशित हुई है वह लोगों सम्मुख है। योजनाकारों ने यह बताया है यदि उक्त योजनाको काममें बराबर कार्यान्वि किया जाये तो भारतोयों की वार्षिक आम वर्तमान ६५) से बढ़कर १३५) होजाये यह योजना तभी सफल होसकती है जब देशमें राष्ट्रीय सरकार हो। मतलब यह यह योजना राष्ट्रीय सरकार द्वारा ही सफल सकती है।

दिल्लीमें फेडेरेटेड इण्डियन चेम्बर्स ऑ कामर्सके वार्षिक अधिवेशनके समय पत्र कारोंसे इस योजनाके सम्बन्धमें श्री पुरुषोत्तमदास ठाकुरदास, विडलाजी एवं टाटा जो बातचीत की उसमें यह श्री विड़लाजीने कही थी कि योजना को सफल बनानेके लि योग्य पुरुषोंका अभाव जितना महत्व रखता उसकी तुलनामें योजनाके लिये १० हजार करोड़ रुपयोंका सवाल बहुत ही कम वाला है।

हम ऊपरकी योजना बनाने वालों से से निवेदन कर देना चाहते हैं कि जिस रूसमें ऐसी योजनाका आयोजन हुआ उस समय रूसकी वर्तमान भारतवर्षकी स्थि से कोई अच्छी स्थिति नहीं थी। वह देश जारके आतङ्क और दुःशासनसे बहुत पीड़ित एवं दुरवस्थामें था। किन्तु जब जन राज्य स्थापित हो गया और लोगोंको विश्वास हो गया कि, हमीं सब लोग अभ्युत्थान कर सकते हैं तो उन्होंने अपनी शारीरिक मानसिक और बौद्धिक शक्ति लगादी। जिस प्रकार रूसमें योग्य कुशल और कार्यकर्ता बनते गये उसी प्रकार भारतवासियोंकी सरकार जब अधिकार होगी तब भारतवासियोंकी स्वाभाविक काया होगी। वह उस समय यह देख सकेंगे कि भा तवर्ष रूस या किसी अन्य देशसे पीछे रहने नहीं है। वर्तमान युद्धमें जिस वीरता और रूस और जर्मनी आदि देशोंके निवासी कार्य कर रहे हैं, क्या उन संस्कारोंका योंपर कोई भी असर नहीं पड़ेगा? जिन देशोंमें औद्योगिक क्रान्तियाँ तथा औद्यो विकास हुआ है, वहाँ आवश्यकतानुसार समयोपयुक्त योग्य कुशल कारीगर एवं कर्ता उत्पन्न हुए हैं। अतः भारतवर्षमें कमी रहेगी, ऐसा मानना नहीं चाहिये।

* * *

हमने सुना है कि इस योजनाके लिये रुपयोंकी आवश्यकता है उस सम्बन्धमें आव सहयोग प्राप्त करनेके लिये इन योजनाकारों कई व्यक्तियोंका एक शिष्टमण्डल इंग्लैण्ड जा है। यह बात हमारी कुछ समझमें नहीं आयी योजनाकार यह मानते हैं कि यह योजना सफल हो सकती है जब कि देशमें

संपादकीय

सरकार की स्थापना हो। तो राष्ट्रीय सरकार के आगमन के पूर्व ही अपने हाथ इस प्रकारसे विदेशी पूंजीसे जकड़ देना कहां तक उचित है? हम देखते हैं कि जिस व्यवसायमें पूंजीपतियोंका हाथ पूंजीके रूपमें रहता है, उनकी ही आवाज़ प्रधानतया विशेष महत्व रखती है। कार्यकर्ताओंका उत्पादक श्रम तो पूंजीपतियों की पूंजीको विकसित एवं इच्छाओंको अधिकारप्रद बनाये रखनेके लिए ही किया जाता है। आज हम देखते हैं कि भारतवर्षमें अंग्रेजी सत्ता की जड़ें मजबूत और गहरी बनी हुई हैं उसका श्रेय उनकी पूंजीको है। हम समझते हैं कि श्री बिड़लाजी आदि योजनाकार यह बात भूल न गये होंगे, कि इन अंग्रेजी पूंजीपतियों का रुख गोलमेज परिषद्के समय किस प्रकार का था। हमसे वे अधिक जानते हैं, और उन्होंने अधिक नजदीकसे देखा भी है। हम योजनाकारोंका ध्यान 'डायरीके पन्ने' के उन पृष्ठों की ओर आकृष्ट करते हैं जहाँ श्री बिड़लाजी एवं सर एडवर्ड बैन्थलके बीच हुई बातचीतका वर्णन श्री बिड़लाजीने अपनी कलमसे किया है। वह पूंजीपति भी इतने बेसमझदार तो नहीं हैं कि अपनी पूंजी लगाकर सिर्फ व्याज खाकर ही सन्तोष मान लेंगे। परदेशी पूंजी लाकर, परदेशी पूंजीके साथ-साथ अप्रत्यक्ष रूपसे वे अपना अधिकार भी यहाँ कायम रखना चाहेंगे। यह भारतके उत्थानमें कभी भी लाभदायक न होगा। हमें तो अपने पैरोंपर ही खड़े रहना चाहिये। संभव है हम पहिले ५ वर्षोंमें विशेष प्रगति न कर पायें किन्तु शनैः शनैः हमारी कार्यशक्ति इस प्रकार बढ़ती जायेगी कि १५ वें वर्षमें हम वहाँ रहेंगे जो इस योजना के विचारके समीप या आगे हो। हम तो यह भी कहते हैं कि इस प्रकार की योजनाको सफल बनानेमें ४-५ वर्ष ज्यादा भी लग जायें तो भी देशके निर्माण कार्यमें यह अवधि कुछ ज्याद न होगी।

रियासतोंमें आयकर

हैदराबाद आदि देशी रियासतोंमें लगाये गये इन्कम टैक्सकी तरह राजस्थानकी रियासतोंमें भी प्रजापर इन्कमटैक्स लगानेका विचार किया जा रहा है। साल डेड़ साल पहिले, जब बीकानेर राज्यमें इन्कम टैक्स लगानेका विचार किया गया था तो प्रजाने उसका प्रबल विरोध किया था फलतः महाराजाको उक्त विचार त्यागना पड़ा था। सम्प्रति राजस्थानकी रियासतोंमेंसे जयपुरमें इन्कम टैक्स लगाये जानेका विचार किया जा रहा है।

हमारी रायमें प्रजाको अपनी उन्नति और सुख सुविधाके आयोजनोंको सफल बनानेमें हुकूमतको सहयोग और सहायता देनी चाहिए। यही नहीं, कर आदि भी लगाया जाना चाहिए। यदि प्रजा कर आदि न देगी तो शासन व्यवस्था सुचारुरूपसे कैसे संचालित होगी?

हम यह मानते हुए भी कि प्रजाको शासन व्यवस्थाके संचालनार्थ अपनी आयका कुछ भाग हुकूमतको देना चाहिए, रियासतोंमें इन्कमटैक्स आदि लगाये जानेके विचारका तीव्र विरोध करते हैं। हमारा विरोध केवल इस आधार पर है कि देशी रियासतोंमें प्रजाके प्रति उत्तरदायी शासन व्यवस्था नहीं है—न प्रजा की कोई आवाज है और न उसके प्रतिनिधियोंको शासन प्रबंधके विषयमें अपनी राय व्यक्त करने का कोई साधन ही उपलब्ध है। आज रियासतोंमें निरंकुश सत्ता है। शासकोंने अपना भाग्य ब्रिटिश सर्वोच्च सत्ताके आधीन कर रखा है, वे देशभक्ति शून्य और राज्यकी आयका बहुत बड़ा भाग अपने निजी कार्यों—मौज और शौक आदिमें खर्च करते हैं। ऐसी स्थितिमें इस प्रकार के कर लगाये जानेका स्वागत कैसे किया जाये? जब जनसाधारणको यह विश्वास नहीं है कि उससे लिये जाने वाले करोंका उपयोग उसकी सुरक्षा तथा भलाई ही के लिये किया जायगा, तो वह ऐसे कर देनेमें आपत्ति करेंगे ही। हम आये दिन देखते हैं कि जिस अग्निसे हम भोजन पकानेका काम लेते हैं उस अग्निकी भेंटमें भोजन करनेवाला श्रद्धापूर्वक बलि वैश्वदेव अग्निकी भेंट स्वेच्छासे चढ़ाता रहता है, उसी प्रकार जनताके लिये सरकारको करना चाहिये। यदि ऐसा हो तो हमें विश्वास है कि जनता भी राज्यको कर आदि देने का कोई विरोध न करेगी।

श्री. सुरेश वैद्यको सजा

'भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन' (Indian freedom compaign) की ओरसे एक वक्तव्य प्रकट किया गया है जिसमें बताया गया है कि भारतीय पत्रकार श्री. सुरेश वैद्यको फौजी अदालतसे ९६ दिनकी कठोर जेलकी सजा दी गयी है। श्री. वैद्यने अनिवार्य सैनिक कानूनके अनुसार सैनिक वेश धारण करने और फौजी कवायदमें भाग लेनेसे इनकार कर दिया था। श्री. वैद्यने अपने लिखित वक्तव्यमें स्पष्टरूपसे कहा था कि "मैं एक भारतीय हूँ अतः ब्रिटिश सेनामें मेरी भरती नहीं होनी चाहिये।', श्री. वैद्यको इसी अपराधमें वेस्टलन्दन पुलिस कोर्टमें पेश किया गया था, और बादमें मिलिटरीके अधिकारमें उन्हें सौंप दिया गया था। श्री. वैद्यकी ओरसे प्रधानमंत्री चर्चिलकी सेवामें अपील भी की गयी थी। और कामन्समें प्रश्नोत्तर भी हुए थे। अंग्रेजोंकी फौजी अदालतके सामने उन्होंने फिर दोहराया कि, मैं कामचोर नहीं हूं। म फौजी वर्दी पहननेसे इन्कार करता हूं क्योंकि मेरा स्थान स्वतंत्र भारतकी सेनामें हैं। पर एक गुलाम देशके स्वाधीनचेता नवयुवककी बात पर किसी साम्राज्यवादी सरकारको ध्यान देनेकी क्या आवश्यकता? श्री. वैद्यको जो सजा सुनायी गयी है उस सम्बन्धमें पार्लमेन्टके अनेक सदस्योंने कामन्समें प्रश्न करनेकी सूचना दी है। हम प्रश्नकर्ताओंके प्रति आदरभाव रखते हुए भी यही कहना चाहते हैं कि उनके प्रश्नोंसे श्री वैद्यको रिहा कर दिया जाये, ऐसा नहीं दिखता।

सचाई छिप नहीं सकती छिपानेसे

वास्तविक तथ्यको, जिसके प्रगट होनेसे सरकारकी बदनामीकी संभावना रहती है, विकृत रूपमें स्वयं भारत एवं बाह्य संसारके सामने उपस्थित करना भारत सरकार और उसके कर्मचारियोंके लिये एक परम्परा सी बन गयी है। बंगालके भयंकर अकालमें अनेक बार इस परम्पराका अवलंबन किया गया है। केन्द्रीय धारा सभाके वर्तमान अधिवेशनमें ही कई बार सरकारकी ओरसे यह कहा गया कि बंगालकी स्थिति अब सुधर गयी है। उधर अमेरिकामें अभी हालमें भाषण देते हुए सर गिरिजा शंकर बाजपेयीने कहा था कि "बंगाल में अब अकाल नहीं है"। लेकिन क्या भारतने कभी इन सुखद वक्तव्यों पर विश्वास किया? हम तो कहते हैं कि स्वप्नमें भी उसने विश्वास नहीं किया। १५० वर्षोंसे भी अधिक कालसे अपने शासकों की नस नस पहचाननेके बाद भारतसे कमसे कम यह भूल संभव नहीं है। हां दूसरे देशोंके हितैषियोंकी आंखोंमें धूल झोंकनेके उद्देश्यका जहांतक संबंध है, वह भले ही किसी अंशमें पूरा हो जाय। एक ओर हजारों मीलकी दूरी बैठे हुए सर गिरिजाशंकर कहते हैं कि बंगालमें अब अकाल नहीं है, दूसरी ओर बंगालके अकाल पीड़ित क्षेत्रोंका विस्तृत दौरा करके श्रीमती लक्ष्मी पंडित अधिकारपूर्वक अपने देशवासियों के समक्ष यह मंतव्य उपस्थित करती हैं कि "बंगालके अकाल पीड़ित क्षेत्रोंकी स्थिति इतनी भयानक है कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। जिसे स्थितिकी गुरुता देखनी हो, उसके लिए एकमात्र यही उपाय है कि वह स्वयं वहां जाकर अपनी आंखोंसे सारा दृश्य देखे। जिन २ स्टेशनोंसे मैं गुजरती थी, वहां झुण्डके झुण्ड क्षुधार्त अन्न अन्नकी पुकार करते दीख पड़ते थे। ट्रेन यात्री यदि पैसे देते थे, तो वे यह कहकर फेंक देते थे कि भई, हमें तो अन्न चाहिए, अन्न, पैसे नही।"

यह परितापका विषय है कि बाह्य संसार श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडितका यह मतव्य नहीं जान सकेगा। काश यह दुनियाके कोने कोनेमें पहुंचता और सारी स्थिति पर से पर्दा हटाता!

एक अपील

अन्यत्र 'हैदराबाद (दक्षिण) जनतासे अपील' शीर्षक एक अपील हैदराबादके गण्यमान्य देशसेवी कार्यकर्ताओंकी ओरसे प्रकाशित हो रही है। हम उस अपील की ताईद करते हुए हैदराबाद (दक्षिण) रियासत की जनतासे साग्रह प्रार्थना करते हैं कि रियासतमें खादी की पैदावार बढ़ाने एवं प्रसारके लिए जो कार्य हो रहा है और जिसके लिए धनकी जो आवश्यकता है उसकी पूर्ति कर दें। खादीके कार्यमें जो रुपये लगते हैं वह एक प्रकारसे हमारे देशके अनेक देशवासियोंके पास उनकी आजीविका पहुंचानेमें मदद करते हैं। इस कार्य की महत्ताके विषयमें हम काफी समय तक सुन चुके हैं अतः उनको फिर यहां दोहराने की जरूरत नहीं। हम यह देख चुके हैं कि हमारे देशकी आर्थिक स्थिति सुधारनेमें गृह व्यवसाय कितना महत्व रखता है और खादीके कार्यक्रमको तो उसमें महत्वपूर्ण स्थान है। हैदराबाद रियासत की जनता एक लाख रुपये की अपील ही क्या इससे भी अधिक की पूर्ति कर सकती है और जिस प्रकार, हमने सुना है, प्रत्येक खादीप्रेमी व्यक्तिको एक हजार रुपये देकर सदस्य बनने का, जिससें अधिक लोगोंका सहयोग जो आह्वान किया गया है वह स्तुत्य है। हमें उम्मीद है कि हैदराबादकी जनता इस अपीलको अवश्य अपनायेगी।

काँग्रेस जलन

गत व्यवस्थापिका सभामें अर्थ बिल पर जो मतदान हुआ उसमें लोकपक्ष के विरुद्ध जाकर सरकारी पक्षमें भाई परमानंद, जमनादास मेहता, नीलकंठदास आदि ने जो मत दिया है उसका समर्थन करते हुए श्री. सावरकरने अखबारोंमें वक्तव्य प्रकाशित करा कर काँग्रेसके प्रति अपनी जलन पुनः प्रदर्शित की है। इससे उसका कोई अधिक महत्व नहीं है। श्री. सावरकरजी की काँग्रेस जलन प्रसिद्ध ही है।

साक्षरता आन्दोलन

हमें यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि महिलामण्डल उदयपुर ने महिलाओंमें साक्षरता प्रचारके हेतु जो पञ्चवर्षीय योजना बनायी थी उसके अमलस्वरूप इस साल गत तीन वर्षोंकी भाँति चौथे वर्षमें अधिक व्यवस्थित उपादेय और विस्तृत रूपसे मनानेका आयोजन कर रहा हैं। यों तो भारतवर्षमें आम तौरसे शिक्षा की बहुत ही कमी है और खासकर महिलाओंमें, जिसमें राजपूतानामें तो शिक्षा की गति कितनी धीमी और मन्द है, यह गत मर्दुमशुमारीके विवरणसे पता चल सकता है। माहेश्वरीके पृष्ठोंपर वे आँकड़ें अंकित किये गये हैं। अतः उन्हें दोहरानेकी यहाँ जरूरत नहीं क्योंकि तत्पश्चात ऐसा कोई कार्य नहीं हुआ है जिससे उन आँकड़ोंकी सँख्यामें कमी हुई हो।

स्त्री शिक्षा प्रेमियोंको यह जानकर हर्ष होगा कि महिलामण्डल उदयपुरने गत तीन वर्षोंमें गर्मीकी छुट्टियोंमें कन्यापाठशालाकी अध्यापिकाओं और छात्राओंके सहयोगसे ३००० अनपढ़ बहिनों को लिखना पढ़ना सिखाया। इतने कार्य से किसीको सन्तोष तो नहीं हो सकता, किन्तु जैसा कि ऊपर हम कह चुके हैं जिसमें 'स्वल्पमप्यस्य' समझ कर खुशी व्यक्त करते हुए भविष्यत्की आशाके सहारे उत्साहके साथ इस कार्यको आगे बढ़ानेमें प्रोत्साहित होना ही श्रेयस्कर है। हम उक्त संस्थाके कार्यकर्ताओं की अपीलका अक्षरशः स्वागत करते हैं और उम्मीद रखते हैं कि, देशप्रेमी भाई उनके कार्यमें पूर्णरूपसे सहयोग प्रदान करेंगे।

हम यह चाहते हैं कि उदयपुरकी भाँति अन्य अन्य स्थानोंमें भी इस प्रकारके आयोजन किये जायें।

"विश्वमित्र" की रजतजयन्ती

गत ३१ मार्चके दिन हिन्दीके दैनिक विश्वमित्रने अपनी रजतजयन्ती मनायी है। हिन्दी पत्रकार जगतको जिन कुछ पत्रोंपर अभिमान हो सकता है; उनमें विश्वमित्र का नाम प्रमुख है। हिन्दीमें यही एक पत्र है, जिसके दैनिक संस्करणों का प्रकाशन एक ही दिन भारतके सुदूरवर्ती तीन बड़े-बड़े नगरोंसे होता है। 'विश्वमित्र' ने देशकी तथा भाषा की जो सेवायें की हैं, उनके प्रति यह देश, और खासकर हिन्दी भाषा उसे सदैव धन्यवाद देगी। हम भी 'विश्वमित्र' सञ्चालक श्री मूलचन्दजी अग्रवाल को पत्रकी जयन्ती पर बधाई देते हैं, और आशा करते हैं कि हमारा सहयोगी पत्र अपने उन्नति पथकी ओर बढ़नेमें यथापूर्व सफलता प्राप्त करेगा।

संपादकीय

विवाह सादगीसे रचाइये

मारवाड़ी समाजमें सदैवकी भांति इस वर्ष चहुं ओर विवाहोंकी धूम है और जिस प्रकार विवाहके समारंभोंको सफल बनाने की योजना सोची जाती है उसी भांति इस साल भी सोची जा रही है । फरक इतना है कि इस साल कई जगह तो रेशनिंग योजना अमल में आ रही है एवं स्थान २ पर ऐसे आयोजनोंपर भोजनों पर आमंत्रित सज्जनों की संख्या नियत की गयी है । अतः वे चिंतित और विचारमग्न हैं कि इन लोकोपकारी योजनाओंसे कैसे बच सकते हैं। हम यहां इसकी चर्चा नहीं करना चाहते हैं कि किन २ हथकण्डोंका वे उपयोग कर रहे हैं और जहां रेशनिंग कार्यमें सरकारी अफसरों द्वारा जिन लोगोंसे कार्य लिया जाता है उनसे किस प्रकार षड्यंत्र रचकर काम निकाला जाता है। किंतु हम उनसे कह देना चाहते हैं कि वर्तमान समयमें जब लोगोंके सामने अन्नादिकी भयंकर समस्या उपस्थित है उस समय हम अपने बड़प्पनका प्रदर्शन और 'मनकी हुब' निकालनेमें जो बर्बादी करते हैं वह देशवासियोंके साथ द्रोहकर रहे हैं । भले ही आज असंख्य लोक अपनी पीड़ाको दृश्यरूपसे व्यक्त नहीं करते इसका अर्थ यह नहीं निकालना चाहिए कि वे इन कामोंको पसंद करते हैं, या वे चुपचाप सहलेते हैं । यह जो अंतर्ज्वाला सुलग रही है वह चाहे धूँवेंके रूपमें अविरल दिखायी देती है किंतु भविष्यत् सुखदायी नहीं है । अतः हम नम्रतासे कह देना चाहते हैं कि मनुष्यताको अपनाइये। जो दुःख हमारे असंख्य भाइयोंपर है उनके समभागी बनकर किसी भी प्रकारसे उस दुःखको बढ़ानेमें पोषक न हों इसका ख्याल रखना चाहिये ।

अ० भा० माहेश्वरी म० स० सहायता

५१) नारायणप्रसादजी श्याम बिहारीलालजी सोढानी डिबाई
२५) श्री देव किसनजी रामगोपालजी चांडक माहेश्वरी
११) श्री रामनारायणजी माल्ने अपने सुपुत्र चि. बाबूलालके विवाहके उपलक्ष्में
११) श्री कृष्णजी कचौलियाने अपनी सुपुत्री चंन्द्रकलाके विवाह पर
५) श्री मुरलीधरजी माहेश्वरी द्वारा श्री बाबूलालजीके विवाह पर

माहेश्वरी पत्र सहायता

११) श्री कन्हैयालालजी रामगोपालजी लड्डा ब्याडने श्री बालकृष्णजीके विवाहोपलक्ष्में
५) श्री मुरलीधरजी माहेश्वरी द्वारा श्री बाबूलालजी के विवाह पर
५) " श्री कृष्णजी कचौलिया ने अपनी सुपुत्री चन्द्रकला के विवाह पर

बिडलाछात्रवृत्ति सहायता वापिस

१५०) श्री हरिप्रसादजी मूना कचौरा (अलीगढ़) द्वारा.

श्री. रामरिखजी का निधन

हमें यह निवेदन करते हुए दुःख होता है कि सुप्रसिद्ध सेठ श्री. रामरिखजी मालाणी अब इस संसारमें नहीं रहे। सेठ रामरिखजीके सम्बन्धमें हम जितनाभी लिखें वह अपर्याप्तही होगा। समाजमें ऐसे बहुत थोड़े लोग मिलेंगे जो लोगोंके हृदयमें स्नेह और श्रद्धाका स्थान बना सके हैं । श्री. रामरिखजी वर्तमान दृष्टिसे धार्मिक विचारोंमें कट्टर होते हुए भी प्रगतिशील व्यक्ति थे । जोधपुर रियासतमें सारे समाजके निःसन्देह रूपसे यदि कोई श्रद्धाभाजन पुरुष बने हैं और जिन्होंने लोकप्रियता, उत्कृष्ट रूपसे पायी है, तो वह श्री. रामरिखजी ही हैं। विवादमें प्रतिपक्षीकी बातको धैर्य शान्ति, तथा सहिष्णुतासे सुनतेथे । परोपकारी थे किसीके यहाँ काम होनेपर वे आगे आते थे । मिसाल—उनके गांवमें सामाजिक बातपर दो दल होगये-वह बेलाग रहकर दोनों दलोंके श्रद्धाभाजन बने रहे हैं। बम्बईमें जब माहेश्वरी महा सभाके सन १९२४ के अधिवेशनमें स्वागताध्यक्षका पद श्री रामेश्वरदासजी बिड़लाने छोड़ दिया, तो स्वागत समितिमें कोल्वारोंके के और शोलापुरके नारायणदासजी भैयाके सवाल और नवमतवादी और पुराण मतवादी सवाल, महासभाके अध्यक्षके चुनाव को लेकर बड़ा तूफान उठा हुआ था किन्तु यह रामरिखजीकी ही शक्ति तथा लोकप्रियता न्यायप्रियता थी कि उन्होंने सारे तूफानको शान्त किया और स्वयं स्वागताध्यक्ष का अपना पार्ट अच्छे ढंगसे अदा किया था । कोल्वार माहेश्वरी आन्दोलनको लेकर, बीकानेर जयपुर आदि रियासतोंमें माहेश्वरी समाजमें बड़ा बवण्डर उठा था किन्तु आपके ही कारण उसका सन्तोषकारक प्रीतिपूर्ण निर्णय हो सका था।

हम मित्रवर एवं सुयोग्य सहयोगी श्री लक्ष्मीनारायणजी मालाणी श्री जुगलकिशोरजी एवं बृजवल्लभजी आदि सन्तप्त परिवारोंके प्रति समवेदना प्रकट करते हैं।

बंबईमें विक्रम द्विसहस्राब्दि उत्सव

विराट हिन्दी कवि सम्मेलन

बम्बई मारवाड़ सम्मेलन द्वारा आयोजित श्री विक्रम द्विसहस्राब्दि महोत्सव २५ मार्चसे २७ मार्च तक सी. पी. टैंक स्थित माधव बागमें खास तौरसे बनाये गये शानदार पण्डाल में 'विक्रम सम्मेलन' के रूपमें दिनके ४ बजे से प्रारंभ हुआ । सर्व प्रथम भारतके भिन्न भिन्न प्रान्तोंके नेताओं तथा विद्वानोंके शुभकामनाके सन्देश सुनाये गये, इसके अनन्तर स्वागताध्यक्ष श्री रामदेवजी पोद्दारने उपस्थित जनताका योग्य शब्दोंमें स्वागत करते हुए अपना भाषण पढ़ा । आपने बताया कि मारवाड़ी सम्मेलन अखिल भारतीयताके सिद्धान्तमें विश्वास करता है और उसीके अनुसार कार्य करता है। विक्रम के ठीक २००० वर्ष बाद आज फिर संसार की दशा वैसी ही क्षुब्ध, अव्यस्थित और अशान्त है जैसी श्री विक्रम से पहिले थी—ऐसे समय विक्रम जैसे महान् व्यक्तिका स्मरण उपयुक्त ही है।

सभापति श्री झवेरी ने गुजरातीमें अपना भाषण दिया। आपने कहा-विक्रमके ऐतिहासिक अस्तित्व तथा स्थितिके सम्बन्धमें विद्वानोंमें बड़ा मतभेद है। जो भी कुछ हो, यह सत्य है कि विक्रम एक परदुःख भंजक, प्रजापालक, और प्रजासे चुना गया प्रतापी राजा हुआ था जिसके नामसे चलनेवाले संवत्‌ने आज २००० वर्ष पूर्ण किये हैं।

आपके बाद 'विक्रम था या नहीं' इस विषयपर डाक्टर डी. जी. व्यासने एक सारगर्भित भाषण दिया । आपने बताया कि इतिहासकार कहते हैं कि विक्रमके विषयमें कोई साहित्य नहीं मिलता । मैं उनसे पूछता हूँ कि आपने कभी यह भी सोचा कि हमारे देशकी साहित्य सम्पत्ति कितने बड़े प्रमाणमें विदेश पहुँच गयी आर नष्ट हुई है। और वैसे हमारे देशमें इतिहास परम्परागत श्रुति द्वारा अधिक चलता रहा । आजभी गुजरातमें जो लोक गाथायें हैं उनका नायक 'विक्रम' है (जिसका सम्बन्ध इस संवत्‌से है) ठीक जैसे कि अन्य प्रान्तों स्थानोंकी लोकगाथाओंके नायक अशोक, बुद्ध, अकबर और अनेक वीर पुरुष हैं ।

बादमें आपने विक्रम स्मारकके लिये बम्बईमें विशाल एकेडमी बनानेकी जनतासे अपील की जिसका जनताने तथा सम्मेलनके आयोजकोने स्वागत किया ।

श्री. डा. हेमचन्द्रजी जोशीका व्याख्यान भी बड़ा प्रभावशाली रहा ।

पण्डालमें प्रवेश टिकटोंसे होनेपर भी उपस्थिति बहुत अच्छी थी ।

हिन्दी कवि सम्मेलन

२६ और २७ मार्चको माधव बाग वाले पण्डालमें ही मनोनीत सभापतिकी श्री रामनरेश त्रिपाठीकी अध्यक्षतामें कवि सम्मेलन हुआ।

८७ के करीब कवियोंके पधारनेकी सूचना मिली थी जिसमें बाहर के ३२ कवि थे।

श्री 'सुमन' श्री 'नैपाली' श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान, श्री खेमराजजी जोशी, आशु कवि श्री देवेन्द्र तथा श्रीमती कोकिलाकी कवितायें लोगोंने बहुत पसन्द कीं। अनेक कवियोंको उनकी कविताओं पर प्रसन्न होकर श्रोताओंने सैकड़ो रूपयोंके पुरस्कार दिये। सम्मेलनकी ओरसे विक्रमसंबंधी सर्वोच्च कविता बनाने पर आगराके श्री हरिशंकरजी शर्माको ५०१ रु. का पुरस्कार दिया गया। द्वितीय पुरस्कार श्री अनूपशर्माको दिया गया । संमेलनमें भाग लेनेवाले सभी कवियोंको संयोजकोंकी ओरसे ५१-५१ रुपये भेंटमें दिये गये । कवि सम्मेलनका प्रवेश टिकट यद्यपि १) था, फिर भी श्रोताओंसे पण्डाल खचाखच भरा रहता था।

हिन्दी की उच्च पत्रिका—माहेश्वरी

पार्टीमें साहित्यिकोंके उद्गार

बम्बईमें विक्रम द्विसहस्राब्दि सम्मेलनके अवसर अ. भा. माहेश्वरी महासभाके प्रमुखपत्र 'माहेश्वरी' की ओरसे अनेक साहित्यिक विद्वानों, पत्रकारों और प्रतिष्ठित व्यक्तियोंको चौपाटी स्थित 'मगनोलिया आईसक्रीम सोडा फाउन्टेन' में सायं ५ बजे एक पार्टी दी गयी।

पार्टीमें उपस्थित सज्जनोंको 'माहेश्वरी पत्र' का परिचय दिया गया। पत्रके पुराने अंक दिखाये गये, और सबसे ताजा अंक भेट भी किया गया । श्री ब्रजवल्लभदासजी मूँधड़ा (अ० भा० माहेश्वरी म० सभाके भू० पू० सभापति) ने एक सुन्दर भाषण देकर अभ्यागतोंका स्वागत किया और 'माहेश्वरी' पत्रका इतिहास बतलाया । आपने कहा आज इस पत्रको ५२ सालके लगभग होते हैं, बीचमें प्रकाशन बन्द रहा, उसे निकाल दें तो ३४ सालसे यह पत्र अविराम भावसे जनताकी सेवा कर रहा है। आपने पत्रके पुराने सम्पादकोंके नाम भी प्रेमपूर्वक स्मरण किये । आपने कहा, पत्र का नाम यद्यपि जातिगत जान पड़ता है पर इसकी नीति रीति केवल माहेश्वरी समाज तक ही सीमित नहीं है। यह पत्र तो पूर्णरूपसे प्रगतिशील विचारका और जगद्वन्द्य बापूके विचारोंका समर्थन करता है । पत्र हर प्रकारसे राष्ट्रीय प्रगतिका समर्थक है, ऐसे पत्रको स्वभावतः समस्त देशवासियोंसे सहयोग मिलना ही चाहिये । आपके बाद श्री. गजाधरजी सोमानीने एक भाषण दिया । तदनन्तर श्री. भगवतीचरणजी वर्मीने 'माहेश्वरी' पत्रके सम्बन्धमें अपने भाव प्रगट किये । आपने कहा कि मैं बहुतकालसे 'माहेश्वरी' पत्रको पढ़ता रहा हूँ । गेटअप, और छपाई-सफाई तथा आकार-प्रकार आदि सभी दृष्टियोंसे हिन्दी पत्र जगत्में 'माहेश्वरी' का बहुत ऊँचा स्थान है । लेखोंका संग्रह तथा सम्पादनभी बड़ो उत्तम कोटिका है । इस पत्रकी विशेषता इसकी अहिंसाकी नीति तथा गान्धीवादी आर्थिक विचारधाराका प्रचार करना भी है। आपके बाद श्री. रामनरेशजी त्रिपाठीने भी 'पत्र' के सुन्दर आकार तथा विचारधारा की प्रशंसा की। अन्तमें पत्रके सम्पादक श्री राधाकृष्णजी लाहोटीने सब वक्ताओं तथा उपस्थित व्यक्तियोंको धन्यवाद दिया और कहा कि यह पत्र अ. भा. माहेश्वरी महासभा का होते हुए भी सर्वसाधारण जनता का ही पत्र है. किन्हीं पूंजीपतियों का नहीं। सच बात तो यह हैं कि भारतमें पूंजीपति हैं ही कितने!

[शेष पृष्ठ २३ के कालम ४ पर]

सोवियट रूसकी देशभक्त वीराङ्गनायें

*

● ले.—**कर्नल वैलेन्टिना ग्रिजोडुवोवा**, (सोवियट यूनियनके मुख्य व्यक्ति) ●

नारीको नरका अर्धभाग कहा गया है। विना नारीकी सहायता-सहयोगके इकला नर एक राष्ट्रको उन्नति की ओर लेजानेमें सक्षम नहीं हो सकता है। प्राचीन भारतका इतिहास सभी क्षेत्रोमें यहाँ की नारियोंके सुचरितोंसे भरा पड़ा है। वीरतामें चण्डी, दुर्गा, पद्मिनी, झाँसी की रानी, और विद्या तथा चरित्रमें सुलभा, गार्गी, सीता और सावित्री जैसी नारियोंके नाम घर-घर गाये जाते हैं। रूस की रक्षा करनेमें आज रूसी नारीयोंका जो मुख्य हाथ है वह इस लेखमें बताया गया।

—सम्पादक '

सादियोंसे हमारे रूसकी स्त्रियाँ अपनी अद्भुत वीरता और साहसके कामोंके लिये मशहूर हैं। हमारे देशका पिछला इतिहास देशभक्त रूसी वीरांगनाओंके वीरतापूर्ण उदाहरणोंसे और रूस पर हमला करनेवालोंके खिलाफ उन्होंने जो जबर्दस्त मोर्चा लिया उससे भरा पड़ा है।

मंगोल-तार्तारों की टिड्डीदल जैसी भयंकर सेनाओंने जब रूसकी जमीनको घेर लिया था तब रूसकी वीर महिलाओं ने अपने पिताओं और भाइयोंके साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाकर युद्धमें हिस्सा लिया था, और शस्त्र धारण करके आंक्रान्ताओंको अपने देशकी भूमिसे मार भगाया था। नैपोलियनकी अप्रतिहत गामिनी सेनायें जब सारे यूरोपको रादती हुई रूसमें आयीं तो नैपोलियनकी फौज की गति धीमी पड़ गयी—नैपोलियनने तब रोषमें आकर कहा था, 'रूस भी एक अजीब देश है जहां औरतें तक युद्धमें लड़ती हैं।' सन् १८१२ के मशहूर युद्धमें स्मौलेन्स्क की सेनाका संचालन वासिलीशाने किया था। और वोर्डिनोके प्रचण्ड युद्धमें दुश्मन की जबर्दस्त घुड़सवार रेजिमेण्ट नेडेज्द डुरोवा नामकी लड़कीने ही खदेड़ा था।

गत गृहयुद्धमें रूसकी स्त्रियोंने ही हिम्मतके साथ मैदानमें कूदकर अपने देशकी आजादी की रक्षा की थी और अक्टूबर की क्रान्तिको सफल बनाया था। गृहयुद्धके दिनों उत्तरीय काकेशसके मैदानमें क्रैश्नोडर की रक्षा रूसकी स्त्रियोंने ही की थी। उन्होंने हजारों की तादादमें अपने प्राण दिये। जख्मी सिपाहियोंमें इन स्त्रियोंकी एक बडी संख्या थी। हमारे देशके चपायेव और शार्स जैसे नेताओंको रूसके घरेलू युद्धोंमें जो सफलतायें मिलीं उसमें मुख्य हाथ रूसी स्त्रियोंका ही था। रूस की इन वीरांगनाओंने इन नेताओंके झण्डेके नीचे अपनी जान की बिना परवाह किये वह लड़ाई लड़ी कि विरोधी सेनाके छक्के छूट गये।

रूसकी सुरक्षामें यहाँ की स्त्रियोंका हाथ सदा ही रहा है, पर आज की देशभक्त रूसी महिलायें वर्तमान महायुद्धमें जो कार्य तथा सहयोग कर रही हैं, उसने उनके सब पुराने रिकाडोंको मात कर दिया है।

इस युद्धके प्रारंभके दिनोंसे ही हमारे देशकी स्त्रियों तथा लडकियों ने इस बातको अच्छी तरह अनुभव कर लिया है कि उनका योग्य स्थान तो देशकी रक्षा करने वाली फौजमें ही है। इसी लिये अपनी इच्छासे ही उन्होंने युद्धके मोर्चेके लिये अपनी सेवायें दे दीं। लड़ाईके मैदान में वे स्वेच्छासे नर्सें, डाक्टरी अर्दली, स्काउट, मशीनगनर, और पायलैट आदि बनकर गयी हैं, पुरुषोंके साथ कन्धेसे कन्धा भिड़ाकर वे युद्धमें जूझी हैं और लड़ाईके मुहाने पर होने वाली तमाम तकली ले समानरूपसे खुशी खुशी झेली हैं।

जर्मनीके फासिस्ट आक्रान्ताओंने रूस पर हमला करके जो घोर पाप किया है, देशभक्त रूसी स्त्रियोंमें आज उनके इस कुकृत्यके प्रति भयंकर रोष और घृणा के भाव उफन रहे हैं। नीना ओनिलोवाने युद्धके मोर्चेपर लड़ते हुए अभिमानके साथ कहा था, मैने ओडेस्साकी रक्षामें भाग लिया था, और अब सेवस्टापोलकी रक्षाके लिये मैशीनगन लेकर लड़ रही हूँ। मै स्त्री हूँ, इसलिये देखनेमें छोटीसी, कमजोर और पतलीसी प्रतीत होती हूँगी, पर मेरे हाथ कभी कँपे नहीं हैं। जब तुम अपनी मातृभूमि और अपने परिवारकी रक्षा (मेरा कोई परिवार नहीं है, अतः सारा रूस ही मेरा परिवार है) के लिये लड़ रहे हो तो तुम शूरवीरतासे भर जाते हो और कायरता तुम्हारे पास तक नहीं फटक सकती। नीना ओनिलोवा ने मारे जानेसे पूर्व ५०० जर्मनोंको अपनी बन्दूकसे मौतके घाट उतारा था।

सोवियट यूनियनकी नायक ओरिया बाडाने क्रीमियाके युद्धमें स्काउटके रूपमें जो नाम पाया था वह सबको विदित है। ओडेस्सा और सेवास्टापोलके कभी न भूलनेवाली रक्षा पंक्तिवाले मोर्चेमें जगत् प्रसिद्ध लुडमाइलाने ३०९ जर्मनोंको धराशायी बनाया था। लेनिनग्राड और स्टेलिनग्राडकी स्त्रियाँ अपने शहरोंकी रक्षाके लिये वीरताके साथ अन्तिम दम तक लड़ती रहीं। नटालिया कोवशोवा और मेरिया रेवल्विानोवा नामक वीर बालाएँ मास्कोकी रक्षाके लिये युद्ध करती हुई मारी गयीं जिनके सम्मानमें उन्हें सोवियट यूनियनके वीरका पद दिया गया था।

देशके दुश्मनोंके मुकाबलेमें चल रहे युद्धमें जिन नारियोंने अपने प्राण दिये हैं, वे इतिहासमें सदा आदरके साथ याद की जायंगी।

प्रथम बाल्टिक युद्धके मोर्चे पर कोवशोव और पोलिवनोवाकी अनुयायिनी ७५ कन्या स्नाईपर्स स्वेच्छासे गयी थीं। ३ मासके अन्दर ही उन्होंने २५०० जर्मनोंका काम तमाम कर दिया। उनमें नीना गलानीना नामकी एक बालिकाने अभी स्नाईपर्सके स्कूलकी अपनी ट्रेनिंग समाप्त ही की थी। उसने अपने मुकाबले में आये एक तजुर्बेकार जर्मन स्नाइपरको नीचा दिखाया। ऐसी स्थितियोंमें सीधा निशाना कोई आसान काम नहीं होता। इन कन्याओंमें स्थिरचित्तता, शान्ति, और नपीतुली जाँचको विशेषता होनी अति आवश्यक है, जिसमें रूसी लड़कियाँ पूरी उतरी हैं। कभी कभी रूसी बालाओंको अनुभवी जर्मनोंसे लगातार १५-१५ दिन तक द्वन्द्व युद्ध करना पडा जिसमें रूसी बालाने जर्मन स्नाईपर को आखीर में पराजय दी, उसे मारकर उसके हथियार, उसके नोटबुक और लोहेका क्रौस छीनकर अपने कमांडर को लाकर दिया।

रूसी बालायें शस्त्र चालनमें अब पहिले की अपेक्षा बहुत अधिक निपुण होती जा रही हैं। शस्त्राभ्यासमें तथा शस्त्रप्रयोगमें वे मर्दोंसे । किसी भी दृष्टिसे पीछे नहीं कही जा सकती हैं। पायलेट सेवदाकिया नौसलने रूसके समस्त पुरुष पायलेटोंको भी अपनी योग्यतासे आश्चर्य में डाल दिया था। युद्धसे पूर्व वह एक गाँव में अध्यापन का शान्त वातावरणवाला कार्य करके अपना जीवन आनन्द तथा शान्तिके साथ बिता रही थी। युद्धकालमें वह एक विमानसंचालक क्लबमें इन्स्ट्रक्टर बन गयी और बादमें रात्रिमें चलनेवाले बमबाज विमानों की पॉयलेट नियुक्त होगयी। रातके इन बमबाज विमानोंके सञ्चालनके लिये जिस अत्यधिक चतुरता, साहस और सूझकी जरूरत होती है वह युद्धविशारदोंसे छिपी नहीं है। यह महिला पायलेट उक्त सब गुणोंमें पूर्ण उतरी और अपनी दक्षतासे अपने साथ काम करनेवाले पुरुषोंके मुखसे भी उसने प्रशंसाके वाक्य कहलाये। यह नारीरत्न आखीरमें गार्ड लेफ्टीनेन्टके ओहदेतक पहुँची और उसने ३५४ रातें हवाई जहाजोंसे हमला करके दुश्मनोंकी फौजों और उनके युद्धोद्योगके स्थानों पर ४९९५७ कीलोग्राम बम बरसाये। उसके इन शूरवीरतापूर्ण कार्योंके कारण ही उसे आज सोवियट यूनियनकी नायकका सम्मान प्रदान किया गया है। रूसी लाल फौजके योद्धापुरुष और अफसर लोग रूसी नर्सों और डाक्टरी अर्दलियोंके प्रति सदा कृतज्ञता और स्नेहके भाव प्रदर्शित किया करते हैं। रूसके हजारों सिपाहियोंकी जान इन रूसी नारियोंके कारण ही बची है।

मेरिया नामक एक लेडी असिस्टन्ट सर्जन की वीरताकी कथायें भी आज रूसके घर-घरमें सुनी जाती हैं। इस देवीके बूढ़े पिताको और ६ वर्षकी लाड़ली बहिनको निर्दयी जर्मनोंने बेरहमीसे कत्ल कर दिया था। देवी मेरियामें उसी दिनसे जर्मनोंके प्रति घृणा तथा द्वेषकी भावना जागृत हो उठी। वह जर्मनोंके प्रतिशोधकी भावनाको लेकर जंगमें शामिल होगयी। सेवास्टोपोल, कुबान और पेरेकोपके निकट मोर्चे से वह निडर होकर घायल रूसी सैनिकोंको उठाकर दूर अस्पतालमें ले जाकर उनकी मरहम पट्टी करती थी। पेरेकोपके मैदानमें उसने अकेलेही जख्मियोंको भीषण गोलाबारीके अन्दर घुसकर बचाया था। वह तीनबार युद्धके मैदानमें सख्त घायल हुई पर घाव अच्छे होनेके साथ ही तुरन्त वह फिर खतरनाक मैदानजंगमें जा पहुँचती थी।

कुमारी पावलैन्कोकी वीरताकी कहानी भी कम रोमाञ्चपूर्ण नहीं है। पिछले दो सालोंसे वह सदा युद्धकी अगली पँतिमें रही है। उसने अपनी जान पर खेलकर रूसके २०० जख्मी अफसरों और सिपाहियोंकी जान बचायी है। एकरात फौजियोंका एक दस्ता गल्तीसे सुरंग बिछे एक मैदानमें घुस गया और बुरी तरह घायल होगया। कुमारी पावलैंकोको जब इसकी सूचना मिली तो वह भयावनी रातके भीषण अन्धकारमें भी उस जोखिमभरी जगहपर दौड़ी हुई पहुँची और उस दस्तेके घायल सभी आदमियोंको उसने बचालिया। वह आधी रातसे सुबहके उजाले तक इस रक्षा कार्यमें अविरामभावसे जुटी रही। आज रूसकी स्त्रियोंने अपनी कर्तव्यपरायणता, शूरवीरता और देशभक्तिसे जो नाम कमाया है वह रूसी राष्ट्रके लिये एक गौरव तथा अभिमानकी वस्तु बन गयी है। समस्त रूसी राष्ट्र एकस्वरसे रूसी नारियोंकी देशभक्ति की प्रशंसा कर रहा है। हजारों देशभक्त रूसी महिलाओंको उनकी सेवाओंके सम्मानमें फौजी तमगे भेंट किये गये हैं। रूसकी सर्वश्रेष्ठ योद्धा महिलाओंमें से १५ को सोवियट यूनियनका नायक का सर्वोच सम्मान दिया गया है।

वक्त आयेगा जब केवल रूस ही नहीं, यूरोप ही नहीं बल्कि समग्र संसार इन रूसी महिलाओं की सेवाओंका सम्मान करेगा—उनकी ये सेवायें केवल रूस की रक्षा करनेके लिये ही नहीं हैं—ये रूसी देशभक्त महिलायें तो हिटलररूपी महामारीसे संसारकी रक्षा करनेके लिये आज युद्धके मैदानमें उतरी हैं।

ओलावृष्टिसे खेतीको नुकसान

उज्जैनके आसपास पिछले सप्ताह ओलोंकी अधिक वर्षा होनेके कारण खेतीको बड़ी हानि हुई है। कई किसानोंके खेतके खेत बरबाद हो गये हैं। एक किसानकी तो १०० मनसे अधिक गेहूँकी सारी फसल नष्ट हो गई। किसान इतना दुःखी है कि कई दिनोंसे उसन अन्न खाना ही छोड़ रक्खा है। अधिकारियोंको फसलकी हानिकी ओर ध्यान देकर गरीब किसानोंकी रक्षा करनी चाहिये।

क्या गांधीवाद और समाजवाद परस्पर विरोधी हैं ?

१०–मिल्कियत (ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त)

★ लेखक—**श्री. हरिश्चन्द्रजी हेड़ा**, बी. ए. एल. एल. बी. ★

गत लेखमें विवरण पर हम विचार कर चुके हैं। अब राष्ट्रीयकरण तथा गांधीजी द्वारा प्रतिपादित ट्रस्टीशिपके सिद्धान्तपर विचार करना क्रम प्राप्त होता है। इस लेखके प्रारंभमेंही यह कह देना उचित होगा कि सर्वोदय संपत्ति उत्पादन करनेके साधनोंके राष्ट्रीयकरण करनेके विरुद्ध कदापि नहीं रहा है।

श्रीरामचंद्रके इस प्रश्नका कि ‘ किंतु यदि हम ऐसी मशीनोंको स्वीकार करें तो हमें इन मशीनोंके बनानेके कारखानोंको स्वीकार करना होगा न ? उत्तर देते हुए गांधीजीने कहा कि “ हां किन्तु ऐसे कारखाने किसीकी निजकी संपत्ति न होंगे बल्कि सरकारी संपत्ति होगी। इतना सोशलिस्ट मैं हूं। ”

—नवजीवन २-११-२४

जबरदस्ती सैनिक भर्ती करनेके प्रश्नपर उत्तर देते हुये गांधीजीने कहा कि:—“ मैं कानूनसे जिसे जबरदस्ती प्राप्त करना चाहूंगा वह मामूली और कुशल दोनों प्रकारका उत्पादक श्रम होगा। ” —हरिजन ३-२-४०

“ मेरी रायमें हिन्दुस्तानकी और सारे संसारकी अर्थ व्यवस्था ऐसी होनी चाहिये कि उसमें खाने और कपड़ेके विना कोई रहने न पाये। दूसरें शब्दोंमें हर एकको गुजर बसरके लिये काफी काम मिलना चाहिये। यह आदर्श तभी सिद्ध होगा जब कि जीवनकी प्राथमिक आवश्यकतायें पूरी करनेके साधनों पर जनता का अधिकार रहेगा। जिस प्रकार भगवानकी पैदा की हुई हवा और पानी सबको मुफ्तमें मयस्सर होते हैं, या होने चाहिये, उसी तरह ये साधन भी सबको बे रोकटोक मिलने चाहिये। उन्हें दूसरोंको लूटनेके लिये लेन देनकी चीजें हरगिज नहीं बनने देना चाहिये। ”

—गांधीजी (यंग इंडिया १५-१-२८)

“ बड़े २ उद्योगोंका केन्द्रीयकरण और राष्ट्रीयकरण तो अवश्य ही करना पड़ेगा। लेकिन गांवकी विशाल राष्ट्रीय प्रवृत्तिमें उनका स्थान कमसे कम रहेगा। ”

गांधीजी ‘ रचनात्मक कार्यक्रम ’

बड़े बड़े उद्योगोंके राष्ट्रीयकरणके पक्षमें सर्वोदयके विचार अत्यंत स्पष्ट हैं। परंतु, जैसा कि आखिरी उद्धरणसे जाहिर होता है, सारी संपत्तिके राष्ट्रीयकरण करनेके सर्वोदय विरुद्ध है। वह ग्राम संस्कृति पर स्थिर है। पर इस विषय पर अगले लेखमें विचार किया जायगा। यहां तो केवल यही देखना है कि वह राष्ट्रीयकरणके तत्त्वतः विरुद्ध है या नहीं। “ राष्ट्रीय मिल्कियत खानगी मिल्कियतसे अच्छी है लेकिन उसमेंभी हिंसा है। इस लिये मेरी दृष्टिसे वह भी आपत्तिजनक है। ”

—गांधीजी सर्वोदय २।१८

ऊपरके विवेचनसे यह स्पष्ट होगा कि सर्वोदय खानगी संपत्तिका आग्रही नहीं है। जहांतक तत्त्वका संबंध है वहांतक वह यह स्पष्ट तौरसे स्वीकार करता है कि खानगी संपत्तिसे राष्ट्रीयकरण अच्छा है। वह राष्ट्रीयकरणका समर्थन तथा खानगी संपत्तिका विरोधी है। परंतु वह राष्ट्रीयकरणमें भी सुधार करना चाहता है। उसके दोषोंको दूर करना चाहता है यह बात जरूर है। राष्ट्रीयकरण जैसा कि आम तौर पर समझा गया है, उसे स्वीकार नहीं। वह उसे अच्छीसे बेहतर बनानेकी कोशिशमें है। परंतु इसके पहले हमें समाजवाद व सर्वोदयके इस भेदको समझ लेना चाहिये कि (१) समाजवाद प्रायः सारे उद्योगोंका राष्ट्रीयकरण करना चाहता है और सर्वोदय कुछही उद्योगोंका तथा (२) समाजवाद यह सारा कार्य कानूनसे, राज्यसत्तासे करना चाहता और सर्वोदय अहिंसासे।

“ मैं जमींदारोंको मिटाना नहीं चाहता पर मुझे यह भी नहीं जान पड़ता कि वे अनिवार्य रूपसे समाजके लिये आवश्यक हैं। जमींदारों और पूंजीपतियोंको मैं अपने अहिंसात्मक तरीकेसे यह बात जंचा देना चाहता हूँ। जिस क्षण भी जमीनके जोतने वाले अपनी शक्तिको समझने लग जायंगे, जमींदारी प्रथाकी बुराईका सारा विष नष्ट हो जायगा। अगर किसान कह दे कि जबतक हमें अपने पेटके लिये पूरा भोजन, कपड़े और हमें तथा हमारे बच्चोंको पढ़ानेके लिये काफी मुआविजा नहीं मिलेगा, हम आपकी जमीन नहीं जोतेंगे तो बेचारा जमींदार क्या करेगा ? असलमें देखा जाय तो जमीनकी उपजका मालिक तो वही है जो उसके लिये परिश्रम करता है। अगर समझदारीके साथ वे एकता करलें तो वे एक ऐसी शक्ति बन जायंगे जिसका मुकाबला कोई नहीं कर सकेगा। इस लिये मुझे वर्ग विग्रहकी कोई जरूरत ही नहीं दिखाई देती। ”

—गांधीजी ‘सर्वोदय’ अक्टूबर ३८ पृ. २३-२४

यहां यह समझ लेना आवश्यक है कि गांधीजी वर्ग युद्ध की आवश्यता नहीं समझते या उसे अपरिहार्य नहीं मानते। पर क्या वह वर्ग विग्रहके अस्तित्वसे इन्कार करते हैं ?

“ यह कहना सही नहीं है कि मैं वर्ग युद्धके अस्तित्वमें विश्वास नहीं करता। जिस चीजमें मैं विश्वास नहीं करतां वह है वर्ग युद्धको उकसाना या उत्तेजन देना और उसको जारी रखना। दिन दिन मेरा यह विश्वास बढ़ता ही जाता है कि वर्गयुद्धको न होने देना पूर्णतया संभव है। ”

गांधीजी–‘हरिजन सेवक’ अक्तूबर १९३५

गांधीजी वर्गयुद्धको टालना चाहते हैं। सर्वोदयकी मान्यता है कि जनताकी अहिंसा शक्ति बढ़तेही पूंजीपति या तो ट्रस्टी बन जायंगे अथवा अपनी संपत्तिक राष्ट्रको सौंप देंगे। इसलिये सर्वोदय अपना पूरा ध्यान जनताकी अहिंसा-शक्ति बढ़ानेकी ओर लगाता है। परंतु इसपर भी यदि पूंजीपति अपनी खुशीसे ट्रस्टी न बने तो ?

“ अगर संपत्तिशाली लोग संरक्षकों ट्रस्टी जैसा व्यवहार करें तो मुझे नित्तांत सुख होगा। लेकिन वे इससे चूकें, तो मैं समझूंगा कि हमें राज्यकी सहायतासे न्यूनतम हिंसासे काम लेकर उनसे उनकी संपत्ति ले लेनी होगी। इसीलिये मैंने गोलमेज परिषदमें कहा था कि हम मौजूदा प्रत्येक प्रतिष्ठित स्वार्थकी छानबीन करेंगे और जहां आवश्यक होगा वहां संपत्ति जप्तभी करेंगे। प्रत्येक बातकी जांच करके जहां उचित मालूम होगा वहां मुआविजा देंगे और जहां योग्य लगेगा वहां विना कुछ हरजाना दिये संपत्ति जब्त कर ली जायगी। ”

—गांधीजी ‘ सर्वोदय ’ २।१८

सर्वोदय खानगी संपत्तिके विरुद्ध है, संपत्तिका समवितरण करना चाहता है. राष्ट्रीयकरणके पक्षमें है, इस राष्ट्रीयकरणके लिये वह न्यूनतम हिंसाका उपयोग करनेके लिये तैयार हैं, यहांतक वह समाजवादके साथ है। पर समाजवाद और उसका मतभेद इसके बाद प्रारंभ होता है। वह राष्ट्रीयकरणसे अर्थात् संपत्तिको राज्यकी मिल्कियत में देनेसे ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त अच्छा समझता है। सर्वोदय मानता है कि संपत्तिका राष्ट्रीयकरण करनेसे शोषणका प्रश्न पूर्णतया हल नहीं होता। राष्ट्रीयकरणमें भी शोषण रहता है, फिर वह थोड़से अंशमें क्यों न हो ? अतः वह एक ऐसा मार्ग निकालना चाहता है जिसे उसने ट्रस्टीपनका नाम दिया है। ट्रस्टीपन या संरक्षकताको समझते समय हमें ट्रस्टी इस शब्दके आधुनिक शब्दकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिये। ट्रस्टीके प्रचलित तीन अर्थ लिये जाते हैं।

१–नाबालिग, पागल आदि की संपत्तिके संरक्षक। इनका कर्तव्य संपत्तिकी रखवाली करना होता है। २–पंच अर्थात दान की रकम उसके नियत उद्देश्य की सिद्धिके लिये अधिकसे अधिक खर्च करनेके बदले उसमें कोरकसर करके बचत करनेवाला और कुछ रकम बढ़ी हुई बतानेवाला। ३–अपने कब्जेमें आई हुई दूसरे की संपत्ति अपने चंगुलसे न छोड़नेके लिये बहानेबाजी करनेवाला व्यक्ति। सर्वोदय जब ट्रस्टी शब्दका उपयोग करता है तब उसका अर्थ हमें पूरे तौरपर समझना चाहिये। सर्वोदयका ट्रस्टी ऊपरके तीनों ट्रस्टियोंमेंसे कोई भी नहीं होता। सर्वोदयकी दृष्टिसे एक या अधिक ऐसे व्यक्तियोंका समूह जो अपने कब्जेमें आई हुई संपत्तिका उपयोग या उत्पादन साधनका इस प्रकारसे संचालन करे जो सर्वोदयके उद्देश्योंके अनुसार, अर्थात् किसीका शोषण न होता हो, ऐसे संगठनको सर्वोदय ट्रस्टी मानता है। दूसरी बात हमें यह समझ लेनी चाहिये कि सर्वोदयका ट्रस्टी उन सब लोगों द्वारा निर्वाचित किया तथा हटाया जाता है जिनका हित संबंध उससे आता हो। तीसरी बात हमें यह ध्यानमें रखनी चाहिये कि सर्वोदय ट्रस्टीको मालिक नहीं मानता। वर्तमान राजाओं, पूंजीपतियों तथा जमीदारोंको वह ट्रस्टी मानता है। और प्रजा मजदूर तथा किसानोंको यह अधिकार है कि यदि वे ट्रस्टी अपने पदका अनुचित उपयोग करने लगें तो उन्हें हटा दें। सर्वोदयकी दृष्टिसे किसान मजदूर आदि जो संपत्तिका उत्पादन करते हैं वह उसके मालिक हैं। इस पार्श्वभूमिमें सर्वोदयका ट्रस्टीपनका सिद्धांत हमें समझना चाहिये।

राष्ट्रीयकरणमें क्यों हिंसा है यह बताते हुये गांधीजी लिखते हैं कि—“ राज्य संस्था संगठित और एकीकृत हिंसा की प्रतिनिधि है। व्यक्तिके आत्मा होती है। राज्य आत्माहीन यंत्र है। उसका अस्तित्व ही हिंसापर निर्भर है। इस लिये आप उससे हिंसा नहीं छुड़ा सकते। अतः मैं संरक्षकताका सिद्धांत अधिक पसंद करता हूं। सर्वोदय २।१२

यहांपर यह प्रश्न उठता है कि कोई भी राज्यसत्ता फिर वह कितनीही अधिक प्रजातंत्रीय क्यों न हो हिंसाके विना टिक नहीं सकती यह प्रश्न एक मौलिक प्रश्न है। कभी इन लेखोंमें इसपर विचार करना आवश्यक होगा। परंतु यहां यह कह देना काफी होगा कि समाजवाद भी अन्तमें जाकर अराज्यवाद कोही स्थापित करना चाहता है। कार्ले मार्क्सने ‘ Withering away of the state ’ इन शब्दोंका प्रयोग करके समाजवादके अन्तिम लक्ष्य की ओर संकेत किया है। ऍंगेल्सेन इसे समझाते हुये बताया है कि समाजवाद धीरे २ राज्यसत्ताका लोप किस प्रकार करना चाहता है। इस अर्थमें समाजवाद और सर्वोदय यह दोनों विचार धारायें अंतमें जाकर अराज्यवादी बन जाती हैं। इसका कारण सर्वोदयके पास तो यही है कि कोई भी राज्यसत्ता हिंसासे सर्वथा मुक्त नहीं हो सकती। और जहां हिंसाके लिये स्थान है वहां शोषण व असमानता या और किसी तरहका अन्याय रहेगा ही। इस विषयके अधिक विस्तारमें न जाते हुये हमारे लिये यह जान लेना काफी हो जाता है कि सर्वोदय और समाजवाद दोनों भी अराज्यवादी पद्धतिकोही अपना अन्तिम लक्ष्य मानते हैं।

यही कारण है कि सर्वोदय राष्ट्रीयकरणमें अर्थात् राज्यके द्वारा संपत्तिके उत्पादनमें कुछ कमी महसूस करता हैं। और राष्ट्रीयकरणके स्थानपर वह संरक्षता या ट्रस्टीशिपका सिद्धांत पसंद करता है। उपाय यह बताया जा चुका है कि सर्वोदयकी दृष्टिमें संपत्तिके मालिक तो वही हैं जो उसे निर्माण करते हैं तथा जिन्हें उसके उपयोग की आवश्यकता होती है। यदि कोई ट्रस्टी अपना फर्ज अदा नहीं करते तो यह स्पष्ट हैं कि वे तभीतक अपना कब्जा [illegible] सत्ता कायम रख सकेंगे जब तक देशके [illegible] मालिकोंमें उसपर सत्ता या कब्जा कायम करने की शक्ति न आये। सर्वोदय राजा, जमीदार,

पूंजीपति, कारखानेदार आदिको ट्रस्टी मानता है। यदि यही लोग ट्रस्टीके कर्तव्योंका पालन नहीं करते, तो संपत्तिके सच्चे मालिकोंका कर्तव्य स्पष्ट हो जाता है।

किशोरीलाल मश्रूवालाके शब्दोंमें "यही न्याय राजा, जमींदार, पूंजीपति वगैरह पर लागू होता है। चाहे वह अपना ट्रस्टीपन कबूल करें या न करें, ये मालिक नहीं हैं, ट्रस्टी ही हैं। अगर वह यह मानकर अच्छी तरह पेश न आयेंगे, तो जब असली हकदारोंमें ताकत आ जायगी तब उन्हें अपना कब्जा छोड़ना ही होगा। ट्रस्टी की हैसियत का यह सीधा परिणाम है। वह किसीके टालनेसे टल नहीं सकता।

"गांधीजीकी चेष्टा यह बात उनके गले उतारने की है। गांधीजी उन लोगोंको यह रास्ता बताते हैं कि 'अगर आप अपनी कुछ प्रतिष्ठा और उपयोगिता कायम रखना चाहते हैं तो आपको अपनी सारी उपज और आमदनीका उपयोग ट्रस्टीके बंधनोंको मानकर असल मालिकोंके हितके लिये करना चाहिये और मालिकोंके दिलमें यह विश्वास पैदा करना चाहिये कि दूसरे व्यवस्थापकोंको मुकर्रर करनेकी अपेक्षा आपकी ही नियुक्ति करना ज्यादा फायदेमन्द है। यह बात दोनों पक्षमें अहिंसासे होनेवाली है। और दोनोंके हितकी है।

"यदि वे यह नहीं मानेंगे, तो जनतामें शक्ति आनेपर वे किसी भी तरह हमेशाके लिये कायम नहीं रह सकेंगे।" —सर्वोदय ३।६८

सर्वोदय का अधिष्ठान अहिंसापर है। इसलिये ट्रस्टीशिपके सिद्धान्तपर अमल करनेका जब समय आवेगा तब 'सर्वोदय अहिंसाके शस्त्रपर पूरा जोर देगा। इसमें किसीको संदेह करने की आवश्यकता नहीं रहनी चाहिये।

'लेकिन हम जबरदस्ती उसकी संपत्ति नहीं छीनेंगे। यहा मुख्य बात है।...यहां दूसरा प्रश्न यह उत्पन्न हो सकता है कि ऐसे ट्रस्टी कितने हो सकते हैं। दर असल यह प्रश्न उठना नहीं चाहिये। हमारे सिद्धान्तसे इसका सीधा संबंध नहीं है। ऐसा ट्रस्टी चाहे एक ही हो या एक भी न हो, इसकी चिन्ता हम क्यों करें। हमारी यह श्रद्धा होनी चाहिये कि हम हिंसाके बिना, या इतनी कम हिंसासे कि जो हिंसाही नहीं कही जा सकती, धनिकोंके अन्दर यह भाव पैदा कर सकें। उस श्रद्धापर हमें अमल करना चाहिये। इतना हमारे लिये काफी है। हमें अपने प्रयत्नसे जगतको यह दिखा देना चाहिये कि हम अहिंसासे आर्थिक असमानता मिटा सकते हैं। ऐसे ट्रस्टी कितने होंगे यह सवाल उनके मनमें उठता है जो अहिंसा को नहीं मानते।

गांधीजी-सर्वोदय-१-११

अहिंसाके विवेचनके समय सर्वोदयकी नियादी मान्यताको स्पष्ट किया गया था। स मान्यतानुसार सर्वोदयमें विश्वास रखनेवाले क्तिके लिए यह शंकाही निर्माण नहीं होती। स प्रकारके मार्गसे कोई भी सुधार अमलमें सकेगा या नहीं। मानव सत्प्रवृत्तिमें सर्वोदयका विश्वास उसमें यह श्रद्धा उत्पन्न करता कि जो सुधार वह अमलमें लाना चाहता उस सुधारके विरोधियोंमें भी सत्प्रवृत्ति द है। इस सत्प्रवृत्तिपर लोभ, स्वार्थ या अज्ञानका आवरण भलेही पड़ा हुआ हो। जो सुधार हम लाना चाहते हैं उसके अन्दर जो सत्य होता हैं, उस सत्यकी शक्तिसे तथा जिस अहिंसाके साधनसे हम वह सुधार लाना चाहते हैं उस अहिंसाकी शक्तिसे यह आवरण अवश्य हट जायगा।

जब गांधीजी यह विश्वास जाहिर करते हैं कि पूंजीपतियोंके हृदय परिवर्तन द्वारा ट्रस्टीपन अमलमें आयेगा तब उनका पूरा अर्थ हमें हृदयंगम करना चाहिये।

केवल बातोंसे समझा बुझाकर नहीं मैं अपने अपने साधन पर सारा ध्यान केन्द्रित करूंगा'। कुछ लोग मुझे अपने युगका सबसे बडा क्रान्तिकारी कहते हैं। यह गलत भी हो सकता है। लेकिन मैं अपने आपको क्रांतिकारी —अहिंसक क्रांतिकारी मानता हूँ। मेरा साधन है असहयोग। कोई भी व्यक्ति लोगोंके राजी खुशीके या जबरदस्तीके सहयोगके बिना धन संचय नहीं कर सकता।" गांधीजी 'यंग इंडिया' २५-१२-३१

संपूर्ण ट्रस्टीशिपका सिद्धान्त अमलमें आना साधारण घटना नहीं होगी। और न उसके लिये कम अहिंसा शक्तिकी आवश्यकता रहेगी। संभव है स्वातंत्र्य प्राप्त करनेके लिये जितनी अहिंसाकी आवश्यकता होगी उससे भी अधिक अहिंसाकी आवश्यकता ट्रस्टीपनको अमलमें लानेके लिये होगी। इस लिये गांधीजी कहते हैं कि—

"संपूर्ण संरक्षणता (ट्रस्टीपन) युक्लीडके बिंदुकी परिभाषाके समान केवल भाव वाचक है। और उतनी अव्यवहार्य भी है। लेकिन यदि हम उसे प्राप्त करनेका प्रयत्न करें तो दूसरी किसी भी रीतिकी अपेक्षा दुनियामें समानता प्रस्थापित करनेमें अधिक सफल होंगे।

—'सर्वोदय' २-१८

ट्रस्टीपनका सिद्धान्त अमलमें लानेमें इतना दुश्वार होनेके बावजूद गांधीजी उससे चिपके हुए हैं। इसका कारण उन्हींके शब्दोंमें "अहिंसापर जिसकी बुनियाद रखी गई है ऐसा समाज और कोई दूसरा ध्येय सामने रख ही नहीं सकता"। (हरिजन २५-३-४०) सर्वोदयके लिये जिस प्रकार दूसरा उद्देश्य नहीं हो सकता उसी प्रकार इस सिद्धान्त की बुनियादमें जो तत्त्वज्ञान है वह अंतमें इस सिद्धांतको सर्वमान्य करा सकेगा। इस प्रकारके विश्वासके साथ ही गांधीजी कहते हैं कि—

"ट्रस्टीपनका मेरा सिद्धांत समयपर ग्रहण तथा बदल सकनेवाले साधनके समान नहीं है। और वह ट्रीक[illegible] : तो हरगिज नहीं है। मुझे वि[illegible] है कि वह अन्य सारे सिद्धांतोंसे अधिक समयतक टिकेगा। उसको तत्त्वज्ञान तथा धर्मकी मान्यता प्राप्त है। —हरिजन १६-१२-३९

हमने ऊपर यह बताया है कि समाजवादभी अंतमें जाकर अराज्यवादी बन जाता हैं। कार्ले मार्क्सने राज्यके लोप होने Witherig away of the State की कल्पना की थी। जब समाज वाद अराज्यवादको पहुंचेगा तब संपत्तिपर किसका अधिकार होगा? इसका उत्तर कार्ले मार्क्स, लेनिन या ऍंगिल्स आदिने नहीं दिया। हम यह पाठकोंके ऊपरही छोड देते हैं कि उस समयपर समाजवाद मिल्कियतके संबधमें क्या व्यवस्था करेगा।

आंखिरी दो लेखोंमें इस कदर विवेचनसे हम जिन परिणामोंतक पहुंचे हैं उनका सार लेख समाप्त करनेके पूर्व दे देना अनुचित न होगा।

१ सर्वोदय खानगी संपत्तिको हटाना चाहता है इसलिये कि उसमें शोषणके रूपमें हिंसा है।

२ सर्वोदय संपत्तिका समवितरण करना या आर्थिक समानता स्थापित करना चाहता है।

३ सर्वोदय संपत्तिके राष्ट्रीकरणके पक्षमें है।

४ सर्वोदय संपत्तिके राष्ट्रीकरणके लिये अपरिहार्य होनेपर न्यूनतम हिंसा राज्यकी ओरसे किये जानेके पक्षमें है। यहां तक सर्वोदय और समाजवाद साथ साथ चलते हैं। सर्वोदय इसके आगेजाकर......

५ राज्यकी मिल्कियतमें शोषणका पूर्ण अभाव नहीं होता अतः सर्वोदय कमसे कम राष्ट्रीकरण करना चाहता है।

ट्रस्टीपनके सिद्धान्तपर शोषणका पूर्ण लोप हो जाता है अतः वह इसे अमलमें लाना चाहता है।

अगले लेखोंमें आर्थिक संगठनपर हम विचार करेंगे।

—६ अगस्त १९४३ सेन्ट्रल जेल हैदराबाद

शाहपुरास्टेट बाढ़ सहायता समितिका द्वितीय अधिवेशन

समितिके मंत्री श्री. कुशलसिंहजीने निम्न लिखित रिपोर्ट प्रकाशनार्थ भेजी है:—

३० जुलाई १९४३ की प्रलयकारी भीषण बाढ़ने शाहपुरा स्टेटके कितनेही ग्रामोंको ऊजड़कर दिया एवं धन जनकी विशेष हानि पहुंचाई जिसके आँकड़े पहले बताए जा चुके हैं। क्षति ग्रस्त जनोंके सहायतार्थ बाढ़ पीड़ित सहायक समिति द्वारा २२ सितम्बर तक जो २ कार्य हुए उनकी रिपोर्ट मय आय व्ययके आँकड़ोंसे २३ सितम्बरके अधिवेशनमें श्रीमान् महाराज कुमारके सभापतित्वमें सुनाई गई थीं। तदनन्तर आज पर्यन्त जो २ कार्य हुए उनकी भी रिपोर्ट आम जनताके सामने रख देना अत्यावश्यक समझकर ता: २५ मार्च सन् १९४४को कमेटीके प्रधान श्रीमान् महाराज कुमार साहेबने श्रीमान् श्री जी हुजूरसे निवेदन कर महलोंके जलेब चौकमें आम जनताको आमन्त्रित किया। रात्रिके ठीक ९ बजे श्रीमान् श्री जी हुजूरके प्रधानत्वमें अधिवेशनकी कार्यवाही प्रारम्भ हुई जिसमें रियासतके अधिकारी गण, कर्मचारी वृंद, बाजारके से० साहूकारान, किसान वर्ग, स्कूलके छात्र व कन्याएं तथा देहातके पटेल पञ्चान व स्थानीय प्रजाजन सभी उपस्थित थे। सर्व प्रथम कमेटीके कार्य की निम्न रिपोर्ट सुनाई गई।

'यह हर्ष की बात है कि आप सबके सहयोगसे कमेटी द्वारा बाढ़पीड़ित किसानोंकी समय २ पर सब तरहकी सहायता होनेसे अब उनकी स्थितिमें सुधार हो गया है और किसान लोगोंने अपने पैरोंपर खड़े होकर फसल आलू (रबी) तैयार करली है, जो ईश्वर की कृपासे पक चुकी है और किसानोंको किसी तरहकी साधारण सहायताकी आवश्यकता नहीं रही है। कुछ ग्रामोंका पुनर्निर्माण कार्य बाकी है जो हो रहा है। सहायता कार्य करीब करीब समाप्त हो चुका है। कमेटीको कुल ५४४२८॥)॥ रुपयों की सहायता प्राप्त हुई जिसमेंसे ४००५८॥)॥ खर्च हुए एवं १४३७०) शेष हैं जिससे गृह निर्माण कार्य जारी है। मैं उन संस्थाओं, दान दाताओं एवं कार्यकर्ताओंको धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता जिन्होंने खुले दिलसे इस कार्यमे कमेटीकी सहायता की है।

इस प्रकार कमेटीकी रिपोर्ट सुनाई जाने के बाद श्रीमान श्री जी हुजूर ने कार्यकर्ताओंके सेवा कार्यसे प्रसन्न होकर उन्हें पारितोषिक स्वरूप प्रमाणपत्र, रजत पदक, नकद तथा राजकीय सम्मानोंसे सम्मानित किया।

हरिजन पार्टीने जो बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रमें सेवा कार्य किया उससे अति प्रसन्न हो आज जनताके बीचमें उनके मुखियाको फर्श पर अपने पास बुलाकर अपने हाथोंसे पारितोषिक देते हुए उनके कार्य की भूरि २ प्रशंसा की। इसमें एक रोचक घटना उल्लेखनीय यह है कि हरिजनोंके मुखिया सभाके बीच समीप आनेसे सकुचा रहे थे और श्रीमानजी जो हुजूर फरमा रहे थे कि तुम मेरे पास आओ क्योंकि मेरे समीप सारे सेवा कार्य कर्ताओंका एक ही सम्मान है। उक्त घटनासे उपस्थित जनता मंत्रमुग्ध होकर श्रीमानोंकी तरफ देखती रही और गदगद हो उठी।

तत्पश्चात् श्री. जी हुजूरका निम्न भाषण हुआ—

इस संसारमें ईश्वरकी सत्ताने कई नास्तिकोंको आस्तिक बनाया है। यह प्रलयकारी बाढ़भी उसी महान प्रभुकी कृति है, जिसको स्वच्छंद विचरता प्राणी एक मिनिट पहले जान भी न पाया था कि इस मरुस्थलमें भी बाढ़ आ सकती है। धनी लोग जो आरामकी नींद सो रहे थे और ता. ३१ को मंसूबे लिये होंगे उन्हे बाढ़ने बाँध अपने मंसूबेके साथ बहादिया और उनके शवोंका अन्त्येष्टि संस्कार भी ठीक तरह नहीं हो सका। यह सब कुछ हमारे पूर्व कर्मोंका फल है।

जनताको सम्बोधन करते हुए आपने फरमाया कि बाढ़ आनेसे जो क्षति हुई है उसकी पूर्तिके लिए आपने प्रयत्नपूर्वक जो सहायता की है उसे मैं हृदयसे कभी नहीं भूल सकता और साथ ही यह भी आशा रखता हूं कि किसी भी व्यक्ति एवं जातिने आपत्तिके समय जो कुछ भी दिया है वे धन्यवादके पात्र हैं मगर मेरे नज़दीक सबसे अधिक धन्यवादके पात्र वे हैं जिन्होंने तात्कालिक सहायतामें अपने पास कुछ भी नहीं होते हुए एक रोटीमेंसे भी आधी रोटी सहायताके लिए दी और भीषण वर्षाके समय भी कीचड़में पैदल यात्रा कर लोगोंको सहायता पहुँचाई। मैं स्वयं उनके समक्ष मददकी समता नहीं रख सकता। मेरी प्रजाने जो ऐसी मुसीबतके वक्त तन-मन-धनसे जो कुछ भी सहायता की है उसके लिए मैं आभारी हूं और बाहरसे जिन २ महानुभावों ने सहायता भेजी है उनको भी मैं हृदयसे धन्यवाद देता हूं। अन्तमें ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि प्रजा पर इस प्रकार कोप कभी न कर सुख शान्तिकी वर्षा किया करें जिससे हम सब सुगमता से आपकी भक्तिमें जीवन बिता सकें।

बच्चे झूठ क्यों बोलते हैं?

मां-बाप अथवा शिक्षक के रूप में जिन्हें बच्चों के संपर्क में आना पड़ता है, वे सभी जानते हैं कि बच्चे प्रायः झूठ बोलते हैं।

झूठ बोलने की इस प्रवृत्ति को हटाने के लिए मां-बाप या शिक्षक निम्नलिखित साधनों का प्रयोग किया करते हैं। जैसेः—

१—बच्चे द्वारा बोले हुए झूठ को पुलिस की तरह हर समय बच्चे को अपमानित करने की दृष्टि से सिद्ध करते हैं।

२—न्यायाधीश बनकर 'दंड' का ऐलान करते हैं।

३—अपमानित करते हैं, पीटते हैं, डाटते हैं।

४—बार-बार बच्चे के मुंह से कहलाते हैं—"मैं झूठ नहीं बोलूंगा"।

५—बार-बार झूठ बोलने के अपराध में जबरदस्ती माफी मंगवाते हैं।

प्रायः इस प्रकार के सभी उपाय जो बच्चों को जबरदस्ती सच बोलना सिखाने से संबंध रखते हैं, बच्चों के लिए अकल्याणकारी, उनके विकास के लिए प्रतिरोधक एवं अवैज्ञानिक हैं। झूठ बोलना एक मानसिक रोग है। जब तक लोग इसके मूलभूत कारणों पर विचार न करेंगे, तबतक इस रोग का उपचार नहीं किया जा सकता।

(लेखक-श्री दयाशंकरजी मिश्र)

बच्चा झूठ इसलिए बोलता है किः—

बच्चे का शरीर छोटा-सा है। हमारे मुकाबिले में उसकी शारीरिक शक्ति हीन है!

जब उस नन्हें बच्चे के आसपास घर अथवा शाला में ऐसी परिस्थितियां पैदा कर दी जाती हैं जिनमें वह अपनेको 'अरक्षित' हुआ अनुभव करता है, उस स्थिति में बच्चा अपनी रक्षा के लिए झूठ बोलता है।

हमारी विचार-धारा, हमारा रहन-सहन और हमारी दिनचर्या सभी बाल-जीवन से भिन्न हैं। किन्तु हम लंबे चौड़े 'देव' और वे 'नन्हे-नन्हे जीव' एक घर में एक साथ रहते हैं। साल में जाने कितने अवसर आते हैं जब हम बच्चे के व्यक्तित्व को तुच्छ मानकर उसकी उपेक्षा एवं अपमान कर बैठते हैं। उन अवसरों पर बच्चे अपने व्यक्तित्व की रक्षा के लिए झूठ बोलते हैं।

हम दूसरों के सामने बच्चों की कमजोरियां प्रकट करते हैं, उनके दोष निकालते हैं। बच्चे उन कमजोरियों एवं दोषों को छिपाकर अपनी 'आत्मप्रतिष्ठा' कायम रखने के लिए झूठ बोलते हैं।

मताग्रही मां-बाप एवं शिक्षक के संपर्क में रहनेवाले बच्चे वास्तव में उन बड़ों द्वारा थोपे हुए आग्रहों को स्वीकार नहीं करते, किंतु उन बड़ों को खुश रखने के लिए उन आग्रहों को स्वीकार करने का अभिनय करते हैं। इस अभिनय को सफल बनाने के लिए बच्चे झूठ बोलते हैं।

जो बच्चे अपनी शारीरिक, मानसिक, एवं पारिवारिक परिस्थितियों के कारण 'हीनता की भावना' से दुःखी रहते हैं, वे अपने इस दुःख को 'कल्पनालोक' में उड़कर भूल जाना चाहते हैं। उस 'कल्पनालोक' को वास्तविक लोक सिद्ध करने के लिए बच्चे झूठ बोलते हैं।

मां-बाप एवं शिक्षक द्वारा जिन बच्चों की उचित मनोकामनाओं को पूरा नहीं किया जाता, वे बच्चे अपनी अतृप्त मनोकामनाओं की तृप्ति 'कल्पना-जगत' में किया करते हैं। इस कल्पना-जगत को झूठ के सहारे वास्तविक जगत सिद्ध करने में ऐसे बच्चों को बहुत आनन्द आता है। दूसरे के सामने उस कल्पना को वास्तविक सिद्ध करने में कल्पना अधिक सरस हो उठती है। बच्चे को ऐसा महसूस होता है कि उसकी कल्पना वास्तव में सत्य होकर प्रगट हुई है।

यदि इस कल्पना को कोई सच न माने तो बच्चे को हार्दिक दुःख होता है, बच्चा एकदम उदास हो जाता है।

एक ७ वर्ष की लड़की थी। उसे मिठाइयां बहुत पसंद थीं। जब बहुत दिनों तक उसे मिठाइयां खाने को न मिलीं तो उसने कल्पना की कि उसके पिताजी विदेश से आगये हैं; साथ में बहुत प्रकार की मिठाइयां लाये हैं।

इस कल्पना को अधिक सरस और वास्तविक सिद्ध करने के लिए वह पिताजी के आने का संवाद सब जगह जाकर कह आई। मेरे पास आई; सारी मिठाइयों के नाम भी सुना दिये; पिताजी से मिलने के लिए छुट्टी मांग कर अपने घर भी चली गयी।

शाम को मैं लड़की के घर उसके पिताजीसे मिलने गया। वस्तुस्थिति प्रकट हो गई। घरवाले बच्चे को 'झूठी' कहकर लांछित कर रहे थे। मैं बच्चेको लांछित करनेके स्थान पर खूब मिठाइयां खिलाने की राय देकर वापस आगया।

बच्चा प्यार का भूखा है, प्यार का प्यासा है। प्यार के अभाव में बच्चे का जीवन-स्रोत रुक जाता है, सूख जाता है। इस प्यार के अभाव में बच्चा पौधों की तरह मुरझा जाता है। सूख जाता है।

बच्चे को बताया जाता है कि जो बच्चा चोरी करता है, झूठ बोलता है, पाप करता है, उसे कोई प्यार नहीं करता। चूंकि बच्चे को अपनी विषम परिस्थितियों में झूठ बोलना ही पड़ता है, इसलिए बच्चा अपने अवगुणों को छिपाकर अपने बड़ों के समक्ष अच्छा सद्गुणी सिद्ध होने के लिए झूठ बोलता है।

जो बच्चे वंशानुक्रम के कारण जन्म से ही अहंवादी अथवा दंभी होते हैं वे भी प्रायः अन्य साथी बच्चों के सामने अपने वंश एवं कुटुंब की उच्चता को सिद्ध करने, अपने अहं को कायम रखने के लिए झूठ बोलते हैं।

जिन बच्चों को कड़े अनुशासन में रहना पड़ता है, वे प्रायः उस कड़े अनुशासन से छुटकारा पाने के लिए झूठ बोलते हैं। यदि एक बार भी इस झूठ बोलने से उन्हें अनुशासन तोड़ने में मदद मिल गई तो प्रायः ऐसे बच्चे झूठ बोलने के अभ्यासी हो जाते हैं।

इस कटु सत्य को स्वीकार करने से कौन इन्कार करेगा कि आज के इस संघर्ष-युग में बनिया व्यापार के लिए, वकील अपनी वकालत के लिए, शिक्षक अपना वेतन बढ़ाने के लिए, पुलिस अपनी झूठी कारगुजारियोंको सच साबित करने के लिए, बड़ी बड़ी संस्थाएं अपनी प्रतिष्ठा कायम रखते के लिए प्रायः झूठ बोलते हैं।

आज के बच्चे को भी कहीं-न-कहीं इन्हीं परिस्थितियों अथवा इसी प्रकार के झूठे वातावरण में रहना पड़ रहा है। तब इन बच्चों का झूठ बोलना ही स्वाभाविक है।

यदि हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे इस 'संघर्षयुग' में भी सच बोलें, झूठ बोलना छोड़ दें तो—

१—बच्चे की प्रतिष्ठा करें। उसके आत्मसम्मान की रक्षा करें।

२—उसके 'व्यक्तित्व'को स्वाभाविक तरीके से विकास होने दें। अपने व्यक्तित्वसे दबाकर उसके मनमें 'अरक्षा' का भाव पैदा न होने दें।

३—बच्चों को यथाशक्ति हीनता का अनुभव न होने दें।

दुःखमय वास्तविक जीवन से उन्हें प्रेमपूर्वक लड़ना सिखाएं।

४—बच्चों को समझदारी के साथ खूब प्यार दें। जहां उसे प्यार न मिले ऐसे वातावरण से दूर रक्खें।

५—वंशानुक्रम के कारण रहनेवाले दंभ एवं अहंभाव को, बालमनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए, बच्चे के दिमाग से दूर कर दें।

६—बच्चों पर से कड़ा अनुशासन हटा दें ताकि वे आजादी से सांस ले सकें।

७—हम स्वयं अपनी वकालत, व्यापार या अन्य किसी पेशेके संबंधमें झूठका सहारा न लें। कम-से-कम बच्चों के सामने तो हर्गिज नहीं।

८—'कल्पना-प्रिय' बच्चों की इस प्रवृत्ति को किसी कला की ओर मोड़ देना चाहिए। ऐसे बच्चे अच्छे कवि, कहानीकार और चित्रकार हो सकते हैं।

आज देश की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिस्थितियां ऐसी हैं जहां बच्चे शाला, बाजार, आसपास हर जगह अपने बड़ों को झूठ बोलते हुए देखते हैं, सुनते हैं।

ऐसे 'विषम युग' में बच्चे की झूठ बोलने की आदत छुड़ाने के लिए हमें बहुत सावधानी और धीरज से काम लेना पड़ेगा।

वायु सेवन और स्वास्थ्य

ले.—प्रोफेसर श्री रामचरण महेन्द्र, एम. ए.

बात कुछ पुरानी तो अवश्य है, किंतु है, बड़े काम की। विद्यार्थी-जीवन था, हृदय में बस अध्ययन, पारितोषिक और एम. ए. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास करने की धुन थी। दिन-रात मोटी-मोटी पुस्तकों को पचाने के कारण अवकाश ही प्राप्त न होता था, जैसे प्रथम श्रेणी के सिवा संसार में दूसरी कोई वस्तु ही बाकी न रह गई हो। दो-तीन मास बाद कब्ज की शिकायत शुरू हुई, भूख घटने लगी, अध्ययन करते समय कुछ कष्ट-सा प्रतीत होने लगा और आंखों में धुंधलापन भी आ गया। फिर तो शेली, कीट्स, तथा शेक्सपीयर की मीठी कविता भी फीकी-सी लगने लगी। एक मित्र ने सलाह दी, डा. मुकर्जी के पास जाओ। में अंग्रेजी औषधियों में विश्वास नहीं करता; न अप्राकृतिक चिकित्सावाले आधुनिक डाक्टरों में ही मेरी श्रद्धा है। अतएव मैंने अपने मित्र से अपनी असमर्थता प्रकट करते हुए पूछा—"यदि कोई अच्छे वैद्य हों तो बताओ।"

वे बोले, "वैद्य हैं तो पर बड़े मुंहफट, उनकी खरीखोटी सह सकोगे?"

"सब मंजूर है, किसी तरह इन बीमारियों से पीछा छूटे।"

खद्दर का कोट, खादी टोपी पहिने एक साधारणसे मोढ़े पर एक चश्मेवाला वृद्ध कुछ पढ़ने में निमग्न था। हम जाकर बेंच पर बैठे। वह किताब पर आंखें गड़ाये पढ़ते रहे जैसे वहां कोई न हो। दो मिनट बाद, पुस्तक हटाकर आप बोले—"कहो, कैसे आये?"

"यह मेरे एक मित्र हैं। आपसे स्वास्थ्य के विषय में सम्मति लेना चाहते हैं।"

"हां तो बाबू साहब, कह डालिए अपना कच्चा चिट्ठा।"

मैं कुछ सकपकाया। खैर, राय लेने गया था। न सुनाता तो काम कैसे चलता।

"देखिए, आप मृत्यु के मुख में खिसक रहे हैं। मेरी बात मानिए। थोड़ा व्यायाम आरंभ कर दीजिए। डम्बेल यहीं मिल जायंगे, अब ही खरीद लीजिए और बुकसेलर के यहां से मैकफैडन की "कीपिंग फिट" (Keeping Fit) की एक प्रति खरीद लीजिए। एक महीने कसरत करने से ठीक हो जायंगे। मालिश के लिए मैं अपने नौकर को भेज दिया करूंगा। अच्छी मालिश करता है। उससे आप तय कर लेना।"

"किंतु मुझे समय कम मिलता है। और कसरत करने से निद्रा अधिक आती है। बदन बोझ-सा रहता है और……"

"अच्छा, अच्छा, एक काम करो। तुम कै बजे प्रातः-काल सोकर उठ जाते हो?"

"पांच बजे"।

"ठीक, तो थोड़ी देर खुली हवा में टहलने जाया करो।"

"पर, ठंड अधिक पड़ती है, खांसी का भय है, कहीं कुछ और न होजाय।"

"टहलने जाओ, या……मर जाओ।"

मैं झल्ला उठा। बात बेहद बुरी लगी। अब जवानी और यह कहते हैं मर जाओ। बहुत सोचता विचारता रहा। टहलने जाऊं या नहीं, डम्बेल खरीदूं या यों ही चलने दूं? अंत में सोचा, चलो टहलना ही आरंभ कर देखें। दसवें दिन से ही मेरी अवस्था में परिवर्तन आरंभ होना शुरू हुआ। भूख बढ़ी, कब्ज घटा,

[शेष पृष्ठ २४ के कालम १ पर]

★ बम्बई का एक मानव ★

श्री. दशरथलालजी जोशी

★ ले-डा० हेमचन्द्रजी जोशी डी. लिट् ★

डॉ. डी. जी. व्यासने एक रोज प्रातःकाल भेट होने पर कहा कि आपके एक मित्र आपसे मिलना चाहते हैं। 'विश्वामित्र' के श्री करुणाशंकर पंड्याने भी यही शब्द कहे। मैंने दोनोंसे इस मित्रका नाम पूछा। उत्तर मिला—"दशरथ लाल जोशी'। मैं इस सज्जनसे अपरिचित था। और वह मित्रताका दावा कर रहे थे। यह क्या बात है? इस पहेलीकी उधेड़बुनमें थोड़ा समय लगा और मैं समझा यह मित्र कोई 'मानव' है।

मानव होना बहुत कठिन है।

बस कि दुश्वार है हर कामका आसाँ,
आदमीको भी मयस्सर नहीं इतना होना ॥

किसीने सच कहा है:—

आदमीयत और शै है हैवानियत कुछ और शै,
बहुत तोतेको पढ़ाया फिर भी हैवां ही रहा ॥

इस शेरसे यह पता चलता है कि पढ़ लिखकर भी किसी आदमीमें आदमीयत ही आती हो यह बात गलत है। फ्रांसके प्रसिद्ध लेखक अनातोल फ्रांसने लिखा है कि भाषा (पढ़े लिखोंके हाथमें होनेके कारण) वर्तमान कालमें सत्यको प्रकाशमें लानेका एक प्रमुख साधन होनेके बजाय सत्यका गला घोंटनेका साधन हो रही है। यह बात हम भारतमें पग पगमें अनुभव कर रहे हैं।

आर्य भारतने इस तथ्यको अति प्राचीन कालमें जानलिया था। हमारे यहां बारबार ऐसे वचन पाये जाते हैं:—

साहित्यसंगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः।

अर्थात् जिस मनुष्यरूपधारी जीवनमें (आत्माको उदार बनानेवाले) साहित्य, संगीत और कला नहीं है वह सींग और पूछ न होते हुए भी पशु है।

तेऽमीमानुषराक्षसा परहितं स्वार्थाय निघ्नंति ये,
ये निघ्नंति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे।

'जो लोग स्वार्थके लिए दूसरेकी भलाई नहीं होने देते वे मनुष्य-राक्षस हैं और जो बिना किसी स्वार्थके दूसरेकी भलाईमें बाधा डालते हैं उन्हें क्या नाम दिया जाय यह हमारी बुद्धिमें नहीं आता।'

धर्मेणहीना पशुभिः समाना।

'जिनमें धर्म अर्थात् दूसरेकी भलाई करनेकी भावना नहीं है वह पशुके बारबार हैं।'

यह भी कहा है:—

शास्त्रान्यधीत्यापि भवंति मूर्खाः,
यस्तु क्रियावान् पुरुषः स विद्वान् ॥

'शास्त्र पढ़ चुकनेके बाद भी। (बहुतसे आदमी) मूर्ख ही रहते हैं; विद्वान् तो वह है जो ज्ञानको अपने जीवनमें सक्रिय रूपसे ढाले। उक्त वाक्य नीचे दिये गये इस उर्दू शेरका मूल रूप है कि 'खूब तोतेको पढ़ाया फिर भी हैवाँ ही रहा।'

इस सबका सार यह है कि मनुष्य नाम उसीका सार्थक है जो लोकहित' रूपी धर्ममें लीन रहता है।

विले पारलेके पं. दशरथलालजी जोशीके पास जब मैं पहुचा तो दस मिनटके भीतरही उनकी मनुष्यताने—जिसका दूसरा नाम महानता भी है—मेरा मन आनंदके सागरमें डुबा दिया। मैं सदा मनुष्योंकी टोहमें रहता हूं। आदमी देखनेकी इच्छासे ही यूरोप तक पहुंचा था। वहां अनेक मनुष्य दिखाई दिये। पर भारतमें दो चारही महात्मा ऐसे मिले जिन्होंने 'मानव' नामको सार्थक कर रखा है। दशरथ लालजींको इसी श्रेणीमें पाया। चेहरेसेही संस्कृति और सभ्यता फूटी पड़ती है। प्राचीन ऋषि-मुनियोंका स्मरण उनकी दो बातें सुनते ही हो आता है। अस्तु

* * *

१९३२ की बात है। कलकत्तेमें साप्ताहिक 'विश्वमित्र' की दशा कुछ अच्छी न थी। उसे सुधारने और लोकप्रिय बनानेके उद्देश्यसे बाबू मूलचंद्रने मेरे घर आकर मुझसे उसके संपादनका पद स्वीकार करनेका आग्रह किया। साप्ताहिककी काफी प्रशंसा हुई। इसलिए बा. मूलचंदने 'मासिक विश्वामित्र' निकालने की ठानी। मेरी तुच्छ सम्मतिमें संपादक का मुख्य धर्म है अपने पाठकोंको सच्चा और सारे संसार का ऐसा ज्ञान देना जिससे मानवजाति एकता तथा उन्नति की ओर बढ़े। इस कारणसे मासिक विश्वामित्रको मेरे कुछ प्रेमी चावसे बढ़ते थे। उनमें श्री दशरथलालजी भी थे।

* * *

दशरथलालजी संसारकी उन थोड़ी-आत्माओंमें हैं जो इतने सुसंस्कृत और उदार हैं कि सारे विश्वको अपना परिवार समझते हैं। ऐसे महात्माओंके लिए सब अपने हैं, पराया कोई नहीं संकीर्ण देशभक्तिको वे महान पाप समझते हैं। क्योंकि इतिहास इस बात का प्रमाण है कि अधिकांश युद्ध उस हत्यारी देश—या राष्ट्रभक्तिके कारण होते हैं जो किसी राष्ट्र या देशके लोगोंके मनमें यह दुष्ट भाव पैदा कर देती है कि हम संसारमें सर्वश्रेष्ट हैं अथवा अन्य जातियां हमसे असभ्य, निकृष्ट या अधर्मी काफिर हैं। मुसलमानोंने केवल एक इस अज्ञानपूर्ण अभिमानसे कि उनके सिवा और सब जातियां काफिर हैं, ईरान जैसे सुसंस्कृत और उनसे बहुत सुसभ्य देशको तबाह कर दिया। भारत जैसे परम संस्कृत और धर्मप्राण देशको गजनी, गोरी आदिने नष्ट भ्रष्ट कर दिया। हजरत उमरसे जब पूछा गया कि मिस्रके एलक्जेंड्रिया नामक नगरमें जो यूनानियोंद्वारा स्थापित उत्तम ग्रंथोंका एक विशाल पुस्तकालय था उसकी रक्षाकी जाय या उसे नष्ट कर दिया जाय तो उमरने उत्तर दिया कि उसे जलाकर खाक कर दो क्योंकि यदि उसमें कुरानके अनुकूल ग्रंथ हों तो उनकी क्या दरकार है, कुरान तो है ही; और यदि पुस्तकें कुरानकी बातोंका खंडन करती हों तो उन्हें जलाना महान पुण्यका काम है। बस वह अपूर्व और अद्भुत ग्रंथसंग्रहालय स्वाहा कर दिया गया। आज जो महायुद्ध संसारको मृत्युमुखकी ओर ले जा रहा है, वह भी गोरोंके देशाभिमान का फल है। ये तथा इस प्रकारके अन्य विचार मैंने 'मासिक विश्वमित्र' में दिये थे। कुछ वर्णन 'दुखोबोरोस्की' मतवालोंका भी दिया था जो सारे संसारको भाई-बहिनके रूपमें देखते हैं चाहे कोई राजा हो या रंक, ये लोग अहिंसा के सोलह आना पुजारी हैं। इसलिये युद्धके विरुद्ध होनेके कारण उन पर जारशाहीने इतना जुल्म किया। टाल्स्टायके मर्मसे आंसुओं की अविरल धारा बह चली और उस महा मानेने ब्रिटिश सरकारसे प्रार्थना करके उन्हें कनाडामें बसा दिया और यह शर्त करा ली कि 'दुखोबोरों'को अपना मत माननेकी पूरी स्वतंत्रता रहेगी। ये वे लोग हैं तो आर्योंकी भांति नित यह प्रार्थना करते हैं—

सर्वे कुशलिनः संतु सर्वेसंतु निरामयाः ॥
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥

हे परमात्मन्! हमें कुछ मत दे; पर संसारमें सबको सुखी बना और उनका दुख दूर कर। दशरथलालजीका जीवन इन्हीं सिद्धातोंमें ढला हुआ है।

क्या यह कम अचरजकी बात है कि जिस व्यक्तिने व्यापारमें लाखों रुपये कमाये उसने जीवनभरमें बैंकमें रुपया नहीं रखा। जब वे व्यापार करते थे और रंगून तथा कलकत्तेमें उनके बड़े आफिस थे तो वे हर महीने तिजोरीमेंसे उतना रुपया निकालते थे जितना घरके खर्चेके लिए आवश्यक था। रुपया दुखी, दरिद्री, साधु संन्यासी तथा साहित्यिकों और देशभक्तोंकी सेवामें काममें आता था पर किसीको कानोंकान खबर न न लगती थी कि रुपयोंका क्या हुआ? दान देनेका नियम यह कि सबके घर हाथ जोड़के रुपया पहुंचाया कि किसी देशभक्त या साहित्यिकके मनमें या उसके आत्म सम्मानमें लेश भी ठेस न लगे। आज भी उनका वैसा ही व्यवहार सबके साथ है। साहित्यिक उनके घरको सरस्वतीका मंदिर और अपना घर मानने लगता है। क्योंकि विले पार्लेके लिबर्टी लाजका वायुमंडल अभिमानशून्य, ज्ञानमय और मानवताकी स्वस्थ गंधसे महकता है। यहां कवियों और साहित्यिकोंको धनके मदसे मत्त अहंकारी धनियोंके सामने अपना त्याग-तपस्यामय गौरव गंवाना नहीं पड़ता। दशरथलालजी स्वयं ज्ञानी होनेके कारण उनके निवासस्थानमें साहित्यिक कलरवका पूरा आनंद आता है। और यह सब संसारकी दृष्टिसे बाहर एकांतमें होता है। मेरा तो अपना अनुभव है कि साहित्यप्राण दशरथलालजी जिस त्याग और प्रेमसे साहित्यिकोंकी सेवा करते हैं वह अन्यत्र शायद ही कहीं देखनेमें आता हो। इसका कारण यह है कि उनके यहां साहित्यसेवी अपने ही 'समान शील और व्यसनवाले' मित्रका मेहमान है, न कि किसी अरसिक और ज्ञानके शत्रु बड़े आदमी का। लिबर्टी लाजमें जुहूके स्वच्छ, शीतल रसमय सागरकी भांति साहित्य-रसका महासागर उमड़ता रहता है और अपने स्वाभाविक रूपमें आनंदकी बौछार करता है। रविवारको साहित्यिकों का जो मेला वहां लगता है उसका तांता शामतक नहीं टूटता और उस रोज १४–१५ घंटे वहां केवल साहित्यिक तथा अन्य ज्ञान चर्चामें समय बीतता है। यह दृश्य और यह दिनभर अविरल 'काव्य-शास्त्र-विनोद' भारतमें एक अनोखी चीज़ है, उसपर तुर्रा यह कि सम्हित जो साहित्य है, जिसके द्वारा लोककल्याण होता है उसी 'सत्य, शिव, सुंदर' रूप साहित्यकी चर्चा चलती है। उस धर्म की धारा बहती है जो त्याग और तपस्याका पाठ पढ़ाता है और जो राम, कृष्ण, बुद्ध और महावीर की भांति राजाओंको भी आत्म-बलिदानमें महान आनंद देता है। बकौल दशरथलालजीके धनका एक मात्र उद्देश्य यही है कि धनी उसे उस स्थानपर पहुंचा दे जहां लोकहित की दृष्टिसे उसकी अत्यंत आवश्यकता है। आजकल का अधिकांश दान तो जलपूर्ण कुएमें पानी भरने के समान है जिससे लाभके बदले हानि हो रही है। भूखेको भीख मांगने हमारे दरवाजे पर न आना चाहिए; बल्कि हमें उसके पास जाकर उसकी आवश्यकताएं पूरी करनी चाहिए। हम सभ्य लोगोंसे तो वेद्दा आदि जंगली जातियां अधिक धार्मिक हैं जिनके लोग सुबह और शामको भोजन करनेसे पहले नियमित रूपसे यह देख लेते हैं कि पड़ोसमें कोई भूखा तो नहीं रह गया है और दोनों समय जोरसे पुकार कर कहते हैं—"जो भाई या बटोही भूखा हो वह हमारे घरमें भोजन करनेको आ जाय।" भला हम आर्य लोग क्या उनकी तुलनामें सभ्यताका दावा कर सकते हैं? और यह तबतक

(शेष पृष्ठ २४ के कालम १–२ पर)

कौन क्या कहता है ?

राजस्थानमें हमारी सामाजिक दशा

श्री राधाकृष्णजी खेमका अभी रतनगढ़ गये थे। वहां की दशाको देखकर आपने निम्न वक्तव्य प्रकाशनार्थ भेजा हैः—

आज चारों तरफ ही सुधारवाद की आवाज़ आ रही है। जिधर आंखें खोल कर देखें उधरही सामाजिक सुधारका आन्दोलन चल रहा है लेकिन दुःख है कि अभी तक हमारे राजस्थानमें समाजिक सुधार की गति अत्यन्त धीमी है। अभी भी यहाँ की जनता लकीर की फकीर बनी हुई है। न होने योग्य बाल-विवाह, वृद्ध विवाह आदि कुरीतयाँ जनताके ऊपर अपना प्रभाव डाल कर बैठी हुई हैं जिसकी कोई सीमा नहीं लेकिन दुःख होता विशेष कर यहांके मेरे नवयुवक साथियोंके विचार पर। वे लोग क्यों हाथ पर हाथ धरके चुपचाप बैठे हुए हैं। उन्हें मालूम होना चाहिये समाजका भविश्य निर्माण होगा तो उन्हीं लोगोंपर। अगर समय पर वे नही जागेंगे तो समाज की क्या अवस्था होगी। आज प्रत्येक समाजके युवक अपने समाजको उन्नत करनेके लिये इतने आगे बढ़ रहे हैं जिसकी कोई सीमा नहीं। वे अपने २ प्रान्तमें सामाजिक कुरीतियोंका काफी बहिष्कार कर चुके हैं एवं कर रहे हैं, लेकिन हमारे समाजका सुधार जो कुछ भी एक है वह सिर्फ सफेद कपड़ेकी तरह ही हुआ है क्योंकि हमने अन्य प्रान्तोंमें रहकर ही अपना सुधार किया है जिससे अन्य समाजवालोंकी नजरोंमें तो हमारा काफी सुधार हो चुका है लेकिन गौर करके देखा जाय तो हमारा सुधार अभी एकदम नहीं के बराबर हुआ है। जब पेड़की जड़ हरी नहीं होती तो उसके पत्ते कितने दिन तक हरे रह सकते हैं। उसी तरह जब तक हमारे समाजके मूलनिवास स्थानका सुधार न होगा तब तक इस ऊपरी सुधार होनेसे क्या लाभ हो सकता है? हमारी मां बहनोंकी तो जो अवस्था हैं वह तो मैं लिख ही नहीं सकता क्योंकि उनमें सभ्यताकी इतनी कमी है कि वे अपने आपको एकदम भूल गई हैं। जब यहाँ पर कोई भी उत्सव पर हमारी मा बहने गीत गाने बैठती हैं या रास्ता चलते गीत गाती हैं तब उन्हें यह मालूम नहीं होता कि हम क्या कर रही हैं एवं क्या गारही हैं। इतने अश्लील २ गीत वे गाती हैं कि रास्ता चलते सभ्य आदमियोंका मस्तक शर्मसे झुक जाता है, लेकिन उन्हें तो शर्म आती ही नहीं है। फिर ऊपरसे यहाँकी जनताका अधंविश्वास देखिये। उन अश्लील गीतों पर मोहित होकर इतनें प्रसन्न होते हैं कि काफी देर तक बड़े प्रसन्न रहते हैं जिधर देखें उधर यही हाल्त दिखाई पड़ती हैं। मेरे लिखनेका यह मतलब नहीं कि सभी कोई इस प्रकार के सज्जन यहाँ हैं लेकिन ९९ वे फीसदी जनता उसी प्रकारकी है। जनताको एवं हमारी मां बहनोंको उचित रास्तामें जानेके लिये काफी त्याग की आवश्यकता हैं। यह त्याग तो हमारे युवक ही कर सकते हैं। जबतक युवक गण समाजके सुधारका आयोजन नहीं करेंगें तबतक सुधार होना मुश्किल है इसलिये युवकोंको चाहिये कि अब उस नीन्दमें न सोवें जिससे उनका अस्तिव ही नष्ट होता जा रहा है। मैं युवक भाइयोंसे प्रार्थना करता हूँ कि वे जल्दीसे अपना संगठन बनाकर इन कुरीतियोंका बहिष्कार करें बर्ना अन्य समाजोंके सम्मुख हम खडे होने लायक भी न रहेगें एवं हमारे समाजकी क्या अवस्था होगी उसपर भी वे विचार करें। अगर युवक गण खड़े होकर इन बुराइयोंका बहिष्कार करने लगें तो समाजका रुपही बदली हो जायगा। आशा हैं हमारे नवयुवक भाई आजतक अपना जो युवकोंका प्रण भूल गये थे उसे ख्याल करके अपने कार्य व प्रण पर आ रहेगें।

और भी घोर कष्टः डा. रायकी अपील

डा. विधानचन्द्र रायने बंगालकी सहायता के लिये निम्न अपील पत्रोंमें प्रकाशनार्थ भेजी है।

‘ मृत्यु और नाशसे बंगालकी जनता लगातार एक सालसे घोर संघर्ष कर रही है। हाल में झूठा प्रचार किया गया है कि बंगालके कष्टोंका अन्त हो गया है। इसके विपरीत असलियत यह है कि महामारियोंसे बंगाल की दशा खराब हो रही है, और और भी भारी संख्यामें लोग मर रहे हैं। आज मलेरिया और चेचकसे लोग बड़ी भारी संख्यामें मर रहे हैं और दूसरी महामारियाँ भी प्रकट हो रही हैं। धन की अभी भी भारी आवश्यकता है। साथ ही सेवाभावी सज्जनों और औषध की भी जरूरत है। प्रत्येक देशवासीसे हम सहायता देनेकी अपील करते हैं। जनता एक-एक पाई देकर भी हमारी मदद कर सकती है। मानवता की पुकार पर प्रत्येक देशवासीको ध्यान देना चाहिये। छात्रों और युवकोसे भी अपील है कि वे अपनी सेवायें अर्पित करें। वहनें भी नर्सोंका काम कर मानव-सेवाका उपयोग प्राप्त कर सकती हैं। भूखसे न फती और महामारीसे कराहतों के सहायतार्थ जो भी सहायता दी जाये वह मंत्री बंगाल मेडिकल कोआर्डिनेशन कमेटी ८३। ३ए बहू बाजार स्ट्रीट कलकत्ते ’ के पते पर भेजी जाय। ”

रिजर्व बैंक या ब्लैक मार्केट ?

केन्द्रीय धारा सभामें अर्थ बिल पर बहस करते हुए गत २१ मार्चको सर जियाउद्दीनने कहाः—“ अमेरिका और इंग्लैण्डकी ओरसे हिन्दुस्तानमें सोना बेचते हुए रिजर्व बैंक नफाखोरी करता है। वह अन्य मुल्कोंसे— ४२ रु. औंसके हिसाबसे सोना खरीदता है और ७१ रु. औंसके हिसाबसे बेंचता है। यह ब्लैक मार्केटिंगके सिवाय और क्या है ? धारा सभाको इसके लिए रिजर्व बैंकके डाइरेक्टरोंकी खुली निंदा करनी चाहिए। ”

भारतीय एकताके मार्गकी रुकावटें

उस दिन बंबईमें चीनी शुभाकांक्षी दलके एक सदस्यने एसोसियेटेड प्रेसके प्रतिनिधिको वक्तव्य देते हुए कहाः—“ भारतके प्रमुख व्यक्तियोंसे बातें कर मैं इस नतीजेपर पहुंचा हूं कि भारतमें एकता कायम करनेके रास्तेमें तीन रुकावटें हैंः—(१) हिन्दू समाजका जाति भेद (१) एक राष्ट्रभाषाका अभाव और (३) उस कुत्सित भावनाका अस्तित्व जो धर्मको राजनीतिके साथ मिलाती है। ”

‘ सिख पाकिस्तानके खिलाफ हैं ’

गत ३० मार्चकी रातको लाहोरमें एक सार्वजनिक सभामें अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुए पंजाबके मिनिस्टर सर्दार बल्देव सिंहने यह घोषणाकी कि “९९ प्रतिशत सिख पाकिस्तान के सिद्धांतके खिलाफ हैं। यह मुसलमानोंके निर्णयकी बात है कि पाकिस्तान उनके लिए लाभदायक होगा। मैं तो इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि देशका विभाजन न तो देशके हितके लिए और न मुसल्मानोंके हितके लिए अच्छा है। यह शासकोंके लिए भी कोई भली चीज नहीं है। देशकी एकताके लिए सिखोंकी आवाज बुलन्द होगी। एकता ही से आज़ादी हासिल होगी। ”

भारत मंत्रीको चुनौती

बरमिंघमके इंडियन एसोसियेशनके सेक्रेटरी और हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक डा. धनीराम प्रेमने पार्लमेंटके अगले चुनावमें खड़े होनेका निश्चय किया है और वह भारत की समस्याको ही लेकर आन्दोलन करेंगे। रायटर के प्रतिनिधि को वक्तव्य देते हुए उस दिन डा. धनीराम प्रेमने कहाः—मैं चुनावके संबंधमें जो भी भारत मंत्री होगा, उसके विरुद्ध खड़ा हूंगा। यदि वह मि. एमरी ही होंगे तो मैं उन्हींके खिलाफ खड़ा हूंगा। व्यक्तिगत रूपसे मि. एमरीसे मेरा कोई द्वेष या घृणा नही है, किन्तु मैं तो सीधी तरह भारत मंत्रीके पद भंग किये जानेके पक्षमें हूं और इसके लिए उस पद पर आरूढ़ व्यक्ति के खिलाफ ही मैं पार्लमेंटका उम्मेदवार खडा हूंगा, भारत की समस्याके विषयमें लोकमतकी यह एक महान परीक्षा होगी।

सीमांतमें पाकिस्तानकी कब्र

सीमा प्रांतकी धारा सभाके भूतपूर्व उपाध्यक्ष अल्ला नवाज खां एम. एल. ए. ने एक वक्तव्य में कहा : “ सीमा प्रांतमें पाकिस्तान की कब्र बनेगी। सीमा प्रांतके पठान ‘ बांटो और भारत छोडो ’ की जिन्ना साहबकी नयी नीतिको इस्लामके गौरव और परम्पराके विरुद्ध समझते है। बंगालके अभी हालके अकाल और सीमा प्रांत एवं सिंधको केन्द्रसे सदा सहायता मिलने से यह साफ है कि पाकिस्तानकी योजना थोथी है। सीमा प्रांतमें मुस्लिम लीग ने राष्ट्रवादियों के खिलाफ घृणित रूपसे साम्प्रदायिक ख्याल फैलाये हैं। उसे साम्राज्यवादियों ने अपने स्वार्थ साधनके लिए पदों पर बैठा दिया है।

मध्य भारतके बिछुड़े माहेश्वरी बन्धु

मध्य भारतने कुछ समय पूर्व माहेश्वरी महा सभाका वार्षिक आधिवेशन करनेकी जिम्मेदारी ली थी। लश्करमें स्वर्गीय-शारदाकी अध्यक्षतामें प्रारम्भिक कार्य आरम्भ भी हो चुका था। उन्हीं दिनों माननीय ब्रिजलालजी बियाणी ग्वालियर राज्य सार्वजनिक सभाकी ग्वालियर शाखा द्वारा आयोजित “ ग्वालियर जिला राजनैतिक सम्मेलन ” का उद्घाटन करने पधारे थे. एवं उसी समय लश्करकी अस्थायी स्वागत् समितिने अधिवेशनकी चर्चा माननीय बियाणीजीसे की थी। माननीय बियाणीजीने युद्धकालके कारण आधिवेशन स्थगित करनेकी सलाह दी थी। इस कारण अधिवेशनकी चर्चा तो बन्द हो गई, परन्तु इससे एक आवश्यकीय कार्य होते २ रुक गया। जिसकी ओर मैं आज सब बन्धुओंका ध्यान आकर्षित करना आवश्यकीय समझता हूं.

भेलसा स्थित श्री कल्यन्त्री ने मुझसे एवं बासोदा के श्री सोनीजीसे कई वार कहा कि ग्वालियर राज्यके गुना जिलोंके चांचोड़ा आदि ग्रामोंके पास ऐसे बहुतसे माहेश्वरी-बन्धु बसे हुए हैं जिनका इधरके माहेश्वरी बन्धुओंसे कोई सम्बन्ध नहीं है, उनकी सामाजिक दुनियां बहुत छोटी है और उनमेंसे कुछ बन्धु वहां दुनियामें आनेका लश्कर अधिवेशनको सुअवसर समझ रहे थे, परन्तु वह भी अभी दूर की बात हो गई। इस समुदायकी सारी जातीय दुनिया रेल, तार, से दूर बैल गाडियोंके धूल भरे के इस बाहरके घेरेमें स्थित है, जहां महासभा का नाद अभी विस्तृत रुपमें नहीं पहुंच पाया है परन्तु इससे भी अधिक आश्चर्यजनक चर्चा इस सप्ताह इन्दौरमें कचौलिया–सोनी परिवारके संबंधमें अवसर पर सम्माननीय श्री शिवचन्दजी इनानीने जानकार कराया, सिहोरे रेलवे स्टेशनसे कुछ दूरीपर इस तरफ भी एक ऐसा दल माहेश्वरी जगतका है जो आज कलकी चर्चाओंसे दूर, शिक्षाके प्रकाशसे अनभिज्ञ रहकर अपना सीमित संसार बनाकर जीवनभार को ढो रहा है। उन्हें न तो यह पता है कि माहेश्वरी महासभा है, न यह कि इस समाज की प्रगति हो रही है, और न यह भान है कि हम भी प्रगति कर सकते हैं।

इसमें सादियोंसे रहनेवाले उन बन्धुओंकी ज्यादे जिम्मेदारी मुझे उन मित्रोंकी नजर आती है जो महासभाका अधिवेशन मध्य भारतमें बुला चुके है।

इस कर्तव्य पालनमें मैं कई दृष्टियोंसे इन्दौर की जिम्मेदारी ज्यादा अनुभव करता हूं—परन्तु गत् सप्ताह इन्दौरमें जो कुछ अनुभव लिए हैं वे उत्साहवर्धक नहीं हैं। कुछ पुराने मित्र आज श्रीमान हो गए हैं परन्तु देखा गया वे अब आजकी श्री से सौ गुना श्री और प्राप्त करनेकी धुनमें हैं, वे अपने पुराने विचारों और बातोंको भूल गए हैं। सौभाग्य से वे श्रीमान हैं उनके सिर समाज और देशके लिए कुछ कमा कर देनेकी जिम्मेदारी है। अगर वे इस प्रश्नकी गम्भीरताको महसूस कर इस दिशामें प्रयत्नशील हों तो अच्छा हो।

इस कार्यके लिए मेरे सन्मुख एक योजना भी है। अगर कोई बन्धु चाहे तो मैं उसे समाज पर उपस्थित कर सकता हूं। इन बिछुड़े बन्धुओंको महासभाका सन्देश सुनाना एक ऐसा कार्य है, जिसे मध्यभारतीय मित्रोंने प्रारम्भ किया तो मैं कोई कारण ऐसा नहीं पाता कि इस प्रयत्नमें महासभाके प्रमुख सेवकोंका सहयोग हम सहज ही प्राप्त न कर सकें। प्रार्थी

(शेष काल्म ३ पर)

खाचरौद (मध्यभारत) **रामचन्द्र नवाल**

नोट—श्री नवालजीके लेखमें प्रगटकी गयी भावनाका हम स्वागत करते हैं। अच्छा होता यदि नवालजी लेखमें संकेतित योजना लिख भेजते।

—**सम्पादक**

SHIP BRAND FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

हिन्दुस्तान, सीलोन, और विदेशमें लोकप्रिय

खाकी ड्रिल ट्विल
व पगड़ी क्लाथ

★ फास्ट ब्ल्यू ड्रिल ★
व ग्रे ड्रिल

मरसीराइज्ड़ ब्लिच्ड क्रेप
,, ,, पापलीन
,, ,, कोटिंग
,, ,, ड्रिल
,, ,,साटिनड्रिल
,, ,, लौंगक्लाथ
,, स्ट्राइप्ड शर्टिंग

केसमैण्ट क्लाथ विभिन्न पक्के रगोंमें, सफेद व "रंगीन" दोसूती क्लाथ, नीटिंग क्लाथ, टॉवल, नैपकीन वगैरह वगैरह

मकान की आकर्षक
सजावट के लिए
उपयुक्त

जहाज छाप
१०० फी सदी स्वदेशी, उच्च श्रेणी के, मज़बूत, पक्के रंगों के व कीमत में सस्ते।

अपने व्यक्तित्व की छाप बैठाने, मन प्रफुल्लित करने, अपने मित्रों में आदरभाव उत्पन्न कराने व अपने अधिकारियोंके सन्तुष्ट रखने के लिए 'जहाज छाप' कपड़ा बरतिए

हिन्दुस्तानके स्वदेशी उत्पादन क्षेत्र में 'जहाज छाप' कपड़े के प्रवेश होने के पश्चात् अब किसी भी स्वदेशाभिमानी व्यक्ति को विदेशी कपड़ा खरीदना नहीं चाहिए।

★ कॉटन क्रेप ★
सफेद व अन्य ३४ विभिन्न रङ्गों; आकर्षक छपाई व विभिन्न डिज़ाइन में

★ पापलीन ★
सफेद व अन्य २४ विभिन्न पक्के रङ्गों; आकर्षक छपाई व विभिन्न डिज़ाइन में

* सफेद ड्रिल *
* सफेद ट्विल *
* लौंग क़्लाथ *
* साटिन ड्रिल *

★ टेबिल क्लाथ ★
सफेद ६०" व ६८"
शीटींग क्लाथ सफेद
'६०" व ६८"

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons
Head Office — AMRITSAR
Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

विक्रम के नवरत्न

ले. श्री दाऊदत्तजी उपाध्याय

आजसे दो हजार साल पहिले होनेवाले संवत् प्रवर्तक महान् सम्राट् विक्रमादित्य और उनके एक अन्यतम सभारत्न कविसम्राट् कालिदास दोनोंका समय और अस्तित्व एकदम सुस्पष्ट है; किंतु व्यर्थ ही कुछ विद्वानोंने इसे बलात् बाद-वात-ग्रस्त बना दिया है । हम मानते हैं कि हमारा पूरा २ पूर्वेतिहास क्रम बद्ध नहीं मिलता, मध्यकालमें अधिकांश नष्ट हो गया है। और जो मिलता भी है वह आधुनिक अपटूडेट-आंग्लपद्धतिका नहीं है । परंतु इसका यह अर्थ तो कदापि नहीं हो सकता कि हमारा कोई इतिहास ही नहीं । हाँ, हममें जो लोग पाश्चात्य प्रेरणा और प्रभावके मानसिक गुलाम हैं—मेकालेके मानसपुत्र हैं, वे यदि कोई ' पिटर्सन साहब न लिख गये हों तो शायद अपने 'अब्बा'के अस्तित्वसे भी इन्कार कर देंगे । उनकी समझमें हम बंदरोंके वंशज बन ही चुके हैं। यों अपनी तो सभी बातें उन्हें अप्रमाणिक लचर और बेबुनियाद लगती हैं ।

अस्तु, संसारमें मात्र चार ही प्रकट प्रमाण हैं, प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शाब्द । इनमें पहिलेको छोड़कर सभी प्रमाणोंसे विक्रमार्कका काल तथा अस्तित्व भलीभांति सिद्ध होता है । तदर्थ देखिये, विस्तारसे ' भविष्य पुराण,' ' सत्य संहिता, ' शतपथ ब्राह्मण, ' ' ज्योतिर्विदाभरण, ' ' प्रबंध चिंतामणि, आदि अनेक ग्रंथरत्न तथा पुरातत्वके अवतक एकत्रित प्रमाण । यद्यपि विक्रमका विस्तृत विवेचन इस छोटेसे लेखमें संभव नहीं, क्योंकि विक्रमके नवरत्नोंकी चरित चर्चा ही इसका मुख्य कर्तव्य है, फिर भी सूत्ररूपसे सभी बातोंपर यथाशक्य प्रकाश डालनेकी कोशिश की जायगी। प्रथम प्रश्न है कि विक्रम कोई था या नहीं ? यदि था तो—अन्वर्थ या सोपाधिक-क्योंकि उसने संवत् प्रवर्तन भी किया है, अतः जिसकी विराट् विजयका यह महान् स्मारक है । वह द्विसहस्र वर्ष पूर्वका एकही विक्रम हो सकता है। विभिन्न विक्रमोंकी चर्चासे थोथे पांडित्य प्रदर्शनके सिवा लाभ भी क्या है। डा० हेमचंद्र जोशी उक्त संवत् का आरंभ कालमें ' मालव, और ' कृत, अभिधान मानते हैं जो उक्त गण की विजय का परिचायक है और पश्चात् परिवर्तित होकर ' गणपति के पराक्रमका स्मारक वर्तमान ' विक्रम नामधारी बन गया । यों विक्रमका निश्चय हो जानेपर अब हम विक्रमके नवरत्नोंकी कसौटी करेंगे। वैसे तो गणितके नियमोंसे जहाँ अंकवाची शब्द आते हो, वहाँ रत्न, शब्दका अर्थ स्वभावतः १४ ही माना जाता है, क्योंकि सुरासुरोंके समुद्रमंथनसे चतुर्दश रत्न निष्पत्ति की कथा पुराणोंमें प्रसिद्ध है। पर यह जो नवरत्नोंका मुहावरा प्रचलित हुआ, वह ' नवग्रहों, के चिन्होंका वाचक विदित होता है। जो ये हैं, हीरा, पन्ना, मूँगा, (या मोती) मानिक, नीलम, गोमेद, पुखराज आदि- अब हमें यह देखना है कि विक्रमके नवरत्नोंके नामपर खपाकर जिन लोगोंकी निम्नश्लोकमें चर्चा की गई है, वे वस्तुतः विक्रमके समकालीन थे भी या नहीं ? और यदि नहीं, तो फिर यह श्लोक क्षेपक है। वस्तुतः बात सच है, जैसा कि

धन्वंतरि क्षपणकोऽमरसिंह शंकुः
बेताल भट्ट घटकर्पर कालिदासाः ।
जातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां,
रत्नानि वै वररुचि र्नव विक्रमस्य ॥

उक्त श्लोकमें उल्लिखित नव-धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बेताल भट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराह मिहिर और वररुचि । इनमेंसे धन्वंतरि, वररुचि, वराह मिहिर आदि सर्वथा विक्रमकालीन सिद्ध नहीं होते । ये विक्रमसे विशेष प्रत्न हैं । तब या तो विक्रमके दरबारमें कुछ उक्त उपाधिकारी विद्वद्रत्न होने चाहिये । जैसे अभिनव कालिदास आदि प्रशस्ति वचन शेष वास्तविक हैं। या यह श्लोक आंशिक मिथ्या ही हो! जो भी हो कालिदास, घटकर्पर, बेतालादि विक्रमके समसामयिक सप्रमाणसिद्ध हैं। बादमें यह नवरत्नों की परंपरा इतनी बलवती बनी कि दरबारे अकबरी तक में नवरत्न थे । यों तो विक्रमकी राजसभामें अनेक अनुपम सुधी थे, पर ये नव सबसे विशेष थे । अब हम श्लोक क्रमसे उक्त नवरत्नों की संक्षिप्त चरित चर्चा करेंगे ।

१ धन्वंतरि

धन्वंतरि-यह वस्तुतः अमृत कलश कंधेपर रखे सुरासुरों द्वारा समुद्रमंथनोद्भुत ' कामये दुःख तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्, का लोक मंगलकारी दिव्य महामंत्र देनेवाले चतुर्दश रत्नोंमें से एक अन्यतम अवतार रत्न थे । एक अन्यतम उपवेद आयुर्वेदके प्रतिष्ठाता । संभव है विक्रमार्कके दरबारमें उक्त उपाधिधारी कोई पीयूषपाणि भिषग् शिरोमणि रहे हों ।

२ क्षपणक

क्षपणक—यह बौद्ध विद्वानोंके लिये आचार्यार्थ वाची सम्मानार्थक शब्द है । ये क्षपणक लोग बड़े दार्शनिक विद्वान् तांत्रिक और गणितज्ञ होते थे । शंकर दिग्विजय आदिमें उक्त उल्लेख आता है । क्षपणक, स्थविर, महास्थविर, भंदत आदि की सी उपाधि है, व्यक्तिका नाम नहीं । अतः उक्त उपाधिधारी कोई बौद्ध महापंडित राजसभा में रहे होंगे । क्योंकि विक्रमार्कने बौद्धोंसे संघर्ष करके ही आर्य वैदिक संस्कृतिकी पुण्यपताका फहरायी थी । अतः किसी महान् बौद्ध विद्वान्का भी उनकी राजसभा में सन्मान्य स्थान होना अयुक्त नहीं, क्योंकि वे सच्चे गुण पूजक थे, चाहे गुण विरोधीमें भी क्यों न हो ।

३ अमरसिंह

सुप्रसिद्ध नामलिंगानुशासन अमर कोषकार श्रीअमरसिंह एक जैन विद्वान् थे । वैसे संस्कृत साहित्यमें अनेक प्रकारके कोष हैं, किंतु उन सबमें अमर कोष सर्वाधिक प्रासादिक ग्रंथ है । जैसा कि किंवदंति से सिद्ध है ' अष्टाध्यायी जगन्मातामरकोषो जगत्पिता, महामनीषी अमर सिंह केवल कोशकार ही नहीं चोटीके वैयाकरण भी थे । जैसा कि उनके बारेमें उल्लेखोंसे व्यक्त होता है ।

जैसे–"इंद्रश्चंद्रः काशकृत्स्न पिशली शाकटायनः
पाणिन्यमरजैनेंद्राजयन्त्यष्टौच शाब्दिकाः,

इस श्लोकमें अमरसिंह का तत्कालीन आठ प्रमुख शाब्दिकोंमें अन्यतम स्थान है। पर आज जैन और पाणिनि व्याकरणको छोड़कर अन्य व्याकरण नामोल्लेखके सिवा पूरे मिलते नहीं । यथा—

' अमरसिंहोहि पापीयान् सर्वं भाष्यमचूचुरत्,

इस श्लोकार्धसे भी अमरसिंहकी शाब्दिकता भली प्रकार सिद्ध है । पर आज उनका उल्लेख मात्रके अलावा कोई व्याकरण ग्रंथ उपलब्ध नहीं, हाँ कोष अवश्य विद्यमान है । कोषका भी शब्दशास्त्रमें कोई कम महत्व नहीं। यथा–

' शक्तिग्रहं व्याकरणोपमान कोशाप्तवाक्याद् व्यवहारतश्च, वाक्यस्य शेषाद्विवृतेर्वदंति सांनिध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः । यों शब्दशक्ति की आप्तार्थ प्राप्ति में कोश एक अनन्य घटक है । ' अमरकोश की आठ टीकायें आज उपलब्ध हैं, कोई २ इन्हें बौद्ध भी मानते हैं ।

४ शंकुक भट्ट

शंकु एक अत्युत्कट गणक (ज्योतिर्विद्) थे, आयुर्वेदादि अन्यशास्त्रोंमें इनकी अच्छी गति थी, फुटकर उल्लेखोंके अलावा इनका कोई ग्रंथ नहीं मिलता, कहीं २ इनका नाम शंकुक भट्ट पाया जाता है ।

५ बेताल भट्ट

महा मनीषी बेताल भट्ट विक्रमार्कके महामंत्री थे । ये बडे तांत्रिक नीतिनिपुण विचक्षण थे । तन्त्रशास्त्र के और माहेश्वर तन्त्र नामक विभागमें उनका 'रुद्रयामल' नामक ग्रंथ पाया जाता है । भाषा में भी अकबर बीरबल विनोद की भाँति उनकी बेताल पच्चीसी, सिंहासन बत्तीसी, आदि प्रचुर प्रचलित हैं । किंवदंतियाँ तो उनके नाम पर बहुत सी विख्यात हैं। विक्रमार्कके उदय में बेताल भी एक शक्ति थे ।

६ घटकर्पर

घटकर्पर कवि कालिदासकी कथामें आनेवाले वे कुंभकार हैं जिनने चाक पर घड़े बनाते २ उनपर काव्य लिखा था । जो अब मात्र ३६ श्लोकका प्राप्त है । ' घटकर्पर ' नामक एक संस्कृत काव्य भी प्रसिद्ध है । इस प्रकार इस विद्वान्ने कुछ दर्शन ग्रंथ भी लिखे थे, पर अब उनका कोई पता नहीं। बादमें धीरे २ प्रतिद्वंद्वी कालिदासके बताये उपायसे इनकी पत्नी द्वारा उन्हें बासी भोजन करानेसे इनकी बुद्धि कुछ मंद होगई और कालिदाससे श्रेष्ठ न बन सके ।

७ कालिदास

प्रबल पराक्रमी सम्राट् विक्रमार्क की भाँति, भगवती वीणापाणि के विलास कविकुलगुरु कालिदास भी महर्षि बाल्मीकि और व्यासके बाद आर्यावर्तके जातीय चक्रवर्ती कविसम्राट् थे। कुछ लोग कालिदासका संबंध भोजसे जोड़ते हैं, यह ठीक नहीं । वस्तुतः कालिदास विक्रमार्कके नवरत्नोंके ही शिरोमणि थे । उनकी जीवनी की एक किंवदंति है कि आरंभ में कालिदास एकदम अपढ़ थे, तब अपनेसे वादविजयीको वरण करनेको प्रतिज्ञात राजसुता विद्योत्तमासे विवादमें पराजित पंडित गण—जिस डाल पर बैठे थे । उसीको काटनेवाले इन बुद्धू महोदयको बनसे पकड़ लाये । बादमें इन मौनी महात्माको इंगितद्वारा वादमें विजयी बना विद्वानोंने विद्योत्तमा के गले मढ़ दिया । तभी महल में यकायक आसपास कहीं ऊंट के बोलने तथा राजकुमारी के पूछने पर उष्ट्र शब्दका तीन बार विभिन्न रूपसे गलत उच्चारण करने पर विद्योतमाने मारे क्षोभके इन्हें खिडकीमेंसे नीचे फेंक दिया, वहाँ दीवालके सहारे ही कालीजीकी मूर्ति थी। उनके त्रिशूल पर इनके गिरनेसे कालीजी पर जो रक्तके छींटे पड़े, सुनते हैं उनसे वे प्रसन्न हो गयीं और बेसुध कालिदासको सुधि में ला उन्होंने अगाध विद्याका वरदान दिया और १ गिलास दूध पीनेको दिया तथा कहा इसे पीकर अनायास तू चतुर्दश विद्याओंमें पारंगत हो जायगा । तब वरदान वश विवेकलाभ कर कालिदास दुग्धपानके पूर्व स्नान करने चले। मार्गमें एक कुंभार के घर दूधका गिलास यह कहकर संभाल कर रख दिया, मैं आकर ले लूंगा । इसमें जहर है, इसे कोई छुए नहीं। इस बीच कुंभार और उसकी कांतामें कलह हुआ । तब कुंभकार क्रोधमें बिना जाने उस जहरको चढ़ा गया और अगढ़धत्त विद्वान् बन गया तब बेचारी कुँभारिन तो उसकी बड़बड़को विक्षिप्तकी जल्पना समझने लगी । इतनेमें वहाँ कालिदास आये और सारा राज समझ झटपट गिलास ढूंढ़ उसे पानीसे धोकर अवशेष को पीगये । तो भी इतने विद्वान् हुए। यदि दूध पीते तो जाने क्या होता । अब कालिदासको बुधाधिराज कुंभकार की चिंता हुई, इसके रहते मैं यशस्वी न हो सकूँगा। तब उन्होंने उसकी पत्नीको धीरे २ अनाचरण अशुद्धि और मिथ्या आहार विहार द्वारा उसका पागलपन सुधारनेका नुसखा बताया । वही कुंभकार ' घटकर्पर ' के नामसे विख्यात हुआ । तथा घट निर्माण करते २ घटों पर ही उसने श्लोक लिखे । यों ज्ञान लाभ कर कालिदास घर लौटे तो उनकी पत्नीने ' अस्ति कश्चित् वाग् विशेषः, वाक्य कहा । जिसके प्रत्येक वाक्यको प्रथम रखकर कालिदासने दो महाकाव्य और एक खंड काव्य लिखा। ' अस्ति ' से ' कुमारसंभव ' ' कश्चित् से ' मेघदूत, 'वाग्' से रघुवंशका, प्रारंभ हुआ है। यों तो कालिदास के बारेमें अनगिनत किंवदंतियाँ हैं, किंतु विद्योत्तमावाली उन सबमें प्रबल है । ' भोजप्रबंध, को तो हम सर्वथा अकबर बीरबल की बातों का सा कपोलकल्पित किस्सा मानते हैं पर कालिदास विक्रमार्कके कीर्तिकलश सखा थे । इनके लिखे रघुवंश, कुमारसंभव (महाकाव्य), मेघदूत, ऋतुसंहार (खंडकाव्य), मालविकाग्नि मित्र, अभिज्ञान शाकुंतल, विक्रमोर्वशी, तीन नाटक मिलते हैं। शाकुंतल इनकी सर्वश्रेष्ठ रचना मानी जाती है। कोई २ ऋतुसंहार, तथा विक्रमोर्वशीको इनकी रचना नहीं मानते। जैसे—काव्येषु नाटकं रम्यं,

[शेष पृष्ठ २४ के कालम २ पर]

डाक्टरोंका ब्रह्मास्त्र–पेन्सिलिन

★

लेखक श्रीभगवतीप्रसादजी श्रीवास्तव

माता कस्तूर बा गान्धीके निधनके कुछ ही घण्टों पूर्व बम्बईकी गवर्नमेण्टने कलकत्तासे वायुयान द्वारा उनके लिए पेन्सिलिन मँगायी थी; किन्तु महात्मा गान्धीकी अनुमति न मिलनेके कारण माता कस्तूर बाको पेन्सिलिन न दी जा सकी। सम्भवतः जिस समय पेन्सिलिन वहाँ पहुँची माता कस्तूर बा जिन्दगीकी आखिरी मञ्जिलपर पहुँच चुकी थीं। फिर भी इस छोटी-सी घटनाने पेन्सिलिनके प्रति भारतमें भी लोगोंके मनमें उत्सुकता पैदा कर दी है।

सबसे महत्त्वपूर्ण खोज

आधुनिक चिकित्साशास्त्रकी यह सबसे महत्त्वपूर्ण खोज है। न्यूमोनिया, रक्तविष और भयङ्कर व्रणके लिए तो पेन्सिलिन शतप्रतिशत सफल सावित हुई है। पेन्सिलिनकी खोज अकस्मात् १९२९ में लन्दन यूनिवर्सिटीके डाक्टर एलेक्जण्डरने अपने अन्य क्षेत्रके प्रयोगोंके सिलसिलेमें की थी। फफूँद (मोल्ड) लगे हुए काँचके प्लेटकी अनुवीक्षणयन्त्र द्वारा डाक्टर एलेक्जण्डर परीक्षा कर रहे थे कि अचानक उन्होंने देखा कि हरे फफूँदके चारों ओरकी ई कटकर स्वच्छ तरल पदार्थ बन गयो है। तत उन्होंने सोचा इस हरे फफूँदमें कोई ऐसा शाली पदार्थ मौजूद है जो कीटाणुओंका नष्ट करनेमें भलीभाँति समर्थ है।

फफूँद वास्तवमें एक निम्नकोटिका जीव है — वनस्पति-जगतका एक क्षुद्रतम प्राणी उपर्युक्त प्रयोगमें हरे फफूँदसे कुछ इस ढङ्गकी चीज उत्पन्न हुई है जिसमें कीटाणुओंको नष्ट करनेकी अद्भुत शक्ति मौजूद है।

डा० एलेक्जण्डरने यद्यपि पेन्सिलिनकी खोज १९२९ में की थी, किन्तु इस क्षेत्रमें दस ग्यारह वर्षतक विशेष अनुन्धान नहीं हो सके— सम्भवतः इसका कारण यह है कि औषध विज्ञान इस क्षेत्रके प्रति उदासीन था, क्योंकि रोगके कीटाणुओंको नष्ट करनेके निमित्त इसके पहले भी अनेक रासायनिक द्रव ढूँढ़ निकाले गये थे, किन्तु उनमें सबसे बड़ा दोष यह था कि वे रोगके कीटाणुओंको नष्ट करनेके साथ-साथ स्वयं रोगीको भी प्रायः भारी क्षति पहुँचाते थे।

युद्धक्षेत्रमें आग्नेय बमसे आहत सैनिकोंके घाव शीघ्र ही विषाक्त हो जाते हैं और यदि समुचित औषध-उपचार शीघ्र ही न किया गया तो वे या तो जीवन भरके लिए लँगड़े-लूले बन जाते हैं या मृत्युके शिकार होते हैं। घायल सैनिकोंकी रक्षाके उद्योगमें पुनः जोरोंके साथ अनुसन्धान किया जाने लगा कि कोई ऐसा साधन ढूँढ़ निकाल जाय जिससे घायल सैनिकों के घाव विषाक्त न होने पायें–एक बार फिर पेन्सिलिनकी ओर डाक्टरोंका ध्यान आकृष्ट हुआ।

कैसे प्राप्त होती है ?

पेन्सिलिन तैयार करनेमें काफी देर लगती है। दूधवाली बोतलोंमें हरे फफूँदको रखकर उसमें अन्य रासायनिक द्रवोंकी गाज डालते हैं। इस गाजमेंसे अपने पोषणके लिए हरा फफूँद खाद्य पदार्थ प्राप्त करके धीरे-धीरे बढ़ता है। पूरे दस दिनोंतक ये बोतलें एक ऐसे कमरेमें रखी रहती हैं जिसका तापक्रम पूरे दौरानमें एक-सा जाता है। १० दिन बाद रासायनिक द्रवकी सतहपर एक मोटी तह हरे (भूरापन लिये हुए) रङ्गके फफूँदकी बन जाती है। इस फफूँदसे एक लम्बी रीति द्वारा पेन्सिलिनका पीला द्रव निकाला जाता है। ढेरसे फफूँदमेंसे बहुत थोड़ी सी पेन्सिलिन प्राप्त हो सकती है। इसी कारण वर्तमान समयमें पेन्सिलिन बहुत थोड़ी ही मात्रामें तैयार हो पाती है, फल-स्वरूप इसका मूल्य भी बहुत ऊँचा है—लगभग १४०० रुपये प्रति तोला !

मानव रोगियोंपर पेन्सिलिन आजमानेके पूर्व डाक्टरोंने चूहोंपर इसका प्रयोग यह देखनेके लिए किया कि इसका प्रभाव चूहोंके लिए अनिष्टकारी तो नहीं होता। प्रयोगका फल सन्तोषजनक निकलनेके वाद ही पेन्सिलिनका प्रयोग सैनिकोंके लिए किया गया। १९४१ में अमेरिकाके सुप्रसिद्ध डाक्टर फ्लोरेने पेन्सिलिनका इस्तेमाल मानव रोगियोंके लिए सबसे पहले किया। उन्होंने ऐसे रोगियोंको चुना जिनके लिए डाक्टरोंने जवाब दे दिया था। इनमेंसे एकके सारे शरीरमें रक्तविष फैल चुका था, दूसरा गर्दनतोड़ बुखारकी जकड़में अपनी अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा था। पीले रङ्गकी वह अद्भुत औषध पेन्सिलिन पानीमें घोली गयी और सूई द्वारा उनकी रक्त-वाहिनी शिराओंमें प्रवेश करायी गयी, तत्काल ही वे जीवन-पथपर अग्रसर होने लग गये। मानो पेन्सिलिनने उन्हें जबर्दस्ती कालके मुखसे खींच लिया हो।

जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं पेन्सिलिनके बनानेमें अनेक झंझटोंका सामना करना पड़ता है, फिर भी अत्यन्त अल्प मात्रामें ही पेन्सिनिन बन पाती है। एक बोतलमें जितनी पेन्सिलिन तैयार होती है उसका सौ गुना रोगीके लिए एक बार में देने के लिए चाहिये। कभी-कभी तो चिकित्साके दौरानमें पेन्सिलिनकी कमीके कारण सङ्कट आ उपस्थित होता है। डा० फ्लोरे एक रोगीकी चिकित्सा पेन्सिलिन द्वारा कर रहे थे। चिकित्सा अभी समाप्त न हो पायी थी कि पेन्सिलिनका स्टाक चुक गया। रोगी तेजीके साथ स्वास्थ्य-लाभ कर रहा था, किन्तु पेन्सिलिनकी मात्रा अधूरी रह जानेके कारण उसकी हालत फिर बिगड़ गयी और उसे कोई शक्ति मौतके मुखमें जानेसे बचा न सकी।

अमेरिकाका प्रयत्न

अन्तमें डाक्टर फ्लोरेने अपनी मुश्किल अमेरिकाके वैज्ञानिक रिसर्च विभागके सामने रखी। उक्त रिसर्च विभागने अमेरिकन राष्ट्रकी विभिन्न शक्तियोंको इस मुश्किलको हल करनेमें लगाया। फलस्वरूप अमेरिकाकी रासायनिक द्रव तैयार करनेवाली कई फैक्टरियोंको पेन्सिलिन तैयार करनेका काम सुपुर्द किया गया है। खमीर बनानेवाली फैक्टरी, शराब बनानेवाले फर्म आदिका भी सहयोग इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए प्राप्त किया जा रहा है। इतनेपर भी जितनी पेन्सिलिन तैयार हो सकती है, वह युद्ध-सम्बद्ध अस्पतालोंकी ही जरूरत पूरी करनेके लिए काफी नहीं पड़ती। इसी कारण साधारण नागरिकोंके लिए अभी पेन्सिलिन लभ्य नहीं हो पा रही है। आशा की जाती है कि युद्ध समाप्त होते ही प्रचुर मात्रामें साधारण जनताके लिए भी पेन्सिलिन लभ्य हो सकेगी क्योंकि रासायनिक अपनी प्रयोगशालामें इस आश्चर्योत्पादक पेन्सिलिनका विश्लेषण मनोयोगपूर्वक इस आशासे कर रहे हैं कि यदि वे इस बातका पता लगा सकें कि पेन्सिलिनमें कौन-कौनसे मूल तत्त्व किस अनुपातमें मिले हुए मौजूद हैं तो सम्भवतः प्रयोगशालामें ही वे कृत्रिम रूपसे इन मूलतत्त्वोंका परस्पर रासायनिक संयोग करा. कर प्रचुर मात्रामें पेन्सिलिन तैयार कर सकेंगे। तब पेन्सिलिनकी तैयारीमें व्यर्थकी देर न हुआ करेगी।

अमेरिकाके कुछ समाचारपत्रोंने पेन्सिलिनकी प्रशंसामें अतिशयोक्तिसे भी काम लिया है फलस्वरूप जनताके अन्दर यह गलत धारणा पैठ गयी है कि पेन्सिलिन हर किस्मके रोगोंमें काम आ सकती है। ऐसे रोगोंमें जहाँ बैक्टीरियाका आक्रमण हृदयपर होता है, पेन्सिलिनका प्रयोग सफल नहीं हो सकता; राजयक्ष्मामें भी पेन्सिलिन बेकार साबित होती है। मोतीझरा, ज्वर तथा सूजाक आदि बीमारियोंमें भी अभी पेन्सिलिन भलीभाँति आजमायी नहीं जा सकी है। विषाक्त गैससे आहत सैनिकोंके प्राण बचानेमें पेन्सिलिन ने आशातीत सफलता अवश्य प्राप्त की है।

पेन्सिलिनका उत्पादन

●

• लेखक—श्री परमेश्वरीलालजी गुप्त •

कुछ दिन हुए एक प्रश्नका उत्तर देते हुए श्री एमरीने बताया था कि बङ्गालके दुर्भिक्ष-पीड़ित क्षेत्रोंमें पेन्सिलिनका उपयोग मलेरियाके निवारणके लिए किया जा रहा है। उस समय सम्भवतः जनसाधारणका ध्यान इस दवाकी विशेषताकी ओर उतना आकृष्ट नहीं हुआ जितना उस समय जब हमें माता कस्तूरबा-की मृत्युका समाचार आनेसे एक दिन पूर्व बताया गया कि वह कलकत्तासे पूना विमान द्वारा पहुँचायी जा रही है। दवा यथा-समय पहुँच भी गयी, पर महात्मा गांधीके आग्रहके कारण हम उसका गुण न देख सके; पर स्वभावतः उसके प्रति हमारी जिज्ञासा बढ़ती गयी।

यह दवा अभीतक सर्वसाधारणके लिए दुर्लभ है और वे उसके गुणसे अपरिचित हैं। यह बहुत ही सीमित मात्रामें तैयार की जा सकी है और इसका उपयोग अभी युद्ध-क्षेत्रमें केवल घायलोंके लिए किया जा रहा है। अबतक इसके सम्बन्धमें जो विवरण प्राप्त हुए हैं उनके अनुसार यह घाव भरनेकी अचूक दवा है।

घायलोंपर प्रयोग

मध्यपूर्वके युद्धक्षेत्रमें तीन मासतक घायलोंपर दवाका प्रयोग किया गया। उससे निकले परिणामका जो विवरण श्री एच. डब्ल्यू. फ्लोरे. और ब्रिगेडियर ह्यूकायर्नसने ब्रिटिश मेडिकल रिसर्च कौंसिल तथा युद्ध-विभागके पास भेजा है वह अभी हालमें ही लैंसेट नामक चिकित्सा-पत्रमें प्रकाशित हुआ है। उसके अनुसार उस अवधिमें युद्ध-क्षेत्रमें घायल हुए ३०० व्यक्ति अच्छे किये गये। शरीरके मांसल भागके घावों-में, जो पुराने तरीकोंसे नहीं भरे जा सकते थे, टाँकनेके बाद ट्यूब द्वारा पेन्सिलिन पहुँचायी गयी। अधिकांश घाव विषाक्त हो गये थे पर इस दवाके प्रयोगके तीन सप्ताह बाद १७१ घावोंमें १०५ तेजीसे भरकर सूख गये; ६० तेजीसे भर रहे थे; केवल ६ पर प्रयोग असफल रहा। इस असफलताका कारण टाँका लगानेकी गल्ती बतायी गयी है। इस प्रकार इसका प्रयोग शत प्रतिशत सफल रहा इसके आविष्कारसे घावोंके विषाक्त होनेकी सम्भावना बिल्कुल जाती रही है। सैनिक क्षेत्रमें इसकी उपयोगिता प्रकट होनेके कारण इसे अधिक मात्रामें तैयार करनेकी ओर वैज्ञानिक सचेष्ट हो गये हैं। अभी एक रिपोर्टमें बताया गया है कि जहाँ अमेरिकामें एक वर्ष पूर्व केवल ३०-४० मरीजोंके उपयोगके लिए पेन्सिलिन रोज तैयार होती थी वहाँ अब कमसे कम ७००० मरीजोंके लिए यह तैयार होने लगी है। इसके उत्पादनमें इस समय अमेरिकाके १९ और कनाडाके २ बड़े-बड़े कारखाने लगे हुए हैं।

नये आविष्कार

पेन्सिलिन तैयार करनेकी भिन्न भिन्न पद्धतियों का लोगोंने आविष्कार किया है, और विभिन्न कारखाने अपनी- अपनी पद्धतिके अनुसार इसे तैयार करते हैं। अमेरिकाकी युद्ध सम्बन्धी उत्पादनसमितिने अभी सभी कारखानेवालोंको वाशिङ्गटनमें एकत्र किया था ताकि वे आपसमें सहयोग कर एक दूसरेकी पद्धतिसे लाभ उठा पेन्सिलिनका उत्पादन और अधिक मात्रामें शीघ्रतासे कर सकें।

अभीतक ¾ आउन्स पेन्सिलिन तैयार करनेमें २५ गैलनसे अधिक 'द्रव' व्यय होता और तैयार होनेमें काफी समय लगता था जिसके कारण उसका सरलतासे तैयार सम्भव नहीं समझा जाता था। किन्तु अभी हालमें हवाई द्वीपके ईख उत्पादक-सङ्घकी अनुसन्धान-शालाके डाक्टर सी. डब्ल्यू. कारपेण्टरने इस सम्बन्धमें एक महत्वपूर्ण आविष्कार किया है। स्टार्च आदि बनानेके लिए अनाज पानीमें भिगोया जाता है। भिगोनेके बाद बेकार पानी नष्ट कर दिया जाता था। पर इस आविष्कारकका कहना है कि इस घोवनमें फफूँद तेजीके साथ बढ़ते हैं और उनसे अधिक मात्रामें पेन्सिलिन तैयार हो सकता है। आशा की जाती है कि इस आविष्कारके कारण अब पेन्सिलिन अधिक मात्रामें तैयार होने लगेगी।

बङ्गलोर रिसर्च इन्स्टीट्यूट के दो युवक वैज्ञानिकों ने भी पेन्सिलिन तैयार करनेकी पद्धतिका आविष्कार किया है। उनका दावा है कि जितने समयमें इङ्गलैण्ड अथवा अमेरिकामें पेन्सिलिन तैयार होती है उसके चौथाई समयमें ही वे उसे तैयार कर सकते हैं।

हमारा अज्ञान ही हमारा शत्रु है

जो मनुष्य जन्म लेता है वह अवश्य मरता है यह हम देखते चले आये हैं। मनुष्यकी आत्मा अमर है, मनुष्यका शरीर ही नश्वर है जब हम यह जानते हैं, तो हमें कई बार विचार आता है कि नाशवंत शरीरके लिये हम किसी भी प्रकार की चिन्ता क्यों करें।

मनुष्यका धर्म यह सिखाता है कि मनुष्य को अपने जीवनको सार्थक बनानेने लिये उसके अनुकूल प्राकृतिक नियमोंका पालन करते हुए जीवन सुखी और निरोगी बनाना चाहिए इसी लिये मनुष्यका शरीर नश्वर होते हुए भी उसको योग्य प्रकारसे बनाना हमारा धर्म हो जाता है।

(ले. सुमित्रा देवीजी बागड़ी)

क्या मनुष्यका जीवन ऐसा है कि मनुष्य चाहे जिस रीतिसे उसे चला सकता है? आजकल हमारी जातिकी बहिनोंकी अवस्था और उनका जीवन प्राकृतिक नियमों पर नहीं चलता वरन् साधु, सन्त, और झूठे पंडितोंके ऊपर चलता है। यही कारण है कि हम भाग्य पर अपना जीवन छोड़कर अपने आप जीवनको छोटा बना देते हैं।

यदि हमारे घरमें कोई भयंकर बीमारी आवे, हमारे घर अल्प आयुमें किसीकी मृत्यु हो जावे या धनका अभाव हो तो हम तुरन्त ज्योतिषीके पास दौड़े जाते हैं और उसे ही अपना सर्वेसर्वा मानकर हम अपने भेद और दुख उसके सामने रख देते हैं मानो वही हमारा परमात्मा और तारनहार है। वह दो पैसे कमानेके लालचसे कई भयंकर बातें बता, भूत प्रेतोंको बुला पूरा ढोंग रचता है। हम भी दुखके मारे हुए उसपर विश्वास कर अपने आपको भूल जाते हैं और उसकी बनावटी बातों में फँस जाते हैं। हमने क्षण भर भी यह विचार नही किया कि हमारे घरकी आपत्तिका कारण क्या था। ऐसे उदाहरण प्रतिदिन हमारे घरोंमें दिखाई देते हैं। यदि एक बालक को माता निकलती है तो हम यह विचार नही करेंगे कि बचपनमें बालको माता गुदवाई थी या नहीं और अब बीमारी होने पर हम उस बीमारीके अनुकूल सेवा तथा पथ्य आदि करा रहे हैं या नहीं। हम उस बालकको बिलखता छोड़कर माता पूजने चले जाते हैं और इसीमें हमारा सारा कर्तव्य होगया यह मानने लगते हैं। दैवयोगसे बालक ठीक होगया तो बालकको लेकर माताके दर्शन और भेट पूजा कर आते हैं और यदि बालक ठीक न हुआ तो ब्राह्मण की दक्षिणा और भेट पूजामें कुछ कमी रही होगी ऐसी ब्राह्मणों की बातों पर विचार कर सारी उमर रोते हैं। क्या यह भयंकर अज्ञान नहीं है?

मुझे अच्छी तरह स्मरण है कि जब मैं छोटी थी तब अनेक बातें सुनी थीं जिनपर आज विचार करनेसे यही प्रतीत होता है कि वह सब हमारे समाजमें अज्ञानके कारण ही है। क्या किसी मनुष्यने कभी सुना है कि मनुष्यको सन्तान ब्राह्मणोके मंत्रके द्वारा, साधुओंके जप द्वारा, पीरोंकी कंठियों द्वारा या देवी देवताओंको भोग चढ़ाने द्वारा प्राप्त हुए हैं? यदि ऐसा ही होता तो संसारके आधे दुख कम हो जाते।

कई बहिनोंको देखा है कि सन्तान की इच्छा रखनेवाली अपनी प्राकृतिक अवस्था या शारीरिक गुण दोषोंको न देखते हुवे अज्ञान वश कई ऐसी बातेंकर डालती हैं जिनसें न उन्हें ही लाभ पहुंचता है न दूसरोंको ही। कई बहिनोंको दूसरोके पले काटते, बच्चोंके कपड़ोंकी राख खाते और भी अन्य ऐसे प्रयोग करते देखी गई हैं। इन बातोंसे भी आज तक किसीको सन्तान प्राप्त हुई हो ऐसा देखा नहीं गया। प्राकृतिक जीवनके साथ इन बातोंका संबंध जोड़ना महान अज्ञान है।

हमारे शादी व्याहोंमें भी अनेक ऐसी कुरीतियाँ अज्ञानके कारण घुसी हुई हैं कि उनके द्वारा कई प्रकारके दुख हम अपने ऊपर ले लेते हैं। हमारे समाजमें जहाँ ब्राह्मण लोग सन्तुष्ट रहें वहा हमारे कार्य सफल होंगे.ऐसी भावना हमारे दिलोंमें बनी रहती है। यदि ब्राह्मणोंको हम पूरी दक्षिणा नहीं दे सके तो अनेक ग्रह हमारे अतृप्त रहेंगे और वह शुभ दिन ब्राह्मणों द्वारा लाया ही न जावेगा जिस दिन हम शुभ कर्म कर सकें–ब्राह्मण की तृप्तिके पश्चात ही वह शुभ घड़ी कितने भी ग्रह खराब होनेपर भी आ जावेगी। घरोंके घर ऐसी दशासे नष्ट हो चुके हैं। ब्राह्मणोंकी भक्तिके आगे हम अपने किये हुए कर्मोंको भी भूल जाते हैं।

मृत्युके पश्चात यद्यपि घरमें एक बड़ी भारी हानि होती है, फिर भी हमारे हिन्दू समाजमें तो मनुष्यको ऐसी हानि पर विचार करनेका कोई अवकाश ही नही रहता। उसे तो इसी समय जो दूसरी हानि सहन करनी पड़ती है वह जन्म भर जीते जी भी मृत्युके समान होती है। एक तरफ तो घरमें लाश पड़ी होती है, मरनेवालेके पीछे कई डाक्टर वैद्य ब्राह्मण साधु सन्तोंके पीछे अनेक रुपयों खर्च हो चुके होते हैं दूसरी तरफ मरनेके पश्चात ब्राह्मणोंकी दक्षिणा जाति भोज पंचोंको खुश रखना तथा लेन देन आरंभ हो जाता है। घरमें ऐसे समयमें कितने भी धनकी कमी क्यों न हो फिर भी मृतक देहको स्वर्ग पहुँचानेके लिये कर्जा लेकर भी इन जीते जागते देवोंको सन्तुष्ट करना पड़ता है इस प्रकार मनुष्य की कमी तो अनुभव होती ही है पर उसे साथ ही जीते जी मृत्युके समान जीवन भर दुख सहन करना पड़ता है। यदि मरनेके पश्चात श्राद्ध करनेसे ब्राह्मणोंको खिलानेसे स्वर्ग प्राप्त होता हो या मृतक शरीरको भोजन मिलता हो तो आज अनेक पाप कृत्य करनेवाले व्यक्ति अपने कर्मों पर विचार ही न करें।

इस दशाको हम अज्ञानके कारण पहुँचे हैं। यदि हमें इन रूढ़ियोंसे बचना है तो हमें अपने अज्ञानको दूर करना होगा। इस अज्ञानने ही नारी जातिको पिछड़ा दिया है। इसीके कारण आज अनेक गृहस्थ जीवन दुखी बने हुए हैं। असंख्य बालक अकाल ही मृत्यु प्राप्त करते हैं।

महिला-मण्डल उदयपुर

साक्षरता आन्दोलन का

चतुर्थ वर्ष

‘निरक्षरता देशका महान् कलङ्क है’

–महात्मा गांधी

माननीय बन्धुओ और बहिनो,

हमारा प्रान्त स्त्री-शिक्षाके मानेमें बहुत पिछड़ा हुआ है और यह निर्विवाद सत्य है कि जब तक हम सब मिल कर अशिक्षा की कालिमा दूर करनेका संगठित प्रयत्न नहीं करेंगे तब तक मातायें आगे नहीं बढ़ सकेंगी और जब तक मातायें शिक्षिता नहीं होंगी, देश आगे नहीं बढ़ सकता। अस्तु महिला-मण्डल की शिक्षा-समितिने प्रौढ़ बहिनोंके शिक्षणके लिये अलग-अलग मोहल्लोंमें १० पाठशालायें स्थापित कीं और बड़ा केन्द्रीय पुस्तकालय और वाचनालय तथा गश्ती-पुस्तकालय आरम्भ किया। किन्तु साथ ही व्यापक शिक्षा प्रसार की दृष्टिसे गर्मी की छुट्टियोंमें कन्या-पाठशालाओं की अध्यापिकाओं और विद्यार्थिनियोंके सहयोगसे १९४१ से ही साक्षरता आन्दोलन की एक पंच वर्षीय योजना आरम्भ की जिसमें पांच-पांच अपढ़ बहिनोंको साक्षर बना कर अपने समयका सदुपयोग किया। इस प्रकार गत तीन वर्षोंमें ३००० अपढ़ बहिनोंको लिखना पढ़ना सिखाया।

इस मंगलमय और पुण्य कार्यका आज चतुर्थ वर्ष है। स्वयंसेविका बना कर उनसे पांच-पांच अपढ़ बहिनोंको पढ़ा देनेके प्रतिज्ञा-पत्र भरवाये जा रहे हैं। किन्तु यह कार्य इतना महान् और व्यापक है कि राजा-प्रजा, स्त्री-पुरुष, अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, किसान-मजदूर इत्यादि सारे समाजका सहयोग आवश्यक है और महिला-मण्डलकी कार्यकर्त्रियां सब बहिनोंके पास शायद नहीं पहुँच पावें अतः जो बहिनें पढ़ी लिखी हैं, जिन्हें अपनी महिला-जातिको उन्नत बनानेकी चिन्ता है और जो बहिनें अपने ऋणसे उऋण होना चाहती हैं उनसे हमारी नम्र प्रार्थना है कि १५ मई से अन्तिम जून तक हर रोज आधा घण्टा अपने पड़ोसकी अपढ़ बहिनोंको पढ़ा कर महिला-मण्डलके कार्यालयमें इसकी सूचना भेज देवें।

भाइयोंसे और खास तौरसे विद्यार्थियोंसे हमारी सादर प्रार्थना है कि वे अपने छुट्टी का समय व्यर्थके कार्योंमें न व्यतीत कर अपनी अपढ़ माता, बहिन, भावज, पत्नी, पड़ोसिन इत्यादिको साक्षर बना कर मंगलमय कार्यमें योग देवें। अन्य भाई संस्थाको धनसे मदद पहुँचा कर मातृ-ऋणसे मुक्त हो सकते हैं।

महिला-मण्डल आपका है। उसकी आवश्यकताकी पूर्ति आपको करनी है आर आवाजमें आवाज मिला कर कहिये कि हमारे रहते हुए समाजमें महिलायें अपढ़ नहीं रहेंगी।

आपके विनीत—

नारायणबाई “ विदुषी ”	**लक्ष्मीलाल जोशी** एम. ए. एलएल. बी.
कृष्णाबाई देव	**लालचन्द रांका** एम. ए., सी. टी.
चन्द्रमुखी “ विदुषी ”	**योगेशचन्द्र शर्मा** बी. ए.
कमलाकुमारी श्रोत्रिय	**दयाशंकर श्रोत्रिय**

जॉल समाजोन्नति तथा ग्रामोद्धार ट्रस्ट

श्री जॉल समाजोन्नति तथा ग्रामोद्धार ट्रस्ट उज्जैन के संक्षिप्त विवरणकी रिपोर्ट ट्रस्ट की ओरसे सचित्र प्रकाशित हुई है। २० स रुपयोंके सुरक्षित कोषसे ट्रस्टकी स्थापना हु है। उज्जैनमें भैरवनाले पर ट्रस्टकी ओरसे श्री जॉल दलित-समाज-सेवा मंदिर श्री जॉल-दलि बालिका विद्यालय, श्री जॉल बोर्डिंग हाउ (दलित छात्रालय) चल रहे हैं जहां शि का योग्य प्रबन्ध है।

२५ जून ४२ से ३१ नवम्बर ४३ त जॉल बोर्डिंग हाउस, दलित बालिका विद्याल गांधी जयन्ती आदि पर ७८६७॥=) श्री जे सी. जॉल द्वारा प्राप्त रकम खर्च हुई है।

ट्रस्टको उसकी योजनानुसार महाराजा लियरने कृपावन्त होकर ७७७६०० वर्गफ भूमि माधव नगर मक्सी रोडपर बिना मू प्रदान की है। ट्रस्टने इसके लिये महारा और उनकी सरकारका अभिनन्दन किया है।

प्रान्तीय आर्य कान्फ्रेंस

झालरापाटनमें आर्यसमाज झालरापाटनकी ओरसे प्रान्तीय आर्य सम्मेलन बड़े समारोहके साथ हो रहा है। इसमें राजस्थान केसरी कुंवर चांदकरणजी शारदा, श्री स्वामी नारायणानन्दजी मऊ, श्री स्वामी आत्मानंदजी व्यावर, श्री पं. सत्यदेवजी शास्त्री अशोक अजमेर आदि विद्वानोंके पधारनेकी स्वीकृतियां आगई हैं। सम्मेलनके अवसरपर व्यायाम प्रदर्शन भी होगा।

—मंत्री

माहेश्वरी भवनके लिये २५ हजार का दान

व्यावर १७ मार्च

रायसाहव से० विट्ठलदासजी राठी मालिक कृष्णा मिल्स व्यावर के सुपूत मुकुन्ददासजी राठी का शुभ विवाह श्री सेठ जगन्नाथजी मालपानी, जो व्यावरके ऊनके बड़े व्यापारी हैं, की सुपुत्रीके साथ सम्पन्न हो गया। राजस्थान केसरी कुंवर चांदकरणजी शारदा एडवोकेटने अपने दोहित्र (श्री शारदाजीकी वड़ी सुपुत्री श्रीमती विद्यादेवीजी के सुपुत्र) श्री मुकुंददासजी राठीको वड़ी सादगीसे माहिरा (भात) दिया और सत्यार्थप्रकाश भेंट किया। इस शुभ अवसर पर श्री राठीजीने माहेश्वरी भवन व्यावरमें एक हाल वनानेके लिये २५ हजार रुपयेका दान दिया और सनातन धर्म कालिज व्यावर व आर्य समाज की विविध संस्थाओं को प्रचुर धन राशि प्रदान की।

शेखावाटी व्यापारी सम्मेलन

कलकत्ताके सुप्रसिद्ध व्यापारी, मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटीके मंत्री और अ० भा० मारवाडी सम्मेलन के भू० मंत्री तथा मारवाडी चेम्बर आफ कामर्स के प्रधान सेठ रामेश्वरदासजी शानीके सभापतित्वमें २ और ३ अप्रैलको झुंझनू में शेखावाटी व्यापारी सम्मेलन होगा. इसको सफल वनानेके लिए सम्मेलन की स्वागत समिति वड़ी तत्परतासे कार्य कर रही है। शेखावाटीके अलावा कलकत्ता, वम्बई, दिल्ली, कानपुर आदि मुख्य मुख्य शहरोंमें भी प्रचारक भेजे गए हैं। जगह जगह शिष्टमंडल जा रहे हैं। कई शहरोंमें स्थानीय लोगोंकी प्रचार समितियां बनाई गई हैं।

श्री. देवसुमनका अनशन स्थगित

टिहरी राज्य प्रजामंडलके संचालक श्री. देवसुमनने टिहरी राज्यकी जेलमें २६ फर्वरीसे अनशन आरम्भ किया था। ४ दिन वादही उनकी मांगके अनुसार उन्हें प्रजामंडलके प्रश्न पर महाराजसे लिखा पढ़ी करनेकी सुविधा दे दी गई और एकांत कोठरीसे निकालकर वे आमे वार्डमें खुले रख दिए गए। कई दूसरी सख्तियां भी दूर कर दी गयीं। इसके साथ ही कपड़ों, पुस्तकों और पत्रके सम्बन्धमें उनकी मांगपर विचार करनेका आश्वासन दे दिया गया। इस स्थितिमें श्री. देवसुमनजीने इस समय अनशन स्थगित कर दिया है। उन्होंने प्रजामंडल के प्रश्न पर महाराजाको एक पत्र भी लिखा बताते हैं। यह आशा की जाती है कि महाराजा प्रजामंडलको कानूनी संस्था स्वीकार कर लेंगे।

हमारा राजस्थान
ART CORNER

राजाजी मेवाड प्रजामंडळके दफ्तरमें

भीलवाड़ा, (डाकसे)। श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य अभी हालमें जव मेवाड आये तो वे मेवाड प्रजा मंडळ के दफ्तरमें भीं गए। श्री माणिकलालजी की पत्नी श्रीमती नारायणीदेवी ने सूत की माला पहिनाकर उनका स्वागत किया। राजाजीने एक घंटे तक प्रजामंडलके कार्यकर्ताओंसे वातेंकी। आपने छोटी रियासतोंका वड़ी रियासतोंमें मिलाना प्रजाके हितमें बताया। उन्होंनें यह भी वताया कि भविष्यमें रियासतें भारतकी वैधानिक भाग बन कर रहेंगी और राजाओंकी स्थिति प्रान्तीय गवर्नरोंकी सी होगी। यदि इस समय राजा वैधानिक सुधार करना चाहे तो उच्च सत्ता हस्तक्षेप न करेगी। उदयपुरमें आपने सभी संस्थाओंका निरीक्षण किया। हिन्दीविद्यापीठमें भी आपका भाषण हुआ जिसमें आपने भाषा, धर्म और शिक्षाके सम्बन्धमें अपने विचार प्रकट किए।

शेखावटीमें राष्ट्रीय सप्ताहका आयोजन

११ मार्चको शेखावटीके खादी तथा अन्य रचनात्मक कार्यकर्ताओंकी एक सभा खादी आश्रम मुकुन्दगढ़में हुई इसमें श्रीमती जानकी देवी बजाज, सेठ भागीरथमलजी कानोडिया, हीरालालजी शास्त्री, माणिकलालजी भगेरिया, रघुवीरदयालजी, बद्रीनारायणजी सोढानी, वेंकटेशजी पारीख दुर्गादत्तजी मुख्य थे। श्रीबलवंतरावजी देशपांडेने कार्यमें आई हुई शिथिलताको दूर करने पर जोर देते हुए कहा कि राष्ट्रीय सप्ताहका उपयोग इस कार्यक्रमको आगे बढ़ाने और महात्माजी की रचनात्मक प्रवृत्तियोंको व्यापक एवं संगठित वनानेके लिए करना चाहिए। श्रीमती जानकीदेवी और मातादीनजी भगेरियाने गोसेवा और हरिजन उत्थान पर जोर दिया। सभामें सप्ताहके लिए एक कार्यक्रम बनाया गया।

जयपुर राज्य मीणा संमेलन

श्रीमाधोपुरमें २ और ३ अप्रैल को जिला सम्मेलनका आयोजन विस्तृत पैमानेपर किया गया। संमेलनका मुख्य उद्देश्य मीणाओं पर लगाई गई अनुचित पाबन्दियोंका विरोध करना था। संमेलनका उद्घाटन विश्वमित्र संपादक श्री सत्यदेव वियालंकारने किया।

भरतपुरमें खादी आश्रमका उद्घाटन

१५ मार्चको श्री बलवंतराव देशपांडेने भरतपुरमें खादी भंडारका उद्घाटन किया। एक सभामें ४००) की खादी भी बेची गई।

श्री. गनेरीवालजीका दिल्लीमें स्वागत

अर्जुन कार्यालयमें स्थानीय हिन्दी पत्रकार संघको ओरसे निजाम हैदराबादके प्रसिद्ध व्यवसायी सार्वजनिक प्रवृत्तियोंके सूत्रधार और हिन्दी सभाके प्रधान राजा लक्ष्मीनिवास गनेरीवालके सम्मानमें चायपार्टीका आयोजन किया गया। उसमें प्रायः सभी हिन्दी पत्रोंके और कुछ उर्दू पत्रोंके सम्पादक उपस्थित थे। संघके प्रधान पं. सत्यदेवजी वियालंकारने श्री. गनेरीवालजीका परिचय दिया। उन्होंने वताया कि निजाम हैदराबादमें सार्वजनिक जीवनका निर्माण करने और व्यापारी वर्गमें राष्ट्रीय भावना जागृत करनेमें आपका मुख्य स्थान है। आप वहाँकी हिन्दी सभाके प्रधान और व्यापारी संघके मंत्री हैं। जयपुर, शेखावाटी और सीकरमें भी आपका बहुत सम्मान है. आपने हैदराबादमें हिन्दी भवन बनाने और गांव गांवमें हिन्दी पाठशाला खोलनेका कार्यक्रम बनाया है और उसके लिये ५ लाख रुपया इकट्ठे करनेका निश्चय किया है.

श्री गनेरीवालजीनें निजाम राज्यमें हिन्दीके साथ होनेवाले दुर्व्यवहार और उसको गैरमुल्की वता कर की जानेवाली उपेक्षा की विस्तारके साथ चर्चा की। आपने बताया कि आप १३ दिस० को विक्रमोत्सव मनाना चाहते थे जिसकी स्वीकृतिके लिये डेढ मास पूर्व दर्खास्त दी गई थी, किन्तु १४ दि० को उसकी स्वीकृति आई। फिर भी हम प्राणपणसे हिन्दीकी रक्षा करने में लगे हैं।

जयपुर किसान सम्मेलन

झुंझनूमें श्री टीकारामजी पालीवालकी अध्यक्षतामें जयपुर किसान सम्मेलन हुआ। इसमें हजारों किसान सम्मिलित हुए। सम्मेलन में एक प्रस्ताव भूमिकरके सम्बन्धमें स्वीकार किया गया। इसमें कहा गया था कि राज्यमें भूमिकरकी वसूलीका एक ही तरीका होना चाहिए। यह सब जगह बन्दोबस्त करने पर ही हो सकता है। यह बन्दोबस्त किसानोंकी सलाहसे होना चाहिए। ५०० बीघासे कमके ठाकुरोंके बारेमें निकाली गई राजकी आज्ञाको किसान नहीं मान सकते।

प्रस्तावको श्री सनत्कुमारजीने रखा और श्री० हरलालसिंहजीने उसका समर्थन किया। प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे स्वीकार किया गया।

मड्की और गुडामें राजपूतोंके शस्त्रप्रदर्शन की निन्दा सीकर, खंडेलाल, बठोठ, फ्वेरी और झझाली आदिमें की गई ज्यादतियोंकी निन्दा की गई।

राजपूताना कार्यकर्ता सम्मेलन

गोविन्दगढ़में हुए राजपूताना मध्यभारत देशी राज्य कार्यकर्ता सम्मेलनके निश्चयके अनुसार उक्त सम्मेलन की दूसरी बैठक २ और ३ अप्रैल को उदयपुरमें हो रही है। सम्मेलनको सफल बनानेके लिए मेवाड़ प्रजामंडल के कार्यकर्ता उत्साहसे तैयारियां कर रहे हैं। सम्मेलनका उद्देश्य आपसी विचार विनिमय द्वारा उपयुक्त कार्यक्रमका निर्माण करना है। जयपुरसे पं. हीरालाल शास्त्री और देशपांडे जी, अल्वरसे मा० भोलानाथजी, बीकानेर से रघुवरदयालजी, उज्जैनसे श्री पुस्तकेजी और शाहपुरासे श्री लक्ष्मीनारायणजी वांटियाने आनेकी स्वीकृति भेजी है।

मालूम हुआ है कि महाराजा श्रीभूपालसिंहजी माल्मंत्री डा० मोहनसिंहजी मेहताके साथ बाढ़पीडित क्षेत्र का दौरा करने जायंगे।

बम केसमें ८,८ वर्ष की कैद

जोधपुरके दूसरे बम केसका फैसला जेलके भीतर सुना दिया गया। श्री. सूर्यप्रकाश पापा, श्री. जोरावरमल बोडा, श्री. रामचन्द्र बोडा और श्री. पारसमल जैनको ८,८ वर्ष, श्री. कस्तूरचन्द और श्यामसुन्दरको ढाई ढाई वर्ष और श्री. सितारामजी गहलोतको ४ वर्षकी कड़ी कैदकी सजा दी गई। इसके अलावा सभी अभियुक्तोंपर चार चार सौ रुपया जुर्माना किया गया। जुर्माना न देनेपर प्रत्येकको ६ मास और जेलमें रहना होगा। मुरली मनोहर व्यास और हरीश मत्रावत, जो इकबाली गवाह बन गए थे, पहिलेही छोड दिए गए थे। श्री. विजयकृष्ण जो पुलिसमें नौकर थे, बरी कर दिए गए क्योंकि उनके ऊपर मुकदमा नहीं चल सका। इस मामलेके एक अभियुक्त श्यामलाल गत दिसम्बरसेही लापता हैं। मुकदमा एक सालमें समाप्त हुआ है।

नजरबन्दीके कारण बतानेसे इन्कार

जोधपुर जेलमें और राज्यकी दूसरी जगहोंमें जो नजरबन्द हैं उन्होंने अपनी नजरबन्दीके कारण पूछे थे। इस सम्बन्धमें मालूम हुआ है कि जोधपुर सेन्ट्रल जेलके सुपरिन्टेन्डेन्ट ने श्री राधाकृष्ण बोहरा, यशवंत रुचिरको उनकी पूंछताछका यह जवाब सुना दिया कि तुम लोगों को यह नहीं बताया जा सकता कि तुम्हें क्यों नजरबन्द किया गया है। ब्रिटिश भारतमें इस सम्बन्धमें जो आर्डिनेंन्स लागू है वह यहां नहीं लागू होता। वैसे तुम लोग क्यों नजरबन्द हो यह तुम लोगोंको मालूम है। भूख हड़ताल करने पर उसके नतीजोंकी जिम्मेवारी तुम्हारी होगी। इसका जेलके कायदोंके मुताबिक दंड दिया जायगा। उसके बाद उन्होंनें कहा कि सरकार विरोधी कोई कार्य न करने का वचन देकर छूट सकते हो।

श्री अभयमल जैन की हालत खराब

श्री अभयमल जैन उस दिन यकायक बेहोश हो गए थे, इसलिए वे विंडम अस्पतालमें ले जाए गए, जहां वे स्वस्थ हो रहे हैं। श्री यशवंत रुचिर बीमार होनेसे १५ दिन के पेरोल पर रिहा कर दिए गए हैं।

निरुपमा

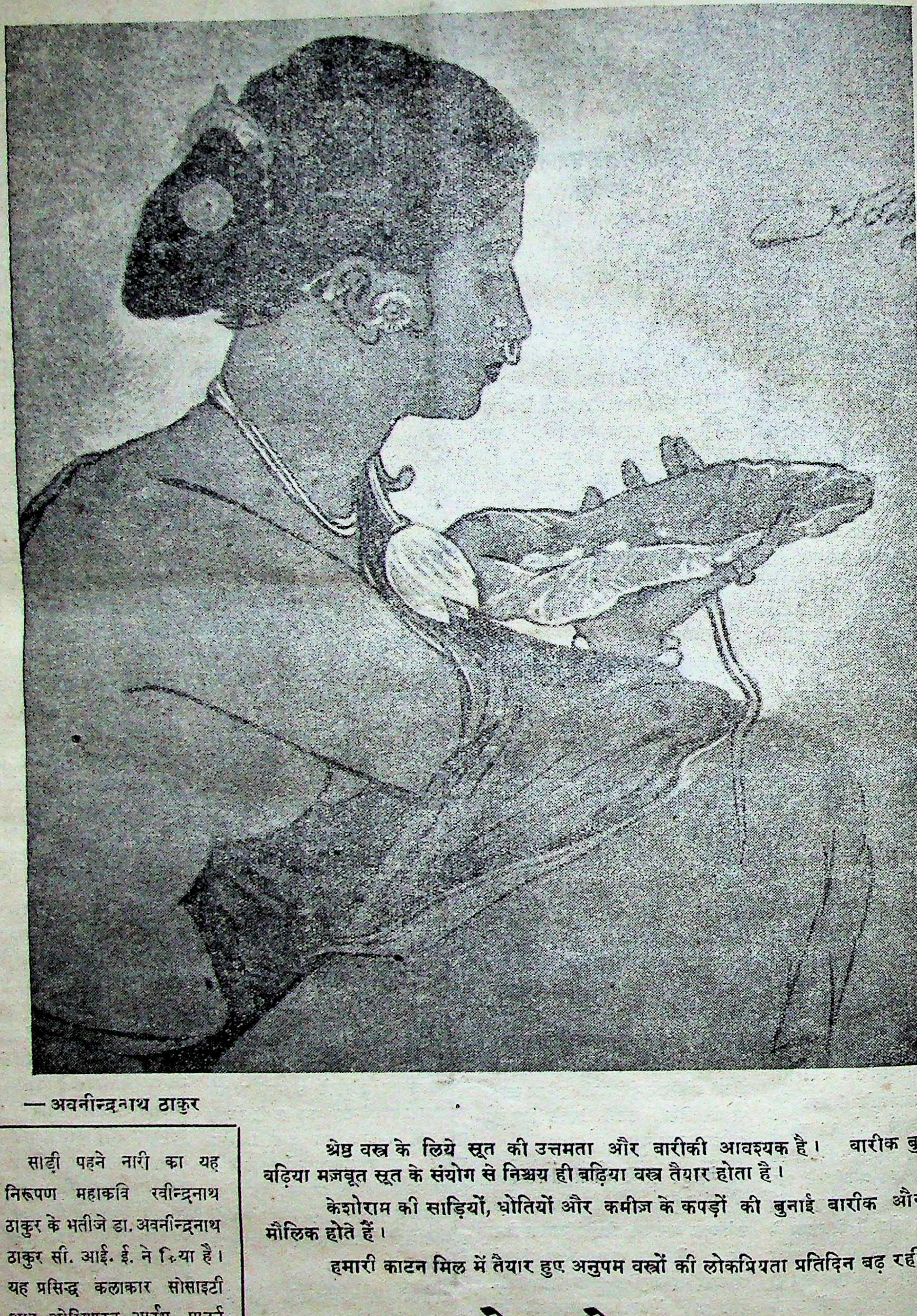

—अवनीन्द्रनाथ ठाकुर

साड़ी पहने नारी का यह निरूपण महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के भतीजे डा. अवनीन्द्रनाथ ठाकुर सी. आई. ई. ने दिया है। यह प्रसिद्ध कलाकार सोसाइटी आव ओरियण्टल आर्ट्स, माडर्न स्कूल आफ इंडियन आर्ट्स के संस्थापक तथा बंगाल में कला-जागरण के नेता हैं।

श्रेष्ठ वस्त्र के लिये सूत की उत्तमता और बारीकी आवश्यक है। बारीक बुनाई और बढ़िया मज़बूत सूत के संयोग से निश्चय ही बढ़िया वस्त्र तैयार होता है।

केशोराम की साड़ियों, धोतियों और कमीज़ के कपड़ों की बुनाई बारीक और डिज़ाइन मौलिक होते हैं।

हमारी काटन मिल में तैयार हुए अनुपम वस्त्रों की लोकप्रियता प्रतिदिन बढ़ रही है।

❀ केशोराम ❀

श्रेष्ठ सूती वस्त्र

देश विदेशकी चर्चा

अर्थ बिल बहुमत से ठुकरा दिया गया

केन्द्रीय धारा सभाने गत २७ मार्चको अर्थ बिल पर पेश किया गया प्रस्ताव ५५ के विरुद्ध ५६ वोटोंसे अस्वीकार कर दिया। इस पर बहुत हर्षध्वनि हुई और विरोधी दलने इस्तीफा दे दो के नारे लगाये। अर्थ बिल पर ६ दिन बहस होनेके बाद यह वोटिंग हुई। मुस्लिम लीगने कांग्रेसके साथ मिलकर बिलके विपक्ष में मत दिया।

यूरोपियनोंके अलावा जिन निर्वाचित सदस्योंने गवर्नमेंटके पक्षमें वोट दिये वे यह हैं—सर कावसजी जहांगीर, जमनादास मेहता, अनंग मोहन दाम, भाई परमानंद, सर अब्दुल हलीम गजनवी, बी. एन. चन्द्रावरकर, भागचंद्र सोनी, पं० नीलकंठदास और और मोहम्मद शावान। एन. एम. जोशी और हुसेनजी लालभाई तटस्थ रहे।

दूसरे दिन सरकारने संशोधित रूपमें अर्थ बिल पेश किया। वह भी ४५ के विरुद्ध ५६ मतसे गिर गया। सरकार को ओरसे मत देनेवालोंमें भाई परमानंद, जमनादास मेहता नीलकंठदास और अनंग मोहन दामभी थे। मुस्लिम लीगने कॉंग्रेसके साथ मिलकर विपक्षमें मत दिया। वायसरायने अपने विशेषाधिकारसे अर्थ बिलपर अपनी स्वीकृतिं देदी और वह १ अप्रेलसे कानूनके रूपमें लागू कर दिया गया।

भारतके अंदर जापानी सेना

चिन्दविन नदी पार कर जापानियोंकी बढ़ती हुई सेना सोमर पहाड़ीके पश्चिमी जंगलों और पहाड़ियोंमें फैल रही है। एक या दो स्थानोंमें सीमा पार कर मणिपुर रोडके पूर्व नागा पहाड़ीसे उस दिन जापानी फौजें उतरीं और उन्होंने इम्फालसे ३० मील उत्तर सड़क काट दी। कुछ दूर दक्षिण उन्होंनें एक पुल उड़ा दिया। कोहिमा और इम्फालके बीच ९ मील लंबी यह सड़क ही १४ वीं सेना के दो मोर्चोंको एक दूसरेसे मिलाती है। जापानी २९ मार्चकी शामको इम्फालके १० मीलके मैदानमें प्रविष्ट हुए पर वे शीघ्रही वहांसे हटने को विवश हुए।

इम्फाल और कोहिमाके बीचमें सड़कके एक भाग पर जापानी अधिकार जमाये हुए हैं। अधिकांश जापानी दल, उत्तरकी ओर बढ़ रहे हैं। कोहिमा इम्फाल रोडके पूर्वसे जापानी फौजें पश्चिम की ओर बढ़ रही हैं। किन्तु यह विश्वास किया जाता है कि उत्तरकी ओर बढ़कर ये फौजें कोहिमापर आक्रमण करेंगी। आसामके मोर्चेपर जापानियोंका दवाव जारी है। इसमें सन्देह नहीं कि कोहिमा या इम्फालमेंसे किसी एक क्षेत्रमें शीघ्रही भीषण संग्राम होगा। जपानी फौजोंका मुख्य उद्देश्य आसाम बंगाल रेल्वेके दीमापुर स्टेशनकी ओर बढ़कर उसपर वर्षाऋतुसे पूर्व ही कब्जा करलेनेका जान पड़ता है। इस स्टेशनसे मणिपुर स्टेटको एक पक्की सड़क है, जिससे इसका नाम मणिपुर रोड भी है। यह स्थान कोहिमासे ४६ उत्तरमें है।

रूमानियामें रूसी फौजोंका प्रवेश

रूमानियाकी सीमाके अंदर रूसी फौजें घुस गयी हैं। मास्को रेडियोंसे रूसके परराष्ट्र सचिव मो. मोलोटोवका एक वक्तव्य ब्रॉडकस्ट किया गया है, जिसमें कहा गया है:—रूमानियाकी सीमामें फौजी कारणोंसेही रूसियोंने धावा बोला हैं। रूमानियाकी अखण्डता अथवा सामाजिक व्यवस्था भंग करनेका कोई इरादा नहीं है। रूसी फौजें रूमानियामें बराबर बढ़ रही हैं। जर्मन भी प्रचण्ड प्रत्याक्रमण कर रहे हैं। रूसी सेनाएं जेकोस्लोवाकिया और हंगरी कीं सीमाओंके पास पहुंच गयी हैं और ओडेसाकी जर्मन सेनाको तीन दिशाओंसे घेर लिया। ओडेसाका पतन शीघ्र होनेके लक्षण दिखाई पड़ रहे हैं।

असेम्बली रंगमंच

अर्थ बिल आड़े हाथों

श्री भूलाभाई देसाईने भारत की केन्द्रीय धारासभामें अर्थ बिलका प्रबल विरोध करते हुए अपने भाषणके दौरानमें कहा कि "जिन लोगों पर टैक्स का भार लादा जा रहा है, उन्हें टैक्ससे होनेवाली आयको खर्च करनेका भी अधिकार होना चाहिए। यदि सरकार जनताके प्रतिनिधियोंको अपन निजी मामलों में भी नहीं पड़ने देना चाहती, तो वे उसके एजेण्ट या नौकर नहीं हैं, जो उसके लिए धन आमदनीके साधन खोजें। कांग्रेस पर जो यह अभियोग लगाया जाता है कि वह युद्धप्रयासमें सहयोग करना चाहती हीं नहीं थी, वह सरासर गलत है। उसने तो साफ एलान कर दिया था कि यदि केन्द्रमें राष्ट्रीय सरकार स्थापित हो और उसपर भारतकी रक्षाका उत्तरदायित्व छोड़ दिया जाय तो वह सहयोग करनेको तैयार है। किन्तु ब्रिटिश सरकार हमें कोई अधिकार ही नहीं देना चाहती। आगे चलकर उन्होंने कहा कि हम स्वतंत्र मानवके रूपमें सरकारको न केवल सहयोग दे सकते हैं वरन् लड़ भी सकते हैं। यह नहीं हो सकता कि नौकरशाही मनमाने तौरसे युद्धका संचालन करे और धन संग्रह हम करें! युद्धमें विजय प्राप्त करना एक बात है और स्थायी शांति स्थापित करना दूसरी बात। जब तक भारतके साथ न्याय नहीं किया जायगा, स्थायी शांति कोरी कल्पना है।

सर यामिन खां (मुस्लिम लीगी) ने अपने भाषणमें कहा—मैं अर्थ बिलका विरोध करता हूं। नये टैक्स लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है। खर्चमें कमी करनेसे काफी रुपये मिल सकते हैं। यदि सरकार रक्षा व्ययमें २ प्रतिशत भी कमी कर दे तो इससे ६ करोड रु. की बचत होगी। मुस्लिम लीग और कॉंग्रेसकी एकताका उल्लेख करते हुए आपने कहा—दोनों दल इतने पास पास आ गये हैं कि संसारको मालूम हो गया कि इन दलोंका वर्तमान सरकारमें विश्वास नहीं है। सरकारकी नियत और कोशिश यह रही है कि भारतीय कभी भी एक न हों। उसने हमेशा मतभेद पैदा करनेकी कोशिशकी है।

मुस्लिम लीग पार्टीके डिप्टी लीडर नवाब जादा लियाकत अली खांने करोंका तीव्र विरोध करते हुए कहा—जबसे युद्ध शुरू हुआ है, खर्च बेहद बढ़ गया और प्रत्येक वस्तुपर भारी टैक्स लगा दिये गये हैं। हम सब तरहसे सरकारको सहयोग देनेके लिए तैयार हैं किंतु केवल तभी जब प्रजा की सरकार हो। वर्तमान सरकारमें हमारा विश्वास नहीं है। हम अपने देशके साधनोंको उस सरकारके अधीन करना नहीं चाहते जो गैर जिम्मेवार है। मित्र पक्ष भलेही युद्धमे विजयी हों, किंतु वह विजय शक्ति पर सत्य की विजय न होगी बल्कि कम शक्ति पर अधिक शक्ति की विजय होगी। यदि मित्र राष्ट्र भावी संकटोंसे मानवताको बचाना चाहते हैं, तो उन्हें अपनी अच्छी नीति द्वारा इस देशके लोगोंका सहयोग प्राप्त करना चाहिए।

आस्ट्रेलियामें भारतीय हाई कमिश्नर

आस्ट्रेलियामें पहलीवार भारतीय हाईकमिश्नर नियुक्त किया जायेगा। असेम्बलीकी चर्चा से पता चलता है कि इस सिलसिलेमें सर परॉंजपे, श्री के. एफ. नरीमान और पं. हृदयनाथ कुंजरूके नाम लिये जा रहे हैं। 'इण्डियन ओवरसीज डिपार्टमेन्ट' का नाम बदल कर 'डोमीनियन रिलेशन्स डिपार्टमेंट' रखा जाने की भी खबर है।

श्रीमती नायडू को लन्दनसे बुलावा

लन्दनकी प्रमुख संस्थाओं की ओरसे श्रीमती नायडूको लन्दन आनेका आमंत्रण मिला है। सबकी यही आकांक्षा है कि आधुनिक भारतकी श्रेष्ठ महिलाको ब्रिटेनकी जनतासे सम्बन्ध स्थापित करनेका अवसर अवश्य दिया जाये जिससे भारतीय राजनैतिक गतिरोधका अन्त हो सकने का रास्ता साफ हो सके।

श्रीमती नायडू ने उक्त निमंत्रण स्वीकार कर लिया है। यात्रा का उचित रक्षापूर्ण प्रबन्ध हो जाने पर आपने लन्दन जानेका निश्चय प्रगट किया बताया जाता है।

समाचार पत्रों पर मुकदमा

'हिन्दुस्तान टाइम्स' और ' 'हितवाद' के सम्पादक, मुद्रक और प्रकाशक तथा जबलपुरके एक संवाददाता पर नागपुरके अतिरिक्त ज़िला मजिस्ट्रेट की अदालतमें मुकदमा चल रहा है। इन पत्रों पर जबलपुरके नजरबन्दोंके सम्बन्धमें कोई आपत्तिजनक रिपोर्ट छापनेका अभियोग है।

छोटे तालुकोंका मिलना

२१ मार्चके दिन सम्राट्ने छोटे छोटे तालुकोंको मिलानेवाले इण्डिया बिलपर अपनी स्वीकृति दे दी परिणामतः अब वह कानून बन गया है।

अखण्ड भारत दिवस

अ. भा. नेशनेलिस्ट लीग की अपील पर सारे भारत भरमें ३० अप्रैल को 'अखण्ड भारत' दिवस मनाया जायेगा। नई दिल्लीमें इस सम्बन्धमें विशाल सम्मेलन करके पाकिस्तानका विरोध करनेकी योजना भी बनायी गयी है।

बंगालकी मृत्यु संख्यापर एमरी

गत २३ मार्चको कामन्स सभामें भारतमंत्री एमरीने कहा कि बंगालके गत अकालमें लगभग ६८९००० आदमी मरे हैं, पहिले जो बड़ी मृत्युसंख्या बतायी गयी थी वह अतिशयोक्ति पूर्ण थी।

डॉ० राजेन्द्रबाबूका स्वास्थ्य

डा. राजेन्द्रबाबू कुछ दिनोंसे जेलमें बीमार रहे थे। अब उनके स्वास्थ्यमें कुछ उन्नति होनेकी खबर है। उन्हें दमेका दौरा अक्सर उठता रहता है। फिर भी वे स्वस्थ प्रसन्न नजर आते हैं।

रेलोंके नाम भी पाकिस्तानी

२६ मार्चको नार्थ वेस्टर्न रेल्वेके मुस्लिम कर्मचारियोंनें मि. जिन्नाको एक मानपत्र तथा थैली भेंट करते हुए यह सुझाव पेश किया कि जो रेल्वे पञ्जाब सीमान्त, सिन्ध और बलोचिस्तानके बीच चलती है उसका नाम 'नार्थ वेस्टर्न रेल्वे' से बदलकर नार्थ वेस्टर्न पाकिस्तान रेल्वे रख दिया जाय। मि. जिन्नाने इस सुझावको पूरा करानेका आश्वासन दिया।

रेल किराया ज्यों का त्यों

गत ४ अप्रैलको केन्द्रीय धारासभामें हर्षध्वनिके बीच यह घोषित किया गया कि भारत सरकारने रेल किराया बढ़ाने का विचार छोड़ दिया है।

कमज़ोर, और कच्चे कागज़ों के पेकिंग से होनेवाली

अपने व्यवसायकी हानिको बचाइये

हमारा मज़बूत, चीमड़ और सुन्दर

गैंडा मार्का

बैम्बू पल्प का बना हुआ क्राफ्ट पेपर

आपकी मुसीबतों को दूर कर देगा

यह उच्चकोटि का
पेकिंग कागज़
है

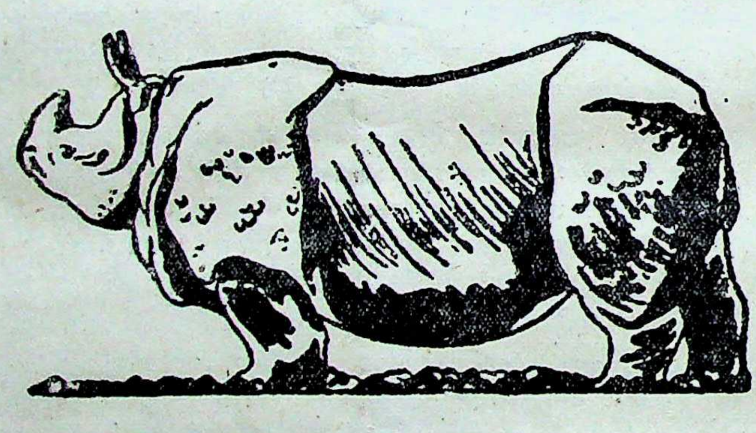

भारतीय बाजारमें
आज इसका
प्रतिस्पर्धी नहीं

हमारी मिल वाटरप्रूफ कागज (Water Proof Craft Paper)
तथा हरेक किस्मका बोर्ड भी तैयार करती है।

एक बार इस कागज़ और बोर्ड का व्यवहार करनेपर
आप दूसरे पेकिंग कागज़ और बोर्ड का नाम न लेंगे

ओरिएण्ट पेपर मिल्स लिमिटेड

८, रायल ऐक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता

हैदराबादकी जनतासे अपील

मौजूदा युद्ध परिस्थितिके कारण खाद्य पदार्थ व कपड़ेके भावोंमें जो वृद्धि हुई है इससे सब लोग भलीभांति परिचित हैं । इस समय कपड़ेकी परिस्थिति सुधारनेमें स्थिर रूपसे अगर कोई योजना बन सकती है तो वह खादीकी पैदावार बढ़ाना और जनताको वस्त्र स्वावलम्बनकी ओर अग्रसर करना ही हो सकता है । इस क्षेत्रमें आजतक अ. भा. चरखा संघने हैदराबाद रियासतमें जो कार्य्य किया है वह किसीसे छिपा हुआ नहीं हैं । लेकिन इस संस्थाको मौजूदा बढ़ी हुई खादीकी माँग और आमदरफ्तकी असुविधाके कारण काफी अधिक अड़चनें पैदा हो गई हैं । हैदराबाद रियासतमें चरखा संघकी ओरसे पिछले १५ वर्षोंमें (१९४३ के जूनतक) ३० लाख रुपयोंसे अधिककी खादी तय्यार करनेका उद्योग हो रहा है । जिसकी २४ फी सदी कीमत किसानों बुनकरों और कत्तिनों आदिको कपास एवं मजदूरीके रूपमे मिलेगी ।

पैदावार बढ़ानेके वास्ते वर्तमान पूँजी पर्याप्त नहीं है । रियासतमें खादीके कार्य्यको बढ़ानेके वास्ते प्रचार संघने गत वर्ष एक लाख रुपया संग्रह करना निश्चय किया । इस दिशामें कुछ कार्य हुआ भी है ।

खादी कार्य्यके लिये एक लाख रुपया खादी फंडमें दे देना हैदराबादियोंके वास्ते बड़ी बात नहीं हैं ।

हम जनतासे प्रार्थना करते हैं कि इस पवित्र कार्यमें यथाशक्य सहायता करके एक लाखके रकमकी पूर्ति कर दे ।

निवेदक

स्वामी रमानन्दतीर्थ, एम हनुमन्तराव, म. रामचंद्रराव, के. एस वैद्या, गोविन्ददास श्राफ, विनायकराव, नरेंद्र, आर. के. वासुदेव मुदलियार, रामरख, आर. नारायन रेड्डी, रामाचारी जोशी, जी. एस. मेलकोटे, गयाप्रसाद शास्त्री, प्रेमजी लालजी, सद्गुरुप्रसाद वकील, एस. सिराजुल हसन तीरामजी, मीर एहमदअली खान, डा. लतीफ सइद, हरिश्चन्द्र हेडा, रुस्तमजी जहांगीर, गोविंदराव गंगाखेडकर, शामराव, नाल्वेर रामय्या, वेंकट गंगारेड्डी, वीरामकिशनराव, जनारधनराव देसाई, एस. वी. नाईक लक्ष्मदास शाह, पन्नालाल पीती, लक्ष्मीनिवास आर. नेरीवाल मोतीलाल पटनी, गुलाबचन्द दलाल, मोहनदास दलाल, छोटालाल चतुरभुजदास, ई वालराजय्या, आर नथुलालजी, मदन गोपाल, शीतलाल आर जयसवाल, हरीलाल वाघरे, ष्णाचारी जोशी, रमणलाल कड़ाकिया, लोचनस, के वैद्यनाथन, वासुदेव कृष्णाजी नायक, वी. आर. रामकिशन रेड्डी, मगनश्चन्द्र वैदी, पतराव देशपांडे वकील, जयकरनदास, डा. मरावजी जोशी, गोपालराव बोरगांवकर, तरी सीत्तय्या, एम्. नरसिंहराव, काजी दुल गफार, वासुदेवराव औरंगवादकर, बी. . पाठक, बी. आर. चारी, एस. प्रताप रेड्डी, र. जी. जागीरदार, शंकरराव बोरगांवकर, ागीर, तुकाराम गुंडाप्पा सुलाखे, वेले मय्या, बिरधीचंद चौधरी ।

राजस्थानी संसार

विद्याभवन के वार्षिक उत्सव में राजाजी का भाषण

विद्याभवन उदयपुरके २० वें वार्षिकोत्सवका सभापतित्व करने के लिए श्री राजगोपालाचार्यजी २५ मार्च को पहुंचे । स्टेशनपर उनका शानदार स्वागत किया गया । २६ मार्च को विद्याभवन के वार्षिक उत्सव में आपका भाषण हुआ । उत्सव में राज्य के मिनिस्टर, अफसर और नागरिक बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थे । श्री मोहनसिंहजी मेहतानें रिपोर्ट में यह बताया कि टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज के भवन के लिए सेठ गोविन्दराम सेक्सरिया ने ७५००० रु. प्रदान किए हैं जिसकी आधार शिला सर मिर्जा इस्माइल के हाथों रखी गई । प्रींसिपल श्री के. एल. श्रीमाली ने विद्याभवनकी प्रवृत्तियोंका परिचय देते हुए बताया कि बाढ़के दिनोंमें संस्थाकी ओरसे क्या क्या काम किया गया । इसके बाद बच्चोंके खेल ड्रामा आदि हुए । विक्रमादित्यका नाटक बहुत पसंद किया गया । राजाजीने अपने भाषणमें विद्या भवनके कार्यकी सराहना करते हुए यह आशा प्रकट की कि संस्थाका कार्य शीघ्रही देशव्यापी होगा और दूसरे प्रान्तोंके लोग भी उससे लाभ उठाएंगे । आपनें कहा कि वर्तमान सरकारी विद्यालय विदेशी मोटरोंकी तरहसे देशमें विदेशी शिक्षाको भारतमें लानेका काम करते हैं । लेकिन विद्याभवन एक वर्कशापकी तरहसे शिक्षाके निर्माण का कार्य कर रहा है जिसमें देशकी परिस्थिति और लोगोंकी आवश्यकताका अधिक ध्यान रखा जाता है । अन्तमें आपने कहा कि डा. मेहताको सरकारी नौकरीमें अपना जीवन नष्ट न करके शिक्षाके काममें अपनेको लगान चाहिए । सरकार और जनतासे आपने अनुरोध किया कि वह विद्याभवनको लाखों रुपए से मदद करे । मंगलवार को राजाजीकी अध्यक्षतामें अध्यापक सम्मेलन किया गया । कस्तूर बा की स्मृतिमें आपने लड़कोंके अनुरोध पर एक बरगदका पेड़ लगाया ।

एक सार्वजनिक सभामें आपका भाषण हुआ जिसमें आपने देशकी वर्तमान राजनैतिक परिस्थिति और पाकिस्तानके सम्बन्धमें अपने विचार प्रकट किए । आपने ट्रेनिंग कालेज की सोशल सर्विस स्कीम का उद्घाटन किया और विद्याभवनके बेसिक छात्रालयके भवन की आधारशिला रखी । एक कुएंके खोदने की रस्म भी अदा की ।

राजस्थान महिला विद्यालयके २७ वें वार्षिकोत्सव का सभापतित्व भी आपने किया । अपने भाषणमें आपने शिक्षाके, विशेषकर स्त्री शिक्षाके आदर्शके सम्बन्धमें बहुत सुंदर भाषण दिया ।

दाहोदमें हितकारक माहेश्वरी नवयुवक मंडल

तारीख ३०-३-१९४४ को मुकाम दाहोदमें आली राजपुर सुसारी, डही, जोवट, खदाली दुधीआ, बांडीबार, दाहोदके सज्जनोंकी उपस्थिति में " हितकारक माहेश्वरी नवयुवक मंडल निमाड़ अेण्ड गुजरात " नामकी संस्था समाज सुधार और विद्याप्रचारके उद्देश्यसे स्थापित की गई और निम्नांकित पदाधिकारी चुने गयेः— सभापति सर्वश्री दलीचंदजी माणकचंदजी सुसारी, उपसभापति भगवानजी राधाकृष्णजी दाहोद, मंत्री चांदमलजी मोतीलालजी आलीराजपुर, उप मंत्री लक्ष्मीनारायणजी जगन्नाथजी आलीराजपुर, कोषाध्यक्ष भगवानजी जगन्नाथजी दाहोद, हिसाब निरीक्षक मोहनलालजी सालीगरामजी दुधीआ, सदस्य सत्यनारायण माणकचंदजी सुसारी मोतीलालजी मूलचंदजी डही, माणकलालजी कूवरजी जोवट, कवरलालजी गोविन्दरामजी जोवट, सोभागचंदजी मोहनलालजी खहाली, सालगरामजी पनालालजी दुधीआ, कीसनलालजी हीरालालजी दुधीआ, मोहनलालजी मनीरामजी दुधीआ, जगन्नाथजी चुनीलालजी बांडीबार, रतनलालजी कीसनलालजी बांडीबार, लक्ष्मीनारायणजी केशवलालजी बांडीबार, प्यारेलालजी पन्नालालजी बांडीबार, जगन्नाथजी भगवानजी बांडीबार, लक्ष्मीनारायणजी नंदरामजी दाहोद.

सभापति महोदयकी अपील पर निम्नांकित महानुभावोंसे सहायताके रूपमें चन्दा प्राप्त हुआः—५१) श्री. दलीचंदजी माणकचंदजी सुसारी, ५१) श्री. भगवानजी राधाकृष्णजी दाहोद ५१) लक्ष्मीनारायणजी जगन्नाथजी आलीराजपुर ५१) सोभागचंदजी मोहनलालजी खट्टाली, २५) चांदमलजी मोतीलालजी आलीराजपुर, २५) लक्ष्मीनारायणजी केशवलालजी बांडीबार, २५) रतनलालजी कोशनलालजी बांडीबार, २५) जगन्नाथजी भगवानजी बांडीबार, २५) मोहनलालजी सालिरामजी दुधीआ, २५) सालीगरामजी पन्नालालजी दुधीआ, ५) जगन्नाथजी चुनीलालजी बांडीबार, १५) प्यारेलालजी पन्नालालजी बांडीबार, ११) मोतीलालजी मूलचंदजी डही, ११) नाथूलालजी पन्नालालजी आलीराजपुर, ११) कीसनलालजी हीरालालजी दुधीआ, ११) माणकलालजी कुवरजी जोबट, ११) भगवानजी जगन्नाथजी दाहोद, ११) कवरलालजी गोविन्दरामजी जोबट, १) मोहनलालजी मनीरामजी दुधीआ ।

४६६)

मंत्री

हितकारी माहेश्वरी नवयुवक मंडल

निमाड़ एण्ड गुजरात

नागरिक स्वाधीनता सम्मेलनके सभापति श्री ब्रेल्वी

खंडवा (डाकसे)

इन्दौर राज्यमें लगी हुई नागरिक स्वाधीनताके प्रतिबन्धी आदि पर चर्चा करनेके लिए जो नागरिक स्वाधीनता सम्मेलन अप्रेल महिने में इन्दौरमें करनेका निर्णय हुआ था उस सम्मेलनका सभापतित्व बम्बई क्रानिकलके सम्पादक और अखिल भारतीय पत्रकार संघके अध्यक्ष श्री सैयद अब्दुला ब्रेल्वीने करना स्वीकार कर लिया है । इंदौर द्वारा नागरिक स्वाधीनता पर जो प्रतिबंध लगे हुए हैं उनकी चर्चा मध्यभारत देशीराज्य लोक परिषदके प्रधानमंत्री श्री कन्हैयालाल वैद्य ने श्री ब्रेल्वीसे की । स्मरण रहे, सन् १९३९ में जब १८ वर्षसे अधिक समयसे लगी हुई सभा बन्दीके विरुद्ध इन्दौरके कार्यकर्ताओंने आन्दोलन किया था तब श्री. जड़ियाजीने सभाबन्दीके विरोधमें ३६ दिनका अनशन किया था । इस सभाबन्दी निवारक अनशन समितिके मंत्रीके नाते श्री वैद्यने जो इंदौरसे निर्वासित किया था और सन् ४० में कार्य किया था उससे परिणाम स्वरूप इन्दौरके प्रधान मंत्रीने उन्हें देशी राज्य रक्षा कानूनके अन्तर्गत इंदौर राज्य के रेल्वे स्टेशनों पर रेलसे नीचे न उतरनेका प्रतिबंध भी लगवाया था । यह निर्वासन आज्ञा रद्द नहीं की गई है ।

न्याय विभागमें अव्यवस्था

झाबुआ (डाकसे)

झाबुआ राज्यमें न्याय विभागकी अव्यवस्थाके कारण सन् ३४ में झाबुआके शासक श्री उदयसिंहजीको जनताकी शिकायतोंपर पद भ्रष्ट किया गया था । आशा थी कि भविष्यमें न्याय विभाग ठीक होगा । किन्तु उसमें जनता को पूरी निराशा हुई है ।

इन्दौर राज्यके पेटलावद कस्बेके चारों ओर झाबुआ राज्यके ठिकानेदार जागीरदार हैं । इन जागीरोंके अधिकार बाहरके दीवानी फौजदारी मामलोंके लिए पासके १० वरके गांव हनुमानगढ़में झाबुआकी अदालत, पुलिस आदि है किन्तु यहां कोई मजिस्ट्रेट मुंसिफ नहीं है । थादलासे मुन्सिफ महीनेमें दो दिनके लिए तमाशगीरकी भांति आता है और चला जाता है । दो रोजकी अदालत होनेसे गरीब लोग परेशान होते हैं और दूसरे आनेपर प्रायः निराश होकर लौटना पड़ता है ।

इधर थादला मुंसिफ की जगह भी १॥ वर्ष तक खाली रही और कानूनसे अनभिज्ञ रेवेन्यूका एक नौकर सब काम देखता रहा ।

अब १॥ वर्ष बाद थांदला मुंसिफ की जगह पर एक व्यक्ति की नियुक्ति की गई । किन्तु पहले ही दौरेमें जब दौरे पर थे नये मुन्सिफ अभी हनुमानगढ़ आए । मालअफसर और उसके ८-१० अन्य साथी भी वहां पहुंचे । इस दौरेमें कुछ फौजदारी फरियाद पेश हुई । उनकी जाब्ता कारवाई न करते हुए उन फरीकोंके जो हाजिर नहीं थे उनके भी तस्फीयें कर डाल गये ।

न्याय विभागमें इस तरह पूरा अंधेर चला है । ऊपरी अधिकारियों और एजन्सीको अन्धेर दूर करने पर ध्यान देना चाहिये । जनताने भी इधर ऊपरी लोगोंका ध्यान खींचा है ।

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियां, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४–६५

बिक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

IMPERIAL TRADING Co.

Alli Chambers, Tamarind Lane, Fort,
Telegrams: "LOOMSPRING"

BOMBAY.
Telephone No. 27580.

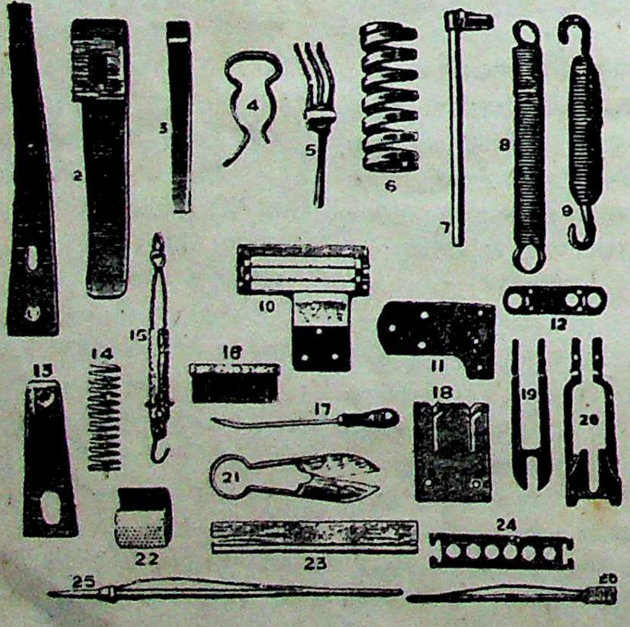

OUR SPECIALITIES

Springs, Temples and all accessories for Spinning and Weaving Machinery

BESIDES, WE HOLD AN EXTENSIVE STOCK of

Stripping Fillets
Burnishing „
Folding „
Plaiting „
Winding „
Likering „
Card Strippers
Walton Metallic Brush

Lickerine Wires
Lap rods & Oils cans Braime & "K"
Pot eyes for Bleaching dept.
Hydraulic Ram Rings
Jackson & Harries Fastners
Blue Glass Rods & Creel Steps

Card Chains & Link Chains
Hickory wood Picking Sticks
Dobby Lattices Comber Boards & Taper Pegs
Perth Gauge Glass & Glass Lubricators
etc. etc. etc. etc.

Enquiries Solicited

We solicit your enquiries for all articles connected with the Spinning & Weaving Industry and can quote you competitive prices. We will gladly send to you our latest price list on application.

Agents :—
RATILAL & Co., Cross Lane, Railwaypura Post, AHMEDABAD.
B. N. MODI & Co., 14/24, Civil Lane, CAWNPORE.

राजस्थानी संसार

अनुकरणीय आदर्श विवाह

देवियोंमें पर्दा छोड़नेका जोश

इन्दौरके प्रमुख सामाजिक और राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता श्री. रामविलासजी कचौलियाके लघु बन्धु श्री. श्रीकृष्णजी कचौलियाकी सुपुत्री सौ. कांक्षिणी चन्द्रकलाबाईका पाणिग्रहण संस्कार बासौदा निवासी सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता और मध्य भारतीय माहेश्वरी प्रान्तीय सभाके सदस्य श्री. हीरालालजी सोनीके सुपुत्र श्री. ज्ञानचन्द्रजी सोनीके साथ वैदिक विधिसे सम्पन्न हुआ। विवाह मंडप पू० बापूजीके आदेश ओर राष्ट्रीय कवि गुप्तजी कृत भारत भारतीके मोटोसे सजाया हुआ था। विवाहके समयकी यज्ञ वेदी केलेके स्तम्भों एवं आम्र पत्तोंसे सुसज्जित थी।

मंडपके प्रवेशद्वार पर राष्ट्रीय पताका लहरा रही थी, मंडपमें वरातके प्रवेश करने पर नव वधू, वरके स्वागतकी प्रतीक्षामें संस्कारकर्त्ता पं. क्टर वीरसेनजीके साथ एक सज्जित मंच पर बैठी हुई थी। वरके मंडपमें प्रवेश करते ही वधू द्वारा जो वहाँ अपनी चार सखियों सहित खादीकी केशरिया साड़ी पहने हुए उपस्थित थी, खादीकी सुन्दर माला द्वारा वरका स्वागत किया गया, साथ ही वरने वधू के गलेमें उसी की माला पहनाई। वर द्वारा माला पहनाने वधूके गलेकी माला वरकी मालामें उलझ गई। यह सभी दृश्य इतना अधिक आकर्षक था कि लोग उस समय मंत्र मुग्ध अपलक देखते रहे।

वन्देमातरम् गीतके साथ विवाहका कार्य आरम्भ हुआ। बरातियोंका प्रारंभिक स्वागत पान सुपारीसे किया गया। बरातियोंके अतिरिक्त विवाह मंडपमें इन्दोर राज्यके कई प्रतिष्ठित राष्ट्रीय कार्यकर्ता समाज सेवी और विद्वान् उपस्थित थे। दर्शक रूपमें ऐसी कई महिलाएं और पुरुष भी उपस्थित थे, जो सदैव विना समझे ऐसे विवाहोंके विरोधमें अपनी राय रखा करते हैं, विवाह मंडप दर्शकोंसे खचाखच भरा हुआ था।

विवाहके समय वर वधू की कल्याण कामनाके लिये बाहरसे कई पत्र व तार आये, जिनमें श्री. सावित्रीदेवीजी बियाणी अकोला, सरलादेवीजी बिरला अकोला, श्री. रामकृष्णजी धूत हैद्राबाद सभापति अ. भा. महासभा, श्री. गुलाबचंदजी नागोरी (ग्रांड का) पैठण, श्री. राधाकृष्णजी लाहोटी, श्री. प्रसादजी हरकर सांभर श्री. रामचंद्रजी नवाब पाल, श्री. रामगोपालजी ईनानी, वकील आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यहां की कई सार्वजनिक संस्थाओंसे भी वधूकी कल्याण कामनाके संदेश प्राप्त हुए थे।

विवाहमें बाहरके कई राष्ट्रीय कार्यकर्ता और समाज सुधारक सम्मिलित हुए थे, जिनमें श्री. राधावल्लभजी लड्ढा अमरावती, रामगोपालजी श्वरी सम्पादक दैनिक 'नवभारत' नागपुर विट्ठलदासजी बजाज भोपाल, श्री. मूलचंदजी अग्रवाल गोविन्दगढ़, श्री. रामचन्द्रजी नवाल खाचरोद, श्री. मदनदेवी नवाल खाचरोद, श्री वल्लभदासजी वकील बासौदा-आदि प्रमुख हैं। विवाह प्रणालीकी सादगी और आडम्बर रहित व्यवहारने दर्शकोंको खूब प्रभावान्वित किया।

वैवाहिक कार्य की समाप्तिके पश्चात् प्रीति भोजकी व्यवस्था की गई थी। प्रीतिभोजमें इन्दोर और मध्यभारत की पर्दा रहित बहनें सारी वस्तुएँ परोस रही थीं, और मध्यभारतके सुप्रसिद्ध समाज सुधारक श्री शिवचन्द्जी इनानी की सुयोग्य धर्मपत्नी श्री रुक्मणी देवी इनानी स्वयं परोसते हुए परोसगारी की सारी व्यवस्था कर रही थी। स्त्रियों द्वारा परोसगारी का यह कार्य इन्दोरमें इस विवाहमें, पहली बार और अत्यन्त सुन्दर ढंगसे संपन्न किया गया था।

इस विवाहके सम्बन्धमें लोगोंकी राय है, कि मारवाड़ी समाजमें, इतना सादा आकर्षक और नूतन ढंग पर मध्य भारतमें यह पहला ही विवाह है।

दूसरे दिन श्री. सोनीजीके साथ इन्दोरकी पर्दा रहित महिला बहनें एवं श्री. मदनदेवी नवाल आदि सामाजिक चर्चाके लिये, श्री. चांदमलजी कचोल्याके घर पहुंची, जहाँ सामाजिक चर्चाके पश्चात श्री. चांदमलजी कचोल्या की धर्म पत्नी श्री. मुरलीबाईने पर्देकी भयावह प्रथाका परित्याग कर दिया। वहीं श्री. मदनलालजी काबरा की धर्मपत्नी सौ. श्री. रतनदेवी काबराने भी पर्देका परित्याग कर अपूर्व साहस का परिचय दिया।

इस विवाहमें सादगीका पूरा ध्यान रक्खा गया था। दहेज सादगी सामाजिक सुधार और राष्ट्रीयताकी दृष्टिमें, यह विवाह अपने ढंग का एकही आदर्श कहा जायगा।

विवाहके अवसर पर वर वधू पक्षकी ओरसे ३०१) रु० का दान कई सार्वजनिक और राष्ट्रीय संस्थाओंको दिया गया।

माहेश्वरी पुस्तकालय कलकत्ता

श्री माहेश्वरी पुस्तकालय कलकत्ता का त्रय मासिक कार्य-विवरण विगत जनवरीसे मार्च १९४७ तकका यों रहाः—घर ले जाकर पढ़ी जानेवाली पुस्तकों की संख्या १२४९ रही। वाचनालयमें ५८९ पुस्तकें पढ़ी गई। वाचनाल्य की कुल उपस्थिति ६१८७ रही। २४ नये सदस्य बने। नवीन पुस्तकें ३४ आईं। पुस्तकों की कुलसंख्या ३८७४ होगई। नेत्रविशेषज्ञ डा० अग्रवालकी ५ पुस्तकें श्रीमान् रतनलालजी मानधन्या द्वारा सधन्यवाद स्वीकृत हुई। वाचनाल्यमें भिन्न २ विषयोंकी उत्तमोत्तम पत्र-पत्रिकायें और प्रमुख प्रमुख दैनिक—साप्ताहिक एवं मासिक समाचार पत्र आते हैं। जनतासे अनुरोध है कि वाचनाल्य और पुस्तकाल्यसे अधिकाधिक लाभ उठावें।

माणिकलाल—"विशारद"
अवैतनिक मंत्री

अ.भा.आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ

राजस्थानी बाढ़ पीड़ितों की सहायता का विवरण

गतवर्ष जुलाई मास में मेरवाड़ा तथा मेवाड़ की भयंकर बाढ़ में जो अपार धनजन की हानि हुई थी वह सर्व विदित है। उस दयनीय स्थितिमें अपने असहाय और अनाथ हिन्दू भाइयों की सेवा तथा सहायता के लिए अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ ने पचास सहस्र रुपयों की सहायता देने का संकल्प किया था। इस संकल्प के अनुसार बाढ़ पीड़ित क्षेत्रों में सहायता का कार्य संचालन करने के लिये डा. मदनलाल पिलानी बा. दुर्गाप्रसाद अजमेर पं. मन्मथकुमार मिश्र एम. ए. एल. एल. बी., घनश्यामदास जी मायानका, श्री प्रह्लादकृष्ण आदि उत्साही कार्यकर्ता वहां गये और उन्होंने अजमेर मेवाड तथा मेवाड के परासीली, दातडा, आसीन्द, देवपुरा, घमेरी, करपुरा, रूपपुरा, मरिता, गोरवा, सूना का खेडा, ईशरमंड, काला, नमाड़ा, आंती, देवगढ़, दूलेपुरा, बादणी, संग्रामगड, जयनगर, नाहरगढ़, प्रतापपुरा, जवानगढ़, सोनपुरा, गणेशपुरा, जोरावपुरा, छापरी, बागोर, सुलानपुरा, आगूचा, चखेडा, गुलाबपुरा, ककरोली, देवली, गोलवटी, दवरिया, आगोर, छोडास, समेरिया, सूदाश, खातोला, बड़ा खेड़ा, महासिंह का खेड़ा, दुधिया, शिवपुरा, देवपुरा, जयपुरा, ठगरिया, सरसूडी, रामथला, सरेरी, राजमहल, गुलगांव, राजपुरा सहरा, गोरवा आदि लगभग दो सौ बीस छोटे बड़े बाढ़ पीड़ित ग्रामों का दौरा करके वहां के निवासियों की दशा अपनी आंखों से देखी और जिसको जिस वस्तु की आवश्यकता थी उसको वही वस्तु प्रदान की।

संघ की ओर से कुल मिला कर निम्नलिखित मूल्य की वस्तुएं बाढ़ पीड़ित ग्रामों में वितरण की गयीं।

१७००० रु. की रजाइयां,
१०००० रु. के वस्त्र,
१०००० रु. के खेती के औजार,
३५०० रु. का अनाज,
६५०० रु. की नगदी, औषधियां, फुटकर व्यय आदि,
५०००० रु. कुल व्यय,

उक्त पचास हजार की रकम से बाढ़पीड़ित राजपूत भाइयों और बहिनों की सहायतार्थ अन्न वस्त्र आदि वितरण करने तथा मकान आदि बनवाने के लिये पांच हजार रुपये राजस्थान क्षत्रिय सभा द्वारा व्यय किये गये। इसके अतिरिक्त ९०० रु. नौ सौ रुपये की लागत के वस्त्र महिला मंडल उदयपुर को भी सहायतार्थ प्रदान किये गये।

उपरोक्त विवरण से प्रगट है कि बाढ़ पीड़ितों की सहायता में जितना कार्य इस संघ द्वारा हुआ है उतना किसी अकेली एक संस्था द्वारा नहीं हुआ। अतएव इस सम्बन्ध में संघ के कार्यों की सराहना न केवल सर्वसाधारण द्वारा अपितु मेवाड़ सरकार तथा अजमेर में गवर्नमेंट में अधिकारियों द्वारा भी हुई है। संघ के इस पुनीत सहायता कार्य में जिन सज्जनों ने सहायता दी है उनका संघ हृदय से कृतज्ञ है।

प्रधानमंत्री
अखिल भारतीय आर्य (हिन्दू) धर्म सेवा संघ
बिरला लाइन्स, दिल्ली

गुरुकुल चित्तौड़गढ़का उत्सव

विविध प्रवृत्तियोंका समारोह

गत १२, १३, १४, १५ मार्च को श्री गुरुकुल चित्तौड़गढ़का १४ वाँ वार्षिकोत्सव बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। ता. १२ को प्रातः काल वेद मंत्रोंकी पवित्र-ध्वनिके साथ उत्सवकी कार्यवाही प्रारंभ हुई। ब्रह्मचारियों द्वारा प्रस्तुत की गई वेद-मंत्रोंकी मधुर अन्त्याक्षरी व ब्रह्मचारी वीरेश्वरजी व्यायाम विशारदके व्यायाम प्रदर्शनने प्रारंभमें ही जनता पर गुरुकुलकी आदर्श शिक्षाकी अच्छी छाप डाल दी। प्रतिदिन स्वामी श्री आत्मानन्दजी द्वारा भक्ति-रसपूर्ण कथा होनेके पश्चात् कार्यवाही शुरू की जाती थी। ता. १३ को गुरुकुल से विराट नगर कीर्तनका आयोजन रहा जिसके द्वारा गुरुकुलका संदेश शहरके कोने २ में पहुँचाया गया। बाहरसे आये हुए श्री प्रो. घीसूलालजी प्रधान आ. प्र. सभा राजस्थान, भगवान् स्वरूपजी 'न्याय-भूषण,' स्वामी आत्मानन्दजी महाराज, भगवानदासजी अग्रवाल, केसरपुरीजी गोस्वामी, स्वामी कृष्णानन्दजी (मद्रास) जयनारायणजी व्याकरणाचार्य, चंद्रसिंहजी व नवजीवन संपादक कनक मधुकरके सुमधुर—हृदयग्राही भाषणोंने जनता पर वैदिक धर्मके महत्त्व की छाप अङ्कित कर दी। कविवर केशवप्रकाश विद्यार्थी व ब्रह्मचारी धर्मव्रतकी ओजस्विनी कविताओं ने जनताके दिलोंको हिला दिया। गोविन्द-आश्रममें सौ. नगिनी देवी अग्रवालके सभापतित्वमें महिला सम्मेलन भी हुआ। जिसमें शांताबाई ठाकुरके भाषण तथा भजन हुए। चित्तौड़में यह पहिला महिला सम्मेलन था। उपस्थिति भी ठीक थी।

ब्रह्मचारी प्रो. बल्देव प्रसादकी जमीनमें रहकर ६ घण्टे तक समाधि लगाना भी जनताके लिए नई बात रही। इसी बीच चित्तौड़ महावीर-व्यायाम मण्डल के विद्यार्थियोंका कुश्ती दंगल भी हुआ जो कि सराहनीय है।

श्रीस्वामी व्रतानन्दजी आचार्यकी गुरुकुलकी आवश्यकताओंपर की गई मार्मिक अपीलने तो जनताको एक बार हिला दिया जिसके फल स्वरूप उसी समय २ हजार रु० नकद ओर कई हजारके वायदे घोषित किये गये। सेठ पन्नालालजी मानसिंहका, गोविन्दरामजी सेक्सरिया व बाबू वाली कम्पनी (भीलवाड़ा) का दान विशेष उल्लेखनीय है। गौशालाके लिए ५००००) छात्रवृत्तियोंके लिए ५००००) व्यायाम भवनके लिए ३००००) अगले वर्षही शामियाना बन जानेके लिए ५०००) व कृषि विद्यापीठ व आयुर्वेद कॉलेजके लिये क्रमसे ४००००, ६००००) की अपील की गई जो कि शिक्षा प्रेमी सेठ दानी महानुभावोंसे शीघ्रही मिल सकेगी ऐसी आशा है। साथमें कन्हैयालाल कलयन्त्री का भील छात्र-वृत्तिके लिए विशेष दान भी अनुकरणीय रहा। प्रतिनिधि सभाकी ओरसे आगामी गुरुकुलोत्सवपर सबसे सुन्दर सत्यार्थ प्रकाश लिखकर व कुछ समुल्लासस्मरण करके लोंसवाले व्यक्तियोंको ५१ रु. के दो इनाम घोषित किये गये।

राजस्थानी संसार

जीमनवार संबंधी अपव्यय का घोर विरोध

मारवाड़ी सम्मेलन का प्रस्ताव

रविवार ता. १९।३।४४ को सायं तीन बजे कलकत्ता मारवाड़ी छात्र निवास के हाल में कलकत्ता मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से एक विराट सभा का आयोजन किया गया। सदस्यों की उपस्थिति संतोषजनक थी। उपस्थित सदस्यों में सर्व श्री, ईश्वरदास जी जालान, रामदेव जी चोखानी, सीताराम जी सेकसरिया, श्री वसंतलाल जी मुरारका, बजरंगलाल जी लाठ, रघुनाथ प्रसाद जी खेतान, भालचन्द्र जी शर्मा, रामचन्द्र जी सिंघी, मोतीलाल जी देवड़ा, सीताराम जी केडिया, उमरावप्रसादजी अमेरिया, मातादीन जी खेतान, भूरामलजी अग्रवाल, तथा हरिलाल जी लाठ आदि प्रमुख थे। सभापति का आसन श्री ईश्वरदास जी जालान ने ग्रहण किया। सर्व प्रथम मारवाड़ी सम्मेलन कलकत्ता के मंत्री श्री रामचन्द्र जी सिंघी ने उपस्थित सदस्यों को वर्तमान खाद्य संकट की स्थिति को दरसाते हुए सभा बुलाने का उद्देश्य सब भाइयों को समझाया। तत्पश्चात् श्री सीताराम जी सेकसरिया ने निम्न प्रस्ताव उपस्थित बंधुओं के समक्ष प्रस्तुत कियाः

कलकत्ता मारवाडी सम्मेलन द्वारा आयोजित आज की यह विराट सभा वर्तमान खाद्य संकट में होने वाले सार्वजनिक भोजों में पचास से अधिक व्यक्तियों को भोजन कराने का तीव्र विरोध करती हुई प्रत्येक भाई से अनुरोध करती है कि वे अपने घर पर पचास से अधिक व्यक्तियों को भोजन करने के लिए निमंत्रित न करें। साथ ही प्रत्येक भाई का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह इस प्रकर के अवांछित भोजों का पूर्ण बहिष्कार करें जिससे इस कुप्रथा को प्रोत्साहन न मिले। भविष्य में इस नियम का पूर्णतया पालन करनेके लिए आज की यह सभा एक कमेटी का निर्माण कर उसे आदेश देती है कि इस प्रकर के अवांछित भोजों के विरुद्ध तीव्र आंदोलन कर वैध उपायों द्वारा उन भोजों को रोकने का पूर्ण प्रयत्न करें। साथ ही यह सभा सरकार से अनुरोध करती है कि पचास व्यक्तियों तकके भोज के लिए लाइसेंस देने पर उनके राशन की भी व्यवस्था करे जिससे ब्लैक मार्केट को प्रोत्साहन न मिले। तदुपरांत श्री सेकसरिया जी ने खाद्य समस्या एवं इस कुप्रथा को बंद कर अपव्यय रोकने के संबंध में एक सुंदर भाषण दिया। अपने वक्तव्य में उन्होंने ब्लैकमार्केट की हानि दिखलाते हुए, तथा विगत अन्न संकट से बंगाल में होने वाली हजारों मौतों का जिक्र करते हुए अन्न का दुरुपयोग न होने के लिए एक वातावरण पैदा करने की जोरदार शब्दों में अपील की। श्री बसंतलाल जी मुरारका ने भी उक्त प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए इसी आशय का एक मनोहर भाषण दिया। श्री भूरामल जी अग्रवाल ने कहा कि हमारे समाज में कतिपय रूढियां चली आरही हैं जिन पर लोग हंसते थे पर उनका अब धीरे धीरे सुधार होरहा है। भीषण महंगी के युग में इस समय उत्सवों आदि में अन्नादि का दुरुपयोग न होना चाहिए। चोर बाजार की निंदा करते हुए उसे प्रोत्साहन न देने पर जोर दिया तथा इस कार्य में आवश्यकता पड़ने पर राजसत्तासे भी सहायता लेनी चाहिए, ऐसा सुझाव भी उन्होंने रखा। श्री बजरंलालजी लाठ ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए उपस्थित सदस्यों का ध्यान गत पंचम अधिवेशन दिल्ली में स्वीकृत प्रस्ताव नं. ७ की ओर आकर्षित करते हुए एक सारगर्भित भाषण दिया। इस तरह उन्होंने बतलाया कि सम्मेलन इस मसले को पहले से अपने हाथ में ले चुका है पर समाज के लब्ध प्रतिष्ठ महानुभावों का सक्रिय सहयोग न मिलने से सफलता नहीं मिल रही है। आज जब कि अमीर गरीब दोनों ही को सरकार की ओर से राशन नियमानुसार बराबर मात्रा में भोजन मिल रहा है फिर भी हमारे समाज के कतिपय भाई इसे तोड़ कर भोजादि अवसरों पर विशेष रूपेण खर्च करने पर तुले हुए हैं। बाद में प्रस्ताव के उक्त कार्य को कार्यान्वित करने के लिए निम्न लिखित सज्जनों की एक कमेटी बनाई गयी जिसके संयोजक श्री बजरंगलालाजी लाठ हुए। कमेटी के सदस्य हैं—श्री सीतारामजी सेकसरिया, श्री बसंतलालजी मुरारका, श्री भालचन्द्रजी शर्मा, श्री रामचन्द्रजी सिंघी, श्री भूरामलजी अग्रवाल तथा श्री सीतारामजी केडिया। उपर्युक्त दोनों प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुए। सभापति पद से श्री ईश्वरदासजी जालान ने कहा कि खिलाने वाले को यह समझाने की आवश्यकता है कि ऐसा करनेसे केवल वाहवाही के और कोई लाभ नही है। ऐसा जान लेने पर फिर समाज में शीघ्र ही सुधार की आशा है। सामाजिक क्षेत्र में पब्लिक ओपोनियन न होने से इधर कुछ मनमानी होरही है अतएव इस दिशा में अब अविलम्ब कार्यवाही होनी चाहिए।

अंत में श्री सीताराम जी केडियाने कलकत्ता सम्मेलन की ओरसे उपस्थित बंधुओं तथा सभापति महोदय को धन्यवाद दिया और सभा की कार्यवाही समाप्त हुई।

थानेदार पर मुकदमा

राजगढ राज्य में सुठालिया के थानेदार ने पिछले गोलीकाण्ड केस और दुकानों के लुटने के बाद आसपास के ग्रामों के किसानों पर लूट का इल्जाम बतला कर कई हजार रुपये धीरे धीरे किसानो से रिश्वत में लिये हैं। मालूम हुआ है कि श्री. दिवान सा. के इशारे से श्री. सु. पुलिस ने इसकी इन्कायरी की थी. परन्तु थानेदार उसी हलके पर कायम था इसलिये उसने इन्कायरी सफल नही होने दी. आजकल एक चमारसे ३० रुपये नाजायज वसूल करने की इन्कायरी थानेदार क खिलाफ हो रही है। उसके पिता बुनियादअली भूतपूर्व सु. पुलिस अपने बेटे को बचाने की भरसक कोशिश कर रहे हैं। जनता का कहना है कि उक्त थानेदार का तबादला करके या मुंअतल करके उसकी ज्यादतियों की जांच होनी चाहिये।

इन्दौर में अनाज परिषद

इंदौर राज्यमें एक नागरिक स्वाधीनता परिषद २२ और २३ अप्रैलको की जा रही है। इंदौर राज्य की सभी सार्वजनिक संस्थाओं प्रतिष्ठित कार्यकर्ताओं और गिने चुने नागरिकोंको परिषदके लिये निमंत्रण भेज दिये गए हैं। इस अवसर पर इंदौर राज्यमें नागरिकों को स्वाधीनतापर जो प्रतिबन्ध हैं और इसके लिए राज्यने जो कानून बनाए हैं आर आज्ञाएं निकाली हैं उनको पुस्तक रूपमें प्रकाशित किया जायगा।

इसी अवसर पर एक अनाज परिषद भी की जा रही है जिसमें सरकारी अधिकारी, म्युनिसिपल कमेटी, पंचायतों व्यापारिक संस्थाओं और प्रमुख नागरिकोंको बुलाया गया है। इसमें अनाज सम्बन्धी स्थिति पर विचार किया जायगा।

रिपोर्टके ६,७,८ पेजपर एक महत्वपूर्ण घटनाका उल्लेख नीचे समान हैः—“ मध्य भारत हरिजन सेवक संघ इन्दोरकी ओरसे—प्रकाशित सन ४१ से ४२ तकके कार्य विवरणमें छपा है कि “ शुजालपुरका हरिजन छात्रालय स्थानान्तरित करके उज्जैनमें श्री. जॉल साहिबने अपने प्रबन्धमें कर लिया है।” और सन् ४२ से ४३ तकके प्रकाशित कार्य विवरणमें यह छपा है कि “ ४७ पाठशाला ओमेंसे २८ को सरकारी शिक्षा विभागसे मददकी जाती है। ५ का प्रबन्ध श्रीमान् जाल साहब द्वारा किया जाता है।” किन्तु किसी कारण वश ये बातें असत्य छप गई हैं। यथार्थमें उज्जैनके दलित जातीय छात्रालयके संस्थापक और संचालक तथा इसी प्रकार ५ विद्यालयोंके न केवल प्रबन्ध बल्कि संस्थापक और संचालक एक मात्र श्री. जे. के. सी. जाल ही हैं।

हमें दुःख है कि लोकहितकी दृष्टिसे हम इसके प्रकाशनमें अपने आपको विवश पाते हैं। मध्य भारतीय हरिजन सेवक संघ जैसी संस्थाका अपने कार्य विवरणमें सम्पूर्ण रूपसे अन्य संस्थाओं द्वारा एवं जन सहयोग द्वारा एवं हो रहे कार्योंको शब्द–छलसे अपने कार्योंमें प्रतिबिंबित करना केवल अनुचितही नहीं बल्कि सार्वजनिक दृष्टिसे जनताके प्रति यह एक भारी विश्वासघात माना जायगा।

यदि इस प्रकारकी हरिजनोंकी सेवासे हम हिन्दू समाजके मुखका कलंक धोनेका प्रयत्न करना चाहते हैं तो यह भारतका भारी दुर्भाग्य होगा।”

ट्रस्टकी रिपोर्टमें छपे उपरोक्त वाक्य मध्य भारतके हरिजन कार्यकर्ताओंमें चर्चाके विषय बन रहे हैं।

रतलाममें अन्नाभावसे कष्ट

रतलाम शहर और आसपासके देहातोंमें अन्नकी हाल्त इतनी खराब होती जा रही है कि अनेक गरीब परिवार भूखे रहने लगे हैं। कुछ लोग तो आसपास की धार और ग्वालियर रियासतोंसे एक दो रुपयेका नाज चोरी छुपेसे लाकर अपना गुजर करते हैं। कई स्थानों पर नाज जो मिलता वह इतना गंदा या सड़ा होता है कि खाने योग्य नहीं होता। इस पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

उज्जैन

उज्जैनमें फिर जल कष्ट

उज्जैन (डाकसे), पिछले ५–६ वर्षोंसे गरमी और बरसातमें शहरके पास शिप्रा जैसी नदीके होनेपर भी जनताको भयंकर जल कष्टका सामना करना पड़ रहा है। पिछले वर्ष भरसे राज्य केदो बड़े अंग्रेज अधिकारी श्री. रेले और श्री. प्रोकोफी अपनी बात ठीक बतानेमें लगे हुए हैं वसन्त पंचमीको जनताको पर्याप्त मात्रामें पानी नहीं मिला। आजकल जो पानी दिया जा रहा है वह फिल्टर किया हुआ नहीं होता है। यही हाल रहा तो लोगोंके स्वास्थ्यपर बुरा असर पड़ेगा और बीमारियां फैलेंगी। इन बातोंपर भी जिला अधिकारी कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं।

जल कष्टकी यह धांधली राज्यके तमाम बड़े अधिकारी भी जान चुके हैं। अतएव जनता चाहती है कि महाराजा ग्वालियर स्वयं इस प्रश्नपर ध्यान देकर जल कष्टको दूर करनेका यत्न करें अन्यथा नलोंसे पानी बिल्कुल न मिले ऐसी दशा भी आसकती है।

भैरवगढ़में कूपनकी असुविधायें

उज्जैनसे चार मीलकी दूरी पर भैरवगढ़में रंगीन कपड़ेका सुंदर काम कई लाख रुपयोंका प्रतिमास होता है। इस स्थानको इतना व्यापारिक महत्व प्राप्त होने पर भी उज्जैनके जिला अधिकारीयोंने इस स्थानके हजारों नागरिकों के लिए कूपन और शक्कर आदि राशनकी वस्तुओंका कोई ठीक प्रबंध नहीं किया। लोगोंको परेशान होना पडता है और शक्कर लेने चार मील आना पड़ता है। कूपन जारी होनेमें भी बड़ी असुविधा है।

संयुक्त प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन

मारवाड़ी नवयुवक संघ बनारस की प्रबंध समिति की बैठक में यह निश्चय किया गया कि युक्तप्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन का अधिवेशन बनारस में शीघ्र ही किया जाय। ता० ६ अप्रैल को संघका वार्षिक अधिवेशन होने के बाद स्वागतकारिणी समिति का संगठन किया जायगा और शीघ्र ही अधिवेशन की तिथियां निश्चत की जायंगी। इस निश्चय से बनारस के मारवाड़ी समाज में उत्साह की लहर फैली है और बनारस के नवयुवक सम्मेलन के अधिवेशन को पूर्ण सफल बनाने के लिए उत्साहित हैं।

भालचन्द्र शर्मा

संगठन मंत्री, अ० भा० मा. सम्मेलन

‘ बा ’ की शोक सभापर रोक

भोपाल (डाकद्वारा)

यहां की हिंन्दू, मुस्लिम संस्थाओं और भोपाल राज्य लोक परिषदके कार्यकर्ताओंने राष्ट्रमाता कस्तूरबा गांधीका स्मृति दिवस मनानेके लिए भोपाल राज्यके सरकारी अधिकारियोंसे सार्वजनिक सभाके लिये इजाजत मांगी थी। किन्तु राज्याधिकारियोंने ऐसी सभाकी इजाजत नहीं दी। अतएव कार्यकर्ताओंने एक खानगी स्थानपर निमंत्रित लोगोंकी सभाकर राष्ट्रमाताकी स्मृतिमें दिये और भोपाल सरकारकी सभाके लिये इजाजत न देनेकी मनोवृत्ति की निन्दा करते हुए प्रस्ताव किया!

राजस्थानी संसार

अ० भा० १४ वाँ आध्यात्मिक साधन समारंभ

विक्रम द्विसहस्राब्दिके अन्त तथा संवत् २०१ के प्रारम्भके शुभ दिन सांदिपन ऋषिके आश्रमके पास उज्जैनमें क्षिप्रा नदीके तट और गंगाघाट पर जहां भगवान श्रीकृष्णने शिक्षा प्राप्त की थी कल्पवृक्ष कार्यालयकी ओरसे इस वर्ष अखिल भारतीय चतुर्दश आध्यात्मिक साधन समारम्भका विराट आयोजन किया गया था। २५, २६, २७ और २८ मार्च १९४४ तदनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया और चतुर्थी विक्रम सवत २००१ के चार दिनों तक प्राचीन भारतके ऋषि जीवनके समान सत्संग सदुपदेश, आसन, प्राणायाम, व्यायाम हवन, व्याख्यान आदि ज्ञानवृद्धिके साधनोंकी योजना की गयी थी।

चारों दिन ६॥ से ७॥ प्रातः प्रार्थना ८ से १० आसन, प्राणायाम. व्यायाम, १०॥ से १२ मौन, जप, हवन आदि १ से १॥ मध्यान्ह उपासना १॥ से ३ भोजन विश्राम और स्वाध्याय ४ से ५॥ प्राकृतिक मानसिक और आध्यामिक चिकित्सा पर भाषण तथा प्रयोग ५॥ से ६॥ आनंद पर्यटन एवं सायकृत्यादि ७ से ९॥ सामुहिक प्रार्थना और व्याख्यान।

महाकाल मन्दिर की भूमि पर घर

प्रसिद्ध ऐतिहासिक महाकाल मन्दिरके सपास कुछ लोगोंने अपने रहनेके लिए नये नये न मकान आदि जमीन कब्जे कर ना प्रारम्भ कर दिया है इससे उज्जैन की हिन्दू ताभें दिन दिन असंतोष बढ़ता जा रहा है। लासवासी ग्वालियरके माधवराव महाराजाने हाकाल मंदिर के आसपासके दृश्यको रम्य या पवित्रतासे ओतप्रोत बनानेके लिये न्दिरके आसपास के सम्पूर्ण गृहस्थोंको उनके मकानोंकी कीमत चुकाकर मैदान बनाया या तथा उनकी हार्दिक अभिलाषा थी कि मंदिरके आसपास किसी भी गृहस्थको न बसने दिया जाय। परन्तु आज उस इच्छाके विपरीत महाकाल मंदिरके उत्तर पार्श्वमें कुछ भवन निर्माण हो रहे हैं। यह सरासर सार्वजनिक स्थानमें अनुचित अधिकार जमाने की चेष्टा है। जनतापर ऐसे लोग अधिकारियोंके परिचय और अधिकारियोंपर महाराजके मेलजोल की सि बताकर अपना काम निकालते हैं। हाराजके प्रतिनिधि उज्जैनमें आए हैं। उन्हें स तरफ ध्यान देना चाहिए। महाकालकी धर्मशाला का भी उपयोग उस उद्देश्यसे नही हो रहा है जिसके लिए वह बनी है।

राज्य की मुनाफा खोरी

इस साल के लगान में राज्य ने ९–१० और १ सेर प्रति रुपये के मान से किसानो से रन ५० हजार मन ज्वार खरीदी। और ब उसी जुवार को ६ सेर और ४ सेर के व से जनता को बेचा जा रहा है। बाज सीलदारों ने खुशी से अनाज देने की बाबत गजों पर दस्तखत भी कराये है। बहुधा सीलदार ने काफी मुनाफा अनाज संग्रह में मा किया है। तलेन के किसानों ने ऐसी ही कायत पोलिटिकल एजन्ट भोपाल से की है।

धार में नया टैक्स

धार राज्य के बदनावर महाल में बनचराई का नया टैक्स लगाया गया है। वहां के काश्तकार इस नवीन टैक्स के विरोध में हैं। प्रजा संघ के मंत्री श्री इन्द्रमलजी ने इस सम्बन्ध में दीवान सा. से मुलाकात की थी परन्तु दीवान सा. ने टैक्स हटाने से इन्कार कर दिया। धार राज्य जनता पर दमन के लिये प्रसिद्ध है। कभी जनजागृति को रोकने के लिये लेखन व भाषण स्वतन्त्रता को न पनपने देने के कानून बनाये जाते हैं और कभी नये टैक्स लगा कर जनता की तकलीफ में इजाफा किया जाता है।

प्राचीन इमारतों की तबाही

नरसिंहगढ़ की एक प्राचीन बावड़ी को जिसमें ६०० आदमी बैठ सकते थे मि. मुल्ला ने अपने स्नेही ठेकेदार मि. पटेल को चार पांच सौ रुपये में बेच दिया। यह बावड़ी चार मंजिला है। प्राचीन शिल्पकला की बिना पर नरसिंहगढ़ के नरेशने हमेशा इसकी देखभाल की है। कहते हैं, इस बावड़ी के पत्थर ठेकेदार ने कई हजार रुपये में बेचे हैं। इसी तरह मोती महल नामक महल को सस्ते दामों में उक्त ठेकेदार को बेच कर उसे खंडहर बना दिया गया है। नरसिंहगढ़ राजमाता ने जब अपने पति के महल की यह दुर्दशा देखी तो आपकी आँखों में आसू आ गये।

प्रेत मनुजका आज खडा है !

मानव तो म्रियमाण पड़ा है !

*   *   *

सत्य - स्वर्ग से पा निर्वासन,
तापित मन, अभिशापित जीवन,
लो अपनी जर्जर - सी काया, भूपर आज गड़ा है !
मानव तो म्रियमाण पड़ा है !

प्यास आसुरी जिसकी जागी.
रक्त-पंथ का जो अनुरागी,
खूँ से लथ-पथ यही मनुज क्या ? हा, कितना पिछड़ा है !
मानव तो म्रियमाण पड़ा है !

अपनी चिता स्वयम् सुलगाकर,
तन पर राख मली हुलसाकर,
नही मनुज, रे, प्रेत मनुजका, यह जो आज खड़ा है !
मानव तो म्रियमाण पड़ा है !

—श्री रमेशचन्द्र माहेश्वरी 'प्रदीप'

माता कस्तूरबा की शोक सभा

मार्च के प्रथम सप्ताह में हाईस्कूल नरसिंहगढ़ के तीन सौ विद्यार्थियों ने जिनमें राज्याधिकारियों के लड़के भी शरीक थे, हाईस्कूल के पास के मैदान में माता कस्तूर बा की मृत्यु पर एक शोक सभा की और व्याख्यान हुए। पोलिटिकल सेक्रेटरी मि. मुल्ला ने शोक सभा को असफल बनाने के लिये बन्दूकधारी पुलिस की ड्यूटी लगा दी थी। श्री हेडमास्टर साहेब पर भी सभा न होने देने के लिये दबाव डाला गया। मि. मुल्ला की नीति से उनके विरुद्ध घृणित वातावरण पैदा हो रहा है। आश्चर्य है कि आजकल आप हेडमास्टर पर यह आरोप लगा कर कि विद्यार्थियों को भड़का रहे हैं, उनकी २८ साला नौकरी और पेन्शन पर कुठाराघात करना चाहते हैं।

रतलाममें 'बा' की स्मृतिमें सूत्रयज्ञ

चर्खा संघके मंत्रीकी अपीलके अनुसार १४ मार्चको राष्ट्रमाता कस्तूरबाकी स्मृतिमें खद्दर प्रेमियोंने दिनभर सूत्रयज्ञ चालू रक्खा और ईश्वर प्रार्थना की।

लॉर्ड वेवेलकी भ्रान्तधारणा

न्यूयार्कसे प्रकाशित होनेवाले सुप्रसिद्ध "एशिया एन्ड अमेरिका" पत्रने अपने ताजे अंकमें लॉर्डवेवेलके व्यवस्थापिका सभामें दिये भाषण की कड़ी आलोचना की है। उक्त पत्र की सम्मतिका निम्नसारांश महत्वका है:— लार्ड वेवेलका यह कहना बिल्कुल भ्रान्तिमूलक है कि भारत की अनैक्यता ही उसकी स्वतंत्रता प्राप्तिमें बाधक है। क्रिप्समिशनके बाद कॉंग्रेस और लीगमें जो मतभेद उत्पन्न हो गया था वह अब बहुत कम हो गया है। भारतसे मिले समाचारोंसे प्रगट होता है कि कॉंग्रेस और लीग इस बात पर पास पास आ रहे हैं कि अल्प संख्यकोंको स्वनिर्णयका पूर्ण अधिकार होगा। अब तो सबसे बड़ी बाधा यह है कि कांग्रेसके प्रधान नेता जेलोंकी चहारदीवारीके अन्दर बन्द हैं, जिनसे बातचीत नहीं होसकरही। इस महत्वपूर्ण बातकी लार्ड वेवेलने उपेक्षाकी है। लार्ड वेवेलके भाषणमें सबसे बड़ी कमी यही है कि वह भारतकी वर्तमान परिस्थितिसे मेल नहीं खाता।

(पृष्ठ ४ क काल्म ४ का शेष)

भारत तो एक दरिद्र देश है। हम इस पत्र द्वारा अपने देश तथा राष्ट्र की सेवा करने का ही यत्न करते हैं। आपने उपस्थित व्यक्तियोंसे पत्रको अपना समझकर सहयोग देनेकी विनय की। पार्टीमें जो व्यक्ति उपस्थित थे उनमेंसे उल्लेखनीय कुछ नाम निम्न है:—

सर्व श्री. रामनरेशजी त्रिपाठी, भगवती चरणवर्मा, दीपकजी, इन्दजी, शंकर देवजी विद्यालंकार, सुभद्राकुमारीजी चौहान, विद्यावती कोकिल, सुमित्राजी सिन्हा, सुमनजी, नेपालीजी, देवेन्द्रजी। ब्रजवल्लभदासजी मूँधड़ा, रामनाथजी पोद्दार, गजाधरजी सोमानी, गोपालजी नेवटिया, दशरथ लालजी जोशी, केशवदासजी पोद्दार, कृष्णलालजी बागड़ी, रामनारायणजी राठी, मोतीलालजी गान्धी, डा. लालचन्द्रजी मर्दा. डा० जोशी

देशी राज्य शासन

पृष्ठसंख्या ५६० सजिल्द मूल्य साढ़े तीन रुपये

महत्वपूर्ण समस्याओंका विचार

नमूनेकी ७० रियासतोंकी शासन पद्धति

राजनैतिक आन्दोलनका परिचय

भारतीयशासन	१।)	ब्रिटिश साम्राज्यशासन	१)
मातृवन्दना	।≈)	भारतीय अर्थशास्त्र	३)
नागरिक शिक्षा	॥≈)	साम्राज्य और उनका पतन	१।)
भारतीय जागृति	१।)	हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ	॥।≈)
निर्वाचन-पद्धति	॥-)	पूर्वकी राष्ट्रीय जागृति	१॥)
अपराध चिकित्सा	१॥)	भारतीय सहकारिता आन्दोलन	२)
भारतीय राजस्व	॥≈)	कौटिल्यके आर्थिक विचार	॥।≈)
अर्थशास्त्र शब्दावली	१)	भारतीय विद्यार्थी विनोद	॥≈)
राजनीति शब्दावली	।॥)	नागरिक कहानियाँ	॥≈)
श्रद्धांजलि	॥।≈)	अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य	॥)
विश्ववेदना	॥।≈)	भव्य विभूतियाँ	॥≈)

पुस्तक प्राप्तिका पता—

भगवानदास केला, भारतीय ग्रन्थमाला; दारागंज [इलाहाबाद]

बंबईका एक मानव

(पृष्ठ ९ का शेष)

संभव नहीं है जब तब तक मनुष्य जाति, राष्ट्र या देशभ्रमके संकीर्ण बंधनोंसे मुक्त न हो जाय। दशरथलालजी इसी सिद्धांत पर चलते हैं। उनकी लाइब्रेरी इसका एक अच्छा उदाहरण है। इसका उद्देश घाटा खाकर ज्ञान प्रचार करना है। जिसे जो पुस्तक चाहिए वह ले आये और किसीको रजिस्टरमें अपना नाम तक दर्ज कराने की दरकार नहीं। मनुष्य और उसकी स्वाभाविक ईमानदारीपर इतना अटल विश्वास वही व्यक्त कर सकता है जो स्वयं ईमानदार हो और हो 'मानव'! एक बार एक अमेरिकन पर्यटक उनकी लाइब्रेरीका नाम सुनकर उनके यहां पहुंच गया और कई पुस्तकों की मांग की। दशरथलालजीने उसका नाम पूछा न धाम उसकी मुहमागी पुस्तकें उसे–कुछ अपनी लाइब्रेरीसे और कुछ मोल लेकर–देदीं। यह देख वह यात्री चकित रह गया और उसने उनसे कहा–"वाह! आपने अच्छा किया! मेरा नामतक न पूछा और पुस्तकें मेरे हवाले कर दीं। कृपया पुस्तकें अपने रजिस्टरमें मेरे नाम सहित चढ़ा दें!" पर वह भारतीय सभ्यतापर मुग्ध हो गया जब उसने दशरथलालजीका उत्तर सुना कि भाई! मैं तो ज्ञानियों और शोधियोंकी सहायता करके एक साधारण सेवा करता हूं। जिन पुस्तकोंकी आपको सदा आवश्यकता हों आप सदा अपने पास रखें और जिनकी आवश्यकता न हो लाइब्रेरीके पतेपर वापस कर दें। यह है उन ऋषि मुनियोंका विशुद्ध रूप जिन्होंने ज्ञानका प्रचार और वृद्धि करनेमें अपना सर्वस्व निछाकर कर दिया। एक बार एक धनकुबेर उनकी लाइब्रेरीसे कई पुस्तकें ले गया और प्रायः तीन वर्ष बाद अत्यंत दुर्दशामें पुस्तकें वापस दीं। दशरथलालजीको तो तनिक भी दुःख न हुआ। पर प्रश्न उठता है कि क्या इस धनकुबेरका धर्म यही था कि मुफ्तमें पुस्तकें पढ़ें और उन्हें फाड़फूड़कर वापस करें। –यूरोप और भारतके धनियोंकी तुलना करनेसे महान खेद होता है कि जहां यूरोपमें कार्नेगी जैसे ज्ञानियोंने यूरोप और अमेरिकाके छोटे छोटे गांवोंतकमें पुस्तकालय खुलवा दिये हैं, भारतके अधिकांश धना ज्ञान और ज्ञानप्रचारके पीछे लाठी लेकर चलते हैं। और यदि कभी भूले भटके किसी लोक हितकर कार्यमें सहायता करते हैं तो इसी आशापर कि पत्रोंमें हमारा नाम छपे। दशरथलालजी नाम चाहनेवाली इस भारतीय नेतागिरी की बड़ी अच्छी उपमा देते हैं। वह कहते हैं कि हमारे नाममात्रकी सेवा करके नाम चाहनेवाले लोग घड़ीकी सूइयोंके समान हैं जो सदा लोगों की नजरोंके सामने ही रहती हैं और जनता अपने अज्ञानमें उन्हींको घड़ीका प्राण समझे बैठी है। पर थोड़े नेता उस कमानीके समान हैं जो प्रतिक्षण परिश्रम करके घड़ी चला रही है और भीतर अंधकारमें नाना कष्ट सहती है तथा कुछ उस चाबीके समान हैं जो सप्ताहमें या दिनमें एक बार थोडे समयके लिए घूमती है पर घड़ीका प्राण है। जनता इनको नहीं देख पाती। यह उपमा स्वयं दशरथलालजीके लिए सोलह आने लागू है। वे प्रकाशमें आनेसे भागते हैं और दिनरात लोकसेवा तथा ज्ञानप्रचारमे लीन रहते हैं। लोकसेवा का यह अति उच्च नमूना देखिये कि दशरथलालजीको टेलीफोनकी नाममात्र की आवश्यकता नहीं है पर उन्होंने इस कारण अपने घरमें टलीफोन रखा है कि पास-पड़ोसके निर्धन निवासी उनके घरसे फोन करें और उनके जिन मित्रों तथा संबाधियोंको उन्हें फोन करनेकी आवश्यकता पड़े वे उनके घरमें कर दें। तुरंत खबर पहुंचा दी जाती है कि अमुकका फोन आया है। यह कार्य कितना कष्टप्रद है इसे वही जान सकते हैं जिनके पास दूसरोंके नामके फोन आते हैं। पर दशरथलालजीको इसमें आनंद मिलता है। यह है वह मानवता जो मनुष्य जातिको ऊपर उठानेमें समर्थ होगी। इस मानवताको बार बार प्रणाम है।

विक्रमके नव रत्न

(पृष्ठ १२ का शेष)

तत्रापि च शकुंतला; तत्रापि च चतुर्थोऽकस्तत्र श्लोक चतुष्टयम्। कालिदासके बारेमें जितना भी लिखा जाय थोडा है। वे हमारी संस्कृति तथा 'साहित्य संगीत कला, की सर्वश्रेष्ठ विभूति थे। अंतमें महाकवि गुप्तजीके शब्दोंमें

जय हो कवि कालिदास की,
कविता केलिकला विलास की।

८ वराहमिहिर

वराहमिहिर–ज्योतिषशास्त्रके अन्यतम प्रमुख आचार्योंमेंसे एक थे। ये विक्रमार्ककी राजसभाके ज्वाजल्यमान रत्न थे। इनने ज्योतिषके अनेक नये सिद्धांतों तथा रीतियोंका आविष्कार किया था वाराही सहिता, आदि उनके प्रसिद्ध ग्रंथ हैं। 'वराह मिहिर, वास्तवमें ज्योतिर्विदोंमें मिहिर, (सूर्य) ही थे।

९ वररुचि

वररुचि–एक महान् वैयाकरण थे, पाणिनिके समकालीन सतीर्थ्य और प्रतिद्वंद्वी। इनकी माताका नाम वसुदत्ता और पिताका सोमदत्त था। ये कौशाम्बी नगरके निवासी थे, और विद्यालाभ आचार्य उपवर्षसे किया था। कालांतरमें तपसे पाणिनिको भूतपतिका प्रसाद प्राप्त होने पर उन्हें पराजित करके तब वे भगवान् शिवकी प्रेरणासे उनके अनुयायी बने। यों वार्तिककार वररुचिने वार्तिक बनाकर पाणिनि व्याकरणकी कमीको जहाँ तहाँ दूर किया है। वैसे ये भगवान् शिवके अभिशप्तगणपुष्पदंतके अवतार माने जाते हैं।

रतलाममें फसलों की खराबी

गेहूं की फसल में गेरुआ लगने और ओले गिरने से गेहूं चने की फसलो को भारी हानि हुई है। पहिले ही किसान लगान में सस्ता अनाज राज्य के खरीदने से परेशान थे, देहातों म काफी भुखमरी फैली हुई है। फसल की खराबी से राज्य के किसान चिन्तित हो रहे हैं। उन्हें भय है कि इस फसल का अनाज भी पहिले की तरह जबरन डाट डपट और मारपीट द्वारा वसूल कर लिया जायगा। यह भी खबर है कि बहुत से किसान राज्य छोड़ कर दूसरी रियासतों में जा बसने की फिक्र में हैं।

वायु सेवन और स्वास्थ्य

(पृष्ठ ८ का शेष)

और शेली, कीटस्, शेक्सपीयर में पुनः रस आने लगा। तबसे आजतक टहलने को मैं अपने प्रोग्राम का एक विशिष्ट अंग बनाये हुए हूं। "टहलने जाओ या मर जाओ" वाक्य मैंने अपने बैठके में एक ऐसे स्थान पर लगा लिया है जहां प्रातःकाल शय्या त्यागने पर सर्वप्रथम दृष्टि अवश्य पड़ जाती है। मैं चाहे और कुछ काम छोड़ दूं किंतु टहलने जाना नहीं छोड़ सकता। बचपन में पिताजी ने एक श्लोक याद करा दिया था—

"ब्राह्मे मुहूर्ते बुध्येत स्वस्थो रक्षार्थ
मायुषः।
तत्र दुःखस्य शान्त्यर्थें स्मरेद्धि
मधुसूदनम्॥"

अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी जीवन-रक्षा के लिए ब्राह्म मुहूर्त में (प्रातः पांच बजे) उठ जाय और दुःख-नाश के लिए भगवान का भजन करे। अब इस श्लोक का अर्थ एक झटका खाकर पूरी तरह समझ पाया हूं।

यदि आप अपने खोये हुए स्वास्थ्य को पुनः वापस लाना चाहते हैं, मंद रोगों से पीड़ित हैं बुढ़ापे को रोकना चाहते हैं, या मृत्यु को मार भगाना चाहते हैं तो आप ब्राह्ममुहूर्त में थोड़ा-थोड़ा टहलना आरंभ कीजिए। शरीर की मजबूती के लिए चाहे आप दूसरे कितने ही व्यायाम करते हों पर टहलने को कदापि न छोड़िए। आप चाहे जो व्यवसाय करते हों, किंतु प्रातःकाल टहलने का नियम अपने प्रोग्राम में अवश्य रखिय। मैकफैडन की सम्मति में जो स्त्री-पुरुष चौबीस घंटो में कमसे-कम दो घंटे नहीं टहलता वह पूर्ण स्वस्थ नहीं रह सकता, भले ही वह दूसरे कितने ही व्यायाम क्यों न करता हो।

राजगढ़में महान अन्न कष्ट

राजगढ राज्यमें अन्नकष्ट चरम सीमा को पहुंच गया है. कस्बों और ग्रामोंके हजारों गरीब इन्दोर ग्वालियर और भोपाल राज्यों में जा बसे हैं. सुठालिया जागीर में परिस्थिति बहुत गम्भीर है। गूलर के सूखे फलों, महुवो, और जडोसे गरीब पेट भर रहे हैं। आश्चर्य है कि जहां राजगढ़, और व्यावरमें अब ६ सेर जुवार मिलती है वहां सुठालिया के जागीरदार की लापरवाहीसे ४ सेर की ज्वार मिलना भी दुर्लभ हो रहा है। जागीरदारके व्यभिचारके विरुद्ध सुठालिया की जनता ने गतवर्ष निजामत व्यावरा में बयान दिये थे, तबहीसे जागीरदार अपनी प्रजा को दबा रहा है। यही कारण है कि आज जागीरी प्रजा महान संकटमे फँस रही है। कस्टम आफिसरके बल पर उक्त जागीरदार जागीरी प्रजाके दुख निवारण में उच्च अधिकारियों के हस्तक्षेप करने का अवसर नही आने देता। स्मरण रहे कि सुठालिया में अनाज के कुप्रबन्ध के फलस्वरूप गरीब गोली के शिकार बन चुके हैं। दुकानदार भी लुटे और सजा पाये हैं।

राजस्थानी संसार

मध्य भारत पत्रकार सम्मेलन

इन्दोर नगर में ता. २३ ऐप्रिल को मध्यभारत पत्रकार सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन का सभापतित्व ग्रहण करने के लिये जनाब सैयद अबदुल्ला ब्रेल्वी सा. आल इन्डिया न्यूज पेपर एडिटर्स कान्फ्रेन्स के प्रेसिडेन्ट एवं बाम्बे क्रानीकल के चीफ एडिटर से प्रार्थना की गई है। उक्त सम्मेलन की तैयारी के लिये श्री. सूर्यनारायण शर्मा और जनाब हामीदअली सा. संयोजक नियुक्त किये गये हैं। सम्मेलन की जोरदार तैयारिया हो रही हैं।

साथ ही अखिल इन्दोर राज्य नागरिक स्वाधीनता सम्मेलन और अनाज परिषद की भी शानदार तैयारियाँ चल रही है, ये दोनों परिषदें अप्रेल के तीसरे सप्ताह मे होनें वाली है।

श्री. वैद्यके विरुद्ध गवाह

रतलामके महाराजा मार्चके प्रथम सप्ताहमें भोपाल मेजर शिवजीसे मिलने गये थे। कुछ दिन वहां रहकर शामके चार बजे मोटरसे उज्जैन आए। महाराजा रतलाम श्री. सूर्यनारायण व्यास और रतलामके भूत पूर्व ज्युडीशियल मेम्बर सक्सेनासे मिलकर रतलाम चले गए।

महाराजाके जानेके बाद रतलाम राज्यके सी. आई. डी. विभागके तीन नौकर जिनमें एक झाबुआ पुलिसमें और दूसरा सीतामऊ पुलिसमें नौकरी कर चुके हैं, श्री सूर्यनारायण व्याससे मिले इसके बाद रतलामी सी. आई डी. शहरमें श्री कन्हैयालाल वैद्यके विषयमें कुछ लोगोंसे माहिती लेते रहे।

उज्जैनमें श्री वैद्यके विरुद्ध कुछ लोग कुछ गवाह तैयार करने की हलचल और चर्चामें लगे हुए दिखाई दे रहे हैं।

जच्चा को गुड़ नसीब नहीं!

भोपाल राज्य में गुड़ के नियंत्रण से देहातों में गुड़ बिल्कुल नहीं मिलता। गुड़ की प्राप्ति में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीण स्त्रियों की जच्चगी में गुड का प्रयोग खास चीज मानी जाती है। आज यह हालत है कि गरीब स्त्रियों को जच्चगी के समय गुड़ न मिलने से वे तरह तरह के रोगों का शिकार हो रहीं हैं।

भूलसुधार

गताङ्कमें 'माहेश्वरी सहायता' में, जो सेठ चिम्मनलालजी बींझानी सिवनी निवासीने अपने सुपुत्र श्री. भगवानदासजीके विवाहमें दान दिया प्रकाशित हुआ है वह दान वास्तवमें श्री. नारायणलालजी बींझानीने अपने भाई श्री भगवान् दासजीके विवाहके उपलक्ष्यमें दिया है। २१ मार्चके अंकमें 'संस्कृत साहित्योंमें विक्रम' नामक लेखके लेखकका नाम प्रेसकी भूलसे छपनेसे रह गया है। उक्त लेख श्री. डा. हेमचन्द्रजी जोशी डी. लिट् ने लिखा है।

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल

इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड

संस्थापित सन् १९१९

★

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—: हमारी शाखाएं :—

अहमदाबाद (गांधी रोड)
बोटाद (काठियावाड़)
कलकत्ता (१३५, कैनिंग स्ट्रीट)
लाहौर (दी माल)
कम्पाला (युगाण्डा) (बाम्बो रोड)

★

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेन्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए :—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :— सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

Printed and published by Vasant S. B. Shroff, B.A., B.SC., LL.B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India Society's Building Sandhurst Road, Bombay 4

दी

न्यु एशियाटिक

की

उन्नति की रफ्तार

केवल जीवन बीमा के आंकड़े ही खुद बता रहे हैं

१९३४....................रु० १५,००,०००

१९३८..................रु० ४१,७४,०००

१९४२.....रु० ६०,००,०००

१९४३......एक करोड़के ऊपर

हम अपने पोलिसी-होल्डरों, काम करनेवालों तथा सभी शुभ चिन्तकों को
इस शानदार सफलता के लिये हृदयसे धन्यवाद देते हैं

कृपया हमें पूछिये **लाइफ** **आग**

मोटर **वर्कमेन कम्पेनसेशन**

मरिन आदि २ बीमों के लिए

न्यु एशियाटिक इंस्युरन्स कम्पनी लिमिटेड

हेड आफिस
नई दिल्ली

वेस्टर्न डिवीजन ऑफिस :—
इंपीरियल बैंक एनेक्स बिल्डिंग, फोर्ट, बम्बई

हमारी शाखाएं:—

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, त्रिचिनापली, लाहौर, इन्दौर, नागपुर, जलगांव, हैदराबाद (दक्षिण) कराची, कालीकट, बनारस

इनके अतिरिक्त अन्य महत्व के स्थानों में हमारी चीफ एजंसियां हैं

खल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभाका मुखपत्र

माहेश्वरी

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

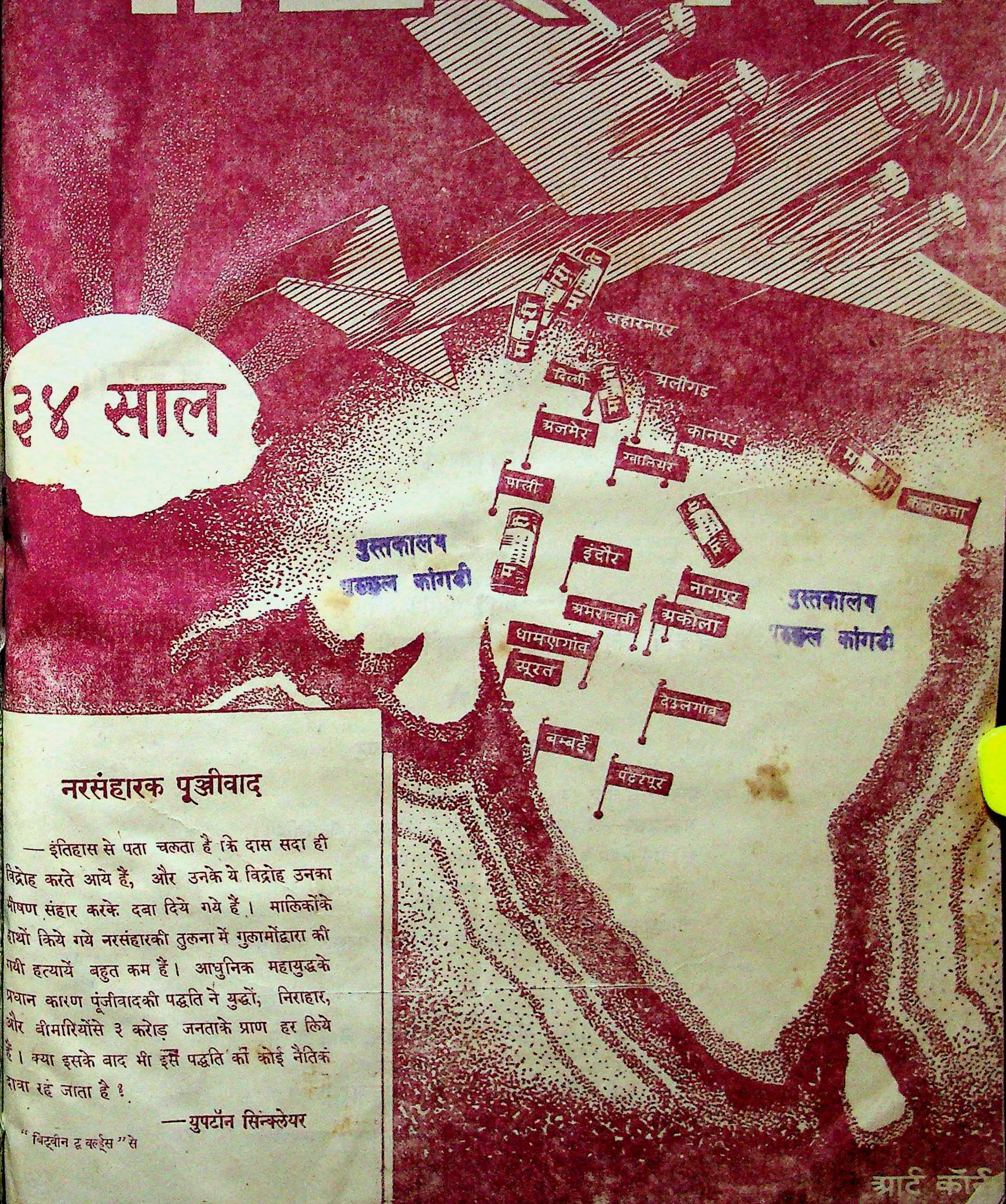
३४ साल
सहारनपुर
दिल्ली
अलीगढ
अजमेर
कानपुर
ग्वालियर
पाली
कलकत्ता
इंदौर
नागपुर
अमरावती
अकोला
धामणगांव
सूरत
देऊलगांव
बम्बई
पंढरपुर

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

नरसंहारक पूञ्जीवाद

—इतिहास से पता चलता है कि दास सदा ही विद्रोह करते आये हैं, और उनके ये विद्रोह उनका भीषण संहार करके दबा दिये गये हैं। मालिकोंके हाथों किये गये नरसंहारकी तुलना में गुलामोंद्वारा की गयी हत्यायें बहुत कम हैं। आधुनिक महायुद्धके प्रधान कारण पूंजीवादकी पद्धति ने युद्धों, निराहार, और बीमारियोंसे २ करोड़ जनताके प्राण हर लिये हैं। क्या इसके बाद भी इस पद्धति का कोई नैतिक दावा रह जाता है?

—युपटॉन सिन्क्लेयर

"बिट्वीन द् वर्ल्ड्स" से

प्रवर्तक—स्व. भागीरथदासजी भूतड़ा पाक्षिक कार्यालय—अली चेम्बर्स, डीन लेन, फोर्ट, बम्बई.

बिड़ला जूट मैन्यूफेक्चरिंग कं. लिमिटेड

मैनेजिंग एजेन्ट्स

बिड़ला ब्रदर्स लिमिटेड

८, रॉयल एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता

जूटकी दरियां, आसन, कार्पेट इत्यादि

व्यवहार करें

पक्का तथा सुन्दर रंग — भाँति भाँतिके मनोहर चित्रमय डिजाइन
चलनेमें अत्यन्त मजबूत — दाममें सूती मालसे बहुत सस्ते

हमारे प्रमुख एजेण्ट

बम्बई—दि मोटर हुड डिपो, ४८० सैंढर्स्ट रोड
अहमदाबाद—दि अग्रवाल हेशियन एजन्सी, जेठालाल वकील बिल्डिंग।
कराची—मेसर्स जे. ललवानी ऐण्ड कम्पनी, कागजी बाजार
इन्दोर—होम्स इंडस्ट्रियल एजेन्सी यशवंतगंज
खानदेश पूना, अहमदनगर और नासिक } मेसर्स लाहोटी ब्रदर्स, राजस्थान चौक, संगमनेर (अहमदनगर)

यदि आपके शहरमें कोई एजेण्ट नहीं है तो
एजेंसीके लिए हमसे पत्र-व्यवहार करें।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

सम्पादक
श्री. लक्ष्मीनारायण मालाणी,
श्री. राधाकृष्ण लाहोटी

माहेश्वरी

प्रकाशक
श्री. वसन्तलाल श्राफ़
बी.ए., बी.एस्.सी. एल्एल्. बी.

‘ उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत ’

वर्ष ३४, संख्या २२] बम्बई ता. २१ मार्च १९४४ [वार्षिक मूल्य ४॥ रुपया

प्रजारञ्जक गण-पति विक्रम

● डा. हेमचंद्र जोशी डी. लिट्. ●

मल्ल किसी गोत्र या जातिके आदमियोंका समूह नहीं था। वह युद्धजीवी एक गणका नाम था। प्रबंधचिंतामणि तथा विक्रमचरितकी एक प्रकाशित कथासे इस बातका पता चलता है कि जब अवंति या मालवामें गणराज्य कमजोर पड़ गया था उस समय मल्लोंपर महान संकट आया था। बकौल मेरुतुंगके–” दूर दूर देशोंमें रुकता हुआ वह अवन्तिके पास पहुंचा। वहां उसने जोरसे ढोल बजनेका शब्द सुना और उसका भेद जाना। वह चुपचाप ढोलके साथ साथ उस स्थानपर अवन्ति पहुंचा। चौवीस घड़ीके बाद मंत्रियोंने बिना शुभ या अशुभ मुहूर्त किये उसे राजसिंहासनपर बिठा दिया। अपनी चतुरतासे वह ताड़ गया कि “कोई महान राक्षस या देवता इस राजपर कुपित है और प्रतिदिन एक राजाको मारता है, तथा चूंकि यहां कोई राजा नहीं है, राजको उजाड़ता है। इसलिए भले या बुरे उपायसे चाहे जैसे हो मुझे उसे वश करना चाहिए।” “वि. च. की उक्त प्रतिमें यों लिखा है:–” अवंति राज्य शून्य हो गया। उसपर अग्निवेताल नामके एक देवता (देव) ने अधिष्ठान किया। वहां मंत्री लोग जिस जिसको नया राजा बनाते थे उन्हें वह रातमें मार डालता था किसी तरह उसका शमन नहीं हुआ। तब वहां की राजमंडली (राजवर्ग) किंकर्तव्य मूढ हो गयी। इस बीच विक्रमादित्य परदेशसे आया और यह सब देखकर उसने मंत्रियों से कहा—‘यह राज्य एकदम खाली कैसे हो गया है।’ उन्होंने उसे वेतालकी कहानी सुनायी। उसने कहा—‘तब आप आज मुझे राजा बनाइये।’ उन्होंने समझा कि यह आदमी औरोंसे अधिक तेजस्वी है, इस लिए उसे राजा बना दिया। उसने दिनभर राजकाज चलाया और शामको अपने पलंगके पास नाना प्रकारकी पकवानों समेत बलि रखी। और स्वयं भी पलंगपर जागता रहा। इतनेमें काल–विकराल रूपवाला वेताल आया। चारों ओर बलि का सामान देखकर कुछ समय खड़ा रहा और तब हथियार उठा कर मारनेको गया तो विक्रमने कहा—‘अजी, आप पहले बलि स्वीकार कीजिये, उसके बाद मैं तो आपके अधीन हूं ही।’ इसपर उसने बलि ग्रहणकी और बोला–‘हे वीर, यह राज्य मैंने तुझे दिया, पर भविष्यमें मेरेलिए इसी प्रकार प्रतिदिन बलि तैयार रखना, यह कहकर वेताल चला गया। प्रातःकाल जब मंत्रियोंने देखा कि इस बार राजा नहीं मारा गया वह जीताही है तो बड़े खुश हुए और बोले–“अहा? यह तो वीरचूड़ामणि है।” यह कहानी बर्लिनके प्रशियन बिब्लियोटेक की लाइब्रेरीमें रखी हुई ‘विक्रमचरित’ नामक हस्त लिखित पुस्तकसे लेकर वेबर साहबने अपने ग्रंथ ‘Indrsche Studien’ में दी है।

इन दोनों कहानियोंसे यदि कपोलकल्पित भाग उड़ा दिया जाय तो साफ झलकता है कि विक्रम मालवामें बाहरसे आया था और वह पहले बहुत साधारण स्थितिका मनुष्य था। और अपनी बुद्धि तथा पराक्रमसे ‘गणपति’ बना। क्योंकि जिस समय वह अवन्ति पंहुचा उस वक्त वहां के गणराज्यकी दशा महाभारतमें वर्णित अराजक राजकी भांति हो गयी थी। प्रजा मछलियोंकी भांति थी—बलवान दुर्बलको खाये जा रहे थे। स्वयं ‘गणपति’ की दुर्दशा थी। बात यह है कि भारतमें वैदिक कालसे गण थे * और अपनी प्रबल संघशक्तिके बलसे उनका राजकाज अति उत्तम रीतिसे चल रहा था। उस समय नाना गण अपनी संघशक्ति+ अर्थात् सब लोगोंमें परस्पर सहायता और मेलकी परम इच्छाके कारण अजय बने हुए थे। वैदिक तथा उपनिषदकालमें गणराज्यों की भरमार थी। और आर्य जाति गण, संघ, श्रेणी और कुल–शासनको ही सर्वश्रेष्ठ मानती थी। विक्रमके समयमें गण कमजोर पड़ने लगे थे। महाभारत तथा अर्थशास्त्रमें, गणोंमें फूट डलवाकर उनको जीतनेका आदेश है $। पर कौटिल्यने मत दिया है कि शक्तिशाली गणोंके साथ मित्रता करनी चाहिये। इससे पता चलता है कि—

---

* यद्यपि हिंदू संस्कृतिके परम भक्त और इतिहासके विद्वान डा. का. प्र. जायसवाल लिखते हैं:—“The early Vedas know only monarchy...The hymns of Rik and Atharvan... all point to the fact that republican form of government in India came long after monarchy, and after the early Vedic age.” पर इन पंक्तियोंके क्षुद्र लेखकको वेदों में केवल इंद्र ऐसा मिलता है जो एकच्छत्र राजाका प्रतीक है। और देवता, प्रायः सभी द्वैराज्य, कुल, संघ, श्रेणी तथा गणतंत्रके रूप हैं। स्वयं ‘सम्राट्’ शब्दका अर्थ वैदिक कालमें साथ चमकनेवाले गणसभाके सदस्य था। उस समय सम्राट्का अर्थ शाहंशाह नहीं था जो बादको हो गया। वेदमें सम्राट् वे हैं जो ‘सं राजन्ते’ सभा या समिति में एक संग बैठकर चमकते या गणों की सभामें शोभायमान होते हैं। ऋग्वेद १-२७-१ में ‘संराजन्ते’ शब्द इसी अर्थमें आया है। यहां इस विषयके प्रमाण विस्तारसे नहीं दिये जा सकते; क्योंकि स्थानाभाव है; किंतु ऋग्वेद की निम्न ऋचा सम्राट् का अर्थ स्पष्ट कर देती है। जब विवाह होता था तो बहूको आशीर्वाद दिया जाता था:—

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वा भव।
ननंदरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु ॥
१०.२५-४६

इसका अर्थ यह नही है कि हे बहू! तू श्वशुर पर राजकर, सासूपर सम्राज्ञी की भाँति हुक्म चला, ननदपर रोब जमा या देवरपर शासन कर; बल्कि इसका साफ अर्थ है, हे बहू! तू श्वशुर, सास, ननद और देवरके साथ ही, गणराज्यके नागरिकों की भाँति घरका सब कामकाज संभाल और गृहस्थीकी समृद्धि और शक्ति बढ़ानेके लिए तू उनकी सहायता कर। सम्राज्ञीका अर्थ यहां है—‘सहकर्मी,’। वैदिक कालमें इंद्रकोही एकराट् कहा गया है और किसी देवताको नहीं, उस समय ‘राजा’का अर्थ ‘गणपति’ था; क्योंकि कहा गया है—“ताः ईम् विशः न राजानम् वृणानां।” यहां गणके गणपतिको वरण करनेका जिक्र है। ऋग्वेदसे पता चलता है कि गण भारतमें वेदसे भी पहलेसे थे। “संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम् देवाः भागं यथा पूर्वे संजानानाः उपऽआसते।” इससे साफ पता चलता है कि देवताओंकी भी पहले ‘समिति=सं+इति’ थी और वे एक साथ एकही विचारके और मिलकर काम करते थे तथा वे बिना लोभके अपना अपना हिस्सा भोग कर उन्नति करते थे।’ “समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषां समानं मंत्रः अभिमंत्रये वः समानेन वः हविषा जुहोमि। समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः समानं अस्तु वः मनो यथा वः सुसहासति।” यह सूक्त भी स्पष्ट ही गणतंत्रकी समितिमें गाया जाता था, उसीमें इसकी उपयोगिता है अन्यत्र नहीं।

+ गणप्रशंसयोः किम् संघातः। काशिका पृ. २१४ (काशी संस्करण)।

$ महाभारतके समय गण कैसे महाशक्तिशाली और सुसंगठित थे उसका परिचय शांति पर्वके १०७ अध्यायसे चलता है। युधिष्ठिर भीष्मजीसे पूछते हैं:—

गणानां वृत्तिमिच्छामि श्रोतुं मतिमतांवर ॥ ६ ॥
यथा गणा प्रवर्द्धन्ते न भिद्यंते च भारत।
अरींश्च विजिगीषन्ते सुहृदः प्राप्नुवंति च ॥ ७ ॥

इससे साफ मालूम होता है कि गण उस कालमें

(पृष्ठ ७ के कालम ३ पर)

माहेश्वरी
ART CORNER

" कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन "

बम्बई, ता० २१ मार्च १९४४

घोर अन्न संकट : देश के धनिकों से दो शब्द

बंगालका दुर्भिक्ष जोरोंके साथ उसके समीपवर्ती प्रान्तों—आसाम बिहार और उड़ीसा में भी फैलता जा रहा है। उड़ीसामें अन्नाभाव ने हाहाकार मचाया हुआ है, वहाँ पर भीषण मृत्युसंख्यायें हो रही हैं। गाँवोंमें यमका साम्राज्य छाया हुआ है। आसामके गाँवोंकी कथा कुछ कम दर्दनाक नहीं है। सुरमा घाटीके एक बानियाचांग गाँवमें ही अन्नाभाव और मलेरियाज्वरसे ९००० व्यक्ति कालके मुखमें चले गये। ५० सैकड़ा विद्यार्थी भूखसे अशक्त होनेके कारण स्कूलोंमें नही जा रहे हैं। कितने ही कॉलेज तथा शिक्षण संस्थायें बन्द हो जानेका भय है। कलकत्ता विश्वविद्यालयके 'मानव विज्ञान' विभाग की ओरसे दुर्भिक्ष पीड़ित इलाकों की जांच करके जो आँकड़े बंगालकी दुर्दशाके सम्बन्धमें प्रकाशित हुए हैं, उन्हें पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उक्त रिपोर्टमें एक जगह बताया गया है कि अधिकांश स्थानोंमें स्त्रियोंसे पुरुषों की मृत्युसंख्या दुगुनी है, और पुरुषोंमेंभी चढ़ती उम्र के नौजवानों की अधिक मौतें हुई हैं।

भारतीय इतिहासमें यह मानी हुई बात है कि ५००० वर्ष पूर्व महाभारत युद्धमें नवयुवाओंकी मृत्यु हो जाने पर घरोंमें नारियोंकी संख्या बहुत अधिक बढ़ गयी थी, युद्धमें भारतके चुने चुने दिमाग तथा शूरवीर मारे गये थे, परिणामः देशको रास्ता दिखानेवाले विद्वानों तथा जन धनकी रक्षाकरनेवाले राजतंत्र अव्यवस्थित हो गयें थें, और उसीके पारिणामस्वरूप भारतमें वाममार्ग सदृश अनेक चारित्र्यशून्य पन्थोंका जंन्म हुआ, जिससे भारत लम्बे कालतक अविद्याके गहरे गड्ढेमें पड़ा करा हतारहा। आज जो बंगालकी तथा उसके आसपासके प्रदेशों की हालत है उसे देखकर भय होता है कि भारतमें कहीं महाभारतकालके बाद जैसी अनाचारिता और पापप्रवृत्ति न बढ़ जाये। बंगालकी दुर्दशा जिन्होंने अपनी आंखों देखी है, उनसे पता चलता है कि अनेक स्थानों में भुखमरी से तंग आकर कितनी अबलाओंने अपने सतीत्व को कुछ टुकड़ों पर बेच डाला है, कितने ही भले घरके व्यक्तियोंने अपनी नौजवान लड़कियो को अनाचारका पेशा करके पेट पालने पर विवश किया है। भारत जैसे कृषिप्रधान देश में लोगोंको चाहे कुछ भी कष्ट क्यों न हो, पर आज यातायातके सम्पन्न साधनोंके होते हुए देशके किसी भी भागमें कोई व्यक्ति अन्नाभाव से भूखों नहीं मरना चाहिये था। इस समस्या का समाधान करनेकी अपील हम आज अन्य किसीसे न करके अपने धनीवर्गसे ही करना चाहते हैं। जब कि देशकी राजनैतिक संस्थाओं पर कठिन नियन्त्रण चल रहा हो तो देशके धनीवर्ग ही एक मात्र रह जाते हैं जिनके पास इस प्रकारकी शक्ति है कि वे यत्न करें तो भारतके विभिन्न स्थानोंमें फैले दुर्भिक्षको आसानी से काबूमें कर सकते हैं। अनेक सभासोसायटियों की रिपोर्टोंसे पता चलता है कि बंगाल, आसाम उड़ीसा और बिहारमें फैले अन्नाभाव और दुर्भिक्षमें मुख्य हाथ व्यापारियोंका रहा है। ऐसा कहा जाता है कि बंगालमें जितना ही अधिक जोरोंका अकाल पड़ा उतना ही अधिक बंगालसे बाहरके धानके व्यापारियों ने चावलों के खत्ते के खत्ते रोक कर रख लिये ताकि भूखसे मरते आदमियोंसे वे मनमाना दाम वसूल कर सकें। जानकार क्षेत्रों की चर्चासे यह प्रकट हुआ था कि कितने स्थानोंपर व्यापारियोंने एकमन चावलको १०० रु. में वेचा है। गत सितम्बर मासमें ३५ रु. मन चावल तो मामूली बात समझी जाती थी। भारत जैसे गरीब देशके गरीब आदमी ऐसी दशामें अनाज कितने दिनों तक खरीद कर खा सकते थे, परिणामतः भुखमरीसे तड़फ तड़फ कर भारतके लाखों व्यक्तियोंके प्राण चले गये।

कितनीवार पत्रोंमें यह पढ़नेमें आया है कि भूखे-नंगे लोगों ने अन्नागारों पर हल्ला बोल दिया। आखिर भूखसे तड़फते व्यक्ति और किस उपाय का अवलम्ब लेते? 'बुभुक्षितः किं न करोति पापम्'—भूखा आदमी कौन सा पाप करने पर नहीं उतर आता?

युद्ध कालमें सब प्रतिबन्धोंके होते भी धनी लोगोंने अतुल धनराशि कमाई है। आज हम स्पष्ट देख रहे हैं कि देशमें कुछ व्यक्ति धनसंपन्न हो रहे हैं और शेष बड़ा भाग अर्थाभाव एवं अन्नाभाव के कष्ट से पीड़ित है। यह ठीक है कि अनेक विभागों में कार्य करनेवाले व्यक्तियोंको महंगाई भत्ता आदि दिये गये हैं पर उससे कुछ भी फर्क नहीं पड़ सकता क्योंकि आजकी महंगाई में रुपयेकी कीमत चार आनेसे भी कमही रह गयी है। जब देशमें एक ओर तो लाखों आदमियोंको कई कई दिनतक अन्नका एक दाना भी नसीब न होता हो, तो दूसरी ओर कुछ व्यक्ति पैसेको बटोरकर उसका आनन्द-उपभोग मानवहृदय रखते कैसे कर सकते हैं? भारतके वर्तमान राष्ट्रीय जीवनमें भारतीय उद्योगपतियों और व्यापारियोंका निःसन्देह बहुत भारी हाथ है। भारतके इन धनिकोंमें स्वदेशका अनुराग है, देशभक्तिकी भावना है, और भारतको समुन्नत देखनेकी आकांक्षा है। उनके इस प्रकारके भाव क्रियात्मकरूपसे जन-संस्थाओं तथा जनकार्योंमें प्रगट होते रहे हैं। इसी लिये हमारी उनसे हृदयसे यह प्रार्थना है कि वे भारतके इस अन्न संकटको हटानेका सक्रिय कार्य करें। ऐसा यत्न करना देशके धनिकोंके निजी स्वार्थ और हितकी दृष्टिसे भी योग्य ही होगा। कारण, यूरोपियन राष्ट्रोंकी अनेक क्रान्तियों ने हमें बताया है कि जब जब देशमें घोर दरिद्रता अन्नसंकट, भुखमरी आये हैं, और देशका केवल एक वर्ग ही सुखी-समृद्ध होता गया है तभी पीडित, त्रस्त एवं दुःखीजनोंने बाधित होकरके क्रान्तियोंको जन्म दिया है, जो क्रान्तियाँ किसी भी शक्तिके, बलके रोके रोकी नहीं जा सकी हैं। आखिर रूसमें जो साम्यवादी राज्यक्रान्ति हुई उसकी जड़में जनताके एक बड़े भागका घोर दरिद्र तथा भूखों मरना ही था। देशमें जब अधिक खुशहाली और समृद्धि हो तो क्रान्तिको जन्म लेनेका अवकाश ही नहीं होता। और सच बात तो यह है कि क्रान्ति तो लायी ही जाती है खुशहाली और सुख समृद्धिके लिये, अतः उसके उपस्थित रहने पर जनता व्यर्थमें क्रान्ति लानेके लिये कभी यत्न नहीं करती है। फ्रांसको १९, वीं सदी की राज्यक्रान्ति तथा जर्मनीमें गत युद्धके बाद जो जबर्दस्त क्रान्तियाँ हुई वे हमारी इस बातको ही पुष्ट करती हैं कि यदि धनी लोग समय रहते नहीं चेतते हैं तो पीड़ित और दलित गरीब जन समूह ही क्रान्ति करके सब बागडोर अपने हाथोंमें ले लेता है। हमारे देशके धनिकोंको अपने स्वार्थकी दृष्टिसे भी इतिहास की इन घटनाओंसे लाभ उठाना चाहिये। वे यदि वक्तपर नहां चेतेंगे तो सदाकी तरह इतिहास अपनेको दोहरा कर ही रहेगा। भारतीय सांस्कृतिक दृष्टिके अनुसार यहाँके धनीवर्गके अपने पैसेका सबसे बड़ा सदुपयोग गरीबोंकी रक्षा ही है। इन शब्दोंके साथ क्या हम यह आशा करें कि हमारे देशके धनवान पुरुष एक विशाल संगठन बनाकर इस प्रकारका यत्न शीघ्रसे शीघ्र प्रारम्भ करेंगे जिससे भारतसे अन्न संकट दूर हो जायेगा और देशका एक भी प्राणी अन्नाभावसे पीड़ित होकर प्राण नहीं खोयेगा।

विक्रम द्विसहस्राद्बि महोत्सव

इसी मासके अन्तिम दिनोंमें विक्रम द्विसहस्राद्बि महोत्सव देशके कोनेकोनेमें मनाया जायेगा। नृपति विक्रम की ऐतिहासिक स्थिति पर ऐतिहासिकोंमें बहुत अधिक मतभेद है। कुछ विद्वान् तो सम्वत्से सम्बद्ध प्रचालित विक्रमके ऐतिहासिक अस्तित्व तकको नहीं मानते हैं। इस प्रकारके ऐतिहासिक मतों की उलझनमें पड़ने की हमारी जरा भी इच्छा नहीं है। हमें मालूम है कि यूरोपके एक विद्वान्ने गत यूरोपियन महाभारतके दिनोंमें एक पुस्तक जगत्प्रसिद्ध नैपोलियनके विषयमें लिखकर यह सिद्ध करने का यत्न किया था कि नैपोलियन नामका कोई सम्राट् इटली तथा फ्रांसमें हुआ ही नहीं, संसारमें प्रकट ही नहीं हुआ था। जो व्यक्ति नैपोलियन जैसे पुरुषोंके ऐतिहासिक अस्तित्वको भी अपनी कलमके जोरसे गायब करने का दम भर सकते हों वे यदि दो हजार वर्ष पूर्वके एक भारतीय नरपति विक्रमके अस्तित्वसे इन्कार करें तो इसमें कुछ भी अचम्भा नहीं।

भारतीय इतिहासकी जो नयी खोजें हुई है, उससे स्पष्ट पता चलता है कि इस महापुरुष विक्रमने भारतमें डावाँडोल जनतंत्र (गणराज्य) प्रणालीको पुनः स्थापित किया था, वह सच्चे अर्थोंमें जनरञ्जक और नरपति (मनुष्यपालक) था। इन जनसेवाओंके आदरमें ही प्रजाने उसकी स्मृतिको स्थिर रखनेके लिये उसके नामसे कालगणना प्रारम्भ की। भारतीय संस्कृतिके रक्षकको अमर रखनेके लिये भारतीय जनता की यह श्रद्धाञ्जलि आज दो हज़ार वर्षोंके लम्बे कालमें भी सूखने नहीं पायी है।

राजपूताना मध्यभारत राजनैतिक कार्यकर्ता सम्मेलन

ति. २-३ अप्रैलको उदयपुरमें राजपूताना मध्यभारत राजनैतिक कार्यकर्ता सम्मेलन होगा। समस्त रियासतोंमें जनगणना तथा सीमाविस्तार आदिकी दृष्टिसे राजपूतानाका विशेष महत्वका स्थान है, परन्तु इसके साथ ही हमें खेदके साथ यह कहना पड़ता है कि रियासतोंके इस विशाल प्रदेश में उतनी ही विशाल अशिक्षा, तथा कुरीतियोंका राज्य भी फैला हुआ है। यह ठीक है कुछ राज्योंके नरेशोंने अब अपने यहां शिक्षा तथा सुधारके कुछ प्रशंसनीय कार्य करने की ओर उत्साह दिखाया है, फिर भी राजपूतानेके राज्यों के तंत्रों की नीतिके कारण ही श्री जयनारायणजी व्यास आदि सदृश निरीह लोकसेवक आज जेलके कठिन सींकचों में बन्द पड़े हुए अपने जिन्दगीके दिन काट रहे हैं। हम सच्चे हृदयसे यह चाहते हैं कि रियासतोंके राजा इस बातको अनुभव करें कि उनकी स्टेट्स का हित जीहजूर व्यक्तियोंसे कभी नहीं होगा, होगा तो उन्हीं जनसेवकोंसे होगा जो अपने पवित्र कर्तव्य पर चलनेके कारण आज बन्दी जीवन बिता रहे हैं। आजके संसारकी हवाको देखते हुए, और वैसे भी राजाओंको यह बात समझ लेनी चाहिये कि प्रजामें सुख तथा सन्तोष (प्रजाके अपने विचारानुसार) का बढ़ना राजाओंके निजी स्वार्थकी दृष्टिसे भी एक वाञ्छनीय वस्तु है।

इसके साथ ही हम सम्मेलनमें पधारे महानुभावोंसे यह प्रार्थना करेंगे कि वे आपसके विचारविनिमय द्वारा इस प्रकार की योजनायें बनायेंगे जिससे राजपूताना की जनता की शारीरिक, बौद्धिक और मानसिक उन्नति क्रियात्मक रूपसे हो सकेगी। उदयपुरमें अभी थोड़े दिनोंमें ही जनकल्याणकी अनेक प्रवृत्तियाँ देखनेमें आयी हैं। हम सम्मेलनका स्वागत करते हुए उसकी सफलता की हृदय से पूर्ण कामना करते हैं।

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

सामयिक विचार प्रवाह

दुर्भिक्ष पर कलकत्ता वि. विद्यालय

कलकत्ता विश्वविद्यालयके मानव विज्ञान विभागने बंगालमें फैले दुर्भिक्षकी जाँचके लिये अपना विभाग नियुक्त किया था। प्रो. चट्टोपाध्यायकी अध्यक्षतामें उसने जो बस्ती–बस्तीमें घूमकर आँकड़े इकट्ठे किये हैं, वे बड़े ही संयत तथा नपेतुले शब्दोंमें विश्वविद्यालयद्वारा प्रकाशित रिपोर्टमें दिये गये हैं। उन्हें पढ़कर बंगालके भीषण दुर्भिक्षका जो सही तथा प्रामाणिक वृत्त मिलता है उससे युद्धपूर्वके 'शस्य श्यामला' बंगालके लिये हृदयहीनसे हृदयहीन व्यक्ति को भी मर्मान्तक कष्ट पहुँचे विना न रहेगा। रिपोर्टमें कहा गया है कि;—

"बंगाल के दुर्भिक्ष पीड़ित १० जिलों का अवलोकन और अध्ययन किया गया। अभी तक केवल ८ जिलों के सम्बन्ध में ही आँकड़े मिलसके है। जाँचसे पता चलता है कि यह कहना वहुत कम होगा कि आवादी का दो तिहाई भाग अकाल से प्रभावित हुवा होगा। इसी बुनियादपर हम कहसकते हैं कि कहत से ३५ लाख से कही अधिक ही लोग मरे होंगे। बर्दवान जिले में शिशुओं की मृत्युसंख्या सवसे अधिक रही, ५ वर्ष की वय के बच्चों की मृत्यु औसत ५० सैंकड़ा तक रही है। युवतियों से युवक बहुत बड़ी संख्या में मरे हैं। किसी किसी स्थान पर तो औरतों की अपेक्षा दुगुने पुरुष मरे हैं। अनेक परिवारों में कमानेवालों की मृत्यु हुईं। यदि आश्रयविहीन स्त्री और बच्चों को आर्थिक रूपसे भोजन देने की योजनानुसार व्यवस्था न की जायेंगी तो मृत्युसंख्या और भी बढ़ेगी। वेश्यावृत्ति सरीखे अनेक सामाजिक पाप और बुराइयों की वृद्धि होगी। जमीन आबाद करनेंवाले किसानों की ३० प्रति शतक जायदाद चली गयी। मलेरिया तथा, अन्य महामारियों के भीषण प्रकोप से आबादीका बड़ा हिस्सा निकम्मा तथा अशक्त हो चुका है।

युद्धके बाद भारतका सहयोग

मि. कार्ल हीथ अपने स्पष्ट विचारोंके लिये यूरोपमें एक विशेष स्थान रखते हैं। अभी आपने लन्दनके 'फ्रैन्ड' नामक पत्रमें भारत के वायसराय लार्ड वावेलके भाषण की आलोचना करतें हुए कुछ मर्मकी बातें कहीं है। आपके लेखका सारांश हैः—

'केन्द्रीय और प्रान्तीय सरकारोंमें नौकरशाही की स्वतंत्रता अभी तक ज्यों कीं त्यों बदस्तूर कायम है। यदि स्थितिको सम्हाल लिया जाय तो भारतमें स्वेच्छसे सहयोग प्राप्त हो जावे। भारत की स्थितिका बदलना अब तक हमारे ही हाथ है। हमारा ही पूर्ण अधिकार है, और पूरी जिम्मेदारी है। भविष्यके संवारनेमें हमारा बड़ा हाथ है। हम लॉर्ड वेवेल की योग्य प्रशंसा करते हैं, किन्तु खानोंमें औरतोंको काम पर भेजना, आबकारी की मनाही उठाना, भारत रक्षा विधानका दुरुपयोग, और श्रीमती नायडू की नजरबन्दी आदि ऐसी कुछ घटनायें है, जिन्हें हम युद्ध की आवश्यकता बताते हैं, किन्तु बात वास्तवमें वैसी है नहीं। हमें याद रखना चाहिये कि जब तक हम भारतको नया और स्वतंत्र विधान नहीं बनाने देते तब तक हमको ही जिम्मेदार रहना पड़ेगा। यह उम्मीद करना निरीमूर्खता है कि युद्धके वाद भारत हमारा सहगामी बना रहेगा, जब हम इस समय ऐसे विरोधी भावनाके बीज बो रहे हैं।

टिहरी राज्य में अन्धेर

टिहरी के जनसेवक श्री देवसुमनको राजद्रोह के अभियोग में जो सजा दी गयी है, वह टिहरी में छाये हुए अंधेर को प्रगट करने वाली ऐसी घटना है, जिसकी ओर सहसा सारे देशका ध्यान आकर्षित हो जाना सहज एवं स्वाभाविक है। समाचारों से यह पता चलता है कि उनके विरुद्ध राजद्रोह का मुकद्दमा चलाया गया और कुछ सरकारी गवाहों के आधार पर, उनको सफाईका मौका भी न देकर, दो वर्षकी कड़ी कैद और दो हजार रुपये जर्मानें की सजा दे दी गयी। देसी राज्यों में अदालती न्याय का नाटक खेला जाकर निरपराध जन-सेवकों को किस प्रकार अकारण ही जेलों में ठूस दिया जाता है,—इसका एक नमूना श्रीदेवसुमन के विरुद्ध चलाया गया यह मुकदमा और उनको दी गईं यह कठोर अमानुषिक सजा है। अदालत में दिये गये बयान के बाद भी इस सजा का दिया जाना कठोरता की चरम सीमा है। इस दमन के भरोसे जो लोग अपने शासन को बनाये रखना चाहते हैं, वे मूर्खों की दुनिया में विचरने वाले हैं और उनपर निर्भर रहने वाले शासक दमन की राखके तले प्रजा के असन्तोष की चिनगारी को दबाकर चैन की नींद सोनेका पागलपन करनेमें लगे हुये हैं। इसीलिये टिहरी के 'बोलते बद्रीनाथ' महाराजको हम इस मूर्खता और पागलपन से समय रहते सावधान कर देना चाहते हैं।

आगरा जेलसे छूटने के बाद जनता की विशुद्ध सार्वजनिक सेवाके लिये राज्य का सहयोग प्राप्त करने की सदिच्छा से श्रीदेव सुमन टिहरी गये थे। इस बीच उन्होंने कोई भी ऐसा काम नहीं किया था, जिससे उनपर राजद्रोह का सन्देह भी किया जा सकता। समाचार पत्रोंमें प्रकाशित वक्तव्यों में उन्होंने अपनी इच्छा और सद्भावना को प्रगट करने में जरा-सा भी संकोच नहीं किया था। रजिस्ट्रेशन के कानून को आपत्तिजनक मानते हुये भी प्रजामण्डल की उसके आधीन रजिस्ट्री कराने के लिये भी वें तय्यार थे। महाराज की छत्रछाया में वैध एवं शान्त उपायों से उत्तरदायी शासन की प्राप्ति के ध्येय में राजद्रोह देखनेवालों की बुद्धि पर हमें रह-रह कर तरस आता है। राज्य शासन और उसके कानूनों की वैध आलोचना में विद्रोह की कल्पना करने वालोंके लिये क्या कहा जाय? महाराज के प्रति श्रद्धा-भक्ति एवं सद्भावना रखने वालों को जब दो साल की लम्बी सजा दी जा सकती है, तब फिर 'राजभक्त' किसे कहा जा सकता है? इससे बड़ा अन्धेर, अनर्थ और अन्याय दूसरा नहीं हो सकता।

श्री मदनलालजी पित्ती गिरफ्तार

कौंसिल ऑफ स्टेटके कांग्रेसी सदस्य एवं बम्बई मारवाड़ी समाजके सुप्रसिद्ध नेता श्री गोबिन्दलालजी पित्तीके ज्येष्ट पुत्र सुप्रसिद्ध कार्य कर्ता श्री मदनलालजी पित्ती एम. ए., एल. एल. बी., बार एट लॉ को ता. १७ मार्च १९४४ को अपने निवास स्थान पर बम्बईकी छिपी पुलिसने इन्डिया डिफेन्स एक्ट के मार्फत गिरफ्तार किया एवं उनके निवासस्थानपर पुलिसने दो घंटे तक खाना तलाशीली।

श्री. शास्त्रीका शान्तिका सुझाव

१२ मार्च की प्रातः जैन बोर्डिंग हाउस, बम्बईमें एक बड़ी सभामें राईट ऑनरेबुल श्री. श्रीनिवास शास्त्रीने सदैवकी भाँति अपने लम्बे भाषणमें कुछ विद्वतापूर्ण बातें तथा सुझाव रखे हैं! आपने कहा कि युद्धके बाद शीघ्रही एक शान्ति सम्मेलन बुलाया जाना चाहिये जिसमें भिन्न भिन्न राष्ट्रोंके योग्यतम तथा असली प्रतिनिधि अपने देशकी कल्याणमयी भावनाओं और माँगोंको इस सम्मेलनमें उपस्थित करें। शान्ति सम्मेलनमें बैठकर हमें यह यत्न करना चाहिये कि संसारसे सदाके लिये युद्धोंका अन्त होजाये, विश्वमें सच्ची शान्ति तथा सुख समृद्धिका बोलवाला होवे, मानव एक दूसरेको मानव मानकर परस्परमें प्रेम तथा भ्रातृभावसे बरते। संसारके समस्त प्राणी विश्वको अपना कुटुम्ब मानकर रहें। मनुष्य जहाँ दूसरी खराब चीजोंके लिये अपने विशाल यत्न कर सकता है, उसे इन उच्च उद्देश्योंके लिये भी एकबार संगठित रूपसें यत्न करना ही चाहिये। यदि इस विचारको केवल आधी दर्जन महापुरुष भी फैलाने लगें तो इसका फैलना कुछ असम्भव नहीं।

यह ठीक है कि हमारे भारतकी स्थिति अन्य देशोंसे सर्वथा विभिन्न है। यहाँ पर बिल्कुल विदेशी सरकारका ही राज्य है। जो सरकार कि अपने विचार रहनसहन और उद्देश्योंमें सर्वथा विदेशी है। परन्तु यदि हमारे देशकी जनता और प्रैस बाधित करे तो इस विदेशी सरकारमें भी मौलिक परिवर्तन प्रैस हो सकता है। मुश्किल तो यह है कि हमारे नेता और पैस इस महत्वपूर्ण अवसरको समझ नहीं रहे हैं।

शान्तिसम्मेलन में हम अपने उन्हीं प्रतिनिधियों को भेजेंगे जो देश में शान्ति फैलाने पक्षावालों के विचारों को रखेंगे, और जो भारत के ऋषियों की महत्ता और उनके उच्च विचारों तथा कार्यों के प्रशंसकों का आदर करेंगे। हमारे इन प्रतिनिधियोंका सबसे पहला कदम होगा सब राजनैतिक कैदियोंकी रिहा की माँग। और इसके बाद भारतभरमें प्रतिनिधिसभाओं के नये आमचुनाव किये जायें। वायसरायकी कोन्सिल तथा अन्य सभासमितियों का भी अधिकतम भारतीयकरण किया जाये इन सभीओंके चुने प्रतिनिधि शान्तिसम्मेलन में जाकर अपनी सच्ची माँगें रखे और यह यत्न करें कि वे भी संसार की दूसरे राष्ट्रोंके समान माने जावें, गोरे कालेका भेदभाव उनसे न किया जाये, और पश्चिमके मुकाबले में पूर्वीय देशोंके निवासियोंको भी पूर्ण आर्थिक विकास की सुविधा तथा अधिकार मिलें।

माहेश्वरी सहायता

१०१) 'माहेश्वरी' पत्रके लिये श्री. सेठ चिम्मनलाल जी बीम्मानी सिवनी निवासी, ने अपने पुत्र श्री. भगवानदासजी बी. ए. के शुभ विवाह पर।

राजस्थानी शिक्षा प्रसारक मण्डल

१०००) श्रीमती गीताबाई बागड़ी, धर्मपत्नी श्री. माणकचन्द्जी बागड़ीने उक्त संस्थाकी सहायतार्थ दिये।

श्री शास्त्री संसारके माने गये विचारकों में से हैं। उनके विचारों की उच्चता में तो कभी किसी को सन्देह हुआ ही नहीं। उन्होंने जो कुछ सदाशय प्रगट किया है, वह संसारमें क्रिया में आजाये तो सचमुच मानवका कल्याण होगा, पर श्री शास्त्रीने यह नहीं बतलाया कि सारसंसार की इस अशान्ति की जड़ भारत की पराधीनता को कैसे हटाया जाये। कारण, जब तक भारत पराधीन है तब तक उसको शान्ति सम्मेलन में प्रतिनिधित्व का सच्चा अधिकार मिल सके यह सोचा ही नहीं जासकता। अटलान्टिक चार्टके उत्तरमें प्रधान मंत्री मि० चर्चिल की जब यह स्पष्ट घोषणा है कि ब्रिटेनके विशाल साम्राज्यको अपने हाथों नष्ट करनेके लिये, उन्होंने ग्रेटब्रिटेन का प्रधानमंन्त्री का पद नहीं ग्रहण किया है, तब श्री शास्त्री विदेशी सरकार के व्यवहार, तथा विधान में मौलिक परिवर्तन की आशा कैसे कर सकते हैं। जबतक विदेशी सरकारमें मौलिक परिवर्तन नहीं होता तबतक भारतकी प्रतिनिधि सभाओंके नये आम चुनावों और कौंसिलों तथा सभा-समितियोंके अधिकतम भारतीयकरणका कुछ भी अर्थ नहीं। नये शासन विधानमें प्रतिनिधि सभाओंकी प्रत्यक्ष बागडोर अपने हाथोंमें सम्हालनेके बाद कॉंग्रेसी मंत्रिमण्डलोंको जो अपनी स्थितिका वहाँ पता चला था वह किसीसे छिपा नहीं है। आज कॉंग्रेसकी मिनिस्ट्री किस शक्तिने खत्म कर दी है, यह किसे पता नहीं? फिर आम चुनावोंका क्या लाभ?

रूस की आश्चर्यपूर्ण विजयों का रहस्य

★

डॉ० **परम वेदालंकार**, भू. पू. सम्पादक **दैनिक समाचार**
संचालक **सरस्वती प्रेस** माण्डले

वर्तमान महायुद्धको आश्चर्य भरा युद्ध कहा जाये तो अत्युक्ति न होगी। हिटलर ने जो प्रथम विजय प्राप्त की वे आश्चर्यपूर्ण ही थीं, पर उस की इन सब विजयोंसे भी कहीं अधिक चमत्कार सोवियट रूसकी सैनिक शक्ति तथा दृढ़ताने संसारको दिखाया। समग्र संसार आश्चर्यसे भरकर साम्यवादी रूसकी ओर आज देख रहा है। रूसने यह जादूमयी ताकत कहाँसे ली इसीका थोड़ासा दिग्दर्शन इसलेखमें किया गया है।

—सम्पादक

किसी भी देशको जिन्दा रहना है तो उसे अपने देशके प्रजागण का स्वास्थ्य उन्नत करना ही होगा। स्वास्थ्यको स्थिर रूपसे बनाये रखनेमें अर्थ का—सम्पत्ति का मुख्य हाथ होता है। जनता को आर्थिक दृष्टिसे डावाँडोल रखकर कोई राष्ट्र बहुत लम्बे काल तक अपने यहाँ स्वास्थ्यको फलता फूलता देखने की इच्छा करे तो यह एक असंगत तथा असम्बद्ध इच्छा ही होगी। सोवियट रूसमें प्रत्येक नागरिक आर्थिक अस्थिरता से पूर्णतया मुक्त है, उसे बेरोजगारी की चिन्ता का घुन कभी नहीं खाता है, और वह यदि कभी किसी लम्बी बीमारीका शिकार दौर्भाग्यसे हो भी जावे तो उसे सरकारकी ओरसे यह पूरी गारन्टी है कि वह उन दिनों भी बिना कुछ काम किये पहले के समान पूरा वेतन पाता रहेगा। सोवियट रूसके प्रत्येक नवयुवकको कोई एक काम अपने हाथमें लेना आवश्यक है, सख्तसे सख्त काम करते हुए भी उसे अपने स्वास्थ्यकी फिक्र करने की जरूरत नहीं रहती है, क्योंकि प्रत्येक साम्यवादी नवयुवाके स्वास्थ्य तथा सुख-समृद्धि का उत्तरदायित्व सरकारने सीधा अपने ऊपर ले रखा है।

सोवियट स्वास्थ्य विभागका सबसे अधिक जोर तथा यत्न रोगकी रुकावटके लिये रहता है। वे ऐसा प्रबन्ध तथा व्यवस्था करते रहते हैं जिससे बीमारी पैदा ही न होवे। शिशु अभी माता के पेटमें ही होता है कि वे उसे तभीसे अरोग रखनेके सब संभव उपाय—व्यवस्था करते हैं। सोवियट सरकार अपनी प्रजाको रोगी बननेके बाद नीरोग करनेकी अपेक्षा अरोग— अर्थात् प्रारम्भ से ही रोगरहित रखनेमें अधिक यत्नशील है। शिशुके अभिभावकोंको बिना किसी फीसके अच्छेसे अच्छा डाक्टरी मदद—मशविरा दिया जाता है। उन्हें प्रेरणा की जाती है कि वे अपनी सन्तानको प्रथम माससे ही सूर्य की धूप, खुली वायु, और प्राकृतिक जल का पूरा-पूरा लाभ पहुँचावे, क्योंकि शरीर को स्वस्थ रखनेमें ये तीनों तत्व बड़े ही सहायक होते हैं। स्कूल जानेवाले २ करोड़ बच्चोंके लिये बड़े—बड़े जिमनैशियम, और क्रीड़ाक्षेत्रों का प्रबन्ध होता है जिनमें शरीरको हृष्टपुष्ट बनानेवाले व्यायामोंके सभी साज-सामान होते हैं। स्कूल जानेकी उम्र से पूर्व नाज़ुक उम्रके शिशुओं की पूरी-पूरी देखभाल सरकारी क्रेशेस (Creches) के सुपुर्द होती है, जहाँ उनके नन्हे नन्हे बच्चोंके शरीर तथा मनके स्वास्थ्य का पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। प्रसूतिसे काफी महीनों पूर्वसे गर्भिणी के स्वास्थ्य तथा सुख का पूरा-पूरा ख्याल रखा जाता है उसे व्यर्थ के श्रम चिन्ता से बरी रहने की सब सुविधायें दी जाती हैं। इस तरह सोवियट नारी सब चिन्ताओं से मुक्त होकर प्रसन्नता के साथ संसार में एक स्वस्थ शिशु को जन्म देती है। प्रसवके बाद जब माता अपने को किसी श्रम के योग्य अनुभव करने लगती है तब वह खुशी-खुशी किसी फैक्टरी या स्टेटके खेत पर काम करने जाती है। उसके पीछे उसके शिशु की देखभाल सरकारी क्रेशेस (Creches) में अनुभवी डाक्टर तथा नर्सें करते हैं

सोवियट यूनियन 'फिजिकल कल्चर' (शरीर निर्माणपद्धति) पर विशेष बल देता है। इस सम्बन्धमें रूसके सर्वप्रथम स्वास्थ्य मंत्री श्री, एन. ए. सेमाश्कोके विचारोंका उल्लेख करना अनुचित न होगा। वे अपनी प्रसिद्ध पुस्तक " सोवियटरूसमें स्वास्थ्य रक्षा " में लिखते हैं—" विभिन्न रिपब्लिकोंके स्वास्थ्य विभागोंने यह अच्छे प्रकारसे अनुभव कर लिया है कि देशको व्यवसाय, कृषि तथा आर्थिक दृष्टिसे उन्नत करनेके लिये राष्ट्रकी प्रजाका शरीर पूर्णतया विकसित होना चाहिये। शरीरके सर्वाङ्ग विकासके लिये नागरिकोंको शरीर निर्माण पद्धति का नियमपूर्वक ज्ञान तथा शिक्षा दिये जाने चाहियें। देशको सुरक्षित रखनेके लिये शरीर निर्माण पद्धति की शिक्षा बड़ी आवश्यक है। हमारी ये व्यायामें विज्ञान पर आश्रित होनी चाहियें। उनमें सूर्यके प्रकाश, वायु, और पानीका विशाल परिमाणमें बुद्धिमत्ता के साथ पूरा पूरा उपयोग किया जाना चाहिये। हमारे श्रमियोंको सर्वत्र कारखानेमें या घरमें सदा स्वास्थ्यके नियमों का ध्यान रखना चाहिये। श्री सेमाश्को के उपरोक्त सुझावों के अनुसार कार्यकर्ताओंको भिन्न-भिन्न प्रकार के व्यायाम कराये जाते हैं। उदाहरण के लिये, जिन व्यवसायों में काम करने वाले रूसियोंको साँस में धूलिकण जाने का भय रहता है, वहांवे अपना काम समाप्त करनेके बाद घरोंमें जाकर नियमपूर्वक दीर्घश्वासके व्यायाम करते हैं, और जिन धन्धोंमें कार्यकर्ताओंको बैठे रहना पडता है, वहांके लोग नियमपूर्वक भ्रमणका व्यायाम करते हैं।

रूसमें खेलोंको बड़े पैमानेपर प्रोत्साहन दिया जाता है। परन्तु वहांपर अन्य देशोंके समान पेशेवर खेलों (Professional) का सर्वथा अभाव है। सर्वसाधारणके लिये हजारों क्लबें देशमें खोली गयी हैं।

इन क्लबोंके सदस्योंको वहाँ नियमपूर्वक खेलोंकी ट्रेनिंग भी दी जाती है और हर तरहका सामान जुटाया जाता है। ट्रेनिंग विशेषज्ञोंको इसीके लिये स्थापित स्कूलों तथा कॉलिजोंमें बाकायदा शिक्षा लेनी होती है। इस प्रकारके विशेषज्ञोंको ट्रेनिंगकी शिक्षा देनेके लिये सरकारकी ओरसे २५ स्कूल और छः कालिज खोले गये हैं। सोवियट रिपब्लिकके लाखों सदस्यों ने इन शिक्षणालयोंसे ट्रेनिंग विशेषज्ञका डिप्लोमा प्राप्तकर अपने देशको सुरक्षित रखनेका गौरव अनुभव किया है।

रूसी सरकारने रूसी जनताको स्वास्थ्यप्रद भोजन खिलानेका उत्तरदायित्व भी अपने ऊपर लिया हुआ है। भोजनमें किन किन पोषक तत्वोंका समावेश होना चाहिये, इसकी एक विस्तृत सूचि, स्टेटके विशेषज्ञ चिकित्सकोंसे बनवाकर स्टेटने रूसके हरेक होटल, विश्रामगृह, और घरको दी हुई है। प्रत्येक कैन्टीन, होटल और सरकारी भोजनगृहोंमें नियमपूर्वक एक पथ्य विभाग रहता है। इन सबका निरीक्षण " स्टेट खाद्य संस्था " के आधीन रखा गया है। उक्त संस्थायें खाद्यपदार्थोंके पोषकतत्वों पर परीक्षण करती रहती हैं, और पथ्यके विशेषज्ञों को ट्रेनिंग देती हैं। इस संस्थाके ट्रेन्ड विशेषज्ञों का काम होता है कि वे कैन्टीनके भोजन, खाद्यपदार्थोंके संग्रह तथा स्वस्थ होना आदिका ध्यान रखें और नागरिकोंके शरीर तथा स्वास्थ्यके उपयुक्त पथ्य बनानेका आदेश करे। इस प्रकार एक रूसी श्रमीको उसके स्वास्थ्यके अनुसार भोजन मिलनेकी सुविधा रहती है। सरकारी फार्मों (खेत) में काम करनेवाले व्यक्तियोंके लिये, स्टेटकी ओरसे भोजनगृह, वस्तु भण्डार, और स्वास्थ्य केन्द्र खुले हुए हैं। रूसमें सन् १९३२ में ४२·८ प्रतिशतक व्यक्ति अपना मुख्य दैनिक भोजन सरकारी भोजनालयोंमें करते थे। उक्त भोजनालयोंके पथ्य-आहार पर स्टेटके पथ्य विशेषज्ञोंका विशेष निरीक्षण रखा गया है।

रूसने स्वास्थ्योन्नतिकी ओर अभी एक और प्रगतिशील कदम बढ़ाया था। उसने सर्वसाधारणके आरामके लिये सुन्दर एवं स्वास्थ्यप्रद स्थानोंमें सैनाटोरियम खोले थे। ट्रान्सकाकेशिया, ऑडिस्सा, और युक्रेन में उत्तम जलवायुके केन्द्र स्थापित किये थे। क्रीमिया और कॉकेशियन जिलोंमें खनिज पदार्थोंवाले जलोंके झरनोंके तटपर आरोग्य भवन स्थापित किये थे। औषधके गुणोंवाले जलोंके स्थानोंको ढूँढ ढूँढ कर, स्वास्थ्यागारोंसे सम्पन्न किया था। क्षयके रोगियोंके लिये स्टेपीजके मैदानोंमें विशेष चिकित्सालय तथा आतुरालय खोले हैं, जहाँपर उत्तम जलवायुके साथ—साथ उस जिले की घोड़ियोंके दूधसे क्षय रोगग्रस्त व्यक्तियोंका सफलताके साथ इलाज किया जाता है। स्टेपीज का उक्त प्रदेश 'घोड़ियों के दूधवाला जिला' के नामसे रूसमें मशहूर होगया है। इन स्वास्थ्यागारोंमें रोगीका खर्चा स्टेट उठाती है।

सोवियट रूस ने तो ऐसा लगता है जैसे अस्वास्थ्य का, दुर्बलता का अपने देशसे नाम-चिन्ह तक मिटादेने का संकल्प कर लिया है। उसने जनता के लिये रात्रि स्वास्थ्यगृह (Night sanatoria) चालू किये हैं। किसी भी रोग से चंगा होने के बाद जब बीमार हस्पताल से बाहर आता है तो अभी उसमें काफी कमजोरी बची होती है। वह रोग से मुक्त तो होगया है, पर भोजन की जरासी भी असावधानी से विश्राम में थोड़ी सी भी कमी या बाधा से वह फिर बीमार पड़ सकता है। ऐसे व्यक्तियोंको स्टेट की ओरसे 'रात्रि स्वास्थ्यगृह' में रहने की सुविधा दी जाती है। डाक्टर की हिदायतोंके अनुसार ही कारखानों—फार्मों आदिमें उनसे उनकी शक्तिके योग्य काम लिया जाता है। काम करनेके बाद ये लोग 'स्वास्थ्यगृह' में आकर स्नान करते हैं और वस्त्र बदल कर भोजन शालामें पहुँच जाते हैं जहाँ पथ्यविशेषज्ञ की हिदायतके अनुसार उन्हें शक्तिप्रद एवं उपयुक्त पथ्य दिया जाता है। भोजनके बाद वे अपने शयनगृहमें चले जाते हैं और निश्चिन्त होकर सारी रात स्वास्थ्यप्रद नींद लेते हैं। रातको डाक्टरकी देखरेखमें उनकी सब खिड़कियाँ खुली होती हैं। स्वच्छ और ताजी हवा उन्हें शीघ्र ही फिरसे पूर्णतया सबल सशक्त बनाती है। इस तरह सुखकी नींद सोकरके उठनेके बाद यह दुर्बल व्यक्तिभी अब कलके श्रमकी थकान को उतार फैंकता है और प्रसन्नतासे भरे चेहरे और मनके साथ अपने देशके उद्योग—धन्धेको बढ़ानेके लिए अपनी ड्यूटी पर जा डटता है।

जर्मनीसे रूसने जो इस युद्धमें लोहा लिया है उसमें मुख्य हाथ सोवियटरूसके सुन्दर स्वास्थ्यका है, यदि हम ऐसा कहें तो कुछ अत्युक्ति नहीं समझी जानी चाहिये। उनके स्वास्थ्यने समग्र राष्ट्रमें स्थिरता, दृढ़ताके साथ सशक्त वीर-सैनिकोंको जन्म दिया है। इसीका यह परिणाम है कि जहां अन्य देशोंमें रंगरूट भरती करनेके लिये शारीरिक माप-तोल और ऊँचाईका स्टैन्डर्ड गिराना पड़ा है, वहाँ रूसने अपने यहाँ स्टैन्डर्डको बहुत ऊँचा करनेका गौरव प्राप्त किया है। उदाहरणके लिये ऊँचाई १·०७ इंच, भार लगभग ५ पौण्ड, और छाती का माप ६ इंच अधिक बढ़ा दिया गया है।

राजस्थान री वीररसपूर्ण कविता री मज़ो

ले. राजस्थान केसरी देशभक्त कुंवर चांदकरणजी शारदा एडवोकेट

हिन्दी भाषामां भूषण कवि री रचना घणी वीरतापूर्ण मानी जाय छे। पण यदि आपां राजस्थानी भाषारी डिंगल री कविता पढ़ां तो आपांकी नस नसमें वीरताको खून उबलवा लाग जावे। इण वास्ते ही कवि कह्यो है:—

जनता पर राजस करे,
जिम पत शाहजहान।
भाषा पर राजस करे,
भाषा राजस्थान॥

अबार थोड़ा दिनांसे राजस्थानी साहित्यका बारामें काफी जागृती हुई है। बूंदीका सूरजमल्लजीकी "वीरसतसई" का २७५ दोहा। ईश्वरदानजी बारट टहला मारवाड़वालारी ३२ कुण्डलियां। बांकीदासजीकी 'सूरछत्तीसी,' 'दुस्साजी अडा' पांचेस्या मारवाड़वालांकी 'विरद छपंत्री' जिमें ७६ दोहा महाराणा प्रतापकी प्रशंसामें लिख्यो है। ए पुस्तकाने बांचवांसे राजस्थानको सती चित्रण, राजस्थानकी सभ्यता और राजस्थानकी वीरताको पूर्ण इतिहास ज्ञात हो जावे छे।

राजस्थानमें तो ठेठसे ही स्त्री जाति आपका पति, भाई आर पुत्रने देश, जाँति और धर्म पर बलिदान होवो को उपदेश दियो है। हालमें ही नावघाट उदयपुरवाला कवि नाथूदानजी का दोहा स्वयं का मुखसे सुणवाको मने अवसर हुयो। और मै सुण कर मैं गदगद हो गयो। मारवाड़ में ओ दोहो तो कषे ही है। और गांव गांवका बच्चा २ इने बड़ी प्रसन्नतासे बोले है।

"जननी एड़ा पूत जण,
कै दाता कै शूर।
नहीं तो रहीजे बांझडी,
मती गमावे नूर।"

ओ दोहो, माताने "प्रताप" जिस्या शूरवीर और "भामाशा और बिरलाजी जिस्या दानी उत्पन्न करवाको उपदेश देवे है।

"जाओ जाओ पिया थे रणमें,
म्हारी सोच करोना मनमें।
शूरन में थे शूर कहाओ,
योंधा हो योधनमें।
देशरी रक्षा कर भुज बलसे,
दीनन कष्ट हटाओ।
जाओ पिया थे रणमें!!

ई गीतसे पत्नी आपका पति ने रणभूमिमें जावा ने उत्साहित करती ही।

"सुत मरियो हित देशरे,
हरख्यो बन्धु समाज।
मां ने हरखी, जन्म दे,
जितरी हरखी आज॥

ई दोहामें पुत्रके देश हितरे वास्ते मरवा पर सारा बन्धुसमाजको हर्ष प्रगट करयो गयो है। परन्तु मां को पुत्रका बलिदान होवा पर इतंरो हर्ष हुवो है कि बा कहवे है कि आज म्हारा पुत्रका बलिदान होवा पर मने इतरी अधिक खुशी हुई है, जितरी ईका जन्मबा पर भी नहीं हुई।

सतीकी महिमा सिखतां माता आपकी बेटीने कहवे है—

"सो गुण वारुं देखजे,
बेटी रा गुण दोय,
परणता पाछें रही,
बलवा आगे होय॥

अर्थात् माता आपकी बेटीका हजार गुण छोड़कर दो गुणांपर रीझ रही है कि म्हारी बेटी विवाहके समय तो पतिके पाछे रही, पण जदां सती होवा लागी उस बेलां पतिके आगे रही।

राजस्थानमें सती जद होवे है जद बहू नारियल लेर पति की रथीके आगे २ चाले है। वाल खुला हुवा राखे है। और आपका दरवाजा के सामे हाथका पंजाको निशाण लगावे है। और लोग ए सतियाँका निशान की बहुत ही प्रतिष्ठासे पूजा करे है। सासू आपरी बहूरी प्रशंसामें नाथूदानजीरा शब्दांमें ओ दोहो बोले है—

"सुत रुकां टूंका हुओ,
गिणिया टूक जरूर,
वाहु बालिया रज रज हुई,
कहूं किणा केती सूर॥

अर्थात् म्हारो बेटो तो तलवारसे टुकड़ा २ हो गयो। और टुकड़ा २ गिणिया भी जा सके है। पण म्हारी बहु इतरी अधिक वीर है कि वा तो सती होकर आपका शरीरको वीरतासे कण २ कर दीया। म्हारी बहू पुत्रसे कितरी ज्यादा बहादुर है। आ मैं किशा मुखसे कहूँ।

ये चारण भाटाँका दोहा सुण २ कर ही राजस्थानका गुण गाता हुय्यां कर्नलटाड साहब अठ का राजस्थानी भायांकी, वीरता देश प्रेम, निर्भयता, धर्म, आन बान और शानपर मर मिटवाकी भावनाको बड़ोही सुन्दर चित्र खीच्यों है। और जी वकत राजस्थानी कवि, चारण भाट ऐ वीरांका कार्य्यों को बखान राजस्थानी भाषामें करे है तो बिने सुणकर एक बार तो कायरांका हृदयमेंभी वीरताको संचार होवा लाग जावे है। विदेशी विद्वान् राजस्थान रे वास्ते ठीक ही लिख्यो है कि महाराणा सांगा, वीर जयमल, रावतफत्ता, दुर्गादास राठौर, महारानी पद्मावती, मीरांबाई, पन्नाधाय, आदि अनेक वीरांगनायोंकी आ भूमि है। आर ई राजस्थान रे मायेन एक छोटो २ राज भी इस्यो नहीं है जिरे मायने यूरोप की थर्मोपोली जिशी रणभूमि नहीं हुयो और एक भी गांव इस्यो नहीं है जठ ग्रीक वीर लियोनिडासके समान मातृभूमि पर बलिदान होवाला वीर पुरुष उत्पन्न नहीं हुया हो। राजस्थानमें ललनाआं जौहर व्रत धारती ही। और आपका पति, पुत्र और कुटुम्बने रणक्षेत्रमें भेजकर वें के पाछे की चिन्ताने दूर करवा सारु आपका हाथसे ही आपको माथो तक काटनाकती ही। और मोह ने त्यागकर रणक्षेत्रमें विदा करती बेलां आपकी पतिके हाथमें बड़ा उछावसे रण कंकण बांधती ही। और आज तक कवि और भाट चरण आपका मुखसे ओ दोहो गावे है—

"कंकण बंधण, रण चढ़ण, पुत्र बधाई चाव।
तीन दहाड़ी त्यागरा, कई रंक, कई राव॥

ऐ रमणियां आपका पत्यां ने केसरिया वस्त्र पहिराकर युद्धमें वीर गति प्राप्त करवा पर दहकती हुई चिताओंमें आपका कोमल अंगोंकी आहुति दे नाके ही। इतरो ही नहीं बल्कि घणि देवियां तो समय आवा पर रणचण्डीकी रूप धारण कर तल्वार हाथमें लेर घासकी तरह शत्रु दलने काटनाकती ही। और अन्तमें आत्मबलिदान कर देती ही। मारवाड़को साधारण निवासी भी समय पड़वा पर मान रक्षाके वास्ते प्राण दे देतो है। और आज तंई नीचे लिखो दोहों गांव २ में बोल्यो जावे है।

"घर जातां, ध्रम पल्टतां
त्रिया पड़तां ताव
एही तीनों ही दिन मरण रा
काहा रंक काहा राव।"

अर्थात् जहां कोई आपणा घर या धरती कोसवाने तैय्यार होवे या जदां आपांके धर्मपर आपत्ति आवे या तीसरां जदां स्त्री जातिको अपमान होवे उण वकत प्रत्येक गरीब और अमीरको कर्त्तव्य है कि वो आपका प्राणांकी बलिदेवामें जरा भी संकोच नहीं करे। ही वास्ते ही कविवर नाथूदानजी ओ दोहो कह्यो है:—

जो करशी उणरी हशी
आशी बिण नूती।
याने किणरा बायरी,
भक्ति रजपूती॥

अर्थात् जो करशी और वीरता दिखाशी बीके पास ही बिना न्यूत्योडी रजपूती आशी। भक्ति और रजपूती कोईका बाप की नहीं है। इशी २ कवितासे राजस्थानी प्रत्येक बालक बिना जाति पांतिके भेद भावके वीरतासे रण भूमिमें जातो हो। और आपकी तल्वारांका हात दिखातोहो। आटो तोलवा वालों बाणियो भी दोनों हाथामें तल्वार लेर फौज काटतो हुयो आरसे पार होजातो हो। कायरांकी राजस्थानी देविया घणी मसकरी करती ही। सतीस्त्री आपका पतिने लड़ाईमें नहीं जावापर मांदी पड़ पीली पड़जाती ही। और कवि नाथूदानजी बी चित्रने नीचे लिख्योड़ा दोहामें बतायो है

"ओखद, जाणें मोखला,
दुःख ने जाणें लोग।
प्रिय केसरीया न किया,
हूँ पीली इण रोग॥

अर्थात् म्हारो पति युद्धमें जाना सारु केसरिया वस्त्र नहीं करया है। इसा वास्ते मैं पीली पड़गई हूँ। राजस्थानी स्त्रियोंकी अन्दरुनी इच्छा निम्न लिखित दोहामें कवि करी है—

प्राण हथेली में रखे,
घण अरियां रे थट्ट।
प्राण न राखे पींजरे,
वो राखे रजवट्ट।

अर्थात् बहादुरी वोही रख सके है जा आपका शरीरमें प्राणांको मोह नहीं करे। और शत्रुवां रा समूह पर हथेलीमें प्राण लेर टूट पड़े। लड़ाईसे भय करवावाला रे वास्ते ई संसारमें कोई जगह नहीं है। मातृभूमिका उद्धारके वास्ते युद्ध ही एक मात्र औषधी है। कवि ए भावांने निम्नलिखित दोहामें बताया है।

"भारत रचियां ही भलां,
भारत धर्म रहाय।
भारत सूं कै दिन डरां,
रैहणों भारत मांय।

ई दोहामें "भारत" शब्द दो मायनांमें आयो है। अर्थात् वीर पुरुष भारत (युद्ध) रचे है तभी भारत (मातृभूमि भारतवर्ष) का धर्म की रक्षा हो सके है। भारत (युद्ध) से कितरा दिन डरस्यो जद थांने मातृभूमि भारतमें ही रेहणों है।

मैंने पूरण आशा है कि राजस्थानी भाई राजस्थानी भाषा की वीर रस पूर्ण कविता बांचकर वीर बणशी। और मातृभूमिको उद्धार करशी।

मैं राजस्थानी साहित्य सम्मेलन दीनाजपुर की हृदयसे सफलता चाहूँ हूँ। और परमपिता परमात्मासे प्रार्थना करूं हूँ कि ओ सम्मेलन सफल होवे और इस्यो रचनात्मक कार्यक्रम करे जींसें राजस्थानमें नवजीवनको संचार होवे और राजस्थानी कविताकी लोकप्रियता घणी घणी बढ़े।

श्रीमन्नारायणजी व लक्ष्मीनारायणजी छूटे

श्री गोविन्दराम सेक्सरिया कामर्स कालेजके प्रिन्सिपल श्री श्रीमन्नारायणजी अग्रवाल एवं श्री लक्ष्मीनारायणजी मुंधड़ा "भारतीय" को मध्यप्रान्त सरकारने जेलसे बिना शर्त छोड दिया।

राठीजी की माता की मृत्यु

स्थानीय समाज .वी श्री जेठमलजी राठी की मातुश्री का देहान्त पचास वर्ष की अवस्था में होगया। आपकी अर्थी फूलोंसे सजाकर लेजाई गई। अर्थीके साथ शहर के प्रसिद्ध २ व्यक्ति और कार्य कर्ता थे। आपके पीछे बहुत दिनतक गरुड पुराणकी जगह योगवाशिष्ठकी कथा कराई गई। इससे कुछ पुराणपंथी नाराज हो गये. किन्तु योग वाशिष्ठके ज्ञानकाण्डको सुननेसे प्रत्येक व्यक्ति रुचि लेने लगा। इस अवसर पर जाति सेवा तथा बालकोंकी शिक्षाके लिये कुछ दान भी किया गया था।

सम्राट वीर विक्रम

लेखक
श्री. जी. डी. जोशी

राजा गन्धर्वसेनने उज्जयनीको अपनी राजधानी बनाकर उस नगरका उत्थान करना आरंम्भ किया। राजा गन्धर्वसेनके दोनों राजकुमार भर्तृहरि और विक्रम विद्या और बलमें अतुल पराक्रमी और जगत प्रसिद्ध हो गये थे। जब राजकुमार भर्तृहरिको वैराग्य हो गया तो उन्हों ने गद्दी छोड़दी। राजा गन्धर्वसेनका देहान्त हो चुका था। अतः वीर विक्रमको उज्जैनकी गद्दी फिरसे सम्हालनी पड़ी। विक्रमके राजसिंहासनपर बैठतेही उज्जैन नगर इतना प्रसिद्ध और धनधान्यसे इतना भरपूर हो गया कि लोग उसकी कुबेरके नगरसे तुल्ना करने लगे। आजकल जिस स्थानपर महाकालेश्वरका मन्दिर है उस स्थान सम्राट् विक्रमने चारों ओर एक विशाल कोट बनवाया था। फरिस्ता नामक पारसी इतिहासकार लिखता है कि विक्रमका वह किला १०० गज ऊंची दीवारोंसे बना हुआ था। आज भी इस ऐतिहासिक गढ़का २४ खंभी दरवाजा उस महान् सम्राट्की स्मृतिको चिरस्थायी बनानेके लिये उज्जैनमें मौजूद है। २००० वर्ष बीत चुके, समयके हेर फेरमें कई राजाओंके आक्रमणोंका मुकाबिला करता हुआ, जल वायु तथा प्रकृतिके झोंकोंको सहता हुआ यह २४ खंभी दरवाजा उन्नत मस्तक होकर महाकालेश्वरके मन्दिरके सामने मुस्कराता हुआ अब भी यह याद दिलाता है कि सम्राट् विक्रम जिन्दा है और उसकी अन्तरात्मा पुकार २ भारतवासियोंको प्राचीनकालके गौरव की स्मृति बताती है।

सम्राट विक्रम ने महाकालेश्वर के मन्दिर को स्थापित करके उसको बहुत अधिक विस्तृत किया, उस शैव मन्दिर की महत्ता बढ़ाने के निमित्त उसे अनेकानेक राजचिन्हों से अलंकृत किया गया। सम्राट् सब धर्मों का आदर करते हुए भी शैव था और शैव धर्म के लिये उसने बहुत कुछ धन व्यय करके राज्य की ओर से प्रोत्साहन दिया था। कहा जाता है कि सम्राट विक्रम की शैव भक्ति को देखकर तत्कालीन उज्जैन के नागरिकों ने इसी महाकालेश्वर के विशाल मन्दिरके आंगन में सम्राट् विक्रम की एक स्वर्ण प्रतिमा स्थापित की थी। बहुत दिनों तक यह प्रतिमा विक्रम के न्यायस्वरूप इस मन्दिर में बनी रही। बाद को संभव है मुसल्मानी शासन काल में इसे यहां से हटा दिया गया हो।

विक्रमके शासनकालमें सिर्फ उज्जैन ही नही बल्कि भारतके अन्य नगरों ने भी चरमोन्नति प्राप्त की। इन्हींके राज्यकालमें भारतमें कई महान विभूतियां उदय हुयीं। विशेषकर वीर विक्रमके साहित्य संगीत तथा कथाके प्रेमको देखकर सुदूर दूरसे साहित्य मर्मज्ञ, कविगण तथा कथाकार उज्जैनमें आकर बसने लगे। तत्कालीन उज्जैन भारतका वैसा ही नगर था जैसा आजका युद्धसे पूर्व लंडन नगर था। दूसरे शब्दोंमें यह कहना चाहिये कि तब विक्रमकालमें उज्जैन विद्या, विक्रम और वित्तका केन्द्रस्थल था।

यथार्थ में वीर विक्रम सर्वगुणसम्पन्न था। वह शूर वीर होते हुये भी धर्म रक्षक व प्रजा वत्सल भी था। वह अत्यन्त उच्चकोटि की विद्वत्ता तथा साहित्य संगीत व कला की प्रतिमा था। उसमें केवल चरम सीमा की विद्वत्ता ही नहीं थी बल्कि वह गुणीजनों का ग्राहक भी था ओर योग्यतानुसार उन सब का आदर सत्कार किया करता था।

हालकृत "गाथा सप्तशती" तथा सोमदेव भट्टकृत "कथा सरित्सागर" में इस पराक्रमी समाट् का जो कुछ जीवन चरित्र मिलता है वह अत्यन्त रमणीय है और उससे इसकी गुणग्राहिता की परिधि माल्म होती हैं। अन्य कई ऐतिहासिक पुस्तकों में भी विक्रम के सम्बन्ध में कई मूल्यवान बातें मिल्ती हैं। भारतीय जनता इस राजा को न्याय की मूर्ति धर्मराजा समझती थी। विक्रम का न्याय व सिंहासन जगतप्रसिद्ध वस्तुयें हैं। इनपर फिर प्रकाश डाला जावेगा। यह निश्चित बात है कि जो राजा गुणग्राही हो न्यायी हो उसें प्रजा अवश्य चाहती है।

यह बड़े दुःखका विषय है कि सम्राट् विक्रम जैसे पराक्रमी, परदुःखभंजक प्रजाभक्त व दीन बन्धुके विषयमें वर्तमान भारतीय समाजको बहुत कम ज्ञान है। उसका जीवन केवल कपोलकल्पित दंतकथाओंका गढ़ा हुआ और केवल मनोविनोदकी एक सामग्रीमात्र है। अभीतक विक्रमके सम्बन्धमें अधिकांश भाग अन्धकारसे आवृत है। वह कौन था, कहां पैदा हुआ, कैसे उसने सैन्य संगठन किया, किस प्रकार शकों से लड़ा, कैसे देशकी चरमोन्नतिकी, ये प्रश्न हैं जिनकी ओर अभी इतिहासकारोंका ध्यान आकृष्ट हो रहा है। यह भी प्रसन्नताकी बात है कि २००० वर्ष बीतनेके बाद अब भारतवासियोंकी आखें खुली हैं। स्थान २ पर विक्रम द्विसहस्राब्दि उत्सव मनाये जाने लगे हैं। यह सब शुभ चिन्ह हैं। आशा है कि अब विक्रमकालीन इतिहासकी पूरी छानबीन हो सकेगी।

जहांतक देखा गया है अधिकांशमें अंग्रेज इतिहासकारोंने गुप्तकालीन सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीयको, जिसने विक्रमकी पदवी धारण की थी, असली विक्रमादित्य माना है, परन्तु यह बात सही नहीं है और सर्वथा भ्रमपूर्ण है। वीर विक्रम और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य भिन्न हैं। इनके काल में करीब ४०० वर्षका अन्तर है।

डाक्टर फ्लीट साहबका मत है कि यद्यपि मालवेमें विक्रम सम्वत् ईसासे पूर्व प्रचलित था परन्तु इसे असली साल गणनाका रूप चन्द्रगुप्त द्वितीय अथवा चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपनी विजयके बाद दिया। यूरोपके विद्वान् इतिहासकारों ने भारतके इतिहासकी गहराई में प्रवेश करने का कभी प्रयत्न नहीं किया। अभी तक विक्रम के सम्बन्ध में भारतीय विद्वानों में तीव्र मतभेद है। इसका कारण यह है कि पराक्रमी सम्राट् वीर विक्रम के बाद कई अन्य सम्राटों ने विक्रम की उपाधि धारण की और उनके तथा विक्रम के जीवन में सामंजस्य होने के कारण यथार्थ बात का पता नहीं लगाया जा सकता है।

यूरोप के अधिकांश विद्वान ईसा से पूर्व होने वाले इस पराक्रमी विक्रम को कपोलकल्पित समझते हैं। परन्तु इतिहास की सचाई को वे नहीं मिटा सकते। राज्य, धन सम्पदा, किले, साहित्य सब नष्ट हो जाते हैं परन्तु सम्वत् गणना एक ऐसी वस्तु रही है जो आक्रमणों का सामना करती हुई अभीतक बनी हुई है। यह अकाट्य प्रमाण है कि आज से २००० वर्ष पूर्व सम्राट् विक्रमादित्य हुआ और उसने अपनी विजय को स्मरण करने के निमित्त अपना सम्वत् चलाया अथवा लोगों ने ऐसे सम्राट के चिरस्मरणार्थ उसकी यादगार में उसका सम्वत् चलाया।

अभीतक कितने विक्रम हुये हैं? इतिहास में विक्रम नाम धारण करने की प्रथा पर कौन से राजाओं ने विक्रम की उपाधि धारण की इसके लिये निम्न विक्रमों में भेद रखना आवश्यक है:—

(१) सम्राट् वीर विक्रम (ईसासे पूर्व प्रथम शताब्दिमें)

(२) सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य (ईसा की चौथी शताब्दिमें)

(३) सम्राट् हर्षवर्धन विक्रमादित्य (ईसा की छठी शताब्दिमें)

(४) परमारवंशीय राजा भोज उर्फ विक्रमादित्य (ईसा की ११ वीं शताब्दिमें)

(५) आचार्य हेमू उर्फ विक्रमादित्य (ईसा की १६ वीं शताब्दिमें)

(६) महाराणा विक्रमादित्य (ईसा की १७ वीं शताब्दिमें)

(७) कुमार देवीचन्द्र उर्फ विक्रमादित्य (ईसा की अठारवीं शताब्दिमें)

शकारि सम्राट् वीर विक्रमादित्य तथा हूणारि सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यमें प्रायः सभी बातोंमें सामञ्जस्य है परन्तु दोनों पृथक २ हैं एक नहीं। एकतो २००० वर्ष पुरानी बात है। दूसरा अंग्रेज इतिहासकारोंका कहना है कि दोनों एक हुये। इस लिये भविष्यके इतिहास लेखकोंको बड़ी सावधानीसे छानबीन करनेकी जरूरत है कि कौन २ विक्रमादित्यने क्या क्या कार्य किया। और कौन २ लोग उनके समकालीन थे। इन बातोंको दृष्टिगोचर करते हुये दोनोंकी भिन्नताका सहजहीमें पता लग जाता है। सबसे बुरी बात यह है कि अंग्रेज लेखकोंकी देखादेखी भारतीय लेखक भी सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीयको ही वीर विक्रम बताते हैं परन्तु यह बात अमान्य होनी चाहिये।

सम्राट् वीर विक्रम का कुछ जीवन शुरू में दिया जा चुका है। अब यहांपर गुप्त सम्राट् चन्द्रगुप्त द्वितीय का कुछ जीवन चरित्र दिया जाता है ताकि उसके जीवन से विक्रम के जीवन की तुलना व भिन्नता की जा सके। इसके बाद अन्य उपाधिधारी विक्रमों का भी थोड़ा २ जीवन चरित्र दिया जावेगा।

श्री. जोशी

सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय

गुप्त सम्राट् समुद्रगुप्त के दो लड़के थे। एक का नाम रामगुप्त तथा दूसरे का नाम चन्द्रगुप्त द्वितीय था। इन राजकुमारों की मां का नाम दत्तदेवी थी। कुछ लेखों में चन्द्रगुप्त का दूसरा नाम देवराज भी कहा गया है। वाकाटक शिलालेखों में इसको देवगुप्त भी कहा गया है। इसके जन्मकाल की ठीक निश्चित तिथि नहीं दी जासकती किन्तु अनुमान से ज्ञात होता है कि इसका जन्म ईसाके ३६० वें वर्ष के आसपास हुआ होगा। जब सम्राट् समुद्रगुप्त की मृत्यु हुई थी तब राजकुमार चन्द्रगुप्त बाल्यावस्था में था। पिता की मृत्यु के पश्चात् ज्येष्ठ राजकुमार रामगुप्त गद्दीपर बैठा। परन्तु वह बड़ा कमजोर था। उसने शकों से युद्ध किया परन्तु हार गया और अन्त में अपनी रानी और राजकुमार शत्रुओं को देकर सन्धि करनी चाही।

मजुमल तवारीखमें जो कथा वर्णितकी गयी है उसके अनुसार रामगुप्त अथवा रवाल्ने जब शत्रुओंके सामने आत्मसमर्पण कर दिया तो चन्द्रगुप्त अथवा बाक्मारीसने रामगुप्तकी पत्नी ध्रुवदेवी का रूप धारणकर शत्रुपक्षमें जाना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार, उक्त इतिहासकार लिखता है, बाक्मारीस अथवा चन्द्रगुप्त स्त्रीका रूप धारण कर शक राजाके सामने गया और उसे एकान्तमें लेजाकर उसका वध कर डाला। इसके बाद उनकी फौजें शत्रुओं पर टूट पड़ीं और शक सेना भाग निकली अथवा मारी गयी।

कुछ लोगोंका यह भी कहना है कि रामगुप्त राज्यसिंहासनको न सम्हाल सका। अतः चन्द्रगुप्तने अपने बड़े भाई रामगुप्तकी हत्या करवाकर स्वयं राज्य सिंहासन ले लिया और अपने बड़े भाई की पत्नीसे शादी करली। इसमें सच्चाई हो या नहीं कि उसने बड़े भाईकी हत्या की अथवा वह स्वयं मर गया परन्तु इस बातको इतिहासकार मानते हैं कि उसने ध्रुवदेवीसे शादी की।

सन ३७५ में जब सम्राट् समुद्रगुप्त की मृत्यु हुई थी तब चन्द्रगुप्त की अवस्था

केवल १५–१६ वर्ष की थी। उनके बड़े भाई तब गद्दीपर बैठे थे परन्तु ५ साल के अन्तर्गत उनकी जीवन लीला समाप्त हो गयी। अतः सम्राट् चन्द्रगुप्त का शासनकाल ईसा से ३८० वर्ष में आरंभ होता है और ४१२ ईस्वीतक लगातार ३२ वर्ष तक इस सम्राट् के एकछत्र राज्य करने का इतिहासों में पता मिलता है।

स्तंभलेखों तथा शिलालेखों में भी सम्राट् चन्द्रगुप्त के इस बीच में शासन करने का जिक्र मिलता है। मथुरा के स्तंभलेख, उदयगिरी के गुहालेख, गढ़वा (प्रयाग) के शिला लेख तथा सांची और महरौली के लोह स्तंभों के लेखों से भी यहा ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय ने ३८० से ४१२ ईस्वीतक राज्य किया।

सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की दो रानियां थीं। एक का नाम कुबेरनागा था जो दक्षिण के नागवंश के सम्राट् की राजपुत्री थी। इस की राजकुमारी का नाम प्रभावती था और इसका विवाह वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय से हुआ था। दूसरी रानी का नाम ध्रुवदेवी थी जो इसकी पहिले भ्रातृपत्नी थी और इसकी गोद से कुमारगुप्त और गोविन्द गुप्त का जन्म हुआ था।

सम्राट् वीर विक्रम की मृत्यु के पश्चात् तथा चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के अभ्युत्थान के बीच ऐसा ज्ञात होता है कि उज्जयनी का राज्य सिंहासन क्षत्रपवंशी शकों के हाथ में रहा इस [illegible] में लगभग २२ राजे हुये और इन्होंने ईसवीसन ७८ से लेकर ई. ३५० तक लगभग ४०० वर्ष तक ऊजैन मालवा व गुजरात में राज्य किया। परन्तु चौथी शताब्दि के आरंभ में गुप्त साम्राज्य के उदय होते ही सम्राट् समुद्रगुप्त तथा चन्द्रगुप्त ने इन शकों को मार भगाया। शकोंका शासन उसी प्रकार अत्याचारी था जिस प्रकार पीछेसे मुसल्मानी राज्य शासन। परन्तु चन्द्रगुप्त वीर होनेके कारण इन विदेशियोंके अत्याचारोंको नहीं सहनकर सका। अतः उसने इन शकों को मालवा और गुजरातसे भगाकर अफगानिस्तानके उस पार बल्खकी घाटीतक खदेड़ दिया। इन शकोंको परास्त करनेमें सम्राट् चंद्रगुप्तने साम, दाम, दंड भेद चारों प्रकारकी नीति अख्तियारकी। यद्यपि गुप्त साम्राज्यका उदय पाटलीपुत्रमें हुआ था परन्तु चन्द्रगुप्तने पाटली पुत्रसे अपनी राजधानी हटाकर उज्जैनमें बनायी। राजधानी हटानेका इसका उद्देश्य यह था कि वह अपनी राजधानीको उज्जैन बनाकर राज्यको केन्द्रीभूत कर सकें।

सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य' परम वैष्णव था। शिलालेखोंमें इस सम्राट्को 'परम भागवत' लिखा गया है। परन्तु इसके माने यह नहीं समझलेना चाहिये कि वह परम वैष्णव होता हुआ भी अन्य मतवलंम्बियोंका आदर नहीं करता था। उसने वैष्णव धर्मकी रक्षा करते हुये शैव तथा बौद्ध धर्मोको बराबर सम्मान दिया। इसके राज्यकालमें एक बौद्ध अफसरके नियुक्त लिये जानेका जिक्र मिलता है। चीनी यात्री फाहियानने इस सम्राट् चन्द्रगुप्तकी सहिष्णुता तथा दानशीलताका खूब परिचय दिया है। कहते हैं कि इस सम्राट्ने अपने नामके आगे अनेक पदवियां धारण की हुयी थीं। शिलालेखोंमें इसे विक्रमांक, श्रीविक्रम, अजित विक्रम, नरेन्द्रचन्द, सिंहविक्रम आदि पदवियोंसे विभूषित किया गया है।

सम्राट् चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य भी सम्राट् वीर विक्रमकी भांति बड़ा शूरवीर था। यह वीर ही नहीं बल्कि बड़ा दूरदर्शी राज नीतिज्ञ भी था क्योंकि इसने दक्षिण, पूर्व व पश्चिमके समस्त आर्यवंशीय राज्य परिवारोंसे रिश्ता जोड़कर शकोंको भारतसे भगानेमें उनकी सहायताकी थी। इस महान् सम्राट्की कीर्ति दूर दूरतक व्याप्त थी।

वीर विक्रम की भांति चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य भी गुणीजनोंका बड़ा अनुरागी था। कुछ लोगोंका मत है कि कालिदास प्रभृति नवरत्न इसी विक्रमादित्यकी सभाके नवरत्नोंमेंसे थे परन्तु हम इस बातको स्वीकार नहीं करते। हां यह मान सकते हैं कि इस सम्राट्के दरबारमें भी कालीदास आदि अन्य नामधारी नवरत्न रहे हों। क्योंकि सम्राट् चन्द्रगुप्त अपनेको भी वीर विक्रमकेही पद चिन्होंपर चलनेके योग्य समझता था।

गुप्तवंशीय सम्राट् विशुद्ध वैष्णव थे। सम्राट् समुद्रगुप्तने कई अश्वमेध यज्ञ किये। इसी प्रकार शकोंपर विजय पानेके निमित्त भी सम्राट् चन्द्रगुप्तने कई अश्वमेंध यज्ञ किये। इसी प्रकारके एक अश्वकी मूर्ति बनारसके दक्षिण नगवा ग्राममें पायी गयी है। इस मूर्तिमें 'चन्द्रगुप्त' अंकित है।

“ यस्यो द्वर्त्तयतः प्रतीय युत्सा शत्रून्समेत्यागता
न्वङ्गेषाइव वर्तिनोऽभिलिखिता खड्गेन कीर्तिभुजे।
तीर्त्वासप्तमुखानि येन समरे सिन्धोर्जिता बाह्लिकाः
यस्यायावधि वास्यते जलनिधि वीर्यानिलै
दक्षिणः ॥ ”

वीर विक्रमादित्य और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य में भिन्नता यह है कि एक ईसा से पूर्व शताब्दि में हुआ था दूसरा चौथी शताब्दि में। एक शैव था दूसरा वैष्णव। चन्द्रगुप्त गुप्त साम्राज्य मालिक था किन्तु वीर विक्रम एक गणतंत्र राज्य का अधिपति था। अथवा आजकल की गणतंत्र अथवा डेमोक्रैसी के प्रभाविक उज्जैन की गणतंत्र सम्राट् का अधिपति था। वीर विक्रम महान त्यागी था, वह योगी था। वह जमीन पर कुशासन बिछाकर सोता था। अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को एक साधारण व्यक्ति की भांति सीमित रखता था, परन्तु सम्राट् चन्द्रगुप्त एक साम्राज्य के अधिपति की भांति बड़े ठाठबाट से रहता था और उसके राजसी मान और मर्यादा की चीनी यात्रीने काफी चर्चा की है।

दोनों सम्राटों में अधिक बातें सामञ्जस्य की हैं। दोनों क्षत्रियवंशी थे और दोनों आर्य सभ्यताभिमानी हिन्दू धर्म के पोषक थे। दोंनो ने अपने २ समय में शकों से युद्ध किया। वीर विक्रम ने शकों के पहिले जत्थे पंजाब से निकालकर बाहर किये और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य शकों के अन्तिम जत्थे से लड़ा और उसने शकों को बल्ख तक खदेड़ा। इस प्रकार दोनों विक्रमादित्यों का जीवन चरित्र अलग है, भिन्न है, एक नहीं।

प्रजारञ्जक गण-पति विक्रम

(पृष्ठ १ का शेष)

उसके समयमें बड़े बड़े गण भी थे जिनमें फूट डलवाना तथा जिनको जीतना असंभव था। पर विक्रमके समयमें गणनोंमें कमजोरी आने लगी थी। समग्र भारतव्यापी विशाल राज्य स्थापित होने लगे थें। स्वभावतः उनकी आंखोंमें पूर्ण जनराज्यका उपभोग करनेवाले ये संघ और गण कौंटोंकी तरह चुभने लगे। विक्रम के गणपति होनेसें पहले मालव गणमें लोभ और पदकी लालसा उग्र रूप धारण कर चुकी थी। जिसके कारण प्रतिदिन एक नया 'राजा' या 'गणपति' निर्वाचित होता था और एक दिन अपने पदका उपभोग करनेके बाद जनताको पसंद न आनेके कारण मार डाला जाता था‡। मालवगणकी यह दुर्गति और नाश देखकर लोग कहने लगे कि यहा तो भूत लगा गया है जो इन राजाओंको खा रहा है। इसी कारण शक लोग भी इस मालव गणको पराजित करनेमें समर्थ हुए। ऐसे घोर संकटके समय विक्रमादित्यने अपनी सेवा इस गणको दी और जान पर महान् संकट उठाकर भी मालव गणकी फिरसे ऐसी प्रतिष्ठा की कि प्रायः १३५ साल तक शकोंने हिम्मत न की कि मालवा पर आक्रमण करें। यही कारण है कि मालव गणने विक्रमके गणपति होने और शकोंको ध्वंस करनेके समयसे 'जय मालवानाम्' का नारा लगाया और 'मालवगणस्थित्या' अर्थात् जबसे मालव गणमें 'अराजकता' और 'अव्यवस्था' मिट गयी तथा 'धर्मेणैव प्रजाः सर्वाः रक्षंतिस्म परस्परम् पाल्यमानास्तथान्योंन्यं नरा धर्मेण भारत” का भाव फिरसे उदय हुआ, तबकी स्थितिसे अपना संवत चलाया। इस घटनाकी ओर भी ऐतिहासिकोंका ध्यान न गया। विक्रम का सच्चा महत्व बतानेके लिए मालव गणकी ऐतिहासिक दुर्दशाका चित्र हमारी आंखोंके सामनेसे न हटना चाहिए।

विक्रमके जीवनका इतिहास कहानियों और वह भी आश्चर्यपूर्ण कथाओंके रूपमें ही हमें प्राप्त है। उन सबको पढ़कर यह निदान निकलता है कि विक्रम प्रजाका परम सेवक था। वह उन सब गुणोंका पूजनेवाला गुणग्राहक था जो 'गण' या प्रजातंत्र राज्यकी जड़ मजबूत करते हैं। उसके विषय की

खूब फलफूल रहे थे। लाख कोशिशें करने पर भी उनमें फूट न पड़ती थी। और वे अपने शत्रुओंको पराभव कर मित्रोंकी संख्या बढ़ा रहे थे। इसपर भीष्म बताते हैं कि लोभ और एक दूसरेकी उन्नतिसे जलना, ये दो ऐसे विष हैं जो गणों का नाश कर देते हैं। वे कहते हैं:—

गणानांच कुलानांच राज्ञां भरतसत्तम।
वैरसंदीपनावेतौ लोभामर्षौ नराधिप ॥१०॥

लोभमेकोहि वृणुते ततोमर्षमनंतरम्।
तौ क्षयव्ययसंयुक्तावन्योन्यंच विनाशिनी ॥११॥

चारमंत्रबलादानैः सामदान विभेदनैः।
क्षयव्यय भयोपायैः कर्षयन्तीतरेतरम् ॥१२॥

तत्रादाननेंभिद्यंते गणाः संघातवृत्तयः।
भिन्नाः विमनसः सर्वे गच्छन्त्यरिवशं
भयात् ॥१३॥ आदि०

भेदे गणा विनश्येयुभिन्नास्तु सुजयाः परैः।
तस्मात् संघातयोगेन प्रयतेरन् गणाः
सदा ॥१४॥

अर्थाश्चैवाधिगम्यन्ते संघात–बलपौरुषैः।
बाह्यश्च मैत्रीं कुर्वंति तेषु संघातवृत्तिषु ॥ १५ ॥

ज्ञानवृद्धाः प्रशंसन्ति शुश्रूषन्तः परस्परम्।
विनिवृत्ताभिसंधाताः सुखमेधन्ति सर्वशः ॥१६॥

धर्मिष्ठान् व्यवहारांश्च स्थापयन्तश्च शास्त्रतः।
यथावत् प्रतिपश्यन्तो विवर्द्धन्ते गणोत्तमाः॥१७॥

पुत्रान् भ्रातृन् विगृह्णंतो विनयंतश्च तान् सदा।
विनीतांश्च प्रगृह्णन्तो विवर्द्धन्ते गणोत्तमाः ॥१८॥

चारमंत्रविधानेषु कोषसन्निचयेषु च।
नित्ययुक्ता महाबाहो वर्धंते सर्वतो गणाः ॥१९॥

प्राज्ञान् शूरान्महोत्साहान् कर्मसु स्थिरपौरुषान्।
मानयंतःसदा युक्तान् विवर्द्धंते गणाः नृप ॥२०॥

द्रव्यवंतश्च शूराश्च शस्त्रज्ञा शास्त्रपारगाः।
कृच्छ्रस्वापत्सु संमूढान् गणाः संतारयंति ते २१

क्रोधो भेदो भयं दण्डः कर्षणं निग्रहो बधः।
नयत्यरिवशं संघो गणान् भरतसत्तम ॥२२॥

तस्मान्मानयितव्यास्ते गणमुख्याः प्रधानतः।
लोकयात्रा समायत्ता भूयसी तेषु पार्थिव ॥२३॥
गणमुख्यैस्तु सम्भूय कार्यं गणहितं मिथः २५॥

निग्रहः पंडितैः कार्यः क्षिप्रमेव प्रधानतः
कुलेषु कलहा जाताः कुलवृद्धैरुपेक्षिता ॥२६॥

“ संघभिसंहतत्वाद धृष्यान् परेषांताननुगुणान् भुंजीत सामदानाभ्याम्। द्विगुणान् भेददंडाभ्याम्।” कौटिल्य अर्थशास्त्र पृ. ३७६

नाना कहानियां पढ़कर गणोंकी प्रशंसामें महाभारतमें भीष्मने युधिष्ठिरसे जो निम्न श्लोक कहे थे वे याद आ जाते हैं:—

प्राज्ञान्शूरान्महोत्साहान् कर्मसु स्थिरपौरुषान्।
मानयेतः सदा युक्तान् विवर्द्धते गणा नृप ॥
द्रव्यवंतश्च शूराश्च शस्त्रज्ञा शास्त्रपारगाः।
कृच्छ्रास्वापत्सु संमूढान् गणा संतारयंति ते ॥
तस्मान्मानयितव्यास्ते **गणमुख्याः** प्रधानतः।
लोकयात्रा समायत्ता भूयसी तेषु पार्थिव ॥
गणमुख्यैस्तु संभूय कार्यं गणहितं मिथः।

इस नीतिके अनुसार ही विक्रमका सारा जीवन व्यतीत हुआ। विक्रमने साधारण नागरिकोंकी बातें सुनीं, उनके सुखदुख अपनी आंखों देखे, उनकी कड़वीसे कड़वी आलोचना ध्यानपूर्वक सुनी और प्रजाके सुखके लिए कोई काम बाकी न रखा। विद्वानोंका उसने आदर किया, शूरोंको उसने उचित मान दिया और जनताके हितमें अपने प्राण दिये। विक्रमकी आयु प्रायः एक सौ बरसकी थी। यद्यपि विक्रमके विजयोंकी

[शेष पृष्ठ २४ के कालम ४ पर]

---

‡ उस समयकी तुलना थोड़ी बहुत फ्रेंच क्रांतिसे की जा सकती है जहां जनता वा उसके निर्वाचित प्रतिनिधियोंकी अप्रसन्नता और असंतोषके कारण दांतो मारां आदि सभी क्रांतिके मूलनेता मार डाल गये। इसमें भी लोभ, क्रोध, भय आदिने अनेक नेताओंको केवल संदेहपर जनताके हाथ मरवा डाला।

मित्र के पत्र—(६)

(ले. श्री राधाकृष्णजी बिरला)

प्रिय कनु,

आजकी कहानी मनमोहनकी नीचताकी पराकाष्ठा और क्रूरताके ताण्डव नृत्यका विषय है, जिसको लिखते हुए लेखनी भी कॉंप रही है। क्या मनुष्य इतना पतित हो सकता है? क्या श्वसुर अपनी पुत्रवधू पर इतना घोर अन्याय कर सकता है? क्या समाजके प्रमुख व्यक्ति उस नारकीय कुत्तेको दंड देनेमें इतने शक्तिहीन, निस्तेज और कायर होगये हैं? उस गांवके दस हजार प्राणियोंमें क्या एक भी ऐसा नहीं जो उसके ज़ुल्म, नीचता और इस अन्यायके प्रति आवाज उठाये? दो हाथ, दो पैर, दो आखें और दो कान होते हुए भी क्या सभी शक्तिहीन, अंधे और बहरे हो गये हैं कि उन्होंने यह आफत का पहाड़ उस बेचारी सती के दुःखद जीवन पर क्यों टूटने दिया? कुछ समझमें नहीं आता। खैर! खुशी और संतोष इस बातका है कि उसने रमेशकी सहायतासे अपने सतीत्वको अपनी जान पर खेल कर बचाया और इसी लिये आज वह समस्त नारीजातिके लिये एक आदर्श है। उस पर झूठे दोष न लगाकर उसे हिम्मत बंधाकर बधाई देना प्रत्येक का कर्तव्य है क्योंकि उसने वास्तवमें नारी जातिकी लाज रखली है।

मनमोहन करीब ४० सालकी अवस्थामें विधुर हो गया था। उसकी स्त्री की मृत्यु ही उसके सुव्यवस्थित घरकी बरबादीका कारण हुई। वह स्त्री सचमुच ही सती साध्वी थी। उसने अपनी मेहनत चतुरता, कौशल और सौजन्य से मनमोहन के गरीब घर को एक अच्छे गृहस्थी के घर में परिणत कर दिया। किन्तु उसका मरना और मनमोहन के दुर्भाग्य का आना करीब करीब एक साथ ही हुआ।

एक तरफ उस सती की मृतक लाश को चिता पर जलाया जा रहा था और दूसरी तरफ मनमोहन के विवाह की बातचीत चल रही थी। समाज के प्रमुख पंच ही उसे इस प्रौढ-अवस्था में एक कुमारी के साथ विवाह करने के लिये प्रोत्साहन दे रहे थे। वे एक कुमारी बालिका को समाज की बलि-वेदी पर चढ़ा कर महान पाप के भागी बनना चाहते थे। उन्हें इतना ध्यान और ज्ञान नहीं कि यह उन्ही की बनाई हुई रूढ़ियों का फल है कि आज हिन्दू समाज रसातल को पहुंच चुका है। तरुण विधवायें उनके नामपर आहें भर रही हैं। दूसरी जातिवाले उनके 'धर्म' पर हँसी उड़ाने के साथ साथ गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। इन्हीं महा पुरुषों की कृपा से आज एक नहीं हजारों सीता सावित्री रजिया और गुलनार हो गई हैं। लड़कीका वेश्या हो जाना विधर्मिणी या पतिता हो जाना अच्छा है किन्तु उसका पुनर्विवाह करना पाप और महा पाप समझा जाता है। इन लोगों की आंखों पर पर्दे पड़े हुए हैं। परमात्मा अब तो तेरा ही भरोसा है कि इन आंखों के अन्धोंको शीघ्रातिशीघ्र ज्योति और सुबुद्धि दे।

हाँ तो पंचों ने नन्दू नाई को जोर देकर कहा कि उसें मनमोहनके लिये एक लड़की ढूँढनी पड़ेगी। इस कार्यके दलाल आमतौर पर नाई ही होते हैं। ये अपनी वाकपटुता से काफी अच्छी दलाली कर लेते हैं। उन्हें उस अबोध बालिकाके जीवन का ध्यान ही नहीं रहता जिसे वे समाजकी क्रूर बलि-वेदी पर चढ़ानेमें पूरा पुरुषार्थ दिखलाते हैं। उन्हें तो अपनी दलालीसे वास्ता। लड़कीका जीवन उनके लिये कोई महत्वकी चीज नहीं। बूढ़े वर महोदय और लड़कीके धनलोलुप पितासे पैसे ऐंठना ही उनका कार्य और व्यापार है।

बड़ी दौड़ धूपके बाद मनमोहनके लिये भी नन्दू नाईने एक लड़की ढूँढ निकाली जो करीब १० सालकी थी। इस सौदेके लिये कमसे कम १० हजार रुपयोंकी जरूरत हुई। विवाहको आजकल धार्मिक संस्कार न समझकर कामपिपासाकी पूर्ति या धन उपार्जन करनेका साधन समझा जाता है। तभी तो ८० प्रतिशत मनुष्योंका गार्हस्थ्य जीवन एक महान् दुःख और क्लेशका क्षेत्र बना हुआ है। लड़कियोंके सुखोंकी अपेक्षा पिता-माताको चांदीके टुकड़े अधिक प्यारे हैं। चांदीके क्यों कागजके कहो। कनु! जरा सोचो तो—जब कोई मनुष्य अपना 'जीवन-बीमा' (Life insurance) कराता है तो बीमा कम्पनी पिछले तीन पुश्तका परिचय प्राप्त करती है। पिता माता किस रोगसे मरे थे। बीमा कराने वाला नशा तो नहीं करता। उसकी उम्र कितनी है? स्वभाव कैसा है? इत्यादि। किन्तु हायरे समाज इसे इन बातोंकी जरा भी चिन्ता नहीं। बेटीके पीले हाथ कर देने से ही कर्तव्य की इति श्री हो जाती है। चाहे वर महोदय श्मशान यात्रा की ही तैयारी क्यों न कर रहे हों।

मनमोहनने रमेश को कहा, "तुम मेरे सच्चे मित्र हो। मेरा घर बनाने में क्या १० हजार रूपयों की मदद न करोगे?" ३०) रु. माहवार कमाने वाले मनमोहन को १० हजार अपने विवाह के लिये मांगते हुए कुछ भी हिचकिचाहट मालूम नहीं हुई। यह नशा ही ऐसा है कि मनुष्य अपनी परिस्थिति भूल जाता है, और भूल जाता है निज को। रमेश ने उत्तर दिया, "प्रथम तो मेरे पास इतने रुपये ही नहीं कि मैं तुम्हें १० हजार की मदद दे सकूं। दूसरे यदि होते भी तो मैं इस काम के लिये सिद्धान्तानुसार तुम्हें सहायता नहीं दे सकता। हां यदि तुम विधवा-विवाह करो तो मैं मित्रों सहित तुम्हें हर तरह की मदद देने को तैयार हूं। विवाह पर जो खर्च होगा वह सब मैं सहन कर लूंगा। तुम्हारा एक पैसा भी खर्च न होगा और न तुम्हें और तुम्हारी सन्तान को किसीका ऋणी होना पड़ेगा।" किन्तु मनमोहन महोदय को तो कुमारी चाहिये थी, विधवा से शादी करके कथित पाप के भागी कैसे बन सकते थे। रुपयों की व्यवस्था न होने से वह आजतक विधुर की उपाधि से विभूषित भविष्य के दिन गिन रहा है।

उसके तीन लड़के हैं जो स्कूल में पढ़ते हैं। सबसे बड़े लड़के की अवस्था १५ साल की है। मनमोहन की वृद्धा माँ करीब ७० साल की है। बीमार रहने से रोग-शय्या पर ही पड़ी रहती है उसके घरमें उसकी स्त्री की मृत्युके बाद अब कोई रसोई पकानेवाला भी न रहा। घरकी हालत बहुतही साधारण होनेसे वह रसोई बनानेके लिये कोई नौकर भी नहीं रख सकता। कभी वह स्वयम् बनाता है, कभी उन तीनों लड़कोंमेंसे कोई बना लेता है तथा उसकी गरीब अवस्थापर रहम करके कभी कभी रमेशकी मां उन सबके लिये अपने घरसे बनाकर भेज देती है। जब लड़कोंको समय नहीं मिलता और वे स्कूल चले जाते हैं, मनमोहन भी अपने काम पर चला जाता है, तब कभी कभी उसके घर चूल्हा भी नहीं जलता है। मोहनने इसी लिये अपने बडे लड़केकी शादीकी सोची। रूप रंगमें सुन्दर और पढ़ाई में होशियार होनेसे बड़े लड़के कैलाशकी सगाई अलवर स्टेटमें हो गई। एक साल बादही विवाहका रस्म भी अच्छी तरह पूरा कर दिया गया। हजार दो हजारकी जो पूंजी मनमोहनके पास थी वह सब इस विवाहमें समाप्त हो गई। रमेशके मना करनेपर भी कि कैलास अभी बच्चा ही है, मनमोहनने उसका विवाह कर ही दिया। उसकी हैसियतको देखते हुए उसने खर्च भी अधिकही किया जिसपर पंचोंने तो उसकी प्रशंसाके पुल ही बांध दिये। उनका इसमें बिगड़ा ही क्या? उन्हें तो अच्छे लड्डू खानेको मिले। मनमोहन जैसे अनपढ़को दिवालिया बनाकर वे और भी खुश हुए। कारण अब जरूरत पड़नेपर मनमोहनको उन्हींके पाससे काबुली ब्याज पर रूपये लेने पड़ेंगे। वे अपने प्रयोगमें सफल हुए। लड़की की अवस्था छोटी होने से उसके पिता ने उसका गौना विवाह के पूरे तीन साल बाद किया। यदि लड़की का विवाह ही तीन साल बाद करते तो कितना अच्छा होता? किन्तु इतनी बुद्धि और विवेक कहां? यहां तो समाज में प्रचलित रूढ़ियों पर चलना ही विवेक, बुद्धि और कर्तव्य समझा जाता है। इस समाज में विवाह और गौना एक प्रकार से गुड्डे और गुड्डी का खेल है। लडके और लड़कियों के विवाह इतनी अल्प अवस्था में कर दिये जाते हैं कि उन्हें विवाह जैसे बन्धन के महत्व का ज्ञान तो क्या—यह भी नहीं मालूम कि विवाह किस चिड़िया का नाम है। कहा जाता है कि अग्नि की साक्षी फेरे लेने के लिये पिता के कहने पर एक बार एक वर ने उत्तर दिया, "पिताजी, मुझे तो नींद आ रही है आप ही ले लीजिये।" ऐसे विवाह को यदि गुड्डे और गुड्डी का खेल न कहें तो क्या कहें। इसी प्रकार गौने की रस्म पूरी करने का रिवाज है। पति महोदय कहीं दूर ही रहते हैं और उनकी स्त्री गौने के अवसर ससराल भेज दी जाती है। कैलास का गौना भी इसी प्रकार हुआ। वह कलकत्ते में नौकरी पर था और नन्दू नाई उसकी स्त्री को लाने के लिये उसके ससुराल गौने के अवसर पर चला गया था। उसकी स्त्री जो करीब १३ साल की होगी गौने की रस्म को पूर्ण करने के लिये नन्दू नाई के साथ भेज दी गई। अकेले नाई ब्राह्मण, या जमादार के साथ अपनी बहू बेटियों को भेजना इस समाज में बहुत प्रचलित है। यह भी शायद धर्म का एक अंग ही होता हो, फिर इस को कौन समझदार धर्म अनुयायी तोड़ सकता है। मा बाप या सासश्वसुर इतना भी नहीं सोचते कि एक नये अनभिज्ञ मनुष्यके साथ एक जवान लड़कीको भेजना अग्निमें घी देना है। नीति ही क्यों—बड़े बड़े महापुरुषोंने भी कहा है, 'युवती कन्या यदि तुम्हारी पुत्री या बहन भी हो तो भी उसके साथ किसीकी अनुपस्थितीमें अकेले बात मत करो।" अस्तु! एक युवतीकी तीन चार रोजकी यात्रा किसी अनजान मनुष्यके साथ कहां तक उचित है, कनु, तुम ही सोचो। खैर! इसमें कोई सन्देह नहीं कि नन्दू नाई ऐसे पुरुषोंमें नहीं है। यह सत्य है कि 'लंगोटीका वह सच्चा' है। उसीके साथ बहू लड़की अपने मायकेसे गौना कराके ससुराल आ गई है यद्यपि उसका पति कैलाश कलकत्ते ही है। वह इस अवसर नहीं आ सका क्योंकि उसको छुट्टी नहीं मिल सकी। वह चाहे आता या नहीं गौनेका मुहूर्त्त सामाजिक नियमानुसार नहीं टल सकता था। गौना तो होकर ही रहता और हुआ भी ऐसा ही।

कितनी आश्चर्यजनक बात है कि जिस लड़कीका गौना हो उसका पति उस अवसर पर एक हजार मील दूर रहे। इस अवसर पर लड़की यदि किशोर अवस्थासे युवा अवस्थामें पदार्पण कर चुकी हो और पति उससे हजारों मील दूर रहे तो उसकी सारी अभिलाषाओं, आकांक्षाओं, और उत्साहोंपर पानी फिर जाता है। यह वह समय है जहांसे नारीजीवनका उत्कर्ष और विकास आरंम्भ होता है। इसी समयसे दो हृदयोंके एक हो जानेका कार्य भी आरम्भ होता है। इसी समयसे गार्हस्थ्य जीवन रूपी रथके दो पहिये साथ जुत कर संसार यात्रा आरम्भ कर देते हैं। इसी समयसे स्त्री 'मा' की भावनासे एक दूसरे जीवनमें पदार्पण करती है। किन्तु कैलाशकी स्त्री बिना अपने पतिके अकेली रहनेसे अपनी इच्छाओं और अभिलाषाओंको हृदयमें छिपाकर और मसोस कर रह गई। किया भी क्या जाय समाजमें प्रचलित रूढ़ियाँ ही ऐसी हैं।

कैलाश की स्त्री के ससुराल आने के पांच सात रोज बाद मनमोहन ने अपनी वृद्धा माँ को कहा, "बहू अभी बच्ची है। घर का विशेष काम उससे मत कराना। अभी तो उसके खेलने कूदने के दिन हैं। लाड़ प्यार से रखना और किसी प्रकार का भी उसे कष्ट न होने देना।" गांव वाले मनमोहन की प्रशंसा के पुल बांध रहे थे, और उसकी समझदारी तथा योग्यता की बड़ाई कर रहे थे कि अपने बड़े लड़के की शादी करके उसने अपनी वृद्ध माँ और तीनों बच्चोंके सुख की खाने पीने की व्यवस्था कर दी है। किन्तु वास्तव में उस

(शेष पृष्ठ २४ के कालम ३ पर)

नये प्रस्तावित करों का प्रभाव

"एक अर्थशास्त्री"

नये करोंके प्रस्तावसे भारतीय आर्थिक जगत पर अनेक प्रकारसे गहरा असर पड़ेगा। हम उनमेंसे कुछ पर ही आज यहाँ विचार करेंगे।

लोगोंको यह जानकर आश्चर्य न होगा कि जहाँ तक भारतीय कम्पनियोंके अतिरिक्त-लाभ-करसे सम्बन्ध है, उनका शत-प्रतिशत अतिरिक्त लाभ सरकार छीन लेती है, पर जब उन्हें यह पता चले कि जहाँ व्यक्तियों, संयुक्त परिवारों और कुछ असोसियेशनोंका सम्बन्ध है वहाँ कितने ही मामलोंमें टैक्स भरनेवाले व्यक्तियों को अतिरिक्त लाभ कर, बाधित रुपया भरना, और आयकरोंकी अदायगीके लिये अपनी निजकी जेबोंसे पैसा देना पड़ता है तब वे हैरान रह जायेंगे। उदाहरणके लिये यदि एक व्यक्ति ४ लाख रुपया कमाता है तो उसमें उसके कम से कम, ३६००० रुपये मुनाफेके होते हैं। इसका मतलब हुआ कि उस व्यक्तिको अतिरिक्त लाभ कर, आयकर, सुपरटैक्स, और डिपौज़िटका पैसा भरनेके लिये ४०१२१५ रु. १०-८ देना होगा—अर्थात् अपने अतिरिक्त लाभसे जितनी उसकी वास्तविक आय है उससे ज़ियादह उसे सरकारको देना पड़ता है। जितना ही ज्यादह वह कमायेगा उतनाही ज्यादह उसे सरकारको अपनी जेबसे देना होगा। अर्थशास्त्र की दृष्टिसे शत प्रतिशतसे अधिक कर अतिरिक्त लाभकी आयपर कभी भी नहीं लगाना चाहिये था।

प्राईवेट लिमिटेड कम्पनियों पर भी इन करोंकी जबर्दस्त मार पड़ेगी। इन कंपनियोंको अपनी अतिरिक्त लाभकी आय समूचीकी समूची सरकारको देनीही पड़ेगी, पर इसके साथ उन्हें अपने नियत साधारण लाभमें से भी ४॥ आने आयकर, और ३ आने कॉर्पोरेशन टैक्सोंके रूपमें देने होंगे। इसका मतलब हुआ कि इन कम्पनियोंको युद्धसे पूर्वके करोंकी तुलनामें शतप्रतिशत करोंसे कहीं अधिक कर देने पड़ेंगे।

एक रजिस्ट्रीशुदा फर्म जिसके कि चार व्यक्ति साझेदार हैं, यदि उनकी आय जरा भी अतिरिक्त लाभकी श्रेणीमें आजाती है तो उस फर्मके साझेदारोंको अपनी अतिरिक्त लाभकी आमदनीसे कहीं अधिक देना पड़ जाता है। उदाहरणार्थ चार साझेदारोंकी एक फर्मकी आमदनी यदि हम १२ लाख मानें तो उनकी साधारण तथा नियत लाभकी रकम ३६००० रुपये होनी चाहिये, पर अब उसे १२११९५१ रुपयेकी रकम सरकारको देनी पड़ेगी—और यदि वह १५ लाख रुपया कमाते हैं तो उन्हें सरकारको १५ लाखकी समूची आमदनी और ऊपरसे ३६०७४ रुपये और चुकाने होंगे। अब यदि साझेदारोंको केवल इस साझेकी कम्पनीसे ही आयका स्रोत हो तो बताइये वे गरीब कहांसे पैसा लाकर सरकारको भरें।

एक लिमिटैड कम्पनीके हिस्सेदारों पर सबसे अधिक इन करोंकी चोट पड़ती है। उनकी कम्पनियों से ३ आने प्रति रुपया कार्पोरेशन कर सरकार ले लेती है, पर हिस्सेदारोंको उसकी वापसी अदायगी नहीं की जाती है। यहाँ तक कि कर भरनेवाले हिस्सेदार व्यक्तिकी आमदनी २००० रुपये वार्षिकसे कम है तब भी उसे इन ३ आने प्रति रुपयाकी रकम वापिस नहीं मिलती है। हम अपनी बातको अधिक स्पष्ट करनेके लिये निम्न उदाहरण लेते हैं:—

आजके प्रस्तावित करोंके दृष्टिकोणस १५०० रुपये की आमदनीपर कोई कर नहीं होना चाहिये। परन्तु एक कम्पनी के १५०० रुपये की कीमतके डिविडन्ड पर लगभग २००) आयकर सरकार वसूलती है। न्यायका तकाजा यह है कि हिस्सेदारको उसकी १५००) की रकम पर लगायी यह कार्पोरेशन टैक्सकी रकम वापिस मिल जानी चाहिये परन्तु उसे यह वापिस मिलती नहीं है। युद्धसे पूर्व स्थिति ऐसी खराब नहीं थी, कारण तब कार्पोरेशन कर १ आना प्रतिरुपया नियत था। परन्तु आज जब कि दर बढाकर ३ आने कर दी गयी है, तब यदि हिस्सेदार उसकी वापिसी चुकौतीकी मांग करें तो वह अनुचित नहीं कही जा सकती है। युद्ध कालके लाभके दिनोंमें कम्पनियोंके अतिरिक्त लाभ पर प्रतिबन्ध लगा दिये जानेसे, परिणामतः कम्पनियोंके डिविडन्ड की शक्ति घट गयी है, और हिस्सेदारोंको अपनी लगायी पूंजी पर पहिले की अपेक्षा कम पैसा लाभमें मिलेगा। कम्पनियोंको डिविडन्डके रूपमें वितरिन राशि पर ७¾ आने प्रतिरुपया देना पड़ता है।

यदि वास्तवमें देखा जाये तो डिविडन्ड की आय पर सुपर टैक्स भरनेवाले हिस्सेदारों को तो दुगुना कर भरना पड़ रहा है, क्योंकि डिविडन्ड की रकम जो उन्हें कम्पनीसे मिली है कम्पनीने उस पर सरकारको ३ आने प्रति रुपया कार्पोरेशन कर पहिले भरा था, और अब उन्हें इस पर सुपर टैक्स फिर भरना होता है।

कर लगाने के लिये सरकारने अब आयकी राशि १५००) के स्थानपर २०००) वार्षिक करदी है। हमारी रायमें आयका यह सीमा निर्धारण युद्धसे पूर्वकालके लिये तो ठीक था पर युद्धके समय यह सीमा ठीक नहीं बैठेगी। ५००० से कम की आयवालों पर आजकल कोई आयकर नहीं होना चाहिये था। युद्धसे पूर्व के और आजके जीवन निर्वाह के व्ययोंकी तुलना ही नहीं हो सकती है। हिसाब लगाने वालोंने देखा है कि युद्धसे पूर्व के खर्चों के मुकाबले में आज जनताको २८३ प्रति शत व्यय अधिक पड़ रहा है। ऐसी दशामें ५००० से कम की आमदनीवालों पर आयकर लगाना उचित नहीं कहा जा सकता है।

अर्थसदस्यके प्रस्तावित करोंका अभिप्राय यदि पैसेको सट्टे आदिसे बचा कर के सरकारी ऋण पत्रोंमें लगानेकी ओर प्रोत्साहन देना हो तो हम उसके इन प्रस्तावोंकी प्रशंसा तथा समर्थन ही करते। परन्तु दौर्भाग्यसे अर्थसदस्यके प्रस्तावोंसे भारतीय उद्योग को गहरा धक्का पहुँचेगा। अर्थसदस्यने भ्रमवश यह मान लिया है कि भारतीय उद्योग एक विशेष तलपर टिककर स्थिर रह सकता है, और उसे केवल मालगुजारीके खर्चे ही उठाने होंगे बाकी वह सन्तुलित तथा एकरस होकर चलता रह सकेगा। पर इसके विपरीत सच बात यह है कि उद्योग धन्धे भी एक सजीव शरीरके समान ही होते हैं, और उसीकी तरह उनमें भी ह्रास तथा वृद्धिका होना स्वाभाविक है। धन्धेमें उत्पादक साधनों तथा आयको बढ़ाना अति आवश्यक होता है। व्यापार-उद्योग अचल नहीं रह सकता है—वह या तो आगे जायेगा, या पीछे। यह ठीक है कि सरकारके यहाँ कम्पनियोंको जो बाधित रूपसे रुपया जमा करना होगा, उसका

(शेष कालम ४ पर)

प्रजारञ्जक नरेशका देहावसान

गत ९ मार्चको गोंडलके लोक प्रिय अधिपति सर भगवन्तसिंहजी का ६० साल की वय में देहान्त होगया।

स्वर्गीय गोन्डल नरेश भारतीय नरेशों में अनेकदृष्टियोंसे विशेष स्थान रखते थे। आपने अपने राज्य में प्रजा के लिये विविध सुधारपूर्ण तथा लोककल्याण के कार्य किये थे। गोन्डल रियासतको साक्षर तथा उच्च शिक्षासे युक्त करनेके लिये आपने शिक्षाविभागको बाकायदा अपनी मौलिक पद्धतिसे संगठित तथा संचालित किया था। आपकी स्टेटसे प्रकाशित पुस्तकें गुजरात तथा काठियावाड़ में कितनी शिक्षण संस्थाओंमें आदरके साथ पाठ्यक्रममें ली गयी हैं। राज्यभरमें अनिवार्य शिक्षाका प्रसार आपने सफलताके साथ किया था। गोन्डल स्टेटमें राज्य की ओरसे प्रजाके लिये गाँवोतकमें बिजली और टैलीफोनका प्रबन्ध हुआ है।

अपने परिवारके सदस्यों यहाँ तक कि राजकुमारोंको भी किसी न किसी विभागमें सर्वसाधारण प्रजा की तरह बाकायदा वेतन लेकर काम काम करने की रीति आपने चलायी थी।

पैसा सरकारसे युद्धके बाद अच्छे लाभके साथ वापिस मिल जायेगा परन्तु यह बीचका काल व्यापारियोंके लिये पर्याप्त महत्व रखता है। इस बीच मैशीनरी तथा प्लान्टकी टूट-फूटका व्यय भी तो मालिकों को उठाते जाना होगा, जो कि व्यापारिक दृष्टिसे यूँही टाल देनेवाली बात नहीं होगी।

हम एक तालिका देकर यह बतलाने का यत्न करेंगे कि सन् १९४४-४५ के बजटके प्रस्तावित करोंका एक कम्पनी की आय पर क्या प्रभाव पड़ेगा!

सन् १९३९-४० में यदि कम्पनीको नियत लाभ ३००००० रुपये होता था तो उसपर ६५६२५ रु. कर चुकाना होता था और इस तरह कम्पनीको सब खर्चे निकालकर २३४३७५ रु. बच जाते थे। उसकी तुलनामें प्रस्तावित करोंके लगनेपर सन् १९४४-४५ में कम्पनियोंको जो लाभ पर बचत होगी वह निम्नप्रकारसे होगी:—

लाभ	अ० लाभ कर	आयकर	आयकर पर सर चार्ज	कॉर्पोरेशन कर	कुलकर	करोंके बाद बाकी आय	१९/६४ अ. ला. कर का डिपौजिट	व्ययोंके बाद कुल राशि
५ लाख	१३३३३३ रु.	५७२८२ रु.	४५८३३ रु.	सर चार्ज बराबर	२८२२८१ रु.	२१७७१९ रु.	३९५९४ रु.	१७८१२५ रु.
६ लाख	२ लाख	६२५०० रु.	५०००० रु.		३६२५०० रु.	२३७५०० रु.	५९३७५ रु.	,,
९ लाख	४ लाख	७८१२५ रु.	६२५०० रु.		६०३१२५ रु.	२९६८७५ रु.	११८७५० रु.	,,
१२ लाख	६ लाख	९३७५० रु.	७५००० रु.		८४३७५० रु.	३५६२५० रु.	१७८१२५ रु.	,,
१५ लाख	८ लाख	१०९३७५ रु.	८७५०० रु.		१०८४३७५ रु.	४१५६२५ रु.	२३७५०० रु.	,,
१८ लाख	१० लाख	१२५००० रु.	१ लाख		१३२५००० रु.	४६५००० रु.	२८६८७५ रु.	,,

अभी इस पर डिविडेन्ड पर अतिरिक्त कार्पोरेशन कर और लगेगा—

इस प्रकार तालिकासे स्पष्ट होजाता है कि यदि चालू लाभ नियत साधारण लाभसे दुगुना नहीं है तो करोंके बाद बकाया आय युद्धसे पूर्वके कालसे बहुत कमती रह जाती है। (२) कम्पनी कुछ भी अतिरिक्त लाभकी आय करे, पर उसके पास जो राशि बचती है वह साधारण नियत लाभ ही होता है, जो कि उसे चालू रेटके आयकर तथा कार्पोरेशन कर चुकाने के बाद मिलता है। इसपर १ आना प्रति रुपया अतिरिक्त डिविडन्ड कर देनेपर तो राशि और भी कम बचेगी।

कविता कुंज

पूञ्जीवाद के प्रति

श्री चन्द्रदेव शर्मा

१

आग लगी है मेरे दिलमें,
आंधी उठती है सीनेमें,
पूछ रहा मैं पागल सा बन—
क्या सुख है ऐसे जीनेमें ?
वह जीना—जो कीड़ों सा है,
जिसमें हम भूले मानवता,
जिसमें हम असहाय बने हैं,
औ अपनाई है दानवता ।

२

क्यों यह ऊँचे भवन खड़े हैं,
क्यों कोई भूखों मरता है ?
क्यों अमीर है ? क्यों गरीब है ?
क्यों कोई तुमसे डरता है ?
मैं कहता हूँ—वहशी हो तुम,
मैं कहता हूँ—तुम हत्यारे;
चांदी की तलवार उठाकर
तुमने लाखों मानव मारे !

३

आंधी उठती है सीनेमें,
मेरे दिलमें आग लगी है
वह देखो–वे तुमसे मानव,
उन भूखों–को भूख लगी है ।
वे क्यों भूखे हैं, बतलाओ
क्या वह मानव नहीं विचारे ?
क्या उनके दिल नहीं, नहीं,
क्या उनको भी सुख-साधन प्यारे ?

४

तुम चोरों को पकड़ रहे हो,
डाकू को तुम फांसी देते,
तुम क्या हो,–मुझको बतलाओ ,
क्यों ना सच्ची बातें सुनते ?
तुमको क्या हक है तुमसे ही
मानव की हत्या करने का ?
क्या कारण है बतलाओ तो,
चोरों का तुमसे डरने का ?

५

अरे ! चोर को मार रहे क्यों ?
मारो ना चोरों की मां को,
जिसने नर को चोर बनाया–
–चांदी, सोने की सीमा को ।
पाप पाप चिल्लाते हो तुम
जेबों में है पाप तुम्हारे,
आज धर्म बिकता पैसे में,
पैसे–ये जलते अंगारे !

६

देख रहे हो–आज जगत की
नस २ में जो जहर भरा है;
देख रहे हो आज खून से सनी
बनी यह लाल धरा है !
आज हो रहे पैदा हिटलर
आज नाचते 'टोजो' रण में,
आज खून का प्यासा मानव,
आज भरी हिंसा कण २ में !

७

अरे ! मूढ़से सोच रहे क्या ?
अरे ! पागलो आंखें खोलो ।
इन सबकी जड़ में है पैसा–
पैसे के कलंक को धोलो ।
पैसे ही ने तो मानव को,
मानव का है शत्रु बनाया;
पैसे ने ही तो दुनियां में,
ये युद्धों का चक्र चलाया;

८

पैसे ही ने किया एक को,
शोषक और एक शोषित है,
पैसे के ही तो दानव से,
भीतर का मानव मोहित है ।
पैसे के बल आज बिक रही,
नारी की लज्जा औ अस्मत;
क्यों माथे को ठोक रहे हो,
क्यों चिल्लाते–किस्मत किस्मत ?

९

तुमने ही तो इस पैसे का
जग में आविष्कार किया था;
तुमने ही जड़ चांदी, सोने को
कीमत का भार दिया था;
तुमने ही ये कोढ़ बसाया,
आज फूटता जो नर २ में
फिर क्यों किस्मत को रोते हो ?
फिर क्यों श्रद्धा है ईश्वर में ?

१०

अरे ! उठाओ चांदी, सोना,
मूंगा–माणिक आज उठाओ,
फेंको इनका सागर–तलमें,
इन नोटों को आग लगाओ;
यह पैसे का किला तोड़ दो,
झूठे भय को आज भगाओ,
आओ, साथी ! इस दुनिया का
स्वर्ग बनाओ, स्वर्ग बनाओ ।

SHIP BRAND FABRICS

SELL ON THEIR MERITS!

हिन्दुस्तान, सीलोन, और विदेशमें लोकप्रिय

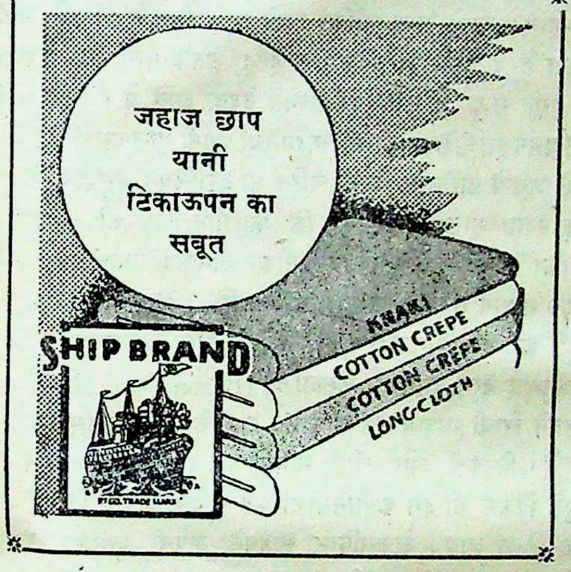
जहाज छाप यानी टिकाऊपन का सबूत
SHIP BRAND
KHAKI
COTTON CREPE
COTTON CREPE
LONG-CLOTH

क्योंकि

१ वे स्वदेशी हैं,
२ पक्के रंगके हैं,
३ मज़बूत हैं,
४ सर्वोत्तम हैं,
५ कीमत में सस्ते हैं।

SHIP BRAND FABRICS

कौटन क्रेप सफेद व रंगीन, खाकी ड्रिल, ट्विल व पगड़ी क्लाथ, सफेद ड्रिल, ट्विल, लौंगक्लाथ, साटिन ड्रिल, फास्ट ब्ल्यू ड्रिल, ग्रे ड्रिल, पापलीन सफेद व रंगीन, दसूती सफेद व रंगीन, कैसमेन्ट क्लाथ रंगीन, नीटींग क्लाथ, शीटींग क्लाथ, टेबल क्लाथ सफेद, मरसीराईज़ लौंगक्लाथ, क्रेप, पापलीन, टसर, शरटींग टौवल, नैपकीन वगैरह वगैरह।

'जहाज छाप' कपड़ा सुंदर, स्वदेशी और सस्ता है

चंद्र चौक, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

Bawa Parduman Singh & Sons

Head Office ———— AMRITSAR

Branches: BOMBAY CALCUTTA DELHI LAHORE QUETTA

कौन क्या कहता है ?

दूसरा शतकुण्डी यज्ञ

बौम्बे क्रौनिकल ने अपने सामयिक विचार प्रवाह स्तम्भ में आजकल हो रहे यज्ञों के विषय में निम्न टिप्पणी लिखी हैं:—

हमें यह जान करके बड़ा दुःख होता है कि जिला उनावमें गंगातटपर एक "शतकुण्डी यज्ञ" किया जायेगा जिसमें विशाल परिमाणमें घी तथा खाद्य सामग्री अग्निमें होमी जायेगी । अभी पिछले मास दिल्लीमें भी यमुनातटपर एक महायज्ञ हुआ था जिसमें १००० मनके करीब घी तथा खाद्य सामग्रियाँ अग्निकी भेंट की गयी थीं; जिस सबकी कीमत लगभग १५ लाख रुपये थी । दिल्लीके महायज्ञका उन दिनों किसीने घोर विरोध नहीं किया था, क्योंकि खाद्य सामग्रीके विनाशकी ऐसी भीषणताका तब लोगोंको पूरा-पूरा अनुभव नही हुआ था । पर अब तो जान पड़ता है यदि यथा समय इसे न रोका गया तो छूत की तरह यह यज्ञ परम्परा फैलती चलेगी । इस यज्ञ के विरोध में कानपुर विद्यार्थी संघ ने जो आन्दोलन शुरू किया है, उसँसे हमें कुछ आश्वासन मिलता है ।

विचारशील व्यक्तियों का इस बात में एकमत है कि अनेक धर्मों में जो यज्ञप्रथा है वह स्वेच्छापूर्वक अपनी वस्तुओंका त्याग, और उन वस्तुओं की जिनको अति आवश्यकता है, उन गरीबों में बाँट देने का प्रतीक ही है। इसका सीधा अर्थ यह निकला कि संस्कार बहुत सीधा सादा और अपव्ययरहित होना चाहिये । वर्तमान यज्ञों में इसके ठीक विपरीत हो रहा है—देश में जहाँ लाखों आदमी भूखसे दम तोड़ रहे हों वहाँ लाखों रुपयों की खाद्य सामग्रीकी आहुतियाँ दिया जाना केवल खुला अपव्यय और मानवीय भावना को कुचलनेके सिवा और क्या कहा जासकता है ? हजारों गरीबोंको भूखा मारनेका पाप इस यज्ञके सिरपर लगेगा । यज्ञका विरोध जिन विद्यार्थियों ने प्रारम्भ किया है, हमें पूर्ण आशा है कि, बड़े बुजुर्ग भी उनके इस आन्दोलन में उनकी सहायता करेंगे । संभव है अनेक कारणोंसे सरकार इस धार्मिककृत्यमें हस्तक्षेप न करे, पर हम चाहते हैं कि प्रत्येक विचारशील व्यक्तिको खाद्य सामग्रीके इस संहारको पूरे जोरोंके साथ रोकनेका यत्न करना चाहिये ।

राजस्थानी साहित्यका निर्माण !

श्री मूलचन्दजी कविरत्न ने राजस्थानी साहित्य निर्माताओं के सामने कुछ सुझाव रखे हैं:—

वही देश और जाति जीवित रह सकते हैं. जिसने अपनी भाषाको जीवन दिया है । जो इससे विमुख रहे वे सदा के लिये संसारके सन्मुख अपने अस्तित्वको बनाए नहीं रख सके । बल्कि कहना चाहिये वह जाति और देश कुछ कालके पश्चात् दुनियाके पर्देसेही विलीन हो गये । भारतमें नाना राज्य हुए किन्तु आज उनका पता तक नहीं रहा, कारण वे इस ओर ध्यान नहीं दे पाए । यवन राज्य ने अन्य भाषा साहित्यको नष्ट कर अपने साहित्यको प्रोत्साहन दिया फलतः लम्बे समयके पश्चात भी आज वे पुनः अपने राज्यका सुख स्वप्न नहीं बिसार सके हैं ।

अस्तु, राजस्थानी साहित्य के लिये आज कुछ बंगाली युवकों द्वारा बंग प्रान्तमें अन्दोलन किया जा रहा है । यह राजस्थानियोंके लिये गर्वका विषय है । राजस्थानी भाषा-भाषी भी आज उतनेही हैं, जितने बंगवासी या गुजराती हो सकते हैं । कमी यही थी कि आजतक प्रयत्न नहीं किया गया, अन्यथा आज जो बंग साहित्य या गुर्जर साहित्यका अभिमान भारत को हो सकता है, उतना ही राजस्थानी साहित्य से होता । राजस्थानी साहित्य के संबन्ध में कुछ भी न करनेपर भी आज वह इतना विशाल और विस्तृत है कि उसका प्रकाशन हो जानेपर वह संसारके किसी भी साहित्य के मुकाबले में उतर सकता है ।

राजस्थानी साहित्य में केवल मनोरंजन का साहित्य ही नहीं अपितु वह साहित्य भी हैं जो निर्बल और निस्तेज नसों में आज भी उष्ण रक्त प्रवाहित कर सकता है । जो जीवन से हार चुके और संसार को असार मान बैठे हैं वे भी पुनः कर्तव्य पथ पर अग्रसर हो सक्ते हैं । भक्ति रस का स्रोत महा महिमामयी कवयित्री मीरा का एक एक पद भावुक हृदय को विभोर कर देता है । मीरा का समग्र काव्य अभी प्रकाश में नहीं आया यत्र तत्र बिखरा पड़ा हैं, खोज ही नहीं हुई । उपयुक्तता तो इसी से प्रकट है कि मीरा के पद बंगाली, गुजराती और पंजाबी तक में भाषान्तरित हो चुके हैं । प्रत्येक प्रान्त में आदर के साथ सुने और गाये जाते हैं ।

राजस्थानी साहित्य को प्रोत्साहन देना परम आवश्यक है साथ ही इसे सत् साहित्य के रूप में भी रखना है । अर्थात् संचेहित वाले के रूप में । साहित्य का यही अर्थ संस्कृत साहित्य में लिया जाता है । कुछ विद्वान मालूम होता है इतने बह गये हैं कि राजस्थानी के नाम पर अभी से अनर्थ होने लगा है । वे इसमें जातीयताके बेसुरे रागको अलापने लगे हैं । जो घातक है । यदि अभीसे इसका उपाय नहीं हुआ तो भविष्यमें कठिनही नहीं दूभर हो जायगा । एक भाई साहित्य का श्रेय केवल जैन यतियों को देने लगे हैं और साहित्यरक्षक और निर्माता इन्हींको मानते हैं । दूसरे साहब ग्रीयसर्नकी दुहाई देकर केवल चारण साहित्य को ही साहित्य मानने लगे हैं, वे चारणोंका नाम बड़े फख्रके साथ लेते हैं ।

ध्यान पूर्वक देखनेसे पता चलता है कि साहित्यके निर्माता प्रत्येक समाजमें हुए हैं जिन्हों ने जगत कल्याण को सम्मुख रखकर साहित्यका सृजन किया है । यदि चारणही इसके सृजनकर्ता हैं तो अन्य को अभिमान करनेका कोई मतलब नहीं है । केवल किसी की प्रशंसा या निन्दाही साहित्यकी परिभाषा नहीं हो सकती । हम आशा करतें हैं साहित्यकी ओर ध्यान देनेवाले सज्जन साहित्य का वास्तविक अर्थ समझनेकी कृपा करेगें और जातीयताकी दल-दलमें साहित्य का जानेसे बचाए रखेंगे ।

संसार के साहित्यों में विक्रम

यह भारतके लिए महान गर्वका विषय है कि जिन कहानियोंका संसार भरम सबसे अधिक प्रचार हुआ वे विक्रमसंबंधी हैं । किसीने उसे परदुःखभंजक बनाया तो किसीने वीरताकी खान; किसीने उसके चरम कोटिके आत्मबलिदानके गुण गाये तो कोई उसके सादे रहन सहनपर लट्टू हुआ; और किसीने इस साहित्य संगीत-कलाके पुजारीकी गाथा लिखी तो कोई उसके निरभिमान सेवाभावपर निछावर हुआ । बस इन अगणित गुणरत्नोंकी खानको भारतने अपना हृदय सम्राट् बना लिया और उस त्यागी वीरका सिक्का मनवा लिया । तब उसे अपने नामके सिक्के ढलवानेकी क्या दरकार ?

फ्रेंच पादड़ी बूशे (Jean Venant Bouchet) ने जो १६५५-१७३२ सन् तक जीवित रहा तथा ४० वर्ष तक मद्रासमें ईसाई धर्मका प्रचार करता रहा, एक पुस्तक (Lettres edifiantes et curieuses) शिक्षापूर्ण तथा अचरजभरी कहानियां लिखी। इसमें भारतकी पुरानी कहानियां थी । इस ग्रंथने यूरोप भर में खलबली मचा दी । इसमें एक स्थानपर उसने लिखा है-"भारतवासी कुछ राजाओंकी स्मृति महान् श्रद्धाके साथ जीवित रखते हैं । वे राजे हैं जो अपने न्यायके लिए विख्यात हैं । इनमें एक विक्रमार्क है । उसके पास अपना न्याय करवानेके लिए दूर दूरके राजा ही नहीं स्वयं स्वर्गसे देवता आते थे।" इस बूशेने विक्रमचरित अथा सिंहासनद्वात्रिंशिका की कई कहानियां अपनी पुस्तकमें दी हैं। प्रायः अढ़ाइ सौ साल पहले जूसेप्पे पारीनीने विक्रम चरित का इटालियन अनुवाद किया। इससे भी पहले डेढ़ हजार सालसे ऊपर हुए कि फारसीमें विक्रमकी कथाओंका अनुवाद हुआ । फिर अरबी से सिंहासन बत्तीसीका अनुवाद समरकंदमें 'अर्जी बोर्जी' नामसे मंगोल भाषामें हुआ । तमाशा देखिये कि १८१७ में फ्रेंच भाषामें 'सिंहासन बत्तीसी' का जो अनुवाद हुआ वह संस्कृतसे नहीं फारसीसे किया गया । यह उत्तम अनुवाद बॅरन दानिऐल लॅस्कालिए (Baron Daniel lescaleir) ने किया। एथे साहबने ईरानी भाषामें इस लोकप्रिय राजाके चरित्रये दस अनुवादों का पता चलाया है। तिब्बती और चीनी भाषामें कई अनुवाद पाये जाते हैं। इटालियन विद्वान पुले विक्रम की इन कहानियोंको कई यूनानी कहानियों का मूल बतातें हैं। कहांतक लिखा जाय। शेकसपियर साहबने अपनी पुस्तक Hindi Sections बैताल पच्चीसीसे आरंभ की। लास्सन साहबने १८३८ में अपनी संस्कृत पुस्तक भी इसी ग्रंथसे आरंभ की। फ्रेंच विद्वान गार्सा द टास्सीने अपनी हिंदुस्तानी पुस्तकमें विक्रम चरित दिया। सवत्र विक्रमकी चर्चा रही। और आजतक है । स्वयं ग्येटेने बेताल पच्चीसी का अनुवाद बडे प्रेमसे पढा और अपनी एक कविता का बहुतसा मसाला उससे लिया। ईकन नामक जर्मनने यह अनुवाद १८२० में किया था। शुकसप्तति नामक विक्रमकी कहानियोंका अनुवाद फारसीमें तूतीनामा नामसे किया गया । इसका तुर्की अनुवाद हुआ, और इसीका अनुवाद जर्मन, इटालियन, फ्रेंच, अंगरेजी आदि भाषाओंमें किया गया। १६८१ सनमें डाप्पर नामक जर्मनने 'एशिया' नामका ग्रंथ लिखा उसमें विक्रमकी कई कहानियोंका अनुवाद था। कई लोगोंका कहना है कि ग्येटेने इस ग्रंथसे अपनी 'पड़िया' नामक कविताकी सामग्री ली थी । पर ईकनने लिखा है कि बैतालपच्चीसीका अनुवाद छापनेसे पहले मैंने अपना ग्रंथ ग्येटेके पास भेजा और उसने उसकी बड़ी प्रशंसा की। सो पहला मत ही ठीक लगता है। ए. टी. हार्टमानने १८०३ में एक ग्रंथमाला निकाली जिसका नाम था-" "Truechte des Asiatischeu geist." इसके दो खंड हैं । इसमें उसने विक्रमचरित भी दिया। १७८५-९३ ई. तक आम्सटर्डाम और जेनेवासे "Cabinet des tees" ग्रंथमाला निकली। यह फ्रेंच भाषामें है। इसमें भी विक्रमका चरित न छूटा। पुर्तगीज भाषामें विक्रमचरितका अनुवाद १६७२ में विंचेंटिडस मारिया आ. से. काथारिनाने "Vicramaditu Re di Vzini" नामसे प्रकाशित किया ।

मुखारिया हत्याकांड पर फैसला

राजगढ राज्यमें अनाज की कमीके संकट फल स्वरूप गत २ जुलाई को मुखारियामें भग २००० गरीबों की भीड़ने एक र्शन किया था जिससे भयभीत होकर कानदारोंने गोली चला दी। इस गोली कांड २ की मृत्यु हुई। अदालतने इस सम्बन्धमें क्को ३, ३ वर्ष की सादी कैद और एक को साल की सादी कैद की सजा दी गई। इसी र व्यावरामें जून मासमें गरीबोंने चनों ’ दो गाडियां लूट ली थी। इस पर ४२ दमियों पर मुकदमा चला। इनमेंसे २१ को नौ मास की सख्त कैद की सजा दी गई।

धार में सभाबन्दी

धार राज्य में सभाबन्दी कानून बनाया जा हा है। जिसका धार राज्य सेवा संघ ने सख्त रोध किया है।

रतलाम में मिल हडताल

रतलाम मिल में ३००० मजदूरों ने हड़-ल कर दी है जिस पर ४० मजदूर वहां से र्वासित कर दिए गए हैं। हड़ताल और र्वासित की सूचना दिल्ली और इंदौर के लिटिकल अधिकारियों को दी गई। मज-रों का एक डेपुटेशन पोलिटिकल एजेन्ट से मिला। मजदूरोंकी शिकायत यह है कि को गवालियर, इंदौर और उज्जैन आदि भी कम वेतन मिलता है। मिल १० घंटे ती है और मजूरी के सम्बन्ध में कोई वगैरा नहीं हैं। बोनस और मंहगाई की भी मांग की गई है।

राजस्थानी साहित्य सम्मेलन

मिदनापुरमें होनेवाले राजस्थानी साहित्य मेलनका शिष्टमंडल जोधपुरसे उदयपुर होकर र जोधपुर आया। यहाँसे शिष्टमंडलके स्य श्री कुंदनमलजी सेठिया बम्बईको और चैतन्य कुमारजी रंगा और श्री सम्पत-मारजी शेखावाटीकी ओर रवाना हो गए। णगढ़में श्री सेठ रामसहायमलजी मोर की यक्षतामें राजा लक्ष्मीनारायणजीकी हवेलीमें सभा हुई। इसमें श्री रंगाजीका भाषण आ। आपने राजस्थानी भाषा और साहित्यको त बनाने पर जोर देते हुए दिनाजपुरके स्थानी साहित्य सम्मेलनके उद्देश्योंका स्पष्टी-ण किया। सेठ मनसुखरायजी मोर और श्रीकंठमणिजीके भी भाषण हुए।

जैन गुरुकुल ब्यावर

ब्यावरके श्री जैन गुरुकुलका वार्षिकोत्सव वर्ष १५,१६,१७ अप्रेलको इन्दोरके सुप्र-द्ध सेठ रा. ब. कन्हैयालालजी भंडारीकी यक्षतामें हो रहा है।

प्रगतिशील सेठ का स्वर्गवास

चिडावा के नागरिकों की एक सभा श्री तादान जी मंगेरिया के सभापतित्व में हुई समें चिडावा के प्रगतिशील सेठ श्री एम. डी. मानी के निधन पर शोक प्रकट किया गया। नका स्मारक बनाने के लिए एक समिति नायी गई। चिडावा की सम्पूर्ण प्रगति का सेठजी द्वारा चिडावा में स्थापित हाईस्कूल है। आपका देहान्त कलकत्ता में घुडदौड़ मैदानमें घोड़ेसे गिरने पर हुआ।

हमारा राजस्थान

दादू चतुः शताब्दिका समारोह

जयपुर राज्यके नरेना स्थानमें श्री. दादू चतुः शताब्दिका महोत्सव २८ फर्वरीसे ५ मार्च तक बड़े समारोहसे हो गया। इस अवसर पर लगभग १०००० दादूपन्थी इकट्ठे हुए। दादू पंथके आचार्य १०८ श्री स्वामीजीने २८ फर्वरीको उत्सवका उद्घाटन किया। २६ को संत साहित्य परिषदका आयोजन महामहोपदेशक मंडलेश्वर वेददर्शनाचार्य पं. गंगेश्वरानन्द जीके सभापतित्वमें किया गया। स्वामी सतस्वरूपजी शास्त्री, बी. ए. का संत साहित्यपर भाषण हुआ! साहित्यके भेद और साहित्यके निर्माणकी विशेषताएं बताते हुए आपने संतों और उनके साहित्यकी बहुत सुन्दर मीमांसाकी। नानक, दादू, तुकाराम आदि संतों ने समाजमें जो निर्भयता पैदाकी और वीर तत्त्वोंका समावेश किया उसका आपने बहुत सुंदर विवेचन किया। सभापतिने अपने भाषणमें संतको मनुष्यकी वृत्तियोंका बदलनेवाला बताया और उनके साहित्यपर प्रकाश डाला। ५ मार्चको जयपुरके दीवान सर मिर्जा भी उत्सवमें पधारे। उनका भाषण भी हुआ.

मेवाड़की राजनैतिक स्थिति

मेवाड़ प्रजामंड़लके सभासदोंकी एक बैठक मेवाड़की राजनैतिक स्थिति पर विचार करनेके लिए श्री माणिक्यलालजी वर्माके सभापतित्वमें उदयपुरमें हुई। उसके बाद कार्यकर्ताओंका एक सम्मेलन भी हुआ जिसमें भिन्न भिन्न स्थानोंके ४० कार्यकर्ता उपस्थित थे। विचार विनिमयके बाद्र निश्चय किया गया कि भील सेवक समितिके कार्यका संचालन फिरसे किया जाय और भील क्षेत्रमें पाठशालाएं फिरसे खोलने, कुंए बनाने, बीज बांटने और औषध सेवाका कार्य भी किया जाय। उदयपुरमें एक विद्यापीठ की स्थापना का भी निश्चय किया गया, जिसका उद्देश्य भीलोंमें कार्य करनेके लिए समाज सेवी युवकों को भी विस्तृत करनेका निश्चय किया गया। इसके लिये एक उपसमिति भी बनाई गई।

इंदोरमें नागरिक स्वाधीनता संघ

इंदोरकी सार्वजनिक सभाओंकी ओरसे एक निमंत्रित सभा करके नागरिक स्वाधीनताकी रक्षा करनेके लिए नागरिक स्वाधीनता संघके नामसे एक संस्था कायम की गई है जो राज्यकी प्रतिगामी नीतिके विरुद्ध प्रजाकी नागरिक स्वाधीनता और अधिकारोंकी रक्षाके लिए प्रयत्न करेगी.

शान्ता मेवाड़े रिहा

सौ. शान्ता मेवाड़े (देवलगाँव राजा) बुलडाना जेलसे रिहा कर दी गयी हैं। आपका स्वास्थ्य काफी गिर गया है।

वर्माजीका वक्तव्य

मेवाड़की राजनैतिक स्थितिके सम्बन्धमें श्री. वर्माने एक लम्बा वक्तव्य प्रकाशित किया है, जिसमें अगस्त आन्दोलनका उल्लेख करके राजबन्दियोंकी आम रिहाईकी चर्चा करते हुए कहा गया है कि वस्तुस्थितिमें इस रिहाईसे कुछ भी अन्तर नहीं पड़ा है। प्रजा नागरिक अधिकारोंसे वैसी ही वंचित है। शासनकी रीतिनीति वैसी ही प्रतिगामी बनी हुई है। प्रजामंडल परसे रोक नहीं हटाई गई है, शासन सुधारकी घोषणाको कार्यमें परिणत नहीं किया गया है. इस लिए आपने कहा है कि जनताको राजबन्दियोंकी रिहाईसे भुलावेमें न पड़ कर जिम्मेवार हुकूमतके ध्येयको पूरा करनेमें लगा रहना चाहिये.

सीकरके राजबन्दी रिहा

एक बार फिर बठौठके किसानोंके असंतोष को दूर करनेके लिए सीकरके राजबन्दियोंको रिहा कर दिया गया है। एक हुक्म जारी किया गया है जिसमें सीकरके रेवेन्यू अफसर को सारे मामले की जांच करने की हिदायत की गई है और किसानोंसे ठाकुरके खातेमें बीघडी की रकम जमा करनेके लिए कहा गया है। अदालतों में चलाए जा रहे मुकदमे वापिस ले लिए गए हैं।

कैरोसीनके बिना गरीबोंको कष्ट

शकर गुड मिलने में जनताको पहलेही परेशानी हो रही थी, अब केरोसिन तेल की अव्यवस्था भी बढ़ गई है। राशनिंग कमेटी की अव्यवस्था होते हुए भी उसी कमेटी के जिम्मे तेल की व्यवस्था कर दी गई है। इस कमेटीने एक कुटुम्ब के पीछे एक बोतल तेल देना निर्धारित किया है, जो कि अत्यन्त ही कम है। तांगेवालों की तेल की असुविधा बड़ी शोचनीय होती जा रही है। इसके विरोध में तांगेवाले हड़ताल करने का सोच रहे हैं। इस कमेटी की व्यवस्था में पूरी धांधली पिछले महीने भर से चल रही है। कमेटीने सबसे पहले तो जो म्यु. कमेटीने राशनकार्ड जन गणना कर जारी किये थे उनको रद्द कर दिया और दुकानवालोंको हिदायत कर दी कि बिना कूपन के तेल न दिया जावे उधर शहर की नई गणना भी पूरी नही हो सकी। अतएव जनताके पास कई दिनोंतक न तो कूपन थे न तेल और न रेशनकार्ड।

मज़दूरों किसानोंको बड़ा दुःख भुगतना पड़ रहा है। दिनभर मिलमें या खेतमें काम करने के बाद अनेकों परिवारोंको तेल नहीं होनेके कारण भोजन पकानेके लिए भी दियेका प्रकाश नसीब नहीं हो रहा है। जिलेके अधिकारी इस अन्धेरे के अन्धेर की ओर जरा भी ध्यान नहीं दे रहे हैं।

अंजमेर के राजबन्दी

अजमेर सैन्ट्रल जेलमेंसे कुछ राजबन्दियोंके रिहा किए जाने के बाद भी ६ राजबन्दी अभी भी नजरबन्द हैं। अंगूठेका निशान देनेसे इंकार करने पर सबको ४, ४ मास की सख्त कैद की सजा दी गई है। इससे नजरबन्दीमें उनको मिलनेवाली सब सुविधाएं उनसे छीन ली गई हैं और उनके साथ साधारण कैदियोंका सा व्यवहार किया जा रहा है। श्रेणी विभाग का लाभ भी उनको नहीं दिया गया। इस प्रकार उनसे अत्यंत कठोर व्यवहार किया जा रहा है। इनमें सर्वश्री हरिभाऊजी उपाध्याय, विश्वम्भर नाथजी भार्गव वकील, बालकृष्ण गर्ग, लदूरामजी जोशी, बालकृष्णजी कौल, प्रो. गोकुललालजी असावा, और श्री शंकरलालजी वर्माके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

राजपूताना कार्यकर्ता सम्मेलन

पहिले गोविन्दगढ़में राजपूताना और मध्य भारत के कार्यकर्ताओंकी जो बैठक हुई थी उसमें निश्चय किया गया था कि दूसरी बैठक का आयोजन मेवाड़ में किया जाय। इसके अनुसार २, ३ अप्रेल को उदयपुर में इस बैठक को करने का निश्चय मेवाड़ प्रजामंडल के कार्यकर्ताओंने किया है।

ज्योतिषीकी भेंट

यहांके एक ज्योतिषी पिछले कुछ दिनोंमें महाराजा गवालियरसे कई बार भेंट कर चुके हैं।

श्री राजगोपालाचार्यका आगमन

रतलाम (डाकसे)

श्री राजगोपालाचार्य उदयपुर शिक्षा सम्मेलनका सभापतित्व करनेके लिए बम्बईसे फ्रन्टियर मेलसे सुबह ८ बजे रतलाम उतरे। गाड़ी उदयपुर ३ बजे दिनको जाती है। अतएव सात घण्टे वे रतलाममें ठहरे। स्टेशनपर प्रजामण्डलके सभापति और मध्यभारत देशी राज्य लोकपरिषद की कार्य समितिके सदस्य डाक्टर श्री देवीसिंहजीने अन्य नौजवानों और प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं तथा जनताके साथ राजाजीका फूल हारसे स्वागत किया और रेल्वे प्लेटफार्मसे मोटर तक महात्मा गांधीकी जयके नारोंके साथ पहुंचाया।

रतलाममें सभाबन्दी और जबानबन्दी होनेके कारण राजाजी कोई सार्वजनिक भाषण नहीं दे सके। दिनके ११ बजे राम भवनमें निमंत्रित व्यक्तियोंकी एक सभा हुई और दो बजे कार्यकर्ताओंसे राजाजीने बात चीत की। रतलामके कार्यकर्ताओंने राजनैतिक परिस्थिति और दमनकी जानकारी दी। मजदूरोंकी हड़ताल और मजदूर निर्वासनकी और अन्य दमनके कार्योंकी जानकारी भी दीगई। राजाजीने देशकी राजनीति पर अपने विचार संक्षेपमें प्रकट किये।

राजाजी सरकारी महमान थे। राजाजीको लेने रतलाम स्टेशनपर राज्यके कुछ अफसर भी पहुँचे थे।

सौन्दर्य

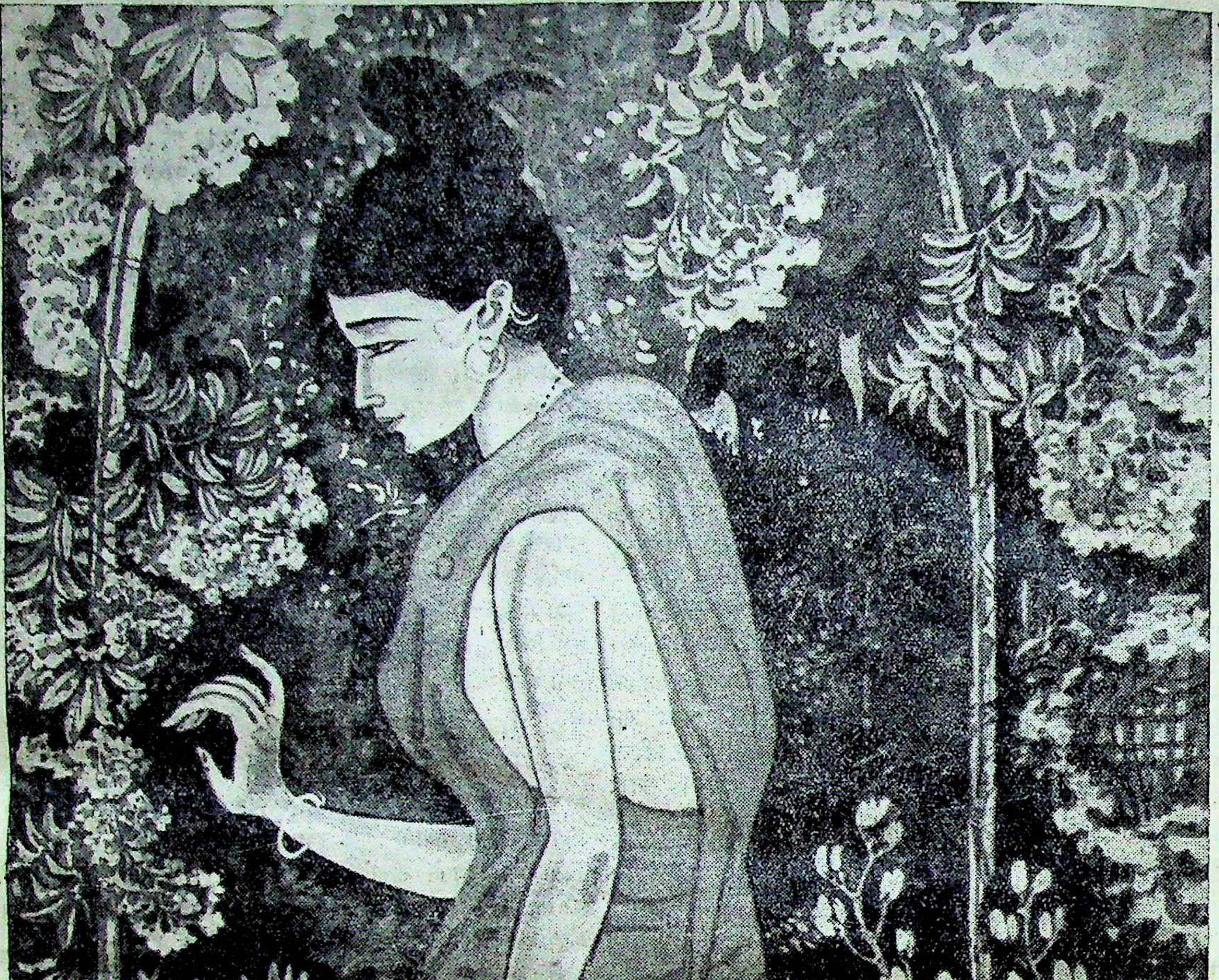

श्री रमेन्द्रनाथ चक्रवर्ती द्वारा

> 'साड़ी ओढ़े नारी' का उपरोक्त चित्र श्री रमेन्द्र नाथ चक्रवर्ती की कृति है।
>
> आप कलकत्ता गवर्नमेण्ट स्कूल आफ़ आर्ट के स्थानापन्न प्रिन्सिपल हैं और इंग्लैण्ड तथा यूरोप महाद्वीपमें एक सुप्रसिद्ध कलाकार के नाम से विख्यात हैं।

सु विभूषित व्यक्ति के लिए आकर्षक और सुन्दर वस्त्र प्राथमिक आवश्यकता है। जो व्यक्ति उपयुक्त वस्त्र व्यवहार करते हैं वे सब जगह अपने प्रति अच्छी धारणा उपस्थित करते हैं।

भारत की विशाल मिलों में परिगणित हमारी काटनमिल्स इसी अवसर के लिए साड़ियाँ, धोतियाँ और कमीज का कपड़ा बुनने में वर्षों से परिपूर्णता प्राप्त कर रही हैं।

सुदृढ़ और बारीक बुनाई सौन्दर्य-वृद्धि के लिये परमावश्यक है और केशोराम ने जो आधुनिक डिजाइन निर्माण की हैं, वह वस्त्र निर्माताओं के चातुर्य और स्टाइल में चार चाँद लगाते हैं।

केशोराम

श्रेष्ठ सूती वस्त्र

कस्तूरबा गान्धी राष्ट्रीय स्मारक

गान्धीजीकी ७५ वीं वर्षगांठ पर ७५ लाख की थैली

महामना पं. मदन मोहन माल्वीय तथा ी. ठक्कर बाबाकी प्रेरणासे देशके प्रतिष्ठित नेताओं तथा धनिकोंकी ओरसे एक अपील निकाली गयी है जिसके अनुसार स्वर्गीया कस्तूरबा गान्धीकी स्मृतिको स्थिर बनाये रखनेके लिये, "कस्तूरबा गान्धी राष्ट्रीय स्मृति कोष स्थापित किया जायेगा। इसके अध्यक्ष जगद्वन्द्य बापू गान्धीजी रहेंगे । बापूको इस कोषके लिये उनकी ७५ वीं वर्षगांठ पर जो कि २ अक्टूबरको आयेगी, ७५ लाख रुपयोंकी थैली भेंट की जायेगी। यह रुपया देशकी विविध सार्वजनिक प्रवृत्तियोंमें खर्च किया 'जायेगा ।

निर्दल नेता सम्मेलन

७ और ८ अप्रैलको लखनऊमें एक निर्दल नेता सम्मेलन होगा जिसमें राजनैतिक परिस्थिति पर विचार किया जायगा । विशेषरूपसे जिन प्रान्तोंमें शासन विधानकी ९३ वीं धाराके अनुसार गवर्नरों की निरंकुश सत्ता स्थापित है, वहाँ की स्थिति पर विचार होगा। सर तेजबहादुर इसके सभापति होंगे ।

बम्बईमें गुमाश्ता परिषद

यू. पी. के भू. पू. शिक्षामंत्री श्री सम्पूर्णानन्द की अध्यक्षतामें गुमाश्ता परिषदका ५ वाँ जलसा बम्बईमें सफलताके साथ मनाया गया । इसमें भारतभरके गुमाश्तों (कर्मचारियों) से अपील की गयी कि वे अपनी स्थितिको [illegible] करनेके लिये एक अ. भा. गुमाश्ता [illegible] की स्थापना करें । कर्मचारियोंको नियुक्त करनेवाले तथाकथित मालिकोंसे अपील की गयी कि वे अपने यहाँ कार्य करनेवाले व्यक्तियोंको समयानुसार वेतनवृद्धि, अवकाश और जीवनोपयोगी साधन तथा सम्मान की सुविधायें देवे ।

३० हजार मुस्लिमों द्वारा लीगका विरोध

बंगालके जमीयतुलउलमा ने गत ८ मार्च को स्वर्गीय मौलाना पीरहाजी अबूबकर के वार्षिक अधिवेशन में ३० हजार जनता की उपस्थितिमें मुस्लिमलीगके नेतृत्वको को चुनौती दी। सभामें यह प्रस्ताव पास किया गया कि मुसलमानों को लीगसे सम्बन्ध विच्छेद कर लेना चाहिये । लीग इस्लामके सार्वभौम सिद्धान्तपर संगठित नहीं हुई है । व्यवस्थापक सभाके मुस्लिम सदस्यों से भी लीगसे सम्बन्ध तोड़लेनेका आग्रह किया ।

भारतमें गेहूँका मूल्य निर्धारण

विश्वस्त सूत्रोंसे प्रता चलता है कि सारे भारतमें गेहूँका अधिकसे अधिक मूल्य निर्धारित करनेकी एक योजना बन रही है जो आगामी १ अप्रैल से शुरु होगी। ऐसा ख्याल किया जाता है कि गेहूँका अधिकसे अधिक भाव ९ रुपये प्रतिमन नियत होगा ।

वायसरायकी कौंसिलमें परिवर्त्तन

नयी दिल्लीसे प्राप्त समाचारोंसे पता चलता है कि बड़े लाटकी कौंसिलमें कुछ परिवर्तन होनेकी संभावना प्रतीत होती है। खाद्य, श्रम, [illegible], डाक विभागोंके सदस्योंमें परिवर्तन होनेकी पूरी आशा की जा रही है। यह भी खबर है कि वायसराय लॉर्ड वेवेल अपनी शासन सभा का कुछ और अधिक भारतीयकरण करनेका विचार रखते है। भारतसे औद्योगिक नेताओंका एक प्रतिनिधि मंडल जल्दी ही इंग्लैण्ड जानेवाला है, और इस सम्बन्धमें भारत सरकार प्रतिनिधि मण्डलके सदस्योंके नामोंकी घोषणा शीघ्र ही करेगी ।

देश विदेशकी चर्चा
ART CORNER

मास्टर तारासिंह लापता

सुप्रसिद्ध अकाली नेता मास्टर तारासिंह एकाएक लापता हो गये हैं। आपने इसी पखवाड़ेमें शिरोमणि अकाली दल और उसकी प्रबन्धक कमेटीके अध्यक्षपदसे त्यागपत्र दिया था, और राजनीतिसे सर्वथा पृथक् होकर धार्मिक जीवन बितानेका निश्चय प्रकट किया था । आपके लापता होजाने से सारे देशमें खासकर पञ्जाबमें हलचल मची हुई है ।

दहेज लेना दण्डनीय

सिन्धमें एक नया कानून बना है जिसके अनुसार दहेज का लेना जुर्म करार दिया गया है । इसके साथ ही कन्यापक्षसे विवाहके तीन साल पहिले और तीन साल बाद तककी अवधिमें किसी भी प्रकारकी भेंट लेना अपराध समझा जायेगा । विवशतामें दहेज देनेवाले पर मुकद्दमा न चलेगा, पर लेनेवाला हर हालतमें दण्डनीय होगा ।

२० हजार रूसियोंको ज़हर

मास्को रेडियोने सूचित किया है कि अपराधोंके जाँच कमीशनने रिपोर्ट दी है कि अधिकृत सोवियट प्रदेशमें जर्मनोंने लाल सेनाके युद्धबंदियों सहित लगभग २० हज़ार सोवियट नागरिकोंको विष देकर या 'गैसवैन' में डालकर मौतके घाट उतार दिया है।

फिनलैण्डको चेतावनी

फिनलैण्ड और रूसमें जो सन्धिवार्ता चलती थी, वह सफल होती नहीं जान पड़ती है । अमेरिकाके राष्ट्रपति रूजवैल्टने फिनलैण्डको चेतावनी दी है तथा आग्रह किया है कि वह जर्मनीसे अपना सम्बन्ध विच्छेद करले और अपनेको युद्धसे पृथक् करले ।

समस्त मोर्चोंपर लाल सेनायें

लालसेनायें सभी मोर्चोंपर जबर्दस्त प्रगति कर रही हैं । प्रोस्कुरोव और विनित्साकी ओर लालसेना अधिक तेजीके साथ बढ़ रही है । प्रोस्कुरोवमें जर्मनोंका प्रतिरोध जोरदार है किन्तु लालसेनाके सामने उनकी पेश नहीं चल रही है । बग नदीपर जर्मन रूसियोंको रोकनेकी कोशिशोंमें है, किन्तु उन्हें इसमें सफलता नहीं मिल रही है । पूर्वमें रूसी विनित्सासे केवल ६ मील दूर रह गये हैं । रूसी विज्ञप्तिके अनुसार द्वितीय यूक्रेनियन मोर्चे पर लालसेनाने ओडेसाके आसपासके जिलेके दो सदर मुकामों और अनेक आबाद स्थलों पर कब्जा कर लिया । निकोलाव और इंगुलेट नदीके बीच घेरेसे एक भी जर्मन भागकर नहीं निकल सका । यह घेरा लगभग ३० मील लम्बा और १० से १५ मीलतक चौड़ा है।

रूमानिया घुटने टेकेगा !

लाल सेनायें रूमानिया की रक्षाके बाहरी हिस्से बेसरेबिया की सीमाके पास नीस्टर नदी तक पहुंच चुकी हैं। इसके अलावा ४० मीलके विस्तारमें लालसेना अनेक स्थानोंसे ल्वोव-ओडेसा रेल्वेसे १०-२० मीलके फासले पर डट गयी है। रूमानियासे मुठभेड़ करती लाल सेनाको रोक सकनेमें असमर्थ होकर रूमानियाँ की ओरसे सन्धिकी शर्तें पेशकी जाने की भी खबर है ।

आयर्लैण्डसे तनातनी

अमेरिकाने आयर्लैण्डसे आग्रह किया था कि वह अपने यहांसे जर्मनी और जापानके दूतावासों को हटादेवे, क्योंकि मित्रराष्ट्रोंने जो यूरोपमें नया मोर्चा खोलना है उसके सम्बन्धमें गुप्त बातें मालूम करके उक्त दूतावासके द्वारा शत्रुपक्षको सूचनायें देने का अन्देशा है। आयर्लैण्ड के प्रधानमन्त्री डीवेलराने अमेरिकाकी उक्त मांगको माननेसे इन्कार कर दिया है। परिणामस्वरूप ग्रेटब्रिटेन तथा आयर्लैण्डके बीच यातायात बन्द कर दिया गया है, और ब्रिटेन की सरकार इस सम्बन्धमें कोई कड़ी कार्रवाई करनेपर विचार कर रही है।

कैसिनो बर्बाद : जर्मनीपर बमवर्षा

इटलीके मोर्चेपर युद्ध पहिलेकी तरहही जारी रहा। मित्रसेनाओंने कैसिनोनगरको बमवर्षा करके नष्टभ्रष्ट कर दिया है। नगरका पतन किसी भी वक्त हो सकता है। नगरके बाहरी भागसे पैदल मित्रसेना नगरमें घुसनेका यत्न कर रही है।

जर्मनीपर गत १२ मार्च से हजारों विमान प्रतिदिन लगातार हमला कर रहे हैं। १४ और १५ मार्चके दिन तो एक साथ अढ़ाई हजार विमानोंने जर्मनीपर आक्रमण किया।

आराकानमें मित्र सेनाकी सफलता

आराकानके मोर्चेपर मित्रसेनाओंको अब अच्छी सफलता मिल रही है। मित्रसेनायें अब जंगलकी लड़ाईमें निपुण होती जाती हैं। बुथिडॉंग पर मित्रसेनाओंने कब्जा कर लिया है। कलादानकी घाटीमें गश्तें जारी हैं। बर्माके विभिन्न भागोंमें बम बरसाये गये। विक्टोरियाझील, इन्सीन माग्यू आदि पर भारी बमवर्षा की गयी।

सिलचरपर बमवर्षा

एक प्रेस विज्ञप्तिमें सूचित किया गया है कि १२ मार्च को सिल्चरके क्षेत्रमें दुश्मनके कुछ थोड़ेसे विमानोंने आकर बम गिराये। जनधन की मामूली क्षति हुई।

जापानपर मित्र पक्षीय सेनायें जबर्दस्त आक्रमण करनेवाली हैं इसलिये पूर्वीय भारतकी बस्तियों तथा शहरोंपर जापानके बदला लेनेकी मनोवृत्ति वाले हवाई हमलों की संभावना की जा रही है।

सिरोही प्रजामंडल

सिरोही प्रजामंडलके प्रमुख कार्यकर्ता श्री देवीचंदजी जैनको भारत रक्षा कानूनकी धारा ३४ में किसानोंको बरगलाने और युद्धके विरुद्ध प्रचार करनेके अभियोगमें एक वर्षकी सख्त कैद और १००० रु० जुर्मानेकी सजा दी गई है। जुर्माना न देने पर ३ मास और जेलमें रहना होगा। सन् १९४५ में भी आपको क्रिप्स प्रस्तावोंके विरुद्ध एक पत्रिका प्रकाशित करने पर एक वर्षकी सख्त कैद और सौ रुपया जुर्माना किया गया था।

महात्माजी और सरकारमें पत्रव्यवहार

मामला चलाओ या मुक्त करो

ज्ञात हुआ है कि भारतसरकारने म० गान्धीको एक पत्र भेजकर नज़रबन्दी का कारण बताते हुए उनपर आरोप रखे हैं। संभव है, इस तरहके पत्र कांग्रेस वर्किंग कमिटीके अन्य सदस्योंको भी लिखे गये हों। ऐसा मालूम पड़ता है कि नये कानूनोंके अनुसार आरोप लगाकर इन नेताओंके मामलों पर भारतसरकार विचार करेगी। कहा जाता है कि एक लम्बा उत्तर देकर गान्धीजीने सरकारको बताया है कि उनपर लगाये दोष सर्वथा निराधार हैं, और वे सदा जहाँतक संभव हो बातचीतसे समझौता करनेको इच्छुक रहे हैं, यदि इस तरहसे बातचीत का मौका दिया जाता तो संभवतः वह सफल भी हुआ होता। गान्धीजीने इस बातपर भी जोर दिया है कि अ. भा. कांग्रेस कमेटीकी बैठकमें पास किये प्रस्तावोंसे यह तो स्पष्ट ही है कि आन्दोलन शुरू करनेके लिये मौका ही नहीं था, और कांग्रेस पर युद्धप्रयासमें रुकावट डालने का दोषारोप भी निर्मूल ही है। गांधीजी का कहना है कि इन्हीं कारणोंसे उन्हें नज़रबन्द रखना बिल्कुल अनुचित है। उन्होंने मांग की है, या तो मुझे मुक्त किया जाये या मुझ पर मामला चलाया जाये।

गान्धीजीसे कहा गया था कि वे अपना उत्तर बम्बई सरकारके गृहमन्त्रीके पास भेज दें।

कमज़ोर, और कच्चे कागज़ों के पेकिंग से होनेवाली

अपने व्यवसायकी हानिको बचाइये

हमारा मज़बूत, चीमड़ और सुन्दर

गैंडा मार्का

बैम्बू पल्प का बना हुआ क्राफ्ट पेपर

आपकी मुसीबतों को दूर कर देगा

यह उच्चकोटि का
पेकिंग कागज़
है

भारतीय बाजारमें
आज इसका
प्रतिस्पर्धी नहीं

**हमारी मिल वाटरप्रूफ कागज (Water Proof Craft Paper)
तथा हरेक किस्मका बोर्ड भी तैयार करती है।**

एक बार इस कागज़ और बोर्ड का व्यवहार करनेपर
आप दूसरे पेकिंग कागज़ और बोर्ड का नाम न लेंगे

—ओरिएण्ट पेपर मिल्स लिमिटेड—

८, रायल ऐक्स्चेंज प्लेस, कलकत्ता

दिल्ली राज्य प्रजामंडलके श्री देवसुमनको सजा

टिहरी । दो मास तक लगातार ियां बढाए जानेके बाद आखिर २१ फर- ीसे टिहरी जेलमें टिहरी राज्य प्रजामंडलके ंचालक तथा अ० भा० देशी राज्य प्रजा- रिषदके सदस्य श्री देवसुमन जिन पर धारा १२४ ए. के अन्तर्गत राज्यमें राजद्रोह फैलानेका भियोग है, के मुकदमे की कारवाई शुरू हुई। सके लिए मामराजसिंहको विशेष अधिकार देकर मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। पता चला है कि इन दो महीनोंमें पुलिस बड़ी सरगमीके ाथ श्री सुमनके विरुद्ध गवाह तैयार करती रही। ह उनकी अनुपस्थितीमें उनके घर की तलाशी लेकर निर्दोष कागज व साहित्य उठा ले गई। रकार की ओरसे श्री देवसुमनके विरुद्ध प्रजामण्डलके संचालक होने तथा टिहरी महाराज व उनके शासनके खिलाफ विद्रोह घृणा व द्वेष फैलानेका आरोप लगाया गया। इसके सबूतमें ुलिसके तैयार किए १० गवाह जिनमें अधि- कांश सरकारी कर्मचारी हैं और सुमनजीके कुछ ेख व कागजात पेश किए गए। श्री देवसुमनने स मुकदमे को झूठा बनावटी और बदले की ावनासे चलाया हुआ बताया। सरकारी वाहों को कतई बनावटी, अधिकांश को सर- री नौकर व पुलिस के आदमी सिद्ध किया। न्होंने अपने लेखोंको वैध आलोचना और ुधार की भावना से लिखा हुआ बताया। न्होंने यह स्वीकार किया कि जहां वे अपने देश के पूर्ण स्वतंत्रता के ध्येय पर र करते हुएं इस दिशामें प्रयत्नशील हैं टिहरी राज्य में उनका तथा प्रजामंडलका ्य वैध व शांतिपूर्ण उपायोंसे ही महाराजको छाया में उत्तरदायी शासन प्राप्त करना और ा के साधन द्वारा राज्य की सामाजिक र्थिक तथा सब प्रकार की उन्नति करना है। हरी महाराज व उनके शासन के विरुद्ध सी प्रकार का विद्रोह, द्वेष व घृणा फैलाना के सिद्धान्तके विरुद्ध है। महाराज के प्रति सदभावना, श्रद्धा व भक्ति के भाव रखते वे सत्य और अहिंसामें विश्वास करते हैं। लिए विरोधी के प्रति घृणा व द्वेषका भाव ीं रखते। संघर्षसे बचनेके लिए ही पहिलेसे ामंडलकी रजिस्ट्रीकी बातचीत चलाई और देश व राज्यकी इस संकटपूर्ण स्थितिमें ताकी सामयिक सेवाके कर्तव्य भावसे सहयोग उनकी सामाजिक व आर्थिक सेवाके इरादेसे मंडलकी वैधानिक स्वीकृतिके लिए लिखा शुरू की थी। लेकिन मुझपर एक झूठा बनावटी आरोप लगा कर इस प्रकार जेलमें कर सब प्रकारकी वैध व कानूनी विधाओंसे कतई वंचित कर दिया है यह अन्याय है। इस अवस्थामें मैं और कोई नूनी सफाई अपनी ओरसे नहीं दे सकता। यह बयान दे कर मैं अदालत तथा श्री राजको इस झूठे अभियोगसे अपने निर्दोष का विश्वास न करा सका तो अपना जीवन कर भी मैं अपने देश, उद्देश्य, सिद्धान्त व थाकी रक्षा करूंगा। इस प्रकार इस राज्यके जनिक जीवनका अन्त न होने दूंगा।

का समाचार है कि श्री सुमनजीको दो कठोर कारावास और दो हजार जुर्मानेकी दी गई।

राजस्थानी संसार

माहेश्वरी पंचोंका स्तुत्य उपक्रम

राजस्थानी समाजसे अनुकरण करनेकी विनम्र प्रार्थना

नासिक के प्रमुख पंचों ने स्थानीय बालाजी मंदिरमें एकत्रित होकर निम्नलिखित ठराव एकमतसे पास किया हैः—

" पंचोंकी यह सभा समाजकी प्रचलित युद्धजन्य परिस्थितिमें बिगडी हुई हालतको देखकर समाजको शादी आदि पंचायती भोजोंके बारमें घरधनी को एक २ आमंत्रण देनेकी तथा शक्यतानुसार पंचायती, भोज अजिवात बंद कर देनेकी आज्ञा देती है। और समाजको ' पावणापई समसत ' यानि सिगरी आमंत्रणोंका अस्वीकार करनेकी प्रार्थना करती है।

ऐसा कौन कमनसीब है जोकि पंचराजोंकी यह आज्ञा और प्रार्थना नही मानेगा? सारा समाज तो बहुतही दिनोंसे पंचायती भोजोंसे छुटकारा चाहता है। लेकिन रुढ़ियोंकी दास्यता, दिखावेकी बेड़ी और पंचोंकी प्रतिष्ठाने उसे ऐसे भोजोंको करनेपर मजबूर किया है। हम किसीभी हालतमें अपने हर एक बन्धुको 'आज़ाद, देखना चाहते है। वह अपनी खुशी और शक्यतानुसारही जो चाहे कर सकता है। हमारी दृष्टि में नासिकके प्रमुख और रुढी प्रिय पंचोंने खाली नासिककी नही बल्कि सारे भारतवर्षकी पंचायतोंको अनुकरण करने योग्य ठराव पास करकर अत्यंत ऋणी कर रखा है। हमें पूरा भरोसा है कि सभी पंचायती प्रेमी सज्जन इस तरह ठराव करके व्यक्ति विशेषको इस बारेमें आज़ाद करेंगे।

विनम्र

जयनारायण मंत्री
सुरजमल सुराणा बी. ए.
पुष्करराज कोचर
सुरेश राठी

नोटः—नासिकके ऊपर दिये निर्णयके लिये हम वहाँकी पञ्चायतको धन्यवाद तथा बधाई देते हैं। इस निर्णयसे जनताका जो लाभ होगा वह निर्विवाद है। हमारा अनुरोध है कि अन्य स्थानोंकी पञ्चायतें भी इस प्रकारके निश्चय-निर्णय करके लोककल्याणका पुण्य प्राप्त करें।—**सम्पादक**

समग्र देशमें विक्रम महोत्सव

आगामी २५।२६ मार्च को विक्रम महोत्सव का आयोजन प्रायः समाज की ख्यातनामा संस्थाओं द्वारा किया गया है। कहना न होगा कि उक्त दिवस हमारी संस्कृति और प्राचीन गौरव के दृष्टिकोण से विशेष महत्वपूर्ण है। अतएव समाज की प्रत्येक संस्था को अपने प्राचीन गौरव को अक्षुण्ण रखने के लिए विक्रम महोत्सवका आयोजन अपने अपने स्थानों में अवश्य करना चाहिए। सम्मेलन की समस्त शाखाओं से विशेष रूपमें निवेदन है कि वे अपने तत्वावधान में उपर्युक्त आयोजन करें।

बजरंगलाल लाठ, प्रधान मंत्री।

जयपुरके रेवेन्यू मिनिस्टर

रा० ब० हिम्मतसिंहजी माहेश्वरी जयपुरके नये माल्मंत्री नियुक्त हुए हैं। आप काश्मीर और जोधपुरमें भी इस पद पर काम कर चुके हैं।

अ. भा. मारवाडी सम्मेलन की बैठक स्थगित

बंबईमें आगामी २५।२६ मार्चको होनेवाली अखिल भारतीय समिति और वर्किंग कमेटीकी बैठकें स्थगित होगयी हैं। निश्चित तिथियोंकी सूचना यथाशीघ्र पत्रोंमें प्रकाशित की जायगी।

बजरंगलाल लाठ
प्रधान मंत्री।

अजमेरमें पवित्र होली महोत्सव

ता. १० की प्रातःकाल ट्रेवर टाउन हालमें श्री. चांदकरणजी शारदाके सभापतित्वमें होली महोत्सव बड़े समारोहसे मनाया गया, अजमेरके समस्त भजनीक कवि व शायरोंने अपनी सुंदर रचनाएं इस शुभ अवसर पर सुनाई। टाऊन हाल खचा खच भरा हुआ था और लोगोंपर गुलाब जल छिड़का जा रहा था।

माहेश्वरी पंच दुधीया बांड़ीवारके नाम खुली चिट्ठी

हमारा नवयुवक मंडल आपको यह सूचित करता हैं कि आपके ग्राम निवासी सेठ हीरालालजी गोविंद रामजी अपनी लड़की मंगुबाईका लग्न कन्याविक्रयके रूपमें करना चाहते है यह बात अपने समाजको कलंकित करती है। अतः हमारा नवयुवक मंडल आपसे नम्र विनंति करता है कि ऐसे कलंकित कामोंसें रोक न करते हुवे मौन साध करके बैठे रहना बहुत ही अपमानजनक बात है और भविष्यमें सारे माहेश्वरी समाजको दूसरे समाजके सन्मुख नीचा झुका देना है। अतः प्रार्थना है कि इस कार्यको जलदी रोकनेकी तजबीज करें और लड़कीके अनमोल जीवनकी कीमत करके उसका जीवन सुखी करनेमें सहायता करें। आशा है आप हमारी विनति पर ध्यान देवेंगे।

माहेश्वरी नवयुवक मंडल ऑफिस,
दोहद।

माहेश्वरी हीरालालजी गोविंदरामजी बांडीबार वालेके नाम खुली चिट्ठी

श्रीमान् संपादकजी माहेश्वरी कार्यालय मुंबई. हम नीचे सही करने वाले आपसें प्रार्थना करते हैं कि हीरालालजी गोविंदरामजी माहेश्वरी बांडीबार वालेके नाम खुली चिट्ठी जिसका मजमून नीचे मुताबिक है उसको माहेश्वरीके निकलने वाले अंकमें प्रकाशित करने की कृपा करें।

" हम नवयुवक मंडल आपको (सेट हीरालालजीको) यह सूचित करते हैं कि आप अपनी लड़की मंगुबाईका लग्न कन्याविक्रयके रूपमें करनेको तैयार हुवे हो ऐसा सुननेमें आया है। हमारा नवयुक मंडल आपसे नम्र विनंति करता है कि आप गैर तरीकेका व्यवहार करके अपनी लड़की, जो मातापिता की प्यारी सन्तान मानी जाती है उसके जीवन पर आघात पहुंचानेका कर्तव्य न करें। और प्रार्थना है कि आप लड़कीके मनपसन्द वरकी तजवीज करें, और आपने जो अपने स्वार्थकी पूर्तिके लिये उपाय सोचा है उसका परित्याग कर दें।

आपको बाईके संबन्ध में खर्च की तकलीफ हो और आपके पास इस बातकी कमी हो तो आप हमें 'माहेश्वरी' द्वारा सूचित करें तो इस कार्यके अनुसार बगर मुबादला लेनेकी इच्छासे प्रबन्ध किया जावेगा। आशा है कि पत्र पढ़कर आप हमारी प्रार्थना स्वीकार करेंगें। अगर आपने इस बातकी ओर ध्यान नही दिया तो इसके विरुद्ध योग्य कारवाई स्टेटकी मारफतकी जावेगी।

माहेश्वरी नवयुवक मंडल
हेड ऑफिस दोहद

ह० १ चान्दमल. दलाल वाज
२ दलीचन्द
३ जगन्नाथ
४ भगवानदास
५ सोभागचन्द

गवालियर राज्य सार्वजनिक सभा के चुनावसे जनतामें निराशा

गवालियर राज्य सार्वजनिक सभाके अध्यक्ष पदके चुनावके लिए कोई छः व्यक्ति नामजद हुए थे। किन्तु सबने अपने नाम वापिस ले लिये और श्री त्र्यंबक सदाशिव गोखले श्री. जगन्नाथ प्रसादजी मिलिन्दके मुकाबले चुनावमें जीत कर सभापति घोषित होगये। इस चुनाव से गवालियरकी जनताको निराशा हुई है और उसकी मान्यता है कि सार्वजनिक सभा और भी कमजोर होगी।

श्री गोखलेको नहीं चुननेके लिए कार्यकर्ताओंकी सम्मति इस लिए थी कि वे इस सार्वजनिक सभाको छोडकर उस मिनिस्ट्रीका समर्थन करनेके लिए राजाकी नोकरीमें गए थे जिसका सभाने विरोध किया था। इसके अतिरिक्त मजदूरोंका भी विरोध था। सार्वजनिक सभाके कार्यकर्ताओंकी ऐसी नीतिके कारण राज्यमें अनेकों स्थान पर सभाके नाममात्रके सदस्य रहे हैं। कई लोग सभा छोड़ते जा रहे हैं।

टेलीफोन नंबर ६००४५ / ६००४६] ★ [तारका पता "श्रीनिवास"

श्रीनिवास कॉटन मिल्स लिमिटेड

डिलाईल रोड, बम्बई १३

श्रीनिवास मिल का कपड़ा बढ़िया और टिकाऊ
होने के साथ २ सस्ता भी है.

हमारी

धोतियां, साड़ियां, लट्ठा, वाइल, मलमल, पापलिन,
चैक आदि ख्याति-प्राप्त माल है

श्रीनिवास मिल्स का **नरेन्द्र-छाप** लट्ठा सुप्रसिद्ध है

कोरा, रंगीन, धुला हुआ, छपा हुआ व फैन्सी
हर प्रकार का माल हम तैयार करते हैं.

हमारे बम्बई के सोल एजन्ट्स :—

मैसर्स, दी बम्बई एजन्सी कम्पनी लिमिटेड,
सर विठ्ठलदास गली, मूलजी जेठा मार्केट, बम्बई

मैनेजिंग एजन्ट्स—

दी मारवाड़ टैक्सटाईल्स (एजन्सी) लिमिटेड, बम्बई.

दोषी कौन

ले.—श्री श्रीरामजी चोखानी

वह एक नवयुवक था। हर तरह से सम्पन्न और समृद्ध मारवाडी समाज में वह उत्पन्न हुआथा— सो भी एक ऐसे ऊंचे घराने में जिस पर लक्ष्मी की विशेष कृपा थी तथा जहां आर्थिक और सांसारिक दृष्टि से किसी वस्तु की कमी न थी। परन्तु यह सब होते हुए भी वह अपने भाग्य को हरवक्त कोसा करता, चूंकि वह अपने आपको अभागा समझता था। प्रति क्षण वह यही सोचा करता कि न जाने किस तरंग में विधाता ने उसके भाग्य का निबटारा किया था, जो उसको मारवाड़ी समाज में जन्म ग्रहण करना पड़ा, वह इससे तो. नरक कुंड में पड़े रहकर वहां की भीषण यातनायें सहते रहना श्रेयस्कर समझता था। लेकिन क्यों—क्यों वह अपनी स्थिति से असन्तुष्ट रहता था—उसकी ठंडी और लंबी सांसों में क्या रहस्य था, मैं न समझ पाता था। क्योंकर वह अपने समाज पर विष उगलता रहता, किस कारण को लेकर वह यह कहता ' काश मेरा जन्म मारवाड़ी समाज में न होता! यह विषय मेरे लिये एक जटिल समस्या बन गई, मैं इस प्रश्न को जितना अधिक सुलझाने का प्रयत्न करता, वह उतना ही ज्यादा उलझता जाता। अन्त में वह मेरे लिये एक कठिन पहेली बन कर रह गई।

परन्तु एक ऐसी घटना उपस्थित हुई जिसने इस पहलू को और भी ज्यादा समस्यात्मक बना दिया। बात यह हुई, मेरे किसी मित्र का विवाह था; मैं भी उसे उसके विवाहित होजाने पर बधाई देने गया परन्तु... जब मैने उसके प्रति एक सफल और आनन्दमय दाम्पत्य जीवन के लिये अपनी शुभ कामनायें व्यक्त कीं, तो मैने उसके मुख से एक अजीव उत्तर सुना और मैं दंग रह गया। उसने कहा—" प्रिय म्त्रि, तुम्हारी शुभ आकांक्षाये व्यर्थ हैं, मेरी सफलता और आनन्द मंगल पर हमेशा के लिये मोहर जड़ दी गई है, तथा मेरे भविष्य की सम्भाव्य सफलता असफलता का भी तय हो चुका। विवाह होने से पूर्व मैं समझता था जैसा कि हर युवक ही सोचता है कि यह एक मधुर और प्रेममय बन्धन है, जिसमें बंध जाने से जीवन में प्रेम, सुख, शान्ति और विकास की प्राति होती है। परन्तु आज मैं अपने आपको एक भयप्रद और दुखदायिनी जंजीर में जकड़ा पारहा हूं, तथा मेरा भविष्य मेरे लिये अंधकारमय प्रतीत होरहा है, कहीं सुख और आशा की एक रेखा भी नजर नहीं आती। इस विवाह नाटक के समाप्त होते ही जैसे मेरे भाग्य पर भी परदा पड़ गया—काश! आज मैं अविवाहित होता—कितना ही अच्छा होता यदि मैं तुम्हारे मारवाड़ी समाज में उत्पन्न ही न हुवा होता " मुझे ऐसा मालूम होने लगा, जैसे समाज की विवाह प्रणाली पर प्रहार करने के साथ साथ उसने मेरे मुंह पर भी थप्पड़ मारा। मैं सन्न होगया, मैने देखा उसका चेहरा और भी गंभीर बन गया था जब वह कहने लगा—' ऐसे समाज में जन्म लेना पाप नहीं तो क्या है, जिसके धनवान् ही ठेकेदार हों, जहां धर्म की आड़ लेकर हम लोगों के दिलोंपर वार किये जाते हों, हमारी आत्माओं का खून किया जाता हो; जहां नवयुवकों की कोई आवाज नहीं; उनकी इच्छा अनिच्छा का कोई खयाल नहीं। जहां उनकी भावनाओं और उमंगों को कोई आदर नहीं मिलता। यदि उनके जीवन-मरण का भी प्रश्न हो, तो भी उनकी राय, अनुमति की आवश्यकता नहीं—किसी के लिये जीवन-साथी चुन देने की कला में बड़ों ने अपने कोही निपुण समझरखा है तथा इस व्यवसायका ठेका भी ले रखा है, चाहे वह जीवन साथी उनके लिये, जिसे वे अपने इस कृपा का पात्र बनाते हैं, जीवन कांटा क्यों न सिद्ध होता हो। तुम्हें यह सुनकर आश्चर्य होरहा होगा " वह कहता गया " परन्तु सम ज ने हमें अत्याचारों के दंश मार मार कर इस तरह से सोचने के लिये विवश किया है समझे।"

उस दिन के बाद मैने यह भली प्रकार समझलिया कि वह केवल ' एक नवयुवक ' की विशेषता न थी; वरन् सारे नवयुवको के हृदयोंमें में ही असन्तोष और अशान्ति की आग सुलग रही है—जो न जाने कब ज्वालामुखी बन कर फूट निकले। मुझे अब मालूम हुवा कि वह एक नवयुवक ही इस समाज में जन्म लेना अपना दुर्भाग्यन समझता था; परन्तु वह युवक तो सिर्फ नवयुवकों के दिलों मे फैली हुई विद्रोह—भावना की जीती जागती प्रति मूर्ति थी। वह तो केवल नवयुवक समाज का दर्पण था, जिसमें उसके सदस्यों की मनोगति का वास्तविक चित्र प्रतिबिम्बित हो रहा था। कुछ भी हो; मैं यह जानकर व्याकुल हो उठा, यह जानकर मुझे अत्यंत दुख हुवा कि वे ही युवक जिन पर समाज की बड़ी बड़ी आशायें लगी हैं, और जिन पर ही समाज का सारा भविष्य निर्भर है, वे ही आज समाज पर इस बुरे तरीके से प्रहार पर प्रहार करने पर उतारु होगये एवं इसकी व्यवस्था—इसकी रीतरस्मों पर कीचड उछालने लगे, तो फिर बस होगया कल्याण। क्या कोई समाज अपने नवयुवकों से ऐसी चीज की आशा कर सकता है कि वे अपने समाज को दुनिया की नजरों में ऊंचा चढाने के बजाय नीचा गिराकर ' घर का भेदी लंका ढावे ' वाली कहावत को चरितार्थ करें —मेरे मस्तिष्क में घोर द्वन्द-युद्ध होने लगा; एक तरह थी समाज के प्रति श्रद्धा, दूसरी ओर नवयुवकों क प्रति सहानुभूति। परन्तु धीरे धीरे यह समवेदना उनके प्रति घृणा का रूप धारण करने लगी जब मैं यह सोचने लगा —" वे कल के नादान छोकरे यौवन के जोश से मदान्ध होकर अपने ही घर को। घर के चिराग सेही जला कर खाक करने पर न तुले हुये हैं? क्या वे पाश्चात्य सभ्यता में प्रवाहित होकर अपनी संस्कृति, अपने अस्तित्व और अपने समाज देश को न भुला चुके हैं? हां—हां—उनके विक्षोभ का मूल कारण उनपर अधिकार किये हुये नई शिक्षा का उन्माद हैं। वे आज असन्तुष्ट हैं दुखी हैं, इसलिये कि इन्होंने अपने लिये काल्पनिक दुख का कारण पैदा कर असन्तोष और पश्चात्ताप की अग्निमें जलते रहना पसन्द किया है। इनको समाज ने ऐसी कोई विकट परिस्थिति में नहीं डाला है, इनको इतना प्रायश्चित्त करने जैसा हुवा ही क्या है? अतः वे ही गल्त रास्ते पर हैं। समाज दोषी नहीं—दोषी युवक ही हैं हां हां वेही "………

इस तरह जब मेरे मस्तिष्क सागर में युवकों के विरुद्ध विचार धाराओं का तूफान उबल रहा था, मुझे इतने में ही एक भयंकर गर्जन सुनाई पड़ा। अचानक मैं चौंक उठा और मुझे आभास होने लगा कि बड़े बड़े बादल आकाश में घोर गर्जना कर रहे हैं, तथा इस मेघनाद में जैसे कुछ नहीं नहीं...नहीं के शब्द गूंजे, तथा जैसे कि मुझे वे कोई संदेश सुनाना चाहते हों। उन बादलों में रह रह कर बिजली चमक रही थी जैसे वे मुझे वास्तविकता का रास्ता दिखाना चाहती हों। मेरे चारो तरफ तेज और तूफानी पवन चल रहा था और जैसे वह मेरे कानों में घुसकर कुछ कहने का प्रयास कर रहा हो। परन्तु एकाएक कोई आवाज सुनकर मैं भय भीत हो उठा—मुझे मालूम नहीं होसका कि यह आवाज किधरसे आरही है परन्तु मैने सोचा कि इस तूफान के बाद शायद यह आकाशवाणी हो रही है जो मुझे इस तरह से आदेश चाहती है……

" नहीं………वे दोषी नहीं……तुम उन्हें दोषी ठहराकर उनके प्रति अन्याय कर रहे हो? उनकी बेवसी और बेकसी पर सहानभूति प्रकट करना तो दूर रहा, ऐसी बातें कर रहे हो? जैसे कुछ हुवा ही नहीं: तथा जैसे सामाजिक व्यवस्था के बारे जो कुछ कह रहे हैं सब मनगढन्त है। वे गल्त नहीं, गल्त तो तुम लोग हो सकते हो जो पुरानी अक्ल और बुद्धि के होने से बदले हुये समय में नयी व्यवस्था की आवश्यकता नहीं महसूस कर पाते। उन युवकों का दोष तो सिर्फ यही है कि वे कुरीतियों से दबे जारहे हैं, उन कुप्रथाओं के सामने नतमस्तक हो उनके दुष्परिणाम भोगे जारहे हैं—दोषी वे इसी… कि वे कायर बन रहे हैं तथा तुम्हारे समाज है… अपनी खोई शक्ति को बटोरकर स्वतंत्रता के लिये युद्ध नहीं करते। परन्तु क्या करें बेचारे —समाज की चक्की में पिस पिसकर उनके दिल और दिमाग इस तरह बेकार हो जाते हैं कि उनमें स्वतंत्रता की भावना जागृत नहीं हो सकती। उन्होंने समाजके बन्धनोंमें इस तरह कसे रहकर दास भावनाको अपना लिया है तथा अपनी गुलामीके आदी हो गये हैं। परन्तु उन्हें इस तरह निर्जीव, निस्तेज, व शक्तिहीन बनाने का दोष तुम्हारे समाज पर नहीं तो किस पर है? हां समाज पर—जिसके पहियेके नीचे आकर नवयुवकोंकी सारी आशायें चकनाचूर हो जाती हैं, वह समाज जो ऐसी लोहेकी दीवार है जिससे टकराकर उनकी आकांक्षायें टूक टूक हो धूलमें मिल जाती हैं, ऐसी तलवारकी धार है जो उनकी एक एक उमंगका खून किये बिना नहीं रहती। वे चेतनाशून्य, कल्पनाविहीन क्यों न हो जायें, जब जितनी कल्पनायें वे करते हैं वह उनके लिये सिर्फ कल्पना ही रह जाती है, उनकी एक महत्वाकांक्षा भी फलीभूत न होने दी जाय इस बातकी सावधानी जब तुम्हारा समाज रखता है। वे ऐसी परिस्थितियोंमें होते हुये भी जबान तक नहीं खोल पाते, केवल फूट फूटकर मुंह छिपाये रो लेते हैं, दुखसे छटपटा कर रह जाते हैं, पर उनकी सिसकियोंपर कोई ध्यान नहीं देता।"

" परंतु क्या तुमसे मैं यह पूछूं कि किस लिये तुम लोग उनकी सुख आशाओंके साथ होली खेलते रहे हो—क्या अधिकार है तुम्हें ऐसा करनेका? क्या गेंद समझ रखा है उनके दिलोंको जो मनोरंजनका साधन समझ कर उनके साथ क्रीड़ा करते आ रहे हो? फिर उनको मृतप्राय बनाकर किस बूते पर हम और तुम्हारा समाज किसी भी चीजकी आशा कर सकता है? परन्तु अभी भी उन्हें पुनर्जीवित किया जा सकता है यदि तुम उनको स्वतंत्रता प्रदान कर उनमें जीवन फूंकनेकी कोशिश करो—तभी उन्हें अपने कठिन प्रश्नोंको खुद हल करने का ज्ञान हो सकेगा। तभी उन्हें अपने अस्तित्व का भान होगा। यदि वे अपने जीवनके महत्वपूर्ण प्रश्नोंको हल करनेमें अपना भी हाथ रखना चाहते हैं, यदि वे अपने भावी दाम्पत्य-जीवनको पहले से ही सचेत और सावधान रहकर कलहमय और संघर्ष भरा होनेसे बचाने की कोशिश करते हैं तो इसमें उनकी क्या ज्यादती है? उनकी न्यायसंगत युक्ति को भी स्वीकार न कर उन्हें आन्दोलित करना न होगा? यदि वे विद्रोह कर बैठे तो फिर उन पर उच्छृंखलता का दोष न लगा सकोगे?"

वह आकाशवाणी—या वह आवाज और भी ज्यादा क्रोधपूर्ण एवं तीव्र हो गई जब वह आगे कहने लगी……… और हृदय खोलकर सुन लो। यदि तुमने तथा तुम्हारे समाज के अन्य कर्णधारों ने उन युवकों को बन्धन मुक्त न किया, और उनको उस दुःख सागर से बाहर न निकाला, तो याद रखो कि उन व्यथित हृदयों के आंसुओं से दूसरा समुद्र बन कर उमड़ पडेगा जिसमें सारा समाज तथा

(शेष पृष्ठ ३४के कालम ४ पर)

कमला मिल के कपड़े इस्तेमाल करें।

आर्टिफिशियल सिल्क, ज्योर्जेट साड़ियाँ, साड़ी क्लाथ और शर्टिंग कपड़ों के लिये यह मिल अपनी विशेषता रखती है

हेड आफिसः—
गोयनका हाउस
१४५, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,
कलकत्ता

हर प्रकार की धोती, साड़ी, कोरा लाँगक्लॉथ, कोटिंग, केनवास, सूसी, आदि आदि

कमला मिल्स लिमिटेड

तुलसी पाइप रोड, परेल, बम्बई. टे. नं. ६००६४–६५

बिक्री-विभागः—

बम्बई : टे. नं. २६९४५
मूलजी जेठा मार्केट

कलकत्ता :
सूतापट्टी

IMPERIAL TRADING Co.

Alli Chambers, Tamarind Lane, Fort,
Telegrams: "LOOMSPRING"

BOMBAY.
Telephone No. 27580.

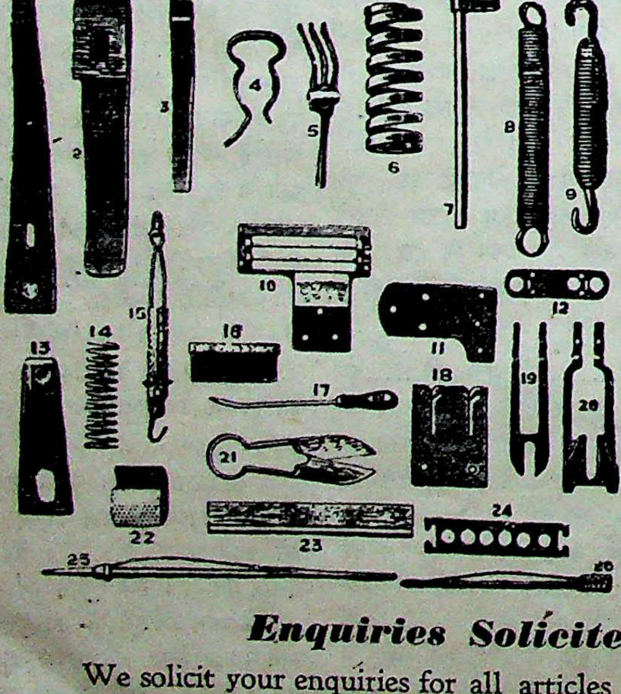

OUR SPECIALITIES

Springs, Temples and all accessories for Spinning and Weaving Machinery

BESIDES, WE HOLD AN EXTENSIVE STOCK of

Stripping Fillets
Burnishing ,,
Folding ,,
Plaiting ,,
Winding ,,
Likering ,,
Card Strippers
Walton Metallic Brush

Lickerine Wires
Lap rods & Oils cans Braime & "K"
Pot eyes for Bleaching dept.
Hydraulic Ram Rings
Jackson & Harries Fastners
Blue Glass Rods & Creel Steps

Card Chains & Link Chains
Hickory wood Picking Sticks
Dobby Lattices Comber Boards & Taper Pegs
Perth Gauge Glass & Glass Lubricators
etc. etc. etc. etc.

Enquiries Solicited

We solicit your enquiries for all articles connected with the Spinning & Weaving Industry and can quote you competitive prices. We will gladly send to you our latest price list on application.

Agents :—
RATILAL & Co., Cross Lane, Railwaypura Post, AHMEDABAD.
B. N. MODI & Co., 14/24, Civil Lane, CAWNPORE.

राजस्थानी संसार

बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन पुरस्कार

बीकानेर राज्य साहित्य सम्मेलन की ार्यसमिति के निश्चयानुसार निम्नलिखित ुरस्कार इस वर्ष निम्नांकित विषयों पर लिखे ये सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थों पर राजगढ़ (शार्दूलपुर) ें होने वाले सम्मेलन के पञ्चम अधिवेशन पर दान किये जायेंगे । इन पुरस्कारों में से ोहता पुरस्कार के लिये किसी प्रकार का ान्तीय प्रतिबन्ध नहीं होगा, परन्तु नाहटा ुरस्कार के लिये राजस्थान निवासी किसी भी लेखक की कृति-पर तथा अन्य पुरस्कारों के लिये बीकानेर राज्यनिवासी लेखकों की रचनाओं पर ही विचार हो सकेगा ।

इन पुरस्कारों के लिए प्रकाशित अथवा स्तलिखित पुस्तकें स्वीकार की जायेंगी । काशित पुस्तकों की ५, ५ प्रतियाँ तथा स्तलिखित पुस्तकों की ३, ३ प्रतियाँ ३१ जौलाई १९४४ इ० तक कार्यालय में आजानी चाहियें । पुरस्कार सम्बन्धी अन्य ानकारी के लिए कार्यालय से पत्र व्यवहार करें।

१–मोहता पुरस्कार (कृषि विज्ञान) ी रामगोपालजी मोहता बीकानेर द्वारा दत्त ५०१) रुपये का यह पुरस्कार इस वर्ष जस्थान की परिस्थिति को दृष्टिकोणमें खते हुए कृषि विज्ञान पर लिखे हुए सर्वश्रेष्ठ हिन्दी के ग्रन्थ पर दिया जायगा ।

२–टाँटिया पुरस्कार (हिन्दी) गिरधारीलालजी, टाँटिया सरदारशहर की ायस्मृतिमें उनके पौत्र 'श्रीरामेश्वरलालजी, था श्रीसत्यनारायणजी द्वारा प्रदत्त १०१) रु० ा यह पुरस्कार इस वर्ष समाज सुधार विषय र लिखी हुई सर्वश्रेष्ठ हिन्दी की पुस्तक पर दिया जायेगा ।

३–श्रीजगनराम पुरस्कार (संस्कृत) जगनरामजी वकील सरदारशहर की पुण्य-मृति में उनके पुत्र श्रीझम्मनलालजी एवं ौरीशंकरजी द्वारा प्रदत्त १०१) रु० का यह रस्कार इस वर्ष संस्कृत भाषा में लिखे हुए र्वश्रेष्ठ गद्यग्रन्थ (छोटी कहांनियाँ) पर या जायगा ।

४–नाहटा पुरस्कार (राजस्थानी) शंकरलालजी नाहटा की पुण्यस्मृतिमें उनके ्र श्रीअगरचन्दजी नाहटा बीकानेर द्वारा दत्त १०१) रु० का यह पुरस्कार इस वर्ष जस्थानीके सर्वं श्रेष्ठ गद्य ग्रंथ पर दिया ायेगा ।

५–खेतान पुरस्कार (आयुर्वेद) राधाकृष्णजी खेतान चूरू द्वारा प्रदत्त १०१) ० का यह पुरस्कार इस वर्ष " महामारियाँ ौर उनसे बचनेके उपाय " इस विषय की र्वश्रेष्ठ हिन्दी पुस्तक पर दिया जायेगा ।

६–वाँयवाला पुरस्कार (ग्रामसुधार) स्योलालजी वाँयवाला भादरा की पुण्यस्मृति श्रीनेमचन्दजी वाँयवाला द्वारा प्रदत्त १०१) ० का यह पुरस्कार इस वर्ष ग्राम सुधार तथा किसानों की उन्नति के उपाय इस विषय पर हिन्दी में लिखे गये सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ पर दिया जायेगा ।

प्रधान कार्यालय सरदारशहर

आचार्य ओंकारनाथ लाटा
प्रधानमन्त्री

नोटः—बीकानेरी या राजस्थानी लेखकों से अभिप्राय उन लेखकों से समझा जायेगा जो वहां के मूलवासी या अधिवासी हों, या पिछले दस वर्षों से वहां स्थायी रूप से रहते हुए व्यापार, नौकरी या अन्य कोई कार्य करते हों ।

सुरुचि सुधारपूर्ण विवाह

जबलपुर निवासी श्रीमान दीवानबहादुर सेठ जीवनदासजी के दामाद श्रीमान् सेठ चिम्मनलालजी बीम्मानी (सिवनी निवासी) के द्वितीय पुत्र चिरंजीव कुंवर भगवानदासजी बी॰ ए. का शुभ विवाह दिल्ली निवासी श्रीमान धर्मालंकार रायसाहेब सेठ मीनामलजी सोमानी धूलियावालों की सौभाग्याकांक्षिणी पुत्री सुश्री प्रकाशवती देवी के साथ मिती फाल्गुन शुक्ल ३ सं. २००० तदनुसार ता. २६ फरवरी सन १९४४ को सनातन धर्मानुसार विधिपूर्वक संपन्न हुआ ।

इस विवाह के समय वर को आयु २१ वर्ष एवं वधूकी १६ की है । दोनोंका शारीरिक एवं मानसिक विकास पूर्णरुपसे हो चुका है । विवाहके समस्त कार्य्यक्रमोंमें आदिसे अन्ततक गांधी युगकी सादगी एवं सुरुचिपूर्ण प्राचीन प्रथाओंका अपूर्व सम्मिश्रण दृष्टिगोचर होता था । रुढ़ियोंका पूर्ण रूपसे बहिष्कार किया गया ।

वर यान्त्रामें सिवनीसे केवल लगभग चालीस व्यक्ति दिल्ली पधारे जो कि वर्तमान समयमें खाद्य सामग्रियोंकी कठिनाई एवं सरकारी कानूनोंको देखते हुए उचित है । वर यात्रामें दिल्ली पधारने वालोंमें—श्रीमान दीवानबहादुर सेठ जीवनदासजी एवं उनके दोनों पौत्र, प्रसिद्ध मेहता वंशके मद्रास निवासी श्री रघुनाथसिंहजी मेहता, आगरा निवासी श्री लीलाधरजी व श्री गोपीनाथजी भट्टड़, डिवाई निवासी श्री प्रेमनारायणजी बापेचा, अहमदनगर निवासी श्री प्रेमसुखदासजी काबरा, राहुरी निवासी श्री बाबूलालजी वियाणी, गाडरवाड़ा निवासी श्री राधाकृष्णजी काबरा (बी. काम) जबलपुर निवासी श्री ब्यौहार रामप्रतापसिंहजी (ताल्लुकदार), जैपुरके भारत प्रसिद्ध वैद्य श्री पं. गोपीनाथजी शर्मा तथा पूज्यपाद महामना मालवीयजी द्वारा प्रेषित बनारस निवासी श्री यज्ञनारायण उपाध्याय एम. ए., एल. एल. बी., (एम. एल ए.,) उप मन्त्री अखिल भारत वर्षीय गोरक्षा प्रचारक मण्डल प्रमुख हैं ।

कन्या पक्ष की ओरसे बारात के स्वागतार्थ दिल्लीके प्रायः सभी विभिन्न समुदायोंके प्रमुख एवं प्रसिद्ध व्यक्ति उपस्थित थे । जिसमें सर्वश्री सर श्रीराम, मिस्टर बेली (डिप्टी कमिश्नर) (सीनियर) बार-एट-ला, लाला बनवारीलालजी लोहिए, बाबू चतुरबिहारीलालजी (सीनियर) एडवोकेट फेडरलकोर्ट, रायसाहब लाला रामप्रसादजी, दीनानाथजी आलानी, लाला हरीचन्दजी म्युनिसिपल कमिश्नर प्रमुख हैं । माहेश्वरी समाजमेंसे जो सज्जन बारातके स्वागत के लिए उपस्थित थे उनमें सेठ बालगोपाल दासजी लोइवाल, सेठ फकीरचन्दजी व सेठ रतनचन्दजी करवा फीरोजपुर निवासी, सेठ गनेशनारायणी लखौटिया कानपुरनिवासी सेठ कन्हैयालाल जी राठी, लाला चिरञ्जीलालजी मदनलालजी सोमानी व सेठ शिवदासजी मून्धड़ा दिल्लीनिवासीके नाम उल्लेखनीय हैं ।

इस विवाहमें भारतके प्रसिद्ध वयोवृद्ध महान नेता पूज्यपाद महामना मालवीयजी महाराज सर चिमनलाल सीतलवाड आदि प्रमुख महानुभावोंने वर वधूको अपने शुभाशीर्वाद भेजे ।

ऐसे शुभ कार्य्यके समय भी ब्रिटिश सरकारने वरके मामा देशभक्त श्रीमान् सेठ गोविन्ददासजी मालपाणी एम एल ए. (सेन्ट्रल) को जेलमें ही बन्द रखा । उन्होंने दमोह जेलसेही वरवधूको मंगलमय आशीर्वाद एवं शुभ कामनायें भेजीं । श्रीमान् सेठजीकी अनुपस्थिति ही विवाहके समस्त प्रसन्नतामय कार्यक्रमोंमें वर एवं कन्यापक्षके सभी व्यक्तियोंके हृदयोंमें उदासी लाती रही ।

इस शुभावसर पर वर पक्षकी ओरसे माहेश्वरी पत्रको एकसौ एक रुपये, ५१) हिन्दु अनाथालय बाजार सीताराम दिल्ली, २५) पिंजारापोल दिल्ली, २५) श्री सनातन धर्म मंडल दिल्ली प्रान्त तथा ४९) माहेश्वरी सभा देहलीको सहायता दी गई ।

मजदूरोंके बोनसमें अव्यवस्था

(निज संवाददाता)

महाराजा ग्वालियरने मजदूरोंकी जांचके लिए जो कमेटी बिठाई थी उसकी रिपोर्टके बाद उज्जैनके मजदूरोंकी तनख्वाह महंगाई बढ़ा है और तीन महीनेका बोनस मिलने लगा । किन्तु इसी राज्यमें दूसरे मजदूरोंके केन्द्र ग्वालियरमें मजदूरोंकी बड़ी दुर्दशा है । दूसरे केन्द्र के मिलवालोंने नोटिस लगाया कि दो महीने का बोनस मजदूरोंको मिलेगा । उसके बाद नोटिस लगा कि सालमें ७५ दिन हाजरीवालों को बोनस मिलेगा । ७५ प्रतिशत हाजरीवाले २७५ मजदूरोंको दोदो-चारचार रुपये बोनस मिला । बहुतोंको तो तीन तीन चार चार पैसे ही मिले ।

बताते हैं कि ज्यादा हाजरी वाले मजदूरों को नया हाजरी पास देकर या दूसरे खातोंमें बदल कर नये सिरेसे भरतीमें शुमार किया गया है और इस तरह हजारों मजदूरोंका पहलेकी हाजरियोंका बोनसका हक खतम कर दिया गया है । साल खाते और त्रासन हाजरीके मजदूर कई सौ की संख्यामें जब मिल मैनेजरके पास गए तो मैनेजरने उन्हें अपमानित कर भगा दिया ।

तीन दिनकी गैर हाजरी पर पूरे महीनेकी महंगाई काटना बीमारीकी हालतमें मिल डाक्टरके अलावा किसी अन्य सरकारी डाक्टर तकके सर्टिफिकेटको न मानना, महंगाई व तनखाहमें तरह तरहके तरीकोंसे कटौती करना आदिसे असन्तोष बढ़ता जा रहा है ।

इन सब बातोंकी ओर उच्चाधिकारियों और महाराजा ग्वालियरका ध्यान खींचा गया है । राज्यमें मजदूरोंके लिये सब उद्योग केंद्रोंमें समान व्यवस्था और वेतन आदि जारी रखनेकी आवश्यकता है ।

देशी राज्य शासन

पृष्ठसंख्या ५६० सजिल्द मूल्य साढ़े तीन रुपये

महत्वपूर्ण समस्याओंका विचार
नमूनेकी ७० रियासतोंकी शासन पद्धति
राजनैतिक आन्दोलनका परिचय

भारतीयशासन	१।)	ब्रिटिश साम्राज्यशासन	१)
मातृवन्दना	।≈)	भारतीय अर्थशास्त्र	३)
नागरिक शिक्षा	॥≈)	साम्राज्य और उनका पतन	१।)
भारतीय जागृति	१।)	हमारी राष्ट्रीय समस्याएँ	।॥≈)
निर्वाचन-पद्धति	॥-)	पूर्वकी राष्ट्रीय जागृति	१॥)
अपराध चिकित्सा	१॥)	भारतीय सहकारिता आन्दोलन	२)
भारतीय राजस्व	॥≈)	कौटिल्यके आर्थिक विचार	।॥≈)
अर्थशास्त्र शब्दावली	१)	भारतीय विद्यार्थी विनोद	॥≈)
राजनीति शब्दावली	।॥)	नागरिक कहानियाँ	॥≈)
श्रद्धांजलि	।॥≈)	अर्थशास्त्र और राजनीति साहित्य	॥)
विश्ववेदना	।॥≈)	भव्य विभूतियाँ	॥≈)

पुस्तक प्राप्तिका पता—

भगवानदास केला, भारतीय ग्रन्थमाला; दारागंज [इलाहाबाद]

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

राय साहेब रेखचंद गोपालदास मोहता

स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स

अकोला (बरार)

तारका पताः—MOHTA

टेलिफोन नं. ३४ और ५६

बरार की सबसे बड़ी और खुद मालिकी की एकमात्र अप-टु-डेट मिल

★ ★ ★ ★

इस मिलमें सब तरहका कोरा, धुला व रंगीन शुद्ध स्वदेशी कपड़ा व सूत तैयार होता है।

प्रोप्रायटर
सेठ गोपालदास मोहता, एम्. एल. ए. हिंगणघाट.
बैंकर, लैण्डलॉर्ड, टेक्सटाईल, आईल एण्ड राईस मिल्स
व जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फेक्टरियोंके मालिक

प्रेसिडेण्टः—
सी. पी. एण्ड बरार फेक्टरी ओनर्स एसोसिएशन

सम्पूर्ण रूपसे
- ● भारतीय पूंजी ●
- ● भारतीय श्रम ●
- ● भारतीयप्रबन्ध ●

सस्ता व टिकाऊ होनेसे भारतके प्रत्येक विभागमें हमारा कपड़ा उपयोगमें लाया जाता है

हमारे कन्सर्न्स

फैक्टरियाँ

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, अकोला

राय साहेब रेखचंद गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, वर्धा

बुलाकीदास गोपालदास जिनिंग एण्ड प्रेसिंग फैक्टरी, हिंगणघाट

दूकानें

भीखणचंद रेखचंद (हैड आफिस) हिंगणघाट

राय साहेब रेखचंद गोपालदास, अकोला

रायसाहेब रेखचंद गोपालदास, वर्धा

हमारे मैनेजमैण्ट के लिमिटेड कन्सर्न्स

लक्ष्मी बैंक लिमिटेड, अकोला (शेडयुल)
सी. पी. एण्ड बरार की सबसे बड़ी
जोइन्ट स्टॉक बैंक

शाखाएँः—बम्बई (५३ अपोलो स्ट्रीट फोर्ट और ज़वेरी बजार), दिल्ली (चांदनी चौक), ८ क्लाइव स्ट्रीट कलकत्ता, नागपुर (इतवारी, सीताबर्डी मेनरोड), रायपुर, अमरावती, हिंगणघाट, वर्धा, खामगाँव, बरहानपुर, खंडवा, जलगांव, गोन्दिया, द्रुग और धमतरी.

श्री गणेश आईल मिल्स लि. गोन्दिया.
इस मिलका शुद्ध व सस्ता तेल सब जगह प्रसिद्ध है

गोपालदास मोहता एण्ड कं. लि.
शाखाएँः—अकोला, नागपुर और गोन्दिया
इस कम्पनीमें सब तरहके कपड़े व सूतका काम होता है।

बुलाकीदास मोहता एँण्ड कं. लि. अकोला.
यह कई कंपनियोंकी मैनेजिंग एजन्ट व मैनेजिंग डायरेक्टर है

नेशनल कॉमर्शियल कारपोरेशन लि. बम्बई
शाखाएँ अकोला खामगाँव
इसके डिपार्टमेण्ट्सः—काटन जत्था, मिल व जिन स्टोर्स बीमा व अन्यान्य एजेन्सियें

एडवान्स ट्रेडिंग कम्पनी लि. अकोला
शाखाएं—बम्बई, वर्धा, राजनांदगांव
इस कम्पनीमें रुई, सरकी व अनाज वगैरे के कमिशन का काम होता है।

कॉमर्शियल इन्श्युरन्स कंपनी लिमिटेड, (लाइफ)
एडवान्स इन्श्युरन्स कंपनी लिमिटेड, (जनरल)

उपाधिधारी विक्रम

ले. **श्री धुरन्धर शर्मा**. पी. एच. डी.

जब कनिंगहम साहबने कुशाण राजा निष्कको विक्रम संवत् चलानेवाला बताया प्राच्य ज्ञानके शोधक विद्वान मारे आनंदके ने लगे। मॅक्समुलर तो बहुत खुश हुए और उन्होंने लिखा कि परम उदार, न्यायी और वीर राजा विक्रमका पता चलाकर निंगहम साहबने युगांतर उपस्थित कर दिया । फ्लीट साहबने इसे प्रमाणित करनेमें अपनी री बुद्धि खर्च कर दी । जे. केनेडी तथा . फ्रांके भी फ्लीट साहबकी हां में हां मिलाकर णपर प्रमाण देनेकी चेष्टामें लगे। पर जे. र्शल साहबने शिलालेखों और सिक्कोंके धारपर प्रमाणित कर दिया है कि यह मत मपूर्ण और निराधार है।

फर्ग्युसन साहबने अपनी बुद्धि दौड़ाई और प्रमाणित करना चाहा कि ५४४ ई. में क्रमादित्य राजाने श्वेत हूणोंको हराया । स विजयकी स्मृतिमें उसने अपना संवत् लाया और इसे ६००साल पीछे धकेलकर इसकी णनाकी जाने लगी । कुछ समयतक इस तका बाजार भी गरम रहा । स्वयं भारतीय द्वान् इस असंगत मतको सही मानने लगे। द्यपि इस प्रकारका उदाहरण संसारमें कहीं हीं मिलता । भला जिस राजाने ५४४ में न् संस्मरणीय विजय प्राप्त की उसे अपना त अपने समयसे ६०० साल पीछे धकेल- इतिहासको धोखा देनेसे क्या लाभ था ? मत कुछ हीं समय ठहरा बादको असत्य द्ध होनेसे न चल पाया । उस समय छटी ाब्दितक कहीं विक्रम संवतका पता न लता था । अब पहली शताब्दिमें ही विक्रम तका जिक्र प्राप्त हो गया है।

सर रामकृष्ण भंडारकरने चंद्रगुप्त द्विती-को विक्रमादित्य बताया और एक रसे बहुत ठीक बताया । चंद्रगुप्त द्वितीय सिक्कोंमें 'अजितविक्रम,' 'श्री विक्रम,' विक्रम, विक्रमांक और 'विक्रमादित्य' धियां मिलती हैं। तब चंद्रगुप्तके विक्रम में श्री भंडारकरके समयमें संदेह करनेकी ाश नहीं थी। बल्कि कनिष्क आदिसे चंद्रगुप्तके पक्षमें प्रबलतर प्रमाण थे। एक में लिखा है—"क्षितिमविजित्य सुचरि-तै जयति विक्रमादित्यः।" अर्थात् पृथ्वी जीतकर अपने सुचरितोंसे विक्रमादित्य जीतता है। एक सिक्के इस राजाके ऐसें उनपर सिंहसे लड़ती हुई राजमूर्ति खुदी राजाके सामने घायल होकर गिरते हुए ा भागते हुए सिंहकी मूर्ति खुदी है। लिखा है—"**सिंहविक्रमः**"। कहीं 'सिंह चंद्रः' भी है। इन सिक्कोंपर यह लिखा है:—

नरेन्द्रचंद्रः प्रथित (श्रिया) दिवं,
जयत्यजेयो भुवि सिंह विक्रमः।

सवार राजमूर्तिवाले सिक्कोंपर "परमभागवत-राजाधिराज श्री चन्द्रगुप्तः" और "**अजित-क्रमः**" लिखा है। ये सोनेके सिक्के हैं। के सिक्कोंपर "परम भागवत महाराजा- श्री चन्द्रगुप्तः विक्रमादित्यः" अथवा गुप्त कुलस्य महाराजाधिराज श्री चंद्रगुप्त **क्रमांकस्य**" लिखा हुआ है।

केवल सिक्कों और शिलालेखोंके आधारपर इतिहासकी इतिश्री समझनेवाले विद्वानोंके लिये इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है? पर इन विद्वानोंने इस तथ्यकी नाममात्र परवा न की कि जो चंद्रगुप्त द्वितीयके शिलालेखोंमें खुदा रहता है: "परम भागवत महाराजाधिराज श्री चंद्रगुप्त राज्यसंवत्सर"। उसका क्या अर्थ है? याने चंद्रगुप्त द्वितीय गुप्त संवत्सरके अनुसार अपने शिलालेखोंमें तिथि देते थे। यदि वे अपना विक्रमादित्य नामसे संवत् चलाते तो ठीक ही था। उन्हें विक्रमादित्य माननेमें किसीको कोई आपत्ति न होती। पर ऐसा न करनेके कारण दो बड़ी आपत्तियां सामने आती हैं। एक तो यह कि यदि चन्द्रगुप्त द्वितीय ही विक्रमादित्य था तो उसने अपने शिलालेखोंमें गुप्त संवत् क्यों दिया? उसे विक्रम संवत् देना चाहिए था। दूसरी यह कि विक्रमादित्य चद्रगुप्तको क्या आवश्यकता थी कि उसने अपना संवत् प्रायः चार सौ वर्ष पीछे धकेल दिया? इससे उसका क्या महत्व बढ़ा? यदि वह विक्रमादित्य (मूल) ही था तो उसके ही राज्यमें विक्रम संवत् न चलकर ५३३ ई. तक गुप्त संवत् क्यों चला? विक्रम संवत् क्यों न चला? ये सब कारण सिद्ध करते हैं कि चंद्रगुप्त द्वितीयने विक्रम उपाधि धारण की थी। अब इतिहासके विद्वान ऐसा ही मानते हैं। चंद्रगुप्त विक्रमादित्यका प्रामाणिक इतिहास लिखनेवाले श्री गंगाप्रसाद मेहता एम. ए. लिखते हैं:—"सम्राट्" समुद्रगुप्तने कई बड़े बड़े विरुद धारण किये थे जिनमें 'अप्रतिरथ', 'कृतांतपरशु', 'सर्वराजो-च्छेत्ता,' 'व्याघ्र पराक्रम,' 'अश्वमेधपराक्रम,' 'पराक्रमांक' आदि मुख्य थे। उसके पुत्र और उत्तराधिकारी द्वितीय चंद्रगुप्तके सिक्कोंपर उससे भी ऊंचे विरुद पाये जाते हैं जिनमें 'विक्रमांक', 'विक्रमादित्य' 'श्री विक्रम', 'अजितविक्रम', 'सिंहविक्रम', आदि विशेष उल्लेख योग्य हैं।...उक्त विरुदावलीमें द्वितीय चंद्रगुप्तका सबसे विशिष्ट विरुद 'विक्रमादित्य' था। यह विरुद भारतवर्षमें प्राचीनकालसे प्रचलित था। एक समय उज्जैनके किसी राजाने शकोंको नष्ट करके 'विक्रमादित्य' का विरुद धारण किया था और 'विक्रम संवत्' ई. स. ५७ पूर्वमें चलाया था। यह कथा हिंदु साहित्यमें परंपरासे चली आती है। गुप्तवंशी द्वितीय चंद्रगुप्तने भी इस 'शकारि' आदि-विक्रमादित्यका अनुसरण कर गुजरात, काठियावाड, कच्छ, माल्वा, राजपुताना आदि प्रदेशोंपर राज्य करनेवाले शकोंका राज्य छीनकर उनके वंशको छिन्नभिन्न कर दिया। अतएव उस शकारि गुप्त राजाने उज्जैनपर अधिकार कर 'विक्रमादित्य' विरुद धारण किया जो सर्वथा उचित था। इससे साफ हो जाता है कि चंद्रगुप्त द्वितीय मूल विक्रमादित्य न था; जिसने ५७ ई. पूर्वमें अपना संवत् चलाया। यह + मत अब सभी ऐतिहासिकोंको ग्राह्य है। इसमें कोई संदेह नहीं कि संस्कृत साहित्यमें भी विक्रमादित्य उपाधिधारी नाना राजाओंके कारण बहुत भ्रम पाया जाता है। कथासरित्सागरमें तीन विक्रमादित्योंका, उल्लेख है। एक उज्जैनका, दूसरा प्रतिष्ठानका और तीसरा पाटलिपुत्रका। बात यह हैं कि उज्जैनमें मूल शकारि विक्रमादित्य हुआ। इसके बाद शक संवत् चलानेवाले ने भी यह उपाधि धारण की और पटनाके चंद्रगुप्त द्वितीय ने भी यही विरुद अपनाया। चौथी सदीसे तो विक्रमादित्य उपाधि धारण करनेकी राजाओं में चाल पड़ गयी। चंद्रगुप्त द्वितीयके पोते स्कन्दगुप्तने भी 'विक्रमादित्य उपाधि ग्रहण की थी, उसके सिक्कोंमें मिलता है—" "परम भागवत श्री स्कंदगुप्त '**क्रमादित्य**' और कहीं कहीं 'विक्रमादित्य,'। कुछ ऐसा नियम-सा बन गया था कि जिस ने शकों या विदेशियोंको भारतसे मार भगाया उसने ही शकारि 'विक्रमादित्य' की उपाधि ली। *

कीलहार्नने साहबने १८९१ ई. में अपना ग्रंथ "Examination of Questions connected with the Vikrama Era," पूरा किया। यह पुस्तक महान शोध के बाद लिखी गयी। इसमें नाना प्रमाण देकर यह सिद्ध किया गया कि 'विक्रम-संवत' किसी राष्ट्रोद्धारक और हिंद जातिके संगठन कर्ता, शक-यवनोंको परास्त करनेवाले वीरके नामपर नहीं चला। यह तो भारतीय इतिहास के पराक्रम-कालका सूचक है। कीलहार्नकी मुख्य दलीलें और प्रमाण नीचे दिये जाते हैं जिससे पाठक उनका कुछ रूप स्वयं देख लें:—

(१) विक्रम-संवतकी प्राचीनतम तिथियां पूर्वी राजपुताना और खासकर उन भागोंमें पायी जाती हैं जो माल्वाकी सरहद्दपर हैं।

(२) इस संवत्की प्राप्त होनेवाली सबसे पुरानी तिथि संवत् ४९३ है। पर संभवतः ४२८ संवत्का सबसे पुराना उल्लेख हो। याने ३७१ सनका उल्लेख सबसे पुराना है।

(३) पुराने शिलालेखोंमें इसका नाम 'विक्रम-संवत्' नहीं बल्कि 'माल्व-संवत्' मिलता है। संवत्के रूपमें विक्रमका नाम स्पष्ट रूपसे ८९८ संवतमें मिलता है और वहांपर भी इसका रूप इतना अस्पष्ट है कि पता नहीं चलता कि विक्रम 'पराक्रम' का सूचक शब्द है या किसी राजाके नामका। संवत् १०५० (९९३ ई. सन) में राजा विक्रमका जिक्र इस विक्रम संवत्के साथ मिलता है। पर इस राजाको विक्रम-संवत् का चलानेवाला बतानेवाली विरुद १२०० ई. में पायी जाती है।

इन प्रमाणों और दलीलोंपर कीलहार्न साहबने निदान निकाला कि विक्रम-संवत् किसी राजा या गणपतिने न चलाया। यह केवल पराक्रम-काल सूचक है। क्योंकि भारतमें विक्रम-काल शरदऋतुमें आरंभ होता है। रामायणमें भी लिखा है—'उद्योगकालो नृपात्मजानाम्।' और बाणने हर्षचरितमें लिखा है, शरदकाल पराक्रमकाल है। इसलिए कीलहार्न साहबने अपने मतकी पुष्टि की। पर उन्होंने यह न सोचा कि भारतमें अत्यंत प्राचीन कालसे शरद कालमें विजया दशमीसे ही लड़ने की प्रथा है। यह किसी अंधविश्वासके कारण नहीं है; पर भारतका जलवायु और यहां की ऋतुएं राजाओंको विवश करती थी कि वे इस ठंडे समयमें जब बरसात बीत चुकती थी युद्धके लिए जायें। भारतमें न गरमी में युद्ध हो सकता है न बरसातमें फलतः शरद काल ही युद्धके आरंभका समय है और वसंततक युद्ध जारी रखा जा सकता है। पर क्या केवल इस एक कारणसे अथवा किसी विशेष कालके कारण जब कि भारत-भरमें नाना प्रदेशोंसे पराक्रमसे कृत्योंका-का तांता बंध गया होगा यह नाम संवतका पड़ा? यदि ऐसा हुआ हो तो कीलहार्न साहबको पराक्रमके ऐसे काम या कामोंकी शृंखलाका उल्लेख करना चाहिए था जिसके

+ अत्यंत खेद के साथ लिखना पड़ता है कि हमारे विद्वान आज भी इस भ्रमपूर्ण बातको सत्य मानते हैं। श्री के. एम. मुन्शीने उज्जैन की विक्रमोत्सव कमिटीको लिखे एक पत्रमें अपना मत प्रकट किया है कि मैं चंद्रगुप्त द्वितीयको विक्रमादित्य मानता हूं। पत्रोंमें देखा कि हिंदुओंको ठीक रास्ता दिखानेवाली हिंदू महासभाके मंत्री चंद्रगुप्तजी दमखमके साथ घोषित करते हैं कि विक्रमादित्य कोई हुआ ही नहीं। जिस चंद्रगुप्तके सिक्कोंमें 'विक्रम' नामके नाना विरुद खुदे हुए हैं उसे भी वे 'विक्रमादित्य' नहीं मानते। मंगलाप्रसाद पारितोषिक पानेवाले श्री जयचंद्रजी लिखते हैं—'प्रसिद्ध है कि राजा विक्रमादित्य ने प्रतिष्ठानसे आकर उज्जैन जीता।' हमारी उत्कट इच्छा है कि जानें यह बात कहां प्रसिद्ध है?

* हमारा दुर्भाग्य देखिये कि १९४२ ई. में एक ऐतिहासिक विद्वान् श्री. धीरेन्द्रनाथ मुकर्जीने प्रमाणित करना चाहा है कि चंद्रगुप्त प्रथम ही विक्रमादित्य था। उधर 'चंद्रगुप्त विक्रमादित्यके लेखक श्री. गंगाप्रसाद मेहताने यह सिद्ध करना चाहा है कि कालिदास चंद्रगुप्त द्वितीयके समयमें हुए। यह मत ठीक नहीं है। सी. वी. वैद्यने 'उदयन कथा कोविदा ज्ञानवृद्धाः' तथा अग्निमित्रका समय मिला कर और 'विषमरोष चेतसा' आदिकी घटनाओंका समय निर्धारित कर प्रमाणित किया है कि कालिदास असल विक्रमादित्यके समयमें ५७ ई. पूर्वके लगभग हुए। इन पंक्तियोंके लेखके मतसे जो 'पारसीकांस्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थलवर्त्मना' वाक्य रघुवंशमें आया है वह स्पष्ट ही उन शकोंको हरानेकी ओर इशारा करता है जो फारस या इरानसे आकर सिंधके समुद्र तटपर राज करते थे। ये लोग फारससे आये थे और इनकी उपाधि शाहानुशाही थी। स्टेन कोनोने सिद्ध किया है कि कालकाचार्य कथानकका 'सगकूल' सिंधमें ही था।

उपाधिधारी विक्रम

कारण इस कालके नामसे विक्रम-संवत् चल गया। विक्रम संवत् तो आज दो हजार वर्षसे चला है। क्या कारण है कि जब रामचंद्र जैसे वीरने शरदकालमें तैयारी करके लंकापर चढ़ाई की और रावणको हराया तो तबसे 'विक्रम-काल' क्यों न चला? इसपर संसारमें जितने संवत है वे किसी न किसी व्यक्तिके नामके हैं। समयके नामका कभी कोई संवत् न चला क्यों कि संवत् पुरुषोंके स्मारक हैं न कि समयके जो मुर्दा है। इस लिए कुछ दिनोंतक इसकी चर्चा रहनेके बाद यह मत गिर गया।

पर कुछ हिंदू भाई अभी तक इस मतको छाती से लगाये हुए हैं। यह दैवकी विचित्र विडंबना है।

होएर्नेले साहबने नया मत दिया। उनके मतके अनुसार यशोधर्मनने छठी शताब्दिके प्रथमार्धमें श्वेत हूणोंको पराजित किया। इसलिए वही विक्रमादित्य है। इस मतका सबसे बड़ा दोष यह कि यशोधर्मनके अनेक शिलालेख मिले हैं पर एकमें भी विक्रम नाम नहीं मिलता। पर होएर्नेले साहबने १९०९ में मत दिया कि ५७ ई पूर्वमें सचमुचमें एक विक्रम था जिसने शकोंको हराया।

(होएर्नेले और स्टार्ककी History of India, 4th Edition 1909)

इतना ही नहीं; ऐतिहासिकोंने चष्टणको भी विक्रम बनाया, पर इस मतको बहुत कम पोषण मिला।

सर जान मार्शल साहबको भी श्रेय है कि उन्होंने आजेस नामके एक पार्थियन राजाको 'विक्रमादित्य' प्रमाणित करनेका प्रबल प्रयत्न किया। रपसन साहबने इसका समर्थन किया और केम्ब्रिज हिस्टरी आफ इण्डिया, प्रथम खंडके ५७१ व ५८१ तथा बादके पृष्ठोंमें इसका पोषण किया है। इस मतकी खूबी यह है कि शक यवनोंके परास्त करनेके लिये भारतकी परंपरा द्वारा सर्वत्र पूजित परम भारतीय और भारतीय संस्कृतिके आदर्शरूप 'विक्रमादित्य' को शक (पार्थियन) बना दिया है। तक्षशिलामें एक शिलालेख मिला। इसमें 'अयस' और एक तिथि मिली है जो विक्रम संवत्से मिलती है; वशर्ते 'अयस' शब्द 'अजेस' शब्द वाची माना जाय। स्व. भंडारकर इस अर्थको गलत मानते थे। और स्टेन कोनो साहब भी उसे अशुद्ध और तोड़ा मरोड़ा अर्थ समझते हैं। कार्डोर गटन साहब अपने भारतके इतिहासमें इस मतका खंडन करते हैं। फ्रैंकलिन एजर्टन साहब इस विषयपर लिखते हैं-"हम इस मतको मान लेते यदि इस संवत् की तिथियां १३६ से (जब कि तक्षशिला का शिलालेख खोदा गया था) ४२८ संवत्के बीचमें इस संवत् की और तिथियां मिलतीं। पर उनका अभाव है। (४२८ का मालव संवत् का लेख मिलता है।) मार्शल साहबके मतका मतलब यह हुआ कि कनिष्कके पूर्वज या पूर्वाधिकारीने यह संवत चलाया, उसके बाद कनिष्कने अपना संवत चला या और फिर यह संवत् गुम हो गया। फिर कई शताब्दियोंके बाद मालवामें इसका पुनर्जन्म हुआ। जो संभव नहीं मालूम पड़ता है।" इस बीच एक और नयी बात मालूम हुई है। कनिष्क का समय अब ७८ ई. स. के करीब माना जाता है। इसलिए अब इस मतकी जड़ और भी हिल गयी।

कोई विद्वान चंद्रगुप्त प्रथमको 'विक्रमादित्य' बताने लगे हैं। सो भी १९४२ ई. में। श्री धीरेन्द्रनाथ मुकर्जीका १९४२ के 'भारतीय ऐतिहासिक त्रैमासिक' में एक लेख छपाथा जिसमें उन्होंने चंद्रगुप्त प्रथमको 'विक्रमादित्य' प्रमाणित करनेकी चेष्टा की थी। यह यत्न महान धृष्टता और अज्ञताका फल है। स्कन्दगुप्तके नाममें—जैसा पहले बताया जा चुका है क्रमादित्य और विक्रमादित्य जुड़े रहनेके कारण कुछ ऐतिहासिकोंने उसे ही विक्रमादित्य समझ लिया। पर वे सब जिनके नामोंके साथ 'विक्रमादित्य' जुड़ा था उपाधि धारी या नामधारी 'विक्रम' थे। परिशिष्टमें मैंने एक ऐसे विक्रमादित्यका परिचय दिया है जो केवल २०० वर्ष पहले भारतमें जनमा है और जिसने अपने औदार्य विक्रम, प्रजापालन और विदेशियोंसे देशको मुक्त करनेके यत्नमें विक्रमका अनुकरण किया। दक्षिणमें कई राजाओंने विक्रमादित्यकी उपाधि धारण की थी।

इधर सातवाहनको विक्रम सिद्ध करनेकी चेष्टा की जा रही है। सातकर्णी या सातवाहन शब्द नहपान अर्थात् नभोवहनकी भांति शक (सीथियन) भाषाका है। संस्कृतमें सातका अर्थ है सुख; पर शकभाषामें 'साद' या 'सात' का अर्थ है घोड़ा। संस्कृतमें शकोंके बाद 'सादिन्' शब्द आया। इसका अर्थ बकौल अमरकोषके घुड़सवार है। इसलिए सातवाहन या सातकर्णीको आर्य विक्रम मानना इस विक्रम संवतका उपहास करना है। सातवाहन वंशने अपना शक चलाया था जो शब्द, सी. वी. वैद्यके अनुसार, स्वयं अपनी उत्पत्ति बताता है कि इसे शकजातिके राजाने चलाया। यही मत राजवाड़ेका है। जो ठीक है।

इस निबंधमें मैंने उन सब तथ्योंका उल्लेख करनेकी चेष्टाकी है जो आजतक मालूम हुए हैं। और नाना प्रमाणोंसे सिद्ध करनेका प्रयास किया है कि 'विक्रमादित्य-शकारि' ५७ ई. पू. में अपनी अपूर्व विजयसे भारतमें प्रसिद्ध हुआ। भारतीय ऐतिहासिकोंमें गंगाप्रसाद मेहता, चि. वि. वैद्य और हरप्रसाद शास्त्री इसीं निदानपर पहुंचे थे। विदेशी विद्वानोंमें भी एजर्टन, कार्डोरंटन, स्टार्क, होएर्नेले, स्टेन फोनो, यार्ल शार्पातिए आदि भी इसी नतीजेपर पहुंचे हैं। भारतीय परंपरा २००० वर्षसे विक्रमकी जय मना रही है, सो हमें सहर्ष और सहेतु मान लेना चाहिए कि विक्रमादित्य राजा हुआ है और अपने उत्तम कर्मों तथा प्रतापके कारण जगतमें अपना ऐसा नाम कर गया कि बीसियों बड़े बड़े भारतीय राजों और राजाधिराजों ने उसका अनुकरण करके और अपने नामोंके साथ 'विक्रमादित्य' उपाधि जोड़कर भारत तथा अपनेको कृत कृत्य किया।

मित्र के पत्र

(पृष्ठ ८ का शेष)

पापी का हृदय उस घड़े के तुल्य था जो नीचे विष से और ऊपर दूध से भरा हो। गरीब अवस्था में होते हुए भी मनमोहन कभी साड़ी कभी गहने लाकर अपनी माँ को देता और उससे कहता, कैलाश तो अभी कलकत्ते है। मालूम नहीं कब उसे छुट्टी मिलेगी और कब वह आवेगा। इस अवसर पर कुछ गहने और कपड़े देने से बहू इस घर को अपना घर जल्दी समझने लगेगी जिससे यहां खुश और आकर्षित होकर रहने लगेगी, और तुम्हारी तथा बच्चों की सब कठिनाइयों का भी अन्त हो जावेगा।" बाह्य रूप से मनमोहन की ये सब बातें सभी को अच्छी लगती थी। किन्तु पीछे मालूम हुआ हाथीके दांत दिखाने के और, खाने के और होते हैं। यदि कोई श्वसुर अथवा अभिभावक पवित्र और सच्चे हृदय से अपनी नव पुत्रवधू के साथ स्नेह प्रदर्शित करे तो निश्चय ही उस लड़की का हृदय इस नये घर को जल्दी ही 'अपना घर' समझने लगता है और वह जल्दी ही घर के कुटुम्बियों में तथा आचार व्यवहार में मिल जुल जाती है। अस्तु! ज्यों ज्यों समय बीतता गया वह अनभिज्ञ घर में भिज्ञ होने लगी। घर के सभी काम रसोई पकाना, कपड़े धोना, घर की सफाई करना, वर्तन मलना, इत्यादि, करने लगी।

आसपास के पड़ौसियोंको भी यही सूचना मिली की कैलाशकी बहू बहुत समझदार, चतुर, सुशील एवम् गृह कार्योंमें कुशल है। सब लोगोंके मुंहसे यही शब्द निकलते थे कि मनमोहनका टूटा हुआ घर इस लड़कीके आनेसे सुधार गया।

उसे ससुराल आये करीब १० महिने हो गये हैं। अब उसने मायके जाने लिये मनमोहनको कहलाया। मनमोहनने उत्तरमें कहलाया, "अभी हमको कुछ आराम मिला है।" उसने अपनी माँको भी कहा, "इसके लिये कुछ गहने और गढ़ा दूंगा।" इसी प्रकारकी बातोंसे लालच देकर उसे वहीं रखा। कैलाशको छुट्टी नहीं मिली जिससे वह अभीतक न आसका। उसकी अनुपस्थितिमें इस अबलाको जो यातनायें और अत्याचार सहने पड़े वे कनु, तुम्हें अगले पत्रमें लिखूंगा।

अभिन्न,
सुधीर

कन्याकी आवश्यकता

एक कुंवारे शरीर सुदृढ माहेश्वरी युवक जिसकी कि आयु २०-२१ वर्ष की है, के लिए सुंदर स्वास्थ्यपूर्ण तथा गृहकार्य कुशल माहेश्वरी-जातीय कन्याकी आवश्यकता है। युवकके निजी व्यवसाय तथा स्थावर इस्टेटसे माहवार आमदनी ७५) रु. है। विवाह शीघ्र करनेका विचार है। शिक्षा की योग्यता नॉनमॅट्रिक की है।

काबरा तथा बलदवा खांपवाले सज्जन कृपया पत्र व्यवहार न करें।

पत्रव्यवहारका पता:—

नारायणदास काबरा
C/o दि बरार एजन्सीज सिंडिकेट
आकोला (बराड़)

दोषी कौन ?

(पृष्ठ १० का शेष)

उसके धर्म कर्म पोथी पत्रे समा जायेंगे। अब भी यदि उन्हें सताना न छोड़ोगे तथा उनके दिल के नाजुक शीशेपर प्रहार करने से बाज न आवोगे, तो वह टूटा हुआ शीशा सहस्रमुखी होकर शूल की तरह किसी को भी चुभे बिना न छोड़ेगा। तथा उनकी सतायी हुये आत्माओं से श्राप की जो चिन्गारियां निकलेंगी वह सो देश को भस्म कर देगी......"

मैंने सब कुछ सुना - इसकी यर्थाता को समझा भी। परन्तु मैं यह जानने की कोशिश करने लगा कि किसने मुझे इसतरह वस्तुस्थिति का ज्ञान कराया? मैंने होश सम्भाला तो देखा कि मेरे चारों तरफ कुछ न था, न आकाश था न बादल न बिजली थी और न प्रबल वायु। यह सबतो मेरा स्वप्न संसार था—मेरे मस्तिष्क में ही तूफान उठा था। मुझे कुछ ऐसा मालूम हुवा कि जो मेघनाद मुझे सुनाई दिया था वह और कुछ न था, वरन् वह तो जैसे युवकों के अन्तर्हृदयों से निकली हुई आहें थीं जो एकत्रित होकर मेरे मास्तिष्क से टकराई और "नहीं, नहीं" की विकट ध्वनि से मुझे सचेत किया। मुझे ऐसा भी महसूस हुवा जैसे उनके सन्तप्त हदयों से जो धुंवा निकला उसका एक भयावह बादल बना और पूरे जोर शोर से गरज उठा। और अब तो मैं यह भी निश्चय कर सका कि जिस आवाज ने, जिस आदेश ने मुझे वास्तविकता का ज्ञान कराया, जिसने मुझ जैसे कट्टर पन्थीमें इतना सुधार, परिवर्तन करदिया, वह कोई आकाश वाणी न थी बल्कि मेरी अन्तरात्मा की सच्ची आवाज थी। मेरे मास्तिष्क में द्वन्द्व चला था। जो भ्रान्ति थी उस विषय में उचितानुचित का ज्ञान करने वाली हृदय की पुकारथी, आत्मा के निर्णय की प्रतिध्वनि,—अन्तर्नाद था।

प्रजारञ्जक गण-पति विक्रम

(पृष्ठ ७ का शेष)

गाथा ग्रंथोंमें मिलती है, पर उनमें न तो को क्रम मिलता है और न राज्यों के नाम। परिशिष्ट मेरुतुंगके 'प्रबंधचिन्तामणि' से विक्रम संबंधी कुछ कहानियां दी गयी हैं जो अप्रकाशित थी और जिनमें ऐतिहासिकताकी मात्रा अन्य कथाओंसे अधिक है। उनसे स्पष्ट पता चलता है कि इस 'गणमुख्य' ने अपना 'प्रजारंजन' धर्म किस उत्तम रीतिसे निवाहा।

इस विषयपर अपने प्राचीन धर्मशास्त्रों और स्मृतियोंमें स्पष्ट आदेश दिये गये हैं। म लिखते हैं कि ग्राम. देश और संघोंके नियमों तोड़नवालेको 'समयभेदिनाम्' और नागरिक लोभके वश होकर राष्ट्रहित विरो या नियमोंसे विरुद्ध बात करे उसे देशनिका दे देना चाहिए। मनु ८-१८-१५ महाभा के शान्तिपर्व के १७-१९ श्लोकों में लिखा है:—

अराजकाः प्रजाः पूर्वं विनेशुरिति नः श्रुत।
परस्परं भक्षयंतो मत्स्या इव जले कृशान्।
यथ्व नःसमयं भिन्द्यात्स्याज्या न सा
इति॥

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी

यूनिवर्सल फायर एण्ड जनरल

इन्स्युरन्स कंपनी लिमिटेड

संस्थापित सन् १९१९

★

१००% शत प्रतिशत हिन्दुस्तानी इन्स्युरन्स कंपनी

ज़िन्दगी, आग, मोटर, समुद्रीय, देशी उद्योग,
और मजदूरोंके मुआवजेके बीमेका
कामकाज किया जाता है

—: हमारी शाखाएं :—

अहमदाबाद (गांधी रोड)
बोटाद (काठियावाड़)
कलकत्ता (१३५, कैनिंग स्ट्रीट)
लाहौर (दी माल)
कम्पाला (युगाण्डा) (बाम्बो रोड)

★

जिन स्थानोंपर हमारी एजेन्सियां नहीं हैं, वहां एजेन्टोंकी आवश्यकता है। विशेष विवरणके लिए लिखिए :—

कंचनलाल वरजदास (मालाणी)
जनरल मॅनेजर

हेड ऑफिस :– सर फिरोजशाह मेहता रोड, फोर्ट, बम्बई

बीमेकी सुरक्षितताके लिये यूनिवर्सलको याद कीजिए

पुस्तकालय 110665

Printed and published by Vasant S. B. Shred, B.A., B.Sc., LL.B. at the Bombay Vaibhav Press, Servants of India
Society's Building, Sandhurst Road, Bombay 4

110665

Reg. No. B4441

दी

न्यु एशियाटिक

की

उन्नति की रफ्तार

केवल जीवन बीमा के आंकड़े ही खुद बता रहे हैं

१९३४..................रु० १५,००,०००
१९३८..................रु० ४१,७४,०००

१९४२.....रु० ६०,००,०००

१९४३......एक करोड़के ऊपर

हम अपने पोलिसी-होल्डरों, काम करनेवालों तथा सभी शुभ चिन्तकों को
इस शानदार सफलता के लिये हृदयसे धन्यवाद देते हैं।

कृपया हमें पूछिये **लाइफ** **आग**

मोटर **वर्कमेन कम्पेनसेशन**

मरिन आदि २ बीमों के लिए

न्यु एशियाटिक इंस्युरन्स कम्पनी लिमिटेड

हेड आफिस
नई दिल्ली

वेस्टर्न डिवीजन ऑफिस :—
इंपीरियल बैंक एनेक्स बिल्डिंग, फोर्ट, बम्बई

हमारी शाखाएं:—

बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, त्रिचिनापली, लाहोर, इन्दौर, नागपुर, जलगांव, हैदराबाद (दक्षिण) कराची, कॉलीकट, बनारस

इनके अतिरिक्त अन्य महत्व के स्थानों में हमारी चीफ एजंसिया हैं

110665

C[illegible]fied
19[illegible]